॥ श्रीः ॥

श्रीसूरसागर ।

अर्थात्

भाषा-कविकुलचूडामणि श्रीसूरदासजी रचित श्रीमद्भागवत बारहोंस्कन्धोंका ललित रागरागिनियोंमें

अनुवाद ।

काशीनिवासी-श्रीराधाकृष्णदासद्वारा अनेक शुद्धप्रतियोंसे संशोधित ।

यही

भजनानन्दी तथा प्रेमीभक्तोंके चित्तविनोदार्थ-

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रण यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

चैत्र संवत् १९८०, शके १८४५.

निवेदन.

भाषा कविकुलगुरु श्रीसूरदासजीको यदि भाषाका आदिकवि कहाजाय तो भी अत्युक्ति न होगी. यद्यपि इनके पहिलेके बहुतेरे कवियोंकी कविता और ग्रंथ मिलते हैं परंतु यदि विचार कर देखा जाय तो आजकल जो कविताका प्रचार है उसकी जड़ श्रीसूरदासजीहीसे है. सभी कवि इन्हींका अनुसरण करते हैं.

सूरसागर सूरसागरही है. सम्भव है कि, समुद्रके सब रत्न इकट्ठे करदिये जासकें और उसका उचित मूल्यभी निर्धारित हो सके परंतु यह किसकी सामर्थ्य है जो सूरके अगाध समुद्रके अनमोल रत्नोंका मोल करसके ? कोई जौहरी भी तो हो और होहीं करके क्या कर सकता है. यहां तो सूरकी चकाचौंधमें सभी सूर हो जाते हैं, सूझे क्या और कहै क्या ! और सूझा भी सो जुबान बंद.

मेरी बहुत दिनोंसे इच्छा थी कि इसका दर्शन तो करता परंतु संयोग न आया एकदिन पूज्यपाद श्रीभारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजीके पुस्तकालयमें पुस्तकोंको उलटते पलटते एक बस्तेमें सूरसागरका केवल दशमस्कंधका पूर्वार्द्ध हाथ आया उसे देखकर और भी पिपासा बढ़ी इसी बीच बांकीपुर जानेका संयोग हुआ और वहां मित्रवर बाबू रामदीनसिंहजीके यहां सूरसागरका प्रथमसे नवमस्कंधतक देखनेमें आया. मुझे उत्साह हुआ कि, यदि यह अमूल्य ग्रंथ छपजाता तो भाषारसिकोंको बड़ा आनंद आता और भक्तोंको तो एक निधि ही हाथ आजाता. मैंने भाषाके सच्चे प्रेमी सेठजी श्रीखेमराज श्रीकृष्णदासजीको लिखा और उन्होंने सहर्ष इसे छापना स्वीकार किया दशम उत्तरार्द्ध और एकादश द्वादश स्कंध श्री १०८ महाराज काशिराज बहादुरके पुस्तकालयसे मँगाया गया. अतएव मैं उक्त महामान्यवरोंको हृदयसे धन्यवाद देताहूं.

इससे पहली आवृत्तिमें ग्रंथका कुछ भाग छपजाने पर पता लगा कि इसकी एक प्राचीन पूरी प्रति जानीमल खानचन्द्रजीकी कोठीमें है. उक्त कोठीके स्वामी बाबू गिरिधरदासजीने कृपा कर उसे दी और राधाकृष्णदासजीने छपजानेके उपरांत मिलान करके शुद्धिपत्र तथा पाठांतरकी एक सूची पृथक् बनादी बहुतसे पद तथा पदोंके भाग छूट गयेथे वे भी पाठांतरके साथ बढ़ा दियेगये थे कि यदि भगवदिच्छा और ग्राहकोंके उत्साहसे इसके फिरसे छपनेका अवसर प्राप्त होगा तो ये सब यथा यथा स्थान सन्निवेशित कर दिये जायँगे और यथा सम्भव नोट आदिभी दिये जायँगे इस प्रकार जो उस समय शीघ्रताके कारण नहीं हो सकाथा वह सब अतिश्रमसे अबकी आवृत्तिमें यथास्थान सन्निवेशित कर यह उत्तम ग्रंथ मुद्रित किया गया है.

यह किंवदन्ती प्रसिद्ध है कि, सूरदासजीने सवालाख पद बनाये और सूरसागर सारावलीके देखनेसे भी विदित हुआ कि एक लाख पद तक तो उन्होंने सारावलीके बनाने तक बनाये थे, परंतु इस ग्रंथमें बहुत कम पद हैं. वह दिन परमसौभाग्यका होगा जब कि वह सब पद देखनेमें आवैंगे और भाषा रसिकोंके लिये वह दिन चिरस्मरणीय होगा जब कि सब पदछपकर प्रकाशित हो जायँगे । मैं बड़े हर्षके साथ प्रकाशित करता हूं कि, श्री १०८ गोस्वामि श्रीबालकृष्ण लालजी महाराज कांकरौली नरेशने आज्ञा दी है कि, मेरे पुस्तकालयमें पूरे सवालाख पद हैं और उन्होंने यह भी प्रतिज्ञा की है कि यदि तुम चाहोगे तो मैं उसे नकल करनेकी आज्ञा दूंगा. यदि 'श्रीवेङ्कटेश्वर' भगवान्‌से प्रेरित हुए हमारे ग्राहकोंसे उत्साह पाकर उत्साहित हुआ मैं उसे छापनेकी इच्छा करता हुवा उस ग्रंथको प्राप्त करनेका उद्योग करूंगा.

मैं फिर उन महाशयोंको हृदयसे धन्यवाद देताहूं जिनसे इस बड़े काममें मुझे सहायता मिली है और आशा करताहूं कि, मेरी अनुपयुक्तताके कारण जो इसमें त्रुटियें रहगई हैं उन्हें सज्जन क्षमा करके मूल ग्रंथकी ओर दृष्टि देंगे ॥

सेवक—
श्रीराधाकृष्णदास,
चौखम्भा—काशी

आपका कृपाकांक्षी-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस—मुंबई.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन निज 'श्रीवेङ्कटेश्वर' स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया.

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीसूरदासजीका जीवनचरित्र ।

न जानें क्यों हमारेदेशकेविद्वानोंकाध्यानइतिहासकी ओर तनिकभी न आया ? किजिसके कारण अनेकानेक प्रसिद्ध पुरुषोंके नामभी नहीं सुननेमें आते. सूरदासजीको हुए अभी कुछ बहुत दिन नहीं हुए परंतु इतनेही थोडे कालमें भारतवर्षके एक इतने बडे प्रसिद्धकविके जीवन चरित्रका पता ठीक ठीक नहींलगता, यहाँतकयहाँके लोगोंकाध्यानइसओरकम था किसूरदासजीके थोडेही दिन पीछे गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथजी महाराजके पुत्र श्रीगोकुलनाथजीने जो चौरासी वैष्णवोंकीवार्ता लिखी उसमेंभीसूरदासजीका चरित्र सुनासुनायाही लिखदिया;यदि उस समय थोडाभी परिश्रम किया जाता तो इनका पूरा पता लगजाता परंतु खेद कि इधर तो किसीका ध्यानही न था ॥

सूरदासजीके विषयमें चौरासी वैष्णवोंकी वार्तामें तथा पूज्यपाद भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजीने जो लिखा है वह और साहित्यलहरीमें बाबू रामदीनसिंहने जो कुछ छापा है स्थानान्तरमें प्रकाशित कियाजाताहै यहाँ हम केवल समयका निरूपण करते हैं ॥

सूरदासजीका समय निर्णय करना कुछ बहुत कठिन नहीं है क्योंकि श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुके ये शिष्य थे ("श्रीवल्लभगुरु तत्त्व सुनायो लीला भेद बतायो" सू.सा.सा. ११०२) और श्रीगोसाईंजी (श्रीविट्ठलनाथजी) के समयमें ये मरे यह तो इनके लेखहीसे विदित है "थापि गोसाईं करी मेरी आठ मद्धे छाप"(भारतेन्दुजी लिखित लेख) श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुका जन्म संवत् १५३५वैशाख कृष्ण ११ को और अन्तर्धान संवत् १५८७ आषाढ़ सु०२ को और श्री गोस्वामी विट्ठलनाथजीका जन्म संवत् १५७२ पौषकृष्ण९.और अन्तर्धान संवत् १६४२ माघ कृष्ण७को हुआ.अब इनका समय संवत् १५३५ से लेकर संवत् १६४२ के बीच १०७वर्ष के भीतरही निर्णय होना चाहिये.अब विचारना चाहिये कि इन्होंने अल्पायु पाई या दीर्घायु । १पहिले तो उनके पदोंकी बडी संख्या ही उन्हें दीर्घायु बताती है परन्तु मुझे उनकी अवस्था लगभग अस्सी वर्षकी होनेका पक्का प्रमाण मिला है.सूरदासजीने सूरसागरसारावलीको अपनी सरसठ वर्षकी अवस्थामें लिखा है ॥ यथा—

गुरु प्रसाद होत यह दरशन सरसठ बरस प्रवीन । शिव विधान तप करेउ बहुत दिन तऊपार नहिं लीन ॥ १००२ ॥ सुख पर्यंक अंक ध्रुव देखियत कुसुम कन्द द्रुम छाय । मधुर मल्लिका कुसुमित कुंजन दम्पति लगत सोहाये ॥१००३॥ गोवर्द्धन गिरि रत्नसिंहासन दम्पति रस सुख मान । निबिड कुंज जहँ कोउ न आवत रसविलसतसुखखान॥१००४॥ निशा भोर कबहूं नहिं जानत प्रेममत्त अनुराग ॥ललितादिकसींचत सुख नैननि जुर सहचरि बडभाग ॥१००५॥ यह निंकुजको वर्णन करिके वेद रहेपचिहारा।नेति नेति करि कहेउसहसविधिनऊनपायोपार १००६॥

दरशन दियो कृपा करि मोहन नेग दियो वरदान । आगम कल्प रमन तुव है है श्रीमुख कही बखान× ॥ १००७ ॥

सूरसागर सारावलीको सूरदासजीने एक लाख पद बनानेके उपरांत बनायाहैः—

कर्मयोग पुनि ज्ञान उपासन सबही भ्रम भरमायो । श्रीवल्लभगुरुतत्त्व सुनायोलीलाभेद बतायो ॥११०२ तादिनते हरिलीला गाई एक लक्ष पद बन्द । ताकोसार सूरसारावलि गावत अति आनन्द ॥११०३॥ तब बोले जगदीश जगतगुरु सुनो सूर मम गाथ । तू कृत मम यश जो गावैगो सदा रहै मम साथ ॥ ११०४ ॥

सूरदासजीके सवालक्ष पद बनानेकी किम्बदन्ती जो प्रसिद्ध है वह ठीक विदित होती है क्यों कि एकलाख पद तो श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य होनेके उपरांत और सारावलीके समाप्त होने तक बनाये इसके आगे पीछेके अलगही रहे ॥

अब देखना चाहिये कि यह सारावली कब बनी ? इसके अंतमें सूरदासजी लिखतेहैंः— "सरस समतसर लीला गावे युगल चरण चित लावे । गर्भवास बंदीखानेमें बहुरि सूर नहिं आवे ॥११०७॥" मुझे सरस संवत्सरका शब्द खटका और इसपर मैंनेमाननीयमहामहोपाध्याय श्रीपंडित सुधाकर द्विवेदीजीसे पूँछा इन्होंने बताया कि सरस नहीं यह शब्दष रस होसकता है जिसका अर्थसाठ होताहै और पहिले लोग सैकडाको छोडकर प्रायः लिखदिया करते थे, इससे संवत् १५६० का अनुमान हुआ. परंतु जो बिचारकर देखा तो यह बात सर्वथा असंगत प्रतीत हुई. क्योंकि एक तो "सरस सम्बत्सरलीलागावै" से विदित होताहै कि, यह फलस्तुति है. सम्भवहे इस लीलाहीका नाम सरससम्बत्सरलीलाहो. क्योंकि गोवर्धनपूजाके प्रसंगमेंभीसूरदासजीने लिखाहै "श्याम कह्यो सूरदासजीसों मेरी लीला सरस बनाय" दूसरे यह कि, हम ऊपर दिखला चुकेहैं कि सरसठ वर्षकी अवस्थामें यह ग्रंथ बना तो १५६०मेंसे ६७ निकालदीजिये तो १४९३ बचताहै जो कि श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुके जन्मके बहुत पहिले आता है और यदि श्रीगोसाईंजीके कालमें सूरदासजीकी मृत्यु उनके लेखानुसार मानीजाय तथा सूरदासजीने सम्वत १६०७ में साहित्यलहरी बनायीहै तब तो सूरदासजीकी अवस्था ११४ वर्षसेभी अधिक हो जातीहै, इससे इसे छोडकर साहित्यलहरीहीके सम्बतपर ध्यान देना चाहिये ॥ साहित्यलहरीमें सूरदासजीने यों सम्वत दिया हैः—

"मुनि पुनि रसनके रस लेप । दशन गौरीनंदको लिखि सुबल सम्बत पेप ॥ नंदनंदन मास छैतहीनत्रितियावार । नंदनंदनजनमते हैं बाण सुखआगार ॥ त्रितियरिक्ष सुकर्मयोग बिचारि सूर नवीन । नंदनंदन दासहित साहित्य लहरी कीन ॥ १०९ ॥"

मुनि=सात, रसन=एक, रस=छ, दशन गौरीनंद=एक अर्थात् १६०७ "अंकानां वामतो गतिः" नंदनंदनमास=बैशाख, अक्षय तृतीया कृत्तिकानक्षत्र सुकर्म योगमें साहित्यलहरी बनाया ।

साहित्यलहरीको सूरदासजीने सूरसागरसे दृष्टकूट पदोंको छांटकर संग्रह कियाहै अस्तु अब

× इसको जीवनचरित्रवाले पद "प्रथमही प्रथजगात"के इनपदोंसे मिलाइये "सातएँ दिन आय यदुपति कीन आप उद्धार, दियो चखदै कही शिशु सुनु मांगु वर जो चाइ । हौं कही प्रभु भगति चाहत शत्रुनाश सुभाइ॥ दूसरो ना रूप देखों देखि राधा श्याम । सुनत करुणासिन्धु भाषी एवमस्तु सुधाम ॥ प्रबल दक्षिण बिप्रकुलते शत्रु ह्वैहै नास । अमित बुद्धि विचारि विद्यमान माने मास ॥ नाम राखे मोर सूरजदास सूर सु श्याम । भए अन्तर्धान बीते पाछिली निशि याम ॥

१६०७ मेंसे सरसठ वर्ष निकाल दीजिये तो १५४० सम्बत्के लगभग उनके जन्मका समय लाया और इसके पीछे सम्बत् १६२० के लगभग उनकी मृत्यु मानलेनी चाहिये॥

सूरसागरके देखनेसे विदित होता है कि उस समयमें श्रीगोस्वामि हित हरिवंशजीको और स्वामि हरिदासजीके पूरे अभ्युदयका समयथा और उससमय के सब वैष्णवोंमें प्रेमथा सूरदासजी लिखते हैं:-

निशिदिन श्याम सेऊं मैं तो हिँ।इहै कृपा करि दीजै मोहिँ॥ नवनिकुंज सुखपुंजमें हरिवंशी हरिदासी जहाँ। हरि करुणा करि राखहु तहां॥ नित विहार आभार दे (पृष्ठ ३६२ पंक्ति १०)॥

ऐसा प्रतीत होताहै कि सूरदासजीने श्रीमद्भागवतको शृंखलापूर्वक एक समयमें नहीं बनाईथी क्योंकि वार्ता इत्यादिमें समय समय पर जो सबपद "खंजन नैन रूप रस माते।" आदि लिखे हैं प्रायः वे सभी इसमें आगयेहैं,और पूरा पूरा भागवतका अनुवादभी नहीं है बहुतसी कथा छोड़भीदीहै और कईएक उपासनाके अनुसार बढाभीदीहैं कुछ और पुराणोंसेभी सहायता लीहै. आप लिखते हैं:-

"वंदन रज बिधि सबैकह्यो बिधि दियो ऋषिन्ह बताइ। व्यास त्रिपद वामनपुराण कह्यो सू सोइ अब गाइ॥" (पृष्ठ ३६४ पंक्ति २२)

एक सूरदास और हुए हैं वह अपना नाम कवितामें सूरदास मदनमोहन रखतेथे सूरदासजीका नाम भारतवर्षमें ऐसा प्रसिद्ध होगया है कि सभी अंधोंको लोग सूरदास कहतेहैं और बहुतसे लोग आप कविता करिकै सूरदासजीकी छाप उसमें रखदेतेहैं. जिसमें वह कविताप्रसिद्ध होजाय.बाबू अक्षयकुमारदत्तने भ्रमवश अपने बंगला ग्रंथ "भारतवर्षीय उपासक सम्प्रदाय" में लिख दियाहै कि जितने अंधे फकीर एकतारा लेकर गातेहुये घूमते फिरतेहैं सब सूरदासके सम्प्रदायमें हैं सूरदासजीका जीवनचरित्र आगे दियेहुये लेखोंसे प्रगट होजायगर अतएव हम यहाँ कुछ अधिक लिखना आवश्यक नहीं समझते॥

पूज्यपाद भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी लिखित नोट सूरदासजीका।

संसारमें जो लोग भाषाकाव्य जानते होंगे वह सूरदासजीको अवश्य जानते होंगे और उसी तरह जोलोग थोडेभी वैष्णव होंगे,वे इनका थोडा बहुत जीवनचरित्रभी अवश्य जानते होंगे. चौरासी वार्ता, उसकी टीका,भक्तमाल और उसकीटीकामेंइनकाजीवन विवृत कियाहै.इन्हीं ग्रंथोंके अनुसार संसारको (और हमकोभी)विश्वास था(१) कियै सारस्वत ब्राह्मणहैं, इनकेपिताका नाम रामदास,इनके माता पिता दरिद्रीथे, ये गऊ घाटपर रहतेथे, इत्यादि. अब सुनिये एक पुस्तक सूरदासजीके दृष्टिकूटपर टीका (टीकाभी सम्भव होताहै उन्हींकी है,क्योंकि टीकामें जहाँ अलंकारोंके लक्षण दियेहैं वह दोहे और चौपाई भी सूरनामसे अंकितहैं.) मिलीहै. इस पुस्तकमें ११६ दृष्टिकूटके पद अलंकार और नायिकाके क्रमसे हैं और उनका स्पष्ट अर्थ और उनके अलंकार नायिका इत्यादि सबलिखे हैं. इस पुस्तकके अंतमें कविने अपना जीवनचरित्र दियाहै, जो नीचे प्रकाश किया जाताहै. अब इसको देखकर सूरदासजीके जीवनचरित्र और

(१) कविवचनसुधा प्राचीन पुस्तकावलीकी दूसरी जिल्दमें सूरदासजीका जीवनचरित्र देखो।

वंशको हमलोग औरही दृष्टिसे देखनेलगे. वह लिखतेहैं "प्रथमजगात" (२) प्रार्थज गोत्र (?) वंशमें इनके मूल पुरुष ब्रह्मराव (३) हुए जो बडे सिद्ध और देवप्रसाद लब्ध थे इनके वंशमें भौचंद (४) हुआ पृथ्वीराजने (५) जिसको ज्वालादेश दिया। उसके चार पुत्र जिनमें पहिला राजा हुआ. दूसरा गुणचद्र उसका पुत्र शीलचंद्र उसका पुत्र वीरचंद्र यह वीरचंद्र रत्नभ्रमर (रनथम्भौर) के राजा प्रसिद्ध हम्मीर (६) के साथ खेलताथा। इनके वंशमें हरिचन्द्र (७) हुआ उसके पुत्रके ७ पुत्र हुए जिनमें सबसे छोटा (कवि लिखताहै) मैं सूरजचन्द्रथा मेरे ६ भाई मुसलमानोंके युद्ध(८) में मारे गए। मैं अन्धाकुबुद्धिथा। एकदिनकुए- में गिरपडा तो सात दिन तक उस (अन्धे) कुएमें पडा रहा किसीने न निकाला सातवें दिन भगवानने निकाला और अपने स्वरूपका (नेत्र देकर) दर्शन कराया और मुझसे बोलेकि वर मांग मैंने वरमांगा कि आपका रूप देखकर अब और रूप न देखूं और मुझकोदृढभक्ति मिले और शत्रुओं (९) का नाश हो। भगवान्‌ने कहा ऐसाही होगा तू सब विद्यामें निपुण होगा प्रबल दक्षिणके ब्राह्मण(१०)कुलसे शत्रुका नाश होगा और मेरा नाम सूरजदास,सूर,सूरश्याम इत्यादि रखकर भगवान अन्तर्धान होगये। मैं ब्रजमें बसने लगा फिर गोसाईं (११) ने मेरी अष्ट (१२) छापमें थापना की इत्यादि। इसलेखसेऔरलेखअशुद्धमालूमहोतेहैं क्योंकिजैसेचौरासी वार्ताकी टीकामें लिखाहै कि दिल्लीके पास सीही गाँवमें इनका दरिद्री माता पिताके घरजन्महुआयहबात नहीं आई। यह ऐक बडे कुलमें उत्पन्न थे और आगरे वागोपाचलमेंइनकाजन्महुआहोयहमान-

---

(२) "प्रथमजगात"–इस जाति वा गोत्रके सारस्वत ब्राह्मण सुननेमें नहीं आए। पंडित राधाकृष्णसंगृहीत सारस्वत ब्राह्मणोंकी जातिमालामें "प्रथजगात" "प्रथ"–वा "जगात" नामके कोई सारस्वत ब्राह्मण नहीं होते। 'जगा वा जगातिया' तो भाटको कहतेहैं।

(३) ब्रह्मराव नामसेभी सन्देह होताहै कि यह पुरुष या तो राजा रहा हो या भाट।

(४) भौ शब्द हुआ अर्थमें लीजिये तो केवल चन्द्र नामथा। चन्द्रनामका एक कवि पृथ्वीराजकी सभामें था। आश्चर्य !!!

(५) पृथ्वीराजका काल सन् ११७६।

(६) हम्मीर चौहान भीमदेवका पुत्र था। रणथंभौरके किलेमें इसीकी रानी इसके अलाउद्दीन(दुष्ट)के हाथसे मारेजाने पर सहस्रावधि स्त्रीके साथ सती हुईथी। इसका वीरत्व यश सर्वधासारणमें हमीर हठके नामसे प्रसिद्ध है।

(तिरिया तेल हमीरहठ, चढे न दुजीवार) इसीकी स्तुतिमें अनेक कवियोंने वीररसके सुन्दर श्लोक बनाए हैं। 'मुञ्चति मुञ्चति कोषं भजति च भजति प्रकम्पमरिवर्गम्। हम्मीरवीरखड्गे त्यजति त्यजति क्षमामाशु।' इसका समय सन् १२९०। (एक हमीर सन् ११९२ में भी हुआहै)।

(७) सम्भवहै कि हरिचन्द्रके पुत्रका नाम रामचन्द्र रहाहोजिसे वैष्णवोंने अपनी रीतिके अनुसार रामदास कर लियाहो।

(८) उस समय तुगलकों और मुगलों का युद्ध होताथा॥

(९) शत्रुओंसे लौकिक अर्थ लीजिये तो मुगलोंका कुल (इससे सम्भव होताहै कि इनके पूर्वपुरुष सदासे राजाओंका आश्रय करके मुसलमानोंको शत्रु समझते थे या तुगलकोंके आश्रितथे इससे मुगलोंको शत्रु समझतेथे) यदि अलौकिकअर्थ लीजिए तो काम, क्रोधादि।

(१०) शिवाजीके सहायक पेशवाका कुल जिसने पीछे मुसलमानोंका नाश किया। अलौकिक अर्थ लीजिए तो सूरदास जीके गुरु श्रीवल्लभाचार्य्य दक्षिण ब्राह्मण कुलके थे।

(११) "गोसाईं"–श्रीविट्ठलनाथजी श्रीवल्लभाचार्यके पुत्र।

(१२) अष्टछाप-यथा-सूरदास, कुम्भनदास, परमानन्ददास, और कृष्णदास ये चार महात्मा आचार्य्यजीके सेवक और छीतस्वामि गोविन्दस्वामि, चतुरभुजदास और नन्ददास ये गोसाईंजीके सेवक। ये आठों महाकवि थे।

लिया जाय कि मुसल्मानोंके युद्धमें इनके भाइयोंके मारेजानेके पीछेभी इनके पिता जीते रहे और एक दरिद्रअवस्थामें पहुँच गएथे और उसी समयमें सीही गाँवमें चले गये हों तो लडमिल सक्ती है। जो हो हमारी भाषा कविताके राजाधिराज सूरदासजीएकइतने बडे वंशके हैं यहजान कर हमलोगोंको बडा आनन्द हुआ। इस विषयमें कोई और विद्वान जो कुछ और विशेष पता लगा सके तो वहभी उसे पत्रद्वारा प्रकाशित करें ॥

प्रथम ही प्रथ जगाते में प्रगट अद्भुत रूप। ब्रह्मराव विचारि ब्रह्मा राखु नाम अनूप ॥ पान पयदेवी दियो शिव आदिसुर सुख पाय।कहादुर्गा पुत्रतेरो भयो अति सुखदाय ॥ पार पायन सुरनके पितु सहित अस्तुति कीन। तासुवंश प्रशंस में भौ (१) चंद*चारु नवीन ॥ भूप

---

*दीपनिर्वाण नामक उपन्यासके पहले भागमें मुन्शी उदितनारायण वर्म्माने लिखाहैः-

"कविचन्द यथार्थ में एक प्रसिद्ध राजपूत महाकवि पृथ्वीराजके परमबन्धु थे, और पृथ्वीराजके सहवास ही में सर्व्वदा रहते थे। चन्दकवि पुस्तकमें कविचन्द्र के नाम से लिखे गये हैं। इङ्गलैण्डके सर फिलिप्सिड्नी और सर वाल्टर रयाली के समान वे काव्यविषयमें निपुण थे, युद्धविषय में भी वैसेही दूरदर्शी थे, किन्तु काव्यही उनके यशका चिह्न है. उनका सकल महाकाव्य राजपूत लोगोंके,विशेषतः पृथ्वीराजके कीर्तिकलाप और शूरता पराक्रममें वर्णन हुआ है। सुतराम् समस्त आर्यजाति में जैसे रामायण और महाभारत आदरणीय है, ग्रीक (यूनान) लोगोंमें जैसे होमर आदरणीय है, राजपूत लोगोंमें चन्दकविका काव्यसमूह भी वैसेही आदरणीय है। किन्तु चन्दकविका कपोलकल्पित काव्य बहुत कमहै, प्रकृत वृत्तान्तका भाग अधिक है। दुःखका विषय यही है कि उनका समस्त जीवनचरित्र कहींभी नहीं पाया जाता और उनके काव्यसमूहका अधिकांश प्रायः प्राचीन हिन्दीभाषामें छन्दोबद्ध है।

चन्दकविके विषय में शिवसिंहसरोजमें यों लिखा हैः-

चन्दकवि प्राचीन बंदीजन संभल निवासी संवत् ११९६ ए. चन्दकवि महाराजा वीसलदेव चौहानरनथंभौरवालेके प्राचीन कवीश्वरकी औलाद में थे. संवत्११२०में राजा पृथ्वीराजचौहानके पास आयेऔर मंत्री कवीश्वर दोनोंपदको प्राप्त हुएऔर पृथ्वीराज रायसा नामक एक ग्रन्थ एक लक्ष श्लोक संख्या भाषामें रचाजिसमें६९ खंड हैं औरजिसमें पुरानीबोलीहिन्दुओं की है इस ग्रन्थमें चन्दकविने संवत् ११२० से संवत् ११४९ तक पृथ्वीराज का जीवनचरित्र महाकविताईके साथ बहुत छन्दों में वर्णन किया है छप्पय छन्द तो मानों इसी कविके भागमें थीं जैसाचौपाई छन्द श्रीगोसाईंतुलसीदासकेहिस्से में पडी थीं इस ग्रन्थमें क्षत्रियोंकी वंशावली और अनेक युद्ध और आबू पहाडका माहात्म्य और दिल्ली इत्यादिराजधानियों की शोभा और क्षत्रियोंके स्वभाव चालचलन- व्यवहार बहुत विस्तारपूर्वक वर्णनकियेहैं ये कवि केवलकवीश्वरहीनहीं थे वरन् नीतिशास्त्र और चारनके काम काजमें महाशूरवीर थे संवत् ११४९ में साथ पृथ्वीराजके येभी मारेगए इन्हीकी औलादमें शार्ङ्गधर कवि थे जिन्होंने हमीररायसा और हमीरकाव्य भाषामें बनाया है।

शार्ङ्गधर कवि बंदीजन चंद कवीश्वर वंशी संवत् १३५७ये प्राचीन कवि चंद कवीश्वर के वंशमें संवत् १३३० के करीब उत्पन्न हुए थे। और राजा हमीरदेव चौहान रनथंभौर वालेके यहां जो राजा विशालदेवके वंशमें था रहा करते थे इन्होंने हमीररायसा १ और हमीरकाव्य २ ये दो ग्रन्थ महाउत्तम बनाए हैं हमीररायसा राजा हमीरकी प्रशंसामें लिखा है।

दोहा-सिंहगवन सपुरुषवचन, कदलि फरै इक वार। तिरिया तेल हमीरहठ, चढै न दूजी बार ॥ १॥

कवित्त-तंगन समेत काटि विहित मतंगनसों रुधिरसों रंगरण मंडलसों भरिगो ।सारंग सुकवि भन भूपतिभवानीसिंहपारथ समान महाभारत सों करिगो ॥ मारे देखि मुगुल तुराबखान ताहि समै काहू अस न जाना काहू नट सों उचारिगो।बाजीगर कैसी दगाबाजी करि हाथी हाथा हाथा हाथी हाथी ते सहादति उतरिगो ॥ १ ॥

चन्दकविके विषयमें पंडित श्रीमोहनलाल विष्णुलाल पंड्याने पृथ्वीराजरायसा की टिप्पणीमें लिखा है।

चंद वरदई-इस महाकाव्य का ग्रंथकर्त्ता कि जो हिन्दुओंके अंतिम बादशाह पृथ्वीराज जी चौहानका लंगोटिया मित्र और उनके दरबारका कविराज था। वह भट्ट जाति जो आज कल राव करके कहलाते हैं उसके जगात नामक गोत्रका था और उसके पुरुषा पंजाब देश लाहौर नगरके रहनेवाले थे और उनकी यजमानी अजमेरके चौहानोंकी थी। उसकी जैसी शूरवीरता इस महाकाव्यसे विदित होती है उसका मुख्य कारण यही है कि, वह पंजाब देशकी अद्यावधि

पृथ्वी (२) राज दीनों तिन्हैं ज्वालादेश । तनय ताके चार कीन्हों प्रथम आप नरेश॥दूसरे(३) गुणचंद तासुत शीलचंद सरूप । (४) वीरचंद प्रताप पूरण भयो अदभुत रूप ॥ रंतभार

प्रसिद्ध वीरभूमिके तत्त्वों से उत्पन्न हुआ था और राजपूतानेके हृदयरूपी अजमेर नगरमें बड़ा हुआ था यह षट् भाषा-व्याकरण, काव्य, साहित्य,छंद शास्त्र, ज्योतिष,वैद्यक,मंत्रशास्त्र,पुराण,नाटक और गान आदिक विद्याओंमें अच्छा व्युत्पन्न पंडित था । उसके पिताका नाम वेण और विद्या-गुरुका नाम गुरुप्रसाद था । उसकी दो स्त्रियोंके नाम कमला अर्थात् मेवा और गौरी अर्थात् राजोरा और एक लडकीका नाम राजबाई और दश लडकोंके नाम सूर १ सुन्दर २ सुजान ३ जल्ह ४ वल्ह ५ वलिभद्र ६ केहरि ७ वीरचंद ८ अवधूत अर्थात् योगराज ९ और गुणराज १० थे । इस महाकाव्यके विषयोंको वैसे तो उसने समय २ पर बनाकर कंठ कर रक्खे थे परन्तु उनको ग्रंथाकारमें उसने ६० दिनमें रचा था और अंतको उसने रायसाकी पुस्तक अपने लडके जल्ह नामकको दी थी । इस रायसेके अतिरिक्त उसके रचे और भी कईएक ग्रंथ सुनने में आतेहैं परंतु उनमें सबसे बडा ग्रंथ यह रायसा है और अन्य सब ग्रंथ अब विलकुल नहीं मिलतेहैं। उसका सविस्तर जीवनचरित्र और वंशावली जहाँ तक हमारे जाननेमें ख्यातादिसे आई है वह हम इस ग्रंथके समाप्त होनेपर छापकर प्रसिद्ध करेंगे ।

फिर लिखाहै-

छप्पय-"सम वनिता वर वंदि चंद जंपिय कोमल कल । शब्द ब्रह्म यह सत्य अपर पावन कादि निर्मल ॥
जिहित शब्द नहिं रूप रेख आकार ब्रन्न नहिं ॥ अकल अगाध अपार पार पावन त्रयपुर महिं ॥
तिहिं शब्द ब्रह्म रचना करौं गुरुप्रसाद सरसे प्रसन॥यद्यपि सु उकति चूकौं जुगति तौ कमल वदति कवितह हसन॥
छंद ॥ १३ ॥ रू० ॥ ८ ॥

८ चंद इस रूपक में अपनी स्त्रीको उसकीशंकाका उत्तर देकर समाधान करता है । शब्द ब्रह्म(स० शब्दात्मकं ब्रह्म) शब्दका प्रयोग चंदकी व्याकरण और वेदान्त विद्याके ज्ञान का द्योतक है । गुरुप्रसाद शब्द यहां श्लेषार्थमें कविने प्रयोग किया है क्योंकि ख्यातियोंके अनुसार चंदके विद्यागुरुका नाम गुरुप्रसाद था । यद्यपि कुछ विशेष वृत्त नहीं मिलते तथापि यह गुरुप्रसाद नामक पंजाब देशका रहनेवाला एक बडा पंडित हुआहै । कवितह चंदकी हिन्दीका निज प्रयोग है और उसका अर्थ कवित्त अर्थात् काव्य रचनेवाले कविका है । कि० २ पुस्तकमें जो बरवादि, अमल, अवल,त्रयपूर, महि,तिहि और प्रसन्न पाठ हैं वे अशुद्ध हैं ।

फिर लिखाहै-

"विहु वाह सूर सज्जे समंत । वेनै विरद बंधे अनंत" ॥ ६२३ ॥

यह छंद सं० १६४७ । १७७० और १८४५ की पुस्तकोंमें नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी में है ।

इस छंदकी अंतकी तुकमें "वेनै विरद बंधे अनंत" है कि जिसका अर्थ यह होता है कि वेनने अनेक विरद बांधे अर्थात् कहे । यह वेन कवि इस महाकाव्यके रचनेवाले चंदका पिता था और वह सोमेश्वर जीके इस समय साथ था । अब तक चंदसे पहिलेका कोई काव्य किसी भी कविका किसीके जानने में नहीं है किन्तु हमने जो एक चंद छंद वर्णन-की महिमा नामक पुस्तक सं० १६२९ की लिखी शोध की है उसके पीछे मेवाडराजके महाराणा जी श्री उदयसिंह जी के महाराजकुमार श्री सगतसिंहजीके पंडित विष्णुदासजीने अकबर बादशाहके भाट गंग जीसे अजमेरमें पटोलावायके मुकामपर चंदके बाप कवि राव वेनका नीचे लिखा छप्पय अर्थात् कवित्त लिखा था वह हम प्रकाश करतेहैं । इस छप्पयसे वेनने पृथ्वीराज जीके पिता सोमेश्वर जीको आशीश दी थी-

छप्पय-अटल ठाट महि पाट, अटल तारागढ थानं । अटल नग्र अजमेर, अटल हिंदव अस्थानं ॥
अटल तेज परताप, अटल लंका गढ डंडिव । अटल आप चहुवान, अटलभूमीयशमंडिव ॥
संभरि भूप सोमेश नृप, अटल छत्र ओपे सु सर । कविराव वेन अशाशि दे, अटल युगां राजेश कर ॥

इसीके साथ उसी पुस्तक में चंदके नागापत्रकरणाका कहा हुआ यह नीचे लिखा दोहा भी लिखाहै:-

दोहा-ले कूंजा नृप पीथुला, सामंत चमू समंद । वेन नँदन कनवज गमन, चंद करन कइ दंद ॥

पृथ्वीराज रायसेकी प्रथम संरक्षामें लिखाहै-

इसके सिवाय फारसी और जम्मूकी तवारीख भी इस बातकी साक्षी देती है कि चंद हमारे हिन्दुओंके अंतिमबादशाहका परमप्रिय कविराज और सहचर था । यदि हम उन पुस्तकोंका मूल उद्धृत करके यहां प्रमाण में प्रवेश करें तो ग्रंथके बहुत बढ जाने का भय है । अतएव हम मेजर रेवर्टी साहबकी एक टिप्पणीको उद्धृत कर प्रमाणमें इस अभिप्रायसे देते हैं कि हमारे पाठकोंको इस विषयका अनुभव एक थोडीसी पंक्तियोंसे ही होजाय । नीचे लिखी थोडी सी पंक्तियें केवल

हमीर भूपत संग खेलत आप। तासु वंश अनूप भो हरचंद अति विख्यात ॥ आगरे रहि गोपचल में रहो ता सुत बीर। पुत्र जनमें सात ताके महाभट गंभीर ॥ कृष्णचंद (५) उदारचंद जो रूपचंद सुभाइ। बुद्धचंद प्रकाश चौथो चंद भौ सुखदाइ ॥ देवचंदप्रबोध संश्रृत (६)चंद ताको नाम। भयो सप्तो नाम सूरज चंद मंद निकाम ॥ सो समर करि साहि सेवकगये(७) विधिके लोक। रहोसूरजचंद दृगते हीन भर वर शोक ॥ परो कूप पुकार काहू सुनीनासंसार। सातयें दिन आइ यदुपति कियो आप उधार ॥दियो(८)चखदैकही शिशु सुनु मांग बरजोचाइ। होंकहों प्रभु भगत चाहत शत्रु नाश सुभाइ ॥ दूसरो ना रूप देखों देखि राधा श्याम। सुनत करुणासिंधु भाषी एवमस्तु सुधाम ॥ प्रबल छद छिन विप्रकुलते शत्रु हुइहैं नास। अषित (९) बुद्धि बिचारि विद्यामान माने मास ॥ नाम राखे मोर सूरजदास, सूर, सुश्याम। भयेअंतर्धान बीते पाछली निशि याम ॥ मोहि पनसो (१०) इहै ब्रजकी बसे सुख चित थाप। थपि(११) गोसाईं करी मेरी आठ मध्ये छाप ॥ विप्र प्रथजगात को है भाव भूर निकाम।सूरहै नँदनंदजूको लियो मोल गुलाम ॥ ११८ ॥

अर्थ सुगम– सूर आपन वंश वर्णत है ॥ ११८॥

यही नहीं सिद्ध करता कि चंद कवि पृथ्वीराजजीके समयमें हुआ था परन्तु रायसेमें लिखे कतिपय और वृत्तान्त भी कुछ फेरफारके साथ सिद्ध करता है।

(मेजर रैवर्टी साहबकृत तबकात नासरी पृष्ठ ४८६)

हिन्दू लोग एक भिन्न वृत्तांत लिखते हैं कि उसीको अब्बुलफजलने और जम्मूकी तवारीख वालेने भी थोडेसे फरकके साथ वर्णन कियाहै–

यद्यपि फारसी इतिहासवेत्ता लिखते हैं कि रायपिथौरा तलावरी (तराई) पर लडाई में मारा गया और मुईजुद्दीन दमयकमें एक खोखरके हाथसे मारा गया कि जो इसी कामके लिये उतारू हो रहा था, और ऐसेही वृत्तान्तका अवलंब तवकात और अकबरी और फरिश्ता के ग्रंथकर्त्ताओंने किया है, तथापि हिन्दू भटोंके जुबानी वर्णनसे कि जो प्रत्येक नामांकित शाखेकी ख्यातोंके भंडार हैं, और जो पीढियों तक कंठस्थ वृत्तान्त एक दूसरे को उपदेश करते आये हैं, यह वर्णन किया गयाहै कि राव पिथौराके लडाईमें कैद होजाने और गजनीको ले गये पीछे एक चंद जिसे कोई चांदा करके भी लिखते हैं, कि जो राय पिथौराका स्तुतिपाठक और विश्वासी सहचर था और कोई कोई ग्रंथकर्त्ता उसे राय पिथौराका कविराज करके भी लिखतेहैं, वह अपने आपदाग्रस्त स्वामीकी खबर लेनेको गजनी पहुँचा वह अपने अच्छे प्रयत्नोंके बलसे प्रबंध कर सुलतान मुईजुद्दीनकी सेवामें प्राप्त हुआ और बंदीगृहमें राय पिथौराके साथ बातचीत करनेमें भी सफल हुआ. यह दोनों किसी एक युक्ति पर सम्मत हुए और एक दिन चंदने अपने छलबलके द्वारा सुलतानके मनमें राय पिथौराकी बाणविद्याकी परमकुशलता देखनेकी नितान्त इच्छा उत्पन्न की और उसको चंदाने इतनी सराही कि सुलतानका मन उसे देखे विना न रहने लगा. निदान बँधुआ राजा सन्मुख लाया गया और उससे उसकी बाण विद्याकी परमकुशलता दिखानेकी बिनती की गई। उसके हाथमें एक धनुष और बाण दिये गये। उसने अपनी स्वीकृत युक्तिके अनुसार जो निशाना सुलतानने नियत कराया था उसे छोड कर खास सुलतानके ही बाण मारा कि वह वहीं मरगया और सुलतानके पासवालोंने राय पिथौरा और चंदाको काटकर टुकडे टुकडे कर डाले।

जम्मूकी तवारीखवाला लिखता है कि राय पिथौरा अंधाकर (देखो टिप्पण १ पृष्ठ ४६६) दिया गया था और जब वह बंदीगृह से बाहर लाया गया और उसके निज धनुष और बाण उसे दिये गये।यद्यपि वह अंधाथा तथापि उसने बाण चढाकर और साध कर सुलतानके शब्दके अनुसंधान और चंदा की सूचनाके अनुसार सीधा ऐसा मारा कि वह सुलतानके जाकर लगा। बाकीका वृत्तान्त तदनुसार ही है।

इति श्रीपदकूट सूरदासटीका संयुक्त संपूर्णम्।

टिप्पणी–सरदार कविने कईएक स्थान इस भजन में पाठान्तर किया है वह अंक देकर नीचे लिखा है।

(१) शुभमें (२) पृथ्वीराज (३) रंतभौर (४) सुखअवदात (५) कृतचंद (६) षष्टम (७) साहिसे सब (८) दिव्य (९) अखिल (१०) मनसा (११) श्रीसूरदासके विषयमें ग्रंथके अन्तमें लिखा जायगा।

एकसौ अठारह पदकी टिप्पणीमें लिखा है कि ग्रंथके अंतमेंसूरदासके विषयमें लिखा जायगा अतएव यहां इससमय मुझे जहांतक सूरदासके विषयमें लेख मिले हैं उन सबोंको यहां प्रकाश करताहूं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजीने चरितावली और सूरशतक पूर्वार्धमें जो लिखा है उसे छोड देताहूं। सूरदासके समयसे अनेक कवियोंका समय निर्णय होगा।

रामरसिकावली--महाराज रघुराजसिंहकृत-

दोहा—सूरदासजी जगविदित, श्रीउद्धव अवतार। कथा पुराणांतर कथित, वर्णन करोंउदार॥१॥

चौपाई—जब मथुरामें श्रीनँदलाला। गोपिनको विज्ञानविशाला॥१॥
सादर करन हेतु उपदेशू। पठयो उद्धव गोकुल देशू॥२॥
तहँ गोपिन पर प्रेम परेखी। उद्धव बोले ज्ञानविशेखी॥३॥
धारि भक्तिहरिनिजउरमाहीं। आवतभेपुरमथुराकाहीं॥४॥
राखिभावउरगोपिनकेरो। लख्योसंगहरिचरितघनेरो॥५॥
तब उद्धवको श्रीयदुराया। बदरीनाथ कान्ह पठवाया॥६॥
यह सुवासना ऊधवके तब। रहों आयब्रजएकबार कब॥७॥
गोपिनकोअनूप अनुरागा। हरिलीला जो ब्रजसब जागा॥८॥
सो रसनाते वर्णन करहूं। बर संतोष हियेपर धरहूँ॥९॥
कीन्हें यही बासना काहीं। उद्धव प्रगट भये कलि माहीं॥१०॥
सूरदासते संत शिरोमणि। विरचनसवालाखपदकोगुणि॥११॥
करिसंकलपमुदितमनसामें। हरि लीला विभूतिहू तामें॥१२॥

दोहा—वरण्योतिमिगोपीनको, जोयथार्थअनुराग। विरचिकृष्णपदसूरवदि, सहस्रपचीसअदाग॥
पूरण कीन्होंसूर प्रण, सूरश्यामजहँ होय। सो पद विरच्योकृष्णही, जानिलेहु सब कोय॥३॥
महाघोर कलिकाल महँ, जन्म लेवदुख दूर। दृग विकार गुणि याहिते, सूरदास भे सूर॥४॥

चौपाई—जन्महिते हैं नैन विहीना। दिव्य दृष्टि देखिहिं सुखभीना॥१॥
लीन परीक्षा सो तेहि नारी। एक समै अस वचन उचारी॥२॥
प्रिय मोहिं सकल ग्रामकीवामा। मोसों कहहिं वचनअसिवामा॥३॥
तू केहि देखन करहि शृंगारा। तेरो पति तो अंध अपारा॥४॥
सुनिके सूर कही यह बानी। आजु शृंगार भली विधि ठानी॥५॥
वह इस्त्रिनको ले निज संगा। बैठहु आइ इहां सउमंगा॥६॥
भूषण तुव विगरो जो होई। देहैं हम बताइ सत सोई॥७॥
सुनि यह सूरदासकी नारी। सब भूषण निज अंग सँवारी॥८॥
बेंदी देत भयी नहिं भाला। सूर बोलायो ढिग तब बाला॥९॥
तिय भूषन सब अंग निहारी। सूरदास बोल्यो सुधधारी॥१०॥
बेंदी भाल दियो क्यों नाहीं। लखि प्रभाव यह सूर तहाँहीं॥११॥
कीन्हें सकल लोग जय शोरा। ख्यात बात भै जग सब ठोरा॥१२॥

दो०– है विरक्तसंसारते,दिव्यदृष्टि हरि ध्यान। सूरदासकरते रहे,निशिदिन बिदित जहान॥१॥
सूरदास इतिहास बहु, परचै अहैं अनेक। जानि लेहु सब संतजन कहौं नेक सविवेक॥२॥
कवित्त–कविकुल कोक कंज पाइकै किरिनि काव्य विकसे चिनोदित है नेरे और दूरके। सूखिगो अज्ञानपंक मन्दभो मयंकमोह विषयविकार अन्धकारमिटेकूरके॥ हरिकी विमुखताई रजनी पराइ गई मूक भये कुकवि उलूक रस झूकके। छायो तेज पुहुमिमें रघुराज रूर हरिजन जीव मूर सूर उदै होत सूरके॥ १॥ मतिराम *(१) भूषण (२) बिहारी (३) नीलकंठ (४) गंग (५) बेनी (६) शंभु (७) तोष (८)चिंतामणि (९) कालिदास (१०) की। ठाकुर (११) नेवाज (१२) सेनापति (१३) शुकदेव (१४) देव (१५) पजनेश (१६) घनानन्द (१७) घनश्यामदास (१८) की॥सुन्दर (१९) मुरारी (२०) बोधा (२१) श्रीपति हू (२२) दयानिधि(२३)युगल (२४)कविंद (२५)त्योंगोविंद (२६) केशौदास(२७) की।भनै रघुराज और कविन अनूठी उक्ति मोहिं लगी जूंठी जानि जूंठी सूरदासकी॥२॥ अखिल अनूठी उक्ति युक्ति नहिं झूठी नेकु सुधाहूते सरस सरस को सुनावतो। उद्धत विराग भाग सहित अनेक राग हरिको अदाग अनुराग को सिखावतो॥ जगत उजागर अमलपद आगर नट नागर ध्याय सूर-सागर को गावतो। भाषै रघुराज राधा माधवको रास रस कौन प्रगटावतो जो सूर नहिं आवतो॥३॥साह सुन्यो सुरनसे बेगही बुलायो दिल्ली पूछ्यो कौन हो तू सूर कह्यो पूंछो बेटीसों। साह कह्यो जानो कैसे सूर कह्यो जंघ तिल साह पुछवायो सो तुरत एक चेटीसों॥ कन्या कह्यो कहत तुरंत ही शरीर छूटी हठपरे कहि तनु तजि हरि भेटीसों। भनै रघुराज साह सूर पद शिर नाय पूछ हरिदास मोरिभवभीत मेटीसों॥४॥गोकुल में रास होत राधाजूने मान कीन्हों हरि मान मोरबेको उद्धवै पठायो है। जानि गुरुमान कह्यो नेसुक कटुक बैन दीनी वृषभानुसुता शापको पठायो है॥धारिये मनुज तनु तारिये जगत जाइ सकल सुनाइये जो रास रस भायो है। भनै रघुराज सोई उद्धव अवनि आइ रसिक शिरोमणि सो सूर कहवायो है॥५॥

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने'शिवसिंहसरोज' पढनेके समय में जिन जिन कवियोंके विषयमें कुछ लिखा है उनमें अकबर और गंगके इतिहास पर अपनी राय नाम मात्रको लिखी है उसे नीचे प्रकाश करता हूं।

अकबर।

अकबर बादशाह दिल्ली सं० १५८४में हुए इनके हालात में अकबरनामा१आईनअकबरी२ तवकाहत अकबरी ३तारीख अब्दुल्कादिर बदाऊनी४इत्यादिबडीबडी किताबेंलिखीगई हैं जिनसे इस महाप्रतापीबादशाहका जीवनचरित्र साफ साफ प्रगट होता है यहां केवल हमको उनकी कविता-का वर्णन करना अवश्य है सोहमको कोई ग्रंथ इनका नहीं मिला दो चार कवित्त जो मिलेहैं सो हमने लिखाहै. जहांगीर बादशाहने अपने जीवनचरित्रकी किताब तुजक जहांगीरीमें लिखाहै कि अकबर बादशाह कुछ पढे लिखे न थे परंतु मौलाना अब्दुलकादिरकी किताबसे प्रगट है कि अकबरशाह संस्कृत महाभारतको एक रात आपही उल्था कराने बैठे और सुल्तान मोहम्मद थानेसरी औरखुदमौलाना बदायूनी और शेखफैजीने जहां जहां कुछ आशय छोड दियाथा उसे

* अंकवाले कवियोंका वर्णन आगे किया जायगा।

फिर तर्जुमा होनेको हुकुम दिया इनके समयमें नरहरि १ करन २ हाल ३ खानखाना ४ बीरबर ५ गंग ६इत्यादि बडे बडे कवि हुए हैं परंतु खास जो कवि नौकर थे उनके नाम इस सवैयासे प्रगटहोंगे। सवैया–पृथी प्रसिद्ध पुरंदर ब्रह्म सुधारस अमृत अमृत वानी। गोकुल गोप गुपाल गणेश गुणी गुणसागर गंग सु ज्ञानी॥ जोध जगन्नज में जगदीश जगामग जैत जगत्त है जानी। कोर अकब्बर सैन कथी एतने मिलिकै कविता जु बखानी॥ १॥

श्रीगोसाईं तुलसीदास तौ दरबारमें हाजिर नहीं हुए * सूरदास जी और बाबा रामदास उनके पिता गानेवालोंमें नौकर थे × जैसा कि आईन अकबरी में लिखाहै केशवदास जी उस समयमें इनके मंत्री श्रीराजा बीरबरके दरबार में हाजिर हुए थे जब इन्द्रजीत राजा उडछा बुंदेलखंडी प्रबीन राइ पातुरीके लिये बादशाही कोपमें था।

दोहा–जाको यश है जगतमें, जगत सराहे जाहि। ताको जीवन सफलहै, कहत अकब्बर शाहि॥१॥

गंग।

गंगकवि (गंगाप्रसाद ब्राह्मण एकनौर जिला इटावा अथवा बंदीजन दिल्ली वाल) सं० १५९५में हुए. गंगाकविको हम सुनते रहे कि दिल्लीके बंदीजन हैं और अकबरबादशाहके यहां थे जैसा किसी कविने बंदीजनोंकी प्रशंसामें यह कवित्त लिखा है।

कवित्त–प्रथम विधाताते × प्रगट भये बंदीजन पुनि पृथु यज्ञ ते प्रकाश सरसात है।
माने सूत शौनकन सुनत पुराण रह यशको बखाने महासुख बरसातहै॥
चंद्र चौहानके केदार गोरी साह जूके गंग अकबरके बखाने गुण गातहै।
काग कैसे मास अजनास धन भाटनको लूटि धरे जाको खरा खोज मिटिजातहै॥१॥

परंतु अब जो हमने जांचातौ विदितहुआकि गंगकवि एकनौरगांउजिलाइटावाकेब्राह्मणथेजब गंग मरगये हैं और जैनखाँ हाकिमने एकनौर में कछु जुलुम किया तब गंगजीके पुत्रने जहांगीर शाहके यहाँ यह कवित्त अरजीके तौरपर दिया है। जैनखां जुनारदार मारे एकनौरके; । जुनारदार फारसीमें जनेऊ रखनेवालेका नामहै लेकिन् खास ब्राह्मणहीको जुनारदार कहतेहैं खैर जो हो हमको इसबातमें बहुत लिखनेसे कुछ मतलब नहीं गंगजीमहान् कविथे राजा बीरबलने गंगको इस छप्पयमें (भ्रमर भ्रमत) एक लक्ष रुपया इनाम दिया इसी प्रकारसे अकबर, जहाँगीर; बीरबर, खानखाना; मानसिंह सवाई इत्यादि सबोंने गंगको बहुत दान मान दियाहै।

भक्तविनोद-कवि मियांसिंह कृतसे:–

दो०-करनविमलमनहरनतम; दमन त्रिविधदुख दोष। भक्ति महातम करहुँकल; कथनललितप्रदमोष
नाशन कुमतिकृतांत भय, भासनभानु प्रबोध। सुमति विकासन भक्तजन, दलनमदनमदक्रोध
चौपाई–कृष्ण देव जब जनन उबारा। मथुरा लीन ललित अवतारा।
किए कृपालु चरित जस चारू। सो मनहरन विदित संसारू॥ १॥
तब यादव इक भक्त प्रवीना। कृष्ण सरोज चरण मन लीना।
सूर नयन वर वंश उजागर। उपज्यो भक्त सृष्ट गुणसागर॥ २॥

* श्रीतुलसीदासजीका काल यह नहीं है। हरिश्चंद्र। +श्रीसूरदास कहीं नौकर न हुए। हरिश्चंद्र
× सूरदासजीके पदसे मिलाना। हरिश्चंद्र।

सखा पुनीत मीत व्रत धारी। मन वच कर्म कृष्ण हितकारी।
जब मथुरा तजि करत पयाना। द्वारावती आय भगवाना॥ ३॥
ते किमि चंचरीक बड भागी। सकहिं सरोज चरण प्रभु त्यागी।
भक्ति प्रेम कल नवल उमंगा। आयो दिनदयालु कर संगा॥ ४॥
यद्यपि आनँद भवन प्रसादू। ताके तहाँ सुलभ सब साधू।
पै निवास वृंदावन चारू। बिहरन कुंज गलिन मनहारू॥ ५॥
कृष्ण संग नित नवल विलासा। सो न पलक कल बिसरत तासा।
तन मथुरा वृंदावन मनुआं। लग्यो रहत निश दिवस अननुआं॥ ६॥
करि सुमरन कल कुंजन शोभा। होंत प्रबल जिय यादव छोभा।
प्रभु सन बार बार अस बरनी। नम्रत बिनय दिवस निशि करनी॥ ७॥
कृपा निकेत जनन सुखदाई। तुव सन कवन दिवस शुभ जाई।
शुचि भंडीर विपिन मनहरना। रविजा कुंज स नख नग धरना॥ ८॥
आन ललित लावण्य तनीके। देहु दैव परमप्रिय जीके।
जब लगि जियन नाथ संसारा। सो प्रमोद किमि बिसरन हारा॥ ९॥
अस प्रकार उतकंठित रहना। वृंदाविपिन अहर निशि कहना।
काल पाय तब भक्त उबारा। लिये संग यादव परिवारा॥ १०॥

दोहा–करिकौतुककरुणायतन,निजविकुंठकलधाम। गएगमनकरिभवनमुद,रमारमनअभिराम॥

चौपाई–ते यादव हरि भक्त सुजाना। तहाँपि जोरि युगल निज पाना।
वृन्दावन दरशन अनुरागा। नम्रत बिनय करन अस लागा॥ १॥
चलन होहिं तुव दीन सनेहू। कब कृपालु बृन्दाबन तेहू।
सो अरण्य कल कुंज सुहाए। दीननाथ मोरे मन भाये॥ २॥
बिसरत सो न भक्त सुखदाई। एक बार प्रभु देहु दिखाई।
तासु कथन सुनि त्रिभुवनराई। बोले वदन वचन मुसुकाई॥ ३॥
सुनहू मीत पूरवत ताहीं। मोर गमन बृन्दावन माहीं।
अब नहोहिं पयभक्त सुजाना। मैं परिवार सहित निज नाना॥ ४॥
कुंज कुंज राधा युत चारू। तहाँ निवास करहुँ मन हारू।
ते मथुरा बृन्दावन जोहीं। जन वैकुंठ अधिक प्रिय मोहीं॥ ५॥
जबते तज्यो मनोहर नगरी। कलित कुंज लीला निज सगरी।
तबते यद्यपि मोर सुहावा। इह वैकुंठ अखिल सुख छावा॥ ६॥
तद्यपि तिहि समान सुखदाई। उपज्यो नहिंन तनक सुख भाई।
जिमि वाराणशि शंकर काहीं। विदित विश्व प्रिय मानस माहीं॥ ७॥
तजत न तासु दैव त्रिपुरारी। तिमि मथुरा मोहिं प्राणन प्यारी।
अजहुँ समरण होत मन भाई। ललित बाललीला सुखदाई॥ ८॥

दो०–मृतिकाभक्षण पूतना, शकटविभंजन मित्र। अर्जुनयमलजमदहरन, अघ बकवदनचरित्र॥१॥
कालीपद क्षय करन पुनि, मोह नलिनभव देन। बृंदावन बंसीबजन, चरन चारु बरधेन॥२॥

धेनुक वधन प्रलंब पुनि, तृणावर्त वश काल। बृंदावन रक्षाकरन, नग नख धरण रसाल ॥ ३ ॥
रचन रास लीलादि पुनि, वचन सखन सखिसंग। केसिविध्वंसननंदकुल, त्रातनहृदय उमंग ॥
दावानलकर शमन पुनि, ग्वालन सन मन चाउ। वन वन विहरन सजन सुन, हनन कंसरिपु राउ॥५॥
जननि जनक बंधन मुकत, चरित चारु इत्यादि। जबजब होबसमरण इह, उपजत हृदय दुखादि ॥

चौपाई—सदा रहत मानस उतकंठा। तजि निज रुचिर धाम वैकुंठा।
पुनि कब वपुष पूर्ववत धारी। अद्भुत करहुँ चरित मनहारी ॥१॥
जे जन भक्ति निरत बड भागे। मोर प्रेम पावन रस पागे।
हृदय कुतर्क कपट सब खोई। मोर रुचिर लीला कृत जोई ॥२॥
यथा विधान रास विरचाई। गायन श्रवण करहिं मन लाई।
सो साक्षात विश्व शुभ चारी। मोर स्वरूप भक्त व्रत धारी ॥३॥
मथुरा धारि जन्म त्रिय जोई। मोर ललित उत्सव पर होई।
सो मोहिं यशुमति मातु समाना। सुनहु आन अबभक्त सुजाना ॥४॥
जे नर मोर जन्म दिन लेखी। धारि रुचिर व्रत भक्ति विशेषी।
बालरूप मम पूजन करहीं। आवागमन सहज श्रम हरहीं ॥ ५ ॥
करि प्रवेश मथुरापुरि माहीं। जो जन करहिंरटनमोहिंकाहीं।
भक्त मोर सो प्राणन प्यारू। ताकर तरन सुमन संभारू ॥ ६ ॥
अब तोहिं जोपि भक्तबडभागा। मथुरा गमन प्रीति अनुरागा।
तो अब सुनहु कथन कल मोरा। संतत भक्त सृष्ट हित तोरा ॥ ७॥
जेहि ते तहां सजन तुव जाई। सोउ लेहु सुख कीरति पाई।
अस कहि कृष्ण देव भगवाना। लागे तासु प्रबोधन ज्ञाना ॥८॥
कलीकाल सन्ध्या अवसाना। मथुरा प्रांत भक्त गुणखाना।
सुभ्रत विप्र वंश उपजाई। मथुरा मोर ललित पुर आई॥ ९ ॥
मोर जन्म लीला गत पारू। करत करत गायन व्रत धारू।
सोउ अखंड सुशय सुख जोहीं। होहिं भक्तजन प्रापत तोहीं ॥ २॥
बहुरि मोर लीला मनभायन। प्राकृत वदन सफुट जब गायन।
कीन तुमहु संगीत प्रकारू। सुभ्रत ललित प्रेम रससारू ॥११॥
सुनत लोक कलिकाल मँझारा। हुइहैं भक्ति निरत संसारा।
बढहि मोर चरणन अनुरागा। उधरहिं तुव प्रसाद बड़भागा ॥१२॥
पै तुव जन्म अन्ध दृग हीना। जननि जनक अस देखि प्रवीना।

दोहा—पालहिं जन समान कछु, सुतसनेहवश तोहिं। आन शंक बांधव सुहृद, सोनकरहिं हितकोइ॥

चौपाई—केवल जननि करहिं तुमसेवा। अस कहि बदन भक्त द्रुम देवा।
भए विराम कृष्ण घन बरना। तब प्रणाम करि यादव चरना ॥१॥
कलि सन्ध्या कर अंत प्रवीना। सोचन लग्यो भक्त मन लीना।
सो जब समय आय नियराना। तजि विकुंठ यादव गुणखाना ॥२॥
मथुरा प्रांत विप्र वर गेहा। भा उत्पन्न भक्ति हरि नेहा।

जन्म अंध दृग ज्योति विहीना। जननि जनक कछु हर्ष न कीना ॥ ३ ॥
रहे मौन बांधव समुदाई। करहिं प्रीति केवल इक माई।
अष्ट वर्ष कर जानि सुहावा। यज्ञोपवित जनक तब पावा ॥ ४ ॥
भयो प्रसिद्ध नगर अभिरामा। सूरदास ताकर अस नामा।
अवसर एक मातु पितु संगा। आन लोक पुर प्रेम उमंगा ॥ ५ ॥
कृष्ण जन्म पुरि दरशनलागी। आये सकल सदन निजत्यागी।
करि यात्रा बिधिवत अनुरागे। जब निज सदन चलन सब लागे ॥ ६ ॥
सूरदास तब कहत उचारी। मैं अब इहां सदन नग धारी।
कछुदिनकरहुँललितनिजबासा। कृष्णप्रसाद विगत श्रम त्रासा ॥ ७ ॥
तुव निज गवँहु सदनशुभ काहीं। चिंता मोरि करहु कछु नाहीं।
सुनिअसजननिजनकतेहिबानी। सुत सनेह निज मानसबानी ॥ ८ ॥
रुदन करत अस वचन उचारे। बसत अंध दृग युगल तुम्हारे।
करहिं कवन भोजन पट दाना। शिशु निदान तुव देश विराना ॥ ९ ॥
कसतजिजाहिं सुवन पितु माता। काहु न देखि परत तुव त्राता।
सुनिअसजननिजनकमुखबानी। कृष्ण भरोस सूर जिय मानी ॥ १० ॥

दो०—बोल्योअभयप्रसन्नमन,बदनवचनसुखदान।तुवजियकरहुनसोचकछु,मोहिंविदेशअसजान

चौपाई—मोरे कृष्ण देव भगवाना। करनहार कल पालन त्राना।
अन्ध दीन बलहीनन कोही। पोषन करत दैव प्रभु सोही ॥ १ ॥
शरन चरन दुख हरन करीके। परे कोटि अस मोर सरीके।
दीनबन्धु जन दीननपाला। दीननाथ प्रभु दीनदयाला ॥ २ ॥
दीन हरन भय दीन उबारन। दीन सुखद दुख दीन निवारन।
अस प्रकार जब दीन सहाए। विदित पुराण वेद श्रुति गाए ॥ ३ ॥
मोरे कस न होहिं तब मय्या। जानि दीन दृग हीन सहय्या।
तब अस सुनत वचन वर ताहू। साधु जठर दाया वश काहू ॥ ४ ॥
बोल्यो सूर मातु पितु काहीं। तुव न करहु चिन्ता जिय माहीं।
हर्षि जाहु सुश्रम निज गेहू। तुव दृग हीन बाल बर एहू ॥ ५ ॥
मोरे बसहिं सदन सुख मानी। अस कहि गहत संत शुभ पानी।
चल्यो प्रसन्न लेत कल भवने। उत पितु मातु सदन निज गवने ॥ ६ ॥
साधु सनेह प्रीति अवलोकी। भई प्रसन्न मातु गत शोकी।
सूरदास मानस अनुरागा। प्रमुदित बसन संत गृह लागा ॥ ७ ॥
पूरब चरित कृष्ण कल गायन। रह्यो सुनत सादर मनभायन।
आपु प्रेम युत भक्ति उमंगा। वैष्णव संत जनन कर संगा ॥ ८ ॥
नृत्य गीत गायन करि चारू। कृष्ण चरित्र विमल मनहारू।
प्रभु अद्भुत लीला जिमि कीनी। आदि उपांत श्रवन करिलीनी ॥ ९ ॥
तासु प्रसाद कृष्ण भगवाना। सो पूरब संचित निज ज्ञाना।

अनुभव भयो विदित सब भास्यो। दैवचरितलीलादि बिलास्यो॥ १०॥

दो०–भयोछकितउनमत्तवत,प्रेमासवकरिपान।कृष्णचरितपदनवलनित,निजविरचितरुचिमान

चौपाई–अस प्रकार कृत नवल सुहाई। भक्त सृष्ट कल कुंजन जाई।
करि प्रति दिवस मधुर स्वर गायन। भयो कृष्णपद भक्तिपरायन॥ १॥
मथुरा निवसि सुयश सुख लय्यो। सूर विदित सब देशन भय्यो।
निर्मित तासु ललित पद पावन। संसृति गाय लोक मनभावन॥ २॥
वैष्णव भए भक्ति रसनागर। भक्त प्रधान सुयश वन सागर।
सूरदास हरि गुण गण गाते। जहँ जहँ फिरहिं भक्त मदमाते॥ ३॥
तहँ तहँ भक्तिविवश अनुरागे। पाछे फिरहिं तासु प्रभु लागे।
सूर चरित पाछिल भगवाना। ग्वाल केलि वन धेनु चराना॥ ४॥
निज अनुभव इत्यादि सुहाए। देखत रहत भक्ति सरसाए।
ब्रह्मानंद मगन दिन राती। प्रेमभक्ति कछु कही न जाती॥ ५॥

दो०–एकदिवसमारगचलत,विधुनकूपकल कोय।दृगविहीनचीन्ह्यो नकछु,लग्योभक्तच्युनहीय

चौपाई–तब भगवान भक्त रखवारे। अद्भुत गोप वेष निज धारे॥
गहत करन कर तुरत मुरारी। भक्त कूप च्युत लीन निवारी॥ १॥
करि कर हरण त्रास कर केरा। सूर सपरश लेत जिय हेरा॥
इह कर जानिपरत नर नाहीं। करि बिचार करुणानिधि काहीं॥ २॥
करते लीन पकरि कर संगा। कहिस वचन मन मोद उमंगा॥
अब न तजहुं बिन साँच बखाने। तब भगवान बदन मुसकाने॥ ३॥
सूर करन कर करि बरजोरा। चले छुडाइ भक्त चितचोरा॥
अस जिय जानि दैव चतुराई। ब्रह्मानन्द सूर सुख पाई॥ ४॥
मानत भयो भूरि निज भागा। करसों कर कृपालु जब लागा॥
गदगद गिरा प्रेम दृग वारी। बोल्यो बदन बचन मनहारी॥
बंदहुँ बार बार प्रभु तोहीं। जो अस निबल जानि जिय मोहीं॥
केशी कंस असुर मद गंजा। लीन छुडाय सबल कर कंजा॥ ६॥

दो०–काह भयो करते छुटे,कर्णधार भवसिंधु। मनते छूटन कठिन जन, भक्त कुमुद उर इंदु॥१॥
अबतो बलकर तोरिकर, चले निबल कर मोहिं। पै मनते टूटों न जब,तब देखों प्रभु तोहिं॥२॥

चौपाई–सुनि कटाक्ष मय वचन सुहाए। सूरदास कर प्रभु मन भाए॥
हर्ष दिनदयालु भगवाना। कीन स्परस दृगन तिहि पाना॥ १॥
तत्क्षण अंग नयन युग तासा। अमल विमल कल ज्योति प्रकासा॥
पाय दीप्ति अस सूर सुजाना। सन्मुख कृपासिंधु भगवाना॥ २॥
कलित कंजलोचन घनवरना। आनन हृदय भक्ततमहरना॥
चारु ललाट खोर श्रीखंडन। माल जयंति जनन मनमंडन॥ ३॥
यज्ञोपवित पीतपट राजा। निज छवि कोटि मदनमद लाजा॥
चितवनि चारु मुनिन मनमोहन। धृत गोपाल वेष वर सोहन॥ ४॥

मूरति विमल बाल बल भय्या। निरत प्रवर परचारन गय्या॥
सूर विलोकि रूप मनहरना। परयो दंडवत चरणन धरना॥ ५॥
सुमिरि कृष्ण जब शीश उठाया। कीन तुरंत मुग्ध प्रभु माया॥
जानत भयो सूर मनमाहीं। गोप बाल नँदनंदन काहीं॥ ६॥
लग्यो बहुरि अस वचनउचारन। तुमहुँ कूप च्युत कीन निवारन॥
भयो सहाय अंध तकि मोरा। अहो कीन उपकार न थोरा॥ ७॥
बंदहुँ बार बार अब तोहीं। कीन्ह्यों कूप त्रास गत मोहीं॥
अब वृतांत निज देहु सुनावा। केहि ते आव कवन कित जावा॥ ८॥
मोहविवश अस तासु निहारी। बोले गोप वेष गिरिधारी॥
मथुरा बसहुँ गोपसुत भय्या। आवा विपिन चरनहित गय्या॥ ९॥
तोरे देखि भक्त दृग हीना। कूप उहाँ निवरन चुत कीना॥
अब तुमजाहु सदनसुखमाना। मैं इत करहुँ विपिन निज प्याना॥ १०॥

दो०—असकहिवत्सलभक्त प्रभु,कृष्णदलनदुख क्रूर।द्रुमन ओटकरुनायतन,गए कछुकजबदूर॥१॥

चौपाई—तब दर्शनहित सूर सुजाना। पाछिल चल्यो वेग अकुलाना॥
गवन्यो कहाँ बाल मृदु अंगा। हरण ललित छबि कोटि अनंगा॥ १॥
इत उत फिरहिं विथत मनमाहीं। आवत दृष्टि बाल प्रभु नाहीं॥
अतिशय क्लेश सूर तब पावा। पूँछत पथिक देखि जित आवा॥ २॥
कोउ अस बरन श्याम मृदु चारू। वेत्रपानि गय्यन चरवारू॥
कामर कन्ध माल बन सोहा। देखा तुमहुँ बाल मन मोहा॥ ३॥
सुनतहि कथन पथिक इहि भाँती। इह कस कहत कवन तोहिभांती॥
इहाँ न कोउ धेनु बनचारी। जाहु सजन निज सदन सिधारी॥ ४॥
सूर सुनत अस पथिकबखाना। आगल चल्यो विपिन बिसमाना॥
खोजत नील जलजवत बरना। गोपबाल कानन मनहरना॥ ५॥
भ्रमत भ्रमत दारुण श्रम पाया। बैठयो अंतव्यथित द्रुमछाया॥
तौलों ढुरयो सूर निशि छायो। भक्त सूर व्याकुल उठि धायो॥ ६॥
जहँ तहँ लग्यो भ्रमन वन माहीं। खोजत गोपबाल मृदुकाहीं॥
गति अनन्य अस भक्तजुडाना। भा तद्रूप कृष्ण भगवाना॥ ७॥
पावन भक्ति प्रीति मनमाहीं। तजि नजाहि काननपुरकाहीं॥
तब निशि स्वप्न रूप मृदु सोई। देखे दिवस गोपसुत जोई॥ ८॥
मंदहास युत भक्त सहय्या। बोले वदन बचन सुखदय्या॥
इहाँ न भक्त गोपसुत कोई। मैंहुँ कीन कौतुक कल सोई॥ ९॥
कीन्ह्यों तुमहिं कूपचुत वारन। बनत गोप बन गय्यन चारन॥
ज्योतिविमलतुव दृगन प्रकासा। भक्तसृष्टसबमोर विलासा॥ १०॥
तुव नयनन इन लीन निहारी। मोर स्वरूप भक्त व्रतधारी॥
तुव हित देन दरश मनहारू। इह मैं कीन चेष्टनिज चारू॥ ११॥

दो०–अब मथुरातुवगवनकरि,मोरचरितगुणगान।करिगायनभवपूर्ववत,विचरहुअभयसुजान॥१॥

चौपाई–सुनि प्रभुवचनसुखद अभिरामा। सूर दंडवत करत प्रणामा॥
बोल्यो आज धन्य जगदीना। जेहिइनदृगनदरशप्रभु कीना॥ १॥
मुनि योगिन सुर दुर्लभ जोई। मोरे सुलभ आज जग सोई॥
अब न देव कछु संसृति कामा। एक स्मरण तोर अभिरामा॥ २॥
मोरे हृदय लालसा छाई। बिसरहिं सो न भक्त सुखदाई॥
अरु तुम्हार माया बलवाना। करहिं न मोहिं मुग्ध भगवाना॥ ३॥
हे कृपालु कल कमल विलोचन। हृदय भक्तजन सोच विमोचन॥
जिन नयनन अस रूप तुम्हारा। मैं प्रत्यक्ष प्रभु लीननिहारा॥ ४॥
तिनसन जगत विलोकन काहीं। दीनदयालु मोरि रुचि नाहीं॥
ताते करहु पूर्ववत मोरे। दृग विहीन बन्दहुँ प्रभु तोरे॥ ५॥
तुव स्वरूप नित दीन सनेहू। देखत रहहुँ दिवसनिशि एहू॥
करि अस बिनय वदन अनुरागा। भयो विराम सूर बडभागा॥ ६॥
बोले कृष्ण भक्त चितचोरा। सूर कथन सब सन्तत तोरा॥
होहिं सत्य संशय कछु नाहीं। भाषिवदनअसत्रिभुवनसाईं॥ ७॥
भये लुप्त प्रभु भक्त उबार्‌यो। उठे सूर जनु स्वप्न बिचार्‌यो॥
युगलअंध लोचन निज पायो। प्रभुपद शीश मनहिं मन भायो॥ ८॥
निज कल्पित पद पावनचारू। लग्यो करन गायन मनहारू॥
उदय अरुण तजि विपिन सिधाए। यमुना तीर भक्त बर आए॥ ९॥
कारि स्नान गुणगण प्रभु गाते। मथुरा आय भक्ति मद माते॥
भजन प्रभाव देखि अधिकाई। सादर करहिं लोक सेवकाई॥ १०॥

दो०–सबकर हित जिय मानिनिज,द्विजबिरक्तसंसार।रटन कृष्णगुणगण निरत, सूरभक्तव्रतधार

चौपाई– अवसर एक मलेक्ष सुहावा। विदित दिलीश लोक सब गावा॥
संयुत भक्ति प्रीति हरषाए। तासु सूर जन लीन बुलाए॥ १॥
आवत देखि भक्त अभिरामा। शाह कीन उठि दंडप्रणामा॥
सादर शुचि आसन बैठारे। भक्ति पूर्वक वचन उचारे॥२॥
तुव यादव प्रभु लोगन गाए। भक्त कृष्ण भगवान सुहाए॥
मोर प्रश्न कर दीन सनेहू। देहु उतर उर हरहु सँदेहू॥ ३॥
सदन मोर प्रभु अगणित भामा। इकते एक सरस अभिरामा॥
तिनहुँ मध्य यादव कुलवारी। ऐहिं कोउ किनभक्त मुरारी॥ ४॥
सुनिदिलीश अस कथनसुहावा। सूर वदन अस वचन अलावा॥
सुनहु धरणिनायक बडभागी। करहुँकथनकछुतुवहितलागी॥ ५॥
जिहिते तोर मनोरथ एहा। अवहिं होहि फुर विगतसँदेहा॥
इह तुम्हारि संकुल वरनारी। तुमहिं देखि पुनिमोहिंनिहारी॥ ६॥
क्रमते एक एक अस आई। करहिं गमन इत मारग राई॥

तिनहुँ मध्य तबकर त्रिय जोई। सो निज सकुच लाज सब खोई॥ ७॥
मोहिंसन करहि रुचिर संभाषा। होहि तुरंत बहुरि मृत तासा॥
साह सुनत अस दीन रजाई। महिषी सुनत सकल चलिआई॥ ८॥
एक एक करि नम्र प्रणामा। चली जात भामिनि निज धामा॥
आई एक सबनते पाछे। पतिप्रिय रूपललितगुण आछे॥ ९॥
दो०–निरखत सन्मुख हर्षवश, कहिसि वदनमुसकाय। कहिंते कीनआगमनतुव, मोरमर्मकछुपाय।
चौपाई–देखत कहिस सूर तिहि ओरा। शुभ्रे मोहिं मर्म सब तोरा॥
भामिनि सुनत चरण गहिलीने। देखत सबन प्राण तजि दीने॥ १॥
महिषी आन देखिअस तासा। लागीं रुदन करन संभाषा॥
साह व्यथित मानस विसमायो। धरत धीर पुनि बदन अलायो॥ २॥
बन्दहुँ बार बार अब तोहीं। भगवन करहु कथन सब मोहीं॥
को इह रही भवन मम भामा। जहिअस तज्यो वपुष निष्कामा॥ ३॥
तब पूर्ववत कथा जु सुहायन। लागे सूरदास मुखगायन॥
इह मथुरा पुरि वसहि सुहाई। बीरबधू सब लोगन गाई॥ ४॥
हावभाव कल निरत परायन। कला प्रवीन परमपटु गायन॥
सभा महिंद्र धनक जन जाई। निज प्रभाव गुण लेत रहाई॥ ५॥
काहु धनाढच्य कालशुभ पायो। पाणिग्रहण निज सुवन रचायो॥
इहि कहँ पठ्यो बोलि सन्माना। लाग्यो होन नृत्य कलगाना॥ ६॥
करि निज कला ललित चतुराई। मूर्छित सभा कीन समुदाई॥
तब कोउ आन देशकर राई। इहि नृत गीत देखि चतुराई॥ ७॥
निज पुर गयो लेत हरषाना। पावा तहाँ विविध सन्माना॥
एक दिवस रत नृत्य अगारा। देखिस रुचिर धरणिपतिदारा॥ ८॥
सजि शृंगार आभरण सोहन। ठाडी मनहु मान रति मोहन॥
चारि ओर परिवारत दासी। सेवइं सुखद रूप गुण रासी॥ ९॥
अस प्रभाव दृग देखि सुहावा। तेहि कर हृदय मनोरथ छावा॥
हमहुँ होब इहि सम कस रानी। अस बिचारि मानस सकुचानी॥ १०॥
इन कर भूप पुण्य संसारा। हमहु अधम धिग जनम हमारा॥
पुनि देखिस छितपत पटरानी। देत दान दीनन रति मानी॥ ११॥
दो०–धन भूषण पट भक्तियुत, करत सकल सेवकाइ। अतिथ संत आवतसदन, भोजनदेहुँजिवाँइ॥
हमहुँ करब यदिपुण्य अस, कहतगुणतजियमाहिं। तोपावहुँ संशय नहीं, भूपपतनि पदकाहिं॥
चौपाई–अस प्रकार पावन शुभ तासा। ललित दान रुचि हृदय प्रकासा॥
तब तहिं दैवयोग कर आई। ज्वररुज उपज प्रबल दुखदाई॥ १॥
पुनि पंचत्वभाव कहँ सोई। प्रापत भई व्याधि सब खोई॥
धर्मदूत रौरव तेहि डारचो। तहां भोग निज कृत अघ सारचो॥ २॥
सुरपुर गवनि बहुरि हरपाती। अपसर नृत्य गीत कलराती॥

मथुरा भवन भवन भगवाना । जो नृत गीत ललित पुनि गाना ॥ ३ ॥
कीन्हेसि भक्ति प्रेम सरसाए । तेहि परिणाम अमर पुर पाए ॥
अरु उपकार देखि नृप रानी । जोतहिं हृदय दान रुचिमानी ॥४ ॥
ताहि प्रसाद भवन तुव आई । भोगे विविध भोग सुख पाई ॥
आजु विदित देखत तुव एहा । मृत वश भई तुरत तजि देहा ॥ ५ ॥
पै यादव वंशी त्रिय जेहू । रहीं सो देव रूप सब तेहू ॥
कौतुक करन देवपुर त्यागी । आईं धरणि कृष्ण अनुरागी ॥ ६ ॥
गवनी बहुरि अमरपुर काहीं । रहीं सो मनुज रूप कछु नाहीं ॥
अस कहि सूरदास हरषाते । माँगि बिदाय भक्ति मदमाते ॥ ७ ॥
तब दिलीश सादर धन दीना । भक्त सूष्ट सुइकार न कीना ॥
हमरे नहिन द्रव्य कछु कामा । तब दिलीश वर्णन अभिरामा ॥ ८ ॥
धरयो शीश नम्रत कर जोरी । विनय वदन कछु कीन न थोरी ॥
चले सूर तब होत बिदाए । हर्षत कृष्ण ललित पुर आए ॥ ९ ॥
अगणित विमलभक्ति सरसावन । विरचत कृष्णचरित पदपावन ॥
रहे करत गायन संसारा । सकल लोक हित हृदयविचारा १० ॥
पदन प्रबंध सूर जन नागर । बाँध्यो जनहु सेतु भवसागर ॥
बिनु प्रयास कलिकाल मँझारा । तेहि प्रसाद उतरत सबपारा ॥ ११ ॥

दो०—सूर सूरसमविदित जग, सकलकविनशिरमोर । सूरश्याम जेहिभक्तिवश, भएभक्त चितचोर १
जौलौं विचरे धरणितल, पल न बिसारे श्याम । भए अंत अलिचरणकल, कंजकृष्ण अभिराम २ ॥

बाबू रघुनाथसिंह तअल्लुकेदार भदवरने मुझे १६ दोहे दियेथे उन दोहोंमें सूरदासके समयके कवियोंके नाम हैं पर कई एकमें मुझे सन्देह है जोहो वे दोहेनीचेप्रकाशकियेजातेहैं

दो०—सूरदासके समयमें, जोकवि भये महान । उन सबसे बढिके सबै, इन्हैं करत सन्मान ॥१॥
ओलिराम अकबर अगर, दासकवी करनेश । चतुरविहारी गोपकवि, घनआनँदअमरेश ॥२॥
आशकरन अजबेश अरु, कादर केशवदास । टोडर गोविंद जैतकवि, चरण चतुर्भुजदास ॥३ ॥
जीवन केशव ताजकवि, होलराय कवि खेम । योधा जोयसी चंदसखि, कृष्णदास कवि क्षेम ॥
अमृत खानखाना जगन, ऊधोरामकमाल । जमालुद्दीन जगनन्दकवि, गोविंददास जमाल ५
जमालुदीन कल्याण कवि, फैजी ब्रह्म फहीम । अभयराम परसिद्धकवि, बिट्ठलविपुल रहीम ॥६॥
अमरसिंह घनश्यामहू, दीलह नरोत्तमदास । चेतनचंद कविन्द भट, बीरक विद्यादास ॥ ७ ॥
छितस्वामी भगवतरसिक, छत्र बिहारीलाल । मिश्रगदाधर मानसिंह, लालन मोतीलाल ॥८॥
हरीदास हरिनाथकवि, मानराय रघुनाथ । मिश्रगणेश कवीरअरु, लीलाधर कविनाथ ॥ ९ ॥
दामोदर दिलदार कवि, दौलत नागर दास । नंदनहित हरिबंस कवि, सेन नरायणदास १०॥
नीलकंठ नंदलाल कवि, नंददास रसखान । नाभा नरबाहन नरसि, नारायणभट तीन ॥११॥
निपटनिरंजन इंद्रजित, पृथ्वीराज को जान । लक्ष्मीनारायण हरी बलीभद्र को मान ॥ १२ ॥

३ । ४अगरदास और अगर कवि ।
९१—धीर नरिन्द्रभी इनका नाम है ॥

विठलनाथ विशुनाथ कवि, पद्मनाभ परबीनै। भगवनंदास मनोहरी,परमानन्द[103] नवीन ॥१३॥
माणिकचंद निहालकवि, मुकुंद मुबारक[105] बीर। देवादिनेशंनदान कवि, तेही[112] तोषी[113] नंधीर १४
श्रीपति यद्यपिभक्तिमें,न्यूनन कछुकलखात । तद्यपिकवितामेंकहों, समताकछुनदिखात ॥१५ ॥
विद्यापति आदिक कवि, जितने भये सुजान। काव्य भावमें सूरसम, तुलसी *एकप्रमान॥ १६॥

चौरासीवार्ता–बालकृष्णजीसे ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक सूरदासजी गऊघाट ऊपर रहते तिनकी वार्ता।

सो एकसमय श्री आचार्य महाप्रभु अंडेलते ब्रजको पाँउ धारे सो कितनेक दिनमें गऊघाट आये सो गऊघाट आगरे और मथुराके बीचो बीच है तहां श्री आचार्य जी महाप्रभु पांव धारे सो गऊघाट ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभु उतरे तहां श्रीआचार्य जी महाप्रभु स्नान करिके संध्यावंदन करिके पाक करनको बैठे और श्री आचार्य जी महाप्रभुके सेवकनको समाज बहुत हुतो और सेवकहू अपने अपने श्रीठाकुरजीकी रसोई करन लगे सो गऊघाट ऊपर सूरदासजीको स्थल हुतो सो सूरदासजी स्वामी हैं आप सेवक करते,सूरदास जी भगवदीय है गान बहुत आछो करते ताते बहुतलोग सूरदासजीके सेवक भयेहुते सो श्री आचार्य जी महाप्रभु गऊघाट ऊपर उतरे सो सूरदासजीके सेवक देखके सूरदास जीसों जाय कही जो आज श्री आचार्य जी महाप्रभु आप पधारे हैं जिनने दक्षिणमें दिग्विजय कियो है सब पंडितनको जीते हैं भक्तिमार्ग स्थापन कियो है सो श्री वल्लभाचार्य यहाँ पधारे हैं तब सूरदास जीने अपने सेवकनसों कह्यो जो तू जायके दूर बैठि जब आप भोजन करके विराजें तब खबर करियो हम श्री आचार्य जी महाप्रभूनके दर्शनको जायँगे सो वह तनक दूर जाय बैठ्यो तब श्री आचार्य जी महाप्रभु आप पाक करत हुते सो पाक सिद्धि भयो तब श्री ठाकुर जीको भोग समर्प्यो पाछे समयानुसार भोग सराय अनोसर करके महा प्रसाद लेके श्री आचार्य जी महाप्रभू गादी ऊपर बिराजे तहां सब सेवकहू पहुँचिके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आसपास आय बिराजे हैं तब वह सूरदासको सेवक आयो सो सूरदाससों कही जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू बिराजेहैं तब सूरदास जी अपने स्थल ते आयके श्री आचार्य जी महाप्रभूनके दर्शनको आये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो सूर आवो बैठो तब सूरदास जी श्री आचार्यजी महाप्रभून को दर्शन करिके आगे आय बैठे तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो सूर कछु भगवत् यश वर्णन करो तब सूरदासने कही जो आज्ञा तब सूरदासजीने श्री आचार्य महाप्रभूनके आगे एक पद गायो सो पद ।

राग धनाश्री–हों हरि सबपतितनको नायक ॥को करिसके बराबरमेरी,इतेमानकोलायक॥१॥
जो तुम अजामेलसोंकीनी जो पातीलिखपाऊं।होयविश्वासभलोजियअपने औरहुपतितबुलाऊं२
सिमिटे जहां तहांते सबकोऊ आयजुरे एकठौर। अबके इतने आन मिलाऊं बेरदूसरीऔर॥३॥
होडा होडी मन हुलास करि करें पाप भरिपेट।सबहिन ले पाँयनतर परिहों यहीहमारी भेंट।

९९प्रवीनिरायपातुरी।

१००भगवानदास ।

*अंकवाले कवियोंका आगे वर्णन कियाजायगा।

ऐसी कितक बनाऊं प्राणपति सुमिरन है भयो आडो। अबकी बेर निवारलेउ प्रभु सूरपतित काठाडो॥ फिर दूसरो और पद गायो सो पद।

रागधनाश्री—प्रभुमें सब पतितनको टीको। और पतित सबद्यौस चारके मैंतो जन्मतहीको॥१॥ वधिक अजामिल गणिका तारी औरपूतनाहीको। मोहिंछाँडितुमऔर उधारोमिटेशूलकैसे जीको कोऊ न समरथ सेव करनको खेंच कहतहौंलीको। मरियतलाजसूरपतितनमेंकहतसबनमें नीको

ऐसो पद श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे सूरदासजीने गायो सो सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो सूरह्वैके ऐसो काहेको घिघियातहै कछु भगवत्लीला वर्णन करु तबसूर-दासने कह्यो जो महाराज हों तो समझत नाहीं तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननेकह्योकि जास्नान करिआउ हम तोको समझावेंगे तब सूरदासजीस्नान करि आये तबश्रीमहाप्रभुजीने प्रथमसूर-दासको नाम सुनायौ पाछे समर्पण करवायो और दशमस्कन्धकी अनुक्रमणिकाकही सो ताते सब दोष दूर भये ताते सूरदासजीको नवधाभक्ति सिद्धभई तबसूरदासजीने भगवत्लीला वर्णन करी अनुक्रमणिकाते सम्पूर्ण लीला फुरी सो क्यों जानिये सो दशमस्कन्धकी सुबोधनीजीमें मंगलाचरणकी प्रथम कारिका कियेहैं सो यह श्लोक सूरदासजीने कह्यो सो—श्लोक।

नमामि हृदयेऽशेषेलीलाक्षीराब्धिशायिनम्। लक्ष्मीसहस्रलीलाभिःसेव्यमानंकलानिधिम्॥१॥

और ताही समय श्रीमहाप्रभूनके सन्निधि पद किये सो पद।

रागबिलावल—चकई री चलि चरण सरोवर जहाँ न प्रेम बियोग। यह पद सम्पूर्णकरिकेसूर-दासजीनें गायो सो यह पद दशमस्कन्धके मंगलाचरणकी कारिकाके अनुसार कियो सो यामें कह्योहै जो तहाँ श्रीसहस्र सहित नित क्रीडत शोभित सूरदासने याभांति पद किये ताते जानी जो सूरदासकोसम्पूर्णसुबोधनी स्फुरी सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभूननेजान्यो जोलीलाकोअभ्यास भयो पाछे सूरदासजीने नन्दमहोत्सव कियो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे गायो सो पद।

राग देवगांधार—व्रज भयो महर के पूत जब यह बात सुनी।

सो यह श्री आचार्य जी महाप्रभूनके आगे गायोसो सुनके श्रीआचार्यजीमहप्रभूबहुतप्रसन्न भये और अपने श्रीमुखते कहे जो सूरदास मानों निकटही हुते पाछे सूरदासजीने अपनेसेवक किये हुते तिन सबनको नाम दिवायो पाछे सूरदासजीने बहुत पद किये पाछे श्रीआचार्य जी महाप्रभूनने सूरदासजीको पुरुषोत्तमसहस्रनाम सुनायो तब सूरदासजीको संपूर्ण भागवतस्फूर्तना भईपाछे जोपद किये सो भागवत प्रथम स्कंधते द्वादशस्कंध पर्यंत (तांई) किये ताते वेसूरदास जी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परमभगवदीय हैं पाछे श्रीआचार्य महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन तीन बिराजे पाछे फिर व्रजको पांवधारे तब सूरदासजीहू श्रीआचार्यजी महा-प्रभूनके साथ व्रजको आये।

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥

अब, जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु व्रजको पाँव धारे सो प्रथम श्रीगोकुल पधारे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके साथ सूरदासजीहू आयेतब श्रीमहाप्रभुजी अपने श्रीमुखसों कह्योजो सूरदासजी श्रीगोकुलकोदर्शन करो सोसूरदासने श्रीगोकुलकोदंडवत करी सो दंडवतकरतमात्र श्रीगोकुलकी बाल लीला सूरदासजीके हृदयमेंफुरी और सूरदासजीके हृदयमें प्रथम श्रीमहाप्रभूने सकल लीला श्रीभागवतकी स्थापी है ताते दर्शन करत मात्र सूरदासजीको

श्रीगोकुलकी बाललीला स्फुर्तना भई तब सूरदासजीने मनमें बिचारयोजोश्रीगोकुलकी बाललीलाको वर्णन करिके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे सुनाइये जन्म लीलाको पद तो प्रथम सुनायो है अब श्रीगोकुलकी बाललीलाको पद गायो सो पद–

रागविलावल–शोभित कर नवनीत लिये। घुटुअन चलत रेणुतनुमंडित मुखमें लेप किये॥१॥ चारुकपोललोललोचनछबि गोरोचनकोतिलकदिये।लरलटकनमानोमत्तमधुपगनमाधुमरीघुरपियेकठुलाकंठवज्रकेहरिनख राजतहैंसखिरुचिरहिये।धन्यसूरएकौपलयहसुखकहाभयोसतकल्पजिये

यह पद सूरदासने गायो सो सुनिके आप बहुत प्रसन्न भये पाछे औरहु पद गाये तब श्रीमहाप्रभुजी अपने मनमें बिचारे जो श्रीनाथजीके इहां औरतौ सबसेवाको मंडान भयो है पर कीर्तनको मंडान नाहीं कियोहै ताते अब सूरदासजीको दीजिये तब आप श्रीजी द्वार पधारे सो सूरदासजीको साथ लिये ही सो श्रीनाथजीद्वार जाय पहुँचे तब आपस्नानकरिके मंदिरमें पधारे तब सूरदासजीसों कह्यो जो सूरदासजी ऊपर आउ स्नान करिके श्रीनाथजीको दर्शन कर तब सूरदास पर्वत ऊपर जायके श्रीनाथजीको दर्शन कियो तब आपने कह्यो जो सूरदास कछू श्रीरानाथजीको सुनावो तब सूरदासनें प्रथम विज्ञप्तिको पद गायो सो पद–

राग धनाश्री– अब हों नाच्यो बहुत गुपाल ॥

यहपद संपूर्ण करिके श्रीनाथजीके आगे गायो तब श्रीमहाप्रभुजीनेकह्यो जो सूरदास अबतौ तुममें कछू अविद्या रहीनाहीं तुम्हारी अविद्या प्रभूनने दूर कीनी ताते कछू भगवत्यश वर्णन करो तब सूरदासने माहात्म्य और लीला ऐसो यश करिके गाय सुनायो सो पद–

रागगौरी–कौन सुकृत इन व्रजवासिनको ॥

यह पद संपूर्ण करि गायो सो सुनिके श्रीमहाप्रभुजी बहुत प्रसन्न भये सो जैसो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने मार्गप्रकाश कियोहो ताके अनुसार सूरदासजीने पद किये श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके मार्गको कहा स्वरूप है माहात्म्य ज्ञानपूर्वक सुदृढस्नेहकी तौ परम काष्ठा है और स्नेह आगे भगवान्‌को रहत नाहीं ताते भगवान बेर बेर माहात्म्य जनावतहैं नामप्रकरणमें पूतना करि शकट तृणावर्त करि गर्गाचार्य करि यमलार्जुन करि वैकुंठदर्शन करि ऐसे करिके भगवानने बहुत माहात्म्य जनायो परि इन व्रजभक्तनको स्नेह परम काष्ठापन्न है ताते ताही समय तौ माहात्म्य रहे पीछे विस्मृत होय जाय।

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और सूरदासजीने सहस्रावधि पद कियेहैं ताको सागर कहिये सो सब जगत्में प्रसिद्ध भये सो सूरदासजीके पद देशाधिपतिने सुने सो सुनके यह बिचारयो जो सूरदासजी काहू रीत (बिधि) सों मिलैं तौ भलो सो भगवतइच्छाते सूरदासजीमिले सोसूरदासजीसों कह्योदेशाधिपतिने जो सूरदासजी मैंसुन्यो है जो तुमनेविष्णुपद बहुतकियेहैं जोमोको परमेश्वरनेंराज्यदियो है सो सब गुणीजन मेरो यश गावत हैं ताते तुमहूँकछुगावो तब सूरदासजीनेदेशाधिपतिके आगे कीर्तन गायो सो पद।

राग बिलावल–मना रे तू करि माधवसों प्रीति ॥ यह पद देशापतिके आगे संपूर्ण करिके सूरदासजीने गायो सो यह पद कैसोहै जो या पदको अहर्निश ध्यान रहे तो भगवतअनुग्रहकी सदा सार्ति रहै और संसारते सदा वैराग्य रहै और कुसंगको सदा भय रहे और भगवदीयके

संगकी सदा चाह रहै और श्रीठाकुरजीके चरणारविंद ऊपर सदा स्नेह रहै देशादिकऊपर आसक्ति न होइ ऐसो पद देशाधिपतिको सुनायोसोसुनिके देशाधिपतिबहुतप्रसन्नभयो और कह्यो जो सूरदासजी मोको परमेश्वरने राज्य दीनों है सो सब गुणीजन मेरो यश गावत हैं ताते मेरो यश कछु गावो तब सूरदासजीने यह पद गायो सो पद।

राग केदारो—नाहिंन रह्यो मनमें ठौर॥ यह पद संपूर्ण करिकेगायो सो सुनिके देशाधिपति अकबर बादशाह अपने मनमें बिचारचो जो ये मेरो यश काहेको गावेंगे जो इनको मेरो कछु बातको लालच होयतौ गावें ये तो परमेश्वरके जनहैं औरसूरदासजीने या पदके अंतमें गायो हो जो" सूर ऐसेदर्शको एमरतलोचनप्यास"यहगायोहोसोदेशाधिपतिने पूँछो जो सूरदासजी तुम्हारे लोचन तौ देखियत नाहीं सो प्यासे कैसे मरतहैं और बिन देखे तुम उपमाको देतहौ सो तुम कैसे देतहौ तब सूरदासजी कछु बोले नहीं तब फिरि देशाधिपति बोल्योजोइनकेलोचनहैं सो तो परमेश्वरके पासहैं सो वहाँ देखतहैं सो वर्णन करते हैं तब देशाधिपतिने सूरदासजीके समाधानकी मनमें विचारी जो इनको कछु चाहिये पर यहतौ भगवदीयहैं इनकोकाहू बातकी इच्छा नाहीं पाछे सूरदासजी देशाधिपतिसों बिदा होयकै श्रीनाथजीद्वार आये।

वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥

एक समय सूरदासजी मार्गमें चले जातेहे सो कोऊ चौपड खेलते हुते सो वा चौपड खेलमें ऐसे लीन हे जो कोऊ आवते की सुधि नाहीं ऐसे खेलमें मग्न हे सो देखके सूरदासजीके संग भगवदीय हे तिनसों सूरदासजीने कह्यो जो देखो वह प्राणीकैसोअपनोजमारोखोवतहैं भगवानने तौ मनुष्यदेह दीनी है सो तो अपनी सेवा भजनके लिये दीनी है सोतौयादेहसों हाडकूटतहैं यामें यह लौकिक सिद्ध नाहीं सो काहेते जो या लोकमें तौ अपयश औरपरलोकमें भगवानते बहिर्मुखता ताते श्रीठाकुरजीने इनको मनुष्यदेह दीनीहै तिनको चौपड ऐसी खेलनी चाहिये सो ता समय एक पद सूरदासजीने अपने संगिनसों कह्यो सो पद।

राग केदारो—मन तू समझ सोच विचार। भक्ति बिन भगवान दुर्लभकहतनिगमपुकार ॥ १ ॥
साधु संगति डार पासा फेर रसना सार। दांव अबके परचो पूरो उतरि पछी पार ॥ २ ॥
बाकसत्रे सुनि अठारे पंचहीको मार। दूरते तजि तीन काने चमकि चौकि बिचार ॥ ३ ॥
काम क्रोधजंजाल भूल्यो ठग्यो ठगनी नार। सूर हरिके पदभजनबिन चल्यो दोउकर झार ॥४॥

यह पद सूरदासजीने अपने संगके भगवदीयनसों कह्योसोयापदमें सूरदासजीने कहाकह्यो, मनतूसमझ शोच बिचार।ये तीनों वस्तु चौपडमें चाहिये सोई तीनों वस्तु भगवानके भजनमें चहिये काहेतेजोसमझ न होय तौ संसार श्रवणकहाकरेगो ताते पहिलेतौ हमझचहिये और शोच कहिये चिन्ता जो भगवान्‌के प्राप्तिकी चिन्ता न होयतौ संसारऊपरवैराग्यकैसे आवै ताते शोच चहिये और बिचार जोयाजीवको बिचारही नहींतौ संगदुसंगमें कहाकरैगोता।विचार चहिये सो ये तीनौं वस्तु होंयतौ भगवदीय होय ताते ये तीनोंवस्तु भगदीयको अवश्य चहिये और चौपड़मेंहूँ तीनों वस्तु चाहिये समझ कहें गनबो न आवै तो गोटकैसे चले और शोच अगमजो मेरे यह गोट दाँव पडे तौ यह चलूं बिचार जो वाहीमें तन मनजो ये तीनों वस्तु होय तौ चौपड खेली जाय सो ये सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुके ऐसे परम भगवदीय हैं।

बहुरि श्रीसूरदासजी श्रीनाथजीद्वार आयके बहुत दिनताई श्रीनाथजीकी सेवा कीनी बीच बीच में श्रीगोकुल श्रीनवनीत प्रियजीके दर्शनको आवते सो एक समय सूरदासजी श्रीगोकुल आये श्रीनवनीतप्रियजीके दर्शन किये और बाललीलाके पद बहुत सुनाये सो श्रीगुसाँईजी सुनिके बहुत प्रसन्न भये पाछे श्रीगुसाईंजीने एकपालना संस्कृतमें कियो सो पालना सूरदासजीको सिखायो सो पालना सूरदासजीने श्रीनवनीतप्रियजी झूलतहुते तासमय गायो सो पद।

राग रामकली।

प्रेषपर्यंकशयनम्।

यह पद सूरदासजीने सम्पूर्णकरिके गायो सुनायो श्रीनवनीतप्रियजीको पाछे यापदके भावके अनुसार बहुत पद किये सो सुनिके श्रीगुसाईंजी बहुत प्रसन्न भये पालनाके भाव अनुसार पद गायो सो पद ॥

राग बिलावल–बाल बिनोद आंगनमेंकी डोलनि ॥ मणिमय भूमि सुभग नंदालय बलि बलि गई तोतरी बोलनि ॥१॥ कठुलाकंठ रुचिर केहरिनख ब्रजबाला बहु लई अमोलनि। वदन सरोज तिलक गोरोचन लर लटकन मनु मधुपनि लोलनि ॥२॥ लीन्यो कर परसत आननपर कछू खाय कछू लग्यो कपोलनि। कहे जन सूर कहांलों वर्णों धन्य नंदजीवन जग तोलनि॥ ३ ॥

और पद राग बिलावल–गोपाल दुरेहैं माखन खात। देख सखी शोभा जोबढी अतिश्याम मनोहर गात॥ १ ॥ उठि अवलोकि ओट ठाढी ह्वै जिहि विधि नहिं लखिलेत। चकृतनैनचहूं दिश चितवत और सबनको देत॥ २ ॥ सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत यहै अकार। जनु जलरुह तजि वेर विधीसों लाय मिलत उपहार ॥३॥ गिरिगिरि परत बदनते ऊपर द्वैदधिसुतके बिंदु। मानहुँ सुधाकन खोरवत न प्रियजन बिंदु ॥ ४ ॥ बालविनोदविलोकि सूर प्रमुदित भई ब्रजकी नारि। फुरत न बचन बरजिबेको मन रही विचार विचारि ॥ ५ ॥

राग जैतश्री–कहाँ लगि वरणों सुंदरताई। खेलत कुँवरफटिकआँगनमें नैननिरखि सुखपाई॥ १ ॥ कुलहे लसतश्यामसुंदरके बहुविधि रंग बनाई। मानउ नव घन ऊपर राजत मघवा धनुष चढाई श्वेतपीत अरु असित लालमणि लटकन भालरुराई। मानहुँ असुरदेवगुरुसों मिलिभूमिजसोंसमुदाई अति सुदेशमृदुचिहुर हरतमनमोहनमुखबिगराई। मानहुमंजुल कंचनऊपरअलिआवलिफिरिआई दूधदंतछबि काहेनजातकछुअलिलपलपझलकाई। किलकतहसत दुरतप्रगटमानो बिंदुमें विपुलताई खंडित वचन देतपूरणसुख अद्भुत यहउपमाई। घुटुरुनचलतउठतप्रमुदितमनसूरदासबलिजाई॥६॥

राग रामकली–देखो सखी एक अद्भुतरूप। एक अंबुज मध्य देखियत बीस दधिसुत जूप ॥ १ ॥ एक अवलि दोय जलचर उभे अर्क अनूप। पंजचार चढि गहि देखियत कहो कहा स्वरूप॥ शिशुगणनमें भई शोभा करो कोउ विचार। सूर श्री गोपालकी छबि राखो यह निरधार ॥ २ ॥

ऐसे पद सूरदासजीने गाये पाछे फेरिश्रीनाथजी द्वार आये॥

वार्ता प्रसंग ॥

अब सूरदासजीनें श्रीनाथजीकी सेवाबहुत कीनी बहुत दिनताईं ता उपरान्त भगवत् इच्छा जानी जो अब प्रभुनकी इच्छा बुलायबेकी है यह विचारके जोनित्यलीलाफलात्मक रासलीला जो जहांकरे हैं ऐसो जो परासोली तहां सूरदासजी आये श्रीनाथजी की ध्वजाको दण्डवत करिके

ध्वजाके साम्हैं सन्मुख करिके सूरदासजी सोये. परिअंतःकरणमें यहजो श्रीआचार्यजी महाप्रभु दर्शन देयँगे अबयह देहतौ थकी ताते अब या देहसों श्रीनाथजीको दर्शनहोय तौ जानिये परम भाग्य है श्रीगुसाइंजीकोनाम कृपासिंधु हैभक्तनकेमनोरथ पूर्णकर्त्ताहैं ऐसे विचारके सूरदासजी श्री गुसाईजीको चिंतवनकरते हैं और श्रीगुसाईंजी कैसे कृपासिंधुहैं जैसे सूरदासजीवहाँस्मरण करते हैं तैसे श्रीगुसाईजी इनको छिनहू नाहिं भूलतहैं श्रीनाथजीको शृंगार होतो ता समय सूरदासजी मणिकोठामें ठाढे ठाढे कीर्तन करते सो ता दिन श्रीगुसाईंजी श्रीनाथजीको शृंगार करत हुते और सूरदास जीको कीर्तन करते न देख्यो तब श्रीगुसाईजीनें पूँछो जो सूरदासजी नाहीं देखियत सो काहेते ? तब काहू वैष्णवने कह्यो जो महाराज सूरदासजी तौ आज परासोलीकी ओरी जात देखे हैं तब श्री गुसाईंजीने जान्यो जो भगवत् इच्छाते अवसान समयहै ताते सूरदासजी परासोलीगयेहैं तब श्रीगुसाईंजीने अपने सेवकनसों कह्यो जो पुष्टिमार्गको जहाज जातहै जाको कछू लेनो होय सो लेउ और जो भगवत् इच्छाते राजभोग आरती पाछे रहत है तौ मैंहू आवत हों पाछे श्रीगुसाईंजी बेरबेर सूरदासजी की खबरिमँगायो करें जो आवै सोई कहै जोमहाराज सूरदासजीतौ अचेतहैं कछू बोलत नाहींऐसे करत श्रीनाथजीके राजभोगको समयभयोसो राजभोग आरती करिके श्रीगुसाईंजी गिरिराजते नीचे उतरे सो आप परासोली पधारे भीतरके सेवक रामदासजी प्रभृति और कुंभनदासजी और गुसाईंजीके सेवक गोविंदस्वामी चतुरभुजदास प्रभृति और सब श्रीगुसाइंजीके साथ आये सो आवतहीसूरदासजीसों श्रीगुसाईंजीने पूछो जोसूरदासजी कैसे हो तब सूरदासजीनेश्रीगुसाईं जीको दंडवत करिकै कह्यो जो महाराज आये हो महाराजकी बाट देखत हुतो यह कहिके सूरदासजीने एक पद कह्यो सो पद ॥

रागसारंग—देखो देखो हरिजूको एक सुभाय॥अति गंभीर उदार उदधिप्रभु जानि शिरोमणिराय
गई जितनी सेवाको फल मानत मेरु समान।समझि दास अपराध सिंधुसमबूँदन एकौजान २
बदनप्रसन्नकमलपदसन्मुख दीखतहीहै ऐसे ॥ विमुखहुभयेकृपायामुखकी जबदेखोतब तैसे ॥
भक्तविरहकातरकरुणामय डोलतपाछेलागे॥सूरदास ऐसे प्रभुको कत दीजै पीठअभागे ॥ ४ ॥

यह पद सूरदासजीने कह्यो सो सुनिके श्रीगुसाईंजी बहुत प्रसन्नभयेऔरकह्यो जो ऐसे दैन्य प्रभु अपने सेवकनकोदेहिं यादैन्यके पात्र एही हैं तब वा बेर श्रीगुसाईंजीके पास ठाढेहुते और चतुर्भुजदासहू ठाढेहुते तबचतुर्भुजदासने कह्योजो सूरदासजीने बहुतभगवत्यशवर्णन कियो परि श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको वर्णननाहीं कियो तब यह वचन सुनिकेसूरदासजीबोले जो मैं तौ सब श्रीआचार्यजी माहाप्रभून कोही यश वर्णन कियोहै कछून्यारो देखूं तौ न्यारो करूं परि तेरे साथ कहतहों या भांति कहिके सूरदासजीने एक पद कह्यो सो पद ॥

राग विहागरो—भरोसो दृढ इन चरणन केरो॥श्रीवल्लभनखचंदछटाबिनु सब जग मांझ अंधेरो ॥
साधन और नहींयाकलिमें जासों होतनिबेरो॥सूरकहाकहेदुबिधि आंधरो बिनामोलकोचेरो ॥

यह पद कह्यो पाछे सूरदासजीको मूर्छा आई तब श्रीगुसाईंजी कहेंजो सूरदासजी चित्त की वृत्ति कहां है तब सूरदासजीने एकपद और कह्यो सो पद ॥

राग बिहागरो—बलि बलि बलि हों कुमरि राधिका नंदसुवनजासों रति मानी॥वे अति चतुर तुम
चतुर शिरोमणि प्रीति करी कैसे होत है छानी॥ १ ॥ वे जु धरत तन कनक पीतपटसो तो सब

तेरी गति ठानी ॥ ते पुनि श्याम सहजबे शोभा अंबर मिस अपने उर आनी ॥ २॥ पुलकितअंग अबहिं ह्वैआयो निरखि देखि निज देह सयानी ॥ सूर सुजानके बूझे प्रेमप्रकाशभयोबिहँसानी ३

यह पद कह्यो इतनो कहिके श्रीसूरदासजीके चित्त श्रीठाकुरजीको श्रीमुख तामें करुणारसके भरे नेत्र देखे तब श्रीगुसाईजी पूछो जो: सूरदासजी नेत्रकी वृत्ति कहां है तब सूरदासजीने एक पद और कह्यो सो पद ॥

राग बिहागरो—खंजन नैन रूप रसमाते । अतिशय चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते चलचलजातनिकटश्रवणनकेउलटपलटताटंकफँदाते॥ सूरदासअंजनगुणअटकेनातरअबउडिजाते।

इतनो कहतेही सूरदासजीने या शरीरको त्याग कियो सो भगवत् लीलामें प्राप्त भये पाछे श्रीगुसाईजी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आये ताते सूरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते(सो) इनकी वार्ताको पार नहीं पाते इनकी वार्ताकहांताईं लिखिये।

सीधीहिन्दी—पहिले भागमें गया गवर्नमेन्टस्कूलकेपंडितबलदेव मिश्रनेलिखाहैकिसूरदास-का घर कृष्णाबेना गांवमें देवशर्म्मा ब्राह्मणका बेटा बिलमङ्गल पांडे इनका नामथा। पहले इनकी चाल चलन अच्छी नहींथी । पीछे ये सुधरे और सवालाख भजनका सूरसागर बनाकर बडे नामी हुए। लोग कहते हैं कि इन्होंने अपनी आंख आपही फोडीथी ।

सुगम पंथमें पण्डित गणपत लाल चौबे फर्स्टअसिस्टेंटमास्टर स्कूल रायपुरने लिखाहै कि-शूरदास किंवा सूरदास—मदनमनोहर सूरध्वज ब्राह्मण दिल्लीनगरके समीप किसी ग्रामके रहनेवाले थे किसीसमय दिल्लीआये वहाँ एक दिन किसी स्त्रीको कोठेपर खडी देख उसपर मोहित हुए और कोठेकी ओर इकटक चितरहे लोग इनकीदशादेखधिक्कारनेलगेपरंतु वही स्त्री घरसे बाहर निकल बोली "विप्रजी क्या आज्ञा होती है" विप्र बोले "क्या सचमुच मेरी आज्ञापालेगी" वह बोली "निस्संदेह" मुझे ईश्वर साक्षी हैतबतो , वह विप्रके कहनेके अनुसार दो सुइयां ले आई और जब विप्रने कहा कि मेरी छातीपर बैठ इनदोनों सुइयोंको मेरे नेत्रोंमें घुसेडदे उसनेवैसाही किया औरतबहीसे सूरदास कहलाने लगे। लोगोंने इनकी बडी प्रशंसाकर इनके कहनेके अनु-सार मथुरा वृन्दावनमें पहुँचा दिया यहांपर इन्होंने सवालाख विष्णुपदका एक बहुत बडा सूरसागर नामी ग्रन्थ बनाया निदान कुछ कालतक ये अकबर बादशाहकी सभामें रहे और फिर परलोकको सिधारे ।

प्राचीन मनुष्योंकी कहावतहै कि,ये उद्धवकाअवतारथे वेसबकवियोंमें श्रेष्ठ गिनेजातेहैंयथा दो०—सूरसूर्य्य तुलसी शशी,उडगण केशवदास।अबकेकवि खद्योत सम "जहँ तहँ करहिं प्रकाश"

रामरसिकावलीकी टिप्पणीमें लिखाहै कि' अंकवाले कवियोंका आगे वर्णन किया जायगा परंतु मतिराम कविका वर्णन काव्यरत्नाकरमें लिखागयाहै ,अतएव यहाँ उनका कुछ काव्य लिखा जाता है ।

(१) मतिराम त्रिपाठी टिकमापुरवाले ।

कवित्त—पूरण पुरुषके परम दृग दोऊ जानि कहत पुराण वेद बानियो रतिगई ।
कवि मतिराम दिनपतियों निशापतियों दुहुँनकी कीरति दिशान माँझ मढि-गई॥ रविके करन भये एकमहादानी यह जानि जिय आनि चिंताचित्तमांझ चढि-गई।तोहि राज बैठतकुमाऊं श्रीउदोतचन्द्रचन्द्रमाकीकरुक करेजहूंतेकढिगई॥ १॥

ललितललाम ।

परम प्रवीन धीर धरम धूरीन दीनबंधु सदा जाकी परमेश्वरमें मतिहै ।
दुर्जन बिहाल करि याचक निहाल करि जगतमें कीरति जगाई ज्योति अतिहै ॥
राउ शत्रुशालके सपूत पूत भाउसिंह मतिराम कहै जाहि साहिबी फबतिहै ।
जानपति दानपति हाडा हिन्दुवानपति दिल्लीपति दलपति बालाबंद पतिहै ॥ २ ॥
कैसे आसमानसे बिमानसे घटासे गज रावरे चलत मानो मेरुसे लरतिहै ॥
अतल वितल तल हलत चलत दल गज मदराज दिगदंती चिक्करतिहै ॥
कहै मतिराम शम्भु द्विरद दराज ऐसे जिन्हैं पाइ कविराज आनँद भरतिहै ।
कुम्भ छाये षटपद मदनि करद नद कदनि विलंद गढ गरद करतिहै ॥ ३ ॥

छप्पय ।

जबलगि कच्छप कोल सहसमुखधरणिभारधर । जबलगि आठौ दिशनि दाबिसोहतदिग्गजबर
जबलगि कवि मतिराम सगिरि सागर महिमंडल । जबलगिसुवरणमेरुसघनघनमगनअगनचल
नृप शत्रुशालनंदन नवल भावसिंहभूपालमनि ।जगचिरंजीवतबलगिसुखित कहतसकलसंसारधनि
दो०—भौंह कमान कटाक्ष शर,समरभूमि बिचनैन । लाजतजेहूंदुहुँनके, सजल सुहृदसे बैन ॥ १ ॥
रूपजाल नँदलालके, परिकरिबहुरि छुटैन।खंजरीट मृगमीनसे,ब्रजबनितनकेनैन॥२॥
क०—बानीको बसन कैधौं बातको बिलास डोलै कैधौं मुखचंद्रचारु चांदनी प्रकास है।
कवि मतिराम कैधौं कामको सुयश कै पराग पुंज प्रफुलित सुमन सुवास है॥
नासा नथुनीके गजमोतिनके आभा कैधौं रतिवंत प्रगटित हियेक्के हुलास है ।
मीत करिबेको पिय नैन घनसार कैधौं बालाके बदन बिलसत मृदु हास है ॥ ४ ॥

छंदसार पिंगल ।

दाता एक जैसो शिवराज भयो जैसो अब फतेसाहिसी नगर साहिबी समाजुहै ।
जैसो चित्तौर धनी राना नरनाह भयो जैसोई कुमाऊँ पति पूरो रज लाजु है ॥
जैसे जयसिंह यशवंत महाराज भयो जिनको महीमें अजों बाढचो बलसाजुहै ।
मित्रासाहि नंद सो बुंदेल कुलचंद जग ऐसो अब उदित स्वरूप महाराजुहै ॥ ५ ॥
लछमनहीं संगलिये जावन विहार किये सीताहियेबसेकहोतासोंअभिरामको ।
नव दल शोभा जाकी विकसेउमित्रेलखि कोशलबसतकोऊसुठिधामठामको ॥
कवि मतिराम शोभा देखिये अधिक नित सरसनिधानकविकोविदकेकामको ।
कीन्हेंहैं कवित्तएकतामरसहीको यासों रामको कहतकै कहत कोऊवामको ॥ ६ ॥

रसराज ।

चंदन चढारी नभ चंदन चढारीअंग चंद उजियारी देखि नकराति कैसीहै ।
फंद फंदफबदी गसीली गांठि गूँठि मूंदिमूँदिमूंदि मुख मंद मंतरात कैसीहै ॥
मतिराम मिलन विहारी सूं तू प्यारी चलु नितरतिवारीआजुजकरातिकैसीहै ॥
कतरात कैसी बात बतरात कैसी जात सतरात कैसीरात रतरात कैसीहै ॥ ७ ॥

चोरकीचोरछिनारछिनारकीसाहुकीसाहुबलीकीबलीठगकीठगकामुककामुककीअरुछैलकीछैलछलीकीछैली
प्रवीणनकीपरवीणही जानैमतिरामनजानैकहांधौंचली।उनफेरिदईनथकीमुकताउनफेरिकैफूंकीगुलाबकली
गोपवधूतनतोलतडोलतबोलतबोलजुकोमलभाषैं।ऊरूनितंबनिकीगुरुतापगजातगयंदानिकीगतिनाषै
आगमभोतरुणापनकोमतिरामभनैभईचंचलआंषैं।खंजनकेयुगसावकज्योंउडिआवतनाफरकावतपाँषैं

क०—येरे मतिमन्द चन्द ढिगहै अनन्द तेरो जोपै विरहिन जरिजात तेरे तापते ।
तूतो दोषाकार दूजे धरेहैं कलंकउर तीसरे सखानि संग देखो शिरछापते ॥
कहै मतिराम हाल जाहिर जहानतेरो बारुणीके वासी भासी राहुके प्रतापते ।
बाँधोगयोमथोगयोपियोगयोखारोभयो बापुरोसमुद्र ऐसे पूतहीके पापते ॥॥ ९॥

(२) शिवसिंहसरोजमें लिखाहै भूषणत्रिपाठी टिकमापुर जिले कानपुर सं०१७३८मेंहुए रौद्र वीर भयानक ए तीनों रस जैसे इनकी काव्यमें हैं ऐसे और कवि लोगोंकी कवितामें नहीं पाए जाते ए महाराज प्रथम राजा छत्रशाल परना नरेशकेयहाँ छःमहीनेतक रहे तेहिपीछेमहाराज शिवराज सुलंकी सतारागढवालेके इहाँ जाय बडा मानपाया और जब यह कवित्त भूषणजीने पढा (इंद्र जिमिजंभपर) तब शिवराजने पांच हाथी औ २५ हजार रुपिया इनाम दिया इसी प्रकारसे भूषणनें बहुत वार बहुत २ रुपिया हाथी घोडा पालकी इत्यादि दानमें पाये ऐसे शिवराजके कवित्त बनाए हैं जिनकी बराबर किसी कविने वीरयश नहीं बनाय पाया। निदान जब भूषण अपने घरको चले तो परना होकर राजाछत्रशालसेमिलेछत्रशालनेबिचाराअबतो शिवराजनेइन को ऐसाकुछ धन धान्य दियाहै किहम उसका दसवांहिस्सा भी नहीं देसकते ऐसा सोचविचार करि चलते समय भूषणकी पालकीका बाँस अपने कंधे पर धरि लिया ब्राह्मण कोमल हृदय तो होतेही हैं भूषणजी बहुत प्रसन्न ह्वै यह कवित्त पढा। साहूको सराहों की सराहों छत्रशाल को। और दूसरा यह कवित्त बनाया। तेरी बरछीने बरछीनेहैं खलनके। और दो दोहा बनाय छत्रशालको दै घरमें आए॥

दोहा—एक हाडा बूँदी धनी,मरद महेबावाल। शालत नौरंगजेबके, ए दोनों छत्रशाल ॥ १ ॥
ए देखौ छत्तापता, ए देखौछत्रशाल एदिल्लीकी ढाल ए, दिल्ली ढाहनवाल ॥ २ ॥

भूषणजी थोडे दिन घरमें रहि बहुत देशान्तरोंमें घूमिघूमि रजवाडोंमें शिवराजका यश प्रगट करते रहे जब कुमाऊंमें जाय राजा कुमाऊंके यशमें यह कवित्त पढा (उलदत्त मद अनुमद ज्यों जलधिजल)।

तब राजाने सोचाकि ये कुछदानलेने आएहैंऔर हमने जो सुनाथाकि शिवराजनेलाखोंरुपया इनको दिया सो सब झूँठहै ऐसा बिचार हाथी घोडे मुद्रा बहुत कुछ भूषणके आगे किया भूषणजी बोले इसकी अब भूँख नहीं हम इसलिये इहाँ आयेथे कि देखैं शिवराजका यश यहाँ तक फैलाहै या नहीं—इनके बनाए हुए ग्रंथ शिवराजभूषण १ भूषणहजारा २ भूषणउल्लास ३ दूषणउल्लास४ए चारि ग्रंथ सुनेजातेहैं कालिदासजूने अपनेग्रंथ हजाराकी आदिमें ७० कवित्त नवरसके इन्हीं महाराजकेबनाए हुए लिखेहैं।

(३) बिहारीलाल चौबे ब्रजवासी सम्वत् १६०२ में हुये। ये कवि जयसिंह कछवाहे महाराजै आमेरके इहाँथे जयपुरकी तवारीख देखनेसे प्रगटहै कि महाराजे मानसिंह से जो संवत १६०२ में विद्यमान थे संबत १८७६ तक तीनि जयसिंह होगये हैं । पर हमको निश्चय है कि ये कवि महाराजे मानसिंहके पुत्र जयसिंहके पास थे जो महागुणग्राहकथे औ दूसरे सवाई जयसिंह इन जयसिंहके प्रपौत्र संवत् १७५५ में थे। यह बात प्रगट है कि जब महाराजे जयसिंह किसी एक थोरी अवस्था वाली रानीपर मोहित ह्वै रात दिन राजमंदिरमें

रहने लगे राज्यके संपूर्ण काज काम बंद होगए तब बिहारीलालने यह दोहा बनाय राजाके पास तक किसी उपाय से पहुँचाया।

दो०—नहिंपरागनहिंमधुररस ,नहिंविकासयहिकाल।अलीकलीहूसोंविंध्यो, आगेकौन हवाल १

इस दोहा पर राजा अत्यन्त प्रसन्न ह्वै १०० मोहर इनाम दे कहा इसी प्रकारके और दोहा बनावो बिहारीलालने सातसौ दोहा बनाए औ७०० अशरफी इनाममें पाया। यहसतसई ग्रन्थ अद्वितीय है बहुत कविलोगोंने इसकेढंग पर सतसई बनाकर अपनी कविताका रंग जमाना चाहा पर किसी कविको सुर्खरुई प्राप्त नहीं हुई है। यह ग्रंथ ऐसा अद्भुत है कि हमने १८ तिलक तक इसके देखे हैं और आज तक तृप्तिनहीं हुई लोग कहते हैं कि अक्षर कामधेनु होतेहैं सो वास्तव में इसी ग्रंथके अक्षर कामधेनु दिखाई देते हैं॥

सब तिलकों में सूरतिमिश्र आगरे वालेका तिलक विचित्र है और सब सतसैयों में विक्रमसतसई और चंदनसतसई इसके लगभग है।

बिहारी कवि२ सं० १७२८ इनके महासुंदर कवित्त हजारामें हैं। बिहारी कवि३बुंदेलखंडी सं० १८०६ सरस कविता करी है। बिहारीदास कवि४ब्रजबासी सं १६७० इनके पद रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें हैं।

(४) नीलकंठमिश्र अंतर्वेदी बासी संबत् १६४८ दासजीने इनकी प्रशंसा ब्रजभाषा जाननेमें करी है।

(५)नीलकंठत्रिपाठीटिकमापुरवालेमतिरामके भाईसंवत्१७२०इनकाकोईग्रन्थहमनेनहीं देखा॥

(६)बेनीकवि प्राचीन असनी जिले फतेपुरवाले।संवत्१६९० ए महान् कवीश्वर हुए हैं इनका एक ग्रंथ नायकाभेदमें अति विचित्र देखनेमें आयाहै इनकी कविताई बहुतही सरस ललित मधुर है।

बेनीकवि२बन्दीजन बैंती जिले रायबरेलीके निवासी संवत्१८४४एकवि महाराजेटिकेतराइ दीवान नवाब लखनऊ के इहाँ थे और बहुत वृद्ध ह्वै संवत् १८९२ के करीब मरगए।

बेनी प्रवीन ३ वाजपेई लखनऊके निवासी संवत् १८७६ कवि महासुंदर कविताकरनेमेंए विख्यात हैं इनका ग्रंथ नायकाभेदमें देखनेके योग्य है।

बेनीप्रगट४ ब्राह्मण कविंद कवि नरवरी निवासी के पुत्र संवत् १८८० इनकी काव्य महा सुंदर है।

(७) एक शभु कविका वर्णन काव्यरत्नाकरकी टिप्पणी में है उसके सिवाय यहाँ लिखाहै। शंभुना[illegible] मिश्र कवि सं० १८०३ ए महाराज महान कवि भगवंत राइ खीची केयहां असोथर में [illegible] करते थे शिव कवि इत्यादि सैकडोंमनुष्यों को इन्होंने कवि कर दिया।कवितामेंमहा [illegible] रकल्लोल१रसतरंगिणी२अलंकारदीपक ३ ए तीनि ग्रंथ इनके बनाये हुए हैं।

[illegible]नकवि वंदीजन सं० १७९८ ये कवि सुखदेवके शिष्य थे रामविलास नाम रामायण [illegible] अद्भुत ग्रंथ बनाया है रामचंद्रिका की ऐसी इस ग्रंथ में भी नाना छंदैं हैं।

[illegible] कवि त्रिपाठी डौंडियाखेरे वाले सं० १८०९ए महाराज राजा अचलसिंह बैसडौंडिया खेरेके यहांथे रावरघुनाथसिंह के नाम बैतालपचीसीको संस्कृतसे भाषा कियाहै और मुहूर्त्तचिंतामणिज्योतिषग्रंथ को भाषामें नाना छंदोंमें बनायाहै ए दोनों ग्रंथ सुंदर हैं।

शम्भुनाथमिश्र कवि बैसवारे वाले सं० १९०१ ए कवि राना यदुनाथसिंह बैस खजुरगांवके इहाँथे थोरी अवस्थामें अल्पायु होगया बैस वंशावली और शिवपुराणका चतुर्थखंड भाषामें बनाया है शम्भुप्रसाद कविके शृंगारमें सुन्दर कवित्त हैं।

(८) तोषकवि सं० १७०५येमहाराजभाषाकाव्यकेआचार्य्योंमें हैं ग्रन्थ इनकाकोई हमको नहीं मिला पर इनके कवित्तोंसे हमारा कुतुबखाना भराहुवाहै कालिदासतथातुलसीजीने भी इनकी कविता अपने ग्रन्थों में बहुत सारी लिखीहैं।

(९) चिन्तामणि त्रिपाठी टिकमापुर जिले कानपुर वाले सं० १७२९ एमहाराजभाषा साहित्यके आचार्य्योंमें गिनेजातेहैं अन्तर्वेदमें विदित है कि इनके पिता दुर्गापाठ करने नित्य देवीजीके स्थानमें जातेथे वे देवीजी बनकी भुइआं कहाती हैं टिकमापुरसे एक मैलके अंतर पर हैं एक दिन महाराज राजेश्वरी भगवती प्रसन्न है चारि मुंड दिखाय बोली यही चारों तेरे पुत्र होंगे निदान ऐसाही हुवा चिंतामणि १ भूषण २ मतिराम ३ जटाशंकर या नीलकण्ठ चारि पुत्र उत्पन्न हुए इनमें केवल नीलकण्ठ महाराज तो एक सिद्धके आशीर्वादसे कवि हुए शेष तीनों भाई संस्कृत काव्यको पढि ऐसे पंडित हुए कि उनका नाम प्रलयतक बाकी रहैगा इन्हींके वंश में शीतल औरबिहारीलालकविजिनकालालभोग है संवत् १९०१ तक विद्यमान थे निदान चिंतामणिमहाराज बहुत दिन तक नागरपुर में सूर्य्यबंशी भोंसला मकरंदशाहिके इहां रहे और उन्हींके नाम १ छंदबिचार नाम पिंगल बहुतभारी ग्रंथ बनायाऔर काव्यविवेक २ कविकुलकल्पतरु ३ काव्यप्रकाश ४ रामायण ५ ए पांच ग्रंथ इनके बनाए हुए हमारे पुस्तकालयमें मौजूद हैं इनकी बनाई हुई रामायण कवित्त और नाना अन्य छन्दोंमें बहुत अपूर्व है बाबू रुद्रसाहि सुलंकी और शाहिजहांबादशाहऔर जैनदी अहमद ने इनको बहुत दान दिए हैं इन्होंने अपने ग्रन्थों में कहीं कहीं अपना नाम मणिलाल करिकै कहा है।

चिन्तामणि २ ललित काव्य करीहै।

(१०) कालिदास त्रिवेदी बनपुरा अन्तर्वेदके निवासी सं० १७४९ ये कवि अन्तर्वेदमें बडे नामी गिरामी हुएहैं। प्रथमऔरंगजेब बादशाहके साथ गोलकुंडा इत्यादि दक्षिणके देशोंमें बहुत दिनतक रहे तेहि पीछे राजा योगाजीतसिंह रघुवंशीमहाराजे जम्बूकेइहाँ रहे और उन्हींके नाम वधूविनोद नाम ग्रन्थ महा अद्भुत बनाया और एक ग्रन्थ कालिदासहजारा नाम संग्रह बनाया जिस्में सं० १४८० से लेकर अपने समय तक अर्थात् सं० १७७५तकके कवि लोगोंके एक हजार कवित्त२१२कवि लोगोंके लिखेहैं हमको इस ग्रन्थके बनानेमें कालिदासके हजारासे बडी सहायता मिली और एक ग्रंथ और जंजीराबन्द नाम महाविचित्र इन्हीं महाराजका हमारे पुस्तकालयमें है इनके पुत्र उदयनाथ कविन्द और पौत्र कवि दूलह बडे महान्‌कवि हुएहैं।

(११) ठाकुर कवि प्राचीन सं० १७०० ठाकुर कविको किसीने कहाहै कि वे असनी ग्रामके बन्दीजनथे संवत्१८०० के करीब मोहम्मदशाह बादशाहके जमानेमें हुएहैंऔर कोई कहतेहैंकि नहीं ठाकुर कवि कायस्थ बुंदेलखण्डके वासीहैं किसी बुंदेलखण्डी कविका बयानहै कि छत्रपुर बुंदेलखण्डमें बुंदेला लोग हिम्मतिबहादुर गोसांई के मारनेको इकट्ठा थे ठाकुर कविने यह कवित्त (समयो यह वीर बरावने हैं) लिखि भेजा सबबुंदेला चले गए और हिम्मतिबहादुरने ठाकुर को बहुत रुपया इनाम दिया हिम्मति बहादुर संवत् १८०० में थेऔर कवि कालिदास

नेहजारा संवत् १७४९ के करीब बनायाहै और उसमें ठाकुरके बहुत कवित्त और ऊपर लिख हुवा कवित्त भी लिखा है। इससे हम अनुमान करतेहैं किठाकुरकविबुंदेलखण्डी अथवाअसनी वाले भाट या कायथ कछु होवें पर ए कवि अवश्य संवत् १७०० में थे इनकी काव्य महामधुर लोकोक्ति इत्यादि अलंकारों से भरी पुरी सर्व प्रसन्नकारी है । सवैया इनके बहुत ही चोटीलेहैं इनके कवित्त तो हमारे पुस्तकालय में सैकरों हैं पर ग्रन्थ कोई नहीं और न हमने किसी ग्रंथ का नाम सुना ।

ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी किशुनदासपुर जिले रायबरेली सं० १८८२ ये महान् पंडित संस्कृत साहित्य में महाप्रवीण सारे हिन्दुस्तानमें काव्यहीके हेतु फिरि ७२ बस्तेपुस्तकेंकेवलकाव्यकी इकट्ठाकीथीं अपने हाथसेभी नानाग्रन्थ लिखेथे और बुंदेलखण्डमें तौ घर घर कविलोगोंके इहाँ फिर फिर एक संग्रह भाषा कवि लोगोंकीइकट्ठाकीथी रसचंद्रोदय ग्रन्थ इनका बनाया हुवाहै तत्पश्चात् काशीजीमें गणेश और सरदार इत्यादि कवि लोगोंसे बहुत मेल जोल रहा और अवधदेशके राजा महाराजाओंके इहाँभी गये जब इनका संवत् १९२४ में देहान्त हुवा तौ इनके चारों महामूर्ख पुत्रोंने १८ । १८ बस्ते बाँटिलिये और कौडियोंके मोल बेंचिडाले हमने भी प्रायः दोसौ ग्रन्थ अन्तमें मोल लियाथा ।

ठाकुररामकवि इनके कवित्त शान्तरसमें सुन्दर हैं ।

ठाकुरप्रसादत्रिवेदी अलीगंज जिले खीरी विद्यमान हैं सत कवि हैं ।

(१२) निवाजकवि जुलाहा बिलग्रामी सं० १८०४ शृंगारमें अच्छेकवित्त हैं ।

निवाज२ ब्राह्मण अन्तर्वेद वाले सं० १७३९ ये कवि महाराजे छत्रशाल बुंदेला परना नरेश के इहाँ थे आजमशाहकी आज्ञानुसार शकुंतला नाटकको संस्कृतसे भाषा बनाया एक दोहासे लोगोंको शक है कि निवाजकवि मुसलमानथे पर हमने बहुत जांचा तौ १ निवाज मुसलमान और २ हिन्दू पाये गये हैं ।

दो०–तुम्हें न ऐसी चाहिये,छत्रशाल महराज । जहँभगवतगीतापढ़ै,तहँ कवि पढै निवाज ॥१॥

निवाज ३ ब्राह्मण बुंदेलखंडी सं०१८०१ ये कवि भगवंतराइ खीँची गाजीपुरवालेके इहांथे ।

(१३) सेनापति कवि वृंदावन बासी १६८० ए महाराज वृन्दावनमें क्षेत्र संन्यास ले सारीवैस वहाँही व्यतीत किया । काव्यमें इनकी प्रशंसा हम कहांतक करैं अपने समयके भामथे काव्यकल्पद्रुम इनकाग्रंथ बहुतही सुंदर है हजारामें इनके बहुत कवित्त हैं ।

(१४) सुखदेव मिश्र कंपिला वासी १७२८ ए कवि भाषा साहित्यके आचार्य्योंमें गिने जाते हैं प्रथम राजा अर्जुनसिंहके पुत्र राजाराजसिंह गौरके इहाँ जाय कविराजकी पदवीपाय वृत्तबिचार नाम पिंगल सब पिंगलोंमें उत्तम ग्रन्थको रचा तत्पश्चात् राजा हिम्मतिसिंह बंधलगोती अमेठीके इहां आय छंदबिचार नाम पिंगल बनाया फिरि नवाबफाजिलअलीखां मंत्रीऔरंगजेब बादशाहके नाम भाषासाहित्यमें फाजिलअलीप्रकाश नाम ग्रन्थ महाअद्भुत रचा ए तीनों ग्रन्थोंके सिवाय हमने कहीं लिखा देखाहै कि अध्यात्मप्रकाश १ दशरथराय २ ए दोग्रन्थऔरभी इन्हीं महाराजके किये हुए हैं ।

सुखदेव मिश्र कवि २ दौलतपुर जिले रायबरेली वाले । १८०३ ए महाराज महान् कवि

बैसवारेमें होगये हैं राव मर्दनसिंह बैस डौंडियाखेरेके इहांथे और उन्हींके नाम रसार्णवनाम ग्रंथ नायकाभेदमें बहुत सुंदर बनाया है शंभुनाथ इत्यादि कवि इन्हींके शिष्य थे।

सुखदेव कवि ३ अंतर्वेदी वाले। १७९१ ए कवि महाराजै भगवंत रायखीची असोथर वाले के इहांथे कछु आश्चर्य्य नहीं है कि ए महाराज सुखदेव मिश्र दौलतिपुरवाले न होवें।

(१५) देव कवि प्राचीन देवदत्त ब्राह्मण समानेगांव जिले मैनपुरी निवासी सं० १६६१ ये महाराज अद्वितीय अपने समयके भाम मम्मट के समान भाषा काव्यके आचार्य होगयेहैं शब्दों में ऐसी समाई कहां है जिनमें इनकी प्रशंसा की जावे इनके बनाये ग्रंथोंकी संख्या आज तक ठीक ७२ हमको मालूम हुईहैं तिनमें केवल ११ ग्रंथोंके नाम जो हमको मालूमहैं लिखे जाते हैं जिन्हें अक्सर हमने भी देखाहै।

१ प्रेमतरंग २ भावविलास ३ रसविलास ४ रसानंदलहरी ५ सुजानविनोद ६ काव्यरसायन पिंगल ७ अष्टयाम ८ देवमायाप्रपंचनाटक ९ प्रेमदीपिका १० सुमिलविनोद ११ राधिकाविलास

देव (काष्ठजिह्वास्वामी) काशीस्थ। १९११ ए महाराज पंडितराज षट्शास्त्रके वक्ता प्रथम संस्कृत काशीजीमें पढि दैवयोगसे एकबार अपने गुरुसे बादकरि पीछे पछिताय काष्ठकी जीभ मुहँमें डालि बोलना बंद करिदिया पाटीमें लिखिके बातचीत करतेथे उन्हींदिनों श्रीमन्महाराज ईश्वरीनारायणसिंह काशीनरेशने इनसे उपदेश लै रामनगरमें टिकाया तब ए महाराज भाषा में नाना ग्रन्थ विनयामृत इत्यादि बनाए इन्हींके पद आजतक काशीनरेशकी सभामें गाएजातेहैं

(१६) पजनेशकवि बुंदेलखण्डी १८७२ ए कवि परनामें थे और मधुप्रिया नाम ग्रंथ भाषा साहित्यमें अद्भुत बनाया है इस कविकी अनूठी उपमा अनूठे पद अनुप्रासैं जमक तारीफके-योग्य हैं पर टवर्ग शृंगार रसमें और कटु अक्षरोंसे जो अपनी कवितामें भरिदियाहै इस कारण से इनकी काव्य कविलोगोंके तीररूपी जिह्वाकी निशाना हो रही है इनका नखशिख देखने योग्य है इन्होंने पारसी विद्यामें भी श्रम किया था।

(१७) घनाआनंद कवि। १६१५ ए कवि कविलोगोंमें महाउत्तम कवि होगयेहैं।

(१८) घनश्याम शुक्ल असनी वाले १६३५ ए कवि कवितामें महानिपुण बांधवनरेशके इहां थे ग्रन्थ तौ पूरा हमने कोई नहीं पाया कवित्त २०० तक इनके हमारे पासहैं कालिदासने भी इनके कवित्त हजारामें लिखे हैं।

(१९) सुंदरकवि ब्राह्मण ग्वालियर निवासी सं० १६८८ ए महाराज शाहजहां बादशाहके कवि थे पहिले कविरायकी पदवी पाया इनका बनाया हुवा सुंदर शृङ्गार नाम ग्रन्थभाषासाहित्यमें बहुत सुंदर है इन्हीं कविके पदमें यह अगन पराथा (सुंदर कोप नहीं सपने) यह कवित्त इस ग्रन्थमें है।

सुंदर कवि दादूजीके शिष्य मेवाडदेशके निवासी। इनकी कविता शांतरसमें कुछ अच्छीहै सुन्दरसांख्य:नाम एक, इनका बनाया हुआ ग्रंथभी सुना जाताहै।

(२०) सुन्दरकवि बंदीजन असनीवाले रसप्रबोध ग्रंथ बनाया है

मुरारिदास व्रजवासी इनके पद रागसागरोद्भवमेंहै।

(२१) बोधाकवि सं० १८०४ इनके कवित्त बहुतही सुंदर हैं।

बोधकवि बुंदेलखण्डी। सं० १८५५ ऐजन्।

(२२) श्रीपतिकविप्रयागपुर जिलेबहिरायच निवासी सं० १७०० येमहाराजभाषासाहित्यके आचार्योंमें गिनेजातेहैं इनके बनाएहुए काव्यकल्पद्रुम १ काव्यसरोज२श्रीपतिसरोज३ ये तीन ग्रंथ विख्यात हैं हमने ये तीनों ग्रंथ नहीं देखे और न इनके कुल और न जन्मभूमिसे हमको ठीक ठीक आगाही है।

(२३)दयानिधिकवि बैसवारेके सं० १८११ राजाअचलसिंह बैसकी आज्ञानुसार शालिहोत्र ग्रंथ बनाया।

(२४)युगलकिशोरभट्ट कैथल बासी सं० १७९५ए महाराज मोहम्मदशाह बादशाहकेबडे मुसाहिबों में थे इन्होंने संबत् १८०३ में अलंकारनिधि नाम एक ग्रंथ अलंकारमें अद्वितीय बनाया है जिस्में ९६ अलंकार उदाहरण समेत वर्णन किये हैं उसी ग्रंथमें ए दो दोहा अपने नाम और सभाके समाचार में कहे हैं।

दोहा–ब्रह्म भट्ट हौं जाति मैं, निपट अधीननिदान। राजा पद मोकोदयो, महमदशाहसुजान॥१॥
चारि हमारी सभामें, कोविद कविमतिचारु। सदा रहत आनँद बढे, रसको करत बिचारु॥ २॥
मिश्र रुद्रमणि विप्रवर, अरु सुखलाल रसाल। शतंजीव सुगुमान हैं, शोभितगुणनि निशाल॥३॥

युगलकिशोर कवि २ शृंगाररस में कवित्त नीके हैं ।

जुगराज कवि बहुतही सरस काव्य इनकी है।

जुगुलप्रसाद चौबे। इनकी बनाई हुई दोहावली बहुत सुंदर काव्य है।

जुगुलदास कवि–पद बनाए हैं ।

जुगुलकवि सं० १७५५ इनके बनाए हुए पद अति अनूठे महाललित हैं।

(२५) कविंद (उदयनाथत्रिवेदी) बनपुरा निवासी कविकालिदासजूके पुत्र सं० १८०४ ये कवि अपने पिताके समानमहान्कवीश्वर होगुजरे हैं प्रथम राजाहिम्मतसिंह बंधलगोत्री अमेठी महाराजकेयहां बहुत दिनतक रहे और कवितामें अपना नाम उदयनाथ वर्णन करतेरहे जब राजाके नामसे रसचन्द्रोदयनाम ग्रंथ बनाया तबराजाने कविंदपदवीदिया तबसे अपनानाम कविंदकरके धरतेरहे। इस ग्रंथकेचारिनामहैं रतिविनोद चंद्रिका १ रतिविनोदचंद्रोदय२रसचंद्रिका३रसचंद्रोदय ४ यह ग्रंथभाषासाहित्यमें महाअद्भुतहै तेहिपीछे कविंदजीथोरेदिन राजागुरुदत्तसिंहअमेठीके इहाँरहि भगवंतराइखीचीऔरगजसिंहमहाराजे आमेरऔर रावबुद्धहाडा बूंदीवालेकेयहां महामान सन्मानके साथ काल व्यतीत करतेरहेऔरएक कविंदत्रिवेदी बैतीगांवजिलेरायबरेलीमें भी महान्कवि होगयेहैं।

कविंद२ सखीसुख ब्राह्मण नरवरबुंदेलखंड निवासीके पुत्र सं० १८५४ इन्होंने रसदीपकनाम ग्रंथ बनाया है।

कविंद ३ सरस्वती ब्राह्मण काशी निवासी सं० १६२२ ये कविन्दाचार्य्य महाराज संस्कृतसाहित्य शास्त्रमें अपने समयके भानु थे। शाहजहां बादशाहके हुकुमसे भाषाकाव्य बनाना प्रारंभ किया और बादशाही आज्ञानुसार कविंदकल्पलता नाम ग्रंथ भाषामें रचा जिस्मेंबादशाहके पुत्र दाराशिकोह और बेगम साहेबकी तारीफमें बहुत कवित्त हैं ।

(२६) गोविंद खटलकवि सं० १६७० इनके कवित्त हजारा में हैं।

गोविंदजी कवि सं० १७५० ऐजन्।

गोविंददासजी ब्रजवासी सं० १६१५ रागसागरोद्भवमें इनकीकविताहै एकविनाभाजीकेशिष्यथे

गोविंदकवि सं० १७९८ एकवीश्वर बडे नामी कवि हो गए हैं इनका बनायाहुवा करुणाभरण ग्रंथ बहुत कठिन और साहित्यमें शिरोमणि है।

केशवदास सनाढ्य मिश्र बुंदेलखंडी सं० १६२४ इनका प्राचीन निवास टिहरीथा.राजा मधुकर शाह उडछावालेके इहां आये और वहां उनका बड़ा सन्मान हुवा राजा इंद्रजीतसिंहने २१ गांव संकल्प दिये तब कुटुंब सहित उडछे में रहने लगे। भाषा काव्यके तौ भाम मम्मट भरता के समान प्रथम आचार्य्य समुझना चाहिये काहेते कि काव्यके दशौ अंग पहिले पहिले इन्हींने कविप्रिया ग्रन्थमें वर्णन किये तेहि पीछे अनेक आचार्य्योंने नाना ग्रन्थ भाषामें रचे प्रथम मधुकर शाहके नाम विज्ञानगीता ग्रंथ बनाया औ कविप्रिया ग्रन्थ प्रवीनराइ पातुरीके लिये रचा और रामचंद्रिका राजा मधुकरशाहके पुत्रइन्द्रजीतके नामसे बनाया और रसिकप्रिया साहित्य और रामअलंकृतमंजरी पिंगल ए दोनों ग्रन्थ विद्वज्जनोंके उपकारार्थ रचे।जब अकबरबादशाहने प्रवीनराइपातुरीके हाजिर नहोने औरउदूल हुकमी और लड़ाईके कारण राजा इन्द्रजीत पर एक करोड़ रुपया जुर्माना किए तब केशवदासजीने छिपकर राजा बीरवर मंत्रीसे मुलाकात किया और बीरबरजूकीप्रशंसामें(दियो करतार दुहूँ करतारी) यह कवित्त पढा तब राजा बीरबरने महाप्रसन्न ह्वै जुर्माना माफ कराया परन्तु प्रवीणराइको दरबारमें आनेपडा।

केशवदास २ सामान्य कविता है।

केशवराइ बाबू बघेलखंडी सं० १७३९इन्होंने नायकाभेदमें एक ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनायाहै और इनके कवित्त बलेदेवकविने अपने संगृहीत ग्रन्थ सतकबि गिराबिलासमें लिखे हैं।

केशवरामकवि इन्होंने भ्रमरगीत नाम ग्रन्थ रचाहै।

बाबू रघुनाथ सिंहके दोहेके अनुसार कवियोंका 'समय शिवसिंह सरोजसे' निरूपण किया जाताहै।

(१)ओलीरामकवि सं० १६२१ कालिदासजीने इनकी काव्य अपने हजारेमें लिखेहैं

(२)अकबरका हाल पहिले लिखा गयाहै।

(३)अगर कवि सं० १६२६ नीतिसम्बंधी कुण्डलिया छप्पय दोहा इत्यादि बहुत बनाए हैं।

(४) अगरदास गलता जयपुर राज्यके निवासी सं० १५९५ इनके बहुत पद रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें हैं ए महाराजे कृष्णदास पयअहारीके शिष्यथे और इन महाराजके नाभादास भक्तमालग्रंथकर्त्ता शिष्यथे।

(५) करनेशकवि बंदीजन असनीवाले सं० १६११ ये कवि नरहरि कविके साथ दिल्लीमें अकबरबादशाहकी सभामें जाते आते थे इन्होंने कर्णाभरण १ श्रुतिभूषण भूपभूषण ३ ये तीनि ग्रन्थ बनाये हैं।

(६) चतुरबिहारीकविब्रजबासी संवत्१६०५ इनके पद रागसागरोद्भवमें बहुत हैं।

(७) गोपकवि सं० १५९० रामभूषण १ अलंकारचन्द्रिका २ ए दो ग्रन्थ बनाए हैं।

(९) अमरेशकवि सं० १६३५ इनकी कविता महाउत्तम है कालिदासजीने अपने हजारेमें इनकी कविता बहुतसी लिखीहैं।

(१०) आशकरनदास कछवाह राजा भीमसिंह नरवरगढ वालेके पुत्र सं० १६१५ पद बहुत बनाए हैं जो कृष्णानंद व्यासदेवके संगृहीत ग्रन्थमें मौजूद हैं।

(११) अजबेस प्राचीन सं० १५७० ये कवि श्रीराजा वीरभानसिंह जोधपुरके इहां थे। और उसी देशके रहनेवाले बंदीजन मालूम होतेहैं।

अजबेस नवीन भाट सं० १८९२ये कवि श्रीमहाराज विश्वनाथसिंह बांधव रीवांनरेशके इहाँथे।

(१२) कादर, (कादिरबख्श मुसलमान पिहानीवाल) सं० १६३५ कवितामें निपुण थे ओर सैयद इब्राहीम पिहानीवाल रसखानिके शिष्य थे।

(१४) टोडर, (राजा टोडरमल खत्री पंजाबी) सं० १५८० ये राजा टोडरमल अकबर बादशाहके दीवान आला थे इनके हालातमें तारीख फारसी भरीहुई है अरबी फारसी संस्कृत विद्यामें महानिपुण थे श्रीमद्भागवतको संस्कृतसे फारसीमें उलथा कियाहै और भाषामें नीति-संबंधी बहुत कवित्त कहे हैं इन महाराजने दो काम बहुत शुभ हिन्दुस्तानियों के लिये किए हैं एक तौ पंजाब देशमें खत्रियोंके इहां रिवाज तीन साला मातमको उठाय केवल वार्षिक रस-मको नियत किया दूसरे फारसी हिसाब किताबको ईरान देशके माफिक हिन्दुस्तानमें जारी किया सं० ९९८ हिजरीमें शहर लाहौरमें देहान्त हुआ।

(१६) जैतकवि सं० १६०१ अकबर बादशाहके इहां थे।

(१७) चरणदास ब्राह्मण पंडितपुर जिला फैजाबाद सं० १६३७ सुरोदय ग्रन्थ बनाया।

(१८) चतुर्भुज सुन्दर कविता करी है।

चतुर्भुजदास सं० १६०१ रागसागरोद्भवमें इनके बहुत पद हैं ए महाराज करौलीके राजा स्वामी विट्ठलनाथजी गोकुलस्थके शिष्यथे अष्टछापमें इनका भी नाम है।

(१९) जीवन कवि सं० १६०८ इनके कवित्त हजारामें हैं।

(२१) ताजकवि सं० १६६२ हजारामें इनके कवित्त हैं।

(२२) होलरायकवि बंदीजन होलपुर जिले बाराबंकी सं० १६४० ए महान कवि अकबर-के दरबार तक राजा हरिवंशराइ दीवान कायथ बदरकावासीके वसीलेसे पहुँचे और एक चक पाइ उसीमें होलपुर नाम ग्राम बसाथा एक दिन श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी अयोध्यासों लौटते समय होलपुरमें आए होलरायने गोसांईजीके लोटाकी प्रशंसामें कहा।

दोहा—लोटा तुलसीदासको, लाख टकाको मोल।—तब गोसांईजी बोले—

मोल तोल कछु हैनहीं, लेहु राय कवि होल॥ १॥

होलराइने उस लोटाको मूर्तिके समान स्थापन करि उसके ऊपर चबूतरा बांधि पूजन करते हे हमने अपनी आंखसे देखा है कि आज तक उसकी पूजा होतीहैइस होलपुरमें सिवायगिरिधर और नीलकण्ठ इत्यादिके कोई नामी कवि नहींहुए इनदिनों लछिरामऔर संतबकस एदोकवि अच्छे हैं यह गाँव आज तक इन्हीं बंदीजनोंके नंबरमें है।

(२३) खेमकवि २ ब्रजवासी सं० १६३० रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें इनके पद हैं। एक खेमकवि बुंदेलखंडी हैं।

(२४) जोधकवि सं० १२९० अकबरबादशाहके इहां थे।

१ संवत् १८९२ के अजबेस सूरदासके समयके नहीं हैं।

(२५) जोयसीकवि सं० १६५८ इनके कवित्त हजारामें हैं ।

(२६)चंद्रसखी ब्रजबासी सं० १६३८ इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं ।

(२७)कृष्णदास गोकुलस्थ वल्लभाचार्य्यके शिष्य सं० १६०१ इनके बहुत पद रागसागरोद्भवमें लिखेहैं औरइनकीकविताअत्यंत ललित और मधुरहै ए कविऔर सूरदासऔ परमानंददास और कुंभनदास चारों श्रीवल्लभाचार्य्यके शिष्यथे कृष्णदासजीकी कवितासूरदासकी कवितासे मिलतीथी एकदिन सूरजी बोले आप अपना कोई ऐसापद सुनावो जोहमारी काव्यमें नमिले तब कृष्णदासजीने चारि पद सुनाये उन सब पदोंमें सूरजीने चोरी अपने पदोंकीसाबितकिया तब कृष्णदासजीने कहा कालिह हम अनूठे पद सुनावेंगे ऐसा कहि सर्व रात्रि इसी शोचमें नहीं सोये प्रातःकाल अपने सिरहाने यह पद लिखाहुवा देखि सूरजीके आगे पढा॥ आवत बने कान्ह गोप बालक संग नैचुकी खुर रेनु छुरित अलकावली॥ सूरजी जानगये कि यह करतूत किसी और ही कौतुकीकी है बोले अपने बाबाकी सहायता लीनी है इनकी गिनती अष्टछापमें है अर्थात् ब्रजमें आठ८ बडेकवि हुए हैं जैसा तुलसीशब्दार्थप्रकाश ग्रंथमें गोपालसिंहने ब्यौरा अष्टछापका लिखाहै इसभाँतिसे कि सूरदास१कृष्णदास२परमानंद३ कुंभनदास ४ए चारों वल्लभाचार्य्यकेशिष्य और चतुर्भुज५छीतस्वामी६नंददास७गोविंददास ८ ए चारों विट्ठलनाथ वल्लभाचार्य्यके पुत्रके शिष्य अष्टछाप करिके विख्यात हैं कृष्णदासजीका बनाया हुवा प्रेमरसरासग्रन्थ बहुत सुंदर है ।

(२८)छेमकवि २ बंदीजन दलमऊके सं० १५८२ ए कवि हुमायूं बादशाहके इहाँ थे ।

(२९)अमृत कवि संवत् १६०२ अकबर बादशाहके यहांथे ।

(३०)खानखाना नवाब अब्दुलरहीम खानखाना बैरमखांके पुत्र रहीम और रहिमन छाप है। सं० १५८० ए महाविद्वान् अरबी फारसी तुरकी इत्यादि यामिनीभाषा और संस्कृत ब्रजभाषाके बडे पंडित अकबर बादशाहकी आंखकी पुतली थे इन्हींके पिता बैरमकी जवांमर्दी और तदबीरसे हुमायूंको दुबारा दिल्लीका राज्य प्राप्तहुआ खानखानाजी पण्डित कवि मुल्ला शायर ज्योतिषी और सब गुणवान मनुष्योंके बडे कदरदान थे इनकी सभा रातदिन विद्वज्जनोंसे भरीपुरी रहती थी संस्कृतमें इनके बनाए श्लोक बहुत कठिन हैं और भाषामें नवोरसके कवित्त दोहा बहुतही सुन्दर हैं नीतिसम्बन्धी दोहा ऐसे अपूर्व हैं कि जिनके पढनेसे कभी पढनेवालेको तृप्ति नहीं होती फारसीमें इनका दिवान बहुत उमदा है वाकियात बाबरी अर्थात् बाबर बादशाहने जो अपना जीवनचरित्र तुरकी जबानमें आपही लिखा है उसको इन्होंने फारसी जबानमें तर्जुमा किया है७२वर्षकी अवस्था में सन् १०३६ हिजरीमें सुरलोकको सिधारे ।

श्लोक–आनीता नटवन्मया तव पुरः श्रीकृष्ण या भूमिका व्योमाकाशखखांबराब्धिवसवस्त्व-
त्प्रीतयेऽद्यावधि ॥प्रीतो यद्यसि मां निरीक्ष्य हि भगवन्मत्प्रार्थितं देहि मे नो चेद् ब्रूहि
कदापि मा नय पुनर्मामीदृशीर्भूमिकाः ॥ १ ॥

शृङ्गार सोरठा–भाषा ।

पलटि चली मुसक्याय,दुति रहीम उजियाय अति।बाती सी उसकाय,मानौ दीनी दीपकी ॥१॥
गई आगि उरलाय, आगि लेन आई जु तिय।लागी नहीं बुझाय,भभकि भभकि बरि बरि उठै२

नीति–दोहा–खीरा शिर धरि काटिये,मलिये निमक लगाय ।
करुये मुखको चाहिये, रहिमन यही सजाय ॥ १ ॥

फारसी ।

शुमार शौक नदानिस्ताअमकि ताचंदअस्त, जुज ई कद्र किदाम सख्त आरजूमन्द अस्त, नदाना दानम्, वनैदानम्; इंकदरदानम्, कि पाय ताबसरम हर्चे हस्तदरबंदस्त;

एक दिन खानखानाने यह आधा दोहा बनाया—

तारायन शशि रैन प्रति,सूर होहिं शशि गैन ।

औ दूसरा चरण नहीं बना रोज रात्रि को यह आधा दोहा पढाकरते थे दिल्लीमें एक खत्रानी ने यह हाल सुनि आधा चरण बनाय बहुत इनाम पाया ।

तदपि अँधेरो है सखी, पीव न देखे नैन ॥ १ ॥

(३१)जगनकवि सं० १६५२ शृङ्गाररसमें कवित्त चोखे हैं ।

(३२)ऊधोराम कवि सं० १६१० इनकी कविता कालिदास जू ने अपने हजारामें लिखीहै।

(३३)कमाल कवि (कबीरजू के पुत्र) कायस्थ सं० १६२२ इनकी कविता कालिदासने हजारा में लिखी है ।

(३४)जमालउद्दीन पिहानीवाल सं० १६२५ कवि अच्छे थे ।

(३५)जगनंदन कवि वृन्दावनवासी सं०१६५८ इनके कवित्त हजारामें हं ।

(३७)जमाल सं० १६०२ए कविगूढकविकूटमें बहुत निपुण थे इनके दोहा बहुतसुंदर हैं।

(३८) जलालउद्दीन कवि सं० १६१५ हजारा में इनके कवित्त हैं ।

(३९) कल्याणदास ब्रजबासी कृष्णदास पयअहारीके शिष्य सं० १६०७ इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं । पुनःकल्याण सिंह भट्ट एक और हैं ।

(४०)फैजी शेख अवल फैज नागौरी शेख मुबारक के पुत्र सं० १५०८इनको छोटे बडे विद्वान् भली भांति जानते हैं कि ए फैजी अरबी फारसी संस्कृत भाषाजें महानिपुण थे इनका ग्रंथ हमने भाषामें नहीं पाया केवल दोहरा मिलेहैं ए अकबरके कविथे ।

(४१)ब्रह्मकवि राजा बीरबल ब्राह्मण अंतर्वेदिवाले सं०१५०८इनका नाम प्रथम महेशदासथाए कान्यकुब्ज दुबे ब्राह्मण जिले हमीरपुरके किसी गांवके रहनेवाले थे काव्य पढि लिखि राजा भगवानदास आंबेर नरेशके इहाँ कवि लोगोंमें नौकर होगये राजाभगवानदास इनकी कविता-से बहुत प्रसन्न ह्वै अकबर बादशाहाको नजरके तौर इनको देदिया ए कवि काव्यमें अपना नाम ब्रह्म करिके वर्णन करते थे अकबर कविताके सिवाय इनमें सब प्रकारकी बुद्धि पाय पूर्वसंस्कारके अनुसार प्रथम अपनामित्र बनाय कविराइकी पदवी दिया तेहि पीछे पांच हजारीका मनसबऔ मुसाहेब हातिशवर राजे बीरबरकाखिताब दिया इनके जीवनचरित्र विचित्र तवारीखोंमें लिखे हैं सन् ९९० हिजरीमें बिजौर इलाके काबुलमें पठानोंके हाथसे समरभूमिमें मारेगए इनका समग्र ग्रन्थ तौकोई हमने देखा सुना नहीं पर इनकी कविताई बहुतही फुटकर हमारे पुस्तकालयमें हैं सूरदासजीने कहा है ।

दोहा ।

सुन्दर पद कविगंगके; उपमाको बरबीर।केशव अर्थ गंभीर को,सूर तीनि गुण तीर ॥

राजा बीरबलने अकबरके हुक्मसे अकबरपुर गाउँ जिले कानपुरमें बसाय आप भी अपना निवासस्थान उसीको नियत किया और नारनौल कसबामें इनकी पुरानी इमारतें बडी

आलीशान आज तक मौजूद हैं चौधराईका ओहदा जो बहुधाब्राह्मणोंको मिला और गोबध बंद हुवा औरहिंदू मुसल्मानोंमें बहुत मेलजोल होगया ए सबबातें इन्हीं महाराजकी कृपासेहुईथीं

(४२) फहीम शेख अबदुलफजल फैजीके कनिष्ठ सहोदर सं० १५८०इनके केवलदोहरा हमने पाये हैं ग्रंथ कोई नहीं मिला ए अकबरके वजीर थे।

(४३) अभयराम सं० १६०२ कालिदासजीने इनकी काव्य अपनेहजारेमें लिखाहै।

(४४) परसिद्धकवि प्राचीन सं० १५९० ए महान् कवीश्वर खानखानाके इहां थे।

(४५) विट्ठल विपुल २ गोकुलस्थ श्रीस्वामी हरिदास के शिष्य १५८० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं ए महाराज मधुबनमें बहुधा रहाकरतेथे।

(४६) रहीमकवि ए रहीमकवि खानखानाकेसिवाइ दूसरेरहीमहैंकविताइनकीसरसहै काव्यनिर्णयमें दासकविने इनका नाम एक कवित्तमें लिखाहैपरंतु दोनों रहीम अर्थात् अबदुलरहीम खानखाना और इन रहीमकी फुटकर काव्यका भिन्न भिन्न करना कठिन है।

कवित्त— सूर केशौ मंडन बिहारीकालिदासब्रह्म चितामणिमतिराम भूषणसोजानिये।नीलकंठ नीलाधर निपट नेवाज निधि नीलकंठमिश्र सुखदेव देव मानिये ॥ आलम रहीम खानखाना रसलीनवली सुंदर अनेक गन गनती बखानिये। ब्रजभाषाहेत ब्रजबसकीन अनुमान एते एते कविनकी वाणीहूंते जानिये ॥ १ ॥

(४७) अमरसिंह हाडा जोधपुरकेराजा सं० १६२१ ए महाराजअमरसिंह श्रीहाडावंशावतंस सूरसिंहके पौत्रहैं जिन सूरसिंहने छःलाखरुपया एक दिनमें छः कवि लोगोंको इनाम दियाथा और जिनके पिता गजसिंहने राजपुतानेके कविलोगोंको धनाधीश करदिया था राजा अमरसिंहकी तारीफमें जो बनवारी कविने यह कवित्त कहाहै कि (हाथकी बडाई की बडाई जमधरकी) सो इसकी बाबत टाड साहेबकी किताब टाडराजिस्तानसे हम कछु लिखते हैं। प्रगटहो कि राजा अमरसिंह हाडा महा गुणग्राहक और साहित्यशास्त्रके बडेकदरदानऔरखुदभीमहाकविथे। इन्हीं महाराजाने पृथ्वीराजरायसा चंदकवि कृतको सारे राजपुतानेमें तलाश कराय ६९ उनहत्तर खंड तक जमा किया जो अब सारे राजपुतानेमें बडे बडे पुस्तकालयोंमें मौजूद हैं. शाहजहां बादशाहके इहां अमरसिंहका मनसब तीन हजारीथा जो कि अमरसिंह बहुधा शेर शिकारमें रहा करतेथे इस लिये एकदफे शाहजाहांने नाराज ह्वै कछु जुर्माना किया और सलावतिखांबख्शी उल्मुमालिकको जुर्माना वसूल करनेको नियत किया अमरसिंह महाक्रोधाग्निसे प्रज्वलित दरबारमें आया। पहिले एक खंजरसे सलावतिखांका काम तमाम किया पीछे शाहजहां परभी तलवार आबदार झारी तलवार सितूनमें लगी बादशाह तौ भागबचे अमरसिंहने पांच और बडे सरदार मुगलोंको मारि आप भी उसीजगह अर्जुनगौर अपने सालेकेहाथसेमारेगयेविस्तारकेभयसेसंक्षेपसे लिखाहै.

(४९) दील्हकवि सं० १६२५

(५०) नरोत्तमदास ब्राह्मण बाडी जिले सीतापुरवाले सं० १६०२ सुदामाचरित्र बनायाहै मानो प्रेमसमुद्र बहायाहै।

(५१) चेतनचंद्रकवि सं० १२१६ राजाकुशलसिंह सेंगर वंशावतंसकी आज्ञानुसार अश्वविनोद नाम शालिहोत्र बनाया।

(५२) बारककवि सं० १६५५

(५५) विद्यादास ब्रजबासी सं० १६५० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं।

(५६) छीतस्वामी ब्रजबासी सं० १६०१ इनके पद बहुत रागकल्पद्रुममेंहैं ए महाराज वल्लभाचार्य्यके पुत्र बिट्ठलनाथजीके शिष्यथे इनकी गिनती अष्टछापमें है।

(५७) भगवतरसिकवृन्दावननिवासीमाधवदासजीके पुत्रहरिदासजीके शिष्य सं० १६०१ इनकी कुंडलियां बहुत सुंदर हैं।

(५८) छत्रकवि सं० १६२५ विजयमुक्तावलीनाम ग्रन्थ अर्थात् भारतकी कथाबहुत संक्षेपसे सूचीपत्रके तौरसे नानाछंदोंमें वर्णन कियाहै।

(५९) गदाधरमिश्र ब्रजवासी सं० १५८० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं इनका बनायाहुवा यह पद'सखी हौं श्यामके रंग रंगी देखि बिकायगई वह मूरति मूरति हाथ बिकी।'देख स्वामीजीव गोसाईं जो उस समय बडे महात्मा थे गदाधर भट्टसे बहुत प्रसन्न हुए।

(६०) मानसिंह महाराजै कछवाह आमेरवाले सं० १५९२ ए महाराज कवि कोविदोंके बडे कदरदानथे हरिनाथ इत्यादि कवीश्वरोंको एक एक दोहामें लक्ष लक्ष रुपया इनाम दिया इन्होंने अपने जीवनचरित्रकी किताब विस्तारपूर्व्वक बनायाहै जिस्का नाम मानचरित्र है उसी ग्रंथमें लिखाहै कि जब राजा मानसिंह काबुलकी ओर अकबरके हुकुमसे चले और अटक नदीपर पहुँचकै धर्म्मशास्त्रको विचारि उतरनेमें शोच बिचार करने लगे और अकबरशाहको लिखा तब अकबरने यह दोहा लिखा।–

दोहा– सबै भूमि गोपालकी,तामें अटक कहा। जाके मनमें अटकहै, सोई अटक रहा॥ १॥

यह दोहा पढ़ि मानसिंह अटकपार जाय स्वामिकार्य्यमें बडी वीरता करी॥

(६१) लालनदास ब्राह्मण दलमऊ वाले सं० १६५२ ए महाराज बडे महात्मा हो गुजरे हैं इनके कवित्त शांतरसमें हैं और हजारामें भी कालिदासने इनका नाम लिखाहै। एक और गोतीलाल कवि हुए हैं।

(३२) मोतीलाल कवि बांसी राज्यके निवासी सं० १५९७ गणेशपुराण भाषामें बनाया। एक और मोतीलाल कवि हुए हैं।

(६३) हरिदास स्वामी वृन्दावन निवासी सं० १६४० इन महाराजका जीवनचरित्र भक्तमालमें है इहां केवल हमको काव्यहीका वर्णन करना अवश्य है सो संस्कृतकाव्यमें जयदेव कविसे इनकी कविता कम नहीं है और भाषामें इनके पद सूर और तुलसीके पदोंके समान मधुर और ललित हैं इन्होंने बहुत ग्रन्थ बनाये हैं पर हमने इनकी कविता केवल वही देखाहै रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें है तानसेनको इन्हीं महाराजने काव्य और संगीतविद्या पढ़ाया था।

(६४) हरिनाथ कवि महापात्र बंदीजन असनीवाले सं० १६४४ ए महान् कवीश्वरनरहरिजूके पुत्र बडे भाग्यवान् पुरुषथे जहां जिस दरबारमें गये लाखों रुपया हाथी घोडे गावँ रथ पालकी पाय लौटे श्रीबांधवनरेश राजाराम बघेलेकी प्रशंसामें यह दोहा पढ़ा।

दोहा–लंकालौं दि[illegible] ई,साहि विभीषण काम। भये बघेलो रामसों,राजा राजाराम॥ १॥

इस दोहा पर एक लक्ष रुपया इनाम पाया। और राजा मानसिंह सवाई आमेरवालेके पास ए दोहा पढ़ि दो लक्ष रुपया दान पाया।

दोहा–बलि बोई कीरति लता,कर्ण करी द्वै पात। सींची मान महीपने जब देखी कुँभिलात॥

जाति जातिते गुण अधिक,सुन्यो न अजहूं कान । सेतु बांधि रघुवर तरे,हेलादै नृप मान ॥२॥

जब हरिनाथ जू ए रुपया और सब सामानलै घरको चले तौ मार्गमें एक नागापुत्र मिल और उसने हरिनाथ जू की प्रशंसामें यह दोहा पढा ।

दोहा।दान पाइ दोई बढे,की हरिकीहरिनाथ ।उनबढिऊंचे पगकिये, इन बढि ऊंचे हाथ॥१॥

हरिनाथने सब धन धान्य जो पाया था सब इसी नागापुत्रको दै आप रीते हाथ घरको चले आए और अपनी और अपने पिताकी कमाई तमाम उमर इसी भाँति से लुटाते रहे ।

(६६)मानराय बंदीजन असनीवाले सं० १५८०अकबरके यहां थे।

(६७) रघुनाथराय कवि सं०१६३५ यह कवीश्वर राना अमरसिंह जोधपुरके इहांथे ।

(६८) गणेशजी मिश्र सं० १६१५ ।

(६९) कबीर (कबीरदास)जोलाहा काशीवासी सं ०१६१०इनके दो ग्रन्थ अर्थात् बीज१ रमैनी २ मेरे पास हैं औ इनके चरित्र तो सबमनुष्योंपर विदित हैं कालिदास जू ने हजारामें इनका नाम भी लिखाहै इसलिये हमने भी लिखदिया ।

(७०) लीलाधरकवि सं०१६१५एकवि महाराज गजसिंह जोधपुरके इहांथे और इनका प्रमाण सब कवि करते चल आए हैं ।

(७१)नाथ कवि,नाथ कविके नामसे मालूम नहीं होसक्ता कि नाथ कितनेहुएहैं जैसे उदय-नाथ,काशीनाथ,शिवनाथ, शंभुनाथ,हरिनाथ इत्यादि कविलोगोंने नाथ करके अपना भोग वर्णन कियाहै जहां तक हमको मालूम हुआ तहांतक हरएक नाथकी कविताअलगअलग वर्णन करीहै। नाथकवि ब्रजवासी गोपाल भट्ट ऊंचगांव वालेके पुत्र इनकी काव्य रागसागरोद्भवमें षट्ऋतु इत्यादि सुंदरहै ।

(७२)दामोदरदास ब्रजबासी सं०१६२२ इनके पद रागसागरमें हैं एकऔर दामोदरकविहैं

(७३) दिलदार कवि सं०१६५० हजारामेंइनकी काव्य है ।

(७४) दौलते कवि सं०१६५१ ।

(७५) नागर कवि सं०१६४८ हजारामें इनके कवित्त हैं।

(७६) दास (भिखारी दास कायस्थ) अरबल बुंदेलखण्डी सं० १७८० ए महान् कवि भाषासाहित्यके आचार्य्य गिनेजाते हैं छंदार्णव नाम पिंगल १ रससारांश २ काव्यनिर्णय ३ शृंगारनिर्णय ४ बागबहार ५ ए पाँच ग्रन्थ इनके बनाये हुए अतिउत्तम काव्यके हैं।

दास २ बेनीमाधव दास पसका जिले गोंडा सं० १६५५ ए महात्मा गोस्वामी तुलसीदासजू के शिष्य उन्हींके साथ रहते रहेहैं और गोसांईजीके जीवनचरित्र की एकपुस्तक गोसाईंचरित्र नाम बनाया है संवत १६९९ में देहांत हुवा ।

(७७) नंदनकवि सं०१६२५ ए महाराज सतकवि होगए हैं हजारामें इनका नामहै।

(७८) हितहरिवंश स्वामी गोसांई वृन्दावननिवासी व्यासस्वामीके पुत्र संवत् १५५९ इनके पिता व्यासजीने राधावल्लभीसंप्रदायको चलाया ए देववंदके रहेनेवाले गौडब्राह्मणथे हितहरिवंश जी महान्कविथे संस्कृतमें राधासुधानिधि नाम ग्रंथ और भाषामें हितचौरासी नाम ग्रंथ महासुंदर बनायाहै ।

(७९)सेनकवि नापति बांधवगढके सं० १५६० हजारामें इनके कवित्त हैं ए कवि स्वामी राम नंदजीके शिष्यथे ।

(८०) नारायणदास कवि सं० १६१५ हितोपदेश राजनीतिको भाषामें छंदबद्ध रचाहै ।

(८३) नंदलालकवि सं० १६०१ कवित्त सुंदर हजारामें इनके कवित्त हैं।

(८४) रसखानकवि सैयद इबराहिम पिहानीवाले सं०१६३१ए कवि मुसल्मानथे श्रीवृंदावनमें जाय कृष्णचंद्रकी भक्तिभावमें ऐसे डूबे कि फिर मुसलमानी त्यागकरि माला कंठी धारण किए हुए वृन्दावनकीरजमें मिलिगए इनकी कविता निपट ललित माधुर्य्यतासे भरीहुई है इनकी कथा भक्तमालमें पढने योग्य है।

(८५) नाभादासकवि नामनारायणदास महाराष्ट्र दक्षिणी सं० १५४० इनको स्वामीअग्रदास जीने गलता नाम इलाके आमेर में लाय अपना शिष्य बनाय भक्तमाल नाम ग्रंथ लिखने की आज्ञा करी नाभाजीने ११८ छप्पय छन्दमें इस ग्रंथको रचा तेहि पीछे स्वामी प्रियादास वृन्दावनीनेउस्कातिलक कवित्तों में किया तेहि पीछे लालजी कायथ कांधलाके निवासी बेसन् ११५८ हिजरी में उसीका टीका बनाय भक्तउरबासी नाम रक्खा इनदिनों उसी भक्तमालको महारसिक भगवत्भक्त तुलसीराम अगरवाले मीरापुर निवासीने उर्दू में उल्था करि भक्तमालप्रदीपन नाम धरा है नाभादास की विचित्रकथा भक्तमाल में लिखी है।

(८६) नरवाहनजी कवि भौगाँव निवासी सं० १६०० ए कवि स्वामी हितहरिवंशजीके शिष्य थे इनके पद बहुत विचित्र हैं कथा इनकी भक्तमालमें है।

(८७)नरसियाकवि अर्थात्नरसीजी जूनागढनिवासी सं० १५९०इनके पद रागसागरोद्भवमेंहैं।

(८८) नारायणभट्ट गोसाईं गोकुलस्थ ऊंचगांव बरसानेके समीपके निवासी सं०१६२० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं ये महाराज बडेभक्तथेवृन्दावन मथुरागोकुलइत्यादिमें जो तीर्थस्थान लुप्तहोगयेथे उन सबको प्रगट करि रासलीलाकी जड इन्होंने प्रथम डालीहै।

(८९) तानसेनकवि ग्वालियर निवासी सं०१५८८ ए कवि मकरंद पाँडे गौड ब्राह्मणके पुत्रथे प्रथमश्रीगोसाईं स्वामीहरिदासजू गोकुलस्थके शिष्य हुे काव्य विद्याको यथावत् सीखातत्पश्चात् शेख महम्मद गौसग्वालियरवासीकेपासजायसंगीतविद्याके लिये प्रार्थनाकरी शाहसाहेब तंत्रविद्या में अद्वितीयथे वरन मुसलमानोंने इन्हींको इसविद्याका आचार्य्य सब तवारीखोंमें लिखाहैशाहसाहेबने अपनी जीभ तानसेनकी जीभमें लगाय दिया उसी समयसे तानसेन गानविद्यामें महानिपुण होगए इनकी प्रशंसामें आईनअकबरीमेंग्रंथकर्ता फहीमने लिखाहै ऐसा गानेवालापिछले हजारोंमें कोई नहीं हुवा निदान तानसेन दौलतिखां शेरखां बदशाहके पुत्रपर आशिकहुे उनके ऊपर बहुतसी कविता करी तेहि पीछेदौलतिखांके मरनेपर श्रीबांधवनरेश रामसिंहबघेलाकेइहां गए और वहांसे अकबर बादशाहने अपने इहां बुलायलिया तानसेन और सूरदासजीसे बहुत मित्रताथी तानसेनजीने सूरदासकी तारीफमें यह दोहा बनाया।

दो०–किधौं सूरको शर लाग्यो, किधौं शूरकी पीर।किधौंसूरकोपदलग्यो,तनमनधुनत शरीर॥ १॥

तबसूरदासजीने यह दोहा कहा।

दोहा–विधना यह जिय जानिकै,शेश न दीन्हे कान।धरमेरूसब डोलतो,तानसेनकीतान॥२॥

इनके ग्रंथ रागमाला इत्यादि महाउत्तम काव्यके ग्रन्थ हैं।

(९०)निपटनिरंजन स्वामी संवत१६५०एमहाराजगोस्वामी तुलसीदासके समान सिद्धहोग एहैं और इनकेग्रन्थोंकी ठीक ठीक संख्या मालूम नहीं होती पुरानीसंग्रहीत पुस्तकोंमें सैकडों कवित्त हम इनके देखतेहैं हमारे पुस्तकालयमें शांत सरसी १ और निरंजन संग्रह २ दो ग्रन्थ इन महाराजके बनायेहुए हैं इनकी कवितामें बहुत बडा प्रताप यहहै कि मनुष्य कैसाही काम क्रोध इत्यादि पाशोंसे बद्ध होवे इनकी वाक्यके श्रवण कीर्त्तनसे निःसंदेह मुक्त होजावे।

(९१)इंद्रजीत त्रिपाठी वनपुरा अंतर्वेदीवाले सं० १७३९ औरंगजेबके नौकर थे।

(९२) पृथ्वीराज कवि सं०१६२४ हजारामें इनके कवित्तहैं ये कवि बीकानेरके राजा संस्कृत और भाषाके बडे कवि थे ❀।

(९३)लक्ष्मीनारायण मैथिल सं०१५८० ये कवि खानखानाके यहां थे।

(९४)हरिकवि ये महान् कविथे इन्होंने चमत्कारचंद्रिका नाम ग्रंथ भाषाभूषणकी टीका १ और कविप्रियाभरण नाम ग्रंथ कविप्रियाका तिलक२ विस्तारपूर्वक बनायाहै और तीनोंकाण्ड अमरकोश भाषा कियाहै।

(९५)बलिभद्र सनाढ्य उडछेवाले केशवदास कविके भाई सं०१६४२ इनका नखशिख सारे कवि कोविदोंमें महाप्रमाणिक ग्रंथहै और भागवतपुराणपर टीका बहुत सुंदर कियाहै।

(९६) विट्ठलनाथ गोकुलस्थ गोसाईं वल्लभाचार्यके पुत्र सं० १६२४ ये महाराज वल्लभाचार्य-जीके पुत्र परमभक्त वात्सल्यनेष्ठाके हुएहैं इनके सात पुत्रोंकी सात गादियाँ गोकुलजीमें चली आती हैं इनकी कविता पद इत्यादि बहुतसे रागसागरोद्भवमें हैं।

(९७) विश्वनाथ कवि प्राचीन सं० १६५५.

(९८) पद्मनाभजीव्रजवासी कृष्णदास पयहारी गलताजीके शिष्य सं० १५६० इनकेपदबहुत रागसागरोद्भवमें हैं अर्थात् कील्ह, अग्रदास, केवलराम, गदाधर, देवा, कल्याण, हठीनारायण, पद्मनाभ ये सब कृष्णदासजीके शिष्य और महान्कवि हुएहैं औरअग्रदासके शिष्य नाभादासथे।

(९९)प्रवीनराइ पातुरी उडछा बुंदेलखण्डबासिनी सं० १६४० इस वेश्याकी तारीफमें केशव-दासजूने कविप्रियाग्रंथकी आदिमें बहुत कुछ लिखा है इस्के कवि होनेमें कुछ संदेह नहीं इस्का बनाया हुवा ग्रंथ तो हमको नहीं मिला केवल एक संग्रह मिली है जिसमें इसके सैकरों कवित्त बनाए हुए हैं हमने किसी तवारीखमें नहीं देखा कि बादशाह अकबरने प्रवीनको बोलाया केवल विदित है कि अकबरने प्रवीनकी प्रवीनताई सुनी दरबारमें हाजिर होनेका हुकुम दिया तो प्रवीनरायने प्रथम राजा इंद्रजीतकी सभामें जाय ये तीन कूट कवित्त पढे (आईहौं बूझन मंत्र) तेहि पीछे जब प्रवीन सभामें बादशाहके गई तो बादशाहसे प्रश्नोत्तर हुए।

बादशाह—युवन चलत तिय देहते; चटकि चलत किहि हेतु।
प्रवीन—मन्मथ बारि मसालको, सैंति सिहारो लेतु ॥ १ ॥
बादशाह— ऊंचे ह्वै सुर वश किये, सम ह्वै नर वश कीन।
प्रवीन— अब पताल वश करनको, ढरकि पयानो कीन ॥ २ ॥

इस्के पीछे जब प्रवीनने यह दोहा पढ़ा।

विनती राय प्रवीनकी, सुनिये शाह सुजान। जूंठी पतरी भखत हैं, बारी वायस श्वान ॥ १ ॥

तब बदशाहने बिदाई दई और प्रवीन इंद्रजीतके पास आई।

(१००) भगवानदास निरंजनी भर्तृहरिशतक कवित्तोमें भाषा किया है। पुनः भगवानदास मथुरा निवासी सं० १५९० रागसागरोद्भवमें पद हैं।

(१०१) मनोहर कवि (राजा मनोहरदास) कछवाहा सं० १५९२ ये महाराज अकबर शाहके मुसाहिब फारसी संस्कृत भाषाके महान् कवि थे फारसीमें अपना नाम (तौसनी) करिके वर्णन करतेथे।

❀ मार्कंडेय कविने मुझसे यह कवित्त कहा था—
कवित्त—जबते सुनीहै बेन तबते न मोको चैन पाती पढि नेकु खो बिलंबना लगावेगो। ज्वेके यमदूतसो [illegible] राजपूत आज आठघरी आगरामें ऊधम मचावेगो ॥ कहै पृथ्वीराज प्रिया नेक उर धीर धारो चिरजीव राना ये म्लेच्छन भगावैगो। मानको मरदि मान प्रबळ प्रतापसिंह बब्बर ज्यौं तड़पि अकब्बर पै आवैगो ॥

(१०२) परमानंददास ब्रजवासी वल्लभाचार्यके शिष्य सं० १६०१ इनके पद रागसागरोद्भव-में बहुत हैं और इनकी गिनती अष्टछापमें है।

(१०३) नवीनकवि बहुतही सुंदर कवित्त शृंगाररसके हैं।

(१०४) माणिकचंद्र कवि सं० १६०८ रागसागरोद्भवमें इनके पद हैं।

(१०५) निहाल प्राचीन सं० १६३५।

(१०६) मुकुन्दसिंह हाडा महाराजे कोटा सं० १६३५ ये महाराजा शाहजहां बादशाहके बडे सहायक और कविताईमें महानिपुण कवि कोविदोंके चाहक थे।

(१०७) मुबारक सैयदमुबारक अली विलग्रामी सं० १६४० इनकी काव्य तो विदित है इन-का ग्रंथ कोई हमने नहीं पाया कवित्त सैकरों हमारे पुस्तकालयमें हैं।

(१०८) बीरबर (बीरबर कायस्थ दिल्ली निवासी) सं० १७७७ ये महान्कविथे इनका बनाया हुवा कृष्णचन्द्रिका नाम ग्रंथ साहित्यमें बहुत सुन्दर और हमारे पुस्तकालयमें मौजूद है।

(११०) दिनेशकवि इनका नखशिख बहुतही विचित्र है।

(१११) दानकविशृंगारमें सरस कविता है।

(११२) तोषीकवि।

(११३) तेहीकवि।

(११४) धीरज नरिंद महाराजै इंद्रजीतसिंह बुंदेला उडछावाले सं० १६१५ इन्हीं महाराजके इहाँ कवि केशवदास थे और प्रवीनराइ पातुरीभी इन्हींकी सभामें विराजमानथी इनके समयमें उडछा बडी राजधानी थी। ❋

(११७) श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी सं० १६०१ ये महाराज सरवरिया ब्राह्मण राजापुर जिले प्रयागके रहनेवाले प्रायः संवत १५८३ के करीब उत्पन्न हुए थे और सं० १६८० में स्वर्गबास हुवा इनके जीवनचरित्रकी पुस्तक वेनीमधवादास कवि पुसकाग्रामवासीने जो इनके साथ साथ रहे हैं बहुत विस्तापूर्वक लिखी है उसके देखनेसे इन महाराजके सब चरित्र प्रगट होतेहैं इस पुस्तकमें ऐसे विस्तार कथाको हम संक्षेप करिके वर्णन करेहैं निदान गोसाईंजी बडे महात्मा रामोपासक महायोगी सिद्ध होगएहैं इनके बनाये ग्रंथोंकी ठीकठीक संख्या हमको मालूम नहीं हुई केवल जो ग्रंथ हमने देखे अथवा हमारे पुस्तकालयमें हैं उनका जिकर किया जाता है प्रथम ४९ कांड रामायण बनाया है इस तफसीलसे—

१ चौपाई रामायण ७ कांड। २ कवित्तावली ७ कांड। ३ गीतावली ७ कांड। ४ छंदावली ७ कांड। ५ बरवै ७ कांड। ६ दोहावली ७ कांड। ७ कुंडलिया ७ कांड। और सिवाय इन ४९ कांडके १ सतसई। २ रामसलाका। ३ संकटमोचन। ४ हनुमतबाहुक। ५ कृष्णगीतावली। ६ जानकी-मंगल। ७ पार्वतीमंगल। ८ कडखाछंद। ९ रोलाछंद। १० झूलनाछंद। इत्यादि औरभी ग्रंथ बनाए हैं अन्तमें विनयपत्रिका महाविचित्र मुक्तिरूप ब्रह्मानंद सागर ग्रंथ बनाया है चौपाई गोसाईं महाराजकी ऐसी किसी कविने बनाय नहीं पाया और न बिनयपत्रिकाके समान अद्भुतग्रंथ आज तक किसी कवि महात्माने रचा इस कालमें जो रामायण न होता तो हम ऐसे मूर्खोंका बेडा पार

❋ (११५) श्रीपति कविका वर्णन पहले हुआ है परन्तु वह इस दोहेका नहीं है।
रत्नाकर कविने हमसे कहा है कि श्रीपति कवि अकबर बादशाहके नौकर थे परन्तु खुशामदी न थे कई एक कवियोंने मिल-कर अकबर बादशाहके सामने (करो मिल आश अकब्बरकी) समस्या दिये परन्तु कविने स्पष्ट बादशाह को फटकारा यह कवि भक्त था यह तो कविताले स्पष्ट ही मालूम हुआ।
अबके सुलतां फुनियान समान हैं बांधत पाग अटब्बरकी। तजि एकको दूजो भजै सो कोऊ तब ८ जीभ कटै ६ द लब्बरकी ॥ शरणा-गत श्रीपति श्रीपतिकी नहिं त्रास जरा कोऊ जब्बरकी। जिनको नहिं आश कछू हरिकी सो करं े गिलि ऊ ाश अकब्बरकी॥

नहीं लगता गोसाईजी श्रीअयोध्याजी, मथुरा, वृंदावन, कुरुक्षेत्र, पराग, बाराणशी, पुरुषोत्तमपुरी इत्यादि क्षेत्रोंमें बहुत दिनतक घूमते रहेहैं सबसे अधिक श्रीअयोध्या, काशी, पराग उत्तराखण्ड, बंशीबट इत्यादि जिले सीतापुरमें रहेहैं। इनके हाथकी लिखी हुई रामायण जो राजापुरमेंथी वह खण्डित होगई है पर मलिहाबाद में आजतक सम्पूर्ण ७ काण्ड मौजूद हैं १ पत्र नहीं है बिस्तार भयसे अधिक हालात हम नहीं लिख सकते दो दोहा पर इन महाराज का वृत्तांत समाप्त करतेहैं।

दोहा—कविताकरता तीनि हैं, तुलसी केशव सूर ❀ ॥ कविता खेती इन लुनी, सीला बिनत मजूर॥१॥
तुलसी रवि सूरज शशी, उडगण केशव दास॥ अबके कवि खद्योत सम; जहँ तहँ करत प्रकाश॥२॥

इति श्रीसूरदासजीका जीवनचरित्र समाप्त।

× बाबू रघुनाथसिंहने जो दोहे मुझे दिये थे उससे मालूम हुआ कि ११७ कवि सूरदासके समयमें वर्तमान थे। इनमेंसे दो तीन कवियोंको छोडकर सभोंका नाम "शिवसिंह सरोज"में मिलता है पर इससे (शिवसिंहसरोज) जो मैंने समय लिखा है सबका सूरदासके समयसे नहीं मिलता सूरदासका समय संवत १६४० "शिवसिंहसरोज" में लिखा है और सूरदासजीने स्वयं "साहित्यलहरी" नामक पुस्तकमें "साहित्यलहरी" के बनानेका समय सं० १६०७ लिखा है और भारतेंदु हरिश्चंद्रने लिखा है कि संवत १६२० के लगभगमें इन्होंने शरीर त्यागा अब यदि सूरदासजीके जन्मसे मरण पर्यंत १२५ वर्ष रख लेते हैं तो भी संवत १५०५ से लेकर १६२० तक होता है। अब यदि संवत् १७०० से अधिकके समयके कवियोंको सूरदासजीके सामयिक रघुनाथसिंहके दोहे और "शिवसिंहसरोज" के अनुसार ठहराया है यह यथार्थमें ठीक नहीं है। अब सोचना पडा कि बाबूरघुनाथसिंहके दोहे ठीक हैं कि नहीं। यह तो मुक्तकण्ठसे कहनापडेगा कि उस दोहेके अनेक कवियोंका सूरदासका सामयिक होना ठीक है परन्तु कई एकमें भ्रम है उसमें भी यह नहीं कहा जा सकता है कि इस नामके और कवि न हुये हों परन्तु "शिवसिंहसरोज" से जो मैंने कवियोंका समय प्रकाश किया है उसमें अवश्य भ्रम है।

हरिश्चन्द्रजीने लिखा है सूरदासके समयमें तुलसीदासजी न हुए उसका कारण सोचनेसे यह मालूम होता है कि नन्ददासजीके भाई तुलसीदासजीपर ध्यान गया है क्योंकि वैष्णवोंकी चौरासी वार्तामें लिखा है कि तुलसीदास और नन्ददास भाई हैं और नन्ददासका समय संवत् १५८५ का है और तुलसीदास नन्ददासका भाई गोसाईंचरित्र उर्दूमें भी लिखा है। अथवा मीराबाईके समयपर ध्यान गया होगा क्योंकि "भक्तकल्पद्रुम" और "रामरसिकावली" तथा "हरिभक्तिप्रकाशिका" में मीराबाई और तुलसीदासकी बातचीत लिखी है परन्तु मीराबाईका समय तुलसीदासके समयमें मेरी सम्मतिसे नहीं है।

क्योंकि "शिवसिंहसरोज" में मीराबाईके विषयमें यह लिखा है।

मीराबाई सं० १४७५ में हुई हमने इनका जीवनचरित्र भक्तमाल तुलसीदास कायस्थकृतमें देखा और तवारीख चित्तौरसे मिलाया तो बड़ा फरक पायागया अब हम इनका हाल चित्तौरके प्राचीन प्रबन्धसे लिखते हैं ये मीराबाई मारवार देशमें राना राठौरवंशावतंसमें रैतिया देशाधिपतिके यहां उत्पन्न हुई थीं यह रियासत खारे मारवाडके फिरकोंमें उत्तरोत्तर है और मीराबाईका विवाह सं० १४७० के करीब राना मोकल देवके पुत्र राना कुम्भकरन चित्तौर नरेशके साथ हुवा था संवत् १५२५ उदारानाकेपुत्रने रानाको मारडाला मीराबाई महास्वरूपवती और कवितामें अति निपुण थीं. रागगोविंद ग्रन्थ भाषामें बहुत ललित बनाया है चित्तौरगढ़में दोमंदिर करीबमहल रानारायमलकेवे। एक रानाकुंभका और दूसरामीराबाईका, सोमीराबाईअपनेइष्टदेव श्यामनाथको उसीमंदिरमें स्थापन करि नृत्य गीत भाव भक्तिसे रिझाया करती थीं। एक दिन श्यामनाथ मीराके प्रेमवश है चौकीसे उतरि अंकमें ले बोले हे मीरा, केवल इतनाही शब्द राधानाथके मुँहसे सुनि मीराबाई प्राणत्याग करि रसिकबिहारी गिरधारीके नित्यविहारमें जायमिलीं इन दोनों मंदिरोंके बनानेमें नब्बेलाख रुपया खर्च हुवा था।

मीराबाईके विषयमें 'तवारीख तुहफए राजस्थान'से मौलवी मुहम्मद उबेदुल्लाह फरहतीने लिखा है।

"सांगाको इस शिकस्तका निहायत रंज हुवा, वह इसीसालके अन्दर मेवाडके पहाड़ी इलाकेमें मौतसे या किसीके जहर देनेसे इन्तिकाल करगये, और उनके साथ मेवाडकी तरक्की खत्म होगई अगर वह जिन्दह रहते तो दोबारह लडाईमें किस्मत आजमाई करते यह महाराणा जोरावर, खूबसूरत और दर्मियानी कदके आदमी थे। इन महाराणाके दो बेटे उनके सामने गुजर चुके थे जिनमेंसे बड़े भोजराजके साथ मेडतिया राठौर जयमल्लकी रिश्तहदारी बहिन मीराबाई, जिसके फकीरानह भजन अवाममें मशहूर हैं ब्याही गई थी। कर्नल टाडने गलत तौरपर उसकी शादी महाराणा कुम्भाके साथ लिखदी है. जो सांगाजीके दादा थे। एशियाई मुल्कोंमें जियादह ब्याह करनेसे आदतें खराब और जिस्म जईफ होनेके सिवाय हरएक औरत अपनी औलादकी बिहतरीके वास्ते हर तरहकी तदबीर करना चाहती है. जिससे बहुत खराबियां पैदा होती हैं। इसलिये कर्नल टाडने खयाल किया है कि महाराणा सांगाको उनके खानदानमेंसे किसीने जहर देदिया।"

अब पं० बलदेवमिश्र और पं० गनपतलाल चौबेकी बातपर विशेष ध्यान दिया जाय तो इन्हें शुद्ध भ्रम होगया है जरा भक्तमाल भी पढे होते तो सूरदास कितने हुए हैं मालूम होजाता, फिर जिस सूरदासका सूरसागर बनाया है व्यर्थ उनमें और सूरदासका हाल न लिखते। इति।

॥ श्रीः ॥

अथ श्रीसूरसागरकी विषयानुक्रमणिका।

अथ सप्तमस्कंध ।

अथ अष्टमस्कंध ।

अथ नवमस्कंध ।

अथ दशमस्कन्ध पूर्वार्द्ध ।

अथ दशमस्कन्ध उत्तरार्द्ध ।

इति श्रीसूरसागरकी विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर

अथ श्रीसूरदासजीरचित सूरसागर सारावली।

तथा सवालाखपदोंका सूचीपत्र।

रागकल्पद्रुम ॥वन्दौं श्रीहरिपद सुखदाई।जाकी कृपा पंगु गिरिलंघै अँधरेको सबकुछ दरशाई॥ बहिरो सुनै गूँग पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई। सूरदास प्रभुकी शरणागत बारम्बार नमो ते पाई॥रागिनी काफी तालजति॥खेलत यहि बिधि हरि होरी हो होरी हो बेद बिदित यह बात॥ टेक-अविगत आदि अनन्त अनूपम अलख पुरुष अबिनासी। पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम नित निज लोकबिलासी॥१॥जहँ वृन्दावन आदि अजर जहँ कुंजलता बिस्तार। तहँ विहरत प्रिय प्रीतम दोऊ निगम भृंग गुंजार॥२॥रत्न जटित कालिंदीके तट अति पुनीत जहँ नीर। सारस हंस चकोर मोर खग कूजत कोकिल कीर॥३॥जहँगोवर्द्धन पर्वत मणिमय सघन कंदरासार गोपिनमंडल मध्य बिराजत निस दिन करत बिहार॥४॥खेलत खेलत चितमें आइ सृष्टि करन विस्तार। अपने आप करि प्रकट कियोहै हरी पुरुष अवतार॥५॥ माया कियो क्षोभ जबहु बिधि करि कालपुरुप के अंग। राजस तामस सात्त्विक त्रयगुण प्रकृति पुरुषका संग॥६॥ कीन्हेंतत्त्व प्रकट तेही क्षण सबै अष्ट अरु बीस। तिनके नाम कहत कवि सूरज निर्गुण सबके ईश॥७॥पृथिवी आप तेज वायू नभ संज्ञा शब्द परस अरु गन्ध। रस अरु रूप और मन बुधि चित अहंकार मति अन्ध॥८॥ पान अपान व्यान उदान अरु कहियत प्राण समान। तक्षक धनंजय देवदत्त अरु पौण्ड्रक शंख द्युमान॥९॥ राजस तामस सात्त्विक तीनों जीव ब्रह्मसुखधाम। अट्ठाईस तत्त्व यह कहियत सो कवि सूरज नाम॥१०॥ नाभि कमल नारायणकी सो वेद गर्भ अवतार। नाभिकमलमें बहुतहि भटक्यो तऊ न पायो पार॥११॥ तब आज्ञाभइ यह हरिकी अज करो परमतप आप। तब ब्रह्मा तप कियो बर्षशत दूरिभय सब पाप॥१२॥ तब दर्शन दीन्हों करुणाकर परमधाम निज लोक। ताको दर्शन देखि भयो अज सब बातन निःशोक॥१३॥ जहां आदि निजलोक महानिधि रमा सहससंयूत। आन्दोलन झूलत करुणानिधि रमासुखद अतिपूत॥१४॥ अस्तुति करैं बिबिध नाना करि परम पुरुप आनन्द। जय जय जय श्रुति गीत गायकै पढत हैं नानाछंद॥१५॥ आज्ञा करी नाथ चतुरानन करो सृष्टि बिस्तार। होरी खेलन की बिधि नीकी रचना रचे अपार॥१६॥चौदह लोक करो नानाविधि रचि बैकुंठ पताल। नाना रचना रची बिधाता होरी खेल रसाल॥१७॥ दशहीपुत्र भये ब्रह्माके जिन संच्यो संसार॥स्वायंभुव मनु प्रकट तब कीन्हें अरु शतरूपा नार॥ ॥१८॥ भुवकी रक्षा करन जु कारण धरि वराह अवतार। पीछे कपिलरूप हरि धारयो कीन्हों सांख्य विचार॥१९॥ दीन्हों ज्ञान आप माताको कीन्हों भवनिस्तार। आठों लोकपाल तब

कीये अपन अंपन अधिकार ॥२०॥तेज, अग्नि, यम, मरुत, वरुण औ सूर्य्य चन्द्र यह नाम। मृत्यु, कुबेर, यक्षपति कहियत जहँ शंकर को धाम ॥२१॥सत्यलोक,जनलोक, तपलोक और महर निजलोक। जहँ राजत ध्रुवराज महानिधि निशि दिन रहत अशोक ॥२२॥जननी आज्ञा पाय चले बन पांच वर्ष सुकुमार। ताको आप कृपा हरि किन्हीं धरि आये अवतार ॥२३॥ पाछे पृथुको रूप हरि लीन्हों नानारस दुहि काढे । तापर रचना रची विधाता बहुबिधि यत्न न बाढे॥२४॥रचि नवखण्ड द्वीप सातों मिलि कीन्हों जोरि समाज।वन उपवन पर्वत बहुफूले सब वसन्तको साज॥२५॥दानव देव लगे आपसमें कीन्हों युद्ध प्रकार । विविध शस्त्र छूटत पिचकारी चलत रुधिर की धार ॥ २६ ॥ दीन्हें मारि असुर हरिने तब देवन दीन्हीं राज। एकन को फगुवा इन्द्रासन इक पतालको साज ॥ २७ ॥विद्याधर, गन्धर्व्व, अप्सरा गान करत सब ठाढे। चारण, सिद्ध पढत बिरुदावलि लै फगुवा सुख बाढे ॥ २८॥ चन्द्रलोक दीन्हों शशिको तब फगुवामें हरि आप। सब नक्षत्रको राजा दीन्हों शशिमंडल में छाप ॥ २९ ॥ मंगल बुद्ध शुक्र अरु शनि अरु राहु केतु यह जान। रवि अरु शशि सबहिनको फगुवा दीन्हों चतुर सुजान॥ ॥ ३० ॥ अतल वितल अरु सुतल तलातल और महातल जान । पाताल और रसातल मिलिके सातों भुवन प्रमान ॥ ३१ ॥ संकर्षणको धाम परम रुचि तहँ राजत निज वीर। शेषनाग ताके तर कूरम बसत महा धन धीर ॥३२॥इलावर्त्त औ किम्पुरुषा कुरु औ हरिवर्ष केतुमाल। हिरनमय रमनक भद्रासन भरतखण्ड सुखपाल॥३३॥ सातों द्वीप कहे शुक मुनिने सोइ केहत अबसूर। जंबू, प्लक्ष, क्रौंच, शाक, शाल्मलि, कुश, पुष्कर भरपूर॥ ३४ ॥ अपने २ स्थाननपर तब फगुवा दियो चुकाय। जब जब हरि मायाते दानव प्रकट भयेहैं आय॥३५॥तब तब धरि अवतार कृष्णने कीन्हों असुर संहार। सो चौवीस रूप निज कहियत वर्णन करत विचार ॥३६॥प्रथम किये स्वायंभुवमनु नृप अज आज्ञा यह दीन्हीं। भूपर जाय राज तुम करिहो सृष्टि विस्तार यह कीन्हीं ॥३७॥ स्वायंभुवमनु अरु शतरूपा तुरत: भूमि पर आये । जलमें मगन भये भुव देखे फिरि अजपै चलिआये ॥३८॥ जासों आय कही सवही विधि भुवद्रव देखियत नाहीं। तब अति ध्यान कियो श्रीपतिको केशव भये सहाहीं ॥ ३९ ॥ आई छींक नाकते प्रकटे शूकर अति लघु रूप। देखत गजसे होयगये हैं कीन्हों बृहत स्वरूप ॥ ४० ॥ जय जय करत सकल सुर नर मुनि जल में कियो प्रवेश। जाय पताल बाट गहिलीन्हीं धरणी रमानरेश ॥ ४१ ॥ ते भुवकमल कुसुमकी नाईं चले मनहुँ गजराज। कछुडर नाहिंन जियमें डरपति अति आनन्द समाज ॥ ४२ ॥ योगी साधु, सनकादिक चारों गये हरिके निज लोक। कीन्हें क्रोध मने जब कीन्हें दियो शाप अति शोक ॥ ४३ ॥ जय अरु विजय असुर योनिनको भये तीन अवतार। तिनमें प्रथम लियो कश्यप गृह दितिकी कोखि मँझार ॥४४॥ प्रथम भयो हिरण्याक्ष महाबल जिन जीते लोकपाल। नारद सीख गयो शूकरपै देखो रूप बिकराल॥४५॥ सहस वर्षलौं जलमें जूझे कियो दनुज संहार। पाछे आय भूमिको थापी कियो यज्ञ विस्तार ॥ ४६ ॥ स्वायम्भुव शतरूपा तनया कहियत तीन प्रमान। आकूती देवहूती औ परसूती चतुर सुजान ॥ ४७ ॥ परसूती दई दक्षप्रजापति तिनकी सती सयान। सो दीन्हीं महादेव देवको अति आनंद सुज्ञान ॥ ४८ ॥ तज्यो देह अपमान पायके बहुरि दक्षगृहजाई। पातिव्रतहि धर्म जब जायो बहुरो रुद्र बिहाई ॥४९॥ आकूती दई रुचि प्रजापति भये यज्ञ अवतार। इन्द्रासन बैठ सुख विलसत दूर किये भुववभार ॥ ५०॥

देवहुती कर्दमको दीन्हों तिन कीन्हों तप भारी। बिन्दुसरोवर आये माधव किये गरुड असवारी ॥५१॥ दियो बरदान सृष्टि करिबेको अस्तुति करी प्रमान।मेरो अंश अवतार होयगो कहि भये अन्तर्द्धान ॥ ५२ ॥ पाछे ऋषि निज तप मनलायो कीन्हों प्रगट विमान। तामें बैठिसकल जग देख्यो कन्या नौ सुखदान॥ ५३ ॥ पाछे कपिलरूप हरि प्रगटे दर्शनकरि मुनिराय।कीन्हों त्याग गये वनको तब ब्रह्म परमपदपाय॥५४ ॥पाछे विविध ज्ञान जननीको दीन्हों कपिलहढाय। सांख्ययोग अरु ज्ञानभक्ति दृढ़ वरणी विविध बनाइ ॥ ५५ ॥ जलको रूप तुरत ह्वैगइ वह हरिके रूप समाय।चले मगन ह्वै ब्रह्मध्यान कर गंगासागर न्हाय ॥ ५६ ॥अजहूंलौं राजत नीरधि तट करत साख्य विस्तार।साख्यायनसे बहुत महामुनि सेवत चरण सुचार ॥ ५७ ॥अत्रे पुत्र भये ब्रह्माके तिन कीन्हों तप जाय। आये तीन देव ताके ढिग ब्रह्मा शिव हरिराय॥ ५८ ॥तबउन मांग्यो सुततुमहींसे तीनोंप्रगटे आय। अज शशि अंश,रुद्र दूर्वासा; दत्तात्रेय हरिराय ॥ ५९॥ अनसूयाके गर्भ प्रगट ह्वै कियो योग आराधि । यम अरु नियम प्राण प्रत्याहार धारण ध्यान समाधि ॥ ६० ॥ आसन के सब सिद्ध योग कर प्रगट कला जगदीश। दीन्हों भोग सहस नृपको बहु करुणानिधि जगदीश ॥ ॥ ६१ ॥कीन्हें गुरु चौबीस सीख लै यदुको दीन्हों ज्ञान । पातंजलिसे मुनि पद सेवक करत सदा अज ध्यान ॥ ६२ ॥ जव सृष्टिनपर किरपा कीन्हीं ज्ञानकला विस्तार। सनक सनंदन और सनातन चारो सनतकुमार॥ उनसे कह्यो सष्टि नानाबिधिरचनाकरो।बनाय उन नहिं मान्यो तब चतुरानन खीझेक्रोधउपाय ॥ ६४ ॥शंकर प्रगटभये भ्रुकुटीते करो सष्टि निर्मान। भूत प्रेत बेताल रचो बहु दौरे विधिको खान ॥ ६५ ॥ पूरण करो कह्यो चतुरानन सृष्टि महादुख दैन। तब शंकर तपस्या को निकसे चितै कमलदल नैन॥६६॥मूरति त्रिया जुभई धर्मकी तिनके हरि अवतार। नारायण जवभयेप्रकट वपु तिन मेट्यो भुवभार॥६७॥ सहस कवच इक असुर सँहारेउ बहुरि कियो तप भारी । शोच परेउ सुरपतिको तब उन पठइ अप्सरा नारी ॥ ६८ ॥ बहुत भांति उन कियो परमछल तपमें उनके काज। कछु नहिं चली ब्रह्मनारायण सुखसमाज तिय साज ॥ ६९ ॥इक उर्वशी हृदय उपजाई दई शक्रकोताय । ताको देखिदेखि जीवतहैं अजहूँ इन्द्र सुख पाय ॥७०॥ स्वायंभुवके द्वितिय पुत्र उत्तानपाद मतिधीर । तिनके ध्रुव बालक जो जाये औ उत्तम गंभीर ॥ ७१॥ नृपके पास गये गोदीमें बैठनको सुकुमार। तव लघु मात कह्यो तव बैठोजव मेरे अवतार॥७२॥ सुनि कटु वचत गयो माता पै तव उन ज्ञान दृढायो। हरिकी भक्ति करो सुख नीके जो चाहो सुख पायो ॥ ७३ ॥ पांचवर्षके निकसि चले तब मधुवनपहुँचेआय। बिचनारदमुनि तत्त्व बतायो जपैं मंत्र चितलाय ॥ ७४ ॥ कछुदिन पत्र भक्ष करि बीते कछुदिन लीन्हों पानी। कछुदिनपवन कियो अनुप्राशन रोंक्यो श्वास यह जानी ॥७५॥ दारुण तप जव कियो राजसुत तव कांप्यो सुरलोक । त्राहि २ हरिसों सव भाख्यो दूर करो सब शोक॥७६॥तब हरिकह्योकोऊजिनडरपो अवहिं तुरत मैं जैहौं। बालक ध्रुव वन करत गहन तप ताहि तुरत फल दैहौं ॥ ७७ ॥ इतनी कहत गरुड़ पर चढिकै तुरतहि मधुवन आये। कंबु कपोल परसि बालककेवाणी प्रकट कराये ॥७८॥ अस्तुति करी बहुत ध्रुव सब विधि सुनि प्रसन्न भये आप। दीये राज भूमिमण्डलको सब विधि थिरकरि थाप ॥७९॥ हरि बैकुंठ सिधारे पुनि ध्रुव आये अपने धाम। कीन्हों राज तीस पट वर्षन कीन्हें भक्तन काम॥८०॥ यक्ष प्रबल बाढे भुव मंडल तिन मारयो निज भ्रात।

तिनके काज अंश हरि प्रगटे ध्रुव जगत विख्यात ॥ ८१ ॥ बहुत वर्षलौं राज कियो ध्रुव फिर आये निजलोक । सबके ऊपर सदा विराजत ध्रुव सदा निःशोक ॥ ८२ ॥ सनकादिक पुछियो चतुरानन ब्रह्मजीवको बीच । प्रगट हंसवपु धरयो जगत पुर जोपै नीर सुमीच ॥ ॥ ८३ ॥ यह भुवमण्डल को रस काढ्यो भांति २ निज हाथ । धरि पृथुरूप कियो जग आनंद अखिल लोकके नाथ ॥ ८४ ॥ प्रियव्रत वंश धरेउ हरि निजवपु ऋषभदेव यह नाम । कीन्हें काज सकल भक्तनको अंग २ अभिराम ॥ ८५ ॥ कीन्हों गर्व महा मघवानेवर्षा बरषो नाहिं । तब हरि आप मेघह्वै बरषे करी परम सुख छाहिं॥८६ ॥ ज्ञान उपदेश कियोपुत्रन को ब्रह्मावर्त मंझार । पाछे करि संन्यास जगतमें विचरे परम उदार ॥ ८७ ॥ आठों सिद्ध भई सन्मुख जब करी न अंगीकार ।जय जय जयश्रीऋषभदेव मुनिपरब्रह्म अवतार॥८८॥ ब्रह्मसभामें यज्ञकियो जब करन वेदउच्चार। प्रगटभये हयग्रीव महानिधि परब्रह्म अवतार ॥ ८९ ॥ चार वेद लैगो शंखासुर जलमें रहो छिपाय । धरिहयग्रीव रूप हरि मारयो लीन्हें वेद छुडाय ॥ ९० ॥ सत्यवत राजा रघुवंशी प्रथमभये मनुवंस। कीन्हों तप बहु भांति परमरुचि प्रकट भये हरिअंश ॥ ९१ ॥धरि लघुरूप मीनको मोहन आये उनके पानि । तव उन जलमें डारिदियो फिर तब वोले हरि वानि॥ ९२ ॥जलके बीच डारि जिन मोकों बडे मच्छ डर लाग ।यह कहिबृहतरूप हरि धारेउ सत्यव्रत के भाग ॥ ९३ ॥सतयें दिवस होयगी परलय आवेगी इकनाव।तामें बैठ सप्तऋषि अरु तुम करो भजन मम भाव॥९४॥इतनो कहिहरिनृप देखतही भये जो अन्तर्धान। सातें दिवस भयो जब परलय तब कीन्हों नृप ज्ञान ॥९५॥सबहि अन्नको बीज लियो नृप और लियो ऋषि साथ । बैठो नावध्यान हरिका करिदरशन दीन्हों नाथ ॥ ९६॥ वासुकि नागआय तहँ तत्क्षण वांधी दृढकरि नाव । पूंछयो ज्ञान कह्यो सो सब हरि तत्त्व विधान वनाव ॥९७॥ वहुत काललौं विचरे जलमें तव हरि भये सुसांति । बीसै प्रलय विविध नानाकर सृष्टि रची वहुभांति ॥ ९८॥यह हरि मच्छरूप जब लीन्हों कियोचरित विसतार । जय जय जयश्रीमान् महावपु जय जय जगत अधार॥९९॥सुर अरु असुर मथन कीन्हो निधि चौदह रतन निकार। पर्वत पीठ धरेउ हरिनीके लियो कूर्म अवतार ॥ १००॥ हिरण्य काशिपु अति प्रबल दनुज है तप कीन्हों परचण्ड । तव उन वर दीन्हों चतुरानन कीन्हों अमर अखण्ड ॥ १०१ जब तप गयो तवहिं मघवाने सब संपति गहि लीन्हीं ।गहे जब कच कामिनि राजाकी तबनारद सिख दीन्हीं॥ ॥ १०२ ॥ याके गर्भ वसतहै हरिजन सुनु सुरपति यह बात । तब तजिदई आप लै आये निज आश्रम विख्यात ॥ १०३॥ नित प्रति ज्ञानकथा हंसनसों कहत रहत मुनिराज । सुनि प्रहलाद प्रसन्न कोखिमें अति आनंद समाज॥१०४॥ता पाछे तपकियो असुरबहु फिरि देख्यो निजधाम। तव नारद मुनि दई कथा ध्रुव लै आयो है ग्राम ॥१०५॥पाछे लोकपाल सब जीते सुरपति दियो उठाय । वरुण कुबेर अग्नि यम मारुत सुबस कियोक्षण मांय ॥ १०६ ॥ हाहाकार भयो सुरलोकन गये सबै अजपास।तब अज ध्यान कियो माधवको वाणी भई अकास ॥१०७॥सकललोक यह देन असुर दुख तऊ न करौ सँहार।जब मेरे जनको दुखदेहै क्षणहिमें डारौं मार ॥१०८ ॥ जब प्रहलाद प्रकट ताके गृह पांच वर्षके भे हैं।आदर वहु कीन्हों राजाने पठन विप्रगृह गे हैं॥१०९॥ जब वह विप्र पढावै कुछ २ सुनके चित धरि राखै । जब वह जाय तबहिं सबहिनसों राम राम मुख भाखै ॥११०॥ लरिका और पढत शालामें तिनहिं करत उपदेश । हरिको भजन करो सबही

मिलि और जगत सुखलेश ॥ १११ ॥ यहि विधि करि उपदेश सबनको कियेभजन रसलीन। षण्डामर्क जो पूंछन लाग्यो तब यह उत्तर दीन ॥११२॥राम कृष्ण अवतार मनोहर भक्तनके हितकाज। सोई सार जगतमें कहियतसुनो देव द्विजराज ॥११३ ॥येही बातजगतमेंनीकीसोइ पढ़त हम आज। जबहीं विप्र कहेउ जो असुरसों पुत्र पढत बिनकाज ॥ ११४ ॥ तबहिंअसुर प्रह्लाद बुलाये लिये गोद भरिअंक। कहो पुत्र तुम कहा पढौहौ पूँछत कहेउ निशंक॥ ११५ ॥ श्रवण कीर्त्तन; स्मरणपाद, रत, अरचन, बंदनदास।सख्य और आतमा निवेदन प्रेमलक्षणाजास ११६ ॥सुनो पिता हौं यहीपढ्यो हूं और बात नहिं जानूं इनते और मोहिं जो कहियत सो कबहूं नहिं मानूं ॥११७॥ दीन्हों पटकि भूप धरणीपर कहेउ विप्रसों खीझ। रेमूरख तू कहा पढायो कैसे देउँ तोहिं रीझ ॥११८॥ जोयह मेरो बैरीकहियत ताको नाम पढायो। देहुगिराय याहि पर्वतते क्षण गत जीव करायो॥११९॥दीन्हों डारि शैलते भूपर पुनि जल भीतर डारो। डारि अग्निमें शस्त्रनमारो नाना भांति प्रहारो ॥१२० ॥ तऊ न घातभई अंगनकी जहँ तहँ राम बचायो। तब नृप आप शस्त्रकर गहिकै बहुतहि त्रास दिखायो ॥१२१ ॥ कहां है राम कृष्ण वह तेरो यों कहि गर्जन कीन्हीं। घट घट जल थल व्योम धरणिमें व्यापकयहध्वनिलीन्हीं॥१२२॥ तब लै खड्ग खम्भमें मारो भयो शब्द अतिभारी। प्रगट भये नरहरि वपुधरिहरि कटकट करि उच्चारी ॥ १२३ ॥ पकरिलियो क्षणमांझ असुर बल डारो नखन विदारी। रुधिर पानकरि आंत मालधरि जय जय शब्द उचारी ॥ १२४॥ मारो दैत्य दुष्ट इकक्षणमें जय नृसिंहवपुधारेपुष्पन वृष्टि करत सुरनर मुनि भये भक्त रखवारे ॥ १२५ ॥ रमा निकट नहिं आवत हरिके ऐसो वपु हरिधारो। अज सनकादि देव नारद मुनि जानत रूप निहारो॥१२६॥अपनी २ अस्तुति करि-कै सबहिन यहै सुनायो।गंधर्व अरु विद्याधर चारण विमल विमल यशगायो॥ १२७ ॥तब प्रह्लाद आय हरि पदसों शीशनाय यह भाख्यो।जय जय जय जगदीश जगतगुरु मोर अधम प्रण राख्यो ॥१२८॥तुमहीं आदिअखंड अनूपम अशरण शरण मुरार।देव देव परब्रह्म परिपूरण भक्तहेतु अवतार ॥१२९॥जहँजहँ भीर परत भक्तनको तहँतहँ होत सहाय।अस्तुतिकरि मनहर्ष बढायो लेहनजीभ कराय ॥ १३० ॥ तब बोले नरसिंह कृपाकरि सुनहु भक्त मम बात।मन्वन्तर को राज दियो तोहिं धर्यो शीशपर हाथ ॥१३१॥निर्गुण सगुणहोय मैं देख्यो तोसों भक्त न पाऊं। जहँ जहँ परत भीरभक्तनको तहां प्रकट हो आऊं॥१३२॥ सुत प्रह्लाद प्रतिज्ञा मेरी तोको। कबहुँ न त्यागूँ जैसे धेनु बच्छको चाटत तैसे मैं अनुरागूं॥१३३ ॥जो मांगो सो देहुं तुरतही नहिं बिलम्ब कछु लाग।तब प्रह्लाद यही वर मांग्यो चरण कमल अनुराग॥१३४॥करी कृपादीन्होंकरुणानिधि अटल भक्ति थिरराज।अन्तर्धान भये हरि तहँते सफल भयेसबकाज॥१३५॥नारदरूप जगत उद्धारणवि चरत लोकन माय। करि उपदेश ज्ञानहरिभक्तहिअरुबैराग्यदृढाय॥१३६॥स्वायंभुवशतरूपादोऊ कहियतहैं अवतार।जगको धर्म प्रचार किये भुव भक्त कर्म आचार ॥१३७॥ करुणाकर जलनिधिते प्रकटे सुधाकलश लैहाथ। आयुर्वेद विस्तारण कारण सबब्रह्माण्डके नाथ॥१३८॥ क्षत्रिय दुष्टबढे जो भुवपर लियो कृष्ण अवतार।परशुराम ह्वैके द्विजथापे दूरकियोभूभार॥१३९॥रघुकुलवंश चतुर चूडामणि पुरुषोत्तम अवतार।दशरथके गृह जन्म लियो हरि रूपराम सुकुमार ॥ १४० ॥ रावण कुम्भकर्ण असुराधिप बढे सकल जगमाहिं।सबहिन लोकपाल उन जीते कोऊ बाच्यो नाहिं ॥१४१॥सकल देव मिलि जाय पुकारे चतुराननके पास।लै शिवसंग जले चतुरानन क्षीरसिन्धु

सुखवास ॥१४२॥अस्तुतिकरि बहुभांति जगाये तब जागेनिजनाथ । आज्ञादई जायकपिकुलमें
प्रकटो सब सुर साथ ॥१४३॥ तब ब्रह्मा सबहिनसों भाष्यो सोई सब सुर कीन्हों । सातों द्वीप
जाय कपिकुलमें आय जन्म सुरलीन्हों ॥१४४॥अपने अंश आपहरि प्रकटे पुरुषोत्तमनिजरूप।
नारायण भुवभार हरोहै अति आनन्द स्वरूप॥१४५॥ वासुदेव यों कहत वेदमें हैंपूरण अवतार।
शेषसहसमुख रटत निरंतर तऊ न पावतपार ॥१४६ ॥ सहसवर्षलोंध्यान कियो शिव रामचरित
सुखसार । अवगाहन करिकै सब देख्यो तऊ न पायो पार ॥ १४७ ॥वितीसमाधि सती तब
पूछ्यो कहो मर्मगुरुईश। काको ध्यान करत उरअंतर को पूरण जगदीश ॥ १४८ ॥ तब शिव
कहेउ राम अरु गोविंद परमइष्ट इक मेरे। सहस वर्ष लौं ध्यान करत हौं राम कृष्ण
सुख केरे ॥१४९ ॥ तामें रामसमाधि करी अब सहसवर्ष लौं वाम । अतिआनन्द मगन
मेरो मन अँग अँग पूरण काम ॥१५०॥ दाया करिमोकोयहकहियेअमर होहुँ जेहिभांति । मोहिं
नारद मुनि तत्त्वबतायो ताते जिय अकुलाति ॥ १५१ ॥ तबमहादेव कृपाकरिकै यहचरितकियो
विस्तार । सो ब्रह्मांडपुराण व्यासमुनि कियो वदन उच्चार ॥ १५२ ॥ मुनिवाल्मीकिकृपासातो
ऋषि राम मंत्र फल पायो । उलटोनामजपतअघवीत्यो पुनि उपदेशकरायो ॥ १५३॥रामचरित
वर्णनके कारण वाल्मीकि अवतार । तीनोलोक भये परिपूरण रामचरित सुखसार ॥१५४ ॥
शतकोटी रामायण कीनों तऊ न लीन्हों पार । कह्यो वसिष्ठमुनि रामचन्द्रसों रामायणउच्चार
॥ १५५॥ कागभुशुंडगरुडसों भाष्यो रामचरितअवतार । सकल वेदअरु शास्त्र कह्यो है रामचन्द्र
यशसार ॥ १५६ ॥कछु संक्षेप सूर अब वर्णत लघुमति दुर्बल बाल । यह रसना पावनके कारण
मेटन भव जंजाल ॥१५७॥तीनों व्यूह संगले प्रकटे पुरुषोत्तम श्रीराम।संकर्षण प्रद्युम्न लक्ष्मण
भरत महासुखधाम ॥ १५८ ॥ शत्रुघ्नहि अनिरुध कहियतुहै चतुर्व्यूहनिजरूप।रामचन्द्रप्रकटे जब
गृहमें हरषे कोशलभूप॥१५९॥पुष्य नक्षत्र नौमी जु परम दिन लग्न शुद्ध शुभवार। प्रगटभये द-
शरथ गृह पूरण चतुर्व्यूह अवतार॥१६०॥अति फूले दशरथ मनहीं मन कौशल्या सुख पायो ।
सौमित्रा कैकयी मन आनँद यह सबहिन सुत जायो ॥ १६१ ॥ गुरु वशिष्ठ नारदमुनि ज्ञानी
जन्मपत्रिका कीनी।रामचंद्र विख्यात नाम यह सुर मुनिकी सुधि लीनी ॥ १६२ ॥देत दान नृप
राज द्विजनको सुरभी हेम अपार। सब सुंदरि मिलि मंगल गावत कंचन कलश दुवार ॥ १६३॥
आये देव और मुनिजन सब दे अशीश सुख भारी।अपने अपने धाम चले सब परममोद
रुचिकारी॥१६४॥मनबांछित फल सबहिन पाये भयो सबन आनंद । बालरूप ह्वैकै दशरथसुत
करत केलि स्वच्छंद॥१६५॥घुटुरुन चलत कनक आँगन में कौशल्या छबि देखत। नील
नलिन तनु पीत झँगुलिया घनदामिनि द्युति पेखत ॥ १६६॥कबहूँ माखन रोटी लैकै खेल
करत पुनि मांगत। मुख चुंबत जननी समझावत आय कंठ पुनि लागत॥ १६७॥ कागभुशुण्ड
दरशको आये पांच बर्षलों देखे। स्तुति करी आपु वर पायो जन्म सफल करिलेखे॥१६८॥
कृपा करी निज धाम पठायो अपनो रूप दिखाय ।वाके आश्रम कोउ बसतहै माया लगत न
ताय॥१६९ ॥ प्रातकाल उठि जननि जगावत उठो मेरे बारे राम । उठि बैठे दँतुवन लै आई
करी मुखारी श्याम॥ १७० ॥चारो भ्रात मिल कर कलेऊ मधु मेवा पकवान । जल आचमन
आरती करिकै फिर कीन्हों अस्नान॥ १७१॥करत शृंगार चार भइया मिलि शोभा वरणि न
जाई । चित्र विचित्र सुभग चौतनिया इन्द्र धनुष छबि छाई ॥ १७२ ॥ अलकावलि मुक्तावलि

गूंथी डोर सुरंग बिराजै। मनहुँ सुरसरी धार सरस्वति यमुना मध्य बिराजै ॥ १७३ ॥ तिलक भाल पर परम मनोहर गोरोचन को दीनो। मानो तीन लोककी शोभा अधिकउदयसोकीनो॥ ॥ १७४ ॥ खंजन नैन बीच नासापुट राजत यह अनुहार। खंजन युग मनो लरत लराई कीर बुझावत रार ॥ १७५ ॥ नासाके बेसर में मोती वरण बिराजत चार। मनो जीव शनि शुक्र एक ह्वै बाढे रविके द्वार ॥ १७६ ॥ कुंडल ललित कपोल विराजत झलकत आभागंड। इन्दी बरपर मनो देखियत रविकी किरण प्रचंड ॥ १७७ ॥ अरुण अधर दमकत दशनावलि चारु चिबुक मुसक्यान। अति अनुराग सुधाकर सींचत दाडिमबीज समान ॥ १७८ ॥ कंठसिरी बिच पदिक बिराजत बहुमणि मुक्ताहार। दहिनावर्त देत ध्रुव तारे सकल नखत बहुबार ॥ ॥ १७९ ॥ रत्न जटित कंकण बाजूबंद नगन मुद्रिका सोहै। डार डार मनु मदन बिटपतरु विकच देखि मन मोहै ॥ १८० ॥ कटिकिंकिणि रुनु झुनु सुनि तनकी हंस करत किलकारी। नूपुरध्वनि पग ललि पन्हैयां उपमा कौन विचारी ॥ १८१ ॥ भूषण बसन आदि सब रचि रचि माता लाड लडावै। रामचन्द्रकी देखमाधुरी दर्पणदेख दिखावै ॥ १८२ ॥ निज प्रतिबिंब विलोक मुकुर में हँसत राम सुखरास। तैसेइ लक्ष्मण भरत शत्रुहन खेलत डोलत पास ॥ १८३ ॥ दशरथ राय न्हाय भोजन को बैठे अपने धाम। लावो वेगि राम लक्ष्मण को सुनि आये सुखधाम ॥ १८४ ॥ बैठे सँग बाबा के चारों भैया जेंवन लागे। दशरथ राय आपु जेंवतहैं अति आनँद अनुरागे ॥ १८५ ॥ लघु लघु ग्राम राम मुख मेलत आपु पिता मुख मेलत। बालकेलि को विशद परमसुख सुखसमुद्र नृप झेलत ॥ १८६ ॥ दाल भात घृत कढी सलोनी अरु नाना पकवान। आरोगत नृप चारिपुत्र मिलि अतिआनन्द निधान ॥ ॥ १८७ ॥ अचवनकर पुनि जल अचवायो जबनृप बीरा लीनो। रामलषण अरु भरत शत्रुहन सबहिन अचवन कीनो ॥ १८८ ॥ बीरा खायचले खेलनको मिलिकै चारों वीर। सखासंग सब मिले बराबर आये सरयू तीर ॥ १८९ ॥ तीर चलावत शिष्य सिखावत धर निशान देखरावत। कबहुँक सधे अश्व चढि आपुन नानाभांति नचावत ॥ १९० ॥ कबहुँक चारभ्रात मिलि अगिआ जात परम सुख पावत। हरिनआदि बहुजंतु किये वध निज सुरलोक पठावत ॥ १९१ ॥ यहि विधि वन उपवन बहुक्रीडा करी राम सुखदाई। वाल्मीकि मुनि कही कृपाकर कछुयक सूर जो गाई ॥ १९२ ॥ भई सांझ जननी टेरतहैं कहां गए चारोंभाई। भूख लगी ह्वैहै लालन को लावो वेगि बुलाई ॥ १९३ ॥ इतने मांझ चार भैया मिलि आये अपने धाम। मुखचुंबत आरती उतारत कौशल्या अभिराम ॥ १९४ ॥ सौमित्रा कैकयि सुख पावत बहु विधि लाड लडावत। मधुमेवा पकवान मिठाई अपने हाथ जेंवावत ॥ १९५ ॥ चारों भ्रातन श्रमित जानिकै जननी तव पौढाये॥ चापत चरण जननि अप अपनी कछुक मधुर स्वर गाये ॥ १९६ ॥ आई नींद राम सुख पायो दिनको श्रम विसरायो। जागे भोर दौरि जननी ने अपने कंठलगायो ॥ १९७ ॥ विश्वामित्रबडे मुनि कहियत यज्ञकरत निजधाम। मारिच और सुबाहु महासुर विघ्न करत दिनयाम ॥ १९८ ॥ परब्रह्म अवतार जानिकै आये नृपके पास। दशरथ राय बहुत पूजा विधि किये प्रसन्न हुलास ॥ ॥ १९९ ॥ भोजन कर जबहीं जु विराजे तव भाष्यो मुनिराय। यज्ञ सकल कीजै मेरो अव दीजै राम पठाय ॥ २०० ॥ तव नृप कह्यो राम हैं बालक मोको आज्ञा कीजे। तव द्विज कह्यो राम परमेश्वर वचन मान यह लीजे ॥ २०१ ॥ गुरु वशिष्ट सव विधि समझाये राम लषन सँग दीन्हे।

मारगमें अहल्या उद्धारी नावक निज पद छीने ॥ २०२ ॥ विश्वामित्र सिखाई बहुविधि विद्या धनुष प्रकार। मारग में ताडका जु आई धाई वदन पसार ॥ २०३ ॥ छिनमें राम तुरत सो मारी नेक न लागीबार। दीन्ही मुक्ति जानि निज महिमा आये ऋषिके द्वार ॥ २०४ ॥ कीन्हें विप्र यज्ञ परिपूरण असुर विघ्नको आये। अग्निबाण कर दहन कियोहै एक समुद्र पठाये ॥ २०५ ॥ जनक विदेह कियो जु स्वयम्वर बहु नृप विप्र बुलाये। तोरन धनुष देव त्र्यम्बकको काहू यतन न पाये ॥ २०६ ॥ विश्वामित्रमुनि वेग बुलाये सकल शिष्यलैसंग। राम लषण सँगलिये आपने चले प्रेमरसरंग ॥ २०७ ॥ जहँ तहँ उझकि झरोषा झांकत जनक नगरकी नार। चितवनि कृपाराम अवलोकत दीन्हों सुख जो अपार॥ २०८ ॥ कियो सन्मान विदेह नृपतिने उपवनवासी कीन्हों। देखन राम चले निजपुरको सुख सबहिनको दीन्हों ॥ २०९ ॥ सब पुर देखि धनुषपुर देख्यो देखे महल सुरंग। अद्भुत नगर विदेह विलोकत सुख पायो सब अंग ॥ २१० ॥ कहत नारिसब जनक नगरकी विधि सों गोदपसार। सीताजूको बर यहचहियेहैजोरी सुकुमार ॥ २११ ॥ अपने धामफिरे तब दोऊ आये जान भई सांझ। कर दण्डवत परसिपदऋषिके बैठे उपवन मांझ ॥ २१२ ॥ संध्याभई कृत्य नित करिकै कीन्हो ऋषि परणाम। पौढे जाय चरण सेवा द्विज करके अति विश्राम ॥ २१३ ॥ ब्रह्म मुहूरत भयो सबेरो जागे दोऊ भाई। कर परणाम देवगुरु द्विजको जल सुस्नान कराई ॥ २१४ ॥ आयेभूप देश देशनके जुरी सभा अतिभारी। तहां बुलाये सकल द्विजनको जनक सभा मंझारी ॥ २१५ ॥ कौशिक मुनि तहँछबिसों पधारे लिये शिष्य सँग सात। चलेनित्य आह्निक सबकर द्विज उर आनँद न समात ॥ २१६ ॥ दोनोंभ्रात संगमें लीन्हें आये राजदुआर। जहँ बैठे सब भूप ओपसों बाढ्यो गर्व अपार ॥ २१७ ॥ अपने अपनेभुज बलतोलत तोरन धनुषपुरार। कछुनहिं चलतखिसायगये सब रहेबहुत पचिहार॥ २१८ ॥ सीता कहत सहेलिनसों पुनि यही कहतरघुनन्द। तबउनकह्यो सकलसुखसागर सो ये परमानन्द ॥ २१९ ॥ बार बार जिय शोचकरत हैं विधिसों वचनउचारी। मन क्रमवचन यहै वरदीजो मांगत गोदपसारी ॥ २२० ॥ एकवार सुरदेवी पूजत भयो दरश सखि मोहिं। तादिनते छिन कल न परतहै सत्य कहतहौं तोहिं ॥ २२१ ॥ सब नृपपचे धनुपनहिं टूट्यो तब विदेह दुखपायो। क्रोध वचनकरि सबसे बोले क्षत्री कोउ न रहायो ॥ २२२ ॥ यहसुनि लक्ष्मण भये क्रोधयुत विपम वचन यों बोले। सूरजवंश नृपति भूतलपर जाके बल बिन तोले ॥ २२३ ॥ कितकबात यह धनुप रुद्रको सकल विश्व कर लैहौं। आज्ञापाय देव रघुपतिकी छिनकमांझ द्वैठगैहौं ॥ २२४ ॥ सबके मनको देख अँदेशो सीता आरत जानी। रामचन्द्र तबही अकुलाने लीन्हों शारँगपानी ॥ २२५ ॥ छिनमें करलैके जु चढायो देखत हैं सबभूप। डारचो तोर अघात शब्द भयो जैसे कालको रूप ॥ २२६ ॥ सबही दिशा भई अति आतुर परशुराम सुनि पायो। परशुसम्हारशिष्यसंगलैके छिनहीमें तहँ आयो॥ २२७ ॥ जयजयकार भयोजगतीपर जनकराज अति हरपे। सुर विमान सब कौतुकभूले जयध्वनि सुमनन वरपे ॥ २२८ ॥ जनकराज तब विप्रपठाये वेगवगत बुलाई। दशरथराज बाजि गजलैके सबहीं सौजतुराई ॥ २२९ ॥ चली बरात विपुलधनलैके जुरे मनुज नहिंपार। शोभासिंधुकरतनहिंआवै वर्णन करतउचार ॥ २३० ॥ गुरु वशिष्ठ मुनि लग्न दियो शुभ शुभनक्षत्र शुभवार। आयेजान नृपति सन्माने कीन्हीं अति मनुहार ॥ २३१ ॥ ब्याह केलि सुख वर्णन कीन्हां मुनि बालमीकिअपार। सो सुख सूर कह्यो वह

कीरति जगतकरी विस्तार ॥२३२॥वेद शास्त्र मथ करी ब्याहविधि सोइ कीन्हीं नृपराय। राम
लषण अरु भरत शत्रुहन चारोंदिये बिबाय॥२३३॥होम हवन द्विजपूजा गणपति सूरजशक्र महेश।
दीन्हों दान बहुत विप्रनको राजा मिथिल नरेश ॥ २३४ ॥ उत्सव भयो परम आनँदको बहुत
दायजो दीन्हों। भये बिदा दशरथनृप नृपसों गमन अवधपुर कीन्हों ॥२३५॥भृगुपति आयजानि
जब रघुपति मिले धाय शिरनाय ॥ दशरथराय बिनय बहुकीन्हीं जियमें अति डरपाय॥२३६॥
तब मुनिकह्यो धनुष क्यों तोरेउ रुद्र परमगुरु मेरे। रामचंद्र पूरणपुरुषोत्तम नेक नयन जब हेरे
॥२३७॥ लीन्हों अंश खैंचि भृगुपतिको अपनेरूप समायो । करो जाय तप शैल महेंद्रपै सुनि
मुनिवर शिरनायो॥२३८॥अति आनन्द अयोध्या आये कियो नगरशृंगार। कदलीखंभ चौक
मोतिनके बाँधी बंदनवार ॥२३९॥कियो प्रवेश राजभवननमें रामचंद्र सुखराश। अद्भुत भवन
बिराजत रत्नन सूरजकोटि प्रकाश २४०॥ द्वादश बरष बिराजे बालक फिर भूभार हरो।
कैकेयी बचन प्रमान किये नृप तब यह काज करो॥२४१॥वचन समझ नृप आज्ञाकीन्हीं देव
उपाय करो। रामचन्द्र पितुआज्ञा मानी जियमें वचन धरो॥२४२॥यह भू भार उतारन रघुपति
बहुत ऋषिन सुखदेन। वनोबासको चले सियासँग सुखनिधि राजिवनैन २४३ ॥मारगमें हरि
कृपा करीहै परमभक्त इकजान। तहँते गये जु चित्रकूटको जहां मुनिनकी खान ॥२४४ ॥
वाल्मीकि मुनि वसत निरंतर राममंत्र उच्चार।ताको फलयह आज भयो मोहिं दर्शन दियो कुमार
॥२४५॥पूजाकर पधराय भवनमें रामचन्द्र परनाम।कियो विविधविधि पूजाकरिकै ऋषिचरनन
शिरनाम ॥ २४६ ॥ बहुत दिवसलौं बसे जगतगुरु चित्रकूट निजधाम। किये सनाथ बहुत
मुनिकुलको बहुविधि पूरे काम ॥ २४७ ॥ भरतजान जियमें रघुपतिको दुःसह परम वियोग।
आये धायसंग सब लैकै पुरवासी गृहलोग ॥२४८॥ विन दशरथ सब चले तुरतही कोशलपुरके
बासी। आये रामचन्द्र मुख देख्यो सबकी मिटी उदासी ॥२४९॥ रामचन्द्र पुनि सबजन देखे
पिता न देखनपाये। पूछी बात कह्यो तब काहू मन बहुविधि बिलखाये ॥२५०॥ वेदरीति करि
रघुपति सबबिधि मर्य्यादा अनुसार। बहुतभांति सब विधि समुझाये भरत करी मनुहार॥२५१॥
गुरु वशिष्ठ मुनि कह्यो भरतसों रामब्रह्मअवतार। वनमें जाय बहुत मुनि तारे दूर करें भुवभार
॥ २५२ ॥पुनि निजविश्वरूप जो अपनो सो हरिजाय देखायो।आज्ञापायचले निजपुरको प्रभु-
हि गीत समझायो ॥ २५३ कछु दिन बसे जु चित्रकूटमें रामचन्द्र सहभ्रात। तहँते चले
दंडकाबनको सुखनिधि साँवलगात ॥ २५४ ॥ मारगमें बहुमुनिजन तारे अरु विराधरिपु मारे।
बंदनकर शरभंग महामुनि अपने दोष निवारे ॥ २५५ ॥ दरशन दियो सुतीक्षण गौतम पंचवटी
पग धारे। तहां दुष्ट शूर्पणखा नारी करि बिननाक उधारे॥२५६ ॥यहसुनि असुर प्रबल दलआये
छिनमें राम सँहारे। कीन्हें काज सकल सुर मुनिके भुवके भार उतारे ॥ २५७ ॥ मुनिअगस्त्य
आश्रम जु गये हरि बहुविधि पूजा कीन्हीं। दिव्य बसन दीने जबमुनिने फिरयह आज्ञा दीन्हीं॥
॥२५८॥दशकंधरको वेगि सँहारो दूरकरो भुवभार। लोपामुद्रा दिव्य वस्त्र लै दीने जनक-
कुमार ॥ २५९ ॥ शूर्पणखा जब जाय पुकारी नाक कान ले हाथ। रावणक्रोध कियो अतिभारी
अधर फरक अतिगात ॥ २६० ॥गयो मारीच आश्रमहिं तबहीं वानेबहु समझायो। तब मारीच
कह्यो दशकंधर बिनती बहुत करायो ॥२६१ ॥ रामचन्द्र अवतार कहत हैं सुनि नारद मुनि
पास। प्रकट भये निश्चर मारनको सुनि वह भयो उदास ॥ २६२ ॥ करगहि खड्ग तोर वध

कारिहौं सुनि मारिच डर मान्यो। रामचन्द्रके हाथ मरूंगो परम पुरुष फल जान्यो ॥ २६३ ॥ कपट कुरंग रूपधरि आयो सीता बिनती कीन्हीं। रामचन्द्र कर सायक लैके मारनकी विधि कीन्हीं ॥२६४ ॥ मारचो धनुष बाणले ताको लक्ष्मण नाम पुकारेउ। लक्ष्मण नाम सुनत तहँ आये अवसर दुष्ट विचारेउ ॥ २६५ ॥ धरिकै कपटभेष भिक्षुकको दशकन्धर तहँ आयो। हरिलीन्हों छिनमें माया करि अपने रथ बैठायो ॥ २६६ ॥ चल्योभाज गोमायु जंतुज्यों लैकै हरिको भाग। इतने रामचन्द्र तहँ आये परमपुरुष बडभाग ॥२६७॥ जब माया सीता नहिं देखी जियमें भये उदास। पूंछनलगे राम द्रुमगनसों बहुत बढी दुखरास ॥ २६८ ॥ मारगमें जटायुखग देख्यो विकल भयो तनुहीन। बिनती करी राम मैं तासों बहुतलडाई कीन॥२६९॥ जब तनु तज्यो गृध्र रघुपति तब बहुत कर्म विधि कीनी। जान्यो सखा राय दशराथको अपनी निजगति दीनी ॥ २७० ॥ मारगमें कबंधरिपु मारचो सुरपति काज सँवारचो। पंपापुर हरि तुरत पधारे जलको दोष निवारचो ॥२७१ ॥शबरी परमभक्त रघुपति-की बहुत दिननकी दासी। ताके फल आरोगे रघुपति पूरण भक्ति प्रकासी ॥ २७२ ॥ दीन मुक्ति निजपुरकी ताको तब रघुपति चले आगे।सीतासीता विलपतडोलत परम विरहसों पागे॥ ॥ २७३ ॥रविनन्दन जब मिले रामकोअरु भेंट हनुमान। अपनी बात कहा उन हरिसों बालि बडो बलवान॥२७४॥सप्तताल वेधन हरि कीन्हों वालिछिनकमें तारो। दीन्होंराजराम रविनंदन सब विधि काज सँवारो ॥२७५॥ सप्तद्वीपके कपिदल आये जुरी सेन अति भारी।सीताकी सुधि लेन चले कपि ढूँढत विपिनमँझारी ॥२७६॥ जलनिधितीर गये सब कपि मिल सुन संपातिकी वानी। लंकबसत सीता रिपु बनमें सब बानर यह जानी ॥२७७॥ रामचरण कर सुमिरन मनमें चले पवनसुत धाय। रामप्रताप विघ्न सब मेटे पैठि नगर सुखपाय ॥ २७८ ॥ धरि लघुरूप प्रवेश कियो कपि लंका नगर मँझार। रामभक्त निज जान विभीषण भेंटे हरि अँकवार ॥२७९॥ तब वाने सबभेद बतायो देखी कपि सबलंक। रामचरण धरि हृदय मुदितमन विचरत फिरत निशंक ॥ २८० ॥ जाय अशोकबाटिका देखी दरशन सीता कीन्ह। कर दण्डवत बहुत बिनती कर राम मुद्रिका दीन्ह ॥ २८१ ॥ सब संदेश कह्यो कपि सियप्रति सुनि हियमें धरि राख्यो। राम संदेश कहेउ तब सीता जो बूझो सो भाख्यो ॥२८२॥ लागीभूख चले उपवनमें नाना विधि फल खायो। विटप उखार उजार विपिनको सबहिनको दरशायो ॥ २८३ ॥ सुनि पुकार निश्चर बहु आये क्रुदि सबन संहारे। इन्द्रजीत बलनिधि जबआयो ब्रह्मअस्त्र उन डारे ॥२८४॥ तासों बँध दशानन देखत चले पवनसुत धीर। रावण बहुत ज्ञान समझायो कथरकथा गँभीर ॥२८५॥ चले छुडाय छिनकमें तबही जारदई सब लंक। कूदिचले गजवनको जयकर ज्यों मृगराज निशं-क ॥२८६॥ आये तीर समुद्र मिले कपि मिले आय जहँ राम। सुनि सुनि कथा श्रवण सीताकी पुलकित अति अभिराम ॥२८७॥ करि कपिकटक चले लंकाको छिनमें बांध्यो सेत।उतरगये पहुँ-चे लंकापे विजयध्वजा संकेत ॥२८८॥ पठये वालिकुमार विनयकरि समझाये बहुबार। चित्त न धरो कालवश जान्यो फिर आयो सुकुमार ॥२८९॥ अशरण शरण उदार कल्पतरु रामचन्द्र रण-धीर। रिपुभ्राता जान्यो जु विभीषण निश्चर कुटिलशरीर ॥२९०॥ राखिशरण लंकेशकियो पुनि जब निश्चर सब मारे। माया करी बहुत नानाविधि सबको राम निवारे ॥ २९१ ॥ कुंभकर्ण पुनि इन्द्रजीत यह महाबली बलसार। छिनमें लिये सोख मुनिवर ज्यों क्षत्री बली अपार ॥२९२॥

कियो प्रसाद शांतना करिकै राजविभीषण दीन्हीं । पुनि मंदोदरि अचल आयु दै अभयदान सबकीन्हीं ॥ २९३ ॥ समाधान सुरगणको करिकै अमृत मेघ बरषायो । कृपादृष्टि अवलोकन करिकै हत कपिकटक जियायो ॥ २९४ ॥ निश्चर किये मुक्त सब माधव ताते जिये न कोय । निर्भय किय लंकेश बिभीषण रामलषणनृप दोय ॥ २९५ ॥ सीता मिली बहुत सुखपायो धरो रूप निज मायो । पुष्पकयान बैठके नीके चले भवन सुखछायो ॥ २९६ ॥ चले पवनसुत विप्ररूप धरि भरतहि देन बधाई । जानि दूत रघुपतिको प्रमुदित भरत मिले तबधाई ॥ २९७ ॥ सुनत नगर सबहिन सुख मान्यो जहँतहँते चले धाई । रामचन्द्र पुनि मिले भरतसों आनँदउरन समाई ॥ २९८ ॥ कियो प्रवेश अयोध्यामें तब घर घर बजत बधाई । मंगल कलश धराये द्वारे बन्दनवार बँधाई ॥ २९९ ॥ राजभवनमें राम पधारे गुरु बशिष्ठ दरशायो । शीशनवाय बहुतपूजाकरि सूरजवंश बढायो ॥ ३०० ॥ समाधान सबहिनको कीन्हों जो दर्शनको आयो-कौशल्या कैकयी सुमित्रा मिलि मनमें सुखपायो ॥ ३०१ ॥ बैठे राम राजसिंहासन जगमें फिरी दुहाई । निर्भय राज रामको कहियत सुर नर मुनि सुख पाई ॥ ३०२ ॥ चार मूर्ति धर दरशन आये चार वेद निज रूप । अस्तुति करी बहुत नानाविधि रीझे कोशलभूप ॥ ३०३ शिव विरंचि नारद सनकादिक सब दरशनको आये । रामराज बैठे जब जाने सबहिन मन सुख पाये ॥ ३०४ ॥ लोकपाल अतिही मन हरषे सब सुमनन वरषायो । पुष्पविमान बैठि हरि आये लै कुबेर पहुँचायो ॥ ॥ ३०५ ॥ अति आनन्द भयो अवनीपर रामराज सुखदास । कृतयुग धर्म्म भये त्रेतामें पूरण रमा प्रकास ॥ ३०६ ॥ अश्वमेधबहु यज्ञ किये पुनि पूजे द्विजन अपार । हय गज हेम धेनु पाटम्बर दीन्हें दान उदार ॥ ३०७ ॥ चरित अनेक किये रघुनायक अवधपुरी सुख दीन्हों । जनकसुता बहु लाड लडावत निपट निकट सुख कीन्हों ॥ ३०८ ॥ जौन वसंत बहुत द्रुम फूले जनकसुता अनुरागे । प्रेमप्रवाह प्रकट प्रकटायो होरी खेलनलागे ॥ ३०९ ॥ कबहुँक निकट देखि वर्षातऋतु झूलत सुरँग हिंडोरे । रमकत झमकत जनकसुता सँग हावभाव चित चोरे ॥ ३१० ॥ कबहुँक कमल सरोवर उपवन जनकसुता सँग लीन्हें । नाना जलबिहार बिहरतहैं सन्तजनन सुखदीन्हें ॥ ३११ ॥ कबहुँक रत्न महल चित्रसारी शरद निशा उजियारी । बैठे जनकसुता सँग विलसत मधुर केलि मनुहारी ॥ ३१२ ॥ कबहुँक अगरधूप नानाविधि लिय सुगन्ध सुखकारी । कबहुँक निरतत देवनटीलखि रीझतहैं सुखभारी ॥ ३१३ ॥ रामविहार कहेउ नानाविधि वाल्मीकि मुनि गायो । वर्णत चरित विस्तार कोटिशत तऊ पार नहिं पायो ॥ ३१४ ॥ मनु समुद्रको बुन्द भई यह कवि वर्णन कह करिहै । कहत चरित रघुनाथ सरस्वति बौरी मति अनुसारिहै ॥ ३१५ ॥ अपने धाम पठाय दिये तब पुरवासी सब लोग । जै जै जै श्रीरामकल्पतरु प्रकट अयोध्या भोग ॥ ३१६ ॥ दुष्ट नृपति जब बैठे भुवपर धरि भृगुपतिको रूप । क्षणमें भुवको भार उतार्‌यो परशुराम द्विजभूप ॥ ३१७ ॥ व्यासरूप ह्वै वेद विस्तारे कीन्हें प्रकट पुरागन । नानावाक्य धर्म थापनको तिमिरहरण भुवभारन ॥ ३१८ ॥ बुद्धरूप कलिधर्म प्रकाश्यो दया सबनको मूल । दूरकियो पाखण्डवाद हरिभक्तनकोअनुकूल ॥ ३१९ ॥ कलिके आदिअन्तकृतयुगके है कलंकी अवतार । मारि मलेच्छ धर्म्म फिर थाप्यो भयो जग जयजयकार ॥ ३२० ॥ कर्मवाद थापनको प्रकटे पृश्नि गर्भ अवतार । सुधापान दीन्होंसुरगणकोभयो जग यशविस्तार ॥ ३२१ ॥ असुरनको व्यामोहकियोहरिधरोमोहनीरूप । अमृतपानकराय सुरनकोकीन्हेंचरितअनूप ॥ ३२२ ॥

तैसेही भुवभार उतारन हरिहलधर अवतार । कालिंदी आकर्ष कियो हरि मारे दैत्य अपार ॥
॥ ३२३ ॥ गज अरु ग्राह लडेउ जलभीतर तब हरिसुमिरण कीन्हों ।छोडिगरुड सुखधामसांव-
री भक्तनको सुख दीन्हों ॥ ३२४ ॥जब बहु असुर बढे पृथबी पर कियो अनर्थ विस्तार।सत्य-
सेन प्रगटे विश्वम्भर सत्य कियोहै अपार॥३२५॥निज बैकुण्ठ बसाय रमापति कियो रमाको
हेत ।विनती सुनि कमलाकी केशव कीन्हों सुख संकेत ॥ ३२६ ॥ ब्रह्मचर्य्य थापनके कारण
धरो विभू अवतार ।जहँ तहँ मुनिवर निज मर्य्यादा थापी अघट अपार॥ ३२७॥अजितरूप ह्वै
शैल धरो हरि जलनिधि मथबे काज ।सुर अरु असुर चकित भये देखत किये भक्तके काज॥
॥ ३२८॥जब बलिराजा गये देपुवर लीन्हों स्वर्ग छुडाय। अदिती दुखित भई कश्यपसों
बिनतीकरी सुनाय ॥ ३२९ ॥तब कश्यप मुनि कहेउ पयोव्रत विधिसों करो बनाय । ताकी
कोखि जन्म हरि लीन्हों श्रीवामन सुखदाय॥ ३३०॥भादौं श्रवणद्वादशी शुभ दिन धरोविप्र
हरिरूप ।शिव विरंचि सनकादिक आये बन्दनको सुखभूप ॥ ३३१ ॥ यज्ञोपवीतविधोक्त
कियो विधि सब सुर भिक्षा दीन्हीं।वामनरूप चले हरि द्विजवर बलिकीमनसुधि कीन्हीं॥३३२॥
दण्ड कमडलु हाथ विराजत अरु ओढ़े मृगछाला । धरि बटुरूप चले वामनजू अम्बुजनयन
विशाला ॥ ३३३ ॥ सूरज कोटि प्रकास अंगमें कटि मेखला विराजै । करी वेदध्वनि नृपद्वारंपै
मनहु महाघनगाजै ॥ ३३४ ॥ सुनिधायो तबहीं बलिराजा आय चरण शिरनायो।बिनती करी
बहुत सुख मान्यो आज भयो मनभायो ॥ ३३५॥ चलिये विप्र यज्ञशालामें जहँ द्विजवर सब
राजें । आये ब्रह्मसभामें वामन सूरज तेज विराजें ॥ ३३६॥ तब नृप कहेउ कछू द्विज माँगो
रतन भूमि मणिदान । हय गज हेम रतन पाटम्बर देहौं प्रगट प्रमान॥३३७ ॥तब बोलेवामनयह
बाणी सुन प्रह्लाद कुल भूप । बहुत प्रतिग्रह लेत विप्र जो जाय परत भवकूप॥३३८ ॥
तीन पेंड वसुधा हम पावें पर्णकुटी इक कारण । जब नृप भुव संकल्प कियो है लागे
देह पसारन ॥ ३३९ ॥ एक पैरमें वसुधा नापी एक पैर सुरलोक । एक पैर दीजै बलि
राजातब ह्वैहो विनशोक ॥३४० ॥नापो देह हमारी द्विजवर सो संकल्पित कीन्हों । सुनि
प्रसन्न वामन यों बोले तैं मोको वश कीन्हों ॥ ३४१ ॥सदाद्वार तेरे ठाढोह्वै दरशन देहौं तोहि।
मायाकाल कबहुँ नहिं व्यापै सुमिरन करतैं मोहि ॥ ३४२ ॥सुतललोकमें थिरकरि थाप्योजहँ
बिसन अनि भागी । गहिकै गदा द्वारपर ठाडे वामन ब्रह्म मुरारी ॥ ३४३ ॥ स्वर्गलोक
दीन्हीं सुरपतिको पुनि थिरकरि कर थाप्यो । निगमनेति कहि रटत निरन्तर देवशत्रु सब
कांप्यो ॥ ३४४ ॥वामनरूप ब्रह्महरि प्रगटे जिनको यश जग गावै ।शेषसहसमुख रटत निरंतर
भव पार किमि पावै ॥ ३४५ ॥ पुनि बलिराजहिं स्वर्गलोकमें थापैंगे हरि राय । सार्वभौम
अवतार धरेंगे श्रीवामन सुखदाय ॥३४६ ॥पुनि विभुरूप एक हरि लैंगे सकल जगत कल्याण।
कपट खण्ड पाखण्ड असुरकों थापे भक्त निदान ॥ ३४७ ॥ विष्वकसेन रूप हरिलैंगे कीन्हों
शिवको हेत । असुर मारि सब तुरत बिडारे दीन्हें रुद्रनिकेत ॥ ३४८ ॥धर्मसेतु ह्वै धर्मबढायो
अवनिको धारण कीन्हों। शेषरूप ह्वै धराशीश फिर सब जगको सुख दीन्हों ॥३४९ ॥ अन्त-
यामी पालन कारण निज सुधर्म धरि रूप । अन्नदान दै सब जग पोष्यो किये काज सुर भूप ॥
॥ ३५० ॥योगग्रन्थ पातंजलि भाष्यो सोउ क्षीण सब जान्यो । योगीश्वर वपु धरि हरि प्रकटे
योगसमाधि प्रमान्यो॥३५१ ॥ क्रिया पंथ श्रुतिने जो भाष्यो सो सब असुर मिटायो । बृहद्भानु

ह्वैके हरि प्रकटे क्षणमें फिरि प्रकटायो ॥ ३५२ ॥ यह अनेक अवतार कृष्णके को करि सकै बखान। सोई सूरदासने वरणे जो कहे व्यास पुराण ॥ ३५३॥ अंशकला अवतार श्यामके कवि-पै कहत न आवैं। जहँ जहँ भीर परत भक्तनको तहँ तहँ वपुधरि धावैं ॥ ३५४ ॥ मायाकला ईश चतुरानन चतुर्व्यूह धरि रूप। वायु वरुण यम औ कुबेर शशि मृत्युअग्नि सुर भूप ॥ ॥ ३५५ ॥ रवि शशि भृगु मरीचि सुरगुरु अरु चार वेदवपु जान। जगको प्रकटकरनपरजापति प्रकटे कलानिधान ॥ ३५६ ॥ जो जो भूप भये भूमण्डल लोकपाल निजजान। निज महिमा हरि प्रकट करी है विधिके वचन प्रमान ॥ ३५७ ॥ सुर अरु असुर रची हरि रचना सो जग प्रगटहि कीन्हीं। क्रीडाकरी बहुब नानाविधि निगम बात दृढ़ चीन्हीं ॥३५८ ॥ यहि विधि होरी खेलत खेलत बहुत भाँति सुख पायो। धरि अवतार जगतमें नाना भक्तन चरित दिखायो ॥३५९ ॥अंश कला अवतार बहुत बिधि राम कृष्ण अषतारी। सदा बिहार करत ब्रज मण्डल नंदसदन सुखकारी ॥ ३६० ॥ नित्य अखण्ड अनूप अनागत अविगत अनघ अनन्त। जाको आदि कोउ नहिं जानत कोउ न पावत अन्त ॥ ३६१ ॥ जब हरिलीलाकी सुधि कीन्हीं प्रगट करन विस्तार। श्रीवृषभानु रूप ह्वै प्रकटे पुनि ब्रजराज उदार ॥ ३६२ ॥विद्या ब्रह्म कही यशुमतिसों जाकी कोखि उदार। सोरहकला चन्द्र जो प्रगटे दीन्हों तिमिर विदार ॥ ३६३॥ पुनि वसुदेव देवकी कहियत पहिले हरिवर पायो। पूरण भाग्य आय हरि प्रकटे यदुकुल ताप नशायो ॥३६४॥ आठें बुद्ध रोहिणी आई शंख चक्र वपुधारो।कुण्डल लसत किरीट महाध्वनि वपु वसुदेव निहारो ॥३६५॥ अस्तुति करी बहुत नानाविधि रूप चतुर्भुज देख्यो । पीताम्बर अरु श्याम जलद वपु निरखि सफल दिन लेख्यो ॥ ३६६ ॥ तब हरि कहेउ जन्म तुम्हरे गृह तीन बार हम लीनो ।पृश्नीगर्भ देव ब्राह्मण जो कृष्णरूप रँग भीनो ॥ ३६७ ॥ माँगो सकल मनोरथ अपने मनवांछित फल पायो। शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज अजन जन्म ले आयो ॥ ३६८ ॥यह भुवभार उतारन कारन हलधरके सँग लायो। क्रीडा करों लोक पावनकर करों भक्त मन भायो ॥३६९॥प्राकृत रूप धरो हरि क्षणमें शिशु ह्वै रोवनलागे। तब वसुदेव देवकी निरखत परम प्रेमरसपागे ॥ ३७० ॥ तब देवकी दीन ह्वैभाष्योनृपकोनाहिं पतीजै॥अहोवसुदे-वजाव लै गोकुल कह्यो हमारो कीजै ॥ ३७१ ॥ तबले हरि पलना पौढाये पीताम्बरजु उढायो। तब वसुदेव शीश धरि पलना भयो सबन मनभायो ॥ ३७२॥ गोकुलचले प्रेमआतुर ह्वै खुलि-गये कपट कपाट। सोये श्वान पहरुआ सोये सबै मुक्त भई बाट ॥ ३७३ ॥तब वसुदेव लियो करपलना अपने शीश चढायो। रैन अँधेरी कछु नहिं सूझत अटकर अटकर आयो ॥३७४॥ शेष सहसफण ऊपर छाये घनकी बूँद बचावें। आगेसिंह हुँकारत आवत निर्भय बाट जनावें॥ ॥ ३७५ ॥यमुना अतिजलपूर बहतहै चरणकमल परशायो। मारग दीन्हों राम सिंधुज्योंनन्दभ-वन चलिआयो ॥ ३७६ ॥ पहुँचेआय महर मन्दिरमें नेक न शंका कीन्हीं। बालक धरि लैकै सुरदेवी सुरति गवनकी कीन्हीं ॥ ३७७ ॥ ले वसुदेव तुरतघरआये काहू जिय नहिंजाने। जब वह रोवनलागी तब सब जागपरे अकुलाने ॥ ३७८ ॥बालक भयो कह्यो नृपसों जबदौरि कंस तब आयो। करगहि खड्ग कह्यो देवकिसों बालक कहँ पहुँचायो ॥ ३७९ ॥ तब देवकीअधीन कह्यउ यह मैं नहिं बालकजायो। यह कन्या मोहिं बकस बीर तू कीजे मोमन भायो ॥३८०॥ कंस वंशको नाश करत है कहा समुझ रिसयानी। मोको भई अनाहद वाणी ताते डर नहिं

जानी ॥३८१॥ कन्या मांगलई तब राजा नेकु शंक नहिं आनी । पटकत शिला गई आकाशै
कंस प्रतीत न मानी ॥ ३८२ ॥भइ अकाशवाणी सुरदेवी कंस यहीं अब आई । तेरो शत्रुप्रकट
कहुँ व्रजमें काहु लख्यो नहिं जाई ॥ ३८३ ॥ जैसे मीन करत जलक्रीडा जलमें रहत समाई ।
त्यों तुवकाल प्रकट इक कतहूँ लखि न सकत तेहि कोई ॥ ३८४ ॥ अन्तर्द्धान भई सुरदेवी
कंस प्रतीत जो मानी । तब बसुदेव देवकी के गृह कंस गयो यह जानी ॥३८५॥क्षम अपराध
देवकी मेरो लिख्यो न मेट्यो जाई । मैं अपराध किये शिशु मारे करजोरे बिललाई ॥३८६॥
पुनि गृह आय सेजपर सोयो नेकु नींद नहिं आवै।देश देशके दूत बुलाये सबहिन मतोसुनावै॥
॥३८७॥दीनहीन जो असुर चढत बलि करत सकल पुनि तैसो । बूझत नहिं तन भार
उतारेउ जलको माखन जैसो ॥३८८॥ भयो भोर यशुमति गृह आनँद मंगलचार बधाई॥
जागी महरि पुत्र मुख देख्यो आनँद उर न समाई ॥३८९॥ जैसे शशि प्रकटत प्राचीदिशि
सकलकला भरिपूर । यशुमतिकोख आय हरि प्रकटे असुरतिमिर कर दूर ॥३९०॥ नन्दराय
घर ढोटा जायो महर महासुख पायो । विप्र बुलाय वेदध्वनि कीन्हीं स्वस्ती बचन पढायो ॥
॥३९१॥ जातकर्मकर पूजि पितर सुरपूजन विप्र करायो । दोइलख धेनुदई तेहि अवसर बहुतहि
दानदिवायो३९२ पर्वतसात तिलनको कीन्हों रत्ननओघमिलायो । मागध सूत और बन्दीजन
ठौर ठौर यश गायो ॥३९३॥बाजे बजत बिचित्र भाँतिसों रह्यउ घोष सब गाज । सुर सुमनन
बरषावत गावत व्योम बिमानन साज॥३९४ ॥ बांधत बन्दनवार साथिये द्वारेध्वजा सुहाई ।
कनक कलश प्रतिपौर बिराजत मंगलचार बधाई॥३९५॥सुरभी वृषभ सिंगारे बहुबिधि हरदी
तेल लगाई । सुबरण माल विचित्र धातुरंग अँग अँग चित्र बनाई ॥३९६॥आये गोपभेंटलैलैके
भूषण वसन सोहाये । नानाविधिउपहारदूध दधि आगेधरि शिरनाये ॥ ३९७ ॥यशुमतिके गृह
पुत्र प्रकटभयो सुनीसकल व्रजनारी । मंगलसाज सँवार हाथलै घरघर मंगलकारी॥३९८॥ अति
आतुरह्वै चलीं झुण्डजुरि शिर सुमनन बरसावें । मानों रीझ मधुप धरणीको रस पराग दरशावें
॥ ३९९ ॥ पहुँचीं जाय महर मन्दिरमें करत कुलाहल भारी । दरशनकरि यशुमतिसुतको सब
लेनलगीं बलिहारी ॥ ४०० ॥ नाचतगोपपरस्पर सब मिलि छिरकतहैं नवनीत। दूध औरदधि
और हरदजल सींचतहैं कर प्रीत ॥ ४०१ ॥ यशुमतिकोखिसराहि बलैया लेनलगीं व्रजनार।
ऐसो सुत तेरे गृह प्रकट्यो या व्रजको शृंगार ॥ ४०२ यशुमति रानी देति बधाई भूषण रत्न
अपार । फूलीफिरत रोहिणीमइया नखशिख करशृंगार ॥ ४०३॥ देत अशीशचलींव्रजसुन्दरि
जियउपज्योसुखभारी।गृहपूजनसब किये वेदविधि नंदराय सुखकारी॥४०४॥देशदेशतेढाढीआये
मनवांछित फलपायो । को कहि सकै दशौंधीउनको भयो सबन मन भायो ॥ ४०५ ॥तादिनते
सगरे या व्रजमेंरमारूप दरशायो।निजकुल वृद्ध जानि इक ढाढी गोवर्धनते आयो ॥ ४०६परम
उदार महर व्रजपतिजू ढाढी निकट बुलायो । बाजत हुडुक मँजीरा नूपुर नानाभाँति नचायो ॥
॥४०७॥ झँगापगा अरु पाग पिछोरी ढाढिनकोपहिरायो । हरिदरियाई कंठलगाई परदरशात
उठायो ॥ ४०८॥बहुतदान दीन्हें उपनँदजूरतनकनक मणि हीर।धरानन्दधनबहुतहि दीन्होंज्यों
बरषत घन नीर ॥ ४०९ कुण्डल कान कंठ माला दै ध्रुवनँद अति सुखपायो । सीधोबहुत सुर
सुनँदें गाडाभरि पहुँचायो॥४१०॥कर्माधर्मानन्दकहत हैं बहुतहिदानदिवायो । व्रजरानीढाढिन
पहिरगई मनवांछित फल पायो ॥ ४११ ॥ चले भवनको दे अशीश दोउ निर्भय कीरति गावैं।

जिन यांचे ब्रजपति उदार अति याचक फिर न कहावैं ॥ ४१२॥नानाविधिके विविधखिलौना रत्नन अधिक अमोले। ताको लेनगये मथुराको आनकदुन्दुभि बोले ॥ ४१३ ॥ वेगजाव गोकुल तुम अबहीं सुनियतहै उतपात। सुनि ब्रजराज तुरत घर आये जियमें अति अकुलात ॥४१४॥प्रथम पूतना कंस पठाई अतिसुन्दर बपु धारचउ। घसिकै गरल लगाय उरोजन कपट न कोउ निहारचउ ॥॥४१५॥लिये उठायश्यामसुन्दरकोथनगहिकैसुखलीन्हों ।लीन्हें खींचिप्राण विष पय युत देह विकल तब कीन्हों ॥ ४१६ ॥ छोड छोड कहि परी धरणिपर कर चरणन जु प-सार। योजन डेढ विटप बेली सब चूरचूरकरडाल ॥४१७॥ताकोजननीकी गतिदीन्हींपरमकृपाल गुपाल। दीन्हीं फूंक काठ तन वाको मिलके सकल गुवाल ॥ ४१८॥ तबहीं नन्दरायजू आये कौतुक सुनि यह भारी। बिस्मितभये देवनेराख्यो बालक यह सुखकारी ॥ ४१९ ॥ विप्रबुलाय वेदध्वनि कीन्हीं रक्षा बहुत कराई।आरति विविध उतार महरजू मंगल करतबधाई ॥ ४२० ॥ एकदिना हरि लई करोटी सुनिहरषी नँदरानी ।विप्रबुलायस्वस्तिवाचन करि रोहिणिनैनसिरानी ॥ ४२१ ॥ नित मंगल नित होत कुलाहल नितनित बजत बधाई। भादों देव छट्ठिको शुभ दिन प्रगटभये बलभाई॥ ४२२ ॥ वर्ष दिवस पहिले ब्रजमण्डल शेष महा वपु लीन्हों। अपनो धाम जान प्रगटो भुव रूप प्रगट निज कीन्हों ॥ ४२३॥कंसनृपतिने शकट बुलायो लेकर बीरा दीन्हों। आय नन्दगृह द्वार नगरमें रूप शकटको कीन्हों ॥ ४२४ ॥ मारी लात श्याम पलनाते परचउ धरणि भहराय। जहँ तहँते दौरे ब्रजवासी श्यामहिं लियो उठाय॥ ४२५ ॥ बच्छपुच्छ लै दियो हाथपर मंगलगीत गवायो। यशुमतिरानी कोखिसिरानी मोहनगोदखिलायो ॥ ४२६ ॥इक दिन अस्तनपान करावति यशुमति अति बडभागी। वदनपसारि विश्व दिखरायो क्षणइक मुरछा जागी ॥ ४२७॥ तृणावर्त विपरीति महाखल सो नृपरायपठायो। चक्रवातह्वै स॰ल घोषमें रजधुंधर ह्वै छायो ॥ ४२८ ॥चल्यो उठाय गुपाल व्योममें तब हरि कंठ गहायो पटक्यो शिला खरिकके आगे क्षण निरजीव करायो॥४२९ ॥गर्गराज मुनिराज महाऋषि सो वसुदेव पठायो। नामकरण ब्रजराज महरघर अति आनन्दित आयो॥४३०॥नामकरण कीन्हों दोहुनको नारायणसम भाषे। तुम्हरेदुःख मिटावनकारण पूरणको अभिलाषे ॥ ४३१ ॥ राम कृष्ण अवतार मनोहर भक्तनके हितकाज।बहुतहि काज करैंगे तुम्हरे सुनहु महर ब्रजराज ॥ ४३२ ॥ एकदिना पलना हरि पौढे नन्दमहरके द्वार।नँदरानी गृह कारज लागी नाहिंन लई सँभार ॥ ४३३ ॥ कंसनृपति इक असुर पठायो धरेउ कागको रूप।सम्मुख आय नयन दोउ जोरे देख्यो श्यामको रूप॥४३४ ॥ कंठ चाप बहुबार फिरायो पटक्यो नृपके पास। एक याममें वचन कह्यो यह प्रगट भयो तुव नास ॥४३५॥यह कहिकै तनु त्याग कियो उन कंसनृपतिके आगे।भयो उदास सुहान न कुछ ये क्षण सोवत क्षण जागे ॥ ४३६ ॥ एकदिना ब्रजराज महरजू और यशोदारानी । घुटुरुन चलत श्यामको देखत बोलत अमृतवानी॥ ४३७ ॥ इतते नन्दमहर बोलतहैं उतते जननि बुलावत। सुन्दरश्याम खिलौना कीन्हों हँसि हँसि मोद बढ़ावत॥४३८॥शशिको देख और हरिठानी कर मनुहार मनावत। मधु मेवा पकवान मिठाई विविध खिलौना लावत॥ ४३९ ॥ कमलनैनको महर यशोदा जलप्रतिबिंब दिखावत।फिरतहाथ चंद्र पकरनको नाहिंन होत लखावत ॥ ४४० ॥ बूढ़ेबाबू दरशन आये लाल चंद्रमणि दीन्हों। ताको देख और सब छांडी भोजनकी सुधि कीन्हों ॥ ४४१ ॥ औटचो दूध कपूर मिलायो प्यावत कनक कटोरे। पीवत देखि रोहिणी यशुमति

डारतहै तृण तोरे ॥४४२॥ कछु दिन भये संग दोउ बालक बल मोहन दोउ भाई । चोरी करत हरत दधि माखन लीला कहिय न जाई ॥४४३ ॥ सब ब्रजनारी उरहन आईं ब्रजरानीके आगे । मैं नाहिंन दधि खायो याको शिशु ह्वै रोवनलागे ॥ ४४४ ॥ एकदिना ब्रजपतिकीपौरीखेलतहरि ब्रजबाल। माटी खाय वदन दिखरायो चंचल नयनविशाल॥ ४४५ सकल ब्रह्मांड उदरमें देख्यो ब्रजमंडल रताल।नन्द महर यशुदा रोहिणि पुनि धेनु सकल ब्रजग्वाल ॥ ४४६ ॥ हृदयज्ञान उपज्यो तब यशुमति पूरण ब्रह्म विशेखे । हरि उपजाई माया तब सब बहुरि पुत्र करि लेखे ॥ ॥ ४४७ ॥ एकदिना दधि मथन करतही महर घोषकी रानी । हरि माँग्यो माखन नहिं दीन्हों तब मनमें रिस ठानी ॥ ४४८ ॥ फोरे भांड दही आंगनमें फैलपरेउ अति भारी । दौरी पकर देत नहिं मोहन अति आतुर महतारी ॥ ४४९ ॥ जानी विकल बहुत जननीको हरि पकराई दीनी । बहुत दाम लै बाँधनलागी अँगुरी द्वै भइ हीनी॥ ४५० ॥व्याकुल भई बँधत नहिं मोहन दया श्यामको आई । ऊखल दाम बँधे हरि जाने गोपी देखन धाई ॥ ४५१ ॥तौलौं बँधे देव दामोदर जौलौं यह कृतकीनी । देख दुखित ह्वै सुत कुबेरके कृपादृष्टि करि दीन्हीं ॥ ४५२ ॥ नारद मुनिको शाप पायके श्याम दई गति ताय। निकसे बीच अटक ऊखलमेंश्यामरहे अटकाय॥ ४५३ ॥चरण परसि ते पुलकि भये भुव परे वृक्ष भहराय । भयो शब्द आघात स्वर्गलौं सुनि आये ब्रजराय ॥ ४५४ ॥ अस्तुति करि वेगये स्वर्गको अभयहाथकरिदीन्हों । बंधनछोरि नंद बालकको ले उछंग कर लीन्हों ॥ ४५५ ॥ यशुमतिजूसों लरै महर जू तुम क्यों बाँध्यो दाम । गर्ग कहेउ मोही नारायण आये हैंबलश्याम ॥ ४५६ ॥यशुमतिमाय धाय उर लीन्हींराई लोन उतारो । लेत बलाय रोहिणी नीके सुंदर रूप निहारो॥४५७॥ कबहुँककर करतालबजावत नाना भांति नचावत । कबहुँक दधि माखनके कारण आछी आर मचावत ॥ ४५८ ॥बडे गोप उपनन्द बुलाय नंदमहरके धाम । कीन्हें मंत्र गोपसब मिलिकै जेहि विधि पूरणकाम४५९। बहु उत्पात रहत हैं गोकुल निज प्रति कंस पठायो ।अंत जाय कहु वास करैंगे बालकदेव बचायो ॥ ४६०॥ अब वृंदावन जाय रहैंगे जहँ वीरुध तृण पानी । चले गोप अति ओप विराजैं बोलत हो हो वानी॥४६१॥यमुना उतर आय वृन्दावन जहां सुखद द्रुम राजैं ।गोवर्द्धनवृन्दावन यमुना सघन कुञ्ज अति छाजैं ४६२ वसे जाय आनंद उमँगसों गइयां सुखद चरावैं । आयो दुष्ट बकासुर जान्यो हरि चित बात धरावै ॥४६३ ॥करि विचार छिनमें हरि मारो सो बछरा वनआज । तापाछे जो बकासुर आयो घात कियो ब्रजराज॥४६४॥बच्छ चरावत वेणु बजावत गोप सखनके संग । सो देखत चतुरानन आये हरि लीला रसरंग॥ ४६५ ॥छाकें खात खवावत ग्वालन सुन्दर यमुनातीर। ग्वालमंडली मध्य विराजत हरि हलधर दोउ वीर॥ ४६६॥गाय गोप अरु बच्छ सबै विधि छिनहींमेंहरिलीन्हों।सबको रूपभयेहरिआपुननेकविलम्ब न कीन्हों ॥४६७॥ जबहीं गर्वगयो चतुरानन अद्भुत चरितहिंदेख। परोधाय हरिपांय जोरि कर नाथ कृपा करलेख ॥४६८॥अस्तुतिकरी वेदविधि करके चतुरानन बहुभांति । अद्भुत चरित देख माधोको हँसत सकल किलकाति ॥४६९ ॥गयेधाम अपने विधि सुखसों हरिआज्ञा सुखपाय । वर्षदिवसलों सबरूप हरि ब्रजवासिन सुखदाय॥ ४७०॥धेनु चरावनचले श्यामघन ग्वालमंडलीजोरा हलधरसंग छाक भरि कांवर करत कुलाहलशोर॥४७१॥क्रीडा करत आप वृन्दावन धेनुसमूह नचावत। गोवर्धन पर वेणु बजावत फूलन भेप सँवारत ॥ ४७२ ॥ कालीनाग नाथ हरिलाये

सुरभी ग्वालजिवाये। कनक कमलके बोझ शीशधरि मथुरा कंस पठाये॥ ४७३ ॥दावानलको पान कियो मुख गोपन रक्षा कीनी। वर्षा सुऋतु देख वृंदावन क्रीडाकी सुधि लीनी॥ ४७४ ॥ वेणु बजाय विलास कियोवन धौरी धेनु बुलावत। बरहापीडदाम गुञ्जामणि अद्भुतभेष बनावत ॥४७५॥ प्रातकाल अस्नान करनको यमुना गोपि सिधारी।लैकैचीर कदम्ब चढे हरि बिनवत हैं ब्रजनारी॥४७६॥दै बरदानसंग खेलनको शरद रैनि जब आई। रचिकै रास सबन सुख दीन्हों रजनी अधिक कराई॥४७७॥गोवर्धन धरि सब ब्रज राख्यो मघवा मान मिटायो। नारायण प्रकटे सब जाने जोइ गर्गमुनि गायो ॥४७८॥धेनुक और प्रलम्ब सँहारे शंखचूड वध कीन्हों। करिकै चरण परस प्रभु वनमें व्याल अभयपद दीन्हों॥४७९॥ नानाविधि क्रीडा हरि कीन्हीं ब्रजवासिन सुख पायो। सबहिन यह मांग्यो बिनती कर हरि वैकुंठदिखायो ॥ ४८०॥अभयदान दीन्हों मघवाको नंदरायको राख्यो। वरुणलोकमें गये कृपा करि विविध वचन उन भाख्यो ॥४८१॥यज्ञ करत ब्राह्मण मथुराके ओदन श्याम मँगायो। उन नहिं दियो नारिपै पठये तब उन सुनि सुख पायो ॥ ४८२ ॥ षटरस थार सँवार साजसों सबही हरिपै आई।कियो मनोरथ पूरण उनको निर्भय करि जु पठाई॥ ४८३ ॥व्योमासुर केशी सब मारे अरु अरिष्ट वध कीनो। क्रीडा बहुत करी गोकुलमें भगतनको सुख दीनो ॥ ४८४ ॥ नारद आय कहेउ नृपसों यह कौन नींद तू सोवे। तेरो शत्रु प्रकट गोकुलमें गुप्त नजानत कोवे ॥ ४८५ ॥ यह सब देव प्रकट भय ब्रजमें जहँ तहँ ठौरहि ठौर।उग्रसेन वसुदेव देवकीयादव जेसब और ॥४८६ ॥ नंदगोपवृषभान यशोदा सबहि गोपकुल जानो। करो उपाय बचो जो चाहो मेरो बचन प्रमानो ॥ ४८७॥ यह सुनि कंस सबनको बन्धन दीनोहै त्यहिकाल। श्रीवसुदेव देवकी निज पितु बन्धन दियो विशाल॥ ॥ ४८८ ॥ फिरि नारद गोकुल हो आये हरि चरणनशिरनाये। अस्तुति करी बहुत नानाविधि मधुरे बीन बजाये॥ ४८९ ॥ हरि कछु इन उत्तर नहिं दीनो फिरगये अपने धाम। बल मोहन सब सखा वृन्द लै क्रीडत गोकुल ग्राम ॥४९०॥ बल अक्रूर कंस यह भाष्यो सुन सुफलकसुत बात। राम कृष्णको लावो मधुपुर विलमकरो जनि जात ॥४९१ ॥तब रथ बैठ चले सुफलक-सुत संध्या गोकुल आये।पैंडेमें हरिचरण धूरिलै अपने अंग लगाये ॥ ४९२ ॥ मिले नंद बलदेव रोहिणी और यशोदारानी।पूजा करि पधराय सदनमें भोजनकी विधि ठानी॥४९३ ॥ भोजन करि अक्रूर जो बैठे सब वृत्तांत सुनाये। धनुषयज्ञ कीन्हों नृपजूने सबको वेग बुलाये ॥ ४९४ ॥ चले महर ब्रजराज साज लै कौतुक देखन आज।राम कृष्ण दोउ आगे लैकै सकल घोष शिरताज ॥ ४९५ ॥मारगमें कालिंदीके तट कीन्हों जल असनान।निज वैकुंठ दिखायो जलमें दीन्हों पूरण ज्ञान ॥४९६॥करि वंदन हरिके चरणनको पुनि अक्रूर यह भाख्यो । तुम यदुकुल प्रकटे पुरुषोत्तम भक्तनको प्रण राख्यो ॥४९७॥मथुरा आये रहे उपवनमें नंदराय सब गोप।रामकृष्णके चरण परसते अधिक मधुपुरी ओप ॥ ४९८॥ गये नगर देखनको मोहन बलदाऊ लै साथ। पुर कुल वधू झरोखन झांकत निरख निरख मुसक्यात॥४९९॥मारगमें यक रजक सँहार्यो सबहि वसन हरि लीन्हें। बालक मिल्यो सबहि पहिराय सबहिनको सुख दीन्हें ॥५००॥आगे मिल्यो सुदामा माली फूल माल पहिराई।निर्भयदान दियो हरि तिनको अविचल भक्ति दृढाई॥५०१॥ कुब्जा घिसि चन्दन लैआई मारग देखन आई।हरि माँग्यो उन लेजु समर्प्यो मन वांछित फल पाई॥५०२॥ दियो वरदान भवन आवनको तहांते चले कन्हाई। मथुरानगर देख मनमोहन

फूले हैं दोउ भाई ॥ ५०३ ॥ रीझत नारि कहत मथुराकी आपुसमें दे सैन। कोमल गात कौनको ढोटा सुन्दर राजिवनैन ॥ ५०४ ॥ यह बालक सुकुमार सरस वपु असुर प्रबल अतिभारी। कैसेंकै वाको मारैंगे शोचतहैं पुरनारी ॥ ५०५ ॥ उपवन आय कियो हरि व्यारू नन्दराय सुख दीन्हों। मधु मेवा पकवान मिठाई जो भायो सो लीन्हों ॥ ५०६ ॥ पौढे जाय दोउ शय्यापर सोवत आई निंद। स्वपनेमें मथुरा फिर देखी जागे बालगोबिंद ॥ ५०७ ॥ भयो प्रात नृप फेर बुलायो धनुपयज्ञको देखन। मल्लयुद्ध नानाविध क्रीडा राजद्वारको पेखन ॥ ५०८ ॥ गये ब्रजराज द्वार भूपतिके बहु उपहार दिवाये। तब नृप कह्यो सकल गोपनसों भलीकरी तुम आये ॥ ५०९ ॥ बैठारे सब मंच ओपसों कौतुक देखनलागे। राम कृष्ण सँग ग्वालमण्डली नगर देख अनुरागे ॥ ५१० ॥ तोरेव धनुष टूक करिडारे दोउन आयुध कीने। तासु मारि करि चूर पहरुआ परममोद रसभीने ॥ ५११ ॥ मद गजराज द्वारपर ठाढ़ो हरि कहेउ नेक बचाय। उन नहिं मान्यो सन्मुख आयो पकरेउ पूंछ फिराय ॥ ५१२ ॥ दियो पठाय श्याम निजपुरको मावत सहि गजराज। आगे चले सभामें पहुँचे जहँ नृप सकल समाज ॥ ५१३ ॥ बडेबडे राजा सब बैठे अरु पुरवासी लोग। अपने अपने भाव सु देखत मिट्यो सकल मनशोग ॥ ५१४ ॥ मल्लन सबन मल्लसे दीखे नृपन लखे नृपराय। युवतिन सबै कामवपु देखे भेंटनको ललचाय ॥ ५१५ ॥ गोपन सखाभाव करि देखे दुष्ट नृपति कृतदण्ड। पुत्रभाव वसुदेव देवकी देखे नित्य अखण्ड ॥ ॥ ५१६ ॥ विदुष जनन विराट प्रभु दीखे अति मनमें सुखपायो। पूरण तत्त्व देख योगी जन हितसों ध्यान लगायो ॥ ५१७ ॥ यदुकुलके कुल दीपक प्रकटे सब यादव सुखदाई। कंस देखि निजकाल आपनो बहुतहि क्रोध रिसाई ॥ ५१८ ॥ जब उन कह्यो मल्लक्रीडा तुम करत गोपके संग। वृन्दावनमें हम सुनियत है क्रीडत हो बहुरंग ॥ ५१९ ॥ अब तुम कंस नृपतिको दिखावो मल्लयुद्ध करि नीके। कह्यो चाणूर मुष्टि सब मिलके जानत हो सब जीके ॥ ५२० ॥ तब हरि भिरे मल्लक्रीडा कर बहु विधि दांव देखाये। वर्णन कियो प्रथम संक्षपन अबहुं वर्ण न पाये ॥ ५२१ ॥ मुष्टिकसाथ लरे बलभाई धरेउ बृहदवपु दोउ। छिनहीमें हरि तुरत सँहारे अतिआनँद मनहोउ ॥ ५२२ ॥ और मल्ल मारे शल तोशल बहुत गये सबभाज। मल्लयुद्ध हरि करि गोपनसों लखि फूले ब्रजराज ॥ ५२३ ॥ तबनृपकंस बहुत बिललायो बारबार रिसयाई। बाँधो नंद हरो गोपन धन कीन्हों कपट दुराई ॥ ५२४ ॥ फागुनवदि चौदशको शुभदिन अरु रविवार सुहायो। नखत उत्तरा आप विचारेउ काल कंसको आयो ॥ ५२५ ॥ यह कहि कूदगये हरि ऊपर जहँ बैठ नृपराय। हरिको देखि खड्ग कर लीन्हों सन्मुख आयो धाय ॥ ५२६ ॥ तब हरि केश पकरि अपने कर धरणी मांझ पछारो। ऊपर गिरे आपु तिहुँ पुरको बोझ शीशपर डारो ॥ ५२७ ॥ कचगहि आपु बहुत वह खैंच्यो हरि यमुनालों आये। करिविश्राम सकल श्रम बीत्यो जब यमुना जल न्हाये ॥ ५२८ ॥ बंधन छोर पिता माताके अस्तुति करि शिरनायो। तुम हमको पठये गोकुलमें याते लाड लडायो ॥ ५२९ ॥ यशुमति मात और ब्रजपति जू बहुतहि आनँद दीनों। याते टहल करन नहिं पायो कहत श्याम रँगभीनो ॥ ५३० ॥ तब ब्रजराज महरपै आये बल मोहन दोउ भाई। तुम्हरी कृपा कंस मैं मारो कहँ लों करौं बड़ाई ॥ ५३१ ॥ रोहिणि यहबोली यशुमतिसों हम तुम्हरे सुखपायो। ज्योंतुम्हरोसुतत्यों मेरोसुतबहुतहि लाड लडायो ॥ ५३२ ॥ हिल मिल चलेसकलब्रजवासीनंदगाँवफिरिआयो। सुबसबसीमथुराता

दिनते उग्रसेन बैठायो ॥५३३॥ राम कृष्ण घरआये जाने पुरवासिन सुखपायो । मंगलचार भये घर घरमें मोतिन चौक पुरायो ॥ ५३४ ॥ तब हरि मात पितापै आये दोउ भाइन शिर नायो । बन्धन छोर विनय बहु कीन्हें तुम हमबिन दुख पायो ॥ ५३५ ॥ फिर बसुदेव बसे अपने गृह परम रुचिर सुखधाम । राम कृष्णको लाड लडावत जानत नहिं दिन याम ॥ ५३६ ॥ गर्ग बुलाय वेदविधि कीन्हों शुभ उपवीत करायो।विद्या पढ़न काज गुरु गृह दोउ पुरी अवन्ति पठायो ॥ ॥५३७॥ राजनीति मुनि बहुत पढाई गुरु सेवा करवाये। सुरभी दुहत दोहनी मांगी बांह पसार देवाये ॥ ५३८ ॥ गुरुदक्षिणा देन जब लागे गुरुपत्नी यह मांग्यो । बालक बह्यो सिन्धुमें हमरो सो नितप्रति चितलाग्यो॥५३९॥यह सुनि श्याम राम दोऊ मिलि गये जलधिके बीच। परपंचानन शंख तहँ लीन्हों मारि असुर अति नीच ॥ ५४० ॥ यमपुर जाय शंखध्वनि कीन्हों यमराजा चलिआयो । चरणधोय चरणोदक लीन्हों बालक दे शिरनायो ॥ ५४१ ॥ ले बालक गुरु आगे धरिकै राम कृष्ण सुखरासी !आज्ञाले मधुपुरी सिधारे परब्रह्म अविनासी ॥ ५४२ ॥ क्रीडा करत विविध मथुरामें अक्रूर भवन सिधारे । अस्तुति करी बहुत नानाविधि निर्भयकरशिर धारे ॥५४३॥ कुबिजाके घर आपु पधारे सबै मनोरथ कीनो । ऊधोभक्त संगलेके अति आनँद भक्तन दीनो ॥५४४॥ उद्धव भक्त बुलाय संगले हरि इकांत यह भाख्यो । ब्रजबासी लोगनसों मैंतो अन्तर कछु नहिं राख्यो ॥५४५॥सुरगुरु शिष्य बुद्धिमें उत्तम यदुकुल कहत प्रमान । मन्त्री भृत्य सखा मो सेवक याते कहत सुजान ॥ ५४६ ॥ मोकू लाड लडायो उन जो कहँलगि करें बडाई । सुनि ऊधो तुम समझत नाहिंन अब देखोगे जाई ॥५४७॥ बेग जाव ब्रज मो आज्ञाते ब्रजवासिन सुख देहौ । चरणरेणु शिरधरि गोपिनकी तुमहुं अभयपद लेहौ ॥ ५४८ ॥ गोपिन-सों विनती करि कहियो नितप्रति मन सुधि करियो । विरह व्यथा बाढे जब तनुमें तब तब म्वहिं चितधरियो ॥ ५४९ ॥ पाती लिखी आपकर मोहन ब्रजबासी सबलोग । मात यशोदा पिता नन्दजू बाढो विरह वियोग ॥५५०॥धौरी धूमरि कारी काजर मैन मजीठी गाय।ताको बहुत राखियो नीके उन पोष्यो पयप्याय॥ ५५१ ॥वनमें मित्र हमारे यक हैं हमहींसो है रूप।कमल-नयनघनश्याम मनोहर सब गोधनको भूप॥५५२॥ ताको पूजि बहुरि शिर नइयो अरु कीजो परणाम । उन हमरो ब्रजसबहि बचायो सब विधि पूरे काम॥५५३॥आज्ञाले ऊधो श्रीपतिकी चलेवेग नँदग्राम ।पुष्करमाल उतार हृदयते दीनी सुन्दरश्याम ॥५५४ ॥ पीताम्बर अपनो पहि-रायो श्रुति कुण्डल पहिराये ।अपने रथ बैठाय प्रीतिसों उद्धव ब्रज पधराये ॥ ५५५ ॥दिनमणि अस्तभये गये गोकुल नँदरायसों भेंटे।बल मोहनदोउ देख माधुरी परमविरहदुख मेंटे॥५५६॥ मिले नन्द बलराम कृष्ण दोउ हैं नीके यह भाख्यो।मारो कंस भली सब कीन्हीं यादवकुल सब राख्यो ॥ ५५७ ॥पूजा करि भोजन करवायो उद्धव संत सगायो ।सोवन निशा नेक नहिं पाये रामकृष्ण गुणगायो॥ ५५८ ॥यशुदा विकल बात पूछतिहैं नयनन नीर प्रवाह । तन मनमें अतिही दुखबाढ्यो अति आतुर जनुदाह॥ ५५९॥बातें करत शेष निशिआई उद्धव गये सनान। सुमिरण कर फिर ब्रजमें आये गोपिन देखे आन ॥५६०॥उद्धव देखि सकल गोपिनने कीन्हीं मन अनुमान ।रथको देखि बहुत भ्रम कीन्हों धौंआये फिरकान ॥ ५६१ ॥ तब यक सखी कहै सुनरी तू सुफलकसुत फिरि आयो ।प्राणगये ले पिंड देनको देह लेन मन भायो॥ ५६२॥इतने देख कृष्ण अनुचर मुख उद्धव यह मन जानी। उद्धव कियो प्रणाम सबनको विनय कियो

मृदुवानी ॥५६३॥ भलीकरी तुम आये उद्धव लाये हरिकी पाती । जादिनते हरि गोकुल छांड्यो हमपर विरह बराती ॥ ५६४ ॥ इतने मांझ मधुप यक देख्यो आय चरण लपटायो । ताको देख कहत उद्धवसों हरि गोकुल बिसरायो ॥५६५॥रे रे मधुप कितवके बन्धू चरण परस जिन करिहौ । प्रियाअंक कुंकुम कर राते ताहीको अनुसारिहौ॥५६६॥अधर सुधारस सकृत पान दै कान्ह भये अति भोगी। विजय सखा को सखी कहतहैं तासों रहत संयोगी॥५६७॥ तीनलोक नारीको कहियत जो दुर्लभ बलबीर । कमलाहू नित पांयपै लोटत हमतो हैं आभीर ॥५६८॥ पहिलेही इन हनी पूतना बाँधे बलिको दान । शूर्पणखा ताडका संहारी श्याम सहज यह बान॥५६९॥ याकी कथा सुनी जिन श्रवणन बनबिहंग भये योगी ।मांगतभीख फिरत घर घरही सजन कुटुम्ब वियोगी॥५७०॥फिर हरिआययशोदाके गृह रिंगन लीला करिहैं।मांग्यो चन्द्र आर जबकीन्हीं उन बातन चितधरिहैं ॥५७१॥बहुत दनुज संहार श्यामघन व्रजकी रक्षा करिहैं ।यमला अर्जुन विटप उपारे कालीको विष हरिहैं ॥५७२॥ वेणुबजाय रास वन कीन्हों अति आनंद दरशायो। लीला कथत सहसमुख तोऊ अजहूं पार न पायो ॥ ५७३ ॥ महाप्रलयके मेघ पठाये सुरपति कीन्हों कोप ।छिनहीमांझ गोवर्धन धारो राखलिये सब गोप॥५७४॥ ऐसे बहुत चरित्र कान्हके वरणि कहत नहिंआवै।उद्धव तुम नयनन नहिंदेखो ताते भेद न पावै ॥ ५७५॥ तब उद्धव कहव धन्य धन्य तुम धन्य धन्य व्रजनारि। तुम्हरे सुबस सदा हरि खेलो व्रजमें करत विहार ॥५७६॥ तुम्हरी चरणकमलरज कारण तप कीन्हों चतुरानन। रमा शेष पुनि किनहुं न पायो सो देखियत वृन्दावन ॥५७७॥गुलमलतामें जन्म मांगि तब विधिसों गोद पसारी । उद्धव कहत सदा म्वहिं दीजै चरणरेणु व्रजनारी ॥ ५७८॥ एक रूप ह्वै रहे वृन्दाबन गुलमलता करवास ।वज्रनाभ उपदेश कियो जिन पूरण केलि प्रकास॥५७९॥ एक रूप उद्धव फिर आये हरिचरणन शिरनायो। कह्यो वृत्तान्त गोपवनितनको विरह न जात कहायो ॥५८०॥म्वहिं खोजत षटमास बीतिगये तबहुं न आयो अंत । व्रजवनितनके नैन प्राणबिच तुमहीं श्याम बसंत ॥ ५८१ ॥ छिन नहिं दूर श्याम तुव उनसों मैं निश्चय यह कीनों ।तुमरो रूप देखि गोकुलमें बाढ्यो नेह नवीनो ॥ ॥ ५८२ ॥ तब हरि कह्यो सुनो उद्धवजू व्रजवासी तनमोर ।तिनको सपन कबहुं नहिं छांडों सत्य कहतहौं तोर ॥ ५८३ ॥वृन्दावनमें धेनु चरावत गोपसखनके संग । वेणुबजावत मोद बढावत क्रीडा कोटि अनंग॥५८४॥अरुगोपिनसों अंगसुअंग करि नितप्रति करों विनोद।दुष्ट कंस मारन यह आयो सदा यशोदा गोद ॥ ५८५ ॥कुंज कुंजमें क्रीडा करि करि गोपिनको सुख दैहौं ।गोप सखन संग खेलत डोलौं व्रज तज अंत न जैहौं ॥५८६ ॥मारेउ दुष्ट बहुत जो भूपर धर्मकरो विस्तार । वसुधाभार उतारन कारन यदुकुल लिय अवतार ॥ ५८७ ॥ मित्र एक बन बसत हमारो सो नयनन भरि देख्यो । ताको पूजन नित प्रति करिहौं सो तुम सुबुध विशेख्यो ॥ ५८८ ॥ नाना रत्न कंदरा कबहुं छिन नहिं मोहिं भुलावै क्रीडा । करो नित्य कुंजनमें गोपिनको सुखभावै ॥ ५८९ ॥ताही क्षण अक्रूर बुलाये बल मोहन यह भाख्यो । तुम अब वेगि जाव हस्तिनपुर कमलनयन जिय राख्यो ॥५९० ॥तब अक्रूर बैठि हरिके रथ हस्तिनपुर जु सिधारे।कुंती मिली युधिष्ठिरअर्जुन भीमविदुरउर धारे ॥५९१ ॥गांधारीदुर्योधन आदिक भीष्म कर्ण सब भेंटे।बहुत दिनाके ताप सबनके सुफलक सुत सब मेटे ॥ ५९२ ॥ तब यह कह्यउ नृपतिसों नीके बहुत भांति समुझायो।तब नृप कह्यो नहीं मेरो वश मोह प्रबल

जियछायो ॥ ५९३ ॥तब अक्रूर विचार कियो यह हरि इच्छा जिय मानी । करि प्रणाम गये मधुपुरको जहां श्याम सुखदानी ॥ ५९४ ॥ समाचार सबही कहि दीनो बलमोहनहिं सुनायो। सुन वसुदेव देवकी दोऊ बहुतहि दुख जिय पायो ॥ ५९५ ॥ अस्ती अरु प्राप्ती दोउपती कंस रायकी कहियत । जरासंध पै जाय पुकारीं महा क्रोध मन दहियत ॥ ५९६ ॥ तीन बीस अक्षौहिणिलै दल जरासंध तहँ आयो । बल मोहन छिनमांझ संहारे करि बिनचमू पठायो ॥ ५९७ ॥ सत्रह बार फेर फिर आयो हरि सब चमू सँहारी । अबके फेर दुष्ट बनि आयो हरि कछु बात विचारी ॥ ५९८ ॥ अंतरिक्षते द्वै रथ उपजे आयुध तुरँग समेत।तापरबैठ कृष्णसंकर्षण जीते हैं सब खेत ॥ ५९९ ॥ नारद जाय यवनसों भाष्यो राम कृष्ण दोउ वीर । तोहिंन गनत वसतहैं मथुरा बडे बली रणधीर ॥ ६०० ॥यह सुनि यवन तुरतही धायो जियमें अति अकुलाय। तीन कोटि भट यवन संगले मथुरा पहुँच्यो जाय ॥ ६०१ ॥ सुन बलमोहन बैठ रहसिमें कीनो कछू विचार।मागध मगधदेशते आयो साजे फौज अपार ॥६०२॥ विश्वकर्माकोआज्ञा दीन्हीं रची द्वारका आय । निशिको सोये सब मथुरामें जागेद्वारका जाय ॥ ६०३ ॥हलधरहलमूसल करलीने सभी मलेच्छ सँहारे । मारि फौज सबही मागधकी जरासंध उरधारे ॥ ६०४ ॥ चले भाज दोउ सभी उहांते जहँ सोवत मुचुकुन्द । वसन उढाय रहे छिपि आपन पूरण परमानन्द ॥ ६०५ ॥ मारी लात आय जब नृपको तब जाग्यो अहराय।निकसी अग्नि नैनते तासों भस्म भयो तेहि दाय ॥ ६०६ ॥ इतने मांझ आपु हरि आये दरशन दीन्हों भूप । शंख चक्र गद पद्म चतुर्भुज सुंदर श्याम स्वरूप ॥ ६०७ ॥ तब पूछ्यो तुम कौनरूपहो कौन देव अवतार।अबलों कहुँ देखे नाहीं मैं तुम अति हौ सुकुमार ॥ ६०८॥ तब हरि कह्यो जन्म मेरे बहु वेद न पावैं पार। भुवकी रज नभके सब तारे तितने हैं अवतार ॥६०९॥ अब कहिये द्वापर युग सुन नृप वासुदेव ममरूप। भूतल भार उतारन आयो यदुकुल सुखद स्वरूप ॥ ६१० ॥ तब नृप अस्तुति बहु विधि कीन्हीं जन्मकर्म गुणगाय । तुमहीं ब्रह्म अखिल अविनाशी भक्तन सदा सहाय ॥ ६११ ॥ नव गुण नवलरूप पुरुपोत्तम जै यदुकुल अवतार । जयजयजय वैकुंठ महानिधि कमल नयन सुखसार ॥ ६१२ ॥ वेद पुराण रटत यश जाको तऊ न पावत पार । मैं मुचुकुन्द नृपति कृतयुगको सोवत भए युगचार ॥ ६१३ ॥ अब मोको आज्ञा कछु दीजै जैसे चरणन पाऊं।सदाबसों निजलोक निरंतर जन्म कर्म गुणगाऊं ॥ ६१४ ॥ क्षत्री जन्म बहुत अघ कीन्हों ताते मुक्ति न होय। विप्रजन्म धरि मुक्ति होयगी करि तप साधन सोय ॥ ६१५ ॥ आज्ञा लेकै चल्योनृपति वहँ उत्तर दिशा विशाल । करि तप विप्रजन्म जब लीन्हों मिटचो जन्म जंजाल ॥ ६१६ ॥ तहांते चले श्याम अरु हलधर परबरपन गिरि आये । पर्वत बहुत नमन करि पूजा यह बिनती करवाये ॥ ६१७॥ नितप्रति मोशिर मघवा बरसत लागत शीत अपार । अगणित पाप महादुख मेटो मांगत यही मुरार ॥ ६१८ ॥ इतने मांझ मगध चलि आयो उन जानी यह बात। पर्वत मांझ गये दोउ भइया उन देखे दृग जात ॥ ६१९ ॥ दीन्हीं अग्नि लगाय चहूंघा उन जानी रिपु हान । राम कृष्ण दोउ कूद पधारे पुरी द्वारका जान ॥ ६२० ॥ भयो अनंद द्वारकामें सब घर घर गीत गवाये । करि रिपु हानि समर सब जीत्यो राम कृष्ण घर आये ॥ ६२१ ॥ एक समय नारद मुनि आये नृपति भीष्मके गेह । पूजा करी बहुत नाना विधि नृपति जनाये नेह॥ ६२२ ॥ लाखे रुक्मिणी कह्यो मुनि नारद यह कमला अवतार ।

पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम श्रीवसुदेव कुमार ॥ ६२३ ॥ उनके योग्य यही कन्या है सुनो देव महाराज । तब नृप कह्यउ करो निश्चय यह सफल होय ममकाज ॥ ६२४ ॥ तब नारदमुनि गये द्वारका कृष्णचन्द्रके पास । बिनती करी रुक्मिणीकी सब सुनि हरि भये हुलास ॥ ६२५ ॥ करो वेग कछु बिलँब न कीजै नारद कहि यह बात । श्रवण सुनत कमलापतिको जिय तनुपुलकित सबगात ॥ ६२६ ॥ सुन नारद म्वहिं नींद न आवे करिहौं वेग उपाय । यह कहि चले आप हरि रथचढि शोभा कही न जाय ॥ ६२७ ॥ देश देशके नृपति जुरे सब भीष्म नृपतिके धाम । रुक्म कह्यउ शिशुपालहि देहौं नहीं कृष्णसों काम ॥ ६२८ ॥ यतने मांझ आपु हरि आये सुनीनृपति सबबात । उपवन रहे जान जियमें यह मनमें अति अकुलात ॥ ६२९ ॥ पूजन करन चली देवी-को सखी वृन्द सबसंग । पूजा करि बोली यह कमला लोकलाज कृत भंग ॥ ६३० ॥ अटलशक्ति अविनाश अधिक बल एक अनादि अनूप । आदि अव्यक्त अंबिका पूरण अखिललोक तवरूप ॥ ६३१ ॥ कृष्णचन्द्रके चरण कमलमें सदा रहो अनुराग । येही पति नित होहिं हमारे जोपूरण मम भाग ॥ ६३२ ॥ तब उन कहेउ कृष्ण तुम्हरे पति ह्वैहैं अचल सुहाग । चली महावर पाय रुक्मिणी अति पूरणअनुराग ॥ ६३३ ॥ तब हरिआय बैठ रथ नीके आय मिलेबडभाग । करगहि बांह लई रथनीकेअतिआतुरचलेभाग ॥ ६३४ ॥ मानो नीलमेघके सँगमें मिली दामिनीआय । चले तुरत हरि पुरी द्वारका शंखचक्रधरि धाय ॥ ६३५ ॥ दुष्ट नृपतिको मान मथन करिचले द्वारकानाथ । जरासंध शिशुपाल आदि नृप पाछे लागे साथ ॥ ६३६ ॥ रथपाछे मिलि शोभित यहि विधि सकल दुष्टकीखान । महासिंह निजभाग लेत ज्यों पाछे दौरैं श्वान ॥ ६३७ ॥ हल-धर आय दुष्टसबमारे असुर नृपतिकी भीर । भाजि चले शिशुपाल जरासंध अति व्यापित तनुपीर ॥ ६३८ ॥ आये नाथ द्वारका नीके रच्यो मांडयो छाय । व्याह केलि विधि रची सकल सुख सौंज गनी नहिं जाय ॥ ६३९ ॥ ब्रह्मा रुद्र देव तहँ आये शुक नारद सनकादि । दरशन करि मंगल सुख के सब मेटी विग्रह जो आदि ॥ ६४० ॥ चैत्रमास पूनोंको शुभदिन शुभनक्षत्र शुभवार व्याहिलई हरि देव रुक्मिणी बाढ्योसुख जो अपार ॥ ६४१ ॥ यक सत्राजित यादव कहिये सूरजदेव उपास । दीन्हीं मणि आदित्य स्यमंतक कोटिक सूर्यप्रकाश ॥ ६४२ ॥ भार भार नित कनक देतहै नृपति सुनी यह बात । तब उन मांगी इन नहिं दीनी बाढ्यो वैर अघात ॥ ६४३ ॥ एक दिवस मृगयाको निकस्यो कंठ महामणि लाय । तब उन सिंहमारि मणि लीन्हों ऋच्छ मिल्यो यकताय ॥ ६४४ ॥ जाम्बवान महाबली उजागर सिंहमारि मणि लीन्हीं । पर्वत गुफा बैठअपने गृह जाय सुताको दीन्हीं ॥ ६४५ ॥ चर्चा परी बहुत द्वारावति कृष्णचन्द्रकी बात । तब हरि गये शैलकंदरमें अति कोमल मृदुगात ॥ ६४६ ॥ दिनअट्ठाइस युद्ध कियो जब ऋच्छ भयो बलभंग । तब पग परेउ बहुत अस्तुति करि जानि रामपदसंग ॥ ६४७ ॥ तबहरि कहेउभक्त तू मेरो तोसों करि संग्राम । कीन्हें शुद्ध तत्त्व सब तनुके पूरण कीन्हें काम ॥ ६४८ ॥ जाम्बवती अरपी कन्या भरि मणि राखी समुदाय । करि हरि ध्यान गयो हरिपुरको जहां योगेश्वर जाय ॥ ६४९ ॥ लै स्यमंतमणि जाम्बवतीसह आये द्वारकानाथ । अति आनंद कुलाहल घर घर फूले अँग न समात ॥ ॥ ६५० ॥ आश्विनसुदि नौमीको शुभदिन हरि आये निजधाम । तौलौं घर घर प्रति दुर्गाको पूजन कियो सब गाम ॥ ६५१ ॥ सत्राजित अपनी तनयाको दीन्हें त्रिभुवनराय । सतभामाजु नाम तेहि कहियत शोभा कही न जाय ॥ ६५२ ॥ कीन्हों व्याह परमआनंद सों सतभामा सुखरास ।

द्वारावती विराजत नित प्रति आनँद करत विलास ॥ ६५३ ॥ इन्द्रप्रस्थ हरि गये कृपा करि पांडव कुलको तार। तहँ कालिन्दी वनमें व्याही अतिसुन्दरि सुकुमारि ॥६५४॥ मित्रविंदा यक नृपतिनन्दनी ताको माधव व्याये। सात बैल नाथनके कारण आप अयोध्या आये॥६५५॥सत्या व्याहि बहुतसुख कीन्हों मथ्यो नृपतिको मान।आये फेर द्वारका मोहन मंगल केलि निधान६५६॥ भद्रा व्याहि आप जब आये द्वारवती आनन्द ।तैसेही लक्ष्मणा विवाही पूरण परमानंद ॥६५७॥ नरकासुरको मारि श्यामघन सोरह सहस त्रियलाये।एकहिलग्न सेवन कर पकरे एकमुहूर्त्त विवाये॥ ॥६५८॥ यह सुनि नारद अचरज पायो ब्रह्मलोकते धाये । कृष्णचन्द्रके चरण परस कर बीणा मधुर बजाये ॥६५९ तब हरि रीझ कहेव नारद सों कहौ कहांते आये।तब उन कहेव दरशको आयो बहुत रूप धरि व्याये ॥६६०॥ यह कौतुक देखनके कारण मैं आयो जो देखायो। रूप अनत आदि अविनाशी दरशन प्रेम बढायो॥६६१॥ तब हरि कहेउ जाव घर घर प्रति देखोगे सब ठौर।मैंही हौं सब थल परिपूरण मोबिन नाहिंन और॥६६२॥ तब मुनि चले देख घर घर प्रति परम केलि सुख पायो ।नाना क्रीड़ा करत निरंतर घरघर रूप दिखायो ॥६६३॥कहुँ क्रीडत कहुँ दामबनावत कहूं करत शृंगार। कहुँ बालकन खिलावत माधव खेलत परम उदार ६६४॥ कहुँ चौपर खेलत युवतिन सँग पांच सात उच्चार। कहुँ मृगयाको चले अश्वचढि श्रीबसुदेवकुमार ॥६६५॥ कहुँ कर लेकर शस्त्र संवारत कहुँ कछु करत बिचार। कहुँ कछु वात कहत सबहिन-सों कहुँ ध्वनि वेद बिचार॥६६६॥ कहुँ मिलि यज्ञ करत विप्रन सँग अति आनंद मुरार। नाना दानदेत हय गज भुव ऐसे परमउदार ॥६६७॥ कहुँ गोदान करत कहुँ देखे कहुँ कछु सुनत पुरान।कहुँ निर्त्तत सब देखनारवधु कहुँ गँधरव गुणगान॥६६८॥कहूँ जप करत सनातन निजवपु ब्रह्म करत कहुँ ध्यान। कहुँ उपदेश कहूँ जैबेको कहूँ दृढ़ावतज्ञान ॥६६९ ॥ कहुँभोजन नानारुचि माँगत षटरसके पकवान। आरोगत ब्रजराज सांवरो कहूँ करत जलपान ॥ ६७० ॥ कहुँ जागत दरशनदियो मुनिको करि पूजापरणाम । संध्या करतकहूँ त्रिभुवनपति स्नान करत कोउ धाम ॥ ॥ ६७१ ॥ कहुँ पौढे कमलाके सँगमें परम रहस्य एकान्त । कहुँव्रत करत कहूँ निगमनको ज्ञान कर्मको अंत ॥ ६७२ ॥ कतहूँ श्राद्ध करत पितरनको तर्पण करि बहुभांति। कहूँ विप्रनको देत दक्षिणा कहुँ भोजनकी पांति ॥ ६७३ ॥ कहूँ सुगन्ध लगावत लैके कहुँ अश्व शृंगार। कहुँ गजरथ कहुँबाजिरथन सजि डोलतहैं गृह द्वार ॥ ६७४ ॥कहुँ ऊधोसों ब्रजसुख क्रीडा परम प्रेम उच्चार। कहुँ पांडवकी कथा चलावत चिन्ता करत अपार ॥ ६७५ ॥ कहुँ मिलि विप्र कहत सबहिनसों बालक करन सगाई। कहुँ सुत व्याह कहूँ कन्याको देत दायजो राई ॥ ६७६ ॥कहुँ गजराज बाजि शृंगारे तापर चढे जु आप। सँग बलभद्र चमू सब संग ले चले असुरदल कांप॥ ॥ ६७७ ॥ कहूं हस्तिनापुर देखनको मनमें करत विचार । कतहुँ अर्घ्य देत सूरजको कहुँ पूजत त्रिपुरार ॥ ६७८ ॥ कहुँ यक दुर्गादेवि जानिकै जोरि विप्र निजधाम। करत होम बहु भांति वेदध्वनि सबविधि पूरणकाम॥६७९ ॥ प्रथमपुत्रको व्याह जानिके पूजत कहूं गणेश। कहूं ऋषिनके चरण धोयके शिरपर धरत नरेश ॥६८० ॥कहूं व्याहकी केलि परम सुख निरखत मुनि सचुपायो। शेष सहसमुख पार न पावै कछु इक सूर जु गायो ॥ ६८१ ॥ फिर मुनि आय भवन कमलाके चरणकमल शिर नायो। मैं सबठौर फिरेउँ तुव देखन कहतहूं पार न पायो ॥ ६८२॥ जित तित देखों तुम परिपूरण आदि अनंत अखंड। लीला प्रगट देव

पुरुषोतम व्यापक कोटि अखंड ॥ ६८३ ॥ शिव विरंचि सनकादि महामुनि शेष सुरेश दिनेश । इन सबहिन मिलि पार न पायो द्वारावती नरेश ॥ ६८४ ॥ तुम्हरे चरण कमलकी महिमा जानतहैं त्रिपुरारि । प्रकट गंग पावन चरणनते ताहि रहत शिर धारि ॥६८५ ॥पुनि गौतम घरणी जानतहैं नावक शबरी जान। उद्धव विदुर युधिष्ठिर अर्जुन अरु भीषम सुरज्ञान॥ ६८६ ॥ हनूमान अरु भक्तविभीषण चरणकमल रज मांगी । सोई कृपा करो करुणानिधि माँगतहौं अनुरागी॥ ६८७ ॥यह कहिकै मुनि लोक सिधारे वीण बजाय रिझाय । ब्रह्मलोक पहुँचे छिनहीमें हरि आज्ञाको पाय॥ ६८८ ॥पहिलो पुत्र रुक्मिणी जायो प्रद्युमन नाम धरायो । कामदेव प्रगटे हरिके गृह पहिले रुद्र जरायो ॥ ६८९॥नारद जाय कह्यो शंबरसों तब रिपु वपु धरि आयो। वेग उपाय करो मारनको प्रगट द्वारका जायो॥६९०॥ तब शंबर भयभीत द्वारका गयो तुरत त्यहि काल। हरिको चक्र देख रखवारी व्याकुल भयो विहाल ॥ ६९१ ॥ तब नारदमुनि आय चक्रसों बात करन ठहरायो । इतने मांझ पुत्रलै भाज्यो निधिमें जाय दुरायो ॥ ६९२ ॥ एक मीनने भक्ष कियो तब हरि रखवारी कीनी । सोई मत्स्य पकरि मोधुकने जाय असुरको दीनी ॥ ६९३ ॥ तब उन कह्यो पाकशालामें अबहीं यह पहुँचाओ । चीरयो उदर पुत्र तब निकस्यो उन जान्यो मम नाओ ॥६९४॥ नारद कह्यो यही तव पति है याकूं वेग बढ़ाय ।जौलौं बडो होय तौलों यह असुरन मतिहि देखाय॥६९५॥सेवाकीनी बडेभये जब समरथविपुल उदार। महाबलीबलराम कृष्ण सुत कीन्हों असुरसँहार ॥ ६९६ ॥ मारि असुरकोआय द्वारका कृष्ण चरण शिर नायो।भीतर गये नये रुक्मिणिको सबहिन कंठ लगायो ॥६९७॥बर अरु वधू आय जब जाने रुक्मिणि करत बधाई।रतिअरु काम प्रकट तादिनते कवि मिलि कीरति गाई॥६९८॥याविधि केलि करत द्वारावति पूरण परमानंद । महिमा सिंधु कहांलग वरणै सूर जु कवि मति मंद ॥६९९ ॥पुनि अनिरुद्ध भेद नारदके चित्ररेखा हरिलीन्हों । चारवर्ष अरु चारमासलौं ऊखाकोसुखदीन्हों॥७००॥तबहरि जायसंगहलधर लै सब यादव दलजोर। सबै भुजा करि दूर असुरकी चार हाथ दिय छोर॥ ७०१ ॥ आये रुद्र पक्ष करि ताको युद्ध करन हरिसाथ । छिनमें जीति वधूसुत लैकै आय द्वारकानाथ ॥ ७०२ ॥ पुनि यक दिवस सुधर्मा बैठ यादव सभा अपार । उग्रसेन वसुदेव सात्यकी अरु अक्रूर उदार॥ ७०३ ॥ इतने मांझ दूत यक आयो सबहिन कहि समुझायो।वासुदेव नृप आज्ञा करके मोको वेगि पठायो ॥ ७०४ ॥ वासुदेव यह कहत वेदमें प्रगट ब्रह्म अवतार। सो तौ मैंही प्रगट भयो भुव यहि विधि बढ्यो अपार ॥ ७०५ ॥ क्षणमें जाय तुरत हरि मारयो दीन्हीं मुक्ति कृपाल । फेर द्वारका तुरत पधारे गरुड़ चढ़े गोपाल ॥ ७०६ ॥ एक दुष्टनें बहुत कियो तप सो रीझे त्रिपुरार । तब शिवने उन कृत्या दीन्हीं बाढो क्रोध अपार ॥ ७०७ ॥ कृत्या चली जहां द्वारावति हरिजानी यह बात । आज्ञा करी चक्रको माधव छिन कृत्याकर घात ॥ ७०८ ॥ काशीजाय जराय छिनकमें गये द्वारकाफेर । अति आनन्द परम सुखसों सब दिन बीतत रसटेर ॥७०९॥पुनि कुरुक्षेत्र गये यादवमिलि कियो तीर्थ अस्नान। यज्ञ होम करि पितर देवता विप्रनको बहु दान ॥७१०॥ सूरज ग्रहण नृपन बहु जान्यो आय जुरी सब भीर। दर्शन भयो सबनको हरिको मिट्यो ताप तनु पीर॥ ७११ ॥ भीषम द्रोण अरु कर्ण युधिष्ठिर भीमार्जुन सहदेव । कुंती नकुल और गान्धारी कृपी विदुर सहदेव ॥७१२ ॥ दुर्योधन सब भ्रात

संगलै धृतराष्ट्रहि लै आयो। नारद गौतम वाल्मीकि मुनि हरिदर्शन हित धायो ॥ ७१३ ॥ भारद्वाज मरीचि अंगिरा अत्रेमुनी अनंत। पुलह पुलस्त्य अगस्त्य कश्यप पुनि अरुसनकादिक संत ॥ ७१४ ॥ हरिको दर्शन करि सुख पायो पूजा बहु विधि कीन्हीं। अति आनंद भये तन मनमें सौंज बहुत विधि दीन्हीं ॥ ७१५ ॥ ब्रजवासी सब सखा संगके यशुमति अरु ब्रजराज। दर्शन पाय बहुत सुख पायो सफल भये सब काज ॥ ७१६ ॥ यशुमति मात उछंग लगाये बल मोहनको आय। बालभाव जियमें सुधि आई अस्तन चले चुचाय ॥ ७१७ ॥ गोपिन देखि कान्हकी शोभा बहुतहि मन सुख पायो। सघन निकुंज सुरत संगम मिलि मोहन कंठ लगायो ॥ ७१८ ॥ रुक्मिणि कहत कमललोचनसों राधा हमें देखायो। जाकी नित्य प्रशंसा तुम करि हम सबहिनकुँ सुनायो ॥ ७१९ ॥ तब बृषभानुसुता पगधारी रानिन मंडल मांझ। मनो सरस इन्दीवर फूले तामधि फूली सांझ ॥ ७२० ॥ देख तेज बृषभानुसुताको सबै भई छबि हीन। अति आनन्द मोद मन मान्यो हमहिं कृतारथ कीन ॥ ७२१ ॥ तब हरि कह्यो मोहिं राधा बिन पल क्षण कछु न सोहाय। सुनोरुक्मिणी कथा घोषकी मोपै कहिय न जाय ॥७२२॥ एक दिना वनमें इन मोको अपनो सुधा पिवायो।ताके बल गिरि गोवर्द्धन लै अपने हाथ उठायो ॥ ७२३ ॥ अरु काली धेनुक दावानल प्रकट पूतना आई। इनकी कृपा सकल विघ्नको छिनमें दिये नशाई ॥ ७२४ ॥ भांति भांति करि मोहिं लडायो सघन कुंजमें जाय। ताकी कथा कहों कह तुमसे मोपै कहिय न जाय॥७२५॥रास केलि करि क्रीडा कीन्ही होरी खेल खिलायो। मटुकि छुडाय लियो दधि बरसत तउ कछु मन नहिं आयो ॥ ७२६ ॥ रत्न जटित पर्यंक द्वारका पौढत हैं सुखधाम। तौहू इनको ध्यान करतही बीततहैं सब याम ॥ ७२७ ॥ इन बिन मोहिं कछू नहिं भावै नन्दरायकी आन।सुनो रुक्मिणी लोचनमें ए बसी रहैं मम प्राण॥७२८॥ जागत सोवत अरु वन डोलत भोजन करत विहार।ध्यान करत नखशिख इनहीको बसि द्वारका-मँझार ॥७२९॥ तब मिलि रंग बहुत भांतिनसों कीन्हें विपुल विहार। ब्रजजन चले सकल गोकुलको दीन्हें दान अपार ॥७३०॥ चले द्वारका यदुकुल सब मिलि भयो कुलाहल भार। पहुँच आय द्वारका संमुख घर घर मंगलचार ॥७३१॥ कियो विचार यज्ञको राजा राजसूय जिय जानि। कृष्णचंद्रको वेगि बुलाओ संग सकल पटरानि ॥७३२॥ आये इन्द्रप्रस्थ सब यदुकुल महा महोत्सव मान। जुरे भूप बहु सकल देशके हरिदर्शन जिय जान ॥ ७३३ ॥चारों भ्रात चारि दिशि जीतो भारत कही बखान।ठौर ठौरके नृप सब आये लै उपहार प्रमान॥७३४॥ बडो यज्ञ राजसूय रचायो जुरे विप्र बहु भारी। महाभाग्य राजा जु युधिष्ठिर जहँ माधव अधि-कारी॥ ७३५॥ सबहिन कहचो प्रथम पूजा अब कहो कौनकी कीजे।सबमें बडो कौन भूपति है जाहि अर्चना दीजै॥७३६॥तब सहदेव कह्यो सबहिनसों सुनो नृपति मन लाय। पूजा योग प्रकट पुरुषोत्तम कृष्णचंद्र यदुराय ॥ ७३७ ॥सबहिन कह्यो साधु यह वाणी सुर मुनि मनुज सराई। यक शिशुपाल दुष्ट नृप कहिये सुनतहि उठचो रिसाई ॥७३८॥ गोकुल नंद अहीर गोपगृह पय पियके यह जीयो।दधि जु चुराय खाय बृन्दावन चरित विषम बहु कीयो॥७३९॥ मातुलमारि बहुइ अब कीन्हें कहांलों करों बडाई। बृन्दावन गोवर्धन कुंजन लूटी नारि पराई ॥७४०॥वन वन गाय चरावत डोलत कांध कमरिया राजे। लकुटी हाथ गरे गुंजमाला अधर मुरलिका बाजे॥७४१॥ऐसे ख्याल करे इन बहु विधि कहत जु आवे लाज। वेद विदित सुर

काज बिगारे बहँकाये ब्रजराज ॥ ७४२ ॥ यज्ञ करत विप्रन मथुरामें यांचे भीख न दीन्हीं । अर्पण कियो नहीं देवनको पहिले इन मति कीन्हीं॥ ७४३ ॥ माखन चोरचोर गोपिनकोदूधजु दधि लै खायो । यमुना न्हात गोपकन्यनको लै पट कदम चढायो ॥ ७४४ ॥ कालीहरिकीआज्ञा-को लै यमुनामांझ बसायो । ताहि निकालदियो क्षणहीमें नेक सकोच न आयो॥ ७४५ ॥ यक पूतना पयपान करावन प्रेमसहित चलिआई । ताहि लगाय हृदय लपटानो प्राणजो लियो चुराई ॥ ७४६ ॥ जन्म होत इन मात तात को तबहीं बंधन दीन्हों । यादव जात भाज जित तितको अनत जाय सुख कीन्हों॥ ७४७ ॥ वेणु बजाय रास इन कीन्हों मधुपगोपकी नारी ।परनारीको दोष कछू चित इन नहिं कीन्ह विचारी ॥७४८॥ दूध दहीके भाजन चाटे नेकहु लाज न आई । माखन चोरि फोरि मथनीको पीवत छाँछ पराई ॥ ७४९ ॥ छाक खाय जूंठन ग्वालिनको कछु मनमें नहिं मान्यो । परदाराके संग आय निशि कुब्जासों सुख मान्यो ॥ ७५० ॥बहुत प्रीतिकरि गोपन जाने बहुविधि लाड लडायो । ताको यत्न कछू नहिं मान्यो मथुरामें चलिआयो ॥७५१॥ जरासन्ध इन बहुत बारही करि संग्राम पलायो । हमरे डर कर दोऊ भाई नगर समुद्र बसायो ॥ ७५२ ॥ कालयवनके आगेभाज्यो जाय गुफा गहिलीन्हीं । लातमारि मुचुकुन्दजगायोनेकुदया नहिं कीन्हीं ॥७५३॥ बातैं बहुतयाहिकी लंपट सभामांझनहिंकहिये ।जियमें समुझआपनेसंमुख मुखते चुपकरि रहिये ॥ ७५४ ॥ अतिशयक्रोध भये पांडवसुत औरनृपति हरिदास ।राखे बरज सबनको माधव नेक न भये उदास ॥७५५ ॥अतिही भई अवज्ञा जानी चक्र सुदर्शन मार्यो । करि निजभाव एक कुश तनमें क्षणक दुष्ट शिरभान्यो ॥७५६॥परम कृपालु दयालु देवकी-नन्दन पावननाम । दीन्हीं मुक्ति दया करिकै तब दियो लोक निजधाम॥७५७॥जयजयकार भयो वसुधापर राज युधिष्ठिर हरषे। अमृतस्नान कराय वेदविधि कनककुसुमशिरवरषे॥७५८॥ दीन्हीं सभा बनाय पांडुकी मय मायागत अंत। ताको देखभ्रमेदुर्योधनमहामोहमतिमंत॥७५९॥ जलमें थलमति थलमें जलमति भई नृपतिको जान। अन्ध पुत्र लखि हँसे पवनसुत सुन जियमें रिस मान ॥७६० गयो भवन अकुलाय बहुत जिय क्रोधवंत अभिमानी । ताही दिनते पांडु-पुत्रसों वैर विषमगति ठानी ॥७६१॥ सभा रची चौपरक्रीडा करि कपट कियो अति भारी । जीत युधिष्ठिर भई सब जानी तउ मनमें अधिकारी ॥ ७६२ ॥ युवती धरी जान दुष्टनने जब द्रौपदी बुलाई। हरिको सुमिरन करत पंथमें दुश्शासन गहिलाई ॥ ७६३ ॥ अहोनाथ व्रजनाथ नाथ निज यदुकुलके निज नाथ । गोकुलनाथ नाथ सब जनके मो पति तुम्हरे हाथ ॥७६४॥ ज्यों गजराज बचायो जलमें नेक विलंब न कीन्हीं । अपनो भक्त बचावनकारण विष अमृत करि दीन्हीं ॥७६५॥ शबरी गीध और पशु पक्षी सबकी रक्षा कीनी । अबतो सहाय करो तुम मेरी हौं पांवर मतिहीनी ॥ ७६६ ॥ चौपर खेलत भवन आपने हरि द्वारकामंझार। पासे डार परम आतुर सों कीन्हें अनत उचार ॥७६७॥ चीर बढाय दियो बहु तेहिक्षण ऐंचत पार न पायो । भीष्म द्रोण अरु कर्ण युधिष्ठिर सब विस्मय मन लायो ॥७६८॥रहेउ दुष्ट पचि हार दुशासन कछू न कला चलाई। बैठो आय सभामें पाछे बार बार पछिताई ॥७६९॥ फिर द्रौपदी भवनमें आई श्रीहरि लज्जा राखी । वेद पुराण तन्त्र भारतमें कही बहुत विधि भाखी ॥ ॥७७०॥ पुनि वनवास दियो पांडवसुत हरि द्वारकामें जानी । अक्षय पात्र दिवायो रविपै बडे भक्त सुखदानी ॥७७१॥ दुर्वासा शापनको आये तिनकी कछु न चलाई । अक्षय कियो कमल-

दल लोचन भक्तन भये सहाई ॥७७२॥ पांडव कुलके सहाय भये हरि जहँ तहँ संगहि डोले। दुर्योधनसों कह्यो दूत है भक्त पक्ष दृढ बोले॥ ७७३ ॥पांच गांव पाण्डवको दीजै सुनो नृपति मम बात। और राज सब तुमही करिये निपट जगत विख्यात ॥ ७७४ ॥ प्राची और प्रतीचि उदीची और अवाची मान। इन्द्रप्रस्थ बीचमें दीजै और राज तुव जान॥७७५॥सुनिकै क्रोध भयो दुर्योधन सब पाण्डवको राज।तुमरो कुलसबनाश होयगो कहिजो चले ब्रजराज॥७७६॥ बहुत दुःख दीन्हों पाण्डवको अबलों मैं सहि लीन्हों। लाख भवन बैठार दुष्टने भोजनमें विष दीन्हों॥७७७॥ वन वन फिरे अर्क तूलन ज्यौं वास विराटहि कीन्हों।अन्तहि गुप्त रहेतापुरमें भेद काहु नहिं दीन्हों॥७७८॥जुरे नृपति अक्षौन अठारह भयो युद्धअतिभारी।रथहांकत गोविंदअर्जुन-कोदीन्हशस्त्र सबडारी ॥७७९॥करीप्रतिज्ञाकहेउभीष्मसुख पुनि पुनि देव मनाऊं।जोतुम्हरेकर शर न गहाऊं गंगासुत न कहाऊं॥७८०॥चढे प्रबल दल दोऊ ओरके बिच अर्जुन रथ ठाढो।इत पारथ गांगेय बली उत जुरो युद्ध अति गाढो॥ ७८१ ॥दशदिन लरे बली गंगासुत श्याम प्रतिज्ञा जानी।सत्यवचन हरि कियो भक्तकोनिगम झूठकर बानी ॥ ७८२ ॥धरि रथचक्र श्यामनिज करमें जबहि भीष्मपर डारो। शीतल भई चक्रकी ज्वाला जब शिर तिलक निहारो ॥७८३॥ धन्य धन्य कहि परे आय पग गुणनिधान गांगेव। तब हरि कहेउ विपुल बल तुम्हरो जीति-लिये सब देव ॥७८४॥तब उन कहेउ चरण आपनमें राख्यो निशि दिन ध्यान। मोरि प्रतिज्ञा तुम राखी है मेटि वेदकी कान ॥७८५॥ डार शस्त्र शरशय्या सोये हरि चरणन चित लायो। उत्तर दिशि रवि जान देह तजि वहां परमपद पायो ॥ ७८६॥ नृपति युधिष्ठिर राजतिलक दै मारि दुष्टकी भीर। द्रोण कर्ण अरु शल्य मुक्तकरि मेटी जगकी पीर॥७८७॥गोविंदआय द्वारका निज गृह अति आन्द बढायो। घर घर मंगल महा कुलाहल यदुकुल होन बधायो ॥ ॥७८८॥ शल्य नृपति तपकिय पंचानन तापै यह वर पायो। दियो बनाय नगर गोपुरमें काहु न जात लिवायो॥७८९॥ आय द्वारका शोर कियो उन हरि हस्तिनापुर जाने। प्रद्युमन लरे सप्त-दश दोदिन रंच हार नहिं माने ॥७९०॥ हरि अपसगुन जानि हस्तिनपुर बैठ तुरत रथ धाये। बहुत देशको पावन करिकरि सांझ द्वारका आये॥७९१॥ कीन्हों युद्ध आय शालवसों उन बहु माया कीन्हीं। जलमें थल थलमें जल देख्यो श्याम दूर करदीन्हीं॥७९२॥माया दूर करी नँद-नन्दन चक्र दियो शिरडार। क्षणहीं मांझ दुष्ट संहारो भुवको भार उतार ॥७९३॥ जयजयकार करत देवांगन बरषत कुसुम अपार। कियो प्रवेश द्वारका मोहन घर घर मंगलचार ॥ ७९४ ॥ राजसूय करवाय श्यामघन जरासंध मरवायो। दन्तवक्र महिपाल महाबल विदुरथप्राण नशायो ॥ ७९५॥ बालक मृतक देवकी मांगे सो छिनमें हरिलाये। दीन्हों दरश भक्त नृपबलिको तनुके ताप नशाये ॥ ७९६॥ बालक आय देवकी जाने अस्तन पान कराय । हरिको शेषपान करिके वे हरिके पद पहुँचाये ॥७९७॥ एकदिना यदुनाथ संग सब विप्रमण्डली लीन्हें। मिथिला चले जनकराजापै दरश कृपा करि दीन्हें ॥ ७९८ ॥ तहां बसत श्रुतिदेव महामुनि सुनि दर्शनको धायो। तब उन कहेउ चलो मेरे गृह हरि स्वीकार करायो ॥ ७९९ ॥ नृपति कह्यउ मेरे गृह चलिये करो कृतारथ मोय। ताहूके हरि आपु पधारे प्रकट धरे वपु दोय॥ ८०० ॥ देख चरित्र विनोद लालके विस्मित भे द्विजराय। अद्भुत केलि कृपा करि कीन्हीं द्विजको ज्ञान दृढाय ॥ ८०१ ॥ बहुत दिवसलों कृपा करी हरि जनकराय सुख दीन्हों। बहुरि पधारे पुरी

द्वारका यदुकुलमें सुख कीन्हों ॥ ८०२ ॥ दहिन सुभद्रा व्याह विचारो हरि अर्जुन चित
धारो । श्रीबलदेव कह्यउ दुर्योधन नीको दुलह विचारो ॥ ८०३ ॥ हरिको भेद पायके
अर्जुन धरि दंडीको रूप । भिक्षाको निजभवन बुलायो श्रीबलभद्र अनूप ॥ ८०४ ॥ नयनन
मिलत लई कर गहिके फाल्गुन चले पराय। सुनि बलदेव क्रोध अति बाढयउ कृष्ण शान्त
कियो आय ॥ ८०५ ॥फेर बुलाय व्याह करिदीन्हों विजय बहुत सुख पायो । फिर आये
हस्तिनपुर पारथ मघवाप्रस्थ बसायो ॥ ८०६ ॥ एकदिना यक विप्र भक्तमति हरिको सखा
कहावे । अतिदारिद्र दुखित जब जाने तब पत्नी समुझावे ॥ ८०७ ॥ जाहु नाह तुम पुरी
द्वारका कृष्णचन्द्रके पास । जिनके दरश परस करुणाते दुख दरिद्रको नास ॥८०८॥
तंदुल मांग दोंचिक लाई सो दीन्हों उपहार । फाटे बसन बांधिके द्विजवर अति दुर्बल तन
हार ॥ ८०९ ॥आये देव द्वरका हरिपै जाय चरण शिर नायो । हरि भेंटे भ्राताकी नाईं
पूजा विविध करायो ॥ ८१० ॥ अपने मुनि आसन बैठारे हँसि २ बूझत बात । कहो
विप्र हम गये बन्तिका गुरुके सदन विख्यात ॥ ८११ ॥वनमें वह वर्षा जब आई ताकी सुधि
करलेहो । गुरु आय आपुनको बोलन मंत्र थकायो मेहो ॥ ८१२ ॥ तादिनकी यह कथा
तुम्हारी बिसरत नाहिंन मोहि ।कीधौं कौन कार्यको आये सो पूछत हौं तोहिं॥ ८१३ ॥
कछु हमको उपहार पठायो भाभी तुम्हरे साथ । फाटे बसन सकुच अति लागत काढत नाहिंन
हाथ ॥ ८१४ ॥हरि अपने कर छोरि बसनको तंदुल लीन्हे हाथ । मुट्ठी एक प्रथम जब
लीन्हें खान लगे यदुनाथ ॥ ८१५ ॥द्वितिय मुष्टिका लेनलगे जब कमला गहिलियो हात ।
दियो द्विजहि मघवाको वैभव बाढयो यश विख्यात ॥ ८१६ ॥ओर भये उठि चले भवनको
हरि कछु इनहिं न दीन्हों । ताको हर्ष शोक निज मनमें मुनिवर कछू न कीन्हों ॥८१७॥
भली भई हरिदरशन पायो तनुको तापनसायो । दुर्बलविप्रकुचैल सुदामा ताको कंठ लगायो ॥
॥ ८१८ ॥ धन्य धन्य प्रभुकी प्रभुताई मोपै वर्णि न जाई । शेष सहसमुख पार न पावत
निगम नेति कहि गाई॥ ८१९॥ऐसे कहतगये अपने पुर सबहिं विलक्षण देख्यो । मणिमय महल
फटिक गोपुर लखि कनकभूमि अवरेख्यो ॥ ८२० ॥ पत्नी मिली परमसुख पायो कृष्णचन्द्र
आराधे । गथदाको सुख भयो सुदामहिं तऊ कछुक नहिं बाधे ॥ ८२१ ॥ नौलख धेनु दई
राजानृग बहुतहि दान देवायो । कृष्णभक्तिबिन विप्रशापते गिरगिटकी गति पायो ॥ ८२२ ॥
ताको चरण परशिके माधव दुःखित शाप छुटायो । कृपा करी यदुनाथ महानिधि जिन वैकुंठ
पठायो ॥८२३ ॥ बलदाऊ ब्रजमंडल आये ब्रजवासिनको भेंटे । बहुत दिननके विरहताप दुख
मिलत क्षणकमें मेटे ॥ ८२४ ॥ सघन निकुंज सुभग वृन्दावन कीन्हें विविध विहार । गोपिन
संग [illegible] खेल बाढयो श्रम सुकुमार ॥८२५ ॥ कालिन्दीको निकट बुलायो जलक्रीडाके
काज । लियो आकरषि एक क्षणमें हरि अति समरथ यदुराज ॥ ८२६ ॥ विविध भांति क्रीडा
हरि कीन्हीं ब्रजवासिनसुख दीन्हों। द्वादश वन अवलोकमधुपुरीतीरथको चित कीन्हों ॥ ८२७॥
शुभ कुरुक्षेत्र अयोध्या मिथिला प्राग त्रिवेनी न्हाये । पुनि शतरुद्र और चन्द्रभागा गंगाव्यास
नहाये ॥ ८२८ ॥निमिषारन्य आये बलज् जब सकल विप्र शिरनायो । करी अवज्ञा कथा कहत
तिन अपने लोक पठायो ॥ ८२९ ॥ तब द्विज कहेउ कथा कहिके यह हमको सुख उपजायो ।
[illegible] और कथा सुनेंगे बलदाऊ समझायो ॥ ८३० ॥ इनको पुत्र होय जो बालक ताको वेग

बिठावो । धरेउ हाथ शिर दीन्हीं विद्या नित प्रति कथा सुनावो ॥८३१॥ पुनि द्विज विनती करि यह भाष्यो असुर एक इहँ आवे । यज्ञ करतमें जानपरत वह आय रुधिर वर्षावे ॥८३२॥ यह सुनिके बलदेव गुसाईं हल मूसल लियो हाथ । लियो पकर हल नभ मण्डलते कर मूसल-सों घात॥८३३॥जयजयकार भयो सुरलोकन देव दुंदुभी बाजै ।अस्तुति करत बहुत पूजा द्विज अति आनंद समाजै ॥८३४॥ बिनती करी बहुत बिप्रनने राम बिप्र तुम मारेव। तीरथ न्हाय शुद्ध तनको करि हरि द्विजवचन बिचारेउ ॥ ८३५ ॥ वर्ष दिवसमें अरसठ तीरथ । न्हान करत घर आये।आय प्रभासु विप्र बहुजनको बहुतहि दान देवाये८३६॥पुनि मिथिला यक दिवस पधारे हरि बलदेव गुसांई । गदायुद्ध दुर्योधन सिखयो नानाभेद बताई ॥८३७॥ पुनि द्वारका पधारे निजपुर अतिआनँद सुखबाढयो। प्रगट ब्रह्म नित बसत द्वारका कलह भूमिको काढयो॥ ॥८३८॥ दश दश पुत्र एक यक कन्या हरि सबके उपजाई ।सुतके सुत नाती पतिनीकी महिमा कहिय न जाई ॥८३९॥ बडे बली प्रद्युम्न कहावत कृष्णअंश अवतार । तिन सब जग जीत्यो तिहुँ लोकन बाढयो सुयश अपार ॥८४०॥अश्वमेध करवाय युधिष्ठिर कुलको दोष मिटायो। करि दिग्विजय विजयको जगमें भक्त पक्ष करवायो ॥ ८४१ ॥ नानाविधि कीन्हीं हरि क्रीडा यदुकुल शाप दिवायो ।जो ज्यहि लोक छोंडिके आयो ताको तहँ पहुँचायो ॥८४२॥ ऊधोको कहि ज्ञान आपनो निगमन तत्त्व बतायो । कही कथा दत्तात्रय मुनिकी गुरु चौबीस करायो ॥ ॥८४३॥ कहि आचार भक्तविधिभाषी हंसधर्म प्रकटायो। कही विभूति सिद्धि साधनता आश्रम चार कहायो ॥८४४॥सांख्यतत्त्व गीताहरि कीन्हीं गुणके भेद करायो। ऐलगीत पुनि भिक्षुगीत कहि पूजाविधि दरशायो ॥ ८४५॥ सदा बसत हरि पुरी द्वारका बहु विधि भोग विलासी। आदि अनन्त अघट्ट अनूपम हैं अविगत अविनाशी॥ ८४६ ॥ एकदिना यक विप्र द्वारका बसत सुखद निजधाम। वेदरूप तपरूप महामुनि कृष्ण विप्र यह नाम ॥ ८४७॥ बालक दश जु भये वाके जब भूमा लिये मँगाय । चितमें यह अनुरक्तविचारत हरिदर्शनको चाय ॥८४८॥ दश सुत भयो जानिकै ब्राह्मण करि पुकार हरिपास। तब हरि कहेउ देवकी गति यह करत काल जग नाम॥ ८४९ ॥ तव अर्जुन यह कहेउ मत्त है नृप नाहिंन भुवभार ।मैं अर्जुन गांडिवधनु जाको काल लरों क्षणमार ॥ ८५० ॥ जब सुत भयो कहेउ ब्राह्मणते अर्जुन गये गृह ताइ । शर-पंजर रोप्यो चहुँ दिशिते जहां पवन नहिंजाइ॥ ८५१ ॥तब सुत गयो देहको लैके दरशन भयो न ताय अतिहीक्रोध भयो ब्राह्मणको बहुत बक्यो बिलखाय ॥ ८५२॥ तब अर्जुन ढूँढ़नको निकसे तीनलोक फिरि आयो । कहूं न पायो सुत ब्राह्मणके तब मनमें अकुलायो ॥ ८५३॥ कियो विचार प्रवेश अग्निको हरि आये समुझायो । लै निज संग चले पश्चिमको लोकालोक सोहायो ॥ ८५४ ॥कनकभूमि अरु धामसदनको देखे परम सुहायो । बहुत निबिड तम देखचक्र धरि धरेउ हाथ समुझायो ॥ ८५५॥ महाकालपुर तुरत पधारे हरि भूमाके पास।तुल्य अग्निवर अगिन समानी भूमा तेज प्रकाश ॥ ८५६ ॥कृष्ण तेजको देख सकल सुर तन मन भयोहुलास। अतिहीमन्द तेजभूमाकोहरिकेतेजप्रकाश ॥८५७॥ अतिआनन्दपरस्पर बाढ्यो जब उनविनती कीन्हीं । भलीभई भुवभार उतारेउ मेरी फिरि सुधि लीन्हीं ॥ ८५८ ॥ लै दशपुत्र द्वारका आये दीन्हें विप्र बुलाय। कीन्हीं दुःख दूरि अर्जुनको महिमा प्रकट दिखाय॥ ८५९ ॥ कीन्हीं केलि बहुत बल मोहन भुवको भार उतारेउ । प्रकट ब्रह्मगजत द्वागवति वेद पुराण विचारेउ॥ ८६०॥

एक दिना रुक्मिणि सों माधव करत बात सुखदाई । सुनु रुक्मिणि राधिका बिना मोहिं पल सम कल्प बिहाई ॥८६१॥कनकभूमि रचि खचित द्वारका कुंजनकी छबिनाहीं । गोवर्धन पर्वत-के ऊपर बोलत मोर सुहाहीं ॥ ८६२ ॥यमुनातीर भीर खग मृगकी मोहिं नितप्रति सुधि आवै। वृन्दा विपिन राधिका मन्दिर नितप्रति लाड़ लड़ावै ८६३ ॥ राति दिवस रस स्रवत सुधामें कामधेनु दरशाई । लूट लूट दधिखात सखन सँग तैसो स्वाद न पाई ॥८६४॥ षटरस भोजन नानाविधिके करत महलके माहीं।छाकेखात ग्वालमंडलमें वैसो तो सुखनाहीं॥८६५॥जन्मभूमि देखनके कारण मेरो मन ललचावै।धौरी धेनु बुलावन कारणमधुरे बेनुबजावै॥८६६॥रासविलास विविध मैं कीन्हें संग राधिका लीन्हें । कीन्हें केलि विविध गोपिनसों सबहिनको सुख दीन्हें॥ ॥८६७॥ बल मोहन फिर ब्रजहि पधारे ऊधोको सँग लीने।दीन्हों बास चरणरजगोपिनगुल्मलता रस भीने ॥८६८ ॥सदा विलासकरत गोकुलमेंधनधनयशुमतिमात।ज्यों दीपकते दीपक कीन्हों भये द्वारकानाथ ॥ ८६९॥नित प्रति मंगल रहत महरके नितप्रति बजत बधाई । नितप्रति मंगल कलश धरावत नित प्रति वेद पढाई ॥ ८७० ॥श्रीवृषभानु रायके आँगन नितप्रति बजतबधाई। नितप्रति मिलसुनिराजमण्डलीमंगलघोपकराई॥८७१॥ बालकेलिक्रीडत ब्रजआँगनयशुमतिको सुख दीन्हों।तरुण रूप धरि गोपिनके हित,सबको चित हरि लीन्हों॥८७२॥चन्द्रावली गोपकी कन्या चन्द्रभागगृह जाई । भई किशोर श्यामने देखी अद्भुत प्रीति बढाई ॥८७३॥ तब ललिता पूछ्यो नीके कर केहि विधि श्याम मिलाई । अब न परत मोकूं कल क्षणहूं जियमेंअतिअकुलाई ॥८७४ ॥ तब उन कहेउ शीशगोरसले बेचनकेमिस आओ । गोवर्धनपरगोबिंद खेलत निरख परम सुख पाओ ॥ ८७५ ॥ करि शृंगार चली चन्द्रावलि नख शिख भूषण साजे । ज्यों करनी गजराजविलोकत ढूँढतहैअतिगाजे ॥ ८७६ ॥ गोवर्द्धनके शिखर चारुपर सखावृन्दसँगलीन्हें। गोपिन देख टेर हरि कीन्हों दान लेन मनकीन्हें ॥ ८७७ ॥ राखो घेरि सकलयुवतिनकोसखा वृन्दसों भाख्यो।आपु जाय पकरयो कोमल कर दधि अमृत रस चाख्यो ॥ ८७८ ॥ देहो दधि-को दान नागरी गहर न लावो चित्त । तुमरे काज नित्य हम ठाढे अरपे अपनो बित्त॥८७९॥ वृन्दावनमों धेनु चरावत मांगत गोरस दान । नाना खेल सखनसँग खेलत तुम पायो नृपयान ॥ ८८० ॥ अरी ग्वालि मदमत्त वचनकी बोलतवचनविचार । अचल राज गोबर्धनमेरोवृन्दावन मंझार ॥ ८८१ ॥ जो तुम राजा आप कहावत वृन्दावनकीठौर । लूटलूट दधिखात सबनको सब चोरनके मौर ॥ ८८२ ॥ चोरी करत भक्तके चितकी अरु दधि अरु नवनीत । सखा वृन्द सब मीत हमारे बडीराज रजनीत ॥ ८८३ ॥ जो तुम राजनीत सब जानत बहुत बनावत बात ।जब तुम जन्म लियो मथुरामें आये आधीगत ॥ ८८४ ॥ सुनरी ग्वालि गँवार बातकी बोलत बिना विचार । कमल कोषमें बसत मधुप ज्यों त्यों भुव रहे मुरार ॥ ८८५ ॥दूध दहीके नात बनावत बातें बहुत गोपाल । गढि गढि छोलत कहा रावरे लूटतहौब्रजबाल ॥ ८८६ ॥ जो प्रभु देह धरे नहिं भुवपर दीन अधमको तारे ॥ बढे असुर पुहुमीपर खल अति तिन्हैंतुरतको मारे ॥ ८८७॥ योग युक्तिकर ध्यान लगावत योगसिद्ध कर ज्ञान।नेति २करि निगम बतावत ताहि होत निर-मान॥ ८८८॥ योगसांख्य अरु ज्ञान भामिनी माया हृदय विनास ।प्रेमभक्त मेरोयशगावे तेहि घट मेरो वास ॥ ८८९ ॥ मुखऊपर कहकहो लायके अन उत्तरको खोर । जब यशुमतिनेऊखल बाँध हमही दीन्हें छोर ॥ ८९० ॥बालकनिपट अयान ग्वालिनीकछु सुधि जानिन जाय। लैकर

चीर कदमपर बैठ्यो सबहिन हाहाखाय ॥८९१॥ बहुत भयेहो ढीठ साँवरे मुखपर गारीदेत। तुम्हरे डर हम डरपत नाहिंन कहा कँपावत बेत॥ ८९२॥श्याम सखनसों कहेउ टेरदे घेरो सब अब जाय। बहुत ढीठ यह भई ग्वालिनी मटुकी लेहु छिड़ाय॥८९३॥ जाय श्याम कंकणकर लीनो गहि हारावलि तोर। लूट लूट दधि खात सांवरो जहां सांकरी खोर॥ ८९४॥इन्द्रा वृन्दा और राधिका चन्द्रावलि सुकुमारि। विमल विमल दधि खात सबनको करत बहुत मनुहारि॥ ८९५॥ गहि बहियां ले चले श्याम घन सघन कुंजके द्वार । पहिल सखी सबै रचिराखी कुसुमन सेज सँवार॥ ८९६॥ नाना केलि सखिन सँग बिहरत नागर नंदकुमार । आलिंगन चुम्बन परिरंभन भेंटत भरि अँकवार ॥ ८९७॥ श्रम-जल बिंदु इन्दु आनन पर राजत अति सुकुमार॥ मानो विविध भाव मिल बिलसत मगन सिंधुरससार ॥८९८॥ कंजरंध्र अवलोकि सहचरी अपनो तन मन वारे। निरख निरख दंपति नेत्रन सुख तोर तोर तृनडारे ॥ ८९९॥ यह अवलोकि देव गंध्रब मुनि बरसत कुसुम अपार। जय जय करत बार नीराजन बोलत जय जयकार॥ ९००॥ गोबर्द्धनकी सघन कंदरा कीनों रैनि निवास। भोर भये निजधाम चले दोउ अतिआनन्द विलास॥ ९०१॥ नन्दधामहरि बहुरि पधारे पौढ़रहे निज शैन। यशुमतिमात जगावत भोरहिं जागे अम्बुजनैन॥ ९०२॥ करी मुखारी और कलेऊ कीनो जल असनान।करि शृंगार चले दोउ भइया खेलनको सुखदान॥ ॥ ९०३॥कहुँ खेलत मिल ग्वाल मंडली आँखमीचनीखेल। चढ़ा चढीकोखेल सखनमें खेलत हैं रसरेल॥ ९०४॥कहूँ आमरू डार विटपकी खेलत सखन मँझार। कूद कूद धरणी सब धावत दाँवदेत किलकार॥९०५॥ भोजन समय जान यशुमतिने लीने दुहुँन बुलाय ॥ बैठ आय यशुमति कि गोदमें आनँद उर न समाय॥९०६॥ बहु बिधिके पकवान बनाये परसत यशुमति माय। आरोगित बलमोहन दोऊ सुख देखत ब्रजराज ॥ ९०७॥ कबहूं कवर खात मिरचनकी लागी दशन टकोर॥ भाज चले तब गहे रोहिणी लाई बहुत निहोर॥९०८॥ भोजनकरि नाना विधि दोऊलीनों मठासलोनो। अँचवन करि ब्रजराज पधारे बल मोहन सुख मानो॥९०९॥ बीरी खाय चले खेलनको बीच मिली ब्रजनार। लै चलि पकर बाँह राधापै सघन कुंजके द्वार ॥ ९१०॥ राधासों मिलि अतिसुख उपज्यो उन पूछी इक बात। कहो जु आज रैनकहँसोये हमदेखे तुम जात॥९११॥ तब हरि कहेउ सुनो मृगनैनी गाय गई यक ठौर। ताको लेन गयो गोवर्धन सोय रहेउँ तहि ठौर ॥९१२॥ कंद मूल फल दीने गोधन सो निशिकोमैं खायो। भोर भये उठि तेरे आयो चरण कमल परसायो॥९१३॥ निज प्रतिबिंब विलोकि राधिका हरिनख-मंडलमाहँ। द्वितियरूप देखे अबलाको मान बढ्योतनछाहँ॥ ९१४॥ चली रिसाय कुंजमृग-नयनी जहँ अति करत गुंजार। बैठी जाय एकांत भवनमें जहां मानगृह चार॥९१५॥ नन्द-कुँवर विरहन राधाके विरहभये भरिपूर। बैठे जाय एकांत कुंजमें सखा कियो सब दूर॥९१६॥ ललिता बोल कहीमृदुवाणी कृष्ण विमल दलनैन। बिन राधा मोहिं कल न परतहै कहत मधुर मृदु बैन ॥९१७॥ वेगजाय परि पायँ राधिका बिनती करो सुनाय। दरशन देव सकलदुख मेटो तुम बिन रहेउ न जाय ॥९१८॥ तुमबिन खान पान नहिं भावत गोचारनशृंगार।रैननींद नहिं परत निरंतर संभाषण व्यवहार॥९१९॥ करिदंडवत चली ललिता जो गईराधिकागेह। पायँन पर पर बहुत विनय कर सफल करनको नेह ॥ ९२०॥ बेगि चलो वृषभानुनन्दनी

बोले नन्दकुमार। तुम बिन पल छिन कल न परत है भोजन सुख व्यवहार ॥ ९२१ ॥ नव निकुंजमें मिलो श्यामसों भेंटो भरि अँकवार। कुसुम सेजपर करो केलि प्रिय गिरधर परम उदार ॥ ९२२ ॥ तो बिन पियहि कछू नहिं भावे तोसों पिय आधीन। तो बिन श्याम रहत हैं ऐसे जैसे जल बिन मीन ॥ ९२३ ॥ कहासुभाव परचो सखि तेरो यह बिनवतहौं तोह। मान करत गिरवरधर पियसों मानतनाहिंन मोह ॥ ९२४॥करि शृंगार सकल ब्रज सुन्दरि नीलाम्बर तनुसाज। रैन अँधेरी कछू न दीखत नूपुर ध्वनि जिन बाज ॥ ९२५ ॥ कुवलय दल कुसुमन शय्या रचि पंथ निहारत तोर। सपन जाग अरु शयन सुमृत तुव वचन सत्यहै मोर॥ ९२६॥ सित अरु पीत यूथिका वेनी गूंथो विविध बनाय।रचो भाल निज तिलक मनोहर अंजन नयन सोहाय ॥ ९२७ ॥ तू छबि सिंधु विहर ब्रजनायक क्षुद्र नदी नहिं भावै। जबते नाम सुन्यो श्रवणन तुव रैनि नींद नहिं आवै॥९२८॥ हरि राधा राधा रटत जपत मंत्र दुरदाम।बिरह विराग महायोगी ज्यों बीतत हैं सब याम ॥ ९२९ ॥कबहुँक किसलय सेज सँवारत तेरेही हित लाल। कबहुँक अपने हाथ सँवारत गूंथत कुसुमन माल ॥ ९३० ॥तुव विन बटसंकेत सदन वन देखत लगत उदास। विरह अग्नि चहुँ दिशिमें धावत फूले:दिखत पलास ॥ ९३१ ॥ सारस हंस मोर पारावत बोलत अमृतबान। बैठरहे दुरसदन सघन वन ध्वनि नहिं सुनियत कान ॥ ९३२ ॥ कालिन्दी तट विमल कदमतर करत वदन तुव ध्यान। सुहृदय सखा त्यागि मनमोहन करत मधुर तुव गान ॥९३३ ॥ गुंजत श्रवणन मधुप सुनत हैं तुव श्रुति की सुधि आवै। कंचन बरन जात तेरो वपु पीताम्बर पहिरावै ॥ ९३४ ॥ सुनत कोकिला शब्द मधुरध्वनि कमल नयन अकुलात। तेरे बोल करत सुधि जियमें बिरह मगन ह्वैजात ॥९३५॥ तुव नासापुट गात मुक्त फल अधर बिंव उनमान। गुंजाफल सवके शिर धारत प्रकटी मीन प्रमान ॥ ९३६ ॥ सिंधु सुतासुत तारिपु गमनी सुन मेरी तू बात।कामपिता बाहन भखको तनु क्यों न धरत निज गात॥ ॥ ९३७॥ अलि वाहन पति वाहन रिपुकी तपनवढ़ी तनुभारी। शैल सुतासुत तासुत अँगना सोतैं सबै विसारी ॥९३८ ॥ भृंग यूथ चतुरानन तनया ब्रह्मनाद सुरसंग। जलसुत वाहनसों जन धारत विषम लगत विषअंग ॥ ९३९ ॥ चतुरानन सुत तासुत वा सुत उदित होन अब आयो। मन्मथ मात तात सुत अथयो सो तो वृथागँवायो॥९४०॥पंकज उर पंकजजिन केरे तेरो अटल सुहाग। सुरपति वाहन तासुत शिरपर मांग भरो अनुराग॥ ९४१ ॥ कमल पुत्र तासुत कर गजत मोहरि निज कर लीन्हें। सप्तस्वरन उपजाय बजावत रटन राधिका लीन्हें ॥ ९४२ ॥सुत प्रह्लाद तासुत ता पित भ्राता वृथा गँवायो ॥ संज्ञा सुत वपु सदृश वसन तन सो तन लागत छायो ॥ ९४३॥ सारँग ऊपर सारँग गजत सारँग शब्द सुनावै। सारँगदेख सुने मृदुनैनी सारँग सुख दरशावै ॥९४४ ॥ सारँग रिपुकी वदन ओट दे कह बैठी है मौन। ब्रह्म सुता सारँगके धोखे करत सकलब्रज गौन ॥९४५॥ सारँगसुता देखि सारँगको तेरो अटल सुहाग। सारँग पति ता पति ता वाहन कीरत रट अनुराग ॥ ९४६ ॥ दधिसुत वाहन सुभग नासिका दधि-सुत वाहन देख्यो। दधिसुत वाहन वचन सुनत तुव अंग अंग अवरेख्यो ॥ ९४७ ॥ शशिको भ्रात कहत ता वाहन कुन्द कुसुम ललचात। खंजन सदृश देख तुव अँखियां तन मनमें अकु-लात ॥ ९४८ ॥मारुत सुरपति रिपु ता पतनी ता सुत वाहन वात। श्रवण सुनत अकुलात साँवरो कछुक कहीनहिं जात ॥ ९४९ ॥ चतुरानन सुत ता सुत पत्नी ता सुतको जो दास।

ता सुत बाहन पुत्र अंगधरि जलसुत करों प्रकास ॥ ९५० ॥ श्रीबलदेवराम जो कहिये तामें भान मिलाय। ताकी सुता कहत चतुरानन निगम सदा गुणगाय ॥ ९५१ ॥ सिंधु सुता तव भाग्य विलोकत मनमें रही लजाय। काम पिता माता गुरु ता वपु युवति कोटदरशाय ॥९५२॥सातों रासमेल द्वादशमें ऐसे बीतत याम। द्रितिय रासमें मिलत सप्तमी सो जानतनिज धाम॥९५३॥ शैलसुता धरि ता रिपु बांधत अंगअंगपिय आज। कोटि यत्नकर सींचततोऊमिटतनहीं ब्रजराज ॥ ९५४ ॥ बायस अजा शब्द मन मोहन रटत रहत दिन रैन। तारापतिके रिपु परठाढे देखतहैं हरिनैन ॥९५५॥ गंगासुत रिपु रिपुशिषमेरीसुनत नहीं सखिकाह। नारायणसुत ता सुत ता सुत लगत विषम विष ताह ॥९५६॥ जलसुत बाहन देख वदन तुव ब्रह्मसुता अकुलानी। मंगल मात तासु पति बाहन राजत सदृश भुलानी ॥ ९५७ ॥ दक्षप्रजापतिकी तनयापति ता सुत नारगई। सिंधुसुता सुत बाहनकी गति देखत विषम भई ॥ ९५८ ॥अग्नितात तेहि तात अंगना त्यों उनमें तू राखी। बंधु कुसुम द्रुम ता रिपुको पति सारँग रिपुकर भाखी ॥ ९५९ ॥ पति पाताल लग्न तनधारन सो सुख भुजा विचारी॥प्रथममथत जलनिधि जो प्रकट्योसोलागत सब नारी ॥९६०॥ बंधु कुमुद पति पिता सुता जो तुव यश मधुरे गावै। ब्रह्मसुता सुत पदरज परसत सारँग सुता देखावै ॥ ९६१ ॥ इन्द्र सुतापति भुजा लगन लखि जलसुत हृदय लगावै। इन्द्र सुता तनया पतिको सुत ताके गुनै न पावै ॥ ९६२ ॥ धरत कमलमें कमल कमल कर मधुर वचन उचार। कमलाबाहन गहत कमलसों कमलन करत विचार॥९६३॥ कालिन्दी पतिनैन तासु सुत लागतहैं सबलोग। इन्द्र मात तेहि तात सो सरधत प्रकट देखियत भोग ॥ ९६४ ॥ अम्बुज मात तात पति ता रिपु ता पति काम बिगारे। ताते सुन तू भाननन्दनी मेरो वचन विचारे ॥ ९६५ ॥ तीस मान द्वै मास सकल ऋतु सिंधुसुता सन जान। भूषन अंग लसत गुंजावलि और न कछू समान ॥९६६॥ इति दृष्टकूट सूचनिका सम्पूर्ण ॥कबहुँक सेज रचत बेंदी कर हृदय होम घृत नैन। विप्र भोज बालल तुव देखियत अंगकृस नहिं चैन॥९६७॥ अब तू बेग विचार वचन मम सुनु वृषभानु कुमारि।मिलिहौ वेग कमलदल लोचन सुनु मेरी मनु हारि॥९६८॥गौर वरण ह्वैजात सांवरो ध्यान करत तुव अंग।पुनि ललिता हरिके ढिग आई बैठ सांवल रंग ॥९६९॥ वेग चलो तुम श्याम मनोहर आपुकाज महँ काज ।लेहु मनाय प्राणप्यारीको प्रकट्यो कुंज समाज ॥ ॥ ९७० ॥ ऋतु वसंत अब आय देखियत फूले कुसुम सुरंग। मानो मदन वसंत मिलि दोउ खेलतहैं रसरंग ॥९७१॥ वेगि चलो अब पिया मनावन नेक विलम्ब न लाओ। मेरी कही बात नहिं मानत ताको ज्ञान दृढाओ ॥९७२ ॥ परी पांय अपराध क्षमावत सुनत मिलेगी धाय।सुनत वचन दूतिका बदनमें श्याम चले अकुलाय॥९७३॥जहँबैठी वृषभानु नंदनी तहँ आये धरि मौन। परेपाय हरि चरण परसकरि छिन अपराध सलोन॥९७४॥सुनि हरि वचन विलोकत शोभा मानग-यो सबछूट।मिले धाय अकुलाय श्यामघन प्रेम काम रस लूट॥९७५॥रच्यो शृंगार श्याम अपने कर नख शिख प्रिया बनायो।शीशफूल बेनी नकबेसर तिलकभाल करवायो ॥९७६॥युगताटंक चिबुक दशनावलि कर कंकण उरमाल। नूपुर पद कटि छुद्रघटिका सब शृंगार रसाल ॥ ९७७ ॥ सकल शृंगार करत वर्णनको कृपा यथामति मोर।होत विलम्ब मिलनके कारण ताते वर्णन थोर॥९७८॥ चले धाय नवकुंज दोउ मिलि किसलय सेज विराजे।परिरंभण सुख रास हास मृदु सुरत केलि सुख साजे॥९७९॥भना बंध विविध रस क्रीडा खेलत श्याम अपार। रस रस

तत्त्व भेद नहिं जानत दंपति अंग सँभार ॥ ९८० ॥ सुरत सरुद्र मगन दंपति रस झेलत अति सुख झेल । निरवधि रमन अपरमित अच्युत मनुज माय बहु खेल ॥ ९८१ ॥ नूपुर संचित किंकिनिकी ध्वनि सुनत मधुर किलकार । मदन सिंधु मधुमत्तमधुपगनफूलेकरतगुंजार॥९८२॥ मधुपयूथ मिलि सबन चन्द्रमा तडित लिये आकाश । खंजन मीनबजावत गावत निरतत सुख सुविलास ॥ ९८३ ॥ जलद समूह खसत उडुगण गण पै समुद्रके बीच । मकरकपोल बोल मृदु कोकिल अमृत सुधारस सींच ॥९८४॥ मोहन बेल शृंगार विटपसों उरझी आनँदवेल । कंचन बेल तमालहि लपटी रसिक रंग भरि रेल ॥ ९८५ ॥ युगल कमलसों मिलत कमल युग युगल कमल ले संग । पांच कमल मध्य युगल कमल लखि मनसाभई अपंग ॥ ९८६॥ किरणकदम्ब मंजुका पूरण सौरभ उडत अवेश । अगर धूप सौरभ नासा सुख बरषत परम सुदेश ॥ ९८७ ॥ कुंतद कुमुद बंधूक मिलत पुनि मीन देख ललचात । तापर चन्द्र देख संज्ञासुत तनमें बहुत डेरात ॥ ९८८ ॥ बरना भख करमें अवलोकत केश पास कृत बन्द । अधर समुद्र सदल जो सहसा ध्वनि उपजत सुखफन्द ॥ ९८९ ॥ मुदित मराल मिलत मधुकर-सों खंजन मिलत कुरंग । कीर कीर रणधीर मिलतसम रत रस लहरतरंग ॥ ९९० ॥ सुरत समुद्र कहत दम्पतिकै निरवधि रमन अपार । भयो शेष मनमूढ कहनको राधाकृष्ण विहार॥९९१॥ शोभा अमित अपार अखण्डित आप आतमाराम।पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम सब विधि पूरण-काम ॥ ९९२ ॥ आदि सनातन एक अनूपम अविगत अल्पअहार । ॐकारआदि वेद असुरहन निर्गुण सगुण अपार ॥ ९९३ ॥ चतुरानन पञ्चानन अरु पुन षटआनन सम जान । सहसानन बहुआनन गावत पार न पाय बखान ॥ ९९४ ॥ सघनकुंजमें अमितकेललखतनु सुगन्धकी रेल। मधुकर निकट आय पीवत रस सुखद सदारस झेल ॥ ९९५ ॥ मलिन भये रस मानसरोवर मुनि-जन मानसहंस। थकित विलोकि शारदा वर्णन करिबहुलप्रशंस ॥९९६॥ वृंदावननिजधामपरम रुचिवर्णन कियो बढाय। व्यास पुराण सघन कुञ्जनमें जबसनकादिकआय॥९९७॥ धीर समीर बहत त्यहि कानन बोलत मधुकर मोर। प्रीतम प्रियावदन अवलोकत उठि उठि मिलत चकोर ॥ ॥ ९९८ ॥ अमित एक उपमा अवलोकत जियमें परत विचार । नहिं प्रवेश अज शिव गणेश पुनि कितक बात संसार॥९९९ ॥सहस रूप बहुरूप रूप पुनि एकरूप पुनि दोय । कुमुद कली विकसित अम्बुज मिलि मधुकर भागी सोय ॥१०००॥नलिनपरागमेघमाधुरिसों मुकुलितअम्ब कदम्ब । मुनिमन मधुप सदा रस लोभित सेवत अज शिव अम्ब ॥१००१॥गुरु प्रसाद होत यह दरशन सरसठ बरष प्रवीन। शिवविधान तप करेउ बहुत दिन तऊ पार नहिं लीन ॥१००२॥सुख पर्य्यंक अंक ध्रुव देखियत कुसुम कन्द द्रुम छाये। मधुर मल्लिका कुसुमित कुञ्जन दम्पति लगत सोहाये ॥१००३॥ गोवर्द्धन गिरि रत्न सिंहासन दम्पति रस सुखमान। निबिड कुञ्ज जहँ कोउ न आवत रस बिलसतसुखखान॥ १००४ ॥निशा भोर कबहूं नहिं जानत प्रेम मत्त अनुराग। ललितादिक सींचत सुखनैनन जुर सहचरि बडभाग॥१००५॥ यह निकुञ्जको वर्णनकरिदे वेद रहे पचिहार। नेति नेति कर कहेउ सहस विधि तऊ न पायो पार ॥ १००६॥दरशन दियो कृपा करि मोहन वेग दियो वरदान। आगम कल्प रमण तुव ह्वैहै श्रीमुख कही बखान ॥१००७॥ सो श्रुतिरूप होय व्रजमण्डल कीनो रास बिहार। नवल कुञ्जमें अंश बाहु धरि कीन्हीं केलि अपार ॥ १००८॥ पुनि ऋषि रूप गम वर पायो हरिसे प्रीतम पाय । चरण प्रसाद राधिका देवी उन

हरिकंठ लगाय ॥ १००९ ॥ वृन्दावन गोवर्धन कुञ्जन यमुना पुलिन सुदेश। नित प्रति करत विहार मधुररस श्यामा श्याम सुरेश ॥ १०१०॥ निरखि निरखि सुख दम्पतिको यह कविकुल सब पचि हारे। भूषण खसे सुरत वश दोऊ केशन आपु सँवारे ॥ १०११ ॥ ललिता ललित बजाय रिझावत मधुर बीन कर लीने। जान प्रभात रागपञ्चम षट मालकोस रसभीने॥१०१२॥ सुर हिंडोल मेघ मालव पुनि सारँग सुरनट जान। सुर सांवत भूपाली ईमन करत कान्हरो गान॥ ॥ १०१३ ॥ऊंछ अडानेके सुर सुनियत निपट नायकी लीन। करत विहार मधुर केदारोसकल सुरन सुख दीन ॥ १०१४ ॥सोरठ गौड मलार सोहावन भैरव ललित बजायो। मधुर बिभास सुनत बेलावल दम्पति अतिसुख पायो॥१०१५॥देवगिरी देशाक देव पुनि गौरी श्री सुखरास। जैतश्री अरु पूर्वा टोडी आसावरि सुखरास॥१०१६ ॥रामकली गुनकली केतकी सुर सुघराई गाये। जैजैवन्ती जगत मोहनी सुरसों बीन बजाये ॥ १०१७ ॥भूआ सरस मिलत प्रीतम सुख सिन्धुवीर रसमान्यो। जान प्रभात प्रभाती गायो भोर भयो दोउ जान्यो॥ १०१८ ॥जागेप्रात निपट अलसाने भूषण सब उलटाने। करत शृंगार परस्पर दोउ अति आलस शिथिलाने ॥ ॥१०१९॥जालरंध्र ह्वै सहचरि देखत जन्म सफल करि लेखे। जान प्रभात उछंगन दम्पतिलेत प्राण रसपेखे ॥१०२०॥औटचो दूध कपूर मिलायो लै ललिता तहँ आई । पहिले श्यामाको अँचवायो पाछे पिवत कन्हाई ॥ १०२१ ॥करि शृंगार सघन कुञ्जनमें निशि दिन करत विहार। नीराजन बहुबिधि वारतहैं ललितादिक ब्रजनार॥१०२२॥कवहुँक केलि करत यमुनाजल सुन्दर शरद तडाग। कबहुक मधुरमाधुरी झूलत आनँद अति अनुराग ॥१०२३॥ प्रथम वसन्तपञ्चमी शुभदिन मंगलचार बधाये ।पञ्चानन जारचो मन्मथ सो प्रगटभये फिरिआये॥१०२४॥यशुमति मातबधाई बाँटत फूली अँग न समाई।उबटिन्हवाय श्यामसुन्दरको आभूषणपहिराई॥१०२५॥ घर घरते आईं ब्रज सुन्दरि मंगल साज सँवारे। हेम कलश शिरपर धरि पूरण काम मन्त्र उपचा- रे ॥ १०२६॥अबिर गुलाल अरगजा सोधीलीन्हों सौजबनाय। मनमें किये मनोरथ बहु विधि मिलवत सब मनभाय ॥ १०२७ ॥ भीर जानि सिंह पौर त्रियनकी यशुमति भवन दुराई। ढूंढ सकल त्रिय दौर मातको पकर बाँह ले आई॥१०२८॥ केसर चन्दन और अरगजा शीश महर के नाये। जो जो विधि उपजी जाके जिय सोइ सोइ भाँति कराये ॥१२०९॥फगुआ दियो महर मन भायो यशुमति परम उदार। पकर लिये घनश्याम मनोहर भेंटे भरि अँकवार ॥ १०३० ॥ पहिली जान बसंत पंचमी यशुमति बहुत खिलाये। केसरचोवा और अरगजा श्याम अंगलपटा- ये ॥ १०३१ ॥ ता पाछे गोपिनने छिरके कनक कलश भरिडारे। मानो शीश तमाल अमृत घन सरस सुधानिधरारे ॥ १०३२ ॥चन्दन चोवा मथत हाथ कर नील जलद तनु अरप्यो । मानो प्रकट करी अपने चित पियको प्राण समरप्यो ॥ १०३३ ॥ किये मनोरथ नाना विधिके मेवा बहु विधि लाई। सो हरिने स्वीकार कियो सब निरखि परम सुखपाई ॥१०३४ ॥ सुबल सुबाहु तोक श्रीदामा सकल सखा जुरि आये। रत्न चौकमें खेल मचायो सरस वसन्त बधाये ॥ १०३५॥ करत परस्पर गोप ग्वाल मिलि क्रीडा अति मन भाई। सुरंग अबीर गुलाल उडावत रह्यो गगन सब छाई ॥ १०३६ ॥फगुआ देन कह्यो मनभायो सबै गोपिका फूली।कंठ लगाय चलीं प्रीतमको अपने गृह अनुकूली ॥ १०३७ ॥ करतआरतीविविध भाँतिसां यशुमति परम सुहाई। सखावृन्द सब चले यमुन तट खेलत कुँवर कन्हाई ॥ १०३८ ॥ बैठ जाय सघन

कुंजनमें यमुनातीर गोपाल। सखी एक तहँ आय निकटही बोली वचन रसाल ॥ १०३९ ॥ वृन्दावन फूल्यो नँदनंदन सघन कुंज बहु भाँत । हरि प्रतीत मुकुलित द्रुम पल्लव मुखरित मधुकर पाँत ॥ १०४० ॥ ठौर ठौर झिल्ली ध्वनि सुनियत मधुर मेघ गुंजार । मानो मन्मथ मिलि कुसुमाकर फूले करत विहार ॥ १०४१॥ अपनो सब गुण तुम्हैं दिखावन स्मर वसन्त मिलि आयो । मधुर माधुरी मुकुलित पल्लव लागत परम सुहायो ॥ १०४२ ॥ गोवर्धनके शिखर सुभगपर फूले कुसुम पलास । सहज सुरत सुख देत सँयोगिन बिरहिन करत उदास॥१०४३॥ पुहुप पराग परस मधुकर गन मत्त करत गुंजार । मनो कामि जन देख युवति जन विषयासक्ति अपार॥१०४४ ॥बीथिन विपिन विलोकि विविध मन मण्डित कुसुमित कुंज । मनहुँ हेम मंडपिका मुखरिति कल्पलता रस पुंज ॥ १०४५ ॥ वेगि चलो वृन्दावन नायक राधा मारग जोवत। हलि मिल खेलो मन्मथ क्रीडा क्यों वसंत दिन खोवत ॥ १०४६॥ सुनत वचन ललिताके मोहन तुरत चले उठिधाय। कियो वसंत खेल वृन्दावन अद्भुत फागु मचाय ॥१०४७ ॥लता लता बन बन कुंजनमें खेलत फिरत वसन्त । मनहुँ कमल मण्डलमें मधुकर बिहरतहैं रसमन्त ॥ १०४८ ॥ उत श्यामा इत सखा मण्डली उत हरि इत ब्रजनार । मनो तामरस पारस खेलत मिलि मधुकर गुन्जार ॥ १०४९ ॥ खेल वसंत बहुत सुख मान्यो हर्ष गोपी ग्वाल। बिहँसि गये ब्रजराज भवन सब चन्चल नैनविशाल ॥१०५०॥ होरीडांडी दिवस जानके अति फूले ब्रजराजबैठे सिंहद्वारपै आपुन जुरिकै गोपसमाज॥१०५१॥ विप्र बुलाय वेदविधि करिकै होरी डांडी रोप । आनन्दे सब गोप मण्डली मन्मथ कियो प्रकोप ॥१०५२॥परिवाप्रथम दिवस होरीको नन्दराय गृहआई । सकल सोंज गोपीकर लेके खेलनको मनभाई॥ १०५३॥ दुइज दुहूँ दिशिते होरी मचि सुरंग गुलाल उडायो । मनो अनुराग दुहुँनके अन्तर सबहिन प्रकट करायो ॥ १०५४ ॥ तीज तरुणि मिलि पकरे मोहन गहिकर अञ्जन दीनो । मत्त मधुप बैठ्यो अम्बुज पर मुखरत है सुरभीनों ॥ १०५५ ॥ चम्पक लता चौथ दिनजान्यो मृगमद शीर लगायो।मनहुँ नीलजलधरके ऊपर कृष्णागर लपटायो॥१०५६॥ पांचै प्रमदा परम प्रीतिसों केसर छिडकी घोर । मनहुँ सुधानिधि वर्षत घनपर अमृत धार चहुँओर ॥ १०५७ ॥ छठि छरागनी गाय रिझावत अति नागर बलवीर । खेलत फाग संग गोपिनके गोपवृन्दकी भीर ॥ १०५८ ॥ सातें रिजि सुगन्ध सब सुन्दरि लेआई उपहार । बल मोहनको हँसन खेलावत रीझ भरत अँकवार ॥ १०५९ ॥ आठें अति आतुर अबलाप्रिय चुम्बन दीन्हों गाल । नाना विधि शृंगार बनावे बेंदा दीन्हों भाल ॥ १०६०॥ नवमी नौसत साजि राधिका चन्द्रावलि ब्रजनार । हो हो करत पलाश कुसुम रँग वर्षतहैं जो अपार ॥ १०६१ ॥ दशमी दशों दिशा भई पूरित सुरंग अबीर गुलाल । मनु प्रीतम मिलिबेके कारण फूले नयन विशाल ॥ १०६२ ॥ एकादशी एक सखि आई डार्यो सुभग अबीर । एक हाथ पीताम्बर पकर्यो छिरकत कुमकुम नीर ॥ १०६३ ॥द्वादशि मची दुहूँदिशि होरी इत गोपी उत ग्वाल ॥ इत नायक बल मोहन दोऊ उत राधा नवलाल ॥ १०६४ ॥ तेरस तरुणी सब मिलिके यह कीन्हों कछुक उपाय। तोक सुबल मधु मंगल बोल्यो सबहिन मतो सुनाय ॥१०६५॥ चौदशि चहूँ दिशा सों मिलिके गठ जोरे गहि भोर । मनमोहन पिय दूलह राजत दुलहिन राधा गोर ॥१०६६॥देखि कुहू कुसुमाकर फूल्यो मधुप करत गुंजार। चन्द्रावलि केसर ले आई छि-

रके नन्दकुमार ॥ १०६७ ॥ शुक्लपक्ष परिवा पुरुषोत्तम क्रीडा करत अपार । हलधर संग सखा सब लीन्हें डोलत गृह गृह द्वार ॥ १०६८ ॥ द्वैज दाम कुसुमनकी जूँथी अपने हाथ सँवार। दई पठाय भानुतनयाको पहिरत घोषकुमार ॥ १०६९ ॥ तीज तरुण सब गावत आईं नन्दराय दरबार । पकरे आय श्यामनट सुंदर भेंटत भरि अँकवार ॥१०७०॥ चौथ चहूँदिशिते सबधाये सखा मंडली धाय । इतते आई कुँवर राधिका होरी अधिक मचाय ॥ १०७१ ॥ पंचम पंच शब्द करि साजे सजि वादित्र अपार । रुंज मुरज ढफताल बाँसुरी झालरको झंकार ॥१०७२॥ बाजत बीन रबाब किन्नरी अमृत कुण्डली यंत्र। सुर सुरमण्डल जलतरंग मिल करत मोहनी मंत्र ॥ १०७३ ॥ विविध पखावत आवत संचित बिच बिच मधुर उपंग । सुर सहनाई सरस सारँगी उपजत तानतरंग ॥ १०७४ ॥ कंसताल कटताल बजावत शृंग मधुर मुहचंग । मधुर खंजरी पटह प्रणव मिल सुख पावत रतभंग ॥१०७५॥ निपटन केरी श्रवणन धुनि सुनि धीर न रहे ब्रजवाल । मधुर नाद मुरलीको सुनके भेंटे श्याम तमाल ॥ १०७६ ॥ छठिको पटरस सरस बनायो हरिभोजन करवायो । नानाविधि पकवान बनायो जेवँत अति सुख पायो ॥१०७७॥ सातें सखि मिलि बारी लाई आरोगे ब्रजराज।आठें दिशा सकल मिल ठाढो दूर करी सब लाज॥ ॥ १०७८ ॥ नवमी नवसत साजि राधिका हरिसों खेलत फाग । दशमी दशहु दिशा परिपूरण बाढ्यो अति अनुराग ॥१०७९॥ एकादशी राधिका मोहन दोउ मिलि खेलनलाग । बैठजाय सघन कुंजनमें जहँ सहचारि बडभाग ॥१०८०॥ सघन कुंजमें डोल बनायो झूलतहैं पिय प्यारी। ललितादिकबीरी जोखवावत नानाभाँतिसँवारी ॥१०८१॥अतिसुगंधघसलायअरगजा छिरकत सांवलगात। हरि बारीप्यारी हरि छिरकतशोभा वरणि न जात॥१०८२॥द्वादश दिवस दुहूँदिश माच्यो फागु सकल ब्रजमांझ।आलिंगन सब देत श्यामको लखै न धुन्धरमांझ ॥१०८३॥तेरस भामिनि पियो अधररस अति आनन्द अघाय।चहुँदिशिते गहिकै गठजोरी कीन्होंसखियनआय ॥१०८४॥ पून्यो सुखपायो ब्रजबासी होरी हर्ष लगाय।परमराग अनुराग प्रकट भयो अतिफूले ब्रजराय ॥१०८५॥ यशुमतिमाय लाल अपनेको शुभ दिन डोल झुलायो । फगुवा दियोसकल गोपिनको भयो सबन मनभायो॥१०८६॥यमुनाजल क्रीडत ब्रजबासीसंगलिये गोबिंद।सिंहद्वार आरतीउतारत यशुमति आनँदकंद ॥१०८७॥ यहि विधि क्रीडत गोकुलमें हरि निज वृन्दावन धाम। मधुवन और कुमुदवन सुन्दर बहुलावन अभिगम ॥१०८८॥ नन्दग्राम संकेतखिदरबन और काम वनधाम। लोह बन माठ बेलवन सुन्दर भद्रबृहदवन ग्राम॥१०८९॥चौरासीब्रजकोश निरन्तर खेलतहैं बलमोहन । सामवेदऋग्वेद यजुरमें कहेउ चरित ब्रजमोहन ॥१०९०॥ व्याम पुराण प्रगट यह भाख्यो तंत्र ज्योतिषिन जान्यो । नारदसों हरि कहेउ कृपाकर अमृत वचन परमान्यो॥ १०९१ ॥ सनकादिकसों कहेउ आपु हरि निज वैकुंठ मँझार । व्यासदेव शुकदेव महामुनि नृपसों कियोउचार ॥ १०९२॥ नारायणचतुराननरोंकहि नारदभेदबतायो।तातेसुनिके व्यास भागवत नृप शुकदेव जनायो ॥१०९३॥ शेष कहेउ जो सांख्यायनसोंसुनिके सनत्कुमार कहेउ बृहस्पति पुनिमैत्रसों उद्धवकियो विचार॥ १०९४ ॥ऐसे विविध प्रमाण प्रकट बहु लीला करि ब्रजईश । सोई श्रीशुकदेव महामुनि प्रकटकही राधीश ॥१०९५॥वृन्दावनहरि यहिविधि क्रीडत सदा राधिकासंग । भोर निशा कबहुं जानतहैं सदा रहत यक रंग॥१०९६॥सघनकुंजमें खेलत गिरिधर मथुराकी सुधिआई । राखे बरजि राधिकारानी अब न सकोगे जाई ॥१०९७॥

राखों कंठलगाय लालको पलक ओट नहिं करिहौं । युगकुच बीच भुजादोउनमिलसदाप्रेमरंग भरिहौं ॥ १०९८ ॥ सदा एक रस एकअखंडित आदि अनादि अनूप। कोटिकल्प बीतत नहिं जानत विहरत युगल स्वरूप ॥१०९९॥ संकर्षणके वदन अनलते उपजी अग्नि अपार। सकल ब्रह्मांड तुरत तेजसों मानो होरी दई पजार ॥ ११०० ॥ सकल तत्त्व ब्रह्मांड देव पुनि माया सब विधि काल । प्रकृतिपुरुष श्रीपति नारायण सब हैं अंश गोपाल ॥ ११०१ ॥ कर्म योग पुनि ज्ञान उपासन सबही भ्रम भरमायो । श्रीवल्लभ गुरुतत्त्व सुनायो लीलाभेद बतायो ॥११०२॥ तादिनते हरिलीला गाई एक लक्ष पद बन्द। ताको सार सूर सारावलि गावतअतिआनन्द॥११०३॥ अथ श्रीनाथजीके वरदान ॥ तब बोले जगदीश जगतगुरु सुनो सूर मम गाथ। तू कृत मम यश जो गावैगो सदारहै मम साथ ॥ ११०४ ॥ खेलत यहि विधि हरि होरी हो वेद विदित यह बात । ॥ * ॥धरि जिय नेम सूर सारावलि उत्तर दक्षिण काल । मनबांछित फल सबहीपावें मिटे जन्म-जंजाल ॥११०५॥ सीखै सुनै पढै मन राखै लिखै परम चितलाय । ताके संग रहतहौं निशिदिन आनँद जन्म विहाय ॥११०६॥ सरस समतसर लीलागावें युगल चरण चितलावें । गर्भबास बंदीखानेमें सूर बहुरि नहिं आवें ॥ ११०७ ॥

इति श्रीसूरदासजीकृत सम्मतसरलीला तथा सवालाखपदोंकासूचीपत्र समाप्त ॥

श्रीराधाकृष्णचन्द्राय नमः ।



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ सूरसागर ।

प्रथम स्कन्ध ।

राग बिलावल ॥ चरण कमल बंदौं हरि राई । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधेको सब कछु दरशाई ॥ बहिरो सुनै मूक पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई । सूरदास स्वामी करुणामय बार बार बन्दौं तेहि पांई ॥ १ ॥ राग कान्हरा । भक्त अंग ॥ अविगत गति कछु कहत न आवै । ज्यों गूँगे मीठे फलको रस अंतर्गतही भावै ॥ परमस्वाद सबही जु निरंतर अमित तोष उपजावै । मन वाणीको अगम अगोचर सो जानै जो पावै ॥ रूप रेख गुण जाति जुगति बिनु निरालम्ब मन चकृत धावै । सब विधिअगमविचारहिंतातेसूर सगुण लीलापद गावै ॥ २ ॥ भक्तवत्सलअंग। राग मारू॥

वासुदेवकी बडी बडाई ॥ जगत पिता जगदीश जगत गुरु आपुन भक्तकी सहत ढिठाई ॥ भृगुको चरण राखि उर ऊपर बोले वचन सकल सुखदाई। शिव बिरंचि मारनको धाए सो गति काहू देव न पाई॥ बिनु बदले उपकार करतहैं स्वारथ बिना करत मित्राई। रावण अरिको अनुज बिभीषण ताको मिले भरतकी नांई ॥ बकी कपट करि मारन आई सो हरिजू बैकुंठ पठाई। बिनु दीनेही देत सूर प्रभु ऐसे हैं यदुनाथ गुसाई ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ करणी करुणा सिंधुकी कछु कहत न आवै । कपट हेतु परशे बकी जननी गति पावै ॥ वेद उपनिषद यश कहै निर्गुणहिं बतावै। सोइ सगुण होय नंदकी दाँवरी बँधावै॥ उग्रसेनकी आपदा सुनि सुनि बिलखावै। कंस मारि राजा कियो आपुन शिरनावै ॥ जरासंधकी बंदी काटी नृप कुल यश गावै। असमय वन निगले पिता ताको शाप नसावै ॥ उधरे शोक समुद्रते पांडव गृह लावै । जैसे गैया बच्छको सुमिरत उठि धावै। बरुण फांस ते ब्रजपतिहिं छिन माहिं छुडावै। दुखित गयंदहि जानिकै आपुन उठि धावै॥ कलिमेंनामा प्रगटियो ताकी छानिछवावै। सूरदासकीबीनती कोउ लै पहुँचावै ॥४॥ राग मारू। ऐसी कौन करी है और भक्त काजै ॥ जैसे धरैं जगदीश जियमाहिंलाजै॥ हिरनकश्यप बढ्यो उदय अरु अस्त लौं ग्रस्यो प्रहलाद चित चरण लायो। भीरके परेते धीर सबहिन तज्यो खंभते प्रगट कर जन छुडायो ॥ ग्रस्यो गज ग्राह लै चल्यो पातालको कालके त्रास मुख नाम आयो। छांडि सुखधाम अरु गरुडतजि सांवरो पवनके गवनते अधिक धायो॥ कोपि कौरव गहे केश जव सभा में पांडुकी वधू यश नेकु गायो। लाजके साजमें हुती ज्यों द्रौएदी बढ्यो तनु चीर नहिं अंत पायो॥ रोरके जोरते शोर घरनी कियो चल्यो द्विज द्वारका जाय ठाढ्यो ॥ जोरि अंजलि मिले छोरि तंदुल लये इन्द्रके विभवतें अधिक बाढ्यो॥ शक्रकोदानबिनमान ग्वालिन कियो गह्यो गिरिपान यश जगन छायो। यहै जिय जानिकै अंध भवत्रासते सूर कामी कुटिल शरण आयो ॥५॥ राग रामकली। का न कियो जनहित जदुराई ॥ प्रथम कह्योदै वचन दयारत तेहि वस गाय चराई ॥ भक्त बछल बपु धरि नरकेहरि दनुज दहन उर डर सुरसाईं। बलि वल देखि अदिति सुत कारन भियदुपलव तिहुँपुर फिरि आई ॥ एहि थर बनि क्रीडा गज मोचन और अनंत कथा श्रुति गाई। सूर दीन प्रभु प्रगट बिरद सुनिअजहुँ दयाल पतितशिरनाई॥६॥ जहां जहां सुमिरे हरि जेहि विधि तहांतैसेउठि धायेहो। दीनबंधु हरि भक्त कृपानिध वेदपुराणन गाये हो ॥ सुत कुबेरके मत्त मगन भए विप रस नैना छाये हो। मुनिशरापते भये जमल तरु तेहि हित आपु बँधाये हो॥ वस्त्र कुचैल दीनद्विज देखत ताके तंदुल खाये हो। सम्पतिदईवाकी पत्नीको मन अभिलाप पुराये हो ॥ जब गज गह्यो ग्राह जलभीतर तब हरिनामपुकारचो हो। गरुड छांडि आतुर ह्वै धाये सो तत्काल उबारचो हो॥ कलानिधान सकल गुणसागर गुरु धौं कहा पढाये हो॥ तेहि उपकार मृतक सुत यांचे सो यमपुरते ल्याये हो॥ तुम मोसे अपराधी माधव कितेक मुक्ति पठाये हो। सूरदास प्रभु भक्तवछल तुम पावन नाम कहाये हो ॥ ७ ॥ राग धनाश्री ॥ प्रभुको देखो एक सुभाई । अति गंभीर उदार उदधि सरि जान शिरोमणि राई॥ तिनकामो अपने जनको गुण मानत मेरु समान। सकुचि समुद्र गनत अपराधहि बूँद तुल्य भगवान ॥ वदन प्रसन्न कमल ज्यों सन्मुख देखत हौं हों जैसे। विमुख भये अकृपिण निमेष हूं फिर चितयो तो तैसे ॥ भक्त विरह कातर करुणामय डोलत पाछे लागे। सूरदास

ऐसे स्वामीको देहि सु पीठ अभागे ॥ ८ ॥ राग नट ॥ हरिसो ठाकुर और न जनको।जेहि जेहि बिधि सेवक सुख पावे तेहि बिधि राखत तिनको॥ भूखे बहु भोजन जु उदर को तृषा तोय पट तन को।लग्यो फिरत सुरभी ज्यों सुत संग उचित गमन गृह वनको॥परम उदार चतुर चिंतामणि कोटि कुबेर निधनको॥राखत हैं जनकी परतिज्ञा हाथ पसारत कणको ॥संकट परे तुरत उठि धावत परमसुभट निजप्रणको॥कोटिककरैं एक नहिं मानै सूर महाकृतघनको॥९॥ राग धनाश्री॥हरिसो मीत न देखौं कोई। अंतकाल सुमिरत तेहि अवसर आनि प्रतक्षो होई ॥ग्राह गहे गजपति मुकरायो हाथ चक्रले धायो।तजि बैकुंठ गरुड तजि श्री तजि निकट दासके आयो॥ दुर्वासाको शाप निवारयो अंबरीष पति राखी। ब्रह्मलोक पर्यंत फिरयो तहँ देव मुनी जन साथी॥ लाखागृहते जरत पांडुसुत बुधि बल नाथ उबारे। सूरदास प्रभु अपने जनके नाना त्रास निवारे॥१०॥ राग धनाश्री॥राम भक्तवत्सल निज बानो।जाति गोत कुल नाम गनत नहिं रंक होयकै रानो॥ब्रह्मादिक शिव कौन जात प्रभु हौं अजान नहिं जानों॥महता जहाँ तहाँ प्रभु नाहीं सो द्वैता क्यों मानो ॥प्रगट खंभ ते दई दिखाई यद्यपि कुलको दानो।रघुकुल राघो कृष्ण सदाही गोकुल कीनो थानो ॥ बरणि न जाय भजन की महिमा बारम्बार बखानो। ध्रुव रजपूत विदुर दासीसुत कौन कौन अरगानो॥युग युग विरद यहै चलि आयो भक्तन हाथ बिकानो।राजसूय में चरण पखारे श्याम लये कर पानो॥ रसना एक अनेक श्याम गुण कहँलौं करों बखानो। सूरदास प्रभुकी महिमा है साखी वेद पुरानो ॥ ११ ॥ रागबिलावल॥काहूके कुल तन न विचारत। अविगतकी गति कहि नपरतुहै व्याध अजामिलतारत॥ कौन धौं जाति अरु पांति विदुरकीताहीके प्रभु धारत। भोजन करत दुष्ट घर उनके राज मान भँग टारत ॥ऐसे जन्म कर्मके ओछे ओछेही अनुसारत। यहै सुभाव सूरके प्रभुको भक्त वछल प्रण पारत ॥ १२ ॥ राग सारंग ॥ गोविंद प्रीति सबनकी मानत॥ जेहि जेहि भाय करी जिन सेवा अंतर्गत की जानत॥ शबरीकटुकबेरतजिमीठे भाखि गोद भरि लाई।जूँठे की कछु शंक न मानी भक्ष किये सतभाई॥ संतन भक्त मित्र हितकारी श्याम विदुरके आये। अतिरस बाढो प्रीति निरंतर साग मगन है खाये ॥कौरव काजचले ऋषि शापन साग पत्रही अघाये। सूरदास करुणानिधान प्रभु युग युग भक्त बढाये ॥१३॥ रागराम. कली॥ शरण गये को को न उबारयो। जब जब भीर परी संतन को चक्रसुदर्शन तहां सँभारयो॥ भयो प्रसाद जु अंबरीष को दुर्वासाको क्रोध निवारयो। ग्वालन हेतु धरयो गोवर्धन प्रगट इन्द्र को गर्व प्रहारयो ॥ कृपा करी प्रह्लाद भक्त को खंभ फारि उर नखन विदारयो। नरहरि रूप धरयो करुणा करि छिनक माहिं हरनाकुश मारयो॥ग्राह ग्रसत गजको जल बूडत नामलेत वाको दुख टारयो। सूरश्याम बिनु और करै को रंगभूमिमें कंस पछारयो ॥ १४ ॥ राग केदारा। जनकी और कौन पत राखे। जाति पांति कुल कानि न मानत वेद पुराणनि साखै।जहिकुल राज द्वारका कीनो सो कुल शापत नाश्यौ।सोइ मुनि अंबरीष के कारण तीन भुवन भ्रमि त्रास्यौ ॥ जाको चरणोदक शिव शिर धरयो तीन लोक हितकारी। तिन प्रभु पांडुसुतनके कारण निजकर चरण पखारी ॥ बारह बरस वसुदेव देवकी कंस महा डर दीनो। तिन प्रभु प्रह्लादहिं सुमिरत ही नरहरि रूप जु कीनो॥जग जानत यदुनाथ जितजन निजभुज श्रम सुख पायो। ऐसो को जो शरण गये ते कहत सूर इतरायो ॥ १५ ॥जब जब दीनन कठिन परी।जानतहौं करुणामय जनको तब तब सुगम करी ॥ सभामँझार द्रौपदी आनी हरि सुदुशासन दुष्ट धरी। सुमिरतपटको कोट बढ्यो

१ विपत्काल।

तब दुख सागर उबरी ॥ब्रह्मशापते गर्व उबारयो टेरत जरीजरी। तब तब रक्षा करी भगतपर जब जब बिपतिपरी॥ विपतिकाल पांडव बँधुअनमें राख्यो श्याम डरी।करि भोजन अवशेषयज्ञ प्रभु त्रिभुवनभूख हरी॥पाय प्रसाद भक्तपन राख्यो गजसों राखि धरी । महामोहमें पर्यो सूर प्रभु काहे सुधि बिसरी ॥१६॥ राग रामकली ॥ और न काहुहि जनकी पीर। जब जब दीन दुखी भयो तब तब करी कृपा बलवीर॥ गज बल हीन विलोकि दशौं दिशि तब हरि-शरण पर्यो । करुणासिंधु दयालु दरश दै सब संताप हर्यो ॥गोपी गाइ ग्वाल गो सुत हित सात दिवस गिरि लीनो । मागध हन्यो मुक्त नृप कीने मृतक विप्रसुत दीनो॥श्रीनृसिंह वपु धर्यो असुर हित भक्त वचन प्रतिपार्यो । सुमिरत नाम द्रुपदतनयाको पट अनेक विस्तार्यो ॥ मुनि मद मेटि दास व्रत राख्यो अंबरीप हितकारी। लापा गृहमें शत्रु सैनते पांडव विपति निवारी ॥ वरुण फांस व्रजपति मुकरायो दावानल दुख टार्यो । घर आए वसुदेव देवकी कंस महाखल मार्यो॥श्रीपति युग युग सुमिरनके वश देव विमल यश गावैं । अशरण शरण सूर यांचतहै को जो सुगति करावै ॥ १७ ॥राग केदारा ॥ठकुरायत गिरधर जूकी सांची ॥ कौरव जीति युधिष्ठिर राजा कीरति तीन लोकमें माची ॥ ब्रह्म रुद्र डर डरत कालके काल डरत भ्रुव भंग की आंची । रावण सो नृप जात न जान्यो माया विषम शीश धरि नाची ॥ गुरुसुत आनि दिये यमपुरते विप्र सुदामा कियो अयाची । दुःशासन कर वसन छुडावत सुमिरत नाम द्रौपदी बांची ॥ हरि चरणारबिंद तजि लागत अनत कहूँ तिनकी मति कांची । सूरदास भगवंत भजत जे तिनकी लीक चहूँ युग खांची ॥ १८ ॥भक्त महिमा ।राग सारंग ॥ हरिके जन सबते अधिकारी । ब्रह्मा महादेवते को बड तिनके सेवक भ्रमत भिखारी । याचक पै याचक कहायाचैजो याचै सो रसना हारी । गणिका पूत शोभ नहिं पावत जिन कुल कोऊ नहीं पितारी॥ तिनकी साख देखि हरनाकुश रावण कुटुंब समेत भो ख्वारी। जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पाली विभीषण सु अजहूँ राजारी ॥ शिला तरी जल माहिं सेतु बँधि बलि वहि चरण अहल्या तारी। जे रघुनाथ शरण तकि आये तिनकी सबल आपदा टारी ॥ जिनगोविंदअचल ध्रुव राख्योरवि शशिदै प्रदक्षिणा हारी । सूरदास भगवंत भजनबिनु धरनीजननिबोझकतमारी ।॥१९ ॥ राग सारंग ॥जापरदीना-नाथ ढरे । सोइ कुलीन बडो सुन्दर सोइ जिनपर कृपा करे ॥ राजा कौन बडो रावणते गर्वहिगर्व गरे । रंकव कौन सुदामाहूते आपु समान करे ॥ रूपव कौन अधिक सीताते जन्म वियोग भरे । अधिक कुरूप कौन कुबिजाते हरिपति पाइ वरे ॥ योगीकौनबडोशंकरते ताको काम छरे। कौन विरक्त अधिक नारदसों निशि दिन भ्रमत फिरे॥अधम सुकौन अज मिलहूते यम तहँ जात डरे। सूरदास भगवंत भजन बिन फिर फिर जठर जरे ॥ २० ॥ जाको दीनानाथ निवाजै ।भवसागरमें कबहुं न झुके अभय निशाने बाजे ॥ विप्रसुदामाको निधि दीनी अरजुन रनमें गाजे ॥लंकाराज विभीषण राजे ध्रुव आकाश बिराजे ॥ मारि कंस केशी मथुरामें मेट्यो सबै दिवाजै । उग्रसेनशिर छत्र धर्यो है दानव दुहूँ दिशि भाजे ॥ अंबर गहत द्रौपदी राखी पलट अंधसुत लाजे । सूरदास प्रभु महा भक्तिते जाति अजातिहि साजै ॥ २१ ॥ रागदेवगंधार ॥ जाको मन मोहन अंग करै । ताको केश खसै नहिं शिरते जोजग बैरपरै ॥हिरनकशिपुपरिहार थक्योप्रह्लाद ननेकुडरै। अजहूं लों उत्तानपाद सुत राज्य करत न मरै॥राखी लाज द्रुपदतनयाकी कोपित चीर हरै । दुर्योधन-को मान भंग करि बमन प्रवाह भरै ॥ विप्रभक्त नृग अंधकूपदियो बलिपढिवेदछरै। दीनदयाल-

लु कृपालु कृपानिधि कापै कह्यो परै ॥ जो सुरपति कोप्यो ब्रज ऊपर कहिधौं कछु न सरै।राखे ब्रज जन नंदके लाला गिरिधर विरद धरै ॥ जाकी बिरद है गर्वप्रहारी सो कैसे बिसरै। सूरदास भगवंत भजन करि शरण गहे उधरै ॥२२ ॥ राग केदारा ॥ जाको हरि अंगीकार कियो । ताके कोटि विघ्न हरि हरिकै अभयप्रताप दियो॥दुर्वासा अंबरीष सतायो सो हरि शरण गयो ।परतिज्ञा राखी मनमोहन फिरि तापै पठयो ॥निकसि खंभते नाथ निरंतर अपनो राखि लियो । बहु शासना दई प्रह्लादहिं ताहि निशंक कियो ।मृतक भये सब सखा जिवाये विष जल जाइ पियो सूरदास प्रभु भक्तबछल हैं उपमा कौन कियो॥२३ ॥ राग बिलावल ॥कहा कमी जाके राम धनी। मनसानाथ मनोरथ पूरण सुखनिधान जाको मौज घनी ॥ अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष फल चार पदारथ देत छनी । इन्द्र समान जाके हैं सेवक मो बपुरेकी कहा गनी॥ कहा कृपणकी माया कितनी करत फिरत अपनी अपनी । खाइ न सकैं खरच नहिं जानैंज्यों भुअंगशिररहतमनी॥ आनँद मगन राम गुण गावे दुख संताप की काटि तनी । सूर कहत जे भजत रामको तिनसों हरिसों सदा बनी ॥ २४ ॥ हरिजूके जनकी अति ठकुराई ।महराज ऋषिवर सुर नरमुनिदेखत रहेलजाई ॥निरभय राज ताहिकोदीनो लागनि मननि उछाहू। कामक्रोध मद लोभ मोहमिलि भये चोरते साहू॥दृढ विश्वास कियो सिंहासन तापर बैठ्यो भूप । हरिजस विमल छत्र शोभित शिर राजत परम अनूप॥हरिपद पंकज प्रजाप्रेम बश ताहीके रँगराते। मंत्री ज्ञान न अवसर पावै कहत न बनै सकाते ॥ अर्थ धर्म दोउ रहे वहैं दुरि काम मोक्षशिर नायो।विनय विवेक विचित्र पौरिया समय न काहू पायो॥अष्टमहानिधिआगेठाढी कर जोरे उर लीने।छरीदार वैरागविनोदी छिरकि वाहिये कीने ॥ कायर काल कछू नहिं व्यापै या इस रीतिहि जानै।सूरदास नर तौ जाने जो गुरुप्रसाद पहिचानै ॥ २५ ॥मायावर्णन।राग केदारा ॥विनतीसुनो दीनकी चित दै कैसे तव गुण गावै । माया नटिनि लकुटि कर लीने कोटिक नाच नचावै ॥ दर दर लोभ लागि लै डोलति नाना स्वांग करावै ।तुमसों कपट करावति प्रभु जू मेरी बुद्धि भ्रमावै ॥ मन अभिलास तरंगनि करिकरि मिथ्यानिशा जगावै। सोवत स्वप्नमें ज्यों सम्पति त्यों दिखाय बौरावै॥ महा मोहनी मोह आत्मा मन करि अघहि लगावै । ज्यों दूती परबधू भोरिकै लै परपुरुष दिखावै ॥ मेरे तौ तुमहीं पति तुम गति तुम समान को पावै।सूरदास प्रभु तुमरी कृपा बिनु कोमों दुख बिसरावै॥२६॥ राग सोरठ। बिनै कासों कहों दीनबन्धो। जन्मकृत अकृत चकृतचित चरनसरन राखिदयासिंधो॥ द्विज पतित मतिहीन गनिका गुन लोलीन करत अघ खीन पूतना प्रहारे।सकृत निज हरिनाम जिन लियो अवशि कर दूरि करि को कौ न तारे॥ध्रुव तेइथापि थिरप्रहलाद परतीत करि हिरन कश्यप उर नख विदारे। मानि गज भारि भेंटि तनकी पीर द्रुपदकन्या धरन धीर लज्या निवारे॥ रावन मदअन्ध और नृप जरासंध कियेनिरबन्ध क्रोध वर तुल्य कारे।त्रिलोक जस रह्यो यहै सब श्रुति कह्यो सोही मैं दृष्टि गह्यो शैलधारे ॥अगिनतविक्रम शिवविरंचि भ्रमतभ्रमसकलमुनिजन अगम लोकपारे। सूरकलयान प्रभु राखिसनमान अब देहि निज दान कलिमल ताप हारे ॥२७॥ विनती करत मरत हौं लाज।नख सिखलौं मेरी यह दही है पापकी जहाज॥लवमुनिजस रह्यो रेहे नन आंखितर देखत अपनो साज । तीनों पनभरि और निवाह्यो तऊ नआयो बाज॥पाछे भयो न आगे ह्वैहै सब पतितन सरताज।नरकौ भज्यो नाम सुनिमेरो पीठिदई यमराज॥अबलौंनान्हे रूनहे तारचो ते सब वृथा अकाज । सांच विरदसूरके तारतलोकन लोकअवाज ॥२८॥ हारिहौं

माया कौन बिगोयो। सौ योजन मर्याद सिंधुकी पलमें राम विलोयो॥ नारद मगनभयेमायामें ज्ञान बुद्धि बल खोयो। साठ पुत्र अरु द्वादश कन्या कंठ लगाये जोयो॥ शंकरको चितहरयो कामिनी सेज छोडि भुव सोयो। जारि मोहनी आढ आढ कियो तब नख शिखते रोयो॥ सौ भैयाराजादुर्योधन पलमों गरद समोयो॥ सूरज दास कांच अरु कंचनएकहिधगापरोयो॥ २९॥ राग सारंग। तुम्हरी माया महाबली जिन जग बश कीनो। नेकु चिते मुसुकाइ सबन को मन हरि-लीनो॥ कछु कुलधर्म न जानइ वाके रूप सकल जग राच्यो। बिनु देखे बिनही सुने ठगत न कोऊ बाच्यो॥ सुनि याके उत्पाततें शुक सनकादिक भागे। लोक लाज सब छुटि गई काम क्रोध मद जागे॥ अकथ कथा याकी हरिकही कहत न आई। छैलनके संग यों फिरै जैसेतनु-सँग छाई॥ इहि विध इन डहकेसबै जलथल जियजेत। चतुरशिरोमणि नन्दके अरु कहा कहीं केते॥ पहिरे राती चूनरी शिर श्वेतउपरनासोहै। कटिलहँगा लीलोवन्यो नीको जोदेखिनमोहै॥ चोली चतुरानन ठग्यो अमर उपरना राते। अतरौटा अवलोकिकै सब असुर महा मदमाते॥ योग युगति विसरी सबै उठि धाये सँग लागे। नेक दृष्टि तहँ परिगइ शिव शिर टोना लागे॥ बहुत कहांलौं वर्णियो पर पुरुष न उबरन पावै। भरि सोवै सुखनींदमें तहां जाइ जगावै एकनि-को दरशन ठगे एकनि सँग सोवै। एकनि लै मन्दिर चढे इक विरचि बिगोवै॥ यहि लाजनि मरिए सदा सब कहत तुमारी। सूर श्याम यहि बरजिकै मेटहु कुल गारी॥ ३०॥ राग बिहागरा॥ हरि तेरो भजन कियो न जाइ। कहा करूं तेरी प्रबल माया देति लहर बहाइ॥ जबै आऊं साधु संगति कछुक मन ठहराइ। ज्यों गयंद अन्हाइ सरिता बहुरि बहै सुभाइ॥ वेष धरि धरि हरयो परधन साधु साधु कहाइ। जैसे नटुवा लोभ कारण करत स्वांग बनाइ॥ करौं यतन न भजौं तुमको कछुक मन उपजाइ। सूर हरिकी प्रबल माया देति मोहिं लुभाइ[1]॥ ३१॥ माधव जू मन माया वश कीनो। लाभ हानि कछु समुझत नाहीं ज्यों पतंग तनुदीनो॥ गृह दीपक छनतेल तूल तिय सुत ज्वाला अति जोर। मैंमतिहीन मर्म नहिं जान्यौं परयोंअधिक करि दौर॥ विवश भयों नलिनीके शुक ज्यों विन गुरु मोहिं गह्यो। मैं अज्ञान कछू नहिं समझों परदुखपुंज सह्यो॥ बहुतक दिवस भए या जगमें भ्रमत फिरयो मतिहीन। सूर श्यामसुंदर जो सुमिरे क्योंहोवे गति दीन॥ ३२॥ अविद्यावर्णन। मलार॥ माधव जू यह मेरी इक गाई। अब आजुते आपु आगे लै आइए चगई॥ है अति हरिहाई हटकतहू बहुत अमारग जाती। फिरति वेद वन ऊख उखारति सब दिन अरु सबराती॥ हित कै मिलैलेहु गोकुलपति अपने गोधन मांह। सुख सोऊं सुनि वचन तुम्हारे देहु कृपा करि बांह॥ निधरक रहौं सूरके स्वामी जन्म न जाऊं फेरि। मैं ममता रुचिसों रघु-गई पहिलै लऊँ निवारि॥ ३३॥ राग धनाश्री॥ कितक दिन हरिसुमिरन बिनु खोये। परनिंदा रसनाके रसमें अपने पर तर बोये॥ तेल लगाइ कियो रुचि मर्दन वस्त्रहि मलि मलि धोये। तिलक बनाय चले स्वामी ह्वै विषयिनके मुख जोये॥ काल बलीते सब जग कंपत ब्रह्मादिक हू रोये[2]। सूर अधमकी कहाँ कौन गति उदर भरे परि सोये॥ ३४॥ तृष्णावर्णन। केदारा॥ माधव जू नेकु हटको गाइ। निशि वासर यह भ्रमति इतउत अगह गही नहिं जाय॥ क्षुधित बहुत अघात नाहीं निगम द्रुम दल खाइ। अष्टदश घट नीर अवचे तृषा तउ न बुझाइ॥ छहूं रस हूं धरत आगे वहै गंध सुहाय। और अहित अभक्ष भक्षति गिरा बरणि न जाय॥ व्योम धर नद शैल कानन

१ गयो। २ करूं। ३ भुलाइ।

इते चरि न अथाइ।ढीठ निठुर न डरति काहू त्रिगुण है समुहाइ॥हरै नखलबल दनुजमानव सुरनि शीश चढाइ। रचि विरंचि मुख भौंह छबिलौंचलतिचितहिंचुराइ॥नील खुर जाकेअरुन लोचन श्वेत सींग सोहाइ।दिन चतुर्दश खेत खूँदति सु यह कहासमाइ॥नारदादि शुकादि मुनिजनथके करत उपाइ।ताहि कहु कैसे कृपानिधि सकत सूर चराइ॥ ३५ ॥ विनती अंग। राग केदारा॥बन्दौं चरण सरोज तुम्हारे । सुन्दर श्याम कमल दल लोचन ललित त्रिभंगी प्राणपति प्यारे॥ जे पद पद्म सदाशिवके धन सिंधुसुता उरते नहिं टारे ।जे पदकमल तातरिसत्रासत मनवचक्रम प्रहलाद सँभारे॥ जे पद पद्म परसि जलपावन सुरसरि दरश कटत अघ भारे । जे पदपद्म परसि ऋषिपत्नी बलि नृग व्याध पतित बहु तारे ॥ जे पदपद्म रमत वृन्दावन अहिशिर धरिअगणित रिपु मारे । जे पद पद्म परसि ब्रजभामिनि सर्वस दै सुत सदन बिसारे॥ जे पदपद्म रमत पंडव-दल दूत भये सब काज सँवारे । सूरदास तेई पदपंकज त्रिविध ताप दुख हर न हमारे ॥ ३६ ॥

॥ धनाश्री ॥हरि जू तुमते कहा न होई। रंक सुदामा कियो इन्द्रसम पांडवहित कौरवदल खोई॥ पतित अजामिल दासी कुबिजा तिनहूंके कलिमल सब धोई।बोलै गूँग पंगु गिरिलंघै अरुआवै अंधा जग जोई॥ बालक मृतक जिवायदिये द्विजजो आयेदरबारे रोई।सूरदास प्रभु इच्छापूरण श्री गुपाल सुमिरत सबकोई ॥३७॥राग सोरठ ॥ अबके राखिलेहु भगवान । हम अनाथ बैठद्रुम डरिया पारधिसाधे बान ॥जाके डर भाज्योचाहतहै ऊपर ढुक्यो सचान । दुवौ भाँतिदुखभयो आनि यह कौनउबारै प्रान ॥ सुमिरतहीं अहि डस्यो पारधी करछूटे संधान।सूरदासशरलग्यो सचानहिं जय जय कृपानिधान ॥ ३८ ॥ रागबिहगरा ॥ हृदयकी कबहुँ न जरन घटी। बिनु गोपाल बिथा या तनुकी कैसे जात कटी॥अपनी रुचि जितही तित खैंचति इन्द्रिय ग्राम गटी। हो तितहीं उठि चलति कपट लगि बांधै नयन पटी ॥ झूठौ मन झूठी यह काया झूठी आर भटी। अरु झूठनि के वदन निहारत मारत फिरत लटी ॥ दिन दिन हीन छीन भइ काया दुख जंजाल जटी ॥ चिंता गई अरु भूख भुलानी नींद फिरत उचटी ॥ मगन भयो माया रस लम्पट समझत नाहिं हटी । तापर मूड चढी नाचति है मीचति नीच नटी॥ खैंचत स्वाद श्वान पातर ज्यों चातक रटत ठटी ।सूर जलधि सिंचै करुणानिधि निज जन जरनि मिटी ॥ ३९ ॥

॥ राग केदारा ॥ अब नाथ मोहिं उधारि । मग नहीं भव अम्बुनिधि में कृपासिन्धु मुरारि ॥ नीर अति गंभीर माया लोभ लहरति रंग। लये जाति अगाध जल में गहे ग्राह अनंग ॥ मीनइन्द्रिय अतिहि काटति मोट अघ शिर भार ।पग न इत उत धरन पावत उरझि मोह सिवार ॥ काम क्रोध समेत तृष्णा पवन अति झकझोर। नाहिं चितवनदेत तिय सुत नाम नौका ओर॥ थक्यो बीच बिहाल विह्वल सुनो करुणामूल । श्याम भुज गहि काढि लीजै सूर ब्रजके कूल ॥ ४० ॥

राग सारंग ॥माधव जू मन हठि कठिन परचो । यद्यपि विद्यमान सब निरखत दुःख शरीर भरचो॥ बार बार निशि दिन अति आतुर फिरत दशो दिशिधाये । ज्यौं शुकसेंवरफूलविलोकतजातनहीं बिन खाये॥युग युग जन्म मरन अरु बिछुरन सब समुझतमतिभेव ।ज्योंदिनकरउलूकनहिंमानत परी आनि यह टेव॥हौं कुचील मतिहीन सकलविधि तुम कृपालु जग जान। सूरमधुपनिशिकमल

कोश वश करो कृपादिन भान ॥ ४१॥ रागधनाश्री॥ आछो गात अकारथ गारचो। करी न प्रीति कमल लोचन सों जन्म जुवा ज्यों हारचो ॥ निशि दिन विषय विलासनि विलसत फूटि गई तब चारचो। अब लाग्यो पछतान पाइ दुख दीन दईको मारचो ॥ कामी कुटिल कुचील कुदरशन कौन कृपा करि तारचौ। ताते कहत दयालु देव मुनि काहे सूर बिसारचो ॥ ४२ ॥ रागसारंग ॥ माधव जू मन सबही विधि पोच। अति उन्मत्त निरंकुश मयगज चिंता रहित अशोच ॥ महा मूढ अज्ञान तिमिरमें मग्न होत सुख मानि। तेलीकेर वृषभ ज्यों भरम्यो भजत न सारंगपानि॥ गीध्यो ढीठ हेम तस्करज्यों अति आतुर मतिमंद। लुब्धौ स्वाद मीन आतुर ज्यों अवलोक्यो नहिं फंद॥ज्वाला प्रीति प्रगट सन्मुख हटि ज्यों पतंग तनु जारचो। विषय असक्त अमितअघ व्याकुल तब हम कछु न सँभारचो ॥ ज्यों कपि शीत हुताशन गुंजा सिमटि होत लवलीन। त्यों शठ वृथा तजत नहिं कबहूं रहत बिषय आधीन ॥ सेंवर फूल सुरँग शुक निरखत मुदित होत खग भूप। परशत चोंच तूल उघरत मुख परत दुःख के कूप ॥ और कहांलौं कहौं एक मुख या मनके कृत काज। सूर पतित तुम पतित उधारन गहो बिरद की लाज ॥४३॥ मेरो मन मतिहीन गुसाँई। सब सुखनिधि पद कमल छाँडि श्रम करत श्वान की नाईं॥ फिरत वृथा भाजन अवलोकत सूने सदन अज्ञान। तिहिं लालच कबहूं कैसेहूँ तृप्ति न पावत प्रान॥ जहँ जहँ जात तहीं भय त्रासत आस लकुटि पदत्रान। कौर कौर कारण कुबुद्धि जड किते सहत अपमान ॥ तुम सर्वज्ञ सकल विधि पूरण अखिल भुवन निजनाथ। तिन्हें छांडि यह सूर महाशठ भ्रमत भ्रमनिके साथ ॥ ४४ ॥ राग गौरी ॥ करुणामय तेरी गति लखि न परै। धर्म अधर्म अधर्म धर्म करि अकरन करन करै ॥ जय अरु विजय कर्म कहा कीनो ब्रह्म शराप दिवायो। असुर योनि ता ऊपर दीनी धर्मउँ छेद करायो॥पिता वचन खंडे सो पापी सो प्रह्लाद-हिं कीन्हो। निकसे खंभ बीच ते नरहरि ताहि अभयपद दीनो॥ दान धर्म बहु कियो भानुसुत सो तुव विमुख कहायो। वेद विरुद्ध सकल पंडवसुत सो तुम्हरो मन भायो॥ यज्ञ करत बैरोचन को सुत वेद विमल विधि कर्मा। सो छलि बांधि पताल पठायो कौन कृपानिधि धर्मा ॥ द्विज कुल पतित अजामिल विषयी गणिका नेह लगायो। सुत हित नाम लियो नारायण सो बैकुंठ पठायो। पतिव्रता जालंधर युवती सो पतिव्रत ते टारी। दुष्ट पुंश्चली अधम सु गणिका सुवा पढावत तारी ॥ मुक्त हेतु योगी श्रम कीनों असुर विरोधहिं पावै। अविगत गति करुणामय तेरी सूर कहा कहि गावै ॥४५॥ राग सारंग ॥ अविगत गति जानी न परै। मन वच अगम अगाध अगोचर केहि विधि बुधि सँचरै ॥ अति प्रचंड पौरुष बल पाये केहरि भूख मरै। बिन आशा विन उद्यम कीने अजगर उदर भरै ॥रीते भरै भरे पुनि ढोरै चाहै फेरि भरै। कबहुँक तृण बूडे पानी में कबहूँ शिला तरै ॥ बागर ते सागर करि राखै चहुँ दिशि नीर भरै। पाहन बीच कमल विकसाही जलमें अगिनि जरै ॥ राजा रंक रंक ते राजा ले शिर छत्र धरै। सूर पतित तरिजाइ तनक में जो प्रभु नेकु ढरै॥४६॥ राग केदारा ॥अपनी भक्ति देहु भगवान ॥ कोटि लालचजो दिखावहुँ नाहिंन रुचि आन ॥ जरत ज्वाला गिरत गिरिते सुकर काटत शीश। देखिसाहस सकुच मानत राखि सकत न ईश॥ कामना करि कोपि कबहूं करत कर पशु घात। सिंह शावक जात गृह तजि इन्द्र अधिक डरात ॥ जा दिना ते जन्म पायों यहै मेरी रीति। विषय विष हठि खात नाहीं टरत करत अनीति ॥ थके किंकर यूथ यमके टारे टरत न नेक।

नरक कूपनि जाइ यमपुर परचो बार अनेक ॥ महा माचल मारिबेको सकुच नाहिन मोहिं। परचो हौं प्रण किये द्वारे लाज प्रणकी तोहिं॥नाहिनै काचो कृपानिधि करौं कहा रिसाय। सूर तबहुं न द्वार छांडै डारिहौ कढराइ ॥ ४७ ॥ राग धनाश्री ॥जनके उपजत दुख किन काटत। जैसे प्रथम अषाढ के वृक्षनि खेतहर निरखि उपाटत ॥ जैसे मीन किलकिला दरशत ऐसे रहो प्रभु डाटत। पुनि पाछे अघसिंधु बढत है सूर खार किन पाटत ॥ ४८ ॥राग कान्हरा ॥कीजै प्रभु अपने बिरदकी लाज। महापतित कबहूं नहिं आयो नेकु तुम्हारे काज ॥माया सबल धाम धन वनिता बांध्यो हौं इहिसाज। देखत सुनत सबै जानत हौं तऊ न आयो बाज ॥ कहियत पतित बहुत तुम तारे श्रवणनि सुनी अवाज। दई न जात खार उतराई चाहत चढनजहाज ॥ लीजैपार उतारि सूर को महाराज ब्रजराज। नई न करन कहत प्रभु तुम सों सदा गरीबनेवाज॥ ४९॥ राग बिलावल ॥महाप्रभु तुम्हैं बिरद की लाज। कृपानिधान दानि दामोदर सदा सँवारत काज॥ जब गज ग्राह चरण धरि राख्यो तब तुम्हैं नाथ पुकारचो ।तजिकै गरुड़ चल्यो अति आतुर पकरि चक्र कर मारचो ॥ निशि निशिही ऋषि लये सहस दश दुर्वासा पग धारचो।तत्कालहि तब प्रगट भये हरि राजा जीव उबारचो ॥ हरनाकुश प्रह्लाद भक्तको बहुत शासना जारचो । रहि न सके नरसिंह रूप धरि गहि कर असुर पछारचो॥दुःशासन गहिकेश द्रोपदी नगन करन को लाये। सुमिरत ही तत्काल कृपानिधि वसनप्रवाह बढाये ॥ मागधपति बहु जीति महीपति कछु जियमें गर्बाए। जीत्यो जरासंध रिपु मारचो बल करि भूप छुड़ाए ॥ महिमा अति अगाध करुणामय भक्त हेतु हितकारी। सूरदास पर करौ कृपा अब दरशन देहु मुरारी ॥ ५० ॥ राग धनाश्री ॥ शरण आयेकी लाज उर धरिये। सध्यौ नहिं धर्म शील शुचि तप व्रत कछू कहा मुख लै तुम्हैं विनय करिये॥कछु चाहौं कहौं सोचि मनमें रहौं कर्म अपने जानि त्रासआवै।यहै निज सार अधार मेरे अहै पतितपावन विरद बेद गावै ॥ जन्मते एकटक लागि आशा रही विषय विष खात नाहिं तृप्तिमानी ।जो छिपा छरद करि सकल संतनि तजी तासु मति मूढ़रस प्रीति ठानी ॥ पाप मारग जिते तेव कीने तिते बच्यो नहिं कोइ जहं सुरति मेरी। सूर अवगुण भरचो आइ द्वारे परचो तकी गोपाल अब शरण तेरी ॥ ५१ ॥ प्रभु मेरे गुण अवगुण न विचारो। कीजै लाज शरण आयेकी रविसुत त्रास निवारो ॥ योग यज्ञ जप तप नहिं कीयो वेद विमल नहिं भाष्यो। अति रसलुब्ध श्वान जूँठनि ज्यों कहूं नहीं चित राख्यो॥जिहिजिहि योनि फिरचो संकटवश तिहि तिहि यहै कमायो। काम क्रोध मद लोभ ग्रसित भये विषय परम विष खायो ॥ जो गिरिपति मसि घोरि उदधि में लै सुरतरु निज हाथ। मम कृत दोष लिखैं बसुधा भर तऊ नहीं मित नाथ ॥कामी कुटिल कुचील कुदरशन अपराधी मतिहीन।तुमसमान और नहिं दूजो जाहि भजौं ह्वै दीन॥अखिल अनंत दयालुदयानिधिअविनाशी सुखरास।भजन प्रताप नाहिं मैं जान्यो परचो मोहकी फांस ॥ तुम सर्वज्ञ सबै समरथ विधि अशरण शरण मुरारि। मोह समुद्र सूर बूडत है लीजै भुजा पसारि ॥ ५२ ॥राग सारंग ॥ तुम हरि सांकरे के साथी। सुनत पुकार परम आतुर ह्वै दौरि छुडायो हाथी॥ गर्भ परीक्षित रक्षा कीनी वेद उपनिषद साखी। बसन बढ़ाय द्रुपदतनया के सभा माँझ पत राखी ॥ राज रवनि गाई व्याकुल ह्वै दै दै सुत को धीरक। मागध हति राजा सब छोरे ऐसे प्रभु परपीरक ॥कपट स्वरूप धरचो जब कोकिल नृप प्रतीति करि मानी। कठिन परी तबहीं तुम प्रगटे रिपु हति सब सुखदानी ॥ ऐसे कहौं कहांलौं

गुणगण लिखत अंत नहि पइये । कृपासिंधु उनहीके लेखे मम लज्जा निर्वहिये ॥ सूर तुम्हारी ऐसी निबही संकटके तुम साथी ।ज्यों जानो त्यों करो दीनकी बात सकल तुम हाथी॥५३ ॥ तुम बिनु सांकरे को काको । तुम बिनु दीनदयालु देवमणि नाम लेउँ धौं ताको ॥ गर्भ परीक्षित रक्षा कीनी हुतो नहीं वश ताको । मेटी पीर परम पुरुषोत्तम दुख मेट्यो दोउ धांको॥हा करुणामय कुंजर टेर्यो रह्यो नहींबलजाको ।लागिपुकार तुरत छुटकायो काट्यो बंधन वाको॥ अंवरीपको शाप देन गयो बहुरि पठायो ताको । उलटी गाढ परी दुर्वासा दहत सुदर्शन जाको निधरक ह्वै पंडवसुत डोलैंहुतो नहीं डर काको । चारों बेद चतुर्मुख ब्रह्मा यश गावतहैं ताको॥ छोरी बंदिबिदा करि राजा राजा होइ कि रांको।जरासंधकोजोर उधेर्यो फारि कियो द्वैफांको॥ सभा माँझ द्रौपदी पति राखी पति जानै गुन जाको।बसन ओट करि कोट विश्वंभर परननपायो झांको ॥ भीर परे भीषम प्रण राख्यो अर्जुनको रथ हांको । रथते उतर चक्र कर लीनो भक्त बछल प्रण ताको ॥गोपीनाथ सूरको स्वामी है समुद्र करुणाको।नरहरि हरि हरनाकुश मार्यो काम पर्यो हो बांको ॥ ५४ ॥राग कान्हरा ॥ तुम्हरी कृपा गुपाल गुसाईं मैं अपने अज्ञान न जानत । उपजत दोष नयन नहिं सूझत रविकी किरनि उलूक न मानत ॥ सब सुखनिधि हरि नाम महातम पायो है नाहिन पहिंचानत । परम कुबुद्धि तुच्छ रस लोभी कौडी बदले मगरज छानत ॥ शिवको धन संतनको सर्बस महिमा वेद पुराण वखानत । इते मान यह सूर महाशठ हरि नग बदलि विषयखरि आनत॥५५॥राग बिलावल ॥ अपुने जान मैं बहुत करी। कौन भांति हरि कृपा तुम्हारी सो स्वामीसमुझीन परी॥दूरि गयो दरशनके ताईं व्यापकप्रभुता सब बिसरी। मनसा वाचा कर्मअगोचर सो मूरति नहिं नैन धरी ॥ गुणबिनु गुणी स्वरूप रूप बिनु नामलेत श्री श्याम हरी । कृपासिंधु अपराध अपरमित क्षमो सूरते सब बिगरी ॥ ५६ ॥ तुम गोपाल मोसों बहुत करी। नरदेही दीनी सुमिरनको मो पापीते कछु न सरी॥गर्भवास अतित्रास अधो-मुख तहां न मेरी सुधि बिसरी। पावक जठर जरन नहिं दीनों कंचन सी मेरी देह धरी॥जगमें जन्मि पाप वहु कीने आदि अंत लौं सब बिगरी । सूर पतित तुम पतित उधारन अपने बिरद कि लाज धरी॥५७॥ रागधनाश्री ॥माधवजू जो जनते बिगरे॥तउकृपालुकरुणामयकेशवप्रभुनहिं जीय धरे॥ जैसे जननि जठर अंतगर्त सुत अपराध करे। तउ पुनि जतन करै अरु पोषैनिकसे अंक भरे॥यद्यपि मलय वृक्ष जड काटत कर कुठार पकरे । तऊ सुभाव सुगंध शुसीलत रिपु तनु ताप हरे ॥ज्यों हल गहि धर धरत कृषीबल बारि बीज बिथुरै । सहि सन्मुख त्यों शीत उष्णको सोई सुफल करै ॥ द्विज रसना जो दुखित होइ बहु तौ रिस कहा करै । यद्यपि अंग बिभंग होनहै लै समीप सँचरै ॥ कारण करण दयालु दयानिधि निज भय दीन डरै। इहि कलिकाल व्याल मुख ग्रासित सूर शरन उबरै ॥ ५८ ॥राग कान्हरा॥दीनानाथ अब वार तुम्हारी । पतित उधारन बिरद जानिकै बिगरी लेहु सँवारी ॥ बालापन खेलतही खोयो युवा विषय रस माते । वृद्ध भये सुधि प्रगटी मोको दुखित पुकारत ताते ॥ सुतनि तज्यो तिय तज्यो भ्रात तजि तनत्वच भई जु न्यारी । श्रवण न सुनत चरण गति थाकी नैन भये जलधारी ॥ पलित केश कफ कंठ बिरोध्यो कल न परी दिन राती । माया मोह न छाडै तृष्णा ए दोऊ दुख दाती ॥ अब या व्यथा दूरि करिबेको और न समरथ कोई । सूरदास प्रभुकरुणासागरतुमते होइ सु होई ॥ ५९ ॥ राग आसावरी ॥ पतित पावन जान शरन आयो । उदधि संसार शुभ

नाम नौका तरन अटल स्थान निज निगम गायो ॥ व्याध अरु गीध गणिका अजामेल द्विज चरण गौतमनारि परश पायो। अंत औसर अर्ध नाम उच्चार करि सुनत गज ग्राहते तुम छुड़ायो ॥ अबल प्रह्लाद बलदैत्य सुखही बचत दास ध्रुव चरण चित शीश नायो। पांडुसुत विपत मोचन महादास लखि द्रौपदी चीर नाना बढ़ायो ॥ भक्तवत्सल कृपानाथ अशरण शरण भार भूतल हरन यश सुहायो। सूर प्रभु चरण चित चेत चेतन करत ब्रह्म शिव शुक आदि शेष गायो ॥ ६० ॥राग आसावरी ॥ श्रीनाथ शारंगधर कृपा कर दीनपर डरत भव त्रासते राखिलीजै। नाहिं जप नाहिं तप नाहिं सुमिरन भक्ति शरण आयेनकी लाज कीजै ॥जीव जलधर जिते भेष धरि धरि तिते रचे लघु दीर्घ बहु अचल भारे। मुशल मुद्गर हनत त्रिविध कर्मनि गनत मोहिं दंडत धर्म दूत हारे ॥ वृषभ केशी मल्ल धेनुक अरु पूतना रजक चाणूरसे दुष्ट तारे। अजामिलि गणिका ते कहा मैं घट कियो तुम जु अब सूर चितते बिसारे ॥ ६१ ॥ कबहुँ नाहीं गहर कियो। सदा स्वभाव सुलभ सुमिरन वश भक्तनि अभय दियो ॥ गायगोपगोपीहितकारण गिरि करकमल लियो। अघ अरिष्ट केशी कालीनथ दावानलहिं पियो ॥ कंसवंश वधि जगसंधहति गुरुसुत आनि दियो। कर्षत सभा द्रुपदतनयाको अंबर अक्षय कियो ॥ सूर श्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुल हियो। काकी शरण जाउँ करुणामय नाहिंन और बियो ॥ ६२ ॥ राग सारंग ॥ ताते तुमरो भरोसो आवे। दीनानाथ पतित पावन यश वेद उपनिषद गावै ॥ जो तुम कहौ कौन खल तारचो तौ हौं बोलों साखी। पुत्रहेतु हरिलोक गयो द्विज सक्योनकोऊ राखी॥ गणिका किये कौन व्रत संयम शुक हित नाम पढ़ावै। मनसा करि सुमरचो गज बपुरो ग्राह परमगति पावै॥ बकी जु गई घोषमें छल करि यशुदाकी गति दीनी।और कहत श्रुति वृषभ व्याधकी जैसी गति तुम कीनी ॥ द्रुपदसुताहि दुष्ट दुर्योधन सभा माहिं पकरावै। ऐसो कौन और करुणामय वसन प्रवाह बहावै ॥ दुखित जानिकै सुत कुबेरके तिहि लगि आप बँधावै। ऐसो को ठाकुर जन कारन दुख सहि भलो मनावै॥दुर्वासा दुर्योधन पठयो पंडवअहित बिचारी।सुमिरत तीनों लोक अघाए न्हात भज्यो कुश डारी ॥ देवराज मख भंग जानिकै बरस्यो व्रजपर आई। सूर श्याम राखे सब निजकर गिरि लै भए सहाई॥६३॥ राग धनाश्री ॥दीनकोदयालुसुन्यों अभय-दान दाता। सांची बिरुदावलि तुम जगतके पितु माता ॥व्याध गीध गणिका गज इहिमें को ज्ञाता।सुमिरत तुम तबहिं आये त्रिभुवन विख्याता ॥ केशी कंस दुष्ट मारिमुष्टिक कियो घाता। अपने ध्रुव राज काज केतक यह बाता ॥ तीनलोक विभव दियो तंदुलके खाता। सर्वस प्रभु रीझि देत तुलसीके पाता ॥ गौतमकी नारि तारी नेकु परश लाता। और कुटिल तारि तारि काहे गर्वाता ॥ माँगतहै सूर त्याग जिहितन मनराता। अपनी प्रभु भक्ति देहु जासों तुम नाता ॥६४॥ राग मारू ॥सो कहा जु मैं न कियो जो पै सोइ सोई चित धरिहौ । पतितपावन विरद सांच कौन भांति करिहौ॥जबते जग जन्म लियो जीवहै कहायो।तबते छुटअवगुण इक नाम न कहि आयो॥साधुनिंदक स्वाद लंपट कपटी गुरुद्रोही। जितने अपराध जगत लागत सब मोही ॥ गृह गृह गृह द्वार फिरचो तुमको प्रभु छाँडे। अंध अंध टेक चलै क्यों न परै गाडे ॥ कमलनैन करुणामय सकल अंतर्यामी। विनय कहा करै सूर कूर कुटिल कामी ॥६५॥ राग सारंग ॥ कौन गति करिहौ मेरी नाथ। हौंतो कुटिल कुचील कुदरशन रहत विपयके साथ ॥ दिनबीतत

मायाके लालच कुल कुटुंबके हेत। सारी रैन नींद भरि सोवत जैसे पशू अचेत ॥कागज धरनि करै द्रुम लेखनि जलसायर मसि घोर। लिखैं गणेश जन्म भर ममकृत तऊ दोपनहिं ओर॥गज गणिका अरु विप्र अजामिल अगनित अधम उधारे। अपथ चाल अपराध करे मैं तिनहूं ते अति भारे॥ लिखि लिखि मम अपराध जन्मके चित्रगुप्त अकुलाये। भृगु ऋपि आदि सुनत चकृत भये यम सुनि शीश डुलाये॥ परम पुनीत पवित्र कृपानिधि पावन नाम कहायो। सूर पतित जब सुन्यो बिरद यह तब धीरज मन आयो॥ ६६ ॥ राग केदारा ॥ मेरी कौन गति ब्रजनाथ। भजन विमुख अरु शरण नाहीं फिरत विषयिन साथ॥ हौं पतित अपराध पूरण जरचो कर्म विकार। काम क्रोध रुलोभ चितवननाथ तुम्हेंहिंबिसार॥उचितअपनीकृपा करिहौ तबै तौ बनिजाइ।सोइ करहु जो चरण सेवै सूर जूंठनि खाइ॥ ६७ ॥राग धनाश्री ॥सोइ कछु कीजे दीनदयाल। जाते जन छिन चरण न छांडै करुणासागर भक्तरसाल॥ इन्द्रिय अजित बुद्धि विषयारत मनकी दिन दिन उलटी चाल। काम क्रोध मद लोभ महाभय अहनिश नाथ भ्रमत बेहाल॥ योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रत इनमें एको अंक न भाल। कहा करूं किहि भाँति रिझाऊं हौं तुमको सुन्दर नंदलाल॥ सुनि समरथ सर्वज्ञ कृपानिधि अशरण शरण हरण जग जाल। कृपानिधान सूरकी यह गति कासों कहै कृपण यहि काल॥ ६८ ॥ ॥ राग गूजरी ॥कृपा अब कीजिए बलि जाउं। नाहिं मेरे और कोउ बलि चरण कमल बिनु ठाउं॥ हौं असोच अकृत अपराधी सन्मुख होत लजाउं। तुम कृपालु करुणानिधि केशव अधम उधारन नाउँ॥ काके द्वार जाइहौं ठाढो देखत काहि सुहाउं। अशरण शरण नाम तुमरो हौं कामी कुटिल सुभाउं॥ कलँकी और मलीन बहुत मैं सेंतमेंत बिकाउं। सूर पतित-पावन पद अंबुज क्यों सो परिहरि जाउं॥६९॥राग सारंग॥ दीनदयालु पतितपावन प्रभु विरद भुलावत कैसो। कहा भयो गज गणिकातारी जो जन तारो ऐसो॥जो कबहुं नर जन्म पाइ नहिं नाम तुम्हारोलीनो। कामक्रोध मद लोभ मोह तजिअंत नहींचितदीनो॥ अकरमअबुधअज्ञान अवज्ञा अनमारग अनरीति। जाको नाम लेत अघ उपजै सो मैं करी अनीति॥ इन्द्री रसवश भयो भ्रमत रह्यो जोइ कह्यो सो कीनो। नेम धर्म व्रत तप नहिं संयम साधु संग नहिं चीनो॥ दरश मलीन दीन दुर्बल अति तिन कैसे दुख दामी। ऐसो सूरदास जन हरिको सब अधमनिमें नामी॥७०॥ राग देवगंधार॥ मोहि प्रभु तुमसोंहोड परी।नाजानों करिहौ जु कहा तुम नागर नवल हरी॥ हुतीं जिती तितनी मति गाई सो मैंसबैकरी।पावहुगेकहुँमोमहि तारनकोजिय जक पकरी॥ में जु रहो राजीवनैन दुरि पाप पहार दुरी। पावहु मोहिं कहो तारन को गूढ गँभीर खरी॥एक अधार साधुसंगतिको रचि पचिकै सँचरी।ज्यों गजशुचि नहाइ निरमलकरि पुनि रज शीश भरी॥मोकोमुक्त विचारतहो प्रभुपूंछत पहर घरी।श्रमतेतुम्हैंपसीनाऐहैकतियह जकनिकरी॥ सूरदास बिनती कहा बिनवै दोपनि देह भरी। अपनो विरद सँभारहुगे तब यामेंसबनिवरी॥ ॥७१॥ राग धनाश्री॥ नाथ सको तौ मोहि उधारो। पतितनिमें विख्यात पतित हौं पावन नाम तुम्हारो॥ बडे पतित पासंगहु नाहीं अजामिल कौन विचारो। भाजे नरक नाम सुनि मेरो यमनि दियो हठ तारो॥क्षुद्रपतित तुमतारि रमापति जिय जु करो जिन गारो। सूरपतितको ठौर कहूँ नहिं है हरिनाम सहारो॥ ७२ ॥ तुम कब मोसो पतित उधारचो। काहे को प्रभु विरद बुलावत विन मसकत को तारचो॥गीध व्याध गज गौतमकी तिय उनको कहा

निहोरो ।गणिका तरी आपनी करनी नाम भयो प्रभु तोरो ॥ अजामील तो विप्र तुम्हारो हुतो पुरातन दास । नेक चूकते यह गति कीनी फिर वैकुंठहि बास ॥ पतित जानि तुम सब जन तारे रह्यो न काहू खोट । तौ जानौं जौ मोहिं तारिहौ सूर कूर कवि ठोट ॥ ७३ ॥पतित पावन हरि बिरद तुम्हारो कौने नाम धरयो । हौंतो दीन दुखित अति दुर्बल द्वारे रटत परयो ॥ चारि पदारथ दए सुदामा तंदुल भेट धरयो । द्रुपदसुताकी तुम पति राखी अंबर दान करयो ॥ संदीपन-सुत तुम प्रभु दीने विद्या पाठ करयो । सूर कि बिरियां निठुर भये प्रभु मोते कछु न सरयो ॥ ७४ ॥ राग धनाश्री ॥ आजु हौं एक एक करि टरिहौं । कै हमहीं कै तुमहीं माधव अपुन भरोसे लरिहौं ॥ हौं तो पतित सात पीढिनको पतितै ह्वै निस्तरिहौं । अब हौं उघरि नचन चाहत हौं तुम्हैं बिरद बिनु करिहौं ॥ कत अपनी परतीत नशावत मैं पायों हरि हीरा । सूर पतित तबहीं लै उठिहै जब हँसि देहौ बीरा ॥७५॥राग नट ॥कहावत ऐसे दानी । चारि पदारथ दये सुदामहिं अरु गुरुको सुत आनी ॥ रावणके दश मस्तक छेदे शर गहि शारँग पानी । विभिषनको तुम लंका दीनी पूर बली पहिचानी॥विप्र सुदामा कियो अयाची प्रीति पुरातन जानी ।सूरदास सों कहा निठुर भए नैनन हूकी हानी ॥ ७६ ॥ राग धनाश्री ॥ मोसों बात सकुच तजि कहिये । कत ब्रीडत कोउ और बतावहु वाहीके ह्वै रहिये॥कैधौं तुम पावन प्रभु नाहीं कै कछु मोमें भोलो। तौ हौं अपनी फेरि सुधारों वचन एक जो बोलो॥तीनों पनमें और निबाही इहै स्वांगको काछे। सूरदासको यहै बडो दुख परत सबमके पाछे॥७७॥राग सारंग॥ प्रभुहौं बडी बेरको ठाढो।और पतित तुम जैसे तारे तिनहीं में लिखि काढो॥ युग युग यहै बिरद चलि आयो टेरि कहत हौं याते।मरियत लाज पांच पतितन में होब कहौ घट काते॥ कै प्रभु हार मानिकै बैठहु कै करो बिरद सही । सूर पतित जो झूठ कहत है देखौ खोजि वही ॥ ७८ ॥प्रभु हौं सब पतितनको टीको । और पतितसब दिवस चारिके हौं जन्मांतरहीको ॥ वधिक अजामिल गणिका तारी और पूत-नाहीको । मोहिं छांडि तुम और उधारे मिटै शूल क्यों जीको॥कोउ न समरथ अघ करिवेको खैंचि कहतहौं लीको । मरियत लाज सूर पतितनिमें हमहूंते को नीको ॥ ७९ ॥ हौंतो पतित शिरोमणि माधो । अजामील बातनहीं तारयो सुन्यों जो मोते आधो ॥ कै प्रभु हार मानिकै बैठहु कै अबहीं निस्तारो । सूर पतितको और ठौर नहिं है हरि नाम सहारो ॥ ८० ॥ माधो जू और न मोते पापी। घातक कुटिल चवाई कपटी महा र संतापी ॥ लंपट धूत पूत दमरीको विषय जाप को जापी । भक्ष अभक्ष अपेय पान करि कबहुँ न मनसा धापी ॥ कामी विवश कामिनीके रस लोभ लालसा थापी।मन क्रम वचन दुसह सबहिनसों कटुक वचन आलापी ॥ जेतिक अधम उधारे तुम प्रभु तिनकी गति मैं नापी ।सागर सूर भरयो विकारजल पतित अजामिल वापी ॥ ८१॥राग कान्हरा ॥हरि हौं सब पतितन पतितेश।और न सर करिवेको दूजो महामोह मम देश ॥ आशाके सिंहासन बैठ्यो दंभछत्र शिरतान्यो । अपयश अति नकीब कहि टेरयो सब शिर आय समान्यो॥मंत्री काम क्रोध निज दोऊ अपनी अपनी रीति।दुबिधा दुंद होत निशि बासर उपजावति विपरीत ॥ मोदी लोभ खवास मोहके द्वारपाल अहँकार।पाठ अहं ममता है मेरी मायाको अधिकार।सेवकतृष्णा भ्रमत टहल हित लहत न छिन विश्राम। अनाचार सेवकसों मिलिकैकरत चवावन काम॥ बाजमनोरथ गर्व मत्तगज असत कुमति रथ सूत ।पाइक मन बानैत अधीरज सदा दुष्ट मति दूत ॥गढ तजि भये नरकपति मोसों दीने रहत किंवार। सेना

साथ बहुत भाँतिनकी कीने पाप अपार ॥ निंदा जग उपहास करत मग बंदीजन यश गावत । हठ अन्याय अधर्म सूरनित नौबत द्वारबजावत॥८२॥राग धनाश्री॥सांचो सो लिखहार कहावै। काया ग्राम मसाहत करिकै जमा बांधिठहरावै॥मन यह तोकरिकैदअपनेमें ज्ञानजहतिया लावै। मांडि मांडि खरिहान क्रोधको पोता भजन भरावै ॥ बट्टा काट कसूर भर्म को फरद तलै लै डारै । निश्चय एक असल पै राखै टरै न कबहूं टारै ॥करि अवार जा प्रेम प्रीतिको असल तहां खतियावै । दूर्जी करद दूरि करि है यतनै कत तामें आवै ॥ मुजमिल जोरै ध्यान कुल्ह का हरिसों तहँ लै राखे । निर्भय रूपै लोभ छाँडि कै सोई बारिज राखे ॥ जमा खर्च नीके कारिराखै लेखा समुझि बतावै । सूर आप गुजरान मुहासिब लै जबाब पहुँचावै ॥ ८३ ॥ प्रभु जु मैं ऐसो अमल कमायो । साबिक जमा हुती जो जोरी मिनजालिक तललायो ॥ वासिलबाकी स्याहा मुजमिल सब अधर्म की बाकी । चित्तरगुप्त होत मुस्तौफी शरण गहूँ में काकी॥पांच मुहर्रिर साथ करिदीने तिनकी बडी विपरीति । जिम्में उनके मांगैं मोते यह तौ बडी अनीति ॥ पांच पचीस साथ अगवानी सब मिलि काज बिगारे । सुन तगीरीमेरी बिसरिगई सुधिमोतजि भये नियारे॥ बढो तुम्हार बरामद हू को लिखि कीनो है साफ । सूरदाकी यहै बीनती दस्तक कीजै माफ ॥ ८४ ॥ राग सारंग ॥ प्रभु हौं सब पतितनको राजा । निंदा परमुख पूरिरह्यो जग यह निसान तव बाजा ॥ तृष्णा देश रु सुभट मनोरथ इन्द्रियखङ्ग हमारे । मंत्रीकामकुमति देवे को क्रोध रहत प्रतिहारे ॥ गज अहंकार बढ्यो दिगबिजयी लोभछत्रकरि शीश । फौज असत संगतिकी मेरी ऐसो हौं मैं ईश ॥ मोहमई बंदीगुण गावत मागध दोप अपार । सूर पापको गढ दृढ कीनो मुहकम लाइ किंवार ॥ ८५ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि हौं सब पतितनको राव । कोकरिसकै बराबरि मेरी सो तौ मोहिं बताव॥व्याध गीध अरु पतितपूतनातिनमें बढिजो और।तिनमेंअजा-मेल गणिकापति उनमें में शिरमौर ॥ जहँ तहँ सुनियत यहै बडाई मो समान नहिं आन । अब रहे आजु कालिके राजा में तिनमें सुलतान ॥ अबलौं तौ तुम बिरद बुलायो भई न मोसों भेंट। तजौं बिरद कै मोहिं उधारो सूर गही कसि फेंट ॥ ८६ ॥राग सारंग ॥ हरि हौं सब पतितनको नायक । को करि सकै बराबरि मेरी और नहीं कोउ लायक॥जैसो अजामेलको दीनो सो पाटी लिखि पाऊं । तो विश्वास होइ मनमेरे औरो पतितबुलाऊं॥ यह मारग चौगुनो चलाऊं तौ पूरो ब्यापारी । बचन मानि लै चलौं गाँठि दै पाऊं सुख अति भारी॥पतित उधारन नाम सुन्यौं जब शरन गही तकि दौर । अबकै तौअपनी लै आयों बेर बहुरकी और ॥ होडा होडी मनहिभावते किये पाप भरि पेट । सबै पतित पाँइन तर डारौ इहै हमारी भेंट ॥बहुत भरोसो जानि तुम्हारो अघ कीनो भरि भाडो ।लीजै वेगि निवेरि तुरंतहि सूर पतित को टाडो ॥८७॥ राग धनाश्री ॥ मोसोंपतित न औरगुसाईं। अवगुण मोते अजहुँ न छूटत भली तजी अबताईं ॥ जन्म जन्म योंही भ्रमि आयो कपि गुंजा की नाईं । परशत शीत जात नहिं क्योंहू लैलै निकट बनाई ॥मोह्यो जाइ कनक कामिनि सों ममता मोह बढाई।जिह्वा स्वाद मीन ज्यों उरझ्यो सूझत नहिं फंदाई॥सोवत सुदिन भयो स्वप्नेमें पाई निधि जु पराई। जागि परचो कछु हाथ न आयो यह जगकी प्रभुताई ॥ परसे नाहिं चरण गिरिधरके बहुत करी अन्याई । सूर पतितको ठौर और नहिं राखि लेहु शरणाई ॥ ८८ ॥ हरि हौं महा पतित द्रोही अभिमानी । परमारथसों पीठि विपयरस भाव भगति नहिं जानी॥ निशि दिन दुखित मनोरथ करि करि पावतहू तृष्णा न बुझानी।शिर

पर काल नीच नहिं चितवत आयु घटत ज्यौं अँजुरी पानी ॥ विमुखनिसों रति जोरतदिनप्रति साधुनसों न कहूं पहिचानी । तिहि बिनु रहतनहीं निशि बासर जिहि सबदिनरसविपयबखानी॥ माया मोह लोभ नहिं जाने ऐसो वृन्दावन रजधानी । नवलकिशोर जलद तनुसुन्दर बिसरचो। सूर सकल सुखदानी ॥ ८९ ॥ माधव जू मोहिं काहेकी लाज । जन्म जन्म योंही भरमायो अभिमानी बे काज ॥ जल थल जीव जिते जग जीवन निरखत दुखित भयेदेव। गुण अवगुणकी समुझि न शंका परी आइ यह टेव ॥ सर्वस खाइ रह्यो घर बैठ्यो करचो न कछू बिचारी । सूर श्वानके पालनहारे आवत है नित गारी ॥ ९० राग सारंग ॥ माधवजू सो अपराधी हौं । जन्म पाइ कछु भलो न कीनो कहो सु क्यों निबहौं॥ सबसौं रीति कहत यमपुरकी गज पिपीलिकालौं ॥ पाप पुण्यको फल दुख सुख है भोग करौं जुइगों । मोको पंथ बताओ सोई नरक कि स्वर्ग लहौं । काके बल हौं तरौं गुसाईं कछु न भक्तिमों रहौं॥ हँसिबोलेजगदीश जगत्पति बात तुम्हारी यों । करुणासिंधु कृपालु कृपानिधि भजो शरण को क्यों । बात सुनेते बहुत हँसोगे चरण कमल की सौं । मेरी देह छुटत यम पठये जितक दूत घर मों ॥ लैलै सब हथियार आपुने सान धराये त्यों। जिनके दारुण दरश देखिके पतित करत म्योंम्यों॥दांतचबात चले मधुपुरते धाम हमारे को । ढूँढि फिरे घर कोउ न बतावै श्वपच कोरिया लों ॥ रिस भरि गए परम किंकर तब पकरचो छुटि न सकों । लै लै फिरे नगरमें घर घर जहां मृतक हौं हौं ॥ ता रिसते मोहिं बहुतक मारचो कहँ लौं बरणि कहौं ।हाय हाय मैं परचो पुकारचो राम नाम न बकों॥ ताल पखावज चले बजावत समधी सोभोकों । सूरदासकी भली बनीहै गर्जागईअरुपों॥९१ ॥ रागकान्हरा ॥थोरो जीवन बहुत म भारो कियो न साधु समागम कबहूं लियो न नाम तुमारो ॥ अति उन्मत्त मोह मायावश नहिं कछु बात विचारो । करत उपाव न पूंछत काहू गनत न खाटो खारो ॥ इन्द्री स्वाद विवश निशि वासर आप अपुनपो हारचो । जल उनमत्त मीन ज्यों बपुरो पांउ कुल्हारो मारचो॥ बांधी मोट पसारि त्रिबिध गुण कहूँ न बीच उतारचो । देख्यो सूर विचारि शीश परि तब तुम शरण पुकारचो ॥९२॥ राग धनाश्री ॥ अब मैं नाच्यों बहुत गुपाल । काम क्रोध को पहिरि चोलना कंठ बिषयकी माल॥महामोहको नेपुर बाजत निंदा शब्द रसाल । भरम भये मन भयो पखावज चलत कुसंगत चाल॥ तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि दे ताल। मायाको कटि फेटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल॥ कोटिक कला कांछि देखराई जल थल सुधि नहिं काल। सूरदास की सबै अविद्या दूरि करो नँदलाल ॥ ९३ ॥ ऐसी करत अनेक जन्म गये मन संतोष न आयो । दिन दिन अधिक दुराशा लाग्योसकललोक भरमायो॥ सुनि सुनि स्वर्ग रसातल भूतल तहीं तहीं उठि धायो । काम क्रोध मद लोभ अग्नि ते काहु न जरत बुझायो ॥ स्रक चंदन बनिता विनोद सुख यह जर जरत बितायो। मैं अज्ञान अकुलाइ अधिक लै जरत मांझ घृत नायो । भ्रमि भ्रमि हौं हारचो हिय अपने देखि अनल जग छायो । सूरदास प्रभु तुम्हरि कृपा बिनु कैसे जात नशायो ॥ ९४ ॥ बादिहि जनम गयो सिराइ। हरि सुमिरन नहिं गुरुकी सेवा मधुवन बस्यो न जाइ ॥ अबकी बेर मनुष्यदेहधरि भजों न आन उपाइ। भटकत फिरचो श्वान की नाईं नेक जूंठ के चाइ ॥ कबहुँनरिझये लाल गिरिधरन विमल विमल यश गाइ॥ प्रेम सहित पग बांधि घूंघुरू सक्योंन अंगनचाइ॥श्रीभागवत सुन्यो नहिं श्रवणनि नेकहूँ रुचि उपजाइ।अनन्य भक्त नरहरि भक्तनके कबहुँ म धोए

पाइ ॥ कहा कहौं जो अद्भुत है वह कैसे कहूँ बनाइ । भव अंभोधि नाम निज नौका सूरहिं लेउ चढाइ ॥ ९५ ॥ राग गौरी ॥माधव जू तुम कत जिय बिसरचो । जानत सब अंतरकी करणी जो मैं कर्म करचो ॥ पतित समूह सबै तुम तारे हुते जु लोग भरचो । हौं उनसे न्यारो करि डारचौं इहि दुख जात मरचो ॥ फिरि फिरि योनि अनंतनि भरम्यो अब सुख शरण परचो । इहि अवसर कत बांह छुडावत इहि डर अधिक डरचो ॥ हौं पापी तुम पतित उधारन डारे हो कत देत । जो जानत यह सूर पतित नहिं तौ तारो निज हेत ॥ ९६ ॥ राग केदारा ॥ जो पै तुमही विरद बिसारचो । तो कहो कहां जाउँ करुणामय कृपण कर्मको मारचो ॥ दीनदयालु पतितपावन यश वेद बखानत चारचो ॥ सुनियत कथा पुराणनि गणिका व्याध अजामिल तारचो ॥ राग द्वेष विधि अविधि अशुचि शुचि जिन प्रभु जिते सँभारचो कियो न कहूं विलम्ब कृपानिधि सादर सोच निवारचो ॥ अगणित गुण हारि नाम तुम्हारे अजाअपुनपो धारचो । सूरदास प्रभु चितवत काहे न करत करत श्रम हारचो॥९७॥ रागसारंग॥ जैसे और बहुत खल तारे । चरणप्रताप भजन महिमा सुख को कहि सकै तिहारे ॥ दुःखित गीध दुष्ट मति गणिका नृगै कूप उधारे । विप्र बजाइ चल्यो सुतके हित काटि महाअघ भारे ॥ व्याध दुरद गौतमकी नारी कहो कौन व्रत धारे। केशी कंस कुवलिया मुष्टिक सब सुख धाम सिधारे ॥उरजनिको विष बांटि लगायो यशुमतिकी गति पाई ।रजक मल्ल चाणूर दवानल दुख-भंजन सुखदाई ॥ नृप शिशुपाल महा पद पायो सर औसर नहिं जाने ।अघ बक तृणावर्त धेनुक इति गुण गहि दोष न माने ॥ पांडुबधू पटहीन सभामें कोटिन बसन पुजाए । विपति काल सुमिरत छिन भीतर तहीं तहीं उठि धाए ॥गोप ग्वाल गोसुत जल त्रासत गोवर्धनकरधारचो। संतत दीन महा अपराधी काहे सूर बिसारचो ॥ ९८॥ राग केदारा ॥ बहुरि की कृपाहू कहा कृपाल । विद्यमान जन दुखित जगतमें तुम प्रभु दीनदयाल ॥ जीवत यांचत कनकनि निर्धन दर दर रटत बिहाल । तनु छूटे ते धर्म नहीं कछु जो दीजे मणिमाल ॥ कहा दाता जो द्रवै न दीनहिं देखि दुखित कलिकाल । सूरश्यामको कहा निहोरो चलत वेदकी चाल ॥ ९९ ॥ कौन सुनै यह बात हमारी। समरथ और न देखों तुम बिनु कासों बिथा कहौं बनवारी ॥ तुम अविगत अनाथके स्वामी दीनदयालु निकुंज बिहारी । सदा सहाय करी दासन को जो उर धरी सोइ प्रतिपारी ॥ अब केहि शरण जाउँ यादवपति राखि लेहु बलि त्रास निवारी। सूरदास चरणनिके बलि बलि कौन गुसाते कृपा बिसारी॥ १००॥ राग कल्याण ॥ जैसे राखहु तै-सहि रहौं। जानत दुख सुख सब जनके तुम मुख करि कहा कहौं ॥ कबहुँक भोजन लहौं कृपानिधि कबहूं भूख सहौं । कबहुँक चढौं तुरंग महागज कबहुँक भार बहौं ॥ कमलनयन घनश्याम मनोहर अनुचर भयो रहौं। सूरदास प्रभु भक्त कृपानिधि तुम्हरे चरण गहौं ॥ १०१ ॥ राग धनाश्री ॥ कब लगि फिरिहै दीन भयो। सुरत सरित भ्रम भँमर परचो तन मन परचत न लह्यो ॥ बातचक्र तृष्णा प्रकृति मिलि हौं तृण तुच्छ गहों । उरझ्यो विवश कर्म तरु अंतर श्रम सुख शरण चह्यो ॥ विनती करत डरात कृपानिधि नहीं न परत रह्यो । सूर करन वर रच्यो जु निज कर सो कर नाहिं गह्यो ॥१०२॥ तेऊ चाहत कृपा तुम्हारी। जेहिके वश अनमिष अनेक गण अनुचर आज्ञाकारी ॥ बहत पवन भरमत दिनकर दिन फनपति शिर न डुलावै ।

दाहक गुण तजि सकत न पावक सिंधु न सलिल बहावै ॥ शिव विरंचि सुरपति समेत अब सेवत प्रभु पद चाये। जो कछु करन चहत सो कीजत करत है अति अकुलाये ॥ तुम अनादि अविगत अनंत गुण पूरण परमानंद। सूरदास पर कृपा करो प्रभु श्रीवृन्दावन चन्द ॥ १०३ ॥ राग मलार ॥ तुम तजि कौन नृपति के जाऊं। काके द्वार जाय शिर नाऊं पर हथ कहां बिकाऊं ॥ ऐसो को दाताहै समरथ जाके दए अघाऊं। अंतकाल तुमरो सुमिरन गति अनत कहूं नहिं जाऊं ॥ रंक अयाची कियो सुदामा दियो अभयपद ठाऊं। कामधेनु चिंतामणि दीनो कल्पवृक्ष तरु छाऊं ॥ भव समुद्र अति देखि भयानक मनमें अधिक डराऊं। कीजै कृपा सुमिरि अपनो प्रण सूरदास बलि जाऊं ॥ १०४ ॥ राग मारू ॥ मेरी तौ गति पति तुम अंतहि दुख पाऊं। हौं कहाइ तिहारो अबकौनको कहाऊं॥कामधेनु छांडि कहा अजा जा दुहाऊं । हय गयंद उतरि कहा गर्दभ चढि धाऊं ॥ कंचन मणि खोलिडारि कांच गर बँधाऊं।कुं-कुमको तिलक मेटि काजर मुख लाऊं ॥ पाटंबर अंबर तजि गूदर पहिराऊं। अंबको फल छांडि कहां सेंवरको धाऊं ॥ सागरकी लहर छौंडि खार कत अन्हाऊं। सूर कूर आँधरो मैं द्वार परचो गाऊं ॥ १०५ ॥ राग आसावरी ॥ श्याम बलरामको सदा गाऊं। श्याम बलराम बिनु दूसरे देवको स्वप्नहू माहिं हृदय न लाऊं ॥ यहै जप यहै तप यम नियम व्रत यहै यहै मम प्रेमफल यहै पाऊं ॥ यहै मम ध्यान यह ज्ञान सुमिरन यहै सूर प्रभु देहु हौं यहै पाऊं ॥१०६ ॥ राग देवगंधार॥ मेरे जिये सु ऐसी बनी।छांडि गुपाल और जो जाचौं तो लीजै जननी॥कहाकांचको संग्रह कीजै त्याग अमोल मनी । विषको मेरु कहांलों कीजै अमृत एक कनी ॥ मन वच क्रम सतभाउकतहौं मेरे श्याम धनी। सूरदास प्रभु तुमरी भक्ति लगि तजी जाति अपनी ॥ १०७॥ मेरो मन अनत कहां सुख पावै। जैसे उडि जहाजको पक्षी फिर जहाज पर आवै ॥ कमलनैनको छांडि महा-तम और देव को धावै। परमगंगको छांडि पियासो दुर्मति कूप खनावै॥जिनमधुकरअंबुजरस चाख्यो क्यों करील फल खावै। सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै॥ १०८॥ राग सारंग ॥तुम्हारी भक्ति हमारे प्रान। छूटिगये कैसे जन जीवत ज्यों पानी बिन प्रान ॥जैसे मगन नाद सुनि सारँग बधत वधिक तनु बान ।ज्यौं चितवै शशिओर चकोरी देखतही सुखमान॥जैसे कमल होत परिफूलित देखत दरशन भान। सूरदास प्रभु हरिगुण मीठे नितप्रति सुनियत कान ॥१०९॥रागधनाश्री ॥ जो हम भले बुरे तौ तेरे।तुम्हैं हमारी लाज बढाई विनती सुन प्रभु मेरे॥ सब तजि तुम शरणागत आयो निजकर चरण गहेरे। तुम प्रताप बल बदत न काहू निडर भये घर चेरे ॥ और देव सब रंक भिखारी त्यागे बहुत अनेरे । सूरदास प्रभु तुमरि कृपाते पायो सुख जु घनेरे ॥ १०० ॥ राग बिलावल ॥ हमें नँदनंदन मोल लिये । यमके फंद काटि मुकराए अभय अजात किये॥भाल तिलक श्रवणनि तुलसी दल मेटे अंक बिये । मूंडे मूंड कंठ बनमाला मुद्रा चक्र दिये ॥ सब कोउ कहत गुलाम श्यामको सुनत सिरात हिये। सूरदास को और बडो सुख जूंठनि खाइ जिये॥१११॥हरि हरि हरिहरि सुमरन करो।हरिचरणाविंद उर धरो॥ हरिकी कथा होइ जब जहां। गंगाहू चलिआवै तहां॥यमुनासिंधुसरस्वतिआवै।गोदावरीबिलंबन लावै॥सर्व तीर्थको बासा तहां।सूर हरिकथा होवै जहां॥११२॥श्रीभागवत वर्णन निमित्त ॥रागसारंग ॥श्री-मुख चारि श्लोक दिये ब्रह्माको समुझाइ।ब्रह्मानारदसों कहेनारदव्यास सुनाइ॥व्यासकहेशुकदेव-सों द्वादश कंध बनाइ।सूरदास सोई कहै पद भाषा करिगाइ११३॥व्याससोंशुकउत्पत्ति। रागबिलावल॥

व्यास कह्यो जो शुकसों गाई ।कहों सु सुनो संतचित लाई ॥ व्यास पुत्रहित बहुत तप कियो । तब नारायण यह वर दियो ॥ ह्वैहै पुत्र भक्त अतिज्ञानी । जाकी जगमें चलै कहानी॥यहैहृदय हरि कियो उपाई । नारदमुनि संशय उपजाई ॥ तब नारद गिरिजापै गये । तिनसों यहिविधि पूंछत भये ॥ मुंडमाल शिव ग्रीवा जैसे । मोसों वरणि सुनावो तैसे ॥ उमा कही मैं तो नहिं जानी । अरु शिवहू मोसों न बखानी ॥ नारद कह अब पूँछहु जाई । बिनु पूँछे नहिं देइ बताई॥ उमा जाइ शिवको शिर नाई । कह्यो सुनो बिनती सुरराई ॥ मुंडमाल कैसे तव ग्रीवा । ताको मोहिं बतावहु सीवा ॥ शिव तब बोले वचन रसाल । उमा आहि यह सुनि मुंडमाल ॥जब जब जन्म तुम्हारो भयो । तब तब मुंडमाल मैं लयो ॥ उमा कह्यो शिव तुम अविनाशी । मैं तुम्हरे चरणनकी दासी ॥ मेरे हित इतनो दुख भरत । मोहिं अमर काहे नहिं करत ॥ तब शिव उमा गये ता ठौर । जहाँ नहीं द्वितिया कोउ और॥सहसनाम तहाँतिन्हैं सुनावो । जातेआप अमरपद पावौ ॥ तहां हुतो इक शुकको अंग । तिनयह सुन्योसकल परसंग ॥ ताकोशिवमारनकोधायो। तिन उडि अपुनो आप बचायो॥उड़त २ शुक पहुँच्यो तहां । नारि व्यासकी बैठी जहां॥शिवहू ताके पाछे धाए । पै ताको मारन नहिं पाये ॥ व्यासनारितबहीं मुख बायो । तब तनु तजि मुख-माहिं समायो ॥ द्वादश वर्ष गर्भमें रह्यो ॥ व्यास भागवत तब तिहि कह्यो ॥ बहुरो जब यदुपति समुझायो । तेरी माता बहुदुख पायो ॥ तू जेहिहित बाहर नहिं आवै । सो हमसों कहि क्यों न सुनावै ॥ प्रभु तुव माया मोहिं सतावत । ताते हौं बाहर नहिं आवत ॥ हरि कह्यो अबनव्यापि है माया । तब वह गर्भ छांडि जग आया ॥ मायामोहताहि नहिं दह्यो । सुन्यो ज्ञान सो सुमिरन रह्यो ॥ जैसे शुकको व्यास पढायो । सूरदास तैसे कहि गायो ॥ ११४ ॥ श्रीभागवत वक्ता श्रोता प्रस्ताव वर्णन । राग बिलावल ॥ व्यासदेव जब शुकहि पढायो। सुनिकैं शुक सो हृदय बसायो ॥ शुक सों नृपति परीक्षित सुन्यो । तिन पुनि भलीभांतिकै गुन्यो॥ सूत शौनकनिसोंपुनिकह्यो। विदुर मैत्रेयसों पुनि लह्यो ॥ सुनि भागवत सबनि सुखपायो।सूरदास सो वरणि सुनायो ११५ सूत संवाद।रागबिलावल ॥ सूत व्याससों हरिगुण सुने । बहुरो तिन निज मनमें गुने ॥ बहुरौ नैमिषारपै आयो । तहां ऋषिनको दरशन पायो ॥ ऋषिन कह्यो हरिकथा सुनावहु । भली भाँति हरिको गुण गावहु ॥ प्रथम कह्यो तिन व्यास अवतार । सुनौ सूर सो अब चित धार ॥ ॥ ११६ ॥ व्यास अवतारवर्णन ।राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि-चरणाविन्द उर धरौ ॥ व्यासजन्म भयो जा परकार । कहौं सो कथा सुनौचितधार ॥ सत्यवती मच्छोदरि नारी ॥ गंगातट ठाढीसुकुमारी॥पाराशर ऋषि तहाँ चलिआए। विवश होइ तिनकेमद धाए ॥ ऋषि कह्यो ताहि दान रति देहि । मैं वर दीन्यो तोहिं सुलेहि ॥ तू कुमारिकाबहुरौ होई॥ तोको नाउँ धरै नहिं कोई ॥ मेरो कह्यो न जो तू करिहै। देउँ शराप महादुख भरिहै॥सत्यवती शाप भय मान ।ऋषिको वचन कह्यो परिमान ॥ व्यासदेव ताके सुत भये । होत जन्म बहुरो वन गये ॥ योजनगंधा माता करी । मच्छ बास ताकी तब हरी ॥ देखो कामप्रताप अधिकाई वश कियो पाराशर ऋषिराई ॥ प्रबल शत्रु आहै यह मार । याते सुनौचलौ संभार ॥ या विधि भयो व्यास अवतार । सूर कह्यो भागवत अनुसार ११७॥ श्रीभागवत आदि तरणकारण ।राग बिलावल॥ भयो भागवत चारि प्रकार। कहौं सुनो सो अब चित धार ॥ सतयुग लाख वर्षकी आई। त्रेता दश सहस्र कह गाई ॥ द्वापर सहस एक रहिगई । कलियुग शत संवत रहिगई॥

सोऊ कहन सुनन को भाई।कलि मर्याद कही नहिं जाई॥ ताते हरि करि व्यास अवतार।करी संहिता वेद विचार॥ बहुरि पुराण अठारह गाए। पै तोऊ शांती नहिं पाए॥ तब नारद तिनके ढिग आय। चारि श्लोक कहे समुझाय॥ ए ब्रह्मासों कहे भगवान। ब्रह्मा मोसे कहे बखान॥ सोई अब मैं तुमसोंभाषे।कहौं भागवतइहि हिय राखे॥ श्रीभागवत सुनै जो कोई।ताको हरि-पद प्रापति होई॥ ऊँच नीच व्योरो न बडाई। ताकी साखी मैं सुनि पाई॥जैसे लोहा कंचन होई। व्यास भई मेरी गति सोई॥ दासीसुत ते नारद भयो। दुःख दासपनको मिटि गयो॥ व्यासदेव तब करि हरि ध्यान। कियो भागवतको व्याख्यान॥सुनै भागवत जो चित लाई।सूर सु हरि भजि भव तरिजाई॥ ११८ ॥राग सारंग॥ कह्यो शुक श्रीभागवत विचार। जाति पांति कोऊ पूछत नहिं श्रीपतिके दरबार॥ श्रीभागवत सुनै जो हित करि तरै सु भव जलधार।सूर सुमिरि गुण रटि निशि बासर राम नाम निज सार॥ ११९ ॥ नाममाहात्म्यवर्णन। राग कान्हरा॥ बडी है राम नामकी ओट। शरण गये प्रभु काढि देत नहिं करत कृपाके कोट॥बैठत सभा सबै हरिजूकी कौन बडो को छोट। सूरदास पारसके परसे मिटत लोहके खोट॥ १२० ॥राग धनाश्री॥ सोई भलो जु रामहिं गावै। श्वपच प्रसन्न होइ बड सेवक बिनु गुपाल द्विज जन्म न भावै॥वाद विवाद यज्ञ व्रत साधे कतहूं जाइ जन्म डहकावै। होइ अटल जगदीश भजनमें सेवा तासु चारि फल पावै॥ कहूं ठौर नहिं चरण कमल बिनु भृंगी ज्यों दशहूं दिशि धावै। सूरदास प्रभु संत-समागम आनँद अभय निसान बजावै॥ १२१ ॥राग सारंग॥ काहूके बैर कहा सरै। ताकी सर-बरि करै सु झूठो जाहि गुपाल बडोकरै॥शशि सन्मुख जो धूर उडावै उलटितिहीके मुख परै॥ चिरिया कहा समुद्र उलीचै पवन कहा पर्वत टरै॥ जाकी कृपा पतित होइ पावन पग परसत पाहन तरै। सूर केश नहिं टारिसकै कोउ दाँत पीसि जो जगत मरै॥ १२२ ॥ राग केदारा॥ है हरि भजनको परमान। नीच पावै ऊँच पदवी बाजते नीशान॥भजनको परताप ऐसो जल तरै पापान। अजामिल अरु भील गणिका चढे जात बिमान॥ चलत तारे सकल मंडल चलत शशि अरु भान॥ भक्तध्रुवकी अटलपदवी रामकेदीवान॥निगमजाको सुयश गावत सुनत संत सुजान। सूर हरिकी शरन आयो राखि ले भगवान॥ १२३ ॥ भगवान विदुर गृह भोजन करन वर्णन।राग विलावल॥ हरि हरि हरि सुमिरो सबकोई। ऊंच नीचहरि गिनत न दोई॥ विदुर गेह हरिभोजन पाये। कौरवपतिको मनहिं न ल्याये॥ कहौं सुकथा सुनो मन लाई। सूर श्याम भक्तनि मन आई॥ १२४ ॥ भए पांडवनिके हरि दूत। गये जहां कौरवपति धूत॥ उनसों जो हरि वचन सुनाये। सूर कहत जो सुनि चित लाये॥ १२५ ॥ सुनि राजा दुर्योधन हम तुमपै आये। पांडुसुवन जीवित मिले दै कुशल पठाए॥क्षेम कुशल अरु दीनता दण्डवत सुनाए। कर जोरे बिनती करी दुर्बल सुखदाए॥ पांच गांव पांचो जना करि किरपा दीजे। ए तुमरे कुल वंश हैं हमरी सुनिलीजे॥ उनकी हमसों दीनता कोउ कहि न सुनावो। पांडु सुतनि अरु द्रौपदीको मारिकढावो॥ राजनीति जानो नहीं गोसुत चरवारे। पीवहु छाँछ अघाइकै कब केरे वारे॥ गई गाउँके बटला मरं आदि सहाई। इनकी हम लज्जा नहीं तुम राजबडाई॥भीषम द्रोण कर्ण सुनै कोउ मुखहु न बोलै। ए पांडव क्यों काढिए धरणी डग डोलै।हम कछु लेत न देत हैं ए वीर तुम्हारे। सूरदास प्रभु उठि चले कौरव सुत हारे॥ १२६ ॥ उद्धवप्रति वचन॥ राग धनाश्री॥ उद्धव चलो विदुरके जाइये। दुर्योधनके कौन काज जहांआदर भाव न पाइये॥गुरु

मुख नहीं बडे अभिमानी का। सेव कराइयै। टूटी छानी मेघ जल वरषै टूटे पलँग बिछाइयै॥ चरण धोइ चरणोदक लीनो त्रिया कहै प्रभु आइयै। सकुचति फिरति जु वदन छिपावै भोजन कहा मँगाइयै॥ तुमतो तीनि लोकके ठाकुर तुमतेकहा दुराइयै।हम तौ प्रेम प्रीतिके गाहक भाजी शाक चखाइयै॥ हँसि हँसि खात कहत मुख महिमा प्रेम प्रीति अधिकाइयै। सूरदास प्रभु भक्तनके वश भक्तन प्रेम बढाइयै ॥ १२७ ॥ हरि ठाढे रथ चढे दुवारे। तुम दारुक आगे ह्वै देखहु भक्त भवन किधौं अनत सिधारे॥ सुनि सुंदरि उठि उत्तर दीनो कौरव-सुत कछु काज हँकारे। तहँ आये यदुपति कहियतहै कमल नयन हरि हितू हमारे॥ तिहिको मिलन गयो मेरो पति ते ठाकुर हैं प्रभू हमारे। सूर प्रभू सुनि संभ्रम धाए प्रेम मगन तन बसन बिसारे॥ १२८ ॥प्रभुजू तुम हौ अंतर्यामी।तुम लायक भोजन नहिं गृहमें अरु नाहीं गृहस्वामी। हरि कह्यो साग पत्र जो मोहिं प्रिय अमृत या सम नाहीं। बारंबार सराहि सूर प्रभु शाक विदुर घर खाहीं॥ १२९ ॥भगवान दुर्योधन संवाद।राग सोरठ॥ क्यों दासीसुतके पांव धारे। भीषम कर्ण द्रोण मंदिर तजि मम गृह तजे मुरारे॥ सुनियत दीन हीन वृषलीसुत जाति पांतिते न्यारे॥ तिनके जाइ कियो तुम भोजन यदुवंशी सब लाजनि मारे॥हरि जू कहें सुनो दुर्योधन सोइ कृपण मम चरण बिसारे। वेई भक्त भागवत वेई रागद्वेषते न्यारे॥ सूरदास प्रभु नंदनँदन कहैं हम ग्वालन जुठिहारे॥ १३० ॥राग सारंग॥ हमते बिदुर कहा है नीको। जाके रुचिसों भोजन कीनो सुनियत सुत दासीको॥ द्वै विधि भोजन कीजे राजा बिपति परे कै प्रीती। तेरी प्रीतिन मोहिं आपदा यहै बडी बिपरीती॥ ऊँचे मंदिर कौन काजके कनक कलश जु चढाये। भक्त भवनमें मैं जु वसतहौं यद्यपि तृणकरि छाये॥ अंतर्यामी नाम हमारो हौं अंतरकी जानों। तद्यपि सूर भक्तवच्छलही भक्तन हाथ बिकानों॥ १३१ ॥ हरि तुम क्यों न हमारे आए। षटरस व्यंजन छांडि रसोई साग बिदुर घर खाये॥ ताकी झुगियामें तुम बैठे कौन बडापन पायो। जाति पांति कुलहूते न्यारो है दासीको जायो॥मैं तुहि कहौं अरे दुर्योधन सुन तू बात हमारी। बिदुर हमारो प्राण पियारो तू बिषया अधिकारी॥ जाति पांति हौं सबकी जानौं बाहिर छाक मँगायो। ग्वालनिके सँग भोजन कीनो कुलके लाज लगायो॥ जहँ अभिमान तहां मैं नाहीं यह भोजन बिष लागे। सत्य पुरुष बैठ घटहीमें अभिमानीको त्यागे॥ जहँ जहँ भीर परे भक्तनको तहां तहां उठि धाऊं। भक्तनके हौं संग फिरत हों भक्तन हाथ बिकाऊं॥ भक्तबछल है विरद हमारो वेद समृति हूं गाये। सूरदास प्रभु यह निज महिमा भक्त-न काज बढाये॥ १३२ ॥ द्रौपदी सहाय॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि सुमिरौ सबकोई।नारि पुरुष हरि गनत न दोई॥ द्रुपदसुताकी राखी लाज। कौरवपतिको पारयो ताज॥ कहौं सु कथा सुनो चित लाई। सूरश्याम भक्तन बनिआई॥ १३३ ॥ कौरव पासा कपट बनाये। धर्मपुत्रको जुवा खिलाये॥ तिन हारयो सब भूमि भँडारी। हारीबहुरि द्रौपदीनारी॥ताकोपकरि सभामें लाये। दुःशासनकरि बसन छुडाये॥ तब वह हारिसों रोइ पुकारी। सूर राखि मम लाज मुरारी॥ १३४ ॥ राग सारंग ॥अब कछु नाहीं नाथ रह्यो। सकल सभामें बैठि दुशासन अम्बर आनि गह्यो॥ हारयो सब भंडार भूमि अरु अब बनवास लयो। एकैचीर हुतो मेरे परसो इन हरन चह्यो॥ हा जगदीश राखि यहि अवसर प्रगट पुकारि कह्यो। सूरदास उमँगे दोउ नयना बसन प्रवाह बढयो॥ १३५॥ राग बिलावल॥ जेतीलाजगोपालहिमेरी॥ तितनी नाहिं बधू हौंजाकी

अंबर हरत सबन तन हेरी ॥ पति अति रोष मारि मनमहियां भीषम दई वेद विधि टेरी । हा जगदीश द्वारका स्वामी भई अनाथ कहत हौं टेरी॥बसन प्रवाह बढ्यो जब जान्यो साधु साधु सबहुन मति फेरी। सूरदास स्वामी यश प्रगट्यो जानी जनम जनमकी चेरी ॥ १२६ ॥ राम धनाश्री ॥निबहो बाँह गहेकी लाज। द्रुपदसुता भाषत नँदनन्दन कठिन भई है आज ॥ भीषम कर्ण द्रोण दुर्योधन बैठे सभा विराज। तिहि देखत मेरो पट काढत लीक लगी तुम काज ॥ खंभ फारि हिरनाकुश मार्‍यो ध्रुव नृप धर्‍यो निवाज। जनकसुता हित हत्यो लंकपति बांधो साइर गाज ॥ गद्गद सुर आतुर तनु पुलकित नैननि नीर समाज । दुखित द्रोपदी जानि प्राणपति आये खगपति त्याज॥पूरे चीर बहुरि तनु कृष्णा ताके भरे जहाज।काढि काढि थाक्यो दुःशासन हाथनि उपजी खाज ॥ विकलअमानकयो कौरवपति पार्‍यो शिरकोताज।सूर प्रभू यह रीति सदाही भक्त हेत महाराज ॥१२७॥राग बिहागरा ॥ठाढी कृष्ण कृष्ण यों बोले ॥ जैसे कोई विपति परेते दूरि धर्‍यो धन खोले॥ पकर्‍यो चीर दुष्ट दुःशासन बिलख बदन भइ डोलै। जैसे राहु नीच ढिग आये चंद्रकिरन झकझोलै ॥ जाके मीत नन्दनन्दसे ढकिलइ पीत पटोले । सूरदास ताको डर काको हरि गिरिवरके ओलै ॥ १२८ ॥ राग धनाश्री॥ तुमरी कृपा बिनु कौन उबारै । अर्जुन भीम युधिष्ठिर राजा सुमति नकुल बल भारै ॥ केश पकरि लायो दुःशासन राखौ लाज मुरारे । नाना बसन बढाइ दियो प्रभु बलि बलि नंददुलारे ॥ नगन न होति चकित भयो राजा शीश धुँन करसों कर मारे॥जापै कृपा करै करुणामय को ताकीदिशि सकैनिहारे॥जोजो जन निश्चयकरिसेवैहरि प्रभु अपनोबिरद सँभारे।सूरदास प्रभुअपनेजननको कबहूँ उरतेनेकु न टारै॥१२९॥सूतवचन शौनकनि प्रति ॥ राग बिलावल॥हरि हरि हरि हरि सुमरन करो। हरि चरणारविंद उर धरौ ॥ हरि पंडवको ज्यों दियो राज। अरु पुनि गयो राज्य ज्यों त्याज ॥ बहुरो भयो परीक्षित राजा। तिनको शाप विप्रसुत साजा॥ सुनि हरिकथा मुक्त सो भयो । सूत शौनकनिसों सो कह्यो ॥ कहौं सो कथा सुनो चित धार। सूर कहै भागवत अनुसार ॥ ॥ १४० ॥ भीष्मोपदेश युधिष्ठिर प्रति । राग बिलावल ॥ हरिहरि हरिहरि सुमिरन करौ ।हरिचरणारविंद उर धरौ ॥ भारत युद्ध होइ जब बीता। भयो युधिष्ठिर अति भयभीता॥ कुरुकुल हत्या मोते भई। धौं अब कैसे करिहै दई ॥ करौं तपस्या पाप निवारौं । राजछत्र नाहीं शिर धारौं॥लोगन तिहि बहुविधि समझायो। पै तिहि मनसंतोप न आयो ॥ तब हरि कह्यो टेक परिहरो।भीष्मपितामह कहै सुकरौ।॥ हरि पांडव रणभूमि सिधाए। भीषम देखि बहुत सुख पाए॥ हरि कह्यो राज्य न करत धर्मसुत। कहत हते मैं भ्रात भ्रातसुत ॥ गुरुहत्या मोते ह्वै आई। कहौ सु छूटै कौन उपाई ॥ राजधर्म भीषम तवगायो। दान आपदा मोक्ष सुनायो।।पै नृपको संदेह न गयो- तब भीषम नृपसों पुनि कह्यो॥ धर्मपुत्र तू देखि विचार। कारन करनहार करतार ॥ नरके किए कछू नहिं होई। करता हरता आपुहि सोई॥ ताको सुमिरि राज्य तुम करौ ।अहंकार चितते परिहरौ ॥ अहंकार किये लागत पाप। सूरश्याम भजि मिटै संताप॥ १४१॥ राग धनाश्री ॥ करी गोपालकी सब होई। जो अपनो पुरुपारथ मानत अतिझूठो है सोई ॥ साधन मंत्र यंत्र उद्यम बल यह सब डारहु धोई। जो कछु लिखिराखी नँदनंदन मेटि सकै नहिं कोई॥ दुख सुख लाभ अलाभ समुझि तुम कतहिं मरत हौं रोई। सूरदास स्वामी करुणामय श्याम चरण मन पोई॥ १४२॥ राग कान्हरा ॥होत सुजो रघुनाथ ठटी।पचि पचि रहे सिद्ध साधक मुनि तऊ बढी

न घटी ॥ योगी योग धरत मन अपने औ शिर राखि जटी। ध्यान धरत महादेव अरु ब्रह्मा तिनहूं सों न छटी॥जपि तपि तपसी आराधन कर चारों वेद रटी। सूरदास भगवंतभजन बिनु कर्म रेख न कटी ॥ १४३ ॥राग सारंग॥भावी काहू सों न टरै। कहां वह राहु कहां वह रवि शशि आनि संयोग परै ॥ मुनि बशिष्ठ पंडित अतिज्ञानी रचि रचि लग्न धरै। तात मरन सियहरन राम बन बपु धरि बिपति भरै ॥रावण जीति कोटि तैंतीसों त्रिभुवन राज्य करै।मृत्यु बांधि कूपमें राखै भावीवश सु मरै ॥ अर्जुनके हरि हितू सारथी सोऊ बन निकरै। द्रुपदसुताके राजसभा दुःशाशन चीर हरै ॥हरिश्चंद्रसो को जग दाता सो घर नीच भरै।जो गृह छांडि देश बहु धावै तउ वह संग फिरै ॥ भावीके वश तीनि लोक है सुर नर देह धरै। सूरदास प्रभु रची सु ह्वैहै को करि सोच मरै॥ १४४ ॥राग कान्हरा॥ताते सेइए यदुराई। सम्पति बिपति विपति सों सम्पति देह धरेको यहै सुभाई॥तरुवर फूलै फलै परिहरै अपने कालहि पाई।सरवर नीर भरै पुनि उमडै सूखे खेह उडाई ॥द्वितिय चन्द्र बाढत ही बाढै घटत घटत घटि जाई। सूरदास संपदा आपदा जिनि कोऊ पतिआई॥ १४५॥मलार॥इहि बिधि कहाघटैगोतेरो।नंदनँदन करिघरको ठाकुर आपुन ह्वै रहु चेरो ॥ कहा भयो जो सम्पति बाढी कियो बहुत घर घेरो।कहुँ हरिकथा कहूँ हरि पूजा कहुँ संतनि को डेरो ॥ जो वनिता सुत यूथ सकेलै हय गय रथनि घनेरो। सब तजि सुमिरण सूर श्याम गुण यहै साच मत मेरो ॥१४६ ॥ भारत वर्णन।राग सारंग॥ भक्तबछल श्रीयादवराई । भीषमकी परतिज्ञा राखी अपनो वचन फिराई॥ भारत माहिं कथा यह विस्तृत कहत होय विस्तार । सूर भक्त वत्सलता वरणौं सर्व कथाको सार ॥१४७॥अर्जुन दुर्योधनको गवन कृष्णगेह॥भक्तवत्सलता प्रगट करी। सत संकल्प वेदकी आज्ञा जनके काज प्रभु दूरि धरी ॥ भारतादि दुर्योधन अर्जुन भेटन गए द्वारकापुरी। कमलनैन बैठे सुखशय्या पारथ पाइतरी ॥ प्रभु जागे अर्जुन तन चितयो कब आये तुम कुशल घरी। ता पाछे दुर्योधन भेटहि शिर दिशते मन गर्व धरी॥ दुहूँ मनोरथ अपनो भाष्यो तब श्रीपति बातें उचरी। युद्ध न करौं शस्त्र नहिं पकरौं एक ओर सेना सिगरी ॥ हरि प्रभाव राजा नहिं जान्यो कह्यो सेन मोहिं देहु हरी। अर्जुन कह्यो जानि शरणागत कृपा करौ ज्यों पूर्वकरी।निजपुर आइ राइ भीषमसों कही जु बातें हरि उचरी।सूरदास भीषमपरतिज्ञा शस्त्र लिवाऊं पैजकरी १४८ दुर्योधन वचन भीष्म प्रति।राग धनाश्री॥ मैं तोहि पूछौं भूतलराई। सुनहु पितामह भीषम मम गुरु कीजै कौन उपाई॥ उत अर्जुन अरु भीम पंडुसुत दोउ करवार गहै गंभीर। इतै भगदत्त द्रोण भूरिश्रव तुम सेनापति धीर ॥जे जे जात परत ते भूतल ज्यों ज्वालागत चीर।कौनसहाय जानियत नाहिंन होत वीर निर्वीर ॥ जब तोसों समुझाय कही नृप तबतैं करी नकान।पावककिरण दहत सबही दल तूलसुमेरु समान॥अविगत अविनाशी पुरुषोत्तम हांकतरथकीक्यान।अचरज कहा पार्थ जो वेधे तीनलोक इक वान ॥तेरे काज करौं पुरुषारथयथाजीवघटमांही।यहनकहौं हौं रन चढि जीतौं मो मति नहिं अवगाही॥ अजहूं समुझि कह्यो करि मेरो कहत पसारे बाहैं। कहो ताहि कों सम्वारि पूजे प्रभु पारथ दोउमाहैं॥ अबतो सूर शरण तकि आयो सोइ रजायसु दीजे। जिहिते रहै छत्रपन मेरो वहै मतौ कछु कीजै ॥ १४९ ॥ भीष्म प्रतिज्ञा। राग मलार ॥

१ इतहि करण।

आज जो हरिहि न शस्त्र गहाऊं ॥ लाजौंहौं गंगा जननीको शंतनुसुत न कहाऊं ॥ स्यंदन खंडि महारथ खंडों कपि ध्वज सहित डुलाऊं।इती न करौं शपथ मोहिं हरिकी क्षत्रिय गतिहि न पाऊं॥ पांडवदल सन्मुख ह्वै धाऊं सरिता रुधिर बहाऊं। सूरदास रणभूमि बिजय बिन जियत न पीठि दिखाऊं ॥ १५० ॥ राग मारू ॥ सुरसरि सुवन रणभूमि आये। बाणवर्षा लगे करन अति क्रोध ह्वै पार्थ औसान तब सबै भुलाये। कह्यो करि कोप प्रभु अब प्रतिज्ञा तजो नहीं तो मरत रण हम हराए। सूर प्रभु भक्तवत्सल बिरद आनि उर ताहि याबिधि बचन कहि सुनाये ॥ १५१ ॥ भगवत बचन अर्जुन प्रति ॥राग बिलावल ॥ हम भक्तनके भक्त हमारे। सुन अर्जुन परतिज्ञा मेरी यह व्रत टरत नटारे ॥ भक्तेकाज लाजजिय धरिकै पाइँ पयादै धाऊं। जहँ जहँ भीर परै भक्तनको तहँ तहँ जाय छुडाऊं ॥ जो मम भक्तसों बैर करत है सो निज बैरी मेरो। देखि विचारि भक्त हित कारण हांकतहों रथ तेरो ॥ जीते जीत भक्त अपनेकी हारे हारि बिचारों। सूरदास सुनि भक्त बिरोधी चक्र सुदर्शन जारों ॥ १५२ राग सारंग ॥ गोबिंद कोपि चक्र कर लीनो। छांडि आपनो प्रण यादवपति जनको भायो कीनो ॥ रथते उतरि अवनि आतुर ह्वै चले चरण अति धाए। मनु शकित भूभार उतारन चलत भए अकुलाए ॥ कछुक अंगते उडत पीतपट उन्नत बाहु बिशाल स्वेद स्रोत तनु शोभा कन छबि घन वर्षत जनु लाल ॥ सूर सुभुजा समेत सुदर्शन देखि बिरंचि भ्रम्यो। मानो आनि सृष्टि करिबेको अंबुज नाम भज्यो १५३ राग मलार ॥मेरी प्रतिज्ञा रहै कि जाउ। इत पारथ कोप्यो है हमपर उत भीषम भट राउ॥ रथते उतरि चक्र धरि कर प्रभु सुभट हि सन्मुख आए। ज्यौं कंदर ते निकसि सिंह झुकि गज यूथनिपर धाये॥ आय निकट श्रीनाथ विचारी परी तिलकपर दीठि।शीतल भई चक्रकी ज्वाला हरि हँसि दीनी पीठि॥जय जय जय चिंतामणि स्वामी शंतनुसुत यों भाखै। तुमबिनु ऐसो कौन दूसरो जो मेरो प्रण राखै ॥ साधु साधु सुरसरीसुवन तुम मैं प्रण लागि डराऊं।सूरजदास भक्त दोनों दिशि कापर चक्र चलाऊं ॥ ॥ १५४ ॥अर्जुन भीष्म संवाद। राग धनाश्री ॥ कहो पितु मोसों सोइ सतभाव।जाते दुर्योधन दल जीतों किहि विधि कवन उपाव ॥ जब लगि जी अंतर घट मेरे को सखबरि करि पावै।चिरंजीव जौलौ दुर्योधन जियत न पकरहिं आवै॥ कौरव छांडि भूमिपर कैसे दूजो भूप कहावै।तो हम कछु नबसाइ पार्थ जो श्रीपति तोहि जितावै॥अब मैं शरण तुम्हे ताकि आयो हमें मंत्र कछु दीजे। नातर कुटुँब सैन संहारि कर कौन काजको जीजे॥द्रुपदकुमार होइ रथ आगे धनुष गहो तुम बाम। ध्वजा बैठि हनुमत कलगाजे प्रभु हांके रथ जान ॥ केतिक जीव कृपण मम वपुगे तजें कालहू प्रान। सूर एकही बाणबिडारे श्रीगोपालकी आन ॥ १५५ ॥ भीष्म देह त्याग। राग सारंग ॥ पारथ भीषमसों मति पाई। कियो सारथी शिखंडि आई ॥ भीषम ताहि देखि मुख फेर्यो।पारथ युद्ध हेतु रथ प्रेर्यो ॥ कियोयुद्ध अतिही विकरार।लागी चलनि रुधिरकी धार।।भीषम शरशय्यापर पर्यो।पै दक्षिणायन लगि नहिं मर्यो।हरि पांडव समेत तहँ आए।सूरज प्रभु भीषम मनभाए१५६ राग सारंग॥हरिसों भीषम बिनय सुनाई।कृपा करी तुम यादवराई॥ भारतमें मेरो प्रण राख्यो। अपनो कियो दूरि कर नाख्यो॥तुम बिन प्रभु ऐसी को करैजो भक्तनके वश अनुसरै॥तुम दर्शन सुर नर मुनि दुर्लभ। मोको भयो सो अतिही सुलभ ॥ दूरि नहीं गोविंद वह काल। सूर कृपा कीजै गोपाल ॥ १५७ गोविंद अब न दूरि वह काल। दीनानाथ देवकीनन्दन भक्तवत्सल गोपाल ॥ मैं भीषम तुम कृष्ण सारथी किये पीत पट लाल ।बहुत सनाह समर शर

बेधे कनक बेल ज्यौं ताल ॥ तुमरे चरणकमल मम मस्तक कत ताको शरजाल। सूरदास जन जानि आपनो देहु अभयकी माल १५८॥ राग मलार ॥वा पट पीतकी फहरान। कर धरि चक्र चरणकी धावनि नहिं बिसरति वह बान॥ रथते उतरि अवनि आतुर ह्वै कच रजकी लपटान। मानौ सिंह शैलते निकस्यो महामत्तगज जान॥जिनगुपाल मेरो प्रण राख्यो मेटि देवकी कान॥ सोई सूर सहाय हमारे निकट भये हैं आन॥ १५९ ॥ राग सारंग ॥भीषम धरि हरिको उरध्यान। देखत हरिके तजे परान॥तासु क्रिया करि सब गृह आए। राजासिंहासन बैठाए॥ हरि पुनिद्वारावती सिधाये। सूरदास हरि को गुण गाये॥ १६०॥ अथ भगवानको द्वारका गमन ॥ राग बिलावल ॥ धर्मपुत्र को दै हरि राज। निज पुर चलिबेको कियो साज॥ तब कुन्ती बिनती उचारी।सुनोकृपा करि कृष्ण मुरारी॥ जब जब हमको बिपदा परी। तब तब प्रभु सहाय तुम करी॥ तुमते बिमुख राज्य किहि काम।सूर बिसारहु हमैं न श्याम॥१६१॥ अथ कुंतीकी बिनय ॥राग कान्हरा ॥ प्रभुजू बिपदा भली बिचारी।धिक यह राज्य बिमुख चरणनते कहति पंडुकीनारी ॥लाक्षामंदिर कौरव बिरच्यो तहँ राखे बनवारी।दुर्योधन की सभा द्रौपदी अंबर दए उबारी॥अतिथिऋषीश्वर शापन आए शोक भयो जिय भारी। स्वल्प शाकते तृप्त किए सब कठिन आपदा टारी॥परतिज्ञा प्रहलादकि राखी श्री नरहरि वपुधारी।सोई सूर सहाय हमारे संतनको हितकारी॥ १६२॥

अथ विदुरको उपदेश राजा धृतराष्ट्र गांधारी प्रति, वन गमन, राजा युधिष्ठिरको बैराग्य वर्णन।

राग बिलावल॥कुरुपतिज्यों वनगमन कियो।धर्मसुवन विरक्त ज्योंभयो॥वरणिसुनाऊं ता अनुसार। सूत कही जैसे परकार॥भारतादि कुरुपतिकी जथा। चली पांडवनकी जब कथा॥ विदुर कह्यो मत करो अन्याई। देहु पांडवन राज्य बटाई॥कुरुपति कह्यो धान मम खाइ। पंडुसुतनकी करत सहाइ॥याको ह्यांते देहु निकारी।बहुरिन आवै मेरे द्वारी॥विदुर शस्त्र सब तहीं उतारी। चल्यो तीरथनि मुंड उघारी॥ भारतके बीते पुनि आयो। लोगन सब वृत्तांत सुनायो॥तवपूँछो कुरुपति हैं कहां।कह्यो पंडुसुत मंदिर जहां॥राजा सेवा भलि विधि करत।दिन प्रति सुख संपति तहँ भरत॥ बिदुर कह्यो देखो हरिमाया। जिन इह सकल लोक भरमाया॥ जिहि हरि कृपाकरचो सो छूटचो। इन माया सब लोगनि लूटचो॥इहिके पुत्र एकसौ भए।तिनैं बिसारि सुखी ए हुए॥अब मैं उनको ज्ञान सुनाऊँ। जिहिं तिहिं विधि वैराग्य उपाऊँ॥ बहुरो धर्मपुत्र पै आयो ।राजा देखि बहुत सुख पायो ॥करि सन्मान कह्यो आ भाई। करी हमारी बहुत सहाई॥ लाक्षागृहते जरत उबारे।अरु बालापनते प्रतिवारे॥कौन कौनतीरथफिरि आए।विदुर सकल वृत्तान्त सुनाए॥ बहुरि कह्यो हरि सुधि कछु पाई।कह्यो न कछू रह्यो शिर नाई॥ बहुरो कौरवपति ढिग आए। पूछे समाचार मत भाए॥कह्यो युधिष्ठिर सेवा करत। ताते बहुत अनंदित रहत।कह्यो पुत्रसुधि आवत कबहीं॥ कह्यो भाविएके वश सबहीं॥ विदुर कह्यो शतपुत्र तिहारे। पंडव सुतनि कलंक संहारे॥ तिनके गृह तुम भोजन करत। अरु पुनि कहत सुखै हम धरत।धिक तुम धिक या कहिबे ऊपर। जीवत रहिहो कौलौं भूपर॥ श्वान तुल्य है बुद्धि तुम्हारी। जूंठन काज सहत दुख भारी॥ द्रौपदिके तुम बसन छिनाए। इन तुम राज बहुत दुख पाए॥ इनके गृह रहि सुख तुम मानत।अति निलज्जको लाज न आनत॥जीवनआश प्रबल तुम लेखी।साक्षात सो तुममें देखी॥ काल अग्नि सबही जग जारत। तुम कैसे जीवन न विचारत॥आयुतुम्हारी गई सिराइ।वन चलि भजो द्वारकाराइ॥ कुरुपतिकह्यो अंध हम दोई। वनमें भजन कौनविधि होई॥विदुर कहैसेवामैं

करिहौं।सेवा करत नेक नहिं टरिहौं॥अर्धनिशा ताको लै गयो।प्रात भए नृप विस्मयभयो॥बूढमुए कै कहुँ उठि गये।तिनके ताप नृपति बहुतए॥वहां जाइ कुरुपति बल योग। दियो छांडि तनको संयोग ॥गांधारी सहगामिनि कियो।बिदुरभक्त तीरथ मग लियो॥इहि अंतर नारद इहँआयो। नृपको सब वृत्तांत सुनायो॥ नृपके मन उपजो बैराग । भजो सूर प्रभु अब सब त्याग॥१६३॥ अथ हरिवियोग पांडवनको उत्तर गमन राग सारंग ॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो ।हरि चरणारविन्द उर धरो॥हरिबियोग पांडव तजिराज। गमन कियोपरीक्षितराज ॥कहौं सुकथा सुनौ चितधार।सूरकह्यो भागवत अनुसार ॥१६४॥राग बिलावल॥राजासों अर्जुन शिरनाई। कह्यो सुनौ बिनती महाराई ॥ बहुदिन भे हरिसुधि नहिं पाई।आज्ञा होइ तो देखहुँ जाई॥ यह कहि पार्थ हरिपुर गए।सुन्यो सकल यादव क्षय भए॥अर्जुन सुनत नयन जलधार।पर्‌यो धरणि पर खाइ पछार ॥ तब दारुक संदेश सुनायो।कह्यो हरिजू जो गीता गायो॥सो स्वरूप मम हृदये आन। रहियो सदा करत मम ध्यान॥तब अर्जुन मन धीरज धारि।चल्यो संग लै जे नर नारि॥तहँ भिल्लनिसों भई लराई।लूटे बिन सब श्याम सहाई ॥अर्जुन बहुत दुखित तब भए। इह अपसगुन होत दिन नए॥रोवें वृभष तुरंग अरु नाग। श्याल दिवस निशि बोलें काग ॥ कंपै भुव बर्षा नहिं होई। भए सोच चित यह नृप जोई ॥ इहि अंतर अर्जुन फिरि आयो। राजाके चरणन शिर नायो ॥ राजा ताको कंठ लगाई। कह्यो कुशल हैं यादवराई ॥ बल वसुदेव कुशल सब लोई। अर्जुन यह सुनि दीन रोई ॥ राजा कह्यो कहा भयो तोहिं। तू क्यों कहि न सुनावै मोहिं॥काहू असत्कार तोहिंकियो।कै कहि दान न द्विजको दियो॥ कै शरणागतको नहिं राख्यो। कै तुमसों काहू कटु भाख्यो ॥ कै हरिजू भए अन्तर्ध्यान। मोसों कहि तू प्रकट बखान ॥ तब अर्जुन नैनन जल डारि। राजासों किय वचन उचारि ॥ सूरज प्रभु बैकुंठ सिधारे।तिहि बिन को मम काज सँवारे ॥ १६५॥ रागधनश्री हरि बिनु को पुरवैमेरोस्वारथ।मुंडहि धुनत शीश कर मारत रुदन करत नृप पारथ॥थाके हस्त चरणगति थाकी अरु थाक्यो पुरुपारथ। पांच बाण मोहि शंकर दीने तेऊ गए अकारथ ॥ जाके संग सेतुबन्ध कीनो अरु जीत्यो महभारथ।गोपीहरी सूरके प्रभु बिन घटतनप्राणपदारथ॥ ॥१६६ ॥राग बिलावल ॥यह सुनि राजा रोइ पुकारे। भीमादिक रोये पुनि सारे।रोवत सुनि कुंती तहां आई। कह्यो कुशल हैं यादवराई ॥ अर्जुन कह्यो सबै लरि मुए। हरिबिनु सब अनाथ हम हुए॥कुंतीप्राण तजे धरि ध्यान।जीवन मरन उतै भल जान॥राज्यपरीक्षितको नृप दीना।बज्रनाभ मथुरापति कीना॥ द्रुपदसुता समेत सब भाई।उत्तरदिशा गए हर्षाई॥योगपंथ करि उन तनु तजे। सूर सबै ते हरि पद भजे ॥ १६७ ॥अथ श्री भगवान् परीक्षित गर्भरक्षा, जन्म वर्णन ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरनकरौ।हरिचरणारबिन्द उर धरौ॥हरि परीक्षितै गर्भ मँझार। राखिलियो निज कृपा अधार॥कहौं सु कथा सुनौ चितलाई।जो हरि भजे रहै सुख पाई॥भारत युद्ध वितत जब भयो। दुर्योधन अकेल तहँरह्यो॥अश्वत्थामा तापै जाई।ऐसी भांति कह्यो समुझाई॥हमसों तुमसों बाल मिताई।हमसों कछु न भई मित्राई॥अब जो आज्ञा मोको होई। छांडि बिलंब करों अब सोई ॥ राज्य गयेको दुःखन सोई।पांडव राजभयो जो होई॥उनकेमुएहीय सुखहोई।जो करिसको करो अब सोई ॥ हरि सर्वज्ञ बात यह जान । पांडुसुतनिसों कह्यो बखान॥आज सरस्वतितट रहौ सोई।पै यह बात न जानै कोई॥पांडवहरिकीआज्ञा पाइ।तजि गृह रहे सरस्वति जाइ ॥ काहूसों यह कहि न सुनाई। वहां जाइ सब रैन बिताई। अश्वत्थामा तब इहां आए। द्रौपदिसुत तहां

सोवत पाए ॥ उनको शिर लै गयो उतारि । कह्यो दुर्योधन आयो मारि ॥ बिन देखे ताको सुख छयो । देखेते दूनो दुख भयो ॥ ए बालक तैं वृथा जु मारे । पुनि कुरुपति तजि प्राण सिधारे ॥ अश्वत्थामा भय करि भग्यो । इहां लोग सबसोवतजग्यो॥ द्रौपदिदेखिसुतनदुखपायो ।अर्जुनसों यह वचन सुनायो॥अश्वत्थामा जब लगि मारों। तब लगि अन्न न मुखमें डारों॥हरि अर्जुन रथपर चढि धाये । अश्वत्थामापै चलि आये ॥ अश्वत्थामा अस्त्र चलायो। अर्जुनहू ब्रह्मास्त्र पठायो ॥ उन दोनोंसे भई लराई । तब अर्जुन दोउ लए बुलाई ॥ अश्वत्थामाको गहि लाए । द्रौपदि शीश मुठी मुकराए ॥ याके मारे हत्या होई। मूयो जिवत न देख्यो कोई ॥ अश्वत्थामा बहुरि खिसाई। ब्रह्मअस्त्रको दियो चलाई॥गर्भ परीक्षित जारन गयो । तब हरि ताहि जरन नहिं दियो॥ रूप चतुर्भुज गर्भ मँझार । ताको तासों लियो उबार ॥ जन्म परीक्षित को जब भयो ।कह्योचतुर्भुज अब कहँ गयो ॥पुनि जब हरिको देखौं जोई।पाइ संतोष सुखीहोउँसोई॥राजाजन्मसमयको देखि। मनमें पायो हर्ष बिशेखि ॥ गर्भ परीक्षित रक्षा करी । सोई कथा सकल बिस्तरी ॥ श्रीभगवान कृपा जिहि करै । सूर सो मारे काके मरै ॥ १६८ ॥ अथ परीक्षित राजाको कलियुगदंड। ऋषि शाप । राग सारंग ॥ हरि हरिभक्तनको शिरनाऊं । हरि हरिभक्तनके गुण गाऊं ॥ हरि हरिभक्त एक नहिं दोई । पै यह जानत बिरला कोई ॥ भक्त परीक्षित हरिकोप्यारो।गर्भमाहँ होतो जब बारो॥ब्रह्म अस्त्रते ताहि बचायो।युग युग बिरद यहै चलि आयो ॥ बहुरि राज्य ताकहँ जब भयो । मिस दिग्विजय चहूं दिशि लयो ॥ सकल प्रजा सुधर्म रत देखे । ताके मन बहु हर्ष विशेखे ॥ कुरुक्षेत्रमें पुनि जब आयो। गाय वृषभ तहँ दुःखित पायो ॥ तासु वृषभके पग त्रय नाहीं ।रोवत गाय देखके ताहीं॥वृषभ धर्म पृथ्वी सो गाई । वृषभ कह्यो तासों या माई ॥ मेरे हेत दुखी तू होत । कै अधर्म तुम पर अच्छोत ॥ गो कह्यो हरि बैकुंठ सिधारे । शम दमउनही संग पधारे॥तप संतोप दया अरु गयो ।ज्ञान यमादिक सब लय भयो॥यज्ञ साधना कोउ नकरै। कोऊ धर्म न मनमें धरै॥अरु तुमको बिन पाँइन देखि । मोहि होतहैदुःखविशेखि ॥ इह अंतर राजा शूद्र आयो।वृषभ गऊको पांव चलायो ॥ ताहि परीक्षित खड्ग उठाइ ।बहुरो वचन कह्यो या भाइ । तू को कौन देश है तेरो ॥ केछल गह्यो राज्य सब मेरो ॥ या विधि नृपति परीक्षित कह्यो । पै वासों उत्तर नहिं लह्यो ॥ कह्यो वृषभसों को दुखदाई । तासु नाम मोहिं देहु बताई ॥ इंद्र होइ ताहुको मारों । तुमरो यह संताप निवारों॥ वृषभ कह्यो तुम ऐसेइ राव । पै मैं लेउं कौनको नाँव ॥ कोउ कह हरिइच्छा दुख होई । द्वितिया दुखदायक नहिं कोई ॥ कोउ कह कर्म दुःखके दाता । काहू दुख नहिं देत विधाता ॥ कोउ कह शत्रु होत दुखदाई । सु तौ मैं न कीनी शत्राई ॥ काके नाम बताऊं तोको । दुखदायक अरिष्ट सम मोको ॥ लहत आपने दुख दातार। तुमही देखो करिय विचार ॥तबविचारकरि राजादेख्यो । शूद्रनृपतिकलियुगकारिलेख्यो॥वृषभ धर्म अरु पृथ्वी गाइ । इनको भयो इहां दुखदाइ ॥ ताहि कह्यो तुम बडा अधर्मी ।तो समान नहिं और कुकर्मी ॥ क्षमा दया तप पग तें काट्यो। छांडि देश मम यह कहि डाट्यो ॥तिन कह्यो मोमें एक भलाई । तुमसों कहों सुनो चितलाई ॥ धर्म बिचारत मनमें होई । मनसा पाप न लागतकोई ॥ राज तुम्हारो है सब ठौर । तुम बिनु नृपति न द्वितिया और ॥ जौन ठौरमोहिंआज्ञा होई । ताहि ठौर रहौं मैं जोई ॥ हो हरि बिमुख रु वेश्या जहां । सुरापान बधिकन गृह तहां॥ जुवा खेलत जहां जुवारी । ए पांचों हैं ठौर तुमारी ॥ पांचौं होइँ नृपति ए जहां। मोकोठौरबता-

बहु तहां॥तब नृप याको कनक बतायो ।कनक मुकुट लखि सो लपटायो॥इक दिन राव अखेटे गयो । ता बनमाँह पियासो भयो ॥ ऋपि शमीकके आश्रम आयो ।ऋपि हरिपदको ध्यान लगायो ॥ राजा जल ता ऋषिसों मांग्यो । ताको मन हरिपदसों लाग्यो ॥राजाको उत्तर नहिं दियो। तब मनमाहिं क्रोध नृप कियो॥ यह सब कलियुगको परभाव ।जो नृपके मन भयो कुठाव ऋषिकी कपट समाधि विचारी । दियो भुजंग मृतक गर डरी ॥ ऋषि समाधिमहँ त्योंहीं रह्यो। शृंगीऋषि सों लरिकन कह्यो ॥ शृंगीऋपि तब कियो बिचार । प्रजा दुःख कर नृपति गुहार ॥ नृपति दुःख कहिये किहिजाई। दियो शाप तोहिं तक्षक खाई॥दैकरिशाप पितापैआयो। देख्यो सर्प पितागर नायो॥ रोवन लाग्यो सु मृतक जान । रुदन करत छूट्यो ऋपिध्यान। सुतसों कह्यो कहा भयो तोहिं । कहि न सुनावत निज दुख मोहिं ॥ शृंगीऋपि सब कहि समुझायो । [illegible] भुजंग सो ग्रीवा नायो ॥ यह अपराध बडो उन कीनो । तक्षकडसन शाप में दीनो॥ऋपिकह्यो बहुत बुरो तुम कीनो । जो यह शाप नृपतिको दीनो ॥ तुव शरापते मरिहै सोई । यह अपराध मोहिं सब होई ॥ सुखसों सोवत राज याहि सब । दुख पैहै सो सकल प्रजा अब ॥ ताकी रक्षा हरिजू करी। हरि अवज्ञा तुम अनुसरी॥इहां राजा मनमें पछताई । मैं यह कियों बडोअन्याई॥ जाके हृदय बुद्धि यह आवै । ताको फल सो भलो न पावै ॥ ऋपि शिपको भेज्यो समझाई। नृपसों कह तुम ऐसे जाई ॥ मम सुत शाप दियो या भाई । सप्तम दिनतोहितक्षकखाई ॥ शृंगी-ऋपि यह किय बिन जाने । होत कहा अबके पछताने ॥ ताते तुम उपाव सो करो । जाते भव सागरको तरो ॥ नृप सुनि लाग्यो करन विचार। सप्तम दिन मरिबो निर्धार॥ यज्ञदानकरिसुर-पुर जैये । तहां जाइके सुख बहु लहिये ॥ बहुरि कह्यो सुरपुर कछु नाहिं । पुण्य क्षीण तिहि ठौर गिराहिं॥ ताते सुत कलत्र सब त्यग । गहों एक हरिपद अनुराग॥बहुरि कह्यो अब हो कहा त्याग। खोयो जन्म विषय सुख लाग ॥ सूर न हरिपदसों चित लायो। इत उत देखत जन्म गँवायो ॥ ॥ १६९ ॥वैराग्य उपदेश परीक्षित मन प्रति। धनाश्री ॥इत उत देखत जन्म गयो।या माया झूठीके लालच दुहुँ दृग अंध भयो ॥ जन्म कष्ट में पाय दुखित भये अति दुख प्राण सह्यो । वे त्रिभुवनपति बिसरिगए तुहिसुमिरतक्यों न रह्यो ॥श्रीभागवतसुनो नहिं श्रवणनि बीचहिभटक मुयो । सूरदास कहि सब जग पूज्यो युगयुग भक्तजियो ॥१७०॥ राग सारंग ॥ जन्म सिरानो अटके अटके । राज काज सुत पितुकी डोरी विन विवेक फिरचो भटके॥ कठिन जु ग्रंथि परी मायाकी तोरी जात न झटके । ना हरिभजन न संत समागम रहे बीचहीलटके ॥ ज्यों बहु कला काछ दिखरावै लोभ न छूटत नटके । सूरदास शोभा क्यों पावै पिय विहीन धन मटके ॥ ॥ १७१ ॥ जन्म सिरानो ऐसे ऐसे । कै घर घर भरमत यदुपति बिन कै सोवत कै बैसे ॥ कै कहुँ खान पान रसनादिक कै कहुँ बाद अनैसे । कै कहुं रंक कहूं ईश्वरता नट बाजीगर जैसे ॥ चेत्यो नहीं गयो टारि अवसर मीन विना जल जैसे । यह गति भई सूरकी ऐसी श्याम मिलैं धौं कैसे ॥ १७२॥ राग देवगंधार ॥ विरथाजन्मलियो संसार । करी न कबहूं भक्ति हरिकी मारिजननी भारि॥यज्ञजपतप नाहिंकीनो अल्पमति विस्तारि । प्रगट ब्रह्म दुरयो नहीं तू देखि नैन पसारि ॥प्रबल अविद्या ठग्यो सब जग जन्म जुवा हारि।सूर हरिको सुयश गावहु जाहि मिटि भव भारि ॥ १७३॥ राग सोरठ ॥ काया हरिके काम न आई । भाव भक्ति जहं हरियश सुनियत तहां जात अलसाई । लोभातुर ह्वै काम मनोरथ तहां सुनत उठि धाई ॥ चरण कमल

सुंदर जहँ हरिकौ क्योंहू न जात नवाई ॥जब लगि श्याम अंग नहिं परसत अध हिज्यों भरमाई। सूरदास भगवंत भजन तजि विषय परम बिष खाई ॥ राग धनाश्री ॥ १७४ ॥सबै दिन गए बिषयके हेत । तीनोंपन ऐसेही बीत केश भये शिर श्वेत ॥ आंखिनि अंध श्रवण नहिं सुनियतथाके चरण समेत । गंगाजल तजि पियत कूपजल हरितजि पूजत प्रेत ॥ रामनामबिन क्योंछूटोगेचंद ग्रहे ज्यौं केत । सूरदास कछु खर्च न लागत रामनाम मुख लेत ॥ १७५ ॥ राग सारंग ॥जोतू राम नाम चित धरतो । अबको जन्म आगलौ तेरो दोऊ जन्म सुधरतो॥ यमको त्राससबैमिटिजातो भक्त नाम तेरो परतौ। तंडुल घृत सँवारि श्यामको संत परोसो करतो॥ हो तो नफा साधुकी संगति मूल गांठ नहिंटरतो।सूरदास वैकुंठ पंथमें कोउ न फेंट पकरतौ ॥ १७६ ॥ रागमलार॥ दोमें एकौतो न भई।ना हरि भजे न गृह सुख पावे वृथा बिहाइ गई॥ ठानीहुतीऔर कछु मनमें औरै आनि ठई । अविगत गति कछु समुझि परत नहिं जो कछु करत दई॥सुत सनेह तिय सकल कुटुंब मिलि निशि दिन होत खई । पदनखचंद चकोरबिमुखमन खात अँगारमई॥बिपय बिकार दवानल उपजी मोह बयार बई ।भ्रमत भ्रमत बहुते दुख पायो अजहुँ न टेव गई॥ कहा होत अबके पछताने होनी शिर बितई । सूरदास सेये न कृपानिधिजो सुख सकलमई ॥१७७॥ रागसारंग ॥ यह सब मेरियै कुमति । अपनेही अभिमान दोष दुख पावत हों मैं अति ॥ जैसे केहरि उझक कूपजल देखे आप परत । कूप परचो पुनि मर्म न जान्यो भई आय सुइ गत ॥ ज्यों गज फटिक शिला में देखत दशनन जाइ अरत । जो तू सूर सुखहि,चाहतहै तौ क्यों बिपय परत ॥ १७८ ॥ राग केदारा ॥झूठहि लगि जन्म गँवायो । भूल्यो कहां स्वप्नके सुखको हरिसों चित न लगायो। कबहुँक बैठ्यो रहसि रहसिके ढोटा गोद खिलायो । कबहुँक फूल सभामें बैठ्यो मूँछनि ताव दिवायो ॥टेढी चाल पाग शिर टेढी टेढे टेढे धायो। सूरदास प्रभु क्यों नहिं चेतत जब लगि काल न आयो॥ १७९ ॥राग केदारा ॥ जगमें जीवतहीको नातो । मनबिछुरेतनु छार होइगो कोउ न बात पुछातो ॥ मैं मेरी कबहू नहिं कीजे कीजे पंच सुहातो । विपयअसक्त रहत निशि बासर सुख सीरो दुख तातो ॥साँचझूठकरि मायाजोरीआपुन रूखो खातो।सूरदास कछु थिर नहिं रहई जो आयो सो जातो ॥ १८०॥ राग धनाश्री ॥ कहा लाइ तैं हरिसों तोरी। हरिसों तोरि कौनसों जोरी ॥ शिरपर धरि न चलेगोकोऊ अनेकजतनकरि माया जोरी।राज पाट सिंहासन बैठ नील पदम हूं सों काहे थोरी॥मैं मेरीकरि जन्मगँवावत जबलगि नाहिं परत यम डोरी । धन जोवन अभिमान अल्प जल कहै कूर आपुनी बोरी ॥ हस्तीदेखि बहुतमन गर्वित ता मूरखकी मति है थोरी। सूरदासभगवंतभजन बिनु चलेखेलिफागुनकी होरी ॥१८१॥ बिचारतही लागे दिन जान। सजल देह कागज ते कोमल किहि विधि राखे प्रान॥ योग न यज्ञ ध्यान नहिं सेवा संत संग नहिं ज्ञान। जिह्वास्वाद इंद्रियन कारन आयु घटत दिनमान॥ और उपाय नहींरे बौरे सुनि तू यह दे कान । सूरदास अबहोत बिगूचन भजिले शारंगपान॥१८२॥ अब मैं जानी देह बुढानी । शीश पाउँ धरकह्यो न मानततनकी दशासिरानी॥ आनकहत आनै कहिआवत नाक नैन बहे पानी । मिटगइ चमक दमक अँगअँगकी दृष्टि रु मति जुहिरानी॥ नारि गारि विन नहिं बोले पूत करै कलकानी।घरमें आदर कादरकोसो खीझत रैन बिहानी॥ नाहिं रही कछु सुधि तन मनकी भई है बात पुरानी। सूरदास अब होत बिगूचन भजिले शारंगपानी ॥ १८३ ॥ चित्त बुद्धि को संवाद। राग देवगंधार ॥ चकई री चलि चरण सरोवर

जहां न प्रेम वियोग। जहँ भ्रम निशा होत नहिं कबहूं वह सायर सुख जोग॥ जहां सनकसे मीन हंस शिव मुनिजन नख रवि प्रभा प्रकाश। प्रफुलित कमल निमिप नहिं शशि डर गुंजत निगम सुवास॥ जिहि सर सुभग मुक्ति मुक्ताफल सुकृत अमृत रस पीजे। सो सर छांडि कुबुद्धि विहंगम इहां कहा रहि कीजै॥लछमी सहित होत नित क्रीडा शोभित सूरजदास।अब न सुहात विषय रस छीलर वा समुद्रकी आस॥ १८४ ॥राग देवगंधार॥ चलि सखि तिहि सरोवर जाहिं। जिहि सरोवर कमल कमला रविबिना बिकसाहिं॥ हंसउज्वलपंख निर्मल अंक मलि मलि न्हाहिं।मुक्ति मुक्ता अंबुकेफल तिन्हें चुनिचुनिखाहिं॥अतिहिमगनमहा मधुररस रसन मध्य समाहिं। पद्म बास सुगंध शीतल लेत पाप नशाहिं॥ सदा प्रफुलित रहें जल बिनु निमिष नहिं कुम्हलाहिं।देखि नीर जो छिलछिलो अति समुझि कछु मन माहिं॥ सघन गुंजत बैठि उनपर भौंर हैं बिरमाहिं। सूर क्यों नहिं चलो उडि तहां बहुरि उडिबोनाहिं॥१८५॥ राग रामकली॥ भृंगी री भजि चरण कमल पद जहँ नहिंनिशिको त्रास।जहां बिधि भानु समान प्रभानख सो बारिज सुखरास॥ जिहिं किंजल्क भक्ति नव लक्षण याम ज्ञान रस एक। निगम सनक शुक नारद शारद मुनिजन भृंग अनेक॥ शिव विरंचि खंजन मनरंजन छिन छिन करत प्रवेश। अखिल कोश तहांवसत सुकृत जनप्रगटत श्याम दिनेश॥ सुनु मधुकरी भरम तजि निर्भय राजिव रविकीआश॥ सूरजप्रेमसिंधुमें प्रफुलिततहां चलि करेनिवास॥१८६॥मन बुद्धिको संवाद। राग देवगंधार॥सुवा चलि ता बनको रस पीजे। जा बन राम नाम अमृतरस श्रवणपात्र भरि लीजै॥ को तेरो पुत्र पिता तू काको घरनीघर को तेरो। काम कराल श्वानकोभोजन तू कहे मेरो मेरो॥ बडी वाराणसि मुक्तिक्षेत्रहै चलि तोको दिखराऊं।सूरदास साधुनकीसंगति बडोभाग्यजो पाऊं॥१८७॥अथ मन प्रबोध॥रे मन सुमिरि हरि हरि हरि। शतयज्ञनाहीं नाम सम परतीति करि करि करि॥हरिनाम हिरणाकुश बिसारचो उठ्यो बरि बरि बरि।प्रह्लाद हित जिन असुर मारचो ताहि डरि डरि डरि॥गज गृध्र गणिका व्याधकेअघ गयेगरि गरिगरि।चरणअंबुजबुद्धिभाजनलेहुभरिभरि भरि॥द्रौपदीकीलाज कारण दावपरि परि परि। पंडुसुतके बिघ्नजेते गए टरि टरि टरि॥कर्णदुर्योधन दुशासनशकुनि अरिअरिअरि। सुतहित अजामिल नाम लीनोगयो तरि तरि तरि॥चारि फलके दानिहैं प्रभु रहे फरि फरि फरि। सूर श्रीगोपलके गुण हृदय धरि धरि धरि॥१८८॥राग केदारा॥ करि मन नंदनंदन ध्यान। सेइ चरण सरोज शीतल तजि विषय रस पान॥ जानु जंघ त्रिभंग सुंदर कलित कंचन दंड। काछनी कटि पीत पट द्युति कमल केसर खंड॥ जनुमराल प्रवाल छीना किंकिणी कल राव। नाभि ह्रद रोमावली अलि चारु सहज सुभाव॥ कंठ मुक्तामाल मलयज उर बनी वनमाल। सुरसरी शशि तीर मानो लताश्याम तमाल॥बाहु पाणि सरोज पल्लव धरे मृदु मुख वेणु। अति विराजति वदन विधुपर सुरभि मंडित रेणु॥ अधर दसन कपोलनासा परम सुंदर नैन। चलत कुंडल गंड मंडल मनो निरतन मैन॥ कुटिल कच भ्रुव तिलक रेखा शीश शिखी शिखड। मदन धनु मनो शर संधाने देखि घनकोदंड॥ सूर श्रीगोपालकी छवि दृष्टि भरि भरि लेहिं। प्राणपतिकी निरखि शोभा पलक परन न देहीं॥ १८९ ॥ भजि मन नंदनंदन चरण। परम पंकज अति मनोहर सकल सुखके करण॥सनक शंकरध्यान ध्यावत निगम अवरन वरन। शेप शारद ऋषि सुनारद संत चिंतत चरण॥पदपराग प्रताप दुर्लभ रमालो हित करण। परशि गंगा भई पावन तिहूं पुर घर घरन॥ चित्त चिंतन करत जग अघ हरत

तारन तरन । गये तरि ले नाम केते पतित हरि पुर धरन ॥ जासु पदरज परशि गौतम नारि गति उद्धरण । तासु महिमा प्रगट केवट धोइ पग शिर धरण ॥ सोइ पद मकरंद पावन अरु नहीं सर वरण । सूर भजि चरणारविंदनि मिटै जनमन मरण ॥ १९० ॥ रे मन समुझि सोच विचारि । भक्ति बिनु भगवंत दुर्लभ कहत निगम पुकारि ॥ ढारि पासा साधु संगति केरि रसना सारि । दांव अबके परयो पूरो कुमतिपिछलीहारि ॥ राखि सत्रह सुनि अठारह चोर पांचोमारि डारिदे तू तीन काने चतुर चौक निहारि ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह्यो पग्यो नागनि नारि । सूर श्रीगोविंद भजन बिनु चले दोउ कर झारि ॥ १९१ ॥

॥ राग सारंग ॥ होमन रामनामको गाहक । चौरासीलख जिया योनिमें भटकत फिरत अनाहक ॥ भक्तन हाट बैठि तू स्थिर ह्वै हरि नग निर्मलले हि। कामक्रोध मद लोभ मोह तू सकल दलाली देहि ॥ करि हियाव सो सो जलादि यह हरि के पुर लेजाहिं। घाट बाट कहुँ अटक होइ नहिंसब कोउ देहि निबाहिं॥ और बनजमें नाहीं लाहाहोत मूलमें हानि । सूरस्वामिकोसौदो सांचोकही हमारो मानि ॥ १९२ ॥ राग केदारा ॥ रे मन रामसों करि हेतु । हरिभजन की वारि करिले उबरे तेरो खेत ॥ मन सुआ तनु पिंजरातिहिमाहिं राख्यो चेत। काल फिरत बिलारतन धरिअब घरी तुम लेत ॥ सकल बिषय बिकार तजि तू तरै सायर सेत । सूर भजि गोपाल गुणको गुरु बताए देत ॥ १९३ ॥ राग कान्हरा ॥ मन वच क्रम मन गोविंद सुधि करि। शुचि रुचि सहज समाधि साजि शठ दीनबंधु करुणामय उर धरि ॥ मिथ्यावाद विवाद छांडिदे काम क्रोध मद लोभै परिहरि। चरण प्रताप आनि उरअंतरऔरसकल सुखया सुखतर हरि ॥ वेदन कह्यो समृतिहु भाष्यो पावन पतित नाम निज नरहरि । जाको सुयश सुनतअरुगावत पापवृन्द जैहैं भजिभर-हरि ॥ परमउदार श्याम घन सुंदर सुखदायक संतन हितकर हरि । दीनदयाल गोपाल गोपपति गावत गुण आवत ढिग ढरहरि ॥ अति भयभीत निरखि भवसागर घन ज्यों घेरि रह्यो घट घरहरि । जब यमजाल पसारपरैगोहारिबिनु कौन करैगो धरहरि ॥ अजहूँ चेत मूढ चहुँदिशिते कालअग्नि उपजत झुकि झरहरि। सूर काल बलिव्याल ग्रसतहै श्रीपति शरन परत क्यों न फर-हरि ॥ १९४ ॥ तिहारो कृष्ण कहत कहा जात। बिछुरे मिलन बहुरि कब ह्वैहै ज्यों तरुवरकेपात। शीत पित्त कफ कंठ विरोधे रसना टूटे बात । प्राण लए जम जाइ मूढमति देखत जननी तात॥ छिन इक माहिं कोटि युग बीतत नरकी केतक बात ।इह जग प्रीति सुवा सेमर ज्यों चाखत ही उड़जात ॥ जबलगि यमको फंद परयो नहिं चरणन चित्त लगात ॥ कहत सूर बृथा यह देही इतो कहा इतरात॥ १९५ ॥ दिन दश लेहु गोविंद गाइ। छिन न चेतत चरण अंबुज बाद जीवन जाइ ॥ दूरि जबलों जरा रोग रु चलत इंद्री भाइ । आपुनो कल्याणकरिलेमानुषीतनु पाइ ॥ रूप यौवन सकल मिथ्या देखि जिन गरवाइ ।ऐसेही अभिमान आलसकाल ग्रसिहै आइ ॥ कूपखनि कत जाइगे नर जरत भवन बुझाइ। सूर हरिको भजन करिले जन्म मरण नशाइ ॥ १९६ ॥

॥ राग धनाश्री ॥ मन तोसों कतिकहीसमुझाई । नंदनँदनके चरण कमलभजि तजि पखंड चतुराई॥ सुख संपति दारा सुत हय गय झूठ सबै समुदाई ।क्षणभंगुर ए सबै श्यामबिनु अंत नाहिं सँग जाई। जन्मत मरत बहुत युग बीते अजहूँ लाज न आई। सूरदास भगवंतभजनबिनु जैहै जन्म गँवाई ॥ ॥ १९७ ॥ राग मलार ॥ अब मन मान धौं राम दुहाई । मन वच क्रम हरिनाम हृदय धरि जो गुरु वेद बताई । महाकष्ट दश मास गर्भवसि अधोमुख शीशरहाई । इतनी कठिन सही तू निकस्यो अजहूं न तू समुझाई ॥ मिटिगए राग द्वेष सब तिहिके जिन हरि प्रीति लगाई । सूरदास प्रभु

नामकी महिमा पतित परमगति पाई ॥ १९८ ॥ राग आसावरी ॥ बौरे मन रहन अटल कर जाना।धन दारा सुत बंधु कुटुँब कुल निरखि निरखि बौराना॥जीवनजन्म अल्प सपनोसोसमुझि देखि मन माहीं । बादर छांह धूम धौराहर जैसे थिर न रहाहीं ॥ जब लगि डोलत बोलत चितवत धन दाराहैं तेरे।निकसत हंस प्रेत कहि भजिहैं कोउ न आवै नेरे॥मूरखमुग्धअज्ञानमूढ़मति नाहीं कोऊ तेरो।जो कोऊ तेरो हितकारी सो कहे कढ़ सबेरो॥घरी एक सज्जन कुटुंब मिलि बैठे रुदन कराहीं । जैसे काग कागके मूये कां कां कहि उड़ि जाहीं ॥ कृमि पावक तेरो तन भखिहैं समुझि देखि मनमाहीं । दीनदयालु सूर हरि भजिले यह औसर फिरि नाहीं ॥१९९॥ ॥रागगौरी॥ ते दिन बिसरि गये इहां आये।अति उन्मत्त मोह मद छाक्यो फिरत केश बगराए॥ जिन दिवसनिते जननि जठरमें रहत बहुत दुख पाए । अति संकटमें भरत भटालौं मलमें मूँड गडाए ॥ बुधि विवेक बल हीन छीन तन सबही हाथ पराए । तिहि न करतचित अधमअजहुँलौं जीवत जाके ज्याए॥कहिधौं साथ कौन है तेरे खान पान पहुँचाए।सूर सुमृग ज्योंबाणसहतनित विषय व्याधके गाए॥२००॥रागधनाश्री ॥रे मन निपट निलज्जअनीति।जियतकी कहि को चलावै मरत विषया प्रीति॥श्वान कुब्जक पंगु कानो श्रवण पुच्छ विहीन।भगन भाजन कंठकृमिशिरकामिनीआधीन॥निकट आयुध धरे बंधक करत तीक्षण धार।अजानायक मग्नक्रीडतचढ़तबारंबार॥ देह छिन छिन होत छीनी दृष्टि देखत लोग।सूरस्वामीसों बिमुख ए सतीकेसेभोग२०१॥रागगौरी॥ बौरे मन समुझि समुझि कछु चेत।इतनो जन्म अकारथ खोयो श्यामचिकुर भएश्वेत॥तबलगि सेवा कर निश्चय करि जबलगि हरवा खेत। सूरजदास भरम जिन भूलो करि विधनासे हेत२०२॥ राग धनाश्री ॥ रे शठ बिन गोबिंद सुख नाहीं।तेरो दुःख दूर करिबेको ऋद्धि सिद्धि फिरि जाहीं॥ शिव विरंचि सनकादिक मुनि जन उनकी गति अवगाहीं । जगतपिता जगदीश शरण बिन सुख तीनों पुर नाहीं ॥ और सकल मैं देखे झूठे बादरकी सी छाहीं।सूरदास भगवंत भजन बिन दुख कबहूं नहिं जाहीं ॥२०३ ॥ राग कान्हरा ॥ मन तोसों कोटिक बार कही । समुझ न चरण गहत गोविंदके उर अघ शूल सही ॥ सुमिरन ध्यान कथा हरि जूकी यह एकौ न भई । लोभी लंपट विषयनसों हित यह तेरी निबही ॥ छांडि कनकमणि रत्न अमोलक कांचकी किरच गही । ऐसो तू है चतुर विवेकी पय तजि पियत मही ॥ ब्रह्मादिक रुद्रादिक रवि शशि देखे सुर सबहीं । सूरदास भगवंत भजन बिनु सुख तिहूँ लोक नहीं ॥२०४ ॥राग परज ॥ मना रे माधव सों कर प्रीति । काम क्रोध मद लोभ मोह तू छाँडि सबै विपरीति ॥ भौंरा भोगी वन भ्रमै, मोद न मानै ताप । सब कुसुमनि मिलि रस करै; कमल बँधावै आप ॥ सुमि परमित पिय प्रेमकी, चातक चितवत पारि । घन आशा सब दुख सहै; अंत न याचै वारि ॥ देखो करनी कमलकी, कीनो जलसों हेत । प्राण तज्यो प्रेम नतज्यो, सूख्यो सरहि समेत ॥ दीपक पीर न जानई, पावक परत पतंग । तनुतौ तिहि ज्वाला जरचो,चित न भयो रस भंग॥मीन वियोग न सहिसकै, नीर न पूछै बात । देखि जु तू ताकी गतिहि,रति न घटै तन जात ॥ प्रीति परेवाकी गनो, चाहन चढ़त अकाश । तहँ चढ़ि तीय जु देखिय, परत छांड उरश्वास ॥ सुमग समेह कुरंगकी, श्रवनन राच्यो राग । धरि न सकत पग पछमनो, सर सनमुख उर लाग ॥ देखि जरमि जड नारि की, जरत प्रेतके संग । चित्त न चित फीको भयो, रची जु पियके रंग॥ लोक वेद बरजत सबै, नयनन देखत त्रास।चोर न जिय चोरी तजै, सरबस सहै बिनास ॥ सब रसको रस प्रेमहै,विषयी खेलै

सार । तन मन धन यौवन खिसै, तऊ न मानै हार॥ तैं जु रत्न पायो भलो जान्योसाधुसमाज । प्रेम कथा अनुदिन सुनी, तऊ न उपजी लाज ॥ सदा संघाती आपनों,जियकोजीवन प्रान।सोतू बिसरचो सहजही, हरि ईश्वर भगवान ॥ वेद पुराण स्मृति सबै;सुर नर सेवत जाहि । महामूढ अज्ञानमति,क्यों न सँभारत ताहि॥खग मृग मीनपतंग लौं, मैं शोधे सब ठौर।जल थलजीवजिते तिते, कहौं कहां लगि और॥ प्रभु पूरण पावन सखा,प्राणनहूँको नाथ ।परमदयालु कृपालुप्रभु, जीवन जाके हाथ ॥ गर्भबास अति त्रासमें,जहां न एकौ अंग । सुनि शठ तेरो प्राणपति,तहांन छांडचो संग ॥ दिना राति पोषत रहै,ज्यों तंबोलीपान।वा दुखतें तोहिंकाढके, लै दीनो पयपान ॥ जिन जड़ते चेतन कियो, रचि गुण तत्त्व बिधान। चरण चिकुर कर नख दिए,नैननासिका कान॥अशन बसन बहुबिध दिये,औसरऔसरआनि। मात पिता भय्या मिलै,नईरुचइपहिचान॥ सजन कुटुंब परिजन बढै, सुत दारा धन धाम । महामूढ विषयी भयो,चित आकर्ष्यो काम ॥ खान पान परिधान रस, यौबन गयो वितीत । ज्यों विट पारि परतीय वश, भोर भये भयभीत॥ जैसे सुखहीमनबढयो,तैसे बढचोअनंग। धूम बढचो लोचन खस्यो,सखा न सूझ्यो संग॥ जम जान्यौ सब जग सुन्यो,बाढचो अयश अपार।बीच न काहू तब कियो,जब दूतनि काढचोवार॥ कह जानों कहवां मुवो, ऐसे कुमति कुमीच । हरिसों हेतु विसारिकै,सुख चाहतहै नीच ॥ जो पै जिय लज्जा नहीं,कहा कहौं सौ बार।एकहु अंक न हरि भजे, रे शठ सूर गँवार ॥२०५॥

रागकल्याण ॥ धोखेही धोखे डहकायो।समुझिन परी विषयरसगीध्यो हरिहीरा घरमांहगँवायो॥ ज्यों कुरंग जल देखि अवनिको प्यास न गई चहूँ दिशि धायो । जन्म जन्म बहु कर्म किये हैं तिनमें आपुन आपु बँधायो॥ज्यों शुक सेमर सेव आश लगि निशि वासर हठि चित्त लगायो। रीतो परयो जबै फल चाख्यो उडि गयो तूल तांवरो आयो ॥ ज्यों कपि डोरी बांध बाजिगर कनकनको चौहट नचायो । सूरदास भगवंतभजनबिनु काल व्याललै आप डसायो ॥ २०३ ॥

राग धनाश्री ॥ जन्म गँवायो ऊआबाई ॥ भजे न चरण कमल यदुपतिके रह्यो बिलोकत छांई ॥ धन जोबन मद ऐंडो ऐंडो ताकत नारि पराई । लालच लुब्ध श्वान जूंठनि ज्यों सोऊ हाथ न आई ॥रंच कांच सुख लागि मूढमति कंचन राशि गँवाई ॥ सूरदास प्रभु छांड़ि सुधारस विषय परम विष खाई॥२०७॥ भक्ति कब करिहो जन्म सिरानो । बालापनमें खेलत खोयो तरुणापै गरबानो ॥बहुत प्रपंच करे मायाको तऊ न पेट अघानो। जतन जतन करि माया जोरें लै गये रंक न रानो॥ सुत वित वनिता मोह लगायो झूठे भरम भुलानो । लोभ मोहमेंचेत्योनाहींसुपने ज्यों डहकानो ॥ वृद्ध भये कफ कंठ निरोध्यो शिर धुनि धुनि पछतानो । सूरदास भगवंत भजन बिनु यमके हाथ बिकानो ॥२०८॥मन रामनाम सुमिरन बिनु बाद जनम खोयो।रंचक सुख कारणते अंतकाल विगोयो॥साधु संगति भक्ति बिनातन अकारथ जाई।ज्ञानिज्योंहाथझारि चलेझटकाई॥सुत दारा देह गेह संपति सुखदाई ।इनमें कछु नाहिं तेरी कालअवधि आई॥काम क्रोध लोभमोह मनमेंतूजोयो। गोविंदगुणचितबिसारिकौननींदसोयो ॥सूरकहैशुचिविचारिभ्रम भूल्यो अंधा।रामनामल तजिकरि और सकल धंधा२०९॥राग कल्याण॥भक्तिबिनुबैलबिरानेह्वैहो। पाँउ चारि शिरशृंग गुंगमुख तब कैसे गुणगैहो॥चारि पहर दिन चरतफिरत बनतऊनपेटअघैहो टूटे कंध सुफूटी नाकनि कोलों धौं भुस खैहो॥लादत जोतत लकुट बाजिहै तब कहँमूंडदुरैहो। शीत घाम घन बिपति बहुत विधि भारतरे मरिजैहो ॥ हरि संतनको कह्यो न मानत कियो

आपुनो पैहो । सूरदास भगवंत भजन बिनु मिथ्या जन्म गँवैहो ॥ २१० ॥राग सारंग ॥ छांडि मन हरि बिमुखनको संग । जिनके संग कुबुद्धि उपजतिहै परत भजनमें भंग ॥ कहा होत पयपान कराये विष नहिं तजत भुजंग । कागहि कहा कपूर चुगाये श्वान न्हवाये गंग ॥ खरको कहा अरगजालेपन मर्कट भूषण अंग । गजको कहा न्हवाये सरिता बहुरि धरै खहि छंग ॥ पाहन पतित बाँस नहिं बेधत रीतो करत निखंग ।सूरदास खल कारी कामरि चढत न दूजो रंग॥२११॥ राग सोरठ ॥रे मन जन्म अकारथ खोइस । हरिकी भक्ति कबहुँ नहिं कीनी उदर भरचो परिसोइस॥ निशि दिन रहत फिरत मुँह बांधे अहंकार कारि जन्म बिगोइस। गोड पसार पऱ्यो दोउ नीके अबके किये कहा होइस ॥ काल यमनिसों आनि बनेहै देखि देखि मुख रोइस। सूरश्याम बिनु कौन छुडावै चले जाहु भइ पोइस ॥ २१२ ॥ तबते गोविंद क्यों न सँभारे । भूमि परेते सोवन लाग्यो महाकठिन दुख भारे ॥ अपने पिंड पोषिवे कारण कोटि सहस जिय मारे । इन पापनते क्योंहु न उबरो दामनगीर तिहारे ॥ आप लोभ लालच के कारण कहुं न पाप तिहारे । सूरदास यम कंठ गहेते निकसत प्राण दुखारे ॥ २१३ ॥राग धनाश्री ॥ रे मन मूरख जन्म गँवायो । कारि अभिमान विषय रस गीध्यो श्याम शरण नहिं आयो ॥ यह संसार सुवा सेंवर ज्यों सुंदर देखिलुभायो।चाखनलाग्यो रुई उडिगई हाथ कछूनहिंआयो॥ कहा होत अबके पछताये पहिले पाप कमायो । कहत सूर भगवंत भजन बिनु शिर धुनि धुनि पछतायो ॥ २१४ ॥ राग मारू ॥ औसर हारचो रे तैं हारचो। मानुपजन्म पाइ नर बौरे हरिको भजन बिसारचो॥रुधिरबुंदते साजि कियो तन सुंदर रूप सवांरचो । जठरअग्निअंतर ऊरध मुख जिन दश मास उबारचो ॥ जबते जन्म लियो जगभीतर तबते प्रभु प्रतिपारचो । अंध अचेत मूढ मतवारे सो प्रभु क्यों न सँभारचो । पहिरि पितांबर करि आडंबर यह तनु ठाट शृंगारचो । काम क्रोध मद लोभ त्रिया रति बहु विधि काज बिगारचो ॥मरन बिसारि जिवन थिर जान्यो बहु उद्यम जिय धारचो।सुत दाराको मोह अजयविष हरि अमृतफल डारचो॥ झूँठ सांच करि माया जोरी रचि पचि भवन उसारचो।कालअवधि पूरण भई जादिन बिनहूं त्यागि सिधारचो ॥प्रेत प्रेत तेरो नाम परचो जब जेवरि बांधि निकारचो । जा सुतके हितविमुख गोविंदते प्रथमहिं तिन मुख जारचो ॥ भाईबंधु कुटुंब सहोदर सब मिलि यहै बिचारचो ।जैसे कर्म लहो फल तैसे तिनुका तोरि उचारचो ॥ सतगुरुको उपदेश हृदय धरि जिन भ्रम सकल निवारचो । हरि भज बिलंब छांडि सूरज प्रभु ऊँचे टेरि पुकारचो ॥ २१५ ॥ राग बिलावल ॥याविधि राजा करि बिचार। राज साज सबहीको डार । जीरण पटकु दीन तनु धारि । चल्यो सुरसरी तीर उधारि॥ पुत्र कलत्र देखि सब रोवे । राजा तिनके ओर न जोवे॥ राजा चलत चले सब लोग । दुखित भये सब नृपति-बियोग॥नृपति सुरसरीकेतट आये । कियो स्नान मृत्तिका लगाये॥करि संकल्प अन्नजल त्याग्यो। केवल हरिपदसों अनुराग्यो ॥ अत्रि वसिष्ठादिक तहँ आये । नारदादि मुनि बहुरि सिधाये॥ कुश आशन दै तिनहिं बिठायो । पुनि कह्यो तिनके पद शिर नायो ॥ धन्य भाग तुम दर्शन पायो । मम उधार कारण तुम आयो ॥ तुमदेखत हरि सुमरन होई । और प्रसंग चले नहिं कोई ॥ आज्ञा होइ करौं अब सोई। जाते मोरि शुद्धगति होई ॥ कोउ कह तीरथ सेवन करो। कोउ कहै दान यज्ञ विस्तरो ॥ काहू कहै मंत्र जप करना । काहू कछु काहू कछु बरना ॥ राजा कह्यो सप्त दिन माहीं । इति इहिको मोहिं सूझत नाहीं ॥ इहि अंतर शुकदेव तहाँ आये । राजा

देखि तुरत उठि धाये ॥करि दंडवत कुशासन दीनो । पुनि सन्मान ऋषिन सब कीनो॥शुकको रूप कह्यो नहिं जाई। शुक हिय रह्यो कृष्णरस छाई॥ शुककी महिमा शुकही जाने । सूरदास कहि कहा बखानै ॥ २१६ ॥ हरिके जनकी अति ठकुराई । महाराज ऋषिराज राजहूं देखत रहे रजाई॥निर्णय देश राज्य करि ताको लोगन मन उत्साह।काम क्रोध मद लोभ मोह ए भये चोरते साह ॥ दृढ बिश्वास कियो सिंहासन तापर बैठे भूप । हरियश बिमल छत्रशिरऊपर राजत प्रेम अनूप॥ हरिपदपंकज पियो प्रेमरस ताहीके रँगरातो । मंत्री ज्ञान न औसर पावै कहत बात सकुचातो॥अर्थ काम दोऊ रहैं द्वारे धर्ममोक्ष शिर नावै। बैठि विवेक बिचित्र पौरियासमय न कबहूं पावै॥अष्ट महासिधि द्वारे ठाढ़ीं करजोरे डरलीने।छरीदार बैराग बिनोदी हरकि बाहरे कीने॥माया काल कछू नहिं व्यापै यह रसरीति जु जानी।सूरदास यह सकल समग्री गुरुप्रताप पहिंचानी॥ २१७ ॥ शुक नृपओर कृपा करि देख्यो । धन्य भाग्य तिन अपनो लेख्यो ॥बिनती करी चरण शिर नाई ।सप्त दिवस सब मेरी आई॥तऊ कुटुंबको मोह न जात। पुनि धनलोभ आइलपटात॥जानि बूझि मैंहोतअजान।उपजत नाहीं मनसों ज्ञान॥अरु तनु छूटत बहु दुख होई।ताते सोचरहे नहिंकोई॥बिना त्वचा सुमिरनक्योंहोई।आज्ञाहोइ करोंअबसोई॥शुक कह्यो तन धन कुटुंबबिहाई।हरिपदभजौन और उपाई॥आयु भग्नघटजलसी छीजै।अहनिशहरि हरि सुमिरन कीजै ॥ नृप खट्वांग पूर्व इक भयो। सुतौ द्वैघरीमें तरिगयो॥तेरी सप्त दिवसहै आई। कहौं भागवत सुन चित लाई॥सुनि हरि कथा धरौ हरि ध्यान।जग सब जानो स्वप्न समान॥ या विधि जो हरिपद उर धरिहौ ॥निस्संदेह सूर तब तरिहौ ॥ २१८ ॥ हरि यश कथा सुनौ चित लाई।जो खट्वांग तरचो गुण गाई ॥ नृप खट्वांग भयो भुवमाहीं । ताके सम द्वितिया जग नाहीं ॥ इक दिन इन्द्र तासु घर आयो। राजा उठिकरि शीश नवायो॥धन मम गृह धन भाग्य हमारो। जो तुम चरण कृपा करि धारो॥अब मोको जो आज्ञा होई। आयसु मान करौं सब सोई॥ इन्द्र कह्यो मम करो सहाई। असुरनसों भइ मोहिं लराई॥ इन्द्रपुरी खट्वांग सिधाये। नाम सुनत सो सकल पराये॥ सुरपतिसों नृप आज्ञा मांगी। उन कह्यो लेहु कछू वर मांगी ॥ नृपति कह्यो कहो मेरी आय । बर लेहों पुनि शीश चढ़ाय॥ दोइ मुहूरति आयु बताई।नृप बोल्यो तब शीश नवाई ॥ तुरत देहु मोहि घर पहुँचाय।तरों जाय तहँ हरिगुण गाय॥ एक मुहूरतमें फिर आयो। एक मुहूरत हरिगुण गायो ॥ हरिगुण गाय परमपद लहचो। सूर नृपति सुनि धीरजगहचो॥२१९॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृतप्रथमः स्कंधः समाप्तः ॥ १ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्री सूरसागर।

द्वितीयस्कन्ध।

राग बिलावल ॥हरि हरि हरि हरिसुमिरनकरौ।हरिचरणारबिंद उर धरौ॥शुकदेव हरिचरणन चित लाई।राजासों बोल्यो या भाई॥तुम कह्योसप्तदिवस ममआय।कहौं हरिकथा सुन चित लाय॥ चिंता छांडिभजो यदुराई।सूर तरो हरिके गुण गाई॥ १ ॥ राग सारंग॥जो सुख होत गोपालहि गाये। सो न होत जप तपके कीने कोटिक तीरथ न्हाये॥ दिये लेत नहिं चारि पदारथ चरण कमल चित लाये। तीन लोक तृण सम करि लेखत नंदनँदन उर आये॥ बंशीबट वृन्दावन यमुना तजि वैकुंठको जाये। सूरदास हरिको सुमिरनकरि बहुरि न भव चलिआये॥ २ ॥ राग केदारा ॥सोइ रसना जो हरिगुण गावै।नैननकी छबि यहै चतुरता ज्यों मकरन्द मुकुन्दहि ध्यावै॥ निर्मल चिततौ सोई सांचो कृष्णविना जिय और न भावै।श्रवणनिकी जु यहै अधिकाई सुनि रसकथा सुधारस प्यावै॥ करतेई जो श्यामहिं सेवैं चरणनि चलि बृन्दवन जावैं। सूरदास जैये बलि ताके जो हरिजूसे प्रीति बढावै॥ ३ ॥रागसारंग॥ जबते रसना राम कह्यो। मानो धर्म साधि सब बैठ्यौ पढिबेमें धौं कहा रह्यो॥ प्रगट प्रताप ज्ञान गुरु गमते दधिमथि घृतलै तज्यो मह्यो। सारको सार सकल सुखको सुख हनूमान शिव जानि कह्यो॥ नामप्रतीत भई जा जनकी लै आनन्द दुख दूरिदह्यो। सूरदास धनधन वे प्राणी जो हरिको व्रत लै निवह्यो॥४॥ अनन्यभक्तिमहिमा राग सारंग॥ गोविंदसो पति पाइ कहा मन अनत लगावै।गोपाल भजन विनु सुख नहीं जो चहुं दिश धावै॥ पतिको व्रत जो धरै त्रिया सो शोभा पावै। आन पुरुषको नाम लेत निज पतिहि लजावै॥ गणिकातेउपजैसुपूतकौनकोकहावै॥ बसतसुरसरीतीर मंदमति कूप खनावै॥जैसेश्वान कुलालके पाछे उठि धावै।आन देव हरि तजि भजैसो जन्मगँवावै॥ फलकी आशा चित्त धारि जो वृक्ष बढावै। महामूढ सो मूल तजि शाखा जल नावै॥ सहजभजै नंदलालको सो सबशुचि पावै।सूरदास हरिनाम लिये दुख निकट न आवै॥ ५॥ राग कान्हरा॥ जाको मन लाग्यो नँद-लालहिं ताहि और नहिं भावै हो। ज्यों गूंगो गुरखाइअधिकरस सुख सवाद न बतावै हो॥ जैसे सरिता मिलै सिंधुको बहुरि प्रवाह न आवै हो।ऐसे सूर कमललोचनते चित नहिं अनत डुलावै हो॥६॥ राग बिहाग॥ जो मन कबहुंक हरिको जांचै। आन प्रसंग उपासना छांडै मन वच क्रम अपने उर सांचै॥ निशिदिन श्याम सुमिरि यश गावैकलपन मेटि प्रेमरसपावै। यह व्रतधरै लोकमें विचरै सम करि गनै महामणिकाचै॥ शीतउष्ण सुख दुख नहिं मानै हानि भये कछु शोच न राचै। जाइ समाइ सूरवानिधिमें बहुरि न उलटि जगतमें नाचै॥ ७॥ राग सारंग॥कर्यो

शुक श्रीभागवतविचारि । हरिकीभक्ति विरद है युगयुगआनधर्मदिनचारि॥ चिंता तजोपरीक्षि राजा सुन सुख साखि हमारि । कमलनयनकी लीलागावतकटतअनेक बिकारि ॥ सतयुगसत त्रेता तप कीनो द्वापर पूजा चारि । सूर भजन कलि केवल कीजै लज्जा कानि निवारि ॥ ८ ॥ राग बिलावल ॥ गोविन्दभजन करोइहिबारा। शंकर पार्वतीउपदेशत तारकमंत्र लिख्योश्रुतिद्वारा ॥ अश्वमेधयज्ञ जो कीजैगयाबनारसअरुकेदारा । रामनाम सरितउनपूजैजो तनु गारोजाइविवारा॥ सहसबार जो बेनी परसौ चन्द्रायण सौ बारा।सूरदास भगवंतभजनबिनु यमकेदूत खरेहैं द्वारा॥९॥ ॥राग केदारा॥ हैहरिनामको आधार । और इहि कलिकाल नाहीं रह्यो विधि व्यवहार॥नारदादि शुकादि मुनि मिलि कियो बहुत बिचार । सकल श्रुति दधि मथित काढचो इतोई घृतसार॥दशो दिशते कर्म रोक्यो मीनको ज्यों जार । सूर हरिको सुयश गावत जाहि मिट भव भार॥ १० ॥ अथ नाममहिमा॥रागाविलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरो सबकोई । हरि हरि सुमिरत सब सुख होई॥ हरिसमान द्वितीयनहिंकोई । हरिचरणनि राखो चितगोई ॥ श्रुतिस्मृतिसबदेखोजोई ।हरिसुमिरत होई सो होई ॥ हरिहरिहरिसुमिरो सबकोई । बिनहरिसुमिरनमुक्ति न होई ॥ कोटि उपाय करै जो कोई । हरिहरिहरि सुमिरो सबकोई ॥ शत्रुमित्र हरि गिनत न दोई । जो सुमिरै ताकी गति होई ॥ हरिहरिहरि सुमिरो सबकोई । हरिके गुण गावत सब कोई ॥ राव रंक हरि गिनत न दोई । जो गावै ताकी गति होई ॥ हरि हरि हरि सुमिरयो जिन जहां । हरि तिहिं दरशन दीनो तहां ॥ हरि बिनु सुख नहिं इहां न वहां । हरिहरिहरि सुमिरो जहँ तहां ॥ हरिहरिहरि सुमिरो दिन रात । नातर जन्म अकारथ जात॥ सौ बातनिकी एकै बात । सूर सुमिरि हरि हरि दिन रात ॥ ११ ॥जन्म जन्म जब जब जिहिजिहियुग जहां जहां जन जाइ। तहां तहां हरिचरणकमलरति जो दृढ होइ रहाइ॥ श्रवण सुयशसारंगनादविधि चातकविधि मुख नाम ।नैन चकोर संत संतति शशि करि अर्चन अभिराम॥ सुमति स्वरूप सचै सरषा लो उर अंम्बुज अनुराग । नितप्रति अलि जिमि गुंज मनोहर आवत प्रेम पराग ॥ औरो सकल सुकृत श्रीपति हित तन मन रहत सुप्रीति।नाक निरै सुख दुख न सूर प्रभु जिहिके भजन प्रतीति१२॥ अथ हरिविमुख निंदा। राग सारंग ॥ अचंभो इन लोगनिको आवै । छांडे श्याम अमीरस फलको माया बिष फल भावै॥ निंदत मूढ मलय चन्दनको राख अंग लपटावै । मानसरोवरछांडिहंस-तट काग सरोवर न्हावै ॥ पगतर जरत न जानै मूरख घर तजि घूर बुझावै। चौरासी लख योनि स्वांग धरि भ्रमि भ्रमि यमहिं हँसावै ॥मृगतृष्णा आचारयुक्ति जल तासँग मन ललचावै। कहत जु सूरदास संतनि मिलि हरियश काहे न गावै ॥ १३ ॥ भजन बिनु कूकर सूकर जैसो॥ जैसे घर बिलावके मूसा रहत विषय बश तैसो ॥ बकी बकुला अरु गीध गीधनी आइ जन्म लियो वैसो । उनहूँके यह सुत दारा हैं इन्हें भेद कहो कैसो॥ जीव मारिकै उदर भरत हैं तिनके लखे ऐसो सूरदास भगवंतभजनबिनु जियब ऊंट खर जैसो ॥ १४ ॥ भजनबिनुजीवत जैसे प्रेत। मलिन मंदमति डोलत घर घर उदर भरनके हेत ॥ मुख कटु वचन नित्य प्रति निन्दा सगुन सुयश सुखलेत । कबहूँ पाप करै पावत धन गांठि धूत तहां देत ॥ ब्राह्मण गुरू संतजन सज्जन जात न कबहुँ निकेत । सेवा नहिं भगवंत चरणकी भवन नीलको खेत ॥ कथा नहीं गुण गीन सुयश हरि माधव देव अचेत । ताकी कहा कहों सुनि सूरज बूडत कुटुंब समेत ॥ १५ ॥ जिहि तनु हरिभजवो न कियो । सो तनु शूकरश्वानमीन ज्यों इहिसुख कहा जियो ॥ जो जगदीश

ईश सबहूंको ताहि न चित्त दियो। प्रगट जानि यदुनाथ बिसारे आशामद जु पियो॥चारिपदा रथको प्रभु दाता तिनैं न मिलौ हियो। सूरदास रसना वश अपने टेरि न नाम लियो ॥ १६ ॥ ॥ अथ सत्संग महिमा॥ राग केदारा॥जादिन संत पाहुने आवत। तीरथ कोटि सनान करे फल जै सो दरशन पावत ॥ नेह नयो दिन दिन प्रति उनको चरण कमल चित लावत। मन वच कर्म और नहिं जानत सुमिरतऔं सुमिरावत॥मिथ्यावाद उपाधिरहित ह्वै बिमल बिमल यश गावत।बंधन कर्म कठिन जे पहिले सोऊ काटि बहावत ॥संगति रहै साधुकी अनुदिन भव दुख दूरि नशावत। सूरदास या जन्म मरण ते तुरत परमगति पावत ॥१७॥ अथ भक्ति साधन ॥राग धनाश्री ॥ हरि रसतो कबहुँ जाइ लहिये। गये सोच आये नहिं आनँद ऐसो मारग गहिये ॥ कोमल वचनदीनता सबसों सदा अनंदित रहिये। बाद विवाद हर्ष आतुरता इतो दंड जियसहिये॥ऐसीजो आवै या मनमें यह सुख कहँलौं कहिये। अष्ट सिद्धि नवनिद्धि सूरप्रभु पहुँचे जोकछु चहिये ॥ १८॥ राग धनाश्री ॥ जौलौं मन कामना न छूटे। तौ कहा योग यज्ञ व्रत कीने बिनुकन तुसको कूटे॥ कहा सनान किये तीरथके अंग भस्म जटजूटे। कहा पुरणन पढ जु अठारह ऊर्ध्व धूमके घूटे ॥ जग सोनाकी सकल बडाई इहिते कछू न खूटे। करनी और कहै कछु औरै मन दशहूदिश लूटे॥काम क्रोध मद लोभ शत्रु हैं जो इतनो सुनि छूटे। सूरदास तबहीं तम नाशै ज्ञान अग्नि झर फूटे ॥ १९ ॥ राग बिलावल ॥ भक्तिपंथको जो अनुसरै। सुत कलत्र सो हित परिहरै॥अशन बसन की चित्त न करै। बिश्वंभर सम जगको भरै॥ पंगु जाके द्वारेपर होई। ताकोपोपत अहनिशि सोई॥ जो प्रभुके शरणागत आवै। ताको प्रभु क्योंकरि बिसरावै ॥ मात उदरमें रस पहुँचावत। बहुरि रुधिरते क्षीर बनावत॥अशन काज प्रभु बनफल करै। तृपाहेतु जल झरना झरै॥ पात्र स्थान हाथ हरि दीने। वसन काज बल्कल प्रभु कीने॥शय्या पृथ्वी करि विस्तार। गृह गिरिकंदर करे अपार ॥ ताते चिंता सकल तयाग। सूर श्यामपद करि अनुराग ॥२०॥ भक्तिपंथको जो अनुसरै। सो अष्टांग योगको करै ॥ यम नियमासन प्राणायाम। करि अभ्यास होइ निष्काम॥प्रत्याहार धारना ध्यान। करै जु छांडि बासना आन ॥क्रम क्रम करिकै करै समाधि। सूरश्याम भजि मिटै उपाधि ॥२१॥राग धनाश्री ॥ सबै दिन एकैसे नहिं जात। सुमिरन ध्यान कियोकरि हरिको जब लगि तन कुशलात ॥ कबहू कमला चपला पाके टेढे टेढे जात। कबहुँक मग मग धूरि टटोरत भोजन को बिलखात॥ या देहीके गर्व बावरो तदपि फिरत इतरात ।बाद विवाद सबै दिन बीते खेलतही अरु खात॥हौं बड हौं बड बहुत कहावत सूधे कहत न बात। योग न युक्ति ध्यान नहिं पूजा वृद्ध भये अकुलात॥बालापन खेलतही खोयोतरुणापन अलसात। सूरदास औसरके बीते रहिहौ पुनि पछितात ॥ २२ ॥ राग सारंग ॥ गर्व गोविंदहि भावत नाहिं। कैसी करी हिरण्यकशिपुसों प्रगट होइ छिन माहिं ॥ जग जानी करतूत कंसकी नरकासुर मार्यो पलमाहिं। ब्रह्मा इन्द्रादिक पछताने गर्व धारि मनमाहिं॥ यौवन रूप राज धन धरती जान जलदकी छाहिं।सूरदास हरिभजो गर्व तजि बिमुख अगतिको जाय॥२३॥ राग कान्हरा ॥ विपया जाते हर्ष्यो गात। ऐसे अंध जानि तैं मूरख जो परत्रिय लपटात॥नरजिग्हे सब कहे न मानत करिकरि जतन उड़ात। परे अचानक त्यौं रसलंपट तनु तजि यपपुरजात॥ यह तौ सुनी व्यासके मुखतें परदारा दुखदात ॥ रुधिर मेद मल मूत्र कठिन कुच उदर गंध गंधात।तन धन यौवन ताहित खोवत नरककी पाछे बात ॥ जो नर भले चहत तो सो तजि

सूर प्रभू गुण गात ॥ २४ ॥ अथ आत्मज्ञान ॥राग नट ॥ जौलौं सत स्वरूप नहिं सूझत। तौलौं मृगमद नाभि बिसारे फिरत सकल वन बूझत॥अपनोही मुख मलिन मंदमति देखत दर्पणमाहिं। ता कालिमा मेटबे कारण पचत पखारत छाहिं ॥ तेल तूल पावक पुट भरि धरि बनै न बिना प्रकाशत। कहत बनाइ दीपकी बतियां कैसे धौं तम नाशत॥ सूरदास यह गति आये बिनु सब दिन गने अलेखे। कहा जाने दिनकरकी महिमा अंध नयन बिनु देखे ॥ २५ ॥ अपुनपो आपुनही बिसरचो।जैसे श्वान काँचमंदिरमें भ्रमिभ्रमि भूसिमरचो॥हरिसौरभ मृगनाभि बसतहै द्रुम तृण सूंघि मरचो।ज्यों सपनेमें रंक भूप भयो तस करि अरि पकरचो॥ ज्यों केहरि प्रतिबिंब देखिकै आपुन कूप परचो।ऐसे गज लखि फटिक शिला में दशननि जाइ अरचो ॥ मर्कट मुष्टि छाँडि नहिं दीनी घर घर द्वार फिरचो। सूरदास नलनीको सुबटा कहि कौने जकरचो॥ २६॥ अथ बिराटरूप वर्णन। राग केदारा॥ नैननि निरखि श्याम स्वरूप। रह्यो घट घट व्यापि सोई ज्योतिरूप अनूप॥ चरण सप्त पताल जाके शीश है आकाश। सूर चंद्र नक्षत्र पावक सर्व तासु प्रकाश॥ २७॥ अथ आरती ॥ हरिजूकी आरती बनी। अति विचित्र रचना रचि राखी परति न गिरा गनी॥कच्छप अध आसन अनूप अति डांडी शेष फनी। मही सराव सप्तसागर घृत बाती शैल घनी ॥रवि शशि ज्योति जगत परिपूरण हरत तिमिर रजनी।उडत फूल उडगन नभ अंतर अंजन घटा घनी ॥ नारदादि सनकादि प्रजापति सुर नर असुर अनी। काल कर्म गुण अरुण अंत कछु प्रभुइच्छा रचनी ॥ यह प्रताप दीप सु निरंतर लोक सकल भजनी। जाके उदित नचत नाना विधि गति अपनी अपनी ॥ सूरदास सब प्रकृति धातुमय अति विचित्र सजनी ॥२८॥ अथ नृपविचार। राग गूजरी॥ श्रीशुकके सुनि वचन नृप लाग्यो करन विचार। झूठे नाते जगतके सुत कलत्र परिवार॥चलत न काऊ संग चले मोरि रहे मुख नार।आवत गाढे काम हरि देखो सूर विचार ॥ २९ राग गूजरी॥ हरि बिनु कोऊ काम न आयो। यह माया झूठी प्रपंच लगि रतनसो जन्म गँवायो॥कंचन कलश विचित्र चित्र करि रचि पचि भवन बनायो।तामेंते तिहि छिनहीं काढ्यो पलभरि रहन न पायो॥हौं तेरेही संग जरोंगी यह कहित्रिया धूति धन खायो। चलत रही चित चोरि मोरि मुख एक न पग पहुँचायो॥बोलि बोलि सब बोलि मित्रजन लीनो सो जिहि भायो।परचो काज अंतकी बिरिया तिनिही आनि बँधायो ॥आशा करि करि जननी जायो कोटिक लाड लडायो ।तोरिलयो कटिहूंको डोरा तापर बदन जरायो ॥ पतित उधारन गणिका तारन सो मैं शठ बिसरायो। लियो न नाम नेकहूँ धोखे सूरदास पछतायो॥ ३० ॥ राग देवगंधार ॥सकल तजि भजि मन चरणमुरारि।श्रुति स्मृति अरु मुनिजन भाषत मैंहूँ कहत पुकारि॥ जैसे स्वप्न सोइ देखियत तैसे यह संसारि। जात बिलै ह्वै छिनक मात्रमें उघरत नैन किवारि ॥ बारंबार कहत मैं तोसों जन्म न जुवा हारि। पाछे भई सु भई सूरजन अजहूं समुझि सँभारि ॥ ३१ ॥ राग गूजरी ॥ अजहूं सावधान क्यों न होई। माया बिषम भुजंगनिको विष उतरयो नाहिन तोई॥कृष्ण सुमंत्र जियावन मूरी जिन जग मरतजिवायो। बारंबार निकट श्रवण- निंह्व गुरु गारुडी सुनायो॥भौतिक देह जीय अभिमानी देखत ही दुख लायो। कोउ कोउ उबरचो साधु संगति जिन राम जीवन पायो ॥ जाग्यो मोह मयूर प्रति छूटे सुयश गीतके गाये। सूर मिटै अज्ञान मूर्छा ज्ञान मूलके खाये ॥ ३२॥ नृपको बचन शुकदेव प्रति ॥ नमो नमो करुणा निधान। चितवनि कृपाकटाक्ष तुम्हारी मिटिगयो तम अज्ञान॥मोहनिशाको लेश रह्यो नहिं भयो विवेक

बिहान । आतमरूप सकल घट दरश्यो उदय कियो रवि ज्ञान ॥ मैं मेरी अब रही न मेरे छुट्यो देह अभिमान । भावै परो आजुही यह तनु भावै रहो अमान ॥ मेरेजियअब यहैलालसा लीला श्रीभगवान।श्रवण करौंनिशि बासरहितसों सूर तुम्हारी आन ॥ ३३ ॥ अथ शुकदेववचन रागसारंग ॥ कह्यो शुक सुनो परीक्षितराव । ब्रह्म अगोचर मन वाणीते अगम अनंत प्रभाव ॥ भक्तन हित अवतार धारि जो करि लीला संसार । कहौं ताहि जो सुनै चित्त दै सूर तरै सो पार ॥ ३४ ॥ अथ नारदब्रह्मा संवाद रागबिलावल ॥ नारद ब्रह्माको शिरनाई । कह्यो सुनो त्रिभुवन पतिराई ॥सकल सृष्टि यह तुमते होई । तुम सम द्वितिया और न कोई ॥ तुम हौ धरत कौनके ध्यान । यह तुम मोसों कहो बखान ॥ कह्यो कर्ता हर्ता भगवान । सदा करत मैं तिनको ध्यान ॥ नारदसों कह्यो विधि या भाई । सूर कह्यो त्योंहीं शुक गाई ॥ ३५ ॥ अथ चतुर्विंशति अवतार वर्णन ॥ राग धनाश्री ॥ जो हरि करै सो होई कर्ता नाम हरी। ज्यों दर्पण प्रतिबिंब त्यों सब सृष्टि करी ॥ आदि निरंजन निराकार कोउ हुतो न दूसर । रचो सृष्टि विस्तार भई इच्छा इक औसर ॥ त्रिगुण तत्त्वते महातत्त्व महातत्त्वते अहंकार।मन इंद्रिय शब्दादि पंची ताते किये विस्तार ॥ शब्दादिकते पंचभूत सुन्दर प्रगटाये।पुनि सबको रचि अंड आपमें आप समाये॥तीनलोकनिजदेहमें राखेकरिविस्तार।आदि पुरुष सोई भयो जो प्रभु अगम अपार ॥ नाभिकमलते आदिपुरुष मोको प्रगटायो। खोजत युग गए बीति नालको अंत न पायो ॥ तिन मोसों आज्ञा करी रचि सब सृष्टि उपाई । स्थावर जंगम सुर असुर रचे सबै मैं आई ॥ मच्छ कच्छ बाराह बहुरि नरसिंह रूप धरि । वामन बहुरो परशु-राम पुनि राम रूप करि ॥ वासुदेव सोई भयो बुध भयो पुनि सोई । कल्की होइहै और न द्वितिया कोई ॥ ए दश हैं अवतार कहौं पुनि और चतुर्दश।भक्तबछल भगवान धरे वपु भक्तनिके वश॥ अज अविनाशी अमर प्रभु जन्मै मरै न सोई । नटवर कला करत सकल बूझै बिरला कोई॥सनकादिक पुनि व्यास बहुरि भए हंसरूपहरि।पुनिनारायण ऋषभदेव बहुरयो धन्वंतरि ॥ नारद दत्तात्रेय हरि यज्ञ पुरुष वपु धारि ॥ कपिल मोहनी पृथु हयग्रीव सुध्रुव उद्धारि ॥ भूमिरेणु कोउ गनै और नक्षत्रन सबुझावै । कह्यो चहै अवतार अंत सोऊ नहिं पावै ॥ सूर कहो क्यों कहि सकै जन्म कर्म अवतार । कहै कछुक गुरुकृपाते श्रीभागवत अनुसार ॥ ३६ ॥ब्रह्माउत्पत्ति चतुःश्लोक प्रति राग बिलावल॥ ब्रह्मा यों नारदसों कह्यो । जब मैं नाभिक-मलते भयो ॥ खोजत नाल कितो युग गयो । तउ मैं कछू मरम ना लह्यो ॥ भइ अकाश-वाणी तिहिं बार । तू ए चारि श्लोक विचार ॥ इनैं विचारत ह्वैहै ज्ञान । ऐसी भाँति कह्यो भगवान ॥ ब्रह्मा जो नारदसों कही । व्यास सोइ नारदसों लही ॥ व्यास कही मोसों विस्तार । भयो भागवत या परकार ॥ सोई मैं अब तोसों भाखौं । तेरे हृदय न संशयराखौं॥ मूल भागवत-के एइ चार । सूर भली विधि इन्हैं विचार ॥ ३७ ॥ अथ चतुःश्लोकी श्रीमुखवाक्य । राग कान्हरा ॥ पहिले होहिं हों तब एक । अमल अकल अज भेद विवर्जित सुनि विधि विमल विवेक ॥ सो हौं एक अनेक भांति करि शोभित नाना भेष । ता पाछे इन गुणनि गएते हौं रहिहौं अवशेष॥ झूठीहै सांची सी लागति मम माया सो जानि ।रवि शशि राहु संयोग विना ज्योंलीजत है मन मानि । ज्यों जग फटिक मध्य न्यारो बसि पंच प्रपंच बिभूत ॥ ऐसे मैं सबहुनते न्यारो मणि ग्रथित ज्यों सूत ॥ पहिले ज्ञान विज्ञान द्वितिय पद तृतिय भक्तिको भाव ।सूरदास सोई समष्टि करि व्यष्टि दृष्टि मनलाव ॥ ३८ ॥

इति श्रीकविवरसूरदासकृते श्रीमद्भागवते सूरसागरे द्वितीयःस्कन्धःसमाप्तः ॥

अथ कवि सूरदास कृत–

श्री सूरसागर ।

तृतीय स्कन्ध ।

अथ शुकवचन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ । हरिचरणारबिंद उरधरौ॥शुकदेव हरिचरणन चितलाई । राजासों बोल्यो या भाई ॥ कहौं हरिकथा सुन चित लाई।सूर तरौहरिके गुण गाई ॥ १ ॥ उद्धव विदुर संवाद । कृष्णज्ञान संदेश मैत्रेय निकट बतावन राग बिलावल ॥ जब हरि भए अंतर्ध्यान।कहि उद्धवसों तत्त्वज्ञान॥कह्यो मैत्रेयसों समुझाई।यह तुम विदुरहि कहियोजाई॥ बद्रिकाश्रम दोऊ मिलि आए । तीरथ करत गए अकुलाए ॥ उद्धव विदुर तहां मिलि गए । दोऊ कृष्ण प्रेम वश भए ॥ उद्धव कहो हरि कह्यो जो ज्ञान । कहिहैं तुम्हैं मैत्रेय आन ॥ यह कहि उद्धव आगे चले । बिदुर मैत्रेय बहुरो मिले॥ जो कछु हरिसों सुनियो ज्ञान। कह्यो मैत्रेय ताहि बखान॥ सोई मोहिं दियो व्यास सुनाई । कहों सो सूर सुनो चितलाई ॥२॥ अथ विदुर जन्म वर्णन ॥विदुर सुधर्मराई अवतार । ज्यों भयो कहौं सुनो चितधार ॥ मांडव्य ऋषि जब शूली दयो । तब सो काठ हरयो ह्वैगयो ॥ मांडव्य धर्मराजपै आयो । क्रोधवंत यह बचन सुनायो ॥ कौन पाप में ऐसो कियो । जाते मोकूं शूली दियो ॥ धर्मराज कह सुन ऋषिराई । क्षमा करो तो देउँ सुनाई ॥ बालअवस्थामें तुम धाई । उडत भँभीरी पकरी जाई ॥ ताहि शूलपर शूली दियो । ताको बदलो तुमसों लियो ॥ ऋषि कहै बाल दशा अज्ञान । भयो पाप मोते बिन जान ॥ बालापनको लगत न पाप । ताते देउँ मैं तुम्हें शराप ॥ दासीसुत तू ह्वै है जाई । सूर विदुर भयऊ सो आई ॥ ३ ॥ अथ सनकादिकावतार ॥ ब्रह्मा ब्रह्मरूप उर धारि । मनसों प्रगट कियो सुत चारि ॥ सनक सनंदन सनतकुमार । बहुरि सनातन नाम ए चार ॥ ए चारों जब ब्रह्मा किये । हरिको ध्यान धरयो तिहिं हिये ॥ ब्रह्मा कह्यो सृष्टि विस्तारो । उन यह बचन हृदय नहिं धारो ॥ कह्यो यहै हम तुमसों चहैं । पांच बरसके नितही रहैं ॥ ब्रह्मासों यह वर तिहि पाई । हरि चरणन चित राख्यो लाई ॥ शुकदेव कह्यो जैसे प्रकार । सूर कहै ताही अनुसार ॥४ ॥ अथ रुद्र उत्पत्ति वर्णन । सनकादिकनि कह्यो नहिं मान्यो । ब्रह्मा क्रोध बहुत मन आन्यो ॥ तब इक पुरुष भौंहते भयो।होत समय तिहि रोवन ठयो ॥ ताको नाम रुद्र विधि राख्यो । ताको सृष्टि करन को भाख्यो ॥ तिन बहु सृष्टि तामसी करी । सो तामसकरि मन अनुसरी । ब्रह्मा मन सो भली न भाई। सूर सृष्टि तब अवर उपाई ॥५॥ अथ सप्तऋषि चारमनु उत्पत्तिवर्णन॥ ब्रह्मा सुमिरन करि अभिराम।प्रगट किये ऋषि सप्त अभिराम॥भृगु मरीचिअंगिरावसिष्ठ।अत्रिपुलहपुनि भयोपुलस्त्य॥

पुनि दक्षादि प्रजापति भये । स्वयंभु आदि चार मनु जये ॥ इनते उपजी सृष्टि अपार । सूर कहां लौं करे विस्तार ॥ ६ ॥ अथ सुर असुर उत्पत्ति वर्णन ॥ राग विलावल ॥ ब्रह्मा ऋषि मरीचि निर्मायो । ऋषि मरीचि कश्यप उपजायो ॥ सुर अरु असुर कश्यपके पुत्र । भ्रात विमात आपमें शत्रु ॥ सुर हरिभक्त असुर हरिद्रोही । सुर अति क्षमी असुर अति कोही ॥ उनमें नित उठि होइ लराई । करैं सुरनकी कृष्ण सहाई ॥ तिनहित जो जो किये अवतार । कहौं सूर भागवतअनुसार ॥ अथ बाराह रूप वर्णन । राग बिलावल ॥ ब्रह्माते स्वयंभू मनु भयो ॥ तासों सृष्टि करनको कह्यो ॥ तिन ब्रह्मासों कहो शिर नाई । सृष्टि करौंसु रहे किहि भाई ॥ ब्रह्मा हरिपद ध्यान लगायो ॥ तब हरि वपु बराह धारि आयो ॥ ह्वै बराह पृथ्वी जब लायो । सूरदास शुक त्यौंहीं गायो ॥ ८ ॥ राग धनाश्री ॥ हारि गुण कथा अपार पार नहिं पाइये । हरि सेवत सुख होइ हरी गुण गाइये ॥ ब्रह्मपुत्र सनकादि गये बैकुंठ एक दिन । द्वारपाल जय बिजय हुते बरज्यो तिहिंको पुन ॥ शाप दियो तब क्रोध ह्वै असुर होउ संसार । हरि दर्शनको जात क्यों रोक्यो बिना विचार ॥ हरि तिनसों कह्यो आइ भली शिक्षा तुम दीनी । बरज्यौ आवत तुम्हैं असुरबुद्धी इन कीनी ॥ तिन्हैं कह्यो संसारमें असुर होउ अब जाइ । तृतियहि जन्म बिरुद्ध कारि मोसों मिलिहौआइ ॥ कश्यप-की दिति नारि गर्भ ताके दोउ आए । तिनके तेज प्रताप देवतनि बहु दुख पाए ॥ गर्भ माहिं शत वर्ष रहि प्रगट भये पुनिआइ । तिन दोउनको देखिकै सुर सब गए डराइ ॥ हिरण्याक्ष इक भयो हिरण्यकशिपु भयोदूजो । तिनके बलको इंद्र वरुण कोऊ नहिं पूजो ॥ हिरण्याक्ष तबपृथ्वी-को लेराख्यो पाताल । ब्रह्मा विनती करि कह्यो दीनबंधु गोपाल ॥ तुम विन दुतिया और कौन जो असुर सँहारै । तुम बिन करुणासिंधु कौन पृथ्वी उद्धारै ॥ तब हरि धरि बाराह बपु ल्याए पृथ्वी उठाइ । हिण्याक्ष लेकर गदा तुरतहि पहुँच्यो आइ ॥ असुर कोप ह्वै कह्यो बहुत तुम असुर संहारे । अब लेहौं वह दांव छांडिहौं नहिं बिन मारे ॥ यह कहिकै मारी गदा हरिजू ताहि सँभारि । गदायुद्ध तासों कियो असुर न मानी हारि ॥ तब ब्रह्मा करि बिनय कह्यो हरि ताहि सँहारो । तुम तौ लीला करत सुरन मन परो धकारो ॥ मार्यो ताहि बिचारि हरि सुर मुनि भयो हुलास । सूरदासके प्रभु बहुरि कियो बैकुंठ निवास ॥ ९ ॥ अथ कपिलदेवमुनि अवतार वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ ॥ हरिकोध्यान सदा हियधरौ ॥ ज्यों भयो कपिलदेव अवतार । कहौं सो कथा सुनो चित धार ॥ कर्दम पुत्रहेतु तप कियो । तासु नारिहूं इक व्रत लियो ॥ हरिसो पुत्र हमारे होई । और जगत सुख हू पुनि होई ॥ नारायण तिनको वर दियो । मोसो और न कोई वियो ॥ मैं लेहौं तुम गृह अवतार । तप तजि करो भोग संसार ॥ दुहुँ तब तीरथमाहिं न्हवायो । सुंदर रूप दुहूं जन पायो ॥ भोगसमग्री जुरी अपार । विचरन लागे सुख संसार ॥ तिनके कपिलदेव सुत भये । परम भाग्य मानी तिहिलये ॥ १० ॥ अथ कर्दमप्रसंगराग बिलावल ॥ कर्दम कह्यो तिन्हैं शिरनाई ॥ आज्ञाहोइकरौं तप जाई ॥ अभयअछेदरूपममजान । जो सबघट है एक समान ॥ मिथ्या तनुको मोहबिसारि । जाइरह्यो भावे गृहदारि ॥ करतइंद्रिय-नि चेतन जोई ॥ मम स्वरूप जानोतुमसोई ॥ तनुअभिमान जाकोनशिजाई । सोनररहैसदा सुख पाई ॥ जब ममरूप देह तजि जाई । तबसब इंद्री शक्ति नशाई ॥ ताको जानि मग्न ह्वै रहै । देह-अभिमान ताहि नहिं दहै ॥ और जो ऐसी जानै नाहीं । रहै सो सदा कालभयमाहीं ॥ यह सुनि कर्दम वनहिं सिधाए । वहां जाय हरिपद चित लाए ॥ हरिस्वरूप सब घट पुनि जान्यो । अँख-

माहिं ज्यों रस है सान्यो॥ जोयो तिन आतम रस सार। ऐसी बिधि जान्यो निरधार॥ यह लखि गहि हरिपद अनुराग। मिथ्या तनुको कीनो त्याग॥ तनुहि त्यागिके हरि पद पायो। नृप सुनि हरिस्वरूप उर लायो॥ ११ ॥ अथ देवहूती माताको प्रश्न कपिलमुनिसों॥ इहां कपिलसों माता कहो। प्रभु मेरो अज्ञान तुम दहो॥ आतमज्ञान देहु समुझाई। जाते जन्म मरण दुख जाई॥कह्यो कपिल कहों तुमसोंज्ञान। मुक्तहोइ नर ताको जान॥मुक्त विविधके लक्षण केहौं। तेरे सब संदेहे दहौं॥मम सो रूप जो सब घट जान। मग्न रहै तजि उद्यम आन॥अरु सुखदुख कछु मन नहिं ल्यावै।माता सो नर मुक्त कहावै॥ और जु मेरो रूप न जानै।कुटुँब हेत नित उद्यम ठानै॥जाको इहिविधि जन्म सिराई। सो नर मरिकै नरक सिधाई॥ ज्ञानीसंगति उपजै ज्ञान। अज्ञानीसँग हो अज्ञान॥ ताते साधु संग नित करना। जाते मिटै जन्म अरु मरना॥ स्थावर जंगममें मोहिं जानै। दयाशील सबसों हित ठानै॥ सत संतोष दृढ करै समाध। माता ताको कहिये साध॥ काम क्रोध लोभै परिहरै। द्वंद्व रहित उद्यम नहिं करै॥ ऐसे लक्षण हैं जिहि माहीं। माता तिनकों साधु कहाहीं॥ जाको काम क्रोध नित व्यापै। अरु पुनि लोभ सदा संतापै॥ ताहि असाधु कहत कवि सोई। साधु भेष धरि साधु न होई॥ संत सदा हरिके गुण गावैं।सुनि सुनि लोग भक्तिको पावैं॥भक्ति पाइ पावैं हरिलोक।तिन्हैं न व्यापै हर्ष न शोक॥ देवहूति कह भक्ति सु कहिये।जाते हरिपुर बासा लहिये॥१२॥भक्तिप्रश्न॥ अरु सु भक्ति कीजे किहि भाई। सोऊ मोको देहु बताई॥ माता भक्ति चारि परकार। सत रजतम गुण सुधासार॥भक्ति एक पुनि बहुविधि होई।ज्यों जल रंग मिलि रंगसुहोई॥भक्ति सात्विकी चाहत मुक्त। रजोगुणी धनकुटुँबअनुरक्त॥तमोगुणी चाहै या भाई।ममबैरी क्योंही मरजाई॥ सुधाभक्ति मोक्षको चाहे। मुक्तिहुको नाहीं अवगाहै॥मन क्रम वच मम सेवा करै। मनते भव आशा परिहरै॥ऐसो भक्त सदा मोहिं प्यारो। इकछिन जाते रहौं न न्यारो॥ ताके मैं हित मम हित सोई।जा सम मेरो और न कोई॥त्रिविधभक्ति मेरे है जोई॥जो मांगे तिहिदेहुँ मैं सोई॥ भक्त अनन्य कछू नहिं माँगै॥ ताते मोहिं सकुच अतिलागै॥ ऐसो भक्तजानिहैजोई जाके शत्रु मित्र नहिं दोई॥हरिमाया सब जग संतापै। ताको माया मोह न व्यापै॥ १३॥ हरिमायाप्रश्न॥कपिल कहो हरिको निजरूप॥ अरु पुनि माया कौन स्वरूप॥ देवहूति जब याविधि कह्यो। कपिलदेव सुनि अतिसुख लह्यो॥ कह्यो हरिके भय रवि शशि डरै। वायु वेग अतिशय नहिं करै॥ अगिनि रहै जाके भय माहीं। सो हरिमाया जा वश माहीं॥मायाको त्रिगुणातम जानो। सत रज तम ताको गुण मानो॥ तिन प्रथमै महत्तत्त्व उपायो।तातेअहंकार प्रगटायो॥ अहंकार कियो तीनप्रकार।मनते ऋपिमनसान रु चार॥रजगुणते इंद्रिय विस्तारी। तमगुणते तन्मात्रा सारी॥ तिनते पांच तत्त्व प्रगटायो। इहि सबको इक खंड बनायो॥अंडसु जड़ चेतन नहिं होई। तब हरिपद माया मन पोई॥ ऐसीविधिविनतीअनुसारी।महाराजबिनु शक्ति तुम्हारी॥ यह अंडा चेतननहिं होई।करोंकृपाहरि चेतन सोई॥तामें शक्तिआपुनीधारी। चक्ष्वादिक इंद्री विस्तारी॥चौदहलोक भये तामाहिं।ज्ञानी तिहि बैराट कहाहिं॥ आदिपुरुष चैतन्यको कहत।जो है तिहू गुननते रहित॥ जड स्वरूपसब माया जानो।ऐसो ज्ञान हृदयमें आनो॥ जबलगि है जियको अज्ञान। चेतनको सो सकै न जान॥सुत कलत्रको अपनो मानै। अरु तिनसों ममत्व बहु ठानै॥ जो कोइ सुख दुख सपने जोई। सत्य मानले तिनको सोई॥ जब

जागे तब सत्त न मानै।ज्ञान भए त्योंहीं जग जानै ॥ चेतन घट घट है याभाई। ज्यों घट घट रवि प्रभा लखाई ॥ घट उपजो बहुरो नशि जाई। रवि नित रहै एक ही भाई ॥ जा तनको है जन्म रु मरना। चेतन पुरुष अमर अज बरना ॥ ताको ऐसो जानैजोई।ताके तिनसों मोह न होई ॥ जबलौं ऐसो ज्ञान न होई ।वर्णधर्म को तजै न सोई ॥ संतनकी संगति नित करै। पापकर्म मनते परिहरै ॥ अरु भोजन सो इहि विधि करै ।आधा उदर अन्नसों भरै ॥ आधेमें जलवायु समावै। तब तिहिं आलस कबहुँ न आवै ॥ और जु परालब्ध सों आवै। ताहीको सुखसों बरतावै ॥ बहुतेको उद्यम परिहरै। निर्भय ठौर बसेरो करै ॥ तीरथहू में जो भय होई। ताहूको तू परिहरै सोई ॥ बहुरो धरै हृदय महँ ध्यान । रूप चतुर्भुज श्याम सुजान ॥ प्रथमै चरण कमलको ध्यावै। तासु महातम मनमें ल्यावै ॥ गंगा एरसि उनहिंको भई। शिव शिवता इनहीं सों लही॥लक्ष्मी इनको सदा पलोवै। बारंबार प्रीतिको जोवै। जंघनको कदली सम जानै। अथवा कनक थंभ सम मानै ॥ उर अरु ग्रीव बहुरि हिय धारै।तापर कौस्तुभ मणिहि बिचारै॥ भृगुलत्ता लक्ष्मी तहँ जानी।नाभि कमल चित धारै ध्यानी॥मुख मृदुहास देख सुख पावै। तासों प्रेम सहित मन लावै ॥ नैन कमल दलसे अनियारे। दरशत तिनैं कटैं दुख भारे ॥नासा कीर परम अति सुंदर। दरशत ताहि मिटै दुखद्वंदर॥ कूप समान श्रवन दोउ जानैं। मुखको ध्यान इसी विधि ठानै ॥ केसर तिलक रेख अति सोहै। ताके पटतरको जग को है॥ मृगमद बिंदा तामें राजे। निरखत ताहि काम शत लाजे ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहै। जो देखै ताको मन मोहै॥श्रवणनि कुंडल परम मनोहर। नख शिख ध्यान धरै यों उर धर॥क्रम क्रम करि यह ध्यान बढावै। मन कहुँ जाय फेरि तहँ आवै ॥ ऐसे करत मगन होइ सोई॥ बहुरो ध्यान सहजही होई ॥ चितवत चलत न चितते टरै ॥ सुत त्रिय धन की सुधि बिसमरै॥ तव आतम घट घट दरशावै। मग्न होइ तन मन बिसरावै ॥ भूख प्यास ताके नहिं व्यापै। सुख दुख तनिकौ नहिं संतापै ॥जीवनमुक्त रहै या भाई। ज्यों जल कमल अलिप्त रहाई॥ १४ ॥ देवहूतीप्रश्न सुगम उपाय। राग विलावल ॥देवहूति यह सुनि पुनि कह्यो। देव ममत्व ढेर मुहिं रह्यो ॥ कर्दममोह न मनतें जाई। ताते कहिये सुगम उपाई ॥ कपिल कह्यो तोहिं भक्ति सुनाऊं।अरु ताको बेवरो समझाऊं॥ मेरी भक्ति चतुर विधि करै। सुने सुने ते सब निस्तरै ॥ जो कोउ दूरि चलनको करै। क्रम क्रम करि डग डग पग धरै ॥ इकदिन सु वहां पहुँचै जाई॥ त्यों मम भक्त मिलै मोहिं आई ॥ चलत पंथ कोउ थाक्यो होई।कहे दूरि डरि मरिहै सोई ॥जो कोउ ताको निकट बतावै।धीरज धरि सु ठिकाने आवै॥तमोगुणी रिपु मरनो चाहै॥रजो गुणी धन कुटुंब अवगाहै॥भक्त सात्त्विकी सेवसंत लखै तबै मूरति भगवंत॥मुक्ति मनोरथ मनमें ल्यावै।ममप्रसादतेसोवहपावै।निर्गुण मुक्तिहुको नहिं चहै।मम दर्शनहीते सुखलहै॥ऐसो भक्त सु मुक्त कहावै॥सो बहुरयो चलिभवनहिं आवै॥क्रम क्रम ही करि सब गति होई। मेरो भक्त नष्ट नहिं होई ॥ १५ ॥ हरिते बिमुख होइ नर जोइ।अग्रिके नरक परत है सोइ॥तहां जातना बहुविधि पावै।बहुरो चौरासीमें आवै॥चौरासी भ्रमि नरतन पावै। पुरुप-वीर्यसों तिय उपजावै॥ मिल रज वीरज ऐसी होई। द्वितिय मास शिर धारै सोई ॥ तीजे मास हस्त पग होवै।मास चौथि कटि अँगुरी सोवै। प्राणवायु पुनि आय समावै ॥ताको इत उत पवन चलावै। पंचम मास हाड बलपावै।छठे मास इन्द्री प्रगटावै॥सप्तम चेतनता लहै सोई। अष्टमास सम्पूरण होई॥नीचेशिरअरु ऊंचे पांई।जठर अग्निको व्यापै ताई॥कष्ट बहुत सो पावै जहां।पूर्वजन्म

सुधि आवै तहाँ॥नवम मास पुनि बिनती करै।महाराज यह दुख मम टरै॥ह्यांते जो मैं बाहर परौं अहर्निश भक्ति तुम्हारी करौं ॥ अरु मोपै प्रभु किरपा कीजै । भक्ति अनन्य आपुनी दीजै॥अरु यह ज्ञान न चितते टरै।बार बार यों बिनती करै॥दशम मास पुनि बाहर आवै।तब यह ज्ञान सकल बिसरावै॥बालापन दुख बहुबिधि पावै।जीभ बिना कहि;कहा सुनावै॥कबहूं विष्टामें रह जाई। कबहूं माखी लागे आई॥कबहूं जुवां देईं दुखभारी।तिनको सो नहिं सकै निवारी॥पुनि जब षष्ठ वर्षको होई ।इत उत खेलन चाहत सोई॥माता पिता निवारैं जबहीं।मनमें दुख पावै सो तबहीं॥ माता पिता पुत्र तेहि जानै।वह उनसे तब नातो मानै॥वरसैं दश व्यतीत जब होई।बहुरि किशोर होय पुनि सोई ॥सुंदर नारी ताहि विवाहै ॥ अशन बसन बहुविधि सो चाहै॥ बिना भाग सो कहँतेआवै।तब वह मनमें बहु दुख पावै॥पुनि लक्ष्मी हित उद्यम करै॥अरु जब उद्यम खाली परै॥तब वह रहै बहुत दुख पाई॥कहँ लौं कहौं कह्यो नहिं जाई ॥ बहुरो ताहि बुढापो आवै । इन्द्री शक्ति सकल मिट जावै॥कान न सुनै आँखि नहिं सूझै।बात कहै सो कछु नहिं बूझै॥खैबेको जब नाहिंन पावै । तब बहु बिधि मनमें पछतावै ॥ पुनि दुख पाइ पाइ सो मरै । बिनु हरि-भक्ति नरकमें परै । नरक जाइ पुनि बहु दुख पावै ।पुनि पुनि योंहीं आवै जावै॥तऊनहींहरि-सुमिरण करै । ताते बार बार दुख भरै ॥ १६ ॥ भक्त महिमा॥ भक्त सकामीहूँ जो होई । क्रम क्रम करिकै उधरै सोई ॥ शनै शनै विधि पावै जाई । ब्रह्म संग हरिपदहि समाई ॥निष्कामी वैकुंठ सिधावै।जन्म मरन तिहि बहुरि न आवै॥त्रिविधि भक्ति अब कहों सुनु सोई।जातें हरिपद प्रापति होई ॥ एक कर्मयोगको करै । वर्ण आश्रम धरि निस्तरै ॥ अरुअधर्म कबहूं नहिं करैं।ते नर याही विधि निस्तरैं॥ एक भक्ति योग को करै।हरि सुमिरन पूजा विस्तरै॥हरि पद पंकज प्रीति लगावै । क्रम क्रम करि हरि पदहि समावै॥ते हरिपद को याविधि पावै॥क्रम क्रम करि हरिपदहि समावै॥एक ज्ञान योग बिस्तरै । ब्रह्म जानि सबसों हित करै ॥ कपिलदेव बहुरो यों कह्यो । हमैं तुमें संबाद जु भयो ॥ कलियुगमें यहि सुनिहै जोई । सो नर हरिपद प्रापति होई ॥१७॥देवहूति हरिपदप्रा॰॥ देवहूति ज्ञानको पाई । कपिलदेवको कह्यो शिर नाई ॥ आगे मैं तुमको सुत मान्यो। अब मैं तुमको ईश्वर जान्यों ॥तुम्हरी कृपा भयो मुहिं ज्ञान ।अब न ब्यापिहै मोहिं अज्ञान॥ पुनि वन जाइ दियो तनु त्याग। गहिकै हरिपदसों अनुराग॥ कपिलदेव सांख्य जो गायो। सो राजा मैं तुम्हें सुनायो ॥ याहि समुझि जु रहै लवलाई। सूर बसै सो हरिपुर जाई ॥ १८॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते तृतीयस्कंधःसमाप्तः ॥ ३ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्री सूरसागर।

चतुर्थस्कन्ध।

(राग बिलावल)हरि हरि हरिहरि सुमिरनकरो।हरिचरणारविन्दउरधरो॥कहौं अब दत्तात्रेय अवतार। राजा सुनौ ताहि चित धार॥ अत्रि पुत्रहित बहु तप कियो। तासुनारिहूँ यह व्रत लियो॥तीनोंदेव तहां मिलिआयो।तिनसों ऋषि यह वचन सुनायो॥मैंतोएक पुरुषको ध्यायो।अरुएकहि सोंमैंचित लायो॥ अपने आवनको कहो कारण।तुम हौ सकल जगत निस्तारण॥कह्यो तुम एक पुरुष जो ध्यायो।ताको दरश न काहू पायो॥ताकी शक्ति पाइ हम करैं।प्रतिपालौ बहुरो संहरैं॥ हम तीनोंहैं जगकरतार। मांगलेहु हमसों वर सार॥ कह्यो बिनय मेरी सुनिलीजै।ज्ञानमान पुत्र मोहिदीजै॥ विष्णुअंश दत्त अवतरे। रुद्र अंश दुर्वासा ढरे॥ ब्रह्म अंश चंद्रमा भयो। अत्रि अनसूयाको सुख दयो॥ यों भए दत्तात्रेय अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार॥ १ ॥शुकदेव वचन॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविन्द उर धरो॥ शुकदेव हरि चरण चित लाई। राजासों बोल्यो या भाई॥ कहौं हरिकथा सुनो चित लाई। सूर तरचो हरिके गुण गाई॥ २॥ यज्ञ पुरुष अवतार वर्णन॥ दक्षके उपजीं पुत्री सात। तिनमें सती नाम विख्यात॥ महादेव-को सो पुनि दई। यज्ञ दक्षकेमें सो मुई॥तहां कियो हरि यज्ञ अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार॥ ३॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविन्द उर धरो॥ कहौं अब यज्ञ पुरुष अवतार। राजा सुनौ ताहि चित धार॥ सती दक्षके पुत्री भई। दक्ष सु महादेवको दई॥ ब्रह्मा महादेव ऋषि सारे। एक दिन बैठे सभा मँझारे॥ दक्ष प्रजापति-हू तहां आए। करि सन्मान सबनि बैठाये॥ काहू समाचार कछु पूछे। काहूसे बहुरो उन पूँछे॥ शिवकी लागी हरिपदतारी। ताते नहिंशिव आंख उघारी॥ महादेव बैठे रहि गए। दक्ष देखिकै तिहि दुख तए॥ महादेवको भाषत साधु।मैं तो देखो बहुत असाधु॥ यज्ञ भाग ताको नहिं दीजै।मेरो कहो मान करिलीजै॥नन्दी हृदय भयो सुनि ताप। दियो ब्राह्मणनको तिन शाप॥ श्रुति पढिकै तुम नहिं उद्धरिहो। विद्या बेंचि जीविका करिहौ॥ भृगु तब कोप होय तहँ कह्यो। तैं शराप सबहुनको दियो॥ महादेव हित जो तप करिहैं।सोऊ भव जलते नहिं तरिहैं॥ दक्ष प्रजापति यज्ञ रचायो। महादेवको नहीं बुलायो॥ सुर गंधर्व जे नेवति बुलाये। ते सब वधू-सहित तहां आये॥ सती सबनि तिन्ह आवत देखी।शिवसोंबोली वचन विशेखी॥ चलिये दक्ष-गेह हम जाहीं। यद्यपि हमैं बुलायो नाहीं॥ मोको तो यह अचरज आयो उन हमको कैसे बिसरायो॥ गुरु पितु गृह बिनु बोले जैये।यहै नीति नाहीं सकुचैये॥शिव कह्यो तुम भलि नीति

सुनाई। पै वह मानत है शत्रुताई॥वहां गये ते होइ अपमान। तौ यह भली बात नहिं जान॥ दुर्जन बचन सुनत दुख जैसो।बाणलगे दुख होयन तैसो॥मम सतराई हृदये आन।करिहै तेरोऊ अपमान॥भयेअपमान वहांतू मरिहै।जो ममबचन हृदय नहिं धरिहै॥सतीकह्यो ममभगिनी सात। सबै बोलाई ह्वैहै मात॥मोहूको अबआज्ञा दीजै।महाराज अब बिलंब न कीजै॥बारंबारसती जब कह्यो। तबशिव अंतर्गत यों लह्यो॥ सती सदा मम आज्ञाकारी। कहत जु या विधि बारंबारी॥ देखत हैं कछु होवनहारी। सो काहू पै जाइ न टारी॥ गणन समेत सती तहँ गई। तासों दक्ष बात नहिं कही॥सती जानि अपनो अपमान। शिवको वचन कियो अनुमान॥कह्यो वहां अब गयो न जाई।बैठगई शिर नीचे नाई॥ शिव आहुतिकि बेर जब आई।विप्रन दक्षपूंछियो जाई॥ शिवनिंदा कहि तिनसों भाष्यो। मैं तुमही पहिलेहि कहि राख्यो॥ मेरो वचन प्रमान करि लेहू। शिवनिमित्त आहुति मत देहू॥ तब ह्वै क्रोध सती तिहि कही। तैं शिवकी महिमा नहिं लही॥ महादेव ईश्वर भगवान। शत्रु मित्र वह एक समान॥ तू अज्ञान जो करि शत्रुताई। उनकी महिमा तैं नहिं पाई॥ पिता जानि तोको नहिं मारों। अपनोही मैं आप सँहारो॥योगधारण करि तनु त्यागो। शिवपद कमल माहिं अनुराग्यो॥ बहुरि हिमालयके अवतरी। समयांतरहर बहुरो बरी॥ह्यां शिवगणनि उपद्रव कियो। तबभृगुऋषि उपाय यह ठयो॥आहुति यज्ञ कुंडमें डारि। कह्यो पुरुष उपजै बल भारी॥ पुरुष कुंडते प्रगट जुभए। भृगुके निकट चले सब गए॥ भृगु कह्योकरत यज्ञको नास। इनकोह्यांते देहु निकास॥ शिवके गण तिहि बहुतै मारे। ते गण शिवते जाइ पुकारे॥ शिव ह्वै क्रोध इक जटा उपारी। वीरभद्र उपज्यो बल भारी। वीरभद्रको तहां पठायो। तासों इहि बिधि कहि समझायो॥ दक्ष शिरकाटि कुंडमें डारी। आवौ बेगि न करौ अबारी॥ वीरभद्र दक्षको मारयो। अरु भृगुऋषिको केश उपारयो॥ हाथ पायँ बहुतनके काटे।आइ नवायो शिवहिं ललाटे॥ तब सुर ऋषि ब्रह्मापै जाय। दियो सकल वृत्तान्त सुनाय॥ कह्यो ब्रह्मा शिवनिन्दा जहां। बुरो कियो तुम सबै तहां॥ ब्रह्मा तिहिले शिवपै आये। शिव प्रणाम करि ढिग बैठाये॥ शिवको सबन कियोपरमान। भोला नाथ लियो सो मान॥ब्रह्मा शिवको वचन सुनायो।दक्ष तुम्हारो मर्म न पायो॥जैसो करयोसो तैसो पायो। अब वाकोतुमफेर जिवायो॥शिव कह्यो मेरेनहिंशत्रुताई।सती मुई यह मनमें आई॥ अब जो तुम्हरी आज्ञा होई। छाडि विलंब कीजिए सोई।ब्रह्मा विष्णु रुद्र तहँ आए। भृगु ऋ-षि केश आपुने पाए॥ घायल सब नीके ह्वै गए।सुर ऋषि सबके भाए भए॥ दक्ष शीश कुंडमें जरयो। ताके बदले अजशिर धरयो॥ महादेव तेहिफेरि जिवायो। दक्ष जानि यह शीश नवायो॥ विप्रन यज्ञ बहुरि विस्तारयो। वेद भली विधिसों उच्चारयो॥ यज्ञपुरुष प्रसन्न जब भए। निकसि कुंडसे दरशन दए॥सुंदर श्याम चतुर्भुज रूप। ग्रीवा कौस्तुभ माल अनूप॥ उठके सबहुन माथो नायो। दक्ष बहुरि यह बिनय सुनायो॥ मैं अपमान रुद्रको कियो। तब मम यज्ञ सांग नहिं भयो॥ अब मोहिं कृपा कीजिए सोई। फिर दुर्बुद्धि न ऐसी होई॥ बहुरो भृगु ऋषि अस्तुति कीनी। महाराज मम बुधि भइ हीनी॥ दियो क्रोध करि शिवहि शराप। करौ कृपा जु मिटै यह दाप॥ पुनि शिव ब्रह्मा अस्तुति करी। यज्ञपुरुष वाणी उच्चरी॥ दक्षतैं कियो शिवहि अपमान। ताते भई यज्ञकी हान॥ विष्णु रुद्र विधि एकहि रूप। इन्हें जान मत भिन्न स्वरूप॥ जाते यह परगट भइ आई।ताको तू मनमाहिं धियाई॥यों कहि पुनि बैकुंठ

सिधारे। सुर गंधर्व गये पुनि सारे॥या विधि भयो यज्ञ अवतार।सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥
॥ ४ ॥ अथ संक्षिप्त यज्ञपुरुष अवतार कथा ॥ राग मारू ॥यज्ञ प्रभु प्रगट दरशन दिखायो ॥विष्णु विधि
रुद्र मम रूप ए तीनि हूं दक्षसों वचन यह कहि सुनायो ॥ दक्ष ऋषि मानि जब यज्ञ आरंभ
कियो सबनको सहित पत्नी हँकारचो। रुद्र अपमान कियो सती तब जिय दियो रुद्रके गणनि
ताको सँहारचो॥बहुरि विधि जाइ क्षमवाइ कै रुद्रको विष्णु विधि रुद्र तहां तुरत आये। यज्ञ
आरंभ मिलि ऋषिन बहुरो कियो शीश अज राखिकै दक्ष जिवाये॥कुंडते प्रगट यज्ञपुरुषदरशन
दयो श्यामसुंदर चतुर्भुज मुरारी। रूप प्रभु निरखि दंडवत सबहिनि कियो सूर ऋषि सबनि
अस्तुति उचारी ॥५ ॥ पार्वती बिवाह वर्णन॥ सती हिए धरि शिवको ध्यान।दक्ष यज्ञमें छाडयो
प्रान ॥ बहुरि हिमालयके शुभ घरी। नाम पार्वति ह्वै अवतरी ॥ पार्वती वर प्रापत भई। तबहिं
हिमाचल तासों कही ॥ तेरो कासों कीजै व्याह। तिन कह्यो मेरो पति शिव आह ॥ कह्यो
हिमाचल शिव प्रभु ईश। हमको उनसों कैसी रीस ॥ पार्वती शिव हित तप कऱ्यो।
तब शिव आइ तहां तिहि वऱ्यो ॥ पार्वती विवाह व्यवहार। सूर कह्यो भागवत
अनुसार॥६ ॥ ध्रुव कथा राग बिलावल ॥ स्वयंभू मनुके सुत भए दोई। तिनकी कथा कहौं सुनसोई ॥
उत्तानपाद इक नृपको नाम ॥ द्वितिय प्रियव्रत अति अभिराम ॥ उत्तानपादकेध्रुवसुतभए।हरि
जू ताको दरशन दए ॥ बहुरि दियो ताको अस्थान। जहां प्रदक्षिण दे शशि भान ॥कहौं सुकथा
सुनो चित धार। सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥७॥ ध्रुव वरदेन अवतार वर्णन। राग बिलावल॥
हरिहरिहरिहरि सुमिरन करो। हरि चरणारविन्द उर धरो ॥ कहौं अब ध्रुव बर देन अवतार।
राजा सुनो ताहि चितधार ॥ उत्तानपाद पृथ्वीपति भयो। ताको यश तीनों पुर छयो ॥ नाम
सुनीति बडी तिहि नारि। सुरुचि दूसरी ताकी नारि॥ भयोसुरुचितेउत्तमबार। सुनीति नारिके
ध्रुव कुमार ॥ राजा को सु सुरुचिसों नेह। बसै सुनीतिदूसरे गेह॥ इक दिन नृपति सुरुचि गृह
आए। उत्तम कुँवर गोद बैठाए ॥ ध्रुव खेलतखेलत तहँ आए। गोद बैठिबेको पुनिधाए॥राजा
त्रियडर गोद न लीनो ।ध्रुव कुमार रोइ तब दीनो ॥तबहि सुरुचिध्रुवकोसमुझायो।तैं गोविंद-
चरण नहिं ध्यायो ॥ जो हरिको सुमिरन तू करतो। मेरे गर्भ जानिअवतरतो॥राजातब तोहिं
लेतो गोद। तबहिं गोदमें करतो मोद ॥ अजहूं तू हरिपद चित लाई।होहिं प्रसन्नतोहिंयदुराई॥
वचन सुरुचि बाण सम लागे। ध्रुव आये मातापै भागे ॥ माता ताको रोदन देखि। दुख
पायो मन माँह विशेखि ॥ कह्यो पुत्र तोको केहिं माऱ्यो। ध्रुव अति दुखित वचन उचाऱ्यो ॥
माता ताको कंठ लगायो। तब ध्रुव सब वृत्तांत सुनायो॥ कह्यो सुत सुरुचिसत्ययहकह्यो।बिनु
हरिभक्ति पुत्र मम भयो ॥अजहूं सो हरिपद चित लैहो। सकलमनोरथमनको पैहो॥जिनरहरि
चरणन चितलाए। तिन तिन सकल मनोरथ पाए॥पितु तुव ब्रह्माको तपकियो। हरिप्रसन्नह्वैतिहि
बर दियो ॥ तिहिको सर्व जगत विस्तार। जाकी नाहीं पारावार॥बहुरि स्वयंभु मनु तपकीनो।
ताहूको हरिजू वर दीनो॥ताको भयौ बहुत परिवार।नर पशु कीट गनत नहिं पार॥तूहूजोहरिहित
तप करिहै। सकल मनोरथ तेरो पुरिहै॥ ध्रुव एहि सुनि वनको उठि चले।पंथमाहिं तेहि नारद
मिले ॥ देख्यो पांच बरसको बाल। वचन सुरुचि नहिंसक्यो सँभाल॥अवमैंहूयाकोदृढदेख्यो।
दृढविश्वास बहुरि उपदेशों ॥ ध्रुवसे कह्यो क्रोध परिहरो। मैं जो कहौं सोचितमेंधरो॥मेरे सँग
राजापै आवौ। देआवौं तोहि राज्य धन गांवौ॥भक्तिभावको जो तोहिं चाह। तोसों नहिं ह्वै-
है निर्वाह ॥ बहुतक तपसी पचिपचि मुए। पै तिहि हरि दरशन नहिं हुए ॥ मैं हरिभक्त नाम

मम नारद । मोसों कहो सु अपनो हारद ॥ राजा पास कहों सो जाई । लेहैं मान नृपति सत भाई ॥ ध्रुव विचार तब मनमें कियो ।सुमिरत नारद दरशन दियो ॥ जब मैं भक्ति श्यामकी करिहौं । नहिं जानत जु कहा मैं पैहौं॥ कह्यो सो नारद करो सहाई । करों भक्ति हरिकी चित लाई ॥ तुम नारायण भक्त कहावत । काहेको तुम मोहिं फिरावत ॥ तब नारद ध्रुवको दृढ़ देखि । कह्यो देउँ मैं ज्ञान विशेषी॥ मथुरा जाय सु सुमिरन करो । अरु हरिध्यान हृदयमें धरो॥ मथुरा जाइ सोई उन कियो । तब नारायण दरशन दियो ॥ ध्रुव अस्तुति कीनी बहुभाई।तबहारि-जू बोले मुसुकाई ॥ध्रुव जो तेरी इच्छा होई । मांग लेहु मोसों अब सोई॥ प्रभु मैं तुमरो दरशन लह्यो । मांगनको पाछे कहा रह्यो ॥ हरि कह्यो राज्य हेतु तप कियो । ध्रुव प्रसन्न होइ मैं तोहिं दियो॥अरु तेरे हित कियो अस्थान । देहिं प्रदक्षिण जहँ शशि भान ॥ ग्रह नक्षत्रहू त्योंही फिरै । तू भव अटल न कबहूं टरै ॥ अरु पुनि महाप्रलय जब होई । मुक्तिस्थान पाइहो सोई ॥ यह कहि हरि निज लोक सिधारे। ध्रुव निजपुरको पुनि पग धारे॥जब ध्रुव पुरके बाहर आये । लोगन नृपको जाइ सुनाये ॥ उनके कहे न मनमें आई । तब नारद कह्यो नृपसों जाई ॥ ध्रुव आयो हरिसों वर पाई । राजा ताहि जाहि मिलि धाई ॥ नृप सुनि मन आनन्द बढ़ायो ।अंतः-पुरमें जाइ सुनायो ॥ पुनि नृप कुटुंब सहित तहँ आये । नगर लोग सब सुनि उठि धाये ॥ ध्रुव राजाके चरणन पर्चो । राजा कंठ लाइ हित कर्चो ॥ पुनि सु सुरुचिके चरणन पर्चो । तासों वचन ध्रुव उच्चर्चो ॥ तुम उपदेश मैं हरिहि धियायो । यह उपकार न जात मिटायो ॥ पुनि माताके पाँइन पर्चो । माता ध्रुवको अंकम भर्चो ॥ ध्रुव नृप सिंहासन बैठाए । नृप तप-कारण बनहि सिधाये ॥ सप्तद्वीप राज्य ध्रुव कियो । शीतल भयो मातको हियो ॥ यों भयो ध्रुव वर देन अवतार । सूर कह्यो भागवत अनुसार॥ ८ ॥राग आसावरी॥ध्रुव विमाता वचन सुनि रिसायो । दीनके द्याल गोपाल करुणामई मातुसों सुनि तुरत शरन आयो ॥ बहुरि जब वन चल्यो पंथ नारद मिल्यो कृष्ण निज धाम मथुरा बतायो।मुकुट शिर धरे बनमालकौ-स्तुभ गरे चतुर्भुज श्याम सुंदर धियायो॥भयेअनुकूल हरि दियो तेहि तुरत बर जगत करि राज पद अटल पायो ॥ सूरके प्रभु की शरन आयो जु नर कारि जगत भोग वैकुंठ सिधायो॥ ९ ॥ पृथु अवतार वर्णन राग बिलावल ॥धारि पृथुरूप हरि राज्य कीयो। विष्णु की भक्ति परमान जगमें करी प्रजाको सुख सकल भांति दीयो ॥ वेन नृप भयो बलवंत जब पृथ्वी पर ऋषिनसों कह्यो जप तप निवारो । होइ तिहिको पतन शाप ताको दयो मारिकै ताहि जगदोष टार्चो ॥ भयो प्रगट आराज तब सब ऋषिन मंत्र करि वेनकी जांघको मथन कीनो । जांघके मथेते पुरुष परगट भयो श्याम तिहि भीलको राज्य दीनो ॥बहुरि जब ऋषिन भुजदक्षिन मथन कियो लक्ष्मी सहित पृथु दरश दीयो । पहिरि आभरन पुनि राज्य लागे करन आनि सब प्रजा दंडवत कीयो ॥ बहुरि बंदी जननि आय अस्तुति करी इन्द्र अरु बरुन तुम तुल्य नाहीं। कह्यो नृप विना प्राक्रम न अस्तुति करो बिना किए मूढ सुनि हर्ष जाहीं॥करो भगवानको यश सदा गुणीजन जो जगत सिंधुते पार तारै।किय नरकी अस्तुति कौन कारज सरै करै सु आपनो जन्म हारै॥कह्यो तिन तुम्हें हम मनुष जानत नहींजगतपितुजगतहित देहधार्चो।करोगेकाजजो कियो न काहू नृपति किए जस जप हम दोष सारो॥बहुरि सब प्रजा मिलि आय नृपसों कह्यो विना आजीविका मरत सारी । नृप धनुष बाण लै पृथ्वीपर कोप कियो तिन गऊरूप बिनती

उचारी॥ बेनके राज्यमें औषधी गिलगई होइहैसकलकिरपातुम्हारी।पर्वतनि जहांतहांरोकिमोकों लियो देहु करि कृपा एक दिशा टारी ॥ धनुषसों टारि पर्वत कियो एक दिश पृथ्वी सम करि प्रजा सब बसाई। सुर ऋषिन नृपति यों पृथ्वी दोहन करी आपुनी जीविका सबन पाई॥ बहुरि नृप यज्ञ निन्यानवे करी शत यज्ञको जबहिं आरंभ कीनो । इन्द्र भय मान हय गहन सुतसों कह्यो सो न लै सक्यो तब आप लीनो ॥ नृपति सुतसों कह्यो जाइ हय ल्याव अब इंद्र तिहि देखि हय छांड दीनो। नृप कह्यो सुरनके हेतु मैं यज्ञ करत इन्द्र मम अश्व किहि काज लीनो॥ऋषिन कह्यो तुव शतमयज्ञ आरंभ लखि इन्द्रकोराज्यहितकँप्योहीयो। नृप कह्यो इन्द्रपुरकी न इच्छा मुझे ऋपिन तब पूर्ण आहुतीदीयो॥ यज्ञपूरुषकह्यो कुंडतेनिकसि यज्ञ पूर्ण भयो इन्द्र जिमि बर कछू मांगि लीजै। पृथु कह्यो नाथ मेरे न कछु शत्रुता अरुन कछु कामना भक्ति दीजै ॥ यज्ञ पूरुष गए वैकुंठ धाम जब नौति नृप प्रजाको तब हँकारो। तिन्हैं संतोषि कह्यो देहु मांगे मुझे विष्णुकीभक्तिसब चित्त धारो॥ सुनत यह बात सनकादि आए तहां मान दै कह्यो मोहि ज्ञान दीजै। कह्यो यह ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यहै निरखि हरिरूप मुख नाम लीजै॥ पुनिकह्यो देहु आशीश मम प्रजाको सबै हरिभक्ति नित चित्त धारै। कृपातुमकरी मैं भेदको मन धरी नहीं कछु बस्तु ऐसी हमारे॥ बहुरि सनकादि गए आपुने धामको नृपति सब लोग हरिभक्ति लाए। सूर प्रभु चरित अगनित न गनेजाँयकछुयथामतिआपुने कहिसुनाए ॥१०॥ पुरंजन कथा वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविन्द उर धरो॥कथा पुरंजनकी अब कहों।तेरे सब संदेहै दहों॥ प्राचिनबर्हि भूप इक भए।आयुप्रयंत यज्ञ तिहि ठये॥ताके मन उपजी गिल्यान। मैं कीनी बहु जियकी हानि॥यह ममदोपकवनविधि टरै। ऐसी भाँति सोच मन करै॥ इहि अंतर नारद तहँ आए।नृपसों यों कहि वचन सुनाए॥ मैं अबहीं सुरपुर ते आयो। मगमें अद्भुत चरित लखायो॥ यज्ञमाहिं जो पशु तुम मारे।ते सब ठाढे शस्त्रनि धारे॥जोहतहैं येपंथतुम्हारो॥अब तुमअपनोआपसँभारो॥नृप कह्यो मैंऐसोईकियो। यज्ञकाज मैं तिहि दुख दियो॥रसनाहीको कारज सारचो।मैं यों अपनोकाजबिगारचो॥अबमैंयहै बिनय उच्चरौं।जो कछुआज्ञा होइ सो करौं॥कह्यो कहौं एकनृपकीकथा। उनजोकियोकरोतुम तथा॥ ताहि सुनौ तुम भली प्रकार। पुनि मनमें देखो जु विचार॥तानृपकोपरमातममित्र। इक छिन रहै नहीं सो अत्र॥खान पान सो सब पहुँचावै।पैनृप तासों हितनलगावै॥नृप चौरासीलक्ष फिरि आयो। तब एहिपुर मानुपतनु पायो॥ पुरको देखि परमसुख लह्यो।रानीसोंमिलाप तहां भयो॥तिन पूँछचो तुम काकी अही। उन कह्यो मम सुमिरन नहिं रही॥ पुनि कह्यो नाम कहा है तेरो। कह्यो न आवै नाम मोहिं मेरो॥ तन पुरजाय पुरंजन राव। कुमति तासुगनीको नांव॥ आँख नाक मुख मूलद्वार। मूत्र शौच नव पुरको द्वार॥लिंग देह नृपको निजगेह।दश इन्द्रिय दासीसों नेह॥ कारण तन सुशैनअस्थान।तहां अविद्या नारि प्रधान॥कामादिक पांचों प्रतिहार। रहैं सदा ठाढे दरबार॥ संतोपादि न आवै पावैं।विपर्यी भोग आइ हरपावैं॥जाद्वारे-पर इच्छा होय। रानी सहित जाइ नृप सोइ॥तहां तहांको कौतुकदेखि।मनमेंपावै हर्पविशेखि॥ इन्द्री दासी सेवा करैं। तृप्ति न होइ बहुरि विस्तरैं॥यहि इन्द्रीको यहै सुभाइ।तृप्तिन होइ कि-तोई खाइ॥ निद्रावश जो कबहूं सोवै। मिलि अविद्यासों सुधि बुधि खोवै॥ उनमत ज्योंसुख दुख नहिं जानै। जागे वहै रीति पुनि ठानै॥संत दरश कबहूं जो होई।जग सुख मिथ्या जानै

सोई ॥ पै कुबुद्धि ठहरान न देइ । राजाको अंकम भरिलेइ ॥राजा पुनि तब क्रीडा करै । छन-भर हू अंतर नहिं धरै ॥ जब अखेट पर इच्छा होइ । तब रथ साजि चलै नृप सोइ ॥जा द्वारेनृप इच्छा करै।ताही द्वार होइ निःसरै॥ चक्ष्वादिक इन्द्री दर जानो। रूपादिक सब वनसम मानो॥ मन मंत्री सो रथ हँकवैया।रथमें पुण्यपाप दोउ पहिया ॥ अश्व पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच । विषय अखेटक नृप मन रांच॥राजा मंत्रीसों हित मानै । ताके दुख सुख दुख सुख जानै॥ नरपति ब्रह्म-अंश सुखरूप । मन मिलि परचो दुःखके कूप ॥ ज्ञानी संगति उपजै ज्ञान । अज्ञानी सँग होइ अज्ञान॥मंत्री कहै अखेट सो करै। विषय भोग जीवनि संहरै॥निशि भये रानी पै फिर आवै । सोवत सो तिहि बात सुनावै ॥ आजु कहा उद्यम करि आए । कहै वृथा भ्रमि भ्रमि श्रम पाए॥ कालिह जाय अस उद्यम करौं। तेरे सब भंडारनि भरौं ॥ सब निशि याही भांति विहाई । दिन भये बहुरि अखेटक जाई ॥ तहां जीव नाना संहरै । विषय भोग तिहिको हत करै ॥विषयभोग कबहूं न अघाई । यों हीं नृप नित आवै जाई॥एक दिन नृप निजमंदिर आयो।रानीसों अह-निशि मन लायो॥ ताके पुत्र सुता बहु भए । विषय बासना नाना रये ॥कानलागिके असकह्यो जाइ । जरा कालकन्या पुर आइ ॥ कह्यो प्रिया अब कीजै सोइ । देखे नृपति कहा धौं होइ ॥ देह शिथिल भई उठचो न जाई।मानौ दीनी कोट गिराई॥कह्यो प्रिया अब कीजैसोइ। देखो नृपति कहा धौं होइ ॥ पुनि ज्वर दौ दीनी पुर लाई । जरनलगे पुरलोग लोगाई ॥ मरन अवस्थाको नृप जानै । तौहू धरै न मनमें ज्ञानै ॥ मम कुटुंबकी कहा गति होई। पुनि पुनि मूरख सोचै सोई॥काल भए तिहि पकर निकारचो।सखा प्राणपति तउ न सँभारचो॥ रानीहीमें मन रहिगयो । मरि विदर्भकी कन्या भयो॥ बहुरो तिनसतसंगति पाई। कहौं सु कथा सुनो चित लाई॥ मेघध्वजसों भयो विवाह । विष्णुभक्तिको तिहि उत्साह॥ता संगति नव सुत तिन जाये । श्रवणादिक मिलि हरि गुण गाये॥या बिधि तिहि निजआयु बिताई।पूर्वपापसबगए विलाई॥मरण अवस्था जबनजिकाई।ईश सखाके मन यह आई॥बहुत जन्म इन भ्रमभ्रम कीनो। पै इन मोकोकबहुँ न चीनो ॥तब दयालु ह्वै दरशन दीनो।कबहुँ मूढ तैं मोहिं न चीनो॥ विषय-भोगहीमें पगरह्यो । जान्यो मोहिं और कहुं गयो ॥ मैं तो निकट सदाही रहौं।तेरे सकल दुख नको दहौं ॥ यह सुनिकै तिहि उपज्यो ज्ञान । पायो पुनि तिहि पद निर्वान ॥यह कहि नारद नृपसों कही।तेरीहू तैसी गति भई॥ मै जु कहौं सो देखिविचार।बिन हरिभजन नहीं निस्तार॥ हरिकी कृपा मनुष्यतनु पावै। मूरख विषयहेतु सु गँवावै ॥ तिन अंगनको सुनो विवेक । खर्चा लाख मिलै नहिं एक ॥ नैन दरश देखनको दिये । मूरख लखि परनारी जिए॥श्रवण कथा सुनिबेको दीने। मूरख परनिंदा हित कीने ॥हाथ दए हरिपूजा हेत । तेहिं कर मूरख पर-धन लेत ॥ पग दए तीरथ जैबे काज। तिनसों चलि नित करत अकाज ॥ रसनाहरिसुमिरन-कों करी । ताकरि परनिन्दा उच्चारी॥यह सुनि नृप कीनों उनमान। मैं सुइ नृपति न दूसरआन॥ नारद जू तुम कियो उपकार। डूबत मोहि उतारचो पार ॥ नृपति पाइ पुनि आतमज्ञान ।राज्य छांडिकरि गए उद्यान ॥यह लीला जो सुनै सुनावै।सूर हरि कृपा ज्ञानको पावै ॥ शुक ज्यों राजाको समुझायो । मैंहूं ता अनुसार सुनायो ॥११॥राग बिलावल॥अपुनपो आपुनहीमें पायो । शब्दहिं शब्द भयो उजियारो सतगुरु भेद बतायो ॥ ज्यों कुरंग नाभी कस्तूरी ढूँढ़त

फिरत भुलायो। फिरि चेत्यो जब चेतन ह्वैकारि आपुनही तनु छायो ॥ राजकुँआर कंठ मणि भूषण भ्रम भयो कहूं गँवायो ॥ दियो बताइ और सत जन तब तनुको पाप नशायो। सपने माहिं नारिको भ्रम भयो बालक कहूं हिरायो। जागि लख्यो ज्योंको त्योंहीं हैना कहुँ गयो न आयो ॥ सूरदास समुझे की यह गति मनहीं मन मुसकायो।कहि न जाइ या सुखकी महिमा ज्यों गूँगो गुर खायो ॥ १२ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे श्रीसूरदासकृते चतुर्थःस्कन्धःसमाप्तः ॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्री सूरसागर ।

पञ्चमस्कन्ध ।

राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरिचरणारबिंद उर धरो ॥ हरिचरणन शुकदेव शिरनाई । राजासों बोल्यो या भाई ॥ कहौं हरि कथा सुनौ चित धार। जाते तरो उदधि संसार ॥ज्यों भयो ऋषभदेव अवतार।कहौं सुनो सो अब चितधार॥शुक वरण्यो जैसे परकार । सूर कह्यो ताही अनुसार ॥ १ ॥ ऋषभदेव अवतार वर्णन । रागबिलावल ॥ ब्रह्म स्वयंभू मनु उपजायो । ताते जन्म प्रियव्रत पायो॥प्रियव्रतके अग्नीध्र भयो ।नाभि जन्म ताहीते लयो।नाभि नृपति सुतहित जग कियो।यज्ञपुरुष तब दरशन दियो ॥ विप्रन अस्तुति वेद सुनाई। पुनि कह्यो सुन त्रिभुवनके राई ॥ तुम सम पुत्र नाभिके होई । कह्यो मो सम जग और न कोई॥ मैं हर्त्ता कर्त्ता संसार । मैं लैहौं नृपगृह अवतार॥ऋषभदेवतब जन्मेआई । राजाके मनभयेबधाई ॥बहुरो ऋषभ बडे जब भए।नाभि राज्य दे वनको गए ॥ ऋषभराज परजा सुख पायो । यशताकोसब जगमें छायो॥इन्द्र देखि ईर्षामन लायो। करिकै क्रोध नजल बरसायो॥ऋषभदेवतबहींयहजानि। कह्यो इन्द्र यह कहा मन आनि॥निजबल योगनीर वरषायो।प्रजालोग अतिहीसुखपायो।ऋषभराज मन सब उत्साह। कियो जयंतीसों पुनिब्याह॥तासों सुत निनानवे भए। भरतादिकसबहरि रँग रए॥तिनमें नव नवखंडअधिकारी।नव योगेश्वर ब्रह्मविचारी॥असी और इकद्विजव्रतलियो। ऋषभ ज्ञान सबहिनको दियो ॥ दृष्टमान नाश सब होई। साक्षी व्यापक नशै न सोई ॥ताहीसों तुम चित्त लगावहु ।ताको सेवि परमगति पावहु॥संत संग सेवो हरि चरना। ताते संत संग नित करना ॥ बहुरो देकर भरतहिं राज ।ऋषभ ममत्व देह को त्याज॥उनमत भै ज्यों विचरन लागे। अशन बसनकी सुरति तियागे ॥ कोउ खवावै तौ कछु खाहीं ॥नातरु बैठेई रहि जाहीं ॥ मूत्र पुरीष अंग लपटावे॥सुगंध वास दश योजन जावे ॥ अष्ट सिद्धि बहुरो तहँआई। ऋषभदेवपैमुख न लगाई॥ राजा रहत हुतो तहां एक।भयो श्रावगी ऋषिको देख॥ वेद पुरानै तजि न अन्हावै। प्रजा सकलको यहै सिखावै ॥ अबहूं श्रावग ऐसो करैं ।ताहीको मारग अनुसरैं ॥ अंतः क्रिया रहित नहिं जानैं। बाहर क्रिया देखि मन मानैं ॥ वरण्यो ऋषभदेव अवतार । सूरदास भागवत अनुसार ॥ २ ॥ जडभरत कथा वर्णन रागबिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविन्द उर धरो ॥ ऋषभदेव जब बनको गए। नव सुत नवो खंड नृप भए॥ भरत सु भरतखंडको राव । करै सदाहि धर्म अरु न्याव ॥ पालै प्रजा सुतनकी नांई। पुरजन बसैं सदा सुख पाई ॥ भरतहु दे पुत्रनको राज। गये बनको तज राजसमाज ॥ तहां करी नृप हरिकी सेवा । भए प्रसन्न देवन के देवा ॥एक दिवस गंडकि तट जाई । करनलग्यो सुमिरन चित लाई॥ गर्भ-

वती हारिनी तहां आई। पानी सो पीवन नहिं पाई ॥ सुनी सिंह भय मान अवाजि। मारि फलाँग चली वह भाजि ॥ कूदत तनु ताको छुटिगयो। ताके छौना सुन्दर भयो ॥ भरत दया ता ऊपर आई। ल्याये आश्रम ताहि लिवाई ॥ पोषे ताहि पुत्रकी नांई। खाइ आप तब ताहि खवाई ॥ सोवै जब तब ताहि सोआवै। तासों क्रीडत अति सुख पावै ॥ सुमिरन भजन बिसारि सब गयो। एक दिन मृगछौना कहिं गयो ॥ ताके मोह भरत तब भयो। सब दिन विरह अग्नि अति तयो ॥ संध्या समय निकट नहिं आयो। ताके ढूँढन हित उठि धायो ॥ पग को चिह्न पृथ्वी पर देखि। कहो पृथ्वीजहां धन पगरेखि ॥ बहुरोदेख्यो शशिकी ओर। तामें देख्यो श्यामता कोर ॥ कहन लगो मम सुत शशि गोद। तासेती शशि करत विनोद ॥ ढूँढत २ बहु श्रम पायो। पै मृगछौना नहिं दरशायो ॥ मृगको ध्यान हृदय नहिं गयो। भरत देह तजिके मृग भयो ॥ पूरब जन्म ताहि सुधि रही। आप आपसों तब यह कही ॥ मैं मृगछौनामें चित दयो। ताते मैं मृगछौना भयो ॥ अब काहूसे संग न करौं। हरिचरणारविन्द उर धरौं॥संग मृगनिहू को नहिं करै। हरे घा सहसो नहिं चरै ॥ सूखे पात रु तिनके खाई। या विधि डार्यौ जन्म बिताई ॥ मृग-तनु तजि ब्राह्मण तनु पायो। पूर्व जन्म तहां सुमिरन आयो ॥ मनमें यहै बात ठहराई। होय असंग भजौं यदुराई ॥ पिता पढावै सो नहिं पढै। मनमें रामनाम नित रढै। पिता तासु कालवश भयो। भ्रातनिहू श्रम बहु विधि ठयो ॥ पै सो हारि हरि सुमिरतरहै। और कछू विद्या नहिं गहै ॥ जडस्वरूप सो जहँ तहँ फिरै। असन बसनकी सुधि नहिं धरै॥जैसो देहि सु तैसो खाई। नहिं तो भूखोई रहि जाई ॥ कृषिरक्षक भाइन तब कीनो। उन तहां हरिचरण न चित दीनो ॥ तहँ हीं अन्न देहिं पहुँचाई। जो न देहिं भूखोरहिजाई ॥ भीलराव निजलोगनि कह्यो। मैं कालीसों यह प्रण गह्यो ॥ तुव प्रसाद मम गृह सुत होई। नर बलि देहुँ भयो वर सोई॥ तुम काहू धन दै लै आवहु। मेरे मनकी आश पुजावहु॥ ते खोजतखोजत तहँ आए। जहां जड-भरत कृपीमें छाए॥ देख्यो भरत तरुण अति सुंदर। स्थूल शरीर रहित सब द्वंदर॥ निजनृपपास बांधि लै आए। नृप तेहि देखि बहुत सुख पाए॥ विप्रन कह्यो ताहि अन्हवावहु। याके अंग सुगंध लगावहु ॥ तिहि देवी मंदिर लै गए। खड्ग रावके कर तिहिं दए ॥जब राजा तिहिं मारन लाग्यो। देवी काली मन धगधाग्यो ॥ हरिजन मारे हत्या होई। ज्यों नहिं मरै करौं अबसोई॥ देवी निकसि रावकों मार्यो। भरत साथ यह वचन उचार्यो ॥ जानें विना चूक यह भई। मैं उनसों ऐसी नहिं कही ॥ विप्रन वेदधर्म नहिं जान्यो। ताते उन ऐसो बलि ठान्यो ॥ यह सुनि ह्वांते भरत सिधायो। राजासों शुक कहि समुझायो ॥ नहीं त्रिलोकीऐसो कोई। भक्तनको दुख दै सकै जोई॥ ज्यों शुकनृपको कहिसमुझायो। सूरदास त्योंहीं करिगायो॥ ३ ॥ जडभरत रहूगण गोष्ठ वर्णन राग बिलावल ॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरिचरणारविंद उर धरो॥नृपति रहूगणके मन आई।सुनिए ज्ञान कपिलसोंजाई॥चढि सुखआसननृपति सिधायो।तहां कहार एक दुखपायो भरत पंथ पर देख्यो खर्यौ। वाके बदले ताको धर्यो ॥ तिनसों भरत कछू ना कह्यो। सुख-आसन कांधे पर गह्यो ॥ भरत चले पथ जीव निहार। चलें नहीं ज्यों चलें कहार ॥ नृपति कह्यो मारग सम आह।चलत न क्यों तुम सूधो राह ॥ कह्योकहारनहमें न खोरि। नयो कहार चलत पग झोरि ॥कह्यो नृपति मोटो तूआहि। बहुत पंथहू आयो नाहिं ॥ तू जो टेढोटेढो चलत।मारिबेकी नहिं भय हिय धरत॥ ऐसी भांति नृपति बहु भाखी। सुनि जडभरत हृदयमें राखी ॥ मन मन

लाग्यो करन विचार। हर्ष शोक तनुको व्यवहार॥ जैसो करै सो तैसो लहै। सदा आत्मा न्यारो रहै॥ नृप कह्यो मैं उत्तर नहिं पायो। मेरो कह्यो न मनमें लायो॥ नृप दिशि देखि भरत मुसुकाये। बहुरो याविधि कहि समुझाए॥ तुम कह्यो तैं है बहुत मोटायो। और बहुत मारग नहिं आयो॥टेढ़ो टेढ़ो क्यों तू जात। सुनौ नृपति मोसों यह बात॥जिय करि कर्म जन्म बहु पावै। फिरत फिरत बहुते श्रम आवै॥ अरु अजहूं न कर्म परिहरै। जाते इहिको फिरिबो टरै॥ तनु स्थूल अरु दूबर होइ। परम आत्मको ए नहिं दोइ॥तनु मिथ्या क्षणभंगुर जानो। चेतन जीव सदा थिर मानो॥जीवको सुख दुख तनुसँग होई। जोर विजोर तनके सँग सोई॥ देहअभिमानी जीवहिं जानै। ज्ञानी जीव अलिप्तकरि मानै॥ तुम कह्यो मरिबेको तोहिं चाह। सबकाहूको है यह राह॥कहा जानि तुम मोसों कह्यो।यह सुनि ऋषिस्वरूप नृप लह्यो॥तजि सुखपाल रह्यो गहि पाइ। मैं जान्यों तुम हौ ऋषिराइ॥ भृगु कै दुर्वासा तुम होहु। कपिल कै दत्त कहो तुम मोहु॥ कबहूं सुर कबहूं नर होई। कबहूं राव रंक जिय सोई॥ जीव कर्म करि बहु तनु पावै। अज्ञानी तिहि देखि भुलावै॥ ज्ञानी सदा एक रस जानै। तनके भेद भेद नहिं मानै॥ आत्म सदा अजन्म अबिनासी। ताको देह मोह बड़ फांसी॥ ऋषभ पुत्र भरत मम नाम। राज्य छांडि लियो वन विश्राम॥तहँ मृगछौनासों हित भयो। नरतनु तजिकै मृगतनु लह्यो॥अब मैं जन्म विप्रके पायो।सब तजि हरिचरणन चित लायो॥ताते ज्ञानी मोह न करै।तनु कुटुंबसोंहित परिहरै॥जबलगिभजै न चरण मुरारी।तब लगि होइ न भवजलपारी॥ भव जलमें नर बहुदुख लहै। पै बैराग तबहुँ नहिं गहै॥सुत कलत्र दुर्वचन जु भाषै। तिन्हैं मोहवश मन नहिं राखै॥ जो वै वचन और कोउ कहैं। तिनको सुनिकै सहि नहिं रहै॥ पुत्र अन्याय करै बहुतेरे। पिता एक अवगुण नहिं हेरे॥ और जु एक करै अन्याइ। तिहि बहुअवगुण देइ लगाइ॥ इक मन अरुज्ञानेन्द्री पांच। नरकोसदानचावै नाच॥ ज्यों मग चलत चोर धन हरै।त्यों एक सुकृत धनहिं परिहरै॥ तस्कर ज्यों सुकृतीधन लेहीं। अरु हरि भजन करन नहिं देहीं॥ ज्ञानीइनसोंसंग न करै। तस्कर जानिदूरि परिहरै॥नृपयह सुनि भरतै शिरनाई। बहुरि कह्यो या भांति सुनाई॥ नरशरीर सुर ऊपर आहि। कहै ज्ञान कहिए कहँ ताहि॥ ताते तुमको करत दंडौत। अरु सब नरहूंको परनौत॥शुक कह्यो सुन यह नृपति सुजान। लेहु ज्ञान तजि देहअभिमान॥ जो यह लीला सुनै सुनावै। सोऊ ज्ञान भक्तिको पावै॥ शुकदेव ज्यों दियो नृपति सुनाइ। सूरदास कह्यो याही भाइ॥ ४॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते पंचमः स्कंधः समाप्तः।

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्री सूरसागर।

षष्ठस्कन्ध।

राग बिलावल ॥हरि हरिहरिहरि सुमिरन करो। आधे पल कहुँ जिन बिस्मरो॥शुक हरिचरणनको शिर नाय। राजासों बोल्यो या भाय॥कहौं हरिकथा सुनौ चित लाय। सूर तरयो हरिके गुण गाय॥१॥ अजामिल उद्धार वर्णन।राग बिलावल ॥ हरिहरि हरि हरि सुमिरन करो । हरिचरणारबिंद उर धरो ॥ हरि हरि कहत अजामिल तरयो।ताको यश सब जग बिस्तरयो ॥ कहौं सु कथा सुनो चितलाय।कहै सुनै सो नर तरि जाय॥अजामिल विप्र कनौज निवासी। सो भयो वृषलीके गृहवासी ॥ जाति पाँति तिन सब बिसराई। भक्ष अभक्ष मिलै सो खाई ॥ ता वृषलीके दश सुत भए। पहिले पुत्र भूलि तिन गए ॥ लघु सुत नाम नरायण धरयो । तासों हेतु अधिक करि करयो ॥ काल अवधि जब पहुँची आइ। तब यम दीने दूत पठाइ ॥ नारायण सुत नाम उचारयो । यमदूतनि हरिगणनि निवारयो ॥ दूतन कह्यो बडो यह पापी। इनतो पाप किए हैं धापी॥ विप्र जन्म इन जूवे हारयो । काहेते तुम हमें निवारयो॥ गणनि कह्यो इन नाम उचारयो।नाममहातम तुमन बिचारयो॥जान अजान नाम जो लेई। हरि तिहि वैकुंठ-वासा देई ॥बिन जाने कोउ औषधि खाई। ताको रोग सकल नशिजाई॥ ज्यों त्यों हरि बिनु जाने कहै। सो सब अपने पापनि दहै ॥ अग्नि बिना जाने कोउ गहै।तातकालसो ताको दहै॥ दोउ पुरुषको नाम एक होई। एक पुरुषको बोलै कोई ॥ दोऊ ताके ओर निहारैं। हरिहू ऐसे भाव विचारैं॥हांसी में कोउ नाम उचारै।हरिजू ताको सत्य बिचारै॥मैंहू करि कोउ लहै जुनाम। हरिजू देहिं तिन्हैं निज धाम॥जा बन केहरि शब्द सुनावै। ताबनते मृग जाहि परावै ॥नाम सुनत यों पाप पराहीं। पापी हू बैकुंठ सिधाहीं ॥यह सुनि दूत चले खिसिआई।कह्यो तिन्ह धर्म-राजसों जाई॥ अबलौं हम तुमहीको जानत। तुमहीको दंडदाता मानत ॥ आज गह्यो हम पापी एक।तिन भय मानत हमको देख ॥ नारायण सुत हेत उचारयो। पुरुष चतुर्भुज हमें निवारयो॥ उनसों हमरो कछु न बसायो। ताते तुमको आनि सुनायो ॥ औरो दंडदाता कोउ आही। हमसों क्यों न बतावै ताही ॥ धर्मराज करि हरिको ध्यान।निज दूतनसों कह्यो बखान ॥ नारायण सबके करतार। पालत अरु पुनि करत संहार॥ ता सम द्वितिया और न कोई। जब चाहै पुनि साजै सोई ॥ ताको जब उन नाम उचारयो । तब हरिदूतन तुमैं निवारयो॥हरिके दूत जहां तहँ रहैं। हम तुम उनकी सुधि नहिं लहैं ॥ जो जो मुख हरि नाम उचारैं ।हरिगन तिहिं तिहिं तुरत उधारैं॥नाममहातम तुमनहिं जानों।नाममहातम सुनो बखानौं॥ज्यों ज्यों कोउ हरि-नाम ऊचरै ।निश्चयकरि सो तरै पै तरै ॥जाके गृहमें हरिजन जाई।नाम कीर्तन करै सो गाई॥

यद्यपि वै हरिनाउँ न लेहीं ।तद्यपि तिहि हरिनिजपद देहीं॥कैसोइ पापी क्यों नहिंहोई।रामनाम चित उचरै सोई॥तुमरोनहिं ता ठौर अधिकार।मैंतुमसों यहकहीपुकार॥अजामेलहरिभक्तनदेखि। मनमें कीनो हर्षविशेखि॥यमदूतनको इनहिं निवारयो ।वाभयते मोहिं इन्हीं उबारयो॥तब मनमाहिंआनिवैराग।पुत्र कलत्र मोहसबत्याग॥हरिपदसे उनध्यानलगायो । तातकाल वैकुंठसिधायो॥ अंतकाल जो नाम उचारै।सोसबअपनें पापन जारै॥ज्ञानविराग तुरततिहि होई।सूर विष्णुपद पावै सोई २ श्रीगुरुमहिमा वर्णन,बृहस्पति अनादरते विश्वरूप वृत्रासुर ब्राह्मण हत्या इन्द्रप्राति पुनिगुरुकृपासेइन्द्रासनप्राप्ति॥

रागबिलावल ॥हरिहरिहरिहरिसुमिरनकरो।हरिचरणारविंदउरधरो॥हरिगुरुएकरूपनृपजानि।तामेंकछु संदेह न आनि॥गुरु प्रसन्न हरि प्रसन्न जोई।गुरुके दुखितदुखितहरिहोई॥ कहौंसोकथासुनो चित धारि ।कहै सुनै सो तरै भवपारि॥इन्द्र इक दिन निजसभा मँझारि।बैठ्योहुतो सिंहासन डारि॥ सुर ऋषि सब गंधर्व तहां आए।पुनि कुबेरहू तहां सिधाए।सुरगुरुहू तेहि औसर आयो ।इन्द्र उठि तिन्हैं न शीश नवायो ॥सुरगुरु लख्यो गर्व तिहिं भयो।तहँते फिर निज आश्रम गयो॥ सुरपति तब लागे पछतान।मैं यह कहा कियो अज्ञान ॥ पुनि निज गुरु आश्रम चलिगयो। तिहि सुरगुरु दरशन नहिं दयो॥ यह सुन असुर इन्द्रपुर आए।किये इन्द्रसों युद्ध बनाये॥इन्द्र सहित तब सब सुर भागे। आश्रम अपने सबहिन त्यागे ॥ पुनि सब सुर ब्रह्मापै जाई ।कह्यो वृत्तांत सकल शिरनाई॥ ब्रह्मा कह्यो बुरो तुम कियो ।निजगुरुको आदर नहिं दियो ॥ अब तुम विश्वरूप गुरु करो ।ता प्रसाद या दुखसों तरो ॥ सुरपति विश्वरूपपै जाइ । दोउकर जोरकह्योशिरनाइ॥ कृप करो मम प्रोहित होहु। कियो बृहस्पति मोपर कोहु॥ कह्यो पुरोहित होत न भलो।जाततेज तपा जप नशि सकलो॥पै तुम बिनती बहुविधिकरी।ताते मैं मनमेंयहधरी॥यहकहिइन्द्र हियज्ञकरायो गयो राज्य अपनो तिन पायो॥ असुरनि विश्वरूपसों कह्यो । भलो भाइ तू सुरगुरुभयो॥ तुव ननसालमाहिं हम आहिं । आहुति हमैं देत क्यों नाहिं॥तिन्ह निमित्त तिहिं आहुति दई ।सुरपति बात जानि यह लई ॥ करिकै क्रोध तुरत तिहि मारयो।हत्याहेत न मंत्र बिचारयो ॥ चारि अंश हत्याके किए। चारः अंश बांटि पुनि दिए ॥ एक अंश धरतीको दियो । ऊसरमाहिं अन्न नहिं भयो ॥ एक अंश वृक्षनको दीनो । गोंद होइ प्रकाश तिन कीनो॥एक अंश जलको पुनि दयो । ह्वैकरि काई जलको छयो॥ एक अंश सब नारिन पायो । तिनको ह्वै रजस्वला छायो॥ त्वष्टा विश्वरूपको बाप । दुखित भयो सुनि सुत संताप ॥ तिन करि क्रोध इक जटा उपारी । वृत्रासुर उपज्यो बल भारी॥ सो सुरपतिको मारन धायो । सुरपतिहू ता सन्मुख आयो ॥ जेतक शस्त्र किए प्रहार। सो करिलिए असुर आहार ॥तब सुरपतिमनमें भयमान।गयोतहांजहां श्रीभगवान ॥ नमस्कार करि विनय सुनाई । राखि राखि अशरनशरनाई ॥ कह्यो भगवान उपाय न आन । ऋषिदधीचि हाड़ लै दान ॥ताको तुम निज वज्र बनाव। मरिहै असुर तिसीके घाव॥तब सुरपति ऋषिके ढिग जाई । करी विनय बहु शीश नवाई ॥ बहुरि कही अपनी सब कथा । हरि ज्यों कह्यो कह्यो पुनि तथा॥तिन कह्यो देह मोहि अति प्यारी।सुरपतिहू यह देखि विचारी ॥ यह तनु क्यों ही दियो न जावै।और देत कछु मन नहिं आवै ॥पै यह अंत न रहिहै भाई । परहित देहुँ तो होइ भलाई ॥ तनु देवेते नाहिन भजों । योग धारना करि यह तजों ॥ गउ चटाइ मम त्वचा उपारो । हाड़नको तुम वज्र संवारो ॥ सुरपति ऋषिकी आज्ञा पाई । लियो हाड़ कियो वज्र बनाई ॥ गोमुख अशुचि तबै ते भयो । ऋषि शुकदेव

नृपतिसों कह्यो ॥ इंद्र आइ तब असुर प्रचारयो । कियो युद्ध पै असुरन मारयो ॥ इन्द्र हाथते बज्र छिनाई । मारयो ऐरावतको जाई ॥ ऐरावत घायल जब भयो । तब वृत्रासुरको सुख भयो ॥ ऐरावतको अमृत प्याए।भयो सुचेत इंद्र तब धाए॥वृत्रासुरको बज्र प्रहारयो तिन तिरशूल इंद्रको मारयो ॥ लगत त्रिशूल इंद्र मुरझायो । करते अपनो वज्र गिरायो ॥ कह्यो असुर सुरपति संभारि । लैकर वज्र मोहिं परहारि ॥ जो मरिहौं तौ सुरपुर जैहौं । जीते जगतमाहिं यश लेहौं ॥ हारि जीति नहिं जयके हाथ । कारण करता आपहि साथ॥हमें तुमें पुतरीके भाइ । देखत कौतुक विविध नचाइ ॥तब सुरपति लै वज्र संहारयो।जै जै शब्द सुरन उच्चारयो ॥ पै इंद्रहि संतोष न भयो । ब्राह्मणहत्यादुःखहि तयो॥सोहत्यातिहि लागी धाइ।छपो सुकमलनालमें जाइ ॥ सुरगुरु जाइ तहांते ल्यायो । तासों हरि हित यज्ञ करायो ॥ यज्ञ किए हत्या गइ बिलाइ।यों नृप बहुरि इंद्रपुर आइ॥ नृप यह सुनि शुकसों पुनि कही। ज्ञानबुद्धि असुरहि क्यों भई॥शुककह्यो सुनो परीक्षितराइ । देहुं तोहिं वृत्तान्त सुनाइ ॥ चित्रकेतु पृथ्वीपति राव । सुतहित भयो तासु हिय चाव ॥यद्यपि रानी बरी अनेक। पै तिहिते सुतभयो न एक॥तागृह ऋषि अंगिरा सिधाये । अर्घ्यासन दे तिन बैठाए ॥ ऋषिसों नृप निज व्यथा सुनाई ।कह्यो मोहिं सो करो उपाई ॥ ऋषि कह्यो पुत्र न तेरे होई । होइ कहूँ तो दुख दे सोई॥नृप कह्यो एक बार सुत होई। पाछे होनी होइ सो होई ॥ ऋषि ता नृपसों यज्ञ करायो। दै प्रसाद यह वचन सुनायो ॥ जा रानीको तू यह दैहै। ता रानीसेती सुत ह्वैहै॥तब रानीको सो नृप दियो। तिन प्रणाम करि भोजन कियो॥ ऋषि प्रसादते सुत तिन जायो । सुत लडाइ दंपति सुख पायो ॥ विप्र याचकन दीनो दान । कियो उत्सव कहा करों बखान ॥ ता रानी सों नृप हित भयो । और तियनिको मन अति तयो॥तिन सबहिन करि मंत्र उपाई । नृपति कुँवर को जहर पिआई ॥बहुत बेर भइ कुँवर न जाग्यो ।दासीसों रानी तब भाष्यो॥ ल्याव कुँवरको वेगि जगाय । दूध प्यायके बहुरि सोवाय ॥ दासी कुँवर जगावन आई । देख्यो कुँवर मृतककी नाईं ॥ दासी बालक मृतक निहारी । परी धरणिपै खाइ पछारी॥ रानी तब तहां धाई आई। सुत मृत देखि गिरी मुरछाई ॥ पुनि रानी जब सुरति सँभारी । रुदन करन लागी अति भारी ॥ रुदन सुनत राजा तहँ आयो। देखि कुँवरको अति दुख पायो ॥ तबही मूर्छित हो नृप गिरे । कबहुँक सुतको अंकम भरे ॥ ऋषि नारद अँगिरा तहँ आये । राजासों यह वचन सुनाये ॥ को तू को यह देखि विचार । स्वप्न स्वरूप सकल संसार ॥ सोयो होय होय सत मानै । जो जागै सो मिथ्या जानै ॥ ताते वृथा मोह बिसारि । श्रीभगवान चरण उर धारि ॥ हम तुमसों पहिले ही कही । नृप सो बात आज भइ सही ॥नृपको सुनि उपज्यो बैराग। बनको गयो राज सब त्याग॥बनमें जाइ तपस्या करी। मरि गंधर्व देह तिन धरी ॥ इक दिन सो कैलास सिधायो। शिवको दरशन तहां न पायो ॥ उमा नग्न देखी तिन जाई। दियो शाप ताही या भाई ॥ तू अब असुर देह धरि जाई। मेरो कह्यो वृथा नहिं जाई ॥ उमा शाप ताको जब भयो। वृत्रासुर सो या विधि भयो॥हरिकी भक्ति वृथा नहिं जाई। जन्म जन्म सो प्रगटै आई ॥ ताते हरि गुरु सेवा कीजै । मेरो वचन मानि यह लीजै॥ ज्यों शुक नृपसों कहि समुझायो ।सूरदास त्योंही करिगायो ॥ ३ ॥गुरुमहिमा ॥ रागसारंग॥ गुरु बिनु ऐसी कौन करै।माला तिलक मनोहर बाना लै शिर छत्र धरै॥भवसागरसे बूडत राखै दीपक हाथ धरै । सूरश्याम गुरु ऐसो समरथ छिनमें लै उधरै ॥ ४ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते षष्ठः स्कन्धः समाप्तः ॥ ६ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत–

श्री सूरसागर ।

सप्तमस्कन्ध ।

श्रीनृसिंहरूप अवतार वर्णन ॥ राग बिलावल ॥

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरिचरणारविंद उर धरो ॥ हरिचरणन शुकदेव शिर नाई । राजासों बोल्यो या भाई ॥ कहौं सु कथा सुनो चित लाइ । सूर तरो हरिके गुण गाइ ॥ १ ॥ नरहरि नरहरि सुमिरन करो । नरहरि पद नित हृदय धरो ॥ नरहरि रूप धर्यो जो भाई । कहों सु कथा सुनो चितलाई ॥ हरि जब हिरण्याक्षको मार्यो । दशन अग्र पृथिवीको धार्यो ॥ हिरण्यकशिपु दुःसह तपकियो । ब्रह्मा आइ दरश तब दियो ॥ कह्यो तोहिं इच्छाजो होई । माँगिलेहि वरदेहुँ अब सोई ॥ राति दिवस नभ धरणि न मरौं । अस्त्र शस्त्र परिहार न धरौं ॥ तेरी सृष्टि जहाँ लगि होई । मोकोमारिसकैनहिं कोई ॥ कह्योब्रह्माऐसेहीहोई । पुनि हरि चाहै करिहै सोई ॥ यहकह ब्रह्मा निजपुर आए । हिरण्यकशिपु निजभौन सिधाए ॥ भवन आइ त्रिभुवनपति भए । इंद्र वरुण सबही भजि गए ॥ ताके पुत्र भए प्रह्लाद । भयो असुर मुनि अति अह्लाद ॥ पांच वरषकी भई आइ । पंडामर्का लिए बुलाइ ॥ तिनके सँग चटशाल पठायो । राम नामसों तिन चित लायो ॥ पंडामर्क रहे पचिहार । राजनीति कह्यो वारंवार ॥ कह्यो प्रह्लाद पढत मैं सार । कहा पढावत और जंजार ॥ जब पांडे इत उत कहिं गए । बालक सब इकठौरे भए ॥ कह्यो यह ज्ञान कहां तुम पायो । नारद मातागर्भ सुनायो ॥ सबनि कह्यो देहु हमें सिखाइ । सबहुनके मति ऐसी आइ ॥ कह्यो सबनिसे तब समुझाई । सब तजि भजो चरण रघुराई ॥ रामहिं राम पढो रे भाई । रामहिं जहँ तहँ होत सहाई ॥ इहां कोऊ काहूको नाहिं । असंबंध मिलत जगमाहिं ॥ काल अवधि जब पहुँच आइ । चलत,वेर कोउ संग न जाइ ॥ सदा संगती श्री यदुराई । भजिय ताहि सदा लवलाई ॥ हर्ता कर्ता आपे सोई । घट घट व्यापि रह्योहै जोई ॥ ताते द्वितिया और नकोई । ताके भज सदासुख होई ॥ दुर्लभ जन्म सुलभही पाइ । हरि न भजै सो नरकहि जाइ ॥ यह जिय जानि विषय परिहरो । राम नाम ही सदा उचरो ॥ शत संवत मनुष्यकी आई । आधीतो सोवत ही जाई ॥ कछु बालापनहीं में वीते । कछु विरधापनमाहिं व्यतीते ॥ कछु तप सेवा करत विहाई । कछुइक विषय भोगमें जाई ॥ ऐसेही जो जन्म सिराई । बिन हरि भजन नरकमें जाई ॥ बालपनो गए ज्वानी आवै । वृद्ध भये मूरख पछतावै ॥ तीनों पन पुनि ऐसहि जाई । ताते अबहिं भजो यदुराई ॥ विषय भोग सब तनमें होई । विनु नरजन्म भक्ति नहिं होई ॥ जो न करे सो पशुसम होई । ताते भक्ति करो सब कोई ॥ जबलगि काल न पहुँचै आई । हरिकी भक्ति करो चित लाई ॥ हरि व्यापक है सब संसार । ताहि भजो ऐसही विचार ॥ शिशु किशोर वृद्धतनु

होई। सदा एक रस आतम सोई ॥ जानि ऐसो तनु मोहै त्यागो। हरिचरणारविंद अनुरागो॥ माटीमें जो कंचन परै। त्योंहीं आतम तनु संचरै ॥ कंचनते जो माटी तजै। त्यों तनु मोह छांडि हरि भजै ॥नरसेवाते जो सुख होई।क्षणभंगुर थिर रहै न सोई॥हरिकी भक्ति करो चित लाई। होइ परमसुख कबहुँ न जाई॥नीच ऊंच हरि गिनत न दोइ। यह जिय जानि भजो सब-कोइ ॥ असुर होइ सुर भावै होई। जो हरि भजै पिआरो सोई ॥ रामहि राम कहो दिन रात। नातर जन्म अकारथ जात ॥ सौ बातनकी एकै बात। सब तजि भजो द्वारकानाथ ॥ सब चेटियन ऐसी मन आई। रहे सबै हरिपद चित लाई ॥हरि हरि नाम सदा उच्चारैं। विद्या और न मनमें धारैं ॥ तब षंडामर्का संक्याय। कह्यो असुरपतिसों पुनि जाय ॥तव सुतको पढाय हम हारे। आप न पढै अरु और बिगारे॥राम नाम नित रटिबोकरै। राजनीति नहिं मनमें धरै॥ताते कह्यो तुमैं हम आइ। करनी होय सो करो उपाइ॥हिरनकशिपु तब सुतहि बुलायो। कछुक प्रीति कछु डर देखरायो ॥ बहुरो गोदमाहिं बैठारि। कह्यो कहा पढ़्यो विद्यासारि ॥ सार वेद चारोंको जोई। छहों शास्त्र सार पुनि सोई॥सर्वपुराणमाहिं जो सार। राम नाम मैं पढ्यो सँभार ॥कह्यो याको लेजाइ उठाई। सुमिरत मम रिपुको चित लाई ॥ मेरी ओर न कछू निहारो। याको पावक भीतर डारो ॥ जो ऐसे करते नहिं मरै। डारि देहु गज मैंमत तरै॥पर्वतसे इहि देहु गिराई।मरै जौन विधि मारो जाई॥असुर चले तब कुँवर लिवाय। हरिजू ताकी करै सहाय॥करै उपाउ सो वृथा जाइ। नृपकी आज्ञा लियो उठाइ॥ कुँवर रह्यो हरि-पद चितलाइ। असुरनि गिरिते दियो गिराइ॥ राखि लियो तिन त्रिभुवन राइ ॥तब गज मैंमत आगे डार्‌यो। राम नाम तब कुँवर उचार्‌यो।गज दोउ दंत टूटि धर परे। देख असुर यह अचर-ज करे॥बहुरो नाग दयो लपटाइ। जिनके ज्वाला गिरि जरि जाइ ॥ हरिजू तहँहू करी सहाइ। नाग रह्यो शिर नीचे नाइ ॥ पुनि पावकमें दियो गिराय। हरि जू ताकी कियो सहाय ॥ करै उपाइ सु बिरथा जाइ। तब सब असुर रहे खिसियाइ ॥ कह्यो असुरपतिसों पुनि जाइ। मरत नहीं यह कियो उपाइ ॥हमतो बहुत भांति पचिहारे ।यह तो रामहि राम उचारे॥नृपकह्यो मंत्र यंत्र कछु आहि।कै छल करत कछू तू आहि॥तोको कौन बचावत आइ। सो तू मोको देहि बताइ ॥ मंत्र यंत्र मेरे हरि नाम। घट घटमें जाको विश्राम ॥ जहां तहां सोइ करत सहाइ।तासों तेरो कछु न बसाइ॥कह्यो कहाँ सो मोहिं बताइ। नातर तेरो जिय अब जाइ ॥ जो सबठौर खंभहूं होइ। कह्यो प्रह्लाद आहि तू जोहि ॥ हिरण्यकशिपु क्रोध मन धार्‌यो।जाइ खंभको मुक्का मार्‌यो॥फटि तब खंभ भयो द्वै फारि।निकसे हरि नरहरिवपु धारि॥निरखि असुरचक्रतह्वैगयो। बहुरि गदा लै सन्मुख भयो॥हरि तासों कियो युद्ध बनाइ। तब सुर मनमें गयो डगाइ ॥ संध्या समय भयो जो आइ।हरिजू ताको पकर्‌यो धाइ॥ निज जांघन पर ताहि पछार्‌यो।नखन साथ तब उदर बिदार्‌यो ॥ जयजयकार दशो दिश भयो। असुर प्राण तजि हरिपुर गयो॥ब्रह्मादिक सब रहे अरगाइ। क्रोध देखि कोउ निकट न जाइ ॥बहुरो ब्रह्मा सुरन समेत ।नरहरिजूके जाइ निकेत॥करि दंडवत बिनय उचारि। तुम अनंतपराक्रम बनवारि ॥ तुमहीं करत नरक निस्तार उत्पति भरत करत संहार ॥करो क्षमा कियो असुर सँहार।गयो न क्रोध भरो सो भार ॥महादेव पुनि विनय उचारी। नमो नमो भक्तन भयहारी ॥ भक्त हेतु तुम असुर सँहारो। श्री नर-हरि अब क्रोध निवारो॥ क्रोध न गयो तब ऐसे कह्यो। क्षमो प्रलयको समय न भयो ॥

तौहूं क्रोध न गयो विकारि। महादेव हू फिरे निहारि॥ बहुरि इन्द्र अस्तुती उचारी।मुयो असुर सुर भये सुखारी ॥ ह्वैहै यज्ञ अब देव मुरारी। क्षमिए क्रोध सुरन सुखकारी ॥पुनि लक्ष्मी यों विनय सुनाई। डरौं देखि यह रूप निवांई॥ महाराज यह रूप दुरावहु। रूप चतुर्भुज मोहि दिखावहु॥ बरुन कुबेरादिक पुनि आए। करी बिनय तिनहूं बहु भाए॥तौहूं क्रोधक्षमा नहिं भयो। तब सब मिलि प्रह्लादहिं कह्यो॥ तुमरे हेतु हरि लियो अवतार। तुम अब जाइ करो मनुहार॥तब प्रह्लाद हरि निकट आइ। करि दंडवत परो गहि पाइ॥ तब नरहरि जू ताहि उठाइ। ह्वै कृपालु बोल्यो या भाइ॥कहु जु मनोरथ तेरो होइ।छांडि विलंब करौं अब सोइ॥दीनानाथ दयालु मुरारी।मम हित तुम लीनो अवतारी ॥असुर अशुचि है मेरी जात। मोहिं सनाथ कियो तुम नाथ॥ भक्त तुम्हारी इच्छा करै। ऐसो असुर कह्यो क्यों मरै॥ भक्तन हित तुम धारी देह। तरिहैं गाइ गाइ गुण एह॥जग प्रभुत्व प्रभु देखा जोई। सो बिन तुम क्षणभंगुर होई॥ इन्द्रादिक जाते भय कर्यो। सो मम पिता मृतक होइ पर्यो॥साधुसंग प्रभु मोको दीजै। तिहि संमत तुम भक्ति करीजै॥और न मेरी इच्छा कोइ।भक्ति अनन्य तुम्हारी होइ॥और जु मोपर कृपा करो।जो सब जीवनको उद्धरो॥जोकहो कर्मभोग जब करिहैं।तब ए जीव सकल निस्तरिहैं॥मम कृत इनके बदले लेहु। इनके कर्म सकल मोहिं देहु॥ मोको नरकमाहिं लै डारो। पै प्रभु जू इनको निस्तारो॥पुनि कह्यो जीव दुखित संसारा।उपजत बिनशत बारंबारा॥ बिना कृपा निस्तार न होई।करो कृपा मैं मांगत सोई॥प्रभु मैं देखि तुम्हैं सुख पावत।पै सुर देखि सकल डर पावत॥ताते महा भयानक रूप। अन्तर्ध्यान करो सुरभूप॥ हरि कह्यो मोहिं बिरदकी लाज।करो मन्वन्तरलों तुम राज।राजलक्ष्मी मद नहिं होइ॥कुल इकीसले उधरे सोइ॥जो मम भक्त नरकमें जाइ॥ होइ पवित्र ताहि परसाइ॥ जा कुल माहिं भक्त मम होइ।सप्त पुरुष लै उधरै सोइ॥ पुनि प्रह्लाद राज बैठाए। सब असुरन मिलि शीश नवाए॥ नरहरि देखि हर्ष मन कीनो। अभयदान प्रह्लादहिं दीनो ॥तब ब्रह्मा बिनती अनुसारी। महाराज नरसिंह मुरारी॥ सकल सुरनको कारज सरो। अंतर्ध्यान रूप अब करो॥तब नरहरि भे अंतर्ध्यान।राजासों शुक कह्यो बखान॥ जो यह लीला सुनै सुनावै। सूरदास हरिभक्ति सु पावै॥२॥ राग रामकली ॥पढौ भैया कृष्ण गोविंद मुरारी।कहै प्रह्लाद सुनो रे बालक लीजै जन्म सुधारी॥को है हिरण्यकशिपु अभिमानी जोर सकै तुम मारी। राखनहार वहै कोउ औरै श्याम धरे भुज चारी॥ कर्मरूप वसुदेव नारायण नहिं दीजै सु बिसारी॥सूरदास ताहरिसे मीता कबहुं न आवैहारी॥३॥ राग कान्हरा ॥जो मेरे भक्तन्ह दुखदाई। सो मेरे इहि लोक बसै जिन त्रिभुवन छांडि अनत कहुँ जाई॥शिव विरंचि नारद मुनि देखत तिनहुं न मोको सुरति दिवाई। बालक अबल अजान रहै वह दिन दिन त्रास अधिकाई॥ खंभ फारि गलगाजि मत्त बल क्रोधमान छबि बरणि न जाई। नैन अरुन विकराल दशन अति नखसों हृदय बिदारन आई॥कर जोरे प्रह्लादजू बिनवैंबिनय सुनो अशरन शरनाई।अपनी रिसि बिसारि तात मम अपराधी सु परमगति पाई॥ दीनदयालु कृपानिधि नरहरि अपनो जानि हृदय लियो लाई। सूरदास प्रभु पूरण ठाकुर कह्यो शुकहिं नामैं निरुआई॥४॥ राग मारू ॥ऐसी को सकै करि बिना मुरारी।कहत प्रह्लादके धारि नरसिंहवपु निकसि आए तुरत खंभ फारी॥हिरण्यकश्यपु निरखि रूप चकृत भयो बहुरि कर ले गदा असुर धायो। हरि सदा युद्ध तासों कियो भली विधि बहुरि संध्या समय होन आयो॥ गहि असुर

धाइ पुनि जाइ निज जंघपर नखनिसों उदर डारचो बिदारी। देखि यह सुरन वर्षा करी पुहुप-की सिद्ध गंधर्व जय ध्वनि उचारी ॥बहुरि बहु भाइ प्रह्लाद अस्तुति करी ताहि दे राज बैकुंठ सिधाए। भक्तके हेत हरि धरचो नरसिंह बपु सूर जन जानि यह शरन आए॥ ५॥ राग धनाश्री॥ तबलगि हौं बैकुंठ न जैहौं।सुनु प्रहलाद प्रतिज्ञा मेरी जबलगि तुम शिर छत्र न देहौं॥मन बच कर्म जान जिय अपने जहां जहां जन तहँतहँ ऐहौं। निर्गुण सगुण होय सब देख्यों तोसो भक्त कहूं नहिं पैहों॥मो देखत मो दास दुखित भयो यह कलंक हौं कहां गँवैहों। हृदय कठोर कुलि-शते मेरो अब नहिं दीनदयालु कहैहों॥गहि तनु हिरनकशिपुको चीरों फारि उदर तब रुधिर नहैहों। इहि हत मिटै कहै सूरज प्रभु या कृतको फल तुरत चखैहौं ॥६॥ श्रीभगवान शिव सहायवर्वणन॥ राग विलावल॥हरि हरि हरिहरि सुमिरन करो।हरिचरणारविन्द उरधरो॥हरिज्योंशिव-की करी सहाई।कहौं सुकथा सुनोचितलाई॥एक समै सुर असुर प्रचारि।लरे भई असुरनकी हारि॥ तिन ब्रह्माके हित तप कीनो। ब्रह्मा प्रकटि दरश तब दीनो॥तब ब्रह्मासों कह्यो शिर नाइ। जै ह्वै हमरी किहि भाइ ॥ ब्रह्मा तव यह बचन उचारचो। मय मायामय कोट सँवारचो॥ तामें बैठि सुरन जय करो ।तुम उनके मारे नहिं मरो॥असुरनयहमयको समुझाई। तबमयदीनोकोटबनाई लोहतले मधरूपा लायो। ताके ऊपर कनक लगायो ॥जहँ लैजाहि तहां वह जावै।त्रिपुर नाम सो कोट कहावै ॥ गढके बल असुरन जय पाई। लियो सुरनसों अमृत छिनाई ॥ सुर सब मिलि गए शिवशरनाई । शिव तव कीन्ही तिनैं सहाई ॥ पै शिव जाको मारत धाई। अमृत प्याइ तिहिं लेहिं जिवाई ॥ तब शिव कीनो हरिको ध्यान ।प्रगट भये तहां श्रीभगवान॥ शिव हरिसों सब कथा सुनाई । हरि कह्यो अब मैं करों सहाई॥ सुंदर गऊरूप हरि कीनो ।बछरा करि ब्रह्मा संग लीनो॥अमृतकुंडमें पैठी जाय।कह्यो असुरन मारो या गाय॥ एकनि कह्यो याहि मत मारो । याको सुंदर रूप निहारो ॥ कितक अमृत पीवै यहि भाई। हरिमति तिनकी फिर भर-माई ॥ हरि अमृत पिय गए अकाश । असुर देखि यह भए उदास॥कह्यो इही हिरणाक्ष सुमारचो। हिरण्यकशिपु इनहिं संहारचो ॥यासों हमरो कछु न बसाई। यह कहि असुर रहे खिसियाई ॥ शिव तब कीनो युद्ध अपार।पै असुरन नहिं मानी हार॥ बाण एक हरि शिवको दियो । तासों सब असुरन क्षय कियो ॥या विधि हरिजू करी सहाय । मैं सो तुमसों दई सुनाय ॥ शुक ज्यों नृपको कहि समझायो ।सूरदास जन त्योंही गायो॥ ७॥ नारद उत्पत्ति कथा वर्णन ।राग विलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि भजि जैसो नारद भयो । नारद व्यासदेवसों कह्यो ॥ कहौं सु कथा सुनो चित धार। नीच ऊंच हरिके इकसार ॥ गंधर्व ब्रह्मासभा मँझार। हँस्यो अप्सरा ओर निहार ॥ कह्यो ब्रह्मा दासीसुत होहि। सकुच न करी देखि तैं मोहि ॥ भयो दासीसुत ब्राह्मण गेह।तुरत छाँडिके गंधर्व देह ॥ ब्राह्मणगृह हरिके जन छाए। दासी दास सेवहित लाये ॥ हरिजन हरिचरचा जो करै।दासीसुत सो हृदय धरै ॥सुनत सुनत उपज्यो बैराग।कह्यो जाउं क्यों माता त्याग ॥ ताकी माता खाई कारे। सो सरगई शापके मारे ॥दासी सुत वन भीतर जाई। करी भक्ति हरिपद चित लाई॥ब्रह्मापुत्र तनु तजि सो भयो। नारद यों अपने मुख कह्यो ॥ हरिकी भक्ति करै जो कोई। सूर नीचसों ऊंच सु होई ॥८॥

इति श्रीभागवते सूरसागरे सूरदासकृते सप्तमस्कंधः समाप्तः॥ ७ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत–

श्री सूरसागर ।

अष्टमस्कन्ध ।

रागबिलावल ॥चालि॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविन्द उर धरो॥ हरिचरणन शुकदेव शिर नाई । राजासों बोल्यो या भाई ॥ कहों हरिकथा सुनो चितलाई । सूरदास हरि-के गुण गाई ॥ १ ॥ गजमोचन अवतार ॥ रागबिलावल॥ गजमोचन ज्यों भयो अवतार।कहौं नौ सो अब चित धार ॥ गंधर्व एक नदीमें जाय । देवल ऋषिके पकरयो पाय ॥ देवल कह्यो ग्राह तुम होहि । कह्यो गंधर्व दया करि मोहिं ॥ जब गजेंद्रके पग तू गहिहै । हरिजू ताको आनि छुडैहै॥ भये सपर्श देवतनु धरिहै । मेरो कह्यो नहीं यह टरिहै॥राजा इंद्रद्युम्न कियो ध्यान । आयो अगस्त्य नहीं तिन जान॥दियो शाप गजेंद्र तू होहि।कह्यो नृप दयाकरो ऋषि मोहिं॥कह्यो तुहि ग्राह आन जब धरिहै। तू नारायण सुमिरन करिहै॥ याही बिधि तेरी गति होई । भयो त्रिकूट पर्वत गज सोई ॥ कालहि पाइ ग्राह गज गह्यो । गज बल करि करिके थकि रह्यो॥ सुत पत्नी हू बलकरि रहे।छूटयो नहीं ग्राहके गहे॥ते सब भूखे दुःखित भये।गजको मोह छाँडि उठिगए॥ तब गज हरिकी शरणहि आयो । सूरदास प्रभु ताहि छुटायो ॥ २ ॥ माधवजू गज ग्राहते छुडायो।निगमनि हूं मन वचन अगोचर प्रगटि स्वरूप दिखायो॥शिव विरंचिसब देखन ठाढे बहुतदीन दुख पायो।बिन बदले उपकार करैको काहू कहत न आयो॥चितवत चितहीमें चिंता मणि चक्र लये कर धायो ।अति करुणा करि करुणामै हरि गरुडहूंको छुटकायो॥सुनियत सुयश जु निज जन कारन कहूं न गहर लगायो ।ना जानों जु सूर इहि औसर कौन दोष बिसरायो३॥ राग बिलावल॥हरि कर चक्र धरे धर धावत ॥ गरुड़ समेत सकल सेनापति पाछे लागे आवत ॥ चलि ना सकत गरुड मन डरपत बुधि बल बलहि बढावत। मनो पवनवश पत्र पुगनन अपनो चरण चलावत॥को जानै प्रभु कहाँ चलैहैं काहू कछु न जनावत ।अति व्याकुल गति देखि देवगण सोचि सकल दुख पावत॥गजहित धावन जन मुकरावन वेदविमलयशगावत। सूर समुझि समुझाव अनाथनि इहि विधि नाथ छुडावत॥ ४ ॥ राग रंग ॥झांई न मिटन पाई आए हरि आतुर ह्वै जब जान्यो गज ग्राह लये जात जलमें । यादौपति यदुनाथ खगपति साथ जन जान्यो विहबल तब छांडि दयो थलमें ॥ नीरहूते न्यारो कीनो चक्र नक्रशीश छीनो देवकीके नन्दलाल ऐंचि भुवतलमें । कहै सूरदास देखि नैननकी मिटी प्यास कृपा कीनो गोपीनाथ आइगए पलमें ॥ ५ ॥ राग बिलावल ॥अब हौं सब दिशि हेरि रह्यो । राखत कोउ न नाथ कृपानिधि अति बल ग्राह गह्यो ॥सुर नर सब स्वारथके गाहक कत श्रम आन करै । उडगण उदित तिमिर नहिं नाशत बिन रवि रूप धरै॥इतनी बात सुनत करुणामय चक्र

गहे कर धाए । हत गजशत्रु सूरके स्वामी ताछिन सुखउपजाए॥ ६ ॥ कूर्मअवतार समुद्रमथन अमृतादि निमित्त ॥ राग बिलावल॥ जैसे भयो कूर्मअवतार । कहौं सुनो सो अब चित धार ॥ नरहरि हिरण्यकशिपु जब मारचो । अरु प्रह्लाद राज्य बैठारचो ॥ ताको सुत वैरोचन भयो । ताके बहुरि पुत्र बलि हुयो ॥ बलि सुरपतिको बहु दुख दयो। तब सुरपति हरिशरणनि गयो॥हरिजूअपनी बिरद सँभारचो। सूरज प्रभु कूरमतनु धारचो ॥ ७ ॥ राग मारू ॥सुरन हेत हरि कच्छपरूप धारचो । मथन करि जलधिअमृतनिकारचो॥चतुर्मुख त्रिदशतबबिनय हरिसों करी बलिअसुरसों सुरनि दुःख पायो । दीनबंधू कृपाकरन अशरनशरन मंत्र यह तिनैं निज मुख सुनायो ॥ बासुकी नेति अरु मंदराचल रई कमठमें आपनी पीठ धारचो। असुरसों हेत करि करो सागर मथन तहांते अमृतको पुनि निकारचो॥ रत्न चौदह बहुरि तहांते प्रगट होहिं असुरको सुरा तुम अमृत प्याऊं ।जीतिहौ तब महाअसुर बलवंतको मरैं नहिं देवता यों जिवाऊं॥इन्द्र मिलि सुरन बलिपास गयो बहुरि उन कह्यौ कहो किहि काज आयो।त्रिदश तबसमुद्रके मथनकीबातजोहुतीसो सकल कहिके सुनायो॥बलि कह्यो विलंब अब नेकु नहिं कीजिए मंदराचल अचल चलो धाई।दोउ इक मंत्र करि जाइ पहुँचे तहां कह्यो अब लीजिए इहि उँचाई ॥ मंदराचल उपारत भयो बहुत श्रम बहुरि लै चलनको जब उठायो । सुरअसुर बहुत ता ठौरही मरिगए दुहूँको गर्व हरि यों नशायो॥तब दुहूँ ध्यान भगवानको धरि कह्यो बिन तुम्हारी कृपा गिरि न जाई। वामकरम्यों पकरि गरुडपर राखि हरि क्षीरके जलधितट धरयो जाई ॥ कह्यो भगवान अब बासुकी ल्याइए जाइ तिनि बासुकीसों सुनायो।मान भगवानआज्ञा सुआयोतहां नेति करि अचलको समुद्र पायो॥मंदराचल समुद्र माहिं बूडनलग्यो तब बहुरि सबन अस्तुति सुनाई । कूर्मको रूप धरि धरि अचल पीठपर सुर असुर सकल मन भइ बधाई॥पूंछको तजि असुर दौरिके मुख गह्यो सुरन तब पूंछकी ओर लीनो।मथतभए छीन जब तबै अस्तुति करी श्रीमहराज निजशक्ति दीनी॥भयोहलाहल प्रगट प्रथमहीमथत जब रुद्रको दयो तिहि कंठधारी।चन्द्रमाबहुरि जबमथत पायोप्रगटसोउकरिकृपा दीनो मुरारी॥कामना धेनु तब सप्त ऋषिको दई लई उन बहुत आनन्द कीने।अप्सरा पारजातक धनुष अश्व गज श्वेत ए पांच सुरपतिहि दीने॥शंख अरु कौस्तुभमणि लई आप हरि बहुरि पुनि लक्ष्मीदई दिखाई । परम सुन्दर मनो तडित है दर्शनी कमलकी माल कर लए आई ॥ सकल भूषन मनिनके बने सकल अंग अरु बसन अरुन सुंदर सुहाये। देखि सुर असुर सब दौरि लागे गहन कह्यो मैं बरवरों आप भाए । जो मुझे चहै मैं ताहि नाहीं चहौं असुरको राज थिर नाहिंदेखों । तपसियनको कह्यो क्रोध इनमें बहुत ज्ञानियनिमें न आचार पेखों ॥ सुरनको देखि कह्यो ए पराधीन सब देखि बिधको कह्यो यह बुढायो । चिरंजीवनि देखि कह्यो न डगई ए लोकतिहुँ माहिं कोउ चित न आयो॥बहुरि भगवानको निरखि सुन्दर परम कह्यो इहिमाहिहै सब भलाई।पै न इच्छा इनैंहै कछू वस्तुकी अरु न ए देखिके मोहिं लोभाई॥कबहुं किये भक्तिहूके न ए रीझितें कबहुंके बैर ए रीझि जाहीं । और गुण चाहिये सो सकल हैं इन्हें डारि दई माल कहि गरेमाहीं ॥ हरि कह्यो मम हृदय माहिं तुम रहो सदा सुरन मिलि देव दुन्दुभि बजाई । धन्य धनि कह्यो पुनि लक्ष्मीसों सकल सिद्ध गंधर्व जै ध्वनि सुनाई॥ बहुरि धन्वंत्रिआयो समुद्रसे निकसि सुरा अरु अमृत पुनि संग लायो । भयो आनंद सुर असुरको देखिकै असुर करि बलहि अमृत छिनायो ॥ सुरन भगवानसों आइ बिनती करी

असुर सब अमृत लै गए छिनाई। कह्यो भगवान चिंता न कछु मन धरो मैं करों अब तुम्हारी सहाई॥परस्पर असुर तब युद्ध लागेकरन होय बलवंत सोइ लै छिनाई। मोहिनी रूपधरि श्याम आए तहां देखि सुर असुर सबहीं लोभाई॥ आइ असुरन कह्यो लेहु यह अमृत तुम सबन दै बांटि मेटो लराई। हँसि कह्यो नहीं हम तुम कछू मित्रता बिना विश्वासबांट्यो न जाई ॥कह्यो तोहि बांट पर हमैं विश्वास है देहु तुम बाँट जो धर्म होई। कह्यो सब सुर असुर मिलि कियो दधि मथन देउ सब बांट है धर्म सोई॥ कह्यो जो करौं सो हमैं परमान है असुर सुरपांति करि तब बिठाई। असुर दिश जिते मुसकाइ मोहे सकल सुरनको अमृत दीनो पिलाई॥ राहु शशि सूर्यके बीचमें बैठिकै मोहनीसों अमृत मांगिलीनो ।सूर्य शशि कह्यो जब असुर यह कृष्णजू लै सुदर्शन सु द्वै टूक कीनो॥राहु शिर केतु धरको भयोतबहिंतेसूर शशिको सदा दुःखदाई। करत भगवान रक्षा शशिउ सूरकी होत है सुदर्शन तब सहाई ॥ करि अंतर्ध्यान तब मोहनीरूपको गरुड असवार ह्वै तहां आए। असुर चक्रत भए कहां गई नारि वह सुर असुर युद्ध हेतु दोउ धाए॥ सुरनकी जीति भई असुर मारे बहुत जहां तहां गए सबही पराई। सूर प्रभु जिहि करे कृपा जीतै सुई बिनु कृपा जाइ उद्यम वृथाई॥ ८ ॥ मोहनीरूप। राग मारू ॥ हरि कृपा करे जीतै सोई।बाद अभिमान जिन करो कोई॥पाइ सुधि मोहनीकी सदाशिवचले जाइ भगवानसों कहे सुनाई।असुर अजितेंद्रिय देखि मोहित भये रूपसो मोहिं दीजै दिखाई॥हरि कह्यो ब्रह्मव्यापक निराकार सोनिर्गुण तुम सगुण लै कहा करिहौ। पुनि कह्यो बीनती मानलीजै प्रभू उमा देख्यो चहत कृपा धरिहौ॥हरि कह्यो तुम्हें दिखराइहौं रूप वह करौ विश्राम इक ठौर जाई। बैठि एकांत जोहन लग्यो पंथ शिव मोहनी रूप कब दे दिखाई॥ होइअंतर्ध्यान मोहनी रूप धरि जाइ बनमाहिं दीनो दिखाई।सूर शशि किधों चपला परमसुंदरी अंग भूषननि छबि कहि न जाई॥हाव अरु भाव करि चलत चितवत जबै कौन ऐसो जो मोहित न होई॥उमाको छांडि अरु डारि मृगचर्मको जाइके निकट रह्यो रुद्र जोई॥रुद्रको देखिकरि मोहनी लाज करिलियो अंतर रुद्र अधिक मोह्यो। उमाहू देखि पुनि ताहि मोहित भई तासुसम रूप अपनो न जोह्यो॥ रुद्र धीरज तज्यो जाइ ताको गह्यो सो चली आपको तब छुडाई। रुद्रको वीर्य छुटिकै परचो धरणिपर मोहनी रूप हरि लियो दुराई।देखिकै उमाको रुद्र लज्जित भए कह्यो मैंकौन यह काम कीनो। इंद्रीजित कहावत हौं तो आपुको समुझि मनमाहिं ह्वै रह्यो खीनो।चतुर्भुज रूप हरि आइ दरशन दियो कह्यो शिव शोच दीजै बिहाई॥सम तुम्हारो नहीं दूसरो जगतमें कह्योतुमरूपतब दियो दिखाई॥नारिके रूपको देखि मोहै न जो सो नहीं लोक तिहुँ माहिं भावै। सूरस्वामी शरन गहित माया सदा को जगत जो न कपिज्यों नचावै॥ ९ ॥ राग बिलावल॥ असुर द्वै हुते बलवंत भारी। सुंद उपसुंद स्वेच्छा बिहारी॥ भगवती तबै दीनी देखाई। देखि सुंदरी दोउ रहे लुभाई ॥भगवती कह्यो तिनको सुनाई। युद्ध जीते सु मुहि बरे आई ॥तब दुहूँ युद्ध कीनो तहांई। कारि मुये तुरतहि दोउ भाई॥ देखिकै नारि मोहित जो होवै।आपुनो मूल या विधि सु खोवै॥ शुक नृपति पास जेहि विधि सुनाई।सूर ज्यों ही तेहि भांति गाई॥१०॥ वामनअवतार वर्णन॥ राग बिलावल॥जैसे भयो वामन अवतार।कहौं सुनो सो अवचित धार॥हरि जब अमृत सुरन पियायो।तब बलि असुर बहुत दुख पायो॥शुक्र ताहि पुनि यज्ञ करायो।सुर जै राज्य त्रिलोकी पायो॥ निन्यानवे यज्ञ पुनि किये। तब दुख भयो अदितिके हिये ॥ हरिहित उन पुनि बहुत पुकारचो। सूरश्याम वामन वपु धारचो॥११॥ रागमलार ॥द्वारे ठाढे हैं द्विज वामन। चारों वेद पढत मुख आगर अति सुगंध सुर गावन॥ वाणी सुनि बलि पूछन लागे इहां विप्र करो आवन।

चर्चित चन्दन नील कलेवर बरसति बुंदन सावन॥ चरण धोइ चरणोदक लीनो मांगि देउँ मन भावन। तीन पैंड वसुधा हौं चाहौं परण कुटीको छावन॥ इतनो कहा विप्र तें मांग्यो बहुत रत्न देउँ गांवन। सूरदास प्रभु बोल छले बलि धरचो पीठि पद पावन॥ १२॥ राग मलार॥ राजा इक पंडित पौरि तुमारी। चारों वेद पढे मुख आगर है वामन वपुधारी॥ अपद दुपद पशुभाषा बूझै अविगत अल्प अहारी। नगर सकल नरनारी मोहे सूरज ज्योति बिसारी॥ सुनि आनंद चले बलि राजा आहुति यज्ञ बिसारी। देखि स्वरूप सकल कृष्णाकृति कीनी चरण जुहारी॥ चलिए विप्र जहां यज्ञवेदी बहुत कही मनुहारी। जो माँगो सोइ देहुँ तुरतही हीरा रतन भंडारी॥ रहु रहु राजा यों नहिं कहिये दूषण लागे भारी। हूंठ पैंड दे वसुधा हमको तहां रचौं धर्मसारी॥ शुक्र कह्यो सुन हो बलिराजा भूमिको दान निवारी। ए तो विप्र न होवै राजा आए छलन मुरारी॥ कहि धौं शुक्र कहा धों कीजै आपुन भए भिखारी। सबही उदक दियो बलिराजा वामन देह पसारी॥ जैजैकार भयो भुव मापति तीन पैंड भइ सारी। आध पैंड दै वसुधा राजा नातरि चल सतहारी॥ अब सत क्यों हारों जगस्वामी नापो देह हमारी। सूरदास बलि सर्वस दीनो पावो राज्यपतारी॥ ॥ १३॥ मत्स्यअवतार वर्णन॥ राग मारू॥ सुरन हेतु हरि मत्स्यरूप धारचो। सदाही भक्त संकट निवारचो॥ चतुर्मुख कह्यो श्रुति चतुर शंखा असुर लै गयो तबै परलै दिखायो। भक्तवच्छल कृपाकरन अशरन शरन मत्स्यको रूप तहां धारि आयो॥ स्नान करि अंजली जल जबै नृप लियो मच्छको देखि कह्यो डार दीजै। मत्स्य कह्यो मैं गही आय तुमरी शरन करि कृपा मोहिं अब राखिलीजै॥ नृप सुनत वचन चकृत प्रथम ह्वै रह्यो कह्यो मछ वचनकिहिभांतिभाख्यो। पुनि कमंडलु धरचो तहां सो बढिगयो कुंभ धरि बहुरि पुनि मांट राख्यो॥ पुनि धरचो खाइ तालाबमें पुनि धरचो नदीमें बहुरि तिहि डारिदीनो। बहुरि जब बढिगयो सिंधु तबलैगयो तहांहरि-रूप तब चीन्हलीनो॥ कह्यो करि विनय तुम ब्रह्म अन अंत हौ मत्स्यको रूप किहिकाज कीन्हो। वेद विधि चहत तुम प्रलय देखन कहत तुम दोऊ हेतु अवतार लीनो॥ कबहुँ बाराह नरसिंह कबहूँ भयो कच्छको रूपहू कबहुँ लीनो। कबहुँ भयो राम वसुदेव कबहूँ भयो और बहुरूप हितभक्त कीनो॥ सातवें दिवसदिखरायहोंप्रलय तुहिंसप्तऋषि नावमेंबैठिआवें। तोहिं बैठारिहैं नावमें हाथ गहि बहुरि हम ज्ञान तुहि कहि सुनावें॥ सर्प इक आइहै बहुरि तुमरेंनिकट ताहिसों नाव मम शृंग बांधो। यहैकहि मत्स्यप्रभुभएअंतर्ध्यान नृप तबै आपनों कर्म साधो॥ सातवें दिवस आयो निकटजलधि जब नृपतिकह्योअब कहीं नाव पावें। आइगई नाउ तबऋषिन तासों कह्यो आव हम नृपति तुमको बचावें॥ पुनि कह्यो मत्स्य हरि अब कहां पाइये ऋषिन कह्यो ध्यानजियमाहिं धारचो। मत्स्यअरु सर्प ता ठौर प्रगटित भए तबै तिनसों नृपति कहि उचारचो॥ ज्यों महाराज या जलधिते पार कियो भवजलधिहू पार करो स्वामी। अह ममता हमैं सदा लागी रहति मोह मद क्रोधयुत मंद कामी॥ कर्म सुखहित करत होत तहँ दुःख तब इतेपर मूढ नाहीं सँभारत। करन कारन महाराजहैं आपही ध्यान प्रभुकोनमनमाहिं धारत॥ विनु तुमारी कृपा गति न-हीं नरनकीजानिमोहिं आपनी कृपा कीजै। जन्मअरु मरनमें सदा दुःखितरहतदेहु मोहिंज्ञानजो सदा जीजै॥ मत्स्यभगवान कह्यो ज्ञानपुनि नृपतिसों भयो सुपुराण सब जगत जान्यो। लहुअब ज्ञान कह्योआंखिअब मीचितू मत्स्य जोकह्यो सो नृपति मान्यो॥ आंखिको खोलिजब नृपति देख्यो बहुरि कह्यो हरि प्रलय माया दिखाई। कह्यो जो ज्ञान भगवान सो आनि नृप उरहि निज आयु इहिविधिबिताई॥ बहुरि शंखासुरै मारिवेदआनिदयो चतुर्मुख विविध अस्तुति सुनाई। सूरके प्रभूकी नित्य लीलाघनी सकै कहि कौन यह कछुक गाई॥ १४॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते अष्टमः स्कंधः समाप्तः॥८॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर.

नवमस्कन्ध।

राजा पुरूरवाको वैराग्य वर्णन । राग बिलावल ॥शुकदेव कह्यो सुनो हो राउ।नारी नागिनिएक स्वभाव॥ नागिनिके काटे विष होइ। नारी चितवत नर रहे मोइ॥ नारीसों नर प्रीति लगावै। पै नारी तिहि मनहिं न ल्यावै॥ नारी संग प्रीति जो करै।नारी ताहि तुरत परिहरै॥नृपति एक पुरूरवा भयो। नारीसंग हेत तिन ठयो ॥तासों उन कटु वचन सुनाए।पै ताके मन कछू न आए॥बहुरो तिहि उपज्यो वैराग।गयोउरबशीकोसो त्याग॥हरिकी भक्ति करत गति पाई।कहों सुकथासुनो चित लाई॥एकबार महाप्रलय भयो।नारायण आपै रहिगयो॥नारायण जलमें रहे सोई।जागि कह्यौ बहुरो जग होई॥नाभिकमलते ब्रह्मा भयो॥तिन मनते मरीचिकोठयो॥पुनि मरीचिकश्यप उपजायो। कश्यपकी तिय सूरज जायो॥सूरजके वैवस्वत भयो। सुतहित सो वशिष्टपै गयो॥ ताकी नारि सुताहित भाख्यो।सुनि वशिष्टअपने मन राख्यो॥ऋषि नृपसों यज्ञ विधि करवाई।इला सुता ताके गृह आई॥ नृप कह्यो पुत्र हेत यज्ञ कियो। पुत्री भई यह अचरज भयो॥ऋषि कह्यो रानी पुत्री कही। मेरे मनमें सोई रही॥ताते पुत्री उपजी आइ। करिहै पुत्र ताहि हरि राइ॥हरि ता पुत्रीसों सुत कर्यो।नाम सुद्युम्न ताहि ऋषि धर्यो॥एक दिवस सु अखेटक गयो।जाइअंबिका बन तिय भयो॥बुधके आश्रम सो पुनि आयो।तासों गंधर्व व्याह करायो॥बहुरोएकपुत्रतिन जायो। नाम पुरूरवाताहि धरायो॥ पुनि सुद्युम्न वशिष्टसों कह्यो। अंबा बनमें तिय ह्वैगयो॥ ऋषि शिवसों बहु विनती करी। तब शिव यह बाणी उचरी॥ एक मास यह ह्वैहै नारि। द्वितीय मास पुरुपआकारि॥ तब सुद्युम्न अपने गृह आयो। राज समाज माहिं सुख पायो॥ तीनि पुत्र तिन और उपाए। दक्षिण राज्य करन सु पठाए॥दश सुत ताके उपजे और। भयो इक्ष्वाकु सबन शिरमौर॥ सूरजवंशी सो कहवायो। रामचन्द्र ताही कुल आयो॥ सोमवंश पुरूरवासों भयो॥ सकल देश नृप ताको दयो॥तिहि वंश लियो कृष्ण अवतार। असुर मारि कियोसुरन उद्धार॥कहिहौं कथा सुकरि बिस्तार।पुरूरवा कथा सुनो चितधार॥ पुरूरवागेह उर्वशीआई। मित्रवरुनते शापहिं पाई॥ नृपति देखि तेहि मोहित भयो। तिन यह वचन नृपतिसों कह्यो॥ बिन रतिकाल नग्न नहिं होवहु।मम मेढनिको कहूँ न खोवहु॥तबलौं में तुमरोसँग करौं। वचन भंग भयेते परिहरौं॥नृपति कह्यो तुम कह्यो सु करिहौं।तुमरी अज्ञा में अनुसरिहौं॥तासों मिलि नृप बहु सुख माने। षष्ठ पुत्र तासों उतपाने॥ सुरपुरसों गंधर्व पुनि आयो। उर्वशीसों यह वचन सुनायो॥ अब तुम इंद्रलोकको चलो। तुम बिनु सुरपुर लगत न भलो॥ तिन उर्वशी कह्यो या भाइ।छल बल करिसको तौ लैजाइ॥मम चलिबेको यहै उपाव। छल करि मेंढनि

नभ लै जाव ॥ गंधर्व मेढनि नभ ले धाए । सोवत नृप उरवशी जगाए ॥ मम मेढनिको लै गयो कोई । देखो तुम पुरुषै तिहिं जोई ॥ अर्ध निशा नृप ताको धायो । पै मेढनिको कहूँ न पायो॥ इत उत देखि नृपति जब आयो । तब उरबशी यह वचन सुनायो ॥ राजा वचन तुमारो टरयो । ताते मैं तुमको परिहरयो ॥ यह कहिकै सो चली पराय । जैसे तडित अकासै जाय ॥ताकेबिरह नृपति बहु तयो । नग्न नग्न ता पाछे धयो ॥ भ्रमत भ्रमत नृप बहु श्रम पायो । बहुरो कुरुक्षेत्रमें आयो ॥ तहां उरबसी सखिन समेत । आइगई सुस्नानके हेत ॥पै उनको कोउ देखै नाहिं । उनको सकल लोक दरशाहिं ॥उरबशीसों तिलोत्तमा कह्यो । कौन पुरुष तुम भुवमें लह्यो ॥ ताके देखनकी मोहिं चाह ।कह्यो पुरुष वह ठाढो आह॥ नृपको देखि सु विस्मय भई। कह्यो विरह तोहिं नृप सुधि गई॥ बहुत दुखित है तेरे नेह।एक बेर इहि दरशन देह॥ तिन माया आकर्षण करी ।तब वह दृष्टि नृपतिकी परी ॥ राजा निरखि प्रफुल्लित भयो ।मानो मृतक बहुरि जिय लह्यो ॥ उरबशीनिकट नृपति चलिआयो ।करि बिनती यह बचन सुनायो॥ तैं मोको काहे बिसरायो ।मैं तुम बिन बहुतै दुख पायो॥तुम बिन भूख नींद नहिं आवै । पल पल युग सम मोहिं बिहावै॥मेरे गेह कृपा करि चलो।वाही विधि मोसों हिल मिलो॥कह्योनेहहमकामसोंआ- हि ।बिना काम हमरे नहिं चाहि ॥हमसों सहस बरस हित धरै।हमतिहिको छिनमेंपरिहरै॥बिन अपराध पुरुष हम मारे । माया मोह न मनमें धारे॥हमें कहौ केतो किन कोई । चाहैं करन करैं हम सोई ॥ नृप पुनि बिनती बहु विधि करी । तब उरवशी बात उच्चरी ॥वर्ष सातबीतेहौंऐहौं। एक रात्रि तोको सुख देहौं॥बर्ष सप्त बीते सो आई ।नरपतिसोंमिलिरैनबिताई॥प्रातहोतचलिबे- को चह्यो।तब राजातासों यों कह्यो॥तू मोको छांडि कित जात।मोको तुम बिनु छिन न विहात ॥ जब या भांति नृपति बहु कह्यो । तप उरवशी यह उत्तर दयो ॥यहतो होनहार है नाहीं।सुरपुर छांडि रहौं भुव माहीं ॥ जो तुम मेरी इच्छा धरौ ॥ गंधर्वनीके हित तप करौ॥तप कीनेसे देहैं आग ।ता सेती तुम कीजो जाग॥यज्ञ किये गंधर्वलोक सिधैहो। तहां आइ मोको तुम पैहो॥ नृप यज्ञ करि ता लोक सिधायो । मिलि उरबशी बहुत सुख पायो ॥ जब या बिधि बहु काल बितायो ।तब वैराग्य नृपति मन आयो ॥बहुते काल भोग मैं कीए। पै संतोष न आए हीए॥श्री नारायणको बिसरायो । विषय हेत सब जन्म गँवायो ॥ याविधि जब विरक्त नृप भयो ।छांडि उरबशी वनको गयो ॥ वनमें जाइ तपस्या करी । विषय वासना सब परिहरी॥ हरिपदसों नृप ध्यान लगायो । मिथ्या तनुको मोह भुलायो ॥ हरि व्यापक सब जगमें जान।हरिप्रसाद पायो निर्वान ॥ ताते बुधि त्रियसे गति तजै ।श्रीनरायणको नित भजै॥शुक जैसे नृपको समुझायो । सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १ ॥च्यवनऋषि कथा वर्णन ॥ राग बिलावल॥ शुकदेव कह्यो सुनो हो राव ।जैसो है हरिभक्त प्रभाव॥हरिको भजन करै जो कोई ।जग सुख पाइ मुक्ति फल सोई॥ च्यवन ऋषीश्वर बहु तप कियो ।तासम और जगत नहिं वियो ॥ बांमी ताको लियो छिपाई। तासों ऋषि नहिं दई दिखाई ॥ ता आश्रम सरजात नृप गये । तहांजाइके डेरा दये ॥ छांडि तहीं सब राज समाज । राजा गयो अखेटक काज ॥ नृपकन्या तहँ खेलन गई । ऋषि दृग चमकत देखत भई ॥ पै तिहि ऋषि दृग जाने नाहिं । खेलत शूल दये तेहि माहिं ॥ रुधिर धार ऋषि आँखिन ढरी । नृपकन्या सु देखि तब डरी ॥ शूल व्यथा सब लोगन भई । राजा कह्यो कहा भइ दई ॥तहँके बासी नृपति बुलाये ।बूझो तब तिन कह्यो

बुझाये॥च्यवन ऋषि आश्रम है इहां राई। करौ बीनती उनसों जाई॥ नृप खोजत ऋषिआश्रम आयो। ऋषि दृग देखत बहुत डरायो॥ कह्यो कियो किन ऐसो काज। कन्या कह्यो सुनौ महाराज॥ मोते बिन जाने यह भई। ऋषिके दृगनि शूल हौं दई॥नृप मनही मन बहु पछतायो। ऋसिसों पुनि यह बचन सुनायो॥ महाराज तुम तो हौ साध। मम कन्याते भयो अपराध॥ या कन्याको प्रभु तुम बरो। कष्ट शूल कृपा करि हरो॥ लोग सकल नीको जब भयो। नृप कन्या दै गृहको गयो॥ ऋषि समाधि हरि चरण लगाई। कन्या ऋषी चरण लव लाई॥ सुरपति ताके रूप लुभायो। बहुरि कुबेर तहां चलि आयो॥पै तिहिं दिशि तिन देख्यो नाहीं। गये खिस्याय दोऊ मन माहीं॥ चौदह बर्ष भये यह भाई। तब ऋषि देख्यो शीश उठाई॥हाडचाम तनु पर रहि गये। कृपावंत ऋषि तापर भये॥ असुनी सुत यहि अवसर आयो। करि प्रणाम यह बचन सुनायो॥ जोकछुआज्ञामोकोहोई।छांडि बिलंब करौं अब सोई॥कह्यो दृगनिकोकरो उपाय। तुरत नेत्र तिन दिये बनाय॥ कह्योमैंयज्ञभाग नहिंपावत। वैद्यजानिमोहिंसुरबहरावत॥ ऋषि कह्यो मैं करिहौं जहां जाग। देहौं तोहिं अवश करि भाग॥नृपकन्यासों ऋषि सो कह्यो॥ तुहि ऊपर प्रसन्न मैं भयो॥ यद्यपि कछु इच्छा नहिं मेरे। तदपि उपाय करौं हित तेरे॥ दोउ मिलि तीरथ माहिं अन्हाये। सुन्दर रूप दुहूँ जन पाये॥ दासी सहस प्रगट तहां भई।इन्द्रलोक रचना ऋपि ठई॥ तियको सुख ऋषि बहु बिधि दियो। तासु मनोरथ पूरणकियो॥तबसरजात रानीसों कही। जबते कन्या ऋषिको दई॥ तबते सुधि कछु नाहीं पाई। बिनु प्रसंग तहां गयो न जाई॥ यज्ञारंभ नृपति तहँ गयो। देखि ऋषाश्रम विस्मय भयो॥ कह्यो यह विभव कहांते आई। किन यह ऐसी बनत बनाई॥ इहि अंतर नृप कन्या आई। पिता देखि मिलिबे को धाई॥ नृप ताको आदर नहिं दियो। तैं यह कौन कर्म है कियो॥ वृद्ध ऋषीश्वरको कहा भयो। कुल कलंक तैं किहि मिलि लयो॥ कह्यो योगबल ऋषि सब कीनो। मुहिं सुख सकल भांति करि दीनो॥ नृप प्रसन्न हो ऋषिपै आए। यज्ञ प्रसंग कहिकै गृह लाए॥रानी सुता देखि सुख मन्यो। धन्य जन्म करि अपनो जान्यो॥च्यवननृपतिको यज्ञ करवायो। अश्विनीसुत हित भाग उठायो॥ इन्द्र कोप ह्वै ऋषिसों कह्यो। ताहि भाग तुम काहे दयो॥ पुनि मारनको वज्र उठायो। पै ऋषिको मारन नहिं पायो॥ इन्द्र हाथ ऊपर रहि-गयो। तिन कह्यो दई कहा यह भयो॥ कह्यो सुरन तुम ऋषिहिं सतायो। ताते कर रहिगयो उँचायो॥इन्द्र विनय ऋषिसों बहु करी। तब ऋषि कृपा ताहि पर धरी॥ सुरपति कर जब नीचे आयो। अश्विनीसुत बलि सुरमें पायो॥ऐसो हरिको भक्त प्रभाव।बरनि कह्यो मैं तुमसों राव॥हरि-की भक्ति करै जो कोई। दुहूं लोकको सुख तेहि होई॥ शुक ज्यों नृपसों कहि समुझायो। सूरदास त्योंही कहि गायो॥ २॥ हलधर विवाह कथा वर्णन। रागभैरों॥ द्वारावति पति रेवत राजा।तासम जग दुतिया न विराजा॥तागृह जन्मरेवती लयो।ताको लै सुब्रह्मपुर गयो॥विधि तिहि आदर दै बैठायो। तब नृप मनमें अति सुख पायो॥ इहां देखि अप्सरा अखारा। नृप कछु नहीं बचन उचारा॥जब अप्सरा नृत्य करि रही। तब राजा ब्रह्मासों कही॥मम पुत्री वर प्रापतिआहि। आज्ञा होइ देउँ तेहि ब्याहि॥ ब्रह्मा कह्यो सुनो नरनाह। ते नृप तो अब जगमें नांह। हल-धरको तुम देहु बिवाह। ब्याह योग अब सोई आह॥रेवत ब्याह कियो जग आइ।आप कियो तप बनमें जाइ॥ हलधर ब्याह भयो या भाइ। सूरदास जन दियो सुनाइ॥३॥राजा अंबरीषककिथ,।

ाग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि पद अंबरीष चित लायो । ऋषिशरापते ताहि बचायो ॥ ऋषिको तापै फेरि पठायो । शुक नृपको यों कहि समुझायो ॥ अंबरीष राजा हरिभक्त । रहै सदा हरिपद अनुरक्त॥ श्रवणकीरतन सुमिरनकरै।पद सेवन अचरन उर धरै॥ बंदनदासीपन सो करै। भक्तनशिष्यभाव अनुसरै ॥ कायनिवेदन सदा उचारै । प्रेम सहित नवधा विस्तारै ॥ नवमी नेम भली विधि करै । दशमीको संयम विस्तरै॥ एकादशी करै निरहार । द्वादशी पोषै लै आहार॥पतिव्रता वा नृपकी नारी । अहनिशि नृपकी आज्ञाकारी । इन्द्री सुखको दोऊ त्याग॥ धरैं सदा हरिपद अनुराग। ऐसीबिधि हरिपूजे सदा ॥ हरि हित लावै सब संपदा ॥ राजकाज कछु मन नहिं धरै । चक्र सुदर्शन रक्षा करै ॥ घटिका दोइ द्वादशी जान । ऋषि आयो नृप कियो सन्मान॥ कह्यो भोजनकीजै ऋषिराई । ऋषिकह्यो आवतहौं मैं न्हाई ॥ यह कहिकै ऋषि गये अन्हान । काल बितायो करत अस्नान॥ राजाकहै कहा अब कीजे । द्विजन कह्यो चरणोदक लीजै ॥ राजा तब करि देख्यो ज्ञान। याविधिहोइ न ऋषिअपमान ॥ लैचरणोदक निजव्रतसाध्यो । ऐसीविधि हरिको अवराध्यो॥इहिअंतरदुर्वासा आए । अंबरीषसों वचन सुनाये ॥ सुन राजा तेरो व्रत टरो । क्यों कर तेरे भोजन करों ॥ कह्यो नृपति सुनिये ऋषिराई । मैं व्रत हित यह कर्यो उपाई ॥ चरणोदक ले व्रत प्रतिपार्यो। अबलौं अन्न न मुखमें डार्यो ॥ऋषिकरि क्रोध इक जटाउपारी। सोकृत्याभइज्वाला भारी। जब नृप ओर दृष्टि उन करी । चक्र सुदर्शन सो संहरी ॥ पुनि ऋषिहूको जारनलाग्यो । तबऋषि आपन जिय लै भाग्यो ॥ ब्रह्मा रुद्र लोकहू गयो । उनहूं ताहि अभय नहिं दयो॥बहुरो ऋषि बैकुंठ सिधायो । करि प्रणामयह वचनसुनायो ॥ मैं अपराध भक्तकोकीनो । चक्र सुदर्शनअति दुख दीनो॥ औरकहूं मैं ठौर न पायो । अशरणशरण जानिकै आयो ॥ महाराज अबरक्षाकीजै। मोको जरत राखि प्रभु लीजै॥ हरि जू कह्यो सुनो ऋषिराई । मोपै तुहि राख्यो नहिं जाई ॥ तैं अपराध भक्तको कीन। मैं निज भक्तनके आधीन ॥ मम हित भक्त सकल सुख तजैं । और सकल तजि मोको भजैं ॥ बिन मम चरण न उनकेआशा । परमदयालु सदा मम आशा॥ उनके मन नाहीं शत्राई । ताते कहौ उन्हींपै जाई॥ तुमको लेहैं वेग बचाई । नाहीं या बिन और उपाई ॥ इहां राजा अतिही दुख लयो । ऋषि मम द्वारेते फिरि गयो ॥ ऋषिसंग जोवत वर्ष बितायो। पै भोजन तौहू न सिरायो ॥ अंबरीष पै तब ऋषि आयो । हाथ जोरि पुनि शीश नवायो ॥ ऋषिहि देखि नृप कह्यो या भाई । लेहु सुदर्शन याहि बचाई ॥ ब्राह्मण हरि हरि भक्त पियारो। ताते अब याको मति जारो ॥ चक्र सुदर्शन शीतल भयो । अभयदान दुर्वासा लह्यो ॥ पुनि नृप तिहिं भोजन करवायो । ऋषि नृपसों यह वचन सुनायो॥ मैंनहिं भक्तमहातम जान्यों । अबते भली भांति पहिचान्यों॥जोयह लीलासुनै सुनावै। सो हरिभक्ति पाइसुखपावै॥ शुक राजासों ज्यों समझायो । सूरदास त्योंही करि गायो॥४॥राग गूजरी॥फिरत फिरत बल हीन भयो । कहा करों यहि त्रास कृपानिधि जप तपको अभिमानगयो॥धायो धर आशैल विदिशि दिशि तहां चक्रहू चाहि लयो।जासेशिवविरंचि सुरपतिसब काहू नेकन शरनदयो॥भाज्यो फिर्यो लोक लोकनमें पत्र पुरातन पवन हयो । सूरदास मुनि दीन जानि प्रभुतब निजजनसन्मुखपठयो ॥५॥सौभरि ऋषि कथा वर्णन॥ रागबिलावल ॥शुकदेव कह्यो सुनोहो राव। जैसो है हरिभक्त प्रभाव ॥ हरिको भजन करै जो कोई ।जग सुख पाइ मुक्ति लहे सोई॥सौभरिऋषि यमुनातट गयो। तहां

मच्छ इक देखत भयो ॥ सहित कुटुँब सो क्रीडा करै। अति उत्साह हृदयमें धरै ॥ ताहि देखिकै ऋषिमन आई। गृहआश्रम है अति सुखदाई ॥ तप तजिके गृह आश्रम करौं। कन्या एक नृपतिकै बरौं ॥ कह्यो मान्धातासों जाइ। पुत्री एक देहु मोहिं राइ ॥ नृप कह्यो देखि वृद्ध ऋषि देह। हैं पचास पुत्री मम गेह ॥ अंतःपुर भीतर तुम जाउ। बरै तुम्हैं सो देहुँ विवाहु ॥ तब ऋषि मनमें करैं विचार। वृद्ध पुरुषको बरै न नार ॥ तप बल कियो रूप अति सुन्दर। गयो सु तहाँ जहाँ नृपमन्दिर ॥ सब कन्या सौभरिको बरचो। ऋषि विवाह सबहिनसों करचो ॥ ऋषि तिनके हित गेह बनाये ॥ तिनके भीतर बाग लगाये ॥ भोगसमग्री भरे भंडार। दासी दास गनत नहिं पार॥ ऋषि नारी मिलि बहु सुख पाये। सहस पचास पुत्र उपजाये॥ तिनके बहुत भये संतान। कहँलौं तिनको करौं बखान ॥ बहुतकाल या भांति बितायो। पै ऋषि मन संतोष न आयो ॥ कह्यो विषयते तृप्ति न होय।केतो भोग करौ किन कोय ॥ या विधि जब उपज्यो बैराग। तब तप करि कीन्यो तनु त्याग ॥ सब नारिन सहगामिनि कियो। हरिजू तिनको निजपद दियो॥ ताते बुध हरिसेवा करै। हरि चरणन नितही चित धरै ॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो॥ सूरदास त्योंही कहि गायो ॥६॥ श्रीगंगा भुवलोक आगमन कथा ॥ राग भैरों ॥ शुकदेव कह्यो सुनौ नरनाह। गंगा ज्यों आई जग मांह ॥कहौं सु कथा सुनौ चित लाई। सुने सु भवतरि सुरपुर जाई॥शतमों यज्ञ सगरजब ठयो। इन्द्र अश्वको हरि लै गयो॥कपिलाश्रम लै ताको राख्यो।सगरसुतन तब नृपको भाष्यो ॥ हम सब लोक माहिं फिरि आये।हयके खोज कहूं नाहिं पाये॥ आज्ञा होइ जाहिं पाताल। जाहु तिन्हैं भाष्यो भूपाल। तिनके खोदे सागर भये। कपिल आश्रम ते पुनि गये॥ अश्व देखि कह्यो धावहु धावहु। भागि जाहि मति बिलम लगावहु॥कपिल कुलाहल सुनि अकुलायो।कोपदृष्टि करि तिन्हैं जरायो ॥ सगर नृपति जब यह सुधि पाई। अंशुमानको दियो पठाई॥तिन कपिलस्तुति बहु विधि कीनी। कपिल ताहि यह आज्ञा दीनी ॥यज्ञ हेतु अश्व यह लेहु।भ्रात तुमारे भये जु खेहु ॥ सुरसरि जब भुव ऊपर आवै। उनको अपनो जल परसावै॥तबहीं उन सबकी गति होई। ता बिन और उपाय न कोई॥ अश्व लाइ यज्ञ पूरण कियो। अंशुमान राजा पुनि भयो॥ अंशुमान पुनि राज बिहाई। गंगाहेतु कियो तप जाई॥ याही विधिदिलीप तब कीनो। पैगंगाजू वरनहिं दीनो ॥ भागीरथ जब बहु तप कियो। तब गंगाजू दर्शन दियो ॥ कह्यो मनोरथ तेरो करौं। पै मैं जब अकाशते परौं॥मोको कौन धारना करै।नृप कह्यो शंकर तुमको धरै॥तब नृप शिवकी सेवा कीनी।शिव प्रसन्न ह्वै आज्ञा दीनी॥गंगासों नृप जाइ सुनाई।तब गंगाजू भुवमें आई॥ साठ सहस्र सगरके पुत्र। कीने सुरसरि तुरत पवित्र॥ गंग प्रवाह माहिं जु अन्हाई। सो पवित्र ह्वै हरिपुर जाई॥ गंगा इहिविधि भुवपर आई।नृप मैं तुमसों भाषि सुनाई॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो। सूरदास त्योंहीं कहि गायो॥७॥श्रीगंगा विष्णुपादोदककी स्तुति वर्णन ॥राग बिलावल ॥ हरिपद कमलको मकरंद।मलिन मति मन मधुप,परिहरि विषय नीरस फंद॥परम शीतल जानि शंकर शिर धरचो तजि चंद। नाक सरवसु लेन चाहो सुरसरीको बिंद ॥ अमृतहूते अमल अति गुण स्रवति निधिआनंद। सूर तीनों लोक परस्यो सुर असुर जस छंद॥८॥ राग भैरों ॥जय जय जय जय माधव बेनी। जगहित प्रगट करी करुणामय अगतिनको गति देनी॥ जानि कठिन कलि काल कुटिल नृप संग सजी अघ सेनी। जनु ता लगि तरवार त्रिविक्रम धरिकरि कोपेउ पैनी॥ मरु मूठि वर वारि पाल क्षिति बहुत वित्तकी लेनी। शोभित अंग तरंग त्रिसंगम धरी धारअति

पैनी ॥ दरशनहूं नाश यम सैनिकै जिमि नेह बालक सैनी।एकै नाम लेत सब भाजे पीर सुभूमि रसैनी ॥ जा जल युद्ध निरखि सन्मुख ह्वै सुन्दर सैना बैनी । सूर परस्पर करत कुलाहल गर सृगपहरावैनी ॥ ९ ॥ राग विलावल ॥ गंग तरंग बिलोकत नैन । अति पुनीत विष्णु पादोदक महिमा निगम पढ़त गुन चैन॥परम पवित्र मुक्तिकी दाता भागीरथी भई वर दैन।द्वादशवर्ष सेये निशि वासर तब शंकर भाषी है लैन॥ त्रिभुवन हार सिंगार भगवती सलिल चराचर जाके ऐन। सूरजदास विधाताके तप प्रगट भई संतन सुख दैन ॥ १०॥ परशुराम अवतार वर्णन । राग विलावल ॥ ज्यों भयो परशुराम अवतार । कहौं सु कथा सुनो चितधार ॥ सहसबाहु रविबंशी भयो ।सरिता तिर इक दिन सो गयो॥निज भुजबल तिन सरिता गही।बढिगयो जल तब रावणनृपकही। तुम हमसों करो लराई।कह्यो करौं मध्यान बिताई॥बहुरो क्रोधवंतयुधछयो।सहसबाहुतवताकोगह्यो ॥ बहुरौ नृप करिकै मध्यान।दीनो ताको छांडि निदान॥फिर नृप जमदग्न्याश्रम आयो।कामधेनुबल करि लै धायो॥परशुराम जब यह सुधि पाई । मारयो ताहि तुरंतहि धाई॥तासुसुतनिजमदग्निहि मारयो । परशुराम रेणुका हँकारयो ॥ मारयो क्षत्री इकइसबार।यों भयो परशुरामअवतार॥शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो।सूरदास त्योंहीं कहि गायो॥११॥ राग धनाश्री ॥परशुराम जमदग्नि-गृह लीनो अवतार । माता ताकी यमुन जल लेन गई इक वार॥ लागी तहां अवार तिहि ऋषि करि क्रोध अपार। परसुरामसों यों कही माको वेगि संहार ॥ और सुतन तब कही पिता नहिं कीजै ऐसी । क्रोधवंत ऋषि कह्यो करौ इनसों हूं वैसी ॥परशुराम तिन सबनको मारयो खड्ग प्रहार। ऋषि कह्यो होइ प्रसन्न वर मांगो देउँ कुमार॥परशुराम तब कह्यो यहै वर देहु तात अब। जाने नाहिन मुए फेरिकै जीवैं ये सब॥ऋषि कह्यो यह वर दियो मैं इनको देहु उठाइ।परशुराम उनको दियो सोवत मनो जगाइ ॥ परशुराम बन गए तहां दिन बहुत लगाये । सहसबाहु तिहि समय जमदगिन आश्रम आए ॥ कामधेनु जमदग्निकी लैगयो नृपति छिनाय । परशुरामसों बोलि ऋषि दियो वृत्तान्त सुनाय ॥ परशुराम सुनि पिता वचन ताको संहारयो । कामधेनु दई आनि वचन ऋषिको प्रतिपारयो ॥सहसबाहुके सुतन पुनि राखी घात लगाइ । परशुराम जब वन गयो मारयो ऋषिको धाइ ॥ ऋषिकी यह गति देखि रेणुका रोइ पुकारी ॥ परशुराम तुम आइ लगत क्यों नहीं गोहारी॥ यह सुनिकै आयो तुरत मारयो तिन्हैं प्रचार । बहुरो जिय धरि क्रोध हति क्षत्री बीसिकबार ॥ जग अराज ह्वै गयो ऋषिन तब अति दुख पायो । लै पृथ्वीको दान ताहि फिर बनहिं पठायो ॥बहुरि राज्य दियोक्षत्रियनि भयो ऋषिन आनंद । सूरदासपावत हरष गावत गुण गोविंद ॥ १२ ॥ रामअवतार कारण।राग बिलावल ॥हरिहरिहरि हरि सुमिरन करो। हरि चणारविंद उर धरो ॥ जय अरु विजय पार्षद दोइ । विप्र शराप असुर भये सोइ ॥ एक बराह रूप धरि मारयो । एक नृसिंह रूप संहारयो ॥ रावण कुंभकर्ण सोइ भये । राम जन्म तिनके हित लए ॥ दशरथ नृपति अयोध्या राव ।ताके गृह कियो आविर्भाव ॥ नृपसों ज्यों शुकदेव सुनायो । सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १३ ॥ बालकांड श्रीरामजन्म वर्णन॥ राग कान्हरा ॥ आजु दशरथके आँगन भीर । आए भुव भार उतारन कारन प्रगटे श्याम शरीर ॥ फूले फिरत अयोध्या वासी गनत न त्यागत चीर। परिरम्भण हँसि देत परस्पर आनँद नैननि नीर॥ त्रिदश नृपति ऋषि व्योमविमाननि देखत रहे न धीर ॥ त्रिभुवननाथ दयालु दरश दै हरी सबनकी पीर ॥ देत दान राख्यो न भूप कछु महा बडे नग हीर । भये निहाल सूर सब याचक जे याचे

रघुबीर ॥ १४ ॥ अयोध्या बाजत आज बधाई । गर्भ मुच्यो कौशल्या माता रामचन्द्र निधि आई ॥ गावैं सखी परस्पर मंगल ऋषि अभिषेक कराई । भीरभई दशरथके आँगन साम वेद ध्वनि गाई ॥ पूछत ऋषिहि अयोध्याको पति कहि हो जन्म गुसांई । बुद्धवार नौमीतिथि नीकी चौदह भुवन बड़ाई ॥ चारि पुत्र दशरथ के उपजे तिहूं लोक ठकुराई । सदा सर्वदा राज रामको सूर दादि तहँ पाई ॥ १५ ॥ रघुकुल प्रगटे हैं रघुबीर । देश देशते टीका आयो रतन कनक मनि हीर ॥ घर घर मंगल होत बधाई अति पुरबासिन भीर । आनँद मगन भये सब डोलत कछू न शोध शरीर ॥ मागध बंदी सूत लुटाए गउ गयंद हय चीर । देत अशीश सूर चिरजीयो रामचन्द्र रणधीर ॥ १६ ॥ शरक्रीडा वर्णन ।राग विलावल ॥ करतल शोभित बान धनुहियां । खेलत फिरत कनकमय आँगन पहिरे लाल पनहियां ॥ दशरथ कौशल्याके आगे लसत सुमनकी छहियां । मानो चारि हंस सरवर ते बैठ आइ सदहियां ॥ रघुकुल कुमुद चंद चिंतामणि प्रगटे भूतल महियां । यहै देन आए रघुकुलको आनँद निधि सब गहियां ॥ य सुख तीन लोकमें नाहीं जो पाए प्रभु पहियां। सूरदास हरि बोलि भगतको निरबाहत गहि बहियां ॥ ॥१७॥राग विलावल॥धनुही बान लये कर डोलत। चारों बीर संग इक सोहत बचन मनोहर बोलत लछिमन भरत शत्रुघन सुंदर राजिवलोचन राम । अति सुकुमार परम पुरुषारथ मुक्ति धर्म धन काम ॥ कटि पट पीत पिछौरी बांधे काग पच्छ धरि शीश। शर क्रीड़ा दिन देखत आवत नारद सुर तैंतीस ॥ शिवमन शोच इन्द्रमन आनँद सुख दुख ब्रह्म समान ॥ दिति दुर्बल अति अदिति हृष्ट चित देखि सूर संधान ॥ १८ ॥ विश्वामित्र यज्ञ रक्षा ताडका वध सीतास्वयंबर । वन । ॥राग सारंग॥ दशरथसों ऋषि आनि कह्यो । असुरनसों यज्ञ होन न पावत राम लछन तब संग दयो ॥ मारि ताड़का यज्ञ करायो विश्वामित्र आनंद भयो । सीय स्वयंबर जानि सूर प्रभुको ऋषि लै ता ठौर गयो ॥ १९ ॥ सीता पतिदर्शन ॥ राग विलावल ॥देखनको मंदिरआनिचढी।रघुपति पूरनचंद विलोकत मानो उदधि तरंग बढी॥ पिय दरशन प्यासी अतिआतुर निशि बासर गुन आन रढ़ी । तजि कुलकानि पीय मुख निरखत शीश नाइ आशीशपढी ॥ भई देहजोंखेहकरम- बश ज्यों तट गंगा अनल दढी । सूरदास प्रभु दृष्टि सुधानिधि मानो फेरि बनाइ गढी ॥ २० ॥ सीता मनोरथ पूरण ॥ राग सारंग ॥ चितै रघुनाथ बदनकीओर ।रघुपतिसों अब नेमहमारोबिधिसों करति निहोर।।यह अति दुसह पिनाक पिताप्रण राघव वयस किशोर। इनते परिघ धनुष चढिहै क्यों यह सखि संशय मोर ॥ सिय अंदेश जानि सूरज प्रभु लियो करजकी कोर। टूटत धनु नृप लुके जहां तहँ ज्यों तारागण भोर ॥ २१ ॥दशरथको जनकपुर आगमन रामजूके विवाहहेतु॥ महाराज दशरथ तहँ आये । ठाढे जाय जनक मंदिरमें मोतिन चौक पुराये ॥ विप्र लगे ध्वनि वेद उचारन युवतिन मंगल गाये। सुर गंधर्बगन कोटिक आए गगन विमानन छाये ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन व्याह निरखि सुख पाये । सूर भयो आनंद नृपतिमन दिवि दुंदुभीबजाए॥ ॥ २२ ॥ कंगना खोलन ॥राग आसावरी॥ कर कंपे कंगन नहिं छूटै । राम सुपरस मगन मय कौतुक निरखि सखी सुख लूटै ॥ गावत नारि गारि सब देदै तात भ्रातकी कौन चलावै । तब कर डोर छूटै रघुपति जू जो कौशल्या माइ बुलावै ॥ पूगीफल युत जल निर्मल धरि आनी भरि कुंडीजु कनककी । खेलत नृप युवन युवतिनमें हारे रघुपति जीति जनककी ॥ घेरे निशान अजिर गृह मंगल विप्र वेद अभिषेक करायो। सूरअमितआनंदकुशलपुर सोइशुकदेव पुराणनिगायो ॥ २३ ॥

धनुर्भंग पाणिग्रहणलीला ॥ राग नट ॥ ललितगति राजत अति रघुबीर। नरपति सभा मध्य भये ठाढ़े युगल हँसत मतिधीर॥ अलख अनंत अमित महिमाबल कटि कसि रख्यो तुनीर । लघु धनु काकपक्ष शिर शोभित इक इक द्वै द्वै तीर ॥ भूषण विविध विशद अंबर युत सुन्दर श्याम शरीर। देखत मुदित चरण परसे सुर व्योम बिमानन भीर ॥ प्रमुदित जनक निरखि अंबुज मुख बिगत नयन मन पीर । तात कठिन प्रण मानि जानि जिय जनकसुता आधीर ॥ करुणामय जब चाप लियो कर बाँधि सुदृढ कटि चीर । भुवभृत शीश नमित जु गर्वगत पावक सच्यो नीर ॥ डुलत महीधर भौ फनपति चल कूरम अति अकुलान। दिग्गज चलित खलित मुनि आसन इन्द्रादिक भयमान ॥ रवि मग तज्यो तरफि ताके इत उत पथ गएकीआन॥ शिव बिरंचि व्याकुल भये ध्वनि सुनि जब तोरयो भगवान॥ भनन शब्द प्रगटित अति अद्भुत अष्टदिशा नभ पूर । श्रवन हीन सुनि भये अष्टकुल नाग बगरि भय चूर ॥ अष्ट श्रवण पूरित ब्रह्मा सुनि सदा सुभट बड भूर । मोहित सकल सयान जानि जिय महाप्रलयको पूर ॥ पाणिग्रहण रघुवर वर कीनो जनकसुता सुख दीन। जय जय धुनि सुनि करत अमरगन नरनारी लवलीन ॥ दुष्टन दुष्ट संत संतनको नृप व्रत पूरण कीन॥ रामचंद्र दशरथहिं बिदा करि सूरदास आधीन ॥२४॥ जनक दशरथ रामजी सीता समेत विदा करन ।राग सारंग॥ दशरथ चले अवध आनन्दत। जनकराइ बहु दाइज दैकरि बार बार पद बंदत ॥ तनया जामातनिको समुदत नैन नीर भरि आए।सूरदास दशरथ आनन्दित चले निशान बजाए ॥ २५ ॥ मार्गविषे परशुरामको रामजीसों मिलाप परस्पर विवाद ॥ परशुराम तेहि अवसर आयो । कठिन पिनाक कह्यो किन तोरयो क्रोधवंत यह बचन सुनायो ॥ विप्र जानि रघुवीर धीर दोउ हाथ जोरि शिर नायो। बहुत दिननको हुतो पुरातन हाथ छुअत उठि आयो ॥ तुम तौ द्विज कुलपूज्य हमारे हम तुम कौन लराई । क्रोधवंत कछु सुन्यो नहीं लयो सायक धनुष चढाई ॥ तबहूं रघुपति क्रोध न कीनो धनुष बान संभारयो । सूरदास प्रभु रूप समुझि पुनि परशुराम पगधारयो॥ २६॥ अवधपुरी प्रवेश । राग सारंग॥ अवधपुर आए दशरथ राइ ।राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन शोभित चारों भाइ॥ घुरत निसान मृदंग शंख ध्वनि भरे झांझ सहनाई।उमँगे लोग नगरके निरखत अतिसुख सबहिन पाइ॥ कौशल्या आदिक महतारी आरति करति बनाइ यह सुख निरखि मुदित सुर नर मुनि सूरदास बलि जाइ ॥ २७ ॥ दशरथ विचार रामजीको राज्य दे आप बन गमन, कैकेयी बिनती, भरत राज ॥ महाराज दशरथ मन धारी। अवधपुरीको राज राम दै लीजे व्रत बनचारी ॥ यह सुनि बोली नारि कैकई अपनो बचन सँभारो । चौदह वर्ष रहैं बन राघव छत्र भरत शिर धारो ॥ यह सुनि नृपति भयो अतिव्याकुल कहत कछू नहिं आई।सूर रहे समुझाइ बहुत पै कैकयि हठ नहिं जाई ॥ २८ ॥ दशरथ कौशल्याविनय ।राग कन्हरा ॥महाराज दशरथ पुनि सोचत । हा रघुपति लछिमन वैदेही सुमिरि सुमिरि गुण रोवत॥ त्रियचरित्र मय मत्त न समुझत उठि पग्वाल मुख धोवत । महा विपरीत रीति कछु औरै बार बार मुख जोवत ॥ परम कुबुद्धि कह्यो नहिं समुझत राम लषन हँकराये । कौशल्या अति परम दीन ह्वै नैन नीर भरि आये॥ विह्वल तन मन चकित भई सुनि सो प्रतच्छ सुपनाये। गदगद कंठ सूर कोसलपुर शोर सुनत दुख पाये ॥ २९ ॥ दशरथ पश्चात्ताप कैकेयी प्रति वचन ॥ फिरि फिरि नृपति चलावत बात । कहो सुमति कहा तोहिं पलटी प्राण जीवन कैसे बन जात॥ हाहा राम लक्ष्मण अरु सीता फल भोजन जु डसावें पात।ह्वै वियोग

शिर जटा धरैं द्रुम चर्म भस्म सब गात॥ बिन रथ रूढ दुसह दुख मारग बिन पदत्रान चलैं दोउ भ्रात।एहिबिधि सोच करत अतिही नृप जानकि ओर निरखि बिलखात॥ इतनीसुनत सिमिटि सब आये प्रेम सहित धारे अश्रुपात। तादिन सूर शहर सब चकृत सब रस नेह तज्यो पितु मात॥ ३०॥ कैकेयी वचन राम प्रति। राग सारंग॥ सकुचनि कहत नहीं महाराज। चौदह वर्ष तुम्हें बन दीनो मम सुतको निज राज॥ तब आयसु शिर धरि रघुनायक कौशल्या ढिग आए। शीश नाइ बन आज्ञा माँग्यो सूर सुनत दुख पाये॥ ३१॥ राम जू प्रति दशरथ विलाप॥ रघुनाथ पियारे आजु रहो हो। चारि याम विश्राम हमारे छिन छिन मीठे बचन कहो हो॥वृथा होइ बर वचन हमारो री कैकयी जीव कलेश सहो हो। आतुरह्वैअबछांडिकुशलपुरप्राणजिवन कित चलन कहो हो॥ बिछुरत प्राण पयान करैंगे रहो आजु पुनि पंथ गहो हो। अब सूरज दिन दर्शन दुर्लभ कलपि कमल कर कंठ गहो हो॥३२॥ राग गूजरी।श्रीराम जू वचन जानकी प्रति॥ तुम जानकी जनकपुर जाहु। कहां आनि हम संग भरमिहो बन दुख सिंधु अथाह॥ तजि वह जनकराज भूषण सुख कत तृण तलप बिपिन फल खेहो। ग्रीषम कमलबदन कुम्हिलैहैं तजि सर निकट दूर कित न्हैहो॥ जिन कछु वृथा सोच मन करिहौ मातु पिता सुख देहो। तुम फिरि रहौ संग मैं तेरे जो बन बसि पछितैहौ॥होनी होइ कर्मकृत रेखा करिहौं तासु वचन निरवाहु।सूर सत्य जो पतिव्रत राखो तौ उठि संग चलौ जिन जाहु॥ ३३॥ जानकी वचन श्रीराम जू प्रति राग केदारा॥ ऐसी जिय जिनि धरो रघुराई। तुमसों तजि प्रभु मोसी दासी अनत न कहूं समाई॥ तुमरो रूप अनूप भानु ज्यों जब नैननि भरि देखौं।ता छिन हृदय कमल परफुल्लित जन्म सफल करि लखौं॥ तुमरे चरनकमल सुखसागर यह व्रत हौं प्रतिपलिहौं। सूर सकल सुख छांडि आपनो बन बिपदा सँग चलिहौं॥ ३४॥ श्रीराम वचन लक्ष्मण प्रति बिदा करन हेतु। राग गूजरी॥ तुम लछमन निज पुरहि सिधारो। बिछुरन भेंट देहु लघु बंधू जियत न जैहे शूल तुम्हारो॥यह भावी कछु और काज है सो को जो याको मेटनहारो॥तुम मति करो अवज्ञा नृपकी यह दूषण तो आगे भारो॥याको कहा परेखो हरषो मधु छीलर सरितापति खारो। सूर सुमित्रा अंक दीजियो कौशल्या परणाम हमारो॥ ३५॥लक्ष्मण संग ले॥ राग सारंग, लछमन नैन नीर भरि आयो। उत्तर कहत कछू नहिं आयो रह्यो चरण लपटायो॥ अंतर्यामी प्रीति जानिकै लक्ष्मण लीनो साथ। सूरदास रघुनाथ चले बन पिताबचन धरि माथ॥ ३६॥ अहल्या तरन। राग सारंग॥ गंगातट आए श्रीराम। तहँ पाषाण रूप पग परसे गौतम ऋषिकी वाम॥ गई अकास देव तनु धरिकै अतिसुन्दर अभिराम। सूरदास प्रभु पतित उधारन बिरद कितक यह काम ३७॥ लक्ष्मण केवट संवाद॥ राग मारू॥ रे भैया केवट ले उतराई। रघुपति महाराज इत ठाढे तें कित नाव दुराई॥अबहिं शिलाते भई देव गति जब पगुरेणु छुआई। हौं कुटुंब काहे प्रतिपारौं वैसी यह ह्वै जाई॥जाके चरन रेणुकी महिमा सुनियतु अधिक बडाई। सूरदास प्रभु अगनित महिमा वेद पुराननि गाई॥ ३८॥ केवट विनय॥ राग कान्हरा॥नवका नाहीं हौं ले आऊं। प्रगट प्रताप चरणको देखों ताहि कहां लौं गाऊं॥ कृपासिंधुपै केवट आयो कंपत करत जु बात। चरण परसि पाषान उडनहै मति मेरी उडिजात॥ जो यह बधू होय काहू की दार स्वरूप धरै। छूटे देह जाइ सरिता तजि पगसों परस करै॥ मेरी सकल जीविका यामें रघुपति मुक्ति न कीजे। सूरजदास चढो प्रभु पाछे रेणु पखारन दीजे॥ ३९॥ केवट बचन राम-

प्रति । राग रामकली ॥ मेरी नवका जिन चढौ त्रिभुवनपति राई । मो देखत पाहन उडे मेरी काठ कि नाई ॥ मैं खेवीही पारको तुम उलटि मँगाई।मेरो जिय योंहीं डरै मति होहि शिल्हाई ॥ मैं निर्बल मेरे बलनहीं जो और गढ़ाऊँ। मेरो कुटुँब माहीं लग्यो ऐसी कहां पाऊँ॥ मैं निर्धन मेरे धन नहीं परिवार घनेरो । सेमर ढाक पलास काटि बांधो तुम बेरो ॥ बार बार श्रीपति कहै केवट नहिं मानै । मन परतीति न आवै उडतीही जानै ॥ नियरे हीं जल थाह है चलो तुमैं बताऊँ । सूरदासकी बीनती नीके पहुँचाऊँ ॥ ४० ॥ पुरवासी वचन जानकी प्रति ॥ सखीरी कौन तिहारी जात । राजिव नैन धनुष कर लीने वदन मनोहर गात॥लज्जित रही परबधू पूँछें अंग अंग मुसक्यात । अति मृदु वचन पंथ बन बिहरत सुनियतअद्भुतबात ॥ सुन्दर नैन कुँवर सुन्दर दोउ सूर किरन कुम्हिलात।देखिमनोहर तीनों मूरति त्रिबिधि ताप तनुजात॥ ॥४१ ॥ सीता सैन,पति जतावन । राग धनाश्री ॥ कहि धौं सखी बटोही को हैं । अद्भुत बधू लिये संग डोलत देखत त्रिभुवन मोहैं॥ परम सुशील सुलक्षण जोरी विधिकी रची न होई । काकी अब उपमा यह दीजै देह धरे धौं कोई ॥ यहिमें को पति त्रिया तुम्हारो पुरजन पूछें धाई। राजिवनैन मैनकी मूरति सैनन माहिं बताई ॥ गए सकल मिलि संग दूरि लों मन न फिरत पुरवास। सूरदास स्वामीके बिछुरत भरि भरि लेत उसाँस ॥ ४२ ॥ दशरथ प्राणतजनं श्रीरामहेतु ॥ तात वचन रघुनाथ जबै बन गौन कियो। मंत्री गयो फिरावन रथ लै रघुवर फेरि दियो॥ भुजाछुडाई तोरि तृण ज्यों हित करि प्रभु निठुर हियो। सुरत साल ज्वाला उर अंतर ज्यों पावकहिं पियो ॥ यह सुनि तात तुरत तनु त्यागो बिछुरत तात वियो। इहि विधि बिकल सकल पुरवासी नाहीं चाहत जियो ॥ पशु पंछी तृण कण त्याग्यो अरु बालक पय न पियो । सूरदास सियनाथ बोल हित पतिव्रत सुख जु कियो ॥ ४३ ॥ राजाको तेल घट स्थापन, मन्त्रीगमन॥ भरत निकट ॥ राग सारंग ॥ राजा तेल द्रोनि में डारे।सात दिवस मारगमें बीते देखे भरत पियारे ॥ जाइ निकट हिय लाइ दोउ शिशु नैन उमँग जलधारे । कुशल क्षेम पूँछत कौशल्या राजा कुशल तिहारे ॥ कुशल राम लछमन बैदेही ते हैं प्राण हमारे । कुशल क्षेम अवधके पुरजन दासि दास प्रतिहारे ॥ कुशल राम लछमन बैदेही तुम हित काज हँकारे । सूर सुमंत ज्ञानि ज्ञानाद्भुत महिमा समय बिचारे॥ ४४ ॥ कौशल्या विलाप, भरत अवन, मातापर अतिक्रोध ॥ राग गूजरी॥रामहिं राखौ कोऊ जाई।जबलौं भरत अयोध्या आवें कहत कौशल्या भाई ॥ पठवो दूत भरतको ल्यावन वचन कह्यो शिरनाई। दशरथ वचन राम वन गवने यह कहियो अरथाई ॥ आए भरत दीनह्वै बोले कहा कियो कैकयि माई । हम सेवक वा त्रिभुवनपतिके सिंहहि बलि कौवा क्यों खाई ॥ आजु अयोध्या जल नहिं अचवों ना मुख देखौं माई । सूरदास राघवके बिछुरे मरों भवन दोलाई ॥ ॥ ४५ ॥ भरत शत्रुघ्न वचन माता प्रति। राग केदारा॥ तैं कैकई कुमंत्र कियो । अपने मुख करि काल हँकारयो हठ करि नृप अपराध लियो ॥ श्रीपति चलत रह्यो कहि कैसे तेरो पाहन कठिन हियो हम अपराधिनके हित कारन तैं रामहिं वनवास दियो ॥ कौन काज यह राज हमारे इहि पावक परि कौन जियो । लोटत सूर धरणि दोउ बंधु मनो तपत विष विषय पियो ॥४६ ॥राग सोरठ॥ राम कहां गए री माता ।सूनो भवन सिंहासन सूनो नाहीं दशरथ ताता॥ धिग तेरो जन्म जिवन धृग तेरो कही कपट मुखबाता। सेवक राज माहिब वन पठये यह कब लिखी विधाता॥मुखारविंद हम देखि जीवते ज्यों चकोर शशिराता।सूरदास कौशल्यानंद वन कहा अयोध्या नेरो नाता॥४७॥

॥रागकान्हरा॥गुरू वशिष्ठ भरत समुझायो ॥राजाकोपरलोक सँवारो युग युग यह चलि आयो॥चंदन अगर सुगंध और सब विधि करि चिता बनायो।चले बिमान संग गुरु पुरजन तापर राज पुढायो॥ दिन दश लौं जल कुंभ साजि शुचि दीपदान करवायो। भस्म अंत तिलअंजलि दीनों देव बिमान चढ़ायो॥ जानि एकादश बिप्र बुलायो भोजन बहुत करायो। दीनो दान बहुत नाना विधि इहि बिधि कर्म पुजायो॥ सब करतूति केकयीके शिर जिन अभिलाष उपायो। इहि विधि सूर अयोध्यावासी दिन दिन काल गँवायो॥४८॥ भरत गमन रामजी निकट बन विषे परस्पर संवाद॥ राग सारंग॥ राम पै भरत चले अकुलाई। मनही मन सोचत मारगमें दई फिरैं क्यों राघवराई॥ देखि दरश चरणन लपटानो गदगद कंठ न कछु कहि आई। लीनो हृदय लगाइ सूर प्रभु पूंछत भद्र भए क्यों भाई॥ ४९॥ रामसीतामिलाप दशरथपरलोकश्रवण राग केदरा॥ भरत मुख निरखि राम बिलखाने। मुंडित केश शीश बिहबल दोउ उमँगि कंठ लपटाने॥ तात मरनसुनिश्रवणकृपानिधि धरणि परे मुरझाई। मोह मगन लोचन जलधारा बिपति हृदय न समाई॥ लोटति धरणि परी सुनि सीता समुझति नहिंसमुझाई। दारुण दुःख दया ज्यों तृणवन नाहीं बुझति बुझाई॥दुर्लभ भयो दरश दशरथको भयो अपराध हमारो। सूरदास स्वामी करुणामय नैन जात उघारे॥५०॥ श्रीरामभरतसम्वादरागेकदारा॥सुतुमविख रघुनाथ कौन विधिजीवन कहा बनै॥चरण सरोज बिना अवलोके को सुख धरणि गनै॥ हठ करि रह्यो चरण नहिं छांडे नाथ तजौ निठुराई। परमदुखी कौशल्या जननी चलो सदन रघुराई॥ चौदह वर्ष तातकी आज्ञा मोपै मेटि न जाई। सूरस्वामि पाँवरी शीश धरि भरत चले बिलखाई॥ ५१॥ रामउदेश भरत प्रति। राग मारू॥बंधू कारियो राज सँभारे। राजनीति अरु गुरुकी सेवा गाइ विप्र प्रतिपारे॥कौशल्या कैकयी सुमित्रा दरशन सांझ सवारे। गुरु वशिष्ठ अरु मिलि सुमंतसों परजा हेतु बिचारे॥भरत गात शीतल ह्वै आयो नैन उमँगि जलधारे॥सूरदास प्रभु दई पाँवरी अवध पुरी पग धारे॥५२॥भरत विदाकरण।राग सारंग॥ राम यों भरत बहुत समुझायो। कौशल्या कैकई सुमित्राको पुनि पुनि शिरनायो॥गुरु वशिष्ठ अरु मिलि सुमंतसों अतिही प्रेम बढ़ायो। बालक प्रतिपालक तुम दोऊ दशरथ लाड लडायो॥ भरत शत्रुघन करि प्रणाम रघुवर हित कंठ लगायो॥ गद्गद गिरा सजल अति लोचन हिय सनेह जस छायो॥ कीजै यहै विचार परस्पर राजनीति समुझायो। सेवा मात प्रजा प्रतिपालन यह युग युग चलिआयो॥चित्रकूटते चले तिही वन मन बिश्राम न पायो।सूरदास बलि गयो रामके निगम नेति जेहि गायो॥ ५३॥ दंडकवनमेंशूर्पणखाकी नाकछेदन राग मारू॥दंडकवन आए रघुराई। काम विवश व्याकुल उर अंतर राक्षसि इक तहां आई॥ हँसिकरि राम कह्यो सीतासो इहि लक्ष्मणके निकट पठाई॥भृकुटी कुटिल अरुण अति लोचनअग्निशिखा मुख कह्योफिराई॥ए बौरी भई मदन विवश मेरे ध्यान चरण रघुराई।विरह व्यथा तनु गई लाज छुटि बार बार अकुलाई॥ रघुपति कह्यो निलज्ज निपट तू नारि राक्षसी ह्वांतेजाई।सूरज प्रभु पत्नीव्रत एकै काट्यो नाक गई खिसिआई॥५४॥ खर दूषण वध मारीच रावणको वनमें आवन। राग सारंग॥ खर दूषण यह सुनि उठि धाए। तिनके संग अनेक निशाचर रघुपति आश्रम आये॥ श्रीरघुनाथ लछनते मारेकोउ एक गए पराए। शूर्पणखा ये समाचार सब लंका जाय सुनाये॥ दशकंधर मारीच निशाचर यह सुनिकै अकुलाये। दंडकवन आये छलके हित सूर ठग्यो रघुराये॥ ५५॥ मारीचवध सीताहरण मार्गमेंगृध्रसों युद्ध॥राग केदारा॥ सीता पुहुप वाटिका लाई। नानाविधि

पांति पांति सुन्दर मनु कंचनकीहैलताबनाई॥बार बार शोकादिकके तरु प्रेम प्रीति सींचे रघुराई अंकुर मूल भए सो पोषेकर्मभोगफल लागेआई॥मृगस्वरूपमारीच धरयो तब फेरि चल्यो मारग जु दिखाई। श्रीरघुनाथ धनुष कर लीनो लागत बाणदेवगतिपाई॥टेर लषण सुनिबिकलजानकी अति आतुर उठि धाई। रेखा खैंची बार बधनकी हा रघुबीर कहांहो भाई॥रावण तुरत विभूति लगाए कहत हस्त भिक्षा दै माई। दीन जानि सुधि आनि भजनकी प्रेम प्रीति भिक्षा लै जाई। हरि सीता लै चल्यो डरत जिय मानो रंक महानिधि पाई॥ सूरसंग पछतात यहै कहिकर्मदशा मेटी नहिं जाई॥५६॥ राम स्वरूप वर्णन ॥ मृग पाछे धावन समय ॥राग सारंग॥रामधनुष अरु सायक साधे।सियहित मृग पाछे उठि धाए वसन बहुत ढिग बांधे॥नवघननील सरोज वरण वपु बिपुल बाहु क्षत्रीगुन कांधे॥इन्दु बदन राजीव नैन वर शीश जटा शिवसम शिर बांधे॥ पालत सृजत संहारत संतत अंड अनेक अबधि पल आधे॥ सूरभजन महिमा दिखरावत इमि अति सुगम चरण अवराधे॥५७॥ सीता छाया हरन रावण गिद्धसे युद्ध ॥ राग मारू॥ इहिबिधि बन बसे रघुराई। डासिकै तृण भूमि सोवत द्रुमनिकै फल खाई।जगत जननी करीबारी मृगाचरिचरि जाइ।कोपिकै प्रभु बान लीनो तबहिं धनुप चढाइ ॥ जनक तनया धरि अगिनिमें छायारूप बनाइ॥इह कोऊ नहिं भेद जानैं बिना श्रीरघुराइ।कह्यो अनुजसों रहौ यहांतुम छांडि जिनि कहुँ जाइ।कनक मृग मारीचमारयो गिरयो लक्षण सुनाय॥खोदि दईसुरेख सीता कह्यो सुकह्योनजाइ॥तबहिंनिशिचर कियोयह छललियो सीय चुराइ॥गिद्धताकोदेखि धायोलख्यो सूरबनाइ।कटे पंख गिरयो असुर तबगयोलंकाधाइ॥५८॥अशोकवन में सीता को स्थापना राग सारंग।वनअशोकमेंजनकसुताकोरावणरख्यो जाइ।भूख रु प्यास नींद नहिं आवैगई बहुत मुरझाइ।रखवारीकोबहुत निशिचरीदीन्ही तुरतपठाइ सूरदास सीता तेहि निरखत मनही मन सकुचाइ॥ ५९ ॥ राम विलाप सीता वियोग ॥ रागकेदारा ॥ रघुपति कहि प्रियनाम पुकारत।हाथ धनुप लै मुक्त मृगहिंकियेचकृतभये दिशि विदिश निहारत निरखत सून भवन जड ह्वै रहे खन लोटत धर बपु न सँभारत।हा सीता सीताकहिश्रीपतिउमगि नयनजल भरि भरि ढारत ॥ लागि शेष उर विलखि जगत गुरु अद्भुतगति नहिं परत बिचारत॥ चेतत चेतत सूर सीता हित मोह मेरु दुख टरतनटारत॥ ६० ॥सुनोअनुजइहिबनइतननि मिलि जानकी प्रिया हारी कछु इक अंगनिकी सहिदानी मेरी दृष्टि परी कटिकेहरि कोकिल वाणी अरु शशि मुख प्रभा धरी।मृगमूसी नैननिकी शोभा जाति न गुप्तकरी॥ चंपक वरनचरन करि कमलनि दाडिम दशन लरी। गति मराल अरु विंब अधर छबि अहि अनूप कवरी ॥ अति करुणा रघुनाथ गुसाईं युगभर जात घरी॥ सूरदास प्रभु प्रिया प्रेम वश निज महिमा विसरी॥ ६१ फिरत प्रभु पूछत बन तुम बेली। अहो बंधु काहू अवलोकी इहि मग बधू अकेली॥ अहो विहंग अहो पन्नग नृप या कंदर राई।अबकी बार मम विपतिमिटाओ जानकी देहु बताई॥ चंपक पुहुप बरन तनु सुन्दर मनो चित्र अवरेखी । हो रघुनाथनिशाचर के संग चलीजाति हौं देखी॥यह सुनि धावत धरनि चरनकी प्रतिमा खगी पंथ मेंपाई।नैन नीर रघुनाथ सानिकै शिव ज्यों गात चढाई॥कहुँ हियहार कहूँ कर कंकन कहुँ अंचर कहुँ चीरा। सूरदास वन बन अवलोकत विलखि बदन रघुवीरा ॥ ६२ ॥ रामजीको गृधसों मिलाप सीता समाचार श्रवण ॥राग केदारा॥ तुम लक्ष्मण या कुंज कुटीमें देखो नैन निहारि। कोउ एक जीव नाम मम लैलैं उठत पुकारि पुकारि ॥ इतनी कहत कंधते कर गहि लीने।

धनुष सँभारि। कृपानिधान नाम हित धाए अपनी बिपति बिसारि॥ अहो विहँग कहो आपनो दुख पूँछत तब जु मुरारि। किहि मतिमूढ बध्यो तनु तेरो किधौं बिछोही नारि॥ श्रीरघुनाथ रमनि जगजननी जनकनरेशकुमारि। ताको हरण कियो दशकंधर हौं जो लग्यो गुहारि॥ इतनी सुनि कृपालु कोमलप्रभु दियो धनुष कर झारि। मानो सूर प्रान ले रावन गयो देहको डारि॥६३॥ गिद्ध हरि पद प्राप्ति॥ रागकेदारा॥ रघुपति निरखि गिद्ध शिर नायो। कहिकै बात सकल सीता-की तनु तजि चरण कमल चित लायो। श्रीरघुनाथ जानि जन अपनो अपने कर करि ताहि जरायो। सूरदास प्रभु दरश परश करि हरिके लोक सिधायो॥ ६४॥ शबरीको हरिपद प्राप्ति॥ शबरी आश्रम रघुवर आए। अर्घ्यासन दै प्रभु बैठाए॥ खाटे तजि फल मीठे लाई। जूँठे भयेसु सहज सुनाई॥ अन्तर्यामी अति हित जानैं। भोजनकीने स्वाद बखानैं॥ जात न काहूकी प्रभु जानत। भक्त भाव हरि युग युग मानत॥ करि दंडवत भई बलिहारी। पुनि तनु तजि हरिलोक सिधारी॥ सूर प्रभू करुणामय भये। निज कर करि तिल अंजलि दये॥६५॥ किष्किंधाकाण्ड॥ सुग्रीव आज्ञा हनुमान रामको मिलाप॥ राग सारंग॥ ऋष्यमूक पर्वत विख्यात। इक दिन अनुज सहित तहां आये सीतापति रघुनाथा॥ कपि सुग्रीव बालिके भयते बस्यो हुतो तहँ आई। त्रास मानि तब पवनपुत्रको दीनो तुरत पठाई॥ को यह बीर फिरै वन भीतर किहि कारण इहां आए। सूर प्रभूके निकट आइ कपि हाथ जोरि शिरनाए६६॥ हनुमान राम संवाद। सुग्रीवको रामजीका दर्शन॥ राग मारू मिले हनु पूछी असि प्रभु बात। महा मधुर प्रियवाणी बोलत शाखामृग कौनै ते तात॥ अंजनिकोसुत केसरिके कुल पवन गवन उपजायो गात। तुम को बीर नीरभरि लोचन मीन हीनजल ज्यों मुरझात॥ दशरथकुल कोशलपुर बासी त्रिया हरी ताते अकुलात। ये गिरिपति कपिपति सुनियतहैं बालि त्रास कैसे दिन जात॥ महादीन बलछीनबिकलअतिपवनपूत देखतबिलखात। सूरसुनत सुग्रीव चले उठि चरण गहे पूछो कुशलात॥ ६७॥ बालिवध सीता भूषण दर्शन सप्तताल भेद॥ रागमारू॥ भाग्य बडे इहि मारग आये। गदगद कंठ शोकसों रोवत वारि बिलोचन छाए। महाधीर गंभीर बचन सुनि जाम्बवंत वचन समुझाए। बढी परस्पर प्रीति रीति तब भूषण सिया दिखाए॥ सप्त ताल शर साधि बालि हति मन अभिलाष बढाए। सूरदास प्रभु भुजनिके बलिवलिविमलविमलयशगाए॥६८॥ सुग्रीव राज अंगद समाधान। राग सारंग॥ राजदियो सुग्रीवको तिन हरि यश गायो। पुनि अंगदको बोलि ढिग या बिधि समुझायो॥ होनिहार सोइ होति है नहिं जात मिटायो। सूरदास प्रभु चतुर मास ता ठौर बितायो॥६९॥ पवनपुत्र अंगदादि मुद्रिका सहित सीता सुधि हित संपाति मिलाप। राग सारंग॥ श्रीरघुपति सुग्रीव को निजनिकटबुलायो। लीजै सुधि अब सीयकी यह कहि समुझायो॥ जाम्बवंत अंगद हनू उठि माथो नायो। हाथ मुद्रिका दई प्रभुसंदेश सुनायो॥ आए तीरसमुद्रके कछु शोध नपायो। संपाती तहँ मिल्यो सूर यह वचनसुनायो॥ ७०॥ संपातीकासीता अवस्था वर्णन कपिन प्रति। राग सारंग॥ बिछुरी मनोसंगते हिरनी। चितवति रहति चकित चारों दिशि उपजी बिरह तनु जरनी॥ तरुवर मूल अकेली ठाढी दुखित रामकी घरनी। बसन कुचील चिहुर लपटाने देह पीतांबर बरनी॥ लेत उसास नयन जल भरि भरि धुकि जुपरी धरिधरनी। सूर शोच जियपोच निशाचररामनामकीशरनी७१॥ सुंदर कांड समुद्रतीर परस्पर मंत्र हनु बिदा सुरसामुख प्रवेश राग केदारा॥ तब अंगद इक वचन कह्यो। को तरि सिंधु सियासुधि लावै किहि बल इतो लह्यो॥ इतनो वचनश्रवणसुनि हरष्योहँसि बोल्यो

जमुवंत। यादल मध्य प्रगट केशरि सुत जाहि नाम हनुमंत॥ वहै लाइ है सिय सुधि छिनमें अरु आइ है तुरंत।उन प्रभाव त्रिभुवन को पायो वाके बलहिं न अंत॥जो मन करै एक बासर में छिन आवै छिन जाइ। स्वर्ग पताल महागम ताको कहिये कहा बनाइ॥ केतिक लंक उपारि वामकर लै आवै उचकाइ। पवनपुत्र बलवंत व्रज तन काके होय समुदाइ॥ लियो बुलाय मुदित चित ह्वैके बच्छ तंबोलहिं लेहु। ल्यावहु जाइ जनकतनया सुधि रघुपतिको सुख देहु॥ पौरि पौरि प्रति फिरौ बिलोकत गिरि कंदर बन गेह।समयबिचारि सुद्रिका दीजोसुनौ मंत्र सुत येह॥ लयो तंबोल माथ धरि हनुमत कियो चतुर्गुण गात। चढि गिरि शिखर शब्द इक उचर्‍यो गगन उठ्यो आघात॥ कंपत कमठ शेष बसुधा नभ रवि रथ भयो उतपात। मानो पच्छ सुमेरहि लागे उड्यो अकासहि जात॥ चकृत सकल परस्पर वानर बीच करी किलकार। तहां इक अद्भुत देखि निशिचरी सुरसा मुख विस्तार॥ पवनपुत्र मुख पैठि पधारे तहां लगी कछु बार। सूरदास स्वामी प्रताप बल उतर्‍यो जलनिधि पार॥ ७२॥ हनुमत लङ्का दर्शन, सीता मिलाप हित अशोकवन प्रवेश। राग धनाश्री॥ लखि लोचन सोचे हनुमान। चहुँ दिशि लंक दुर्ग दानवदल कैसे पाऊं जान॥ सौ योजन बिस्तार कनक पुरि चकरी योजन बीस। मनो विश्वकर्माकरअपुने रचि राखीगिरि शीश॥गरजत रहतमत्त गज चहुँ दिशि छत्रध्वजा चहुँ दीश। भरमत भयो देखि मातरुसुत दई महाबल ईश॥ उडि हनुमंत गयो आकासहि पहुँच्यो नगर मँझारि। वन उपवन गम अगम अगोचर मंदिर फिर्‍यो निहारि। भई पैज अब हीन हमारी जिय में करै बिचारि। पटकि पूँछ माथो ध्वनि लोटै लखी न राघव नारि॥ नना रूप निशाचर अद्भुत सदा करत मद पान। ठौर ठौर अभ्यास महामल नट पेपने पुरान॥ जिय जिय शोच करत मारुत सुत जियत न मेरे जान।कै वह भाजि समुद्रमें बूडी कै उन तज्यो पिरान॥कैसे नाथ बदन दिखराऊं चो बिन देखे जाऊँ। वानर बीर हँसैंगे मोसों तैं बोर्‍यो पितु नाऊँ॥ते सब तर्क बोलिहैं मोको तासों बहुत डराऊँ॥ भली रामको सिशा मिलाई जीति कनकपुरगाऊँ॥जब मोहिं अंगद कुशल पूछिहै कहा कहौंगो वाहि। या जीवनतें मरन भलोहै मैं देख्यों अवगाहि॥ मारौं आजु लंक लंकापति लै दिखराऊं ताहि। चौहहसहस अंतःपुर ते लेहैं राघव चाहि॥बहुरि बीर जब गयो अवासहिं जहां बसै दशकंध। कनक जटि मणि खंभ बनाए पूरण बास सुगंध॥ श्वेत छत्र फहरात शीशपर मनो लच्छको बंध। दश सिर मुकुटविराजतमणिकृतभानुउदयदससंध चौदह सहस नागकन्या रति पर्‍यो सुरत मत अंध॥बीणानाद पखावज आवजओगराजकोभोग। पुहुप प्रयंक परीनव योवन सुख परिमल रस जोग॥जिय जिय गढैकरैविश्वासहिजानैलंकालोग। इहि सुख सेज परीहै सीता राघव विपति वियोग॥ बैठ्यो जाइ एक तरुवर पर जाकी शीतल छांहि। बहु निशाचरी मध्य जानकी मलिन वसन तनु माहिं॥ पुनि आयो सीता जहां बैठी वन अशोकके माहिं। चारहु ओर निशिचरी घेरे नर जेहि देखि डराहिं॥ बारंबार बिसूरि सूर दुख जपति नाम रघुनाह। मलिन अधपट देखि वदन पर चन्द्र गह्यो ज्यों राह॥ ७३॥ आकाशवाणी हनुमतप्रति, सीय निश्चय,। राग मारू॥गयोकूदि हनुमत जब सिन्धुपारा॥ शेषके शीश लागे कमठ पीठिसों धस्यो गिरिवर सबै ता संभारा॥ शोच लाग्यो करन यहै धौं जानकी के कोऊ और मोहि नहिंचिन्हारा।लंकगढमाहिंआकाशमारगगयोचहूदिशवज्रलागे किवारा॥पौरि सब देखि आशोकवनमें गयो निरखि सीता छप्यो वृक्षडारा।सूरआकाशवाणीभई तब तहां है यहै करिजुहारा॥ ७४॥ निशिचरी रावण बडाई,सीताकी निंदा॥ समुझि अब निरखि

जानकी मोहि। बडोभाग्य गुण अगम दशानन शिव वर दीनो तोहिं। केतक राम कृपण ताकी पितुमातु घटाई कानि।तेरे पिता जनककीसीता कीरतिकहौं बखानि॥बिधि संयोग टरत नहिंटारचो बन दुख देख्यो आनि। अब रावण घर बिलसि सहज सुख कह्यो हमारो मानि॥ इतनो वचन सुनत सिरधुनिकै बोली सिया रिसाइ।अहो ढीठ मति मुग्ध निशिचरी सम्मुख बैठी आइ॥ तब रावण को बदन देखिहौं दश शिर शोणितहाइ॥ कै तन देउँ मध्य पावकके के बिलसैं रघुराइ॥ जो पै पतिव्रता व्रत तेरे जीवत बिछुरी काइ॥तब किन मुई कहो तुम मोसों भुजागही जब राइ। अब झूठो कभिमान करति सिय झुकति हमारे ताइ।सुखहीं रहसि मिलो रावणको अपने सहज सुभाइ॥जो तू रामहि दोप लगावै करौप्राणके घात।तुमरो कुलकोबेर न लागै होत भस्मसंघात॥ उनके क्रोध जरै लंकापति तेरे हृदय समाई। तोपैसूर पतिव्रतसांचो जो देखौं रघुराई॥ ७५॥

निशिचरी सीता सत प्रगट करन रावण निज उद्धार ज्ञान॥ राग धनाश्री॥ सुनो क्यों न कनकपुरीके राइ। हौं बुधि बल छल करिपचि हारी लख्यो नशीश उचाइ। डोलै गगन सहित सुरपति अरु पुहुमि पलटि जगजाइ॥नशै धर्म मम वचनकाय करि शंभु अचंभुकगाइ।अचलाचलै चलत पुनिथाकै चिरंजीव सो मरई।श्रीरघुनाथ प्रताप पतिव्रता सीता सत नहिं टरई॥ऐसी त्रिया हरित क्यों आई जाके यह सतभाइ। मनबचक्रम औरनहिं दूजो तजिरघुनन्दनराइ॥इनके क्रोध भस्महैजैहोकरहु न सीता चाउ।अब तुम काकी शरनउबरिहौं सो बल मोहिं बताउ॥जो सीता सतते बिचलैतौ श्रीपति काहि सँभारे। मोसे मुग्ध महापापीको कौन क्रोध करि तारे॥ यह जननी वे प्रभु रघुनंदन हम सेवक प्रतिहार। सीताराम सूर संगम बिनु कौन उतारै पार॥७६॥

रावण लोभ दिखावन जानकी निरादर करन। राग मारू॥ जनकसुता तू समुझि चित्त में निरखि मोहि तन हेरी। चौदह सहस किन्नरी जेती सब दासी हैं तेरी॥ कहै तो जनक गेह दै पठवौं अर्ध लंकको राज।तोहिं देखि चतुरानन मोहे तू सुन्दरि शिरताज॥छाडि राम तपसीके मोहैं उठि आभूषण साजु। चौदह सहस तिया में तोको पटा बँधाऊं आज॥ कठिन वचनसुनिश्रवन जानकी सकी न वचन सहार। तृण अंतर दै दृष्टि तिरौछी दई नैन जलधार॥पापी जाउ जीभ गलि तेरी अजुगत बात बिचारी।सिंहको भक्ष शृगाल न पावै हौं समरथ की नारी॥ चौदह सहस दुष्ट खर दूषण रघुपति एकहि बान। लक्ष्मण राम धनुप सन्मुख करि काके रहिहैंप्राण॥ तेरी अवधि कहत सब कोऊ ताते कहियत बात। बिन बिश्वास मारिहैं तोको आजु रैनिकै प्रात॥ मेरो हरन मरन है तेरो सो कुटुंब संतान। जरिहै लंक कनकपुर तेरो उदित रघूकुल भान॥ यह राक्षसकी जाति हमारी मोह न उपजै गात। परत्रिय रमै धर्म कहां जानै डोलत मानुप खात॥ मनमें डरी कानि जिनि तोरै मुहि अबला जिय जानि।नख शिखवसनसंभारिसकुचि तनु कुच कपोल गहि पानि॥ रे दशकंध अंध मति तेरी आयु तुलानी आनि। सूर राम को बिरद गर्व हत डारै शंभु भुज भानि॥७७॥ त्रिजटाने सीताको। समाधान किया राग मारू॥त्रिजटा सीता पै चलि आई॥मनमें सोच न करु तू माता यहकहिकै समुझाई॥नल कुबरको शापरावनहिं तोपर बल न बसाई॥मृगछाम मनु जगी सजीवन श्री रघुनाथ पठाई॥७८॥ त्रिजटा प्रति सीता मनोरथ वर्णन। राग कान्हरा॥ सो दिन त्रिजटी कहि कब है है। जादिन चरन कमल रघुपतिके हरषि जानकी हृदय लगै है॥कबहुँक लक्ष्मण पाय सुमित्रा माइ माइ कहिमोहिंसुनैहै।कबहुँकक्कूपावंतकौशल्या बधू बधू कहि मोहिं बुलैहै॥ जादिन राम रावणहिं मारैं ईशहिं दै दशशीश चढैहैं।तादिनजन्म

सफल करि जानो मेरे हृदयकी कालिम जैहै॥जा दिन कंचनपुर प्रभु ऐहैं विमल ध्वजा रथ पर फहरैहैं। तादिन सूर राम पर सीता सरबसु वारि बधाई देहैं ॥ ७९ ॥ राग सारंग ॥ मैं रामके चरणन चित दीनो।मनसा वाचा और कर्मणा बहुरि मिलनको आगम कीनो ॥ डुलै सुमेरु शेष शिर कंपै पश्चिम उदै करै बासर पति। सुनि त्रिजटी तौहू नहिं छोडौं मधुर मूर्ति रघुनाथ गात रति ॥ सीता करति बिचार मनै मन आजु काल्हि कोशलपति आवैं। सूरदास स्वामी करुणामय सो कृपालु मोहिं क्यों बिसरावैं ॥ ८० ॥ सीताप्रतित्रिजटास्वप्न वर्णके हनू सियदरश परस्पर सवाद मुद्रिका अर्पण॥राग धनाश्री ॥ सुन सीता सपनेकी बात।रामचंद्र लछमन मैं देखे ऐसी बिधिपरभात॥कुसुम बिमान बैठि बैदेही देखी राघव पास।श्वेतछत्र रघुनाथ शीशपर दिनकर किरण प्रकाश ॥ भयो पलायमान दानवकुल व्याकुलता इक त्रास। पंजरत ध्वजा पताक छत्र रथ मनिमय कनक अवास ॥ रावन शीश पुहुमिपर लोटत मंदोदरि बिलखाइ। कुम्भकर्ण तनु खंग लगाई लंक बिभीषण पाइ॥ प्रकट्यो आइ लंक दल कपिको फिरि रघुबीर दुहाई। यह सपनेको भाव सखीरी क्योंहूँ बिफल न जाई॥ त्रिजटी वचन सुनत बैदेही अति दुख लेत उसांस ।हाहा रामचन्द्र हा लछिमन हा कौशल्या सास ॥त्रिभुवन-नाथ नाह ज्यों पायो सुयों रहे बनबास। हा कैकई सुमित्रा रानी कठिन निशाचर त्रास ॥ कौन पापमैंपापिन कीनो प्रकट्योहैइहिबार । धिग धिग जीवन है अब इहि तनु क्यों न होइ जरिछार। द्वै अपराध मोहिं ये लागे मृगके हित दीने हथियार॥जान्यो नहीं निशाचरके छल नांघी धनुप अकार॥पंछी एक सुहृद जानतहो कर्यो निशाचर भंग। ताते बिरमि रह्यो रघुनंदन करि मनसा मन पंग॥ इतनो कहत नैन उर फरके सगुन जनायो अंग । आज लहौं रघुनाथ सँदेशो मिटै बिरह दुख संग ॥ तिहि छिन पवन पूत तहँ प्रगटेउ सिया अकेली जानि। श्री दशरथकुमार दोउ बंधू धरे धनुप दोउ पानि ॥ प्रिया वियोग फिरत मारे मन परे सिंधु तट आनि। ता सुन्दरि हित मोहिं पठायो सकौं न हौं पहिंचानि॥ बारंबार निरखि तरुवर तन कर मीड़ति पछिताइ। देव जीव पशु पक्षी को तू नाम लेतरघुराइ ॥ बोले नहीं रह्यो दुरि वानर द्रुममें देह छुपाइ। कै अपराध ओढ अब मेरो कै तू देहि दिखाइ ॥ तरुवर त्यागि चपल शाखामृग सन्मुख बैठ्यो आइ। माता पुत्र जानि दे उत्तर कहु किहि विधि बिलखाइ॥ किन्नर नाग देवि सुरकन्या कासों हित उपजाई। कै तू जनककुमारि जानकी राम वियोगिनि आई॥राम नाम सुनि उत्तर दीनो पिता बंधु तू होहि। मैं सीता रावन हरिल्यायो त्रास दिखावत मोहि॥अब मैं मरौं सिंधुमें बूडौं चितमें आवै कोह। सुनोबच्छ जीवन धिगमेरो लक्ष्मण राम बिछोह ॥ कुशल जानकीजू रघुनंदन कुशल लक्ष्मण भाई। तुमहित नाथ कठिन व्रत कीनो नहिं जल भोजनखाई॥मुरै न अंग कोऊ जो काटै निशिवासर सम जाई। तुमघट प्राण देखियत सीता बिना प्राण रघुराई ॥ वानर वीर चहूँ दिशि धाए ढूंढै गिरि बनचारी।सुभट अनेक सबल दल साजे परे सिन्धुके पारी॥उद्यम मेरोसफल भयो अबमैं देखो तुम आइ।अवरघुनाथ मिलाऊं तुमको सुन्दरिसोग सिराइ॥ यह सुनि सियमन शंका उपजी रावनदूत बिचारि। छल करिआयो निश्चर कोऊ नानारूपनिधारि॥ श्रवणमूँदिअंचरमुखढाँप्यो अरेनिशाचर चोर। काहेकोछल करि करिआवत धर्म बिनाशन मोर॥पावक परौं सिंधुमहँ बूडौंनहिं मुखदेखौं तोर।पापीक्योंन पीठिदै मोको पाहनसरिस कठोर॥जियमें डरचोमोहिं मति शापै व्याकुलवचन कहंत। जोवरदियोसकल

देवन मोहिं नाउँ धरयो हनुमंत ॥ सुग्रीवको तारका मिलाई बध्यो बालि भयमंत । अंजनि-कुँवर रामको पाइक ताके बल गर्जत ॥ लेहु मातु मुद्रिका निसानी दई प्रीति करि नाथ । सावधान ह्वै शोकनिवारो ओडहुदक्षिणहाथ॥खिन मुँदरी खिनही हनुमतसों कहति बिसूरि बिसूरि। कहि मुद्रिके कहां तैं छांडे मेरे जीवनमूरि॥कहियोवच्छसँदेशो इतनो जब हम एकत थान।सोवत काग छुयो तनु मेरो बाहिर कीनोबान॥फोरयो नयन कागनहिंछौंडयो सुरपतिके विदमान।अब वह कोप कहां रघुनन्दन दशशिरकंठ बिरान॥निकट बुलाइबैठाइ निरखिमुख अँचर लेत बलाइ। चिरजीयो सुकुमार पवनसुत गहति दीन ह्वै पाइ ॥ बहुत भुजनि बल होइ तुमारे ये अमृत फल खाहु । अबकी बेर सूर प्रभु मिलिहो बहुरि प्राण किन जाहु॥८१॥ हनुमत सीता समाधान॥राग मारू॥ जननी हौं अनुचर रघुपति को । मति माता करि क्रोध शरापै नहिं दानव धिग मति को ॥ आज्ञा होइ देउँ कर मुँदरी कहौं संदेशो पति को।मति हिय बिलखकरो सिय रघुवर बधिहैं कुल दैयत को॥ कहौ तु लंक उखारि डारि देउँ जहां पिता संपति को । कहो तु मारि सँहारि निशाचर रावण करौं अगति को ॥ सागर तीर भीर बनचरकी देखि कटक रघुपतिको । लै मिलाइहौं अबहिं सूर प्रभु राम रोष डर अतिको ॥८२॥ राग मारू ॥ अनुचर रघुनाथ तेरे दरश काज आयो।पवनपूत कपि स्वरूप भक्तनमें गायो॥तपसी जहां तपन करैं सोइ बनमें झांक्यो। जाकी तुम छांह बैठी सोइ द्रुम मैं राख्यो॥ आयसु जो होइ जननि सकल असुर मारौं । लंकेश्वर बांधि राम चरणन तर डारौं ॥ चढ़ि चलो जु पीठि मेरी अबहिं लै मिलाउं। सूर श्रीरघुनाथ-जूके लीला गुण गाऊं ॥ ८३ ॥ हनुमत निरखि सीता संदेह मुद्रिका असत प्रतीति । राग मारू ॥ तुम्ह पहिंचानति नाहीं वीर । इहि नैननि कबहूँ नहिं देख्यो रामचन्द्रके तीर ॥ लंका वसत दैत्य अरु दानव उनके अगम शरीर । तोहिं देखि मेरो जिय डरपत नैननि आवत नीर॥जब कर काढि अँगूठी दीनी तो जिय उपजी धीर । सूरदास प्रभु लंकाकारण आए सागर तीर ॥ ८४ ॥ हनूका रामलक्ष्मणके समाचार कहना, अपनो पराक्रम वर्णन॥राग सारंग ॥ जननी हौं रघुनाथ पठायो।रामचन्द्र आयेकी तुमको देन बधाई आयो ॥ हौं हनुमंतकपट जिनिसमुझो बात कहत समुझाई। मुँदरीदूब धरीलै आगे तब प्रतीति जिय आई॥ अतिसुखपाइउठाइलई तब बार बार उरभेंटति।ज्योंमलया-गिरि पाइ आपनी जरनि हृदयकी मेटति ॥लक्ष्मण पालागनि कहि पठयो हेतु बहुत करि माता । दई अशीश तरनि सन्मुख ह्वै चिर जीयो दोउ भ्राता ॥ बिछुरनको संताप हमारो तुम दरशन-ते काटयो । ज्यों रवि तेज पाइ दशहूं दिशि दोष कुहरको फाटयो ॥ठाढे बिनती करत पवनसुत अब जो आज्ञा पाऊं। अपने देख चलेको यह सुख उनहूं जाइ सुनाऊं ॥ कल्प समान एकछन राघव कर्म कर्म करि बितवत । तातेहौं अकुलातकृपानिधि ह्वैहैं पैंडो चितवत ॥ रावणहतिलैचलों साथही लंकाधरौं अपूठी।यातेजियअकुलात कृपानिधि करौं प्रतिज्ञाझूठी॥यहांजोइसबदशाहमारी मुर सो कहियो जाई। बिनती बहुत कहा कहौंरघुपतिजिहिविधिदेखौं पाई ॥८५॥ सीता आगमन प्रसन्न हनु धीरजदेन॥राग मलार ॥ वनचर कौन देशते आयो । कहँ वे राम कहां वे लक्ष्मण क्यों करि मुद्रा पायो ॥ हौं हनुमंत रामके सेवक तुव सुधि लेन पठायो । रावण मारि तुम्हैं लै जातो रामनिदेश न पायो ॥ तुम मति डारियो मेरी मैया राम जोरि दल ल्यायो । सूरदास रावण कुल खोवन सोवत सिंह जगायो ॥ ८६ ॥ अन्यच्च राग सारंग॥ कहो कपि कैसे उतर्यो पार । दुस्तर अति गंभीर वारिनिधि शत योजन विस्तार॥इतउत क्रोध दैत्य कपि मारत महाअबुधिअधिकार।

हाटकपुरी कठिन पथ वानर आये कौन अधार। राम प्रताप सत्य सीताको यहै नाउ कंधार। बिनअधार छनमें अवलंब्यो आवत भई न बार॥ पृष्ठभाग चढि जनकनन्दिनी पौरुष देख हमार। सूरदास लै जाउँ तहाँ जहँ रघुपति कंत तुम्हार॥ ८७॥ हनू मिलापते सीता आनंद। राग मारू॥ हनुमत भली करी तुम आए। बार बार कहती बैदेही दुख संताप मिटाए॥ श्रीरघुनाथ और लक्ष्मणके समाचार सब पाये। अब परतीति भई मन मेरे संग मुद्रिका लाये॥ क्यों करि सिंधु पार तुम उतरे क्योंकरि लंका आये। सूरदास रघुनाथ जानि जिय तो बल इहाँ पठाए॥ ८८॥ सीता रामपराक्रम वर्णन उराहना समेत बेगि मिलाप हित। राग कान्हरा॥ सुन कपि वे रघुनाथ नहीं। जिन रघुनाथ पिनाक पितान्यो तोरचो निमिष महीं॥ जिनरघुनाथफेरि भृगुपतिगति डारीकाटि तहीं। जिहिंरघुनाथहारखरदूषणहरेप्राणशरहीं॥ कैरघुनाथ तज्यो प्रण अपनो योगिन दशा गही। केरघुनाथ दुखित कानन कै नृप भये रघुकुलहीं॥ कै रघुनाथ अतुल राक्षस बल दशकंधर डरहीं। छाँडी नारि बिचारि पवनसुत लंक बाग बसहीं॥ किधौं कुचील कुरूप कुलक्षण तौ कंतहि न चही॥ सूरदास स्वामीसों कहियो अब बिरमियो नहीं॥ ८९॥ सीता निज दुख वर्ण्यो हनूप्रति॥ राग मारू॥ देखे यह गति जात सँदेशो कैसेकै जु कहौं। सुन कपि इन प्राणनको पहरो कबलों देति रहौं॥ ये अति चपल चल्यो चाहत हैं करत न कछू विचार। कहि धौं प्राण कहांलौं राखों रोकि रोकि मुखद्वार॥ अपनी बात जनावतितुमसोंसकुचतिहों हनुमंत। नाहींसूर सुन्यो दुख कबहूँ प्रभुकरुणामयकंत९० सीता विनय निज दुख निवारण निमित्त श्रीराम प्रति राग मारू॥ कहियो कपि रघुनाथ गजसों यह इक बिनती मेरी। नाहीं सही परति यह मोपै दारुण त्रास निशाचरकेरी॥ यह जो अंध बीसहूँ लोचन छल बल करत आनि मुख हेरी। आइ शृगाल सिंहबलि मांगत यह मरजाद जात प्रभु तेरी॥ जेहि भुज परशुराम बल करष्यो ते भुज क्यों न सँभारत फेरी। सूर सनेह जानि करुणामय लेहु छुडाइ जानकी चेरी॥ ९१॥ सीता निज अपराध प्रगटन राग मारू॥ मैं परदेशिन नारि अकेली। बिनु रघुनाथ और नहिं कोऊ मातु पिता न सहेली॥ रावणभेषधरचोतपसीको कत मैं भिक्षा मेली। अति अज्ञान मूढ मति मेरी रामरेख पाइन मैं पेली॥ बिरहताप तनुअधिक जरावत जैसे दौ द्रुम बेली। सूरदास प्रभु बेगि मिलाओ प्राण जातहै खेली॥ ९२॥ हनुमतवचन रागमारू॥ तू जननी जिय दुख जिन मानहि। रामचन्द्र नहिं दूरि कहूं पुनि भूलिहुचितचिंतामति आनहि॥ अबहिं लिवाइजाउँ सब रिपु हति डरपतहौं आज्ञाअपमानहिं। राख्यो सुफल सँवारि सान दै कैसे निफल करौं वा बानहिं॥ हैं केतक यह तिमिर निशाचर उदित एक रघुकुल के भानहि। काटन दे दशशीस समर मुख अपनो कृत एऊ जो जानहि॥ देहिंदरश शुभनैननिकट निज रिपु को नाश सहित संतानहिं। सूरसप्तमोहि इनहिंदिननिमें लै जुआइहौंकृपानिधानहिं॥ ९३॥ अशोकवन भंग इन्द्रजीतहनुमतप्रीत ब्रह्मशरबंधन। रागमारू॥ हनुमत बल प्रगट भयो सीता जब पाई। जनकसुता चरण वंदि फूल्यो न समाई॥ अगणित तरु फल सुगंध मधुर मिष्ट खाटे। मनसा करि प्रभुहिं अर्पि भोजनको डाटे॥ द्रुमन गहि उपाटिलिये दैदै किलकारी। दानव बिन प्राण भये देखि चारित भारी॥ विह्वल मतिहीन गए जोरे सब हाथा। वानर बन विध्न कियो त्रिभुवनके नाथा॥ है निशंक अतिहि ढीठ बिडरै नहिं भाजे। मानो बन कदलि मध्य उनमत गज गाजै॥ भाने मठ कूप वाय सरवरको पानी। गौरिंकित पूजत जहां नवतन दल आनी॥ कांप्यो सुनि असुर सैन शाखामृग जान्यो। मानो जलजीव सिमिटि जाल में समान्यो॥

तरुवर तहँ इक उपारि हनुमंतकर लीनो।किंकर कर पकरि बाण तीन खंड कीनो ॥ योजन विस्तार शिला पवनसुत उपाटी । किंकर करि लक्ष्मान अंतरिक्ष काटी ॥ आगर इक लोह जरित लीनो बरबंड । दुहूं करनि असुर हयो भयो मानस पिंड ॥ दुर्धर परहस्त संग आई सैन भारी । पवनपूत दानव बल बाहर चल कारी ॥ रोम रोम हनूमंत लच्छ लच्छ बान । जहां तहां देखत कपि करत राम आन ॥ मंत्रीसुत पाँच सैन अक्षय कुवँर सूर । धीर सहित सबै हते झपटिकै लंगूर ॥ चतुरानन बल सँभारि मेघनाद आयो । मानो घन पावस में नगपति है छायो॥ देख्यो जब दिव्य बान नागफांस आन्यो । छांड्यो तब सूर हनू ब्रह्म तेज मान्यो ॥ ९४ ॥ हनुमान रावण संवाद ब्रह्मशर शक्ति । राग मारू ॥ सीतापति सेवक तोहिं देखनको आयो।काके बल बैर तैं जु रामते बढायो॥जे जे तुव सूर सुभट कीटसम न लेखों।तेरे दशकंध अंध प्राणनि विनुदेखों॥ नख शिख ज्यों मीन जाल जड्यो अंग अंगा । अजहुँ नाहिं शंक धरत बनचर मति भंगा॥जोई सोइ मुखहि कहत मरण निज न जानै । जैसे नर सन्निपात हिये बुधि बखानै॥तब तू गयो सून भवन भस्म अंग पोते।करितो बिनुप्राण तोहिं लक्ष्मण जो होते॥पाछे तैं सीय हरी बिधिमर्याद राखी। जो पै दशकंध बली रेख क्यों न नाखी॥अजहूं सिय सौंपि नतरु बीस भुजा भानै। रघुपति यह पैज करी भूतल धरि पानै॥ब्रह्म बाण कानि करी बल करि नहिं बांध्यो। कैसे यह ताप मिटै रघुपति आराध्यो ॥ देखत कपि बाहुडंड तनु प्रस्वेद छूटै । जैजै रघुनाथ नाथ कहत बंध टूटे॥ देखत बल दूरि करयो मेघनाद गारो।आपुन भयो सकुचि सूर बंधन ते न्यारो॥९५॥ हनुमान लंकाजारन ॥ राग मारू॥मंत्रिन नीको मंत्र बिचारयो।राजन् कहो दूतकाहूको कौननृपतिहै मारयो॥इतनी कहत विभीषण बोल्यो बंधू पांइ परौं। यह अनरीति सुनी नहिं श्रवणनि अब पै कहा करौं ॥ तेल तूल पावक वपु धरिकै देखत तुसे जरौं। अब मेरेजिय यहैबसीहै रघुपतिकाज करौं ॥ हरी विधाता बुद्धि सबनिकी अति आतुर ह्वै धाये । सन अरु सूत चीर पाटंवर लै लंगूर बँधाये ॥ बंधनि तोरि मोरि मुख असुरनि ज्वाला प्रगट करी । रघुपति चरण प्रताप सूरप्रभु लंका सकल जरी ॥ ९६ ॥आकाशवाणी,सीताकुशल॥ रागधनाश्री ॥सोचि जिय पवनपूत पछिताई । अगम अपार सिंधु दुस्तर तरि कहा कियो मैं आई ॥ सेवकको सेवापनइतनो आज्ञाकारीहोई।या भय भीति देखि लंकामें सीय जरी मति होई ॥ बिनु आज्ञा मैं भवन प्रजारे अपयश करिहै लोइ। वे रघुनाथ चतुर कहियत हैं अंतर्यामी सोइ ॥ इतनी कहत गगनवाणी भई हनू सोच कत करिहै।चिरंजीव सीता तरुवर तर अटल न कबहूं टरिहै ॥ फिर अवलोकि सूर सुख लीजै भुवमें रोम न परिहै। जाके हिय अंतर रघुनंदन सो क्यों पावकजरिहै ॥९७ ॥ लंकादग्धि पुनः सियदर्शन॥ रागमारू ॥लंका हनुमान सब जारी ।रामकाज सीताकी सुधि लगि अंगद प्रीति बिचारी॥जा रावणकी शक्ति तिहूंपुर कहूं न आज्ञा टारी। ता रावणके अछत अक्षय सुत पालक सृष्टि पछारी ॥ पूंछ बुझाइ गये सागर तट है जहँ सीतावारी । करि दंडवत प्रेम पुलकित ह्वै सुनि राघवकी प्यारी ॥ तुमही तेज प्रताप रही है तुमरी यहै अटारी। सूरदास स्वामीके आगे जाइ कहौं सुख भारी ॥ ९८॥ रामचन्द्र प्रति सीता संदेश हनुमंत बिदा ॥ राग सारंग ॥ मेरी केती बिनती करनी। पहिले करि परनाम पाँइ परि मणि रघुनाथहाथ लैधरनी ॥ मंदाकिनि तटफटिकशिला पर मुख मुख जोरि तिलककी करनी।कहा कहौं कपि कहत नआवैसुमिरतप्रीतिहोइउरअरनी ॥ नाम हनुमंत पवित्र पवनसुत कहियो जाइ जोइ मैं बरनी । सूरदास प्रभु आनि मिलावहु मूरति

दुसह दुःखभयहरनी॥९९॥ अंगदादि निकट हनुमानका पुनः आगमन सीता सुधि देन ॥ राग मारू॥हनूमान अंगदके आगे लंक कथा सब भाषी। अंगद कह्यो भली तुम कीनीहमसबकीपतिराखी॥ हर्षवंतह्वै चले तहां ते मगमें बिलम न लाई। पहुँचे आइ निकट रघुवरके सुग्रीव आयो धाई॥सबनप्रणाम कियो रघुपति को अंगद वचन सुनायो। सूरदास प्रभु पदप्रताप करि हनू सिया सुधि ल्यायो॥ ॥१००॥ सुग्रीवादि कृत हनूमान प्रशंसा ॥ राग मारू ॥हनू तैं सबको काज सँवारयो।बार बार अंगदयों भाषै मेरो प्राण उबारयो ॥ तुरतहि गमन कियो सागरते बीचहिबागउजारयो।कियो मधुवनको चूर चहूं दिशि माली जाइ पुकारयो ॥ धनि हनुमंत सुग्रीव कहतहै रावणको दल मारयो। सूर सुनत रघुनाथ भयो सुख काज आपनो सारयो ॥१०१॥ श्रीरामचन्द्र हनुमान गोष्ठी। राग मारू॥ कहौ कपि जनकसुता कुशलात। आवागमन सुनावहु अपनो देहु हमैं सुख गात ॥सुनो पिता जल अंतर ह्वैकै रोक्यो मग इक नारि। धर अंबर घन रूप निशाचरि गरजीबदनपसारि॥ तबमैं डरपि कियो छोटो तनु पैठ्यो उदर मँझारि। खरभर परी देव आनंदे जीत्यो पहिली रारि॥गिरि मैनाक उदधिमें अद्भुत आगे रोक्यो जात।पवनपिताको मित्र न जानत धोखे मारीलात॥तबहीं और रह्यो सरितापति आगे योजन सात।तुव प्रताप पेलि निशि पहुँच्यो कौन बढावैबात।लंका पौरि पौरि मैं ढूंढी अरु वन उपबन जाइ। तरुवरतर अवलोकि जानकी तब हौंरह्योलुकाइ॥ रावण कह्यो सु कह्यो न जाई रह्यो क्रोध अति छाई। तबहीं अवधि जानिकै राख्यो मंदोदरि समुझाई ॥ तब हौं गयो सु फुलवारीमें देखी दृष्टि पसारि। असी सहस किंकर दल जिहिके दौरे मोहिं निहारि ॥ तुम परताप देव छिन भीतर जुरत भई नहिं वार।तिनकोमारितुरंतहिकीनो मेघनादसों रार ॥ ब्रह्मफाँस जब लई हाथ करि मैं चल्यो कर जोरि। तज्यो कोप मर्यादाराखी बँध्यो आपही मोर ॥रावणपै लैगयो सकल मिलि ज्यों लुब्धक पशु जाल।करुवो वचनश्रवण सुनि मेरो तब रिस गही भुवाल ॥ आपुनही मुद्गर लै धायो करि लोचन विकराल। चहुँदिशि सूर शोर करि धावै ज्यों केहरिहि सियाल॥१०२॥ राम वचन। राग मारू ॥ कैसेपुरीजरीकपिराय। बडे दैत्य कैसे करि मारे ईश्वर तुमैं बचाय॥प्रगट कपाट बडे दीने हैं बहु जोधा रखवारे।तेंतिस कोटि देव बश कीने ते तुमसे क्यों हारे ॥ तीनिलोक डर जाके कंपै तुम हनुमान न पेखे। तुमरे क्रोध शाप सीताके दूरि जरत हम देखे॥हो जगदीश कहा कहौं तुमसों तुम वर तेज मुरारी।सूरज दास सुनो सबसंतोअवगतिकी गतिन्यारी ॥१०३॥ सेना समेत सिन्धु तट राम पयान।राग मारू॥ सीय सुधि सुनत रघुबीर धाये।चल्यो तब लक्ष्मण सुग्रीव अंगद हनूजाम्बवंतनीलनलसबैआये॥ भूमि अति डगमगी योगनी सुनि जगी सहसफन शेष सों शीश कांप्यो।कटकअगणित जुरयो लंक खरभर परयो सूरको तेज धर धूर ढांप्यो॥जलधि तट आइ रघुराइ ठाढे भए ऋच्छ कपि गरजि ह्वै ध्वनि सुनायो। सूर रघुराइ चितये हनूमान दिशि आइ तिन तुरतही शीश नायो ॥ १०४॥ हनूमान निज शरीर बल कथन॥राग केदारा॥राघव जू कितक बात तजि चिंत।कितक रावण कुम्भकर्ण दल सुनिहो देव अनंत॥कहो तु लंक लकुटज्यों फेरों फेरि कहूंलैडारों।कहोतुपर्वतचापि चरणतरनीर खारमेंगारौं॥कहो तोअसुरलंगूर लपेटौं कहौ तुनखनबिदारौं। कहोतु शैल उपारिपेडते देउँसुमेरुसो मारौं॥जेतक शैलसुमेरुधरणिमें भुजभरि आनि मिलाऊं।सत समुद्र देइ छातीतर इतनक देहबढाऊं। चली जाहु सेना सब मोपर धरो चरण रघुवीर।मोहि अशीश जगतजननीकीतुव तनु वज्र शरीर॥ जितक बोल बोले तुम आगे रामप्रताप तुमारे। सूरदास प्रभुकी सब साँची जनकी पैज पुकारे॥

॥१०५॥ हनूमान निज पराक्रम युद्ध निमित्त कथन ॥ राग मारू ॥रावण से गहि कोटिक मारौं। जो तुम आज्ञा देहु कृपानिधि तो यह परहित सारों॥कहो तो जननिजानकी ल्याऊं कहोतो लंक उदारौं। कहो तु अबहीं पैठि सुभट हति अनल सकल परजारों॥ कहो तुसचिवसबंधुसकलअरिएककहि एक पछारौं।कहो तो तुम प्रताप श्रीरघुबर उदधि पषाननि तारों॥कहो तो दशो शीश बीसों भुज काटि छिनकमें डारौं। कहो तो ताको तृण गहाइकै जीवत पाँइन डारौं॥ कहोतुसनाचारि रचों कपि धरनी व्योम पतारों। शैल शिला द्रुम बरपि व्योम चढि शत्रु समूह सँहारौं॥ बार बार पद परसि कहतहौं हौं कबहूं नहिं हारौं। सूरदास प्रभु तुमरे वचन लगि शिव वचननको टारों॥ १०६॥ अन्यच्च ॥राग मारू॥ हौं हरिजूको आयसु पाऊं। अबहीं जाइ उपारिलंकगढउदधि पार लै आऊं॥ अबहीं जंबूद्वीप यहांते लै लंका पहुँचाऊं। सोखि समुद्र उतारों कपिदल छिनक विलंब न लाऊं॥ अब आवै रघुवीर जीतिदल तौ हनुमंत कहाऊं। सूरदास शुभ पुरी अयोध्या राघव सुयश बसाऊं॥१०७॥ सिंधु सेतु निमित्त हनुमान बिनय॥ राग सारंग॥ रघुपति बेगि जतनअब कीजे।बांधैं सिंधु सकल सैना मिलि आपुन आयसुदीजै॥तबलगि तुरतएकतौबांधौंद्रुमपाषाननि छाई। द्रितिय सिंधु सिय नैन नीरह्वै जबलौं मिलै न आई॥यह विनतीहौंकरौंकृपानिधिबारबार अकुलाई। सूरज दास अकाल प्रलय प्रभु मेटो दरशदिखाई॥१०८॥ सीता देन निमित्त विभीषणवचन रावण प्रति। राग मारू॥ लंकपतीको अनुज शीश नायो। परम गंभीर रणधीर दशरथ तनय कोपि करि सिंधुके तीर आयो॥ सियाको लै मिलो यह मतो है भलो कृपा करि मम वचनमानिलीजै। ईशको ईश करतार करुणामयी तासु पदकमल पर शीश दीजै॥कह्यो लंकेश दै शीशपग तासुके जाहि मत मूढ कायर डरानो। जानि अशरण शरण सूरके प्रभूको तुरंतहि जाइ द्वारे बुझानो॥ ॥१०९॥रामचन्द्रसों विभीषण विलाप। राग सारंग॥ आयविभीषण शीश नवायो। देखत ही रघुबीर धीर कहँ लंकपती तिहि नाम बुलायो॥ कह्यो सु बहुरि कह्यो नहिं रघुबर यहै बिरद चलि आयो। भक्तबछल करुणामय प्रभुको सूरदास यश गायो॥११०॥ सभामध्य श्रीराचन्द्र वचन॥ राग मारू॥तब हौं नगर अयोध्या जैहौं। एक बात सुन निश्चय मेरी रावण राज्य विभीषण दैहौं॥ कपिदल जोरि और सब सेनासागर सेतु बंधैहौं। काटि दशों शिर बीस भुजा तब दशरथ सुत जु कहैहौं॥ छन इक माहिं लंक गढ तोरौं कंचन कोट ढहैहौं। सूरदास प्रभु कहत विभीषण रिपुहति सीता लैहौं॥१११॥सिय दे मिलन निमित्त मंदोदरी शिक्षा रावण प्रति॥राग मारू॥वे देखिआये राम राजा। जलके निकट आय भये ठाढे दीसत बिमल ध्वजा॥ सोवत कहा चेत हो रावण में जु कहति कत खात दगा। कहति मँदोदरी सुनु पिय रावण मेरी बात अगा॥ तृण दशनन लैमिलि दशकंधर कंठहिं मेलि पगा। सूरदास प्रभु रघुपति आये दहपट होय लंका॥११२॥ अन्यच्च॥ शरण परि मन वच कर्म बिचारि॥ ऐसो कौन और त्रिभुवन मैं जो अब लेइ उबारि॥ सुनि शिष कंत दंत तृण धरिकै स्यो परिवार सिधारो। परमपुनीत जानकी सँग ले कुल कलंक किन टारो॥ पै दशशीश चरणतर राखो मेटो सब अपराध। महाप्रभु कृपाकरन रघुनंदन रिस न गहैं पल आध॥ तोरि धनुप मुख मोरि नृपनको सीयस्वयंबर कीनो। छिन इकमें भृगुपति प्रताप बल करपि हृदय धरि लीनो॥ लीला करत कनकमृग मारयो बध्यो बालि अभिमानी। सोइ दशरथकुलचन्द अमित बल आए शारँगपाणी॥ जाके दल सुग्रीव सुमंत्री प्रबल यूथपति भारी। महासुभट रणजीत पवनसुत बडो वज्र बपुधारी॥ करिहै लंक पंक छिन भीतर वज्र

शिला लै धावै । कुल कुटुंब परिवार सहित तुहिं बांधत बिलम न लावै ॥ अजहूं जिन बल कर शंकरको मान वचन हित मेरो।जाइ मिलो कौशल नरेशको भ्रात विभीषण तेरो।कटक शोर अति दूरि दशोंदिश देखत बनचर भीर।सूर समुझि रघुवंशतिलक दोउ उतरे सागरतीर॥११३॥ अन्यच्च ॥ काहे परतिरिया हरि आनी । यह सीता जू जनककी कन्या रमा अपुन रघुनंदन रानी ॥ रावण मुग्ध कर्मको हीनो जनकसुता तैं त्रिय करि मानी । जाके क्रोध भूमिजल पटके कहाकहैगो सिंधुज पानी॥मूरख सुखहिं नीद नहिं आवै लेहैं लंक वीस भुज भानी। सूर नमिटत भागकी रेखा अल्प मृत्यु तेरी आइ तुलानी ॥ ११४ ॥ अन्यच्च।राग मारू ॥ तोहि कौन मति रावण आई । आजु कालिह दिन चारि पांचमें लंका होति पराई ॥ लंका कोट देखि जिन गर्वहि अरु समुद्र सी खाई। जाकी नारि सदा नवयौवन सो क्यों हरै पराई॥काके हित सीतापति आये राम लक्षण दोउ भाई । सूरदास प्रभु लंका तोरैं फेरैं राम दुहाई ॥११५ ॥ मंदोदरी रावण संवाद। राग मारू ॥ आयो रघुनाथ बली सीख सुनो मेरी । सीता लै जाइ मिलो पति जु रहै तेरी ॥ तैं जु बुरे कर्म किये सीता हरि ल्यायो । घर बैठे वैर कियो कोपि राम आयो ॥ चेतत क्यों नाहिं मूढ एक बात मेरी । अजहुं सिंधु नाहिं बंध्यो लंका है तेरी ॥ सागरको पाजि बांधि पार उतरिआवैं।सैना कछु अंतनाहिंइतनोदल ल्यावैं॥देखित्रिया करिकै बल कैसीदिखराऊं।रीछ कीश वश्यकरौं रामहिं गहि ल्याऊं॥जानति हौं बलहिं बालिसों न छूटि पाई।तुम्हें कहादोषदीजे कालअवधि आई॥बलि जब बहु यज्ञ करे इन्द्र सुनि सुखायो।छल करि लई छीनि मही वामन ह्वै धायो॥हिरणकशिपु अति प्रचंड ब्रह्मा वर पायो । नारसिंह रूप धरे छिन न विलम लायो ॥ पाहनसों बांधि सिंधु लंका गढ तोरैं । सूरदास मिलि विभीषण राम देहि फोरैं ॥ ११६ ॥ सेतुबंध आरंभ सिंधुमिलन ॥ राग धनाश्री ॥ रघुपति चन्द्र बिचार कऱ्यो । नातो मानि सगर सागरसों कुश साथरे पऱ्यो ॥ तीनि याम अरु बासर बीतेसिंधु गुमान भऱ्यो ।कीन्यो कोप कुवँरकमलापतितब कर धनुष धऱ्यो ॥ ब्रह्म भेष आयो अति व्याकुल देख्यो वान डऱ्यो ।द्रुम पषान प्रभु बेगि मँगायो रचना सेतु कऱ्यो ॥ नल अरु नील सुत विश्वकर्माके छुवत पषान तऱ्यो । सूरदास स्वामी प्रतापते सब संताप हऱ्यो ॥ ११७ ॥ सेतु बंधन ॥राग मारू ॥आपुन तरि तारि औरन तारत। असम अचेत पाषाण प्रगट पानी में बनचर डारत ॥ इहि विधि उपलै सुतरु पात ज्यों यदपि सेन अति भारत।बुडि न सके तु सेतु रचना रचि राम प्रताप विचारत॥जिहि जल तृण पशु वार बूडि आपुन सँग औरन बोरत। तिहि जल गाजत महावीर सब तरतअंग नहिं मोरत॥रघुपतिचरण प्रताप प्रगट सुर व्योम बिमाननि गावत।सूरदास प्रभु सकल कलाविधि सायर पैज बढ़ावत११८॥ (लंकाकाण्ड) रावण दूत ग्रहण,पहिरावनि दे बिदाकरन । राग सारंग॥शुक सारन द्वै दूत पठाये।वानर वप फिरत सेनामें सुनत विभीषण तुरत बँधाये॥ बीचहि मार परी अतिभारी राम लछन जब दरशन पाये। दीनदयालु बिहाल देखिकै छोरी भुजा कहांते आये । हम लंकेश दूत प्रतिहारी समुद्र तीरको जात अन्हाये । सूर कृपालु भये करुणामय आपुन हाथ दूत पहिराये ॥११९॥राम सागर संवाद,रावण दूत पुनः लंका गमन,युद्ध निमित्त कुंभकर्ण मंत्र । राग धनाश्री॥ रघुपति जबै सिंधु तट आये । कुश साथरी बैठि इक आसन वासर तीनि गँवाये ॥ सागर गर्व धऱ्यो उर भीतर रघुपति नर करि जान्यो । तब रघुवीर तीर अपने कर अग्नि बरण गहि तान्यो । तब जलधर खरभरो त्रास गहि जंतु उठे अकुलाई । कह्यो न नाथ वाण मोहिं जारो शरण पऱ्यो हौं आई ॥

आज्ञा होइ एक छिन भीतर जल दश दिशि करि डारौं। अंतर मारग होइ सबनिको इहि विधि पार उतारौं॥ और मंत्र जोकरै देवमणि बांधौ सेतु विचार।दीनजानि धरि चाप बिहँसिकै दियो कंठते हार ॥ यहै मंत्र सबहिन मन आयो सेतुबंध प्रभु कीजै ।सब दल उतरि होइ पारंगत ज्यों न कोऊ इक छीजै ॥यह सुन दूत गयो लंकामहँ सुनत नगर अकुलानो।रामचन्द्र प्रताप दशौं दिशि जल पर तरत पषानो॥दशशिर बोलि निकट बैठायो कहि धावन सतभाउ। उद्यम कहा होत लंकाको कौने कियो उपाउ॥जाम्बवंत अंगद बंधू मिलि कैसे इहि पुर ऐहैं।मो देखत जानकी नैन भरि कैसे देखन पैहैं ॥हौं सत भाउ कहत लंकापति जो जिय उत्तम मानो। सकल कहौं व्योहार कटकको कपि उमहे सो मानो॥बार बार यों कहत सकत नहिं तो हति लैहैं प्राण। मेरे जान कनकपुर फिरिहैं रामचन्द्रकी आन ॥ कुंभकर्ण हँसि कह्यो सभामें सुनौ आदि उत्पात। एक दिवस हम ब्रह्मसभामें चलत सुनी यह बात ॥ कामअंध ह्वै सब कुटुंब धन खोवै एकहि बार।सो अब सत्य होत एहि अवसर कौन जु मेटनहार ॥ और मंत्र कछु उरजिनि आनो आजु सुकपि रण मांडहि। गहै बांह रघुपतिके सन्मुख ह्वैकरि यह तनु छांडहि ॥ यह यश जीति परमपद पावहु उर संशय सब खोई।सूर सकुचि जो शरन सँभारौ क्षत्री धर्म न होई॥१०॥ रघुपति सेतु उलंघन ॥ राग धनाश्री ॥ सिंधु तट उतरत राम उदार। रोष विषम कीनो रघुनंदन सब विपरीत विचार ॥ सागर पर गिरि गिरि पर अंबर कपि घनके आकार। गरज किलक आघात उठत मनु दामिनि पावक झार ॥ परत फिराइ पयोनिधि भीतर सरिता उलटि बहाई। मनु रघुपति भयभीत सिंधु पत्नी प्योसार पठाई। बाला विरह दुसह सबहुनको जान्यो राजकुमार। बाण वृष्टि शोणित करि सरिता व्याहत लगी न बार ॥ श्रवणनि कनक कलश आभूषन मनि मुक्ता गन हार। सेतुबंध करि तिलक कृपानिधि रघुपति उतरे पार ॥ १२१ ॥ मंदोदरी वचन॥ राग धनाश्री ॥ देखि रे वह शारंगधर आयो। सायर तीर भीर वानरकी शिरपर छत्र बनायो ॥ शंख कुलाहल सुनियत लागे लीला सिंधु बंधायो। सोयो कहा लंक गढ़ भीतर अधिको कोप दिखायो ॥ पद्मकोटिजाकी सेना सुनियत जंतु जु एकपठायो। सूरदास रघुनाथ विमुख भये तिहि केनक सुख पायो ॥१२२॥ अन्यच्च ॥ राग मारू ॥ मेरे जान अजहूं जानकी दीजै। लंकापति पिय कहत पियासों यामें कछू न छीजै॥ पाहन तारे सागर बाँध्यो तापर चरण न भीजै। वनचर एक लंक तिहि जारी ताकी सरि क्यों लीजै ॥ चरण टेकि दोउ हाथ जोरिकै बिनती काहे न कीजै। वे त्रिभुवनपति करें कृपा अति कुटुँब सहित सुख जीजै॥आवत देखि बाण रघुपतिके तेरो मन न पतीजै। सूरदास प्रभु लंक जारिकै राज्य विभीषण दीजै॥१२३॥ मंदोदरी प्रति रावणगर्व वचन॥ कहा तू कहति त्रिया बार बारी। कोटि तैंतीस सुर सेव अहनिशि करत राम अरु लक्ष्मण हैं कहा [illegible] मृत्युको बांधि मैं राखियो कूपमें देत आवत कहा डरत नारी। कहत मंदोदरी मेटि को [illegible] तेहि जो रची सूर प्रभु होनहारी ॥ १२४ ॥ रावणके पास अंगद दूतत्व ॥ लंकपति पास अंगद पठायो। सुन अरे अंध दशकंध लै सिया मिलिसेतुकरिबंधरघुवीरआयो॥ वह सुनत परिजरयो वचन नहिं मन धरयो कहा तैं राम ते बुहि डरायो। सुर असुर जीति मैं सब कियो आपुबश सूर सम सुयश तिहुँलोक गायो ॥ १२५॥रावण तबलौंहैरण गाजत।जबलौं कर शारंगपानीके नाहीं बाण विराजत ॥ यम कुबेर इन्द्र हैं जानत रचि पचिकै रथ साजत ॥ रघुपति रवि प्रकाश सो देखौ उडुगन ज्यों तोहि भाजत ॥ ज्योंसहगमनसुन्दरीकेसँगबहुबाजन

हैं बाजत । तैसे सूर असुर आदिक सब सँग तेरे हैं लाजत ॥ १२६ ॥ रावण प्रति श्रीराम संदेश ॥
जानिहौं बल तेरो रावण। पठवों कुटुम सहित यम आगे नेक देहि धौं मोको आवन॥दारुणकीश सुभट वर सन्मुख लैहों संग त्रिदश बल पावन।अगिनि पुंज सित बाण धनुष धरि तोहिं असुर-कुल सहित जरावन ॥ करिहौं नाम अचल पशुपतिको पूजा बिधि कौतुक देखरावन । असुरमुख छेदि पक्क नवफल ज्यों अरु शंकर दशशीश चढावन ॥ देहौं राज्य विभीषण जनको लंकापुर रघुआन चलावन । सूरदास निस्तरिहैं इहि यश कृपन दीन जन नव यश गावन ॥ १२७ ॥
रावण प्रति अंगद उत्तर ॥ मोको राम रजायसु नाहीं ।नातर सुन दशकंध निशाचर प्रलय करौं छिन माहीं ॥ पलटि धरौं नवखंड पुहुमि पर जो बल भुजा सँभारौं । राखों मेलि भंडार सूर शशि नभ कागदज्यों फारौं॥जारौं लंक छेदि दशमस्तक सुर संकोच निवारों॥श्रीरघुनाथ प्रतापचरणते उर-ते भुजा उपारौं ॥ रे रे चपल स्वरूप ढीठ तू बोलत वचन अनेरो।चितवै कहा पान पल्लव पुट प्राण प्रहारोंतेरो॥गये सशंकयुगल बंधूबन जान्यो असुरअहेरो।तीनि लोक बिख्यात विशदयश प्रलय नामहै मेरो ॥रे रे अंध बीसहू लोचन परत्रियहरन बिकारी। सूने भवन गवन तैं कीनो शेष रेख नहिं टारी॥ अजहूं कह्यो सुनैजो मेरो आये निकट मुरारी। जनकसुता लै चलि पाँइन पर श्रीरघुनाथ पियारी॥ संकट परे जु शरण पुकारों तौ क्षत्री न कहाऊं । जन्महिते तापस आराध्यो कैसेहित उपजाऊं॥अब तो सूर यहै बनिआई हरिको निजपद पाऊं। ये दशशीश ईश निर्मायल कैसे चरण छुआऊं ॥ १२८ ॥अंगदवचन राग मारू ॥मूरख रघुपति शत्रु कहावत ।जाके नाम ध्यान सुमिरणते कोटि यज्ञ फल पावत॥ नारदादि सनकादि महामुनि सुमिरत मन शुचि ध्यावत । अंबरीप प्रहलाद भक्त बलि निगम नेति जिहि गावत ॥ जाकी घरनि हरी छल बल करि ताते बिलम न लावत । दश अरु आठ शंख बनचर लै लीला सिंधु बँधावत ॥ जाइ मिलौ कौशलनरेशको मन अभिलाप बढावत।दै सीता लंकेश पाइँ परि तब लंकेश कहावत॥तू भूल्यो दश शीश बीस भुज मोहिं गुमान दिखावत। कंध उपारि डारि भूतलमें सूर सकल दुख पावत ॥
॥ १२९ ॥रावण भेद उपजावन अंगद राम प्रशंसा । राग मारू ॥ रे कपि क्यों पितु बैर बिसारयो । तो सम कुलकन्या किन उपजी जो कुलशत्रु न मारयो ॥ ऐसो सुभट नहीं इहिमंडल देख्योबालि समान । तासों कियो बैर मैं हारयो कीनी पैज प्रमान ॥ ताको वधन कियो इहि रघुपति तो देखत विदमान । ताकी शरण रह्यो क्यों भावे शबद सुनो दै कान॥रे दशकंध अंध मति मूरख क्यों भूल्यो इहि रूप । सूझत नहीं बीस हू लोचन परयो तिमिरके कूप ॥ धन्य पिता जापर परिफुल्लित राघव भुजा अनूप । वा प्रतापकी मधुर विलोकनि गहि वारौं सतरूप॥जो तुहि नाहिं बांह बल पौरुप अर्ध राज देउँ लंक। मो समेत ये सकल निशाचर लरत न मानें शंक॥जब रथ साजि चढों रणसन्मुख जीय न आनों दंग।राघव सैन समेत सँहारों करों रुधिर मय अंग॥श्री-रघुनाथचरण व्रत उर धारि क्यों नहिं लागत पाइ । सबके ईश परमकरुणामय सबहीको सुखदाइ॥ हौं जु कहत लै चलो जानकी छांडि सबै दंभान। सन्मुखहोइसूरकेस्वामी भक्तन कृपानिधान ॥
॥ १३० ॥इन्द्रजीत युद्ध आज्ञा अंगद पायरोपन रागमारू ॥ लंकपती इन्द्रजीतको बुलायो । कह्यो तिहि जाहु रणभूमि दल साजिकै कहा भयो राम दल जोरि ल्यायो ॥ कोपि अंगद कह्यो धरों धर चरण मैं ताहि जो सकै कोऊ उठाई।तो विना युद्ध किये जाहिं रघुबीर फिरि यह सुनत उठे जोधा रिसाई ॥ रहे पचिहारि नहिं पार कोऊ सक्यो उक्यो तब आप रावण खिसाई । कह्यो

अंगद कहा मम चरणको गहत चरण रघुवीर गहु क्यों न जाई ॥ सुनत यह सकुच कियो गवन निज भवनको बालिसुत हूँ वहां ते सिधायो । सूरके प्रभुको पाँइ परि यों कह्यो अंध दशकंधको काल आयो ॥१३१॥ अंगद आवन राघव निकट ॥ बालिनन्दन आइ शीश नायो। अन्ध दशकंधको काल सूझत प्रभू मैं कई भेदबिधि कहि जनायों॥इन्द्रजितचढ्योनिजसैनसबसाजिकै रावरी सैन हू साज कीजै । सूर प्रभु मारि दशकंध थपि बंधु तिहि जानकी छोरि यश गात लीजै ॥१३२॥ श्रीरघुनाथ प्रति लक्ष्मण प्रतिज्ञा युद्ध निमित्त॥रघुपति जो न इंद्रजित मारौं।तौ न होउँ चरणनको चेरो जो न प्रतिज्ञा पारौं ॥ जो दृढ़ बात जानिये प्रभुजू धर्म गये कहि बान निवारौं। शपथराम परताप तिहारे खंड खंड करि डारौं ॥ कुंभकर्ण दशशीश बीसभुज दानवदलहि बिडारौं।तबै सूर संधान सफल है रिपुको शीश उपारौं ॥१३३॥ लक्ष्मणका सेना सहित युद्ध गवन ॥ लछन दल संग लये लंक घेरी। वसुमति पग्र अरु अप्ट आकाश भये दिश विदिश कोउ नहिं जात हेरी॥ऋच्छ पलवंग किलकार लागे करन आन रघुनाथकी जाइ फेरी ।.पाट गये टूटि परी लूट सब नगरमें सूर दरवान कह्यो जाइ टेरी ॥ १३४ ॥ मंदोदरी वचन रावण प्रति ॥ रावन उठि निरखि देखि आजु लंक घेरी।कोटि जतन करि रहीनहिं सीख सुनी मेरी॥गहिगहातकिलकिलात अन्धकार आयो। रविको रथ सूझत नहिं धरनि गगन छायो ॥ तोरि पाट लूट परी भागे दरवाना। लंकामें शोर पर्‍यो अजहुँ तैं न जाना॥फोरि फारि तोरितारि गगन होत गाजै । सूरदास लंकापर चक्र शंख बाजै ॥ १३५ ॥ अन्यच्च ॥ लंका फिरि गई राम दुहाई । कहति मदोदरि सुन पिया रावण तैं कहा कुमति कमाई ॥ दश मस्तक मेरे वीस भुजा हैं सौ योजनकी खाई । मेघनादसे पुत्र महाबल कुम्भकर्णसे भाई ॥ रहु रहु अबला बोल न बोलौ उनकी करत बडाई । तीनि लोकते पकरिमंगाऊं वै तपसी दोउ भाई॥तुम्हें मारि महारावण मारैं देयँ विभीषण राई । पवनको पूत महाबल जोधा पलमें लंक जराई ॥ जनकसुतापति हैं रघुवरसे संग लक्ष्मण से भाई ॥ सूरदास प्रभुको यश प्रगट्यो देवनि बंदि छुड़ाई ॥१३६॥ मेघनाद युद्ध नारद शिक्षा नाग फाँस मोचन ॥ राग मारू ॥ मेघनाद ब्रह्मा वर पायो।आहुति अगिनि जिवाइ सँतोषी निकस्यो रथ बहु रतन बानायो॥आयुध धरे समेत कवच सजि गर्जि चढ्योरणभूमिहि आयो।मनो मेघनायकऋतु पावस बाणवृष्टि करि सेन खपायो॥कीनो कोप कुँवर कोशलपति पंथ अकास सायकनि छायो। हँसि हँसि नागफांस शर साधन बंधन बंधु समेत बँधायो॥नारदस्वामी कह्यो निकट है गरुडासन काहे बिसरायो । भयो तोष दशरथके सुतको मुनिको ज्ञान लखायो ॥ सुमिरन ध्यान जानिकै अपनो नागफांसते सैन छुडायो। सूर विमान चढे सुरपुर लौं आनँद अभय निसान बजायो ॥ १३७ ॥ कुम्भकर्ण रावण संवाद । राग मारू ॥ लंकपति अनुज सोवत जगायो । लंकपुर आइ रघुराइ डेरो दियो त्रिया जाकी सिया मैं ले आयो॥ तैं बुरी बहुत कीनी कहा तोहिं कहौं छांडि यश जगत अपयश बढायो। सूर अब डर न करि युद्धको साज करि होइहै सोइ जो दई भायो ॥ १३८॥ लक्ष्मण वचन खड्गधारण राग मारू ॥ लछन कह्यो करवार सँभारों । कुम्भकर्ण अरु इन्द्रजीतको टूक टूक करि डारों॥महाबली रावण जिहि बोलत पलमें शीश सँभारों । सब राक्षस रघुवीर कृपाते एकहि बाण निवारों ॥ हँसि हँसि कहत विभीषणसों प्रभु महाबली रण भारों।सूर सुनत रावण उठि धायो क्रोध अनल तन धारों॥१३९॥ रावण लक्ष्मण युद्ध, लक्ष्मण मूर्छा॥ राग मारू॥ रावण चल्यो गुमान भर्‍यो । श्रीरघुनाथ अनाथबंधुसों सन्मुख कहत खर्‍यो ॥ कोप

धरो रघुबीर धीर तब लक्ष्मण पाँय परचो । तेरे तेज प्रताप नाथ जू मैं कर धनुष धरचो ॥ सारथि सहित असुर बहु मारे रावण क्रोध जरचो। इन्द्रजीत लीनी जब सेंथी देवन हहा करचो॥ छूटी बिज्जु राशि वह मानो भूतल बंधु परचो। करुणा करत कुँवर कौशलपति नैनन नीर झरचो॥ सूरदास हनुमान दीन ह्वै अंजलि जोरि खरचो। आज्ञा देहु सजीवन लाऊं गिरि उचाय सिगरचो ॥ १४० ॥ श्रीराम करुणा॥ राग मारू॥ निरखि मुख राघव धरत न धीर। भये अरुण विकराल कमलदल लोचन मोचत नीर॥ बारह बरस नींद है साधी ताते विकल शरीर। बोलत नहीं मौन कहा साधी बिपति बढावन बीर॥ दशरथ मरन हरन सीता-को रन वीरनकी भीर।दूजो सूर सुमित्रासुत बिनु कौन धरावै धीर॥ १४१॥ अन्यच्च ॥ अबहीं कौन-को मुख हेरों। रिपुसैना समूह जल उमडे काहि संगलै फेरों॥ दुखसमुद्रजिहि वारपार नहिं तामें नाव चलाई। केवट थक्यो रह्यो अधबीचककौनआपदा आई ॥ नाहिंन भरत शत्रुघनसुन्दर जासों चित्त लगायो। बीचहि भई औरकी औरै भयो शत्रुकोभायो॥ मैंनिज प्राण तजौंगोसुनकपितजिहैजानकि सुनिकै। ह्वैहै कहा बिभीषणकी गति यहै सोच जिय गुनिकै॥ बारबारशिर लै लक्ष्मणकोनिरखि गोदपर राखै। सूरदास प्रभु दीन वचन यों हनूमानसों भाखैं ॥ १४२ ॥ श्रीराम हनू प्रशंसा ॥ कहां गयो मारुतपुत्र कुमार। ह्वै अनाथ रघुनाथ पुकारैं संकटमित्र हमार॥ इतनी बिपति भरत सुनि पावैं आवैं दलहिसजूथ। करगहिधनुष जगतको जीतैं कितक निशाचरयूथ॥ नाहिंन और बियो कोउ समरथ जाहिपठाऊं दूत। वह अबहीं पौरुष दिखरावै होइ पवनके पूत॥ इतनोवचन श्रवण सुनि हरष्यो फूल्यो अंग न मात। लै लै चरण रेणु निज प्रभुकी रिपुके शोणित न्हात॥ हो परबल पुनीत केशरिसुत तुम हितबंधु हमारो ॥ जिह्वा रोम रोम प्रति नाहीं पौरुष गनों तुम्हारो ॥ जहां जहां जेहि काल सँभारे तहँ तहँ त्रास निवारे। सूर सहाय कियो वन वसिकै वन बिपदादुख टारे ॥ १४३ ॥ राघव प्रति हनुमत वचन लक्ष्मण मूर्छा उपाय ॥ रघुपति मन संदेह न कीजै। मो देखत लक्ष्मण क्यों मरिहै मोको आज्ञा दीजै॥ कहोतु सूरज उगनदेहुँ नहिं दिशि दिशि बाढै ताम। कहो तु गन समेत ग्रसि खाऊं यमपुर जाइन राम ॥ कहो तु कालहि खंड खंड करि टूक टूक करि काटों। कहोतु मृत्युहि मारि डारिकै खोदि पतालहिं पाटों॥ कहोतु चन्दहि लैअकाशते लक्ष्मण मुखहि निचोरों। कहो तुपैठि सुधाके सागर जल समेतमैं घोरों॥ श्रीरघुवर मोसोजनजाके ताहि कहा सकराई। सूरदास मिथ्या नहिं भाषत मोहिं रघुनाथ दुहाई॥ १४४ ॥ सजीवन निमित्त हनुमत गवन ॥ कह्यो तब हनुमतसों रघुराई । द्रोणागिरि पर आहि सजीवनि वैद सुषेन बताई॥ तुरत जाइ लै ह्यांते आवो विलंब न करि अब भाई ॥ सूरदास प्रभु वचन सुनत हनुमंत चल्यो अतुराई ॥ १४५॥ हनू परवत लावन भरतामिलाप राग मारू ॥ दौनागिरि हनुमान सिधायो। संजीवनिको भेद न पायो तब सब शैल उचायो॥ चितैरह्यो तब भरतदेखिकै अवधपुरीजब आयो। मनमें जानि उपद्रव भारी बाण अकास चलायो ॥ राम राम यह कहत पवनसुत भरत निकट तब आयो। पूछ्यो सूर कौन है कहि तू हनुमत नामसुनायो ॥ १४६ ॥ भरतकुशलप्रश्नपूछन हनू लक्ष्मण मूर्छा कथन, करुणामें सुमित्रा धैर्य ॥ कहोकपिरघुपतिकोसंदेश। कुशलबंधुलक्ष्मणबैदेहीश्रीपति सकल नरेश॥ जिन पूछो तुम कुशल नाथकी सुनो भरत बलबीर। बिलखवदन दुखधरेसियाकोहैं जलनिधिके तीर॥ वनमें बसत निशाचर छल करि हरी सिया ममभात। ताकारनलक्ष्मणशरलाग्यो भये राम बिन भ्रात ॥ इतनो वचन श्रवन सुनि सुनिकै सवनि पुहुमि तन जोयो। त्राहित्राहिकहि

पुत्र पुत्र कहि लोटि सुमित्रा रोयो॥ धन्य सुपुत्र पितापन राख्यो धन्य सुकुल जिहि लाज।सेवक धन्य अंतके अवसर आवै प्रभुके काज ॥ कत रघुनाथ सूरके कारण मोको लेन पठाये।थक्यो सुमध्य अर्धनिशि बीती को लक्ष्मणहि जियावै॥पुनि धरि धीर कह्यो धनि लक्ष्मण रामकाज जो आवै।सूर जियैतौ जगयश पावैमरि सुरलोक सिधावै १४७॥ धैर्यसहित सुमित्रा वचन राग मारू॥धनि जननी जो सुभटहि जावै।भीर परे रिपुकोदलदलिमलिकौतुककरिदिखरावै॥कौशल्यासोंकहति सुमित्रा जिनि स्वामिनि दुख पावै।लक्ष्मण जनि हौं भई सपूती रामकाज जो आवै॥जीये तो सुखबिलसै जगमेंकीरति लोगनि गावै। मरै तु मंडल भेदि भानुको सुरपुर जाय बसावै ॥ लोह गहे लालच करि जियको औरौ सुभट लजावै ।सूरदास प्रभु जीति शत्रुको कुशल क्षेम घर आवै ॥ १४८ ॥हनुमत भरतप्रति उत्तर॥ राग मारू॥पवनपुत्र बोल्यो सतभाय।जाति सिराति राति बातनि हौं सुनो भरत चित लाय ॥ श्रीरघुनाथ सजीवनकारण मोको यहां पठायो। भयो अकाज अर्ध निशि बीती लक्ष्मण काज नशायो ॥स्यों पर्वत शर बैठि पवनसुत हौं प्रभुपै पहुँचाऊँ।सूरदास पांवरि मम शिरहै इहि बल भरत कहाऊं ॥१४९॥ कौशिल्या संदेश रामप्रति॥राग मारू ॥सुनो कपि कौशिल्याकी बात।इहिपुर जनि आवहु बिनुलछमन सुनो वच्छ रघुनाथ॥जिनतज्यो राजकाज माता हित तुम चरननि चित मानै। कहा कहूँ कछु कहत न आवैसज्जन होइ सु जानै॥लछमन सहित सकल सेनापति आनिराजपुरकीजे । नातरुसूरसुमित्रासुतपरवारिआपुनखोदीजे॥ १५० ॥ बिनती जाइ कहिये पवनसुत तुम रघुपतिकेआगे।या पुरजिनि आवहु बिनुलक्ष्मण जननीलाज न लागे॥मारुतसुत संदेश हमारो सुमित्रा कहि समुझावै । सेवक जूझि परै रन विग्रह ठाकुर तौ घर आवै ॥ जबते तुम गौने काननको भरत भोग सब छांडे । सूरदास प्रभु तुमरे दरशबिनुदुख समूहउरगाडे॥ १५१ ॥ हनुमानसजीवन लावन लक्ष्मण चेत होन ॥ राग सारंग॥हनुमान सजीवन ल्यायो। महाराज रघुवीर धीरको हाथ जोरि शिर नायो ॥ पर्वत आनि धरयो सागर तट भरत सँदेश सुनायो ॥ सूर सजीवन दै लक्ष्मणको मूर्छित फिरैं जगायो ॥ १५२ ॥ श्री राम वचन जय प्रतिज्ञा सहित॥ राग कान्हरा ॥दूसरे कर बाण न लेहौं । सुन सुग्रीव प्रतिज्ञा मेरी एकहि बान असुर सब है हों ॥शिवपूजा जिहि भांति करीहै सोइ पद्धति परतक्ष दिखै हौं। देत प्रहार पाय फल वर्जित शिर माला कुल सहित चढैहौं ॥ मनो तूलगन परत अगिन मुख जानि जडनि यमपंथ पठैहौं।करिहौं नहीं बिलंब कछू अब उठि रावणसन्मुख ह्वैधैहौं॥इमि दमि दुष्ट देव द्विजमोचन लंक विभीषण तुमको देहौं । लक्ष्मण सिया समेत सूर कपि सब सुख सहित अयोध्या जैहौं॥ ॥१५३ रावण कुलवध॥राग मारू॥आजुअति कोपे हैं रन राम । ब्रह्मादिक आरूढ बिमानन देखें सुर संग्राम ॥धर तन दिव्य कवच सजि करि अरु कर धारयो शारंग। शुचि करि सकल बान सूधे करि कटितट कस्यो निषंग ॥सुरपुरते आयो रथ सजिके रघुपति भयो सवार। कांपी भूमि कहा अब ह्वैहै सुमिरत नाम मुरारि ॥ क्षोभित सिंधु शेष शिर कंपित पवनगती भइ पंग। इन्द्र हँस्यो हर हँसि बिलखान्यो जानि वचन भयो भंग ॥ धर अंबर दिशि विदिशिबढेअतिसायक किरन समान। मानो महाप्रलयके कारन उदित उभय षट भान॥ टूटत ध्वजा पताक छत्र रथ चाप चक्र शिर त्रान। जूझत सुभट जरत ज्यों दौ द्रुम बिनु शाखा बिनु पान ॥ शोणित छिछ उछरि आकाशहि गज बाजिन शर लागी । मनो नगर रन तननि धरनिते उपजी है अति आगी ॥ उठि कबंध भहरात भीत ह्वै निकसतहै जरिजागि।फिरतशृगाल सच्यो सो काटत चलत बिसरि लै भागि॥ रघुपति रिस पावक प्रचंड अति सीता श्वास समीर।रावण कुल अरु कुम्भकर्ण बन सकल सुभट रणधीर ॥भये भस्म कछु बार न लागी ज्यों ज्वाला पट

चीर। सूरदास प्रभु अपुने बाहुबल कियो निमिष मय कीर ॥ १५४ ॥ रघुपति अपुनो प्रण प्रतिपारचो।तोरचो कोपि प्रबल गढ रावण टूक टूक करि डारचो ॥ कहुँ भुज कहुँ धर कहुँ शिर लोटत मनो मदच मतवारो। डरपत वरुण कुबेर इन्द्र यम महा सुभट तन भारो ॥रह्यो मांस को पिंड प्राण लैगयोबाण अनियारो। जाके नव ग्रह परे पाटि तर कूपै काल उसारचो॥ सो रावण रघुनाथछिनकमें कियो गिद्धको चारो।शिर सँभारि लै गयो उमापति रह्यो रुधिरकोगारो॥ छोरे और सकल सुखसागर बाँधि उदधि जल खारो। सुर नर मुनि सब सुयश बखानत दुष्ट दशानन मारचो ॥दियो विभीषण राज्य सूर प्रभु कियो सुरनि निस्तारचो।बंधु सहित जानकी संग लै अवधपुरी पग धारचो ॥ १५५ ॥ रावण मरण समय मंदोदरी आदि विलाप ॥ करुणा करति मंदोदरी रानी। चौदह सहस्र सुंदरी ऊभी उठै न कंत महा अभिमानी ॥ बार बार बरज्यो नहिं मानत जनकसुता तैं कत घर आनी। ये जगदीश ईश कमलापति सीता तिया तैं जु करि जानी॥ लीन्हे गोद विभीषण रोवत कुल कलंक ऐसी मति ठानी।चोरी करी राजहू खोयोअल्प-मृत्यु तेरी आइ तुलानी ॥ कुम्भकर्ण समुझाइ रहे पचि दे सीता मिलि शारंगपानी। सूर सबनि-को कह्यो न मान्यो त्यों खाई अपनी रजधानी ॥ १५६ ॥ आकाशते अमृत वर्षा ॥ सुर-पतिहि बोलि रघुवीर बोले।अमृतकी वृष्टि रणखेत ऊपर करो सुनत तिन अमियभंडार खोले॥ उठे कपि भालु तत्काल जय जय करत असुर भये मु रघुवर निहारे। सूर प्रभु अगम महिमा न कछु कहि परत सिद्ध गंधर्व जय जय पुकारे ॥ १५७ ॥ सीता मिलाप ॥ लक्ष्मण सीता देखी जाई। अति कृप दीन छीन तन प्रभु विन नैननि नीर बढाई ॥ जाम्ववंत सुग्रीव विभीषण करी दण्डवत आई।आभूषण बहु मोल पटंबर पहिरो मात बनाई ॥ विनु रघुनाथ मोहिं सब फीके आज्ञा मेटि न जाई। पुहुप विमान बैठि बैदेही त्रिजटा तब गुहराई॥ देखत दरशराम मुख मोरचो सिया परी मुरछाई। सूरदास स्वामी तिहुँपुरके जग उपहास डराई ॥ १५८ ॥ परीक्षा हेतु सीता अग्नि प्रवेश। राग सोरठ ॥ लक्ष्मण रचो हुताशन भाई। यह सुनि हनूमान दुख पाये मोपै लख्यो न जाई ॥ आसन एक हुताशन बैठी मानो कुंदनकी अरुणाई। जैसे रवि इक पल घन भीतर बिनु मारुत दुरिजाई ॥ लै उछंग उत्संग हुताशन निष्कलंक रघुराई। लै विमान बैठारि जानकी कोटि बदन छबि छाई ॥ दशरथ कही देवहू भाषी व्योम विमान निकाई।सियारामलै चले अवधको सूरदास बलि जाई॥१५९॥ कौशिल्या शकुन विचार काग वचन। राग सारंग ॥ बैठी जन-नि करति शगुनौती। लक्ष्मण राम अब मिलैं मोको दोउ अमोलक मोती ॥इतनी कहतसुकाग उहांते हरीडार उडि बैठ्यो। अंचल गांठ दई दुख भाज्यो सुख जो आनि उर पैठ्यो॥जौलों हौं जीवन भर जीवों सदा नाम तुव जपिहौं। दधि ओदन दोना करि देहौं अरु माइनमें थ-पिहौं ॥ अबके जो परचो करि पाऊं अरु देखौं भरि आंखें। सूरदास सोनेके पानी मढि हौं चोंच अरु पांखें॥१६०॥अंगद बसीठी रावण वध आदि पर्य्यन्त लीला। राग मारू ॥ बालिनंदनबली बिकट बनचर महा द्वार रघुवीर को वीर आयो। और ते दौर दरवान दशशीशसों जाय शिर नाय यों कह सुनायो ॥ सुनि श्रवण दशवदन दशन अभिमान कर नैनकी सैन अंगद बुलायो। देखि लंकेश कपिभेश दर दर हँस्यो सुन्यो भट कटक को पार पायो ॥ विविध आयुध धरे सुभट सेवत खरे छत्रकी छांह निर्भय जनायो। देव दानव महाराज रावण सभा कहन को मंत्र तहां कपि पठायो ॥ रंक रावण कहा टेक तेरो इतो दोउ कर जोरि विनती विचारो।परम अभिराम रघुनाथके रोमपर बीस भुज शीश दश वारि डारो।झटकि हाटक मुकुट

पटकि भट भूमिसों झारि तरवारि तेरो शिर संहारों । जानकीनाथके हाथ तेरो मरण कहा मतिमंद तोहिं मध्य मारों ॥ पाक पावक करै वारि सुरपति भरै पवन पावन करै द्वार मेरे । गान नारद करै ज्ञान सुरगुरु कहै वेद ब्रह्मा पढै पौरि टेरे ॥ शेष बासुकि प्रभृति नाग गंधर्व गण सकल वसुजीति मैं करे चेरे । सुनि अरे शठ दशकंधको कौन भय राम तपसी दये आनि डेरे॥ तपबली सत्यतापस बली तपबिना वारि पर कौन पाषाण तारै। कौन ऐसो बली सुभट जननी जन्यो एकही बाण तकि वालि मारै॥ परमगंभीर रणधीर दशरथतनय शरण गये कोटि अवगुण बिसारै। जाइ मिलि अंध दशकंध गहि दंत गुण तौ भलै मृत्यु मुखते उबारै ॥ कोपि करिवार गहि काल लंकाधिपति मूढ कहा रामको शीश नाऊं ।शंभुकी सप्त सुनि कुकपि कायर कृपण श्वास आकाश बनचर उड़ाऊं ॥ होइ सन्मुख भिरों शंक नहिं मन धरों मारि सब कटक सागर बहाऊं।कोटि तेंतीस मम सेवनिशिदिन करत कहाअब राम नरसों डराऊं॥परो भहराय भभकत रिपु घायसों करि कदन रुधिर भैरों अघाऊं । सूर साजैं सबै देव दुंदुभि अबै एकते एक रण करि विताऊं॥१६१॥बध्योरावण सुन्यो शीशतब शिव धुन्योउमडि रण रंगरघुवीर आये।रुंडभक रुंड धुकि धकतधरणी परै रुधिर सरिता नहीं पार पाये॥राम शर लागि मनु आगि गिरिपरजरी उछलि छिछिन शरनि भानु छाये ॥ मारि दशकंध पथ बंधुको सूर प्रभु राजीवनैन घर सिया ल्याए ॥ १६२ ॥(उत्तर कांड) अयोध्या प्रशंसा ॥राग मारू ॥ हमारो जन्मभूमि यह गाउँ । सुनहु सखा सुग्रीव विभीषण अवनि अयोध्या नाउँ॥देखत बन उपवन सरिता सर परम मनोहरठाउँ। अपनो प्रकृति लिये बोलतहौं सुरपुरमें न रहाउं ॥ ह्यांके बासी अवलोकत हौं आनँद उर न समाउँ । सूरदास जो बिधि न सकोचे तो बैकुंठ न जाउँ॥१६३॥ राम आगमन श्रवण सुनि भरत रचना करन उत्सव प्रकाश । राग वसंत ॥राघव आवति हैं अवधि आजु।रिपु जीते साधे देवकाजु॥प्रभुकुशल बधु सीतासमेत।जस सकल देश आनंद देत॥ कपिशोभितसकलअनेकसंग। ज्यौंपूरणशशिसागर तरंग॥सुग्रीव विभीषण जाम्बवंत।अगद केदारसुखेन संत॥नलनीलद्विविद केसरिगवच्छ।कपि कहे मुख्य और अनेक लच्छ॥ जब कही पवनसुत विविध बात । तब उठी सभा सब हर्षगात॥ ज्यों पावस ऋतु घन प्रथम घोर । जल जीवक दादुर रटत मोर ॥ जब सुने भरत पुर निकट भूप । तब रच्यौ नगर रचना अनूप॥प्रतिप्रति गृह तोरण ध्वजा धूप। सजे सकल कलश अरु कदलि जूप॥ दधि हरददूब फल फूलपान । कर कनकथार त्रिय करतगान ॥ सुनि भरे वेद ध्वनि शंख नाद। सुनि निरखि पुलक आनँद प्रसाद ॥ देखत प्रभुकी महिमा अपार।सब विसरि गये मन बुधि विकार॥जय जय दशरथ कुलकमल भान।जय कुमुद जननि शशि प्रजा प्रान ॥ जयदिव भूतल शोभा समान।जय जय जय सूर न शब्द आन ॥ १६४ ॥ श्रीराम वचन सुग्रीव प्रति भरत दशावन परस्पर मिलाप । राग मारू ॥ देखो कपिराज भरत वे आये। मम पांवरी शीश पर जाके कर अँगुरी रघुनाथ बताए ॥ क्षीन शरीर बीरके बिछुरे राग भोग चितते बिसराए ॥ लघु दीरघ तपसा अरु सेवा स्वामी धर्म सब जगहिं सिखाये ॥ पुहुप विमान दूरिही छांडे चरण चपल प्रभु प्रण करिधाये । आनँद मगन सदन सुत कैकई कनक दंड ज्यों गिरत उठाये ॥ भेंटत आंसू परत पीठिपर गद्गद गिरा नैन जल छाए । ऐसे मिली सुमित्रा सुतको विरह अग्नि तनु जरत बुझाए ॥ यथायोग भेंटे पुरवासी शूल मिटी सुखसिंधु पठाए । सिया राम लक्ष्मण मुख निरखत सूरदासके नैन सिराए ॥ १६५ ॥ कौशल्या सुमित्रा अदि आरती मंगलाचार ।राग मारू ॥अति

सुख कौशल्या उठि धाई । उदित वदन अरु मुदित सदनते आरति साजि सुमित्रालयाई॥ ज्यों सुरभी बन वसति बच्छबिनु परवश पशुपनिकी बहराई । चली साँझ समुहाय स्रवत थन उमँगि मिलन जननी दोउ आई ॥ अमी वचन सुनि होत कुलाहल देवन दिविदुंदुभीबजाई । दधिफल दूब कनकके कोपर आरति युवति विचित्र बनाई ॥ वरण वरण पट पडत पाँवडे नैननि सकल सुखद ही छाई । पुलकित रोम हर्ष गदगद सुर युवतिन मंगल गाथा गाई॥निजमन्दिरमें आनि तिलक दै द्विजन अशीश सुनाई । सिया साहित सुख लेहो ह्यां तुम सूरदास बलि जाई॥१६६॥ श्रीराम राज्याभिषेक ॥ राग मारू ॥ मणि मय आसन आनि धरे । दधि मधु नीर कनकके कोपर आपुन भरत भरे ॥ प्रथम भरत बैठाइ बंधुको यह कहि पाँइ परे । हौं पावन प्रभुचरण पखारों रुचि करि आप करे ॥ निजकर चरण पखारि प्रेम रस आनँद आँसु ढरे । ज्यौं शीतल संताप सलिल दै शुद्धि समूह करे ॥ परसत पाणि चरण पावन दुख अँग अँग सकल हरे । सूर सहित आमोद चरण जल लैकर शीश धरे ॥१६७॥ रागआसावरी ॥ राज समाज वर्णन ॥ विनती केहि बिधि प्रभुहि सुनाऊं।महाराज रघुवीर धीरको समय न कबहूं पाऊं॥ याम रहत यामिनके बीते तिहि औसर उठि धाऊं । सकुच होत सुकुमार नींदसे कैसे प्रभुहि जगाऊं ॥ दिनकर किरण उदित ब्रह्मादिक रुद्रादिक इक ठाऊं।अगणित भीर अमर मुनिगनकी तिहिते ठौर न पाऊं॥उठत सभा दिनमध्य सियापति देखि भीर फिरिआऊं।न्हात खात सुख करत साहिबी कैसेकर अनसाऊं ॥ रजनीमुख आवत गुण गावत नारद तुम्बर नाऊं । तुमहीं कहा कृपणहौं रघुपति किहिबिधिदुख समझाऊं॥ एक उपाय करौं कमलापति कहो तो कहि समझाऊं । पतित उधारण सूर नाम प्रभु लिखि कागद पहुंचाऊं ॥ इन्द्र दुराचार इन्द्रअहल्या प्रति गौतम शाप।राग बिलावल ॥ सुरपति गौतम नारि निहारि।आतुर ह्वै गयो बिनाविचार॥काग रूपकरि ऋषि गृहआयो।अर्धनिशा तेहिं बोल सुनायो॥ गौतम लख्यो प्रात है भयो।न्हान काज सो सरिता गयो॥ तब सुरपति मन माहिं बिचारी ।पतिव्रता है गौतम नारी ॥ गौतम रूप बिना जो जैये । ताके शाप अग्निसों दहिये ॥ गौतम रूप धारि तहँ आयो । मूर्छित भयो अहिल्या पायो ॥ कह्यो अहिल्या तू को आहि।वेगि यहाँते बाहिर जाहि॥यहि अंतर गौतम ऋषि आयो।इन्द्र जानि यह बचन सुनायो॥तू इन्द्राणी तजि ह्यां आयो । मूरख तैं परत्रिय मन लायो॥इक भगकी तोहिं इच्छा भई।भग सहस्र में तो तन दई॥इन्द्र शरीर सहस तन भई । छुप्यो सो कमल नालमें जई॥काल बहुत ता ठौर वितायो । सुनि गुरु ऋषिन सहित तब आयो॥यज्ञ कराइ प्रयाग न्हवायो।तौहू पूरवतनु नहिं पायो॥तबसब ऋषिन दई आशीश।भगते नेत्र करो जगदीश॥ भगअस्थान नेत्र तब भये।ऋषि इन्द्रहिलेसुरपुर गये ॥ परत्रिय मोह इन्द्र दुख पायो।सो नृपमें तोहि कहि समझायो॥परत्रिय नेह करै जोकोई। जीवत नरक परत है सोई ॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो।सूरदास त्योंहीकहिगायो॥१६९॥ राजा नहुष राज्य प्राप्ति । इन्द्राणी चाह । ब्रह्म शापते सर्प देह पावन ॥ राग बिलावल ॥ सुरपतिको शाप जब भयो । सो सुरपुर लज्जित नाहिं पायो ॥ नहुष नृपतिपै ऋषि सब आई । कह्योसुरराज करोतुम जाई ॥ नहुप इन्द्र राज जब पायो । इन्द्राणीको देखि लुभायो ॥कह्यो इन्द्राणीमोपैआवै।नृपसों ताको कहा बसावै ॥ सुरगुरुसों यह बात सुनाई । अवधि करन तिहि कहि समुझाई ॥ शची नृपतिसों सोई भाषी । नृप सुनिकै हृदयमें राखी॥ शची अग्निको तुरत पठायो ।सुरपतिदशा देखि सो आयो ॥ इन्द्राणी सुनि व्याकुल भई। अवधि घरी व्यतीत ह्वै गई॥ तब तिन ऐसी बुधि

१ सुर ।

उपजाई । इहि अंतर सो नहुष बुलाई ॥कह्यो तुम अश्वमेध नहिं कियो ।ऋषिआज्ञा तुम सुरपति भयो॥ विप्रन पर चढिकै जो आवहु।तो तुम मेरो दर्शन पावहु॥नृपति ऋषिनपरह्वै असवार। चलियो तुरत शचीके द्वार ॥ काम अंध कछु रहि न सँभार। दुर्वासा ऋषिको पग मार ॥ सर्प सर्प कहि बारंबार । तब ऋषि दीन्हो ताको डार ॥ कह्यो सर्प तैं भाष्यो मोहि।सर्परूपही तू नृप होहि ॥ जबै शापऋषिसों नृप पायो । तब ऋषिचरण माथोनायो।। इहशरापमुक्तिज्योंहोइ। ऋषि मोको अब भाषो सोइ॥कह्यो युधिष्ठिर देखै जोइ । तब उद्धार तेरो नृप होइ॥नृप ऐसो है परत्रिय प्यार ।मूर्ख करत सो बिना बिचार ॥ जोशुक नृपसोंकहिसमुझायो । सूरदासत्योंही कहि गायो ॥ १७० ॥ कच संजीवनी विद्या हेतु शुक्र गेह गवन, देवयानीलोभावन परस्पर शाप । राग भैरव ॥

अविगति गति कछु समुझि न परै।जो कछु प्रभु चाहै सो करै॥जिवकोकियो कछू नहिं होइ।कोटि उपाय करो किन कोइ ॥ एक बार सुरपति मन आई। शुक्र असुरको लेत जिवाई।मम गुरु हू विद्या पढि आवैं । मृतक सुरनको फेरि जिवावैं ॥ निज गुरुसों भाष्यो तिन जाई।शुक्र असुरको लेत जिवाई ॥ तुमहू यह विद्या सिखि आवहु । मृतक सुरनको तुमहु जिआवहु ॥ तब तिन कचको दियो पठाइ। कह्यो शुक्रको तिन शिर नाइ॥मैं आयो तुमपै शिर नाइ । तुम मुहिं विद्या देहु पढाइ ॥शुक्र कह्यो तासों या भाई ।देहौं विद्या तोहि पढाई ॥ विद्या पढै करै गुरुसेव ।सब बिधि सुधरैं ताके टेव ॥ शुक्रसुता देवयानी नाम । सब गुण पूर्ण रूप अभिराम ॥सुरगुरुसुतको देखि लुभाई।देखै ताहि पुरुपकी नाई॥कितक काल व्यतीत जब भयो।गाइ चरावनको सोगयो॥ असुरनमिलि यह कियो बिचार।सुरगुरुसुतको डारें मारि॥जो यह संजीवनि पढि जाई॥तौ हम शत्रुनि देय जिआई॥यह बिचार करि कचको मार्‍यो।शुक्रसुता दिन पंथ निहार्‍यो॥साँझ भये हू जब नहिं आयो । शुक्र पास तिन जाइ सुनायो ॥ शुक्र हृदयमें करी बिचार । कह्यो असुरन वहि डारो मार ॥ सुता कह्यो तिहि फेरि जिवावहु ।मेरे जियके सोच मिटावहु ॥ शुक्र ताहि पढि मंत्र जिवायो।भयो तासु तनयाको भायो॥पुनि हति मदिरा माहिं मिलाई।दिये दानवतिहि शुक्र पियाई ॥ तबते हत्या मद की लागी । यहै जानि सब देवन त्यागी॥शाप दिये ताको या भाई।जो तोहि पियै सु नरकहिं जाई॥कचबिनु शुक्रसुता दुख पायो।तब ऋपितासोंकहिसमुझायो॥ मार्‍यो कचको असुरन धाई । मदिरामें मुहि दियो पियाई॥ताहि जिवाऊं तो मैं मरों। जो तुम कहोसुअब मैं करों॥कह्यो बिनय करि सुनि ऋषिराई।दोऊ जिवैं सो करो उपाई॥संजीवनितब कचहिं पढाई । तासेती यों कह्यो समुझाई॥जब तुम निकरि उदरते आवहु।याविद्याकरि मोहिं जिवावहु॥ उदर फारि तिहिं बाहर कियो । मृतक कच ऐसी विधि जियो॥सुजब उदरते बाहर आयो । संजीवनि पढि शुक्र जिवायो ॥बहुत काल व्यतीत जब भयो । कच ऋषि ऋषितनयासों कह्यो॥ जो तुमरी मोहिं आज्ञा होई । तात मातको देखौं जोई ॥ऋषितनया कह्योमोहिं विवाह । कच कह्यो तू गुरुभगनी आहि । तब तिन शाप दियो या भाई। विद्या पढी सु वृथा जाई ॥ कचहूं ताहि कह्यो या भाई ।विप्र पुरुप तोहि मिलै न आई ॥ यह कहि कच अपनेगृह आयो । पिता पास वृत्तान्त सुनायो ॥ शुक्र नृपसों ज्यों कहि समुझायो । सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १७१ ॥ देवयानी कूप निपातन, राजा ययाति पाणिग्रहण, शुक्र शाप, राजपुत्र यौवन भोग, वैराग्य करि मोक्ष प्राप्ति । राग भैरव ॥

दानव वृषपर्वा बलभागी नाम शरमिष्ठा तासु कुमारी ॥ताहि देवयानीसों प्यार। रहै न तासों पल भरि न्यार ॥ एक बार ताके मन आई। न्हावन काज प्रयाग सिधाई।

तासँग दासी गईं अपार। न्हान लगीं सब कपडे डार॥ दनुजसुता तिहि नहीं निहारी। अँधियारी आई अति भारी॥बसन शुक्रतनयाके लीने। करत उतावलि परत न चीने॥ शुक्रसुता जब आई बाहर।बसन न पाए तिन तिहि ठाहर॥ असुरसुताको पहिरे देखि। मनमें कीनो क्रोध विशेखि॥ कह्यो मम बसन नहीं तुव योग। तुम दानव हम तपसी लोग॥ मम पितु दियो राज नृप करत। तू मम बसन हरत नहिं डरत॥ तिन कह्यो तुव पितु भिक्षा खात। बहुरि कहति हमसों ये बात॥या बिधि कहि करि क्रोध अपार। दीनों ताहि कूपमेंडार॥ नृपति ययाति अचानक आयो। शुक्रसुताको दरशन पायो॥दियो तब बसन आपनो डारि। हाथ पकरिके लियो निकारि॥ बहुरो नृप निज गेहसिधायो। सुता शुक्रसों जाइ सुनायो॥ शुक्र क्रोध करि नगर तियाग्यो। असुर नृपतिसुनिऋषिसँग लाग्यो॥जब बहुभाँति बिनयनृप करी। तब ऋषि यह बाणी उच्चरी॥ मम कन्या प्रसन्न ज्यों होय। करोअसुरपति अबतुमसोय॥ शुक्रसुतासों कह्यो तिन आई। आज्ञा होइ करौं सु उपाई॥ जो तुम कहौ करौं अब सोइ। तव पुत्री मम दासी होइ॥दासीसहस ताहिसँग भई। नृपपुत्रीदासीकरिदई॥सो सब ताकीसेवा करैं। दासी भाव हृदयमें धरैं॥इकदिन शुक्रसुतामन आई। देखौं जाइ फूल फुलवाई॥ लै दासी फुलवारी गई। पुहुप सेज रचि सोवत भई॥ असुरसुता तेहि व्यजन डुलावै। सोवत सेज सु अति सुख पावै॥ तेहि अवसर ययाति नृप आयो। शुक्रसुता तेहि बचन सुनायो॥नृपममपाणिग्रहण तुम करो। शुक्रसकुच हृदयमतिधरो॥ कचको प्रथमदियो मैं शाप। उनहू मोहि दियो करि दाप॥ ताको कोइ न सकै मिटाई। ताते व्याह करो तुम राई॥ नृपकह्यो कहो शुक्रसों जाइ। करिहौंजो कहिहैं ऋषिराइ॥ तब तिन कह्यो शुक्रसों जाइ। कियो व्याह ऋषि नृपति बुलाइ॥ असुरसुता ताके सँग दई। दासी सहस तासु सँग भई॥ दंपति भोग करत सुख पाए। शुक्रसुता यों द्वै सुत जाए॥ कह्यो शरमिष्ठा अवसर पाइ। रतिको दान देहु मोहिं राइ॥ नृप ताहूसों कीनो भोग। तीन पुत्र भये विधि संयोग॥ शुक्रसुता तिहि पुत्रन देखि। मनसों कीनो क्रोध विशेखि॥ कह्यो शरमिष्ठा सुत कहां पायो। उन कह्यो ऋषि किरपाते जायो॥बहुरि कह्यो ऋषिको कह नाम। कह्यो स्वप्न देख्यो अभिराम॥ पुनि पुत्रन सों पूछ्यो जाई। पिता नाम मोहिं कहो बुझाई॥ वडे पुत्र भाष्यो पुनि ताहि। नृपति पिता ययाति मम आहि॥ सुनि नृपसों कियो युद्ध बनाई। बहुरि शुक्र सेती कह्यो जाई॥ पाछेते ययातिहू आयो। ऋषि तासों यह वचन सुनायो॥ तैं यौवन मदते यह कीनो। ताते शाप तोहिं मैं दीनो॥ जरा अबहिं तोहिं व्यापै आइ।भयो वृद्ध तब कह्यो शिर नाइ॥ऋषि तुम तो शराप मोहिंदियो। पूरण काम नाहिं मैं कियो॥ ताते जो मोहिं आज्ञा होई।आयसु मानि करौं अब सोई॥ कह्यो जरा तेरी सुत लेय। अपुनो तरुनापा तोहिं देय॥ भोग मनोरथ तब तू पावै।मेरे वचन वृथा नहिं जावै॥वडे पुत्र यदुसों कह्यो आइ। उन कह्यो वृद्ध भयो नहिं जाइ॥ नृप कह्यो ताहि राज नहिं होई। वृद्धपनो लै राजा सोई॥ औरनहू सों जब नृप भाख्यो।नृपति वचन काहू नहिं राख्यो॥ लघु सुत नृपति बुढापो लयो। अपुनो तरुनापो तेहि दयो॥ वर्ष सहस्र भोग नृप कियो। पै संतोष न आयो हियो॥ कह्यो विषय ते तृप्ति न होई। भोग करौ कैसो किन कोई॥ तब तरुनापा सुतको दीनो। वृद्धपनो अपनो फिरि लीनो॥ बनमें करी तपस्या जाइ। रह्यो हरिचरणनसों चित लाइ॥ या बिधि नृपति कृतारथ भयो। सो राजा में तुमसों कह्यो॥ शुक ज्यों नृपको कहि समुझायो॥ सूरदास त्योंही कहि गायो॥ १७२॥

इति श्रीमद्भागवते–सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते नवमः स्कंधः समाप्तः॥ ९॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्री सूरसागर।

दशमस्कन्ध।

राग सारंग॥ व्यास कह्यो शुकदेवसों श्रीभागवत बखान। द्वादशस्कंध परम सुभग प्रेम भक्तिकी खान॥ नवस्कंध नृप सों कही श्री शुकदेव सुजान। सूर कहत अब दशमको उरमें धरि हरि ध्यान॥ १॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरणारविंद उर धरौ॥ जय अरु विजय पार्षद दोई। विप्रनशाप असुर भयेसोई॥ दोइजन्मज्योंहरि उद्धारी। सोशुक तुमसों कहि उच्चारी॥ दंतवक्र शिशुपाल जोभये। वासुदेव होइसोपुनि हए॥ औरौ लीला बहु विस्तार। कीन्हे जीवन ज्यों निस्तार॥ सो अब तुमसों सकल बखानौं। प्रेमसहित सुनि हृदये आनौं॥ जो यह कथा सुनै चितलाई। सो भव तरि वैकुंठहिं जाई॥ जैसे शुक नृपकोसमुझायो। सूरदास त्योंहीं कहि गायो॥२॥ भगवान जन्मलीला राग सारंग॥ बालविनोद भावती लीला अतिपुनीत मुनिभाखीहो। सावधान ह्वै सुनहु परीक्षित सकलदेव मुनि साखीहो॥ १॥ कालिंदीके कूल, वसत एक मधुपुरी नगर रसाला हो। कालनेमि उग्रसेन वंश कुल उपजे कंस भुवाला हो॥ २॥ आदिब्रह्म जननी सुर देवी नामदेवकी बाला हो। दई विवाहि कंस वसुदेवको अघभंजन उरमाला हो॥ ३॥ हय गज रत्न हेम पाटंबर आनँद मंगलचारा हो। समदत भई अनाहद वाणी कंसकान झनकारा हो॥ ४॥ याके गर्भ अवतरें जे सुत करिहैं प्राण प्रहारा हो। रथते उतारि केश गहि राजा कियो खड्ग पटतारा हो॥ ५॥ तब वसुदेव दीनह्वै भाष्यो पुरुष न त्रियवध करई हो॥ मैंसुनी कान भेद विधि वाणी ताते संच न परई हो॥६॥ आगे वृक्ष फरै जो विषफल वृक्षहि बिनकिन सरई हो। ताहि मारि तोहि और विवाहों अग्रसोच क्यों मरई हो॥७॥ बालक काज धर्म जनि छाँडौ राय न ऐसी कीजै हो। तुम मानी वसुदेव देवकी जीवदान इन दीजै हो॥ ८॥ कीन्हो यज्ञ होत है निःफल वेद भंग नहिं कीजे हो। याके गर्भ अवतरें जे सुत सावधान ह्वै लीजेहो॥९॥ वाचाबंध कंस करि छांड्यो तब वसुदेव पतीजे हो। मानो मृगी चरत गहि बनमें नैन नीर उर भीजे हो॥ ॥१०॥ प्रथम पुत्र देवकी जु जायोले वसुदेव दिखायो हो। बालक देखि कंस हँसि दीन्हेसबअपराध क्षमायो हो॥ कंस कहा लरिकाई कीन्ही कहि नारद समझायो हो। जाको भरम करतहो राजा मति पहिले सो आयो हो॥११॥ यह सुनि कंस पुत्र फिरि मार्‍यो येहिविधि सबनिसँहारो हो। तब देवकी भई तनु व्याकुल कहँले प्राणप्रहारो हो॥१२॥ कंसवंशको नाश करत है कहांले जीव उबारौं हो। इहि दुख कहा मेटिहै श्रीपति अरु हौं काहि पुकारौं हो॥१३॥ धेनुरूप धरि पुहुमि पुकारी शिव विरंचिके द्वारा हो। सब मिलि गये जहां पुरुषोत्तम सोवत अगम अपारा हो॥ १४॥ क्षीर समुद्र मध्यते यों कहि दीरघ वचन उचारा हो॥ उधरौ धरणि असुर कुल

मारौ धरि नरतनु अवतारा हो ॥१५॥ छूँछी मसक पवन पानी ज्यों तैसोइ जन्म विकारी हो।
पाखंड धर्म करतहैं पाँवर नाहिन चलत तुम्हारी हो ॥ १६ ॥ मारग छाँडि कुमारगसों रत
बुधि विपरीति बिचारी हो ।अमृत छाँडि विषय विषअचवत देत अधमगति गारीहो॥१७॥सुर
नर नाग तथा पशु पंछी सबको आयसु दीन्हों हो। गोकुल जन्म लेहु मेरे सँग जो चाहत सुख
कीन्हो हो॥१८॥दैवैकोष अकर्ख रोहिणी आपुन अंश जो लीन्हों हो ।जेहि माया विरंचिशिव
मोह्यो वोहि वाणि करि चीन्हो हो ॥ १९ ॥ अपनेहि गेह मधुपुरीआवन देवकि प्राणअधाराहो।
असुर मारि सुरसाध बढावन ब्रजजनसुखदातारा हो॥२०॥हरिके गर्भवास जननीकोबदनउजारा
लाग्यो हो । मानहु शरदचंद्रमा प्रगट्यो शोच तिमिर तनु भाग्योहो॥२१॥ तेहि खन कंसआनि
भयोठाढो देखि महातमजाग्यो हो।अबकीबार अरी आयोहै आपु अपनपो त्याग्योहो॥२२॥
दिन दश गए देवकी अपनो वदन विलोकन लागी हो।कंसकाल जिय जानि गर्भमें अति आनंद
सभागी हो ॥ २३॥ सुर नर देव वंदना आये सोवत ते उठि जागी हो ।अविनासी को आगम
जानी सकल देव अनुरागी हो ॥ २४ ॥ कछु दिन गए गर्भको आगम उर देवकी
जनायो हो । कासों कहौं सखी कोउ नाहीं चाहत गर्भ दुरायो हो ॥ २५ ॥
बुध रोहिणी अष्टमी संगम वसुदेव निकट बुलायो हो । सकल लोकनायक सुखदायक अजन
जन्म धरि आयोहो॥२६॥माथे मुकुट सुभग पीतांबर उर शोभित भृगुरेखा हो। शंख चक्र भुज
चारि बिराजत अति प्रताप शिशुभेषा हो ॥ २७ ॥जननी निरखिभई तनु व्याकुल यह न चरित
कहुँ देखा हो । बैठी सकुच निकट पति बोले दुहुँन पुत्र मुख पेखाहो॥२८॥सुनि देवैएक आन
जन्मकी तोसों कथा चलाऊं हो ॥ तुम माँग्यो मैं दियो नाथ हौं तुमसो बालकपाऊं हो ॥२९॥
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक योग जापहू न आऊं हो ॥ भक्तबछल वानोहैमेरो विरदहिकहा
लजाऊं हो ॥ ३०॥यह कहि माया मोह अरुझायोशिशुह्वै रोवन लागे हो। अहोवसुदेवजाहुलैगो-
कुल तुमहो परम सभागे हो ॥ ३१ ॥ घनदामिनि धरणीमिलिगरजैमहाकठिन दुखभारेहो।आगे
जाउँ यमुन जल बूडों पाछे सिंह दहारे हो ॥३२ ॥ लैवसुदेवधँसेदहसासुहितिहूँलोकउजियारेहो।
जानु जंघ कटि ग्रीव नासिका वसुदेव मनहिविचारेहो ॥३३॥चरणपसारिपरसिकालिंदी तरवा
नीरते आगे हो ।शेष सहसफन ऊपर छायो लै गोकुलको भागे हो ॥ ३४ ॥ पहुँचे जाइ महर-
मंदिरमें मनहि न शंका कीनी हो।देखी परी योगमाया वसुदेव गोद करि लीनीहो॥३५॥ तुरत
वेग मधुपुरी पहूँचे सकल प्रगटपुर कीनी हो।देवै गर्भ भईहै कन्या राइन बात पतीनी हो॥३६॥
यह सुनि कंसखड्गले धायोतबदेवै आधीनीहो।यह कन्याजुबकसुबंधुमोहिंदासीजानकरिदीनीहो
॥३७॥क्रूर कंस अघवंश न समुझै नवै नहींरिसि कीनी हो।ना जानी होई छल कीन्हे अविगति
गतिको चीन्ही हो ॥३८॥ पटकत शिला गई आकाशहि दोउभुज चरणलगाईहो ॥ गगन गई
बोली सुरदेवी कंस मृत्यु नियराई हो ॥ ३९ ॥ जैसे मीन जालमों कूदत गनै न आपुलखाईहो।
तैसे कंस काल ढूक्योहै ब्रजमें यादवराईहो ॥४० ॥ जैसे व्यालवेगको ढूकै वेग पखारी ताकैहो।
जैसे सिंह आपुमुख निरखै परै कूपमें झांकै हो ॥ ४१ ॥ तैसेहि कंस परम अभिमानी भूल्यो राज
सभाके हो । गतिकी गति पतिकी पति तेरी हाथ मींजुहैताके हो ॥ ४२ ॥ यह सुनि कंसदेवकी
आगे रह्यो चरण शिरनाई हो।बहु अपराध करी शिशु मारे लिख्यो न मेट्योजाई हो॥४३॥काके
शत्रु जन्म लीनो है बूझहु मतो बुलाईहो।चारि पहरसुख सेज परेनिशि नेक नींद नहिं आईहो४४

देश देशके दूत बुलावहु कासों है छल कैसो हो । अविगतअजरअजीतअमरताकरताकोबलजैसो हो ॥४५॥ दिनही दिन सो पुरुष होतहै बढत असुर बल जैसोहो ।बूझतमहि तृणभार बुझायो षवली कर्षन तैसो हो ॥ ४६॥ जागी महरि पुत्रमुख देख्यौआनँदतूरबजायोहो।कंचनकलशहोम द्विज पूजा चंदन भवन लिपायो हो॥४७॥वरण वरण रँग ग्वाल बनेमिलिगोपिनमंगलगायोहो। बहुबिधि व्योम कुसुम सुर बर्षत फूलन मंडप छायो हो ॥ ४८ ॥ आनँद भरे करत कौतूहल प्रेममगन नर नारी हो ।अभय निभय नीसान बजावत देत महरिको गारी हो॥४९॥नाचत महर मुदित मन कीन्हे ग्वाल बजावत तारी हो।सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा गर्वप्रहारी हो। ॥ ५० ॥अथ प्रथम लीला मथुराते गोकल आये । रागबिलावल ॥ हरिमुख देखिये वसुदेव। कोटिकाम स्वरूप सुन्दर कोउ नजानत भेव॥चारिभुजा जाके चार आयुध निरखि लै करताउ। जोपै मन परतीत आवै नंदघर लैजाउ ॥श्वान सूते पहरुआ सब नींद उपजी गेह।निशि अँधेरी बीजु चमकै सघन वरषै मेह॥झरे ताला पहरु पौढे खुलिगये वज्रकेंवार।बंदिबेरी सबै छूटी कहो कौन बिचार॥सिंह आगे शेष पाछे यमुनभई भरपूर।नासिका बहु नीर आए पार पहिलो दूर॥ कृष्णने हुँकार छोड्यो यमुन मान्यो हेत। चरण परसत थाह दीन्हों वसुदेव उतरे सेत ॥देत अंमर और कंमर फूली अँग न समाइ। भिक्षुक भाट सब द्वार ठाढे देखै यशोमति आइ ॥ नंदसों मनुहार करिहौ सुनिनलेहु वसुदेव।सूर सुतही जानिअपनो कृष्णको करिसेव॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४॥राग केदारा॥ हो पिय सो उपायकछु कीजै। जेहि तेहि बिधिदुराय इह बालकराखि कंससोंलीजै।मनसावाचा कहत कर्मना नृपतिहि नहीं पतीजै । बुधि बल छल कल कैसहूं करिके काटि अनत लैदीजै॥ नाहिनयतनो भाग सोयहरस नितलोचनपट पीजै ।सुनहु सूर ऐसेसुतको मुख निरखिनिरखि जग जीजै ॥ ५ ॥राग केदारा ॥सुन देवकी को हितू हमारे । असुर कंस अपवंशबिनाशनशिरपर बैठेहैं रखवारे ॥ऐसो को समरथ त्रिभुवन में जो यह बालकनेकउबारै।खड्गधरेआयोतोदेखतअपनेकर क्षणमाहँ पछारे॥यह सुनतहि अकुलाइ गिरीधर नैन नीर भरि भरि दोउ डारे । दुखित देखि वसुदेव देवकी प्रगट भये धरिकै भुज चारे॥बोलत उठे प्रतिज्ञा प्रभु यह मति उबरै तब मोहिं जुमारे ।अति दुखमें सुख दै पितु मातहि सूरको प्रभु नन्दभवन सिधारे ॥ ६॥ भादोंभरकी राति अँधियारी। द्वारकपाट कोटभट रोके दशहुँदिशि कंस भय भारी॥गर्जत मेघ महा डर लागत बीच बढी यमुना जल कारी।तबते इहै शोच जिय मेरे क्यों दुरिहै शशिवदन उज्यारी॥कतपिय बोल बचनकरिराखी वरु ताहीदिन जीवनमारी।कहि जाको ऐसो सुत बिछुरै सो कैसे जीवै महतारी॥करि न बिलाप देवकीसों कहि दीनदयालु भक्त भयहारी ।छुटिगयो निबिड तबहि गये गोकुल सूर सुमति दै बिपति निवारी॥७॥ राग धनाश्री ॥अँधियारी भादौंकी राति । बालकको वसुदेव देवकी पठै पठै पछितातिं॥बीच नदी घन गर्जत वर्षत दामिनि कोंधत जाति। बैठत उठत सेज सोवरिमें कंस डरनि अकुलाति॥गोकुल बाजत सुनी बधाई लोगन हेरि सिहाति। सूरदास आनँद नंदके देत कनक नगदाति॥८॥ बिहागरो॥देवकी मन मन चक्रत भई।देखहु आइ पुत्र मुख काहेन ऐसी कहुँ देखि नदई॥शिरपर मुकुट पीत उपरेना भृगुपद उर भुजचारि करे।पूरवकथा सुनाइ कही हरि तुम माग्यो वह वेषधरे ॥ छूट निगड सो आये पहरू द्वारेको कपाट उघरचो । तुरत मोहिं गोकुल जावहु ले यह कहति शिशुभेष धरचो॥वसुदेव तबहिं उठे यह सुनतहि हर्षवंत नन्दभवन गये । बालक धरचो लई सुरदेवीआइसूरमधुपुरीभये॥९॥राग बिलावल॥ आनंदे आनंद बढ्योअति।देवन

दइ दुंदुभी बजाई सुनि मथुरा प्रगटे यादवपति ॥ विद्याधर किन्नरी कंठ धर उपजावत अनुराग अमित अति।गावत गगन धरणि ध्वनि सुनियत गर्जत घन तेहि काल जतनजति॥ वर्षत सुमन सुदेश सूर सुरजयजयकार करत मानत रति। शिव विरंचि इन्द्रादि सनक मुनि फूलेसुख नसमात मुदितमति॥१०॥कमलनयन शशिवदन मनोहरदेखियेहोपतिअति विचित्रगति।श्याम सुभगतनु पीतवसन दुति उर वाने सोहै अद्भुत अति॥नखमणिमुकुटप्रभाअतिउद्भित चिंतचक्रतउनमाननया-वति।अति प्रकाशनिशिविमल तिमिरछुटिकलमलिमलिनिजपतिहि जगावति॥दरशनसुखीदुखी अतिशोचत पट्सुतशोक सुरतिउरआवति।सूर दासप्रभु लेहुपुराकृत भुजके चिह्न दुरावति॥११॥ गोकुल प्रगटभए हरि आई । अमर उधारन असुर सँहारन अंतर्यामी त्रिभुवनराई ॥ माथेपर धरि वसुदेव ल्याए नंदमहर घरगे पहुँचाई । जागी महरि पुत्रमुख देखत पुलक अंग उर में न समाई॥ गद्गद कंठ बोल नहिं आवे हर्षवंत ह्वै नंद बुलाई । आवहु कंत देव परसन भए पुत्र भयो मुख देखौधाई ॥ दौरि नंद गए सुतमुख देख्योसो शोभासुख बरणि न जाई।सूरदास पहिले यहमाँग्यो दूध पिआवन यशुमति माई॥१२॥जागी महरिपुत्रमुख देख्यो आनँद तूर बजाइ। कंचन कलश हेम द्विज पूजा चंदन भवन लिपाइ ॥दिनदशहीते वर्षे कुसुमनि फूलन गोकुल छाइ । नंद कहे इच्छा सब पूजी मनवांछित फल पाइ ॥आनँदभरे करत कौतूहल उदित मुदित नर नारी।निर्भय भए निशानबजावत देत निशंके गारी॥नाचत महर मुदित मन कीनोग्वालबजावत तारी।सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा कंस प्रहारी ॥ १३ ॥ नंदराइके नवनिधि आई। माथे मुकुट श्रवण मणि कुंडल पीतबसन भुजचारु सुहाई॥बाजत ताल मृदंग यंत्रगति चरचि अरगजा अंग चढाई॥ अक्षत दूब लिए शिरबंदत घर घर बंदनवार बधाई ॥ छिरकत हरद दही हिय हर्षत गिरत अंक भरि लेत उठाई। सूरदास सब मिलत परस्पर दान देत नहिं नंद अघाई॥१४॥ आजु वन कोऊ जिनि जाइ।सबै गाइ और बछरा समेत सब आनहु चित्र बनाइ॥ढोटा है रे भयो महरिकेकहत सुनाइ सुनाइ । सबहि घोषमें भयो कोलाहल आनँद उर न समाइ ॥ कतहौ गहर करत रे भैया वेगि चलौ उठि धाइ । अपने अपने मनको चीत्यौ नैननि देखो आइ ॥ एक फिरत दधि दूब बँधावत एक रहत गहि पाइ । एक परस्पर करत बधाई एक उठत हँसि गाइ ॥ तरुण किशोर वृद्ध अरु बालकबैठ चौगुने चाइ।सूरदास सब प्रेम मगन भए गनत न राजागइ॥ ॥१५॥राग रामकली ॥ हौं एक बात नई सुनि आई। महरि यशोदा ढोटा जायो घर घर होत बधाई॥द्वारे भीर गोप गोपिनके महिमा वरणि न जाई।अति आनंद होत गोकुलमें रत्न भूमिसब छाई॥नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरस कीच मचाई। सूरदास स्वामी सुखसागर सुन्दर श्याम कन्हाई॥१६॥हौं सखी नई चाह एकपाई॥ऐसे दिनन नन्दके सुनियत उपजे पूत कन्हाई॥बाजत पवन निसान पंचबिधि रुंज मुरज सहनाई।महर महरि ब्रज हाट लुटावत आनँद उर न समाई॥ चलौ सखी हमहूं मिलि जैये वेगि करो अतुराई।कोउ भूपण पहिरचो कोउ पहरति,कोउ वैसेहि उठिधाई॥कंचन थारदूब दधिरोचनगावतचली बधाई।भांतिभाँति बनिचलीं युवतिगणयहउपमा मोपै नहिं आई॥अमर विमान चढे सुर देखत जयध्वनि शब्द सुनाई।सूरदास प्रभु भक्तहेतुहित दुष्टनके सुखदाई ॥१७॥राग गूजरी ॥सखी री काहेको गहरु लगावति।सुतको जन्म यशोदाके गृह तालगि तुमहिंबुलावति ॥ कनकथार भरि लेदधि रोचन वेगि चलौ मिलि गावति। साँचहु सुत भयो नँदनायकके हौं नाहिन बौरावति॥ आनँद उर अंचल न सँभारति शीश सुमन वरपावति।

सूरदास शोभा तेहि अवसर जहाँ तहाँते आवति ॥१७॥ राग आसावरी ॥ ब्रज भयो महरके पूत जब यह बात सुनी। सुनि आनंदे सब लोग गोकुल गनक गुनी ॥अति पूरबपूरे पुण्यरूपकुल अटल थुनी।ग्रहलग्न नक्षत्र बल शोधि कीनी वेद ध्वनी॥सुनि धाईं सबै ब्रज नारी सहज शृंगार किए।तनु पहिरे नौतन चीर कारज नैन दिये ॥ कसि कंचुकि तिलक लिलार शोभित हारहिये। करकंकन कंचनथार मंगलसाज लिये ॥ शुभ श्रवणनि तरल बनाइ वेनी शिथल गुही।सुर वर्षत सुमन सुदेश मानौ मेघ फुही ॥ मुखमंडित रोरी रंग सेंदुर माँग छुही ॥ ते अपने अपने मेलि निकसी भांति भली। मनु लाल मनिनकी पांतिपिंजर चूरि चली॥गुण गावहिं मंगल गीतमिलि दश पांच अली । मनु भोर भए रवि देखि फूली कमलकली ॥ पिय पहिले पहुँची जाइ अति आनंद भरी।लई भीतर भवन बुलाय सबै शिशुपाइ परी॥ एक वदन उघारि निहारि देहि अशीश खरी।चिरजिवो यशोदानंद पूरणकामकरी॥धनि धनि दिन धनि रात धनि यह पहर घरी।धनधन्य महरिकीकूख भाग सुहागभरी ॥जिनजायोऐसोपूत सब सुखफलनिफरी।थाप्योथिरपरिवारमनकी शूल हरी॥सुनि ग्वालिन गाय बहोरि बालक बोलि लये। गुहि गुंजा घसि वनधातु अंगनि चित्र ठये॥शिरदधि माखनके माट गावत गीत नये।कर झाँझ मृदंग बजाइ सब नंदभवन गये॥मिलि नाचत करत कलोल छिरकतहरद दही।मानोवर्षत भादों मासनदी घृत दूधबही॥जाको जहीं जहीं चितजाइकौतुक तहींतहीं।सबआनंदमगन गुवाल काहूवदत नहीं॥एकधायनंदपै जाइ पुनि पुनि पायँ परै। एक आपुन आपुहि माहिं हँसि हँसि अंक भरै॥एक अंबर उतारत अंग देतनशंक करै। इक दधि अक्षत अरु दूब सबनके शीश धरै॥तब न्हाइ नंद भए ठाढ़े अरु कुश हाथ लिये।घसि चन्दन चारु मँगाइ विप्रन तिलक किए ॥ नान्दीमुख पित्र पुजाइ अंतर शोच हरे।गुरुजनद्विजन पहिराइ सबनिके पाइ परे॥गैयां गनी न जाहिं तरुणि सब बच्छबढीं।तेचरहिं यमुनके कच्छदूने दूध चढीं॥खुरताँबे रूपेपीठि सोनेशृंगमढीं।ते दीनी द्विजन अनेक हरषि अशीशपढीं॥तबअपने मित्र सुबंधु हँसि हँसि बोलि लिए।मथि मृगमदमलय कपूर सबनके तिलक किए॥उरमणिमाला पहिराय सबन विचित्र ठए।दान मान परधान पूरणकाम किए॥वरमागध बंदीसूत आँगन भवन भरे। ते बोले लैलै नाम क्रीडत विवशपरे ॥जिन यांच्योजोइदीन रसनँदरायढरे।मानो वर्षतमास अषाढ दादुर मोर ररे॥तब अंमर और मँगाइ सारीसुरंग घनी।ते दीनी वधुन बोलाइजैसीजाहि बनी॥ते बहुरि अति आनंद निज गृह गोप घनी। ते निकसीं देत अशीश रुचि अपनी अपनी॥ घर घर भेरिमृदंगपटहनिशान बजे॥बारन बंदनवार अरुध्वज कलश सजे॥तादिनते वे लोगसुख संपति नतजे।कहि सूर सबनकी यह गति जे हरिचरण भजे ॥१८॥ राग धनाश्री ॥ आजु नंदके द्वारे भीर। एक आवत एक जात बिदा होइ एक ठाढे मंदिरके तीर ॥ कोउ केसर कोउ तिलक बनावत कोउपहिरतकंचुकीचीर ।एकनकोदे दानसमर्पितएकनकोपहिरावतचीर॥एकनको भूषण पाटम्बर एकनको जोदेत नग हीर। एकनको पुहुपनकी माला एकनको चंदनघसिवीर॥एकनको तुलसीकी माला एकनको राखत दे धीर।सूरश्याम घनश्यामसनेहीधन्ययशोदापुण्यशरीर॥१९॥ गौरी ॥गोपी गावहिं मंगलचार बधायो ब्रजराजको। अब भयउ अमर सब काज बधायो ब्रजराजको॥रानी जायोहै मोहनपूत बधायो ब्रजराजको ।बहुतनारि सुभाग सुंदरि और घोषकुमारि। सजन प्रीतम नाउ लैलै देहिं परस्पर गारि ॥ आनँद स्तुति अतिशय भयो घर घर नृत्य कामहि ठाउँ । नंदद्वारे भेंट लैलै उमह्योहै गोकुल गाउँ ॥ साथिये बनाइके देहिं द्वारे सात सींक

बनाय। नवकिशोरी मुदित ह्वै ह्वै गहति यशुदाजीके पाँय॥ चौकेचंदनलीपिकेआरतिधरीसजोइ॥ कहत घोषकुमारि ऐसो आनँद जो नित होइ॥ करि करि अलंकृतगोपिकापहिरेसुभूषणचीर। गाइ बच्छ सँवारि ल्याये ग्वालनकी भै भीर॥ मुदित मंगल सहित लीला करहिं गोपी ग्वाल। हरद अक्षत दूब दधि लै तिलक करहिं ब्रजबाल॥ एक हेरी देहि गावहिं एकभेटहिंधाइ।एकएक न गनै काहू इक खेलावत गाइ॥ एकबिरधकिशोरबालकएकयौबनयोग।कृष्ण जन्मसुप्रेमसागर क्रीडत सब ब्रजलोग॥ प्रभुमुकुंदके हेतु नवतनु होहि घोष विलास। देखि ब्रजकीसंपदाफूलेहैं सूरदास॥ २०॥ आजु बधायो नंदराइके गोपीगावहिं मंगलचार॥ आईं मंगलकलश साजिके ता ऊपर फलडार। अक्षत रोचन दूब लै चलीं बहु बिधि फल भरे थार॥ घरनघरनतेगावतचलीं ब्रजवधूझुंड अपार। चलीं सबमिलि महरके घर देखन नंदकुमार॥ देखिमोहन आशपूरीसबैदेति अशीश। नंदमहरके लाडिले तुम जिऔ कोटि बरीश॥ उरमेलैहैं नंदरायके गोपसखन मिलि हार। मागध बंदी जन अति क्रीडत बोलतजैजैकार॥महारि दान जु बहुतदीनोअरु दियोनंदराइ। ऐसो सुख देखौ सखी जन सूरदास बलि जाइ॥२१॥ धनिधनि नंदयशोमतिधनिजगपावन रे। धनि हरिलियो अवतार सुधनि दिन आवन रे॥ दशयें मास भयो पूत पुनीतसुहावनरे। शंख चक्र गदापद्म चतुर्भुज भावन रे॥बनि बनि ब्रजसुंदरि चलीं सुगाइबधावनरे। कनकथार रोचन दधि तिलक बनावनरे॥नंद घरहिं चलि गाइ महरि जहां पावन रे। पाँइनिपरिसब वधूमहरिबैठावनरे॥ यशुमति धनि यह कोखि जहां रहे बावनरे।भले सुदिनभयोपूतअमरअजरावनरे॥युग युग जीवहु कान्ह सबनि मनभावन रे। गोकुल हाटबजार करत जु लुटावनरे॥घरघरबजैबधावनगरहरि आवनरे।अमर नगरउत्साह अप्सरा गावन रे॥ब्रह्मलियोअवतार दुष्टके दावनरे।दानसबैजोदेतवर्षि जनु सावन रे॥ मागध सूत भाट धन लेतजुरावनरे।चोवाचंदनअबीरगलीछिरकावनरे॥ब्रह्मादिक सनकादिक गगन भरावन रे। कश्यप ऋषि सुर तातसुलगन गनावनरे॥तीनिभुवनआनंदकंसहि डरावन रे। सूरदास प्रभु जन्मे भक्तहुलसावन रे॥२२॥ राग कल्याण॥ शोभासिंधु नअंत रहीरी। नंदभवन भरिपूर उमंग चलीब्रजकी बीथिनि फिरति बही री॥ देखी जाइआजुगोकुलमेंघर घर बेचत फिरति दही री। कहँालगि कहौं बनाइ बहुत विधि कहतनमुखसहसहुनिबहीरी॥यशुमति उदर अगाध उदधिते उपजी ऐसी सबन कही री। सूरश्याम प्रभु इन्द्रनील मणि ब्रजबनिता उरलाइ गहीरी॥२३॥ राग काफी॥आजु निशान बाजे नंद महरिके। आनंद मगन नर गोकुल शहरके॥ आनँदभरी यशोदा उमँगि अंग न समाति आनंदितभई गोपी गावति चहरके॥ दूब दधि रोचन कनकथार लैलै चलीं मानों इंद्रबधू जुरि पांतिनि बहरके। आनंदितभयेग्वाल बाल करत विनोद ख्याल भुजभरि धरि अंकमदै वरहरिके॥ आनंदमगन धेनु थन स्रवै पय फेनु उमँग्यो यमुनजल उछलै लहरके। अंकुरित तरु पात उकठि रहेजगात बनबेलीप्रफुलित कलिन कहरके। आनंदित विप्रसूत मागध याचक गण उमँगे अशीश देत तरहतरहहरिके॥आनंदमगन सब अमर गगन छाए पुहुप बिमान चढे पहर पहरके। सूरदास प्रभु आइगोकुल प्रगट भए संतन भयो हरष दुष्टजन मनदहरके॥ २४॥ माई आजु होतबधायोबाजैनंदगोपराइके।यदुकुल यादव जन्महैं आइके॥ आनंदित गोपी ग्वाल नाचें करदैदै तालअतिअहलादभयोयशुमतिमाइके।शिर पर दूब धरि बैठे नंद सभा मधि द्विजनको गाइ दीनी बहुत मँगाइके॥कनकमाटमँगाइ हरद दही मिलाय छिरकैं परस्पर छलबल धाइके। आठैं कृष्णपक्ष भादौं महरकेदधिकादौंमोतिनबँधायो

वार महलमें जाइके ॥ ढाढी और ढाढिनि गावै हरिकेठाढे बजावै हरषिअशीश देतमस्तकनवाइके।
जोई जोई माँग्योजिनिसोई सोई पायो तिनि दीजै सूरदास दर्श भक्तनबुलाइके॥२५॥ राग जैतश्री॥
आजु बधाई नंदके माई। सुन्दर नंद महर के मंदिर। प्रगट्यो पूत सकल सुखकंदर ॥ यशुमति
ढोंटा ब्रजकी शोभा। देखि सखी कछु औरै लोभा ॥ लक्ष्मीसी जहां मालिनबोलै।
बंदन माला बांधत डोलै ॥ द्वार बुहारत फिरत अष्टसिधि।कौरेन सथिया चींतत नवनिधि ॥ गृह
गृहते गोपी गावतीं जब । रंगीली गलिन बिच भीर भई तब ॥ सोवरनथाल रही हाथन लसि ।
कमलन चढि आए मानोशशि॥उमंगे प्रेमनदी छबि पावै।नंद नंद सागरको धावै॥ कंचन कलश
जगमगे नग के।भागे सकल अमंगल जगके ॥ डोलत ग्वाल मानो रणजीते । भये सबहिके मनके
चीते ॥ अति आनंद नंद रस भीने । पर्वत सात रत्नके दीने ॥ कामधेनुते नेक नवीने । द्वैलख
धेनु द्विजनको दीने ॥ नंदद्वार जे याचन आए। बहुरो फिरि याचक न कहाए ॥ घरके ठाकुरके
सुत जायो। सूरदास तब सब सुख पायो ॥ २६॥ राग बिलावल ॥ आज गृहनंद महरिके बधाई ।
प्रात समय मोहनमुख निरखत कोटि चंद्र छबिपाई॥मिलि ब्रजनारीमंगल गावत नंदभवन में आई।
देति अशीश जियो यशुदासुत कोटि वर्ष कुँवरकन्हाई॥अति आनंद बढ्यो गोकुलमेंउपमा कही
न जाई। सूरदास धनि नंदघरनि है देखत नैन सिराई॥२७॥ राग जैजैवंती ॥ माई आजु तो बधाई
बाजै मंदिर महरके।फूले फिरैं गोपी ग्वाल ठहर ठहरके॥ फूली धेनु फूले धाम फूली गोपी अंग
अंग। फिर फूले तरुवर आनंद लहरके॥फूले बंदीजन द्वारे फूले फूले बंदनेवारे।फूले जहां जोइ
सोइ गोकुल शहरके॥फूले फिरैं यादव कुल आनंद समूल मूल।अंकुरित पुण्य फूले पिछले पहरके॥
उमगे यमुनाजल प्रफुलित कुंज पुंज।गरजत कारे भारे यूथ जलधरके॥नृत्यत मदन फूले फूली
रति अंग अंग । मनके मनोज फूले हलधर हरिके ॥ फूले द्विजसंत वेद मिटिगयो कंस खेद ।
गावत बधाई सूर भीतर बहरके ॥ फूलीहै यशोदा रानी सुत जायो शारंग पानी।भूपति उदार
फूल भार फरे घरके ॥ २८ ॥ जैतश्री ॥ नंदजू मेरे मन आनन्द भयो हौं गोवर्धनते आयो । तुमरे
पुत्र भयो मैं सुनिकै अतिआतुर उठिधयो॥बंदीजन अरु भिक्षुकसुनिसुनि दूरिदूरिते आयो।इक
पहिलेही आशा लागे बहुत दिननके छाये॥ते पहिरे कंचन मणि भूपण नानावसन अनूप।मोहिं
मिले मारगमें आवत मानों जात कहूके भूप॥तुमतौ परम उदार नंदजू जिन जोमांग्योसोदीनो।
ऐसो और कौन त्रिभुवनमें तुम सरि साको कीनो॥कोटि देहुतौरुचिनहिंमानोंबिनदेखेनहिंजैहौं।
नंदराय सुनि बिनतीमेरीतबहिंबिदाभले ह्वैहौं॥दीजैमोहिंकृपाकारे सोई जोहौं आयो मांगन।यशु-
मतिसुत अपने पाँइन जबखेलतआवै आंगन॥जब तुम मदन मोहन करिटेरो इहि सुनिकैघरजाऊँ।
हों तो तेरो घरको ठाढी सूरदास मेरो नाऊं॥२९॥मैं घरको ढाढीहौं तिहारो को मोसरकरैआन।
सोई लैहौं जो मो मनभावै नंदमहरकी आन॥धन्य नंद धनिधन्य यशोदा धनिधनि जायोपूत
धन्य भूमि ब्रजवासी धनि धनि आनंदकरत अकूत॥ घरघरहोत आनंद बधाई जहँतहँमागध
सूत।मणि माणिक [illegible]बर देते लेत न बनतबहूत॥हयगय सबन भंडार दिये सब फेरिभरेसेभाति।
जबहिं देत [illegible] फिरि देखत संपति घर न समाति॥ते मोहि मिले जात घर अपने में बूझी
तब जाति॥हँसि [illegible]सि दौरि मिले अंकम भरि हम तुम एकै ज्ञाति॥संपति देहु लेहुंनहिंएकोअन्न
वस्त्र केहि काज। जोहों तुमसों मांगन आयो सो लैहौं नँदराज ॥ अपने सुतको वदन देखावहु
बडे महर शिरताज । तुम साहब मैं ढाढी तेरो प्रभु मेरे ब्रजराज॥चन्द्रवदन दरशन संपति देसो

मैं लै पुर जाऊं। जो संपति सनकादिक दुर्लभ सो है तुमरे ठाऊं॥जाकोनेतिनेतिश्रुतिगावत तेउ कमलपद धाऊं।हौं तेरो जन्म जन्मको ढाढी सूरदास कहि गाऊं॥ ३०॥ राग केदारो ॥नंदउदौसुनि आयोहो वृषभानुको जगा। देवेको बडो महर देत न लावै गहरलालकीबधाईपाऊंलालकोझगा॥ प्रफुलित ह्वैकै आनदीनहै यशोदा रानी झीनीए झगुली तामें कंचनको तगा। नाचै फूल्यो आँगनाइ सूर बखशीश पाइ माथेके चढाइ लीनो लालको बगा॥३१॥ राग धनाश्री॥ यशोमति लटकति पाँइ परै। तेरो भलो मनाइहौं झगरिन तू मति मनहि डरै॥ दीन्हों हार सबै कर कंकण मोतिन थार भरै। सूरदास स्वामी प्रगटेहैं अवसर पाइ झगरै ॥ ३२ ॥ नंदजू दुःख गयो सुख आयो सबन्हको दियो पुत्र फल मानौ। तुमरो पुत्र प्राण सबहिनको भवन चतुर्दशजानौ॥हौंतो तुम्हारो घरको ढाढी नावसेन सज पाउँ। गृह गोवर्धन वास हमारो घरतजिअनतनजाउँ।ढाढिनि मेरी नाचै गावै हौंही ठाढो बजावौं।हमरो चीत्यो भयो तुम्हारे जो मांगौं सोपावौं॥अबतुममोको करो अयाची जो ग्रह गेह बिसारौं।द्वारेरहौं देहु एकमंदिरश्यामस्वरूपनिहारौं॥हँसिढाढिनिढाढी-सों बोली अब तू वरणि बधाई। ऐसो दियो न देहै सूर कोउ यशोमतिहींपहिराई॥३३॥ढाढिनि दान मानकी भाई। नंद उदार भए पहिरावत बहुत भलै बनिआई॥ जब जब जन्म धरौं ढाढीको जन्म कर्म गुण गाऊं। अर्थ धर्म कामना मुक्त फल चार पदारथ पाऊं॥ लै ढाढिनि कंचनमणि मुक्ता नाना वसन अनूप । हीरा रतन पाटंबर हमको दीन्हें व्रजके भूप॥ अब तो भली भई नारायण दरशे नैन निरखि निधि पाई। जहं तहं बंदनवार विराजत घर घर बजत बधाई ॥जो याच्यो सोई तिन पायो तुमरिव भई बिदाई । भक्ति देहु पालने झुलावों सूरदास बलिजाई॥३४॥ छठीव्यवहार ॥६॥ राग सारंग ॥गौरि गणेश विनऊं हो देवीशारद तोहि॥ गाऊं हरिजीकोसोहलो मन औरआवै मोहि॥बधावो हरिकोमनरहिबोरानी जायोहै मोहन पूत। घर आँगन बाहेर सब मांगें ठाढे मागध सूत॥आठ मास चंदन पियोहो नवएं पियो कपूर। दशयें मास मोहनभए मेरे आंगन री बाजै धतूर॥ हर्षी पार परोसिनि भए हरष नगरके लोग। हर्षी सखी सहेलरीसव आनँदभयो सुखयोग॥बाजन बाजे गहगहे मिलि बाजै शारद भेरि। मालिनि बांधै तोरन मेरे आँगन री रोपै आछेकेरि॥ आने गढ़ि सोना ढोलना पढिलाये चतुर सुनार। बीच बीच हीरा लगे नंदलाल गरेको हार॥ यशुमति भाग सुहागिनी जिन जायो हरिसो पूत। करहु ललनको आरती री अरु दधिकाँदो सूत ॥ नाउनि बोलहु नवरंगी लै आवहु महावर वेग। लाखटका अरु झूमकसारी देहु दाईको नेग॥अगरचंदनको पालनो गढई गुर ढार सुढार। लैआयो गढि ढोलनो विश्वकर्मा सोसुतधार॥धन्य सोदिन धन्यसोघरी धन्यसो जोतिकजाग।धन्य धन्य मथुरापुरी हो धनि धनि महरिको भाग ॥ धनि धनि मातु देवकी धनि धनि वसुदेव सुजान। धनि धनि भादौं अष्टमी धनि जन्म लियो जब कान्ह॥ काढहु कोरे कापर हो अरु काढो घीकी मौन। जाति पाँति पहिरायकै सब समदि छतीसौ पौन ॥ काजर रोरी आनोरी मिलि करौ छठीको जार। एपनकीसी पूतरी सब सखियन कियोहै शृंगार॥ क्रीट मुकुट शोभा बनी शुभअंग बनी वनमाल । सूरदास प्रभु गोकुल जनमे मोहन मदन गोपाल॥ ३५॥ राग काफी॥ अति परम सुंदर पालना गढि ल्याव रे बढैया। शीतल चंदन कटाउ धरि खरादि रंग लगाउ विविध चौकी बनाउ रंग रेशम लगाउ हीरा मोती लाल मढैया॥विश्वकर्मा सुढार रच्यो है काम सुनार मणि गणि लागे अपार नंदमहर सुत काज अढैया। आनि धरयो नंदद्वार अतिहीं

सुंदर सुढार ब्रजबधू देखैं बारबार शोभा नहिं वारपार धनि धनि धन्यहै गढैया॥पालनोआन्यो सबहि अति मनमान्यो नीको सो दिन धराइ सखिन मंगल गवाय रंगमहलमें पौढयोहै कन्हैया। सूरदास प्रभुकी मैया यशुमति नंदरानी जोई माँगत सोई लेत बधैया॥३६॥ राग जयतश्री॥ ब्रजको जीवन नँदलाल।असुरनिकंदन भक्तपाल॥कनकरतन मणि पालनौअतिगढयो काम सुतहार।विविध खेलौना भाँति भाँतिके गजमुक्ता बहुधार॥ सुभग पालने झूलैं हो नँदलाल मात पिता सुकृत फल जगपाल। जननि उबटि अन्हवायके अतिक्रमसों लीनों गोद।पौढाये पट पालने शिशु निरखि जननि मनमोद॥ अतिकोमल दिन सातके अधर चरण कर लाल।सूरश्याम छबि अरुणता निरखि हरषि ब्रजबाल॥३७॥ राग धनाश्री॥ यशोदा हरि पालने झुलावै। हलरावै दुलराइ मल्हावै जोइ सोई कछु गावै॥ मेरे लालकी आउ निदरिया काहे न आनि सुवावै। तू काहे न वेगिसी आवै तोको कान्ह बुलावै॥ कबहूँ पलक हरि मूंदिलेतहैंकबहूँअधरफरकावै। सोवत जानि मौन ह्वै ह्वै रही कर कारि सैन बतावै॥ इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि यशुमति मधुरे गावै। जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ सो नंदभामिनि पावै॥३८॥ राग गौरी॥ हालरो हलरावै माता। बलि बलि जाउँ घोष सुखदाता॥ यशुमति अपनो पुण्य बिचारै।बारबार शिशु-वदन निहारै॥अँग फरकाय अलप मुसकानो।या छबि पर उपमाको जानो॥हलरावति गावति कहि प्यारे। बालदशाके कौतुक भारे॥महरि निरखिमुख हियहुलसानी।सूरदासप्रभुशारंगपानी॥॥३९॥ राग धनाश्री॥ कन्हैया हालरु रे। गढिगुढि ल्यायो बढई बलि हालरु रे॥धरनि पर डिलाइ एक लख माँगै बढई बलि हालरु रे।दुइ लख बाबा नंदजी देहीं॥ काहेको तेरो पालनाबलिहालरुरे कहिलागी डोर। रतन जडितको पालना बलि हालरुरे। रेसम लगी डोर॥कबहुँकझूलैपालना बलिहालरुरे।कबहुँक नंदजीकी गोद॥झूलैं सखी झुलावहीं बलि हालरुरे। सूरदास बलि जाहीं॥४०॥ अथ पूतनावध॥आजु हौं राजकाज करि आऊँ। बेगि सँहारौं सकल घोष शिशु जो मुख आयसु पाऊँ॥ तौ मोहन मूर्छन वशीकरन पढ़ि अमित देह बढाऊँ।अंगसुभग सजिके मधु मूरति नयननिमाहँ समाऊँ॥वसिके गरल चढ़ाइ उरोजनि ले रुचिसों पय प्याऊँ। सूरदास प्रभु जीवत ल्याऊं तौ पूतना कहाऊं॥४१॥ बिहागरो॥ कंसराय जिय शोच परी। कहा करौं काको ब्रज पठऊं विधना कहा करी॥ बारंबार विचारत मनमें भूप नींद बिसरी। भूर बुलाइ पूतनासों कह्यो करु न विलंब घरी॥४२॥ राग धनाश्री॥रूप मोहनीधरि ब्रज आई। अद्भुत साजि शृंगार मनोहर असुर कंस दे पानपठाई॥ कुच विषबाँटि लगाइकपटकरि बालघातिनी परमसुहाई।बैठी हुती यशोदामंदिर दुलरावति सुत श्याम कन्हाई॥प्रगटभई तहां आइ पूतना प्रेरितकाल अवधि नियराई।आवत पीढा बैठन दीनो कुशल बूझि अतिनिकट बुलाई॥पौढाये हरि सुभगपालने नंदघरनि कछु काज सिधाई।बालक लियो उछंग दुष्टमति हर्षितअस्तनपान कराई॥वदन निहारि प्राण हरिलीनो परी राक्षसीयोजनताई। सूरजदेजननीगति ताकोकृपाकरी निजधाम पठाई॥४३॥ प्रथम कंस पूतना पठाई।नंदघरनि जहँ सुतलिए बैठी चलि तेहि धामहि आई॥ अतिमोहनी रूप धारिलीनो देखत सबहीके मन भाई।यशुमति रही देखि वाकोमुख काकी बधू कौनधौं आई॥ नंदसुवन तबहीं पहिचानी असुरघरनि असुरनकी जाई। आपुन वज्र समान भए हरि माता दुखित भई भरपाई॥ अहो महरि पालागन मेरो हों तुम्हरो सुत देखन आई। यह कहि गोद लियो अपने तबत्रिभुवनपतिमनमनमुसकाई॥मुखचूंव्योगहि कंठ लगाए बिष लपटयो अस्तन मुख

लाई।पयसँग प्राण ऐंचि हरि लीन्हें योजन एक परी मुरझाई॥त्राहि त्राहि कहि ब्रजजन धाए अति बालक क्यों बच्यो कन्हाई। अति आनंद सहित सुत पायो हृदये माँझ रहे लपटाई॥ करवर टरी बडी मेरेकी घरघर आनँद करत बधाई।सूरश्याम पूतना पछारी यह सुनिजिय डरप्यो नृपराई॥४४॥ राग सारंग॥ कपटकरि ब्रजहि पूतना आई। रूप स्वरूप विषम स्तन लाए राजा कंस पठाई॥मुख चूंबत अरु नैन निहारत राखत कंठ लगाई। भाग्य बडे तुमरे नँदरानी जिनके कुँवर कन्हाई॥करगहि क्षीर पियावत अपनो जानत केशव राई।बाहर होइके असुर पुकारी अब बलि लेहु छोडाई।गई मुर्च्छाइपरी धरनीपर मानों भुवंगम खाई।सूरदास प्रभु तुमरी लीलाभक्तन गाइ सुनाई॥४५॥ रागधनाश्री ॥देखो यह विपरीत भई।अद्भुत रूपनारिकरि आई कपट हेत क्यों सहे दई॥ कान्है लै यशुमतिकोरातें रुचिकरि कंठ लगाई। तब वह देह धरी योजनलौं श्याम रहे लपटाई॥बडे भाग्यहैं नंदमहरके बडभागिन नँदरानी। सूर श्याम उर ऊपर वारे यह सब घर घर जानी॥४६॥ विहागरो॥ नेक गोपालै मोको दे री॥ देखों कमलवदन नीके करि ता पाछे तू कनिया लै री॥अतिकोमल करचरण सरोरुह अधर दशन नासा सोहैरी।लटकन शीश कंठमणि भ्राजत मन्मथ कोटि वारने गैरी॥वासर निशा विचारतहौं सखि यह सुख कबहुं न पायो मैं री। निगमन धन सनकादिक सर्वसु भाग्यबडे पायो तैं हैरी॥जाकोरूप जगत्के लोचन कोटिचंद्ररवि लाजत भैरी।सूरदास बलिजाइ यशोदा गोपिन प्राण पूतना बैरी॥४७॥ राग जैतश्री ॥कन्हैया हालरो हालरोई।हौं वारी तेरे इंदु वदनपर अति छबि अलस निरोई॥कमलनयनको कपटकिये माई इहि व्रज आवै जोई।पालागों विधि ताहि बकीजौं तू तिहि तुरत बिगोई॥सुन देवताबडेजगपावन तू पति या कुलकोई।पय पूजिहौं वेगि यह बालक करिदै मोहि बडोई॥ द्वितियेके शशिलौं बाढै शिशु देखै जननि जसोई।यह सुख सूरदासके नयनन दिन दिन दूनो होई॥ ४८॥ राग कान्हारो॥ पालने श्याम हलावति जननी। अति अनुराग परस्पर गावत प्रफुलित मगन मुदित नँद घरनी॥ उमँगि उमँगि प्रभु भुजा पसारत हरष यशोमति अंकम भरनी। सूरदास प्रभु मुदित यशोदा पूरण भई पुरातन करनी॥४९॥ राग बिलावल॥ गोपाल माई पालने झुलाए।सुरमुनि कोटि देव तेतीसौं देखन कौतुक अंमर छाए॥ जाकोअंत न ब्रह्मा जानत शिवसनकादि न पाए। सो अब देखो नंद यशोदा हरषि हरषि हलराये॥ हुलसत हुलसि करत किलकारी मन अभिलाख बढाए। सूरश्याम भक्तन हितकारन नानावेष बनाए॥५०॥सिद्धर बाँभनकर्मकमाई।कह्योकंससों वचनसुनाई॥प्रभु मैं तुम्हरो आज्ञाकारी। नंदसुवनको आवों मारी॥ कंस कह्यो तुमते इह होई। तुरइ जाहु कर विलँब न कोई॥ शिरधर नंदभवन चलि आयो।यशुदाउठिकै माथो नायो॥ करो रसोई मैं चलि जावों। तुम्हरे हेतु यमुनजल ल्यावों॥ इह कहि यशुदा यमुना गई।सिद्धर कही भली इह भई॥ उन अपनेमन मारन ठानो। हरिजी ताको तबही जानो॥ब्राह्मण मारे नहीं भलाई। अंग याको मैं देउँ नशाई। जबहीं ब्राह्मण हरिढिग आयो। हाथ पकर हरि ताहि गिरायो॥ गोड चाप लै जीभ मरोरी। दधि ढरकायो भाजन फोरी॥ राख्यो कछु तेहि मुख लपटाई॥ आपु रहे पलनापर आई॥ रोवन लागे कृष्ण विनानी। यशुमति आइगई लै पानी॥ रोवत देखि कहयो अकुलाई। कहा करयो तैं विप्र अन्याई॥ ब्राह्मणके मुख बात न आवै। जीभ होइ तौकहिसमुझावै॥ ब्राह्मणको घरबाहरकीन्हों। गोदउठाइ कृष्णको लीन्हों॥ पुरवासी सब देखन आए। सूरदास हरिके गुण गाए॥५१॥ सुन्यो कंस पूतनामारी।शोच भयो ताके जिय

भारी ॥ कागासुरको निकट बुलायो । तासों कहि सब वचन सुनायो॥मम आयसु तुम माथे धरौ।छल बल करि मम कारज करौ ॥ इह सुनिकै तिन्ह माथो नायो।सूर तुरत व्रजको उठि धायो ॥ ५२ ॥अथ कागासुरको आयबो ॥ राग सारंग ॥कागरूप एक दनुज धरयो।नृप आयसु लैकर माथेपर हर्षवंत उर गर्व भरयो॥कितिक बात प्रभु तुम आयसु लै यह जानो मो जात मरयो। इतनी कहि गोकुल उठि आयो आइ नंदघर छाज रह्यो ॥ पलना पर पौढे हरि देखे तुरत आइ नैननिसों अरयो। कंठ चापि बहुबार फिरायो गहि पटक्यो नृपपास परयो ॥ तुरत कंस तेहि पूँछन लाग्यो क्यों आयो नहिं काज सरयो।बीत्यो जाम ज्वाब जब आयो सुनहु कंस तेरो आयु सरयो ॥ धरि अवतार महाबल कोऊ एकहि कर मेरो गर्व हरयो। सूरदास प्रभु कंसनिकंदन भक्तहेतु अवतार धरयो ॥ ५३॥ राग बिलावल ॥ मथुरापति जिय अतिहि डेरान्यौ । सभामाँझ असुरनिके आगे बार बार शिर धुनि पछितान्यौ । ब्रज भीतर उपज्यो मेरो रिपु मैं जानी यह बात। दिनही दिन बहु बढ़त जातुहै मोको करिहै घात ॥ दनुजसुता पूतना पठाई छिनकहि मांझ सँहारी। घीच मरोरि कागसुर दीनो मेरे ढिग फटकारी ॥ अबहींते यह हाल करतुहै दिन दिन होत प्रकाश ।सेनापतिन सुनाइ बात यह नृप मन भयो उदास ॥ ऐसो कौन मारिहै ताको मोहिं कहै सो आय । वाको मारि अपनपौ राखै सूर ब्रजहि सो जाइ॥५४॥अथ शकटासुरको कंसआज्ञा मांगन । गौड मलार॥नृपति बात यह सबनि सुनायो । मुहां चही सेनापति कीनो शकटासुर मन गर्व बढायो ॥ दोउ कर जोरि भयो तब ठाढो प्रभु आयसु मैं पाऊं। ह्यांते जाइ तुरतही मारों कहौ तो जीवत ल्याऊँ॥यह सुनि नृपति हर्ष मन कीनो तुरतहि बीरा दीनों ।बारंबार सूर कहि ताको आपु प्रशंसा कीनो ॥५५॥ गौड मलार॥ पान लै चल्यो नृपआन कीन्हों।गयो शिरनाइकै गर्वही बढाइकै शकटको रूपधरि असुर लीन्हों॥सुनत घहरानि ब्रजलोग चकृतभए कहा आघात ध्वनि करतु आवै । देखि आकाश चहुँपास दशहूँ दिशा डरे नर नारि तनुसुधि भुलावै ॥ आपु गयो तहीं जहँ प्रभु रहे पालने कर गहे चरण अंगुठ चचोरहि । किलकि किलकि हँसत बाल शोभा लसत जानि तिहि कसत रिपु आयो भोरहि ॥ नेक फटक्यो लात शब्द भयो आघात गिरयो भहरात शकटा संहारयो । सूर प्रभु नंदलाल दनुज मारयो ख्याल मेटि जंजाल ब्रजजन उबारयो ॥५६॥ राग बिभास ॥ देखो सखी अद्भुत रूप अतूथ । एक अंबुज मध्य देखियत बीस उदधि सुत यूथ ॥ एक शुक है जलचर उभय अर्क अनूप । पंच बिराजे एकहि ढिग बहु सखि कौन स्वरूप ॥ शिशुतामैं शोभा भई करो अर्थ बिचारी।सूर श्रीगोपालकी छवि राखिय उरधारी ॥५७॥ राग बिलावल ॥ कर पग गहि अँगुठा मुख मेलत । प्रभु पौढे पालने अकेले हरषि२ अपने रँग खेलत॥शिव शोचत विधि बुद्धि बिचारतवटबाढयोसागरजलझेलत।बिडरि चले घन प्रलय जानिकै दिगपति दिगदंतौ न सकेलत॥मुनिमन भीत भए भव कंपित शेषसकुचि सहसौ फन फेलत । उन ब्रजवासिन बात न जानी समुझे सूर शकट पगु पेलत ॥ ५८ ॥ चरण गहे अँगुठा मुख मेलत ।नंदघरनि गावति हलरावति पलना पर किलकत हरि खेलत॥जो चरणारबिंद श्रीभूषण उरते नेकु न टारति । देखो धौं का रसु चरणनमें मुख मेलत करि आरति ॥ जा चरणारबिंदके रसको सुर नर करत विवाद । यह रस है मोको दुर्लभता ताते लेत सवाद॥ उछलत सिंधु धराधर कांप्यो कमठपीठ अकुलाइ।शेष सहसफनडोलन लाग्योहरि पीवतजब पाइ॥बढयो वृक्षवर सुर अकुलाने गगनभयो उत्पात।महाप्रलयकेमेघउठेकरि जहाँ तहाँ आघात॥करुणा करी

छांडि पशु दीनो जानि सुरन मन संस ॥ सूरदास प्रभु असुरनिकंदन दुष्टनके उर गंस॥५९॥ राग बिहाग॥यशोदा मदनगुपाल सुवावै । देखि स्वप्न गति त्रिभुवन कंप्यो ईश विरंचि भ्रमावै॥असित अरुण सित आलस लोचन उभै पलक पर आवै।जनु रविगति संकुचित कमलयुग निशिअलि उडन न पावै॥चौंकि चौंकि शिशुदशा प्रगटकरि छबि मनमें नहिं आवै।जानौ निशिपतिधरिकरि अमृत श्रुतिभंडार भरावै ॥ श्वास उदर उरसति यों मानो दुग्धसिंधु छबि पावै । नाभिसरोज प्रगट पद्मासन उतरि नाल पछितावै॥कर शिर तर करि श्याम मनोहर अलक अधिक सोभावै। सूरदास मानौ पन्नगपति प्रभु ऊपरफनछावै॥६०॥ राग बिलावल॥ अजिर प्रभातहि श्यामको पलका पौढाए। आपु चली गृहकाजको तहाँ नंद बुलाए॥निरखि हरषि मुख चूमिकै मंदिर पग धारी।आतुर नंद आए तहां जहँ ब्रह्म मुरारी॥ हँसे तात मुख हेरिकै कर पग चतुराई। किलकि झटकि उलटे परे देवन मुनि राई॥ सो छबि नंद निहारिकै तहाँ महरि बुलाई। निरखि चरित गोपालके सूरज बलि जाई॥६१॥ रामकली ॥ हरखे नंद टेरत महरि।आइ सुत मुख देखि आतुर डारिदै दधि टहरि॥मथति दधि यशुमति मथानी ध्वनि रही घर गहरि।श्रवन सुनति न महरि बातें जहाँतहाँगईचहरि॥यह सुनत तब मातु धाई गिरे जाने झहरि।हँसत नंदमुख देखि धीरज तब कह्यो ज्यों ठहरि॥श्याम उलटे परे देखे बढी शोभा लहरि । सूर प्रभु कर सेज टेकत कबहुँ टेकत ढहरि ॥ ६२ ॥ महरि मुदित उलटाइकै मुख चूंबन लागी।चिरु जीवो मेरो लाडिलो मैं भई सभागी॥एकपाख त्रयमासके मेरो भयो कन्हाई।पट करानि उलटे परे मैं करौं बधाई॥नंदघरनि आनँदभरी बोली ब्रजनारी। यह सुख सुनि आईं सबै सूरज बलिहारी॥६३॥यह सुख सुनिआईं ब्रजनारी।देखनकौं धाईं वनवारी॥ कोइ युवती आई कोइ आवति। कोउ उठि चलति सुनत सुख पावति॥घर घर होत आनंद बधाई । सूरदास प्रभुकी बलि जाई॥६४॥ रामकली ॥जननी देखि छबि बलिजाति॥जैसे निधनी धनहि पाइ हरषदिन अरुराति॥बाललीला निरखि हरखि धनि धनि धनि ब्रजनारि ।निरखि जननीवदन किलकत त्रिदशपति दैतारि॥ धन्य नंदधनि धन्य गोपीधन्य ब्रजके वास।धन्यधरनीकरन पावन जन्म सूरजदास ॥६५॥ राग बिलावल॥यशुमति भागि सुहागिनि हरिको सुत जानै।मुखमुख जोरि बतावई शिशुताई ठानै॥मो निधनीके धन रहै किलकत मनमोहन । बलिहारी छबिपर भई ऐसी बिधि जीवन॥लटकत बेसरि जननिकी इकटकचख लावै॥पकरत बदन उठाइके मनही मन भावै॥ महरि मुदित हित उर भरे यह कहि मैं वारी। नंदसुवनके चरितपर सूरज बलिहारी॥६६॥राग आसावरी ॥गोद लिये हरिको नँदरानी अस्तन पान करावतिहै । वार वार रोहिणिको कहि कहि पलिका अजिर मँगावतिहै ॥ प्रातसमय रविकिरण कोंवरी सो कहि सुतहि बतावतिहै । आउ धाम मेरे श्यामलाल आँगन बालकेलिको गावतिहै॥रुचिर सेज लैगई मोहनको भुजाउछंगि सुवावतिहै॥सूरदास प्रभु सोई कन्हैया लहरावति मल्हरावतिहै ॥ ६७॥ राग बिलावल ॥ नंदघरनि आनंदभरी सुत श्याम खिलावै । कबहुँ घुटुरवनि चलहिंगे कहि विधिहि मनावै ॥ कबहूँ दंतुली द्वै दूधकी देखों इननैननि।कबहूँ कमलमुखबोलिहैं सुनिहों इनवैननि॥चूमति करपगअधर पान लटकाति लट चूमाति । कहा वरणि सूरज कहै कहां पावै सो मति॥६८॥ राग बिलावल ॥ मेरो नान्हरिया गोपाल वेगि बडो किनि होहि।इहि मुख मधुरे वयन हँसि कबहूं जननि कहोगे मोहि॥ यह लालसा अधिक दिनदिनप्रतिकबहूं ईशकरै। मोदेखत कबहूं हँसि माधव पगु द्वै धरनिधरै॥हलधर सहित फिरै जब आँगन चरणशब्द सुख पाऊं। छिन छिन क्षुधित जात पय कारन हौं हठि

निकट बुलाऊं॥आगम निगम नेति करि गायो शिव उनमान न पायो।सूरदास बालक रस लीला मन अभिलाष बढ़ायो ॥६९॥ अथ सप्तम अध्याय तृणावर्त बध गोडा तोरन ॥राग बिलावल ॥यशुमति मन अभिलाष करै। कब मेरो लाल घुटुरुवन रेंगै कब धरनी पग द्वैक धरै ॥कब द्वै दंत दूधके देखौं कब तुतरे मुख बैन झरै। कब नंदहि कहि बाबा बोलै कब जननीकहिमोहिररै॥कबमेरोअचरागहि मोहन जोइ सोइ कहि मोसों झगरै। कब धौं तनकतनककछुखैहैअपनेकरसोंमुखहिभरै॥कबहँसि बात कहैंगे मोहिसों छबि पेखत दुख दूरि करै।श्याम अकेले आँगन छाडे आपु गई कछु काज घरै।॥एहि अंतर अंधवाइ उठी इक गरजत गगन सहित घहरै। सूरदास ब्रज लोग सुनत ध्वनि जो जहाँ तहाँ सब अतिहि डरै ॥७०॥ राग सूही ॥ अति विपरीत तृणावर्त आयो। बातचक्र मिस ब्रजके ऊपरि नंद पँवरिके भीतर धायो॥पौढे श्याम अकेलेआँगन लेतउड्यौआकाशचढायो। अंधधुंध भयो सब गोकुल जो जहाँ रह्यो सो तहाँ छपायो॥यशुमतिआइ धाइजोदेखैश्यामश्याम करि शोर उठायो। धावहु नंद गोहारी लागौ किनि तेरो सुतअधवाइउडायो॥इहिअंतरआकाश-ते आवत पर्वतसम कहि सबनि बतायो। मार्‍यो असुर शिलामों पटक्यो आप चढे ता ऊपर भायो ॥दौरे नंद यशोदा दौरी तुरतहि लै हित कंठ लगायो। सूरदास यह कहत यशोदा ना जानौं बिधिनहिं कह भायो॥७१॥ राग बिलावल॥शोभित सुभग नंदजूकीरानी।अतिआनँद आंगनमेंठाढी गोद लियेसुतशारँगपानी ॥तृणावर्तकीसुरतिआनिजिय पठयोअसुरकंसअभिमानी।गरूभयेमहिमें बैठाए सहि न परै जननीअकुलानी ॥आपुनगईसदनहीदौरीकाहूएककाजलपटानी। बौंडरुमहा भयावन आयो गोकुल सबै प्रलयकै जानी॥ महादुष्ट लै उड्यो गोपालहिं चल्यो आकाश कृष्ण यह ठानी। चापि ग्रीव हरि प्राण हरे दृग करत प्रवाह चल्यो अधिकानी॥पाहनशिलानिरखि हरि डार्‍यो ऊपर खेलन श्याम बिनानी। देति अभूषण वारि वारि सब सूरज पियत वारि सब पानी॥ ॥७१ राग धनाश्री॥उबर्‍यो श्याम महरि बडभागी।बहुत दूरिते आइपर्‍यो धर देखहुँ मैं कहुँचोट न लागी॥ रोगलेउँ बलिजाउँ कन्हैया यह कहि कंठलगाई। तुमहींहो ब्रजके जीवन धन देखत नैन सिराई॥ भली नहीं तेरी प्रकृति यशोदा छांडि अकेलो जाति।गृहको काज इनहुते प्यारो नेकहु नहीं डेराति॥भली भई अबके हरि बाच्यो अबहूँ सुरति सम्हारि। सूरदासखिझि कहतिग्वालिनी मनमें महरि बिचारि॥ ७३ ॥ राग बिलावल॥ अब हौं श्याम बलि जाउँ हरी। निशि दिन रहति बिलोकति हरिमुख छांडि सकति नहिं एक घरी॥हौं अपनेगोपाल लैदैहौं भौन चाउ सबरहौ धरी। पाए कहां खेलावनको सुख मैं दुखिया दुख कोटि भरी॥जा सुखको शिव गौरि मनाई त्रियव्रत नेम करी॥सूर श्याम पाए पैडेमें मैं निधि रांक परी॥ ७४ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि किलकत यशु-दाकी कनियां। निरखि निरखि मुख हँसति श्यामसों मो निधनीके धनियां॥ अतिकोमल तनु श्यामको वार वार पछितात।कैसे बच्यौजाउँ बलि तेरी तृणावर्तके घात॥नाजानौंधौं कौन पुण्यते को करिलेत सहाइ। वैसो काम पूतना कीनो इहि ऐसो करि आइ॥ माता दुखित जानि हरि बिहँसे नान्हीं दँतुली दिखाइ। सूरदास प्रभु माता चितते दुखडार्‍यो बिसराइ॥ ७५॥सुत मुख देखि यशोदा फूली। हर्षित देखि दूधकी दँतिया प्रेममगन तनुकी सुधि भूली॥ बाहिरते तब नंद बुलाये देखो धौं सुंदर सुखदाइ। तनक तनकसी दूधकी दँतियां देखौ नैन सुफल करौ आइ॥ आनँद सहित महर तब आए मुख चितवत दोउ नैन अघाइ। सूरश्याम किलकत द्विज दरख्यो मानो कमल पर बीज जमाइ ॥ ७६ ॥रागनी श्रीहठी ॥जननी

बलि जाय हालरु हालरो गोपाल । दधिहि बिलोइ सदमाखन राख्यो मिश्री सानि चढावै नँदलाल ॥कंचनके खंभ मयारि मरुवाडांडी खचि हीरा बिच लाल प्रबाल। रेशम बुनाइ नव रतन लाइ पालनो लटकन बहुत पिरोजा लाल॥मोतिन झालरि नानाभाँति खिलौना रचे विश्वकर्मासुतिहार। देखि देखि किलकतदँतिया दो गजत क्रीडत विविध विहार॥कठुलाकंठवज्र केहरिनखराजैं मसविंदुकामृगमद भाल॥देखत देत आशीशब्रजजननर नारी चिरजीवोयशोदातेरो बाल। सुर नर मुनि कौतूहल फूले झूलत देखत नंदकुमार ॥ हरषत सुमन अपार वर्षत नभ ध्वनि छायो जैजैकार ॥७७॥ अथ अष्टमअध्याय नामकर्म । राग बिलावल ॥ महर भवन ऋषिराज गए। चरणधोइ चरणोदक लीनो अरधआसन करि हेतु दए॥ धन्य आजु बडभाग्य हमारे ऋषिआए अतिकृपाकरी। हमकहँ धनि धनि नंद यशोदा धनि यह ब्रज जहां प्रगट हरी ॥ आदि अनादि रूप रेखा नहिं इनते प्रभु नहिं और वियो। देवकी उदर अवतार लेन कह्यो दूध पिवन तब माँगिलियो ॥ बालक करि इनकोजिनि जानौ कंसको वध एकरिहैं॥सूर देह धारि सुरन उधारन भूमिभार ए हरिहैं॥७८॥ धन्य यशोदा भाग्य तुम्हारो जिन ऐसो सुत जायो । जाके दरशपरस सुख तन मन कुलको तिमिर नशायो ॥ विप्र सुजन चारण बंदीजन सकल नंदगृह आए। नौतम सुभगहरद दूर्वा दधि हर्षितशीश बँधाए॥गर्ग निरूपकहैं सब लक्षण अविगतिहैं अविनासी। सूरदास सुनते यश हरिके आनंदे ब्रजवासी॥७९॥ अन्नप्राशनलीला॥कान्ह कुवँरकीकरहुअन्नप्राशनी कछु दिन घटि षटमास गए। नंदमहर यह सुनि पुलकित जिय हरि अन्नप्राशन योग भए॥ विप्र बुलाइ नाम लै बूझ्यो राशि शोधि इक दिनहि धरौ।आछो दिनसुनि महर यशोदा सखिन बोलिशुभ गानकरौ॥युवति महरिको गारीगावति औरमहरिको नाम लियो।ब्रज घरघर आनंद बढ्यो अतिप्रेमपुलकनसमात हियो॥जाको नेति नेतिश्रुति गावत ध्यावतशिव मुनि ध्यान धरें। सूरदास तिनको ब्रजयुवती झकझोरति उर अंक भरे ॥ ८० ॥ राग सारंग ॥ आजु कान्ह करिहैं अनप्राशन।मणिकंचनके थारभराए भाँतिभाँतिकेवासन॥नंदघरनिसबब्रधू बुलाईजेसबअपनीजाति। कोउ जिवनार करति कोउ घृतपक षटरसकेबहुभांति॥ बहुत प्रकार कियेसब व्यंजनअनेक वरन मिष्टान। अति उज्ज्वल कोमल सुठिसुंदर महरिदेखि मनमान॥यशुमति नंदहिबोलिकह्यो तब महर बुलाइ बहु जाति। आप गए नँद सकल महर घर लै आये सब ज्ञाति॥आदर करि बैठाइ सबनिको भीतर गये नँदराइ। यशुमति उबटि न्हवाइ कान्हको पटभूपण पहिराइ॥ तन झँगुली शिर लाल चौतनी करचूरा दुहुँपाइ।बारबार मुख निरखि यशोदा पुनि पुनि लेत बलाइ॥घरीजानिसुत मुख जुठरावन नंद बैठ लै गोद।महर बोलि बैठारिमंडली आनँद करतविनोद॥ कंचनथार लै खीर धरी भरि तापर घृत मधु नाइ। नंद लै लै हरिमुख जुठरावन नारि उठीं सब गाइ॥ षटरसके परकार जहांलगि लैलै अधर छुवावत।विश्वंभर जगदीश जगतगुरु परसत मुख करुवावत॥तनक तनक जल अधर पोंछिकै यशुमति पै पहुँचाए। हर्षवंत युवती सब लैलै मुख चूमति उर लाए॥महर गोप सबहीमिलि बैठे पनवारे परुसाए। भोजन करत अधिक रुचिउपजी जो जेहिके मन भाए॥इहिविधि सुख विलसत ब्रजवासी धनि गोकुल नरनारी।नंदसुवनकी या छबि ऊपर सूरदास बलिहारी ॥ ८१॥ राग सारंग॥ हरिको मुख माई मोहिं अनुदिन अति भावै। चितवत चित नैननकी मति गति बिसरावै ॥ ललना लैलै उछंग अधिक लोभ सो लागै । निरखति निंदति निमेष करत ओट आगे॥ शोभित शुभ कपोल अधर अलप अलप दशना।

किलकि वैन कहत मोहन मृदु रसना ॥ नासिका लोचन विशाल संतत सुखकारी । सूरदास धन्य भाग्य देखत व्रजनारी ॥ ८२ ॥ लालन तेरे मुखपरहों वारी। बालगोपाल लगो इन नैननि रोगु बलाइ तुम्हारी॥ लट लटकनि मोहन मसि बिंदुका तिलक भाल सुखकारी। मनहुँ कमल अलि-सावक पंगति उठत मधुप छबि भारी ॥ लोचन ललित कपोलनि काजर छबि उपजत अधिकारी। मुखमें मुख औरै रुचिबाढति हँसत देदै किलकारी॥अलपदशन कलबल करि बोलनि विधिनहिं परत विचारी । निकसति ज्योति अधरनिके बिचह्वै मानौं विधुमें बीजु उज्यारी॥सुंदरताको पार न पावति रूपदेखि महतारी॥सूरसिंधुकी बूंद भई मिलि मति गति दृष्टिहमारी॥८३॥राग धनाश्री॥ लाल तेरे मुख ऊपर वारी ॥ बलि कैसे मेरे नैननि लागै लेउँ बलाइ तिहारी॥सुंदरताको पार न आवति रूप देखि महतारी । उरअंतर आनंद बढ़ावत हँसत देत किलकारी ॥ अलपदशन तोत-रावत बोलत छबि चितहु न जात बिचारी । सूर सिंधुकी बूंदभई मिलि मनसा मगन हमारी॥ ॥८४॥राग जैतश्री॥ लालन हौं वारी तेरे या मुख ऊपर । माई मेरिहि डीठि न लागे ताते मसि-बिंदा दयो भूपर ॥ सर्वसु मैं पहिलेही दीनी नान्हीं नान्हीं दँतुली दूपर। अब कह करौं निछावरि सूर यशोमति अपने लालन ऊपर ॥ ८५ ॥ लाला हौं वारी तेरे मुखपर। कुटिल अलक मोहन मन बिहँसत भ्रुकुटी बिकट नैननिपर ॥ दमकति द्वै द्वै दँतुलिया विहँसति मानो सीपिज घरु कियो वारिजपर । लघु लघु शिर लट घूँघरवारी लटकि २ रह्यो लिलार पर॥यह उपमाकहि कापैआवै कछुक कहौं सकुचतिहौं हियपर॥नूतनचंद्र-रेखमधि राजति सुरगुरु शुक्र उदोत परस्पर ॥ लोचन लोल कपोल ललित अति नासिकको मुक्ता रदछंदपर।सूर कहा न्यौछावरि करिये अपने लाल ललित लर ऊपर॥८६ ॥ अथ वरगांठि-लीला राग बिलावल ॥ आजु भोर तमचुरकी रोल । गोकुलमें आनंद होतहै मंगल ध्वनि महराने टोल ॥ फूले फिरत नंद अति सुख भयो हर्षि मँगावत फूल तमोल । फूली फिरत यशोदा घर घर उबटि कान्ह अन्हवाइ अमोल॥तनक वदन दोउ तनक तनक कर तनक चरन पोछत पटझोल। कान्हगले सोहै कंठमाला अंग अभूपण अँगुरिन गोल॥शिर चौतनी दिठौंना दीने आंखि आंजि पहिराइ निचोल। श्याम करत मातासों झगरो अटपटात कलबल कर बोल॥दोउकपोलगहिकै मुख चुंवति वर्षदिवस कहि करत कलोल । सूर श्याम ब्रजजन मन मोहन वरषगांठिको डोरा खोल ॥८७ ॥ राग धनाश्री ॥अलि मेरे लालनकी आजु वरपगांठि सब सखनिबोलावो॥शुभकरि मंगल गान करावो । चंदन अंगन सबनलिपावो ॥ मोतिअनको तुम चौक पुरावो। उमँग अंगनि आनँद तूर बजावो॥ मेरे कहे तुम विप्र बुलावो। शुभ घरी एक आनि धरावो ॥ बागे बीरे बनि ठनि बनावो। आभूपण पहिरावो॥अक्षत दूब बधावो। लालनकी वर्षगांठि जुरावो॥इहै मोहि नैनन लाहो देखावो । पंचरंग सारी मँगावो ॥बंधुजन सब पहिरावो॥नचैं सब उमँगि अंग बढावो॥नंद गनी सब ग्वाल बुलावो॥इहै रीति कहि कहि सुनावो॥बेगि करौ किनि बिलँब लगावो॥यशुमति तब नंद बोलावो ॥ लाल लिए कनियां देखरावो। लग्नकी घरी तुरत अब आवो ॥मैंतो अन्ह-वाय बनावो । अति सुख भयो वर गांठि जुरावो ॥सूरश्याम मुख छबिहि निहारति॥तनमन धन युवतीजन वारति ॥८८॥ राग आसावरी ॥उमँगनि उमँगीहै ब्रजनारी कान्हकी बरषगांठि बरष वरपनि॥गावहिं मंगलगान नीके सुर नीकी तानआनंदहरपनि॥कंचनमणिजटित थार दधिरोचन फूल डार देखन चलीं नंदकुमारमिलिबेकी तरसनि॥सूरदास प्रभुकीवरपगांठि जोरतियहछबिपर

तृन तोरति अरस परसनि ॥ ८६ ॥ श्रीकृष्णजीको कनछेदन लीला राग धनाश्री ॥ कान्ह कुँवरको कनछेदनोहै हाथ सुहारी भेली गुरकी। बिधि विहँसत हरि हँसत हेरि हरि यशुमतिके धुकधुकी उरकी ॥ रोचन भरि लै देत सींकसों श्रवण निकट अतिही चतुरकी ॥ कंचनके द्वै दुर मँगाइलिये कहै कहा छेदन आतुरकी । लोचन भरि भरि दोउ माताके कनछेदन देखत जिय मुरकी ॥ रोवत देखि जननि अकुलानी लियो तुरत नौवाको झरकी। हँसत नंदयुवती सब बिहँसी झमकि चली सब भीतर दुरकी ॥ सूरदास नँद करत बधाई अतिआनंद बाला ब्रज पुरकी ॥ जबहि भयो कनछेदन हरिको। सुरवनिता सब कहत परस्पर ब्रजवासी दासी समसरि को ॥ गोपी मगन भई सब गावतिहलरावतसुतमहरमहरिको। जो सुख मुनिजन ध्यान न पावत सो सुख नंद करत सब घरको ॥ मणिमुक्तागणकरतन्यछावरि तुरत देत बिलम नहिं घरिको। सूर नंद ब्रजजन पहिरावत उमँगि चल्यो सुखसिंधु लहरको ॥ ८७ ॥ अथ घुटुरुवनिचीलवो ॥ खेलत नंद आंगन गोविंद। निरखि निरखि यसुमति सुख पावति वदन मनोहर चंद ॥ कटि किंकिनी कंठ मणिकी द्युति लट मुकुता भरि भाल। परम सुदेश कंठ केहरि नख बिच बिच बज्र प्रवाल ॥ कर पहुँचियाँ पांयन पैंजनी सुरतन रंजित रजपीत। घुटुरुनि चलत अजिर में विहरत मुखमंडित नवनीत॥ सूर विचित्र कान्हकी बानक बाणी कहत नहीं बनिआवै। बालदशाअवलोकिसकलमुनियोग बिरति बिसरावै ॥८८॥ राग आसावरी ॥ घुटुरवन चलत श्याम मणि आंगन मात पिता दोउ देखत री ॥ कबहुँक किलकिलातमुखहेरत कबहुँ जननि मुखपेखत री ॥ लटकन लटकत ललित भालपरकाजरबिंदु भ्रुवऊपर री। यहशोभा नैननि भरि देखें नहिं उपमा तिहुँ भूपर री ॥ कबहुँक दौरि घुटुरुवन लटकत गिरत परत फिरि धावति री। इतते नंदबुलाइ लेतहैं उतते जननि बुलावत री॥ दंपति होड करत आपसमें श्याम खिलोना कीनो री। सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन सुत हित करि दोउ लीनो री॥८९॥ राग सारंग ॥ निरखि छबि फूलतहै ब्रजराज। उत यशुदा इत आपु परस्पर आडे रहे कर पाज॥ किंकिनि कटि मध्य प्रसरित भुज उभय मिलत फुनि लाज। झुमत लरत अलि सैन सरोज पर मन मकरंदके काज ॥ अर्धगिरामृदु स्रवत सुधा जनु पिवत श्रुति निपट आज। सूरदास प्रभु सुत रति करि २ लैलै ऊपर भाज ॥ ९० ॥ राग बिलावल॥ शोभित कर नवनीत लिये॥ घुटुरुन चलत रेणु तनुमंडित मुख दधिलेप किये ॥ चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक किये। लट लटकनि मनो मत्त मधुप गन मादक मदहि पिये॥ कठुला कंठ बज्र केहरि नख राजत रुचिर हिये। धन्य सूर एको पल या सुख का शत कल्प जिये ॥९१॥ राग ललित ॥ माई विहरत गोपाललाल मणिमय रच्यो अंगना परिरांगना घुटुरुवनि डोलै। निरखि निरखि अपनो प्रतिबिंब हँसत किलकत पाछे फिर फिर चितै मैयामैया बोलै॥ ज्यों ज्यों अलिगण सहित विमलजल धाइ रहेकुटिलअलक बहनकी छबि अवनी प्रति लोलै। सूरदास छबि निहारि थकित रहे सब घोपनारि तनमनधन देति वारि वारि ओलै॥९२॥ राग बिलावल ॥ बाल विनोद खरो जिय भावत। मुख प्रतिबिंब पकरिबे कारन हुलसि घुटुरुवनि धावत॥ छिनक माँझ त्रिभुवनकी लीला शिशुतामाहँ दुरावत। शब्दएक बोल्यो चाहतहैं प्रगट वचन नहिं आवत॥ कमलनैन माखनमाँगतहैं ग्वालिन सैन बतावत। सूर श्याम सु सनेह मनोहर यशुमति प्रीति बढावत॥९३॥ राग सारंग॥ बलिजाऊं श्याम मनोहर नैन। अब चितवत मोहन करि अँखियन मधुप देत मनों सैन॥ कुंचित अलक तिलक गोरोचन शशिपरह-

रषे ऐन॥कबहुंक खेलत जात घुटुरुवनि उपजावत सुख चैन॥कबहुँक रोवतहँसतहैंबलिगईबोलत मधुरे बैन ॥ कबहुँक ठाढे होत टेकि कर चलि न सकत इत गैन ॥ देखत वदनकरौं न्योछावरि तात मात सुखदैन ॥ सूर बाललीलाके ऊपर वारौं कोटिक मैन ॥ ९४॥ कान्हरो ॥ आँगन चलत घुटुरुवन धाए।नीलजलद तनु श्यामसुख निरखि जननि दोउ निकट बुलाए॥बंधुकसुमन अरुण पदपंकज अंकुश राम चिह्न बसिआए॥ नूपुर कलरव मनों सुतहँसनि रचे नीठ दे बाँह बसाए॥ कटि किंकिनि वरहार ग्रीवदर रुचिर बाहुभूषण पहिराए। उर श्रीवक्ष मनोहर केहरिनखनमेंमध्य मणिगण बहु लाए ॥ सुभग चिबुक द्विज अधर नासिका श्रवण कपोलमोहिं सुठि भाए ॥ भ्रुव सुंदर करुणारसपूरन लोचन मनहु युगल जलजाए ॥ भाल विशाललतितलटकनमणि बालदशाके चिकुर सुहाए ॥ मानो गुरु शनि कुज आगे करि शशिहि मिलन तमके गण भाए॥ उपमा एक अभूत भई तब जब जननी पट पीत उढाए॥ नील जलद पर उडगन निरखत तजि सुभाउ मनौ तडित छपाए॥ अंग अंग प्रति मार निकर मिलि छबि समूह लैलै जनु छाए ॥ सूरदास सो क्योंकरि वरणैं जो छबि निगम नेति करि गाए ॥ ९५ ॥ धनाश्री ॥ हौं बलि जाउँ छबीले लालकी॥ धूसरि धूरि घुटुरुवन रेंगनि बोलन वचन रसालकी॥ छिटकिरहींचहुँदिशि जुलटुरियां लटकन लटकत भालकी॥ मोतिन सहित नासिका नथुनी कंठ कमलदल मालकी॥कछुकै हाथ कछू मुखमाखन चितवनि नैन विशालकी॥सूर सु प्रभुके प्रेम मगन भई ढिग न तजति व्रजबालकी ॥९६॥ कान्हरो॥ सादर सहितविलोकि श्यामसुख नंदरूपलियेकनियाँ ॥ सुंदरश्याम सरोज नील तनु अँग अँग सकल सुभग सुखदनियाँ॥ अरुणतरनिनखज्योतिजगमगतिझुन झुन करत पाइँ पंजनियाँ। कनकरतन मणि जटित रचित कटि किंकिनि कलित पीतपट तनियाँ॥पहुँची करनिपदिक उर हरिनख कठुला कंठ मंजु गजमनियाँ ॥ रुचिर चिबुक द्विज अधर नासिका अतिसुंदर राजत सोवनियाँ॥कुटिलभ्रुकुटि सुखकी निधिआनन कपोलकीछबि न उपनियाँ॥भाल तिलक मसिबिंदु बिराजत शोभित शीशलाल चौतनियाँ॥ मनमोहनकीतुतरी बोलन मुनिमन हरतसु हँसि मुसकनियाँ॥बाल स्वभाउ विलोकि विलोचन चोरत चितहि चारु चितवनियाँ॥निरखति व्रजयुवती सब ठाढी नंदसुवनछबि चन्द्रवदनियाँ ॥ सूरदास प्रभुनिरखि मगन भए प्रेमविवश कछु सुधिनअपनियाँ॥९७॥कान्हरे॥बोलि लिए यशुमति यदुनंदहि॥ पीत झँगुलियाकी छबि छाजति विद्युलता सोहति मनोकंदहि॥ वाजापति अग्रजअंवातेअरजथानसुत मालागंदहि ॥ मनोसुरगृहते सुररिपु कन्या सोते आवति ढुरिसंदहि॥आरि करत कर चपल करतुतो नंदनारि आनन छुवेमंदहि । मनो भुजंगअरि परमलालची फिरफिरचाटत सुभग सुचंदहि ॥गुरगी बाननि यों अनुरागति भँवर गुंजरत कमलमों वंदहि । सूरदास प्रभु सुतप किये बड भाग्य यशोदा अरु नंदहि॥९८॥राग धनाश्री॥कहां लौं वरनौं सुंदरताइ॥ खेलत कुँवर कनक आँगनमें नैन निरखि छबिछाइ॥कुलहि लसतशिर श्याम सुभग अति बहुविधि सुरंग बनाइ । मानो नवघन ऊपर राजत मघवा धनुप चढाइ॥अति सुदेश मृदु हरत चिकुर मनमोहन मुख बगराइ। मानो प्रगट कंज पर मंजुल अलि अवली फिरि आइ॥नील श्वेत पर पीत लालमणि लटकनि भालरुनाइ ॥ शनि गुरु असुर देवगुरु मिलि मनो भौम सहित समुदाइ॥ दूधदंत दुति कहि न जाति अति अद्भुत एक उपमाइ ॥ किलकत हँसत दुरत प्रगटत मनो घनमें विद्यु छपाइ ॥ खंडित वचन देत पूरन सुख अल्प जल्प जलपाइ ॥ घुटुरुन चलत रेणु तनु मंडित सूरदास बलिजाइ ॥ ९९ ॥ नटनारायण ॥ हरिजूकी बाल छबि कहौं वरनि ।

सकल सुखकी सींव कोटि मनोज शोभा हरनि ॥ भुज भुजंग सरोज नयननि वदन विधु जित लरनि । रहे विवरन सलिल नभ उपमा अपर दुति उरनि ॥ मंजु मेचक मृदुल तनु अनुहरत भूषण भरनि । मनहुँ सुभग शृंगार शिशु तरु फरचौ अद्भुत फरनि । चलत पद प्रतिबिंब मणि आँगन घुटुरुवन करनि। जलजसंपुट सुभग छबि भरि लेत उर जनु धरनि॥ पुण्यफल अनुभवति सुतहि विलोकिकै नंदघरनि । सूर प्रभुकी बसी उर किलकनि ललित लरखरनि॥१००॥राग धनाश्री ॥ किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत। मणिमय कनक नंदके आँगनमुख प्रतिबिंबपकरवेहि धावत॥कबहुं निरखि हरि आप छांहको करसों पकरनको चित चाहत।किलकि हँसत राजत द्वै दतियां पुनि पुनि तिहिं अवगाहत॥कनक भूमि पर कर पग छाया यह उपमा एक राजत।कर कर प्रति पदप्रतिमणि वसुधा कमल बैठकी साजत॥ बालदशासुख निरखि यशोदा पुनि पुनि नंद बुलावत।अचरा तर लै ढाकि सूरके प्रभुको जननी दूध पियावत॥१०१॥राग बिलावल॥नंद धाम खेलत हरि डोलत।यशुमति करत रसोंई भीतर आपुन किलकत बोलत॥टेरि उठी यशुमति मोहनको आवहु घुटुरुवन धाए।बैनसुनत माता पहिचानी चलैघुटुरुवनि पाए॥लै उठाय अंचल गहि पोंछे धूर भरी सब देह।सूरज प्रभु यशुमति रज झारति कहां भरी यह खेह ॥२॥ अथ पाँयन चलन समय ॥ सूहो बिलावल ॥धनि यशुमति बडभागिनीलियेश्याम खिलावै।तनकतनक भुजपकरिकै ठाढो होन सिखावै॥लरखरात गिरि परतहैं चलि घुटुरुवनि धावै।पुनि क्रमक्रम भुज टेकिकै पग द्वैक चलावै॥अपने पाँयन कबहिंलौं मो देखत धावै। सूरदास यशुमति यह बिधि सौंज मनावै ॥३॥कान्हरो॥हरिको विमल यश गावत गोपंगना॥मणिमय आँगन नंदरायके बाल गोपाल तहां करैं रंगना ॥ गिरि गिरि परत घुटुरुवनि टेकत खेलतहैं दोउ छगन मंगना॥धूसरि धूरि धौत तनु मंडित मातु यशोदा लेत उछंगना ॥ वसुधा त्रयपद करत न आलस भयो कठिन परचोदेहरी उलंघना । सूरदास प्रभु ब्रजवधू निरखत रुचिर हार हिए सोहतुबंधना ॥४ ॥ सूहो बिलावल॥ चलन चहत पाँइन गोपाल । लै लगाइ अँगुरी नँदरानी मोहन मूरति श्याम तमाल ॥डगमगात गिरि परत पाँइ पर भुज भ्राजत नँदलाल । जनो श्रीधर श्रीधरत अधोमुख धुकतधरनि मानौ मनिमाल॥ धूरि धौति तनु नैनन अंजन चलत लटपटी चाल। चरणरुणित नूपुरध्वनि मानो सर विहरत है बाल मराल ॥ लट लटकनि शिर चारु चपोडा सुठि शोभा सोहै शिशु भाल ।सूरदास ऐसो सुख निरखत जो जीजे जगमें बहुकाल॥५॥बिलावल॥सिखवत चलनयशोदामैया।अरवराइ कर पाणि गहावत डगमगाइ धरणी धरै पैया॥ कबहुँक सुन्दर बदन विलोकतिउरआनँदभरिलेत बलैया । कबहुँक बलिको टेरि बुलावति इहि अंगन खेलो दोउ भैया॥ कबहुँक कुलदेवतामनावत चिरजीवै मेरो बाल कन्हैया । सूरदास प्रभु सब सुखदायक अति प्रताप बालकनँदरैया ॥६॥ सूहो बिलावल ॥ मणिमयआंगन नंदकेखेलतदोउभैया।गौरश्यामजोरीबनीबलरामकन्हैया॥लटकन ललित लटुरियाँ मसि बिंदु गोरोचन। हरि नख उर अति राजहिं संतनिदुखमोचन॥ संग संग यशुमति रोहिणी हितकारनि मैया । चुटकीदेहिनचावहिसुतजानिनन्हैया॥नीलपीतपट ओढनी देखत जिय भावै।बालविनोद अनंदसों सूरज जन गावै॥७॥ राग धनाश्री ॥ आँगन खेलैं नंदके नंदा । यदुकुल कुमुद सुखद चारु चंदा॥ संग संग बलमोहन सोहैं। शिशुभूषणसबकोमन मोहैं॥ तनुद्युति मोरचंद्र जिमि झलकै।उमँगि उमँगि अँग अँग छबि छलकै॥कटिकिंकिनिपग नूपुर बाजै। पंकज पाणि पहुँचिया राजै ॥ कठुला कंठ बघनहा नीके।नयनसरोज मयन सरसीके॥ लटकन

ललित ललाट लटूरी । दमकत द्वैद्वै दँतुरिया रूरी ॥ मुनिमन हरत मंजु मसिबिंदा । ललित वदन बल बाल गोविंदा ॥कुलही चित्र बिचित्र झगूली॥निरखि यशोदा रोहिणि फूली॥गहिमणिखम्भ डिंभ डग डोलैं । कलबल वचन तोतरे बोलैं ॥ निरखत छबि झाँकत प्रतिबिंबै । देत परम सुख पितु अरु अंबे ॥ ब्रजजन देखत हिय हुलसाने॥सूरश्याम महिमा को जाने॥८॥ राग नटनारायण ॥ बलिगई बालरूप मुरारि। पाँयपैजन रुनु झुन नचावति नंदनारि॥कबहूँ हरिको लाइ अंगुरीचलन सिखावति ग्वारि । कबहूँ हिरदै लगाइ हितकरि लेति अंचल डारि॥कबहुँक हरिको चितै चूमति कबहूँ गावति गारि॥कबहूँ लै पाछे दुरावति ह्यां नहीं बनवारि॥ कबहूँ अंग भूषण बनावति राई लोन उतारि । सूर सुर नर सबै मोहे निरखि यह अनुहारि ॥९॥ विलावल॥भावत हरिको बाल विनोद। श्यामराम मुख निरखि प्रमोदित रोहिणि जननियशोद॥आँगन पंकरागतनु शोभितचले नूपुरध्वनि सुनि मनमोद॥परमसनेह बढावत मातनि रवकि रहरिबैठत गोद॥ अतिश्रीचपल सकल सुखदायक निशिदिन रहत केलिरसओद॥सूरश्याम अंबुजदल लोचन फिरि चितवत ब्रजवनिता कोद॥बालविनोद आँगनकी डोलनि । मणिमय भूमि नंदके आलय बलि बलि जाउँ तोतरी बोलनि॥कठुला कंठ रुचिर केहरि नख वज्रमोल बहुलाल अमोलनि॥बदनसरोज तिलक गोरो वन लट लटकन मधु पंकति लोलनि॥लौनी कर आनन परसतहैं कछुक खाइ कछु लग्यो कपोलनि। कहि जन सूर कहांलौं वरणौं धन्यनंदजीवनयुगतोलनि॥ ११०॥ राग विलावल॥गहेअंगुरिया तातकी नंद चलन सिखावत॥अरबराइ गिरिपरतहैं करटेकि उठावत॥बारबार बकि श्यामसों कछु बोल बकावत॥दुहुंघा द्वै दँतुली भई अति मुखछबि पावत॥ कबहुँ कान्ह कर छाँडि नंदपग द्वै करि गावत ।कबहुँ धरणिपर बैठिकै मनमें कछु गावत॥कबहुँ उलटि चलैं धामको घुटुरुन करि धावत। सूरश्याम मुख देखि महरमन हर्ष बढावत ॥११॥धनाश्री ॥ कान्ह चलत पग द्वैद्वै धरनी। जो मनमें अभिलाष करतही सो देखत नँदघरनी ॥ रुनुक झुनुक नूपुर बाजत पग यह अतिहै मनहरनी । बैठजात पुनि उठत तुरतही सो छबि जाइ न बरनी ॥ ब्रजयुबती सबदेखिथकितभइंसुंदरताकी सरनी। चिरजीवो यशुदाको नंदन सूरदासको तरनी ॥१२॥ राग विलावल ॥चलत श्याम घन राजति पैंजन पग पग चारु मनोहर । डगमगात डोलत आंगनमें निरखिबिनोद मोहे सुर मुनि नर ॥ अरु मन मुदित यशोदा जननी पाछे फिरत गहे अंगुरी कर । मनो धेनुतृणछांडिबच्छहित प्रेम पुलकि चित स्रवत पयोधर ॥ कुंडल लोल कपोल विराजत लटकन ललित लटुरिया भूपर। सूर श्याम सुंदर बिलोकनि रहत बालगोपालंनदघर ॥१३॥ राग गोरी ॥ भीतरते बाहरलौं आवत घर आंगन अति चलत सुगम भयो देहरीमें अटकावत॥ गिरि गिरि परतजातनहिंउलँघीअति श्रम होत न धावत। अहुठपैर वसुधा सब कीन्ही धाम अवधि बिरमावत ॥मनहीमन बलवीर कहतहैं ऐसे रंग बनावत ।सूरदास प्रभु अगणितमहिमा भक्तनके मन भावत ॥ १४॥राग धनाश्री॥ चलत देखि यशुमति सुख पावै॥ठुमुकु ठुमुकु धरनी धर रेंगत जननी देखिदिखावै॥देहरी लौं चलि जात बहुरि फिरि फिरि इतहीको आवै॥गिरि गिरि परत बनत नहिं नांघत सुर मुनि शोच करावै॥ कोटि ब्रह्मांड करत छिन भीतर हरत विलंब न लावै । ताको लिए नंदकी रानी नानारूप खिलावै ॥ तब यशुमति कर टेकि श्यामको क्रमक्रमकै उतरावै । सूरदास प्रभु देखि देखि सुर नर मुनि मन बुद्धि भुलावै ॥ १५ ॥ राग भैरव॥ सो बल कहा गयो भगवान । जिहि बल मीनरूप जल थाह्यो लियो निगम हति असुर पुरान॥ जेहि बल कमठपीठ पर गिरिधर सजलसिंधु मथि

कियो विमान। जिहिबल रूप वराह दशनपर राखी पुहुमी पुहुपसमान ॥ जेहि बल हिरणकशिपु तनु फारयो भए भक्तको कृपानिधान। जेहि बल बलि बंधन कारि पठयो त्रैपद वसुधा करी प्रमान॥ जेहि बल विप्र तिलकदै थापे रक्षा आपु करी विदमान। जेहि बल रावणके शिर काटे कियो विभीषण नृपति समान ॥ जेहि बल जाम्बवंत मद मेट्यो जेहि बल ध्रुवबिनती सुनि कान। सूरदास अब धाम देहरी चढि न सकत हारि खरेई अयान॥ १६ ॥आसावरी॥ देखो अद्भुत अविगतिकी गति कैसो रूप धर्योहैहो॥तीनलोक जाके उदर भवन सो सूपके कोन पर्यो है हो॥ जाकेनालरुद्रब्रह्मादिक सकलयोगव्रतसाधें हो। तिनकोनालछी निब्रजयुवती बाँटि तगासों बाँधें हो॥ जाके मुख सनकादिक तप कियो सकल चतुरई ठानीहो। सोमुख चूमति महारि यशोदा दूध लार लपटानी हो ॥ जिन कानन गजसंकट सुनिकै गरुडासन बिसरावै हो। तिन कानन ह्वै निकट यशोदा हलरावै (दुलरावै) गुन गावै हो॥ विश्वभरण पोषण सब समरथ माखनकाज अरे हैं हो। रूप विराट रोम प्रति कोटि सुपलना माँझ परेहैं हो॥जिन्हहि भुजा प्रहलाद उबार्यो हिरणकशिपु तनु फारे हो। सो भुज पकरि कहतब्रज युवती ठाढे होहु ललारेहो॥ जाको ध्यानधरें सुर मुनिजन शंभु समाधि न टारी हो। सो ठाकुरहैसूरदासको गोकुल गोप विहारीहो॥ १७ ॥आसावरी॥आनंदप्रेम उमँगीयशोदालालरी खिलावै॥शिवसनकादिशुकादिब्रह्मादिक खोजतअंतनपावै॥गोदलिएहँसिकै हलरावत तोतरे बोल बोलावै ॥दैकर ताल बजावति गावति रागअनूप मल्हावै । कबहुँक करपल्लव आनिगहावति आँगन माँझरिझावै।मोहिलियो सुरव्योम विमाननरवि नहिं रथहिचलावै॥कबहुँ क हिलकै किलकैजननीमनसुखसिंधुबढावै। मोहिरही ब्रजकीयुवतीसब सूरदास यश गावै॥१८॥ राग कान्हरा॥हरि हित मेरो माधैया।देहरीचढत परतहरिगिरिगिरि करपल्लवजो गहतहैमैया॥भक्ति हेतु यशुदाके आये चरण धरणिपर धारैया। जिनहि चरण छलिबो बलिराजा नखप्रदेस गंगा जो बहैया॥जिहि स्वरूपमोहे ब्रह्मादिक कोटि भानुशशिउगैया।सूरदास प्रभुइनचरणनकी मैंबलिमैंद-लिजैया॥ १९॥राग सूहा॥आँगनश्यामनचावहि यशोमतिनंदरानी।तारीदैदैगावहीमधुरीमृदुवानी॥ पाँयन नूपुर बाजई कटिकिंकिनी कूजै।नन्ही नन्ही एडिअन अरुणता फलबिबनपूजै॥यशुमतिगान सुनै श्रवण तबआपुन गावै।तारी बजावत देखहि पुनितारी बजावै॥केहरिनख उरपर सुठि शोभा-कारी।मानौ श्याम घन मध्यमें नौ शशि उजियारी॥गभुआरे शिर केशहैं ते बधुसँवारे। लटकन लटकै भालपर विधु मधि गण तारे॥ कठुला कंठ चिबुक तरे मुख हँसनि विराजै। खंजन मीन शुक आनिकै मानौ परे दुरावै॥यशुमति सुतहि नचावईछबि देखत जियते।सूरदास प्रभुश्यामके सुख टरतन हियते॥२०॥राग बिलावल ॥त्यों त्यों नाचोरी मनमोहन धाम मधुर सुर होई।तैसियै किंकिनि हरि पगनेपुर रसहि मिले सुर दोई॥कंचनकोकठुला मनमोहत तिन बघनहा बिचपोई। निरखि निरखि सुख नंद सुवनको सुर मन आनँद होई॥देखत बनै कहत नहिं आवै उपमा-को नहिं कोई। सूर भवनको तिमिर नसायो निरखत जननि यशोई॥ २१॥राग आसावरी ॥जबते मैं खेलत देखो आँगन री यशुदाको पूत री।तबते ग्रहसों नाहिननातो टूट्यो जैसो काचोसूतरी॥ अतिविशाल वारिजदललोचन राजति काजररेख री।इच्छासों मकरंद लेत मनों अलिगोकुलके वेपरी॥श्रवणन नहि उपकंठ रहतहैअरु बोलत तुतरात री । उमँग प्रेम नैन मगह्वैकै कापै रोके जातरी ॥ दमकत दोउ दूधकी दतियां जगमग जगमग होत री। मानो सुंदरतामंदिरमें रूपर-तनकी ज्योतिरी॥सूरदास देखौ सुंदर मुखआनँद उर न समाइरी।मानो कुमुद कामनापूरण पूरण इंदुहि पाइ री॥अद्भुत एक चितयो हौं सजनी नंदमहरके आंगनरी।सो मैं निरखि अपनपो खोयो

गई मथनियां मांगनरी ॥ बालदशा मुखकमल विलोकत कछु जननीसों बोलै री।प्रगटत हँसत दँतुलिया मानौ सीपदुरेदलओलै री॥ सुंदरभालतिलक गोरोचनमिलि मसिबिंदुकलाग्यौरी।मनो मकरंद अचै रुचिके अलिसावक सोइ न जाग्यौ री॥ कुंडललोलकपोलनझलकत मनो दर्पणमें झाई री । रही विलोकि विचारि चारुछबि परमितिकाहुन पाई री॥मंजुल तारनकीचपलाईचितु चतुरानन करपै री । मनो शरासन समर धरे कर भौंह चढे शरवरपै री॥ जलधिथकित जनौंकाग-दपोत ज्यों कूलन कबहूं आयो री । ना जानौंकेहिअंग मगन मन चाहि रह्योनहिं पायोरी॥कहां लगि कहौं बनाइ वरणि जितनी छबि निरखत हारी री । सूर श्यामके एक रोमपर देहुँ प्राण बलि-हारी री॥ २३ ॥राग धनाश्री ॥ यशोदा तेरो चिरजीवहु गोपाल । वेगि बढो बलसहित बृद्धलठ महरि मनोहर बाल ॥ उपजि परचो इह कोख कर्मवश मुँदी सीप ज्यों लाल। या गोकुलके प्राणजीवन वैरिनके उर शाल॥ सूर कितो मन सुख पावतहैं देखे श्याम तमाल । रुजि आरति लागो मेरी अँखियन रोग दोष जंजाल॥ २४ ॥ सारंग आसावरी॥ आजु गई हौं नंदभवनमें कहा कहों ग्रहचैनु री । बहुअंग चतुरंग छलमो कोटिक दुहियतु धेनु री ॥ घूमिरहे जित तित दधि मथना सुनत मेघ ध्वनि लाजै री। वरणौं कहासदनकी शोभा वैकुंठहुते राजै री ॥ बोलिलईनववधू जानिकै खेलतजहाँ कन्हाई री। मुख देखत मोहनीसी लागत रूप न वरण्यो जाई री॥ लटकनलटकि रहे भ्रूऊपर पँचरँग मणिगण पोहैरी ।मानहु गुरु शनि शुक्र एक होइ लाल भालपर सोहैरी॥ गोरोचनको तिलक निकटही काजरबिंदुकु लाग्यौ री। मनहु कमलगुन:पीयराग रस निशि अलिसुत सोइ जाग्यौ री॥ विधु आनन पर दीरघ लोचन नासा लटकत मोती री। मानौं सोम संग करिलीनो जानि आपनो गोती री॥ सीपजमाल श्याम उर सोहै बिच वचना छबि पावैरी। मानौं द्वैजशशि नखत सहितहैउपमा कहत न आवै री ॥ वरणों कहा अंग अंग शोभा भाव धरौ जलराशी री॥ बाल लाल गोपाल हि वर्णत कविकुल करिहै हांसीरी॥शोभासिंधु अगाधबोध बुधउपमा नाहिन औररी।रूपदेखि तनु थकितरहीहोमनो भेइभरकौचौर री॥जोमेरी अँखिया रसनाहोती कहती रूप बनाइरी।चिरजीवो यशुदाको नंदन सूरदास बलि जाइ री ॥ २२॥ बलभद्रवचन राग बिलावल ॥कलबलते हरि:हारपरे। नवरंग विमल जलद पर मानौ द्वै शशि आनि अरे।।तबगिरि मकठ सुरासुर सर्पहि धरत नमनमें नेक डरे। तिन भुज भूषण भार परत कर गोपिनके आधार धरे॥चंद्रवदन मानौं मथि काढचो विहँसनि मनहु प्रकाश करे । सूरश्याम दधिभाजनभीतर निरखत मुख मुखते न टरे ॥२६॥ मथत दधि मथनी टेक रह्यो।आरि करत मटुकी गहि मोहन वासुकि शंभु डरचो॥मंदर तरतसिंधु पुनि कांपत फिरि जनि मथन करे।प्रलय होत जनि गहो मथानी प्रभु मर्याद टरे॥सुरअरि सुर ठाढे सब चितवें नैनन नीर ढरे । सूरदास प्रभु मुग्ध यशोदा मुख दधिबिंदु गिरै ॥ २७॥ जब दधिरिपु हरि हाथ लियो।खगपतिअरि डर लै शंकत बासरपति आनंद कियो ॥बिधि शिर धुनि सकुचत शिव सोचत गरलादिक केस जात पियो। अति अनुराग संग कमलातन प्रफुलित अगन अमित हियो ॥ एकन दुख एकन सुख उपजत को ऐसो न विनोद कियो। सूरदास प्रभु तुमरे महतहि एक एकते होत वियो ॥२८ ॥ राग धनाश्री॥जब मोहन कर गही मथानी। परसनकर दधिमाटनेन चित उदधि शैल वासुकि भय मानी॥ कबहुँक अहुठ परग करि वसुधा कबहुँक देहरि उलंघि न जानी॥ कबहुँक सुर मुनि ध्यान न पावत कबहुँ खिला-वति नंदकी रानी॥ कबहुँक अपर खीरनहिं भावत कबहुँ मेखली उदर समानी॥कबहुँक आर करत माखनको कबहुँक भेष दिखाइ बिनानी॥ कबहुँक अखिल उदर नहिं तर्पित कबहुँक दल माखन रुचि मानी ॥ सूरदास प्रभुकी यह लीलापरतनमहिमाशेषबखानी॥२९॥रागबिलावल नंदजूके वारे कन्हैया छांडिदे मथनियाँ ।बार बार कहै मातयशोमतिरनियाँ॥नेकरहौमाखनदेउँ

मेरे प्राण धनियां। आरि जिनि करौ बलिजाऊंहो निधनीके धनियां॥सुर नर जाकोध्यानधरैंगावें मुनि जनियां । ताको नँदरानी मुख चुंबतिहै लिए कनियां॥सहसाननगुणगानेगनतनहींबनियां। सूरश्याम देखि सब भूली गोपधनियां ॥१२०॥यशुमति दधि मथन करति बैठी वरधाम अजिर ठाढे हरि हँसत नान्हीसी दतिआनछबिछाजै॥चितवत चितलेइचोराई शोभा बरणि न जाईमुनिनके मनहरनको मनमोहनि दलसाजै॥जननि कहति नाचौ तुम देहौं नवनीतमोहन रुनुकु झुनुकु चलत पांइन चायन नूपुर बाजे । गावत गुण सूरदास यश बाढ्यो भुव अकाश नाचत त्रैलोकनाथ माखनकेकाजै॥१२१॥प्रात समय दधि मथत यशोदा अति सुख कमलनयन गुणगावति ॥ अतिहि मधुर गति कंठ सुघर अति नंदसुवन चित हितहि करावति॥नीलवसनतनु सजल जलद मानौ दामिनिविविभुजदंड चलावति।चंद्रवदन लटलटकि छवीली मनहुँ अमृतरस राहुचुगवति॥ गोरस मथत नाद इक उपजत किंकिनिधुनि सुनि श्रवण रमावति॥सूरश्याम अचरधरे ठाढेकाम कसौटी कसिदेखरावति॥२२ ॥ललित॥छोटीछोटी गुडियां अंगुरियां छोटी छबीली नख ज्योति मोती मानौ कंजदलनपर॥ललित आँगन खेलै ठुमुकु ठुमुकु डोलै झुनुक झुनुक बाजे पैजनी मृदुमुखर॥किंकनी कलित कटि हाटक रतन जटित मृदु कर कमल पहुँचियारुचिर वर॥ पियरी पिछौरी झीनी और उपमा भीनी बालक दामिनि मानौं ओढ़ेवारोवारिधर॥उरबघनहाकंठकठुला झडूले वार बेनीलटकन मस बिंदु मुनिमनहर॥अंजन रंजित नयनाचितवनि चितचोरैमुखशोभा परवारौं अमित असमसर । चुटुकि बजावति नचावति नंद घरनि बाल केलि गावत मल्हावति प्रेम सुघर ॥ किलकि किलकि हँसैं द्वैद्वै दँतुरिया लसैं सूरदास मन बसै तोतरे वचनवर॥ २३ ॥ राग बिलावल॥ माधव तनकसेवदन तनकसे चरन भुज तनकसे करन पर तनकमाखन ॥ तनकसीबात जो कहत तनकसे तनक रिझि रहे तनक सुधन॥तनक कपोल तनकसी दंतुलिया तनक अधर अरु तनक हँसन पर हरत हो मन ।तनकहि तनक जो सूर निकट आवे तनक कृपा करि दीजे तनक शरन॥माधव तनक चरन अरु तनक तनक भुज तनक वदन बोलै तनकसे बोलतनक कपोल तन कसी दँतिया तनक हँसन पर लेतहो मन मोल ॥ तनक करनपर तनक माखन लिये देखत तनक जाके सकल भुवन । तनक सुनै सुयश पावत परमगति तनक कहत तासों नंदसुवन ॥ तनक रीझ पर देत सकल तन तनक चिते चितवन चितके हरन॥तनकहि तनक तनक करि आवे सूर तनक तनक दीजे तनक शरन॥२४॥ राग कान्हरो॥ गोदखिलावति कान्हसुनोवडभागिनिहो नँदरानी ॥ आनँदकी निधि मुख लालको ताहि निरखि निशिवासर सोतो छबि क्योंहूँ नजाति बखानी ॥ गुणअपार बहु विस्तार कहि न परत निगमागमवानी । सूरदास प्रभुको लियेयशुमति गोदखिलावति चितै मुसुक्यानी॥२५॥ राग गौरी॥मेरे माई श्याम मनोहर जीवनि॥निरखिनयन भूलेते वदन छबि मधुर हँसनि पैपीवनि॥ कुंतल कुटिल मकर कुंडल भ्रुव नैनविलोकनि वंक। सिंधुसुधाते निकसि नयो शशि राजत मनों मृगअंक॥शोभित सुमन मयूर चंद्रिका नीलनलिन तनुश्याम । मानहुनक्षत्र समेत इंद्र धनु सुभग मेघ अभिराम॥परमकुशलकोविदलीलानटमुसुकनि मन हरिलेत । कृपा कटाक्ष कमल कर फेरत सूर जननि सुखदेत ॥२६॥ राग आसावरी ॥वेदकमल मुख परसत जननी अंक लिये सुतरति करि श्याम । परमसुभग जु अरुनकोमल रुचिआनंदित मनु पूरणकाम ॥ आलंबित जु पृष्ठ बल सुंदर परस्पर चितवत हरि राम । झाँकि उझकि हँसत दोऊ सुत प्रेम मगन भई इकटक जाम ॥ देखिस्वरूप न रही कछु सुधि टूरी तबहि कंठते दाम। सूरदास प्रभु शिशुलीला रस आवहु नंद देखि सुखधाम॥२७॥ राग गौरी ॥ शोभा मेरे श्यामहिपे

सोहै। बलि बलि जाऊँ छबीले मुखकी या पटरतको को है॥या बानक उपमा दीबेको सुकविक- हा टकटोहै। देखत अंग थके मनमें शशि कोटि मदन छबि मोहै॥शशिगण गारि कियो विधि आनन बंकभौंह मिलि जोहै। सूर श्याम सुंदरता निरखत मुनिजनको मन मोहै॥३८राग बिलावल बाल गोपाल खेलौ मेरे तात।बलि बलि जाउँ मुखारविंदकी अमी वचन बोलत तुतरात॥ उनीदे नयन विशालकी शोभा कहत न बनिआवै कछु बात। दूर खरेसब सखा बुलावत नयनमीडि उठि आए प्रभात॥ दुहुँकर माठ गह्यो नँदनंदन छिटकि बूँद दधि परत अघात॥ मानहु गजमुक्ता मर्कत पर शोभित सुभग सांवरे गात॥ जननी प्रति मागत मनमोहन दे माखन रोटी उठि प्रात। लोटत पुहुमि सूर सुन्दर घन चारि पदारथ जाके हाथ॥ ३९॥ पालने झूलो मेरे लाल पियारे॥ मुसकनिकी हौं बलि बलि करौ तिल तिल हठ न करहु जे दुलारे॥ काजर हाथ भरो जिनि मोहन ह्वैहैं नैन अतिही रतनारे। शिर कुलही पहिराय पैजनी तहां जाहु जहाँ नंदबबारे॥यह बिनोद देखत धरणीधरमात पिता बलभद्रददारे। सुर नर मुनि कौतू- हल भूले देखत सूर श्याम हैं कारे॥४०॥ क्रीडत प्रात समय दोउ बीर॥ माखन माँगत बात न मानत झकत यशोदा जननी तीर॥जननी मध्य सन्मुख संकर्षण ऐंचत कान्ह खस्यो तनुचीर। मानो सरस्वती संग उभै द्विज राम कृष्ण अरु नील कंठीर॥ सूरश्याम गही कुबरी करमुक्तामांग गही बलवीर। ताहन भखुलीनो अप अपनोमानहु लेतनिबेरनि सीर॥४१गोपालराइ दधिमांगत अरु रोटी। माखन सहित देहि मेरि जननी सुपक समंगल मोटी॥ कतहोआरिकरत मेरे मोहन कत तुम आंगन लोटी। जो मांगहु सो देहुँ मनोहर यहै बात तेरी खोटी॥ प्रातकाल उठि देहुँ कलेऊ वदन चुपरि अरु चोटी। सूरदासको ठाकुर ठाढो हाथ लकुट लिये छोटी॥ ४२॥ हरिकर राजत माखन रोटी।मनौ वारिज शनि वैरु जानि जियगह्यो सुधा शिशुधोटी॥मनौबराह भूधर सहपति धरी दशननकी कोटी। शनि शशि मेलि मुख अंबुज भीतर उपजी उपमामोटी॥ नग्न गात मुसक्यात तात ढिग निरत करत गहि चोटी। सूरज प्रभुकी इहै जु जूठनि लालनललि- त लपेटी॥४३॥दोउ भैया मैयापै माँगत दे माँ माखन रोटी।सुनीभावतीएकबातसुतनकीझूठेहि धामके काम अगोटी॥ बलजू गह्यो नासिका मोतीकान्हकुँवरगहीदृढकरचोटी। मानहुहंसमोर- भख लीने कविजन कहैं उपमा कछु छोटी॥यह छवि देखत महरि अनंदितमहरहँसतलोटिलोटी। सूरदास प्रभु मुदित यशोदा भाग वडे करमनिकी मोटी॥४४॥ राग आसावरी॥ तनक दैरी माइ। माखन तनक दैरी माइ॥ तनिक करपर तनिक रोटी मांगत चरन चलाइ॥ कनक भूपर रत- नकी रेखा नेक पकरयो धाइ। कंपिआगिरिशेषशंक्योउदधिचलोअकुलाइ॥ जामुखको ब्रह्मादिक लोचैं सो मांगत ललचाइ। ईशके वेग दरश दीजै ब्रज बालक लेत बलाइ॥ माखन मांगत श्याम सुंदर देत पग पटकाइ। तनक मुखकीतनकबतियां मांगतहैं तोतराइ॥मेरेमनकोतनिकमोहन लागु मोहि बलाइ। श्यामसुंदर गिरिधरनिऊपरसूरबलिबलिजाइ॥४५॥राग बिलावल॥नेकरहौमाख- नद्यौं तुमको। ठाढी मथति जननि दधि आतुर लवनीं नंद सुअनको॥ मैं बलिजाउँ श्यामघन सुन्दर भूख लगी तुम भारी। बात कहूंकी बूझति श्यामहि फेर करत महतारी॥ कहत बात हरि कछू न समुझत झूठेहि देत हुँकारी। सूरदास प्रभुके गुण गावत तुरतहि बिसरिगई नँदनारी॥ ॥४६॥ वातनहीं सुत लाइ लियो। तबलौं मथि दधि जननि यशोदा माखन करि हरिहाथदियो॥ लैलै अधर परमकरि जेवत देखत फूल्यो गात हियो। आपुहिं खात प्रशंसत आपुहिं माखन

रोटी बहुत प्रियो॥जोप्रभु शिव सनकादिक दुर्लभ सुतहित वश करि नंदत्रियो।यह सुख निरखत सूरज प्रभुको धन्य धन्यफल सुफल जियो॥४७॥अथ बालवेष वर्णन ॥वरनों बालभेष मुरारि।थकित जित कित अमरमुनि गण नंदलालनिहारि॥केशशिर बिन पवनके चहुँदिशा छिटके झारि।शीश-पर धरे जटा मानौ रूप कियो त्रिपुरारि ॥ तिलक ललित ललाट केशर बिंदु शोभाकारि। रेखा अरुन ज्यों त्रितयलोचन रह्यो जनु रिपु जारि॥ कंठ कठुला नील मणि अंभोजमाल सँवारि । गरल ग्रीव कपाल उर यहि भाय भए मदनारि॥कुटिल हरिनख हिये हरिके हरषिनिरखतिनारि। ईश जनु रजनीश राख्यो भालहूते उतारि ॥ सदन रजतन श्याम शोमित सुभग इहि अनुहारि । मनहु अंग विभूति राजत शंभुसो मधुहारि॥त्रिदशपति पति अशनको अति जननिसों करआरि। सूरदास विरंचि जाको जपत निजमुख चारि ॥४८॥सखीरीनंदनंदन देखु।धूरिधूसरि जटाजूटलि हरि किए हरभेषु॥नीलपाट पुरोइ मणिगण फणिग धोखे जाइ।खुनखुना करि हँसत मोहन नचत डौंरु बजाइ॥जलजमाल गोपाल पहिरे कहौं कहा बनाइ।मुण्डमाला मनो हरगर ऐसिशोभापाइ॥ स्वातिसुत माला बिराजत श्यामतन यों भाइ । मनो गंगा गौरिडर हर लिए कंठ लगाइ॥केहरीके नखहि निरखत रही नारि बिचारि।बालशशि मनौ भालते लै उर धर्यो त्रिपुरारि।देखि अंगअनंग डरप्यो नंदसुतको जान । सूरदासके हृदय वसिरहयो श्याम शिवको ध्यान॥४९॥राग नटनारायण॥ विहरतविविधबालकसंग।डगरडगडोलतमगनिमग धूरिधूसरअंग॥ललित गति पग परत पैंजनि परस्परकिलकानि।मनहु मधुर मराल शावक सुभग बैन विहानि॥ललित श्रीगोपाल लोचनश्याम शोभा दून.मनु मयंकहि अंक दीन्ही सिंहिकाके सून॥दूर दमकतश्रवणशोभा जलजयुगडहडहत। मनहुं वा..त बलि पठाए जीव कत्रि कछु कहत॥कबहुँ द्वारे दौरि आवत कबहुंनंदनिकेत।सूर प्र-भुको गहत ग्वालिनि चारुचुंबनहेत॥५०॥राग बिलावल ॥देखो मैंदधिसुतमेंदधिजात।एकअचंभो देखिसखि री रिपुमें रिपु जु समात॥दधिपर कीर कीरपरपंकज पंजकेद्वैपात।यहशोभादेखत पशु पालक फूले अँग न समात॥सुंदर बदन विलोकि श्यामको नँदनिरखिमुसकात।ऐसोध्यानधरैजो हरिको सूरदास बलिजात॥५१ राग धनाश्री॥दधिसुत जामेंनंददुवार।निरखिनैनअरुझ्योमनमोहन रटत देहु कर बारंबार ॥ दीरघ मोल कह्यो व्यापारी रहे ठगेसे कौतुकहार । करऊपर लै राखिरहे हरि देत न मुक्ता परमसुढार ॥ गोकुलनाथ बए यशुमतिके आँगनभीतरभवनमँझार।शाखापत्र भए जलमेलत फूलत फरत न लागी बार ॥ जानत नहीं मर्म सुर नरमुनि ब्रह्मादिक नहिंपरत बिचार । सूरदास प्रभुकी यह लीला ब्रजवनिता गुहि पहिरे हार॥ ५२॥कजरीकोपयपिअहुलाल तेरी चोटी बढै।सब लरिकनमें सुन सुंदर सुत तो श्री अधिक चढै॥जैसेदेखि और ब्रजबालक त्यों बलवैस बढै। कंस केशि बक बैरिनके उर अनुदिन अनल उठै॥ यह सुनिकैहरिपीवनलागे त्योंत्यों लियो लटै।अचवन पै तातो जब लाग्यो रोवत जीभ उठै॥पुनिपीवतही कच टकटोवै झूठे जननि रटै । सूर निरखि मुख हँसत यशुदा सो सुख उर नकढै ॥ ५३ ॥ रागकली॥यशोदा कबहिं बढैगी चोटी । किती बार मोहिं दूध पिवत भई यह अजहूँ है छोटी ॥तूजुकहति बलकी बेनी ज्यों ह्वैहै लाँबी मोटी। काढत गुहत न्हवावत ओछत नागिनिसीभुईंलोटी॥काचोदूधपि-वावत पचिपचि देत न माखन रोटी । सूर श्याम चिरजिवदोउभैयाहरिहलधरकीजोटी ॥ ५४॥ देवगंधार ॥ कहन लगेमोहन मैया मैया । पिता नंदसों बाबा बाबा अरु हलधरसों भैया ॥ ऊंचे चढि चढि कहत यशोदा लैलै नाम कन्हैया। दूरि कहू जिन जाहु लला रे मारैगीकाहूकी गैया॥

गोपी ग्वाल करत कौतूहल घरघर लेत बधैया। मणिखंभन प्रतिबिंब विलोकत पुनिनवनीत कुँवर हरि पइया ॥ नंद यशोदाजीके उरते इह छवि अनत न जइआ। सूरदास प्रभु तुमरेदरशको चरणनकी बलि गइआ॥५५॥ राग सारंग॥ मैया मोहिंबडो करिबे री॥ दूध दही घृत माखन मेवाजो मांगों सो देरी॥ कछू हवस राखै जिन मेरी जोइ जोइ मोहिं रुचेरी ॥ रंगभूमिमें कंस पछारौं कहौं कहाँ लौं मैं री । सूरदास स्वामीकी लीला मथुरा राखौ जो री ॥ सुन्दर श्याम हँसत जननी सों नंद बबाकी सौं री ॥५६॥ राग रामकली ॥ हरि अपने आगे कछु गावत । तनक तनक चरणनसों नाचत मनहीं मनहिं रिझावत॥ बाँह उँचाइ काजरी धौरी गैयन टेरि बुलावत। कबहुँक बाबा नंद बुलावत कबहुँक घरमें आवत ॥ माखन तनक आपने करलै तनक बदनमें नावत। कबहुँ चितै प्रतिबिंब खंभमें लवनी लिए खवावत॥ दुरि देखत यशुमति यह लीला हर्ष अमंद बढावत॥ सूर श्यामके बालचरित नितही नित देखत भावत॥७५॥ राग बिलावल॥ आजु सखी हौं प्रातसमय दधि मथन उठी अकुलाइ । भरि भाजन मणिखंभनिकट धरि नेत लियोकर जाइ॥ सुनत शब्द तेहि छिन समीप में महरि हँसि आए धाइ॥ मोहे बालविनोद मोद करि नयनन नृत्य देखाइ ॥ चितवनि चलनि हरचो चित चंचल चितैरही चित लाइ॥ पुलकित तब प्रतिबिंबदेखि करि सबही एक सुभाइ॥ माखन पिंड विभाग दुहूँकर आपत मुहँ मुसुकाइ । सूरदास प्रभु ता सुतके सुख सकै न हृदय समाइ॥५८॥ बलि बलि जाउँ मधुर सुर गावहु । अबकी बार मेरे कुँवर कन्हैया नंदहि नाचि देखावहु ॥ तारी देहु आपने करकी परम प्रीति उपजावहु॥ आन यंत्र-ध्वनि सुनि डरपति कत मो भुज कंठ लगावहु॥ जिन शंका जियकरो लाल मेरे काहेको भरमावहु। बाँह उँचाइ कालिकी नाईं धौरी धेनु बुलावहु ॥ नाचहु नेकु जाउँ बलि तेरी मेरी साध पुरावहु। रत्नजटित किंकिणि पग नूपुर अपने रंग बजावहु॥ कनकखंभ प्रतिबिंबित शिशु इकलौनी ताहि खवावहु । सूर श्याम मेरे उरते कहुं टारे नेक न भावहु ॥५९॥ राग सारंग॥ कान्ह बलिजाउँ ऐसी आरि न कीजै। जोइ जोइ भावै सोइ सोइ लीजै॥ कहत यशोदा रानी॥ को खिझवै शारँगपानी ॥ मेरे जो लाल खिजावै। सो अपनो कियो भलो पावै॥ तिहि देहौं देश निकारो॥ ताकोब्रज नाहिं नगारो ॥ अति रिसही ते तनु छीजै । सुठि कोमल अंग पसीजै॥ बर्जत बर्जत बिरुझाने। कारि क्रोध मनहि अकुलाने ॥ धरत धरणि धरलोटै। माताको चीर नखोटै॥ अंग आभूषण सब तोरे। लवनी दधि भाजन फोरे ॥ देखि तप्त जल तरसै। यशुदाके चरणन परसै॥ महरि बाँह गहि आने। तब तेल उबटने साने ॥ तब गिरत एरत उठि भागे। कहूं नेक निकट नहिंलागे ॥ तब नंदघरनि चुचकारे। आवहु बलि जाउँ तुम्हारे ॥ नहिं आवहु तो भले लाल। पुनि जानहुगे मदन-गोपाल ॥ तुम मेरी रिस नहिं जानौ। मोको नहिं तुम पहिचानौ ॥ मैं आजु तुम्हैं गहि बांधौं। हाहा करि करि अनुराधौं ॥ बाबा नंद उतहिते आए। कौने हरि अतिहि खिझाए ॥ मुख चूमि हरखि ले आए। यशुमतिपै पहुँचाए ॥ मोहन कत खिझत अयानी। लिपलाइ हिये नँदरानी ॥ क्योंहूं जतन जतन करि पाए। तब उबटन तेल लगाए ॥ ताता जल आनि समोयो। अन्हवाइ दियो मुख धोयो॥ अति सरसवसन तन पोंछे। लैकै मुख-कमल अँगोछे ॥ अंजन दोउ दृग भरि दीनों॥ भ्रुव चारु चखोडा कीनों॥ अँगआभूषणजेबनाए। लालहि क्रम क्रम ले पहिराए॥ ऐसी रिस न करो मेरे कान्हा॥ अब खाहु कुंवर कछुनान्हा॥ तुतरात कहचो का है री। जो मोहिं भावै सो दैरी॥ जोइजोइभावेमेरे प्यारे॥ सोइसोइदेहौंजु ललारे॥ कह्योहै

सिरावनसीरा।कछु हठ न करौ बलवीरा॥सद दधिमाखनदैआनी।तापर मधु मिश्री सानी॥खोवामें मधुर मिठाई।सो देखत अतिरुचि पाई॥कछु बलदाऊको दीजै। अरु दूध अधावट पीजै॥सबहेरि धरीहै सार्ढी।लै उपर उपरते कढी॥अति प्योसरसारिस बनाई।तेहिसोंठि मिरचरुचिताई।दूधबरा दही बोरी।सो खात अमृत इक कोरी॥सुठिसरस जलेबी बोरी।जेहि जेंवत रुचिनहिंथोरी॥ अरु खुरमा सरस सँवारे।ते परसि धरेहैंन्यारे॥ संकरपालेसद पागे ।तेजेंवत परमसभागे॥सेवलाडूरुचि रसवारे।जेमुख मेलत सुकुमारे ॥ स्नतिलाडू हैं सुठि मीठे ॥ वे खात न कबहुँउबीठे॥खीरलाडू लै गए नाए।ते करि बहु जतन बनाए॥ गोझा बहु पूरन पूरे ।भरि भरि कपूररसचूरे ॥ अरु तैसियगाल मसूरी।जो खातहि सुखदुख दूरी ॥अरु है समि सरस सँवारी। अति खात परम सुखकारी।पापर बरणे नहिं जाही। जेहि देखत अतिसुख पाही ॥ मालपुवामधुसाने। ते तुरत तपत करि आने॥सुंदर अतिसरसअंदरसे ।ते घृत मधु दधि मिलि सरसे ॥ घेवर अति घिरत चभोरे । लै खांड उपर तर बोरे॥माधुरि अति सरस सजूरी। सद परसि धरी घृतपूरी॥ जबपूरी सुनि हरि हरष्यो। तब भोजन पर मन करष्यो॥सुनि तुरत यशोदा ल्याई । अति रुचि समेत हरि खाई ॥ बलदाऊको टेरि बुलाए । यह सुनि हलधर तहां आए॥षटरस परकार मँगाए । जे वरणि यशोदा गाए॥ मनमोहन हलधरवीरा। जेंवतरुचिराख्यो सीरा॥शीतलजल लियोमँगाई। भरि झारी यशुमति ल्याई॥अचवत तब नयन जुडाने। दोऊ हरषि हरषि मुसकाने॥ हँसि जननी चुरु भरवाए। तब कछु कछु मुख पखगए ॥ तब बीरी तनक मुख नाए । अति लाल अधर ह्वै आए ॥ तब सूरदास बलिहारी। माँगतकछुजूंठनि थारी॥ हारितनक तनककछु खाये। जूंठनि सब भक्तनिपाए॥६०॥राग धनाश्री॥ पाहुनी करिदै तनक मह्यो। हौं लागी गृहकाज रसोई यशुमति बिनय कह्यो॥आरि करै मनमोहन मेरो अंचल आनि गह्यो।ब्याकुल मथति मथनियां रीती दधि भ्वैं ढरकि रह्यो ॥माखनजात जानि नँदरानी सखिन सम्हारि कह्यो । सूर श्याम मुख निरखि मगन भई दुहुनि सकोच सह्यो ॥६१॥ आसावरी ॥यशुमति जबहि कह्यो अन्हवावनरोइगए हरिलोटतरी।लेतउबटनोलेआगेदधि कहि लालहि चोटत पोटत री ॥ मैं बलिजाउँ न्हाउ जिनि मोहन कत रोवत बिनकाजैरी। पाछे धरि राखौ छपाइकै उबटन तेल समाजै री ॥ महरि बहुतबिनतीकरिराखतिमानतनहींकन्हाईरी। सूरश्याम अतिही बिरुझाने सुर मुनि अंत न पाई री ॥ ६२ ॥ अथ चंद्रप्रस्ताव ॥ कान्हरो ॥ ठाढी अजिर यशोदा अपने हरिहि लिये चंदा देखरावत। रोवत कत बलिजाउँ तुम्हारी देखौ धौं भरि नयन जुडावत ॥ चितैरहे तब आपुन शशितन अपने कर लै लै जु बतावत । मीठो लगतकिधौं यह खाटो देखत अतिसुंदर मनभावत॥मनमनही हरि बुद्धि करतहैं माताको कहि ताहि मँगावत। लागी भूख चंद में खैहौं देहु देहु रिसकरि बिरुझावत ॥ यशुमति कहत कहा मैं कीनो रोवत मोहन अति दुखपावत।सूरश्यामको यशुदाबोधतिगगन चिरैयां उडतलखावत॥६३॥राग कान्हरो॥ किहिविधि करि कान्है समुझैहौं।मैंही भूलिचंद्र दिखगयोताहि कहतमोहि दैमैं खैहौं॥अनहोनी कहुँ होत कन्हैया देखी सुनी न बात। यह तौ आहि खिलौना सबको खान कहत तेहितात।यहै देत लवनी नित मोको छिन छिन सांझ सवारे । बार बार तुम माखन माँगत देउँकहांते प्यारे॥ देखतरहौ खिलौना चंदा आरि न करौ कन्हाई ॥ सूर श्याम लियो महरियशोदानंदहिकहतबुझाई ॥६४॥ राग धनाश्री॥ आछे मेरे लालहो ऐसी आरि नकीजे।मधुमेवापकवानमिठाई जोइभावै सोइ लीजे ॥ सद माखन घृत दह्यो सजायो अरु मीठो पय पीजे।पालागोंहठअधिक करोजिनि

अति रिसमें तनु छीजे॥आन बतावत आन दिखावत बालक तौ न पतीजै। खिझ खिझ कान्ह खसत कनियांते सुसुकि सुसुकि मन खीजै॥ जलपुट आनि धरचो आँगनमें मोहननेक तौ लीजै। सूर श्याम हठि चंदहि मांगै चंद कहाँते दीजै॥६५॥राग कान्हरो॥बार बार यशुमति सुत बोधति आउ चंद तोहिं लाल वुलावै। मधु मेवापकवान मिठाई आपु नखैहै तोहिं खवावै॥ हाथहि पर तोहिं लीने खेलै नहिं धरणी बैठावै। जलभाजन करलै जु उठावति याहीमें तू तनु धारि आवै॥ जलपुट आनि धरणि पर राख्यो गहि आन्यो वह चन्द्र दिखावै। सूरदास प्रभु हँसि मुसकाने बार बार दोऊकर नावै॥६६॥राग रामकली॥मेरोमाई ऐसो हठी बालगोविंदा॥ अपने कर गहि गगन बतावत खेलनको माँगै चंदा॥ वासन कै जल धरचोयशोदाहारिकोआनि दिखावै। रुदनकरत ढूंढ नहिं पावत धरणि चन्द कैसे आवै॥दूध दही पकवानमिठाई जु कछु मांगु मेरे छौना। भौंरा चकई लाल पाटको लँडुवा मांगु खिलौना॥ दैत्यदलन गजदंत उपारन कंसकेश धारि फंदा। सूर दास बलिजाइ यशोमति सुखके सागर दुखके खंदा॥ ६७ ॥ लेहौं री मा चंदा चहौंगो। कहा करौं जलपुट भीतरको बाहर ओकि गहौंगो॥ इहतौ झलमलात झकझोरत कैसेकै जु लहौंगो। वहतो निपटनिकटहीदेखत वरज्यो हों न रहौंगो॥तुमरो प्रेम प्रगट मैं जान्यो बौराएन बहौंगो। सूरश्याम कहै करगहि ल्याऊं शशि तनु दाप दहौंगो॥ ६८ ॥ राग धनाश्री॥लाल यह चंदा लेलैहो। कमलनयन बलिजाइ यशोदानीचे नेकचितैहो॥जाकारण सुनि सुत सुंदर वर कीन्हो इतीअनैहो। सोइ सुधाकर देखि दमोदर या भाजनमें हैहो॥ नभते निकट आनि राख्योहै जलपुट जतन जोगैहो। लै अपने कर काढि दमोदर जो भावैसो कैहो॥ गगन मँडलते गहिआन्यो हैपंछी एक पठैहो। सूरदास प्रभु इती बातको कत मेरो लाल हठैहो॥६९॥ राग बिहागरो॥तुअमुखदेखिडरतुशशि भारी। कर करिके हरि हेरचो चाहत भाजि पताल गयो अपहारी॥वह शशितो कैसेहुनहिंआवत यह ऐसी कछु बुद्धि बिचारी॥वदन देखि विधु विधि सकातमन नैनकंज कुंडल उजियारी॥सुनहु श्याम तुमको शशि डरपत है कहत ए शरन तुम्हारी। सूर श्याम विरुझाने सोए लिए लगाइ छतियाँ महतारी॥७०॥ राग केदारो ॥यशुमति लैपलिकापौढावति।मेरोआजुअतिही बिरुझानोयहकहिकहि मधुरे सुर गावति॥पौढिगई पुनि हरुये करिकै अंगमोरि तब हरि जमुहाने।करसोंठोंकिसुतहिदुलरावति चटपटाइ बैठे अतुराने॥पौढो लाल कथा एक कहिहौं अतिमीठी श्रवणनको प्यारी। यहसुनि सूरश्याम मनहरषे पौढिगए हँसि देत हुँकारी॥ ७१ ॥ सुनसुत एककथा कहौं प्यारी।कमलनयन मनआनँद उपज्यो चतुरशिरोमणि देत हुँकारी॥ नगर एक रमणीक अयोध्या बडे महल जहँ अगम अटारी।बहुत गली पुर बीच विराजतभाँतिभाँति सब हाटबजारी॥तहाँनृपतिदशरथरघुवंशी जाके नारि तीन सुखकारी। कौशल्याकैकयी सुमित्रा तिनकेजन्मभएसुतचारी॥चारिपुत्रराजाके प्रगटे तिनमें एक राम व्रतधारी। जनक धनुष व्रत देखि जानकी त्रिभुवनके सब नृपति हँकारी॥ राजपुत्र दोउ ऋषि लै आए सुनि व्रत जनक तहाँ पगधारी॥धनुपतोरि मुखमोरि नृपनको जनकसुता तिनकी वरनारी॥ पग अँगुठा जब पीर नृपतिके तब कैकयी मुखमेलि निवारी। वचन माँगि नृपसों तब लीनो रघुपतिके अभिषेक सँवारी॥तातवचन सुनि तज्योराज्य तिन भ्रातासहित घरनि वनचारी। उनके जात पिता तनुत्याग्यो अतिव्याकुल करि जीव बिसारी॥ चित्रकूट गए भरत मिलन जब पगपाँवरी दे करी कृपारी॥युवतीहेतु कनकमृग मारी राजिवलोचनगर्वप्रहारी॥ रावण हरण कऱ्योसीताको सुनि करुणामय नींद बिसारी॥सूर श्यामकर उठ चापको लछिमन देहु

जननि भ्रमभारी॥७२॥राग विहागरो॥ नंदनँदन तुम सुनहु कहानी।पहली कथा पुरातन सुन सुत जननि पास मुखवानी॥ रामचंद्र राजा दशरथसुत जनकसुता ताके गृह रानी।कहि पंचतत्त्वअरु पंचवटी वन छाँडि चले रजधानी॥तहां बसत सीता हरलीनो रजनीचर अभिमानी। लछिमन धनुष देहु करि उठि हरि यशुमति सूर डरानी॥७३॥राग केदारो॥यशुमतिमनमें यहै विचारति।झझकि उठयो सोवत हरि अबहीं कछु पढिपढि तनुदोष निवारति॥खेलतमें कहुँ डीठि लगाई लैलै राई लोनु उतारति। सांझहिते मेरो विरझान्यो चंदहि देखि करी अति आरति॥बारबार कुलदेव-मनावति दोउ कर जोरि शिरहि ले धारति।सूरदास यशुमति नँदरानीनिरखि वदन त्रयताप विसारति॥७४॥नहिन जगाइ सकति सुनि सोवावत सजनी।अपने जानअजहुँ कान्ह मानत हैं रजनी॥ जब जब हौं निकट जाति रहति लागी लोभा। तनुकी गति विसारिजाति निरखत मुखशोभा॥वचननिको बहुत करति साजति जिय ठाढी।नैननि बिचार परति देखत रुचि बाढी॥ इहिविधि वदनारविंद यशुमति मनभावै।सूरदास सुखकी राशि कहत न बनिआवै॥७५॥राग विलावल॥जागिये ब्रजराज कुँवर कमल कुसुम फूले। कुमुद वृंद सकुचित भए भृंग लता भूले॥ तमचुर खग रौर सुनहु बोलत वनराई।राँभति गौ खिरकनमें बछराहित धाई॥विधु मलीन रविप्रकाश गावत नर नारी। सूर श्याम प्रात उठौ अंबुज करधारी॥७६॥राग रामकली॥ प्रात समय उठि सोवत हरिको वदन उघार्‌यो नंद। रहि न सकत देखनको आतुर नैन निशाके द्वंद॥ स्वच्छ सेजमेंते मुख निकसत गयो तिमिर मिटि मंद। मानौं मथि सुर सिंधु फेन फटि दरश दिखाई चंद॥ धायो चतुर चकोर सूर सुनि सब सखि सखा सुछंद। रही न सुधि शरीर धीरमति पिवत किरन मकरंद॥६७॥भोरभए निरखत हरिको मुख प्रमुदित यशुमति हरषित नंद। दिनकर किरन नलिन ज्यों विकसत उर उपजत आनंद॥बदन उघारि निहारति जननीजागहु बलिगई आनँद-कंद॥मनहु मथत सुर सिंधु फेन फटि दई दिखाई पूरन चंद॥जाको यश ब्रह्मादिक मुनिजन नेति नेति गावति श्रुति छंद। सो गोपाल ब्रजके सुनि सूरज प्रगटे पूरण परमानंद॥७८॥ललित॥जागिये गुपाल लाल आनँदनिधि नंदबाल यशुमति कहै बार बार भोर भयो प्यारे। नैन कमलसे बिशाल प्रीति वापिका मराल मदन ललित बदन ऊपर कोटि वारि डारे॥ उगत अरुन विगत शर्वरी शशांक किरनहीन दीन दीपक मलीन छीन दुति समूह तारे। मनहु ज्ञान घनप्रकाशबीतेसब भवविलास आस त्रास तिमिर तोप तरनि तेज जारे॥ बोलत खग मुखर निकर मधुर ह्वै प्रतीत सुनहु परम प्राण जीवन धन मेरे तुम बारे। मनो वेद बंदी मुनि सूत वृन्द मागधगण विरद वदत जैजैजैजैत कैटभारे॥बिकसत कमलावलीय चलि प्रफंद चंचरीक गुंजत कल कोमल ध्वनि त्यागि कंज न्यारे। मानो वैरागपाइ सकल कुलग्रह विहाइ प्रेमवंत फिरत भृत्य गुनन गुन निहारे॥सुनत वचन प्रियरसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुखकदम्ब टारे। त्यागि भ्रमफंद द्वंद निरखिके मुखारविंद सूरदास अति अनंद मेटे मद भारे॥७९॥ प्रात भयो जागो गोपाल। नवल सुंदरी आईं बोलत तुमहिं सबै ब्रजबाल॥ प्रगटो भानु मंद उडुपति भयो फूले तरुनतमाल। दरशनको ठाढी ब्रजवनिता ल्याईं कुसुम गुंज वनमाल॥मुखहि धोइ सुंदर वलिहारी करहु कलेऊ मोहन लाल। सूरदास प्रभु आनंदके निधि अंबुजलोचन नयन विशाल॥१८०॥ ललित॥जागो जागोहो गोपाल।नाहिन इतो सोइये सुनु सुत प्रातसमय शुचिकाल॥दिन विकसतमनौकमलकोशप्रति छवि ज्यों मधुपन माल।फिरि फिरि निरखिनिरखिछिन छिनछिन सबगोपनकेबाल॥ तौ

तुमहीं आपुन उठि देखौ निद्रा नैन विशाल। ज्यो तुम मुहिं न पत्याहु सूर प्रभु सुंदर श्याम तमाल ॥८१॥ राग भैरव ॥उठौ नंदकुमार भयो भिनुसार जगावति नंदकी रानी॥झारीकैजलबदनपखारौ कहि कहि शारँगपानी॥माखन रोटी अरु मधु मेवा जो भावै सोलेउ आनी।सूर श्याममुखनिरखि यशोदा मनही मनहि सिहानी ॥ ८२ ॥ राग विलावल ॥ नंदके लाल उठे जब सोइ। निरखि मुखारविंदकी शोभा कहि काके मन धीरज होइ ॥ मुनि मन हरन हरन युवतीके गति मनि जाइ सब खोइ। ईषदहास दशन द्युति दामिनि मनि गनि ओपि धरे जनु पोइ॥ नागर नवल कुवँर वर सुंदर मारग जात लेत मनगोइ॥ सूर श्याम मनहरण मनोहर गोकुल वसि मोहे सब लोइ ॥८३॥ अथ कलेवाभोजनसमय ॥राग भैरव॥उठिये श्याम कलेऊ कीजे। मन मोहन मुख निरखत जीजे ॥ खारिक दाख खोपरा खीरा।केरा आम ऊखरस सीरा॥ श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी। सफरी चिरुआ अरुन खुबानी॥घेवर फेनीखौर सुहारी।खोवा सहित खाहु बलिहारी ॥ रचि पिराक लाडू दधि आनौं । तुमको भावन पुरी सधानौं॥ तब तमोररुचितुमहिं खवावों । सूरदास पनवारो पावों॥८४॥कमलनयन हरि करौ कलेवा। माखन रोटी सद्य जम्यो दधि भाँति भाँतिके मेवा॥चारक दाख चिरौंजी किसिमिस मिश्री उज्ज्वल गरीबदाम। सफरीसेव छुहारे पिस्ताजे तरबूजा नाम॥ अरु मेवा बहु भांति भांतिहैं षटरसके मिष्ठान।सूरदास प्रभु करत कलेऊ रीझे श्याम सुजान ॥८५॥ अथ खेलन समय ॥राग रामकली॥खेलत श्याम ग्वालन संग। सुबल हलधर अरु सुदामा करत नानारंग॥हाथ तारीदेत भाजत सबै करि करि होड॥बरजैहलधरश्याम तुम जिनि चोट लगिहै गोड ॥ तब कह्योमैं दौरि जानत बहुतबल मोगात।मोरी जोरीहैसुदामा हाथ मारे जात॥बोलि तबै उठे श्रीसुदामा जाहुँ तारी मारि॥आगेहरि पाछेसुदामाधरचोश्यामहँकारि॥ जानिकै मैं रह्यो ठाढो छुवत कहा जु मोहि। सूर हरि खीझत सखासों मनहिं कीनो कोहि॥८६॥ राग गौरी ॥सखा कहतहैं श्याम खिसाने।आपुहि आपु ललकिभये ठाढे अब तुम कहा रिसाने॥ बीचहि बोलि उठे हलधर तब इनके माय नबाप॥हारिजीतिकछुनेकनजानतलरिकनलावतपाप॥ आपुन हारि सखासों झगरत यह कहि दिये पठाई। सूरश्यामउठिचलेरोइकैजननीपूँछति धाई॥ ॥ ८७ ॥ मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो। मोसों कहत मोलको लीनो तू यशुमति कबजायो॥ कहा करौं एहि रिसके मारे खेलन हौं नहिं जातु।पुनिपुनि कहत कौन है माता कोहै तुमरोतातु॥ गोरे नंद यशोदा गोरी तुम कत श्याम शरीर। चुटुकी देदे हँसत ग्वाल सबसिखै देत बलवीर ॥तू मोहीको मारन सीखी दाउहि कबहुँ न खीझै। मोहनको मुख रिससमेत लखि यशुमतिसुनि सुनि रीझै ॥ सुनहुकान्हबलभद्रचबाइजनमतहीको धूत। सूर श्याम मो गोधनकीसौंहौंमातातूपूत८८॥ ॥ राग नट ॥मोहन मान मनायो मेरो। मैं बलिहारी नंदनंदनकी नेक इतै हँसिहेरो॥ कारो कहि कहि मोहिं खिझावत बरजत खरो अनेरो। आनन बिमल शशिते तनुसुंदर कहाकहैबलिचेरो॥ न्यारो जो पै हठै हाँकलै आपनो न्यारी गैयां तेरो। मेरो सुतसरदारसबनकोइहुतेकान्हैही मेरो॥ बनमें जाइ करौ कौतूहल इह अपनोहै खेरो। सूरदास द्वारे गावतहैं विमलविमलयशतेरो॥८९॥ रागगौरी ॥ खेलन अब मेरी जात बलैया। जबहिं मोहिंदेखतलरिकनसँग तबहिंखिझतबल भैया॥ मोसों कहत तात बसुदेवको देवकी तेरी मैया। मोल लियो कछु दे वसुदेव को करि करि जतन बढैया॥ अब बाबा कहि कहत नंदसों यशुमतिको कहै मैया। ऐसेही कहि सब मोहिं खिझावत तब उठि चलो खिसैया॥ पाछे नंद सुनतहैं ठाढे हँसत हँसत उर लैया। सूर नंदबलिरामहि धिरयो सुनि मनहरप कन्हैया॥ ९० ॥ राग रामकली ॥खेलनचलियेबालगोविंद। सखाप्रियद्वारेबुला

वत घोष बालक वृंद ॥ तृषित हैं सब दरश कारन चतुर चातकदास।बरपि छबि नव वारिधरही हरहु लोचन प्यास ॥ बिनय वचन सुने कृपानिधि चले मनोहर चाल। ललित लघु लघु चरन कर उर बाहु नयन विशाल ॥ अजिर पदप्रतिबिंब राजत चलत उपमा पुंज। प्रतिचरण मानहु हेमवसुधा देत आसन कंज ॥ सूर प्रभुकी निरखि शोभा रहे सुर अवलोकि। शरद चंद चकोर मानों रहे थकित विलोकि ॥ ९१ ॥ राग धनाश्री ॥ खेलनको हरि दूरि गयो। संग संग धावत डोलतहैं कहाँ धौं बहुत अबेर भयो ॥ पलकओट भावत नहिं मोको कहा कहौं तोको बात। नंदहि तात तात कहबोलत मोहिं कहतहैं मात ॥ इतनी कहत श्यामघन आए ग्वाल सखा सब चीन्हें। दौरिजाइ उरलाइ सूर प्रभु हरषि यशोदा लीन्हें॥ ९२॥ बिहागरो॥ खेलन दूरि जात कित कान्हा। आजु सुन्यो बन हाऊ आयो तुम नहिं जानत नान्हा ॥ इक लरिका अबहीं भजिआयो बोलि बुझावहु ताहि। कान तोर वह लेत सबनके लरिका जानत जाहि ॥ चलहु बेग सबेरे जैये भजि अपने अपने धाम। सूरदास यह बात सुनतही बोलि लिए बलराम॥ ९३॥ जैतश्री॥ दूरिखेलनजनि जाहु लला वन मेरे हाऊ आयोहै।तब हँसिबोले कान्हरि मैया इनको किनहि पठायोहै॥ अब डरपत सुनि सुनि ये बातैं कहत हँसत बलदाऊ। सप्तरसातल शेषासनरहे तबकी सुरत भुलाऊ॥ चारिवेद लेगयो शंखासुर जलमें रहे लुकाऊ। मीनरूप धरिकै जब मारयो तबहि रहे कहाँ हाऊ ॥ मथि समुद्र सुर असुरनके हित मंदर जलधि धसाऊ।कमठरूप धरि धरनि पीठपर सुखपायो सहिराऊ॥ जब हिरणाक्ष युद्धअभिलाष्यो मनमें अति गरवाऊ।धरिवाराहरूप रिपुमारयोलै क्षितिदंत अगाऊ॥ बिकटरूप अवतार धरयो जब सो प्रहलादहि नाऊ।धरि नरसिंह जब असुर विदारयो तहाँ न देख्यो हाऊ ॥ वामनरूप धरयो बलि छलिकै तीनपरग बसुधाऊ। श्रमजलब्रह्म कमंडलु राख्योदरशचरण परसाऊ॥मारयो मुनि विनही अपराधहि कामधेनु लेआऊ। इकइसबार निछत्रजब कीनीतहां न देखेहाऊ॥शूर्पणखा तारका मारी हिमकुल सहित सोबहाऊ। सिंधुसेतु बांध्यो पषाणसों तहाँ न देखेहाऊ ॥ राम रूप रावन जब मारयो दशशिर बीस भुजाऊ। लंकजराय छार जबकीनी तहाँ न देखे हाऊ॥नृपति भीमसों युद्ध परस्पर तहाँ वह भाव बताऊ।तुरत चीरद्वै टूककियोधरिऐसे त्रिभुवन राऊ ॥ यमुनाके तट धेनु चरावत तहाँसघनबनझाऊ। पैठिपताल व्यालगहिनाथ्यो तहाँ न देखे हाऊ॥माटीके मिस वदन बिगारयो जब जननी डरपाऊ। मुख भीतर त्रैलोक दिखायो तबउ प्रतीत न आऊ ॥ भक्तहेतु अवतार धरे सब असुरन मारि बहाऊ। सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नितगाऊ ॥९४॥ रामकली॥ यशुमति कान्हहि यहै सिखावति।सुनहु श्याम अब बडे भए तुम अस्तन पान छुडावति॥ब्रजलरिका तोहिं पीवत देखें हँसत लाज नहिं आवति। जैहैं बिगरि दांतहैं आछे ताते कहि समुझावति॥अजहुँ छांडि कह्यो करिमेरो ऐसी बात नभावति। सूर श्याम यह सुनि मुसकाने अंचल मुखहि लुकावति ॥ ९५॥ नंद बुलावतहैं गोपाल। आवहु वेगि बलैया लेहौं सुन्दर नैन बिशाल॥परस्यो थार धरयो मग चितवत वेगि चलौ तुम लाल।भात सिरात तात दुख पावत क्यों नचलौ ततकाल ॥ हौं बलिजाऊं नान्हे पाइनिकी दौरि दिखावहु बाल। छाँडिदहु तुम ललित अटपटी यहगति मंद मराल॥ सो राजा जोआगमदौरे सूर सुभौन उताल।जोजैहै बलदेव पहिलेही तौहँसिहैं सब ग्वाल॥ ९६॥ राग सारंग ॥ जेंवत कान्ह नंदइकठौरे। कछुक खात लपटात दुहूंकर बालकहै अतिभोरे ॥ बडो कौर मेलत मुख भीतर मिरिच दशन

टकटोरे। तीक्षण लगी नयन भरिआए रोवत बाहर दौरे ॥ फूँकति वदन रोहिणी ठाढी लिये लगाइ अकोरे। सूर श्यामको मधुर कौर दै कीन्हे तात निहोरे॥ ९७॥ रागनट॥ हरिके बालचरित्र अनूप। निरखि रही ब्रजनारी एकटक अंग अंग प्रतिरूप॥ बिथुरी अलकैं रहीं वदनपर बिनहीविपिन सुभाइ। देखि खंजन चंदके वश मधुप करत सहाइ॥ सुलछ लोचन चारु नासा परमरुचिर बनाइ। युगल खंजन लरत अवनित बीच कियो बनाइ॥ अरुण अधरनि दशन भाई कहौं उपमा थोरि। नीलपट बिच मोतिमानौं धरे चंदन बोरि॥ सुभग बालमुकुंदकी छबि बरणि कापै जाइ। भृकुटि पर मसिबिंदु सोहै सकै सूर न गाइ॥ ९८॥ राग कान्हरो ॥ सांझ भई घर आवहु प्यारे। दौरत कहाँ चोट लगिहै कहुँ पुनि खेलौगे होत सकारे॥ आपुहि जाइ बाँह गहि ल्याई खेह रही लपटाई। धूरि झारि तातो जल ल्याई तेल परसि अन्हवाई॥ सरसवसन तनु पोंछि श्यामको भीतर गई लिवाइ। सूरश्याम कछु करौ बियारू पुनि राख्यो पौढाइ॥ ९९॥ राग बिहागरो॥ कमल नयन कछु करौ बियारी। लुचुई लपसी सद्य जलेबी सोई जेवहु जो लगै पियारी॥ घेवर मालपुवा मुतिलाडू सबरस जूरी सरस सवारी। बरा उत्तम दधिबाटी दालमसूरीकी रुचिन्यारी॥ आछोदूध औटि धौरीको ल्याईहै रोहिणि महतारी॥ सूरदासबलरामश्याम दोउजेवैं हैं जननिजाहिबलिहारी॥ २००॥ बिहागरो बलमोहन दोउ करत बियारी। प्रेम सहित दोउ सुतनि जिमावत रोहणि अरु यशुमति महतारी॥ दोउ भैया मिलि खात एकसँग रतनजटित कंचनकी थारी। आलससों कर कौर उठावत नैननि नींद झमकिरही भारी॥ दोउमाता निरखत आलससों छबि पर तनमन डारति वारी। बारबारजमुहात सूर प्रभु इह उपमा कवि कहैकहारी॥ १॥ राग केदारो॥ कीजै पयपान ललारे ल्याई है दूधयशुमतिमैया। कनककटोरा भरिलीजैयह पीजै अतिसुख दीजै कन्हैया॥ आछोमैं औट्योसुठिनीकोअरुमिठाई रुचिकरि अचवत क्योंन नन्हैया। बहुत जतन करिकरि राख्यो ब्रजराज लडैतेतुमकारणबलभैया॥ फूँकि फूँकि जननी पय प्यावति आनँद उर न समैया। सूरदास प्रभु पय पीवत बलराम श्याम दोऊ जननी लेत बलैया॥ २॥ बल मोहन दोऊ अलसाने। कछुक खाय दूध लै अचयो मुखजँभात जननी जियजाने॥ उठहुलाल कहि मुखपखरायो तुमकोलैपौढाऊँ। तुमसोवहु मैंतुमहिं सुवाऊँ कछुमधुरे सुर गाऊँ॥ तुरतजायपौढेदोनोभैयासोवत आई नींद। सूरदासयशुमतिसुखपावति पौढे बालगोबिंद॥ ३॥ माखन बाल गोपालहि भावै। भूखेछिनुन रहतमनमोहन ताहिबदौंजोगहरु लगावै॥ आनि मथानी दह्योबिलोये जौलगि लालनउठन न पावै। जागतहीउठिरारिकरत अति नहिं मानै जो इंदु मनावै॥ हौं यह जानति बानि श्यामकीअँखियांमीचैवदनचलावै। नंदसुवनकी लागैबलैयायहजूठनिकछुसूरज पावै॥ ४॥ राग बिलावल ॥ भोरभयोमेरे लाडिलेजागौकुँवरकन्हाई। सखाद्वार ठाढे सबै खेलौ यदुराई॥ मोको मुख दिखरावहु त्रयताप निवारहु। तुवमुखचंद्रचकोरनैनमधु पानकरावहु॥ तब हरि पट मुख दूरिकै भक्तन सुखकारी। हँसत उठे प्रभु सेजते सूरजबलिहरी॥ ५॥ राग बिलावल॥ भोरभयो जागौ नँदनंदन। संगसखाठाढेजगवंदन॥ सुरभीपयहितवच्छपियावै। पंछीतरु तजि दुहुँदिशधावै॥ अरुनगगन तमचुरनिपुकारे। शिथिल धनुक रतिपति गहि डारे॥ निशिनिघटी रवि रथ रुचि साजी। चंद मलिन चकई रति राजी॥ कुमुदिनि सकुची वारिज फूले। गुंजतफिरत अलीगन झूले॥ दरशन देहु मुदित नरनारी। सूरज प्रभु दिन देव मुरारी॥ ६॥ राग नट ॥ खेलत श्याम अपने रंग। नंदलाल निहारि शोभा निरखि थकित अनंग॥ चरणकी छबि निरखिडरप्यो अरुन गगन छपाइ। जनु रंभाकी सबै छबि निदरि लई छडाइ॥ युगल जंघनि खंभ रंभा नहिन

सम सारि ताहि। कटि निरखि केहरि लजाने रहे वन घन चाहि ॥हृदय हरिनख अति बिराजति छबि न वरनी जाइ। मनौं बालक वारिधर नवचंद्रलई छपाइ॥मुकुतमाल बिशाल उरपर कछुकहौं उपमाइ।मनौं तारागनन पृष्ठित गगन रह्यो छपाइ॥अधर अरुन अनूप नासानिरखि जनसुखदाइ। मनौ शुक फलबिंब कारन लेन बैठो आइ॥कुटिल अलक बिनाविपिनकेमनौं अलिशिशिजाल। सूर प्रभुकी ललित शोभा निरखिरही ब्रजबाल॥राग सारंग॥न्हात नंद सुधिकरी श्यामकील्यावहु बोलि कान्ह बलराम ॥ खेलत कान्ह वार बडि लागी ब्रज भीतर काहूके धाम ॥ मेरे संग आइ दोउ बैठें उन बिनु भोजन कौने काम। यशुमति सुनतचली आतुर ह्वै ब्रजघरघर टेरत लै नाम॥ आजु अबेर भई कहुँ खेलत बोलिलेहु हरिको कोउ वाम। ढूंढिफिरी नहिं पावत हरिको अति अकुलानी आवत धाम ॥ बारबार पछितातियशोदा वासर बीतिगए युग याम। सूरश्यामको कहूँ न पावत देखे बहु बालक इक ठाम ॥८॥राग सारंग॥ कोउ माई बोलिलेहुगोपालहि। मैं आवनको पंथ निहारति खेलत बेर भई नँदलालहि ॥ हेरत बेरबडीभई मोकहँ नहिं पावत घनश्याम तमालहि। सिध जेंवन सिरात नँद बैठेल्यावहु बोलिकान्हततकालहि॥ भोजनकरहिं नंद सँगमिलिकै भूँख लगी ह्वैहै मेरे बालहि।सूर श्याम मग जोवति यशुदा आइगएसुनि वचनरसालहि॥९॥राग नटनारायण ॥हरिको टेरतहै नँदरानी। बहुत अबार कतहुँ खेलतभइ कहांरहेमेरेशारंगपानी॥सुनतहि टेर दौरि तहँ आए कबके निकसे लाल।जेंवत नहीं नंदजू तुम बिनुबेगिचलोगोपाल॥श्यामहि ल्याई महरि यशोदा तुरतहि पाँइ पखारे।सूरदासप्रभुसंग नंदके बैठेहैं दोउ बारे॥१०॥राग सारंग॥ जेंवत श्याम नंदकी कनियां। कछुक खात कछु धरणि गिरावत छवि निरखत नँदरनियाँ॥बरी बरा बेसन बहु भाँतिन व्यंजन विविध अनगनियां।डारत खात लेत अपने कर रुचिमानतदधिदनियाँ ॥मिश्री दधि माखन मिश्रित करि मुख नावत छबिधनियां। आपुनखातनंदमुख नावत सो सुख कहत न बनियां ॥ जो रस नंद यशोदा बिलसतसोनहिंतिहूँ भुवनियाँ।भोजनकरि नंद अचवन कियो माँगत सूरजुठनियाँ॥११॥ राग कान्हरो॥ बोलि लेहु हलधरभैयाको।मेरे आगे खेल करौ कछु नैननि सुख दीजै मैयाको॥मैं मूँदौं हरि आँखि तुम्हारी वालक रहें लुकाई।हरषि श्याम सब सखा बुलाए खेलो आंखिमुँदाई॥ हलधर कहे आंखि को मूँद हरि कह्यो जननियशोदा।सूर श्याम लिये जननि खेलावति हर्षसहित मनमोदा॥१२॥ राग गौरी ॥हरितबआपनिआंखिमुँदाई। सखासहित बलराम छपाने जहँ तहँ गए भगाई ॥कान लागि कह जननियशोदा वा घरमें बलराम। बलदाऊको आवन देहौं श्रीदामासों है काम ॥ दौरिदौरिबालकसबआवत छुवतमहरिके गात।सब आए रहे सुबल श्रीदामा हारे अबकेतात॥शोरपारिहरिसुबलहिधाएगह्योश्रीदामाजाइ। दैदै सौंहें नंद बबाकी जननीपै लैआइ ॥ हँसि हँसि तारी देत सखा सब भएश्रीदामाचोर।सूरदास हँसि कहति यशोदा जीत्योहै सुत मोर ॥१३॥ राग केदारो ॥चलोलालकछुकरोंवियारी।काँच नाहीं काहूपर मेरे तू कहि भोजन करयो कहारी॥बेसन मिले उरम मैदासों अति कोमलपूरीहै भारी।जेंवहुश्याम मोहिं सुख दीजे तातै करी तुमहिं पियारी॥निंबुवा चूरन औ सँधानो और करौंदनकी रुचि न्यारी।वार वार तूँ कहति यशोदा कहिल्याए रोहिणि महतारी॥जननी सुनत तुरत लैआई तनक तनक धरि कंचनथारी। सूर श्याम कछु कछु लेखायो जल अचयो अरु वदन पखारी॥१४॥पौढिए लाल मैं रचि सेज विछाई। अति उज्ज्वल है सेज तुम्हारी सोवत सुखदाई॥खेलत तुमनिशि अधिक गई सुत नैननि नींद झमाई।वदन जँभात अंग ऐंडावत जननी

पलोटत पाँई ॥ मधुरे सुर गावत केदारो सुनत श्याम चित लाई। सूर श्याम प्रभु नंदसुवनको नींद गई तब आई ॥ १५ ॥ राग सारंग ॥ खेलन जाहु बाल सब टेरत। यह सुनि कान्ह भए अति आतुर द्वारे तन फिरि हेरत ॥ बारबार हरिमातहिकहिकहमेरीचौगान कहाँहै। दधिमथनीके पाछे देखो लै मैं धरी तहाँहै॥लैचौगान बटाकर आगे प्रभु आए जब बाहर। सूर श्याम पूँछत सब ग्वालन खेलौगे केहि ठाहर ॥ १६ ॥ खेलत बैन घोप निकास। सुनहु श्याम तुम चतुरशिरोमणि इहाँ है घर पास ॥ कान्ह हलधर वीर दोऊ भुजावल अतिजोर। सुबल श्रीदामा और सुदामा वै भए इक ओर ॥ और सखा बटाइ लीन्हें गोपबालक वृंद । चले ब्रजकी खोरि खेलन अति उमँग नँदनंद ॥ बटा धरणी डारदीनों लेचले ढरकाइ । आपु अपनी घात निरखत खेल जम्यो बनाइ ॥सखा जीतत श्याम जाने तब करीकछु पेल।सूरदासतबकहतसुदामा कौन ऐसो खेल ॥१७॥खेलतमें को काको गोसैयां। हरि हारे जीते श्रीदामा बरबसही कत करत रिसैयाँ ॥ जाति पाँति हमते कछु नाहि न बसत तुम्हारी छहियाँ। अति अधिकार जनावत याते अधिक तुम्हारे हैं कछु गइयाँ॥रुहठि करै तासों को खेलै रहे पौढि जहां तहां सब ग्वैयाँ।सूरदास प्रभु खेलोई चाहत दाँव दबो करि नंददोहैयां॥१८॥ राग कान्हरो॥आवहुकान्हसाँझकीबिरियाँ। गाइन माँझ भएहो ठाढे कहत जननि यह बड़ी कुबेरियाँ॥लरिकाई कहुँ नेक न छांडत सोइरहो सुथरी सेजरियाँ। आए हरि यह बात सुनतही धाइ लिये यशुमति महतरियाँ॥लैपौढीआँगनही सुतको छिटकिरही आछी उजियरियां।सूरदास कछु कहत कहतहीवश करिलिए आइ नींदरियां॥ ॥१९॥ आँगनमें हरि सोइगयो री॥ दोउ जननी मिलिकै हरुये करि सेजसहित तब भवनलियो री ॥ नेक नहीं घरमें बैठतहै खेलहिके अब रंग रए री। इहिबिधिश्यामकबहुँनहिंसोएबहुतनींदके वशहि भए री॥ कहत रोहणी सोवनदेहु न खेलत दौरत हारिगए री।सूरदास प्रभुको मुखनिरखत यह छबि नितनित होत नए री॥२०॥ अथ ब्राह्मणको प्रस्ताव॥राग धनाश्री ॥महरानेतेपांडे आयो।ब्रज घर घर बूझत नँदरावर पुत्र भयो सुनिकै उठि धायो॥ पहुँच्योआइनंदकेद्वारेयशुमतिदेखिअनंद बढायो । पाय धोइभीतर बैठायोभोजनको निजभवनलिपायो॥जोभावैसोभोजनकीजैविप्रमनहि अति हर्ष बढायो । बडी वयस बिधि भयो दाहिनो धनियशुमति ऐसोसुतजायो॥ धेनुदुहाइ दूध लैआई पांडे रुचिकै खीर चढ़ायो । घृत मिष्टानखीरमिश्रितकरिपरुसिकृष्णहितध्यानलगायो ॥ नैन उघारि विप्र जो देखै खात कन्हैया देखन पायो। देखो आइ यशोदा सुतकृत सिद्ध पाक इहि आइ जुठायो ॥ महरि विनय दोऊ कर जोरे घृत मिष्टान पयबहुतमँगायो। सूर श्याम कत करत अचगरी वारवार ब्राह्मणहि खिझायो ॥ २१ ॥ रामकली ॥ पांडेनहिंभोगलगावनपावै।करि करि पाक जबै अर्पतहै तबहिं तबहिं छ्वै आवै॥इच्छा करि मैं ब्राह्मण न्योत्यौं तू गोपाल खिझावै। वह अपने ठाकुरहि जेंवावत तू ऐसे उठि धावै॥ जननी दोप देहु जनि मोको करि विधान बहु ध्यावै ।नैन मूँदि कर जोरि नाम लै बारहि बार बुलावै॥ कह अंतरक्योंहोइभक्तकोजोमेरे मन भावै। सूरदास बलि [illegible] जन्म पाइयशगावै ॥२२॥राग बिलावल॥ सफलजन्मप्रभुआजु भयो। धनि गोकु[illegible] नंद यशोदा जाके हरि अवतार लयो ॥ प्रगट भयोअब पुण्यसुकृतफल दीनबंधु मोहिं दरश दियो । बारंबार नंदके आंगन लोटत द्विज आनंद भयो॥मैंअपराध कियो विन जाने को जानै केहि भेप जयो ।सूरदास प्रभु भक्तहेतवश यशुमतिहित अवतारलयो॥२३॥ राग धनाश्री॥ अहो नाथ जेइ जेइ तेरे शरण आए तेइ तेइ भएपावन।महापतितकुलतारनएकनाम

अघ जारन कारन दुख विसरावन॥मोते को हो अनाथ दरशनतेभयोसनाथदेखत नैनजुडावन। भक्तहेत देह धरण पुहुमीको भार हरण जन्म जन्म जन मुक्तावन॥अशरन शरन दीनबंधु यशुमति सुखकारन देहधरावन।हितके चितकी मानत सबके जियकी जानत सूरदास प्रभुमनभावन॥॥२४॥ राग विलावल ॥मया करियेकृपाल प्रतिपालसंसारउदधिजंजालते पारपारं।काहूकेब्रह्माकाहूके महेश काहूके गणेशप्रभु मेरे तौ तुमहिआधारं॥दीनदयालु कृपाकरिमोकोयह कहिकहिलोटत बार बारं। सूरश्याम अंतर्यामी स्वामीहो जगतके कहा कहीं करो निरवारं॥२५॥ अथ माटीको प्रसंग राग विलावल ॥ खेलत श्याम पौरिके बाहर ब्रज लरिका सोहत सँग जोरी। जैसेइ आपु तैसेई लरिका सब अति अज्ञ सबनि मति थोरी ॥ गावत हांक देत किलकारत दुरि देखत नँदरानी। अति पुलकित गदगद मृदुवानी मन मन महरि सिहानी ॥ माटी लै मुख मेलिदई हरि तबहिं यशोदा जानी। साँटी लिये दौरि भुज पकरे श्याम लँगरई ठानी ॥लरिकनको तुम सब दिन झुठवत मोसों कहा कहोगे। मैया मैं माटी नहिं खाई मुख देखे निवहोगे॥ वदन उघारि देखायो त्रिभुवन वन घन नदी सुमेर।नभ शशि रवि मुखभीतर है सबसागर धरनी फेर ॥ यह देखत जननी जिय व्याकुल बालकमुख का आहि। नैन उघारिवदन हरिमूंद्यो माता मन अवगाहि॥झूठे लोग लगावत मोको माटी मोहिं न सुहावै।सूरदास तब कहतियशोदा ब्रजलोगन इह भावै॥२६॥राग धनाश्री ॥मोहन काहे न उगिलो माटी।बारबारअनरुचिउपजावत महरिहाथ लिये साँटी। महतारीको कह्यो न मानत कपटचतुरई ठाटी। वदन पसारि दिखाइ आपनो नाटककी परिपाटी॥ बडी बार भई लोचन उघरे भ्रम या मनकी फाटी।सूरदास नँदरानि भ्रमित भई कहत न मीठी खाटी ॥२७॥रामकली ॥मो देखतयशुमति तेरे ढोटाअबहींमाटीखाई। इह सुनिकै रिस कारि उठि धाई बांह पकर लैआई॥इक करसों भुज गहि गाढेकरि इककर लीनें साँटी। मारतिहौं तोहि अवहि कन्हैया वेगि न उगलो मांटी॥ब्रजलरिकासब तेरेआगेझूठीकहत बनाई। मेरे कहे नहीं तू मानत दिखरावो मुख बाई॥अखिलब्रह्मांडखंडकी महिमादेखरायोमुखमाहीं। सिंधु सुमेरु नदी वन पर्वत चकृत भई मनमाहीं॥करतें साँटि गिरत नहिंजानीभुजाछांडि अकुलानी। सूर कहै यशुमति मुख मूँदहु बलि गइ शारँगपानी॥२८ ॥राग सारंग॥ नंदहि कहति यशोदा रानी।माटीके मिस मुख देखरायो तिहूंलोक रजधानी॥स्वर्गपतालधरनि वन पर्वतवदनमांझ रहे आनी। नदी सुमेरु देखि चकृत भई याकी अकथ कहानी॥ चितरहे तब नंद युवतिमुख मन मन करत विनानी।सूरदास तब कहति यशोदा गर्ग कही यह वानी॥२९॥राग विलावल॥ कहत नंद यशुमति सुन बौरी।ना जानिये कहा तैं देख्यो मेरे कान्हहि लावति खोरी॥पाँचवर्षको मेरो कन्हैया अचरज तेरी बात। वेही काज साँटि लै धावति ता पाछे बिललात ॥ कुशल रहैं बलराम श्याम दोउ खेलत खात अन्हात।सूर श्यामकोकहा लगावति बालक कोमल गात ॥३०॥ रागविलावल॥देखो रे यशुमति बौरानी।घरघरहाथ दियावत डोलत गोद लिये गोपालविनानी॥ जानत नाहिं जगतगुरु माधो यहि आये आपदा नशानी। जाको नाव शक्ति पुनि ताकी ताही देत मंत्र पढि पानी॥अखिल ब्रह्मांड उदर गति जाकी जाकी ज्योति जलथलहि समानी।सूरसकल साँची मोहिंलागत जोकछुकहीमुखगर्ग कहानी॥३१॥राग धनाश्री॥गोपालगइहौचरननिहिहौंकाटी। हम अवला रिस बाँचि न जानी बहुत लागि गइ साँटी॥वारों कर जु कठिन अति कोमल जरहु नयन जिन डाटी। मधु मेवा पकवान छाँडिकै काहे खात लाल तुम माटी॥सिगरोई दूध पियो

मेरे मोहन बलहि न देवहु बाँटी। सूरदास नँद लेहु दोहनी दुहहु लालकी नाटी ॥ ३२ ॥ ॥अथ माखनचोरी प्रथम ॥ गौरी ॥ मैया री मोहिं माखन भावै। मधु मेवा पकवान मिठाई मोहिं नहीं रुचि आवै ॥ ब्रज युवती इक पाछे ठाढी सुनति श्यामकी बात। मन मन कहति कबहुँ मेरे घर देखों माखन खात ॥ बैठे जाय मथनियांके ढिग मैं तब रही छिपानी। सूरदास प्रभु अंतरयामी ग्वालिमनहिंकी जानी॥३३॥गौरी ॥गए श्याम तिहि ग्वालिनिके घर। देख्यो जाइ द्वार नहिं कोई इत उत चित चले घरभीतर ॥ हरि आवत गोपी तब जान्योआपुन रही छिपाई। सूने सदन मथनियांके ढिग बैठिरहे अरगाई॥माखन भरी कमोरी देखी लैलै लागे खान। चितैरहत मणिखंभ छाँहतन तासोंकरतसयान॥प्रथम आजुमैं चोरी आयो भल्यो बन्योहै संगु। आपु खात प्रतिबिंब खवावत गिरत कहत का रंगु॥जो चाहो सब देउँ कमोरी अतिमीठो कत डारत।तुमहि देखि मैं अति सुख पायो तुम जिय कहा विचारत॥सुनि सुनि बातैंश्यामसुंदरकी उमँगि हँसी ब्रजनारि। सूरदास प्रभु निरखि ग्वालिमुख तब भजि चले मुरारि ॥ ३४ ॥ फूली फिरति ग्वालि मनमें री।पूछति सखी परस्पर बातैं पायो पर्यो कछुकहै तैंरी॥ पुलकितरोम रोम गदगद मुख वाणी कहत न आवै। ऐसो कहा आहि सो सखिरी मोको क्यों न सुनावै।तनु न्यारो जो एक हमारो हम तुम एकै रूप। सूरदास कहै ग्वालि सखीसों देख्यो रूप अनूप ॥ ॥राग गूजरी॥आजु सखी मणिखंभनिकट हरि जहाँ गोरसको गोरी। निजप्रतिबिंब सिखावतज्यों शिशु प्रगट करै जिनि चोरी ॥ आध विभाग आजुते हम तुम भली बनीहै जोरी।माखन खाहु कितहि डारतहौ छाँडिदेहु मति भोरी॥हिसा न लेहु सबै चाहतहौ इहै बात है थोरी।मीठोअधिक परम रुचि लागै देहौं काढि कमोरी॥प्रेम उमँगि धीरज नरह्यो तबप्रगट हँसी मुखमोरी।सूरदास प्रभु सकुचि निरखि मुख भजे कुंज गहि खोरी॥३५॥राग बिलावल॥प्रथम करी हरि माखन चोरी। ग्वालिन मन इच्छा करि पूरण आपु भजे हरि ब्रजकी खोरी ॥ मनमें इहै विचार करत हरि ब्रज घर घर सब गाऊं। गोकुल जन्म लियो सुखकारण सबकर माखन खाऊं॥ बाल रूप यशुमति मोहिं जानै गोपिन मिलि सुख भोगू। सूरदास प्रभु कहत प्रेमसों घेरो रे ब्रज लोगू॥ ॥३६॥राग रामकली॥करत हरिग्वालनसंग विचार।चोरि माखन खाहु सब मिलिकरोबालविहार॥ यह सुनत सब सखा हर्षे भली कही कन्हाइ। हँसि परस्पर देत तारी सौंह करि नँदराइ ॥ कहाँ तुम यह बुद्धि पाई श्याम चतुर सुजान ॥ सूर प्रभु मिल ग्वालबालक करतहैं अनुमान ॥ ३७॥ राग गौरी ॥सखासहित गए माखन चोरी।देख्यो श्याम गवाक्षपंथ ह्वै गोपी एक मथतिदधि भोरी॥ हेरि मथानी धरी माटते माखन हौं उतरात। आपुन गई कमोरी मागन हरिहू पाई घात ॥ पैठे सखनसहित घर सूने माखन दधि सब खाई। छूँछीछाँडि मटुकिया दधिकी हँसि सब बाहिर आई ॥ आइगई कर लिये मटुकिया घरते निकरे ग्वाल। माखन कर दधि मुख लपटानो देखि रही नँदलाल॥ काहे आजु ब्रजबालक सँगलै माखन कर दधि मुख लपटानो।देखतते उठि भजो सखा एक इहि घर आइ छिपानो ॥ भुज गहिलियो कान्ह इक बालक निकरे ब्रजकी खोरि। सूरदासप्रभु ठगिरहीग्वालिनिमनुहरिलियो अजोरि॥३८॥राग गौरी ॥चकित भई ग्वालिनितन हेर्यो।माखन छाँडि गई मथि वैसहि तवते कियो अबेर्यो॥देखौंजाइ मटुकिया रीतीमैंराख्यौ कहुँ हेरी।चकृत भई ग्वालिनि मन अपने ढूँढति घर फिरि फेरी॥देखति पुनिपुनि घरके वासन मन हरिलियो गोपाल। सूरदास रसभरी ग्वालिनी जानै हरिके ख्याल॥३९॥राग बिलावल॥ब्रजघर

घर प्रगटी यह बात।दधि माखन चोरीकै लैहरि ग्वालसखासँग खात ॥ब्रजवनिता यह सुनि मन हर्षीं सदन हमारे आवैं। माखन खात अचानक पावैं भुज भरि उरहि छुवावैं॥मनहीमन अभिलाष करत सब हृदय करत यह ध्यान। सूरदास प्रभुको घरते लै देहौं माखन खान ॥ ४० ॥ राग सारंग॥ गोपालहि माखन खानदै। सुनुरी सखी कोऊ जिनि बोलै वदन दहीलपटानदै॥गहि बहियाँ हौंलैकै जैहों नयनन तपति बुझानदै। वापै जाइ चौगुनो लेहौं मो यशुमति लौं जानदै॥तुम जानति हरि कछुव न जानत सुनत मनोहर कानदै। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको राखोंगी तन मन प्रानदै ॥ ॥ ४१ ॥राग कान्हरो॥ चली ब्रज घरघरनि यह बात। नंदसुत सँग सखा लीने चोरि माखन खात॥ कोउ कहति मेरे भवनभीतर अबहिं पैठे धाइ। कोउ कहति मुहि देखिद्वारे गयउ ताहि पराइ ॥ कोउ कहति केहि भाँति हरिको देखों अपने धाम। हेरि माखन देउँ आछो खाहि जितनो श्याम॥ कोउ कहति मैं देखिपाऊं भरि धरौं अँकवारि। कोउ कहति मैं बाँधिराखौं को सकै निरवारि॥ सूर प्रभुके मिलन कारन करत बुद्धि विचार। जोरि कर बिधिको मनावति पुरुष नंदकुमार ॥ ॥४२॥ राग कान्हरो॥ ग्वालनिघर गये जानि साँझकी अँधेरी।मंदिरमें गए समाइ श्यामलतनु लखि न जाइ, देह गेह रूप कहौ को कहै निबेरी॥दीपक गृह दान करयो भुजा चारि प्रगट धरयो, देखत भई चकृत ग्वालि इत उतकोहेरी।श्याम हृदय अतिविशाल माखन दधि बिंदु जाल,मनमोह्यो नंदलाल बलहि बूझेरी॥युवती अति भइविहाल भुज भरिदे अंकमाल,सूरज प्रभु अति कृपाल डारयो मन फेरी। करसों कर लै लगाइ महरिपै गई लिवाय आनँद उरमें न समायबातहै अनेरी॥ ॥४३॥ राग कल्याण ॥यशुमति धौं देखि आनिआगेह्वै लेपिछानि बहियाँगहिल्याईकुँवर औरको कि तेरो।अबलौं मैं करी कानि सही दूध दही हानि,अजहूं जियजानिमानि कान्हहै अनेरो॥ दीपकमैं धरयो वारि देखत भुज भये चारि,हारी हौं धरति करति दिन दिनको झेरो।देखियत नहिं भवनमांझ तैसोइ तनु तैसि साँझ छलसों कछु करतु फिरतु महरिको जठेरो ॥ गोरस तनु छीटरही शोभा नहिं जात कही,मानौं जलयमुन बिंब उडगन पथुफेरो।उरहनौं दिन देउँ काहिकाहेतूइतनो रिसाइ,नाहीं ब्रजबास सासु ऐसी बिधि मेरो॥ गोपी निरखति सुमार यशुमतिको है कुमार, भूली भ्रम रूपमानौ आनि कोऊ हेरो।मनमन बिहँसत गोपालभक्तपाल दुष्टशाल,जानैकोसूरदास चरित कान्हकेरो॥४४॥राग गौरी॥देखि फिरे हरि ग्वालि दुवारे।तबइक बुद्धिरची अपने मनभीतर साँझ परे पिछवारे ॥ सूने भवन कहूँ कोउ नाहीं मनो याहिको राज। भांडे धरतु उघारतुमूँदतु दधिमाखनकेकाज ॥रैनि जमाइ धरयो सो गोरस परयो श्यामके हाथ।लैलै खात अकेलेआपुन सखा नहीं कोउ साथ ॥ आहट सुनि युवती घर आई देख्यो नंदकुमार।सूरश्याममंदिर अँधियारे निरखत बारंबार॥४५॥अँधियारे घर श्याम रहे दुरि। अबहीं मैं देख्यो नँदनंदन चरित भयो मनहीमन झुरि॥पुनिपुनि चकृत होति अपनेजीकैसीहै यहबात। मटुकीकेढिग बैठिरहे हरि करैं आपनी घात॥ सकल जीउ जलथलके स्वामी चींटी दईउपाइ।सूरदास प्रभुदेखि ग्वालिनीभुज पकरे तब आइ ॥ ४६ ॥ श्याम कहा चाहतसे डोलत। बूझहूते वदन दुरावत सूधे बोल न बोलत ॥सूने निपट अँध्यारे मंदिर दधि भाजन में हाथ। अब कहि कहा बनैहौ उत्तर कोऊ नाहिन साथ॥मैं जान्यों यह घर अपनो हैया धोखे मैंआयो।देखतुहौं गोरसमें चींटी काढनको कर नायो ॥ सुनि मृदु वचन निरखि मुख शोभा ग्वालिनि मुरि मुसुकानी। सूरश्याम तुम हो रतिनागर बात तिहारी जानी ॥४७ ॥ राग सारंग॥यशोदा कहाँलौं कीजे

कानि।दिनप्रति कैसे सही परतिहै दूध दहीकी हानि॥ अपने या बालककी करनी जो तुम देखो आनि। गोरस खाइ ढूँढि सब बासनभली करी यह बानि॥ मैं अपने मंदिरकेकोनेंमाखन राख्यो जानि।सोईजाइ तुम्हारे लरिकालीनोहैपहिचानि॥बूझीग्वालिनि घरमें आयो नेकुन शंका मानी। सूरश्याम तब उतर बनायो चींटी काढतु पानी ॥४८॥राग गौरी॥ आप गए हरुए सूने घर। सखा सबहिं बाहरही छांड देख्यौ दधि माखन हरि भीतर॥तुरत मथ्यो दधि माखन पायो लैलै खात धरत अधरनिपर। सैनहु दे सब सखा बुलाए तिनहिं देत भरिभरि अपने कर॥ छिटकिरहीं दधि-बूँद हृदयपर इत उत चितवत करि मनमें डर। उठत ओटते लेत सबनि लै पुनिलै खात देत ग्वालिनि वर॥अंतरभई ग्वालि यह देखति मगन भई अति उर आनँद भरि।सूरश्याममुख निरखि थकित भइ कहत न बनै रही मनमें धरि॥४९॥राग धनाश्री॥गोपाल दुरेहैं माखन खात। देखि सखी शोभा जु बनी है श्याम मनोहरगात॥उठिअवलोकिओटठाढेह्वै जिहि बिधिहैलखि-लेत। चकृतवदन चहूंदिशि चितवत और सखनको देत॥ सुंदर कर आनन समीप अति राजत इहि आकार। मनौ सरोज विधुबैर बंचि कारि लिये मिलत उपहार॥ गिरिगिरि परत वदनके ऊपर द्वै दधिसुतके बिंदु। मानहु सुभग सुधाकन बरषत बिजमौआगम इंदु॥बालविनोद विलोकि सूर प्रभु शिथिल भईब्रजनारि।फुरै न वचन बरजिबे कारनरही बिचारिबिचारि॥५०॥ राग सारंग॥ग्वालिनि जो घर देखेआइ।माखन खाइचुराइ श्यामतब आपुन रह्यो छपाइ॥ठाढीभई मथनियांकि ढिग रीती परी कमोरी। अबहि गई आई इन पाँइनि लैगयो को कारि चोरी॥ भीतर गई तहां हरिपाए श्याम रहे गहि पाई। सूरदास प्रभु ग्वालिनि आगे अपनो नाम सुनाई॥५१॥राग गौरी॥जो तुम सुनहु यशोदा गोरी। नँदनंदन मेरे मंदिरमें आजु करन गए चोरी॥ हौं भई आनि अचानक ठाढीं कह्यो भवनमें को री।रहे छपाइ सकुचि रंचक ह्वै भई सहजमति भोरी॥ जब गहि बाँह कुलाहल कीनो तब गहि चरण निहोरी। लागे लै नैनन भरि आँसू तब मैं कान न तोरी॥ मोहिं भयो माखनको संशय रीती देखि कमोरी। सूर-दास प्रभु देत दिनहुँ दिन ऐसी लरिकसलोरी॥५२॥राग सारंग॥जानि जु पाए हौहरि नीके। चोरि चोरि दधि माखन मेरो नितप्रति गीधिरहे या छींके॥ रोक्यो भवनद्वार ब्रजसुंदरि नूपुर मूंदि अचानक हीके। अब कैसे जैयतु अपने बल भाजत दूध दही मेरो पीके॥सूर श्याम प्रभु भले परे फँद देउँ न जान भावते जीके। भरि गंडूक छिरकदे नैननि गिरिधर भागि चले दै कीके॥ ॥५३॥राग रामकली॥माखनचोर री मैं पायो।मैं जुकही सखीहोतुकहाहै भाजन लगत झुझायो॥जौ चाहौ तौ जान क्यों पैये बहुत दिननुहैखायो।बारबारहौंढूँका लागी मेरी घात न आयो॥नोईनेत-की करौं चमोटी घूँघटमें डरवायो त्रि हँसत निकसिरहींदोदँतियाँ तब लै कंठ लगायो॥मेरेलाल-को मारिसके को रोहिनि गहि हलरायो। सूरदास प्रभु बालकलीला विमल विमल यश गायो॥ ॥५४॥राग नट॥देखि ग्वालिनि यमुना जात। आपु ता घर गए पूँछत कौन है कहि बात॥ जाइ देखे भवनमहियाँ ग्वालबालक दोइ। भीर देखत अति डराने दुहूँ दीनो रोइ॥ग्वालके काँधे चढे तब लिए छींके उतारि। दह्यो माखन खात सब मिलि दूध दीनो डारि॥बच्छ लै सब जोरिदीने गए बन समुदाइ। छिरकि लरिकनु दहीसों भरि ग्वाल दीने चलाइ॥देखि आवत सखी घरको सखा गए सब दौरि। आनि देखे श्याम घरमें भई ठाढी पौरि॥प्रेम अंतर रिस भरयो मुख युवति बूझति बात। चितै मुखतन सुधि बिसारी कियो उर नख घात॥ अतिहि रिसवस भई ग्वालिनि गेह देह बिसारि। सूर प्रभु भुजगहे ल्याई महरिसों अनुहारि॥५५॥ राग गौरी ॥महरि

तुम मानौ मेरी बात। ढूँढि ढूँढि गोरस सब घरको हरयो तुम्हारेतात॥ और काढिसींकेतेलीनो ग्वाल कँधा दै लात। अमंभाषु बोलन आई है ढीठ ग्वालिनी प्रात॥ चाखत नहीं दूध धौरीको तेरे कैसे खात। औरो कहति कछू सकुचतिहौं कहादिखाऊं गात॥ ऐसो तौ मेरो नहिं अचगरो कहा बनावति बात। चितवत चकित ओट भए ठाढे यशुदातन मुसुकात॥ हैं गुण बडे सूरके प्रभुके ह्यां लरिका ह्वैजात॥५६॥ राग गौरी॥ साँवरेहि बरजति क्यों जु नहीं। कहा करौं दिन प्रतिकी बातैं नाहिन परत सही॥माखन खात दूध लै डारत लेपत देह दही। तापाछेघरहूकेलरिकनु भाजत छिरकि मही॥जो कछु धरहिं दुराय दूर लै जानत ताहि तँही।सुनहुमहरितेरेयासुतसोंहम पचिहारि रही॥ चोर अधिक चतुराई सीखी जाइ न कथा कही। तापर सूरबछरुवनिढीलतवन वन फिरत बही॥५७॥ राग कान्हरो॥अब ये झूठेहु बोलत लोग।पाँच बरष अरु कछुक दिननिको कब भयो चोरीयोग॥ इहि मिस देखन आवति ग्वालिनि मुँह फाटे जुगवारी। अनदेखेको दोष लगावति दई देइगो टारी॥कैसेकरि याकी भुज पहुँची कौन वेग ह्यांआयो। ऊखलऊपरआनिपीठ धरि तापर सखा चढायो॥ जो न पत्याहु चलो सँग यशुमति देखो नयन निहारि। सूरदासप्रभु नेकु न बरजो मनमें महरि बिचारि॥५८॥ मेरो गुपाल तनकसो कहा करि जानै दधिकी चोरी। हाथ नचावति आवति ग्वालिनि जीभुन करही थोरी॥ कब सींके चढ़ि माखन खायो कब दधि-मटुकी फोरी। अँगुरिन करि कबहूँ नहिं चाखतु घरही भरी कमोरी॥ इतनी सुनत घोषकी नारि बिहँसि चलीं मुख मोरी।सूरदास यशुदाको नंदन जो कछु करै सु थोरी॥५९॥ राग कान्हरो॥ इनु अँखियनुआगेते मोहन एकौ पल जिनि होहिं नियारे। हौं बलिगई दरश देखेबिनु तलफतहैंनैननि केतारे॥ आनोंसखा बुलायआपनेयहि आँगन खेलो मेरेबारे।निरखति रहौं फणिककीमणिज्यों सुंदरश्यामविनोदतिहारे॥ मधुमेवा पकवान मिठाई खाटे मीठे व्यंजन खारे। सूरदासप्रभुजोमन इच्छा सोइमोइमाँगिलहु मेरेप्यारे॥६०॥ राग नटनारायण॥ मेरेलाडिलेहोजननिकहतजनिजाहुकहूँ। तेरेहि काजे गुपाल सुनहु लाडिलेलाल राखेहैं भाजन भरि सुरस छहूं॥ काहेको पराये जाइकरै इतने उपाइ दूध दधी घृत मधु माखन तहूं।करतिकछू न कानि बकतिहै कटुवानि निपटनिलजबैन बिलखतहूं॥ ब्रजकी ढीठी ग्वारी हाटकी बेचनहारी सकुच नदेति गारी झगरिकहूँ।कहांलौंमें करौं रिस बकत धौं इही कृश इही मिससूर श्यामबदन चहूँ॥६१॥ राग धनाश्री॥ चोरी करत कान्ह धरि पाये। निशिवासर मोहिं बहुत सतायो अब हरि हाथहि आये॥ माखन दधिमेरो सब खायोबहुत अचगरी कीन्ही। अबतौ आइ परेहौ ललना तुम्हें भल में चीन्ही॥ दोउ भुज पकरि कह्योकित जैहो माखन लेउँ मँगाइ। तेरीसों मैं नेकु न चाख्यो सखा गये सब खाइ॥ मुखतन चितै बिहँसि हँसिदीनो रिस तब गई बुझाइ। लियो उर लाइ ग्वालिनी हरिको सूरदास बलिजाइ॥ ॥६२॥ राग धनाश्री॥ मथति ग्वालि हरि देखा जाइ। गये हुते माखन की चोरी देखत छबि रहे नयन लगाइ॥ डोलत तनु शिर अंचलु उघर्यो बेनी पीठि डोलत इहि भाइ। बदन इंदु पय पान करनको मनहुँ उरग उठि लागत धाइ॥ निरखी श्याम अंग पुनि शोभा भुज भरि धरि लीनो उर लाइ। चितै रही युवती हरिकोमुखनयनसैनदैचितहिचुराइ॥तन मन धन गति मति बिसराई सुख दीनो कछु माखन खाइ। सूरदास प्रभुरसिकशिरोमणितुम्हरी लीला कोकहै गाइ॥६३॥राग ललित॥दरब्योहरिमथतिग्वालिदधिभदसोंठाढी। यौवनमदमातीइन-राती बेनी ढुरत कटिपर छबि बाढी॥दिन थोरी भोरी अति कोरी देखतही जु श्याम भये चाढी।

कर्षतिहै दुहुँकरन मथानी शोभाराशि भुजा गहि गाढी॥इत उत अंग मुरति झकझोरति अँगिया बनी कुचनसों माढी । सूरदास प्रभु रीझि थकित भए मनहु काम साँचे भरि काढी ॥ ६४ ॥ राग बिलावल॥गए श्याम तेहि ग्वालिनिके घरादेखोजाइ मथति दधि ठाढी आपु लगे खेलनद्वारे पर॥फिरि चितई हरि दृष्टि परिगए बोलि लिए हरुवे सूने घर। लियेलगाइकठिनकुचके बिचगाढ़े चापि रही अपने कर ॥ उमँगि अंग अँगिया उर दरकी सुधिबिसरीतनकीतिहिऔसर।तव भये श्याम वरष द्वादशके रिझैलई युवती वा छबिपर॥मन हरिलयो तनकसे ह्वैगये देखिरही शिशुरूप मनोहर।माखन लै मुख धरति श्यामके सूरज प्रभु रति पति नागरवर ॥६५॥ग्वालिनि उरहनके मिस आइ । नंदनँदन तनु मनु हरिलीनो बिन देखे क्षण रह्यो न जाइ ॥ सुनहु महरि अपने सुतके गुण कहा कहौं किहि भाँति बनाइ । चोली फारि हार गहि तोरयो इन बातन कहो कौन बडाइ ॥ माखन खाइ खवावत ग्वालन जो उबरयो सो दियो लुढाइ । सुनहु सूर चोरी सहलीनी अबकैसेसहिजातढिठाइ॥ ६६॥राग सारंग॥झूंठहिमोहिंलगावतिग्वारि।खेलतमें मोहिं बोलिलियोहै दोउ भुज भरि दीनी अँकवारि॥मेरेकर अपने कुचधारति आपुहिचोली फारि।माखन आपुहि मोहि खवायो मैं कव दीन्हों ढारि॥कहाजाने मेरोवारो भोरोझुकीमहरि दैदै मुख गारि।सूरश्यामग्वालिनि मन मोह्यो चितैरही इकटकहि निहारि॥६७॥राग गौरी॥कबहिं करन गयेमाखनचोरी।जानतिहौं जु कटाक्षतिहारे कमलनयन मेरोइ तनकसो री ॥ दैदै दगा बुलाइ भवनमेंभेटति भुज भरि उरजकटोरी ।उर नखचिह्न दिखावति डोलति कान्ह चतुर भए तू अति भोरी॥मो घर आवति उरहन के मिस चितै रहति ज्यों चन्द्रचकोरी।सूरसनेह जात नहिं हटक्यो नैननि प्रीति जाति नहिं तोरी ॥ ६८ ॥ राग गौरी ॥कहा कहौं हरिके गुण तोसों । सुनहु महरि अबही मेरे घर जे कीने मोसों ॥ मैं दधि मथति आपने मंदिर गए तहाँ इहि भाँति।मोसों कह्यो बात सुनु मेरीमैं सुनिकै मुसकाति॥ बाँह पकरि चोली गहि फारी भरि लीनी अँकवारी। कहत न बनै सुकुचकी बातैं देखौ हृदय उघारी॥ माखन खाइ निदरि नीकी विधि इह तेरे सुतकी घात । सूरदास प्रभु तेरेआगेसुकुचतनकैह्वैजात ॥ ६९ ॥ राग गौडमलार ॥ ग्वालिनी श्याम तनु देखरी आपु तन देखिये । भीतिजबहोइतबचित्र अवरेखिये॥ कहाँ मेरो कुँवरहै पाँचही वरषको रोइ अजहूँ पयपान माँगे। कहाँतू ढीठ यौवन मद सुंदरी फिरति अठिलाति गोपाल आगे॥कहाँ मेरो कान्हकी तनकसी आँगुरी बडेबडे नखनिके चिह्न तेरे । मए करु हँसैगो लोगु अँकवार भुज अहाँ पाएतैं श्याम मेरे॥टगटगैमुख झुकी नयनहूं नागरी उरहनो देत रुचि अधिक बाढी । सुनहु सूर सर्वसु हरयो साँवरे अनउत्तर महरि ढिग देति ठाढी॥७०॥ राग गौरी ॥कनहो कान्ह काहूके जात।ये सबबढ़ी गर्वगोरसके मुखसम्हारि बोलति नहिं बात॥जोइ जोइ रुचै सोइसोइ तव मोपै मांगिलेहु किन तात।ज्योंज्यों बचन सुन्यौमुख अमृत त्यों त्यों सुख पावत सब गात॥ कैसी टेव परी इन गोपिन उरहनके मिस आवतिप्रात। सूर सकति हठि दोष लगावति घरहूको माखन नहिं खात॥७१॥राग बिलावल ॥कान्हकोग्वालिनि दोष लगावत चोर । तनक दही माखनके कारणकबे गयोतेरी ओर॥तुमतो धन योवनकीमाती निलज भई उठि आवत भोर ।लालकुँवर मेरो कछू न जानै तूहै तरुणि किशोर ॥ कापर नयन चढाये डोलति या ब्रजमें तिनकासो तोर।सूरदास यशुदा अनखानी इह जीवन धनमोर॥७२॥ ॥राग देवगंधार॥कान्हहि बरजति क्यों न नँदरानी॥एक गाँवकेबसत कहाँलौंकरैनंदकीकानी॥तुम जो कहतहो मेरो कन्हैया गंगाकोसो पानी। बाहर तरुण किशोर बैस वर बाट घाटको दानी॥

वचन बिचित्र कमलदललोचन कहत सरस वर वानी। अचरज महरितुम्हारेआगेआवै जीभ तुत-रानी ॥ कहाँ मेरो कान्ह कहाँ तुम ग्वालिनि इह विपरीति न जानी। आवत सूर उरहनेके मिसु देखि कुँवर मुसुकानी ॥ ७३ ॥ राग धनाश्री ॥ माखन माँगत हैं यशुमतिसों। माता सुनत तुरत लैआई देति खवाइ मगन मन रतिसों ॥ मैया मैं अपने कर लेहौं धरिंद मेरे हाथ। माखन खात चले उठि खेलन सखा जुरे सब साथ ॥ मथुरा जात ग्वालिनी देखी चरचि लई हरि आइ। सूर श्याम ता घरके पाछे बैठिरहे अरगाइ॥७४॥ राग धनाश्री ॥मथुराजात हौंबेंचनदधियो। मेरे घरको द्वार सखीरी तबलौं देखति रहियो ॥ दधि माखनद्वैमाठकछूतेसौंपतिहौंतुहिसहियो। और तौ डर नाहीं या ब्रजमें नंदसुवन सखि आवतलहियो॥येशुभवचननिकटह्वैमोहनसुनि करि उर सब गहियो। सूरपौंरिलौंगईन ग्वालिनिकूदिपरचो दैधहियो॥७५॥ राग नट ॥देख्योजाइश्याम घरभीतर। अबहीं निकसि कहतिभई सो फिरिआई पुनि तुम्हरेडर॥ सखासाथकेचमकि गए सब गह्यो श्यामकर धाई। औरनि जानि जान मैं दीन्ह्यों तुम कहँ जाहु पराई॥ बहुत अचगरी करत फिरतहौ मैं पाए करि घात। बाँह पकरि लैचली महरिपै करतरहतउतपात॥ देखो महरि आपने सुतको कबहूँ नाहिं पत्याति। बैठे श्याम आपने भवनहिं चितै चितपछिताति॥ बाँहपकरि तू ल्याई काको अति बेशरम गवाँरि। सूर श्याम मेरे आगे खेलत यौवनमद मतवारि॥७६॥ राग सारंग॥ यशुदा तू जो कहतिही मोसों। दिनप्रतिदेन उरहनोआवतिकहातिहारो कोसों॥ येहै उरहनो सत्य करनको गोविंदहि गहिल्याई। देखन चली यशोदा सुतकोह्वैगएसुना पराई ॥ तेरे हृदय नेक मति नाहीं बदन पेखि पहिचान्है। सुनरी सखी कहति डोलतिहै या कन्या सो कान्है तैं जो नाम कान्ह मेरेको सूधो है करिपायो। सूरदास स्वामी यह देखौ तुरत त्रिया ह्वैआयो॥७७॥ राग गौरी ॥ रही ग्वालि हरिको मुख चाहि। कैसे चरित किये हरि अबहीं बार बार सुमिरति करताहि॥ बांह पकरिघरते ले आई कहा चरित कीन्हे हैं श्याम। जात न बनै कहत नहिंआवैकहत महरि तू ऐसी बात॥ जानी बात तिहारी सबकी यशुमति कह्यो इहांते जाहि। सूरदासप्रभुके गुण ऐसेबुद्धि करी तब जीतीताहि॥७८॥ राग गौरी ॥श्याम गए ग्वालिनिघर सूनो। माखनखाइडारिसब गोरस बासन फोरिसोरु हठिदूनो। बडोमाट इकबहुत दिननिको तासुकिये दशटूक। सोवनलरिक-न छिरकि महीसों हँसतचले दैकूक॥ आइगई ग्वालिनि तिहिऔसर निकसनहरिधरिपायो। देखत घर बासन सब फूटे दहीदूध ढरकायो॥ दोउभुज धरि गाढे करिलीन्हे गई महरिकेआगे। सूरदास अबबसैकौनह्यां पतिरहिहैब्रजत्यागे॥७९॥ राग बिलावल ॥ऐसे हाल कियोघरघरके। हौंलेआई तुम पास पकरिकै फोरे सबबासन घरके। दधि माखनखायो जोउबरचोसोडारचोरिसकरिकै॥ लरिका छिरकि महीसों देखो उपज्यो पूत सपूत महरिके। बडो माट घरधरचो युगनिको सोउ टूकपांच दश करिकै॥ पारि सपाट चले तब पाये हौं ल्याई तुम पास पकरिकै। सूरदासप्रभुको यांगखो ज्यों राखिये गज मदकोजकरिकै॥८०॥ राग कान्हरो ॥करत कान्हब्रजघरनि अचगरी। खीझतिमहरि कान्हसो पुनिपुनि उरहन लैआवतिहैं सिगरी॥ बडे बापके पूत कहावत हम वे बास बसतइक नगरी। नंदहुते ये बडे कहैहैं फेरिबसैहैं य ब्रज नगरी॥ जननीके खीझत हरि रोये झूठहि मोहिं लगावत धगरी। सूरश्याममुख पोंछि यशोदा कहति सबै युवती हैं लँगरी॥८१॥ राग सारंग ॥ नित नित सब आवतिउठि भोर। मेरे बारेहि दोष लगावत ग्वालिनयौवनजोर॥ दूधदहीमाखनकेकारण कब गयो तेरी ओर। धनमाती इतराती डोलति सकुचतिनाहिंकरै अतिशोर॥ मेरोकन्हैयाकहां

तनकसो तू है कुचनकठोर।तेरे मनको इहाँ कौन है पायो आजु कटकको छोर॥कापर नयन चलावति आवति जाति नहीं ब्रज तिनका तोर। सुनहु सूर ग्वालिनिकीबातैं बसत कान्हजीवन धन मोर॥८२॥राग नट॥मेरोमाई कौनको दधि चोरै।मेरेबहुत दईको दीनो लोगपियतहैंऔरै॥ कहा भयो तेरे भवनगये जो पियो तनकुलैभोरै।ता ऊपर काहे गरजतिहौ मनो आईचढिघोरै॥ माखन खाइमह्यो सबडारयो बहुरो भाजनफोरै।सूरदास ये रसिक ग्वालिनी नेह नवलसँगजोरै ॥८३॥राग रामकली॥ अपनो गाउँ लेहु नँदरानी। बडे बापकी बेटी ताते पूतहि भले पढावति बानी॥सखा भीर लै पैठत घरमें आपु खाइ तौ सहिये। मैं जब चली सामुहे पकरन तबके गुण कह कहिये॥ भाजि गये दुरि देखत कतहूँ मैं घर पौढी आई। हेर हेर बेनी गहि पाछे बांधीपाटी लाई॥ सुनु मैया याके गुण मोसों इन मोहिं लियो बुलाई। दधिमें परी सेतिकी चींटीमोपैसबै कढाई॥ टहल करत याके घरकी मैं इह पति सँग मिलि सोई। सूर वचन सुनि हँसी यशोदा ग्वालि रही मुख गोई॥८४॥राग सारंग॥महरि तुम ब्रज चाहति कछु और॥बात एक मैं कहींकि नाहीं आपु लगावति झौर। जहां बसे पति नहीं आपनी तजन कह्यो सो ठौर॥सुतके भएवधाई पाई लोगन देखति हौर। कान्ह पठाइदेति घर लूटन कहत करौ या गौर॥ ब्रज घर समुझि लेहु महरि जू हहा करति कर जोरि। सूर सुनत ग्वालिनिकी बातै रहियशुमतिमुख मोरि॥८५॥लोगन कहति झुकति तू बौरी। दधि माखन गांठी दै राखत करति फिरत सुत चोरी॥जाके घरकी हानि होत नित सो नहिं आन कहैरी। जाति पांतिके लोगन देखत औरबसैहै नेरी॥ घर घर कान्ह खान को डोलत अतिहि कृपण तू हैरी।सूरश्यामको जब जोइ भावै सोइ तबहीं तू दैरी॥८६॥राग मलार॥महरि तैं बडी कृपणहै माई। दूध दही विधिको है दीनो सुत डर धरति छिपाई॥ बालक बहुत नाहिं री तेरे एकै कुँवर कन्हाई।सोऊ तो घरही घर डोलत माखन खात चुराई॥वृद्ध बैस पूरे पुण्यनिते तैं बहुतै निधि पाई।ताहूको खैबे पियबेको कहाकरतिचतु-राई॥ सुनहु न वचन चतुर नागरिके यशुमति नंद सुनाई। सूरश्यामको चोरीकेमिसदेखनकोरी आई॥८७॥राग नट॥ अनत सुत गोरसको कत जात। घर सुरभी नव लाख दुधारी और गनी नहिं जात॥ नितप्रति सबै उरहनेके मिस आवति हैं उठि प्रात। अनसमुझे अपराध लगावति विकट बनावति बात॥ अतिहि निशंक विवादति सन्मुख सुनि मोहिं नंद रिसात। मोसोंकृपण कहत तेरे गृहढोटाऊ न अघात॥ करिमनुहारि उठाय गोदलै सुतको बरजति मात। सूर श्याम नितसुनत उरहनो दुख पावत तेरो तात॥८८॥राग विलावल॥ भाजिगये मेरे भाजन फोरी।लरिका सहस एकसँग लीने नाचतफिरत सांकरी खोरी॥माखन खाइ जगाइ बालकन्हबनचरसहितबछ-रुवा छोरी। सकुच न करत फागुसी खेलत गारी देत हँसत मुख मोरी॥ बात कहौं तेरे ढोटाकी सब ब्रज बांध्यो प्रेमकी डोरी।टोनासी पढि नावत शिर पर जो भावत सो लेत अजोरी॥आपु खाइ तौ सब हम मानैं औरन देत सिकहरो तोरी। सूर सुतहि देखो नँदरानी अब तोरतचोली-बंद जोरी॥८९॥राग नट॥श्याम सब भाजन फोरिपराने। हांक देत पैठतहैं पैला नेकु न मनहिं डराने॥ सींके तोरि मारि लरिकनको माखन दधि सब खाई। भवन मच्यो दधिकाँदो लरिकन रोवत पाये जाई॥ सुनहु २ सबहिनके लरिका तेरोसो कहुँ नाहीं।हाटन बाटन गलिनिकहूंकोउ चलत नहीं डरुपाहीं॥ ऋतु आयेको खेलकन्हैयासबदिनखेलतफाग। रोकि रहत गहि गलीसा-करी टेढी बांधत पाग॥ ॥वारतसुत ये ढँग लाये मनही मनहिं सिहात।सुनहु सूरग्वालिनिकीबातैं

सकुचि महरि पछितात ॥ ९० ॥ राग सारंग॥कन्हैया तू नहिंमोहिंडेरात। षटरस धरेछांडि कतपर घर चोरी करि करि खात ॥ बकति बकति तोसोंपचिहारी नेकहु लाज न आई।ब्रजपरगन सरदार महर तू ताकी करत नन्हाई॥पूत सपूत भयो कुल मेरो अब मैं जानी बात।सूरश्याम अबलौं तोहिं बकस्यो तेरी जानी घात ॥ ९१ ॥ राग गौरी॥सुनरी ग्वारी कहौं एक बात। मेरी सौं तुम याहि मारियो जबहीं पावो घात॥अब मैं याहि जकरि बांधौंगी बहुतैमोहिंखिझाई।साटिन्हमारि करौं पहुनाई चितवत वदन कन्हाई॥ अजहूं मातु कह्यो सुनु मेरो घर घर तू जनि जाहि। सूर श्याम कह्यो कबहुँ न जैहौं माता मुखतनुचाहि॥ ९२॥ राग बिलावल॥तेरे लाल मेरो माखनखायो। दुपहर दिवस जानि घर सूनी ढूँढि ढँढोरि आपही आयो ॥खोल किवार सून मंदिरमें दूधदही सब सखनखवायो। सीकेकाढिखाट चढि मोहन कछुखायोकछुलैढरकायो ॥ दिनप्रतिहानिहोत गोरसकी यह ढोटा कौने ढँग लायो। सूरदास कहती ब्रजनारी पूत अनोखो जायो॥ ९३ ॥ राग रामकली ॥माखन खातपराये घरको।नितप्रतिसहसमथानी मथिये मेघशब्ददधि माठघमरको॥ कितने अहिर जियतहैं मेरेगृह दधि लै बेंचत मही महरको। नव लख धेनु दुहत हैं नित प्रति बडो भाग्यहै नंद महरको॥ताके पूत कहावत हौ जी चोरी करत उघारत फरको।सूरश्याम कितनी तुम खैहौ दधि माखन मेरे जहँ तहँ ढरको ॥ ९४ ॥ मैया मैं नाहीं दधि खायो । ख्याल परे ये सखा सबै मिलि मेरे मुख लपटायो॥ देखि तुही सीकेपर भाजन ऊंचेघर लटकायो।तुही निरखि नान्हे कर अपने मैं कैसे करि पायो ॥ मुख दधि पोंछि कहत नँदनंदन दोना पीठ दुरायो।डारि साट मुसुकाइ तबहिंगहि सुतको कंठ लगायो॥बालविनोद मोद मन मोह्यो भक्तप्रताप दिखायो। सूरदास प्रभु यशुमतिके सुख शिव विरंचि बौरायो ॥ ९५ ॥ यशुमति तेरो बारो नान्हो अतिहि अचगरो ।दूध दही माखन लै डारिदेत सगरो॥भोरहि उठि नितप्रति मोसों करतहैझगरो। ग्वालबाल संग सबलिये घेरि रहैं बगरो॥हम तुमहैंसब बैस एकके को काते अगरो।लियो दियो सोई कछु डारिदेहु झगरो ॥ सूरश्याम तेरो गुननिमें अति नगरो। चोली अरु हार तोरि कियो झगरो॥ ९६ ॥देखो माई या बालककी बात। वन उपवन सरिता सब मोहे देखत श्यामल गात॥ मारग चलत अनीत करत हरि हठिकै माखन खात। पीतांबर वे शिरते ओढत अंचलदे मुसुकात॥ तेरी सौंकहा कहौं यशोदा उरहन देत लजात।जबहरिआवततेरे आगे सकुचितनकहैजात॥कौनर गुण कहौं श्यामके नेक न काहु डरात।सूर श्याम मुख निरखि यशोदा कहति कहा इह बात ॥ ॥ ९७॥राग नट ॥नंदघरनि सुतभलोपढायो।ब्रजकीबीथिनि पुरनि घरनि घर बाट बाट सब शोर मचायो ॥लरिकन मारि भजत काहूके काहूको दधि दूध लुटायो।काहूके घरकरत बडाईमैंज्यों त्यों करि पकरन पायो॥अबतौइन्हें जकरि बांधौंगी इहिं सब तुम्हरो गाउँ भँडायो। सूर श्याम भुज गहि नँदरानी बहुरि कान्ह अपनेढिग आयो ॥ ९८॥ राग बिलावल॥सुनिसुनिरीतूमहरियशोदा तैं सुत बडो लडायो । काके नहीं अनोखेढोंटाकेहि न कठिनकरि जायो॥मैंहू अपने औसरपे- ते बहुत दिननमें पायो ।यहि ढोंटा लै ग्वाल भवनमें कछु बगरयो कछु खायो॥ तैं तो ग्वालि पकरि भुज याकी वदनदही लपटायो। सूरदास ग्वालिनि अति झूठी वरबस कान्ह बँधायो॥ ॥ ९९॥ अथ नवमअध्याय हरि दाँवरि बँधाए॥राग गौरी॥ ऐसी रिसमें जो धरि पाऊं । कैसे हाल करौं धरि हरिके तुमको प्रगट देखाऊं॥सटिया लिये हाथ नँदरानी थरथरात रिस गात।मारे विना आजु जो छाँडों लागै मेरे तात॥यहि अंतर ग्वालिनि इक औरै धरे बाँह हरि ल्यावति।

भली महरि सूधो सुत जायोचोली हार बतावति॥रिसमें रिस अतिही उपजाई जानि जननि अभि-लाष। सूरश्यामभुज गहे यशोदा अबबांधौंकहिमाख॥३००॥ राग सोरठ॥ यशुमतिरिसकरिकरि रजु करषै। सुत हित क्रोध देखि माताके मनही मन हरि हरषै॥उफनत क्षीर जननिकरि व्याकुल इहि बिधि भुजा छुडायो। भाजन फोरि दही सब डारचो माखन मुँह लपटायो॥लै आई जेवरि अब बाँधौ गरबजानि न बँधायो। आंगुर द्वैघटिहोतसबनिसों पुनिपुनि और मँगायो॥नारद शाप भये यमलार्ज्जुन इनको अब जो उधारौं॥सूरदास प्रभु कहत भक्तहित युगयगयु मैं तनुधारौं॥३०१॥ राग बिलावल॥यशोदा हरि गहिगजतकरषै॥गावत गोविंदचरित मनोहरप्रेमपुलकिचितवरषै॥उफनत क्षीर शरीर तन व्याकुल तबही भुजा छुडायो॥भाजन फोरिदही सब डारेव लवनी मुख लपटायो॥ लैकर दांवरि यशोदा दौरी बाँधन कृष्ण न पायो। द्वै द्वै अंगुर घटै जेवरी ताते अधबुधआयो॥ नारदशाप भए यमलार्ज्जुन तिन हित आपु बँधायो। सूरदास बलिजाइ यशोदा साँचे देवल आयो॥३०२॥रागधनाश्री॥देख सखी यशुमति बौरानी॥घरघरडोलति लेत दामरीबांह गहेहरिकी वितितानी॥ जानति नहीं जगतपति माधव जिनते सब आपदा नशानी॥जाके नाम सकतिपुनि ताकी ताहि देखि बांधत नंदरानी॥अखिलब्रह्मांड उदरमें जाके जिनकी ज्योति जलथलहुसमानी॥ मुख जम्हात त्रिभुवन देखरायो अचरज कथा न जात बखानी॥ ब्रह्मादिक सनकादि शुकादिक भ्रमत रहत इनहू नहिं जानी। सूरदास मोहिं ऐसी लागत जो कछु कही गर्गमुनिबानी॥३०३॥ राग रामकली॥यशोदा येतो कहा रिसानी॥कहा भयो जो अपने सुतपै महि ढरिपरीमथानी॥रोस रोस सँभरे दृग तेरे कीरति पय लए पानी। मनहु शरदके कमलकोशपर मधुकर मीन सकानी॥ श्रम जलकण किंचित निरखि वदनपर यह छबि कहत न मानी। मनौं चंद्र नव उमँगि सुधा भुव ऊपर बरषा ठानी॥गृह गृह गोकुल दई दाँवरी बाँधति भुज नँदरानी॥आपु बँधावत भक्तन छोरत वदन विदित श्रमपानी॥गुण लघु चरचि करति श्रम जितनो निरखि वदन मुसुकानी। शिथिल अंग सब देखि सूर प्रभु शोभासिंधु तिरानी॥४॥राग सारंग॥बाँधौं आजुकौनतोहिछोरै॥ बहुत लँगरई कीनी मोसों भुजगहिरजु ऊखलसोंजोरै॥जननी अतिरिस जानिबँधायोचितवदन लोचन जल ढोरे। यह सुनि व्रजयुवती उठि धाई कहत कान्ह अब क्यों नहिं चोरै॥ ऊखलसों गहि बाँधि यशोदा मारनको साँटी कर तोरै॥साँटी लखि ग्वालिनि पछितानी विकल भई जहँतहँ मुख मोरै॥सुनहु महरि ऐसी न बूझिये सुत बाँधत माखनदधि थोरै॥सूर श्यामको बहुत सतायो चूक परी हमते यह भोरै॥५॥ राग आसावरी॥जाहु चली अपने अपनेघर॥तुमही सब मिलि ढीठ करायो अब आई बंधन छोरनवर॥मोहिं अपने बाबाकी सौंहैं कान्हैअब न पत्याऊं॥भवनजाहु अपने अपने सब लागतिहौं मैं पाऊं॥मोको जिनि बरजो युवती कोउ देखौं हरिके ख्याल। सूर श्यामसों कहति यशोदा बडे नंदके लाल॥६॥राग सोरठ॥यशोदा तेरोमुख हरि जोवै॥कमल-नयन हरि हिचिकिनि रोवै बंधन छोरि जु सोवै॥ जो तेरो सुत खरोई अचगरो तऊ कोखिको जायो॥कहाभयो जो घरको ढोंटाचोरीमाखनखायो॥ कोरीमटकीदही जमायो जामन पूजन पायो॥तेहि घर देव पितर काहेको जाघर कान्ह रुवायो॥ जाकर नाम लेत भ्रम छूटै कर्म-फंद सब काटै॥सो हरि प्रेमजेवरी बाँध्यो जननि साँट लै डाटै॥दुखित जानि दोउसुत कुवेरके ता हित आपुबँधायो॥सूरदास प्रभु भक्तहेतुही देहधारि तहाँआयो॥७॥राग बिहागरो॥देखोमाई कान्ह हिचकियन रोवै॥ननक मुखहि माखन लपटान्यो डरनित अँसुअन धोवै॥माखन लागि उलूखल

बाँध्यो सकल लोग ब्रज जोवै। निरखि कुरुपि उन बालकनिकी दिशि लाजन अँखियन धोवै॥ ग्वाल कहैं धनि जननि हमारी सुकरसुरभि नित नोवै।बरबसही बैठारि गोदमें धारै वदन निचोवै॥ ग्वालिनि कहैं या गोरस कारण कत सुतकी पति खोवै।आनि देहिं हम अपने घरते चाहति जित-कु यशोवै॥जब जब बंधन छोरयो चाहत सूर कहै यह कोवै।मन माधोतनु चित गोरसमें इहि विधिमहरि बिलोवै॥८॥राग सारंग॥माई नेकहुँनहिं दरद करति हिलकिनि हरि रोवै।बज्रहुते कठिन हियो तेरोहै यशोवै॥ पलना पौढाइ जिनहिं विकट बाउ काटै। उलटे भुज बांधि तिनहिं लकुट लिये डाँटै॥ नेकहू न थकित पानि निर्दयी अहीरी।अहो नंदरानी सीख कौनपै लहीरी॥जाको शिव सनकादिक सदा रहत लोभा। सूरदास प्रभुको मुख निरखि देखि शोभा॥९॥ राग बिहागरो॥ कुँवर जल लोचन भरिभरि लेत। बालक वदन विलोकि यशोदा कत रिस करत अचेत॥ छोरि कमरते दुसह दांवरी डारि कठिनकर बेत। कहि तोको कैसे आवतुहै शिशुपर तामस एत॥ मुख आँसू माखनके कनिका निरखि नैन सुख देत। मनु शशि स्रवत सुधानिधि मोती उडुगणअव-लि समेत॥सरबसु तौ न्यवछावरि कीजै सूर श्यामके हेत।नाजानों केहि हेतु प्रगट भये इहि ब्रज नंदनिकेत॥३१०॥ राग केदारो॥हरिके वदन तनधौंचाहि।तनक दधिकारण यशोदा एतो कहा रिसा-हि॥ लकुटके डर डरत जैसे सजल शोभित डोल। नील नीरज दृग लसैं मनो ओसकन कृत लोल॥ वातवश सु मृणाल जैसे प्रात पंकज कोष। नमित मुखपर अधर सूचित सकुचमें कछु रोष॥ कतिक गोरस हानि जाको करतिहौ अपमान। सूर ऐसे वदन ऊपर वारिये धन प्रान॥ ११॥ राग केदारो॥ सुखछबि देखि हो नंदघरनि। शरद निशिके अंशु अगणित इंदुआभा हरनि॥ ललित श्रीगोपाललोचनलोल आँसू ढरनि। मनहुँ वारिज विलखि विभ्रम परे परवश परनि॥ कनकमणिमय मकर कुंडल ज्योति जगमग करनि। मित्र लोचन मनहु आए तरलगति दोउ तरनि॥कुटिल कुंतल मधुप मिलि मनौ कियो चाहत लरनि। वदन-कांति अनूपशोभा सकै सूर न वरनि॥१२॥राग केदारो॥हरिमुख देखि हो नंदनारि।महरि ऐसे सुभग सुतसों इतो कोह निवारि॥ जलज मंजुल लोल लोचन शरद चितवनि दीन। मनहुँ खेलतहैं परस्पर मकरध्वज द्वै मीन॥ ललित कण संयुत कपोलनि ललित कज्जल अंक। मनहुँ राजत रजनि पूरणकला अति अकलंक॥ बेगि बंधन छोरि तन मन वारि लै हिय लाइ। नवल श्याम किशोरऊपर सूरजन बलिजाइ॥ १३ ॥राग बिहागरो॥ कहौ तौ माखन ल्याऊं घरते।जा कारण तू छोरति नाहिंन लकुट न डारति करते॥ महरि सुनहु ऐसी न बूझिये सकुचि गयो मुख डरते। मनहुँ कमल दधिसुतसम पोतकि फूलत नाहिंन सरते॥ ऊखल लाइ भुजा धरि बाँधे मोहन मूरति वरते। सूर श्याम लोचन जल वरषत जनु मुक्ता हिमकरते॥१४॥राग कल्याण॥ कहनलगी अब बढिबढि बात। ढोटा मेरो तुमहिं बँधायोतनकहिमाखनखात॥अबमोहिंमाखन देतिमँगाए मेरे घर कछु नाहीं। उरहनकरिकरि साँझ सवारे तुमहिं बँधायो याहीं॥रिसहीमेंमोको गहिदीनो अब लागी पछितान।सूरदास हँसि कहत यशोदा बूझौ सबको ज्ञान॥१५॥राग धनाश्री॥कहाभयो जो घरकेलरिका चोरी माखन खायो।अहो यशोदा कत त्रासतिहौइहै कोखको जायो॥ बालक जौन अजान न जानै केतिक दह्यो लुटायो।तेरो सखी कहा खायो गोरस गोकुल अंत न पायो॥ हाहा लकुट त्रास देखरावत आपन पाश बँधायो। रुदन करत दोउ नयन रचेहैं मनहु कमल तन छायो॥ पौढिरहे धरणीपर तिरछे बिलखि वदन कर जाहु। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि

हँसिकै कंठ लगाहु ॥ १६ ॥ सु चित दै चितै तनै तन ओर । सकुचत शीत भीत ज्यों जलरुह तुव कर लकुट निरखि सखि घोर ॥ आनन ललित श्रवण जल शोभित अरुण चपल लोचनकी कोर । डारत मनौं गंडूक सुधा भरि विधुमंडल ज्यों उभय चकोर ॥ सुभग मृणाल युगलभुजऊपर बांधे ऊखल दाम कठोर। मनु भुवंग भीतर बांबीपर उरझिरही केचुरि गरजोर॥लघु अपराध देखि बहुशोचति निर्दय हृदय वज्रसम तोर।सूर कहा सुतपर इतनी रिस कहि इतनै कछु माखन चोर॥१७॥राग बिलावल॥यशुदादेखि सुतकी ओर।बाल वैस रिसालपर रिस इती कहाके पोर ॥ बार बार निहारि तव तन निमिष दधिमुख चोर।तरनि किरनिके परशि मानौ कुमुदि विधुमति भोर॥त्रासते अति चपल गोलक सजल शोभित छोर।मीन मानो वेधि वंशी करत जल झकझोर ॥ नंदनंदन जगतबंदन करत आंसू कोर ।सूरदास सु महरि मुख हित निरखि नंदकिशोर ॥ १८॥राग धनाश्री॥चितै धौं कमलनयनकी ओर।कोटि चंद वारों या मुख छबि येहैं शाह के चोर॥उज्ज्वल अरुण असित देखतिहै दुहूं नैनकी कोर।मानौ सुधापानके कारण बैठे निकट चकोर॥ कतहि रिसात यशोदा इन्हसों कौन ज्ञान है तोर। सूर श्याम बालक मनमोहन नाहिन तरुण किशोर॥१९॥राग सारंग॥कबके बाँधे ऊखल दाम। कमलनयन बाहिर करि राखे तू बैठी सुखधाम॥हौ निर्दयी दया कछु नाहीं लागि गई गृहकाम।देखि क्षुधाते मुख कुँभिलानो अतिकोमल तनु श्याम ॥ छोरहु वेगि बडी बिरियां भई बीतगये युग याम। तेरे त्रास निकट नहिं आवत बोलि सकत नहिं राम॥जेहि कारण भुज आप बँधाये बचन कियो ऋषि ताम।ता दिनते यह प्रगट सूर प्रभुदामोदरसो नाम॥२०॥राग गौरी॥वारौं हों वे कर जिन हरिको वदन छुवोरी।वारौं वह रसना जिन बोल्यो तुकारी॥ऐसी निर्मोही भई यशुदा नतोसी निरमोही देख्यो गोपाललाल आयो क्योंनहाथपसारी॥कुलिशते कठिनवाहि चितैरीछतियांअजहूं द्रवति ज्यों देखतउरमुरारी॥ कितिक गोरस हानि जाको तू तोरति कानि डारयो तुहिं सूर श्यामके रोमरोमपर वारी॥ २१ ॥ राग सोरठ ॥यशोदा तेरो भलो हियो है माई ।कमलनयन माखनके कारण बाँधे ऊखल लाई॥जो संपदादेवमुनि दुर्लभसपनेहु देइ न देखाई । याहीते तू गर्वभुलानी घरबैठ निधिपाई॥सुत काहूको रोवत देखति दौरि लेत हिय लाई।अब अपने घरके लरिकासों इती कहा जडताई ॥ बारंबार सजल लोचन भरि चितवत कुँवर कन्हाई।कहा करों बलि जाउँ छोरती तेरी सौंहदिवाई॥जोमूरति जल थलमों व्यापक निगम न खोजत पाई। सो मूरति तू अपनेआँगन चुटकी दैदै नचाई॥सुरपालक सब असुरसँहारक त्रिभुवन जाहि डराई। सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नित गाई॥२२॥ राग केदारो॥देखरी नँदनंदन ओर।त्रासते तनु त्रसितभोर हरि तकत आननतोर॥बारबार डराततोको वरन वदनहि थोर । मुकुर मुख दोउ नैन ढारत क्षणहि क्षण छबि छोर ॥ सजल चपल कनीन पलकें अरुणऐसेडोर।सरस अंबुज भँवर भीतर भ्रमतहै जनु भोर॥लकुटके डरदेखि जैसेभयेशोणितचोर । उर लगाइ बहाइ रिस जिय तजहु प्रकृति कठोर ॥ कछुक करुणा करि यशोदा करति निपट निहोर। सूरश्याम बिलोकि यशुमति कहति माखनचोर॥२३॥राग धनाश्री॥तबतेबाँधेऊखल आ न । बालमुकुंदके कत तरसावति अति अँग कोमल जानि॥प्रातकालते बाँधे मोहन तरनि चढे मध्यानि।कुम्हिलानो मुखइंदुदिखावतिदेखौ धौं नँदरानि॥तेरेत्रासतेकोऊन छोरतअबछोरहु तुम आनि । कमलनैन बाँधई छोड तू बैठी मन मानि॥ यशुमतिके मन सुखके कारण आपु बँधावत पानि । यमलार्जुनकी मुक्ति करनको सूर श्याम इह ठानि॥ २४ ॥राग नट॥ कान्हसों

आवत क्यों बिरसात। लैलै लकुट कठिन अपने कर परशति कोमल गात॥देखि जु आंसू गिरत नैनते शोभित है ढरिजात। मुक्ता मनौ चुगत खग खंजन चोंचिपुटी नसमात॥उरनिडोल डोलतहैं इहि बिधि निरखि सुभुव सुनि बात। मानहुँ सूर सकेत शरासन उडिबेको अकुलात॥२५॥ राग रामकली ॥यशोदा यह न बूझिको काम।कमलनयनकी भुजादेखि धौं तैं बांधेहैदाम॥पूतहुते प्रीतम नहिं कोऊ कुलदीपक मणि धाम। हरिपर वारि डारु सब तन मन धन गोरस अरु ग्राम॥ दिखियत कमलवदन कुँभिलानो तू निर्मोही बाम। तू बैठी मंदिर सुखछाहैं सुतदुखपावत घाम॥ अति सुकुमार मनोहर मूरति ताहि करत तुम ताम। एई हैं सब ब्रजके जीवन सुख पावत लिए नाम॥ इह सुनि ग्वालि जगतके बोहित पतितपावन नाम। सूरदास प्रभु भक्तके वश हैं जगतविश्राम॥२६॥ राग धनाश्री ॥ ऐसी रिस तोकों नँदरानी। भली बुद्धि तेरेजियउपजी बडीबैसअब भई सयानी॥ढोंटा एक भए कैसेहुँ करि कौनकौन करवर बिधि भानी।कर्म कर्म करि अबलौं उबरचो ताको मारि पितर दै पानी॥को निर्दयी रहै तेरे घर को तेरे सँगबैठआनी।सुनहुसूरकहि कहि पचिहारी युवती चलीं घरहि बिरुझानी॥२७॥ राग सारंग॥ हलधरसोंकहिग्वालिसुनायो। प्रातहिते तुमरो लघुभैया यशुमति ऊखल बाँधिलगायो॥काहूकेलरिकिहिहरिमारचोभोरहिआनि तिनहिं गोहरायो।तबहींते बांधे हरि बैठे सो हम तुमकोआनिजनायो॥हमबरजीबरजोनहिं मानत सुनतहि बल आतुर ह्वै धायो।सूरश्याम बाँधे ऊखल गहि माताडरतनअतिहित्रसायो॥२८॥ राग सारंग यह सुनिकै हलधर तहँधाए।देखिश्यामऊखलसोंबांधेतबहींदोउलोचनभरिआए॥मैंबरज्योंके बार कन्हैया भली करी दोउहाथ बँधाए।अजहूँछोडोगे लँगाराईदोउकरजोरि जननिपैआए॥श्यामहि छोरि मोहिं बरु बांधैनिकसत सगुन भले नहिं पाए।मेरे प्राण जीवनधन कान्हातिनको भुज मोहिं बँधे देखाए॥मातासों कह करौं ढिठाई शेषरूप कहि नाम सुनाए। सूरदास तब कहत यशोदा दोउ भैया तुम इकमत भाए॥२९॥ राग सारंग॥ एतौ कियो कहा रिस मैया।कौन काज धन दूध दही यह क्षोभ करायो कन्हैया॥आये सिखावन सबै पराये स्यानी ग्वालि बौरैया।दिनदिनदेन उरहनो आवैं ढुंकि ढुंकि करत लरैया॥सूरदास सुंदरहि लगाने वह बलभद्र औ भैया॥३०॥ राग केदारो॥काहेको कलहु नाध्यो दारुण दाँवरि बाँध्यो कठिनलकुट लै त्रास्यो मेरो भैया।नाहीं कसकत मन निरखि कोमल तन तनक दधिकाज भली री तू मैया॥ हौं तौ न भयो घर देखतो तेरीयो अरि फोरतो बासन सब जानत बलैया। सूरदास सहित हरिलोचन आयेऐंभरिबलहूको बलजाको सोईही गन्हैया॥३१॥ राग बिलावल॥काहेको यशोदामैया त्रास्योहैवागे कन्हैया मोहन मेरो भैया कितनो दधि पियतौ। हौंतो न भयो घर साँटी दीनी सरसर बांध्यो कर जेवरी नीके कैसे देखि जियतौ॥ गोपालतौ सबनि प्यारो ताकों तैंकीनो प्रहारो जाकोहैमोकोगागेअजुगुत कियतौ। ठाढो बांधे बलवीर नैनोंसे ढरतु नीर हरिजूते प्यारो तोको दूध दही पियतौ॥सूरदास गिरिधरन धरनीधर हलधरयहछबिसदाईरहौमेरेजियतौ॥३२॥ रागसोरठ॥यशोदातोहिंबाँध क्यों आयो। कसको नाहिं नेकु तनु तेरो यह कहि काहि खिझायो॥शिव बिरंचि महिमा नहिं जानत सो गाइन सँगधायो।ताते तू पहिचानति नाहीं कौन पुण्यते पायो॥इतनी कहत रसिकमणितबहीं रोपसहितबल धायो। जननी छांडि और जो होती करत आपनो भायो॥ कहा भयो जो घरके लरिकाचोरी माखन खायो। अपने कर सब बंधन खोले प्रेम सहित उर लायो॥सरस वचन मनोहर कहि कहि अनुज शूल बिसरायो। सूरदासप्रभु भक्तनकेहितनिजकरआपबँधायो॥३३॥

राग सोरठ ॥ काहेको हरि इतनौ त्रास्यो।सुनुरीमैयामेरोभैयाकितनोगोरसनाश्यो॥ जबरजुसों कर गाढो बाँधे छर छर मारी साटी। सूने घर बाबानँद नाहींऐसो करि हरिहाटी॥ औरनकछुदेखै तन श्यामहि ताको करौं निपातु। तू जो करै बात सोइ साँची कहा करौं तोहि मातु॥ गाढे वदत बात सब हलधर माखन प्यारो तोही। ब्रज प्यारो जाको मोहिं गारो छोरति काहेन ओही॥ काको ब्रज माखन दधि केहिको बाँधे जकरि कन्हाई।सुनत सूर हलधरकीबातैं जननी सैन बताई॥ ३४॥ राग सारंग ॥सुनहु बात मेरी बलराम। करनदेहु इनकीमोहिं सेवा चोरी प्रगटत नाम॥ तुमहीं कहौ कमी काहेकी नव निधि मेरे धाम। मैं गरजति सुत जाहु कहूंजनि कहि हारी निशि याम॥ तुमहूँ मोहिं अपराध लगायो माखन प्यारो श्याम। सुनु मैया तुहि छाँडि कहौं किहि को राखै मेरो नाम॥ तेरी सौं उरहनो लैआवतिझूठहिब्रजकीवाम।सूरश्यामअतिही अकुलाने कबके बाँधे दाम॥ ३५॥ कहा करौं हरि बहुत खिझाई। सहिनसकीरिसहीरिसभरि गई बहुतै ढीठ कन्हाई॥ मेरो कह्यो नेकु नहिं मानत करत आपनी टेक। भोरहोत उरहनलै आवत ब्रजकी वधू अनेक॥ फिरत जहाँ तहँ द्वंद्व मचावत घर न रहत क्षण एक। सूर श्याम त्रिभुवनको करता यशुमति कहति जनेक॥ ३६॥ राग गौरी ॥निरखि श्याम हलधरमुसुकाने। को बांधे को छोरै इनको यह महिमा येई पै जाने॥उत्पति प्रलय करतहैं येई शेषसहसमुखसुयश बखानै। यमलार्ज्जुन तोरि उधारन कारन करन करत मनमाने॥ असुरसँहारन भक्तहितारन पावनपतित कहावत बाने। सूरदास प्रभु भावभक्तके अतिहित यशुमति हाथ विकाने॥ ३७॥ हरि चितये यमलार्ज्जुन तन। अबहीं आजु इन्हैं उद्धारौं येहैं मेरेई जन॥इनकेहेतुभुजनबँधवाईअबविलंबनहिं लाऊं। परशकरौं तनुतरुहि गिराऊं मुनिवरशाप मिटाऊं॥येसुकुमार बहुत दुख पायोसुतकुबेरके तारौं। सूरदास प्रभु कहत मनहि मन करबंधन निरवारौं॥३८॥राग रामकली॥यशोदा ऊखलबांधे श्याम। मनमोहन बाहिरही छोडे आपु गई गृह काम॥दह्यो मथति मुखते कछु बकरतिगारी देदे नाम। घर घर डोलत माखन चोरत षटरस मेरे धाम॥ ब्रजके लरिकन्ह मारि भजतुहै जाहु तुमहु बलराम।सूर श्याम ऊखलसों बांधे निरखति ब्रजकी बाम॥३९॥रागगूजरी॥ यशोदा कान्हरते दधि प्यारो। डारिदेहु कर मथन मथानी तरसत नंददुलारो॥ दूध दही माखन वारौं सब जाहि करति तू गारो। कुंभिलाने मुखचंद देखि छवि काहे न नैन निहारो॥ ब्रह्म सनकशिव ध्यान नपावत सो ब्रज गैयन चारो। सूर श्याम पर बलि बलि जैये जीवन प्राण हमारो॥ ३४०॥ राग धनाश्री॥ यशुमति केहि यह सीख दई। सुतहि बाँधि तू मथत मथानी ऐसी निठुर भई॥ हरे बोल युवतिनि को लीनो सुन सब तरुणी नई। लरिकहि त्रास दिखावत रहिये कत मुरझाय गई॥ मेरे प्राण जीवन धन माधव बांधे बेर भई। सूर श्याम कहुँ त्रास दिखावत तुम कहा कहत दई॥ ४१॥ राग धनाश्री॥ तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई। युवती गई घरनिसबअपनेगृहकारज जननी अटकाई॥ आपुन गये यमलार्ज्जुनके तरु परशत पातउठेझहराई।दियेगिरायधरणिदोउ तरु तब द्वै कुबेर सुत प्रगटे आई॥ दोउ कर जोरि करत दोउ अस्तुति चारि भुजा तिन्हैं प्रगट देखाई। सूर धन्य ब्रज जन्म लियो हरि धरणीकी आपदानशाई॥४२॥ राग बिलावल ॥धनिगोविंद धनि गोकुल आये। धनिधनि नंद धन्यनिशिवासरधनियशुमतिजिनश्रीधरजाये॥धनिधनिबाल केलि यमुना धनि धनि बन सुरभीवृंद चराये। धनि यहसमौ धन्यब्रजवासी धनिधनिवेणुमधुर ध्वनि गाये॥ धनि धनि अनख उरहनो धनि धनि धनि माखनधनिमोहनखाए।धन्यसूर ऊखल.

तरु गोविंद हमहिं हेत धनि भुजा बँधाए॥४३॥राग सोरठ॥धन्य धन्य ऋषि शाप हमारे। आदि अनादि निगम नहिं जानत ते हरि प्रगट देह ब्रज धारे॥धन्य नंद धनि मातु यशोदा धनि आँगन- में खेलनवारे।धन्य श्याम धनि दाम बँधाए धनि ऊखल धनि माखनप्यारे॥ दीनबंधु करुणानिधि हौ प्रभु राखिलेहु हम शरण तिहारे।सूर श्यामके चरण शीश धरि अस्तुति करि निजधाम सिधारे ॥४४॥राग बिलावल॥यह जिय जानि गोपाल बँधाये।शापदग्ध द्वै सुत कुबेरके आनिभये तरुयुगल सु- हाये॥व्याज रुदन लोचन जल ढारत ऊखल दाम सहित चलि आये।विटप भंजि यमलार्जुन तारे करि अस्तुति गोविंद रिझाये॥तुमविनु कौनदीन खलु तारेनिर्गुण सगुण रूप धरिआये। सूरदास श्याम गुण गावत हर्षवंत निजपुरी सिधाये॥४५॥ राग रामकली ॥तरु दोउ धरणि परे भहराई।जर सहित अरराइकै आघात शब्द सुनाइ॥भए चकृत लोग सब ब्रजके रहे सकुचि डराइ।कोउ रहे अकाश देखत कोउ रहे शिरनाइ॥घरिकलौं जकिरहे जहँ तहँ देहगति बिसराइ।निरखि यशुमति अजिर देखै बँधे नाहिं कन्हाइ॥वृक्ष दोउ महि परे देखे महरि कीन्ह पुकार।अबहिंआँगन छोडिआई चप्योतरुके डार॥मैं अभागिनि बांधि राखे नंदप्राणअधार।शोर सुनि नँद दौरिआये विकल गोपी ग्वार॥देखि तरु सब अति डराने हैं बडेविस्तार।गिरे कैसे बडो अचरज नेकु नहीं बयार॥दुहूँतरु- बिच श्याम बैठ रहे ऊखल लागि।भुजा छोरि उठाय लीने महर हैं बडभागि॥ निरखि युवती अंग हरिके चोट जनि कहुँ लागि।कबहुँ बाँधति कबहुँ मारति महरि बडी अभागि॥नयन जल भरि ढारि यशुमति सुतहि कंठ लगाइ।जरहु रिस जिन तुमहिं बांध्यो लगै मोहिं बलाइ।नंद मोहिं कहा कहैंगे देखि तरु दोउ आइ। मैं मरौं तुम कुशल रहौ दोऊ श्याम हलधर भाइ ॥ आइ घर जो नंद देखें तरु गिरे दोउ भारि। बांधि राखति सुतहि मेरे देत महरिहि गारि॥तात कहि तब श्याम दौरे महर लियो अँकवारि। कैसे उबरे कृष्ण तरुते सूरले बलिहारि ॥४६॥ राग नट ॥ मेरे मोहन हौं तुमपर वारी। कंठ लगाइ लिये मुख चूमत सुंदर श्याम बिहारी ॥ काहेको दाम उखलसों बांध्यो है कैसी महतारी। अतिहि उतंग बयारि न लागत क्यों टूटे दोऊ तरु भारी॥ बारंबार बिचारि यशोदा यह लीला अवतारी। सूरदासस्वामीकी महिमा कापर जात विचारी॥ ॥४७॥राग सारंग॥अब घर काहूके जिनि जाहु। तुम्हरे आजु कमी काहेकी कत तुम अनतहि खाहु ॥ बरे जेंवरी जिन तुम बांधे बरे हाथ भहराई। नंद मोहिं अतिही त्रासतहैं बांधे कुंवर कन्हाई॥ रोग जाउ अपने हलधरकी छोरतहै तब श्याम। सूरदास प्रभु खात फिरो जिनि माखन दधि तुव धाम॥ ४८॥ब्रजयुवती श्यामहिं उर लावति। बारम्वार निरखि कोमल तनु करजोरति बिधिको जु मनावति ॥ कैसे बचे अगम तरुके तर मुख चुंवति यह कहि पछितावति। उरहनो लै आवति जेहि कारण सो सुख फल पूरणकरि पावति॥ सुनहु महरि इनको तुम बांधति भुज गहि बंधनचिह्न दिखावति। सूरदास प्रभु अति रतिनागर गोपी हरषि हृदय लपटावति॥ ४९ ॥ अथ यमलार्जुनउद्धारन दूसरीलीला॥ राग बिलावल॥ ग्वालि उरहनो भोरहि ल्याई। यशुमति कहाँ गयो तेरो कन्हाई ॥ माखन मथि भरि धरी कमोरी। अवहीं मोहन लेगयो चोरी॥भलो कर्म तैं सुतहि पढ़ायो । बारेहीते मूँड चढायो ॥ यह सुनतहि यशुमति रिसमानी।कहां गयो कहि सारंग- पानी॥ खेलतते औचक हरि आये। जननी बांह पकरि बैठाये॥मुखदेखत यशुमति पहिचानों। माखन वदन कहाँ लपटानों। फिरिदेखे तौ ग्वालिनि पाछे। माता मुख चितवत नहिं आछे॥ चोरीके सब भाव बताये। मातासँटिया द्रैक लगाये॥ माखनखान जात परघरको। बांधतनोहिं

नेकु नहिं धरको ॥ बाँह गहे ढूंढति फिरै डोरी। बाँधौं तोहिं सकै को छोरी ॥ बाँधि पची डोरी नहिं पूरे। बार बार खीझत रिस झूरे ॥ घरघरते जेंवरि लै आई। मिसहीमिस देखनको धाई ॥चकित भई देखें ढिग ठाढी। मनोचितेरे लिखिलिखि काढी॥ यशुमति जोरिजोरि रजु बाँधै । आँगुर द्वै द्वै जेंवरिसाँधै ॥ जबजानी जननीअकुलानी।आपुबँधायो सारँगपानी॥भक्तहेत दाँवरी बँधाई । यमला अर्जुनकी सुधि आई ॥ माता हेतु जनहिं सुखकारी । जानि बँधायो श्रीबनवारी ॥ मुख जँभात त्रिभुवन दिखरायो । चकित कियो तुरतहिं बिसरायो ॥बाँधि श्याम बाहर लै आई । गोरस घरघर खात चुराई॥ ऊखलसों गहिबाँधिकन्हाई । नितहिउरहनो सह्यो न जाई॥ इक कहि जाति एक फिरिआवै । रैनि दिना तू मोहिं खिझावै ॥ माखनदधितेरे घर नाहीं। धाम भरो चोरी करिखाहीं ॥ नवलख धेनु दुहत घर मेरे।केते ग्वाल रहत घर घेरे॥मथत नंदघरसहस मथानी ।ताके सुतचोरीकी बानी॥मोसों कहति आनिजबनारी।बोलिजातुनहिं लाजन मारी॥नंदमहरकी करै नन्हाई।वृद्धबैससुत भयोकन्हाई॥ तुम्हरेगुणसब नीके जानै ।नितबरजौं कबहूं नहिं मानै॥कोउछोरैजनि ढीठ कन्हाई।बांधे भुजदोउऊखललाई॥भवनकाजकोगइनंदरानी। आंगन छांडे श्यामबिनानी॥उरहनदेनग्वालि जे आई।तिन्हैयशोदादियोबहराई॥चलींसबैमिलि सोचति मनमें । श्यामहिंगहि बांधेहै छनमें॥ हँसतबार इककही कि नाहीं।ऊखलसोंबांध्यो सुत बाहीं ॥ कहा कहैंवा छविको माई । बांबीपरअहिकरतलराई॥कान्हवदनअतिही कुँभिलान्यो। मानयों कमलहि हिम तरसान्यो॥डरते दीरघ नैन चपल अति।बदन सुधारस मीनकरति गति ॥ यह सुनि और युवति सब आई । यशुमतिबाँधे कहत कन्हाई॥भलीबुद्धि तेरेजियउपजी । ज्यों ज्योंदिनी भई त्योंनिपजी ॥ छोरहुश्यामकरहु मनलाहो । अतिनिर्दयी भईतूकाहो॥ देखोश्याम ओर नँदरानी । सकुचि रह्यो मुख सारंगपानी ॥ बाहिर बांधि सुतहि बैठारो । मथत दहीमाखन तोहिं प्यारो॥छांडि देहु वहि जाइ मथानी । सौंह दिवावति छोरहु आनी ॥ हांसी करन सबै तुम आई। अब छोरहुँ नहिं कुँवर कन्हाई ॥ तुमहीं मिलि रसवाद बढायो। उरहन देदै मूड पिरायो॥ सबहिन गोधन सौंह दिवाई। चितैरहे मुख कुँवर कन्हाई॥ कब तुमको मैं बोलिबुलाई । केहि कारण तुम धाई आई ॥इह सुनि बहुरि चलीं मुरझाई। कहा करौं बलिजाउँ कन्हाई॥ मूरखको कोइ कहा सिखावै ।याकी मति कछु कहत न आवै। नारि गईं फिरि भवन आतुरी । नंदघरनि अबभईचातुरी॥ ओछीबुद्धि यशोदा कीनी।याकीजाति अबैहम चीन्ही॥इहैकहतअपनेघरआईं। मानै नहीं कितो समुझाई ॥मथत यशोदा दही मथानी । तबहिं कान्ह ऐसी मति ठानी ॥ भक्त-वछल हरि अंतर्य्यामी । सुत कुबेरके ये दोउ नामी॥ यहि अवतार कह्यो इन तारण। इनको दुख अब करौं निवारण॥जो जेहि ढँग तिहि ढँग सब लायो। यमलार्जुन पै प्रभु तब आयो॥वृक्षबीच ऊखल लै अटक्यो। आगे निकसि नेक गहि झटक्यो॥ अरररात दोउ वृक्ष गिरे धर। अति आघात भयो व्रजऊपर॥ भए चकृत ब्रजके सब वासी । यहि अंतर दोउ कुँवर प्रकासी॥ शंख चक्र कर शारँगधारी । भक्तहेतु प्रगटे बनवारी ॥ देखि दरश मन हरष बढायो । तुमहिं बिना प्रभु कौन सहायो ॥ धनि व्रज कृष्ण जहां वपुधारी ।धनि यशुमति ब्रह्महि अवतारी॥धन्य नंद धनि धनि गोपाला । धन्यधन्य गोकुलकी बाला॥ धन्य गाइ धनिद्रुम वन चारन । धनि यमुना हरि करत विहारन ॥ धन्य उरहनो प्रातहि ल्याई । धनिमाखन चोरत यदुराई ॥ धन्यसुजन ऊखल गढि ल्याये । धन्य दाम भुज कृष्ण बँधाये ॥ गदगदकंठ वचन मुख भारी। शरण राखिलेहु गर्व-

प्रहारी ॥ बार बार चरणन परे धाई। कृपाकरी भक्तन सुखदाई॥साधु साधु कहि श्रीमुखवानी। बिदा भये इहि भाँति बखानी ॥ यमलार्जुन प्रभु तारि पठाये। नंदद्वार दोउवृक्ष गिराये॥निरखि यशोदा आंगन आई।दुहूं वृक्षबिच बचे कन्हाई ॥ दौरिपरे ब्रजके नर नारी । नंदद्वार कछु होत गोहारी ॥ देखे आइ वृक्ष दोउ डारे।ये गुण यशुमति आहिं तुम्हारे॥ तुरत छोरि ऊखलते ल्यायो। देखत जननि नैन भरिआयो ॥ बज्रदेह हरिकी है माई। जहां तहां बिधि होत सहाई ॥ प्रथम पूतना मारन आई।पयपीवत वह तहां नशाई ॥ तृणावर्त लैगयो उड़ाई। आपुहि गिर्यो शिलापर आई ॥ कागासुर आवत नहिं जान्यो। सुनी कहत ज्यों लेइ परान्यो॥शकटासुर पलना ढिग आयो। को जानै केहि ताहि गिरायो॥खेलतमें केशीको मार्‍यो। घींच मरोरि वहिधरनि पछार्‍यो ॥ ग्वालनके सँग गये गोचारन। तहां बकासुर लाग्यो मारन॥कौन कौन करिवर हरि टार्‍यो। यशुमति बांधि अजिर लै डार्‍यो॥बहुते उबर्‍यो आजु कन्हाई। ऊपर वृक्षगिरेभहराई॥ कहा कहौं कहत न बनिआवै। तुरत आय हरि कौन बचावै ॥ सबहिन पेलि करत मनभाई।पुण्य नंदके बच्यो कन्हाई ॥ मुख चूमति लै लै उर लाए।युवतिन करे आपु मनभाए॥ लै जननी सुत कंठ लगावति। चोरीकी बातें समुझावति ॥ मैं रिसही रिस करत लालसों।भुज बांधे मन हँसति ख्यालसों ॥ मेरे जो तुम करत अचगरी। उरहनकोठाढी रहैंसगरी।बारबारतन देखत माई। गिरत वृक्ष कहुँ चोट न आई ॥ कहत श्याम मैं अतिहि डेरान्यो। ऊखलतर मैं रह्यो छिपान्यो ॥ बात सुतहि बूझत नँदरानी। कान्ह कहै मुख उरकीबानी॥हरिके चरितकथा नहिं जानै। यशुमति अतिबालक करिमानै॥अखिलब्रह्मांड जीवके दाता। माखनको बाँधतिहै माता॥गुण अपार अविगति अविनाशी।सो प्रभु घरघर घोष विलासी॥ऊखलबँध्यो हेतु भक्तनके। येइ माता येइ पिता जगतके॥ यमलार्जुनको मोक्ष कराये।पुत्रहेतु यशुदागृह आये॥ऐसे हरि जनके सुखकारी।प्रगटे रूप चतुर्भुज धारी ॥ जो जेहि भावभजै प्रभुजैसे।प्रेमवश्य हरि मिलहीं तैसे ॥ सूरदास यह लीला गावै।कहत सुनत सबके मन भावै ॥ जो हरिचरित ध्यान उर राखै।आनंदसदा दुरित दुख नाखै॥ ३५० ॥राग मलार॥ निगमस्वरूपदेखि गोकुल हरि।जाको दूरिदरश देवनकोसो बाँध्यो यशुदा ऊखल धरि ॥ चुटकिन दै दै ग्वाल नचावत नाचत कान्ह बाल लीला धरि। जेहि डर भ्रमत पवन रवि शशि जल सो क्यों डरै लकुटियाके डरि ॥क्षीरसमुद्र शेन संतत जेहि माँगत दूध पतौखी दै भरि।सूरदास गुणकेगाहक हरि रसना गाइ गये अनेकतरि॥ ५१ ॥राग सोरठ॥ जाको ब्रह्मा अंत न पावै। तापै नंदकीनारि यशोदा घरकी टहल करावै ॥शेष सनकनारदगणेश मुनि जाको गुण नित गावै।निशिवासर खोजत पचिहारे मनसाध्यान न आवै॥धन्यधन्यगोकुल धनि वनिता निरखति श्याम बँधावै।सूरदास प्रभु प्रेमहिके वश संतन दरश दिखावै॥ ५२ ॥ राग बिलावल ॥गोविंदतेरोइस्वरूप निगम नेतिनेतिगावै।भक्तकेवश श्यामसुंदर देहधरेआवै॥ योगीजन ध्यान धरत सपनेहु नहिं पावै। नंद घरनि बांधिबांधि कपिज्यों नचावै॥गोपीजन प्रेमातुर तिनको सुख दीनो। अपने अपने रसविलास काहू नहिं चीनो ॥ श्रुति सम्मृति सब पुरान कहतमुनि बिचारी। सूरदास प्रेमकथा सबहीते न्यारी॥ ५३ ॥राग सारंग॥ भूखो भयो आजु मेरो बारो। भोरहि ग्वालिनि उरहन ल्याई उहि यह कियो पसारो ॥ पहिले रोहिणिसों कहि राख्यो तुरत करहु जेवनार। ग्वाल बाल सब बोलि लिये मिलि बैठे नंदकुमार ॥ भोजन बेगि ल्याउ कछु मैया भूख लगी मोहिं भारी।आजु सबारे कछु नहिं खायो सुनत हँसी

महतारी ॥ रोहिणि चितैरही यशुमति तन शिर धुनि धुनि पछितानी । परसहु बेगि बेर कत लावत भूखे सारँगपानी ॥ बहु व्यंजन बहु भांति रसोई षटरसके परकार।सूर श्याम हलधर दोउ भैया और सखा सब ग्वार ॥५४॥राग सारंग॥ नंदभवनमें कान्ह अरोगे।यशुदा ल्याई षटरस भोगे ॥ आसन दै चौकी आगे धरि।यमुना जल राख्यो झारी भरि ॥ कनकथारमें हाथ धुवाए। सत्रहसै तहँ भोजन आए ॥ लै लै धरति सबनके आगे। मातु परोसे जो हरि मांगे॥खीर खांड घृत लावज लाडू। ऐसे होइँ न अमृत खांडू॥और लेहु कछु सुत व्रजराजा। लुचुई लपसी घेवर खाजा ॥ पेठा पाक जलेबी पेरा। गोंद पाग तिनगरी गिंदोरा॥गोंझा इलाइचीपाग अमिरती। सीरो साजो लै व्रजपती॥ छोलि धरे खरबूजा केरा। शीतल वायु करत अति घेरा॥ खारिक दाख अरु गरी चिरारी। पिंड बदाम लेत बनवारी ॥ बेसन पुरी सुखपुरी लीजे। आछो दूध कमलमुख पीजे ॥ मैया मोहि और किन प्यावै। धौरीको पय मोकों भावै॥ बेला भरि हलधर-को दीनो। पीवत पय बल अस्तुति कीनो॥ग्वाल सखा सबहीं पै अँचयो। नीके औटि यशोदा रचयो ॥ दोना मेलि धरेहै खजुवा। हौस होइ तौ ल्याऊं पूवा॥मीठे अति कोमल हैं नीके।ताते तुरत चभोरे घीके॥फेनी सेव अँदरसे प्यारे। लै आऊं जेंवहु मेरे बारे ॥ हलधर कही ल्याउ री मैया। मोकों दे नहिं लेत कन्हैया॥यशुमति हरष भरी लै परसति।जेवतहैं अपनी रुचिसोंअति॥ कान्ह मांगि शीतल जल लीयो। भोजन बीच नीर लै पीयो॥भातु पसाइ रोहिणी लाई।घृतसुगंध सुन्दर दै ताई ॥ नीलावति चाँवर दिवि दुर्लभ। भात परोस्यो माता सुलभ ॥ मूँग मसूर उरद चना दारी। कनकवरण धार फटक पछारी ॥ रोटी बाटी पोरी झोरी। एक कोरी एक घीव चभोरी॥गायो घृत भरि धरी कचोरी। कछु खायो कछु फटो छोरी॥मीठे तेल चनाकी भाजी। एक मकूनी दे मोहि साजी॥मीठे चरपर उज्ज्वल कौरा। हौस होइ तौल्याऊं औरा॥मुगौरा पकौरा पनौए पतोग। एक कोरे भीजे गुर बोरा॥ पापर बरी फुलौरि मिथौरी। कूर बरी कचरी पीठौरी ॥ बहुत मिरिचि दे किय निमोना। बेसनके दश बीसक दोना ॥ बनकोरा पिंडिसा चीचींडी। खीप पिंडारू कोमल भींडी॥चौलाई लाल्हाअरु पोई। मध्य मेलि निबुआनि निचोई॥रुचितर जान लोनिका फांगी। कढी कृपालु दूसरे मांगी॥सरसों मेथी सोवा पालक। बथुवा रांधि लियो जु उतालक॥ हींग हर्दि मृच छौंके तेले। अदरख और आँवरे मेले॥ सालन सकल कपूर सुवासित।स्वाद लेन सुंदर हरि आसित॥आँब आदि दै सबै सँधाने।सब चाखे गोवर्धनराने॥कान्ह कहे हों मातु अघानो। अब मोको शीतल जल आनो ॥ अचवन ले तब धोये कर मुख। शेष न बरने भोजनको सुख ॥उज्ज्वल पान कपूर कस्तूरी। आरोगत मुखकी छवि रूरी॥चंदन अंग सखनके चरच्यो। यशुमतिको मुख कानहिं परच्यो॥ मांगि जूठ सूरजु लै लीनों। बांटि प्रसाद सबनको दीनों ॥ जन्मजन्म बाढ्यो जूठनिको। चेरो नंद महरके घरको ॥५५॥राग कान्हरो॥मोहिं कहतयुवतीसवचोर।खेलतरहौं कतहुंमें बाहिर चितैरहति सबमेरीओर॥ बोलिलेत भीतर घर अपने मुख चूमति भरिलेत अंकोर। माखन हेरि देति अपने कर कछु कहि विधिसों करति निहोर ॥जहां मोहिं देखति तहँ टेरति में नहिं जात दोहाई तोर।सूरश्याम हँसि कंठ लगायो वे तरुणी कहां बालक मोर॥५६॥ राग केदारो॥ यशुमति कहति कान्हसों मेरे अपने ही आंगन तुम खेलो।बोलि लेहु सब सखा संगके मेरो कह्यो कबहुं जनि पेलो॥ व्रजबनितासब चोर कहति तोहिं लाजन सकुचिजातु मन मेरो।आज मोहिं बलराम कहतहे झूठेहि नाम लेतहै

तेरो॥जब मोहिं रिस लागति तब त्रासति बांधति जैसे चेरो । सूर हँसति ग्वालिनि दै तारी चोर नाम कैसेहु सुत फेरो॥५७॥ अथ धेनु दुहन सीखन समै॥अध्याय एकादश ॥ राग बिलावल॥धेनुदुहतहरि देखत ग्वालिनि । आपुन बैठिगए तिनके सँग सिखवहु मोहिं कहत गोपालनि॥ कालिह तुम्हैं गोदोहन सिखवैं दुही सबै अब गाई । भोर दुहो जे नंद दोहाई उनसों कहत सुनाई॥बडोभयो अब दुहत रहौंगो अपनी धेनुनिवेरी॥सूरदास प्रभु कहत सोंह दै मुहिं लीजौ तुम टेरी॥५८॥ राग कान्हरो॥मैं दुहिहौं मोहिं दुहन सिखावहु॥ कैसे धार दूधकी बाजत सोइ सोइ विधि तुम मोहि बताहु॥कैसे दुहत दोहनी घुटुवन कैसेबछरा थनहिलगावहु॥ कैसेलै नोईपग बाँधत कैसे ले पग या अटकावहु॥ निकट भई अब साँझ कन्हैया गाइनपै कहुँ चोट लगावहु॥सूर श्यामसों कहत ग्वाल सब धेनु दुहन प्रातहि उठि आवहु॥५९॥राग सारंग॥महर महरिके मन इह आई॥गोकुल बहुतउपद्रवदिनप्रति बसिये वृंदावन अब जाई ॥ सब गोपनमिलि शकटासाजी सबहिनके मनमें इह भाई॥सूर यमुनतट डेरा देई पांच बरसके कुँअरकन्हाई ॥६०॥राग बिलावल॥जागहु होतुमनंदकुमार॥हौं बलिजाउँ मुखारबिंदकी गोसुत मेलो खरिक सँभार ॥ इतनो कहा सोये मन मोहन और बार तुम उठत सवार॥बारहि बार जगावति माता अंबुजनयन भयो भिनुसार ॥ दधि मथिकै माखन बहु दीनों सकलग्वाल ठाढे दरबार॥ उठिकै मोहन वदन देखावहु सूरदासके प्राणअधार॥६१॥राग बिलावल॥ जागहु हो ब्रजराज हरी । लै मुरली आँगन ह्वै देखौ दिनमणि उदित भयो द्वै घरी॥ गोसुत गृढ बँधन सबलागे गोदोहनकी जूनटरी । निठुरवचनकहिसुतहि जगावतिजननि यशोदा पासखरी॥ भोर भयो दधिमथन होतु सब ग्वाल सखाकी हांक परी॥ सूरदास प्रभु दरशनकारण नींदछुडाई चरण धरी॥६२॥राग बिलावल॥जागहु लाल ग्वाल सब टेरत॥कबहुँ पीतांबर डारि बदनपर कबहुँ उघारि जननि तन हेरत ॥ सोवतमें जागत मनमोहन बात सुनत सबकी अब टेरत । बारंबार जगावति माता लोचन खोलि पलकपुनि घेरत॥पुनि कहिउठीयशोदा मैया उठहु कान्ह रविकिरणि उजेरत॥सूरश्याम हँसि चितै मातमुख पट कर लै पुनि पुनि मुख फेरत॥ ६३ ॥ ॥राग सूहो बिलावल॥जननि जगावतिउठौकन्हाई॥प्रगटयो तरणि किरणिगणछाई॥आवहुचंद्रवदन देखराई । बारबार जननी बलिजाई॥सखा द्वार सब तुमहिं बुलावत । तुम कारण हम धाए आवत॥ सूर श्याम उठि दरशनदीनो॥माता देखिमुदितमन कीनो॥६४॥रागरामकली॥दाऊजूकहि श्याम पुकारयो। नीलाम्बर पट ऐंचि लियो हरि मनु बादरतें चंद उतारयो ॥ हँसत हँसत दोउ बाहर आये माता लै जल बदन पखारयो । दतवनि लै दुहुँ करी मुखारी नैननिको आलस जु बिसारयो ॥ माखन खाहु दुहन कर दीन्ह्यो तुरत मथ्यो मीठो अति भारयो । सूरदास प्रभु खातपरस्पर माताअंतर हेत बिचारयो॥६५॥ राग बिलावल ॥जागहुजागहु नंदकुमार॥रवि बहु चढे रैनि सब निघटी उघरे सकलकिवार॥ वारिवारिजलपियतियशोदा उठुमेरे प्राणअधार । घरघर गोपी दह्यो विलोवहिं कर कंकन झनकार॥सांझ दुहन तुम कह्यो गाइको तातें होत अबार॥सूरदास प्रभु उठे सुनतही लीला अगम अपार ॥६६॥तनक कनककी दोहनी दैदै री मैया । तात दुहन सीखन कह्यो मोहिं धौरी गैया॥अटपटे आसन बैठिकै गोथन कर लीनो । धार अनतही देखिकै ब्रजपति हँसिदीनो॥घर घरतें आई सबै देखन ब्रजनारी॥चितै चोरि चित हरिलियो हँसि गोपविहारी॥विप्र बोलि आसन दियो करि वेद उचारी॥ सूर श्याम सुरभी दुही संतन हितकारी॥६७॥अथ वत्सासुरवध ॥ राग नटनारायन॥ चले बछरुचरावनग्वाल॥वृंदावनसबछाडि-

कै लैगये जहँ घन ताल॥ परम सुंदरभूमिदेखत हँसत मनहिं बढाइ । आपुलागेतहांखेलन बच्छ दिये बगराइ॥जानिकै हलधर गये तहँ बालबछरा पास।रोहणीनंदनहिं देखत हरष भए हुलास॥ तालरस बलराम चाख्यो मन भयो आनंद। गोपसुतसब टेरिलीने सुधि भईनँदनंद ॥कह्योबछरा हांकि ल्यावहु चलहु जहां कन्हाइ । तालरसके पानते अतिमत्त भये बलराइ ॥ तहां छल करि दनुज धायो धरे बछरा भेषि। फिरत ढूंढत श्यामको अति प्रबल बलको देखि ॥ सबै बछरनि घेरिल्याए बहुनघेरचो जाइ। दाऊकहि बालकनि टेरचो वृषभसुत न धराइ॥कह्योमन इहि अब- हिंमारौं उठे बलहिसँभारि।टेरिलिये सबग्वालबालक गये आपु प्रचारि॥आगे ह्वैइतको विडारचो पूछ हाथ लगाइ।पकरिकै भुजसोंफिरायो तालके तर आइ॥असुर लै तरुसों पछारचो गिरचो तरु झहराइ।तालसों तरुताल लाग्यो उक्योवन घहराइ॥बछ असुरको मारि हलधर चले सबनि लिवाइ। सुर प्रभु को वीर जाकी तिहु भुवन बडाइ ॥ ६८ ॥ राग देवगंधार॥बछरा चारन चले गोपाल। सुबल सुदामा अरु श्रीदामा संग लिए सब ग्वाल ॥दनुज एक तहँ आइ पहुँचेउ धरे वत्स को रूप ।हरि हलधर दिशि चितइ कह तुम जानतहो इह वीर॥ कहेव आहि दानौ इहि मारौ धारे वत्स शरीर । तब हरि सींग गह्यो यक करसों यक करसों गहे पाइ ॥ थोरेकहि बलसों छिन भीतर दीनो ताहि गिराइ । गिरत धरनि पर प्राण गए चितवत फिरि नहिं आयो श्वास॥ सूरदास ग्वालनसँग मिलि हरि लागे करन विलास ॥ ६९ ॥ अथ बकासुरवध॥रागसारंग ॥ बन बन फिरत चरावत धेनु । श्याम हलधर संग है बहुगोप बालकसेनु ॥ तृषित भई सबजानिमोहन सखन टेरत वेनु । बोलि ल्यावो सुरभिगण सब चलौ यमुन जल देन ॥ सुनतही सब हाँकिल्याए गाइ करिइकठेन।हेरि देदे ग्वाल बालक कियो यमुन तट गेन॥बकासुर रचि रूपमाया रह्यो छलकरि आइ ।चांचु यक पुहुमी लगाई इक अकास समाइ॥आगे बालक जातहैं तेपाछे आए धाइ।श्यामसों सब कहन लागे आगे एक बलाइ॥नितहिं आवत सुरभि लीने ग्वाल गोसुत संग ।कबहुँ नहिं इहि भांति देख्यो आजकोसो रंग॥मनहिं मन तब कृष्ण जान्यो बका असुर विहंग । चोंच फारि विदारि डारौं पलकमें करौं भंग॥निदरि चले गुपाल आगे बकासुरके पास।सखा सब मिलि कहनलागे तुमन जियके आस॥अजहुँ नाहिं डरात मोहन बचे किननं गास।तब कह्यो हरि चलहु सब मिलि मारि करहिं विनास॥चले सब मिलि जाइ देख्यो अगम तन विकरार । इत धरणि उत व्योमके बिच गुहाके आकार॥पैठि वदनु विदारिडारचो अति भए विस्तार ।मरत असुर चिकार पारचो मारचोनंदकुमार ॥ सुनत ध्वनि सब ग्वाल डरपे अब न उबरे श्याम॥हमहि बरजत गयो देखो किये ऐसे काम ॥ देखि ग्वालन विकलता तब कहि उठे बलराम ।बका बदन विदारि डारचो अबहिं आवत श्याम ॥ सखा हरि तब टेरिलीने सबै आवहु धाइ । चोंच फारि बका सँहारचो तुमहुँ करौ सहाइ ॥ निकट आए गोपबालकदेखि हरिसुखपाइ । सूर प्रभुके चरित अगणित नेति निगमन गाइ ॥ ३७० ॥व्रजमें कोउपज्योहैयह भैया । संग सखा सब कहत परस्पर इनको गुण अगमैया ॥ जबते व्रज अवतार धरचोइन कोउ नहिं घात करैया । कितो बात यह बका विदारचो धनि यशुमति जिन जैया॥ तृणावर्त पूतना पछारि तब अति रहे नन्हैया । सूरदास प्रभुकी लीला यह हम कत जिय पछितैया ॥ ७१ ॥ राग धनाश्री॥ बका विदारि चले व्रजको हरि।सखा संग आनंद करत सब अंगअंग बनधातु चित्र करि॥बनमाला पहिरावत श्यामहि बारबार अँकवारिभरत धरि।कंस निपात करोगे तुमहीं हम

जानी यह बात सही परि॥पुनिपुनि कहत धन्य नँद यशुमति जिन इनको जन्मौ सो धन्यघरि। कहत इहैसब जात सूरप्रभु आनँद आंसूभरितलोचनभारि॥७२॥राग कान्हरो॥व्रजबालक सब जाइ तुरतही महर महरिके पाँइ परे।एसोपूत जनौ जग तुमहीं धन्यकोख जहँ श्याम धरे॥गाइ लिवाइ गए वृंदाबन चरत चलीं यमुना तट हेरि।असुर एकखगरूप रह्यो धरि बैठो तीर बाइ मुख घेरि॥ चोंच एक पुहुमी करिराखी एक रह्यो तौगगन लगाई।हरिहमबरजत पहलेहि धायो वदन चीरि पलमाहिं गिराई॥सुनत नंद यशुमति चकृत चित सुन चकृतनरनारी।सूरदास प्रभु मन हरिलीनो तब जननी भरि लई अंकवारी॥७३ ॥अथ द्वादशमो अध्याय ॥१२ ॥अघासुरवध धनाश्री॥नंदसुत लाडिलेहौ सबब्रजजीवनप्रान।बारबारमाता कहै जागौ श्यामसुजान॥यशुमति लेति बलाइभोर भयो उठौ कन्हाई।संग लिये सब सखा द्वारे ठाढे बल भाई॥सुंदर वदन दिखाइये हरो नैननकोतापु। नैन कमल मुख धोइये कछु करौ कलेऊ आपु ॥ माखन रोटी लेहु सद्यदधि रैनि जमायो । पट रसके मिष्टान्न सोई जेवहु रुचि आयो॥मोपै लीजे मांगिकै जोइ जोइ भावै तोहिं।संग जेंवहि बलराम तुम रुचि उपजावहु मोहिं॥तब हँसि चितए श्याम सेजते वदन उघारचो।मानहु पयनिधि मथत फेन फटि चंद उजारचो॥सखा सुनत देखन चले मानहुं नैन चकोर।युगल कमल मानौ इंदु पर बैठ रहे अति भोर॥तब उठि आए कान्ह मातु जल वदन पखारचो। बोलिउठे बलराम श्याम कत उठचोसवारचो॥दाऊजू कहि हँसि मिले बाहँगहि बैठाइ।माखन रोटी सद्यदही हो जेंवत रुचि उपजाइ॥जल अचयो मुख धोइ उठे बल मोहन भाई । गाइ लईं सब घेरि चले बन कुँवर कन्हाई॥टेर सुनतबलरामकी आएबालक धाइ।लैआए सब घेरिकै घरतेबछरा गाइ॥सखन्ह कान्हसों कही आजु वृंदाबन जैए। यमुना तट तृण बहुत सुरभि गण तहां चरैये॥ग्वाल गाइ सब लै गए वृंदावन समुहाइ । अतिहि सघन वन देखिकै हरषि उठे सब गाइ॥कोउ टेरत कोउ हांकि सुरभि गण जोरि चलावत। कोउ कोउ हेरी देत परस्पर श्याम सिखावत॥अंतर्यामी कहत जीव सब हमहिं सिखावत ढेरी। श्याम कहत अबके गई पुनि धौली जहु फेरी॥कोउ मुरली कोउवेणु शब्द शृंगीको पूरे ।कृष्ण कियो मन ध्यान असुर इकु वस्यो अधूरे॥ बालक बछरा राखिहौं एक बार लै जाऊ। कछुक जनाऊँ अपनपौ हो अबलौंरहोसुभाऊ॥असुरकुलहिंसंहारिधरणिको भार उतारों। कपटरूप रचि रह्यो दनुज यहि तुरत पछारों ॥गिरि समान धरि अगम तन बैठो वदन पसारि। मुखभीतर बन घन नदी माया छल करिभारि॥पैठिगए मुखग्वाल धेनुबछरासँगलीने। देखि महाबन भूमि हरे तन द्रुम कृत कीने ॥ कहनलगे सब आपुसमें सुरभी चरी अघाई । मानहु पर्वत कंदरा मुख सब गये समाई ॥ मुख सब गए समाय असुर तब चोंच सकेरचो। अंधकार होयगयो मनहुँ निशि बादर घेरचो॥अतिहि उठे अकुलाइकै ग्वाल बच्छसबगाइ।त्राहित्राहि कहि कहि उठपरे कहाँ हमआइ॥धरिधरि कहिकान्ह असुर यह कंदर नाहीं।अनजानत सब परे अघामुख भीतर माहीं ॥ जिय त्याग्यो यह सुनतही अब को सकै उबारि । बातें दूनी देह धरी तव असुर न सक्यो सँभारि ॥ शब्द करचो आघात अघासुर टेरि पुकारचो । रह्यो अधर दोउ चापि बुद्धि बल सुरति बिसारचौ ॥ ब्रह्मद्वार फिरि फूटिकै निकसे गोकुलराइ । बाहिर आवहु निकसिकै मैं करिलियो सहाइ ॥बालक बछरा धेनु सबै मन अतिहि सकाने।अंधकार मिटिगये देखि जहां तहां अतुराने॥ आये बाहर निकसिकै मन सब कियो हुलास। हम अज्ञान कत डरतहैं कान्ह हमारे पास॥धन्य कान्ह धनि नंद धन्ययशुमतिमहतारी । धन्यलियोअवतारकोखि धनि जियहि देतारी ॥ गिरि समान तन अगम अति पन्नगकी अनुहारि । हम देखत पल

एकमें मारचो दनुज प्रचारि ॥ हरि हँसि बोले बैन संग जो तुम नहिं होते। तुम सब किए सहाय भयोतब कारज मोते॥हमहुँ तुमहुँ मिलि बैठिकैवन भोजनकरिये जाइ।बंशीबटभोजन बहुत यशुमति दियो पठाइ॥ग्वाल परमसुख पाइ कोटि मुख करत प्रशंसा।कहा बहुत जो भए सपूत तौ एकै वंसा॥ चढि बिमान सुर देखहीं गगन रहे भरि छाइ। जै जै ध्वनि नभ करतहैं हरषि पुहुप बरषाइ॥ब्रह्मसुनी यह बात अमरवर घरनि कहानी।गोकुललीनो जनम कौन यह मैं नहिंजानी। देखौं इनकी खोजलैशोच परचोमनमाहँ।सूर श्याम ग्वालन लियेचले बंशीबटकी छाहँ॥७४॥६

अथ तेरह अध्याय ब्रह्मा वत्स बालक हरन॥ राग धनाश्री॥ हरप भये नंदलाल बैठि तरुछाँहकी। ग्वाल बाल संग करत कोलाहल छाँहकी॥बंशीबट अति सुखद और द्रुम पास चहू है।सखनलिये तहां गए धेनु वन चरति कहूँ है॥ बैठिगए सुख पाइके ग्वाल बाल लिये साथ। अति आनँद पुलकित हिये गावत हैं गुणगाथ ॥ १ ॥ अहिर लिये मधु छाक तुरत वृन्दावन आए। व्यंजन सहस प्रकार यशोदा बनहि पठाए॥श्याम कही वन चलतही मातासों समुझाइ। उतने वै आए सबै देखतही सुख पाइ ॥ २ ॥ कान्ह देखि मधु छाक पुलकि अँग अंग बढायो हरि हँसि बोले तबै प्रेमसों जननि पठायो ॥ नीके पहुँचे आनिकै भलो बनो संयोग। बार बार कहि सवनको आजु करो सुखभोग ॥ ३॥ वन भोजन बिधि करत कमलके पात मँगाये। तोरे पात पलाश सरस दोना बहु ल्याये॥भांति२भोजन धरे दधि लवनी मिष्टान। वनफल लये मँगाइके लागे भोजन खान ॥४॥ वन भोजन हरि करत संग मिलि सुबल सुदामा। श्याम कुँवर परसन्न महर सुत अरु श्रीदमा।श्याम सबै मिलि खातहैं लै लै कौर छुडाय।औरन देत बुलाइके डहकि आपु मुख नाइ॥५॥ ब्रह्मा देखि बिचार सृष्टि कोई नई चलाई। मुहि पठयो जिहि सौंपि ताहि कहिहौं का जाई॥ देखौं धौं यहकौनहै बाल वत्स हरिलेउँब्रह्मलोक लैजाउँगो यह बुधि करि दुख देउँ ॥ ६ ॥ अंतर्यामी नाथ तुरत बिधिमनकी जानी। बालकदैदियेपठै धेनु बन कहूं हिरानी॥जहां तहां बन ढूँढिकै फिरि आये हरि पास।श्याम सखन बैठारिकारि आपुन गये उदास ॥ ७ ॥ हरि ले बालक वत्स ब्रह्मलोकहिपहुँचाये।फिरिआवैजोकान्हकहूंकोउनाहिंन पाये ॥ प्रभु तबहीं जानो यही बिधि लैगयो चुराइ। जो जेहिरँग जेहिरूपको बालकवच्छ बनाइ ॥ ८॥ तातै कीन्हे और ब्रह्म हृदनाल उपायो। अपनो करि तेहि जानि कियो ताको मनभायो॥ उद्धारन मारन समर्थ मन हरि कीनो ज्ञान।अनजानेबिधियहकरीनयेरचेभगवान॥९॥उहै वृद्धि उहै प्रकृति वहै पौरुष तन सबके।उहै नाउँ उहि भाउ धेनु बछरामिलिरवके॥श्यामकह्योसबसखनको ल्यावहु गोधन फेरि।संध्याको आगम भयो व्रजतन हांकोघेरि॥१०॥सुनतग्वाललेधेनुचले व्रजवृंदावनते। कान्हहि बालक जानि डरे सब ग्वालमनहिते॥मध्यकियेलैश्यामको सखाभयेचहुँ पास। वच्छ धेनु आगे किये आवत करत विलास ॥ ११॥बाजतवेणुविषाणसबैअपनेरँग गावत। मुरली ध्वनि गो रंभ चलत पग धूरि उडावत॥ मोरमुकुट शिर सोहई बनमाला पट पीत। गोरज मुखपर सोहई मनहु चन्द्रकण शीत ॥ १२ ॥देखि हरषि व्रजनारि श्यामपर तनमनवारति। इकटक रूप निहारि रहीं अति चित आरति ॥ कहा कहैं छवि आजुकी मुख मंडित खुर धूरि। मानहु पूरन चन्द्रमा कुहु रह्यो आपूरि ॥ १३ ॥ गोकुल पहुँचे जाइ गये बालक अपने घर। गोसुत अरु नर नारि मिलीं अतिहित लाइ गर॥ प्रेम सहित वे मिलतहैं जउ सुत जायो आजु। यशुमति मिलि सुतसों कहति रैनि करत केहि काजु॥ १४॥ मैं घर आवन कहीं सखासँग कोउ

नहिं आवै । देखत बन अतिअगम डरौं वै मोहि डरपावै ॥ बारबार उर लाइकै लइ बलाइ पछिताइ । कालिहिते वेई सबै ल्यावहिं गाइ चराइ ॥ १५ ॥ यह सुनिकैहरिहँसेकालिमेरि जाइ बलैया । भूख लगी मोहिं बहुत तुरतही दै कछु मैया॥माखनदीयो हाथकै यहतबलौंतुमखाहु । तातो जल है घामको तनकतेलसों न्हाहु ॥ १६ ॥ तब यशुमति गहिबाँह तुरत हरि लै अन्हवाए। रोहिणि करि जिवनार श्यामबलराम बुलाए ॥ जेंवत अतिरुचि पावहीं परुसति माता हेत। जेंय उठे अँचवन लियो दुहुँ कर बीरा देत ॥ १७॥ श्याम उनींदे जानि मातरचिसेज बिछायो।तापर पौढे लाल अतिहि मन हरष बढायो ॥ अघमर्दन बिधिगर्व हत करत न लागीबार । सूरदास प्रभुके चरित पावत कोउ न पार॥ १८॥ राग ललित ॥हौं नाहिंन जगाइसकति सुनुसुबातसजनीरी। अपनेजान अजहुँ कान्ह मानतहैंरजनीरी॥७५॥ जबजब हौंनिकटजाति रहतिलागिलोभा।तनकी गति बिसरिजाति निरखत मुखशोभा ॥ ७६॥ वचननिकौ बहुत करति शोचतिजियठाढी। नैननि सुविचार करति देखत रुचि बाढी ॥७७॥यहिबिधिवदनारविंद यशुमतिजियभावै।सूरदास सुख- की राशि कापै वरणिआवै॥ ७८॥ राग बिलावल ॥ नंदमहरके भावते जागो मेरेबारे। प्रात भयो उठि देखिये रविकिरणि उज्यारे॥ ग्वालबाल सब टेरहिं गैया बनचारन।लालउठौ मुख धोइये लागी वदन उघारन ॥ मुखते पटु न्यारो कियो माता करअपने। देखि बदनचक्रतभईसौंतुक कि सपने ॥ कहा कहौं वह रूपकी को वरणि बतावै । सूर सु हरिके गुण अपार नंदसुवन कहावै ॥ ७९ ॥ राग ललित ॥ उठे नंदलाल सुनत जननीकी बानी । आलस भरे नैन दोउ सकल शोभाकी खानी ॥ गोपीजन विथकित ह्वै चितवत सब ठाढी । नैन कर चकोर चंद्रवदन प्रीति बाढी ॥ माता जलझारी लै कमलमुख पखारयो । नैन नीर परसि करत आलसहि बिसारयो ॥सखा द्वार ठाढे सब टेरतहैंबनको ।यमुनातट चलौ कान्ह चारन गोधनको ॥ सखा सहित जेंवहु मैं भोजन कछु कीनो।सूरश्याम हलधर सब सखा बोलिलीनो ॥२८०॥राग बिलावल॥ दोउ भैया जेंवत माँआगे । पुनिपुनि लै दधि खात कन्हाई और जननिपै माँग॥अतिमीठो दधि आजु जमायो बलदाऊ तुम लेहु । देखौ धौं दधिस्वाद आपु लै ता पाछे मोहिं देहु॥बलमोहन दोउ जेंवत रुचिसों सुख लूटति नंदरानी।सूरश्याम अब कहत अघाने अँचवन माँगत पानी ॥ ॥राग रामकली॥द्वारे टेरतहैं सब ग्वाल कन्हैया आवहु बार भई।आवहु वेगि विलम जनि लावहु गैयां दूरि गई॥इह सुनतहि दोऊ उठिधाए कछु अँचयो कछुनाहीं। कितिक दूरि सुरभी तुम छांडी वनतोपहुँचीआहीं॥ग्वाल कह्यो कछु पहुँची ह्वैहैं कछुमिलिहैंमगमाहीं।सूरश्यामबलमोहन भैया भैयन पूंछत जाहीं ॥८१॥राग बिलावल॥वन पहुँचत सुरभी लई जाई। जेहौ कहां सख- नको टेरत हलधर संग कन्हाई ॥जेंवत परखलियो नहिं हमको तुम अति करी चँडाई। अब हम जैहैं दूरि चरावन तुम संग रहैं बलाई॥यह सुनि ग्वाल धाइ तहांआए श्यामहि अंकमलाई । सखाकहत यह नंदसुवनसों तुम सबके सुखदाई॥ आज चलो वृन्दावन जेए गैया चरैं अघाई। सूरदास प्रभु सुनि हरषित भए घरते छाक मँगाई॥८२॥राग बिलावल॥चलेसबवृन्दावन समुहाइ। नंदसुवन सब ग्वालन टेरत लावहु गाइ फिराइ ॥ अति आतुर ह्वै फिरे सखा सब जहँ तहँ आये धाइ । बूझत बात ग्वाल कंहि कारण बोलेकुँवरकन्हाइ ॥ सुरभीबृंद तहींको हांकी औरन लेहुबोलाइ।सूरश्याम यह कही सबनिसों आप चले अतुराइ ॥८३॥राग धनाश्री॥गैयन घेरि सखा सब ल्याए।देख्यो कान्ह जात वृन्दावन याते मम अतिहरष बढाए ॥ आपुसमें सब करत

कुलाहल धौरी धूमरि धेनु बोलाए। सुरभी हाँकिदेत सब जहँतहँ टेरिहेरिसुरगाए॥पहुँचेआइविपिन
घन बृंदा देखत द्रुम दुख सबनिगवाँए। सूरश्याम गएअघामारिजब तादिनतेयहिबनअब आए
॥८४॥राग नटनारायणी ॥ चरावत बृंदावन हरि धेनु।ग्वाल सखासबसंगलगाएखेलतहैंकरिचैनु॥कोउ
गावत कोउ मुरलि बजावत कोउ विषान कोउ बेनु।कोउनिर्ततकोउउघटितारदे ज़ुरि ब्रजबालक
सेनु॥त्रिविध पवन जहँ बहत निशिदिन सुभग कुंज घन एनु। सूरश्याम निजधाम बिसारत आवत
यह सुख लेनु॥८५॥राग धनाश्री॥बृंदावन मोको अतिभावत । सुनहु सखातुमसुबलश्रीदामा ब्रजते
बन गऊ चारन आवत ॥ कामधेनु सुरतरु सुख जितने सभासहित वैकुंठबोलावत। यह बृंदावन
यह यमुनातट ये सुरभी अति सुखद चरावत ॥ पुनिपुनि कहत श्याम श्रीमुखते तुम मेरे मन
अतिहिसुहावत। सूरदास सुनि ग्वाल चकृत भये यह लीलाहरिप्रगट देखावत॥८६॥राग बिलावल॥
ग्वालसखा कर जोरि कहतहैं हमहिं श्याम तुम जिनि बिसरावहु।जहांजहां तुम देह धरतहौ तहां
तहां जनि चरन छुडावहु॥ ब्रजतेतुमहिं कहूं नहिं टारौं इहै पाइ मैंहूं ब्रज आवत । यह सुख नाहीं
भुवन चतुर्दश यहि ब्रज यह अवतार बतावत ॥ अवर गोप जे बहुरि चलेघरतिनसोंकहिमुखछाक
मँगावत । सूरदासप्रभु गुप्त बात सब ग्वालनसों कहिकहिसुख पावत ॥८७॥राग बिलावल ॥कन्है-
या हेरिदे सुभगसांवरे गातकी मैं शोभा कहत उजाऊँ।मोरपंख शिरमुकुटकी मुखमटकनिकी बलि
जाउँ॥कुंडल लोल कपोलनि झांई बिहँसनि चितहिचुरावे । दशनदमक मोतिन्ह लर ग्रीवाशोभा
कहत न आवै॥उरपरपदिक कुसुम बनमाला अँग धुकधुकी बिराजै। चित्रित बाहु पौंचिआ पौंचे
हाथ मुरलिका छाजै॥कटि पटपीतमेखला मुकुलित पाइन नूपुरु सोहै। आसपास बर ग्वालमंडली
देखत त्रिभुवन मोहै॥सब मिलि आनंद प्रेम बढावत गावत गुणगोपाल।यह सुख देखत श्याम
संगको सूरदास सब ग्वाल॥८८॥कान्हकांधे कामरि लकुट लिएकर घेरैहो।वृन्दावनमेंगऊ चरावे
धौरी धूमरि टेरैहो ॥ लिये लिवाइग्वाल बुलाइ जहँतहँ वनवन हेरैहो।सूरदास प्रभुसकललोक-
पति पीतांबर कर फेरैहो॥८९॥सोई हरि कांधे कामरीकाछे कियेनाँगेपाइन गाइनकी टहलकरतहैं।
त्रिभुवनपतिदिनपतिनारीनरपतिपंछिनपति रविशशि जेहि डरतहैं ॥ शिवविरंचिध्यानधरतभक्त
त्रिविधि ताप हरत तेहि तव उधरतहैं।सूरदास प्रभुकेगुण निगम नेति नेति गावत तेई वन बिहर-
तहैं ॥३९०॥ राग नट॥छाक लेन जे ग्वाल पठाए। तिनसों बूझति महरि यशोदा छांडि कन्हैयहि
आए॥हमहिं पठायदिये नँदनंदन भूखे अति अकुलाए।धेनु चरावतहैं बृंदावन हम यहि कारण
आए॥ यह कहि ग्वाल गए अपने गृह वनको खबरि सुनाए । सूर श्यामबलराम प्रातही अध-
जेंवत उठि धाए॥९१॥रागसारंग॥और ग्वाल सब गृह आए गोपालहि बेर भई।अतिहिअबेर भई
लालनको अजहुँ न छाक मँगाई॥ तवहींते भोजन करिराख्यो उत्तम दूध जँमाई । ना जानौं
कान्ह कौन वन चारत अतिहि अबेर लगाई ॥राज्य करैं वे धेनु तुम्हारी नंदहि कहत सुनाई ।
पंचकी भीख सूर बलमोहन कहति यशोदा माई॥९२॥राग सारंग॥जोरतिछाकप्रेमसोंमैया।ग्वालन
बोलिलए अधजेवतउठिदौरेदोउ भैया॥तवहींते भोजननहिंकीनोचाहतदियो पठाई।भूखेभएआजु
दोउ भैया आपहि बोलिमँगाई॥सदमाखन साजो दधि मीठो मधु मेवापकवान ।सूर श्यामको
छाक पठावत कहति ग्वारिसों जान ॥९३॥राग सारंग॥घरहीकी यक ग्वारि बोलाई।छाक सामग्री
सबै जोरिके वाके कर दै तुरत पठाई॥कह्योताहि वृन्दाबन जैये तू जानति सब प्रकृति कन्हाई।
प्रेमसहित लै चली छाक वह कहाँ वैहै भूखे दोउ भाई ॥तुरत जाइ वृन्दाबन पहुँची ग्वालबाल कहुँ

कोउ न बताई।सूर श्यामको टेरति डोलति कत हौ लाल छाक मैं ल्याई ॥ ९४॥राग टोडी॥आजु कौने धौं बन चरावत गाइ कहां भई अबेर। बैठे कहां सुधि लेउँ कौन विधि ग्वारि करत अवसेर॥ वृन्दावन दै आदि सकल बन ढूँढयो जहां गायनकी टेर। सूरदास प्रभु रसिक-शिरोमणि कैसे दुरत दुराये कहौ धौं डुँगरनकी ओट सुमेर ॥ ९५ ॥ छाक लिये शिर श्याम बुलावति। ढूँढति फिरति ग्वारि नीकेकरि कहूं भेद नहिं पावति॥ टेर सुनत काहूकी श्रवणनि तहीं तुरत उठि धावति। पावति नहीं श्याम बलरामहिं व्याकुल ह्वै पछितावति ॥ वृंदावन फिरिफिरिदेखतिहै बोलि उठे तहां ग्वाल।सूरश्याम बलराम इहाँ ईं छाक लेहु किन लाल ॥९६॥ ॥राग कान्हरो॥फिरत बन बन बृंदावन बंशीबट संकेत बट नटनागर कटि काछे खौरि केसरिकी किये। पीत वसन चंदन तिलक मोरमुकुट कुण्डल श्यामघन यह छबि लिये॥तनु त्रिभंग सुगंध अंग निरखि लज्जत रति अनंग ग्वाल बाल लिये संग प्रमुदित सबहिये। सूर श्याम अति सुजान मुरलीध्वनि करत गान व्रजजनमनकोसुख दिये॥९७॥हरिको टेरति फिरति गुआरि।आईलेहुतुम छाक आपनी बालकबल बनवारि॥आजुकलेऊकरत बन्यो नहिं गैयन सँग उठिधाये।तुमकारण वन छाकयशोदा मेरेहि हाथ पठाए॥यह बानी जब सुनी कन्हैया दौरिगए तेहिकाजू।सूरश्याम कह्यो नीके आई भूख बहुतही आजू॥९८॥बहुत फिरी तुमकाज कन्हाई।टेरिटेरि मैं भईबावरी दोउ भैया तुम रहे लुकाई॥जे सब ग्वाल गये व्रजघरको तिनसोंकहितुम छाक मँगाई।लवनीदधि मिष्टान्न जोरिकै यशुमति मेरे हाथ पठाई ॥ ऐसी भूखमांझ तू ल्याई तेरी केहिविधि करौं बडाई। सूर श्याम सब सखन पुकारत आवहु क्यों न छाक है आई॥९९॥रागसारंग॥गिरिपर चढि गिरि-वरधर टेरे। अहो सुबल श्रीदामा भैया ल्यावहु गाइ खरिकके नेरे ॥ आई छाक अबार भई है नेसुकु धैया पिअहु सबेरे। सूरदास प्रभु बैठि शिलनिपर भोजन करैं ग्वाल चहुँफेरे॥४००॥ राग नट॥ बिहारी लाल आवहु आई छाक। भई अबार गाइ बहुरावहु उलटावहु दै हांक॥ अर्जुन भोज अरु सुबल श्रीदामा मधुमंगल इकताक। मिलि बैठे सब जेंवन लागे बहुत बन्यो कहि पाक ॥ अपनी पत्रावलि सब देखत जहँ तहँ फेनी पिराक। सूरदास प्रभु खात ग्वालसँग ब्रह्म-लोक यह धाक ॥ १ ॥ राग सारंग॥ आई छाक बुलाए श्याम। यह सुनि सखा सबै जुरिआए सुबल सुदामा अरु श्रीदाम ॥ कमलपत्र दोना पलाशके सब आगे धरि परुसत जात। ग्वाल-मंडलीमध्य श्यामघन सब मिलि भोजन रुचिकर खात॥ऐसी भूखमांझ इह भोजन पठैदियो करि यशुमति मात। सूर श्याम अपनो नहिं जेंवत ग्वालनकरते लैलै खात॥ २॥सखनसंग हरि जेंवत छाक।प्रेमसहित मैया दैपठए सबै बनाएहैं एकताक॥सुबल सुदामा श्रीदामासँगसबमिलि भोजन रुचिसों खात। ग्वालनकरते कौर छुडावत मुख लै मेलि सराहतजात ॥ जो सुख कान्ह करत बृंदावन सो सुख नहीं लोकहू सात। सूर श्याम भक्तनवश ऐसे व्रजहि कहावतहैं नँदतात ॥ ३ ॥ ग्वालमंडलीमें बैठेहैं मोहन बडकी छहियाँ दुपहरीकी विरियां संग लीने। एक मथत दोहनी दूध एक बँटावत फल चबैने॥ एकनिकर हरि झगरि लेत ऐसे बनि आपनी कमरके आसनकीने। जेंवतहैं अरु गावतकान्हसारंगीकी तान लेत सखनिके मध्य विराजत छाकलेतकर छीने।सूरदास प्रभुको मुख निरखत सूर रीझि हेरें सुमननि बरषत सभीने॥४॥ग्वालनकरते कौर छँडावत। जूठो लेत सबनके मुखको अपने मुख लै नावत ॥पटरसके पकवान धरे सब तामें नहिं रुचि पावत। हाहा करिकरि माँगिलतहैं कहत मोहिं अति भावत ॥ यह महिमा एई पै

जानैं जाते आप बँधावत। सूर श्याम स्वपने नहिं दरशत मुनिजनध्यानलगावत ॥ ५ ॥ ब्रजबासी पटतर कोउ नाहिं।ब्रह्मसनकशिवध्यान न पावत इनकी जूँठनि लैलैखाहिं॥धन्यनंद धनिजननि यशोदा धन्य जहां अवतार कन्हाई । धन्यधन्य वृंदाबनके तरु जहां विहरत त्रिभुवनके राई ॥ हलधर कह्यो छाँक जेंवत सँग मीठो लगत सराहतजाई । सूरदास प्रभु विश्वंभर हैं ते ग्वालनके कौर अघाई॥ ६॥राग सारंग॥शीतल छहियाँ श्याम बैठे जानिभोजनकीबेरिआ।वामभुजा सखा-अंशपर दीने लीने दक्षिणकर द्रुमडारिआ॥चलिये जू नेक गाइनघेरौ जू बलरामसोंकहतबोलि-लेहु अपनी ओरिआ । सूरदास प्रभु बैठे कदमतर गइयाको दूध निकरिया॥ ७॥राग नटनारायण॥ विधि मनहीमनशोच परचो।गोकुलकी रचनासब देखत अति जियमांहिडरचो।मैंविरंचिविरच्यो जग मेरो यह कहि गर्व बढायो । ब्रज नर नारि ग्वालबालक कहि कौनेठाट रचायो॥वृंदावनवट सघन वृक्षतर मोहन सबै बोलाये । सखासंग मिलिकरि भोजी विधि बिधि मन भरम उपाये॥ धेनु रहीं बनमें भूली द्वै बालक भ्रमत न पाये।याते श्याम अतिहि अतुराने तुरत तहां उठिधाये॥ बालक बच्छ हरे चतुरानन ब्रह्मलोक पहुँचाये ॥ सूरदास प्रभु गर्वविनाशन नवकृत फेरि बनाये ॥ ८॥राग सारंग ॥जेवतछांक गाइविसराई।सखाश्रीदामाकहतसबनिसोंछाँकहिमेंतुमरहेभुलाई । धेनु नहीं देखियत कहुँनियरे भोजनहीमें सांझलगाई।सुरभि काज जहँ तहँ उठि धाये आपुतहाँउठि चले कन्हाई ॥ ल्यायेग्वाल घेरिगोगोसुत देखिश्याममनहरष बढाई । सूरदास प्रभु कहत चलौ घर बनमें आजु अवार कराई ॥ ९॥राग गौरी ॥ ब्रजहि चलौ आई अबसांझ।सुरभीसबैलेहुआगे कारि रैनि होइपुनि बनही मांझ॥भली कही यह बातकन्हाई अतिहि सघनआरण्यउजारि।गैयाँ हांकि चलाई ब्रजको औरग्वाल सबलिए पुकारि॥निकसिगएवनते सबबाहिर अतिआनंद भए सब ग्वाल।सूरदास प्रभुमुरलि बजावत ब्रज आवत नटवर गोपाल॥ ४१० ॥राग कल्याण॥सुंदरश्याम सुँदर वर लीला सुन्दर बोलत वचनरसाल॥सुंदर चारु कपोल विराजत सुंदर उरज बनीबनमाल॥ सुंदर चरण सुँदर हैं नखमनि सुंदर है कुंडल मकराल । सुन्दर मोहन नैन चपल किए सुन्दर ग्रीवा बाहु विशाल ॥ सुंदर मुरली मधुर बजावत सुंदर हैं मोहन गोपाल । सूरदास जोरी अति राजति ब्रजको आवत सुंदर चाल ॥ ११ ॥ सुंदर श्याम सखा सब सुंदर सुंदर भेष धरे गोपाल। सुंदर पथ सुंदर गति आवनि सुंदर मुरली शब्द रसाल ॥ सुंदर लोग सकल ब्रज सुन्दर सुंदर हलधर सुंदर चाल । सुंदर बदन विलोकनि सुंदर सुंदर गुण सुंदर वनमाल॥ सुन्दर गोप गाइ अति सुंदर सुंदर गुण सब करत विचार।सूर श्यामसँगसबसुख सुंदर सुंदर भक्तहेत अवतार ॥ राग बिलावल॥सुंदर ढोटा कौन को सुंदर मृदुबानी ।कहि समुझायो ग्वालिनी जायो नँदरानी॥सुन्दरि मूरति देखकेघनघटा लजानी।सुंदर नैन निहार लियोकमल-नको पानी ॥ सुन्दरता तिहुँलोककी ब्रजपुरमें आनी । सूरदास यशुमति भईसुन्दरता रजधानी । ॥ १२ ॥ राग गौरी ॥ देखि सखी वनते जु बने ब्रज आवतहैं नँदनंदन । शिखी शीश मुखमुरलि बजावत बन्यो तिलक उर चंदन ॥कुटिल अलक मुख चंचल लोचन निरखत अतिआनंदन । कमल मध्य मनो द्वै खग खंजन बँधे आइ उडि फंदन ॥अरुण अधर छबि दशन बिराजति जब गावत कल मंदन । मुक्ता मनों लालमणिमें पुट धरे मुरकि वरवंदन॥ गोपवेष गोकुल गोचारतहैं प्रभु असुरनिकंदन।सूरदास प्रभु सुयश बखानत नेति नेति श्रुतिछंदन॥ १३ मेरे नैन निरखिसुख पावत।संध्या समै गोपगोधनसँग बनते बने लालब्रज आवत ॥ बलिबलि जाउँमुखारविंदकी मंद

मंद गति धावत । नटवर रूप अनूप छबीलो सबहीके मन भावत॥ गुंजा उर बनमाल मुकुट शिर वेणु रसाल बजावत। कोटिकिरणमणि मुखपरकासतउडपति कोटि लजावत॥ चंदनखौरि काछनीकी छबिसबकेमनहिं चुरावत॥सूर श्याम नागरनारिनको वासरबिरहनशावत १४॥ राग केदारो॥ शोभा कहत कहे नहिं आवै । अचवत अति आदर लोचनपुट मनन रूपको पावै॥ सजलमेघ घनश्याम सुभगवपु तडितवसन उरमाल।शिखीशिखिर तनु धातु विराजतिसुमनसुगंधप्रवाल॥ कछुक कुटिलको विपिनसघन शिर गोरजमंडित केश । शोभित मनु अंबुजपरागरस राजत अली सुदेश ॥ कुंडलकिरिन कपोल कुटिल छबि नैन कमलदल मीन । प्रतिप्रति अंगअंग कोटिक छवि सुनुसखि परमप्रवीन ॥ अधर मधुर मुसुकानि मनोहर कोटि मदन मनहीन ।सूरदास जहां दृष्टिपरतहै होत तहीं लवलीन॥१५॥ बहुरि बाल वत्सहरन॥ राग धनाश्री॥ब्रजकीलीला देखि ज्ञानु विधिको भयो भारी। त्रिभुवननायक आनि भयो गोकुलअवतारी ॥ खेलत ग्वालनसंग रंगआनंदमुरारी । शोभित सँग ब्रजबाल लाल गोवर्धनधारी ॥ घरघरते छाकैं चलीं मानसरोवरतीर। नारायण भोजन करैं बालक संग अहीर ॥ १६॥व्यंजन सकल मँगाइ सखनिके आगे राखे। खाटे मीठे स्वाद सबै रस लैलै चाखे॥ रुचिसों जेंवत ग्वाल सब लैलै आपुन खात॥भोजनको सब स्वाद ले कहत परस्पर बात ॥ १७ ॥देखत गणगंधर्व सकल सुरपुरके बासी । आपुसमें वे कहत हँसत एई अविनासी ॥ देखि सबै अचरजु भए कहौ ब्रह्मसों जाइ । जाको अविनाशी कहत सो ग्वालन सँग खाइ ॥ ॥ १८ ॥इह सुनि ब्रह्मा चल्यो तुरत वृन्दावन आयो । देखि सरोवर सलिल कमल तिहि मध्य सुहायो ॥ परम सुभग यमुना बहै तहां त्रिविध समीर । पुहुपलता द्रुम देखिकै चकृतभयो मतिधीर॥१९ ॥अतिरमणीक कदंबछाँह रुचिपरमसुहाई । राजतमोहनमध्य अवलि बालक छबिपाई ॥ प्रेममगन ह्वै परसपर भोजनकरत गुपाल । ल्यावहु गोसुत घेरिकै प्रभुपठएद्वै ग्वाल॥४२०॥बनउपवन सबढूँढिसखा हरिपैफिरिआए। बछरा भए अदृष्ट कहूंखोजत नहिं पाए॥ सबै सखा बैठेरहौ मैंदेखौंधौं जाइ। बच्छहरनजियजानिप्रभुआपुगएबहराइ॥२१॥जबगोविंद गए दूरि बालकन हर्यो विधाता । लैहैंतुरतमँगाइआपुह्वैहैंजगत्राता॥ब्रह्मलोकब्रह्मागयोबालकबच्छा संग।प्रभुकी लीला गमनहीं कियो गर्व अतिअंग॥२२॥तबचिंतामणि चितैचित्तइक बुद्धिविचारी। बालक बच्छ बनाइ रचे वेहीउनिहारी॥ करत कुलाहल सब गए ब्रजघर अपने धाइ। अतिआदर करिकरि लिये अपनीअपनीमाइ ॥ २३॥ब्रह्माकियोविचारजाय ब्रज गोकुलदेख्यो । करिहैंशोकु सँतापजाइपितुमातहिदेखों ॥ आए तहांबिधनाचले घरघर देखौ आइ । संध्या समै होत कौतूहल जहँ तहँ दुहिये गाइ ॥ २४ ॥ यह गोकुल किधौं और किधौं हौंही भ्रमभूल्यो । यहअविनाशी होइ ज्ञान मेरे भ्रम झूल्यो॥अंतर्यामी जानिधौं हरौ बच्छ लैआइ।जगतपिता मैं सभ्रंम्योगएलोक फिरि धाय ॥२५॥ देख्यो जाइ जगाइ बाल गोसुत जहँ राखे। विधि मन चक्रितभये बहुरि ब्रजको अभिलाखे ॥ छिन भूतल छिन लोकमें छिन आवे छिन जाइ । ऐसेहि करत वरषदिन बीतो थकित भये बिधि पाइ ॥ २६ ॥ तब हरि प्रगट्यो जानि ज्ञान चितमें जब आयो । धृगधृग मेरी बुद्धि कृष्णसों वैर बढायो॥लैगोसुत गोपालशिशु शरनगयोहैसाधु। चारिहु मुख अस्तुति करत प्रभु क्षमौ मोहिं अपराधु ॥२७ ॥ अनजानत यह करी मैंतुमसों वारि आई । ये मेरे अपराधक्षमहु त्रिभुवनके राई॥ ज्यों बालक अपराधशत जननी लेति सँभारि।शरन गए राखत सदा अवगुण सकल बिसारि ॥ २८॥ जोरउदित खद्योत ताहि क्यों तिमिर नशावै।

दीपकबहुत प्रकाशतरनिसम क्यों कहवावै ॥ मैंब्रह्मा इकलोकको ज्यों गूलरि बिच जीव। प्रभु तुमरे इक रोमप्रति कोटि ब्रह्म अरु शीव ॥ २९ ॥ मिथ्या यह संसार और मिथ्या यह माया। मिथ्या है यह देह कहौ क्यों हरि बिसराया॥ तुम जाने बिन जीव सब उत्पति प्रलय समाहिं। शरण मोहिं प्रभु राखिये चरणकमलकी छाहिं ॥ ४३० ॥करहु मोहिं ब्रजरेणु देहु वृंदावन बासा। माँगौं यहै प्रसाद और नहिं मेरे आसा ॥जोइ भावै सो करहु तुम लता सलिल द्रुम गेहु। ग्वाल गाइको भृतु करौ मनौ सत्यव्रत एहु ॥ ३१ ॥जो दरशन नर नाग अमरसुरपतिहुँ न पायो। खोजत युग गए बीति अंत मोहूं न दिखायो ॥ यह ब्रज पारस नित्य है मैं अब समुझो आइ। वृंदावन रज ह्वै रहौं मोहिं नहिं लोक सुहाइ॥३२॥माँगत बारंबार शेष ग्वालनिको पाऊं। आप लियो कछु जानि भक्ष करि उदर जिआऊं॥ अबमेरे निज ध्यान यह रहिहौं जूठनि खाइ। और विधाताकीजिय मैं नहिंतेछाँडौं पाइ ॥ ३३॥ तब प्रभु बोले आपु बचन मेरो अब मानो। और काहि विधि करों तुमहिंते कौन सयानो ॥तुम ज्ञाता हौ कर्म धर्मके तुमते सब संसार। मेरी माया अति अगम कोउ न पावै पार ॥ ३४ ॥ श्रीमुख वाणी कहत विलँब अब नेक न लावहु। ब्रज परिकर्मा करहुदेहको पाप नशावहु ॥तुरत जाहु कही लोकको यहिविधि करि मनुहार। ब्रह्मा करि अस्तुति चले हरि दीनो उर हार ॥३५॥ धनि बछरा धनि वाल जिनहिते दरशन पायो। डर मेरो गयो धन्य कृष्ण माला पहिरायो ॥ धनि यशुमति जिन वश किएअविनाशी अवतार। धनि गोपी जिनके सदन माखन खात मुरार॥३६॥धनि गोपी धनिग्वाल धन्य ये ब्रजके बासी। धन्य यशोदा नंद भक्तिवश किये अविनाशी ॥धनि गोसुत धनि गाइ ये कृष्ण चराये आपु। धनि कालिंदी मधुपुरी जा दरशननशै पापु॥३७॥ मथुरा आदि अनादि देह धरि आपन आए। धनि देवै वसुदेव पुत्र तुम मांगे पाए॥चारि वदन मैं कहा कहौं सहसानन नहिंजान। गाइ चरावत ग्वालसँग करत नंदकी आन ॥ ३८॥ योगीजन अवराधिफिरत जिहिध्यान लगाए। तेब्रजबासिन संग फिरत अति प्रेम बढाए ॥ बृंदावन ब्रजको महतु कापै बरण्यो जाइ। चतुरानन पग परशिकै लोक गयो सुख पाइ ॥ ३९ ॥ हरि लीनो अवतार कहत शारदनहिं पावै। सतगुरुकृपा प्रसाद कछुक ताते कहिआवै ॥ सूरदास कैसे कहै महापतित अवतार। शेष सहसमुख जपतहै सोउनपावैपार॥४४०॥राग सारंग॥कह्योगोपालचरतहैंगोसुत हमसबबैठिकलेऊकीजै।शीतल छांह वृक्षकी सुंदर निर्मल यमुनाको जल पीजै॥भोजनकरतसखा इक बोल्यो बछरू कतहूं दूरि गये। यदुपति कह्यो घेरि हौंआनौं तुम जेंवहु निश्चितभए ॥ चतुराननबछरा लै गोए फिरिमाधौआए वहि ठाऊं।बालकबच्छहरे लोकेश्वर बाग्बार टेरत लै नाऊं॥जान्यो छल ब्रह्मा मनमोहन गोपी गाइ बहुत दुख पैहैं। तजिहैंप्राण सबैमिलिसुतकोनिश्चयगृहजो आजु न जैहैं ॥ वाहीभाँति वरन वपु वैसहिशिशुसबरचे नंदसुत आन। आगेबछ पाछे ब्रजबालक करतचलेमधुरे सुर गान॥पूरब प्रीति अधिक ताहूते करती ब्रज वनिता अरु धेनु। सूरज प्रभु अच्युत ब्रज मंगल घरही घर लागे सुख देनु॥४१॥राग कान्हरो ॥ आजबने वनतेब्रज आवत। नानारंगसुमनकी माला नंदनँदन उरपर छवि पावत ॥ संग [illegible] गोधन सँग लीने नाना गति कौतुक उपजावत। कोउ गावत कोउ नृत्य करतकोउ [illegible]कोऊ ताल बजावत॥राँभतगाइ बच्छहित सुधि करि प्रेम उमँगि थन दूध चुवावत। यशुमतिबोलीउठिहरपितह्वैकान्हो धेनुचराये आवत ॥ इतनीकहतआइगये मोहन जननीदौरि हियेलैलावत। सूरश्यामकेकृत यशुमतिसों ग्वालबाल कहि प्रगट सुनावत ॥ ४२ ॥

गोविंद चलत देखियतु नीके। मध्य गुपाल मंडली विराजति कांधे धरि लिएसीके॥ बछरा बृंद घेरि आगे करि जन जन शृंग बजाए। जानौं बन कमल सरोवर तजिकै मधुप उनींदेआए॥ बृंदावन प्रवेश अघमारचो बालक यशुमति तेरो॥सूरदास प्रभुसुनतियशोदा चितवदन प्रभुकेरो॥ ॥ ४३ ॥ रागबिलावल ॥ आजु यशोदाजाइ कन्हैयामहादुष्ट इकु मारचो। पन्नग रूप गिल शिशु गोसुत यहि सब साथ उबारचो॥गिरि कंदरा समान भयोबड जब अघ वदन पसारचो। निदरि गुपाल बैठि मुख भीतर खंड खंड करि डारचो॥ याके बल हम वदत न काहू सकल भुवन तृण चारचो। जीते सबै असुर हम आगे यह कह उनहि निहारचौ॥ हरषि गए सब कहत महरिसों अबहिं अघासुर मारचो॥सूरदास प्रभुकीयह लीलाकोकोभुलएनपारचौ॥४४॥यशुमति सुनि सुनि चकित भई। मैं बरजति बन जात कन्हैया का धौं करै दई॥ कहाँ कहाँते उबरचो मोहन नेकन तऊ डरात॥आप जे कहीं तनकसो बातैं सुनहु बनहु में घात॥मेरो कह्यो सुनो जो श्रवणन कहति यशोदा खीझति। सूर श्याम कह्यो बनहि न जैहों यह कहि मन मन रीझति॥४५॥राग गौरी॥ मैया बहुत बुरो बलदाऊ। कहनलगे बन बडो तमाशो सब मौंडा मिलि आऊ॥ मोहूंको चुचकार गए लै जहाँ सघन बन झाऊ। भागि चले कहि गयो वहाँते काटि खाइहै हाऊ॥ हौंहू डरप्यो कांपौ पुकारौ दाऊ कोउ नहिं धीर धराऊ। थरस गयो नहिं भाग सकौं वै भागे जात अगाऊ॥मोसोंकहत मोलको लीनोआपु कहावत साहु। सूरदास बल बडे चवाई तैसे मिलेसखाहु ॥ ४६ ॥राग नट॥हरिकी लीला कहत न आवै।कोटि ब्रह्मांड छनकमें नाशै छिनहीमें उपजावै। बालक बच्छ ब्रह्म हरिलैगयो ताको गर्व नवावै। ऐसो पुरुषारथ सुन यशुमति खीझति फिरि पछितावै॥शिव सनकादि अंत नहिं पावै भक्त बछल कहवावै । सूरदास प्रभु गोकुलमें सो घर घर गाइ चरावै ॥ ४७ ॥ राग सारंग॥ब्रह्माबालक बच्छ हरे। आदिअंत प्रभु अंतर्यामी मनसाते जो करे॥सोई रूप वै बालक गोसुत गोकुल जाइ परे।एक बरष निशिवासर रहि सँग काहुन जानि परे॥त्रास भयो अपराध आप लखि अस्तुति करत खरे। सूरदास स्वामी मनमोहन तामें मन न धरे ॥४८॥ राग नट॥तब हरि हरचो विधिको गर्व। बच्छबालक लैगयो धरितुरतकीन्हों सर्व॥ब्रह्म-लोक चुराइ राख्यो चरित देखन आपु। बच्छ बालक देखिकै मन करत पश्चात्तापु॥तब गयोवधि लोक अपने दृष्टिकै फिरि आइ।जानिजियअवतारपूरणपरचो पाँयनिधाइ॥बहुत मैंअपराध कीनो क्षमा कीजै नाथ।जानियह में नहीं कीन्ही जोरि कर रह्योमाथ॥बच्छ बालक आनि सन्मुखशरण शरण पुकारि। सूर प्रभुके चरण गहि कहि निकट राखुमुरारि ॥४९॥ राग धनाश्री ॥ ब्रज व्यवहार निरखिकै नैननि ब्रह्माको अभिमानगयो। गोपी ग्वाल फिरतसँग चारतहोंहुं क्यों नभयो॥व्यंजन वर करवर पर राखत ओदन मधुर दयो। आपन खातखवावतऔरन कवन विनोद ठयो॥सखा संग पयपान करावत अपनी हाथ लयो। शंकर ध्यानधरत युग बीतेइह रस तउन दयो॥ अहो भाग अहो भाग नंदसुत तपको पुंज लियो। लीला सुभग सूरकी ब्रजमें सब कोउ गाइ जियो॥ ॥४५०॥राग जयतश्री॥वदत विरंचि विशेष सुकृत ब्रजवासिनके। श्रीहरि जिनके भेष सुकृतब्रजवासिनके॥ज्योतिरूप जगनाथ जगत् गुरु जगत् पिता जगदीश। योग यज्ञ जप तप में दुर्लभ गइ-यां गोकुल ईश॥इक इक रोम बिराट कोटि तनकोटिकोटि ब्रह्मंड। सो लीन्हो अवछंग यशोदा अपने भरि भुजदंड॥ जाके उदर लोक त्रय जल थल पंचतत्त्व चौखानि। सो बालक ह्वै झूलत पलना यशुमति भवनहि आनि॥क्षिति मिति त्रिपद करी करुनामें बलि छलि

दियो पतार।देहरिउलँघि सकत नहिं सो अब खेलत नंददुआर ॥ अनुदिन सुरतरु पंचसुधारस चिंतामणि सुरधेनु । सो तजि यशुमतिको पै पीवत भक्तनको सुखदेनु॥ रवि शशि कोटिकला अवलोकत त्रिविध ताप क्षय जाइ । सो अंजन कर लै सुत कहि चछु आँजति यशुमति माइ ॥ दाता भुक्ता हरताकरता विश्वंभरजग जानि।ताहि लाहिमाखनकीचोरी बांधे यशुमति रानि ॥वेद वेदांत उपनिषद अरपै सो भख भुक्ता नाहिं।गोपी ग्वालनिके मंडलमें सो हँसि जूंठनि खाहिं॥ कमलानायक त्रिभुवनदायक दुख सुख जिनकेहाथ।कांधे कमरिआ कांख लकुटिया बिहरत बन बछ साथ ॥ बकी बकासुर शकट तृणावर्त अघप्रलंब विष भास । केशी कंसको वह गति दीनी राखे चरन निवास॥भक्तवछल अखिलअंतर्यामी रहे सकल भरपूर । मारग रोकि रह्यो द्वारे परि पतित शिरोमणिसूर॥५१॥राग गूढमलार ॥आदि सनातनहरि अविनासी।सदानिरंतरघटघटवासी॥ पूरण ब्रह्म पुराण बखानै।चतुरानन शिव अंतनजानै॥ गुणगण अगम निगमनहिं पावै। ताहियशोदा गोद खिलावै॥एक निरंतर ध्यावै ध्यानी।पुरुष पुरातनहैनिर्वानी॥जप तप संयमध्यानन आवै। सोई नंदके आँगन धावै॥लोचन श्रवणन रसनानासा।नापद पानिन गुन परगासा॥विश्वंभरनिज नाम कहावै। घरघरगोरसजाय चुरावै॥शुकशारदसेकरत विचारा।नारदसे पावहिं नहिंपाराअवर बरन सुर तीनहि धारे। गोपिनको सो वदन निहारे ॥ जरामरनते रहित अमाया । मात पिता सुत बंधु न जाया॥ज्ञान रूप हृदयमेंबोलै। सो नंद महरके आंगन डोलै॥जलधर अनिल अनल नभछायो । पंच तत्त्व मिलि जगत उपायो॥कालडरै जाकेडर भारी। सोऊखल बांध्यो महतारी॥ माया प्रगट सकल जग मोहै।कारन करन करै सो सोहै॥ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावै।सोगोकुलमें गाइ चरावै ॥अच्युत रहै आद्य जलशाई । परमानंद परम सुखदाई॥लोकरचै राखै प्रतिपारै। सो ग्वालन संग लीला धारै ॥ गुण अतीत अविगत न जनावै । यश अपार श्रुति पार न पावै ॥ जाकी महिमा कहत न आवै । सो गोपिन सँग रास रमावै ॥ जाकी महिमा लखै न कोई । निर्गुण सगुण धरै वपु सोई ॥ चौदह भुवन पलक में टारै । सो बन बीथिन कुटी सँवारै ॥ चरण कमल नित रमा पलोवै । चाहत नेक नैनभरि जोवै ॥ अगम अगोचर लीला धारी । सो राधावश कुंजविहारी ॥ भागवडे इन सब व्रजवासी।जिनकेसंगरमेअविनासी॥जोरस ब्रह्मादिक नहिं पावें । सोरसगोकुल गलीबहावें ॥ सूरसुयश कहिकहा बखानै । गोविंदकी गति गोविंद जानै॥ ५२ ॥राग मलार॥ बिनवै चतुरानन कहि भोरें॥तुव प्रताप जान्यो नहिं प्रभुजू करि अस्तुति कर जोरें॥ अपराधी मतिहीन नाथ हौं चूकपरी निज धोरें। हंकृत दोषु क्षमौ करुणामय ज्यों भूपरमत ओरें॥युग युग विरदइहै चलि आयो सत्य कहतु अब होरें । सूरदास प्रभु पछिलै लखैं अब नवनै मुखमोरें॥५३ ॥ राग सारंग ॥माधवमोहिं करौवृन्दाबन रेनु। जिन चरणन डोलत नंदनंदन दिन प्रति चारत धेनु ॥ कहा भयोहै देवदेह धरि अरु ऊंचो पद पायो ऐनु।सब जीवनलै उदर मांझ प्रभु महाप्रलय जल करत है सेनु॥हमते धन्य सदा वै तृण द्रुम बालक बच्छ वृषानग धेन। सूरश्याम जिनके सँग डोलत हँसि बोलत मथि पियतहैं फेन ॥५४॥ राग सारंग ॥ऐसे बसिए व्रजकी वीथिनि।ग्वालनके पनवारेचुनि चुनिउदर भरैएसीथिनि॥॥पैडेके सब वृक्ष विराजत छाया परम पुनीतनि । कुंजकुंज प्रति लोटि लोटि रति रज लागै रंगरीतनि ॥ निशि दिन निरखि यशोदानंदनु अरु यमुनाजल तीतनि । परसत सूर होत तन पावन दरशन करत अतीततनि ॥ ५५॥धनि यह वृन्दावनकी रेनु । नंदकिशोर चराई गैया मुखहि बजाई बेनु॥

मदनमोहनको ध्यान धरैं जो अतिसुख पावत चैनु। चलत कहा मन वसत पुरातन जहां लेन नहिं देतु ॥ इहां रहौं जहँ जूठनि पावै ब्रजवासी के ऐनु।सूरदास ह्यांकी सरबरि नहिं कल्पवृक्ष सुरधेनु॥५६॥राग गौरी॥अघा मारि आए नँदलाल।ब्रजयुवती सुनिकै उठि धाई घरघर कहत फिरत सब ग्वाल ॥ निरखत वदन चकित भईं सुंदरि मनहीमन इह करि अनुमान।कहति परस्पर सत्य बात यह कौन करै इनकी सरि आन॥एई हैं रतिपतिके मोहन एई हैं हमरे पति प्रान। सूर श्याम जननी मन मोहत बारबार माँगत कछु खान॥५७॥ मैंागिलेहु जो भावै प्यारे।बहुत भांति मेवा सब मेरे षटरसके परकार हैं न्यारे॥सबै जोरि राखति हित तुम्हरे मैं जानति तुव बानि। तुरत मथो माखन दधि आछो खाहु देइँ सो आनि॥माखन दधि मोहिं लागत प्यारो और न भावै मोहि।सूर जननि माखन दधि दीनो खात हँसतु मुख जोहि॥५८॥चकईभौंरा खेलनसमै॥विलावल॥ दै मैया भँवरा चकडोरी।जाइलेहु आरेपर राखो काल्हि मोल लै राखे कोरी॥लैआये हँसिश्याम तुरतही देखिरहे रँगरँग बहुडोरी।मैया बिना और को राखै बारबार हरि करत निहोरी॥बोलिलिएसब सखासंगके खेलतश्याम नंदकीपोरी।जैसेइहरि तैसेइ सबबालक करभँवरा चकरिनिकी जोरी॥ देखति जननि यशोदा यह छबि विहँसत बारबार मुखमोरी। सूरदास प्रभु हँसिहँसि खेलत ब्रजबनिता तृण डारत तोरी॥५९॥ राग कान्हरो॥ मेरे हियरे मांझ लगौमनमोहन लैगयो मन चोरी। अबहीं इहि मारग ह्वै निकसे छबि निरखत तृण तोरी॥ मोर मुकुट श्रवणन मणि कुंडल उर बनमाला पीत पिछोरी। दशन चमक अधरन अरुणाई देखत परी ठगोरी॥ ब्रज लरिकन सँग खेलत डोलत हाथ लिए फेरत चकडोरी। सूरश्याम चितवत गए मोतन तन मन लिए अजोरी॥४६०॥राग टोडी॥तबते मेरो जिव न रहि सकत।जित देखां तितहीवहमूरति नैननिमें नित लग्योई रहत॥ ग्वालबाल सब संग लगाए खेलतमें करि भाव चलत। उरझिपरचो मेरो मनु तबते कर झटकत चकडोरी हलत॥अब मैं कहा करौं मेरी सजनी सुरति होत तव मदन दहत। सूर श्याम मेरो चित हरिलीन्हौं सकुचछांडि अब तोहिसोंकहत॥६१॥श्रीराधाकृष्णजीकाप्रथमाभिलाप। राग टोडी॥ खेलन हरि निकसे ब्रजखोरी। कटि कछनी पीतांबर ओढे हाथ लिए भौंरा चकडोरी॥ मोर मुकुट कुंडल श्रवणन वर दशन दमक दामिनि छबि थोरी। गए श्याम रवितनयाके तट अंग लसति चंदनकी खोरी॥ औचकही देखी तहां राधा नयन विशाल भाल दिए रोरी।नील वसन फरिया कटि पहिरे वेनी पीठि रुचिर झकझोरी॥संग लरिकिनी चलि इत आवति दिन थोरी अतिछबि जन गोरी। सूर श्याम देखतही रीझे नैन नैन मिलि परी ठगोरी॥६२॥राग टोडी॥ बूझत श्याम कौन तू गोरी।कहां रहति काकी है बेटी देखी नहीं कहूं ब्रजखोरी॥काहेको हम ब्रजतन आवति खेलति रहति आपनी पौरी। सुनति रहतिश्रवणनि नँदढोटा करत रहत:माखनदधि चोरी॥तुम्हरो कहा चोरि हम लैहैं खेलन चलौ संगमिलिजोरी।सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि बातन भुरइ राधिका भोरी॥६३॥ राग धनाश्री॥प्रथम सनेह दुहुँन मन जान्यो। सैन सैन कीनी सब बातैं गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटान्यो॥ खेलन कबहुँ हमारे आवहु नंदसदन ब्रजगांव। द्वारे आइ टेरि मोहिं लीजो कान्ह है मेरो नाउं॥ जो कहिये घर दूरि तुम्हारो बोलत सुनिए टेर।तुमहि सौंह वृषभानु बबाकी प्रातसांझ एक फेर॥ सूधी निपट देखियत तुमकौं ताते करियत साथ। सूरश्याम नागर उत नागरि राधा दोउमिलि गाथ॥६४॥राग नट॥सैननि नागरी समुझाई। खरिक आवहु दोहनीलै यहै मिस छल पाइ॥गाइ

गिनती करन जैहैं मोहिं ले नँदराइ।बोलि वचन प्रमाण कीने दुहुँन आतुरताइ ॥ कनकवदन सुढार सुंदरि सकुचि मुख मुसुकाइ। श्याम प्यारी नैनराचे अति विशालचलाइ॥गुप्तप्रीति जु प्रगट कीन्ही हृदयदुहुँन छिपाइ।सूरप्रभुके वचनसुनिसुनि रही कुँवरिलजाइ॥६५॥राग सारंग॥ गइवृषभानुसुता अपने घर।संग सखीसों कहति चली यह को जैहै खेलनइनकेदुर॥बडी बेर भइ यमुना आए खीझति ह्वैहै मैया।वचन कहति मुख हृदय प्रेमसुख मन हरि लियो कन्हैया॥ माता कही कहां हुती प्यारी कहां अबार लगाई। सूरदास तब कहति राधिका खरिक देखिमैं आई ॥ ६६ ॥ राग रामकली ॥ नागरि मनहिं गई अरुझाइ। अतिविरह तनु भई व्याकुल घर न नेक सुहाइ॥श्याम सुंदर मदनमोहन मोहनीसी लाइ।चित्त चंचल कुँवरि राधा खान पान भुलाइ ॥ कबहुं बिलपति कबहुं बिहँसति सकुचिबहुरि लजाइ।मात पितुको त्रास मानति मन विना भई वाइ ॥ जननिसों दोहनी माँगति बेगिदेरी माइ । सूर प्रभुको खरिक मिलिहौं गए मोहिं बोलाइ॥६७॥ राग धनाश्री॥ मोहिं दोहनी दे री मैया।खरिकमाहिं अवहीं ह्वैआई अहिर दुहत अपनी सब गैया॥ ग्वालदुहत तब गाइ हमारी जब अपनी दुहिलेत। घरिक मोहिं लगिहै खरिकामें तूआवे जनिहेत॥शोचति चली कुँवरि घरहीते खरिका गइसमुहाइ। कबदेखौंवह मोहनमूरतिजिन मन लियो चुराइ॥देखी माइ तहाँ हरि नाहीं चक्रत भई सुकुमारि।कबहूं इत कबहूं उत डोलत लागी प्रीति खुमारि॥नंद लिए आवतहरि देखे तब पायो विश्राम।सूरदासप्रभुअंतर्यामी कीन्हो पूरणकाम ॥६८॥ नंदराय खरिकै हरि लीन्हे।देखी तहां राधिका ठाढी श्याम बुलाइलई तहँ चीन्हे ॥ महर कह्यो खेलहु तुम दोऊ दूरि कहूं जनि जैहौ। गनती करत ग्वालगैयनकी मुहिं नियरेतुम रहियो ॥ सुनुबेटीवृषभानु महरिकी कान्हहि लिये खिलाइ। सूर श्यामको देखे रहिहौ मारै जनि कोउ गाइ ॥ ६९ ॥ राग नट॥नंदबबाकी बात सुनो हरि। मोहिं छाँडिकै कबहूं जाहुगे ल्याऊंगी तुमको धरि ॥ भली भई तुम्हैंसौंपिगये मोहिं जान न दैहौं तुमको। बाहँ तुम्हारी नेकु न छांडिहौंमहरिखीझिहैं हमको॥ मेरीबाहँ छाँडिदे राधा करत उपरफटवातें ॥ सूरश्यामनागर नागरिसों करतप्रेमकी घातें ॥७०॥ राग नट॥ नीवी ललित गही यदुराई। जबहिं सरोज धर्यो श्रीफलपर तब यशुमति गइ आई॥ तत्क्षण रुदन करत मनमोहन मनमेंबुधि उपजाई।देखो ढीठि देति नहिंमाता राख्योगेंद चुराई॥काहेको झकझोरत नोखे चलहु न देउँ बताई।देखि विनोद बालसुतको तब महरि चली मुसिकाई॥सूरदासके प्रभुकी लीला को जानै इहि भाई॥७१॥राग धनाश्री॥बालनमेलइगयालाइ।चलहु जैयेविपिन वृन्दा कहत श्याम बुझाइ ॥ जब जहां तन भेष धारौं तहां तुम हित जाइ। नेकहू नहिं करौं अंतर निगम भेद न पाइ ॥ तब परशि तन ताप मेटौं काम द्वंद्व बहाइ। चतुर नागरि हँसि रही सुनि चंद्रवदन नवाइ॥मदनमोहन भाव जान्यो गगन मेघ छिपाइ। श्यामश्यामा गुप्त लीला सूर क्यों कहै गाइ ॥७२॥ अथ सुखविलास॥राग मलार ॥ गगन गरजि घहराइ जुरी घटा कारी। पौन झकझोर चपला चमकि चहुँ ओर सुवनतन चितै नंद डरत भारी ॥ कह्यो वृषभानुकी कुँवरिसों बोलिकै राधिकाकान्ह घरलियजारी।दोऊ घर जाहुसंग नभ भयो श्याम रंग कुँवरगह्यो वृषभानवारी॥ गये बन घन ओर नवल नंदनंद किशोर नवल राधा नए कुंज भारी। अंग पुलकित भए मदन तिनतन जए सूरप्रभु श्यामश्यामाबिहारी॥७३॥राग कमोद॥नयो नेहु नयो गेहु नयो रस नवल कुँवरि वृषभानु किशोरी।नयो पीतांबर नई चूनरी नईनई बूँदनि भीजति गोरी॥नएकुंज अति पुंज नए द्रुम सुभग यमुनजल पवन हिलोरी। सूरदास प्रभुनवरस विलसत नवलराधिका यौवनभोरी ॥७४॥ राग कान्हरा ॥ नवल गुपाल नवेली राधा नये प्रेमरस पागे।नव तरु वनविहार

दोऊ क्रीडत आपु आपु अनुरागे ॥ शोभितशिथिल वसनमनमोहन सुखवत सुखके वागे।मानहुँ
बुझी मदनकी ज्वाला बहुरिप्रजारन लागे॥कबहुँक बैठि अंशभुजधरिकैपीककपोलनिदागे। अति
रसराशिलुटावतलूटतलालचलगे सभागे ॥ मानहुँ सूर कल्पद्रुमकी निधिलैउतरीफल आगे।नहिं
छूटति रति रुचिर भामिनी ता सुखमेंदोउपागे॥७५॥राग मलार॥उत्तारतहैंकंठनितेहार।हरिहरमि-
लत होतहै अंतर यह मन कियो बिचार ॥ भुजा वामपर कर छबि लागति उपमा अंत न पार।
मनहु कमल दल कमल मध्यते यह अद्भुत आकार ॥ चुंबत अंग परस्पर जनु युग चंद करत
हितवार। रसन दशन भरि चापि चतुर अति करत रंग विस्तार ॥ गुण सागर अरु रस सागर
निधि मानत सुखव्यवहार । सूर श्यामश्यामानवसर मिलि रीझे नंद कुमार ॥७६॥ राग कान्हरो॥
नवल किशोर नवल नागरिया। अपनी भुजा श्यामभुज ऊपर श्यामभुजा अपने उर धरिया ॥
क्रीडा करत तमालतरुन तर श्यामा श्याम उमगि रसभरिया । यों लपटाइरहे उर उर ज्यों मर-
कतमणि कंचनमें जरिया॥ उपमा काहि देउँ को लायक मन्मथ कोटि वारने करिया। सूरदास
बलिबलि जोरीपर नंदकुमर वृषभानदुलरिया॥ ७७॥ राग गौरी ॥ आजु नँदनंदन रंगभरे। विवि
लोचन सुविशाल दोउनके चितवत चित्त हरे॥भामिनि मिलि परम सुख पायो मंगल प्रथम करे।
करसों करज करयो कंचनज्यों अंबुज उरज धरे॥आलिंगन दै अधरपान कर खंजन खंज लरे
हठ करि मानकियो नवभामिनि तबगहिपाइँपरे॥लैगए पुलिनमध्य कालिंदी रसवश अनंग अरे।
पुहुपमंजरी मुक्तनि माला अँग अनुराग भरे ॥ मुरलिनाद मुख बेनु सुधा सुनि तपि अनतप जो
टरे । रचना सूरची वृंदावन आनँदकाजकरे॥७८॥ राग नट ॥हरि हँसि भामिनी उरलाइ।सुरतिवंत
गुपाल रीझे जानि अतिसुखदाइ॥हरपि प्यारी अंक भरि पियरही कंठ लगाइ।हाव भाव कटाक्ष
लोचन कला कोक सुभाइ॥देखि बाला अतिहि कोमल मुख निरखि मुसुकाइ। सूरप्रभु रति-
पतिके नायक राधिका समुझाइ॥७९॥गौड मलार॥ नवल सुनि नवलप्रिया नयोनयो दरश विवि
तन मलमले प्राणपतिपीयको अधर धरयो री।प्रीतिकी रीति प्राण चंचल करत निरखि नागरिनिन
चिबुक सो मोरी॥नव कामकेलि कमनीय चंदपै चकोर चातक स्वातिबूँद परचोरी।सुनि सूरदास
रसराशि रस बरसिकै चली जनुहरनि लै कुहुसि गोरी॥८०॥यह मनराग गौरी॥तुरत गए नँदसदन
कन्हाई।अकम दै राधा घर पठई बादर जँहतहँ दिएउडाई॥प्यारीकी सारीआपुनलै पीतांवरराधा
उर लाई।जो देखै यशुमति हरि ओढे मनयह कहति कहाँ धौं पाई॥जननी नैन जबहिं लखिलीने
तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई।सूरदास सुतसों यशुमति कहै पीत उढनियां कहां गँवाई॥ ८१॥
राग सारंग ॥पीत उढनियां कहां बिसारी।यह तौ लाल ढिगनिकी औरै है काहूकी सारी॥हौं गोधन
लैगयो यमुनतट तहां हुतीं पनिहारी । भीर भई सुरभी सब बिडरीं मुरली भली सँभारी॥ हौं
लैगयो औरकाहूकी सो लैगई हमारी।सूरदास प्रभु भली बनाई बलि यशुमतिमहतारी ॥८२ ॥
रागधनाश्री॥मैयारी मैं जानत वाको।पीतउढनियां जो मेरी लैगई लैआनौं धरि ताको ॥ हरिकी
माया कोउ न जानै आँखिधूरिसी दीनी।लाल ढिगनिकी सारी ताको पीत उढनियां कीनी ॥
पीतांवर लै जननि दिखायो लै आन्यो तेहि पास । सूर सबदिवस कहति यशोदा तरुनि पढा-
वत गास॥८३॥श्यामहिं देखि महरि मुसुकानी।पीतांवर काके घर बिसरयो लाल ढिगनकी
सारी आनी॥ओढनी आनि दिखाई बाको तरुनिनकी सिखई बुधि ठानी।घर घर लै ऐसी सुत
भुरवति ऐसी सबै दिननकी जानी।हरि अंतर्यामी रतिनागर जानिलई जननी पहिचानी।

सूर निरखि मुख सकुचि भगाने या लीलाकी यहै सयानी ॥ ८४ ॥ राग कल्या ॥सुंदरि गई गृह समुहाइ। दोहनी कर दूध लीन्हे जननिटेरि बुलाइ ॥ प्रेमप्रीति निचोल हरिको कहूं धर्यो छिपाइ।औरकी औरैकहति कछु मात मनहिडराइ॥कुँवरिकों कहुँ डीठि लागी निरखिकै पछिताइ। सूर तब वृषभानुघरनी राधिका उर लाइ ॥ ८५ ॥ जननी कहति कहाभयो प्यारी ।अबहीखरिक गई तू नीके आवतही भई कौन बिथा री॥एक विटिनियां सँग मेरे थी कारे खाई ताहितहां री। मों देखत वह परी धरणि गिरि मैं डरपी अपने जिय भारी॥श्यामवरण एक ढोटाआयो यह नहिं जानत रहत कहाँ री । कहत सुनौं वह नंदको बारो कछु पढिकै वह तुरतहि झारी ॥ मेरो मन भरिगयो त्रासते अब नीको मोहि लागतु मा री। सूरदास अतिचतुर राधिका यह कहि समुझाई महतारी॥ ८६ ॥ गौडमलार ॥कुँवरिसों कहति बृषभानुघरनी । नेक नहिं घर रहति तोहि कितनो कहति,रिसनिमुहि दहति बन भईहरनी ॥ लरिकिनी सबनि घर तोसी नहि कोउ निडर, चलति नभ चितै जो तकै धरनी । बडी करवर टरी सांपसों ऊबरी,बातके कहत तोहि लगति जरनी॥ लिखी मेटै कौन कर्ता करै जौन,सोइ ह्वैहै होनहारी करनी। सुतालई उरलाइ तन निरखि पछिताइ, डरनि गई कुँभिलाइ सूर वरनी ॥८७॥ महर बृषभानकेयहकुमारी ।देवधामीकरत द्वारद्वारे परत,पुत्र द्वै तीसरीयहै बारी ॥ भई बरषसातकी शुभघरी जातकी, प्यारी दुहुँभ्रातकी बची भारी। कुँवरि दई अन्हवाइ गई तन मुरझाइ,वसन पहिराइ कछु कहति खारी ॥ जाहि जनि खरिकतन खेलि अपने सदन,यह सुनत हँसति मन श्यामनारी। सूर प्रभुध्यान धरि हरषि आनंदभरि,गाँव घर खेलिहौंकहति का री॥८८॥ श्रीराधिकाजीको यशोदा गृह गवन ॥ राग आसावरी॥खेलनके मिसकुँवरि राधिका नंदमहरके आई हो ।सकुचसहित मधुरे करि बोली घर हौ कुँवर कन्हाई हो ॥ सुनत श्याम कोकिलसम बाणी निकसे अति अतुराई हो । मातासों कछु करत कलह हरि सो डार्यो बिसराई हो ॥ मैया री तू इनको चीन्हति बारंवार बताई हो यमुना तीर कालिह मैं भूल्यौं बांह पकरि लै आई हो ॥ आवति यहां तोहिं सकुचतिहै मैं दै सौंह बुलाई हो। सूरश्याम ऐसे गुण आगर नागरि बहुत रिझाई हो ॥ ८९ ॥ को जानै हरिकी चतुराई। नैनसैन संभाषण कीनो प्यारीकी उर तपनि बुझाई ॥ मनही मन दोउ रीझि मगन भए अति आनंद उरमें न समाई। करपल्लव हरि भाव बतावत एक प्राण द्वै देह बनाई ॥ जननीहृदय प्रेम उपजायौ कहति कान्हसों लेहु बुलाई ।सूरश्याम गहि बाहँ राधिका ल्याए महरि निकट बैठाई ॥ ४९० ॥ राग सूहे॥ देखि महरि मनहीं जु सिहानी। बोलिलई बूझति नँदरानी कुँवर कहति मधुरे मधुवानी॥ब्रजमें तोहिं कहूं नहिं देखी कौन गाउँ है तेरो ।भली करी कान्हहि गहि ल्याई भूल्यो हतो सुत मेरो ॥ नयन विशाल बदन अतिसुंदर देखत नीकी छोटी। सूर महरि सविनासों विनवति भली श्यामकी जोटी॥ ९१ ॥ राग नट ॥नामु कहा है तेरो प्यारी। बेटी कौन महरकी है तू कहि सु कौन तेरी महतारी ॥ धन्य कोख जिन तुमको राख्यो धन्य घरी जिहि तू अवतारी। धन्य पिता माता धनि तेरो छवि निरखति हरिकी महतारी। मैं बेटी वृषभानुमहरकी मैया तुमको जानति।यमुनातट बहुबार मिलन भयो तुम नाहिंनपहिंचानति ॥ ऐसी कहि वाको मैं जानति वे तो बडी छिनारि । महर बडो लंगर सब दिनको हँसत देति मुख गारि॥ राधा बोलि उठी बाबा कछु तुमसों ढीठी कीनी।ऐसे समरथ कब मैं देखे हँसि प्यारी उर लीनी ॥ महरि कुंवरिसों यह करि भाषति आउ करों तेरीचोटी।सूरदास हरषी नँदरानी कहति महरि हम जोटी ॥ ९२ ॥राग गौरी॥यशुमति राधा कुँवरि सँवारति। बडे बार श्रीवंत शीशके प्रेमसहित लैलै निर-

वारति ॥ माँग पारि बेनीहि सँवारति गूंथी सुंदरभांति।गोरे भाल बिंदु चंदन मनौ इंदु प्रातरवि-कांति ॥ सारी चीर नई फरियालैअपने हाथबनाय।अंचलसौं मुख पोंछिअंगसब आपुहि लै पहि-राइ॥ तिल चाँवरी बतासे मेवा दियोकुँवरिके गोद । सूर श्याम राधा तन चितवत यशुमति मनमन मोद॥९२॥ अथश्यामराधाखेलनसमय ॥राग कल्याण॥ खेलोजाइश्यामसँगराधा॥यहसुनिकुवँरि हरष मन कीनों मिटी जुअंतरबाधा॥जननी निरखिचकित भईठाढी दंपतिरूप अगाधादेखत भाव दुहुनको सोई जो चितकरि अवराधा॥सँग खेलत दोउ झगरन लागे शोभा बढी अगाधा।मनहु तडितघन इंदु तरनिहै बाल करत रस साधा ॥ निरखत बिधि भ्रम भूलि परयो तब मन मन करत समाधा। सूरदास प्रभु और रच्यो विधि शोच भयो तन दाधा ॥९४॥राग केदारो॥ विधिके आनविधिको शोचु । निरखि छबि वृषभानुतनया सकल श्रम कृत पोचु॥ रमा गौरी उर्वशी रति इंदिरा विभव समेति । तुल्य दिनमणि कहा सारँग नाहिं उपमा देति ॥ चरण निरखि निहारि नख-छवि अजित देखैं तोकि । चित्त गुण महिमा न जानत धीर राखति रोकि ॥ सूर आन विरंचि विरचे भक्त निज अवतार । अबलके बल सबल देखि अधीन सकल शृंगार ॥९९॥ राधा गृहगवन ॥रागनट ॥ राधे महरिसों कहि चली । आनि खेलौ रहसि प्यारी श्याम तुम हिलमिली ॥ बोलि उठे गुपाल राधा सकुच जिय कत करति। मैं बुलाऊं नहीं आवति जननिको कत डरति॥ मैया यशोदा देखि तोको करति कितनो छोहु । सुनत हरिकी बात प्यारी रही मुख तन जोहु॥ हँसि चली वृषभानु तनया भई बहुत अबार । सूर प्रभु चितते टरत नहिं गई घरके द्वार ॥९६॥ राग बिहारो ॥बूझतिजननी कहां हुतीप्यारी।किनतेरे भाल तिलक रचि कीनोंकिहि कचगुंदि मांग शिर पारी॥खेलतरही नंदके आंगन यशुमतिकही कुवँरि ह्यां आरी।तिल चावँरी गोद करि दीनी फरिया दई फारि नव सारी॥मेरो नाउँबूझि बाबाको तेरोबूझि दई हँसि गारी । मोतन चितैचितै ढोटातन कछु सवितासों गोद पसारी ॥यह सुनिकै वृषभानु मुदितचित हँसिहँसि बूझति बातदु-लारी ।सूर सुनत रससिंधु बढ्योअति दंपति मनमें यहै बिचारी॥९७॥ राग गौरी॥मेरे आगे महरि यशोदा मैया री तोहिं गारी दीन्ही।वाकी बात सबै मैंजानति वै जैसी तैसी मैंचीन्ही॥तोकोकहि पुनि कह्यो बबाको बडो धूर्त वृषभानु ।तबमैं कह्यो ठग्योकबतुमको हँसिलागी लपटान॥ भली कही तैं मेरी बेटी लयो आपनो दाउ।जो मुहि कह्यो सबै उनके गुण हँसिहँसि कहत सुभाउ॥फीरि फेरि बूझति राधासों सुनत हँसतसबनारि।सूरदास वृषभानुघरनि यशुमतिको गावति गारि॥९८॥ राग गौरी॥कहतकान्ह जननी समझाई।जहँ तहँ डारे रहत खिलौना राधा जनि लैजाइ चुराई॥सांझ सवारे आवनलागी चित रहति मुरली तन आइ । इनहींमें मेरो प्राण बसतुहै तेरे भाए नेकु न माइ॥राखि छपाइ कह्यो करि मेरो बलदाऊको जनि पतिआइ।सूरदास यह कहति यशोदा को लैहै मुहि लगो बलाइ ॥९९॥ राग आसावरी॥ मेरे लालके प्राण खिलौना ऐसो को लैजैहै री।नेक सुनन जो पैहौंताको सोकैसे व्रजरैहै री॥बिनदेखे तू कहा करैगी सो कैसे प्रगटैहै री।अजहूँ राखि उठाइ री मैया मांगते कहा दैहै री॥आवतही लैजैहैराधा पुनिपाछे पछितैहै री।सूरदास तबकहत यशोदा बहुरि श्याम बिरुझैहै री॥५००॥रागनट॥ सैंतति महरिखिलौनाहरिके।जानति टेउआपने सुतकी रोवतिहै पुनि लरिकै॥धरि चौगानु दैन मुरली धरि अरु भौंरा चकडोरी।प्रेमसहित धरि धरि लैराखति जे सबमेरेकोरी॥श्रवणनि सुनत अधिकरुचि लागति हरिकी बतियां भोरी । सूर श्यामसों कहति यशोदादूध पियहु बलि तोरी॥१॥आजु सवारेधेनु दुहींमें वहै दूध मोहिंप्यारी री।

सुन मैया मैंतो पय पीवों मोहिं अधिक रुचि आवै री॥और धेनुको दूध नपीवों जोकरिकोटि बनावै री।जननी कहति दूध धौरीको मोको सौंह करावै री॥तुमते मोहिं और को प्यारो बारंबार मनावै री । सूरश्यामको पय धौरीको माता हितसों ल्यावै री॥२॥ आछो दूध पियो मेरे तात । तातो लगत वदन नहिं परशत फूकि देतहै मात ॥ औटि धरचो अबहीं मनमोहन तुम्हरे हेत बनाइ । तुम पीवो मैं नयनन देखों मेरे कुवँर कन्हाइ ॥ दूध अकेली धौरीको है तनको अति हितकारी। सूर श्याम पय पीवनलागे अति तातो दियो डारी॥३॥राग बिहागरो॥देखत पय पीवत बलराम । तातो लगत डारि तुम दीनों दावानल पीवत नहिं ताम ॥ कबहूं रहत मौन धरि जलमें कबहूं फिरतबँधावत दाम।कबहुंअघासुरवदन समाने कबहुँ अँध्यारे जात न धाम॥कबहुँ करतबसुधा सब त्रयपद कबहूं देहरि उलंघि न जाइ।पट दश सहस गोपिका विलसत वृंदावन रसरासरमाइ॥ इहै जानि अवतार धरत ब्रज सुर नर मुनि यह भेद न पाई।राजा छोरि बंदिते ल्याए तिहूंलोकमें विदित बडाई ॥ युगयुग ब्रज अवतार लेत प्रभु अखिल लोक ब्रह्मांडके नाथ । यई गोप यह ग्वाल इहै सुख यह लीला कहुँ तजत न साथ ॥ एई कान्ह इहै वृंदावन यह यमुना यह कुंज बिहार।यहै बिहार करत निशिवासर येई हैं जनके प्रतिपार॥येई हैं श्रीपति बहुनायकएईहैंकर्ता संसार ।रोम रोम प्रति अंग कोटि रवि मुख चूमति यशुमति कहि बार॥एई कंस केवर सँहारचो ब्रह्म धरचो कृष्ण अवतार।माखन खात चुराइ घरनते बहुत बार भए नंदकुमार॥आदिअंत कोऊ नहिं जानतु हरता करता सबके सार।सूरदास प्रभु बाल अवस्था तरुण वृद्धको करे निवार॥४॥ राग केदारा॥ बलिबलि चरित गोकुल राइ । दावानलको पान कीन्हो पीवत दूध सिराइ ॥ पूतनाहठि प्राण लीन्हें अपुन उर लपटाइ। कहति जननी दूध डारत खिझत कछु अनखाइ॥ धरचो गिरिवर दोहनी कर धरत बाँह पिराइ । शकटभंजन मथन कुचयुग कठिन लागत पाइ ॥ तृणावर्त अकाशते पटक्यो शिलापर जाइ । डरत लाल हिंडोर झूलत हरे देत झुलाइ॥ बकासुरकी चोंच फारे स्वैं दिए देखाइ । कीर पिंजरा गहत मोहन अँगुरि लेत अगाइ॥ बिना दीपक सदनमहियां तहां धरन न पाइ।अघासुरमुख पैठि निकसे बालबच्छ बढाइ। लिख्यो कोरे नाग काजर ताहि देखि डराइ । सुनत कालीनाग फनफनि नृत्य ताल बजाइ ॥ यमलअर्जुन तोरि तारे हृदय प्रेम बढाइ । झटकि पात पलाश पहन मुंह पेंग दिखाइ ॥ हरे बालक वत्स सबकुल देत दौरि माइ । चरत धेनु न मिलीं तिनको आप फेरे धाइ ॥ वृषभ गंजन मथन केशी हने पूंछ फिराइ । भजन सखा समेत मोहन देखि ब्याह गाइ ॥ गोपनारी संग मोहन कियो रास बनाइ । कहति जननी ब्याहको तब रहत बदन दुराइ ॥ कहा बरणों कोटि रसना हिये बुधि उपजाइ । सूरके प्रभु रसिक हरि पर अंग अंग बिहाइ ॥ ५ ॥अथ गोचारन॥राग रामकली ॥ आज मैं गाइ चरावन जैहों । वृंदावनके भाँति भाँति फल अपने कर मैं खैहों ॥ऐसी अबहिं कहो जनि बारे देखौ अपनी भांति । तनक तनक पाँइन चलिहो कैसे आवत ह्वैहै राति ॥ प्रात जात गैयां लै चारन घर आवतहैं सांझ । तुम्हरो कमल बदन कुम्हिलैहै रेंगत घामहिं मांझ ॥ तेरी सों मोहिं घाम न लागत भूख नहीं कछु नेक । सूरदास प्रभु कह्यो न मानत परे आपनी टेक॥ ॥ ६ ॥ मैया हों गाय चरावन जैहों । तू कहि महर नंदबाबासों बडो भयो न डरैहों ॥ तेरे हत मात मनसुख अरु हलधर संगहि रैहों । वंशी बट तर गाइनके संग खेलत अति सुख पैहों॥ओदन भोजन दे दधि कांवरि भूख लगे तो खैहों । सूरदास है साथ सौंह दै जो यमुनाजल न्हैहों ॥ ७ ॥ चले सब गाइ चरावन ग्वाल । हेरी टेर सुनत लरिकनकी दौरि गए नँदलाल ॥ फिरि इतउत ह्वै देखै यशुमति दृष्टि न परे कन्हाइ। जान्यो जात ग्वाल सँग दौरचो टेरति

यशुमति धाइ ॥ जात चल्यो गैयनके पाछे बलदाऊ कहि टेरत। पाछे आवत जननी देखी फिरि फिरिइतको हेरत ॥ बल देख्यो मोहनको आवत सखा किए सब ठाढे। पहुँची आइ यशोदा रिससों दोउ भुजु पकरे गाढ़े ॥ हलधर कह्यो जानदे मोसँग आवहिं आजसवारे। सूरदास बलसों कहै यशुमति देखेरहियो प्यारे ॥ ८ ॥ राग बिलावल ॥ खेलत श्याम चले ग्वालनसँग। यशुमति कहति इहै घरआई देखौ हरि कीने जेजे रँग ॥ प्रातहिते लागे एही ढँग अपनी टेक परयोहै। देखौ जाइ आज बनको सुख कहा परोसि धरयोहै॥ माखन रोटी अरु शीतलजल यशुमतिदियो पठाइ। सूर नंद हँसि कहत महरिसों आवत कान्ह चराइ ॥९॥ राग सारंग ॥ हरिजूको ग्वालिनि भोजन ल्याई। वृन्दाविपिन विशदयमुनातट शुचिज्योंनार बनाई ॥ सानिसानि दधिभातु लियो कर सुहद सबनि कर देत। मध्य गुपालमंडली मोहन छाँक बांटिकै लेत ॥ देवलोग देखत सब कौतुत बालकेलि अनुरागी। गावत सुनत सुरन सुख करि मनो सूर दुरित दुख भागी ॥१०॥ राग सारंग ॥ बृंदावन देखे नँदनंदन अतिहि परम सुख पायो। जहं जहं बाल गाइ सँग डोलत तहँ तहँ आपुन धायो ॥ बलदाऊ मोको जिन छांडो संग तुम्हारे ऐहों ॥ कैसेहुँ आज यशोदा छांड्यो काल्हि न आवनपैहों ॥ सोवत मोकों हेरिलईंगे बाबानंद दुहाई। सूरश्याम बिनती करैं बलसों सखनसमेत सुनाई ॥११॥ अथ धेनुकवध। राग भैरव ॥ सखा कहनलागे हरिसों तब। चलौ तालवनको जैये अब ॥ ता बनमें फल बहुत सुहाये। वैसे हम कबहूं नहिं खाए ॥ असुर धेनुक तहँा है रखवारी। चलो कहैं हँसि बलि बनवारी ॥ बिहँसत हरिसँग चले गुआला। नाचत गावत गुण गोपाला ॥ सोयो हुतो असुर तरुछाया। सुनत शोर तरुते उठि धाया ॥ हलधरको देखे तिन आवत। ये दोउ बलकर जोर चलावत ॥ पकरि ताहि बलभद्र फिरायो। मारि ताहि तरुमाहिं गिरायो ॥ और बहुत ताको परिवारो। हरि हलधर तिन सबको मारो ॥ ग्वालन बनफल रुचिसों खाए। बहुरो वृन्दावनहिं सिधाए ॥ हरि हलधरछबि वरणि न जाई। सूरदास इह लीला गाई ॥ १२ ॥ राग गौरी ॥ बनते आवत धेनु चराये। संध्या समय सांवरे मुखपर गोपदरज लपटाये ॥ बरहमुकुटके निकट लसति लट मधुप बने रुचि पाये। विलसत सुधा जलदआननपर उडत न जात उड़ाये ॥ विधिवाहन भक्षनकी माला राजत उर पहिराये ॥ इकवपु रही नाहि बड छोटे ग्वाल बने इक दाये। सूरदास मिलि लीला प्रभुकी जीवत जन यश गाए ॥ १३ ॥ आजु हरि धेनु चराये आवत। मोर मुकुट बनमाल विराजत पीतांबर फहरावत ॥ जिहि जिहि भांति ग्वाल सब बोलत सुनि श्रवणन मन राखत। आपुन टेरिलेत नान्हेसुर हरपितमुख पुनि भापत ॥ देखत नंद यशोदा रोहिणि अरु देखतब्रज लोग। सूर श्याम गाइन सँग आये मैया लीनो रोग ॥ १४ ॥ यशुमति दौरि लए हरिकनिया। आजु गयो मेरो गाइचरावन हौं बलिगई निछनियां॥ मोकारणकछु आन्योहै बलि बनफल तोरि कन्हैया। तुमहिं मिले मैं अति सुख पायो मेरे कुँवर कन्हैया ॥ कछुक खाहु जो भावै मोहन देरी माखन रोटी। सूरदास प्रभुजीवहु युगयुग हरि हलधरकी जोटी ॥१५॥ राग सारंग ॥ मैं अपनी सब गाइ चरैहौं। प्रात होत बलके सँग जैहौं तेरे कहे न भुरैहौं ॥ ग्वालबाल लैगाइनभीतरनेकहु नहिं डर लागत। आजु न सोवों नंददुहाई रैनि रहौंगो जागत॥ औरग्वाल सब गाइ चरैहैं मैंघर बैठो रैहौं। सूर श्याम अबसोइरहौं तुम प्रात जान मैंदैहौं ॥ १६ ॥ राग केदारो ॥ बहुते दुखहरि सोइ गयोरी। सांझहिते लाग्यो यहि बातहि क्रम क्रमते मन बोधि लयो री ॥ एक दिवस गयो गाइ चरावन ग्वालन साथ सवारे। अबतौ सोइरह्योहै कहिकै प्रातहि कहा बिचारे॥ यहतौसबबलरामहिं लागे सँग लैगयो लिवाइ। सूर नंद यह कहतमहरिसों आवनदेफिरिधाइ॥ १७॥ राग बिलावल॥ करहु

कलेऊ कान्ह पियारे । माखन रोटी दियो हाथपर बलिबलि जाऊँ हौं खाहु ललारे॥ टेरत ग्वाल द्वारके ठाढे आए तबके होत सबारे।खेलहु जाइ ब्रजहिके भीतर दूरि कहूँ जनि जैयहु प्यारे॥ टेरि उठे बलरामश्यामको आवहु धाइधेनु बनचारे।सूरश्याम कर जोरि मातसों गाइचरावनकहतहमारे ॥ १८॥ राग बिलावल ॥मैया री मोहि दाऊ टेरत । मोकों वनफल तोरिदेतहैं आपुन गैयनघेरत॥ और ग्वाल सँग कबहुँ न जैहौं वे सब मोहिं खिझावत । मैं अपने दाऊसँग जैहौं बनदेखत सुख पावत॥आगे दै पुनि ल्यावत घरको तू मुहिं जान नदेति । सूरश्याम कहै यशुमति मैया हा हा करिकारि केति ॥ १९ ॥ राग सारंग॥बोलि लियोबलरामहिंयशुमति।आवहु लाल सुनहुहरिकेगुण कालिहिते लंगरचौ करत अति ॥ श्यामहिं जानदेहु मेरे सँग तू काहे डरपावति । मैं अपने ढिगतेनहिं टारौं जियहि प्रतीति न आवति॥ हँसी महरिबलकीबातैं सुनि बलिहारी या मुखकी। जाहु लिवायसूरकेप्रभुकोकहत वीरके रुखकी॥५२०॥राग नट ॥अति आनंद भयो हरिधाए।टेरत ग्वालबाल सब आवहु मैया मोहिं पठाए॥ उतते सखाहँसत सब आवत चलहुकान्हबन देखहु। बनमाला तुमको पहिरावहिं धातुचित्र तन रेखहु॥ गाइ लेइ सब घेरि घरनते महर गोपके बालक। सूर श्याम चले गाइ चरावन कंस उरहिके शालक॥२१॥ राग सारंग॥ चरावत बृंदावनहरिगाइ। सखा लिए सँग सुबल श्रीदामा डोलतहैं सुख पाइ ॥ क्रीडा करत जहां तहां सब मिलि आनंद बढइ बढाइ । बगरिगईं गैयांबनवीथिनि देखी अतिबहुताइ ॥ कोउगए ग्वाल गाइ बनघेरनकोउ गए बछरु लिवाइ । आपुहि रहे अकेले बनमें कहुँ हलधर रहे जाइ॥बंशीवट शीतल यमुनातट अतिहि परम सुखदाइ । सूर श्याम तब बैठि विचारत सखा कहां बिरमाइ ॥ २२ ॥ बार बार हरि कहत मनहिं मन अबहिं रहे सँग चारत धेनु । ग्वालबाल कोउ कतहुँ न देख्यो टेरत नाँउ लेत दै सैनु ॥ आलसगात जानि मनमोहन बैठे छाँह करत सुख चैनु । अकनि रहत कहुँ सुनत नहीं कछु नहिं गोरंभन बालकेबैनु ॥ तृषावंत सुरभी बालकगण कालीदह अचयो जलजाइ । निकसि आइ सब तट ठाढे भए बैठि गए जहाँ तहाँ अकुलाइ॥बन घन ढूँढिश्याम तहँ आए गोसुत ग्वाल रहे मुरझाइ । मनमहँ ध्यान करतही जान्यो काली उरग रह्यो ह्यां आइ ॥ गरुड- त्रास कारि आइ रह्यो दुरि अंतर्यामी सबके नाथ । अमृत दृष्टि भरि चितै सूर प्रभु बोलि उठे गावत हरि गाथ ॥ २३॥ आवहु आवहु कान्ह जू पाई है सब धेनु । कुंज कुंजमें देखि रहे तृण चरति परम सुख चैन॥ द्रुमन चढे सब सखा पुकारत मधुर सुनावहु बैन । जनि धापहु बलि चरन मनोहर कठिन कंठ मनऐन ॥ बार बार ब्रज कौन उबारै पियो कालीदह फैन । सूर श्यामसंतनहित कारनप्रगटभयेसुख दैन॥२४॥ राग सारंग ॥पाईपाई है भैयाकुञ्ज वृन्दमैं टाली। अबके अपनी हटकि चरावहु जैहैं हटकी घाली ॥ आवहु वेगि सकल दुहुँ दिशिते कत डोलत अकुलाने। सुनि मृदु वचन देखि उन्नत कर हरपि सबै समुहाने॥तुम तौ फिरत अनतहीं ढूँढत ये वन फिरति अकेली । हांकी गाइ कौन पर लैहौं सघन बहुत द्रुम बेली ॥ सूरदास प्रभु मधुर वचन कहि राखत सबहि बुलाए॥ नृत्यकरतआनँद गौचारत सबै कृष्णपैआए२५॥रागरामकली ॥ ताते तरकि कह्यो बनमाली ।पशु तन चपल स्वरूप न जानत डोलत चाली चाली ॥ धरि तन सगुण त्रिपद पूरण प्रभु आपु कमल प्रतिपाली । यद्यपि वृषभ सुता पति तजिकै फिरति कुमति- की घाली ॥ अति श्रम भयो सकल वनढूँढत बन बेलीदो जाली । सूरदास संतन जन हित हरि इहि अब सबते टाली ॥२६॥ नट नारायणी ॥मोहिं बन छाँडि आए सब ग्वाल । कहांते कहां आइ

निकसे करे कैस ख्याल ॥ मुरछि काहे गिरे धरणी कहा यह जंजाल।मैं यहां जो आइ देखोपरे सब बेहाल॥ आनि अँचयो जल यमुनको तबहि गए अकुलाइ। निकसिकै जब कूल आए गिरि परे सब आइ॥प्राणबिनु हम सब भये ते तुमहिं दियो जिवाइ।सूरके प्रभु तुम जहां तहँ हमहिं लेत बचाइ ॥२७॥ राग गौरी॥बलदाऊ कहि श्याम पुकारयो।आवहुबेगि चलौ घर जैये बनहींमें पुनि होत अंध्यारो॥ल्याए बोलि सखा हलधरको हँसे श्याम मुख चाही। बडीबेर भई तुमहिं कन्हैया गाइन लेहु निबाही ॥ हेरी देत चले सब बनते गोधन दिए चलाई। सूरदास प्रभु राम श्याम दोउ व्रजजनके सुखदाई ॥ २८ ॥वृंदावन प्रवेश शोभा। राग गौरी॥वे मुरलीकी टेर सुनावत। वृन्दावन बसि वासर सब निशि आगम जानि चले व्रजआवत ॥ सुबल सुदामाअरु श्रीदामासंग सखा मोहन छबि पावत। सुरभीगण सब लै आगे करि कोउ टेरत कोउ बेणु बजावत ॥ केकीपच्छ मुकुट शिर भ्राजित गौरी राग मिले रस गावत।सूरश्यामके ललित वदनपर गोरज-छबि कहुँ चंद छपावत ॥ २९ ॥हरि आवत गाइनके पाछे। मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल नयन विशाल कमलते आछे ॥ मुरली अधर धरन सीखतहैं बनमाला पीतांबर काछे। ग्वालबाल सब वरणवरणके कोटि मदनकी छबि कियो पाछे॥पहुँचे आइ श्याम व्रजपुरमें घरहि चले मोहनबल आछे।सूरदासप्रभु दोउजननी मिलि लेतिबलाइबोलि मुख वाछे॥३०॥राग कल्याण आनँदसहित सबै घर आए। धन्य यशोदा तेरो बारो हम सब मरत जिवाए ॥ नरवपु धरे देव यह कोऊ आइ लियो अवतार। गोकुल ग्वाल गाइ गोसुतके एई राखनहार॥ पय पीवतपूतना निपाती तृणावर्त इहि भाँति। वृषभासुर वत्सासुर मारयो रामकृष्ण दोउ भ्रात॥ जबते जन्म लियो व्रजभीतर तबते इहै उपाइ। सूर श्यामके बल प्रतापते बन बन चारत गाइ॥ ३१ ॥ तुम कत गाइ चरावन जात। पिता तुम्हारो नंदमहरसो जाके यशुमतिसी है मात ॥ खेलत रहो आपने घरमें माखन दधि भावै तब खात। अमृतवचन कहोमुख अपने रोम रोम पुलकित सब गात ॥ अब काहूके जाहु कहुं जनि आवतहैं युवती इतरात। सूर श्याम नैननआगे रहो काहे कहूं जातहो तात॥ ३२ मैया हौं न चरैहौं गाइ। सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों मेरे पाँइ पिराइ ॥ जो नपत्याहि पूछि बलदाउहि अपनीसौंह दिवाइ। यहसुनिसुनि यशुमतिग्वालनिको गारी देत रिसाइ ॥ मैं पठवत अपने लरिकाको आवै मन बहराइ।सूरश्याम मेरो अति बालक मारत ताहि रिंगाइ ॥३३॥ बल मोहन बनते दोउ आए। जननि यशोदा मात रोहिणी हरषि दुहुँनि दोउ कंठ लगाए॥काहे आजु अबार लगाई काहे कमलवदन कुँभिलाए। भूखे भए आजु दोउ भैया प्रातकलेऊ करनन पाए॥देखहु जाइ कहा जेंवन कियो यशुमति रोहिणि तुरत पठाई। मैंअन्हवाएदेति दुहुँनको तुम भीतर अति करो चँडाई ॥ लकुट लियो मुरली कर लीन्हे हलधर दियो बिपान। नीलांबर पीतांबर लीन्हें सैंति धरति करि प्रान॥मुकुट उतारि धरयो मंदिर लै पोंछति है अंगधात। अरु बनमाल उतारति गरसे सूर श्याम की मात ॥३४॥ अंगअभूपण जननि उतारति।दुलरी ग्रीव माल मोतिनकीकेउर लै भुज श्याम निहारति ॥ छुद्रा-वली उतारति कटिसे सैंति धरति मनहीमन वारति।रोहिणि भोजन करहु चँडाई वारवार कहिकहि करि आरति ॥ भूखे भए श्याम हलधर ए यह कहि अंतरप्रेम विचारति। सूरदास प्रभु मात यशोदा पट लै दुहुँनि अंगरज झारति ॥ ३५ ॥ ए दोऊ मेरे गाइ चरैया। मोल बिसाहि लये मैं तुमको तब दोउ रहे नन्हैया। तुमसों टहल करावति निशिदिन और न टह-

ल करैया। यह सुनि श्याम हँसे कहि दाऊ झूठहि कहतिहै मैया ॥ जानिपरत नहिं साँच झुठाई धेनुचरावत रहे झुरैया। सूरदास प्रभुकहति यशोदा मैं चेरीकहि लेतिबलैया॥ ३६॥ राग कल्याण॥ यह कहि जननि दुँहुनि उर लावति। सुमनसुता अँगपरसि तरनिजलबलि बलि गई कहिकहि अन्हवावति ॥ सरसबसन तनु पोछि गई लै षटरसके जेवनार जेंवावति। शीतल जल कपूर रस रचयो झारी कनक लए अँचवावति॥ भरयो चहू मुख धोय तुरतही पीरेपान बीरी मुख नावति । सूर श्याम सुख जानि मुदित मन सेज्यापर सँग लै पौढावति॥ ३७॥ राग विहारो ॥ सोवत नींदआइगईश्यामहिं। महरि उठी पौढाइ दुहुँनको आपु लगी गृहकामहिं॥ बरजतिहैंघरके सबलोगनिहरुयेलैलैनामहिं । गाढे बोलि न पावत कोऊ डर मोहन बलरामहिं ॥ शिव सनकादि अंत नहिंपावत ध्यावतहैंनिशि जामहिं । सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन सो सोवत नँदधामहिं ॥ देखत नंद कान्ह अतिसोवत । भूखे भए आजु बनभीतर यह कहिकहि मुख जोवत ॥ कह्योनहीं मानत काहूको आप हठीदोउ बीर । बार बार तनु पोछत करसों अतिहि प्रेमकी पीर ॥ सेज मँगाइलई तहँ अपनी जहां श्याम बलराम । सूरदास प्रभुके ढिग सोये सँग पौढी नँदवाम ३८ ॥ जागि उठे तब कुँवर कन्हाई । मैया कहां गई मो ढिगते सँग सोवत जान्यो बलभाई ॥ जागे नंद यशोदा जागी बोलिलिए हरि पास। सोवत झिझकिउठयो काहेते दीपक दियो प्रकास ॥ सपने कूदिपरयो यमुनादह काहू दियो गिराई । सूरश्याममों कहति यशोदा जिनिहो लाल डराई ॥ ॥ ३९ ॥ राग गौरी॥ मैं बरजौं यमुनातट जात॥ सुधि रहिगई न्हातकी तेरे जिनि डरपो मेरे तात ॥ नंद उठाइ लियो कोराकरि अपने सँग पौढाइ । वृंदावनमें फिरत जहाँतहँ केहि कारण तू जाइ ॥ अबजिनि जैहो गाइचरावन कहँकीरहनबलाइ।सूर श्याम दंपति बिच सोए नींद गई तब आइ॥ ॥ ४०॥ राग कल्याण॥ सपनो सुनि जननी अकुलाई॥ दंपति बात कहत आपुसमें सोवति शारँगपानी॥ या ब्रजको जीवनि यह ढोटा कह देख्यो यहि आजु ॥ गाइ चरावन जान न दीजे याको है कह काजु ॥ गृह संपति द्वै तनक ढोटोना इनहीलों सुख भोग । सूर श्याम बन जात चरावन हँसी करत सब लोग॥ ४१॥ राग भैरवी॥ यहि अंतर भिनुसार भयो । तारागण सब गगन छपाने अरुन उदित अंधकार गयो॥ जागी महरि काज गृह लागी निशिको सब दुख भूलि गयो॥ प्रातस्नान करन यमुनाको नंदहि तुरत उठाइदयो॥ मथनिहारि सब ग्वालि बोलाई भोर भयो उठि मथो दह्यो । सूर नंदघरनी आपुनहू मथति मथानी नेति गह्यो॥ ४२ ॥ अथ कंस कमलकेफूल मगाए कालीदमनलीला अध्याय षोडश॥ राग बिलावल॥ नारदसों नृप करत विचार। ब्रजमें ये दोउ कोउ अवतार ॥ नंदसुवन बलराम कन्हाई । इनकी गति मैं कछू न पाई ॥ तृणावर्तसो दूत पठाए। ता पाछे कागासुर धाए ॥ बकी पठाइ दई पहिलेही । ऐसेनको बलु वैसेहि लेही ॥ उनते कछू भयो नहिं काजा।यह सुनिसुनि मोहिं आवति लाजा॥ अब मुनि तुम इक बुद्धि विचारहु। सूर श्याम बलरामहि मारहु॥ ४३ ॥ नारदऋषि नृपसों यह भाषत। वैहैं काल तुम्हारे प्रगट काहेते तुम उनको राखत॥ काली उरग रह्यो यमुनामें तहँते कमल मँगावहु । दूत पठायदेहु ब्रजऊपर नंदहि अति डरपावहु ॥ यह सुनिकै ब्रजलोग डरंगे वोउ सुनिहैं यह बात । पुहुप लेन जैहें नँदढोटा उरग करै तहां घात॥ यहसुनि कंस बहुतसुख पायो भली कहीइह मोहिं। सूरदास प्रभुको मुनि जानत ध्यान करत मन एहि॥ ४४॥ राग सूहो॥ कंस बुलाइ दूत एक लीन्हो ।

कालीदहके फूल मँगाए पत्र लिखाइ ताहि कर दीन्हो॥यह कहियो ब्रज जाइ नंदसों कंसराज अतिकाज मँगाए। तुरत पठाइदियेही बनिहै भलीभांति कहि कहि समुझाए॥ यह अंतर्यामी जानी जिय आपु रहे बन ग्वाल पठाए।सूरश्याम ब्रजजनसुखदायक कंसकाल जिय हरप बढाए॥ ॥४५॥राग रामकली ॥खेलन चले नंदकुमार। दूत आवत जानि ब्रजमें आपु दीन्ह्यों टार॥नंद यमुना न्हाइ आए महरि ठाढी द्वार। नृपति दूत पठाइ दीन्ह्यों चल्यो ब्रज अहंकार॥ महर पैठत सदन भीतर छींक बाईं धार।सूर नंद कहत महरिसों आजु कहाबिचार॥४६॥ राग सूहो॥यह सुनि कंस मुदितमन कीन्हों। दूतहि प्रगट कही यह बाणी पत्र लिखाइ नंदको दीन्हों॥ कालीदहके कमल मँगावहु तुरत देखि यह पाती। जैसे कालिह कमल ह्यां पहुँचै तू कहियो यहि भांती॥यह सुनि दूत तुरतही धायो तब पहुँच्यो ब्रज जाय। सूर नंदकर पाती दीन्हीं दूत कह्यो समझाइ॥४७॥ राग सूहो।पाती बांचत नंद डेराने।कालीदहके फूल मँगाए सुनी सबनि ब्रजलोग घराने॥ जो मोको नहिं फूल पठावहु तौ ब्रज करौं उजारी।महर गोप उपनंद न राखौंसबहिनडारौं मारी॥पुहुप देहु तौ बनैतुम्हारीनातरुगएबिलाइ।सूरश्यामबलमोहन तेरेमाँगौंउनहिं धराइ॥४८॥ राग बिलावल ॥नंदसुनत मुरझाइगए।पातीबांचीसुनी दूतमुख यह बाणी सुनि चकितभए॥ बलमोहन खटकत वाके मन आजु कही यह बात।कालीदहके फूल कहौधौं कोआन पछितात॥और गोप सब नंद बुलाए कहत सुनो यह बात।सुनहुँ सूर नृप ढंग यह आयो बल मोहनपर घात॥४९॥ ॥रागजैजैवंती ॥आपु चढै ब्रजऊपर काली। कहांनिकसि जैए कोराखै नंदकहत बेहाली॥मोहिंनहीं जियको डर नेकहु दोउ सुतको डरपाऊँ। गाउं तजौं कहुँ जाउँ निकसि ले इनहीं काज पराऊँ॥ अब उबारि नहिं दीखतकतहूं शरणराखि को लेइ।सूर श्यामको बरजति माता बाहिर जान नदेइ ॥५५०॥ राग आसावरी ॥नंदघरनि ब्रजनारि बिचारति।ब्रजहि बसत सब जनम सिराने ऐसेंकंस करी नहिं आरति॥कालीदहके फूलमँगावत को आनै धौंजाई। ब्रजवासी नातरु सब मारौं बांधौं बलन कन्हाई॥ यह कहतहि दोउ नैन ढराने नंदघरनि दुख पाइ। सूर श्याम चितवत मातामुख बूझत बात बनाइ॥५१॥ बूझहु जाइ तातसों बात। मैं बलिजाउँ मुखारबिंदकी तुमही काज कंस अकुलात॥ आए श्याम नंदपै धाए जान्यो मात पिता अकुलात। अबहीं दूरि करौं दुख इनको कंसहिं पठै देउँ जलजात॥ मोसों कहौ बात बाबा यह बहुत करत तुम सोचबिचार।कहा कहौं तुमसों मेरे प्यारे कंस करत कछु तुमको झार॥जबते जनम भयो हरि तेरो कितनेकरवरटरे कन्हाई। सूर श्याम कुलदेवनि तोको जहां तहां करिलिए सहाई॥५२॥ राग बिलावल ॥ तुमहिं कहत जो करे सहाई। सो देवता संगही मेरे ब्रजते अनत कहूं नहि जाई॥ वह देवता कंस मारैगो केश धरे धरणी घिसिआई।वह देवता मनावहु सब मिलि तुरत कमल जो देइ पठाई॥ बाबा नंद झखत केहि कारण यह कहि माया मोह अरुझाई। सूरदास प्रभु मात पिताको तुरतहि दुख डारचो बिसराई॥५३॥ राग नट ॥खेलन चले कुँवर कन्हाइ। कहतघोप निकासजैए तहां खेलें धाइ॥गेंदखेलत बहुत बनिहै आनो कोई जाइ। घरही गए सखा श्रीदामा गेंद तुरतही ल्याइ॥ अपनेकर लै श्याम देख्यो अतिहि हरषबढाइ। सूरके प्रभु सखा लीन्हे करत खेल बनाइ ॥५४॥ खेलत श्याम सखा लिये संग।इक मारत इक रोकत गेंदहि इक भागत करि नानारंग॥ मारु परस्पर करत आपुमें अति आनंद भए मनमाहिं। खेलतहींमें श्याम सबनिको यमुनातटको लीन्हें जाहिं॥ मारि भजत जो जाहि ताहि सो मारत लेत आपनो दाव। सूर श्यामके

गुण को जानै कहत और कछुऔर उपाव॥५५॥ राग गौरी॥ लैगए टारि यमुनतटग्वालनि।आपुन
जात कमलके काजहि सखा लिए सँग ख्यालनि॥जोरी मारि भजत उतहीको जात यमुनके तीर।
इक धावत पाछे उनहींके पावत नहीं अधीर ॥ रोंगटि करत तुम खेलतहीमें परी कहा यह बानि।
सूरश्यामसों कहत ग्वाल सब तुमहिं भले करि जानि ॥ ५६ ॥ श्याम सखाको गेंद चलाई ।
श्रीदामा मुरि अंग बचायोगेंदपरचोकालीदह जाई॥धाइ गह्यो तब फेंट श्यामकी देहु न मेरो गेंद
मँगाई।और सखा जिनि मोको जानो मोसों जिनि तुम करौढिठाई॥जानि बूझि तुम गेंदगिरायो
अब दीन्हेही बनै कन्हाई।सूर सखा सब हँसतपरस्परभलीकरी हरिगेंदगिराई ॥ ५७॥ राग सोरठ॥
फेट छांडि देहु मेरी श्रीदामा । काहेको तुम रारि बढावत तनक बातके कामा॥मेरो गेंद लेहु ता
बदले बांह गहत कत धाइ । छोटो बडो न जानत काहू करत बराबरि आइ ॥हम काहेको तुमहिं
बराबरि बडे नंदके पूत । सूर श्याम दीन्हेंही बनिहै बहुत कहावत धूत ॥ राग कल्याण ॥ तोसों कहा
धुताई करिहौं । जहां करी तहँ देखी नाहीं कहा तोसों मैं लरिहौं ॥ मुँह सँभारि तू बोलत नाहीं
कहत बराबरि बात । पावहुगे अपनो कियो अबहीं रिसन कँपावत गात ॥ सुनहु श्याम
तुमहूँ सरि नाहीं ऐसे गये बिलाइ । हमसों सतर होत सूरज प्रभु कमल देहु अब जाइ ॥
॥ ५८ ॥ हमहींपर सतरात कन्हाई । प्रथमहि कमल कंसको दीजै डारहु हमहिं मराई ॥
सांच कहों मैं तुमहिं श्रीदामा कमलकाज मैंआयो । कहा कंस बपुरो केहि लायक जाको मोहिं
डरायो॥अघा बका केशी शकटासुर तृणा शिला पर डारचो । बकीकपटकरि प्यावन आई ताको
तुरत पछारचो ॥ कालीदह जलछुवत मरे सब सोइ काली धरि ल्याऊँ । सूरदास प्रभु देह धरेको
गुण प्रगटौं एहि ठाऊँ ॥५९॥ राग सोरठ ॥ रिसि करि लीन्हीं फेंट छुडाई । सखासबै देखतहैं ठाढे
आपुन चढे कदमपर धाई॥ तारी दैदै हँसत सबै मिलि श्याम गए तुम भाजि डराई । रोवत चले
श्रीदामा घरको यशुमति आगे कैहौं जाई॥ सखा सखा कहि श्याम पुकारचो गेंद आपनो लेहु
न आई । सूर श्याम पीताम्बर काछे कूदिपरे दहमें भहराई॥६०॥राग गौरी॥ हाइहाइ करि सखनि
पुकारचो । गेंदकाज यह करी श्रीदामा नंदमहरको ढोंटा मारचो ॥ यशुमति चली रसोईभीतर
तबहिं ग्वालि इक छींकी।ठिठकिरहीद्वारेपरठाढीबात नहीं कछु नीकी॥आइ अजिरनिकसी नँद
रानी बहुरो दोष मिटाइ । मंजारी आगे दै निकसी पुनि फिरि आँगन आइ॥व्याकुल भई निकसि
गई बाहिर कहां धौं गयो कन्हाई।बांयोंकाग दहिन खर शूकर व्याकुल घर फिरिआई॥खनभी-
तर खन बाहिर आवति खन आंगन इहि भाँति।सूर श्यामको टेरत जननी नेक नहींमनशांति।
॥ ६१॥ देखे नंद चले घर आवत । पैठत पौरिछींकभई बाईं रोइ दाहिने धाह सुनावत॥फटकत
श्रवन श्वान द्वारेपर गगरी करत लराई । माथेपर दै काग उडानो कुशकुन बहुतक पाई ॥ आए
नंद घरहि मनमारे व्याकुल देखी नारी । सूर नंद युवतीसों बूझत बिन छबिवदन निहारी॥६२॥
राग नट॥नंद घरनिसों बूझत बात । वदन झुराय गयो क्यों तेरो कहां गयो बल मोहन तात ॥
भीतर चली रसोई कारण छींक परी तब आंगन आई।पुनि आगे ह्वै गई मंजारी और बहुतकुश-
कुन में पाई ॥ मोहिं भए कुशकुन घर पैठत आजु कहा यह समुझि न जाई । सूर श्याम गए
आजु कहां धौं बार बार बूझत नँदराई ॥ ६३ ॥ महरि महर मन गए जनाइ । खन भीतर
खन आंगन ठाढे खन बाहर देखतहैं जाइ ॥ यहि अंतर सब सखा पुकारत रोवत आए ब्रजको
धाइ।आजु गए नंद घरहीको महर महरिसों बात सुनाइ ॥ चकित भई दोउ बूझनलागे कहौ

बात हमको समुझाई।सूर श्याम खेलतहि कदम चढि कूदिपरे कालीदह जाई॥६४ ॥राग सोरठ॥ सपनो प्रगट कियो कन्हाई। सोवतही निशि आज डगनेहमसों यह कहि बात सुनाई॥ धरणि परी मुरझाइ यशोदा नंद गए यमुनातट धाई। बालक सब नंदहि सँग धाए ब्रज घर जहँतहँ शोर मचाई॥त्राहित्राहि करि नंद पुकारत देखत ठौर गिरे भहराई।लोटत धरणि परत जलभीतर सूर श्याम दुख दियोबुढाई॥६५॥राग गौरी॥ ब्रजबासीयहसुनिसबआये।कहां पर्‌यो गिरि कुँवर कन्हाई बालक लै सो ठौर दिखाये॥ सूनो गोकुल कियो श्याम तुम यह कहि लोग उठे सब रोइ। नंद गिरत सबहिन धरि राख्यो पोंछत वदन नीर लै धोइ॥ ब्रजबासी तब कहत नंदसों मगण भयो सबहीको आइ। सूर श्याम बिनु को बसिहै ब्रज धृग जीवन तिहँ भुवन कहाइ॥६६॥ महरि पुकारति कुँवर कन्हाई। माखन धर्‌यो तिहारेहि कारण आजु कहाँ अवसेर लगाई।अतिकोमल तुम्हरे मुखलायक तुम जेंवहु मेरे नैनजुडाई।धौरीदूध औटि है राख्यो अपने कर दुहि गए बनाई॥ बरजत ग्वारि यशोदाकोसब यह कहिकहि नीके यदुराई।सूर श्याम सुतविरह मातके यह वियोग बरण्यो नहिं जाई॥६७॥ राग गौरी॥ माखन खाहु लाल मेरे आई।खेलत आजु अबार लगाई॥ बैठहु आइ संग दोउ भाई।तुम जेंवहु मैया बलि जाई॥सद माखन अति हित मैं राख्यो। आजु नहीं नेकहु तैं चाख्यो॥प्रातहिते मैं दियो जगाइ। दँतवनि करि जु गए दोउ भाइ॥मैं बैठी तुव पंथ निहारों। आवहु तुमपर तनु मनु वारों॥ ब्रज युवती सब सुनि ए बानी। रोवत धरणि परीं अकुलानी॥शोकसिंधु बैठी नँदरानी।सुधि बुधितनकी सबैभुलानी॥सूरश्याम लीला यह कीन्हो। सुतके हेत जननि दुख दीन्हो॥ ६८॥ चौंकिपरी तनकी सुधि आई। आज कहा ब्रज शोर मचायोतब जान्यो दह गिरो कन्हाई॥पुत्रपुत्र कहिकै उठि दौरी व्याकुल यमुनातीरहि धाई।ब्रज वनिता सब संगहि लागीं आइगए बल अग्रज भाई॥जननी व्याकुल देखि प्रबोधतधीरजकरि नीके यदुराई। सूर श्यामको नेक नहीं डर जिनि तूरोवैयशुमति माई॥६९राग बिलावल॥ब्रजबासीसबउठे पुकारी।जलभीतर कहा करत मुरारी॥संकटमें तुम करत सहाय।अबक्यों नहीं बचावत आय॥ माता पिताअतिहिदुख पावत।रोइरोइ सब कृष्ण बुलावत॥हलधर कहत सुनहु ब्रजवासी।वे अंतर्यामी अविनासी॥सूरदास प्रभु आनँदरासी। रमासहित जलहीके वासी॥७०॥राग सहो॥ अतिकोमल तनु धर्‌यो कन्हाई।गए तहाँ जहाँ काली सोवत उरगनारि देखत अकुलाई॥कह्यो कौनकोबालकहैतू बारबार कहि भागन जाई।छिनकहिमेंजरि भस्म होयगो जब देखै उठि जागिजँभाई॥ उरगनारिकी बाणीसुनिकै आप हँसे मनमें मुसकाई।मोकोकंस पठायोदेखन तूयाको अब देहि जगाई॥कहाकंस दिखरावत इनको एक फूंकहीमें जरिजाई। पुनिपुनिकहत सूरकेप्रभुको तूअबकाहेनजाइपराई ७१ राग गौंड मलार॥कहा डर करौंयहि फनीको बावरी।कह्यो मेरोमानि छाँडि अपनीवानि अबहीं परिहै जानि टेक सब रावरी॥तोहिं देखि मोहिं मया अति भई कौनको सुवन तू कहाँ आयो। मरो वह कंस निर्वंश वाकोहोइ कह्यो यह कंस तोकों पठायो॥कंसको मारिहौं धरणि निरवारिहौं अमर उद्धारिहौं उरगघरनी।सूर प्रभुके वचन सुनत उरगनि कह्यो जाहि अब क्यों न मति भई मरनी॥ ॥७२॥ राग मारू॥झिरकिकै नारि दै गारि गिरिधारि तब पूंछपर लात दै अहि जगायो। उठ्यो अकुलाइ डरपाइ खगराइको देखि बालकगर्व अति बढायो॥पूंछ राखी जुचाँपि रिसनि काली कांपि देखै सब सांपि औसान भूले। पूंछ लीन्हों झटकि धरनिसों गहि पटकि फूँ कह्यो लटकि करि क्रोध फूले॥ करत फनघात विषजात अतुरात अति नीर जरिजात नहिं गात परसै,

सूरके प्रभु श्याम लोकाभिराम बिन जानि अहिराज विषज्वाल परसै ॥ ७३ ॥ ॥राग नट ॥इनको लै व्रजलोग दिखाऊं।कमलभार इनहीपै लादौं इनकोआपु जनाऊं॥मातपिता अतिही दुख पावत दरशन दै मन हरष कराऊं । कमल पठाइदेउँ नृपराजहि कालि कह्यो व्रजऊपर धाऊं॥मनमन करत विचार श्याम यह अब कालीको दाँव दिखाऊँ॥सूरदास प्रभुकी यह बानी व्रजवासिनको दुख बिसराऊं ॥७४॥ राग कन्हरा ॥ उरगनारि सब कहत परस्पर देखहु या बालककी बात । विषज्वाला जल जरत यमुनको याके तन लागत नहिं तात ॥ यह कछु यंत्र मंत्र है जानत अतिही सुन्दर कोमलगात।यह अहिराज महाविषज्वाला कितने करत सहसफन घात॥छुअत नहीं तनु याको विष कहुँ अबलौं बच्यो पुण्य पितुमात । सूर श्यामसों दाँव बतायो काली अंग लपेटत जात ॥७५॥राग बिलावल ॥उरग लियोहरिकोलपटाई।गर्ववचन कहिकहिमुख भाषत मोकों नहिं जानत अहिराई॥लियो लपेटिचरणते शिखलौं अति यहि मोसों करीढिठाई। चांपी पूंछ लुकावत अपनी युवतिनको नहिं सकत दिखाई ॥ प्रभु अंतर्यामी सब जानत अब डारों यहि सकुचमिटाई॥सूरदास प्रभुतनुविस्तारच्योकालीबिकलभयोतबजाई ॥७६॥राग कान्हरो॥ जबहिं श्यामतनु अतिविस्तारच्यो । पटपटात टूटत अँग जान्यो शरणशरण अहिराज पुकारच्यो ॥ यहबाणी सुनतहिकरुणामय तबहिंगए सकुचाई।इहै वचन सुनि द्रुपदसुतामुख दीन्हों बसन बढाई॥ इहै वचन गजराजसुनायो गरुड छांडि तहां धाये।यहैवचन सुनि लाखागृहमें पांडव जरतबचाये॥ यह बाणी सहिजात न प्रभुसों ऐसे परमकृपाल।सूरदास प्रभु अंगसकोरच्यो व्याकुल देख्योव्याल ॥७७॥रागगौरी॥नाथत व्याल विलंब न कीन्हों।पगसों चापि घींच बल तोरच्यो फोरि नाक करसों गहिलीन्हों॥ कूदिचढे ताके माथेपर काली करत बिचार।श्रवणन सुनी रही यहै बाणी व्रज ह्वै है अवतार॥तेइ अवतरे आइ गोकुलमें मैं जानी यह बात।अस्तुति करनलग्यो सहसौं फन धन्य धन्य जगतात ॥बारबार कहि शरण पुकारच्यो राखिराखि गोपाल। सूरदास प्रभु कहत सकुचि गए शरण कहत तब व्याल ॥७८ ॥राग बिलावल॥देखि दरश मन हरष भयो । पूरणब्रह्म सनातन तुमहीं ब्रजहिं कृष्ण अवतार लयो॥श्रीमुख कह्यो अजौंलौं तुम नहिं जानो ब्रह्मअवतार।औरकौन जो तुमसों बाँचै सहसफननिकी झार॥ अनजानत अपराध किये बहु राखि शरण मोहिं लेहु । सूरदास प्रभु धनि मेरे फन चरण कमल जहाँ देहु॥७९॥राग गौरी॥अब कीन्हों प्रभु मोहिं सनाथ। कोटिकोटि कीटहु सम नाहीं दरशन दिये जगतके नाथ ॥ अशरनशरन कहावतहौ तुम कहत सुनी भक्तनिमुख बात। ये अपराध क्षमा सब कीजे धृग मेरी बुधि कहत डरात॥ दीनवचनसुनि कालीमुखते चरण धरे फनफन प्रति आप।सूर श्याम देख्यो अहि व्याकुल सुख दीनो मेटे त्रय ताप॥८०॥यशुमति टेरति कुँवर कन्हैया। आगे देखि कहति बलरामहिं कहां रह्यो तुम भैया॥ मेरे भैया आवत अबहीं तोहि दिखाऊं मैया । धीरज करहु नेक तुम देखहु यह सुनि लेति बलैया॥पुनि यह कहति मोहिं परबोधत धरणिगिरी मुरझैया।सूर बिना सुत भइ अति व्याकुल मेरोबाल नन्हैया॥८१॥राग सारंग॥भरोसो कान्हकोहैमोहि।सुन यशुदाकालीके भयते तू जिनिव्याकुल होहि॥पहिले पूतना कपटके आई अस्तनविषयापोहि।वह वसीज्योंप्रवलद्वैदिनके बालकमारि दिखावत तोहि॥अघा बका धेनुक तृणावर्त केसीको बल देख्यो जोहि । सात दिवस गोवर्धन राख्यो इंद्र गयो द्रपु छोहि॥सुनिसुनि कथा नंदनंदनकी मन आयो अवरोहि।सूरदास प्रभु जो कहिये कछु सो आवै सब सोहि॥राग सारंग॥८२॥यमुना तोहि बह्यो क्यों भावै।तोमें कृष्णहेलुवा

खेले सो सुरत्यो नहिं आवै ॥ तेरे नीर शुची जल जो हैं खार पनार कहावै । हरिवियोग कोउ पाँउ न देहै को तट बेणु बजावै॥ भरि भादौं जो राति अष्टमी सो दिन क्यों न जनावै॥ सूरदासके ऐसे ठाकुर कमलफूल लैआवै ॥८३॥ ब्रजवासी सब भए बिहाल । कान्हकान्ह कहिकहि टेरतहैं व्याकुल गोपी ग्वाल॥ अब को बसै जाइ ब्रज हरि बिनु धृग जीवन नर नारी। तुमबिनु यह गति भई सबनिकी कहां गए बनवारी॥ प्रातहिते जलभीतर पैठे होन लग्यो युग याम । कमल लिये सूरज प्रभु आवत सबसों कहि बलराम ॥८४॥ राग नट ॥ आवत उरग नाथे श्याम । नंद यशुदा गोपि गोपनि कहतहैं बलराम॥ मोर मुकुट विशाल लोचन श्रवन कुंडल लोल । कटि पितांबर भेष नटवर नृतत फनप्रति डोल॥ देव दिवि दुंदुभि बजावत सुमनगन बरषाइ । सूरश्याम विलोकि ब्रजजन मात पितु सुख पाइ॥८५॥ राग नट ॥ मात पिता मन हरष बढायो । मोर मुकुट पीतांबर काछेदेख्योअतिहिनिकटजबआयो॥ देवव्योमदुंदुभी बजावत गावतफनपरनिरतत श्याम। ब्रजवासी सब मरत जिवाए हरषि उठीं सब बाम ॥ शोकसिंधु बहिगयो तुरतही सुखको सिंधु बढायो॥ सूरदास प्रभु कंसनिकंदन कमल उरगपर ल्यायो ॥ ८६ ॥ राग कान्हरो ॥ फन फन प्रति निर्तत नँदनंदन । जलभीतर युगयाम रहे कहुं मिटचो नहीं तनुचंदन॥ उहै काछनी कटि पीतांबर शीश मुकुटअति सोहत॥ मनु गिरिऊपर मोर अनंदित देखत ब्रजजनमोहत ॥ अंमरथकेअमर ललनासँग जयजयध्वनि तिहुँलोक॥ सूरश्यामकालीपर निर्ततआवत ब्रजकीओक॥८७॥ राग सोरठ॥ गोपालराइ निर्तत फन प्रति ऐसे॥ मनो गिरिवर पर बादर देखत मोर अनंदत जैसे॥ डोलत मुकुट शीशपर कुंडल मंडित गंड॥ पीत बसन दामिनि तनुघनपर तापर सुर कोदंड॥ उरगनारि आगे सब ठाढी मुखमुख अस्तुति गावैं । सूरश्यामअपराधक्षमहुअबहममाँग्योपतिपावैं॥८८॥ नहिंनकृपाएहि करी गुसाईं । इतनी कृपाकरीनहिंकाहू जितनेलियगखिशरनाईं॥ कृपाकरीप्रह्लादभक्तको द्रुपदसुतापति राखी । ग्राह मुखते गजराज छुडायो वेद पुराणन भाषी॥ जोकछुकृपाकरी कालीको सोकाहू नहिं कीन्हों॥ कोटि ब्रह्मांड रोमप्रति अंगनि ते पग फन प्रति दीन्हों॥ धरणि शीशधरिशेषगर्व करि भार अधिक संभाग्यो । पूरण कृपा करी सूरजप्रभु पग फनफनप्रति धारयो॥८९॥ राग सोरठ॥ ठाढे देखतहैं ब्रजवासी । करजोरें अहिनारि विनयकरैं कहत धन्य अविनासी॥ जे पद कमल रमा उर राखति परसि सुरसरी आई । जे पद कमल शंभुकी संपति फन प्रति धरे कन्हाई ॥ जे पद परसि शिला उद्धारी पांडव गृह फिरि आए । जे पद कमल भजन महिमाते जन प्रहलाद बँचाए॥ जे पद ब्रज युवतिन सुखदायक तिहुँ भुवन धरे बावन । सूर श्याम ते पद फनफन प्रति निर्तत अहि कियो पावन ॥९०॥ ऐसी कृपा करी नहिं काहू । खंभप्रगटि प्रह्लाद बचायो ऐसी कृपा न ताहू ॥ ऐसी कृपा करी नहिं गजको पाइँ पायदे धाए । ऐसी कृपा तबहुँ नहिं कीन्हीं नृप बन्दिते छुडाए॥ ऐसी कृपा करी नहिं तब तिय नगनसमय पति राखी । ऐसी कृपा करी नहिं भीषम परतिज्ञा सतभाषी॥ पूरण कृपा नंद यशुमतिको सो पूरण एहि पायो। सूरदास प्रभु धन्य कंस जिन तुमसों कमल मँगायो॥९१॥ राग कान्हरो ॥ सुनहुकृपानिधि जैसी कृपा तुम या काली पै कीन्हो। इती बडाई कबहुँ न कैसो नहिं काहूको दीन्हों॥ जिन पदकमल सुक्र जल परस्यो अजहुँ धरे शिवशीशाते पद प्रगट धरे फनफनप्रति धन्यकृपा जगदीश॥ एकअंडको भार बहतहैं गर्व धरयो जिय शेष । यही भार अधिक सह्यो अपने शिर अमित अंडमय भेष ॥ सुर नर असुर कीटपशु पंछी सब सेवक प्रभु तेरे । सूर श्याम अपराध क्षमहु अब या अपने

जनकेरे॥९२॥चरणकमल बंदौं जगदीश जे गोधनके संग धाए । जे पदकमल धूरि लपटानो कर
गहिकै गोपी उर लाए॥जे पदकमल युधिष्ठिर पूजे राजसूयपै चलिआए । जे पदकमल पितामह
भीषम भारतमैं देखनपाये ॥ जे पदकमल शंभु चतुरानन हृदयकमल अंतर राखे ।जे पद कमल
रमा उर भूषण वेद भागवत मुनि भाखे।जे पद कमल लोकपावन त्रय बलिराजाके पीठ
धरे॥ते पद कमल सूरके स्वामी कालीफनपर निर्त करे ॥ ९३॥गिरिधर व्रजधर मुरलीधर
धरनीधर पीतांबर धर मुकुटधर गोप धर उरग धर । शंखधर सारंगधर चक्रधर गदाधर
रस धर अधर सुधाधर ॥ कंबुकंठधर कौस्तुभमणिधर बनमाला धर कालीफनप्रति
चरणधर। सूरदासके प्रभु जगतधर भक्तधर दुष्टकंसकेश धर ॥ ९४ ॥ गरुड त्रासते जो
ह्यां आयो।तौ प्रभु चरण कमल फन फन प्रति अपने शीश धरायो॥धनि ऋषि शाप दियो खग
पतिको ह्यांतब रह्यो छपाइ। प्रभुवाहन डर भाजि बँच्यो अहि नातर लेतो खाइ॥ यह सुनि कृपा
करी नँदनंदन चरणचिह्न प्रगटाये।सूरदास प्रभु अभय ताहि करि उरग द्वीप पहुँचाए॥९५॥
अतिबल करि करि काली हारयो । लपट गयो सब अंगअंग प्रति निर्विष कियो सकलअल
झारयो ॥ निर्तत पद पटकत फन फन प्रति बमत रुधिर नहिं जात सँभारयो । अति बलहीन
छीन भए तेहिछिन देखियतहैं ज्वाला समडारयो॥तिय विनती करुणा उपजी जिय गह्यो श्याम
नहीं तेहि मारयो ।सूरदास प्रभु प्राणदान कियो पठयो सिंधु वहांते टारयो॥९६॥खेलत खेलत
जाइ कदम चढि झप यमुनाजल लीनो।सोवतकाली जाइजगायो फिरि भारत हरि कीनो॥उठि
युवती करजोरि विनति करि श्याम दान हम दीजै । टूटत फन फाटत तनु देही दुहुँ
दिशि कान्ह निहोरो लीजै ॥ तबअहिछाँडिदियोकरुणामय मोहनमदन मुरारी।सागरवासदियो
कालीकोसूरदासबलिहारी॥९७॥रागकल्याण ॥जयजयध्वनिअमरननभकीन्हों।धन्यधन्य जगदीश
गुसांइ अपनो करि अहि लीन्हों॥अभय कियो फन चिह्न चरण धरि जानिआपनो दास।जलते
काढ़ि कृपाकरि पठयो मेटि गरुड़को त्रास ॥ अस्तुति करत अमरगणबहुरेगए आपने लोक। सूर
श्याम मिलि मातपिताको टारिकियोतनुशोक॥९८॥ राग कान्हरो ॥लीन्हों जननीकंठलगाइ।अंगपुल-
कित रोमगदगद सुखदअंशु बहाइ॥मैं तुमहिंबरजतिहौं हरि यमुनतटजिनजाइ। कह्यो मेरोकियो
कान्ह नहिं गये खेलन धाइ॥कंस कमल मँगाइ पठए तात गएडराइ। मैं कह्यो निशि स्वप्नतोसों
प्रगट भयो सो आइ॥ग्वालसँग मिलि गेंदखेलत आए यमुनातीर।काहूलैमोहिं डारिदीन्हों कालिया
दह नीर ॥ यह कही तब उरग मोसों किनिपठायो तोहिं।मैंकहीनृपकंसपठयोकमलकारण मोहिं
यह सुनत डर कमल दीन्हों मोहिं लियो पीठ चढाइ। सूर यह कहि जननि बोधी देखो तुमही
आइ ॥९९॥ राग गौरी ॥व्रजवासिनसों कहत कन्हाई । यमुनातीर आजु सुख कीजै यह मेरे मन
आई॥ गोपन सुनि अति हर्ष बढायो सुखपायो नँदराई। घर घरते पकवान मँगायो ग्वालन
दिये पठाइ॥ दधि माखन षटरसके भोजन तुरतहि ल्याए जाई । मात पिता गोपी ग्वालनको
सूरज प्रभु सुखदाई ॥ ६०० ॥ तुरत कमल अब देहु पठाइ । सुनहु तात अब बिलंम न कीजै
कंसचढै व्रज ऊपर आइ ॥ कमल मँगाइ लिये तट ऊपर कोटि कमल तब दिये पठाइ । बहुत
विनय करि पाती पठई नृप लीजै सब पुहुप गनाइ ॥तैसी मोकों आज्ञा दीजै बहुतधरे जलमांझ
सजाइ। सूरदास नृप तुव प्रतापते काली आप गयो पहुँचाइ ॥ १ ॥राग सोरठ ॥सहस शकट भरि
कमल चलाए । अपनी समसरि और गोप जे तिनको साथ पठाए ॥ और बहुत कांवरि माखन

दधि अहिरन कांधे जोरी। बहुत बीनती मेरी कहियो और धरे जलजामल तोरी ॥ नृपके हाथ पत्र यह दीजो श्याम कमल लै आयो। कोटि कमल आपुन नृप मांगे तीनि कोटिहैपायो॥ नृपति हमहिं अपनो करि जानों तुम लायक हम नाहीं। सूरदास कहियो नृपआगे तुमहिं छोंडि कहां जाहीं ॥२॥ राग गंड ॥ कमलके भार दधिभार माखनभार लिये सबग्वार नृपद्वार आए। तुरतही टारि गनिकरि शकटनिजोरि भये ठाढे पौरि तब सुनाए॥ सुनत यहबात अतुगत औ डरातहिय महलते निकसि नृप आपु आए। देखि दरबार सब ग्वार नहिं कहूं पार कमलके भार शकटनि सजाए॥ अतिही चकित भयो ज्ञान हरि हारिलयो सोच मनमें ठयो कहा कीन्हों। गोप शिरमोर नृपओर करजोरिकै पुहुपके काज प्रभु पत्रदीन्हों ॥ यह कह्यो नंद नृप बंद अहिइन्द्रैप गयो मेरो नंदन तुव नाम लीन्हों। उठच्यो अकुलाइ डरपाइ तुरतहि धाइ गयो पहुँचाइ तट आइ दीन्हों ॥ यह कह्यो श्याम बलराम लीजो नाम राजको काम यह हमहिं कीन्हों। और सब गोप आवत जात नृप बात कहत सूर मोहिं नहीं चीन्हों॥३॥ राग बिलावल ॥ ग्वालन हरिकी बात चलाई। यह सुनि कंस गयो अकुलाई ॥ तब मनही मन करत बिचार। यह कोउ भयो नहीं अवतार॥ यासों मेरो नहीं उबार। मोहिं मारत मारे परिवार ॥ दैत्य गए ते बहुरि न आए। कालीते ये क्यों बचि आए ॥ ताही पर धरि कमल लदाए। सहस शकट भरि व्याल पठाए ॥ एक व्याल मैं उनहिं बताए। कोटिव्याल मम सदन चलाए ॥ ग्वालन देखि मनहिं रिस कांपे। पुनि मनमें यह अटकर नापे॥ आपहिआप नृपहिं तनु त्याग्यो। सूर देखिकमलन उठि भाग्यो ॥ ॥४॥ राग नट ॥ भीतर लए गोप बुलाइ। हृदय दुख मुख हलभली करि ब्रजहि दिए पठाइ ॥ नंदको शिरोपाव दीन्होंगोप सब पहिराइ। यह कह्योबलराम श्यामहिं देखिहौं दोउ भाइ॥ अतिहि पुरुषारथ करे उन कमल उनहिं लियाइ। सूरप्रभुको देखिहौं में एक दिवस बुलाइ ॥५॥ कमल शकटनि भरे व्याल मानो। श्यामके वचन सुनि मनहि मन रह्यो गुनि काठ ज्यों गयो घुनि तन भुलानो॥ भयो बेहाल नँदलालके ख्याल यहउरगते बांचि फिरिब्रजहि आयो। कह्यो दावा नलहि देखौं तेरे बलहि भस्मकरि ब्रजपालहि कहि पठायो ॥ चल्यो रिसपाइ चतुराइ तबधाइकेब्रजलोग वनसहित मैं जारि आऊं। नृपतिकेले पान मन कियो अभिमान करत अनुमान चहुँपास धाऊं॥ बृंदावन आदि ब्रजआदिगोकुलआदि आदि बुन्यादि सब अहिरजारौं। चल्योमगजात कहिबात इतरात अति सूरप्रभु सहितसंहारिडारौं ॥ ६ ॥ राग गौड मलार ॥ कमल पहुँचाइ सबगोपआए। गए यमुनातीर भई अतिहीभीर देखि नंदतीर तुरतही बोलाए॥ दियो शिरोपाव नृपराउने महरको आप पहरावनी सब दिखाए। अतिहि सुख पाइके लियो शिर नाइके हरषनँदराइके मन बढाए॥ श्याम बलरामको नाम जब हम लियो सुनत सुख कियो उन कमल ल्यायो। सूर नंदसुवन दोउ एक दिवस देखिहौं पुहुपलिए सुखपाइ इनि बोलाए ॥ ७ ॥ राग धनाश्री ॥ यह सुनिनंद बहुतसुख पाये। कमल पठाइ दये नृपलीन्हे देखनको दुहुँ सुतन बुलाये॥ सेवाबहुतमानि है लीन्हीं ब्रजनारिन मन हरष बढाये। बडीबात भई कमल पठाए आनहु आपुन जलते ल्याये ॥ आनंद करत यमुन तट ब्रजजन खेलत खातहि दिवस बिहाए। एक सुख श्याम बचे कालीते यकसुख कंसहिकमल चलाए॥ हँसत कान्ह बलराम सुनत यह हमको देखन नृपति मँगाए। सूरदासप्रभु मात पिता हित कमल कोटि दे ब्रजहि बचाए ॥ ८ ॥ अथ कालीलीला दूसरी। राग धनाश्री ॥ नारद कहि समुझाइ कंस नृपराजको। तब पठयो ब्रज दूत पुहुप एक काजको ॥ १ ॥ तब पठयो ब्रज। दूत

सुनी नारदमुख बानी। बार बार ऋषिकाज कंस मुख अस्तुति गानी॥ धन्य धन्य मुनिराज तुम भलो मंत्र दियो मोहिं। दूत चलायो तुरतही अबहिं जाहि ब्रज जोहि॥२॥ इह कहियो तू जाइ कमल नृप कोटि मँगायो। पत्र दियो लिखि हाथ कह्यो बहुभांति जनायो॥ कालि कमल नहिंआवई तौ तुमको नहिं चैन। शिरनवाइ कर जोरिके चल्यो दूत सुनि बैन॥३॥ तुरत पठायो दूत नंदघरहीमें आयो। कमल फूलके भार कंसनृप वेगि मँगायो॥कालिह न पहुँचै आइकै तब बसियो ब्रजलोग।गोकुलमें जे सुख किये ते करि देहौं सोग॥४॥जो न पठावहु पुहुप कहौंगे तैसी मोको।यह जानहु गोपन समेतधरिल्याऊं तोको॥बलमोहनतेरेदोउनको पकरिमँगाऊँ कालि।पुहुप वेगि पठए बनै जौरे बसौ ब्रजपालि॥५॥यह सुनि नंद डराय अतिहि मनमनअकुलानो।यहकारज क्यों होइ काल अपनो करिजानो॥ औरमहर सब बोलिलै कैसी करैं उपाइ। कालि प्रात ब्रज मारिहै बांधि सबनि लैजाइ॥६॥बल मोहनकोनाउँ धर्यो कहि पकरि मँगावन- जाते अति भयो सोच लगत सुनि मोहिं डरावन॥यह सुनि शिरनाये सबन मुखहि न आवैबात बार बार नंद कहतहैं यह लरिकनपर घात॥७॥ की बालकनि भगाइ जाहिं लै आन देशपर। वरु हमको लैजाइ श्याम बलराम बचैं घर॥ महरि सबै ब्रजनारिनसों पूछत कौन उपाउ। जनमहिते करवर टरी अबके नहीं बचाउ॥८॥ कोउ कहै देहैं दाम नृपति जितनो धन चाहै। कोउ कहै जैये शरन सबै मिलि बुधि अवगाहै॥ यही सोच सब परिरहे कहूँ नहीं निरबार।ब्रज भीतर नंदभवनमें घरघर इहै बिचार॥९॥ अंतर्यामी जानि नंदसों बूझत बात। कहा करतहौ सोच कहौ कछु मोसों तात॥कहा कहौं मेरे लाडिले कहत बडो संताप।मथुरापतिके जी कछू तुमपर उपज्यो पाप॥१०॥ कालीदहके पुहुप मांगिपठये हमसों उनि। तबते मोजिय सोच जबहिते बात बरी सुनि॥जो नहिं पठवहु कालिही तौ गोकुल देउँ लगाइ। मो समेत दोउ बंधु तुम कालिहि लेइ बँधाइ॥११॥ यह कहिपठयो कंस तबहिते सोच पर्यो मोहिं। प्रथम पूतना आइ बहुत दुख दै जु गई तोहिं॥ तृणावर्तके घातते बहुत बच्यो दुख पाइ। शकटा केशीते बच्यो अब को करै सहाइ॥१२॥ अघा उदरते बच्यो बहुत दुख सह्यो कन्हाई। बका रह्यो मुख बाइ तहां भयो धर्म सहाई॥ इतने करवर हैं टरे देवन किये सहाइ। तबते अब गाढी परी मोको कछु न सुहाइ॥१३॥ बाबा तुमहीं कहत कौन धौं तोहिं उबारै।सोइ ब्रजदेवता प्रगट कंस गहि केश पछारै॥यह जबहीं हरिसोंसुनीनंदमनहिं पतिआइ। गगनगिरत जो सँग रह्यो सो करिलेइ सहाइ॥१४॥ नंदहि यह समुझाइ कान्ह उठिखेलन धाए।जहँ ब्रज बालक बहुत तुरत तहँ आपुन आए॥ गोपसुतनिसों यह कह्यो खेलै गेंद मँगाइ। श्रीदामा इह सुनतही घरते लाये जाइ॥१५॥ सखा परस्पर मार करैं कोउ कानि न मानैं। कौन बडो को छोट भेद भेदा नहिं जानैं॥खेलत यमुना तट गए आपुहि ल्याये टारि। श्रीदामाके हाथते लैं गेंद दयो दहडारि॥१६॥ श्रीदामा गहि फेंट कह्यो हम तुम एक जोटा। कहा भये जो नंद बडेतुम तिनके ढोटा॥खेलतमें कहा छोट बड हमहू महरके पूत। गेंद दियेही पै बनै छांडिदेहु मद धूत॥ ॥१७॥तुमसों धूत्यो कहा करौं धूत्यो नहिं देख्यो। प्रथम पूतना मारिकाग शकटासुर पेख्यो॥ तृणावर्त पटक्यो शिला अघा बका संहारि। तुम तादिन संगहि रहे अब धूतन कहत सँभारि॥ ॥१८॥ ढंढ कहा बतात कंसको कमल देहु अब। कालिहि पठए माँगि पुहुप अब लै देहौंजब॥ बहुत अचगरी जिनकरौ अजहूं तजौ झवारि। पकरि कंस लैजाइगो कालिहिपरै खँभारि॥१९॥

कमल पठाऊँ कोटि कंसको दोष निवारौं । तुम देखत पुनि जाउँ कंस जीवत धरि मारौं ॥
फेट लियो तब झटकिकै चढे कदमपर आइ । सखा हँसत ठाढे सबै मोहन गए पराइ॥६२०॥
श्रीदामा चले रोइ जाइ कैहौं नंदआगे । गेंद लेहु तुम आइ मोहिंडरपावनलागे॥ यहकहिकैकूदे
सलिल कीन्हें नटवर साज । कोमलतनु धरिकै गए जहँ सोवतअहिराज॥२१॥ यहिअंतरनंदघ-
रनि कह्यो हरि भूखे ह्वैहैं। खेलत ते अब आइ भूखकहि मोहिं सुनैहैं॥ अति आतुर भीतर चली
जेंवन कारन आप । छींक सुनत कुसगुन कह्यो कहा भयो यह पाप॥२२॥अजिर चली पछितात
छींकको दोष निवारण । मंजारी गई काटि तबहिं निकसतही वारण ॥ जननी जिय व्याकुल भई
कान्ह अबेर लगाइ । कुसगुन आजु बहुत भए कुशल रहैं दोउ भाइ ॥ २३ ॥ श्याम
परे दह कूदि मात जिय गयो जनाई । आतुर आए नंद घरहि बूझत दोउ भाई ॥नंद घरनिसों
यह कहत मोको लगत उदास । एहि अंतर हरि कहँ गए जहँ कालीको वास ॥ २४ ॥
देख्यो पन्नग जाइ अतिहि निर्भय भयो सोवत। बैठि तहां अहिनारि डरी बालकको जोवत॥भागि
भागि सुत कौनको अतिकोमल तेरो गात।एकफूकको नहीं तू विषज्वाला अतितात॥२५॥तब
हरि कह्यो प्रचारि नारि पति देइ जगाई।आयो देखन वाहि कंस मोहिंदियो पठाई ॥ कंसकोटि
जरिजाहिंगे विषकी एकफुकार । कहा करै मरिजाहि तू अति बालक सुकुमार ॥ २६॥ यहि
अंतर सब सखा जाइ ब्रजनंद सुनायो । हमसँग खेलत श्याम जाय जलमाँझधँ॥ सायो बूडिगयो
उबरयो नहीं ता बातहिं बडि बेर ।कूदि परयौ चढि कदमते खबरि न करौ सबेर ॥ २७ ॥त्राहि
त्राहि करि नंद सुनत दौरे यमुना तट । यशुमति सुनि यह बात चली रोवत तोरति लट॥ ब्रज-
वासी नर नारि सब गिरत परत चले धाइ । बूझ्यो कान्ह सबनि सुनी अतिव्याकुल मुरझाइ ॥
॥ २८ ॥ जहँ तहँ परी पुकार कान्ह बिन भए उदासी । कौन काहिसों कहै अतिहि व्याकुल
ब्रजवासी॥नंद यशोदा अतिविकल परत यमुनमें धाइ । और गोप उपनंद मिलि बांह पकरि लै
आइ ॥ २९॥ धेनु फिरत बिललात बच्छथन न कोउ न लगावै।नंदयशोदा कहत कान्ह बिन कौन
चरावै ॥ यह सुनि ब्रजवासी सबै परे धरणि अकुलाइ। हाइहाइ करि कहत सब कान्ह रह्योकहां
जाइ ॥६३०॥ नंदपुकारत रोइ बुढापा मोको छाधो । कछुदिन मोहलगाइजाइजल भीतर माधो॥
यह कहिकै धरणी गिरत जनु तरु काटि गिराइ।नंदघरनि तब देखिकैकान्हहि टेरिबुलाइ ॥३१॥
निठुरभए सुत आजु तातकी छोह न आवति। यह कहिकै अकुलाइ जलहि भीतर को धावति॥
परत धाइ यमुनासलिल गहि आनति ब्रजनारि।नेक रहो सब मरहिंगी कोहैजीवनहारि॥३२॥
श्याम गयो जल बूडि बृथा जगजीवन गनको। शिरफोरति गिरिजाति अभूपणतोरति अँगको ॥
मुरछि परी तनु सुधि गई प्राण रह्यो कहुँजाइ ।हलधर आए धाइकै जननि गई मुरझाइ ॥ ३३ ॥
नाकमूँदि जल सींचि जननि जननी कहि टेरयो । बारबार झकझोरि नेक हलधरनैन हेरयो ॥
कहत उठी बलरामसों बनहिं तज्योलघुभ्रात ।कान्ह तुमहिं बिन रहत नहिं तुमसों क्यों रहिजात॥
॥३४॥ अब तुमहूं जिनि जाहु सखा यकदेहु पठाई ।कान्हहि ल्यावै जाइ आजु अबसेर कराई ॥
छाक पठाऊं जोरिकै मगन सोक सरमांझ । प्रात कछू खायो नहीं भूंखे ह्वैगई सांझ॥३५॥कबहुं
कहति बन गए कबहुँ कहि घरहि बतावति । कहं खेलतहौ लाल टेरि यह कहति बुलावति ॥
जागिपरी दुख मोहते रोवत देखे लोग । तब जान्यो हरि दह गिरयो उपज्यो बहुरि बियोग॥
धृग धृग नंदहिकह्यो और कितनेदिनजीहौ।मरत नहीं मोहिंमारि बहुरिब्रजबसिहौ कीहौ ॥ ऐसे

दुखसों मरन सुख मन करि देखहु ज्ञान । व्याकुल धरणी गिरिपरे नंद भए बिनप्रान ॥ ३७ ॥
हरिको अग्रजबंधु तुरतही पिता जगायो । माताको परबोधि दुहुँनि धीरज धरवायो ॥ मोहिं
दोहाई नंदकी अबहीं आवत श्याम । नाथि नाग लै आइहै तब कहियो बलराम ॥३८॥ हलधर
कह्योसुनाइ नंद यशुमति ब्रजवासी । वृथामरत केहि काज मरेक्यों वह अबिनाशी ॥ आदिपुरुष
मैं कहतहौं गयो कमलके काज। गिरिधरको डर करतहौ वहदेवन शिरताज ॥ ३९ ॥ वहअबि-
नाशीआहिकरो धीरजअपनेमन । काली छेदै नाक लिये आवत निर्ततफन॥कंसहिकमलपठा-
इहै काली पठवै द्वीप । एक घरी धीरज धरौ बैठो सब तरुनीप ॥६४०॥ वहां नागिनसों कहत
श्याम अहि क्यों न जगावै । बालक बालक करति कहा पति क्यों न उठावै ॥ कहा कंस कहा
उरग यह अबहिं दिखाऊं तोहिं । दैजगाइ मैं कहतहौं तू नहिं जानति मोहिं ॥ ४१॥ छोटे मुँह
बडी बातकहतअबहीं मरिजैहै।जो चितवै करिक्रोधअरे इतनहिजरिजैहै॥ छोहलगति तोहिंदेखि
मोहिं काको बालक आहि ।खगपतिसों सरवरकरी तूबपुरो को आहि॥४२॥ बपुरा मोसोंकहति
तोहिं बपुरी करिडारौं । एक लातसों चापि खसम तेरेको मारौं॥ सोवत काहु नमारिए चलिआई
यह बात ।खगपतिको मैंहीं कियो कहति कहा तू बात॥४३॥ तुमहिं विधाता भए और कर्त्ता
कोउ नाहीं । अहि मारोगे आप तनकसे तनकसी बाहीं । कहा करौं कहत न बनै
अति कोमल सुकुमार । देती अबहिं जगाइकै जरिबरि होतोछार ॥४४॥ तू धौं देहिजगाइ तोहि
दोषन कछु नाहीं । परी कहा तोहि द्वारि पाप अपने जरि जाहीं ॥ हमको बालक
कहतिहै आप बडेकी नारि । बादतिहै बिनकाजही वृथा बढावति रारि ॥ ४५ ॥
तुहीन लेहि जगाइ बहुत जो करत ढिठाई । पुनि मरिहै पछिताइ मात पित तेरे भाई॥ अजहुं
कह्यो करि जाहि घर मरि लेहै सुख कौन । पांच बरष कै सातको आगे तोको होन ॥ ४६ ॥
झिरकि नारि दै गारि आपु अहि जाय जगायो। पगसों चापी पूंछ सबैअवसानभुलायो॥चरण
मसकि धरणी दली उरग गयो अकुलाइ ।काली मनमें तब कही यह आयो खगराइ ॥ ४७ ॥
देख्यो नयन उघारि तहां बालक इकठाढो। बिषधर झटकी पूंछ फटकि सहसौ फन काढो॥ बार
बार फन घातकै बिषज्वालाकी झार । सहसौ फन फन फूंकरै नेक न तनहि लगार ॥४८॥ तब
काली मन कहत पूंछ चांपी एहि पगसों ।अतिहि उठो अकुलाइ डरचो बाहन हरिखगसों॥यह
बालक धौं कौनको कीन्हीं युद्ध अघाइ।दाँव घाव बहुतै कियो मरत नहीं यदुराइ॥४९॥ पुनि
देखै हरि ओर पूछ चांपी इहि मेरी। मनमन करतबिचार लेउँ याको मैं घेरी॥ दाउँ परचोअहि
जानिकै लियो अंग लपटाइ।काली तबगर्वितभयो प्रभुदियोदाउ बताइ ॥ ६४०॥कहतिउरगकी
नारि गर्व अतिहीं करि आयो। आइ इन पहुँचो बाल कालबश पगहि चलायो ॥ अहिनारिनसों
यह कही मोहिं सम सरि कोउ नाहिं ।एक फूंक बिषज्वालके जल डोंगर जरि जाहिं ॥५१॥
गर्व वचन प्रभु सुनत तुरतही तनु विस्तारचो । हाइहाइ करि उरग बार बारही पुकारचो ॥ शरन
शरन अब मरतहौं मैं नहिं जान्यो तोहिं । चटचटात अँग फूटही राखु राखु प्रभु मोहिं ॥ ५२॥
श्रवन शरन ध्वनि सुनत लियो प्रभु तनु सकुचाई । क्षमहु मोहि अपराध नजाने करी ढिठाई॥
व्रजे कृष्ण अवतारहौमें जानी प्रभु आजु । बहुत किये फन घात मैं वदन दुरावत लाजु ॥५३॥
रह्यो जानि यहि ठौर गरुडको त्रास गोसाँई।बहुत कृपा मोहिं करी दरश दीन्हों जगसाँई॥नाक
फोरि फनपर चढे कृपा करी सुरराइ ॥ फन फन प्रति प्रति चरण धरि निर्तत हरष बढाइ॥५४॥

धन्य कृष्णधनि उरग जानि जग कृपा करी हरि। धन्य धन्य दिन आजु दरशते पाप गये जरि॥ धन्य कंस धनि कमल ये धन्य कृष्णअवतार। बडी कृपा उरगहि करी फनप्रति चरण बिहार॥५५॥ शेष करत जिय गर्व अंडको भार शीशधरि। ब्रह्म मुकुन्द अनंत नाम को सकै पारकरि॥ फनफन प्रति अति भार भरि अमित अंडमें गात। उरगनारि कर जोरिकै कहत कृष्णसों बात ॥ ५६ ॥ देखत ब्रज नर नारि नंद यशुदा समेत सब। संकर्षणसों कहत सुनहु सुत कान्ह नहीं अब॥ एहि अंतर जल कमलबिच उठो कछू अकुलाइ। रोवतते बरजे सबै मोहनअग्रज भाइ॥५७॥ आवत हैं वे श्याम पुहुप काली शिर लीन्हें। मात पिता ब्रज दुखित जानि हरि दरशन दीन्हें॥ निर्तत काली फननिपर देवदुंदुभी बजाइ। नटवर बपु काछेरहे सब देख्यो वहभाइ ॥५८॥ आवत देखे श्याम हरष कीन्होब्रजबासी। शोकसिंधु बहिगयो सुखैको सिंधु प्रकाशी॥ जलबूडत नवका मिलै ज्यों तनु होत अनंद। त्यों ब्रजजन हुलसे सबै आवतहैं नँदनंद ॥ ५९ ॥ सुत देखत पित मात रोम गदगद पुलकित भयो। उर उपज्यो आनंद प्रेमजल लोचन दुहुँ अयो ॥ देव दुंदुभीबजावहीं फन प्रति निर्तत श्याम। ब्रजवासी सबकहतहैं धन्यधन्य बलराम ॥६६०॥ उरगनारिकर जोरिकरति अस्तुति मुखठाढ़ी। गोपीजनअवलोकिरूपवहअतिरति बाढी॥ सुर अंबर ललनासहित जयध्वनि मुखमुख गाइ। बडी कृपा एहि उरगको ऐसी काहु न पाइ ॥६१॥ कृपा करी प्रह्लाद खंभ वै प्रगट भए तब। कृपा करी गजराज गरुड तजि धाइ गये जब ॥ द्रुपदसुताकोकरीकृपा वसनसमुद्र बढाइ। नंदयशोदहि जो कृपा सोईकृपाएहि पाइ॥६२॥ तबकाली करजोरि कह्यो प्रभु गरुडत्रास हैमोहिं। अब करिहैं ते दंडवत नैन भरि देखैंगे तोहिं ॥ चरण चिह्न दरशन करत गहि रहैं तेरे पाइ। उरग द्वीपको करि बिदा कह्यो करो सुख जाइ॥६३॥ प्रभु याने कियो कहा चरण जे फनफन परसे। रमाहृदय जे वसत सुरसरी शिव शिर हरसे॥ जन्म जन्म पावन भयो फन पदचिह्न धराइ। पाँइ पर्यो उरगिनि सहित चल्यो द्वीप सचुहाइ ॥ ३४ ॥ काली पठयो द्वीप सुरनि सुरलोक पठाए। आपुन आए निकसि कमल सब तटहि धराए॥ जलते आए श्याम तब मिले सखा सब धाइ। मात पिता दोउ धाइकै लीनों कंठलगाइ॥६५॥ फेर जन्म भयो कान्ह कहत लोचन भरि आए। जहांतहां ब्रज गोपनारि आतुर ह्वै धाए॥ अंकम भरि भरि मिलनहैं मनो निधनी धन पाइ। मिली धाइ रोहिणि जननि चूमति लेति बलाइ॥६६॥ सखा दौरिकै मिले गये हरि हमपर रिसकारि। धनि माता धनि पिता धन्य सो दिन जेहि अवतारि॥ तुमब्रजजीवनि प्राणहौ यहसुनि हँसे गोपाल। कूदिपरे चढि कदमते तुम खेलन ए ख्याल॥६७॥ काली ल्याए नाथि कमल ताही पर ल्याए। जैसी कहिगए श्याम प्रगट सो हमहिं दिखाए॥ कंस मर्यो निश्चय भई हम जानी ब्रजराज। सिंहिनिको छौंना भलो कहा बडो गजराज॥६८॥ हरि हलधर तब मिले हँसे मनही मन दोऊ। बंधुमिलत सब कहत भेद नहिं जानै कोऊ॥ मात पिता ब्रजलोगसों हरपि कह्यो नँदलाल। आजु रहौ बसि सब इहां मेटहु दुख जंजाल ॥ ६९॥ सुनि सबहिन सुख कियो आजु रहिए यमुनातट। शीतल सलिल सुगंध पवन सुख तरु बंसीवट॥ नँदघरते मिष्टान्न बहु पटरस लिए मँगाइ। महर गोप उपनंद जे सबको दियो बँटाइ ॥६७०॥ दुखकीन्होंसब दूरि तुरतसुखदियोकन्हाई। हर्षभयो ब्रजलोग कंसको डर बिसराई॥ कमलकाज ब्रजमारतो कितने लइ गनाइ। नृप गजको अब डर कहा प्रगट्यो सिंह कन्हाइ॥७१॥ नंद कह्यो करि गर्व कंसको कमल पठावहु। और कमल जल धरहु कमल कोटिक दै आवहु ॥ यह कहियो मेरी कही कमल पठाये कोटि। कोटि द्वैक जलही

धरे यह बिनती इक छोटि ॥७२॥ अपने सम जो गोप कमल तिन साथ चलाए। मन सबके आनंदकान्ह जलते बचिआए॥ खेलतखातअन्हातहीबासर गयो बिहाइ।सूर श्याम ब्रजलोगको जहांतहां सुखदाइ ॥ ७३ ॥ राग सोरठ ॥तुमजाहु बालकछांडि यमुनास्वामिमेरोजागिहै।अंगकारो मुख विकारो दृष्टि परे तोहि लागिहै ॥ तुम केरि बालक युवा खेले केरि दौरत दूरियां। लेहु बालक हीरा पदारथ जागिहै मेरो स्वामियां॥ना मैं नागिन युवाकर खेले न वारे दुरत दुराइयां। कंसकारण गेंद खेले कमल कारण आइयां॥तब धाइ धायो जाइ जगायो मानो छूटी हस्तियां। सहसफन फुंकारछाँडिजाइ कालीनाथियां ॥ जब कान्हकाली लेचले तब नागिन बिनवै देवहो। अबके चेरी अहिवात दीजैकरहि तुमरे सेवहो॥तब लादि पंकज बाहिर काढ्यो भयो ब्रज मन भावना। मथुरानगरी कृष्णराजा सूर तिनहि बधावना ॥ ७४ ॥राग देवगंधार॥काली विषगंजन दह आए। देखि मृतक बछ बालक सब लै कटाक्ष जिवाए॥ बहु उतपात होत गोकुलमें सविता रह्यो भुलाइ।बडी बेरभई अजहुँ न आए गृहकृत कछु न सुहाइ॥नंदादिक सब गोप गोपि मिलि चले सकल बन धाई। दरशे जाइ उरग लपटाने प्राण तजत अकुलाई ॥ अतिगंभीर धीर निज जानत संकर्षनको भाइ। वश कियो नाग सूरदास प्रभु अतिआनँद न समाइ ॥ ॥७५॥राग कान्हरो॥सबै ब्रजहै यमुनाके तीर।कालीनागके फनपर निर्तत संकर्षणको बीर॥लाग मान थेईथेई करि उघटत ताल मृदंग गँभीर।प्रेम मगन गावत गण गंधर्व व्योम विमानन धीर॥ उरग नारि आगे भई ठाढ़ी नैननि ढारति नीर। हमको दान देइ पति छाँडहु सुंदर श्याम शरीर॥ आएनिकसि पहिरि मणि भूषण पीतवसन कटि चीर। सूर श्यामको भुज भरि भेंटत अंकम देत अहीर॥७६॥ सप्तदशोऽध्याय ॥ दावानलके पानकी लीला ॥ राग कान्हरो ॥ दावानलब्रजजनपर धायो।गोकु

ब्रज वृन्दावन तृण द्रुम चाहतहै चहुँपास जरायो॥घेरत आवत दशहुँ दिशाते अति कीने तनुक्रोध नरनारी सब देखि चकितभये दावा लग्यो चहु कोध॥ बहुत असुर घात किये आवत धावतपवन समाजु। सूरदास ब्रजलोग कहत इह उठ्यो दवा अति आजु ॥७७॥आइगई दवअतिहिनिकटही। यह जानत अब ब्रज न बांचिहै कहत सबै चलिय जलतटही॥करि बिचार उठि चलन चहतहै जो देखैं चहुँ पास।चकृतभए नर नारि जहाँ तहां भरि भरि लेत उसांस॥झरझरात भहरात लपट अति देखिअत नहीं उबार।देखत सूर अग्नि अधिकानी नभलो पहुँची झार ॥ ७८ ॥ दशहुँदिशाते बरत दवानल आवतहै ब्रजजनपर धायो ।ज्वाला उठी अकाश बराबरी घात आपने करि सब पायोरि बीग लै आयो सनमुखते आदर करि नृपकंस पठायो।जारि करौं परलय क्षणभीतर ब्रज बपुरो केतिक कहवायो॥धरणि अकाश भयो परिपूरणनेक नहीं कहुँ संधि बचायो। सूर श्याम बलरामहि मारन गर्व सहित आतुर ह्वै आयो॥७९॥ब्रजके लोग उठे अकुलाइ। ज्वाला देखि अकाश बराबरि दशहुँ दिशाकहुँ पारु नपाइ॥झरहरात बनपात गिरत तरु धरणीतरकि तडाकि सुनाइ।जल बरषत गिरिवर तर बाचे अब कैसे गिरि होतु सहाइ ॥ लटकि जात जरिजरि द्रुम बेली पटकत बांस कांस कुशताल। उचटत फर अंगार गगनलौं सूर निरखि ब्रजजन बेहाल॥ ८० ॥ नंदघरनि यह कहति पुकारे।कोउ बरषत कोउ अगिनि जगावत दई पर्य्योहै खोज हमारे॥ तब गिरिवर कर धर्य्योकन्हैया अब न बांचिहै मारत जारे। जेंवन करन चली जब भीतर छींक परी तिय आजु सवारे ॥ ताको फल तुरतहि यक पायो सो उबर्य्यो भए धर्म सहारे। अब सबको संहार होतहै छींक किये यक काज बिचारे ॥ कैसेहु ए बालक दोउ उबरे पुनिपुनि

सोचति परी खँभारे।सूर श्याम यह कहत जननिसों रहि री माँ धीरज उरधारे ॥८१॥ राग गौड॥ भहरात झहरात दवानल आयो। घेरि चहुँ ओर करिशोर अंदोर बन धरणि आकाश चहुँपास छायो ॥ बरत बन बाँस थरहरत कुश कांस जरि उडतहै बांस अतिप्रबल धायो। झपटि झपटत लपट पटकि फूल फूटत फटि चटकि लट लटकि द्रुमन बायो॥अतिअगिनि झार भार धुंधारकरि उचटि अंगार झझार छायो। बरत बन पात भहरात झहरात अररात तरुमहा धरणी गिरायो॥ भए बेहाल सब ग्वाल ब्रजबाल तब शरन गोपाल कहिकै पुकारयो। तृणा केशी शकट बकी बका अघासुर वामकर गिरिराखि ज्यों उबारयो। नेक धीरजकरौ जियहि कोऊ जिनिडरौ कहा यह सुरो लोचन मुदायो। मुठी भरि लियो सब नाइ मुखही दयो सूरप्रभु पियो दावाब्रजजन बचायो॥८२॥राग कान्हरो॥ अबकैराखिलेउगोपालादशहुँदिशातेदुसहदवागिनिउपर्जीहैयहि काल पटकत बांस कास कुश चटकत लटकत ताल तमाल। उचटत अति अंगार फुटत फर झपटत लपट कराल॥ धूम धूँधि बाढी घर अंमर चमकत बिच बिच जाल। हरिण बराह मोर चातक पिक जरत जीव बेहाल॥जिनि जिय डरहु नयन मूँदहु सब हँसिबोले गोपाल।सूर अनल सब प्रदन सयानी अभयकरे ब्रजबाल॥८३॥ रागगौड॥ दावानलअचयो ब्रजराज ब्रजजन जरत बचायो। धरणि आकाशलौं ज्वाल माला प्रबल घेरि चहुँ पास ब्रजवास आयो॥भये बेहाल सब सबदेखि नंदलाल तब हँसतही ख्याल तत्काल कीन्हों। सबनि मूँदे नयन ताहि चितये सैन तृषा ज्यों नीरदव अचै लीन्हों॥लखोअबनैनभरिबुझिगईअग्निझरि चितै नर नारिआनंदभारी।सूरप्रभु सुखदियोदवानलपीलियोकहतसबग्वालधनिधनिमुरारी॥८४॥राग बिहागरो॥चकितदेखियहकहिनर नारी।धरणि अकासबराबरि ज्वालाझपटतलपटकरारी॥नहिं बरष्योनहिं छिरक्यो काहू कहुँधौंगयो बिलाइ।अतिआघात करतबनभीतर कैसेगयो बुझाइ॥तृणकीआगिबरतही बुझिगईहँसिहँसिकहत गुपाल।सुनहु सूर वह करनि कहनि यह ऐसे प्रभुके ख्याल॥राग बिलावल॥जाके सदा सहाइ कन्हाई। ताहि कहो काको डर भाई॥ बन घर जहांतहां सँग डोलैं। खेलत खात सबनिसों बोलैं॥ जाको ध्यान न पावैं योगी। सोब्रजमें माखनको भोगी॥ जाकी माया त्रिभुवन छावै।सो यशुमतिकेप्रेम बधावैं॥ मुनिजन जाको ध्यान न पावैं। ब्रजजन लैलै नाम बुलावैं॥सूर ताहि सुर अंमर देखैं। जीवन जन्म ब्रजहिको लेखैं॥ ८६ ॥राग कान्हरो॥ब्रजवनिता सबकहतिपरस्परनंदमहरको सुत बड बीर। देखहु धौं पुरुषारथ इनको आन कोमल तनुश्यामशरीर॥ गयो पताल उरग गहि आन्यो ल्यायो तापर कमल लदाइ। कमलकाज नृपब्रज मारतहो कोटि जलज तेहि दिये पठाइ॥दावागिनि नभ धरणि बराबरि दशहू दिशते लीनो घेरि। नयन मुँदाइ कहा तेहि कीन्हों कहूं नहीं जो देखै हेरि॥ ए उत्पात मिटत इनहीपे कंस कहा बपुरोहै छार। सूर श्याम अवतार बडो ब्रज येईहैं करतासंसार॥८७॥राग सोरठ॥अति सुंदर नँद महरढिठोना।निरखिनिरखि ब्रजनारिकहति सब ये जानत कछुटोना॥कपटरूपकी त्रिया निजाती तबहिं रहे अतिछौना। द्वारशिलापर पटकि तृणाको ह्वैआयो अब पौना॥अघा बकासुर तबहिं सँहारयो प्रथम कियो बन गौना। सूर प्रगट गिरि धरयो वामकर में जानतिवलिजौना॥८८॥राग मारू॥दावतेजरतब्रजजनउबारेपैठि जलगयो गहि उरग आन्यो नाथि प्रगट फन फननि प्रति चरण धारे॥देखैं मुनि लोक सुरलोक शिवलोकके नंद यशुमति हेतु वश मुरारी।जहां तहां करत अस्तुतिमुखनिदेव नर धन्यशब्दतिहुँजयभुवन धारी॥सुखकियो यमुनतटएक बार रैनि प्रातही ब्रज गये गोप नारी। सूरप्रभुश्याम बलरामनंद

धाम गयो मात पित ब्रजजनहिसुखदकारी॥८९॥ राग रामकली ॥हरिब्रजजनकेदुखबिसरावन।कहा कंस करि कमल मँगाये कहा दवानल दावन॥जल कब गिरे उरगकवनाथ्योनहिंजानतब्रज लोग कहां बसे यक रैनि दिवस भारि कबहिंभयोयहसोग॥यहजानतहमऐसेहिंब्रजमेंवैसहिकरत बिहार। सूरश्याम जननीसोंमांगतमाखनबारंबार॥९०॥ अष्टादश अध्याय॥प्रलंबवध॥भैरवी॥ एकदिवसप्रलंबदाव कोलीन्हों कंसबुलाई। कह्योजाइमारोनँदढोंटादेहौंबहुतबडाई॥तेहि कहिकैआयोब्रज भीतर करत बडो उतपात।नरनारी देखत सब डरपे कीन्हो हृदय संताप॥हरि ताको दै सैनबुलायोमोपै काहेन आवत। तब वह दोऊ हाथ उठाये आयो हरिदेखि धावत॥हरिदोउहाथपकरिकैताकेदियो दूरि फटकारी। गिरो धरणि पर अतिविहबलहोइ रह्योनदेहसँभारी॥बहुरोउठ्योसँभारिअसुरवहधायो निज मुख बाई। देखि भयानक रूप असुरकी सुरनरगणडराई॥चहुँघाफेरिअसुरधरिपटक्यो शब्द उठ्यो आघात।चौंकि पर्‍यो कंसासुर सुनिकै भीतर चल्यो हहरात॥पुहुपवृष्टि करि देवन मिलि आनंद मोद बढाइ।ब्रजजन नंद यशोदहरषितसूरसुमंगलगाइ॥९१॥ राग सारंग॥यसुमतिबूझतिफि-रति गोपालहि। सांझ कि बिरियां भई सखीरीमैंडरपतिजंजालहि॥जबतेतृणावर्तब्रजआयोतबते मोहिं जिय शंक। नैननि ओट होत पल एकौमैंमनमरतिअदंक॥इहिअंतरबालकसबआयेनंदहि करत गुहारी। सूर श्यामको आइ कौन धौं लेगयो कांधे डारी॥९२॥राग कान्हरो॥आजु कन्हैया बहुत बच्यो री। खेलत रह्यो घोषके बाहर कोउ आयोशिशुरूपरच्योरी॥मिलिगयोमनहि सखा की नाईं ले चढाइ हरि कंध सच्यो री। धर्म सहाय होतहै जहँ तहँश्रमकरिपूरबपुण्यबच्योरी॥ गगन उडाइ गयो ले श्यामहि आइ धरणि पर आपु दच्यो री।सूरश्यामअबकैबचिआयेब्रजघर घर सब सुखहि मच्यो री॥९३॥ बडे भाग्यहैं महर महरिकी।लैगयोपीठिचढाइअसुर इक का कहौं उबरनि या हरिकी॥ नँदघरनि कुलदेव नावति तुमहि लाज सुत घरी पहरकी। जहाँ तहाँ तुमहिं सहाय सदा हौ जीवनिहै यह श्याम शहरकी॥हरष भए नंद करत बधाई दानदेत कहा कहौंमहरकी।पंच शब्दकी ध्वनि बाजत नाचत गावत मंगलचार चहरकी॥अंकम भरि भरि लेत श्यामको ब्रजनर नारि अतिहि मन हरषी। सूर श्याम संतन सुखदायक दुष्टनके उरशालक करषी॥९४॥राग सारंग॥ खेलन दूरिजात कतप्यारे जबते। जन्म भयोहैतेरोतबहीतेइहिभांति ललारे॥कोउ आवति युवती मिसि करिकै कोउ लैजातबतासकला रे। अबलगिबचेकृपादेवनकी बहुत गणमारि शत्रु तुम्हारे॥ हाहा करतिपाँइ तेरे लागति अब जनि जाहु दूरि मेरेप्यारे।सुनहुसूर यशुमति सुतयोधतिबिधिकेचरित सबै हैंन्यारे॥९५॥उन्नीसवां अध्याय॥कल्याण॥कबकीटेरतिकुँवर कन्हाई।बालसखासब टेरत ठाढे अरु अग्रज बलभाई॥दाऊजूतुमह्यांनहिंआवत करोमुखारीआई। माता दुहुँनिदतौनी करदै जलझारी भरिल्याई॥उत्तमबिधिसों मुखपखरायो वोदे बसन अँगोछि। दोउ भैया कछु करौ कलेऊ लई बलाइ करपोंछि॥ सद माखन दधि तुरत जमायो मधुमेवा मिष्टान। सूरश्याम बलराम संग मिलि रुचिकरि लागे खान॥९६॥राग नट॥ चले बन धेनु चरावत कान्ह। गोपबालक कछु सयाने नंदके सुत नान्ह॥ हर्षसों यशुमति पठाए श्याम मन आनंद। गाइ गोसुत गोप बालक मध्य श्रीनँदनंद॥ सखा हरिको यहसिखावतछांडि जिनिकहुँ जाहु॥सघन बृंदावन अगम अति जाइ कहूँभुलाहु॥सूरके प्रभु हँसत मनमें सुनतही यह बात। मैं कहूं नहिं संग छांडौं बनहि बहुत डेरात॥९७॥राग धनाश्री॥हेरी देत चले सब बालक। आनँद सहित जात हरि खेलन संग मिले पशुपालक॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावतकोउनाचत कोउ

धावत। किलकत कान्ह देखि यह कौतुक हरषि सखा उर लावत॥ भली करी तुम मोको ल्याए
मैया हरषि पठए। गोधनवृंद लिये ब्रजबालक यमुनातट पहुँचाए॥ चरति धेनु अपने अपने रँग
अतिहि सघन वन चारो। सूर संग मिलि गाइ चरावत यशुमतिको सुत बारो॥९८॥ देवगन्धार॥
द्रुमचढि काहेन टेरौ कान्हा गइयां दूरिगईं। धाई जात सबनके आगे जे वृषभान दईं॥ घेरे न घिरत
तुम बिनु माधवजू मिलत नहीं बगदईं। बिडरत फिरत सकल बनमहियां एकइ एक भईं॥
छाँडि खेल सब दूरि जातहैं बोलौ जोसके थोक कईं। सूरदास प्रभु प्रेम समुझिकै मुरली सुनत सब
आइगईं॥९९॥ राग मारू॥ कहिकहि बोलत धौरी कारी। देखो धन्य भाग्य गाइनके प्रीति करत
बनवारी॥ मोटी भईं चरत वृन्दावन नंदकुँवरकी पाली। काहेन दूध देहिं ब्रजपोषन हस्तकमलके
लाली॥ बैन श्रवण सुनि गोवर्धनते तृण दीन्हो धरि चाली। तबहीं बेगि आइसूरज प्रभुपे क्यों
भजैं जे पाली॥७००॥ राग कल्याण॥ जबसब गाइभई एक ठाईं। ग्वालनघरको घेरिचलाईं॥ मारग-
में तब उपजी आगि। दशहू दिशा जरन सब लागि॥ ग्वाल डरपि हरि शरणै आये। सूर राखि अब
त्रिभुवनराये॥१॥ राग गौरी॥ साँवरो मनमोहन माई। देख सखी बनते ब्रज आवत सुंदर नंदकुमार
कन्हाई॥ मोरपंख शिर मुकुट बिराजत मुखमुरली सुर सुभग सोहाई। कुंडल लोल कपोलनिकी छबि
मधुरी बोलनि बरणि न जाई॥ लोचन ललित ललाट भ्रुकुटिबिच ताकि तिलककी रेख बनाई।
मनौ मर्याद उलंघि अधिक बल उमँगिचली अति सुंदरताई॥ कुंचितकेश सुदेश वदनपर मानौ
मधुप माल फिरि आई। मंदमंद मुसुकात मनौ घन दामिनि दुरि दुरि देत दिखाई॥ शोभित
सूर निकट नासाके अनुपम अधरनिकी अरुनाई। जनु शुक सुरँग बिलोकि बिंबफल चाखन
कारन चोंच चलाई॥२॥ देखौ री नँदनंदन आवत। वृंदावनते धेनु वृंदमें बेनु अधर धरे गावत॥
तनु घनश्याम कमलदल लोचन अंगअंग छबि पावत। सुरभी कारी गोरी धूमरि धौरी लैलै नाम
बुलावत॥ संग बाल गोपाल संग सब शोभित मिलि कर पत्र बजावत। सूरदास मुख निरखतही
सुख गोपी प्रेम बढावत॥३॥ रजनी मुख बनते बने आवत भावत मंद गयंदकी लटकनि।
बालक वृन्द विनोद हँसावत करतल लकुट धेनुकी हटकनि॥ विकसत गोपी मनो कुमुद सर रूप
सुधा लोचन पुट घटकनि। पूरणकला उदित मनौ उडुपति तेहि छिन विरहव्यथाकी चटकनि॥
लज्जित मन्मथ निरखि विमलछबि रसिकरंग भौंहनकी मटकनि। मोहनलाल छबीलो गिरिधर
सूरदास बलि नागर नटकनि॥४॥ गोचारन राग बिलावल॥ जागिए गोपाललाल प्रगट भई हंसमाल
मिट्यो अंधकाल उठौ जननि मुख दिखाई। मुकुलित भए कमलजाल कुमुदवृंद वन बिहाल
मेटहु जंजाल त्रिविध ताप तन नशाई॥ ठाढे सब सखा द्वार कहत नंदके कुमार टेरतहैं बारबार
आइये कन्हाई। गैयनि भई बडी बार भरिभरि पै थननि भार बछरगन करैं पुकार तुमबिनु यदु-
राई॥ ताते यह अटकपरी दुहनकाज सौंह करी उठि आवहु क्यों न हरी बोलत बलभाई। मुखते
पट झटकिडारि चंद्रवदन दे उघारि यशुमति बलिहारि वारि जलोचन सुखदाई॥ धेनुदुहन चले
धाइ रोहिणि तबले बुलाइ दोहनी मुहिंदे मँगाइ तबहीं लेआई। बछरा थनदियो लगाइ दुहतबैठिके
कन्हाइ हँसत नंदराइ तहां मात दोउ आईं॥ दोहनि कहुं दूधधार सिखवत नंद बारबार यह छबि
नहिं वारपार नंदघर बधाई। तब हलधर कह्यो सुनाइ गाइन बन चलौ लिवाइ मेवा लीनो मँगाइ
विविधरस मिठाई॥ जेंवत बलराम श्याम संतनके सुखदधाम धेनुकाज नहिं विश्राम यशुदा जल
ल्याई। श्याम राम मुख पखारि ग्वालबाल लिये हँकारि यमुनातट मनविचारि गाइन हँकराई॥ शृंग

वेणु नाद करत मुरली मुख अधर धरत जननी मन हरत ग्वाल गावत सुरसाई। वृंदावन तुरत जाइ धेनु चरति तृण अघाइ श्याम हरष पाइ निरखि सूरज बलि जाई ॥ ॥ ५ ॥ मुरलीस्तुति रागसारंग ॥ जब हरि मुरली अधर धरत । खग मोहे मृगयूथ भुलाने निरखि मदन छबि छरत ॥ पशु मोहे सुरभीहु थकी तृणदंतहि टेकि रहत ॥ शुक सनकादि सकल मन मोहे ध्यानिउँ ध्यान बहत ॥ सूरजदास भाग्य हैं तिनके जो या सुखहि लहत॥६॥राग बिहागरो॥कहौं कहा अंगन की सुधि बिसरि गई।श्याम अधर मृदु सुनत मुरलिका चकृत नारि भई।।जो जैसे सो तैसे रहिगई सुख दुख कह्यो न जाई।लिखीचित्रसी सूर सो रहिगई एकटक पल बिसराइ ॥ ७ ॥राग मलार ॥सुनत वन मुरली ध्वनिकी बाजन।पपिहा गुञ्जकोकिल वनकुंजत अरु मोरनके गाजन॥ यही शब्द सुनिअतगोकुलमें मोहन रूप विराजन। सूरदास प्रभु मिली राधिका अंग अंग करि साजन ॥ ८ ॥राग मारू ॥ मेरे सांवरे जब मुरली अधर धरी। सुनि ध्वनि सिद्ध समाधि टरी ॥ सुनि थके देव बिमान।सुरबधू चित्र समान ॥ ग्रह नक्षत्र तजत न रास । याही वधे ध्वनिपास ॥ सुनि आनँद उमँगिभरे । जलथलके अचल टरे ॥ चराचर गति विपरीति। सुनि वेनुकलिपत गीति ॥ झरनाझरत पाषान । गंधर्व मोहे कलगान ॥ सुनि खग मृग मौन धरे।फल तृण सुधि बिसरे॥ सुनि धेनु अति थकित रहीं। तृणदंतहु नहींगहीं॥ बछरा न पीवै क्षीर। पंछी न मनमें धीर॥द्रुम बेलि चपल भए।सुनि पल्लव प्रगटि नए॥जेविटप चंचल पात। ते निकटको अकुलात ॥ अँकुलित जे पुलकित गात। अनुराग नैन चुचात ॥ सुनि चंचल पवन थके।सरिताजल चलि न सके॥सुनि ध्वनि चलीं ब्रजनारि।सुत देह गेहबिसारि॥ सुनि थकित भयो समीर। उलटो बह्यो यमुनानीर॥ मनमोहन मदनगोपाल। तन श्याम नयन विशाल ॥ नव नील तनु घनश्याम । नव पीत पट अभिराम ॥ नवमुकुट नवघनदाम । लावण्य कोटिक काम ॥मनमोहनरूप धरयो।तबकामको गर्व हरयो ॥ मेरे मदनमोहन लाल। सँग नागरी ब्रजबाल।।नवकुंज यमुनाकूल।देखत सूरदासजनफूल ॥ ९ ॥ रागपूरबी॥ तरु तमाल तरे त्रिभंगी तरुण कान्ह कुँवर ठाढेहैं साँवरे बरन । मोर मुकुट पीतांबर वनमाल विराजित देखत ब्रजजन मनहरन॥ सखाअंशपर भुज दीन्हे लीन्हे मुरली अधरमधुर तानविश्वंभरन । सूरश्याम कमलनयन कौनको नकीन्हेवशविलोकनिश्रीगोवर्धनधरन।।७१० ॥राग बिलावल॥श्यामहृदयवरमोतिनमाला।विथकित भई निरखि ब्रजबाला ॥ श्रवण थके सुनि वचन रसाला ।नैन थके दरशननँदलाला॥कंबुकंठभुज नैन बिशाला।करके उर कंचन नगजाला॥पल्लव हस्त मुद्रिका भ्राजै।कौस्तुभमणि हृदयस्थल छाजै ॥ रोमावली बरणि नहिं जाई।नाभिस्थलकी सुंदरताई ॥ कटि किंकिणी चंद्रमणि संयुत।पीतांबर कटितट छबि अद्भुत ॥ युगलजंघकी पटतर कोहै । तरुनी मन धीरजको जोहै ॥ जान जानुकी छबि नहिंभारे । नारिनिकर मन बुद्धि बिचारे ॥ रतनजटित कंचन कल नेपुर। मंदमंद गतिचलत मधुर सुर॥युगल कमल पद नखमणि आभा । संतनि मन संतत यह लाभा ॥ जो जेहि अंग सो तहां भुलानी।सूरश्याम गति काहु न जानी॥१३॥अध्याय२०॥राग गौरी॥ नँदनंदन मुख देख्यो माई। अंगअंग छबि मनहु उये रवि शशि अरु समर लजाई ॥ खंजन मीन कुरंग भृंग वारिजपर अति रुचि पाई। श्रुतिमंडल कुंडल विवि मकर सु बिलसत सदन सदाई ॥ कंठकपोत कीर विद्रुमपर दारिम कननि चुनाई।दुइ सारँग वाहनपर मुरली आई देत दोहाई॥ मोहेथिर चर विटप बिहंगम व्योम विमान थकाई। कुसुमंजुलि वरषत सुर ऊपर सूरदास बलिजाई ॥१२॥ राग केदारो ॥ देखिरी

देखि आनँदकंद । चित्त चातक प्रेमघन लोचन चकोरको चंद ॥ चलित कुंडल गंड मंडल झलक ललित कपोल । सुधासर जनु मकर क्रीडत इंदु दह दह डोल ॥ सुभग कर आनन समापे मुरलिका एहि भाइ । मनो इनै अंभोज भाजन लेत सुधा भराइ ॥ श्यामदेह दुकूल द्युति छबिलसत तुलसीमाल । तडित घन संयोग मानो सेनिका शुकजाल ॥ अलक अबिरल चारु हास विलास भ्रुकुटी भंग । सूर हरिकी निरखि शोभा भई मनसा पंग॥१३॥राग मलार॥देखौ माई सुंदरताको सागर । बुधि विवेक बल पार न पावत मगन होत मननागर॥तनु अतिश्याम अगाध अंबुनिधि कटिपट पीत तरंग । चितवत चलत अधिक रुचि उपजत भवँर परत सब अंग ॥ नैन मीन मकराकृत कुंडल भुजबल सुभग भुजंग । मुकुलमाल मिलि मानो सुरसरि द्वै सरिता लिये संग ॥ मोर मुकुट मणिनग आभूषण कटिकिंकिनि नखचंद । मनु अडोलवारिधिमें बिंबित राकाउडुगणवृन्द॥ वदन चंद्र मंडलकी शोभा अवलोकनि सुखदेत। जनु जलनिधि मथि प्रकट कियो शशि श्री अरु सुधासमेत॥ देखि स्वरूप सकल गोपीजन रहीं बिचारि बिचारि।तदपि सूर तरिसकीं न शोभा रहीं प्रेम पचिहारि१४॥राग भैरवी॥जैसी जैसी बातें करै कहत न आवैरी।श्यामसुंदरअतिमनमनभावैरी॥ मदनमोहन मृदु बेन बजावै री । तानतरंग रस रसिक रिझावै री॥जंगमथावरकरैथावरचलावैरी। लहरि भुजंग तजि सनमुख आवै री॥ व्योमजन अतिगति फूल वरपावैरी। कामिनि जो धीर धरै सो को जो कहावै री॥ नंदलाल ललना लालच ललचावैरी। सूरदास प्रेम हरि हिये न समावै री॥ ॥ १५ ॥ राग कल्याण ॥ बने विशाल हरि लोचन लोल।चितैचितै हरि चारुविलोकनि मानहुँमाँगत हैं मन ओल ॥ अधर अनूप नासिका सुंदर कुंडल ललित सुदेश कपोल।मुख मुसकात महाछवि लागत श्रवण सुनत सुठि मीठे बोल ॥ चितवत रहतचकोरचंद्रज्यों नेक न पलक लगावत डोल। सूरदास प्रभुके वश ऐसे दासीसकलभईंबिनुमोल॥१६॥ राग धनाश्री ॥व्रजयुवती हरिचरणमनावैं। जे पद कमल महामुनि दुर्लभ ते सपनेहु न पावैं ॥ तनु त्रिभंग युग जानु एक पग ठाढे एक दरशायो । अंकुश कुलिश वज्र ध्वज परगट तरुणी मन भरमायो ॥ वह छबि देखि रही एकटकही यह मन करति बिचार । सूरदास मनौ अरुण कमलपर सुखमय करत बिहार॥१७॥राग बिलावल॥ देखि सखी हरि अंग अनूप । जानुयुगल युगजंघबिराजतकोवरणैयहरूप॥ लकुट लपेटि लटकि भए ठाढे एक चरण धरधारे। मनहुँ नीलमणि खंभ कामरचिएकलपेटिसुधारे॥ कबहुँलकुटतेजानु हरिलै अपनेसहजचलावत।सूरदासमानहुकरभा करबारंबारडोलावत॥१८॥राग नटन रायण॥ कटितटि पीत वसन सुदेश । मनहुँ नवघन दामिनी तजि रही सहज सुवेप॥कनक मणि मेखलाराजत सुभग श्यामल अंग । मनो हंस रिसाल पंगति नारि बालक संग॥सुभग कटि काछनीराजतजलजकेसरि खंड । सूर प्रभु अंग निरखि माधुरि मदनतनु परचोदंड॥१९॥ राग नट ॥ तरुणीनिरखिहरि प्रतिअंग।कोउ निरखि नख इंदु भूली कोउ चरणयुग रंग ॥ कोउ निरखिवपु रही थकि कोउनिरखि युगजानु ।कोउ निरखियुगजंघशोभा करति मन अनुमान॥कोउ निरखिकटि पीतकछनीमेखला रुचिकारि । कोउ निरखि हृद नाभिकी छवि डारि तन मन वारि ॥ रुचिर रोमावली हरिकी चारु उदर सुदेश । मनो अलिसैनी विराजत बनै एकहि भेप । रही एकटक नारि ठाडी करत बुद्धिविचार । सूर आगम कियो नभते यमुन सूक्षमधार ॥ ७२० ॥ राजत रोम राजिव रेप । नीलघनमनों धूमधार रही सूक्षमशेप ॥ निरखि सुंदर हृदयपर भृगुपद परम सलेप । मनहु शोभित अभ्रअंतर शंभु भूपण भेप॥ मुक्तमाल नक्षत्र गणसम अर्धचंद्र विशेप ॥ सजल उज्ज्वल

जलद मलयज प्रबल बलनि अलेश॥ केकि कच सुरचापकी छबि दशन तडित सपेष । सूर प्रभु अवलोकि आतुर तजे नैन निमेष ॥ २१ ॥राग गौरी॥ हरि प्रति अंग नागरि निरखि । दृष्टि रोमावली पर रहि बनत नाहिन परखि ॥कोउ कहत यह कामश्रेनी कोउ कहति नहिं योग।कोउ कहति अलि बाल पंगति जुरे एक संयोग ॥ कोउ कहति अहि काम पठयो डसै जिनि यह काहु । श्याम रोमावलीकी छबि सूर नहीं निबाहु ॥२२ ॥राग आसावरी॥चतुर नारि सब कहति बिचारि। रोमावली अनूप विराजति यमुनाकी अनुहारि ॥ उर कलिंदते धँसि जलधारा उदर धरणि परवाह ।जाति चली अतिते जलधारा नाभि ह्रद अवगाह ॥ भुजादंड तट सुभग घटा घन बनमाला तरुकूल।मोतिनमाल दुहूँघा मानो फेन लहरि रसफूल॥सूर श्याम रोमावलिकी छबि देखति करति बिचारि।बुद्धि रचति तरि सकति न शोभा प्रेम विवश ब्रजनारि॥२३ ॥राग कल्याण॥रोमावली रेख अतिराजत । सूक्षम शेद धूमकी धारा नवघन ऊपर भ्राजत ॥भृगुपद रेख श्याम उर सजनी कहा कहौं ज्योंछाजत।मनहु मेघ भीतरशशिकी द्युतिकोटि काम तनु लाजत ॥ मुकतामाल नंदनंदन उर अर्ध सुधाधर कांति । तनु श्रीखंड मेघउज्ज्वलअति देखि महाबल भांति॥ बरही मुकुट इंद्रधनु मानहुतडित दशनछबि लाजत ।एकटकरही विलोकि सूरप्रभु तनुकीहै कहहाजत॥२४॥राग सारंग॥ मुख छबि कहौं कहां लगि माई।मनोकंज परकाश प्रातहीरवि शशि दोऊजातछपाई॥अधरबिंबनासा ऊपर मनौं शुक चाखनको चोंच चलाई। बिकसत बदन दशन अति चमकनि दामिनिद्युति दुरिदेत देखाई ॥ शोभित श्रीकुंडलकीडोलन मकराकृतअतिश्रीबनाई।निशिदिन रटत सूरके स्वामीब्रजवनिता देहैंबिसराई२५॥राग केदारो॥सखीरीसुंदरताकोरंग। छिनछिनमांहपरतछबिऔरैकमलनयनके अंग॥परमितकरि राख्यो चाहतिहै तुमहु लागि डोलतहै संग । चलतनिमेष विशेपजा नियतभूलि भई मतिभंग॥श्याम सुभगके ऊपर वारों आलीकोटि अनंग।सूरदास कछु कहत न आवै गिराभई गतिपंग॥२६॥राग बिहागरो॥श्यामभुजाकी सुंदरताई । बडे बिशाल जानुलोंपरसत यकउपमा मन आई ॥ मनो भुजंग गगनते उतरतअधमुखरह्यो झुलाई।चंदनखौरि अनूपमराजत सो छबिकही न जाई॥रत्नजटित पहुँची कराजतअँगुरीसुंदरभारी।सूरमनो फनि शिरमणि शोभित फनफनकी छबिन्यारी२७॥राग धनाश्री॥गोपीतजि लाजसंगश्यामरंगभूली।पूरणमुखचंद्रदेखि नैनकमलफूली॥ कीधौं नवजलदस्वाति चातक मन लाये।किधौं नारिबृंद सीप ह्रदयहर्षपाये॥रविछबिकुंडलनिहारि पंकज बिगसाने । किधौं चक्रवाक निरखि अतिही रतिमाने॥कीधौं मृगयूथजुरे मुरलीध्वनि रीझे।सूर श्याम मुख कुंडल छबिकेरस भीजे ॥२८॥ राग सोरठ॥बडो निठुर बिधना यह देख्यो । जबते आजुनंदनंदन छवि बारबार करि पेख्यो॥नख अँगुरी पगजानु जंघकटि रचि कीन्हों निर्मान। ह्रदयबाहु कर हस्त अंग अंग मुख सुन्दर अतिबान॥ अधर दशन रसना रसवाणी श्रवण नयन अरु भाल।मुग्रोमप्रतिलोचनदेतो देखतबनेगोपाल॥२९॥ राग गूजरी॥श्यामअंगयुवतीनिरखि भुलानी । कोउ निरखति कुंडलकीआभायतनेहिं मांझ बिकानी॥ ललितकपोल निरखिकोउअटकी शिथिल भई ज्यों पानी ।देहगेहकी सुधि नहिं काहू हरपनको पछितानी॥कोउ निरखति रही ललित नासिका यह काहू नहिं जानी। कोउ निरखति अधरनकी शोभा फुरत नहींमुखबानी॥कोउचकृत भई दशन चमक पर चकचौंधी अकुलानी । कोउ निरखति द्युति चिबुक चारुकी सूर तरुनि बिततानी ॥७३०॥ राग नट ॥ श्यामकरमुरलीअतिहि बिराजत । परसतअधरसुधारसप्रगटतमधुर मधुर सुर बाजत॥लटकत मुकुट भौंह छबि मटकत नैन सैन अतिछाजत।ग्रीव नवाइ अटकिबंसी

पर कोटिमदन छबि लाजत ॥ लोल कपोल झलक कुंडलकी यह उपमा कछु लागत। मानहुँ मकर सुधारस क्रीडत आप आप अनुरागत । वृंदावन विहरत नँदनंदन ग्वालसखा सँग सोहत। सूरदास प्रभुकी छबि निरखत सुर नर मुनि सब मोहत ॥३१॥ राग धनाश्री ॥ तब लगि सबै सयान रही। जबलगि नवलकिशोरी मुरली वदनसमीर बही ॥ तब हीलौं अभिमान चातुरी पतिव्रत कुलहि चही।जबलगि श्रवणरंध्र मग मिलकै नाहीं इहै बही। तब लगि तरुनितरल चंचलाता बुधि बल सकुचि रही।सूरदास जबलगि वह ध्वनि सुनि नाहिंन बनतकही॥३२॥राग गौरी॥ ब्रजललना देखतिगिरिधरको। एकएक अंगअंगपर रीझी अरुझी मुरलीधरको॥मनो चित्रकीसी लिखिकाढी सुधि नाहीं मन घरको । लोकलाज कुल कानि भुलानी लुब्धी श्याम सुंदरको ॥कोउ रिसाइ कोउ कहै जाइ कछु डरी न काहू डरको । सूरदास प्रभुसों मन मान्यो जन्मजन्म परतरको ॥ ३३॥ राग सारंग ॥ बंसी वन कान्ह बजावत। आइ सुनो श्रवणनि मधुरे सुर राग रागिनी ल्यावत ॥ सुरश्रुति तान बँधान अमित अति सप्तअतीत अनागत आवत । जनु युग जुरि वरवेष सजलमथि बदनपयोधि अमृत उपजावत ॥ मनो मोहनी भेष धरे धरि मुरली मोहन मुख मधु प्यावत। सुर नर मुनि वश किये रागरस अधरसुधारस मदन जगावत ॥ महामनोहर नाथ सूर थिर चर मोहे मिलि मरम न पावत । मानहु मूक मिठाईके गुन कहि न सकत मुखशीश डोलावत॥३४॥ राग केदारो॥ वंसी वन राज आज आई रण जीति। मेटतिहै अपने बल सबहिनकी रीति ॥ बिडरे गजयूथ शीलसैन लाज भाजी । घूँघटपट कवच कहो छूटे मान ताजी ॥ किनहूं पति गेह तजे किनहूं तन प्रान।किनहुन सुख शरण पायो सुनत सुयश कान ॥ कोऊ पद परसि गए अपने अपने देश । कोउ मारि रंक भए हुते जे नरेश ॥ देत मदन मारुत मिलि दशौ दिशि दोहाई। सूर श्याम श्रीगोपाल वंसीवश माई ॥३५॥ राग सारंग॥ जबते वसी श्रवण परी । तबहींते मन और भयो सखिमोतन सुधिबिसरी हौं अपने अभिमान रूप योवनके गर्वभरी। नेक न कह्यो कियो सुनि सजनी वादिहि आपु ढरी॥ बिन देखे अब श्याम मनोहर युगभरि जात घरी। सूरदास सुनु आरज पंथते कछु न चाँड टरी॥ मुरली ध्वनि श्रवण सुनि भवन रहौ नहिं परै।ऐसी को चतुर नारि धीरज मन धरै॥खगमृगतरुसुर नर मुनि शिवसमाधि ढरै। अपनी गतितजोपौनसरिताउ न टरै ॥ मोहनकेमनकोकोअपनेवशकरै। सूरदास सप्तसुरन सिंधु सुधा भरै॥३६॥ राग कान्हरो॥ माई री मुरली अतिगर्व काहु वदतिनहिं आजु। हरिको मुखकमल देख पायो सुखराजु॥बैठति करि पीठ ढीठ अधरछत्रछाहीं। चमरचिकुर राजत तहँ सुंदर सभामाहीं॥ यमुनाके जलहि नाहिं जलधि जान देति । सुरपुरते सुर विमान भुवि बुलाइलेति॥स्थावर चर जंगमजहँ करति जीतिअजीति।बेदकी विधि मेटि चलति आपनेही रीति॥ वंशीवश सकल सूर सुर नर मुनि नाग। श्रीपतिहूं श्रीविसारी एही अनुराग॥३७॥राग गौरी॥मुरली मोहे कुँवर कन्हाई। अचवति अधरसुधावश कीन्ही अब हम कहा करें कहिमाई ॥ सर्वसु हर्‌यो धर्‌यो कबहूं औसरहुं न देति अघाई।गाजति बाजति चढी दुहूं कर अपने शब्द न सुनत पराई॥ जिहि तन अनल दह्यो कुल अपनो तासों कैसेहोत भलाई। अब कहि सूर कौन विधि कीजै बनकी व्याधि मांझ घर आई ॥ ३८॥ राग मलार॥ मुरली तऊ गुपालहि भावति। सुन री सखी यदपि नँदनंदन नानाभाँति नचावति॥राखत एक पाँइ ठाढे करि अतिअधिकार जनावति।कोमल अंग आपु आज्ञागुरु कटि टेढी ह्वै आवति॥ अतिआधीनसुजान कनौडे गिरिधरनारि नवावति। आपुन पौढि अधरसंज्यापर करपल्लवसन पदपलुटावति॥भृकुटीकुटिलकोपनासापुट हमपरकोप कुपावति।

सूर प्रसन्न जानि एकौ छिन अधर सुशीश डोलावति॥३९॥श्याम तुम्हारीमदनमुरलिका नेकसी जग मोह्यो।जे सब जीव जंतु जल थलके नाद स्वाद सब पोह्यो॥जे तीरथ तप करेतरनिसुतपन गहि पीठि न दीन्ही। ता तीरथ तपके फल लैकै श्याम सोहागिनि कीन्हीं॥ धरणीधरिगोबर्धन राख्यो कोमल प्राण अधार। अब हरि लटकि रहत ह्वै टेढे तनक मुरलिके भार॥ निदरि हमहिं अधरन रस पीवत पठै दूतिका माई।सूर श्याम निकुञ्जते प्रगटी बसुरी सौति भइ आई॥ ७४०॥ सखीरी मुरली लीजै चोर। जिन गोपाल कीन्हें अपने वश प्रीति सबनिकी तोर॥ छिन एक घोर फोरिवसुतासुर धरत नकबहूं छोर।कबहूँ कर कबहूं अधरनपर कबहूँ कटिमें खोसत जोर॥ ना जानौं कछु मेलि मोहिनी राखी अंग अंभोर। सूरदास प्रभुको मन सजनी बँध्यो रागके डोर॥४१॥ राग केदारो॥ मुरली अधर सजी बल वीर। नादप्रति वनिता विमोही डर बिसारे चीर॥ खग नैन मूँदि समाधि धरि ज्यों करत मुनि तप धीर। डोलति नहींद्रुमलता विथकी मंद गंध समीर॥ मृग धेनु तृण तजि रहे ठाढे बच्छ तजि मुखक्षीर। सूर मुरलीनाद सुनि थकिरहत यमुनानीर॥४२॥ राग मलार॥जब मोहन मुरली अधर धरी। गृहव्यवहार थके आरजपथ चलत न संककरी॥पदरिपुपटअटक्यो आतुरज्यों उलटत पलट मरी।शिवसुत वाहनआइमिलेहैंमनचित बुद्धिहरी॥ दुरिगए कीर कपोत मधुपपिक सारंग सुधि बिसरी॥ उडुपति विद्रुमबिंब खिसान्यो दामिनि अधिक डरी। निरखे श्याम पतंगसुतातट आनँद उमँगि भरी॥सूरदासप्रभु प्रीतिपरस्पर प्रेमप्रवाह परी॥४३॥अध्याय२१गोपिकावचन॥राग सारंग॥हम न भई वृंदावनरेनु। जिनचरणन डोलत नँदनंदन नितप्रति चारत धेनु॥ हमते धन्य परम ए द्रुम वन बालक बच्छ अरु धेनु। सूर सकल खेलतहँसि बोलतग्वालनसँग मथिपीवत फेनु॥ ४४॥ राग केदारो कहा भयो यादवजनमते ऊंचे पद कह्यो ऐन। सब जीवनको इहैं एक फल छिनक मीन जल करते सैन॥ अधर मधुर पीवत मोहनको सबै कलंक नशाइ। अतिकठोरमणिकाइनहीमेंछेदि बिशालबनाइ॥ अंतरबिनसोसदा देखतहैं निज कुल वंश बिहाइ। लिख्यो बिन अंक नहीं कछु करनी निरखत ताहि जो नयन लगाइ। सूरदासप्रभु बलपरसननितकामावलि अधिकाइ॥ ४५॥ राग सारंग॥ऐसोगुपाल निरखि तन मन वारौं। नवल किशोर मधुर मूरति शोभा उर धारौं॥ अरुन तरुन कमलनैन मुरली कर राजै। ब्रजजनमनहरन बेन मधुरमधुर बाजै॥ ललित त्रिभंग सोतन बनमाला सोहै। अति सुदेश कुसुमपाग उपमाको कोहै॥ चरणरुनित नेपुर कटि किंकिणी कल कूजै॥मकराकृत कुंडल छवि सूर कौन पूजै॥ ४६॥ सुंदर मुखकी बलि बलि जाऊँ। लावनिनिधि गुणनिधि शोभानिधि निरखि निरखि जीवत सब गाऊँ॥ अंगअंगप्रति अमितमाधुरी प्रगटित रसरुचि ठाऊँठाऊँ॥ तामें मृदु मुसुकानि मनोहर न्याय कहत कवि मोहन नाऊँ। नैनसैन दैदै जब हेरत तापर हौं बिन मोल विकाऊँ। सूरदास प्रभु मदन मोहन छवि यह शोभा उपमा नहिं पाऊँ॥ ॥ ४७॥ राग सूही॥ मैं बलि जाउँ श्याममुख छविपर। बलिबलि जाउँ कुटिल कच विथुरी बलि बलिजाउँ भृकुटि लिलाटतर॥बलिबलिजाउँ चारुअवलोकनिबलिहारी कुंडलकी।बलिबलि जाउँ नासिका सुललित बलिहारी वा छविकी॥ बलिबलि जाउँअरुनअधरनकी विद्रुमबिंब लजावन। मैं बलिजाउँ दशनचमकनकी वारौं तडित नसावन॥मैं बलिजाउँ ललित ठोढीपर बलिमोतिनकी माल। सूर निरखि तन मन बलिहारौं बलिबलि यशुमतिलाल॥ ४८॥राग कान्हरो॥अलकनकी छवि अलिकुल गावत।खंजन मीन मृगज लज्जित भए नैन नचावनि गतिहि न पावत॥

मुख मुसकानि आनि उरअंतर अंबुज बुधि उपजावत।सकुचत अरु विगसित वा छबिपर अनुदिन जनम गवांवत ॥ पूरण नहीं सुभग श्यामलको यद्यपि जलधर ध्यावत । वसन समान होत नहिं हाटक अग्निझांपदै आवत ॥ मुकतादाम बिलोकि विलखि करि अवलि बलाक बनावत । सूरदास प्रभु ललित त्रिभंगी मनमथ मनहिं लजावत॥४९॥ राग मारू ॥ निगमते अगम हरिकृपा न्यारी । प्रीतिवश श्यामकी राइकी रंक कोउ पुरुषकी नारि नहिंभेदकारी॥प्रीतिवश देवकीगर्भ लीन्होवास प्रीतिके हेत ब्रज भेष कीन्हो । प्रीतिके हेतु यशुमति दियो पयपान प्रीतिके हेतु अवतार लीन्हो ॥ प्रीतिके हेतु वन धेनु चारत कान्ह प्रीतिके हेतु नंदसुवन नामा।सूर प्रभुको प्रीतिके हेतु पाइए प्रीतिके हेतु दोउ श्याम श्यामा॥७५०॥प्रीतिके वश्य एहैं मुरारी। प्रीतिके वश्य नटवरभेष धार्यो प्रीतिवश करज गिरिराजधारी॥प्रीतिकेवश्य ब्रजभएमाखनचोरप्रीतिके वश्य दाँवरिबंधाई।प्रीतिके वश्य गोपीरवँन प्रिय नाम प्रीतिके वश्यतरु जमलमोक्षदाई॥ प्रीतिवशनंदबंधन वरुण सदन गये प्रीतिके वश्य वनधाम कामी । प्रीतिके वश्य प्रभु सूर त्रिभुवन विदितप्रीतिवश सदा राधिकास्वामी ॥राग धनाश्री॥दैदैरी मैयादोहनीदुहिहौं मैंगैया।माखन खाये बलभयोकरि नंददुहैया॥कजरीधुमरी सेंदुरी धौरी मेरी गैया।दुहिल्याऊं मैं तुरतही तू करिदै धैया॥ग्वालनकी सरि दुहतहौं बूझहु बलभैया। सूर निरखि जननी हँसी तब लेति बलैया॥५१॥राग सारंग॥बाबा मोको दुहन सिखायो। तेरे मन परतीति न आवै दुहत अँगुरियन भाव बतायो ॥ अँगुरीभाव देखि जननी तब हँसिके श्यामहिं कंठ लगायो।आठवर्षको कुँवर कन्हैया इतनी बुद्धि कहांते पायो ॥ माताले दोहनी कर दीन्हों जब हरि हँसत दुहनको धायो।सूर श्यामको दुहत देखि तब जननी मन अतिहर्ष बढ़ायो॥ राग धनाश्री॥ जननी मथतिदधि गोदुहतकन्हाई।सखा परस्परकहतश्यामसोंहमहूंते तुमकरतचँडाई॥ दुहन देहु कछु दिन अरु मोको तबकरिहौमोसम सरि आई। जबलौं एक दुहौग तबलौं चारिदुहौं तौ नंद दोहाई॥ झूठहि करत दुहाई प्रातहि देखहिंगे तुम्हरी अधिकाई । सूर श्याम कह्यो कालि दुहेंगेहमहू तुममिलिहोड लगाई॥५२॥राधायशोदाके आई।राग बिलावल॥ उठीप्रातहि राधिका दोहनी करल्याइ। महरि सुतासों तब कह्यो कहां चली अतुराइ॥ खरिकदुहावन जातिहौं तुम्हरी सेवकाइ। तुम ठकुराइनि घर रहौमोहि चेरी पाइ॥ रीती देखी दोहनी कतखीझत धाइ। कालि गई अवसेरकैह्यां उठी रिसाइ॥गाइगईंसबप्याइकै प्रातहिनहिंआइ। ताकारण मैं जातिहौं अतिकरतचँडाइ ॥ यह कहि जननीसों चलीब्रजको समुहाइ।सूर श्याम गृहद्वारही गौ करत दुहाइ ॥५३॥ राग बिलावल॥ सुता महर वृषभानुकी नँदसदनहि आई । गृहद्वारेही अजिरमें गो दुहत कन्हाई॥ श्याम चितै मुख राधिका मनहर्ष बढाई । राधा हरिमुख देखिकै तनु सुरति भुलाई ॥ महरि देखि कीरतिसुता तेहि लियो बुलाई। दंपतिको सुख देखिकै सूरज बलिजाई॥५४॥आजु राधिका भोरही यशुमति-के आई। महरि मुदित हँसि यों कह्यो मथि भान दोहाई॥ आयसु ले ठाढी भई करनेति सुहाई । रीतो माट बिलोवही चित जहां कन्हाई॥उनके मनकी कह कहौं ज्यों दृष्टिलगाई। लेइ आनो एकवृप-भसो गैया विसराई ॥ नैननिमें यशुमति लखी दुहूंकी चतुराई । सूरदास दंपतिदशा वरणी नहिं जाई॥५५॥महरि कह्योरी लाडिली केहिं मथन सिखायो। कहँ मथनी कहँ माटहै चित कहां लगायो ॥ अपने घर योंहीं मथै कहि प्रगट देखायो । की मेरे घर आइके ह्यां सब विसरायो ॥ मथन नहीं मोहिं आवतही तुम सौंह दिवायो।तेहि कारणमें आइके तुव बोल रखायो ॥तब नँद-घरनी मथि दह्यो यहि भांति बतायो । सूर निरखि मुख श्यामको तहां ध्यान लगायो ॥५६॥

राग सूहो॥दुहत श्याम गैयां बिसराई। नोआ लै पग बांधि वृषभके दोहनी मांगत कुँवर कन्हाई॥ ग्वाल एक दोहनी लै दीनी दुहौ श्याम अति करौ चँडाई।हँसत परस्पर तारी दैदै आजुकहाँ तुम रहे भुलाई॥कहत सखा हरि सुनत नहीं सो प्यारीसों रहे चित अरुझाई। सूर श्याम राधातन चितवत बडे चतुरकी गईचतुराई॥५७॥राग रामकली॥राधाएढँग हैं री तेरे।वैसेहाल मथत दधि कीन्हे हरि मनो लिखे चितेरे॥तेरो मुख देखत शशि लाजै और कहो क्यों बाचैं। नैना तेरे जलज जितेहैं खंजनते अति नाचैं॥चपलाते चमकत अति प्यारी कहा करौगी श्यामहिं। सुनहु सूर ऐसेहि दिन खोवति काज नहीं कछु तेरे धामहिं॥ ५८ ॥राग गूजरी॥मेरो कह्यो नाहिंन सुनति।तबहिंते एकटक रही है कहा मन धौं गुनति ॥ अबहिंते तू करति ए ढंग तोहि है कछु हौन । श्यामको तू ऐसे ठगिलिये कछु न जानै जौन॥ सुता है वृषभानुकी री बडो उनको नाउ। सूरप्रभु नँदनँदन निरखत जननि कहति सुभाउ ॥५९॥राग सूहो ॥प्रगटी प्रीति न रही छिपाई।परी दृष्टि वृषभानुसुताकी दोउ अरुझे निरवारि न जाई॥ बछारा छोरि खरिकको दीनों आपु कान्ह तनुसुधि बिसराई । नोवत वृषभ निकसि गैयाँ गईं हँसत सखा कहा दुहत कन्हाई ॥ चारौं नैन भए एकठाहर मनहीमन दुहुँ रुचि उपजाई।सूरदासस्वामी रतिनागर नागरि देखिगई नगराई॥ ॥ ७६० ॥ चितैबो छांडिदै री राधा । हिलिमिलि खेलि श्यामसुंदरसों करति कामको बाधा॥ की बैठी रहि भवन आपने काहेको बनिआवै । मृगनैनी हरिकोमनमोहति जब तू देखिदुहावै॥ कबहुँक करते गिरति दोहनी कबहुँक बिसरत नोई । कबहुँक वृषभ दुहतहै मोहन ना जानों का होई ॥ कौन मंत्र जानति तू प्यारी पढि डारति हरिगात। सूर श्यामको धेनु दुहनदे कहति यशोदामात ॥ ६१ ॥ राग धनाश्री॥ धेनुदुहनदे मेरेश्यामहिं। जोआवैतौसहजरूपसों बनि आवति बेकामहिं ॥सूधे आइश्यामसँग खेलो बोलो बैठो धामहिं ।ऐसो ढंगमोहिं नहिं भावै लेउ न ताके नामहिं॥ घर अपने तू जाहि राधिका कहति महरि मन तामहिं। सूर आइ तू करति अचगरी को बकही निशि यामहिं ॥ ६२॥राग जैतश्री ॥बारबार तू जिनि ह्यां आवै। मैं कहा करौं सुतहि नहिं बरजति घरते मोहिं बोलावै॥ मोसों कहत तोहिं बिनु देखे रहत न मेरो प्रान ।छोहलगति मोको सुनि बाणी महरि तुम्हारी आन ॥ मुँह पावति तबहींलौं आवति औरै लावति मोहिं।सूरसमुझि यशुमतिउरलाई हँसति कहतिहौं तोहिं ॥ ६३ ॥ राग गौरी ॥ हँसत कह्यो मैं तोसों प्यारी।मनमेंकछू बिलगु जिनि मानहु मैं तेरी महतारी ॥ बहुते दिवस आज तू आई राधा मेरे धाम। महरि बडी मैं सुघरि सुनी है कछु सिखयो गृहकाम ॥ मैया जब मोहिं टहल कहत कछु खिझत बबा वृषभानु। सूर महरिसों कहति राधिकामानो अतिहिअजान॥ ६४ ॥राग रामकली ॥ दूध दोहनीलैरीमैया।दाऊ टेरत सुनि मैं आऊँ तबलौं करि विधि धैया।॥मुरली मुकुटपीतांबरदै मोहिं लैआई महतारी।मुकुट धर्यो शिर कटि पीतांबर मुरली करलियो धारी॥ राधाराधा कहि मुरलीमें खरिकहिं लई बुलाई। सूरदास प्रभु चतुरशिरोमणि ऐसी बुद्धि उपाई॥६५॥कुँवरिकह्योमैं जाति महरिघर ।प्रातहिआई खरिक दुहावन कहति दोहनी लेकर ॥ तब खरिकहिं कोऊ ग्वाल गये नहिं तिन कारण ब्रजआई। जौं देखौं तौ अजिरहि बैठ गैया दुहत कन्हाई॥तनक दोहनी तनक दुहत मोहिं देखि अधिकरुचि लागी।तनक राधिका तनक सूरप्रभुदेखि महरिअनुरागी॥६६॥राग गूजरी॥जाघरप्यारीआवतरहियो महरि हमारी बात चलावति मिलन हमारो कहियो॥एक दिवसमैंगई यमुनतट तहां उन देखी आई । मोको देखि बहुत सुख पायो मिलि अंकम लपटाई॥ यह सुनिकै चली कुँवरि राधिका मोको।भई

अबार।सूरदास प्रभुमन हरिलीन्हों मोहन नंदकुमार॥६७॥ राग गूजरी॥सैनदै प्यारीलईबोलाइ।खेलनको मिस करिकैनिकसे खरिकहिगएकन्हाइ॥यशुमतिकोकहि प्यारी निकसीघरकोनाउँसुनाई। कनकदोहनी लै तहँ आई जहँ हलधरको भाई ॥ तहां मिलीं सब संग सहेली कुँवरि कहां तू आई। प्रातहि धेनु दुहावन आई अहिर नहीं तहँ पाई॥तबहिंगई मैं ब्रज उतावली ल्याई ग्वाल बुलाई।सूरश्याम दुहिदेन कह्यो सुनि राधा गई मुसकाई॥६८॥ राग धनाश्री॥ धेनु दुहन जब श्याम बोलाई। श्रवन सुनत तहां गई राधिका मन हरि लियो कन्हाई॥सखीसंगकी कहति परस्पर कहँ यह प्रीति लगाई। यह वृषभानुपुरा ये ब्रजमें कहाँ दुहावन आई॥ मुख देखत हरिको चकृत भई तनुकी सुधि बिसराई। सूरदास प्रभुके रसवश भई काम करी कठिनाई ॥ ६९॥ गाउँ बसत एते दिवसनिमें आजु श्याम मैं देखे। जेदिन गए बिना ब्रजनाथहितेई वृथाकरिलेखे॥कहियेजोकछु होइ सयानी कहिबेको अनुमानै। सुंदर श्याम निकाईकोसुख नैनाइपै जानै॥ तबते रूप ठगोरी लागी युगसमान पल बितवति। तजि कुललाज सूरके प्रभुको फिरिफिरि मुखतन चितवति ॥ ॥७७०॥राग देवगन्धार ॥मोहन करते दोहनि लीनी गोपद बछरा जोरे।हाथ धेनुथन बदन त्रियातनु छीर छाछि छल छोरे।॥आनन रहीं ललिन पयछींटैं छाजति छबि तृण तोरे। मनहुँ निकसि निकलंक कलानिधि दुग्धसिंधुके बोरे॥ दै घूँघटपट ओट नील हँसि कुँवरि मुदित मुख मोरे।मनहुँ शरदशशिको मिलि दामिनि घेरिलियो घनघोरे॥ यहिबिधि रहसति बिलसति दंपति हेतु हिये नहिं थोरे।सूर उमँगि आनंदसुधानिधि मनो बिलावल फोरे॥७१॥राग रामकली॥हरसोंधेनु दुहावत प्यारी। करति मनोरथ पूरण मन बृषभानु महरकी बारी ॥ दूधधार मुखपर छबि लागति सो उपमा अतिभारी।मानो चंद कलंकहि धोवत जहँ तहँ बूंद सुधारी॥ हावभाव रस मगन ह्वै दोऊ छबि निरखति ललिता री। गौदोहनसुख करत सूर प्रभु तीनिहुँ भुवन कहा री॥७२॥रागसूहो॥ तुमपै कौन दुहावै गैया। लिहे रहत कर कनकदोहनी बैठतहौ अधपैया॥ अति रस कामकि प्रीति जानिकै आवत खरक दुहैया। इत चितवत उत धार चलावत एहि सिखयो है मैया॥ गुप्त प्रीति तासों करि मोहन जोहे तेरी देया। सूरदास प्रभु झगरो सीख्यो ज्यों घर खसम गुसैयाँ॥७३॥ राग धनाश्री ॥करिलोन्यारीहरिआपनिगैयां॥ नहिंनबसातलालकछुतुमसोंसबैग्वालइकठैयां॥नहिन अधिक तेरे बाबाके नहिं तुम हमरे नाथ गुसैयाँ। हम तुम जाति पांतिके एकै कहा भयो अधिकी द्वै गैयाँ॥ जादिनते सबरे गोपनमें तादिनते तू करत लँगरैया। मानी हार सूरके प्रभुसों बहुरि न करिहौं नंददुहैया ॥ ७४॥ राग सूहो ॥ धेनुदुहत अतिही रति बाढी।एकधार दोहनि पहुँचावत एक धार जहां प्यारी ठाढी ॥ मोहनकरते धार चलत पय मोहनीमुख अतिही छबि गाढी। मनो जलधर जलधार वृष्टि लघु पुनिपुनि प्रेम चंदपर बाढी ॥ सखी संगकी निरखति यह छबि भई व्याकुल मन्मथकी डाढी। सूरदास प्रभुके वश भई सब भवनकाजते भई उचाढी॥७५॥ राग बिलावल॥ दुहिदीनी राधाकी गैयाँ।दोहनी नहीं देत करते हरि हाहा करतिपग तिहैं पैयां॥ज्यों ज्यों प्यारी हाहा बोलति त्यों त्यों हँसत कन्हैया। बहुरि करौ प्यारी तुम हाहा देहौं नंददुहैया ॥ तब दीनी प्यारीकर दोहनि हाहा बहुरि करैया।सूरश्याम रस हावभाव करि दीनी कुँवरि पठैया ॥७६॥ चलन चहति पग चलै न घरको। छांडत बनत नहीं कैसहु मोहन सुंदरवरको ॥ अंतर नेक करूं नहिं कबहूं सकुचतिहौं पुरनरको। कछुदिन जैसे तैसे खोऊं दूरि करौं पुनि डरको॥ मनमें यह बिचार करि सुंदरि चली आपने पुरको। सूरदास प्रभु कह्यो जादु घर घात करयो नख

उरको ॥राग मलार॥मुरि मुरि चितवति नंदगली। डग न परत ब्रजनाथ साथ बिनु विरह व्यथा मचली ॥ बारबार मोहनमुख कारण आवत फिरि जु अली ।चली पीठि दै दृष्टि फिरावति अंग अंग आनंद रली॥ सूरदास प्रभुपास दुहायो श्रीवृषभानु लली॥७७॥ राग बिलावल ॥शिर दोहनी चली लै प्यारी । फिरि चितवत हरि हँसे निरखि मुख मोहन मोहनी डारी ॥ व्याकुल भई गई सखियनलौं ब्रजको गए कन्हाई । और अहिरसब कहाँ तुम्हारे हरिसों धेनु दुहाई ॥ यह सुनिकै चकृत भई प्यारी धरणि परी मुरझाई । सूरदास तब सखियन उरभरिलीनी कुवँरि उठाई ॥७८॥ क्यों री कुवँरिगिरीमुरझाई।यह वाणीकहि सखियनआगेमोको कारे खाई॥चलीं लिवाइसुतावृषभानुहिं घरहीतन समुहाई।डारदियो भरि दूध दोहनियां अबहीं नीके आई॥यह कारोसुत नंदमहरको सब हम फूंक लगाई।सूर सखिन मुख सुनि यह बाणी तब यह बात सुनाई७९सारंग ॥मोहिलईनैननिकी सैन।श्रवन सुनत सुधिबुधि बिसरी सबहो लुबधी मोहनमुख बैन ॥ आवत हुतेकुमारखरिकते तब अनुमान कियो सखि मैन । निरखत अंग अधिक रुचि उपजी नखशिख सुंदरताको ऐन॥ मृदु मुसकान हरयौ मनको मनि तबते तिल न रहत चित चैन।सूर श्याम यह वचन सुनायो मेरी धेनु कही दुहिदेन॥ ७८० ॥राग धनाश्री॥सखियन मिलि राधा घर लाई । देखहु महरि सुता अपनीको कहूं यहि कारे खाई ।हम आगे आवति यह पाछे धरणि परी भहराई। शिरते गई दोहनी ढरिकै आपु रही मुरझाई॥ श्याम भुअंग डस्यो हम देखत ल्यावहु गुणी बुलाई। रोवत जननि कंठ लपटानी सूर श्याम गुनराई ॥८१॥राग सारंग ॥ प्रात गई नीके उठि घरते ।मैं बरजी कहां जाति री प्यारी तब खीझी रिस झरते॥शीतल अंग खेदसों बूडी सोच परयो मन डरते॥अतिहि हठीली कह्यो न मानति करति आपने बरते ॥ औरै दशा भई क्षण भीतर बोली गुनी नगरते। सूर गारुडी गुणकरि थाके मंत्रन लागतथरते॥८२॥ राग नटनारायण चले सबगारुडी पछिताइ।नेकहु नहिं मंत्र लागत समुझि काहु न जाइ ॥ बात बूझत संग सखियन कहौ हमहिं बुझाइ । कहा कहि राधा सुनायो तुम सबनिसों आइ॥महाविषधर श्याम अहिवर देखि सबहीं धाइ।फूंक ज्वाला हमहुँ लागी कुँवरि उर परी खाइ ॥गिरी धरनी मुरछि तबहीं लई तुरत उठाइ।सूर प्रभुको बेगि ल्यावहु बडो गारुडिराइ ॥ ८३ ॥ राग आसावरी॥ नंदसुवन गारुडी बोलावहु। कह्यो हमारो सुनत न कोऊ तुरत जाहु ब्रज अब लै आवहु ॥ ऐसे गुनी नहीं त्रिभुवन कहुँ हम जानत हैं नीके। आयजाय तौ तुरत जियावै नेक छुवतही उठिहै जीके ।देखौ धौं यह बात हमारी एकहि मंत्र जियावै। नंदमहरको सुतसूरजप्रभु जो कैसेहुँकरिघ्रांलौं आवै॥ ८४ ॥ राग आसावरी॥डसीरी माई श्याम भुअंगम कारे।मोहन मुख मुसकानि मनहुँ विष जाते मरे सो मारे॥फुरै न मंत्र यंत्र दइ नाहीं चले गुणी गुण डारे।प्रेमप्रीति विष हिरदै लागी डारतहै तनु जारे॥ निर्विष होत नहीं कैसेहुँकरि बहुत गुणी पचि हारे।सूर श्याम गारुडी बिना को सोशिर गाडूटारै॥८५॥राग धनाश्री॥ बेगि चलो पिय कुंवर कन्हाई । जा कारण तुम यह वन सेयो सो त्रिय मदनभुअंगम खाई ॥ नैन शिथिलशीतल नासापुट अंगतपति कछु सुधि न रहाई। सकसकात तनु भीजि पसीना उलटि पलटि तन तोरि जँभाई ॥ बिन देखे मूरतिको जिततित उठि दौरी जिन जहां बताई । ताहि कछू उपचार न लागत कर मीजें सहचरि पछिताई ॥ बारबार बूझतिहै ऐसे कमलनयनकी सुंदरताई ।जोपै सूर जिवायो चाहत तौ ताको अब देहु दिखाई॥ ८६ ॥राग नट॥ सुनत तुम्हरी बात मोहन चुइचले दोउ नैन।छुटिगई लोकलाज आतुरता रहि न सकति चित चैन॥उर कांप्यो

तनु पुलकि पसीज्यो बिसरिगई मुख बैन। ठाढी है जैसे तैसे धुकि परी धरणि तिहि ऐन॥कोउ शिर गहि कोउ कमलकुंकुमा कोउ धाई जल लैन। ताहि कछू उपचार न लागै डसी कठिन अहि मैन॥ हौं पठई एक सखी सयानी अब बोली दै सैन। सूर श्याम राधिका मिले बिनु कहा लगे दुखदैन॥८७॥राग केदारो॥ भरिभरि लेत लोचन नीर। तुम बिना ब्रजनाथ सुंदरि बिरहखेद अधीर॥कमल उरपर धरत छिनुछिनु छिरकि चंदन चीर। जालमग शशिकिरिन रोकित मलय मंद समीर॥हौं जु तुम्हरे पास पठई देखि मनसिज भीर। सूरदास सुजान श्रीपति मिलि हरहु तनु-पीर॥८८॥राग सारंग॥ तनु बिष रह्योहै बहु छहरि।नंद सुअन अति गारुडी कहतहैं पठवै धौं महरि॥ गए अवसान भीर नहिं भावै भावै नाहिं चहरि। ल्यावो गुणी जाइ गोविंदको बाढी है अति लहरि॥ देखी उरहि बीचही खाई माती है जहरि। सूर श्याम बिषहर कहुँ खाई यह कहि चली डहरि॥ ॥८९॥राग सुघराइ॥वृषभानुकी घरनी यशोमति पुकारयो। पठै सुतकाज मैं कहतिहौं लाज तजि पाँइ परिकै महरि करति आरयो॥ प्रात खरिकहि गई आय विह्वल भई राधिका कुँअरि कहुँ डस्यो कारो। सुनी यह बात मैं आइ अतुरात ह्यां गारुडी बडो है सुत तुम्हारो॥यह बडो धर्म नँदघरनि तुम पाइहौ नेक काहे न सुतको हँकारो। सूर सुनि महरि यह कहिउठी सहजही कहा तुम कहति मेरो अतिहि बारो॥ ९० ॥कान्हहि पठै महरि कहति पाइँन परि। आजु कहुँ कारे काहू खाईहै काम कुँवरि॥सब दिन आवै जाइ जहां तहां फेरि फिरि। अबहीं खरिक गई आईहै जिय बिसरि॥ निशिके उनींदे नैन तैसे रहे टारि टारि॥किधौं कहूं प्यारीको तटकी लागी नजरि। तेरो सुत गारुडी सुन्योहै बातरी महरि। सूरदास प्रभु देखे जैहै री गरलझरि॥९१॥ राग आसावरी॥ यंत्र मंत्र कहा करि जानै मेरो। यह तुम जाइ गुणिनको बूझहु बिन कारण कत करतहौ झेरो॥ आठ बरषको कुँवर कन्हाई कहा कहत तुम ताहि। किन बहकाइदई है तुमको ताहि पकरि लैजाहि॥ मैं तो चकृत भई हौं सुनिकै अति अचरज यह बात। सूर श्याम गारुडी कहांको कह आई बिततात॥ ९२ राग टोडी॥ महरि गारुडी कुँवर कन्हाई। एक बिटिनियां कारे खाई ताको श्याम तुरतही ज्याई। बोलिलेहु अपने ढोटाको तुम कहिकै नेकदेहु पठाई।कुँवरि राधिका प्रात खरिक गई कहा कहूं धौं कारे खाई। यह सुनि महरि मनहिं मुसकानी अबहिं रही मेरे गृह आई।सूर श्याम राधहि कछु कारण यशुमतिसमुझिरही अरगाई॥९३॥राग आसावरी॥तब हरिको टेरति नँदरानी। भली भई सुत भयो गारुडी आजु सुनी श्रवणन यह बानी॥ जननीटेर सुनत हरि आए कहा कहति री मैया। कीरतिमहरि बुलावन आई जाहु न कुँवरकन्हैया॥ कहूंराधिका कारे खाई जाहु न आवहु झारी।यंत्रमंत्र कछु जानतहौ तुम सूर श्याम बनवारी॥९४॥राग गूजरी॥ मैया एक मंत्र मोहिं आवै।बिषहर खाइ मरै जो कोऊ मोसों मरन न पावै॥एक दिवस राधासँग आई खरिक बिटिनियां और।तहां ताहि बिषहरने खाई गिरी धरणि वहि ठौर॥यह बाणी वृषभानु-घरनि कहि यशुमति तब पतिआई। सूर श्याम मेरो बडो गारुडी राधा ज्यावहु जाई॥ ९५॥ राग सुघराई॥यशुमति कह्यो सुत जाहु कन्हाई। कुँवरि जिवाये अतिहि भलाई॥ आजुहि मेरे गृह खेलन आई।जात कहूं कारे तेहि खाई॥कीरति महरि लिवावन आई।जाहु न श्याम करहु अतुराई॥ सूर श्यामको चली लिवाई।गई वृषभानुपुरहि समुहाई॥९६॥ राग देवगंधार॥ हरि गारुडी तहां तब आए। यह बानी वृषभानुसुता सुनि मनहीमन अति हर्ष बढाए॥ धन्यधन्य आपुनको कीन्हों अतिहि गई मुरझाई। तनु पुलकित रोमांच प्रगट भए आनँदअंशु बहाई॥ विह्वल देखि जननि

भई व्याकुल अंग विष गए समाई।सूर श्याम प्यारी दोउ जानत अंतरगतिकी भाई९७॥रागरामकली॥ रोवत महरि फिरति बिततानी ।बार बार लै कंठ लगावति अतिहि शिथिल भई पानी ॥ नंद-सुवनके पाँइ परी लैदौरि महरि तब आई ।व्याकुल भई लाडिली मेरी मोहन देहु जिवाई॥ कछु पढिपढिकरि अंग परस करि विप अपनो लियो झारि ।सूरदास प्रभु बडे गारुडी शिरपर गाडू डारि ॥ ९८ ॥ लोचन दियो कुँवरि उघारि ।कुँवरि देख्यो नंदको तब सकुचि अंग सँभारि ॥ बात बूझति जननिसों री कहा है यह आजु । मरतते तू बची प्यारी करतिहै कहा लाजु ॥तब कहति तोहिं कारे खाई कछु न रही सुधि गात ।सूर प्रभु तोहिं ज्याइलीन्ही की कुँवरिसों नात ॥ ९९ ॥ राग सारंग॥ बडो मंत्र कियो कुँवर कन्हाई । बार बार लै कंठ लगायो मुख चूम्यो दियो घरहि पठाई ॥ धन्य कोखि वह महरि यशोमति जहां अव-तरचो यह सुत आई ।ऐसो चरित तुरतही कीन्हों कुँवरि हमारी मरी जिवाई ॥ मनहींमन अनु-मान कियो यह बिधना जोरी भली बनाई ।सूरदास प्रभु बडे गारुडी जघरघर यह घेर चलाई ॥ ॥८००॥राग सुघराई॥ भलेभलेहो भले कान्ह विषही उतारो।आजुते गारुडी नावँ प्रगटचो तिहारो॥ जननि कहति मेरो सुत बारो।युवती कहति हमतन धौं निहारो॥अब को निकरै सांझ सवारो । जान्यो ब्रज वसत कठिन ऐसो कारो। यह निजु मंत्र जनि जियते बिसारो ॥ बहुरि कारो कहु करैगो पसारो । सूरदास प्रभु सबहिन प्यारो ॥ताहीको डसत जाको हियो है उज्यारो॥१॥ राग रामकली॥नीके विपहि उतारचो श्याम।बडे गारुडी अरु हम जाने संगहि रहत सु काम ॥ऐसो मंत्र कहां तुम पायो बहुत कियो यह काम । मरी आनि राधिका जिवाई टेरत एकहि नाम ॥ हम समुझी यह बात तुम्हारी जाहु आपने धाम। सूर श्याम मनमोहन नागर हँसि वश कीन्हों वाम ॥२॥ हँसि वश कीन्हीं घोषकुमारी । विवश भई तनुकी सुधि बिसरी मन हरिलियो मुरारी॥ गएश्याम ब्रज धाम आपने युवति मदनशर मारी।लहरि उतारि राधिका शिरते दई तरुनिनपै डारी ॥ करत विचार सुंदरी सब मिलि अब सेवहु त्रिपुरारी ।मांगहु इहै देहुपति हमको सूरशरनबनवारी ॥ ३ ॥ अध्याय १२॥चीरहरनलीला॥राग जयतश्री॥ भवन रवँन सबहै बिसरायो।नंदनँदन जबतेमन हरि-लियो कहति वृथा यह जनम गँवायो ॥ जप तप व्रत संयम साधनते प्रगट होत पापान। जैसेहि मिलैं श्यामसुंदर वर सोइ कीजै नहिं आन ॥इहै मंत्र दृढ कह्यो सबन मिलि याते होइ सुहोई। वृथा जन्म जगमें जिनि खोवहु इहांअपनो नहिं कोई॥ तब परतीति सबनिके आई कीन्हों दृढ विश्वास। सूर श्यामसुंदर पति पावैं इहै हमारे आश॥४॥राग आसावरी ॥गौरीपति पूजति ब्रजनारि । नेम धर्मसों रहति क्रियायुत बहुत करति मनुहारि॥इहै कहति पति देहु उमापति गिरिधर नंदकुमार। शरन राखिलेवहु शिव शंकर तनहिं नशावत मार॥ कमलपुहुप मालूरपत्र फल नानासुमन सुवास। शंकर पूजति मन बच क्रम करि सूर श्यामकी आस॥५ ॥ राग रामकली ॥ शिवसों विनय करति कुमारि । जोरि कर मुख करति अस्तुति बडे प्रभु त्रिपुरारि॥शीतभीत न करत सुंदरि कृश भई सुकुमारि । छहो ऋतु तप करति नीके गृहको नेह विसारि॥ ध्यान धरि कर जोरि लोचन मूँदि एक एक याम । विनय अंचल छोरि रविसों करतिहैं सब वाम ॥ हमहिं होहु कृपालु दिनमणि तुम विदित संसार । काम अति तनु दहत दीजै सूरश्याम भतार॥ ६ ॥राग नटनारायण ॥ रविसों विनय करति कर जोरैं । प्रभु अंतर्यामी यह जानी हम कारण जप तप जल खोरैं॥ प्रगट भए

प्रभु जलही भीतर देखि सबनको प्रेम। मींडत पीठि सबनिकी पाछे पूरण कीन्हे नेम॥ फिरि देखै तो कुँवर कन्हाई रुचिसों मींजत पीठि। सूर निरखि सकुचीं ब्रजयुवती परी श्यामतनु डीठि॥ ७॥ राग देवगंधार॥ अति तप देखि कृपा हरि कीन्हों। तनुकी जरनि दूरि भई सबकी मिलि तरुणिन सुख दीन्हों॥ नवलकिशोर ध्यान युवती मन ऊहै प्रगट दिखायो। सकुचिगई अँग बसन सँभारति भयो सबनि मनभायो॥ मनमन कहति भयो तप पूरण आनँद उर न समाई। सूरदास प्रभु लाज न आवति युवतिन माँझ कन्हाई॥ ८॥ राग सारंग॥ हँसत श्याम ब्रज घरको भागे। लोगनको यह कहति सुनावति मोहन करन लँगरई लागे॥ हम अस्नान करत जलभीतर आपुनमींजत पीठि कन्हाई। कहा भयो जो नंदमहरसुत हमसों करते अधिक ढिठाई॥ लरिकाई तबहीं लौं नीकी चारि वरष की पांच। सूर जाइ कहिहैं यशुमतिसों श्याम करत ए नाच॥ ९॥ प्रेम विवश सब ग्वालि भईं। उरहन दैन चलीं यशुमतिको मनमोहनके रूप रईं॥ पुलकि अंगअँगियाउरदरकी हार तोरि कर आपु लईं। अंचल चीरि घात नख उर करि यहि मिस करि नँदसदन गईं॥ यशुमति माई कहा सुत सिखयो हमको जैसे हाल कियो। चोलीफारि हार गहि तोर्‌यो देखो उर नखघात दियो॥ आंचर चीरि अभूषण तोरे घेरि धरत उठि भागि गयो। सूर महरि मन कहति श्याम धौं ऐसे लायक कबहिं भयो॥ ८१०॥ राग गौरी महरि श्यामको बरजति काहि न। ऐसे हाल किये हरि हमको भई कहूं जग आहि न॥ और बात एक सुनहुँ श्यामकी अतिहि भएहैं ढीठ। बसनबिना अस्नान करति हम आपुन मींजत पीठ॥ आपु कहति मेरो सुत बारो हियो उघारि दिखायो। सुनतहु लाज कहत नहिं आवै तुमको कहा लजायो॥ यह वाणी युवतिनमुख सुनिकै हँसिबोली नँदरानी। सूर श्याम तुमलायक नाहीं बात तुम्हारी जानी॥ ११॥ राग गौरी॥ बात कहौ जो लहै वहै री। बिना भीति तुम चित्र लिखतिहौ सो कैसे निबहै री॥ तुम चाहतहौ गगनतरैया मांग कैसे पावहु। आवतही मैं तुम लखिलीन्हीं कहि मोहिं कहा सुनावहु॥ चोरी रही छिनारो अब भयो जान्यो ज्ञान तुम्हारो। औरै गोपसुतन नहिं देखौ सूर श्याम है बारो॥ १२॥ राग मलार॥ ग्वालिनि घरहीकी बाढी। निशि दिन देखत अपनही आँगन ठाढी॥ कबहिं गुपाल कंचुकी फारी कब भै ऐसे योग। अबहीं संग खेल ना सीखे यह जानत सब लोग॥ नितही झगरतहैं मनमोहन मूरति देखि प्रेमरस चाखी। सूरदास प्रभु अटक न मानत ग्वाल सबैहैं साखी॥ १३॥ राग गौरी॥ यहि अंतर हरि आइगए। मोर मुकुट पीतांबर काछे अति कोमल छबि अंग भए॥ जननि बुलाइ बांह गहिलीन्ही देखहु री मदमाती। इनहीको अपराध लगावति कहा फिरत इतराती॥ सुनिहैं लोग मष्ट अबहूं करि तुमहिं कहांकी लाज। सूर श्याम मेरो माखनभोरो तुम आवतिबिकाज॥ १४॥ राग केदारो॥ अबहीं देखे नवल किशोर। घर आवतही तनक भए हैं ऐसे तनके चोर॥ कछु दिन करि दधिमाखनचोरी अब चोरत मन मोर। विवश भई तनु सुधि न सँभारति कहत बात भई भोर॥ यह वाणी कहतही लजानी समुझि भई जिय ओर। सूर श्याम मुख निरखि चलीं घर आनँद लोचन लोर॥ १५॥ राग नटनारायण॥ ब्रजघर गईं गोपकुमारि। नेकहूँ कहुँ मन न लागत काम धाम बिसारि॥ मातपितको डर न मानतसुनत नाहिंन गारि। हठ करति विरुझाति तब जिय जननि जानत बारि॥ प्रातही उठि चलीं सब मिलि यमुन तट सुकुमारि। सूर प्रभु ब्रत देखि इनको नहिंन परत सँभारि॥ १६॥ राग गौरी॥ यमुनातट देखे नँदनंदन। मोरमुकुट मकराकृत कुंडल पीतबसन मनुचंदन॥ लोचन तृप्त भए दरशनते उरकी तपति बुझानी। प्रेममगन तब भई सुंदरी उर गदगद मुख बानी॥ कमल-

नयन तटपर हैं ठाढे सकुचहिं मिलि ब्रजनारी।सूरदास प्रभु अंतर्यामी ब्रजपूरण पगधारी ॥१७॥
रागनट॥बनत नहीं यमुनाकोऐबो।सुन्दर श्याम घाटपरठाढे कहौ कौनविधि जैबो॥कैसे बसनउतारि
धरैं हम कैसे जलहि समैबो।नंदनँदन हमको देखेंगे कैसेकरि जो अन्हैबो ॥ चोली चीरहार ले
भाजत सो कैसेकरि पैबो । अंकम भरिभरिलेत सूर प्रभु कालि न एहि पथ ऐबो ॥ राग रामकली
कैसे बनै यमुन अस्नान।नंदको सुततीर बैठोबडो चतुर सुजान॥हार तोरै चीरफारै नयनचलैचुरा-
इ।कालि धोखे कान्ह मेरी पीठमीजे आइ॥कहति युवती बात सुनि सबथकित भईब्रजनारि। सूर
प्रभुको ध्यान धरि मन रविहि बांह पसारि ॥ १८ ॥राग गूजरी ॥ अति तप करति घोप कुमारि।
कृष्ण पति हम तुरत पावैं कामआतुर नारि ॥ नैन मूँदति दरशकारण श्रवणशब्द बिचारि। भुजा
जोरति अंक भरि हरि ध्यान उर अँकवारि ॥ शरद ग्रीपम डरति नाहीं करति तपु तनु गारि।
सूर प्रभु सर्वज्ञ स्वामी देखि रीझेभारि॥१९॥ राग धनाश्री॥ ब्रजबनिता रविकोकर जोरैं।शीतभीत
नहिं करति छहौं ऋतु त्रिविध काल यमुनाजल खोरैं॥ गौरीपति पूजति तप साधति करति रहति
नित नेमू। भोगरहित निशि जागि चतुर्दशि यशुमति सुतके प्रेमू ॥ हमको देहु कृष्ण पति
ईश्वर और नहीं मन आन । मनसा बाचा कर्मणा हमरे सूरश्यामको ध्यान॥ ८२० ॥नीके तप
कियो तनु गारि। आपु देखत कदमपर चढि मानिलई मुरारि॥ बर्पभरिव्रतनेम संयम श्रमकियो
मोहिंकाज। कैसेहु मोहिं भजै कोऊ मोहिं बिरदकी लाज॥ धन्य व्रतइन कियो पूरणशीत तपनि
निवारि ।काम आतुर भजैं मोकोंनवतरुनि ब्रजनारि॥ कृपानाथकृपालुमय तबजानिजनकीपीर।
सूरप्रभु अनुमान कीन्हों हरौंइनकोचीर॥ राग बिलावल॥बसन हरेसबकदमचढाये। सोरहसहसगोप-
कन्यनके अंगअभूपन सहित चोराये॥अतिविस्तार नीपतरु तामें लैलै जहांतहांलपटाये।मणिआ-
भरन डारडारन प्रति देखत छबि मनहीं अटकाए॥ नीलांबर पाटंबर सारी श्वेत पीत चूनरि अरु-
नाए।सूरश्याम युवतिन व्रत पूरन को कलकदमडार फलदाए॥२२॥ राग सुघई॥आपुकदमचढिदेखत
श्याम।वसन अभूपन सब हरिलीन्हे बिना बसन जल भीतर बाम॥ मूंदत नयन ध्यान धरि हरि-
को अंतर्यामी लीन्हों जान । बारबार सवितासों मांगैं हम पावैं पति सुंदर श्याम॥ जलते निकसि
आइ तट देख्यो भूपण चीर तहां कछु नाहिं।इतउत हेरि चकृत भईं सुंदरि सकुचिगईं फिरिजलहीं-
माहिं॥नाभिप्रयंत नीरमें ठाढी थरथर अंग कँपति सुकुमारि।कोलैगयो बसन आभूषण सूर श्याम
उर प्रीति बिचारि॥२३॥आवहु निकसि घोपकुमारि। कदमपरतेदरश दीन्हों गिरिधरन बनवारि॥
नैन भरि व्रत फलहि देख्यो फरचो है द्रुमडार । व्रत तुम्हारो भयो पूरण कह्यो नंदकुमार ॥
सलिलते सब निकसि आवहु वृथा सहत तुपार । देतहौं किन लेउ मोसों चीर चोली हार॥ बाहँ
टेकि विनय करौ मोहि कहत बारंबार । सूर प्रभु कह्यो मेरे आगे आनि करहु शृंगार ॥ २४ ॥
राग रामकली॥ग्वालिनिअपनोचीर लै री॥जलते निकसिनिकसितट द्वौकरजोरि शीशदै री॥कतहौ
शीत सहति ब्रजसुन्दरि व्रत पूरण भै री ।मेरे कहेआइ पहिरौ पट कृशतनु हेमजरै री॥हौं अंतर्यामी
जानत सब अति यह पै जकरै री।करिहौं पूरणकाम तुम्हारो शरद रास टेरी॥ संतत सूरस्वभाव
हमारो कत भय काम डरी ।कवनेहु भाव भजै कोउ हमको तिन तनु ताप हरै री ॥२५॥ हमारो
अंबर देहु मुरारी।लै सब चीर कदम चढि बैठे हम जलमांझ उघारी॥तुम तौकहावतहौ नँदनंदन
हम वृपभानदुलारी।तुम्हरो तौ अंबर जबहीं देहौं जलते निकसि होहु सब न्यारी॥तटपर बिना
वसन क्यों आवैं लाज लगतिहै भारी। चोली हार तुमहिंको दीन्हों चीर हमहिं देहु डारी ॥तुम

यही बात अचंभो भाषत नांगी आवहु नारी। सूरश्याम कछु छोह करौ जू शीत गई तन मारी ॥
॥२६॥ राग आसावरी॥हाहा करति घोषकुमारि। शीततें तन कँपत थरथर बसन देहु मुरारि ॥ मनहिं मन अतिही भयो सुख देखिकै गिरिधारि।जोपुरुष तियअंग देखै कहत दोष है भारि॥नेक नहिंतुम छोह आवत गई हिमसब मारि।सूर प्रभु अतिही निठुर हो नंदसुत बनवारि॥२७॥राग बिलावल॥लाज ओट यह दूरि करौ। जोइ मैं कहौं करौ तुम सोई सकुच बापुरेहि कहा करौ॥ जलते तीर आइ कर जोरहु मैं देखौं तुम बिनय करौ। पूरण व्रत अब भयो तुम्हारो गुरुजनशंका दूरि करौ॥ अब अंतर मोसों जिन राखौ बारबार हठ वृथा करौ। सूरश्याम कह चीर देतहौं मो आगे शृंगार करौ ॥२८॥जलते निकसि तीर सब आवहु। जैसे सवितासों कर जोरो तैसेहि जोरि देखावहु॥ नव बालाहम तरुन कान्ह तुम कैसे अंगदिखावैं। जलहीमें सब बाँह टेकिकै देखहु श्याम रिझावैं॥ऐसे नहिं रीझौं मैं तुमको तटही बाँह उठावहु। सूरदास प्रभु कहत हार चोली वस्तर तब पावहु॥२९॥
राग बिलावल॥हमारो देहु मनोहर चीर।कांपत शीत तनहिं अति व्यापत हिमसम यमुनानीर॥मानहिंगी उपकार रावरो करो कृपा बलबीर। अतिही दुखित प्राण वपु परसत प्रबल प्रचंड समीर॥ हम दासी तुम नाथ हमारे बिनवति जलमें ठाढी। मानहुं बिकसि कुमोदिनि शशिसों अधिकप्रीति उर बाढी॥जोतुमहमें नाथ कै जान्यो यह मांगे हम देहु।जलते निकसिआइ बाहेर ह्वैबसनआपनेलेहु॥ कर धरि शीश गईं हरिसन्मुख मनमें करि आनंद।ह्वै कृपालु सूरज प्रभुअंबर दीने परमानंद॥३०॥
राग जैतश्री॥तरुनी निकसिनिकसि तट आईं।पुनिपुनिकहतलेहुपटभूषण युवती श्यामबुलाईं॥जलते निकसि भईं सब ठाढी कर अँगऊपर दीन्हे।बसन देहु आभूषन राखहु हाहा पुनिपुनि कीन्हे॥ ऐसे कहा बतावतिहौ मोहिं बाहँ उठाय निहारो। करसों कहा अँग उर मूँदो मेरे कहे उघारो॥ सूरश्याम सोई हम करिहैं जोइजोइ तुमसब कैहौ। लैहैं दाउँ कबहुँ हम तुमसौं बहुरि कहां तुमजैहौ ॥३१॥ रागरामकली॥ललना तुम ऐसे लाड़ लडाए। लैकर चीर कदमपर बैठेकिहिं ऐसे ढँगलाए॥ हाहा करति कंचुकी मांगति अंबर दिए मन भाए। कीनी प्रीति प्रगट मिलबेकी अँखियन शर्म गँवाए॥ दुख अरु हाँसी सुनहु सखी री कान्ह अचानक आए।सूरदासके प्रभुको मिलनो अब कैसे दुरत दुराए॥३२॥राग नट॥सोरहसहस घोषकुमारि। देखि सबको श्याम रीझरहीं भुजा पसारि बोलिलीन्हों कदमके तर इहां आवहु नारि। प्रगट भए तहां सबनिको हरि काम द्वंद्व निवारि॥ बसन भूषन सबन पहिरे हरष भे सुकुमारि। सूरप्रभु ये गुण भले हैं ऐसे तुम बनवारि ॥
॥३३॥ दृढव्रत कियो मेरे हेत। धन्य धनि कहि नंदनंदन जाहु सबै निकेत॥ करौं पूरण काम तुम्हरो शरद रास रमाइ। हरषभईं यहसुनत गोपीरहीं शीश नवाइ॥ सबनिको अँगपरस कीन्हों व्रतकियो तनुगारि। सूर प्रभु सुख दियो मिलिकै व्रज चलीं सुकुमारि॥३४॥
राग सूहो॥ व्रत पूरण कियो नंदकुमार। युवतिनके मेटे जंजार॥जपतप करि अब तनजिनिगारो। तुम घरनी मैं भर्तातुम्हारो॥ अंतरशोच दूरि करिडारहु। मेरो कह्यो सत्य उर धारहु॥शरद रास तुम आश पुरावहुँ। अंकम भरि सबको उर लावहुँ॥ यह सुनिसबमनहर्ष बढायो। मनमन कह्यो कृष्ण पति रायो॥जाहु सबै घर घोपकुमारी। शरदासदैहौं सुखभारी॥सूरश्यामप्रगटे गिरिधारी॥ आनँद सहित गईं घर नारी॥३५॥राग असावरी॥शिवशंकर हमको फल दीन्हों॥पुहुप पाननाना रस मेवा पटरस अर्पण लैलै कीन्हों॥पाइँ धरीयुवती सबयह कहिधन्यधन्यत्रिपुरारी॥तुरतहिफल पूरन हमपायो नंदसुवन गिरिधारी॥बिनय करति सविता तुम सरि को पयअंजलि कर जोरि।

सूर श्याम पति तुमते पायो यह कहि घरहि बहोरि ॥ ३६ ॥अथ वस्त्रहरनलीला दूसरी॥ राग सूही ॥ नँदनंदन वर गिरिवर धारी। देखत रीझीं घोषकुमारी ॥ मोर मुकुट पीतांबर काछे। आवत देखे गाइन पाछे ॥ कोटि इंदु छबि वदन बिराजै। निरखि अंग प्रति मन्मथ लाजै ॥ रवि शत छबि कुण्डल नहिं तूले। दशन दमक द्युति दामिनि भूले॥ नैन कमल मृगशावक मोहै।शुकनासा पटतरको को है॥ अधर बिंबफल पटतर नाहीं। विद्रुम अरु बंधूक लजाहीं ॥ देखत रीझिरहीं व्रजनारी। देह गेहकी सुरति बिसारी॥ यह मनमें अनुमान कियो तब। जप तप संयम प्रेम करौं अब ॥ बारबार सविताहि मनावति। नँदनंदन पति देहु सुनावति ॥ नेम धर्म तप साधन कीजे। शिवसों मांगि कृष्णपति दीजै ॥ वरष दिवसको नेम लियो सब। रुद्रहिसेवहु मन वच क्रम अब॥ दृढविश्वास व्रतहिको कीन्हों। गौरीपति पूजन मन दीन्हों ॥ पटदश सहस जुरीं सुकुमारी। व्रत साधत नीके तनु गारी ॥ प्रात उठैं यमुनाजल खोरैं।शीत उष्ण कहुँ अंग न मोरैं॥ पतिके हेत नेम तप साधैं। शंकरसों यह कहि अवराधैं ॥ कमल पत्र मालूर चढावैं। नयन मूँदि यह ध्यानलगावैं॥ हमको पति दीजै गिरिधारी। बडे देव तुम हौ त्रिपुरारी ॥ और कछू नहिं तुमसों मांगौं। कृष्णहेतु यह कहि पालागौं। ऐसेहि करत बहुत दिन बीते। प्रभु अंतर्यामी मन चीते ॥ एकदिवस आपुन आए तहँ। नवतरुनी अस्नान करत जहँ ॥ बसन धरे जलतीर उतारी। आपुन जल पैठीं सुकुमारी ॥ कृष्णहेतु अस्नान करैं जहँ। सबके पाछे आपुन हैं तहँ। मींजत पीठि प्रेम अति बाढी। चकृत भई युवती सब ठाढी ॥ देखे नँदनंदन गिरिधारी। व्रतफल प्रगट भये बनवारी॥सकुचि अंग जल पैठि लुकावैं। बारबार हरि अंकम लावैं ॥ लाज नहीं आवतिहै तुमको। देखत बसन बिना सब हमको ॥ हँसत चले तब नंदकुमार। लोगन सुनवति करत पुकार॥ हार चीर लै चले पराई। हांक दियो कहि नंददोहाई ॥ डारि बसन भूषन तब भागे। श्याम करन अब ढीठो लागे ॥ भाजे कहां चलोगे मोहन। पाछे आइगई तुव गोहन ॥ तनुकी सुधि सँभार कछु नाहीं। वसन अभूषण पहिरत जाहीं ॥ चीर फटे कंचुकिबँद छूटे। लेत न बनत हारहैं टूटे ॥ प्रेमसहित मुख खीझत जाहीं। झूठहि बारबार पछिताहीं ॥ गईं सबै तिय नंदमहर घर। यशुमतिपास गईं सब दरदर॥ देखहु महरि श्यामके ए गुन। जैसे हाल करे सबके उन ॥ चोली चीर हार देखरायो। आपुन भागि इतहिको आयो ॥ यमुनातट कोउ जान न पावै। संग सखा लिये पाछे धावै ॥ तुम सुतको वरजहु नँदरानी। गिरधर करत नहीं भलि बानी ॥लाज लगति एक बात सुनावति। अंचल छोरि हियो दिखरावति ॥ यह देखत हँसिउठी यशोदा। कछु रिसि कछु मनमें करि मोदा ॥ आइगए तेहि समय कन्हाई। बाहँ गही लै तुरत देखाई ॥ तनक तनक कर तनक अँगुरिया। तुम यौवन भरि नवल बहुरिया॥ जाहु घरहि तुमको मैं चीन्ही। तुम्हरी जाति जानि मैं लीन्हीं॥तुम चाहति सो ह्यां ना पैहौ।और बहुत व्रजभीतर लैहौ॥बारबार कहि कहा सुनावति। इन बातन कछु जानि न आवति॥देखहु री ए भाव कन्हाई।कहां गई तबकी तरुनाई॥महरितुमहिं कछु दूषन नाहीं। हमको देखिदेखि मुसकाहीं ॥ इनके गुण कैसे कोउ जानैं। औरै करत और धरि ठानैं॥देन उरहनो तुमको आई। नीकीपहिरावनि हम पाई ॥ चलीं सबै युवती घरघरको। मनमें ध्यान करतिहैं हरिको॥ वरषदिवस तप पूरण कीन्हें। नन्दसुवनको तन मनदीन्हें॥प्रात होत यमुना फिरि आईं।प्रथम रहे चढि कदमकन्हाई॥तीर आइ युवतीभईं ठाढी।उरअंतर हरिसों रति बाढी॥कह्यो चलोयमुनाजल खोरैं।अंगन आभूषण सब छोरैं।चोलीछोरैं हारउतारैं।करसोंशिथिल

केश निरवारैं ॥ इतउत चितवत लोग निहारैं। कह्यो सबन अब चीर उतारैं ॥ बसन अभूषणधरचौ उतारी। जलभीतर सब गईं कुमारी ॥ माघ शीतको भीत न मानैं। षटऋतुको गुण समकरि जानैं ॥ बारबार बूडैं जलमाहीं। नेकहु जलकों डरपति नाहीं ॥ प्रातहितेयक याम नहाहीं। नेम धर्महीमें दिन जाहीं ॥ इतनो कष्ट करैं सुकुमारी। पतिके हेतु गोवर्द्धनधारी ॥ अतितप करति देखिगोपाला। मनमें कह्यो धन्य ब्रजबाला ॥ हरि अंर्यामी सब जानैं। छिनछिनकी यह सेवा मानैं ॥ व्रतफल इनहिं प्रगट देखरावों। बसन हरों लै कदम चढ़ावों ॥ तनु साधन तप कियो कुमारी। भजैं मोहिं कामातुर नारी ॥ सोरह सहस गोप सुकुमारी। सबके बसन हरे बनवारी ॥ हरत बसन कछु बार न लागी। जलभीतर युवती सब नाँगी ॥ भूषन बसन सबै हरिल्याये। कदमडारजहँ तहँ लटकाये ॥ ऐसो नीपवृक्ष बिस्तारा। चीर हार धौं कित कहँ डारा ॥ सबै समाने तनु प्रतिडारा यह लीला रचि नंदकुमारा ॥ हार चीर मानों तरु फूल्यो। निरखि श्याम आपुन अनुकूल्यो ॥ नेमसहित युवती सब न्हाई। मनवचन सविता बिनय सुनाई ॥ मूँदहिं नैन ध्यान उर धारे। नंद नँदन पति होय हमारे ॥ रवि करि बिनय शिवहि मन दीन्हों। हृदयभावअवलोकनकीन्हों ॥ त्रिपुरसदन त्रिपुरारि त्रिलोचन। गौरीपति पशुपति अघमोचन ॥ गरलअशन अहिभूषन धारी। जटाधरन गंगा शिर प्यारी ॥ करति बिनय यह मांगति तुमसों। करहुकृपाहँसिकेआपुनसों ॥ हमपावैं सुत यशुमतिको पति। इहै देहु करि कृपा देव रति ॥ नित्यनेमकरिचलींकुमारी। एकयाम तनकोहिमजारी ॥ ब्रजललना कह्यो नीर जडाई। अतिआतुर ह्वै तटको धाई ॥ जलते निकसि तरुनि सब आई। चीर अभूषन तहां न पाईं ॥ सकुचि गईं जलभीतर धाई। देखिहँसततरुचढे कन्हाई ॥ बारबार युवती पछिताहीं। सबके बसन अभूपन नाहीं ॥ ऐसो कौन सबै लै भाग्यो। लेतहु ताहि बिलम नहिं लाग्यो ॥ माघ तुषार युवति अकुलाहीं। ह्यां कहुँ नंदसुवन तौ नाहीं ॥ हम जानी यह बात बनाई। अंबर हरि लैगए कन्हाई ॥ हो कहुँ श्याम बिनय सुनि लीजै। अंबर देहुकृपा करि जीजै ॥ थरथर अंग कँपति सुकुमारी। देखि श्याम नहिं सके सँभारी ॥ एहि अंतर प्रभु वचन सुनाए। व्रतको फल दरशन सब पाए ॥ कहा कहति मोसों ब्रजबाला। माघशीत कत होत बिहाला ॥ अंबर जहां बताऊं तुमको। तौ तुम कहा देहुगी हमको ॥ तन मन अर्पन तुमको कीन्हों। जो कछु हतो सो तुमहीं दीन्हों ॥ और कहा लैहो जू हमसों। हम मांगतहैं अंबर तुमसों ॥ यह सुनि हँसे दयालु मुरारी। मेरो कह्यो करो सुकुमारी ॥ जलते निकसि सबै तट आवहु। तबहि भले अंबर तुम पावहु ॥ भुजा पसारि दीनह्वै भाषहु। दोउकर जोरिजोरितुम राखहु ॥ सुनहु श्याम इकबात हमारी। नगनकहूँदेखिये न नारी ॥ यह मति आपु कहां धौं पाई ॥ आजु सुनी यह बात नवाँई ॥ ऐसी साध मनहिंमेंराखहु। यह बाणी मुखते जनि भाषहु ॥ हम तरुनी तुम तरुण कन्हाई। बिनाबसन क्यों देहिंदेखाई ॥ पुरुप जाति तुम यह का जानो। हाहा यह मुखमें जनिआनो। तौ तुम बैठिरहो जलही सब। बसन अभूपन नहिं चाहति अब ॥ तबहिंदेहुँ जलबाहिर आवहु। बाहैं उठाइ अंग देखरावहु ॥ कत हो शीत सहति सुकुमारी। सकुच देहु जलहीमें डारी ॥ फऱ्यो कदम व्रतफरनि तुम्हारो। अब कहालज्जा करति हमारो ॥ लेहु न आइ आपुने व्रतको। मैं जानत या व्रतके घतको ॥ नीके व्रत कीन्हो तनु गारी। व्रत ल्यायो धरिमैंगिरिधारी ॥ तुम मनकामन पूरण करिहौं। रामरंग रचि रतिसुख भरिहौ यह सुनिकै मन हर्प बढायो। व्रतको पूरण फल हम पायो ॥ छांडहुतुम यह टेक कन्हाई। नीरमाप दुहौंगईं जडाई ॥ आभूपण सब आपुहि लेहू। चीर कृपाकै हमको देहू ॥ हाहा लागैं पाइँ तुम्हरे। पप

होतहै जाडन मारे ॥ आजुहितेहमदासीतुम्हरी।कैसेअंग देखावैं उघरी ॥ अंगदेखायेहिअंबरपैहौ। नातरु वैसेहि दिवस गँवैहौ ॥ मेरे कहे निकसि सब आवहु। थोरेहि हमको भलो मनावहु ॥ सुहाँ चही तरुनी मुसुकानी।यह आपुन थोरीकरि जानी॥जोइजोइ कहो सोतुमकोसोई।आजु तुम्हारे पटतर को है॥ हमरी पति सब तुम्हरे हाथा। तुमहि कहौ ऐसी ब्रजनाथा॥ तपतनुगारिकियोजेहि कारण।सो फल लग्यो नीपतरु डारन॥ आवहु निकसि लेहुपट भूषन। यह लागैहमकोसबदूषन॥ अब अंतर कत राखत हमसों। बारंबार कहतहौं तुमसों॥ गोपिन मिलि यहबात बिचारी। अबतौ टेक परे बनवारी॥ चलहुन जाइ चीर अब लेहू।लाज छाँडि उनको सुख देहू॥जलते निकसि तीरसब आई।बारबार हरि हर्षि बुलाई॥ बैठिगईं तरुणी सकुचानी। देहु श्याम हम अतिहि लजानी॥ छाँडिदेहु यह बात सयानी। वैसेहि करौ कहीजो बानी॥कर कुच अंगढाँकिभईठाढी। वदन नवाइ लाज अति बाढी॥ देहु श्याम अंबर अब डारी। हाहा दासी सबै तुम्हारी॥ऐसेनहीं वसन तुम पाव । बाहँ उठाइ अंग देखरावहु॥ कह्योमानि युवतिनकर जोरे। पुनिपुनियुवती करति निहोरे॥ धन्यधन्य कहि श्रीगोपाला। निहचै ब्रत कीन्हों ब्रजबाला॥ आवहु निकट लेहु सब अंबर। चोली हार सुरंग पटंबर॥ निकट गईं सुनिकैयहबानी।तरुनीनग्नअंगअकुलानी॥ भूषन बसन सबनको दीन्हों। तियके हेतु कृपाहरि कीन्हों॥ चीर अभूषन पहिरेनारी। कह्यो ताहि ऐसे बनवारी॥ तब हँसि बोले कृष्ण मुरारी। मैं पति तुम मेरी सब प्यारी॥ तुमहिंहेतुयह वपु ब्रज धार्यो।तुमकारण बैकुंठ बिसार्यो॥ अब ब्रत करितुमतनुहिंन गारौ। मैं तुमतेकहुँहोतन न्यारो॥ मोहिं कारण तुम अति तप साध्यो। मन मनकै मोको अवराध्यो॥ जाहु सदन अब सब ब्रजबाला। अंग परसिमेटे जंजाला॥ युवतिन बिदादई गिरिधारी। गईं घरनि सबघोषकुमारी॥ वस्त्रहरनलीला प्रभु कीन्हों।ब्रजतरुणी ब्रतको फल दीन्हों॥ यह लीला श्रवणनिसुनिभावै। औरनि सिखवै आपुन गावै॥ सूर श्याम जनके सुखदाई। हढ़ताईमें प्रगट कन्हाई॥३७॥ अथ पनघटको प्रस्ताव॥राग अडानो॥हौं गईही यमुनजल लेन माईहोसांवरेसेमोही।सुरंगकेसरिखौरिकुसुमकी दाम अभिराम कंठ कनककी दुलरीझलकतपीतांबरकीखोही॥ नान्हीनान्हीबूँदनमेंठाढोरीबजावै गावै मलारकी मीठी तान मैं तो लालाकी छबि नेकहु न जोही। सूरश्याममुरिमुसकानिछबीरीअँखि- यनमें रही तब न जानों हौं को ही॥ ३८॥ चटकीलो पट लपटानो कटिबंसीवटयमुनाके तट नागरनट। मुकुट लटकि अरु भृकुटि मटक देखौ कुंडलकीचटकसों अटकिपरी दृगनि लपट॥ आछी चरणनि कंचन लकुट ठटकीली बनमाल करटेके द्रुमडार टेढे ठाढे नँदलालछबिछाई घट घट। सूरदास प्रभुकी बानक देखे गोपी ग्वाल टारे न टरत निपट आवै सौंधेकी लपट॥ ॥ ३९॥राग सुघराई॥ बजावै मुरलीकी तानसुनावैयहिबिधिकान्हरिझावै। नटवरवेषबनायेचटक सो ठाढो रहै यमुनाके तीरनित नवमृग निकटबोलावै॥ ऐसोकोजोजाइयमुनतेजलभरिल्यावै॥ मोरमुकुट कुंडल बनमाला पीतांबर फहरावै॥ एक अंग शोभा अवलोकत लोचनजल भरिआवै॥ सूर श्यामके अंगअंगप्रति कोटि काम छबिछावै॥ ४०॥राग पूरबी॥ पनघटरोकेहिरहतकन्हाई। यमुनाजल कोउ भरन न पावत देखतही फिरिजाई॥ तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई आपुन रहे छुपाई। तब ठाढे जे सखा संगके तिनकोलिये बोलाई॥बैठारे ग्वालनकोद्रुमतरआपुनफिरफिर देखत। बडी बारभई कोउन आई सूरश्याममनलेखत॥४१॥राग देवगन्धार॥युवतिइकआवतदेखी श्याम। द्रुमके ओट रहे हरि आपुन यमुनातट गई बाम॥जलहलोरिगागरि भरिनागरि जबही

शीश उठायो। घरको चली जाइ ता पाछे शिरते घट ढरकायो ॥ चतुर ग्वालि कर गह्यो श्याम-
को कनक लकुटिया पाई। औरनिसों करि रहे अचगरी मोसों लगत कन्हाई॥ गागरि लै हँसि देत
ग्वालिकर रीतो घट नहिं लैहौं। सूर श्याम ह्यां आनि देहु भरि तबहिं लकुट कर देहौं॥ ४२ ॥
राग कल्याण॥ लकुट करकी हौं तब देहौं घट मेरो जब भरिदैहो। कहा भयो जो नंद बडे वृषभानु
आन हमहूँ तुमसी हैं समसरि मिलिकरिकै हो ॥ एक गाँव एक ठाँवको वास एक तुम
कैहौ क्यों मैं सैहौं। सूर श्याम मैं तुम न डरैहौं जवाबको जवाब दैहौं॥ ४३॥ घट भरिदेहु लकुट तब
दैहौं। हमहूं बडे महरकी बेटी तुमको नहीं डरैहौं । मेरी कनकलकुटिया दै री मैं भरिदैहौं नीर।
बिसरिगई सुधि तादिनकी तोहि हरे सबनके चीर॥ यह बाणीसु निग्वारि विवश भई तनुकी सुधि
बिसराइ। सूरलकुट कर गिरत न जानी श्याम ठगौरी लाइ ॥ ४४ ॥ राग हमीर ॥ घट भरि दियो
श्याम उठाइ। नेक तनुकी सुधि न ताको चली समुहाइ ॥ श्यामसुंदर नयनभीतर रहे आनि
समाइ । जहां जहां भरि दृष्टि देखौं तहां तहां कन्हाइ॥ उनहिते एक सखी आई कहति कहा
भुलाइ। सूर अबहीं हँसत आई चली कहा गँवाइ॥ ४५॥ राग टोडी॥ अबहिं गई जल भरन अकेली
अरी हौं श्याम मोहनी घाली री। नंदनंदन मेरी दृष्टि परे आली फिरि चितवन उरशाली री ॥
कहा री कहौं कछु कहत न आवे लगी मरमकी भाली री। सूरदास प्रभु मन हरिलीन्हों विवश
भई हौं कासों कहौं आली री॥ ४६॥ राग धनाश्री॥ सुनत बातयहसखी अतुरानी। ताहि बाहँगहिघर
पहुँचाई आपु चली यमुनाके पानी ॥ देखे आइ तहां हरि नाहीं चितवति जहां तहां बिततानी।
जलभरि ठिठकत चली घरहि तन बारबार हरिको पछितानी॥ ग्वालिनिबिकलदेखि प्रभुप्रगटे
हर्ष भयो तनतपति बुझानी । सूर श्याम अंकम भरि लीन्ही गोपी अंतरगतिकीजानी॥ ४७॥
राग आसावरी॥ मिलि हरि सुख दियो तेहि बाल। तपति मिटि गई प्रेमछाकी भई रसबेहाल॥ मगन हो
डग धरति नागरि भवन गई भुलाइ । जल भरन व्रजनारि आवति देखि ताहि बोलाइ ॥
जाति कित है डगर छाँडे कह्यो इतको आइ । सूर प्रभुके रंग राची चितैरही चित लाइ । ४८ ॥
राग धनाश्री ॥ काहू तोहिं ठगोरी लाई । बूझति सखी सुनति नहिं नेकहु तुही किधौं ठगमूरीखाई॥
चौंकिपरी सपने जनु जागी तब बाणी कहि सखिन सुनाई। श्यामबरन एक मिल्यो ढोटौना
तेहि मोको मोहनी लगाई ॥ मैं जल भरे इतहिको आवति आनि अचानक अंकम लाई ॥ सूर
ग्वारि सखियनके आगे बात कहे सब लाज गँवाई ॥ ४९॥ राग टोडी ॥ आवत ही यमुना भरेपानी।
श्यामवरन काहूको ढोटा निरखि वदन घर गई भुलानी॥ उन मोनन मैं उननन चितयो तब-
हीते उन हाथ विकानी। उर धकधकी टकटकी लागी तनु व्याकुल मुख फुरत न बानी ॥ कह्यो
मोहन मोहनी तू कहि या ब्रजमें नहिं मैं पहिचानी। सूरदास प्रभु मोहन देखत जनु बारिधि जल
बूँद हेरानी ॥ ५० ॥ नेक न मनते टरत कन्हाई । यकऐसेहिं छकिरही श्यामरस तापर इह
इहि बात सुनाई॥ वाको सावधान करि पठयो चली आपु जलको अतुराई । मोर मुकुटपीतांबर
काछे देख्यो कुँवर नंदको जाई ॥ कुंडल झलकत ललित कपोलनि सुंदर नैन विशाल सुहाई।
कह्यो सूर प्रभु ए ढँग सीखे ठगत फिरतहो नारि पराई॥ ५१॥ कहा ठग्यो तुम्हरो ठगिलीन्हों।
क्यों नहिं ठग्यो और कहा ठगिहो औरहिके ठग तुमको चीन्हों॥ कहो नाउँ धरि कहा ठगायो
सुनिराखैं यह बात। ठगके लक्षनमोहिंबतावहु कैसे ठगके घात॥ ठगकेलक्षण हमसोंसुनिएमृदुमुस-
कनि मन चोरत। नैनसैन दे चलत सूरप्रभु अंग त्रिभंग करि मोरत॥ ५२॥ राग सूही॥ अतिहि करत

तुम श्याम अचगरी । काहूकी छीनतहौ गेंडुरी काहूकी फोरतहौ गगरी ॥ भरनदेहु यमुनाजल हमको दूरि करौ बातैं ए लँगरी।पैंडे चलन न पावै कोऊ रोकिरहत लरिकन लै डगरी।घाट बाटसब देखत आवतयुवतीडरन मरतिहैं सिगरी।सूरश्याम तेहिगारी दीनोजोकोउ आवै तुमरी बगरी५३॥ राग रामकली॥नीके देहु नमेरी गिंडुरी।लैजैहौं धरि यशुमतिआगे आवहु री सबमिलि एकझुंडरी॥ काहू नहीं डरात कन्हाई बाट घाट तुम करत अचगरी । यमुनादह गेंडुरी फटकारी फोरी सब शिरकी अस गगरी॥भली करी यह कुँवर कन्हाई आजु मेटिहौं तुम्हरी लँगरी । चलीं सूर यशुमतिके आगे उरहन लै तरुनी ब्रज सगरी॥५४॥आनि न देहु ढोटौना ढीठ गेंडुरीपराई।तेरे कोऊ कहा करैगो धौं लरिहै हमसों भौजाई ॥ मेरे संगकी और गईं ते जल भरिभरि घरते फिर आई ।सूर श्याम गेंडुरी दीजै न तौ यशुमतिसों कैहौं जाई॥५५॥राग धनाश्री॥आपुन चढे कदम-पर धाई । बदन सकोरिभौंह मोरतहैं हांक देत करि नंद दोहाई ॥ जाइ कहौ मैयाके आगे लेहु सबै मिलि मोहिं बँधाई । मोको जुरि मारन जब आईं तव दीनी गेंडुरि फटिकाई ॥ ऐसे करि मोको तुम पायो मनौ इनकी मैं करौं चेराई । सूरश्याम वे दिन बिसराए जब बांधे तुम ऊखल लाई ॥ ५६ ॥ राग आसावरी॥इहँई रहौ तो बदौं कन्हाई । आपु गई यशुमतिहि सुनावन दैगई श्यामहि नंद दोहाई ॥ महरि मथति दधि सदन आपने एहि अंतर युवती सब आई । चितै रही युवतिनको आवत कहां आवतिहैं भीर लगाई ॥ मैं जानति तुमको हरि खिझई ताते सब उरहन लै धाई । सूरदास रसभरी ग्वालिनी ऐसो ढीठ कियो सुत माई॥५७॥राग बिलावल॥सुनहु महरि तेरोलाडिलो अति करतअचगरी।यमुनभरन जलहमगईंतहां रोकत डगरी ॥शिरते नीर ढराइदेत फोरी सब गगरी।गेंडुरि दई फटकारिकै हरि करतहै लँगरी नितप्रति ऐसेईढंगकरै हमसोंकहै अगरी।अबबसबासनहीं बनैयहि तुवब्रजनगरी॥आपुगयोचढि कदमही चितवतरहीं सिगरी। सूरश्यामऐसेहीसदा हमसोंकरैझगरी॥ ५८ ॥ रागरामकली॥सुतको वरजि राखहुमहरि।डगर चलन न देत काहुहि फोरिडारत ढहरि॥श्यामके गुण कछु न जानति जाति हमसों गहरि । इहै लालच गाइ दश लिए बसतहैं ब्रज थहरि ॥ यमुनतट हरि देखे ठाढे डरनिआवैं वहरि । सूर श्यामहिं नेक बरजौ करतहै अतिचहरि॥५९॥ तुमसों कहति सकुचतिमहरि।श्यामके गुण नहीं जानतिजाति हमसों गहरि॥ नेकहू नहिंसुनतिश्रवणनिकरतिहैं हम चहरि।जलभरनको-उ नहीं पावति रोकि राखत डहरि ॥ अति अचगरी करतमोहन फटकि गेंडुरी दहरि।सूरप्रभुको कहा सिखयो रिसनि युवती झहरि॥ ६० ॥राग धनाश्री ॥कहाकरौं मोसों कहौतुमहीं । जोपाऊँतौ तुमहिं देखाऊँ हाहा करिहौअबहीं॥तुमहूगुण जानतिहौहरिके ऊखल बाँधे जबहीं। सँटियालैमारन जब लागी तबबरज्यो मोहि सबहीं॥ लरिकाईते करत अचगरी मैंजाने गुण तबहीं। सूरदास कैसे करिहीं घर आवै धौं हरि अबहीं ॥ ६१ ॥राग सारंग ॥ मैंजानतिहौं ढीठ कन्हैया।आवन तौ घर देहु श्यामकोजैसी करौं सजैया॥मोसोंकरत ढिठाईमोहन मैं वाकीहौंमैया। और न काहूको वह मानै कछु सकुचत वल भैया ॥ अब जो जाउँ कहां तेहि पावों कासों देइ धरैया।सूर श्यामदिन दिन लंगर भयो दूरिकरौं लँगरैया॥६२॥ राग सूही॥युवति बोधि सब घरहि पठाई। यहअपराध मोहिं बकसौगी इहकहतिहौं मेरी माई ॥इतते चलींघरनि सब गोपी उतते आवत कुँवरकन्हाई । बीचहि भेंट भई युवतिन हरि नैनन जोरत गए लजाई ॥ जाहु कान्ह महतारी टेरति बहुत बडाई करि हम आई।सूर श्याममुखनिरखिनिरखिहँसि मैं कैहौं जननी समुझाई ॥६३॥रागनट॥ सकुचत

गए घरको श्याम । द्वारहीते निरखि देख्यो जननि लागी काम ॥ इहै बाणी कहति मुखते कहाँ गयो कन्हाइ । आप ठाढे जननि पाछे सुनतहैं चितलाइ॥जलभरन युवतीन पावैंघाटरोकनजाइ। सूर सबके फोरि गागरि श्याम गयो पराइ ॥६४ ॥राग नटनारायण ॥यशुमति यहकहिकैरिस पावति। रोहिणि करति रसोई भीतर कहिकहि तिनहिं सुनावति॥गारी देत बहू बेटिनको वे धाई ह्यां आवति।हाहा करति सबनिसों मैंही कैसेहु खूंट छँडावति॥जाति पांतिमों कहा अचगरी यह कहि सुतहि धिरावति। सूर श्यामको सिखवत हारी मारेहु लाज न आवति॥६५॥राग सारंग॥ तू मोहींको मारन जानति ।उनके चरित कहा कोउ जानै उनहिं कही तू मानति ॥ कदमतीरते मोहिं बुलायो गढि गढि बातैं बानति । मटकत गिरी गागरी शिरते अब ऐसी बुधि ठानति ॥ फिरि चितई तू कहां रह्यो कहि मैं नहिं तोको जानति । सूर सुतहि देखतही रिस गइ मुख चूमति उर आनति ॥६६॥ राग गौरी॥ झूठहि सुतहि लगावति खोरि । मैं जानति उनके ढंग नीके बातैं मिलवति जोरि॥वे यौवनमदकी सब माती कहाँ मेरो तनक कन्हाई।आपुहि फोरिगागरी शिरते उरहन लीन्हेआई॥तू उनके ढिगजातकिनहि है्वै पापिनि सब सारि।सूर श्याम अब कह्यो मानि तू हैं सब ढीठ गुवारि॥६७॥राग मोहन ॥मोहन बाल गोबिंदा माई मेरो कहा जानै बोलि ।उरहन लै युवती सब आवति झूठी बतियाँ जोरि ॥ कोऊ कहति गेंडुरि मेरी लीन्ही कोऊ कहति गगरी गयो फोरी।कोऊ चोली हार बतावति कान्हा तेरो भोरी॥अब आवैं जो उरहन लैकै तौ पठऊं मुँह मोरी।सूर कहां मेरो तनक कन्हाई आपुन यौवन जोरी॥६८॥राग कान्हरो॥ब्रजघरघर यह बात चलावत। यशुमतिको सुत करत अचगरी यमुना जल कोउ भरन न पावत ॥ श्याम बरन नटवर बपु काछे मुरली राग मलार बजावत । कुंडलछबि रविकिरनहुंते द्युति मुकुट इंद्रधनुते शोभावत ॥ मानत काहु न करत अचगरी गागरि धरि जल भुइँ ढरकावत।सूर श्यामको मातपिता दोउ ऐसे ढंग आपुनहिं पढावत॥६९॥राग गौरी॥ करत अचगरी नंदमहरको। सखा लिये यमुनातट बैठो निबहत नहिं पथ लोग डहरको ॥ कोउ खीझो कोउकितने बरजो युवतिनके मनध्यान।मनक्रमवचनश्यामसुंदरते और न जानति आन॥ इह लीला सब श्याम करतहैं ब्रजयुवतिनके हेत। सूर भजे जेहिभाव कृष्णको ताको सोइफल देत ॥ यमुनाजल कोउ भरन न पावे। आपुन बैठेकदमडारचढि गारी देदे सबनिबोलावे॥काहूकीगगरी गहि फोरत काहू शिरते नीर ढरावे।काहूसों करि प्रीति मिलतुहै नैनसैन दे चितहि चुरावे॥बरबसही अँकवारि भरत धरि काहूसों अपनो मन लावे। सूर श्याम अति करत अचगरी कैसेहु काहू हाथ न आवे॥७०॥राग धनाश्री॥ब्रजगवैंडे कोउ चलन न पावत। ग्वालसखा सँगलीने डोलत देदे हांक जहां तहां धावत॥ काहूकी गेंडुरी फटकारत काहूकी गगरी ढरकावत॥ काहूको गारी दे भाजत काहूको उठि अंकम लावत ॥ काहू नहिं मानत ब्रजभीतर नंदमहरको कुँवर कहावत।सूर श्याम नटवर बपु काछे यमुनाकेतट मुरलीबजावत॥७१॥राग टोडी॥गोकुलकेगवैंडेएकसांवरोसोढोटामाईअँखियनके पैंडे पैठिजीके पैंडपरचोहै। कल न परत छन गृह भयो सम बन तनमनधनप्राण सरबस हरचोहै॥ भवन न भावे माइ आंगन न रह्योजाइ करें हाइहाइ देखो जैसे हाल करचोहै।सूरदास प्रभुनीके गावत मधुर सुर मानहु मुरलीमें पियूषरस भरचो है ॥ ७२ ॥ राग नट ॥ राधा सखियन लई बोलाइ । चलहु यमुना जलहि जैये चलीं सब सुख पाइ॥ सबनि एकएक कलश लीन्हों तुरत पहुँचीं जाइ । तहां देख्यो श्यामसुंदर कुँवरि मन हरषाइ॥नंदनंदन देखिरीझे चितैरहेचितलाइ।

सूर प्रभुकी प्रिया राधा भरत जल मुसुकाइ ॥७३॥ राग गूजरी ॥ घरहि चली यमुनाजल भरिकै। सखिन बीच नागरी बिराजति भई प्रीति उर हरिकै ॥ मंदमंद गति चलत अधिक छबि अंचल रह्यो फहरिकै। मोहन मोको मोहनी लगाई संगहि चले डगरिकै ॥बेनीकी छबि कहत न आवै रही नितंबनि ढरिकै। सूर श्याम प्यारीके वश भए रोमरोम रस भरिकै॥७४॥ राग जयतश्री॥ गागरि नागरि जलभरि घर लीन्हे आवै। सखियनबीच भरचो घट शिरपर तापर नैनचलावै॥ ढुलति ग्रीवलटकति नकबेसरि मंदमंद गति आवै। भ्रुकुटी धनुष कटाक्ष बाण मनो पुनिपुनि हरिहि लगावै॥ जाको निरखि अनंग अनंगत ताहि अनंग बढावै। सूर श्याम प्यारीछबिनिरखत आपुहि धन्यकहावै॥७५॥ गागरिनागरि लिये पनिघटते चली घरहि आवै। ग्रीवा डोलत लोचन लोलत हरिके चितहि चुरावै ॥ ठिठकति चलै मटकि मुहँ मोरै बंकट भौंह चलावै। मनहु कामसैना अँगशोभा अंचल ध्वज फहरावै ॥ गति गयंद कुच कुंभ किंकिनी मनहुँ घंट झहनावै। मोतिन हार जलाजल मानों खुमी दंत झलकावै ॥ मानहु चंद महावत मुखपर अंकुश बेसरि लावै। रोमावली सूँडि तिरनीलौं नाभि सरोवर आवै ॥ पग जेहरि जंजीरनि जकरयो यह उपमा कछु पावै। घटजल छलकि कपोलनि किनुका मानों मदहि चुवावै ॥ बेनी डोलति दुहुँ नितंबपर मानहुँ पूंछ हलावै। गज सरदार सूरको स्वामी देखिदेखि सुख पावै ॥७६॥ सखियन बीच नागरी आवै। छबि निरखत रीझे नँदनंदन प्यारी मनहिं रिझावै॥कबहुँक आगे कबहुँक पाछे नानाभाव बतावै। राधा यह अनुमान कियो हरि मेरे चितहि चोरावै ॥ आगे जाइ कनकलकुटै लै पंथ सँवारि बतावै। निरखत छाँह जहां प्यारीकी तहँ लै छांह छुवावै ॥ छबि निरखततनु वारत अपनो नागर जियहि जनावै। अपने शिर पीतांबर वारत ऐसे रुचि उपजावै ॥ ओढि ओढनियां चलत देखावत यहि मिस निकटहि आवै। सूर श्याम ऐसे भावनिसों राधा मनहिं रिझावै॥७७॥ राग सारंग॥ लग लागननहिं पावत श्याम। तब एक भाव कियो कछु ऐसो प्यारीतनु उपजायो काम ॥मिस करि निकट आइ मुख हेरयो पीतांबर डारयो शिर वारि। यह छल करि मन हरयो कन्हाई कामविवश कीन्ही सुकुमारि॥ पुलकि अंग अँगिया दरकानी उर आनँद अंचल फहरात। गागरि ताकि कांकरी मारै उचटिउचटि लागत प्रियगात ॥मोहन मनमोहनी लगाई सखिन संग पहुँची घर जाइ। सूरदास प्रभुसों मन अटक्यो देह गेहकी सुधि बिसराइ ॥७८॥ राग नट॥ ग्वालिनि चली यमुन बहोरि। वाहि सब मिलि कहत आवहु कछू कहति निहोरि॥ ज्वाब देति न हमहिं नागरि रही बदनहिं मोरि। ठगिरही मन कहा सोचति कोउ लियो कछु चोरि ॥ भुजा धरिकरि कह्यो चलहि न आवै अबहीं खोरि। सूर प्रभुके चरित सखियन कहत लोचन ढोरि॥७९॥ राग मलार ॥ मेरी गैल न छांडै सांवरो मैं क्योंकरि पनिघट जाउँरी। यहि सकुचनि डरपतिरहौं मोहिं धरै नकोऊनाउँरी॥ जित देखौं तित दीखै री रसिया नंदकुमार री। इतउतनैन चुराइकै मोहिं पलकन करत जुहार री॥ लकुट लिये आगे चलै हो पथ सँवारत जाइ री। मोहि निहोरो लाइकै वह फिरि चितवै मुसुकाइ री ॥मो कंचुकि अँचरा उँचे मेरो हियरा तकि ललचाइ री। यमुनजल भरि गागरी लै जब शिर चलत उचाइ री ॥गागरि मारै कांकरी सो लागै मेरे गात री। गैलमाँझ ठाढो रहै मोहि खुँबटै आवत जात री॥ हौं सकुचनि बोलौं नहीं लोकलाजकी शंक री। मोतन छ्वै बेहरि चलै वह छबि भरतुहै अंक री॥ निकट आइ मुख निरखिकै सकुचै बहुरि निहारि री। अब ढँग ओढी ओढनी पीतांबर मोपै वारि री॥ जब कहुँ लग लागै नहींतब वाको जिव अकुलाइ री। तब हठि मेरी छाँहसों

वह राखै छाँह छुआइरी ॥को जानै किन होतहै री घर गुरुजनकी शोर री।मेरो जिव गांठी बंध्यो पीतांबरकी छोर री॥अबलौंसकुच अटकाही अब प्रगट करौं अनुरागरी। हिलिमिलिकै संग खेलिहौं मानि आपनो भाग री॥घर घर ब्रजवासी सबै कोउ किन करै पुकारि री ।गुप्तप्रीति परगट करौं कुलकी कानि निवारि री ॥जबलगि मन मिलयो नहीं तब नची चौपके नाच री॥सूर श्याम संगही रहौं सब करौं मनोरथ सांच री॥८०॥राग कान्हरो॥मोहन बिन मन ना रहै कहा कहौं माई री । कोटि भांति करि करि रही समुझाई री ॥ लोकलाज कौन काज मनमें नहिं आई री । हृदयते टरति नाहिन ऐसी मोहनी लाई री ॥ सुंदर वर त्रिभंगी नवरंगी सुखदाई री । सूरदास प्रभु बिन मोसों नेक रह्यौ ना जाई री ॥ ८१ ॥ राग सूही ॥ नँदको नंदन सांवरो मेरो चित्तचोर जाइ री। रूप अनूप दिखायइकै वह औचक गयो आइ री ॥ मोरमुकुट श्रवण कुंडल ओढ़नी फहराइ री । अधरनिपर मुरली धरे मधुर तान बजाइ री ॥ चंदन खौरि किए नटवर कटि काछनी बनाइ री । सूरदास प्रभु बैठे यमुना तट पूरण ब्रह्म कन्हाइ री ॥८२॥ राग गौरी ॥ परयो नयते ठग मूरि ठगौरी। देख्यो मैं यमुनातट बैठो ढोटा यशुमतिको री॥ अतिसांवरो भरयो सो साँचेकीन्हे चंदनखौरी।मन्मथकोटिकोटि गहि वारौंओढे पीतपिछौरी॥दुलरी कंठ नयन रतनारे मोमन चितै हरयो री । बिकट भ्रुकुटिकी ओरकोरते मन्मथबाण धरयो री॥दमकत दशन कनककुंडल मुख मुरली गावत गौरी । श्रवणन सुनत देहगति भूली भई बिकल मति बौरी ॥ नहिं कल परत बिना दरशनते नैननिलगी ठगौरी। सूर श्याम चित टरत न नेकहु निशि दिन रहत लगो री॥८३॥ राग कल्याण ॥ युवति इक यमुनाजलको आइ। निरखत अंग अंगप्रति शोभारीझि कुँवरकन्हाइ॥गोरे वरन चूनरी सारी अलकैं मुख बगराइ । करनि चरिचरी चुरी बिराजति कर कंकन झलकाइ ॥ सहज शृंगार उठत यौवन तन बिधिसों हाथ बनाइ। सूरश्याम आये ढिग आपुन घट भरि चलि झमकाइ ॥८४॥राग गौरी॥ ग्वारि घट शिर धरि चली झमकाइ ।श्याम अचानक लट गही कहि अति कहा चली अतुराइ॥मोहनकर त्रिय मुखकी अलकैं यह उपमा अधिकाइ । मनहु सुधा शशि राहु चोरावत धरयौ ताहि हरिआइ॥कुच परसो अंकम भरिलीनी दुहुँ मन हरष बढाइ । सूर श्याम मानो अमृतघटनिको देखतहै कर लाइ ॥८५॥छाँडि देहु मेरी लट मोहन । कुच परसत पुनिपुनि सकुचत नहिं कत आई तजि गोहन ॥ युवती आनि देखिहैं काऊ कहत बंक भरि भौंहन । बार बार कह बीर दोहाई तुम मानत नहिं सोंहन ॥ यतनेहीको सौंह दिवावत मैं आयो मुख जोहन। सूरश्याम नागरि वश कीन्ही विवश चली घरिकोहन ॥८६॥राग धनाश्री॥चली भवन मन हरि हरिलीन्हों।पग द्वै जातिठिठकि फिरि हेरति जिय यह कहति कहा हरि कीन्हों॥ मारग गई भूलि जेहि आई आवतकै नहिं पावत चीन्हों।रिसकरि खीझि सुभगलट झटकति श्याम भुजनि छटकाय सु दीन्हों ॥ प्रेमसिंधुमें मगनभई त्रिय हरिके रंग भई अतिलीन्हों।सूरदास प्रभुसों चित अटक्यो आवतनहिं इत उतहि पतीन्हों ॥८७॥ राग गौरी ॥ घर गुरुजनकी सुधि जब आई। तब मारग सूझ्यो नैननि कछु जिय अपनेतियगई लजाई॥ पहुँची आय सदन ज्योंत्यों करि नेक नहीं चित टरत कन्हाई। सखी संगकी बूझन लागीं यमुनातट अतिझेर लगाई॥ औरै दशा भई कछु तेरी कहति नहीं हमसों समुझाई। कहा कहौं कहत न बनिआवै सूर श्याम मोहनी लगाई ॥ ८८ ॥ राग सोरठ ॥ कैसे जल भरन मैं जाउँ । गैल मेरी परयो सखिरी कान्ह जाको नाउँ ॥ घरते निकसत बनत नाहीं लोकलाज लजाउँ । तन इहां मन जाइ अटक्यो

नंदनंदन ठाउँ ॥ जो रहौं घर बैठिकै तौ रह्यो नाहिन जाइ। सीख तैसी देहु तुमहीं करौं कहा उपाइ ॥ जात बाहिर बनत नाहीं घरभ नेकु सुहाइ। मोहनी मोहन लगाई कहति सखिन सुनाइ ॥ लाज अरु मरजाद जीलौं करतिहौं यह सोच। जाहि बिन तन प्राण छांडे कौन बुधि यह पोच ॥ मनहिं यह परतीति आई दूरि करिहौं दोच। सूर प्रभु हिलिमिलि रहोंगी लाज डारों मोच ॥८९॥ राग गौरी ॥ सुनहु सखी री वा यमुनातट। हौं जल भरति अकेली पनघट गही श्याम मेरी लट ॥ ले गागरि शिर मारग डगरी इन पहिरे पीरे पट। देखत रूप अधिक रुचि उपजी काछ बनी किंकिनि रट ॥ फूल एक ग्वालिनिके ज्यों रन जीते फिरै महाभट। सूर लरचो गोपाल अलिंगन सफल किये कंचनघट ॥९०॥ राग आसावरी ॥ कहा कहों सखि कहत बनै नहिं नंदनँदन मेरो मन जो हरचो। मात पिता पति बंधु सकुच तजि मगनभई नहिं सिंधु तरचो ॥ अरुन अधर युग नयन रुचिर रुचि मदन मुदित मन संग लरचो। देखि दशा कुलकानि लाज सब सहजसुभाउ रह्यो सु धरचो ॥ आनँदकंद चंद मुख निशि दिन अवलोकत यह अमल परचो। सूरदास प्रभुसों मेरी गति जनु लुब्धक कर मीन तरचो ॥९१॥ रागनट ॥ मेरो हरि नागरसों मन मानो। मन मोह्यो सुंदर ब्रजनायक भली भई सब जग जानो ॥ बिसरी देह गेह सुधि बिसरी बिसरिगई कुलकी कानो। सूर आश पूजै या मनकी तब भावै भोजन पानो ॥९२॥ राग काफी ॥ मोही सांवरे सजनी मोहिं गृहबन कछु न सुहाइ। यमुन भरन जल मैं गई तहां श्याम मोहनी लाइ ॥ ओढे पीरी पावरी हो पहिरे लाल निचोल। भौंहैं काट कटीलियां मोहिं मोल लई बिन मोल ॥ मोर मुकुट शिर बिराजई हो अधर धरे सुखबेन। हरिकी मूरति माधुरी ताते लागिरहे दोउ नैन ॥ मदनमूर्तिके वश भये अब भलो बुरो कह कोइ। सूरदास प्रभुको मिलि करिकेमन एकै तन दोइ ॥९३॥ राग रामकली ॥ मेरे जिय ऐसी आनि बनी। बिन गोपाल और नहिं जानों सुनि मोसों सजनी ॥ कहा काँच संग्रहके कीने हरि जो अमोल मनी। विष सुमेर कछु काज न आवै अमृत एककनी ॥ मनवचक्रम मोहिऔर न भावै अब मेरे श्याम धनी। सूरदास स्वामीके कारण तजी जाति अपनी ॥९४॥ राग गूजरी ॥ अब दृढकरि धरी यह बानि। कहा कीजै सो नफा जेहि होय जियकी हानि ॥ लोकलज्जा कांच किरिचक श्याम कंचनखानि। कौन लीजै कौन तजिए सखि तुमहिं कहो जानि ॥ मोहिंतो नहिं और सूझत बिना मृदु मुसकानि। रंग कापै होत न्यारो हरद चूनो सानि ॥ इहै करिहौं और तजिहौं परी ऐसी बानि। सूर प्रभु पतिबरत राखै मेटिकै कुलकानि ॥९५॥

अध्याय ॥ २३ ॥ लीला यज्ञपत्नी ॥ राग बिलावल ॥ एक दिन हरि हलधर संग ग्वालन। गयेबन भीतर गोधन चारन ॥ सकल ग्वाल मिलि हरिपै आए। भूख लगी कहि वचन सुनाए ॥ हरि कह्यो यज्ञकरत तहां ब्राह्मण। जाहु उनहि ढिग भोजन मांगन ॥ ग्वाल तुरत तिनके ढिग आए। हरि हलधरके वचन सुनाए ॥ भोजन देहु भए वै भूखे। यह सुनिके ह्वैगए वै रूखे ॥ यज्ञहेतु हम करी रसोई। ग्वालन पहले देहिंनसोई ॥ ग्वालसकलहरिपैचलिआए। हरिसोंतिनकेवचनसुनाए ॥ हरि हलधरसोंहँसि कह्यो बानी। अविगतिकी गतिउन नहिंजानी ॥ तबग्वालनसोंकह्योबुझाई। त्रियन पास तुम माँगहु जाई ॥ उनके तन दृढभक्ति हमारी। मानिलेहिं वै बाततुम्हारी ॥ ग्वाल बाल तिरियनपैआए ॥ हाथ जोरिकै शीशनवाये ॥ हरि भोजनमाँग्योहै तुमसों। आज्ञादेहुकहैं सो उनसों ॥ तिनधनिभाग्य आपनो जान्यो। जीवनजन्मसफलकरि मान्यो ॥ भोजन बहुप्रकारतिन्ह दीन्हों। काहू अपने शिर धरि लीन्हों। ग्वालन सँग तुरत वै धाईं। मन अपने में हर्ष बढाईं ॥

काहू पुरुष निवारचो आइ । कहां जात है री अतुराइ॥तिनको कह्यो न कीन्हो कान । तनु तजि चली विरह अकुलान॥धन्यधन्य वै प्रेमसभागे। मिली जाइसबहिनतेआगे॥तब हरितिनसोंकहि समुझाई।सुनो त्रिया तुम काहे आई॥नारी पतिव्रत मानै जोई।चारि पदारथ पावै सोई॥ त्रियन कह्यो जग झूठि सगाई ।हम तौ हैं तुमरे शरनाई ॥ प्रभु पतिव्रत तुम करौ सदाई । तुमको इहै धर्म सुखदाई ॥ प्रभुआज्ञालै घरको आई। पुरुष करत तिनकी जु बडाई॥ धनिधनि तुम हरिदरशन पायो ।हम पढि गुनिकै सब बिसरायो ॥ ब्रह्मादिक खोजत नित जिनको । साक्षात तुम देख्यो तिनको ॥ वै हैं सकल जगतके स्वामी। और सभनके अंतर्यामी ॥ अब हम चरणशरणही आए। तब हरि उनके दोष क्षमाए॥ ग्वालन मिलि हरि भोजन कीन्हों।भाव तियनको धरिहरि लीन्हो॥ भक्ति भावसों जो हरि ध्यावै ।सो नर नारि अभयपद पावै॥ इह लीला सुनि गावै जोई । हरिकी भक्ति सूर तेहि होई ॥९६॥ यज्ञपत्नीबिचन ॥ राग बिलावल ॥ जानदे जानदे पियहौं गोपाल बोलाई । औरै प्रीति प्राणके लालच नाहिंन परत दुराई॥राखौ रोकिबाँधि दृढबंधन कैसेहु करौ जु त्रास । वह हठ अब कैसे छूटतहै जबलगि है उर सास ॥सांची कहौं कर्म मन वच करि अपने मनकी बात। देह छाँडि मिलिहौं अबहीं छिन तोहिं कैसी कुशलात॥ औसर गए बहुरि सुनि सूरज कहा कीजैगी देह। बिछुरति सहति बिरहके शूलनि झूठे सबै सनेह॥९७॥ राग सारंग॥देखनदै पियमदन-गोपालहि।हाहाहो पियपा लागतहौं जाइसुनौं बन बेनु रसालहि ॥ लकुटलिये काहेको त्रासतपतिबिन मति बिरहिनि बेहालहि ।अतिआतुर आरोधिअतिक दुखतोहिं कहा डरति न यमकालहि॥मनतौ पिय पहिलेही पहुँच्यो प्राण तहाँ चाहत चित चालहि। कहि तू अपने स्वारथसुखको रोकिकहा करिहै खल खालहि॥लेहुसँभारिसुखेह देहकी को राखै इतने जंजालहि।सूर सकल सखियनते आगे अबहीं मूढ मिलतिनँदलालहि।९८।राग सारंग।देखनदे बृंदाबनचंदहि।हाहा कंतमानि बिनती यह कुल अभिमान छांडि मतिमंदहि॥कहि क्यों भूलि धरतजिय औरै जानत नहिं पावन नँदनँदहि। दरशन पाइ आइहौं अबहीं करन सकल तेरे दुखद्वंदहि॥ शठसमुझैयहुसमुझत नाहिंन खोलत नहीं कपटके फंदहि। देह छोडि प्राणनि भई प्रापति सूर सु प्रभु आनँदनिधिकंदहि॥९९ ॥राग कल्याण ॥रति बाढी गोपालसों ।हाहा हरिलौं जानदेहु प्रभु पद परसतिहौं भालसों ॥ संगकी सखी श्यामसन्मुख भईं मोहिं परी पशुपालसों । परवश देह नेह अंतरगति क्यों मिलौं नयनविशालसों ॥ शठ हठ करि तूही पछितैहै इहै भेट तोहिं बालसों । सूरदास गोपी तनु तजिकै तनमय भइ नँद-लालसों ॥१००॥राग सारंग॥ पिय जनि रोकहु अब जानदे ।हौं हरिविरह जरै जाचतिहौं इतनी बात मोहिं दान दै ॥ बैन सुनौं विहरत बन देखौं इह सुख हृदय सिरान दै । पुनि जो रुचै सोई तू की-जै साँच कहतिहौं आन दै॥ जो कछु कपट किए याचतिहौं सुनहि कथा हित कान दै । मन क्रम वचन सूर अपनो प्रण राखौंगी तन मन प्रान दै॥१॥राग बिलावल ॥ हरि देखनकी साध भरी । जान न दई श्याम सुंदरपै सुनु सोई तैं पोच करी । कुलअभिमान हटकि हठि राख्यो तैं जियमें कछु और धरी। यज्ञपुरुष तजि करत यज्ञविधि तामें कहि कछु चाँड सरी॥ कहं लगि समुझाऊँ सूरज सुनि जाति मिलनकी औधि टरी।लेहु सँभारि देहपिय अपनी बिन प्राणन सब सौंज धरी॥२॥ हरिहि मिलन काहेको फेरी ।देखौं बदन जाइ श्रीपतिको जानदेहु हौं ह्वहौं चेरी ॥पालागौं छांडहु अब अंचल बारबार बिनती करौं तेरी।तिरछो करम भयो पूरबको पीतम भयो पाँइकी बेरी।इहलै देह मारु शिर अपने जासों कहत कंत तुम मेरी।सूरदास सो गई अगमनै सब सखियनसों हरि-

मुख हेरी॥३॥ जानदे श्यामसुंदरलौं आजु। सुनि हो कंत लोकलाजनते बिगरतुहै सब काजु॥ राखो रोंकि पाँइ बंधन कै रोको अरुजलनाजु॥ हौं तो तुरतै मिलौंगी हरिको तूघरबैठेगाजु॥ चितवत हुती झरोखे ठाढी किये मिलनको साजु। सूरदास तनु त्यागि छिनकमें तज्यो कंतको राजु॥४॥ अध्याय॥२४॥ गोवर्धनपूजा॥ बिलावल॥ नंदमहरसों कहति यशोदा सुरपतिकी पूजा बिसराई। जाकी कृपा बसत ब्रज भीतर जाकी दीनी भई बडाई॥ जाकी कृपा दूध दधि पूरन सहस मथानी मथति सदाई। जाकी कृपा अन्न धन मेरे जाकी कृपा नवौ निधि आई॥ जिनकी कृपा पुत्र भयो मेरे कुशलरहौ बलरामकन्हाई। सूर नंदसों कहति यशोदा दिन आए अब करहु चँडाई॥५॥ राग गौरी॥ एई हैं कुलदेव हमारे। काहूनहीं और हम जानति गोधनहैं व्रजके रखवारे॥ दीपमालिकाके दिन पाँचेक गोपन कहौ बुलाई। बलिसामग्री करैं चँडाई अबहीं कहौ सुनाई॥ लई बुलाइ महरि महरानी सुनतहि आईं धाई। नंदघरनि तब कहति सखिनसों कत हौ रही भुलाई॥ भूली कहा कहौ सो हमसों कहति कहा डरपाई। सूरदास सुरपतिकी पूजा तुम सबही बिसराई॥६॥ चौंकि परीं सब गोकुल नारि। भली कही सबही सुधि भूली तुमहिं करी सुधि भारि॥ कह्यो महरिसों करौ चँडाई हम अपने घर जाति। तुमहूं करौ भोगसामग्री कुलदेवता अमाति॥ यशुमति कह्यो अकेली हौं मैं तुमहु संग मुहिं दीजौ। सूर हँसति व्रजनारि महरिसों ए हैं साँचु पतीजौ॥७॥ राग कल्याण॥ कही मोहिं भली कीनी महरि। राजकाजहि रहत डोलत लोभहीकी लहरि॥ क्षमा कीजै मोहिं हौं प्रभु तुमहिं गयो भुलाइ। ग्वालसों कहि तुरत पठयो ल्याउ महरि बुलाइ॥ नंद कह्यो उपनंद व्रजके अरु महर वृषभान। अबहिं जाइबुलाइआनउ करत दिन अनुमान॥ आइगए दिन अबहि नेरे करत मनइह ज्ञान। सूर नंद बिनयकरत कर जोरि सुरपति ध्यान॥ ८॥ राग बिलावल॥ नंदमहर उपनंद बुलाए। आदर करि बैठनको दीनो महरमहर मिलि शीश नवाए॥ मनहींमन सब सोच करतहैं कंसनृपति कछु मांगिपठाए। राजअंशधन जो कछु उनको बिनुमाँग सो हम देआए॥ बूझत महर बात नँदमहरहि कौन काज हमसबनि बुलाए। सूर नंद यह कहि गोपनसों सुरपतिपूजाके दिन आए॥ ९॥ हँसत गोप कहि नंदमहरसों भली भई यह बात सुनाई। हमहिं सबनि तुम बोलिपठाए अपने जिय सब गए डराई॥ काहेको डरपे हम बोलत हँसन कहत बातैं नँदराई। बडो सनेह कियो हम तुमको व्रजवासी हम तुम सब भाई॥ करो विचार इन्द्रपूजाको जो चाहो सो लेहु मँगाई। बरषदिवसको दिवस हमारो घरघर नेवज करौ चँडाई॥ अन्नकूट विधि करत लोग सब नेमसहित करिकरि पकवान्ह। महरि जोरि कर बिनय इन्द्रसों सूर अमरकरि कीजै कान्ह॥१०॥ गावत मंगलचार महरघर। यशुमति भोजन करति चँडाई नेवज करिकरि धरति श्यामडर॥ देखे रहौ न छुवै कन्हैया कह जानै वह देवकाज पर। और नहीं कुलदेव हमारे कै गोधन कै वै सुरपतिवर॥ करति बिनय करजोरि यशोदा कान्हहि कृपा करौ करुणाकर। और देव तुमसरि कोउ नाहीं सूर करौ सेवा चरणनतर॥११॥ राग सूही॥ बाजति नंदअवास बधाई बैठे खेलत द्वार आपने सातबरषके कुँवर कन्हाई॥ बैठे नंदसहित वृषभानुहि और गोप बैठे सब आई। थापे देत घरनके द्वारे गावति मंगल नारि सुहाई॥ पूजा करत इन्द्रकी जानी आए श्याम तहां अतुराई। बूझत बारबार हरि नंदहि कौनदेवकी करतपुजाई॥ इन्द्र बड कुलदेव हमारे उनते सब यह होत बडाई। सूर श्याम तुमरे हितकारण यह पूजा हमकरत सदाई॥१२॥ राग आसावरी॥ नंद कह्यो घर जाहु कन्हाई। ऐसेमेंतुम जैहो जिनि कहुँ अहो महरि

सुत लेहु बुलाई ॥ सोइ रहौ हमरे पलिकापर कहति महरि हरिसों समुझाई । बरषदिवसको महामहोत्सव को आवै को कौन सुनाई ॥ और महरढिग श्याम बैठिकै कीनो एक बिचार बनाई । सपने आजु मिल्यो मोकों इक बडो पुरुप अवतार जनाई ॥ कहनलग्यो मोसों ए बातैं पूजतहौ तुम काहि मनाई । गिरि गोवर्धन देवनको मणि सेवहु ताको भोग चढाई॥भोजन करै सबनिके आगे कहत श्याम यह मन उपजाई । सूरदास गोपन आगे यह लीला कहिकहि प्रगट सुनाई॥१३॥ राग धनाश्री सुनी ग्वाल यह कहत कन्हाई । सुरपतिकी पूजाको मेटत गोवर्धनकी करत बडाई ॥ फैलिगई यह बात घरनि घर हरि कह जानै देवपुजाई । हलधर कहत सुनौ ब्रजवासी यह महिमा तुम काहु न पाई ॥कोउकोउ कहत करौ अब ऐसोइ कोउ यह कहत कहे को भाई । सूरदास कोउ सुनि सुख पावत कोउ बरजत सुरपतिहि डराई ॥ १४ ॥ मेरो कह्यो सत्य कै जानौ । जो चाहौ ब्रजकी कुशलाई तौ गोवर्धन मानौ॥दूध दही तुम कितनो लैहौ गोसुत बढैं अनेक । कहा पूजि सुरपतिको पावै छांडिदे यह टेक ॥ मुँहमांगे फल जो तुम पावहु तौ तुम मानहु मोहि । सूरदास प्रभु कहत ग्वालसों सत्य वचन कहिदोहि॥१५ ॥छांडि-देहु सुरपतिकी पूजा।कान्ह कह्यो गिरि गोवर्धनते और देव नहिं दूजा॥गोपनि सत्य मानि यह लीनी बडे देव गिरिराजा । मोहिं छांडि पर्वत पूजतहैं गर्व कियो सुरराजा ॥ पर्वतसहित धोइ ब्रज डारौं देउँ समुद्र बहाई । मेरी बलि औरहि लै पर्वत इनकी करौं सजाई ॥ राखौं नहीं इन्हें भूतलमें गोकुल देउँ बुडाई । सूरदास प्रभु जाके रक्षक संगहि संग रहाई॥ १६ ॥राग बिलावल॥ गोकुलको कुल देवता श्रीगिरिधर लाल । कमलनयन घन साँवरो वपु बाहु विशाल ॥ हलधर ठाढ कहतहैं हरिजूके ख्याल। करता हरता आपुही आपुहि प्रतिपाल ॥ वेगि करौ मेरो कह्यो पकवान रसाल । वह मघवा बलि लेतुहै नित करिकरि गाल॥ गिरि गोवर्धन पूजिये जीवन गोपाल। जाके दीने बाढहीं गैया गण जाल ॥ सब मिलि भोजन करतहैं जहँ तहँ प-शुपाल। सूर सुरहि डरपत रहै जिय जिय प्रति बाल ॥ १७ ॥राग सारंग ॥ तात गोवर्धन पूजहु जाय । मधु मेवा पकवान मिठाई व्यंजन बहुत बनाय ॥ यहि पर्वततृण ललित मनोहर सदा चरैं सुखगाय। कान्ह कहो सोइ कीजिये जैसेमघवाजाइरिसाय॥ भरि भरि शकटचलेगिरि-सन्मुख अपनेअपने चाय।सूरदास प्रभुअपबशभोगीधरिस्वरूपहरिराय ॥ १८॥राग बिलावल॥ब्रज घरघर अति होत कोलाहल। ग्वाल फिरत उमँगे जहँ तहँ सब अति आनंद भरे जु उमाहल ॥ मिलत परस्पर अंकम दैदै शकटनि भोजन साजत । दधि लवनी मधु माट धरत लै राम श्याम सँग राजत ॥ मंदिरते लै धरत अजिरपर षटरसकी जिवनार । डालन भरि अरु कलश नए भरि जोरतहैं परकार ॥ सहस शकट मिष्टान्न अन्न बहु नंदमहर घरहीको । सूर चले सब लै घरघरते संग सुवन नँदजीको ॥ राग नट ॥ अतिआनँद ब्रजबासी लोग । भाँतिभाँति पकवान शकट भरि लैलै चलेछहों रस भोग ॥तीनि लोकको ठाकुर संगहि तासों कहत सखा हमयोग। आवत जात डगर नहिं पावत गोवर्धनपूजा संयोग॥ कोउ पहुँचे कोउ रेंगत मगमें कोउ घरमेंते निकसे नाहिं । कोउ पहुँचाइ शकट घर आवत कोउ धरतभोजन लैजाहिं॥ मारगमें कोउनिर्तत आवत कोउ गावत अपने रसमाहिं। सूर श्यामको यशुमति टेरति बहुत भीर है हरि न भुलाहिं॥ १९ ॥ राग कान्हरो ॥ शकट साजि सब ग्वाल चले गिरिगोवर्धन पूजाकेकाज । घरघरते मिष्टान्न चले लै भाँति भाँति बहु बाजन बाज॥अतिआनंदभरे गुण गावत उमडे फिरत अहीर। पैंडो नहिं पाय।

तहँ कोऊ व्रजबासिनकी भीर ॥ एक चले आवत व्रजतनको एक व्रजते बनकाज । सूरदास तहँ श्याम सबनिको देखियतहै शिरताज॥१२०॥राग नटनारायण॥चलीं घरघरनिते व्रजनारि।मनौं इंद्रवधून पंगति शोभा लागति भारि॥पहिरि सारि सुरंग पँचरँग छदश करि शृंगारि। वहै इच्छा सबनिके मन श्यामरूप निहारि ॥ ललिता चंद्रावली सहित राधा सँग कीरति महतारि । चले पूजा करन गिरिकी सूर सँग नर नारि ॥ २१ ॥ बहुत जुरे व्रजबासी लोग । सुरपतिपूजा मेटि गोवर्धन कीनो यह संयोग॥योजन बीस एक अरु अगरो डेरा इहि अनुमान । व्रजबासी नर नारि अंत नहिं मानो सिंधुसमान॥ इक आवत व्रजते इतहीको इक इतते व्रज जात।नंद लिए तब ग्वाल सूर प्रभु आइ गए तहां प्रात ॥२२ ॥राग आसावरी॥ नंद करत गिरिकी पूजाविधि । भोजन सब लै धरे छहों रस कान्हसंग अष्टौ सिधि॥ लैलै आवत ग्वाल घरनिते भोजन बहुतप्रकार।व्यंजन देखि बहुत सुख पावत तुरत करौ जिवनार ॥ जो हरि कहत करत सोई विधि पूजाकी बहु भांति ॥ माखन दधि पय तक्र धरत लै जोरिजोरि सब पांति॥को बरनै नानाविधि व्यंजन जे बनए नँदराइ। सूर श्यामकी लीला अद्भुत वरणै नहिं मुखचारि॥२४॥राग नटनारायण॥विप्र बुलाइ लिये नँदराइ । प्रथमअरंभ यज्ञको कीनो उठे वेदध्वनि गाइ ॥ गोवर्धनशिर तिलक बंदियो मेटि इंद्रठकुराइ । अन्नकूट ऐसो रचि राख्यो गिरिकी उपमा पाइ॥भाँतिभाँति व्यंजन परसाए कापै वरण्यो जाइ। सूर श्यामको कहत ग्वाल गिरि जेंवहिं कहौ बुझाइ॥२४॥राग बिलावल॥इन्द्र सोचकरि मनहिं आपने चक्रत पुनिपुनि बुद्धि विचारत।कहा करत देखौं इनको मैं कौन बिलंबु लगत पुनि मारत॥अब ए करैं आपने मन सुख मोको बनै सम्हारे । तबलौं रहौं पूजि निवरैं ये बचिहैंबैर हमारे ॥इतनो सुख इनके कर रैहै दुख है बहुत अगाध । सूरदास सुरपतिकी वाणी झूठी मनकी साध ॥२५॥ राग गौरी ॥ चढि विमान सुरगण नभ देखता करत श्याम नूतन यह फिरिफिरि गिरि गोवर्धन पेखत ॥थकित भए सब जहँ तहँ मुनिजन ठौरठौर नर नारि । चितरहे सब श्यामवदन तन गति मति सुरति बिसारि॥पूजा मेटि इंद्रकीपूजत गिरिगोवर्धनराज। सूरदास सुरपतिगर्वितभयो मैं देवन शिरताज॥ २६ ॥राग केदारो ॥कहत कान्ह नँदबाबा आवहु। भोजन परसि धरे सब आगे प्रेमसहित गिरिराज मनावहु ॥ और नंद उपनंद बुलाए कह्यो सबनिसों भोग लगावहु। सपने-में देखो यहि मूरति यहै रूप धरि ध्यान मनाव ॥इकमन इकचित करि अर्पन करौ प्रगट देव तुम दरशन पावहु।सूर श्याम कहि प्रगट सबनिसों अपने कर लैलै जु जिमावहु॥ २७॥ बिनती करत सकल अहीर । शकट भरिभरि ग्वाल लैलै शिखर डारत क्षीर॥चल्यो बहि चहुँपासते पय सुरसरी जल टारि। वसन भूषन लै चढाए भीर अति नर नारि। मूंदि लोचन भोगअर्प्यो प्रेमसों रुचि भारि॥सबनि देखी प्रगट मूरति सहसभुजापसारि॥रुचिसहित गिरि सबनिआगे करनिलैलैखाइ। नंदसुतमहिमा अगोचर सूर क्यों कहै गाइ ॥ २८ ॥ राग नट ॥गिरिवर श्यामकी अनुहारि।करत भोजन अति अधिकई भुजा सहस पसारि॥नंदको कर गहे ठाढे यहै गिरिको रूप।सखी ललिता राधिकासों कहति देखि स्वरूप॥यहै कुंडल यहै माला यहै पीत पिछौरि । शिखरशोभा श्यामकी छवि श्यामछवि गिरि जोरि॥नारि बदरौला रही वृषभानुघर रखवारि। तहांते उहि भोग अर्पेउ लियो भुजा पसारि ॥ राधिका छवि देखि भूली श्याम निरखी ताहि ।सूर प्रभुवश भई प्यारी कोर लोचन चाहि॥२९॥धनाश्री॥देखहु री हरि भोजन खात ॥ सहसभुजाधरि उत जेंवतहैं इतहिकहत गोपनिसों बात॥ ललिता कहत देखिहो राधा जो तेरे मन बात समाइ।धन्यधन्य सब गोकुलबासी

संग रहत त्रिभुवनके राई ॥ जेंवत देखि नंद सुख पायो अति आनँद गोकुल नर नारी। सूरदास स्वामी सुखसागर गुण आगर नागर दैतारी॥३०॥राग गौरी॥इह लीला सब करत कन्हाई।उत जेंवत गिरि गोवर्धनसंग इत राधासों प्रीति लगाई ॥ इतगोपनसों कहत जिमावहु उत आपुहि जेंवत मन लाई। आगे धरे छवौं रस व्यंजन बदरौलाको लियो मँगाई ॥ अमर बिमान चढे सुख देखत जय ध्वनि करि सुमननि बरषाई। सूर श्याम सबके सुखदाता भक्तहेतु अवतार सदाई ॥३१॥ गोपनिसों यह कहत कन्हाई । जो मैं कहत रह्यो भयो सोई सपनंतरकी प्रगट बताई ॥ जो मांग्यो चाहौ सो मांगौ पावहुगे जो जा मन आई । कहत नंद सब तुमही दीनों मांगतहौं हरिकी कुशलाई ॥ करजोरे नँद आगे ठाढे गोवर्धनकी करत बडाई।ऐसे देव कहूं नहिं देखे सहसभुजा धरि खात मिठाई॥ सदा तुम्हारी सेवा करिहौं और देव नहिं करौं पुजाई । सूर श्यामको नीके राखहु कहत महर ये हलधर भाई ॥३२॥ अपने अपने टोल कहत ब्रजबासी आई । भावभक्ति लै चलौ सुरपतिको आसी आई ॥ शरदकाल ऋतु जानि दीपमालिका बनाई। गोपनके उनमाद फिरत उनमदे कन्हाई ॥ घर घर थापे दीजिये घर घर मंगलचार। सात वर्षको सांवरो खेलत नंददुआर ॥१॥२॥बैठि नंद उपनंद बोलि वृषभानु पठाए। सुरपति पूजा देखि जानि तहँ गोविंद आए ॥ बारबार हाहा करहिं कहि बाबा यह बात। घरघर भोजन होतहै कौन देवकी जात ॥ ॥ ३ ॥ श्याम तुम्हारी कुशल जानि एक मंत्र उपैहौं । पटरस भोजन साजि भोग सुरपतिको दैहौं ॥ नंद कह्यो चुचुकारिकै जाइ दमोदर सोइ । वर्षदिवसको दिवस है महामहोत्सव होइ॥ ४॥ हरिबोले सब गोप मंत्र बहुरच्यो फिरि कीनो॥ एक पुरुष मोहि आइ आजु सपनो निशि दीनो॥ सब देवनको देवता गिरिगोवर्धन राजु । ताहि भोगु किनि दीजिये सुरपतिको कह काजु॥ ५ ॥ बाढैं गोसुत गाइ दूध दधिको कहालेखो।यह परचा बिदमान नैन अपने किन देखो॥तौ देखत बलि खाइगो मुँहमाँगे फलदेइ।गोपकुशलजोचाहिये गिरिगोवर्धन सेइ॥६॥दिवस दिवारी प्रातही सब मिलि पूजन जाइ।नंद प्रतीति न मानहू तुम देखत बलि खाइ॥गोपन कर्‌यो विचार शकट प्रति सबही साजे। बहुबिधिके पकवान जहांतहँ बाजन बाजे॥७॥ एक घाटते उवटिचल एकनदी सुरभीर। एक न पैंडो पावहीं उमँड फिरहिं अहीर॥इक घरते उठि चले एक घरको फिरि जाहीं। गावत गुण गोपाल ग्वाल उमँगे न समाहीं ॥८॥ गोपनको सागर भयो गिरि भयो मंदरचार । रतन भई सब गोपिका श्याम बिलोवनहार॥ ब्रज चौरासी कोश परे गोपनके डेरा। लावें चौवन कोश आजु ब्रजवासिन घेरा ॥ ९ ॥ सबहीके मन साँवलो देखौं सबनि मझारि।कौतुक देखन देवता आए लोक बिसारि॥लीने विप्र बुलाइ यज्ञ आरंभन कीनो। सुरपतिपूजा मेटि भोग गोवर्धन दीनो ॥ १० ॥ प्रथम दूध अन्हवाइ बहुरि गंगाजल डारे। बडो देवता जानि कान्हको मतो बिचारे ॥ जैसे बने गिरिराजजू तैसो उनको कोट। मगन भए पूजा करें नर नारि बडछोट॥११॥ सहस भुजा उर धरे करै भोजन अधिकाई । नख शिखलौं पर्यंत मनो दूसरो कन्हाई ॥ राधासोंललिताकहै तेरे हियन समाइ।गहे अंगुरियातानकीढोंटा भोजनखाइ॥१२॥पीतरुमाल्यो श्वेत कंठ मोतिनकी माला । भूषण भुजा अनूप झलमलति नैन विशाला ॥ श्यामकि शोभा गिरि बन्यो गिरिकी शोभा श्याम। जैसे पर्वत भातुको सँग भैया बलराम ॥ १३ ॥ जैसिय कनकपुरी जु दिव्य रतननिसों छाई। बलि दीनी परभात छाँह पूरब चलि आई॥चहुंओर चक्रा धरे चंदहि पटतर सोइ। ठौर ठौर वेदीरची बहुविधि पूजा होइ॥ १४॥ जहांतहां दधिधर्‌यो

कहौं कहा उज्ज्वलताई। उदधि शिखर ह्वै रह्यो भातमें देह छपाई ॥ बदरौला वृषभानुके एक बिलोवन हारि। ताकी बलि वहि देवता लीन्ही भुजा पसारि॥ १५॥ लै सब भोजन अरपि अरपि गोपन कर जोरे। अगणित कीने स्वाद दास बरणे कछु थोरे ॥ यहि विधि पूजा पूजिकै गोविंद पूंछो जाइ। कान्ह कह्यो हँसि सूरसों लीला सरस बनाइ॥१६॥राग गौरी॥ श्याम कहत पूजा गिरिमानी। जो तुम भक्तिभावसों अर्प्यो देवराज सब जानी॥ तुम देखत भोजन सब कीनो अब तुम मोहिं पत्याने। बडो देव गिरिराज गोवर्धन इनैं रहो तुम माने ॥ सेवा भली करी तुम मेरी देव कही यह बानी। सूर नंद मुखचूमत हरिको यह पूजा तुम ठानी ॥ २३॥ और कछू मांगो नँद हमसों। जो मांगौ सो देउँ तुरतही यहै कहत गोपनसों॥ बल मोहन दोऊ सुत तेरे कुशल सदा ये रहिहैं। इनको कह्यो करत तुम रहियो जब जोई ये कहिहैं॥ सेवा बहुत करी तुम मेरी अब तुमसब घर जाहू। भोग प्रसाद लेहु तुम मेरो गोप सबै मिलि खाहू॥ सपनो मैंहीं कह्यो श्यामसों करहु हमारी पूजा। सुरपति कौन बापुरो मोते और देव नहिं दूजा॥ इंद्र आइ बरषे जो व्रजपर तुम जिनि जाहु डराई। सुनहु सूर सुत कान्ह तुम्हारो कहिहैं मोहि सुनाई॥२४॥राग सारंग॥ भली करी पूजा तुम मेरी। बहुत भाव करि भोजन अर्प्यो इह सब मानिलई मैं तेरी॥ सहसभुजा धरि भोजन कीनों तुम देखत विदमान। मोहिं जानतहै कुँवर कन्हैया यही नहीं कोउ आन॥ पूजासबकीमानि मैं लीनी जाहु घरनिव्रजलोग। सूर श्याम अपने कर लीने बांटत जूठनि भोग ॥२५॥रागबिलावल॥ विनती करत नंद कर जोरे पूजा कह हम जानैं नाथ। हम हैं जीव सदा मायाके दरश दियो हम किए सनाथ॥ महापतितमैंतुम पावन प्रभु शरण तुम्हारीआयौ तात। तुमसे देव और नहिं दूजो कोटि ब्रह्मांड रोमप्रति गात॥ तुम दाता अरु तुमहिं भोक्ता हरता करता तुमहीं सार॥ सूर कहा हम भोग लगायो तुमहीं भुलैदियो संसार ॥ २६ ॥ यह पूजा मोहिं कान्ह बताई। भूल्योफिरत द्वार देवनिके त्रिभुवनपति तुमको बिसराई॥ आपुहि कृपा करी स्वप्नंतर श्यामहिं दरश दियो तुम आई। ऐसे प्रभु कृपालु करुणामय बालककी अति करी बडाई॥ गिरिपाँवन लै हरिको पारत हलधरको पांयन लै नाई। सूर श्याम बलराम तुम्हारे इनको कृपा करो गिरिराई॥२७॥ ग्वाल कहत धनिधन्यकन्हैया। बडो देवता प्रगट बतायो यह कहिकहि सब लेत बलैया॥ धन्यधन्य गिरिराजनके मणि तुमसम आन न दूजा। तुम लायक कछु नाहिं हमारे को जानै तुमपूजा॥ गोप सबै मिलि कहत श्यामसों जो कछु कह्यो सो कीनो। सूर श्याम कहिकहियह बाणी देव मानि सुखलीनो॥ २८॥राग गौडमलार॥ गोपनँदउपनंद वृषभानुआए विनय सब करत गिरिराजसों जोरिकर गए तनुपाप तुव दरश पाए॥ देवता बडो तुम प्रगट दरशन दियो प्रकट भोजनकियोसबनिदेख्यो। प्रकट वाणीकही राजगिरितुमसहीऔरनहिंतिहुँभुवनकहूँ पेख्यो॥ हँसत हरिमनहिमन तकत गिरिराजतन देवपरसनभए करोकाजा। सूरप्रभु प्रगट लीलाकही सबनिसों चले घरघरनि अपने समाजा ॥२९॥ देखि थकित गण गंधर्व सुरमुनि। धन्यनंदकोसुकृत पुराणन धन्य कही कहि जैजैजै धुनि॥ धन्यधन्य गोवर्धन पर्वत करत प्रशंसा सुरमुनि पुनिपुनि। आपुहिखात कहतहैगिरिकोयहमहिमादेखी न कहूंसुनि॥ यहैकहत अपनेलोकनि गएधनिव्रजवासी वशकीनों उनि। सूर श्यामधनिधनि व्रज विहरत धन्यधन्य सबकहतहैंगुनिगुनि ९४०॥राग नटनारायणी चले व्रजघरनिको नरनारि। इंद्रकी पूजामिटाइ तिलक गिरिको सारि॥ पुलकअँग न समातउरमें महरमहरि समाज। अब बडे हम देव पाए गिरिगोवर्धनराज॥ इनहिंतेव्रज चैन रहिहै मांगि भोजन खात। यहै घेरा चलत व्रजजन सबनिमुख यह बात॥ सबै सदनन आइ पहुँचे करत केलिबिलास।

सूर प्रभु यह करीलीला इंद्र रिस परकास॥४१॥ अध्याय ॥ २५॥ इंद्रबिचार राग सारंग॥ व्रजके वासिन मो बिसरायो। भली करी बलि मेरी जो कछु सो लै सब पर्वतहि जिमायो॥मोसों गर्व कियो लघु प्राणी ना जानिये कहा मन आयो। त्रिदशकोटि अमरनको नायक जानिबूझि इन मोहिं भुलायो॥ अब गोपन भूतल नहिं राखौं मेरी बलि मोको न चढायो। सुनहु सूर मेरे मारत धौं पर्वत कैसे होत सहायो ॥ ४२ ॥ राग सोरठ ॥ प्रथमहि देउँ गिरिहि बहाइ । बज्रघातनि करौं चूरन देउँ धरणि मिलाइ॥ मेरी इन महिमा न जानी प्रगट देउँ दिखाय । जलबरषि व्रज धोइ डारौं लोग देउँ बहाइ॥ खात खेलत रहे नीके करि उपाधि बनाइ॥ बरद दिवस मोहिं देत पूजा दई सोउ मिटाइ ॥ रिस सहित सुरराज लीन्हें प्रबल मेघ बुलाइ। सूर सुरपति कहत पुनिपुनि परौ व्रजपर धाइ ॥ ४३ ॥ राग मेघमलार ॥सुनत मेघवर्तक साजि सैन लै आए। जलवर्त वारिवर्त पवनवर्त बज्रवर्त आगिवर्तक जलद संग ल्याए ॥ घहरात तररात गररात हहरात झहरात पररात माथ नाए। कौन ऐसो काज बोले हम सुरराज प्रलयके साज हमको बुलाए॥ बरषदिन संयोग देत मोको भोग क्षुद्रमति व्रज-लोग गर्व कीनो । मोहिं गए बिसराइ पूज्यो गिरिवर जाइ व्रजपर धाइ आयसु ये दीनो ॥ कितक व्रजके लोग रिस करत किहिं योग गिरि लियो भोग फल तुरत पैहैं। सूर सुरपति सुन्यो बयो जैसो लुन्यो प्रभु कहा गुन्यो गिरिसहित बैहैं ॥४४ राग मलार॥ बिनतीसुनहुदेवमघवापति। कितिक बात गोकुल बजवासी बारबार रिस करत जाहि अति ॥ आपुन बैठि देखियो कौतुक बहुतै आयसु दीनो। छिनमें बरषि प्रलयजल पाटौं खोजु रहै नहिं चीनो ॥ महाप्रलय हमरे जल बरषे गगन रहे भरि छाइ। अक्षय वृक्ष बट बढतु निरंतर कहा व्रज गोकुल गाइ ॥ चले मेघ माथे करि धरिकै मनमें क्रोध बढाइ। उमडत चले इंद्रके पायक सूर गगन रहे छाइ ॥ ४५ ॥ रागगौडमलार॥ मेघदल प्रबल व्रजलोग देखैं। चकित जहँ तहँ भए निरखि बादर नए ग्वाल गोपाल डरि गगनपेखैं॥ऐसे बादर सजल करतअति महाबल चलत घहरात करि अंधकाला। चकृत भए नंद सब महर चकृत भए चकृत नरनारि हरि करत ख्याला॥घटा घनघोर घहरात अररात दररात सररात व्रजलोग डरपैं।तडित आघात तररात उतपात सुनि नरनारि सकुचितनु प्राणअरपैं ॥ कहा चाहत हौन भई न कबहूं जौन कबहुं आँगनभौन बिकलडोलैं। मेटिपूजाइंद्र नंदसुतगोबिंदसूरप्रभु करैआनँदकलोलैं॥४६॥सैनसाजि व्रजपर चढिधावहिं।प्रथमबहाइदेउँ गोवर्धनता पाछेव्रज खोदि बहावहिं॥अहिरन करी अवज्ञा प्रभुकी सो फल उनकहँ तुरत देखावहि।इंद्रहि पेलिकरी गिरिपूजा सलिल वरषि व्रजनाउँ मिटावहिं॥ बलसमेतनिशिवासरबरषहुँ गोकुलबोरिपतालपठावहिं।सूरदास सुरपति आज्ञा यह भूलत कतहूं रहन न पावहिं॥४७॥ रागमेघमलार॥ बादर घुमडि उमडि आए व्रजपर वर्षत कारे धूमरे घटा अतिही जल। चपला अति चमचमाति व्रजजन सब डर डगतटगत शिशु पिता मात व्रज गलबल॥गर्जत ध्वनि प्रलयकाल गोकुल भयो अंधकार चकृत भए ग्वाल बाल घहरत नभ करत चहल।पूजामेटि गोपाल इंद्र करत इहै हाल सूरश्याम राखहु अब गिरिवर बल॥४८॥राग गौडमलार गिरिपर बरषनआए बादर।मेघवर्त जलवर्तसैन सजि आये लैलै आदर॥ सलिल अखंड धार धर टूटत कियो इंद्र मन सादर । मेघ परस्पर यहै कहत हैं धोइ करहु गिरि खादर।।देखि देखि डरपत व्रजवासी अतिहि भए मनकादर। यहै कहत व्रज कौन उबारे सुरपति किए निरादर ॥सूर श्याम देखे गिरि अपने मेघनि कीनो दादर। देव आपनो नहीं सँभारत करत इंद्रसों ठादर ॥४९॥ राग मलार॥गए बितताइ व्रज नरनारि।धरत संतत धाम बासन नाहिं

सुरति सम्हारि ॥ पूजि आए गिरि गोबर्धन देति पुरुषनि गारि । आपनो कुलदेव सुरपतिधरयो ताहि बिसारि ॥ दियो फल यह गिरि गोबर्धन लेहु गोद पसारि।सूर कौन सम्हारिलैहै चढयो इंद्र प्रचारि ॥९५०॥ राग सोरठ ॥व्रजके लोग फिरत बितताने। गैयनि लै बन ग्वाल गए ते धाए आवत व्रजहि पराने ॥ कोउ चितवत नभतन चक्रत ह्वै कोउ गिरिपरत धरनि अकुलाने । कोउ लै ओट रहत वृक्षनकी अंधधुंध दिशि विदिशि भुलाने ॥ कोउ पहुँचे जैसे तैसे गृह कोउ ढूंढत गृह नहिं पहिचाने । सूरदास गोबर्धन पूजा कीनेकर फल लेहु बिहाने ॥५१ ॥ राग नाट॥ तरपत नभ डरपत व्रज लोग । सुरपतिकी पूजा बिसराई लै दीनो पर्वत को भोग ॥ नंदसुवन यह बुधि उपजाई कौन देव कह्यो पर्वतयोग।सूरदास गिरि बडो देवता प्रगट होइ ऐसेसंयोग॥५२॥ व्रजनरनारि नंद यशुमतिसों कहत श्याम ए काज करे। कुलदेवता हमारे सुरपति तिनको सब मिलिमेटिधरे॥ इंद्रहि मेटि गोवर्धन थाप्यो उनकी पूजा कहा सरे। सैंतत फिरत जहाँ तहँ बासन लरिकनु लैलै गोद भरे ॥ को करिलेइ सहाइ हमारो प्रलयकालके मेघ अरे । सूरदास प्रभु कहत नारि नर क्यों सुरपति पूजा बिसरे ॥ ५३ ॥ राग बिलावल ॥ राखिलेहु गोकुलके नायक।भीजत ग्वाल गाइ गोसुत सब विषम बूँद लागत जनु सायक॥बरषत मुसलधार सैनापति महामेघ मघवाके पायक । तुम बिनु ऐसो कौन नंदसुत यह दुख दुसह मिटावन लायक ॥ अघमरदन बकवदन-विदारन बकी विनाशन सब सुखदायक । सूरदास प्रभु ताकी यह गति जाके तुमसे सदा सहायक ॥ ५४ ॥ अध्याय ॥ २६॥ तथा ॥२७॥ मलार ॥शरण राखिलेहो नंदताता । घटा आई गरजि युवति गई मन लरजि बीजु चमकति तरजि डरत गाता ॥ और कोऊ नहीं तुम त्रिभुवन धनी बिकल ह्वैके कही तुमहिं नाता। सूर प्रभु सुनि हँसत प्रीति उरमें बसत इंद्रको कसत हरि जगतधाता ॥५५॥रागबिलावल॥राखिलेहु अब नंदकिशोर।तुम जु इंद्रकी मेटी पूजा बरषतहै अति जोर ॥ व्रजबासी तुम तन चितवतहैं ज्यों करि चंद्र चकोर।जनि जिय डरौ नैन जनि मूँदो धरिहौं नखकी कोर॥ करि अभिमान इंद्रझरिलायो करत घटा घनघोर।सूरश्याम कहि तुमको राखौं बूँद न आवै छोर॥५६॥रागमलार॥माधवजू कांपत डरत हियो । दामिनि चाप बूंद सायक मनो द्वै योधा लै संग॥ह्वै गयो सरस समीर दुहूं दिशि धनुप धुजा बहु रंग । शोभित सुभट प्रचारि पैज करि भिरत न मोरत अंग॥कहत तुम्हार कियो नँदनंदन सुरपतिको व्रत भंग । बरषत प्रलयमेघ धर अंबर डरपत गोकुल गाउँ । समरथ नाथ शरण हौं तुम बिनु और कौनपै जाउँ ॥ जो तुम अनल व्यालमुख राखे श्रीपति सुहृद सुभाइ। हमरे तौ तुमहीं चिंतामणि सब विधि दाइ उपाइ ॥ जनि डर करहु सबै मिलि आवहु या पर्वतकी छाहँ। वर्षतमें गोपाल बुलाए अभय किये दै बाहँ ॥ एक हाथ गोवर्धन राख्यो सात दिवस बलबीर। सूरदास प्रभु व्रजवासिनके ए हरता सब पीर॥५७॥ माधव मेघ घेरि कितौ आए। घरको गाय बहोरो मोहन ग्वालन टेर सुनाए॥ कारी घटा सधूम देखियति अति गति पवन चलायो । चारौं दिशा चितै किन देखौ दामिनि कौंधा लायो॥अति घन श्याम सुदेश सूर प्रभु कर गहि शैल उठायो॥ राखे सुखी सकलव्रजवासी इंद्रको कोप नवायो ॥ ५८ ॥ आजु व्रज महाघटा घन घेरो । अब व्रज राखि कान्ह इहि औसर सब चितवत मुख तेरो॥ कोटि छयानवे मेघबुलाएआनि कियोव्रजडेरो । मुसलधार टूटे चहुँदिशिते ह्वैगयो दिवस अँधेरो ॥ इतनी कहत यशोदानंदन गोवर्धन तन हेरो । कियो उपाय गिरिवर धरिबेको महिते पकरि उखेरो॥ सात दिवस जल बर्षि सिराने हारि

मानि मुख फेरो । श्रीपति कियो सहाय सूर प्रभु बूँद न आवत नेरो॥५९॥ राग मघमलार॥ गगन मेघ घहरात थहरात गात । चपला चमचमाति चमकि नभ भहरात राखिले क्यों न ब्रजनंदतात॥ सुनत करुणाबैन उठि हरि चले ऐन नैनकी सैन गिरितन निहारयो।सबनि धीरज दियो उचकि मंदर लियो कह्यो गिरिराज तुमको उबारयो॥ करजके अग्र भुज वाम गिरिवर धरयो नाम गिरिधर परयो भक्तकाजै।सूर प्रभु कहत विरजवासीनसों राखि तुमलिए गिरिराज राजै॥९६०॥ राग गौरी॥ श्याम लियो गिरिराज उठाई । धरिधीरज हरि कहत सबनिसों गिरि गोवर्धन कियो सहाई॥ नंद गोप ग्वालनके आगे देव कह्यो यह प्रगट सुनाई। काहेको व्याकुल भए डोलत रक्षा करीदेवता आई॥ सत्यवचन गिरिदेव कहतहै कान्ह लेइ मुहि कर उचकाई । सूरदास नारी नर ब्रजके कहत धन्य तुम कुवँरकन्हाई॥६१॥ राग मलार॥ वामकरधढेक्योंगिरिराज। गोपीगाइग्वाल गोसुतसबदुख बिसरयं। सुखकरत समाज॥ आनँद करत सकल गिरिवरतर दुख डारयो सबही बिसराइ। चकृत भए देखत यह लीला सबै परत हरिचरणन धाइ॥ गिरिवर टेकिरहे बायें कर दक्षिणकर लियो सखनिउठाइ। कान्ह कहत ऐसो गोवर्धन देख्यो कैसो कियो सहाइ॥ गोपबाल नंदादिक जहँलों नंद सुवन लिए निकट बुलाइ । सूरदास प्रभु कहत सबनिसों तुमहूं मिलि टेको गिरिआइ॥६२॥ गिरिजनि गिरे श्यामके करते । करत बिचार सबै ब्रजबासी भय उपजत अति डरते॥ लैलै लकुट ग्वाल सब धाए करत सहाय उठेहैं तुरते । यह अति प्रबल श्याम अति कोमल खैंकि खैंकि उर परते॥ सप्तदिवस करपरगिरि धारयो बरषि बरषि हारयो अंबरते।गोपीग्वाल नंदसुतराख्यो बरषत मेघधार जलधरते॥ यमलार्जुन दोउ सुतकुबेरके तेउउखारेजरते । सूरदासप्रभुइंद्रगवन कियो ब्रज राख्योहैवरते॥६३॥ राग मलार॥ नीके धरो नँदनंदन बलवीर।गिरिजनिपरै टरै नखते तब कौन सहैगो भीर॥ चहुँदिशि पवन झकोरत घोरत मेघघटा गंभीर । उनै उनै बरषतु गिरिऊपर धार अखंडित नीर॥ अंध-धुंध अंबरते गिरिपर मानौ परत वज्रके तीर। चमकि चमकि चपला चकचौंधति श्याम कहत मनधीर ॥ कर जोरत कुलदेव मनावत ब्रजके गोपअहीर। पय पकवानबिहान पूजिहैं लैदधिमधुघृत खीर॥ गोपी ग्वाल गाइ गोसुत सब रहैंसुखसहित शरीर। सूर श्याम गिरि धरयो वामकर मेघ भए अति सीर॥६४॥ गिरिवर नीके धरयो कन्हैया।देखतरहौ टरै जनि नखते भुजा तनकसी भैया॥ जबजब गाढ परत ब्रजलोगन तब करिलेत सहैया । जननि यशोदा कर लै चांपति अतिश्रम होति रि दैया ॥ देखत प्रगट धरयो गोवर्धन चकित भए नंदरैया। पिता देखिव्याकुलमनमोहन तब एक बुद्धि उपैया ॥ आवहु तात गहहु गोवर्धन गोपन संग लिवैया। जहां तहां सबहुन गिरि टेक्यो कान्हहि बोधदिवैया॥ श्यामकहत सब नंदगोपसों भलोकरयो उचकैया। सूरदासप्रभु अंत-र्यामी नंदहि हरष बढैया॥६५॥ गिरिवर धरयो सखा सब करते। सब मिलि ग्वाल लकुटियनि टेको अपने भुजके वरते॥ सात दिवस मूसलजल धारा बरषतुहैनिशिदिन अंबरते। अंतरिक्ष जलजात कहाँ ये क्रोधसहित फिरि बरषतझरते॥ गाइ गोप नंदादिक राख्यो बृथावृन्दसब नेकु न धरते। सूर गोपालराखि गिरिवरतर गोकुल नर नारी ब्रजघरते ॥६६॥ बरषत मघवर्त ब्रज ऊपर।मूसल धार सलिल बरषतुहै बून्द न आवत भूपर ॥ चपला चमकि चमकि चकचौंधति करति शब्द आघात। अंधाधुध पवनवर्तक घन करत फिरत उत्पात॥ निशिसम गगन भयो आच्छादित बरपिवरपि झर इंदु । ब्रजबासी सुखचैन करतहैं करगिरिवर गोविंद ॥ मेघ बरपि जल सबै बढाने विविगुण गए सिराइ । वैसोइ गिरि वैसोइ ब्रजबासी दूनो हरष बढाइ॥ सात दिवस जल बर्पि निशा दिन ब्रज

घरघर आनंद । सूरदास ब्रज राखिलियो धरि गिरिवर कर नँदनंद ॥ ६७ ॥ बादर ब्रजपर आनि अरे । तबते वाम करजपर राख्यो बहुरि फेरि घुमरे ॥ सात दिवस मूसल जलधारा सायर समुद्र भरे । नहिं परवाह नंदके ढोंटहि पूरत वेनु धरे ॥ लियो उठाइ कोपिकै गिरिवर सकल शरन उबरे। सूरदास बलिबलि चरणनकी सुरपति पाइँ परे॥ ६८॥ बरपिबरपि ब्रजतन घनहेरत। मेघवर्त्त अपनी सेनाको खीझतहै फिरि टेरत॥ कहा बरषि अबलौं तुम कीनो राखत जलहि छपाइ । मूसलधार बरषि जल पाटौ सात दिवस भए आइ ॥ रिस करिकरि गर्जत नभ वर्षत चाहत ब्रजहि बहाइ। सूर श्याम गिरि गोवर्धन धरि ब्रजजनको सुखदाइ ॥ ६९ ॥ बरपि बरषि हहरे सब बादर । ब्रजके लोगन धोइ बहावहु इंद्र हमहिं कहि आदर ॥ कहा जाइ कैहैं प्रभु आगे करिहैं बहुत निआदर । हम बर्षत पर्वत जल सोखत ब्रजवासी सब सादर ॥ पुनि रिस करत प्रलयजल बरषत कहत भए सब कादर । सूर गाइ गोसुत सब राख्यो गिरिवर धरि ब्रजनागर ॥ ९७० ॥ राग धनाश्री ॥ कहा होत जल महाप्रलयको । राख्यो सैंतिसैंति जेहि कारज बचत नहीं कहुँ पयको ॥ भुवपर एक बुन्द नहिं पहुँची निझरिगए सब मेह। बासर सात अखंडित धाराबरषत हारे देह ॥ बरुन भयो बिननीर सबनिको नाम रह्योहै बादर । सूरचले फिरि अमर-राजपर ब्रजतेभए निरादर॥ ७१ ॥ राग मलार ॥ मघवनि हारिमानि सुखफेरो। नीकेगोप बडेगोवर्धनजब नीके ब्रजहेरो॥ नीके गाइ बच्छ सब नीकेनीके बालगोपाल। नीको बन वैसी ये यमुना मनमन भयो बिहाल॥ गोकुल ब्रज बृंदावन मारग नेक नहीं जलधार । सूरदासप्रभु अगणितमहिमा कहा भयो जल सार॥ ७२॥ नटनारायण॥ मघवन जाइ कही पुकारि । दीनह्वै सुरराज आगे अस्त्र दीने डारि॥ सात दिन भरि बरषि ब्रजपर गई नेक न झार । अखंडधारा सलिल निझरो मिटी नहीं लगार॥ धरणि नेकु न बूँद पहुँच्यो हरषे ब्रजनरनारि। सूरमेघन इंद्रआगे करत यहै गुहारि॥ ७३॥ राग गौरी ॥ तुम बरषे ब्रज कुशल परचो । तुम बरषत जल महाप्रलयको यह कहि मनमन सोच परचो ॥ एक घरी जाके बरषेते गगन अच्छादित होइ। ते मघवाबिह्वल मोआगे बात कहतहैंरोइ ॥ सात दिवस जल बरषि सिराने ताते भए निरास । सूरदास सुरपति शंकित भयो सुरन बुलायो पास॥ ॥ ७४ ॥ अमरराज सब अमर बुलाए। आज्ञा सुनि घरघरते आए कछु बिलँब ना लाए ॥ कौन काज सुरराज हमारो हमको आयसु होइ । देखो मेघवर्त्तकनिकी गति ब्रजते आए रोइ ॥ गोवर्धनकी करी पुजाई मुहि डारचो बिसराइ। मेघवर्त्तजलवर्त्त पठाए आवहु ब्रजहि बहाइ॥ धार अखंडित बरषि सात दिन ब्रज पहुँची नहिं बुंद । सुरनि कही गोकुल प्रगटे हैं पूरण ब्रह्म मुकुंद॥ मोसों क्यों न कही तुम तबहीं गोकुलमें ब्रजराज। सूरदास प्रभु कृपा करहिंगे शरन चलौ दिवराज॥ ॥ ७५॥ राग सोरठ॥ शरण गए जो होइसु होई। वे करताबेई हैं हरता अबनरहौंमुखगोई॥ ब्रजअवतार कह्यो है श्रीमुख तेई करत बिहार । पूरण ब्रह्म सनातन वेई मैं भूल्यो संसार ॥ उनके आगे चाहौं पूजा ज्यों मणि दीपप्रकाश। रविआगे खद्योत उज्यारी चंदनसंग कुवास॥ कोटिइंद्र छिनहीमें राचैं छिनमें करैं बिनाश। सूर रच्योउनहींकोसुरपति मैंभूल्यो तिहि आश॥ ७६॥ रागसारंग॥ प्रगटभए ब्रज त्रिभुवनराइ । युगगुण बीति त्रिगुण बुधि व्यापी शरन चलौ सुरपति अकुलाइ॥ सपनेकोधनजागि परे ज्यों त्यों जानी अपनी ठकुराइ। कहत चल्यो यह कहा कियो मैं जगतपितासों करीढिठाइ॥ शिव बिरंचि रचि इंद्र बरुण यम लिए अमरगण संग लगाइ। बारबार शिर धुनत जातु मग कैहौं कहा बदन दिखराइ ॥ वे हैं परमकृपालु महाप्रभु रहौं शीश चरणनतर नाइ । सूरदास प्रभु पिता

मात मैं ओछी बुद्धि करी लरिकाइ॥७७॥ इंद्र शरणचले ॥ राग कान्हरो॥सुरगणसहितइंद्रब्रज आवत। धवलवरन ऐरावति देख्यो उतरि गगनते धरणि धँसावत॥ अमर शिव रवि शशि चतुरानन हय गय वसह हंस मृग जावत। धर्मराज बनराज अनल दिव शारद नारद शिवसुत भावत॥मेंढामढी मगर गुडरारो मोर आपु मन वाह गनावत।ब्रजके लोग देखि डरपे मन हरिआगे कहिकहिजु सुनावत॥ सात दिवस जलबरषि सिरान्यो आवत चल्यो ब्रजहि अत्रावत। घेग करत जहांतहँ ठाढे ब्रजबासिनको नहीं बचावत॥ दूरहिते वाहनसों उतरयो देवन सहित चल्यो शिर नावत। आइ परयो चरणनतर आतुर सूरदास प्रभु शीश उठावत॥ ७८॥ सुरपति चरण परयो गहि धाइ। युगगुण धोइ शेषगुण जान्यो शरणहि राखिलेहु शरनाइ॥ हम बिसरे तुमरी मायामें तुम बिनु नाहीं और सहाइ। शरनशरन पुनिपुनि कहिकहि मोहिं राखिराखि त्रिभुवनके राइ॥ मोते चूक परी विनुजाने मैं कीने अपराध बनाइ। तुम माता तुमहीं जगदाता तुम भ्राता अपराध क्षमाइ॥ जो बालक जननीसे बिरुझै माता ताको लेइ मनाइ। ऐसहि मोहिं करौ करुणामय सूर श्याम ज्यों सुतहितमाइ७९॥राग बिलावल॥व्याकुलदेखिइन्द्रकोश्रीपतिउभयभुजाकरिलियोउठाइ। अभय निभय कर माथे दीनो श्रीमुखवचन कह्योमुसिक्याइ॥ कहाभयो जु चढेब्रजऊपरमैं तुरतहि करिलियो सहाइ।हमको जानि नहीं तुम कीनों बिन जाने यह करी ढिठाइ॥ अब अपने जिय सोच करौ जिनि यह मेरी दीनी ठकुराइ। सूर श्याम गिरिधर सब लायक इंद्रहि कह्यो करो सुख जाइ॥१८०॥राग नट॥ सुरगण करत अस्तुति मुखनि। दरशते तनुताप खोयो मेटि अघके दुखनि॥ अंग पुलकित रोम गदगद कहत बाणी मुखनि।वामभुजकर टेकिराख्यो करज लघुके नखनि॥प्रेमके बश तुमहिं कीन्हों ग्वालबालक सखनि। योगिजन बन तपन जापन नहीं पावत मखनि॥ धन्य नँद धनि मातु यशुमति चलत जाके रुखनि। सूर प्रभुमहिमा अगोचर जाति कापै लखनि॥८१॥राग भैरव॥जय माधव गोविंद मुकुन्द हरि।कृपासिंधु कल्याण कंसअरि॥ प्रणतपाल केशव कमलापति। कृष्ण कमललोचन अनन्यगति॥ श्रीरामचन्द्र राजीवनैन वर। शरणसाधु श्रीपति सारँगधर॥ वनमाली बिट्ठल वामन बल।वासुदेव बासी ब्रजभूतल॥खरदूषण त्रिशिराशिरखंडन।चरणचिह्न दंडकभुअमंडन॥बकी बधन बकवदनबिदारन। बरुन विषाद नंद निस्तारन॥ऋषिमख तृणा तारकातारन।बनबसि तातबचन प्रतिपालन॥कालीदमन केशिकरपातन। अघ अरिष्ट धेनुक अनुघातन॥ रघुपति प्रबलपिनाक बिभंजन। जगहित जनकसुतामनरंजन॥ गोकुलपति गिरिधर गुणसागर। गोपीरमन रासरतिनागर॥करुणामय कपिकुलहितकारी। बालिविरोध कपटमृगहारी॥ गुप्त गोपकन्या व्रतपूरन।दुष्टन दुख भक्तन दुखचूरन॥रावण कुम्भकर्ण शिरछेदन।तरुवर सात एक शर बेधन॥ शंखचूड चाणूर सँहारन।शक्र कहै मोहि रक्षाकारन॥ उत्तरकृपा गीधहितकारी।दरशन दे शबरी उद्धारी॥जे पद सदा शंभुहितकारी।जे पद परसि सुरसरी गारी॥ जे पद रमा हृदय नहिं टारी।जे पद तिहूँ भुवन प्रतिपारी॥ जे पद अहि फनफनप्रति धारी। जे पद वृंदाबनहिं बिहारी॥जे पद शकटासुरसंहारी।जे पद पांडवगृह पगुधारी॥जे पद रज गौतम तिय तारी। जे पद भक्तनके सुखकारी॥सूरदास सुर याचत ते पद। करहु कृपा अपने जनपर सद८२॥राग आसावरी॥अस्तुति करि सुर घरनि चले।यहै कहत सब जात परस्पर सुकृत हमारे प्रगट फले॥शिव विरँचि सुरपतिकहँ भाषत पूरण ब्रह्महि प्रगट मिले। धन्य धन्य यह दिवस आजुको जातहैं मारग करत मिले॥ पहुँचे जाइ आपुने लोकनि अमरनारि सब हरष भरे।सूर श्यामकी

लीला सुनिसुनि अतिहित मंगलगान करे ॥ ८३ ॥ राग मलार ॥ दिखियत दोउ घन उनए । उतघर्न वासव भक्तिवश्य इत नर इक रोष भए ॥ उत सुरचाप कला प्रचंड इत तडित पीत पट श्याम नए । उत सेनापति वरषि मुसलसम इत प्रभु अमियदृष्टि चितए ॥ युगलबीच गिरिराज बिराजत कर जु उठाइ लए । मनु विवि मरकत बीच महा नग चतुर नारि बनए ॥ लुटत शक्रके शीश चरणतर युग गुण गत समए । मानहु कनकपुरीपतिके शिर रघुपति फेरि दए ॥ भए प्रसन्न सकल सुरपुरको प्रमुदित फेरि गए । सूरदास गिरिधर करुणामय इंद्र थापि पठए ॥ ८४ ॥ देखौ भाई बदरनिकी बरियाई । मदनगोपाल धरचो गिरिवरकर इंद्र ढीठ झरि लाई ॥ जाकेराजसदासुख कीनों तासों कौन बडाई । सेवकु करे स्वामिसोंसरबरिइनिबातनि पतिजाई ॥ इंद्रढीठबलिखाइ हमारी देखौ अकल गमाई । सूरदास तेहिको काको डर जिहिवन सिंह कन्हाई ॥ ८५ ॥ रागसोरठ ॥ जहां तहां तुम हमहिं उबारचो । ग्वालसखा सब कहत श्यामसों धनि यशुमति अवतारचो ॥ तृणावर्त्त ब्रजपर चढिआयो लाग्यो देन उडाइ । अतिशिशुतामें ताहि सँहारचोपरचोशिलापरआइ ॥ फलजनवे बालकसँग खेलत केशी आयो साथ । वाहिमारितुम हमहिंउबारचो ऐसे त्रिभुवननाथ ॥ कागासुर शकटासुर मारचो पय पीवत दनुनारि । अघाअसुरते हमहिंनिकास्योबकावदनधरिफारि ॥ कालीदहजल अचे गए मरि तब तुम लिये जिवाय । सूरश्याम सुरपतिते राखे देतो सबनिबहाइ ॥ ८६ ॥ हमको नंदनँदनको गारो । इंद्रकोप ब्रज बहोजातहै गिरिधर सकल उबारो ॥ राम कृष्ण बलवदतन काहू निडर चरावत चारो । बिगरै सब हमरे शिर ऊपर बलको वीर रखवारो ॥ तबहीं हमहिं भरोसो आयो केशी तृणावर्त जब मारचो । सूरदास प्रभु रंगभूमिमें हरि जीत्यौ नृप हारचो ॥ ॥ ८७ ॥ राग मलार ॥ तुम सुरपतिको मान हरचो ॥ बरषत शुंडदंडधर धारा छिन छिन एकमें प्रलय करचो । ऐरावतआरूढ अग्रघन लघुता जानि जु रोषभरचो ॥ देखे दीन दुखित नंदादिक लीला गिरिवर कर जु धरचो ॥ सूरदास करुणामय माधव ब्रजसुख उनको गरब हरचो ॥ ८८ ॥ राग विलावल ॥ ब्रजयुवतीब्रजजन ब्रजवासी कहत श्यामसरि कौन करै । ब्रज मारत ब्रजनाथहि आगे वज्रायुध मन क्रोध करै ॥ बलसमेत वरष्यो ब्रजऊपर बलमोहनकी सुधि न करै । हारि मानि हहरचो हरिचरणनि हरषि हिये अब हेतु करै ॥ गरजिगरजि घहरात गुसांकरि गिरिवारो यह पैजु करै । सूरदास गिरिधर करुणामय तुमबिनु को प्रभु क्षमाकरै ८९ ॥ राग मेघमलार ॥ श्याम गिरिराजक्यों धरचोकरसों । अतिहि विस्तार अतिभार तुम बार अति वामभुज टेकि लघुजात करसों ॥ कहत सबग्वाल धनिधन्य नँदलाल ब्रज धन्य गोपाल बल कितिक करसों । धन्य यशुमति मात जिन जन्यो तुम तात बोरि माखन खात बाँध करसों । कान्ह हँसिकै कह्यो तुमसबन गिरि गह्यो रह्यो हो ब्रज बह्यो लकुट करसों । सूर प्रभुके चरितकहा बल गिरिधरत चरणरजलेत सुरराजकरसों ९० राग मलार । हाहारे हठीले हरि । अपनी जननीको कह्यो करि इँद्र वरषिगयो अब गिरिवर धरि । सात द्यौस कीनी छाँह नेकु न पिगरनी बाहँ अतिहि कठिन कटु राख्योरे छतनि कारि । सुनिकैयशोदाधाइ निकटगोपाल राइ करौरे मॅयसहाइ नैन रहे जलभरि ॥ कुलके देवै मनाए देवेको द्विजे बुलाये दियो जाहि जोई भायो जियो रे कन्हैया प्यारो जाके राज सुख करि । सूरदास प्रभु गिरिधरको कौतुक देखि कामधेनु आयो धायो इंद्र अपडर डरि ॥ ९१ ॥ राग सोरठ ॥ जब करते गिरि धरचो उतारि । श्याम कह्यो बहुरो गिरि पूजहु ब्रजजन लिए उबारि ॥ यह सुनतहि मन हर्ष बढायो कियो पकवानु सँवारि । बहु मिष्टान्न बहुत विधि भोजन बहु व्यंजन अनुहारि ॥ परसि धरेगोवर्धनआगे जेवत अति रुचि भारि । सूर श्याम

गिरिधर वर मांगत रविसों घोषकुमारि ॥ ९२ ॥राग कान्हरो ॥ घरघरते ब्रजयुवती आवति । दधि अक्षत रोचन धरि थारनि हरषि श्यामशिर तिलक बनावति ॥ बारंबार निरखि छबि अँगअँग श्यामरूप उरमाहँ दुरावति ॥ नंदसुवन गिरि धरचौ वामकर यह कहिकै मन हरष बढावति ॥ जेहिं पूजत सब जन्म गँवायो सो कैसेहुं पग छुवन न पावति । सूर श्याम गिरिधरन मांगि वर कर जोरति कहि बिधिहि मनावति ॥९३॥ राग सोरठा॥नीके धरणिधरचो गोपाल।प्रलयघन जल बरषि सुरपति परचो चरण बिहाल ॥ करत अस्तुति नारि नर ब्रज नंद अरु सब ग्वाल । जहांतहां सहाय हमको होतहैं नँदलाल ॥ जाहि पूजत डरत मनमें ताहि देख्यो दीन । त्रिदशपति सब सुरको नायक सो भयो आधीन । देखि छबि अति नंदसुतकी नारि तन मन वारि।सूरप्रभु करते गुबर्धन धरचो धरणि उतारि ॥९४राग नट॥करते धरचो धरणीधरन । देखि ब्रजजन चकित ह्वैरहे रूप रतिपतिहर-न ॥ लेत बेर न धरत जान्यो कहत ब्रजनर घरन । तनु ललित भुज अतिहि कोमल कियो बल बहु करन ॥ मोर मुकुट विशाल लोचन श्रवण कुण्डल वरन । बन जलद सुरचापकी छबि अमल स्वजनन तरन ॥ बरषि निकरे मेघ पाइक बहुत कीने अरन । सूर सुरपति हारि मानी तब परचो दुहुँ चरन॥९५॥राग बिलावल॥घरनिघरनि ब्रज होत बधाई ॥ सातवरषके कुँवर कन्हैया गिरिवर धारि जीत्यो सुरराई ॥ गर्वसहित आयो ब्रज बोरन यह कहि मेरी भक्ति घटाई । सात दिवस जल बरषि सिराने तब आयो पाइँनतर धाई ॥ कहाँकहाँ संकट नहिं मेटत नर नारी सब करत बडाई ॥ सूरश्याम अबकै ब्रज राख्यो ग्वाल करत सब नंददोहाई॥९६॥राग नट॥क्योंराख्यो गोवर्धन श्याम। अति ऊंचो बिस्तार अतिहि बहु लीनो उचकि करज भुजबाम॥यह आवात महापरलय जल डर आवत मुख लेतहि नाम। नीके राखिलियो ब्रज सिगरो ताको तुमहि पठायो धाम ॥ ब्रज अवतार लियो जबते तुम यहै करत निशि बासर याम । सूर श्याम बनघन हमकारण बहुत करत श्रम नहिं विश्राम ॥ ९७ ॥राखिलियो ब्रज नंदकिशोर । आयो इंद्र गर्व करि चढिकै सात दिवस बरषत भयो भोर ॥ वाम भुजा गोवर्धन राख्यो अतिकोमल नखहीकी कोर ।गोपी ग्वाल गाइ ब्रज राख्यो नेकु न आई बूंद झकोर॥अमरापति चरणन लै पारचो जब बीते युग गुनको जोर। सूर श्याम करुणा कै ताको पठैदियो घरमानि निहोर ॥ ९८ ॥ राग मलार ॥ मेरो मोहन जल प्रवाह क्यों टारचो । बूझत मुदित यशोदा जननी इंद्र कोप करि हारचो ॥ मेघवर्त्त जल वरषि निशा दिन नेकु न नैन उघारचो। बार बार यह कहति कान्हसों कैसे गिरि नख धारचो ॥ सुरपति आनि गिरचो गहि पांइन ताको शरन उबारचो । सूर श्याम जनके सुखदाता करते धरणि उतारचो ॥ ९९ ॥ राग सोरठ॥ मेरे सांवरे मैं बलिजाऊँ भुजनकी । क्यों गिरि सबल धरचो कोमलकर बूझतिहौं गति तनकी ॥ इंद्र कोपि आयो ब्रजऊपर बहुत पैज करि हारे। ठाढे गोप कहत भैयाहो तैं हम भले उबारे ॥ थार तमोर दूध दधि रोचन हरषि यशोदा ल्याई। करे शिर तिलक चरण रजवंदित मनहु रंक निधि पाई॥ चरणन कमल परत ब्रजसुंदरि हरपिहरपि मुसु-काई । फिरिफिरि दरश करति एही मिस प्रेम न प्रीतिअघाई॥गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सबबारबार अकुलाहीं। निरखिनिरखि सुंदरमुखशोभा प्रेम तृषा न बुझाहीं ॥ सूरदास सुरपति शंकित ह्वै सुरन लिये सँग आयो ।तुम जु अनंत अखिल अविनाशी काहू मरम न पायो॥१०००॥राग सोरठ॥ गिरिवर कैसे लियो उठाई ।कोमल कर चांपति यशुदा यह कहि २ लेत बलाई॥ महाप्रलय जल तापर राख्यो एक गोवर्धन भारी ।नेक नहीं हाल्यो नखपरते मेरो सुत हंकारी ॥ कंचनथार दूध दधि रोचन सजि तमोर लै आई।हरषति तिलक करति मुख निरखति भुजभरि कंठलगाई॥

रिस करिकै सुरपति चढि आयो देतो ब्रजहि बहाई । सूर श्यामसों कहति यशोदा गिरिधर बडो कन्हाई ॥ १ ॥ धरणीधर क्यों राख्यो दिन सात । अतिही कोमल भुजा तुम्हारी चांपति यशुमति मात ॥ ऊँचो अति बिस्तार भार बहु यह कहिकहि पछितात । वह अघात तेरे तनक तनक कर कैसे राख्यो तात ॥ मुख चूमति हरि कंठ लगावति देखि हँसे बल भ्रात । सूर श्यामको कतिक बात यह जननी जोरति नात ॥ २ ॥ राग कान्हरो ॥ जननी चांपति भुजा श्यामकी ठाढे देखि हँसत बलराम । चौदह भुवन उदरमें जाके गिरिवर धरचो बहुत यह काम ॥ कोटि ब्रह्मांड रोम रोमनि प्रति जहांतहां निशि बासर धाम । जोइ आवति सोइ देखि चकृत ह्वै कहत करे हरि कैसे काम ॥ नाभिकमल ब्रह्मा प्रगटाये देखि जलार्णव तज्यो बिश्राम । आवत जात बीचही भटक्यो दुखित भयो खोजत निज धाम ॥ तिनसों कहत सकल ब्रजबासी कैसे कर राख्यो गिरि श्याम । सूरदास प्रभु त्रिभुवननायक फिरिफिरि जन्म लेत नँदधाम ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ मात पिता इनके नहिं कोई । आपुहि करता आपुहिहरता त्रिभुवन गए रहतहैं जोई ॥ कितकबार अवतार लियो ब्रज एहैं ऐसे वोई । जल थल कीट ब्रह्मके व्यापक और न इनसरि होई ॥ बसुधाभार उतारनकारन आपु रहत तनु गोई । सूर श्याम माताहितकारी भोजनमांगत रोई ॥ ४ ॥ अथ गोवर्धनकी दूसरी लीला ॥ राग बिलावल ॥ नंदहि कहति यशोदा रानी । सुरपतिपूजातुमहिभुलानी ॥ यह नहिं भली तुम्हारीवानी । मैं गृहकाज रहौं लपटानी ॥ लोभहि लोभ रहेहौ सानी । देवकाजकी सुधि बिसरानी ॥ महरि कहति पुनिपुनि यह बानी । पूजाके दिन पहुँचे आनी ॥ सूरदास यशुमतिकी बानी । नंदहि खीझिखीझि पछितानी ॥ १ ॥ नंद कह्यो सुधि भली देवाई । मैं तौ राजकाज मन लाई ॥ नितप्रति करत इहै अधमाई । कुलदेवतासुरतिबिसराई ॥ कंस दई इह लोक बडाई । गाउँदशक सिरदार कहाई ॥ जलधिबूँद ज्यों जलहि समाई । माया जहँकी तहां बिलाई ॥ सूरदास यह कहि नँदराई । चरण तुम्हारे सदा सहाई ॥ २ ॥ कहत महरि तब ऐसी बानी । इंद्रहिकी दीनी रजधानी ॥ कंस करत तुम्हरी अति कानी । यह प्रभुकी है आशिषबानी ॥ गोपन बहुत बड़ाई सानी । जहां तहां यह चलतिकहानी ॥ तुम घरमथिये सहसमथानी । ग्वालिनि रहत सदाबिततानी ॥ तृण उपजतउनहींके पानी । ऐसे प्रभुकी सुरति भुलानी ॥ सूर नंद मनमें तबआनी । सत्यकहत तुमदेवकहानी ॥ ३ ॥ महर लियो इक ग्वाल बुलाई । गोपनंद उपनंद बुलाई ॥ अरु आनो वृषभानु लिवाई । तुरतजाहुतुम करहु चँडाई ॥ यह सुनि ग्वाल गए तहँ धाई । नंदमहरकी कही सुनाई ॥ नेक करहु अब जिनि बिलमाई ॥ मोहिं कह्यो सब देहु पठाई ॥ यह सुनिकै सब चले अतुराई । मनमन सोच करत पछिताई ॥ कंसकाज जियमांझ डराई । राजअंश धन दियो चलाई ॥ सूर नंदगृह पहुँचे आई । आदर करि बैठे नँदराई ॥ ४ ॥ गोप सबै उपनंद बोलाए । कौन काजको हम हँकराए ॥ सुनतेही हम आतुर आए । कंस कछू कहि मांगिपठाए ॥ इहैजानि अतिआतुर आए । सबमिलि कह्यो बहुत डरपाए ॥ कालिहि राजअंश दे आए । ग्वाल कहत तुरतहि उठि धाए ॥ महर कह्यो हम तुम डरवाए । हँसिहँसि कहत अनंद बढाये ॥ हम तुमको सुखकाज मँगाए । बारबार यह कहि दुख पाए ॥ सूरइंद्रपूजा बिसराये । यह सुनतहि शिर सबनि नवाये ॥ ५ ॥ पूजा सुनत बहुत सुख कीन्हों । भली करी हमको सुधि दीन्हों ॥ यह वाणी सबहिन सुख लीन्हो । बड देव सबदिनको चीन्हो ॥ इनहीते ब्रजवास बसीनो । ॥ हम सब अहिरजाति मतिहीनो ॥ पूजाकीबिधि करत सबैमिलि । जेहिजेहि भांति सदा जैसी चलि ॥ बिदा मांगि नँदसों गृह आए । घरनिघरनि यह बात चलाए ॥ सूरदास

गोपनकी बानी । व्रज नर नारि सबन यह जानी ॥ ६ । नंदघरनि व्रजबधू बोलाई ॥ यहसुनिकै तुरतहि सब आई ॥ कौन काज हम महरि हँकारी । तुम नहिं जानत यौवन भारी ॥ विहँसि कहति कहा देतिहौ गारी । सुरपतिपूजा करो सवारी ॥ देखौ हम सब सुरति बिसारी । औरौ हमहिं बूझिए गारी ॥ यह सुनि हरषित भइ नँदनारी। सखियनबचन कह्यो जब प्यारी॥सूर इंद्रपूजा अनुसारी । तुरत करौ सब भोग सँवारी ॥ ७ ॥ घरनि चलीं सब कहि यशुमतिसों देव मनावति वचन बिनतिसों॥तुमबिन और नहीं हमजानैं । धुखमुख अस्तुति करत बखानैं॥ जहां तहां व्रजमंगल गाने।बाजत ढोल मृदंग निसाने॥बहुत भांति सब करि पकवाने।नेवज करि धरि सांझ बिहाने ॥ छुवत नहीं देवकाज सकाने । देवभोगको रहत डेराने ॥ सूरदास हम सुरपति जानैं । और कौन ऐसो जेहि मानैं॥ ८ ॥ नंदमहरघर होत बधाई। करत सबैविधि देव पुजाई॥नेवजकरत यशोदाआतुर। अष्टौ सिद्धि घरहि अति चातुर।मैदा उज्ज्वल करिकै छान्यो। बेसन दारि चनककरि बान्यो॥ घृत मिष्टान्न सबै परिपूरन।मिश्रित करत पागको चूरन ॥ कडुवा करत मिठाई घृतपक। रोहिणि करत अन्नभोजन तक॥संग और व्रजनारी लागी। भोजन करतहैं बडीसभागी॥ महरि करत ऊपर तरकारी । जोरत सब बिधि न्यारी न्यारी ॥सूरदास जो मांगत जबहीं।भीतरते लै देतहै तबहीं ॥९॥ महरि सबै नेवज लै सैंतति।श्याम छुवै कहुँ ताकोडरपति॥ कान्हहि कहति यहां जनि आवै।लरिकनको यहदेव डरावै॥ श्यामरहै आंगनहिंडराई।मनमन हँसत मातसुखदाई ॥मैयारीमोहिदेव देखैहै।इतनो भोजन सबवह खैहै॥ यह सुनिकै खीझति नँदरानी। बारबार सुतसों बिरुझानी॥ ऐसी बात न कहो कन्हाई। तू कत करत श्याम लँगराई॥ कर जोरत अपराध छमावति । बालकको यह दोष मिटावति॥ सूरदास प्रभुको नहिं जानै। हँसत चले मनमें न रिसानै॥ १०॥ युवती कहति कान्ह रिस पायो।जान देहु सुरकाज बतायो॥ बालक आय छुवै कहुँ भोजन। उनकी पूजा जानै को जन ॥ यह कहिकहि देवता मनावति। भोगसमग्री धरत उठावति ॥ उनकी कृपा गऊगण घेरे।उनकी कृपा धाम धन मेरे॥ उनकी कृपा पुत्रफल पायो । देखहु श्यामहि खीझि पठायो ॥ सूरदास प्रभुअंतर्यामी । ब्रह्माकीट आदिके स्वामी ॥ ११॥ नंदनिकट तब गए कन्हाई।सुनत बात तहँ इंद्रपुजाई॥महर नंद उपनंद तहाँ सब । बोलिलिए वृषभानुमहर तब ॥ दीपमालिका रचि रचि साजत । पुहुपमाल मंडली बिराजत ॥ बरष सातके कुँवर कन्हाई । खेलत मन आनंद बढाई ॥ घरघर देति युवतिजन हाथा।पूजादेखि हँसतव्रजनाथा॥ मो आगे सूरपतिकी पूजा । मोते और देव को दूजा ॥ शत शत इंद्र रोमप्रति लोमनि । शतलोमनि मेरे इकरोमनि ॥ सूरश्याम ए मनसों बातें । लीनो भोग बहुत दिन जातें ॥ १२॥ सुरपति पूजा जानि कन्हाई । बारबार बूझत नँदराई॥कौन देवकी करत पुजाई । सो मोसों तुम कहहु बुझाई॥महर कह्यो तब कान्ह सुनाई।सुरपति सब देवनके राई।। तुमरेहित में करत पुजाई।जाते तुम रहो कुशल कन्हाई॥सूर नंद कहि भेद बताई। भीर बहुत घर जाहु सिखाई॥ १३॥ जाहु घरहि बलिहारी तेरी। सेज जाइ सोवो तुम मेरी ॥ मैं आवतहौं तुम्हरे पाछे । भवन जाहु तुम मेरे बाछे॥ गोपन लीन्हें कान्ह बुलाई । मंत्र कहौं एक मनहि समाई॥आजु एक सपने कोउ आयो । शंखचतुर्भुज चारि बतायो॥मोसों यह कहिकहिसमुझायो॥यहपूजातुमकिनहिंसिखायो॥सूरश्याम कहि प्रगट सुनायो।गिरि गोवर्धन देव बतायो॥ १४॥ यह तब कहनलगे दिवराई। इंद्रहिपूजे कौन बडाई॥कोटि इंद्र हम छिनमें मारैं।छिनहींमेंफिरि कोटि सँवारैं॥जाके पूजे फल तुम पावहु।ता देवहि

तुम भोग लगावहु ॥ तुमआगेवह भोजन खैहै।मुँहमाँग्यो फल तुमको दैहै॥ ऐसोदेवप्रगट गोवर्धन ।जाके पूजे बाढैं गोधन॥समुझिपरी कैसी यह बानी।ग्वाल कही यह अकथ कहानी ॥ सूर श्याम यह सपनो पायो।भोजनकौन देवहीखायो॥१५॥मानहु कह्यो सत्य यह बानी जो चाहो व्रजकी रजधानी॥ जोतुम मुँहमांग्यो फल पावहु।तौ तुम अपने करन जेंवावहु॥भोजन सब खैहैं मुँहमांगे ।पूजत सुरपतितिनकेआगे॥मेरीकहीसत्यकरिमानहु।गोवर्धनकीपूजा ठानहु । सूर श्याम कहिकहि समुझायो । नंद गोप सबके मन आयो॥ १६ ॥ सुरपतिपूजा मेटि धराई। गोवर्धनकी करत पुजाई ॥पांचदिनालौं करी मिठाई। नंदमहरघरकी ठकुराई॥जाके घरनी महरि यशोदा।अष्ट सिद्धि नव निधि चहुँकोदा॥ घृतपक बहुत भांति पकवाना।व्यंजन बहु को करैबखाना ॥ भोग अन्न बहुभार सजायो । अपने कुल सब अहिर बोलायो॥ सहस शकट भरि भरत मिठाई।गोवर्धनकी प्रथम पुजाई॥सूर श्याम यह पूजा ठानी। गिरिगोवर्धनकी रजधानी ॥ १७ ॥ व्रज घर घरसब भोजन साजत ।सबके द्वार बधाई बाजत॥शकट जोरि लै चले देवबलि । गोकुलव्रजवासी सब हिलिमिलि॥ दधिलवनी मधु साजि मिठाई॥ कहँलगि कहौं सबै बहुताई॥घरघरते पकवान चलाए । निकसि गांवके ग्वैंडे आये॥व्रजवासी तहँ जुरे अपारा। सिंधुसमान पार ना वारा॥ पैंड चलन नहीं कोउ पावत ।शकटभरे सब भोजन आवत ॥ सहस शकट चले नंदमहरके । और शकट किनने घरघरके॥सूरदास प्रभु महिमासागर । गोकुल प्रगटे हैं हरिनागर॥ १८॥इक आवत घरते चले धाई। एक जात फिरि घर समुहाई ॥ इक टेरत इक दौरे आवत । एक गिरावत एक उठावत॥एक कहत आवहु रे भाई । बैल देतहैं शकट गिराई ॥ कौन काहिको कहै सँभारै जहाँ तहाँ सब लोग पुकारै ॥ कोउ गावत कोउ निर्तत आवैंश्याम सखासंग खेलत धावैं ॥ सूरदास प्रभु सबके नायक । जो मन करैं सो करिबे लायक॥१९॥सजि शृंगार चलीं व्रजनारी। युवतिन भीर भई अति भारी॥जगमगात अंगनि प्रति गहनो । सबके भाव दरश हरि लहनो॥यहि मिस देखनको सब आई ।देखत एकटक रूप कन्हाई ॥ वै नहिं जानत देवपुजाई ।केवलश्यामहिसों लव लाई॥को मग जाति कहां को बोलत।नंदसुवनते चित नहिंडोलत॥सूरभजैहरिजोजेहि भाउ।मिलत ताहि प्रभु तेहि सुभाउ ॥ २०॥गोपनंद उपनंद गए तहँ । गिरि गोवर्धन बडे देव जहँ ॥ शिखर देखि तब रीझे मनमन।ग्वाल कहत आजुहि अचरज बन ॥ अतिऊंचो गिरिराज विराजत । कोटि मदन निरखत छबि लाजत ॥ पहुँचे शकटनि भरिभरि भोजन ।कोउ आए कोउ नहिं कहुँ खोजन ॥ तिनके काज अहीर पठाए। बिलम करहु जिनि तुरत धवाए ॥ आवत मारग पाये तिनको । आतुर करि बोले नंद जिनको ॥ तुरत लिवाइ तिनहिं तहां आए। महर मनहिं अति हरप बढाए ॥ सूरदास प्रभु तहँ अधिकारी । बूझतहैं पूजा परकारी ॥ २१ ॥ आइ जुरे सब व्रजके बासी।डेरा पर्‍यो कोश चौरासी॥ एक फिरत कहुँ ठौर न पावै।एते पर आनंद बढावै॥ कोउ काहूसों वैर न ताकै।बैठत मन जहँ भावत जाकै॥ खेलत हँसत करैं कौतूहल। जुरे लोग जहँ तहां अकूहल ॥ नंद कह्यो सब भोग मँगावहु । अपने कर सब लैलै आवहु ॥ भोग बहुत वृषभानुहिं घरको । को करि बरनै अतिहि महरको ॥ सूर श्याम जो आयसु दीन्हो।विप्र बुलाइ नंद तब लीन्हों ॥ २२ ॥तुरत तहां सब विप्र बोलाए । यज्ञअरंभ तहां करवाए ॥ सामवेद द्विज गान करत तहँ। देखत सुर विथके अमरन जहँ ॥ सुरपतिपूजा तबहि मिटाई । गिरि गोवर्धन तिलक चढाई ॥कान्ह कह्यो गिरि दूध अन्हावहु । बडे देवता इनहिं मनावहु ॥ गोवर्धन

दूधहि अन्हवाए। देवराज कहँ माथ नवाए॥ नये देवता कान्ह पुजावत। नर नारी सब देखन आवत॥ सूर श्याम गोबर्धन थाप्यो। इंद्र देखि रिसकरि तनु कांप्यो॥२३॥देखिइंद्र मन गर्व बढायो। ब्रजलोगनसबमोहिंबिसरायो॥अहिरजाति ओछीमति कीन्ही। अपनी ज्ञाति प्रगट करिदीन्ही॥ पूजत गिरिहि कहामन आई।गिरिसमेत ब्रज देउँ बहाई॥देखौं धौं कितनों सुख पैहैं। मेरे मारत काहि मनैहैं॥ पर्वत तब इनको क्यों राखत। बारंबार कहे इह भाषत॥ पूजत गिरि अतिप्रेम बढाएं। सपनेको सुख लेत मनाए॥सूरदास सुरपतिकी बानी। ब्रज बोरौं परलयके पानी॥२४॥श्याम कह्यो तब भोजन लावहु। गिरिआगे सब आनि धरावहु॥ सुनत नंद तहँ ग्वाल बोलाए। भोगसमग्री सबै मँगाए॥ षटरसके बहुभांति मिठाई। अन्नभोग अतिही बहुताई॥ व्यंजन बहुत भाँति पहुँचाए। दधि लवनी मधु माट धराए॥ दही बरा बहुतै परसाए।चन्द्रहि सम पटतर तेहि पाए॥ अन्नकूट जैसो गोबर्धन। अरु पकवान धरे चहुँकोनन॥ परसत भोजन प्रात-हिते सब। रवि माथेते ढर किगयो अब॥ गोपन कह्यो श्याम ह्यांआवहु। भोग धर्‍योसब गिरिहि जिमावहु॥ सूर श्याम आपुनही भोगी। आपुहिमाया आपुहि योगी॥२५॥कान्हकह्योनंद भोग लगावहु। गोपमहर उपनंद बोलावहु॥नैन मूंदि कर जोरि मनावहु।प्रेमसहित देवहि न चढावहु॥ मनमें नेक खुटक जनि राखहु। दीन बचन मुखतेतुमभाषहु॥ ऐसीबिधिगिरि परसन ह्वैहे। सहस भुजा धरि भोजन खैहै॥सूरदास प्रभु आपुपुजावत।यह महिमाकैसे कोउ पावत॥२६॥श्यामकही सोई सब मानी। पूजाकी बिधि हम अब जानी॥ नैनमूंदिकर जोरि बोलायो। भावभक्तिसोंभोग लगायो॥बडे देव गिरिराज सबनके। भोजन करहु कृपाकरि इनके॥सहसभुजा धरिदरशनदीन्हों। जैजै ध्वनि नभ देवन कीन्हों॥ भोजन करत सबनके आगे। सुर नर मुनि सब देखन लागे॥ देखि थकित ब्रजकी सब बाला। देखत नंद गोप सब ग्वाला॥सूर श्याम जनके सुखदाई।सहस भुजा धरि भोजनखाई॥२७॥जेंवत देव नंद सुखपायो॥कान्ह देवता प्रगटदेखायो॥ ब्रजवासी गिरिजेंवत देख्यो जीवन जन्म सफल करि लेख्यो॥ललिता कहति राधिकाआगे।जेंवतकान्ह नंदकर लागे। मैं जानी हरिकी चतुराई। सुरपति मेटि आपु बलि खाई॥ उत जेंवत इत बातन लागे।कहत श्याम गिरि जेंवन लागे॥मैं जो बात कही सो आई।सहसभुजा धरि भोजन खाई॥ और देव इनकी सरि नाहीं। इत बोधत उत भोजन खाहीं॥सूरदास प्रभुकी यह लीला। सदा करत ब्रजमें यह क्रीला॥ २८॥ यह छबि देखि राधिका भूली। बात कहत सखियनसों फूली॥ अपुहि देव आपुही पुजेरी। आपुहि भोजन जेंवत ढेरी॥ अति आतुर जेंवतहैं भारी। एक वृषभानु बिलोवनहारी। नाम ताहि बदरौला नारी। ताकी बलि लई भुजा पसारी॥ उत गिरिसंग खात बलि सारी। बदरौलाकी बलि रुचिकारी॥सूरदास प्रभु जेवँनहारी। गिरि बपुरेसों को अधिकारी॥२९॥इतहि श्याम गोपन सँग ठाढे। भोजन करत अधिक रुचि बाढे॥ गिरितन शोभा श्याम बिराजै। श्यामहि छबि गिरिवरकी छाजै॥ गिरिवर उर पीतांबर डारे। मोतिनकी उर माला भारे॥ अँग भूषण श्रवणन मणिकुण्डल। मोरमुकुट शिर अलक हैं झुण्डल॥ छबि निरखत सब घोषकुमारी। गोबर्धन छबि श्यामअनुहारी॥ सूरश्याम लीला रसनायक। जन्मजन्म भक्तन सुखदायक॥३०॥ भोजन करत देव भए परसन। माँगहु नंद तुम्हारे जो मन॥ भली करी तुम मेरी पूजा। सेवक तुमते और न दूजा॥जो मांगो सोइ फल मैं देहों।जहां भाव ताहीपै रैहों॥मैंसेवावश भयो तुम्हारे। जोइ फल चाहो लेहु सँवारे॥ यह सुनि चक्रत भए नर नारी। भोजन कियो प्रथमही भारी॥

अब देखौ मुख बात कहन हैं। ऐसेदेवकहांत्रिभुवनहैं॥ कान्हकह्यो कछु माँगहु इनसों। गिरिदेवता देत परसनसों॥सूरश्याम देवता आप है।ब्रजजनकेत्रयतापहरतहैं॥ ३१॥ नंद कह्योकहामांगौंस्वामी। तुम जानत सब अंतर्यामी॥ अष्टसिद्धि नवनिधि तुम दीनो। कृपासिंधु तुमरोईकीनो॥ कुशल रहैं बलराम कन्हाई। हम इहि कारण करैं पुजाई॥ देवनको मणि गिरिवर तुम हौ। जहँतहँ व्यापक पूरन सम हौ॥ तुम हरता तुमकरता सबके। देखिथकित नर नारि नगरके॥ बडो देवता श्याम बतायो। प्रगट भए सब भोजन खायो॥सूर श्यामके जोइ मन आवै। सोइसोइ नानारूप बनावै॥ ३२॥ मांगिलेहु कछु और पदारथ। सेवा सबै भई अब स्वारथ॥ फल मांग्यो बलराम कन्हाई। ये द्वै रहैं कुशल जु सदाई॥ इनहीते हम तुमको जान्यो। तब तुम गिरि गोवर्धन मान्यो॥ करत वृथाही इंद्र पुजाई। मेरी दीनी है ठकुराई॥ कान्ह तुम्हारो मोको जाने। इनको रैहौ सबै तुम माने॥ इंद्र आइ चढिहै ब्रजऊपर। यह कहिहै नहिं राखौं भूपर॥नेककछूनहिंवासों ह्वैहै। श्याम उठाइ मोहि कर लैहै॥ सूरश्यामगिरिवरकी बानी। ब्रजजन सुनत सत्यकरि मानी ॥३३॥ कौतुक देखत सुर नर भूले। रोमरोम गदगद सब फूले॥ सुर विमान सुमनन बरषाए। जयध्वनि शब्द देव नर गाए॥ देव कह्यो ब्रजवासिनसों तब। पूजा भली करी मेरी सब॥ जाहु सबै मिलि सदन करौ सुख। श्यामकह्योगिरिगोबर्धनमुख॥ ग्वाल करत अस्तुतिसब ठाढे। भाव प्रेम सबके चित बाढे॥ भवन जाहु कहि श्रीमुखबानी। भोजनशेष श्याम कर आनी॥ बाँटि प्रसाद सबनिको दीन्हो।ब्रजनारी नर आनँद कीन्हो॥ सूर श्याम गोपन सुखकारी। चलौकह्यो ब्रजको नर नारी॥३४॥ दोउ कर जोरि भए सब ठाढे। धन्यधन्य भक्तनके चाढे॥ तुम भोगता तुमहिं प्रभु दाता। अखिलब्रह्मांड लोकके ज्ञाता॥ तुमकोभोजनकौनकरावै। हितके वश तुमको कोउपावै॥तुमलायकहमरे कछु नाहीं।सुनत श्याम ठाढे मुसकाहीं॥ललितासखी देवता चीन्हो। चंद्रावली राधिकहि दीन्हो॥देव बडो इह कुँवरकन्हाई।कृपाजानि हरि ताहि चिन्हाई॥सूर श्याम कहि प्रगट सुनाई। भये तृप्त भोजन दिवराई॥३५॥परसत चरण चलत सब घरको। जात चले सब घोष शहरको॥ सुखसमेत मग जातचले सब। दूनी भीर भई तबते अब॥कोउ आगे कोउ पाछे आवत।मारगमें कहुँ ठौरन पावत॥प्रथमहिंगयो डगरतिनपायो।पाछेकेलोगन पछितायो॥ घरपहुँचे अबहीं नहिं कोई।मारगमें अटके सब लोई॥ डेरो पर्‍यो कोस चौरासी।इतनेलोग जुरे ब्रजवासी॥ पैंडे चलन नहीं कोउ पावत।कितक दूरि ब्रज पूँछत आवत॥सूरश्याम गुणसागर नागर। उत्तम लीला करी उजागर॥३६॥कोउ पहुँचे कोउ मारगमाहीं। बहुत गए घर बहुतक जाहीं॥ काहूके मन कछु दुख नाहीं। अरसपरस हँसि हँसि लपटाहीं॥ आनँद करत सबै ब्रज आए। निकट आनि लोगन नियराये॥ भीर भई बहु खोरि जहाँतहँ। जैसे नदी मिलत सागरमहँ॥नर नारी सरिता सब आगर।सिंधु मनो इह घोष उजागर॥मथनहार हरि रतन कुमारी।चंद्रवदनराधा सुकुमारी॥ सूरश्याम आए नँदशाला। पहुँचे घरनि आइ नर बाला॥३७॥ बडो देवता कान्ह पुजायो। ग्वाल गोप हँसि अंग मिलायो।कान्ह धन्य धनि यशुमति जायो। ब्रज धनिधनि तुमते कहवायो॥धन्य नंद जिन तुम सुतपायो।धनिधनि देव प्रगट दरशायो॥पूजामेटि इंद्र गिरि पूज्यो। परसन हमहिं सदा प्रभु हूज्यो॥ कहाइंद्र बपुरो केहिलायक। गिरिदेवता सबहिके नायक॥ सूरदास प्रभुके गुण ऐसे। भक्तन वश दुष्टनको नैसे॥ ३८॥ हरि सबके मन यह उपजाई।सुरपति निंदत गिरिहि बडाई॥ वर्षवर्ष प्रति इंद्र पुजाई। कबहूं परसन भयो न आई॥ पूजत रहौ वृथाही सुरपति।

सब मुख यह वाणी घर निंदति ॥ बडो देव यह गिरि गोवर्धन । इहै कहत गोकुल ब्रजपुरजन॥ तहाँ दूत इक इंद्र पठायो। ब्रजकौतुक देखन वह आयो॥घरघर कहत बात नर नारी ।दूत सुन्यो सो श्रवण पसारी ॥ मानत गिरि निंदत सुरपतिको। हँसत दूत ब्रजजन गई मतिको ॥ सूर सुनत इतनी रिस पाये । उठि तुरतहि सुरलोकहि आये ॥ ३९ ॥ ब्रह्म दई जाको ठकुराई । त्रिदशकोटि देवनके राई ॥ गिरिपूज्योतिनिहीबिसराइ । जातिबुद्धि इनके मनआइ॥ शिव विरंचिजाकोकहैं लायक । जाके मैं मघवासे पायक॥ यह कहतहि आये सुरलोकहि। पहुँचे जाइ इन्द्रके ओकहि॥ दूतन ऐसिय जाइ सुनाई । बैठे जहां सुरनके राई ॥ कर जोरे सन्मुख भे आई। पूछि उठे ब्रजकी कुशलाई ॥ दूतन ब्रजकी बात सुनाई। तुमहि मेटि पूज्यो गिरि जाई ॥ तुमहि निदारि गिरिवरहि बडाई । इह सुनतहि रहे देह कँपाई ॥ सूर श्याम इह बुद्धि उपाई । ज्यों जानै ब्रजमें यदुराई॥४०॥ग्वालन मोसों करी ढिठाई ।मोको अपनी जाति देखाई॥ तेंतिस कोटि सुरनको राई । तिहूं भुवनभरि चलत बडाई॥ साहबसों जोकरै धुताई । ताको नहिं कोऊ पतिआई ॥ इनि अपनी परतीति घटाई । मेरे बैर बांचिहैं भाई॥नई रीति इन अबहिं चलाई। काहू इनहिं दियो बहिकाई ॥ ऐसी मति इन अबकै पाई। काके शरन रहैंगे जाई॥इन दीनो मोको बिसराई। नंद आपनी प्रकृति गँवाई ॥ जानी बात बुढाई आई।अहिर जाति कोई न पत्याई ॥मातपितानहिं मानैं भाई ।जानिबूझि इन करी धिगाई॥मेरी बलि पर्वतहि चढाई।गिरिवरसहितैब्रजेहि बहाई॥ सूरदास सुरपति रिस पाई । कीडीतनु ज्यों पांख उपाई ॥ ४१ ॥ मोको निंदि पर्वतहि वंदत । चारौं कपट पंछि ज्यों फंदत॥मरनकाल ऐसी बुधि होई । कछू करत कछुवै वह जोई ॥ खेलत खात रहे ब्रजभीतर। नान्हे लोग तनक धन ईतर ॥ समयसमय बरषौं प्रतिपालौं। इनकी बुधि इनको अब घालौं ॥ मेरे मारतकौन राखिहैं। अहिरनकेमन यहै कांखिहैं॥जो मन जाकेसोइ फल पावै । नींब लगाइ आंब क्यों खावै ॥ विषके वृक्ष विषहि फल फलिहै । तामें दाख कहो क्यों मिलिहै॥अग्निवर्त देखै करनावै। कहा करै तेहि अग्नि जरावै ॥ सूरदास इह सब कोउ जानै। जो जाको सो ताको मानै ॥ ४२ ॥ पर्वत पहिले खोदि बहाऊं ।ब्रजजन मारि पताल पठाऊं॥फूलि फूलि जेहि पूजा कीन्हों ।नेक न राखौं ताको चीन्हों॥ नंद गोप नैनन यह देखैं। बडे देवताको सुख पेखैं ॥ निंदत मोहिं करी गिरिपूजा । जासों कहत और नहिं दूजा ॥ गर्व करत गोबर्धन गिरिको । पर्वतमाहं आइ वह किरको ॥ डोंगरिको बल उनहिं बताऊं । ता पाछे ब्रज खोदि बहाऊं॥राखौं नहींकाहु सब मारौं। ब्रज गोकुलकोखोजि निवारौं॥को जानै कहँ गिरि कहँगोकुल भुवपर नहिं राखौं उनको कुल ॥ सूरदास इह इंद्र प्रतिज्ञा। ब्रजबासिन सब करी अवज्ञा ॥४३॥ सुरपति क्रोधकियो अतिभारी । फरकत अधर नैन रतनारी ॥ भृतनि बोलाये देदै गारी।मेघनि ल्यावो तुरत हँकारी ॥ एक कहत धाए सौचारी । अति डरपे तनुकी सुधि हारी॥मेघवर्त जलवंत बोलावहु । सैन साजि तुरतहि लै आवहु॥ कापर क्रोध कियो अमरापति ।महाप्रलय जियजानि डरे अति॥ मेघनसों यह बात सुनाई ।तुरत चलौ बोलेसुरराई॥ सैनासहित बोलाए तुमको।रिस करि तुरत पठाए हमको ॥ बेगि चलौ कछु बिलम न लावहु । हमहिं कह्यो अबहीं लै आवहु॥ मेघवर्त सब सैन्य बोलाए । महाप्रलयके जे सब आए ॥ कछु हर्षे कछु मनहिं सकाने। प्रलय आहि की हमहिं रिसाने॥ चूक परी हमते कछु नाहीं । यह कहिकहि सब आतुर जाहीं ॥ मेघवर्त जलवर्त वारिवर्त्त । अनिलवर्त्त वज्रवर्त्त प्रवर्त्त॥ बोलत चले आपनी बानी।

प्रभुसन्मुख सब पहुँचे आनी॥ गर्जि गर्जि घहरातहि आए । देवदेव कहि माथ नवाए॥ सूरदास डरपत सब जलधर। हमपर क्रोध किधौं काहूपर ॥ ४४ ॥ चितवतहीं सब गए झुराई । सकुचि कह्यो कापर रिस पाई॥ क्षमा करहु आयसु हम पावैं । जापर कहौ ताहिपर धावैं ॥ सैनसहित प्रभु हमहिं बोलाए। आज्ञा सुनत तुरत उठि धाए॥ऐसोकवनजाहि प्रभु कोपे। जीवनामसबतुम्हरेइ रोपे ॥ सूर कही यह मेघन बानी। यह सुनिसुनि रिस कछुक बुझानी ॥ ४५ ॥ मेघनिसों बोले सुरराई। अहिरन मोसों करी ढिठाई॥ मेरी दीन्हीं करत बडाई। जानिबूझि मोहिं दियो भुलाई ॥ सदा करत मेरी सेवकाई । अब सेवत पर्वतकहँ जाई ॥ इही काज तुमको हँकराये। भली करी सैना लिये आए ॥ गाइ गोप ब्रज सबै बहावहु । पहिले पर्वत दौंदि ढहावहु॥जब यह सुनी इंद्रकी बानी। मेघन मन तब धीरज आनी ॥ सूरदास यह सुनि घन तमके। कापर क्रोध करत प्रभु जमके ॥४६॥ रिसलायक तापर रिस कीजे। यहि रिसते प्रभु देही छीजे॥ तुम प्रभु हमसे सेवक जाके। ऐसो कवन रहै तुम ताके॥ छिनहीमें ब्रज धोइ बहावैं।डूंगरको कहिं नाउं न पावैं ॥ आपु क्षमा करिये दिवराई। हम करिहैं उनकी पहुनाई ॥ यह सुनिकै हरपित चित कीन्हों। आदरसहित पान कर दीन्हों ॥ प्रथमहिं देहु पहार बहाई। मेरी बलि वोही सब खाई॥ सूर इंद्र मेघनि समुझावत। हरखि चले घन आदर पावत ॥४७॥ आयसु पाइ तुरतही धाये। अपनी सैना सबनि बुलाये॥ कह्यो सबनि ब्रजऊपर धावहु । घटाघोर करि गगन छपावहु॥मेघवर्त जलवर्तक आगे। और मेघ सब पाछे लागे॥ गरजिउठेब्रजऊपर जाई। शब्दकियो आघात सुनाई॥ब्रजके लोग डरे अतिभारी। आजु घटा दीखतिहै कारी॥देखतदेखत अति अधिकायो। नेकहिमें रवि गगन छपायो ॥ ऐसे मेघ कबहुँ नहिं देखे। अतिकारे काजर अवरेखे॥ सुनहु सूर ए मेघ डरावन। ब्रजवासी सब कहत भयावन ॥ ४८ ॥ गरजि गरजि ब्रज घेरत आवैं। तरपि तरपि चपला चमकावैं॥नर नारी सब देखत ठाढे।ये बादर परलयके काढे॥दरदरात घहरात प्रबल अति। गोपी ग्वाल भए औरैगति॥कहा होन अबहीं यह चाहत। जहँतहँ लोग इहै अवगाहत॥ खन भीतर खन बाहिरआवत। गगन देखि धीरज बिसरावत॥सूरश्याम यह करी पुजाई।तातेसुरपति चढ्यो रिसाई ॥४९॥फिरत लोग जहँतहँ बितताने। कोहैं अपनेकौन बिराने॥ग्वाल गए जे धेनु चरावन।तिनहिं पर्‌यो बनमांझ परावन॥गाइ बच्छकोऊनसँभारैं। जियकी सबको परी खँभारैं॥भागे आवत ब्रजही तनको। विपति परी अति बन ग्वालनको॥ अंध धुंध मग कहूं न सूझै।ब्रजभीतर ब्रजहीको बूझै ॥ जैसे तैसे ब्रज पहिचानत। अटकरही अटकर करि आनत॥खोजत फिरैं आपने घरको। कहा भयो भैया घोष शहरको॥रोवत डोलैं घरहि न पावैं। द्वारद्वार घरको बिसरावैं॥ सूर श्यामसुरपतिबिसरायो।गिरिकेपूजे यहफल पायो॥५०॥यमुनाजलहिगईंजोनारी। डारि चलीं शिर गागरि भारी॥देखो मैं बालक कत छांड्यो। एक कहत अंगन दधि मांड्यो॥एक कहत मारग नहिं पावति। एक सामुहे बोलि बतावति ॥ ब्रजबासी सब अतिअकुलाने। कालिहि पूज्यो फल्यो बिहाने।कहां रहेअबकुँवरकन्हाई।गिरिगोवर्धनलेहिंबोलाई॥ जेंवन सहसभुजाधरिआवै। अब द्वैभुज हमको देखरावै॥यहदेवता खातहीलौंके। पाछेपुनि तुम कौनकहौंके॥ सूरश्यामसपनोप्रगटायो। घरके देव सबनि बिसरायो ॥५१॥ गर्जत घन अतिही घहरावत। कान्ह सुनत आनंद बढावत ॥ कौतुक देखत ब्रजलोगनके। निकट रहत संगहि सँग जनके॥ यकसैंतत घरके सब बासन। लीने फिरत घरहिके पासन॥एक कहत जिनकी नहिं आसा। देखत सबै दुष्टके नाशा॥

सूर श्याम जानत ए गासा। कह पानी कह करै हुतासा ॥ ५२ ॥ मेघवर्त मेघनि समुझावत। बारबार गिरितनहिं बतावत ॥ पर्वतपर बरषहु तुम जाई। इहै कही हमको सुरराई ॥ ऐसे देहु पहार बहाई। नाउँ रहै नहिं ठौर जनाई ॥ सुरपतिकी बलि ये सब खाई ॥ ताके फल पावै गिरि-राई ॥ जेंवत कालि अधिक रुचि पाई। सलिल देहु जेहिं तृषा बुझाई॥ दिना चारि रहते जगऊपर। अब न रहन पावहु या भूपर ॥ सूर मेघ सुरपतिहि पठाये। ब्रजके लोगन तुमहिं बहाये ॥ ५३ ॥ बर्षतहैं घन गिरिके ऊपर। देखि देखि ब्रजलोग करत डर॥ ब्रजबासी सब कान्ह बतावत। महा-प्रलय जल गिरिहि ढहावत ॥ झरहरात झारत झारि लावत। गिरिहि धोइ ब्रज ऊपर आवत॥ बिकल देखि गोकुलके बासी। दरश दियो सबको अविनाशी॥ अविनाशीको दरशन पाये। तब सब मन परताप बढाये॥ नंद यशोदा सुतहित जानै। और सबैसुख अस्तुति गानै॥ बर्षत गिरि झरपत ब्रज ऊपर। सो जल जँहतँह पूरन भूपर॥ सूरदास प्रभु राखिलेहु अब। जैसे राखे अघावदन तब॥ ५४॥ राखिलेहु अब नंदकुमारा। गोसुत गाइ फिरत बिकरारा॥ वर्षत बूँद लगै जनु सायक। राखि लेहु अब गोकुलनायक ॥ तुमबिनु कौन सहाय हमारे। नंदसुवन अब शरण तुम्हारे ॥ शरणशरण जब ब्रजजन बोले। धीरवचनदैदै दुख मोले॥ यह बोले हँसि कृष्ण मुरारी। गिरि कर धरि राखौंनर नारी॥ सूर श्याम चितए गिरिवर तन। बिकल देखिकै गोसुत ब्रजजन ॥ ५५॥ गोवर्धन लीन्हो उचकाई। देखि बिकल नर नारि कन्हाई ॥ अपने सुख ब्रजजन बितताये। बुन्द कइक ब्रजपर बरषाये ॥ वै डरपत आपुन हरषत मन। राखे रहैं जहाँ तहँ ब्रजजन ॥ घरिक देखि मनहीं सुख दीन्हों। वामभुजा धरि गिरिवर लीन्हों॥ सूरश्याम गिरि करगहि राख्यो। धीरधीर सबसों कहि भाख्यो ॥ ५६॥ श्याम धरयो गिरि गोबर्धन कर। राखिलिए ब्रजके नारी नर ॥ गोकुल ब्रज राख्यो सब घर घर। आनँद करत सबै ताही तर॥ बरषत मुसलाधार मघवावर। बूंद न आवत नेकहु भूपर ॥ धार अखंडित बरषत झरझर ॥ कहत मेघ धौं बहु ब्रज गिरवर ॥ सलिल प्रलयको ढूंढत तरतर। बाजत शब्द नीरको धरधर॥ वै जानतजलजातहै दरदर। बीचहि जरतजात जल अंबर॥ सूरदास प्रभु कान्ह गर्वहर। बरषत कहत गयो गिरिको जर ॥ ५७ ॥ बोलि लिए सब ग्वाल कन्हाई। टेकहु गिरि गोबर्धनराई ॥ आज सबै मिलि होहु सहाई। हँसतदेखि बलराम कन्हाई॥ लकुटलिए कर टेकत जाई। कहत परस्पर लेहु उठाई ॥ बरषत इंद्र महाझरि लाई। अतिजल देखि सखा डरपाई॥ नँदनंदन बिन को गिरि धारै। ऐसे बल बिन कौन सँभारै॥ नरखतेगिरै कौन गिरिराखै। बारबार कहिकहि यह भाषै ॥ सूरश्याम गिरिवर कर लीन्हों। वर्षत मेघ चकृत मन कीन्हों ॥ ५८॥ बात कहत आपुसमें बादर। इंद्र पठाए करि हम आदर ॥ अब देखत कछु होत निरा-दर। बरषिवरषि ,घन भए मनकादर ॥ खीझत कहत मेघ सबहिनसों। बरषि कहा कीन्हो तबहिनसों ॥ महाप्रलयको जल कहँ राखत। डारिदेहु ब्रजपर कहा ताकत ॥ क्रोध सहित फिरि बर्षन लागे। ब्रजबासी आनँद अनुरागे॥ ग्वाल कहत तुम धन्य कन्हैया। वाम भुजा गिरि लिए उठैया॥ सूर श्याम तुमसरि कोउ नाहीं। बर्षत घन गिरि देखि खिसाहीं ॥ ५९ ॥ प्रलय मेघआए लैवाने। आपुसहीमें सबै रिसाने॥ सात दिवस जल बरषि बुढाने। चकृत भए तनसुरतिभुलाने॥ फिरि देखत जल कहां टराने। झुरिझुरिसबबादर बितताने॥ बूँद नहींघन नेक बचाने। जलद अपुनकोंधृग करि माने॥ फिरि सब चलेअतिहिबिकलाने। मनमें हारिमानि सकुचाने॥ सूरश्याम गोवर्धनराने। मूरख सुरपति अजहुँ न जाने ॥ ६०॥ मेघ चलेमुख फेरि अमरपुर। करी पुकार जाइ आगे सुर॥

भ्रमते टूटिगये सबके उर। जलबिनु भए सबै घन धूंधर। की मारौ कै शरण उबारौ। इममें कहा रह्यो अब गारौ। जहँतहँ बादर रोवत बोले। श्रम अपने प्रभुआगे खोले॥ सात दिवस नहिं मिटी लगारा।बरष्यो सलिल अखंडित धारा॥महाप्रलयजल नेक न उबरयो। ब्रजवासी नीके अब निदरयो॥वैसोइगिरि वैसेइ ब्रजबासी। नेक बूंदनहिं धरणिप्रगासी॥ सूर सुतन सुरपती उदासी। देखहु ए आए जलरासी॥ ६१॥ चकृत भयो ब्रज चाह सुनाई।पुनिपुनि बूझत मेघ बुलाई॥ कहांगयो जल प्रलयकालको। कहा कहौं सब तन बेहालको॥ कहा करैं अपनो बल कीन्हौं। व्याकुल रोइरोइ तब दीन्हौं॥ दंड एक बरषै मन लाइ। पूरण होत गगनलौं आइ॥ पर्वतमें है कोउ अवतार। सुरपति मन यह करतबिचार॥ सूर इंद्र सुरगण हँकराये। आज्ञा सुनत तुरत उठि आये॥ ६२॥ सुरपतिआगे भए सब ठाढे। चिंता सबहिनके मन बाढे॥ कौन काज सुरराज बोलाए। सकुचसहित पूछत ते आए॥कहा कहौं कछु कहत न आवै। मघवनकी गति सुरन बतावै॥ब्रजबासिन मोको बिसरायो। भोजन लै सब गिरिहि चढायो॥ मोको मेटि पर्वतहि थाप्यो॥ तब मैं थरथराय रिस कांप्यो॥ सूरदास यह सुरन सुनाई।या कारज तुमलिए बोलाई॥६३॥ सुरनकही सुरपतिके आगे। सन्मुख कहत सकुच हम लागे॥ सकुचत कत सो बात सुनावहु। नीके करि मोको समुझावहु॥नीकी भांति सुनौ सुरराई। ब्रजमें ब्रह्म प्रगट भए आई॥ तुम जानत जब धरणि पुकारी। पापहि पाप भई अति भारी॥ पौढे शेष संग श्री प्यारी। ते ब्रजभीतर हैं वपुधारी॥ ब्रह्मकथा कहि आदि पसारी।तिनसोंहमकीनीअधिकारी॥सूरदास प्रभु गिरि करधारी। यह सुनि इंद्र डरयो मन भारी॥६४॥यह मोको तबही न सुनाई। मैं बहुतै कीन्ही अधमाई॥ पूरन ब्रह्म रहे ब्रज आई। काहू तौ मोहिं सुधि न दिवाई। सुरनि कही नहिं करी भलाई। आजु कह्यो जब महत गँवाई॥ यह सुनि अमर गए सरमाई।सुनहु राज हम जानिनपाई॥ अबसुनिए आपुनमनलाई। ब्रजहि चलौ नहिं और उपाई॥वे हैं कृपासिंधु करुणाकर। क्षमा करहिंगे श्रीसुंदरवर॥ और कछू मनमें जिनि आनहु। हमजो कहैं सत्य करि मानहु॥ सूर सुरन यह बात सुनाई। सुरपति शरण चले अकुलाई॥६५॥ जब जान्यो ब्रज देव मुरारी। उतरिगई तब गर्वखुमारी॥ व्याकुल भयो डरयो जिय भारी।अनजानतकीन्ही अधिकारी॥ बैठिरहेते नहिंबनिआवै। ऐसोकोजोमोहिं बचावै॥ बार बार यह कहि पछितावै।जाउँ शरण बलमनहि धरावै॥जाइ परौं चरणन शिरधारौं। की मारौ की मोहि उधारौ॥ अमरन कह्योकरौ अवसारी। ऐरावतकोलेहु हँकारी॥ सूर शरणसुरपति चले धाई। लिये अमरगण संग लगाई॥६६॥ करत बिचार चल्यो सन्मुख ब्रज।लटपटात पग धरणि धरत गज॥कोटि इंद्र जाके रोमनि रज।ब्रज अवतार लियो माया तज॥ उतरि गगन पुहुमी पर आए। श्वेतवरन ऐरावति लाए॥ ब्रजबासी सब देखन पाए। चकृत भए मन सबहि भ्रमाए॥ कहत सुनी लोगन मुख बाता।येई हैं सुरपतिसुरज्ञाता॥ देखि सैन ब्रजलोग सकात। यह आयो कीन्हे कछु घात॥सूर श्यामकोजाइसुनाए।सुरपतिसैन साजि ब्रज आए॥६७॥निकट जानित्यागे वाहनको। सकुचत चले कृष्ण सन्मुखको। कछु आनंद कछुक मनमें दुख।हर्ष विषाद तक्योहरिसन्मुख॥ परयो धाइ चरणन शिरनाई। कृपासिंधु राखहु शरणाई॥किए अपराध बहुत बिन जाने। प्रभु उठाइलिए कछु मुसकाने॥श्रीमुख कह्यो उठहुसुरराजा।बदन उठाइ सकत नहिं लाजा॥ये दिन वृथा गएबिनकाजा।तुमको नहिं जान्यों ब्रजराजा॥सूर श्याम लीन्हे उरलाई।अशरनशरन निगम यह गाई॥६८॥ हँसि हँसि कहत कृष्णमुखबानी। हम नाहिन रिस तुमपर आनी॥ तुम कत

अति शंका जिय जानी । भली करी ब्रजराख्यो पानी ॥ यह सुनि इंद्र अतिहि सकुचान्यो । ब्रज अवतार नहीं मैं जान्यो ॥ राखिराखि त्रिभुवनके नाथा। नहिं मोते कोउ अवर अनाथा॥ फिरि फिरि चरण धरत लैमाथा। क्षमा करहु राखहु मोहिं साथा ॥ रविआगे खद्योत प्रकाशा। मणिआगे ज्यों दीपक नाशा॥ कोटि इंद्र रचि कोटि बिनाशा । मोहिं गरीबकी केतिक आशा॥ दीनवचन सुनि भवके बासा । क्षमा भयो जल परे हुतासा ॥ अमरापति चरणन तर लोटत । रही नहीं मनमें कहुँ खोटत ॥ उभय भुजा करि लियो उठाइ । सुरपति शीश अभय कर नाइ॥ हँसि दीन्ही प्रभु लोकबडाई । श्रीमुख कह्यो करौ सुख जाई॥ धन्यधन्य जनके सुखदाई । जय जय ध्वनि देवन मुख गाई ॥ शिव बिरंचि चतुरानन नारद ।गौरीसुत दोऊसँग शारद॥ रविशशि वरुण अनल यमराजा । आजु भए सब पूरन काजा॥ अशरनशरन सदा तुव बानो। यहलीलाप्रभु तुमही जानो ॥ मातासों सुत करै ढिठाई । माताफिरिताको सुखदाई ॥ ज्यों धरनीहल खोदि बिनाशै। सन्मुख सतगुण फलहि प्रकाशै ॥ कर कुठारलैतरुहिगिरावै। वहकाटैवहछायाछावै॥ जैसे दशन जीभ दलिजाइ । तब कासों सो कहै रिसाइ ॥ धनिब्रजधनिगोकुलवृन्दावन । धनि यमुना धनि लता कुंजघन॥ धन्य नंदधनिजननियशोदा।बालकेलिहरिकेरसमोदा॥ अस्तुति सुनि मनहर्ष बढ़ायो। साधुसाधुकहिसुरनिसुनायो॥ तुमहिजाइजबमोहिजगायो। तुम्हरेहि काजदेहधरिआयो ॥ तुमैं राखि असुरन संहारौं । तनु धरि धरणीभार उतारौं ॥ आवत जात बहुत श्रम पायो । जाहु भवन करि कृपा पठायो ॥ कर शिर धरि धरि चले देवगन । पहुँचे अमरलोक आनँद मन ॥ यह लीला सुर घरनिसुनाई । गाइउठीं सुरनारि बधाई ॥ अमरलोक आनंद भए सब। हर्षसहित आए सुरपति जब॥ सूरदास सुरपति अति हरष्यो । जैजैध्वनि सुमननि ब्रज वरष्यो॥ ६९॥ हरिकरते गिरिराज उतारचो । सात दिवसजलप्रलयसँभारचो ॥ ग्वाल कहत कैसेगिरिधारचो। कैसे सुरपति गर्व निवारचो॥ वज्रायुध जल वर्षि सिराने । परचो चरण तब प्रभुकरि जाने॥ हम सँग सदा रहतहैं ऐसे । यह करतूति करत तुम कैसे ॥ हम हिलिमिलि तुम गाइ चरावत । नंद यशोदा सुवन कहावत ॥ देखिरहीं सब घोष कुमारी । कोटि काम छबिपर बलिहारी ॥ कर जोरत रवि गोद पसारैं। गिरिवरपति प्रभु होहिं हमारैं ॥ ऐसो गिरि गोवर्द्धन भारी । कब लीन्हों कबधरचो उतारी ॥ तनकतनक भुज तनक कन्हाई । यह कहिउठी यशोदा माई॥ कैसे पर्वत लियोउच- काई ।भुज चापति चूमति बलिजाई॥ बारंबार निरखि पछिनाई। हँसतदेखि ठाढेबल भाई॥ इनकी महिमा काहु न पाई । गिरिवर धरचो इहै बहुताई ॥ एक एक रोम कोटि ब्रह्मंडा । रवि शशि धरणीधर नव खंडा ॥ यहि ब्रज जन्म लियो कै बारा। जहांतहां जल थल अवतारा ॥ प्रगटहोत भक्तहिके काजा । ब्रह्म कीट सम सबके राजा ॥ जहँ जहँ गाढ परै तहँ अवैं । गरुड छांडि तब सन्मुख धावैं ॥ ब्रजहीमें नित करत बिहार । सहज स्वभाव भक्त हितकार ॥ यह लीला इनको अति भावै। देह धरत पुनि पुनि प्रगटावै ॥ नेक तजत नहिं ब्रज नर नारी॥ इनके सुख गिरि धरत मुरारी॥ गर्ववंत सुरपति चढिआयो । वामकरज गिरिटेकि दिखायो॥ ऐसे हैं प्रभु गर्वप्रहारी । मुख चूमति यशुमति महतारी ॥ यह लीला जो नितप्रति गावैं॥ आपुन सिखि औरनि सिखरावैं ॥ सुनैं सीख पढि मनमें राखैं । प्रेमसहित मुखते पुनि भाखैं॥ भक्ति मुक्तिकी केतिक आसा। सदा रहत हरि तिनके पासा ॥ चतुरानन जाको रस मानै । शेष सहस मुख जाहि बखानै ॥ आदि अंत कोऊ नहिं पावै । जाको निगम नेत निति गावै ॥ सूरदास

प्रभु सबके स्वामी । शरन राखि मोहिं अंतर्यामी ॥७०॥ राग सोरठ ॥ तेरे भुजन बहुत बल होइ कन्हैया । बारबार भुज देखि तनकसे कहति यशोदा मैया ॥ श्यामकहत नहिंभुजापिरानी ग्वालन कियो सहैया ।लकुटन टेकि सबन मिलि राख्यो अरु बाबा नँदरैया॥मोसोंक्यों रहतो गोबर्धन अतिहि बडो वह भारी।सूरश्यामयहकहिपरबोध्योदेखिचकृतमहतारी ॥७१॥ राग देवगंधार॥ सबै मिलि पूजौ हरिकी बँहियाँ।जो नहिं लेत उठाइ गोबर्धनको बांचत ब्रजमहियाँ॥कोमल कर गिरि धरचो घोष पर शरद कमलकी नहियाँ ।सूरदास प्रभु तुमरे दरशको अनँद होत ब्रजमहियाँ ॥१॥ अध्याय ॥२८॥ अथ नंदको वरुण लेगये॥राग बिलावल ॥उत्तम शुक्र एकादशि आई। भक्ति मुक्ति दायक सुखदाई ॥ निराहार जलपान बिबर्जित । पाप न रहत धर्मफल अर्जित ॥ नारायणहित ध्यान लगायो । और नहीं कहुँ मन बिरमायो ॥ बासर ध्यान करत सब वीत्यो । निशि जागरण करन मन चीत्यो ॥ पाटंबर दिवि मंदिर छायो । शालिग्राम तहां बैठायो ॥ धूप दीप नैवेद्य चढ़ायो । पुहुपमंडली तापर छायो ॥ प्रेमसहित करि भोग लगायो ।आरति करि तब माथो नायो ॥ सादर सहित करी नँद पूजा । तुम तजि देव और नहिं दूजा॥तृतिय पहर जब रैनि गमाई। नंदमहरिसोंकहीबुझाई॥ दंड एक द्वादशी सकारे। पारनकी बिधि करौ सबारे ॥ यह कहि नंद गए यमुनातट। लैधोती बिधि कियो कर्म षट ॥ झारी भरि यमुनाजल लीनो। बाहिरजाइ देहकृत कीनो ॥ लै माटीकर चरन पखारी । अति उत्तमसों करी मुखारी ॥ अँचव लै पैठे नंद पानी । जल बाजत दूतन तब जानी ॥ बरुनपास लाए ततकालहिं।नंदहि बाँधि लैगये पतालहिं॥जान्यो बरुण कृष्णके तातहिं। मनहींमन हर्षित इहि बातहिं ॥ भीतर लै राखे नँद नीके । अंतरपुर महलनरानीके॥ रानीसबन नंदको देख्यो। धन्य जन्म अपनो करि लेख्यो॥ जिनके सुत त्रैलोकगुसाईं । सुर नरमुनि सबकेहैं साईं ॥ वरुण कही मन हर्ष बढाए। बडी बात भई नंदहि ल्याए॥ अंतर्यामी जानतबाता । अब आवत ह्वैहैं जगत्राता॥जाको ब्रह्मा अंत न पायो । जाको मुनि जन ध्यान लगायो॥जाको नेति निगम गावतहैं । जाको मुनिवर जन ध्यावतहैं ॥जाको ध्यानधरैं शिव योगी।जाको सेवतसुरपति भोगी ॥ जो प्रभुहैं जलथल सब व्यापक । जो हैं कंसदर्पको दापक ॥ गुणअतीत अविगत अविनाशी। सो ब्रजमें खेलत सुखराशी ॥धनि मेरे भृत नंदहि ल्याए।करुणामय अब आवत धाए ॥ महरि कही तब सब ग्वालनिको । बडी बार भइ नंदमहरको ॥ गए ग्वाल तब नंद बोलावन । देख्यो जाइ यमुनजलपावन॥जहँतहँग्वाल ढूँढि घर आए। धोती अरुझारी वै लाए॥मनमनशोच करेंअकुलाए। कहि यशुदासों नंद न पाए॥धोती झारी तटमें पाई।सुनत महरिमुख गयो सुखाई॥ निशा अकेले आजु सिधाए।काहू धौं जलचर धरि खाए॥यह कहि यशुमति रोइपुकारचो।मोंबरजत कत रैनिसिधारचो॥ब्रजजन लोग सबैउठिधाए॥यमुनाके तट नंद न पाए॥वनवन ढूँढत गाउँ मझारैं। नंदनंद कहि लोग पुकारैं॥खेलतते हरि हलधर आए। रोबत मात देखि दुख पाए॥ कत रोवतहै यशुदा मैया । पूछत जननीसों दोउ भैया॥ कहत श्याम जनि रोवहु माता। अबहीं आवतहैं नंद ताता॥मोसों कहिगए अबहीं आवन । रोवै मति मैं जात बोलावन ॥ सबके अंतर्यामी हैं हारि। लैगयो बांधि वरुन नंदहि धरि॥यह कारज मैं वाको दीन्हों।वाके दूतन नंदन चीन्हों॥ वरुनलोक तवहीं प्रभु आए।सुनत वरुन आतुर है धाए ॥ आनँद कियोदेखि हरिको मुख। कोटि जन्मके गए सबै दुख ॥ धन्य भाग्य मेरे बडे आजु । चरणकमल दरशन सुखकाजु॥ पाटंबर पाँवडे डसाए। महलन बंदनवार बँधाए ॥ रत्नखचित सिंहासन धारचो। तिहिपर कृष्णहि लै बैठारचो॥

अपने कर प्रभु चरण पखारे। जे कमला उरते नहिं टारे॥ जे पद परसि सुरसरी आई। तिहूंलोक है विदित बडाई॥ ते पद बरुन हाथ ले धोए। जन्म जन्मके पातक खोए॥ कृपासिंधु अब शरन तुम्हारी। इहि कारण अपराध बिचारी॥ आपु चले हरि नंदहि देखन। बैठे नंद राजवर भेषन॥ नृपरानी सब आगे ठाढीं। मुखमुख ते सब अस्तुति काढीं॥ पाँइन परीं कृष्णके रानी। धन्य जन्म सबहिन कहि मानी॥ धन्य नंद धनि धन्य यशोदा। धनि धनि तुमैं खिलावति गोदा॥ धनि व्रज धनि गोकुलकी नारी। पूरन ब्रह्म तहां बपु धारी॥ शेष सहस मुख बरनि न जाई। सहज रूप को करै बडाई॥ देखि नंद तब करत बिचारा। यह कोउ आहि बडो अवतारा॥ नंद मनहि अति हर्ष बढ़ायो। कृपासिंधु मेरे गृह आयो॥ बरुनहि दीनी लोक बडाई। तुम हौ एहि पतालके राई॥ कहा देत मोहिं लोक बडाई। बृंदावन रज करौ सदाई॥ बरुन थाप नंदहि ले आए। महर गोप सब देखन धाए॥ नंदहि बूझत हैं सब बाता। हम अति दुखित भए सब गाता॥ एकादशी कालिह मैं कीनों। निशि जागरन नेम यह लीनों॥ तीन पहर निशि जागि गँवाई। तब लीनी मैं महरि बुलाई॥ एकदंड द्वादशी सुनाई। ता कारण मैं करी चँडाई॥ एकदंड द्वादशि कैयो पल। रैनि अछत मैं गयो यमुनजल॥ गयो यमुन कटिलौं भीतर भरि। बरुनदूत लै गयो मोहिं धरि॥ तहँते जाइ कृष्ण मोहिं ल्यायो। हम कोउ बडे पुरुष है पायो॥ इनकी महिमा कोउ न जानै। बरुन कोटि मुख कहै बखानै॥ रानिन सहित परचो चरणनतर। बंदनवार बँधे महलनि घर॥ मेरो कह्यो सत्यकै मानों। इनको नर देही जिनि जानों॥ यशुमति सुनि चकृत इह बानी। कहत कहा यह अकथ कहानी॥ व्रज नर नारि सुनत जे गाथा। इनते हम सब भए सनाथा॥ मया मोह करि सबै भुलाए। नंदहि वरुनलोकते ल्याए॥ नंद एकादशि बरणि सुनाई। कहत सुनत सबके मन भाई॥ जो या पदको सुनै सुनावै। एकादशिव्रतको फल पावै॥ यह प्रताप नंदहि दिखराई। सूरदास प्रभु गोकुलराई॥ १॥ राग कान्हरो॥ नंदहिकहति यशोदारानी। मोहिं बरजत निशिगए यमुनतट पैठेजाइ अकेले पानी॥ अब तो कुशल परी पुण्यनिते द्विजन करौ बहुदान। बोलिलेहु बाजने बजावहु देहु मिठाई पान॥ गावति मंगल नारि बधाई बाजत नंददुआर। सुनहु सूर यह कहति यशोदा नंद बचे इहिबार॥ २॥ राग बिलावल॥ कहत नंद यशुमति सुनि बात। अब अपने जिय सोचु करति कत जाके त्रिभुवनपति से तात॥ गर्ग सुनाइ कही जो बाणी सोई प्रगट होतिहै जात। इनते नहीं और कोउ समरथ एईहैं सबहीके तात॥ मायारूप मोहिनी लगाइ डरि भूले सबै जे गाथ। सूर श्याम खेलतते आए माखनदै माँ हाथ॥ ३॥ राग गौरी॥ तबहिं यशोदा माखन ल्याइ। मैं मथिकै अबहीं धरि राख्यो तुम्हरे काज मेरे कुँवर कन्हाइ॥ माँगिलेहु एही बिधि मोसे मो आगे तुम खाहू। बाहेर जिन कबहू खैये सुत डीठि लगैगी काहू॥ तनकतनक कछु खाहु लाल मेरे ज्यों बढिआवै देह। सूर श्याम अब होहु सयाने बैरिनके मुखखेह॥ ४॥ अथ दानलीला॥ राग बिलावल॥ भक्तनके सुखदायक श्याम। इस्त्री पुरुष नहीं कछु नाम॥ संकटमें जिनि जहां पुकारे। तहां प्रगटि तिनको उद्धारे॥ सुख भीतर जिमि सुमिरन कीन्हों। तिनको दरश तहां हरि दीन्हों॥ दुख सुख में जो हरिको ध्यावै। तिनको नेक न हरि बिसरावै॥ चितदै भजै कौनहू भाउ। ताको तैसो त्रिभुवन राउ॥ कामातुर गोपी हरि ध्यायो। मन वच कर्महिसों मन लायो। षटऋतु तप कीनों तनु गारी। होहिं हमारे पति गिरिधारी॥ अंतर्यामी जानत सबकी। प्रीति पुरातन शाली तबकी॥ वसन हरे गोपिन सुख दीनो। नाना विधि कौतुकरस कीनो॥ युवतिनके इह ध्यान सदाई। नेक न अंतर होइ कन्हाई। घाट

बाट यमुनातट रोकै । मारग चलत जहाँ तहँ टोकै ॥ काहूकी गागरि धरि फोरै । काहूसों हँसि बदन सकोरै ॥ काहूको अंकम भरि भेंटै । कामव्यथा तरुणिनके मेटै॥ ब्रह्माकीटआदिकेस्वामी। प्रभुहैं निरलोभीनिहकामी॥भाववश्य सँगहीसँगडोलैं।खेलैंहँसैंतिनहिसोंबोलैं ॥ व्रजयुवती नहिं नेक बिसारैं।भवनकाजचित हरिसोंधारैं ॥गोरसलैनिकसीं व्रजबाला।तहँतिनिदेखेमदनगोपाला॥ अँग अँग सजि शृंगार वर कामिनि। चलीं मनहुयूथनि जुरि दामिनि॥कटिकिंकिनिनूपुरबिछियाधुनि । मनहु मदनके गजघंटा सुनि ॥ जाति माट मटुकी शिर धरिकै । मुखमुख गान करति गुण हरिकै ॥ चन्द्रबदनि तनु अति सुकुमारी । अपने मन सब कृष्ण पियारी ॥ देखि सबनि रीझे बनवारी । तब मनमें इक बुद्धि बिचारी ॥ अब दधि दान रचौं इक लीला। युवतिन संग करौं रस लीला ॥ सूर श्याम सँग सखन बोलायो। यह लीला कहि सुख उपजायो ॥ ५ ॥ राग जयतश्री ॥ सुनत हँसीं सुख होहि दान दहीको लाग्यो।निशिदिनमथुरा दधि बेचैंश्यामदानअबमांग्यो॥प्रात होत उठि कान्ह टेरि सब सखनि बोलाए । तेइतेइ लीने साथ मिले जे प्रकृति बनाए॥ डगरि गए अनजानही गह्यो जाइ वन घाट । पेडपेड तरुके लगे ठाटि ठगनको ठाट ॥ ६ ॥ इहां ग्वालि बनि बनि जुरीं सब सखी सहेली । शिरनि लिए दधि दूध सबै यौबन अलबेली ॥ हँसत परस्पर आपुमें चलीं जाहिं जिय भोर । तबहि आनि घातहि परीं छेकिलिए चहुँओर ॥ ॥७॥देखि अचानक भीर भई सब चकृत किशोरी । ज्यों मृगशावकयूथमध्य बागुरिचहुँओरी॥ शंकितह्वै ठाढी भईं हाथ पाँव नहिं डोल । मनहुँ चित्रकीसी लिखीं मुखहि न आवे बोल॥ ८॥ तब उठि बोले ग्वाल डरहु जिनि कान्ह दुहाई। ठग तस्कर कोउ नाहिं दान यदुपति सुखदाई॥ आवत निशि दिनही रहो श्यामराज भय नाहिं।जो छछु लागे दानकोतुमघाटिदेहुतेहिमाहीं९॥ तब हँसि बोली ग्वालि नाम जब कान्ह सुनायो। चोरी भरयो न पेट आनिअबदानलगायो॥तब उलटी पलटी फवी जब शिशुरहे कन्हाइ।अब ओहि कछुधोखे करौतो छिनकमाहँपतिजाइ १०॥तब उठि बोले कान्ह रही तुम पोच सदाई । महरि महर सुखपाइ शंकतजि करहु ढिठाई ॥ अब वह धोखो मेटिकै छांडिदेहु अभिमान । करि लेखो अब दानको दियहि पाइहो जान ॥ ११ ॥ तब हँसि बोलीं ग्वालि डरनि तुम तर्जी ढिठाई। बहुतै नंद निकाज भयो तुव तप अधिकाई ॥कालिहि घर घर डोलत खात दही चुगइ । राति कछू सपनों भयो प्रात भई ठकुराइ ॥ १२ ॥ भली कही नहिं ग्वालि बातको भेद न पायो । पितारचित धन धाम पुत्रके काजहि आयो ॥ तुमसे प्रजा वसाइकै राखेहैं इह पाइ। ते तुम हम सरबस भई अब मिलहु छाँडि चतुराइ ॥ १३ ॥ तब झुकि बोलीं ग्वालिबात किन कहो सम्हारे । ऐसो को बहिगयो प्रजाह्वै बसैतुम्हारे ॥ हमहूं तुमनृपकंसके बसं बास इक ठाउँ।देखो धौं घर जाइकै हम तजें तुम्हारो गाउँ॥ १४॥गाउँ हमारो छाँडि जाइ बसिहौ केहिकेरे।तीन लोकमें कौन जीव नाहिन बश मेरे ॥कंसहि को गनती गनै जाके हमहि कहाहु । दिय दान पे बांचिहो नातरु नहीं निबाहु॥ १५॥छोटे मुँह वडी बात कहो किनि आपु भँभारे। तीन लोक अरु कंस कबहिं वश भए तुम्हारे ॥ यह बाणी तिनसों कहो जो कोउ होइ अजान।ऐसे होहु जु रावरे हम जानति परवान॥ ११६॥लेखो जैहै भूलि कहूंकी बात चलावत। झूठी मिलवत आनि सुनत हमको नहिं भावत ॥हमसों लीजै दानके दाम: सबै परखाइ । थैली मांगि पठाइए पीतांबर फटिजाइ ॥ १७ ॥ काहेको सतरात बात में सांची भाषत । झूँठी सब तुम ग्वारि बात मेरी गहि नाखत ॥ कह्यो मानि लेखो करो देहु हमारो दान।सौंह बबा मोहिं

नंदकी ऐसी देउँ न जान ॥ १८ ॥ नंद दोहाई देत कहा तुम कंस दोहाई । काहेको अठिलात कान्ह छाँडौ लरिकाई । पहिली परिपाटी चलौ नई चलौ क्यों आजु। नृपति जानि जो पावई पुनिपै होइ अकाजु॥१९ ॥लरिका मोको कहति नाहिं देखी लरिकाई। पय पीवत संहारि पूतना स्वर्ग पठाई॥अघा बका शकटा तृणा केशीमुख कर नाइ।गिरि गोबर्धन कर धरयो यहमेरीलरिकाइ॥२०॥ सबै भली तुम करी हमैं अब कहत कहा हो। ऐसी बात करौ हो मोहन जैसी होइ लहाहो॥हँसी पलक द्वैचारिकी बीतनलागे याम ।बनमें राखी रोकिकै नारि पगई श्याम ॥२१॥ हँसी करतहौ तुमहि भली गइ मति ब्रजनारी । तुम हमको हम तुमहि दई बिन काजहि गारी॥ बात कहौ कछु जानिकै वृथा बढावत शोर।सदाजाहु चोरटी भई आजु परी फँद मोर ॥ ॥२२॥ माँगि लेहु दधि देहिं दानको नाउँ मिटावहु । देत दुहाई नंदराइकी दान न सदा लगावहु॥ हमहिं कहतहौ चोरटी आपु भयेहौ साहु । चोरी करत बडे भए मही छाक लै खाहु॥२३॥ दही लेतहौं छीनि दान अंगनिको लैहौं । लैहौं रूपहि दान दान यौवनपै कैहौं॥तुम सब कंचन भार लै मेरे मारग जाहु। महीदही दिखरावहू कैसे होत निबाहु॥२४॥जाहुभलेहो कान्ह दानअंग अँगको मांगत। हमरो यौवन रूप आंखि इनके गडि लागत॥सबै चलींझहराइकै मटुकीशीशउठाइ । रिसकरि कसि कटि पीतपट ग्वारि गही हरि धाइ॥२५॥मटुकी लई छिडाइ हार चोलीबंद तोरयो । भुजभरि धरि अंकवारि बांह गहिकै झकझोरयो॥माखन दधि लियोछीनिकै कह्यो ग्वाल सब खाहु ।मुख झगरति आनंद उर धिरवतहैं घर जाहु ॥२६॥देखो हरिको काम झटकि चोली बंद तोरयो।हमको भरि अंकवारि बांह धरि धरि झकझोरयो॥यशुमतिसों कहिये चलौ अब प्रगटी तरुनाइ । दधि माखन सब छीनिलै ग्वालनि दए खवाइ ॥२७॥ जाइ कहौ जू भली बात मैयाके आगे ।तुमको जोवन रूप दानदेती नहिंमांगै॥तुम जो कैहौजाइकै जननीनहींपत्याइ। सूर सुनहु री ग्वालिनी आवहुगी पछिताइ ॥ २८ ॥ राग काफी॥ ऐसे दान न मांगिये जो हमपै दियो न जाइ। वनमें पाइ अकेली युवतिनि मारग रोकत धाइ॥ घाट बाट अवघट यमुनातट बातैं कहत बनाइ । कोऊऐसो दान लेतहै कौने सिखै पठाइ॥हमनाहिंजानतितुम योंनाहींरैहौ गारी खाइ। जो रस चाहौ सो रस नाहीं गोरस पियहु अघाइ॥औरनसों लैलीजियेगिरिधरतबहमदेहिं बोलाइ।सूर श्याम कत करतअचगरी हमसों कुँवरकन्हाइ॥२९॥ राग नट॥दानलेहु देहु जानकाहेको कान्ह देतहौ गारी। जो कोऊ कह्यो करैरी हठि याही मारग आवै ब्रजनारी ॥ भली करी दधि माखन खायो चोली हार तोरि सब डारी।जोबन दान कहूं कोउ माँगत यह सुनि लाजन मारी ॥ होत अवार दूरि घर जैवे पैयां लागैं डरतिहैं भारी । हमहिं तुमहिं कैसोई झगरो सूर सुजान हम गँवारी ॥ ३० ॥रागभैरव॥ भोरहिते कान्ह करत मोसों झगरो । औरन छांडि परे हठ हमसों दिनप्रति कलह करत गहि डगरो॥ अन बोहनी तनक नहिं देहौं ऐसहि छीनि लेहु बरु सगरो । सब कोऊ जात मधुपुरी बेचन कौने दियो दिखावहुकगरो॥अंचलऐंचि ऐंचिराखतहौ जान देहु अब होतहै दगरो । मुख चूमति हँसि कंठ लगावति आपुहि कहति न लाल अचगरो॥ सूरसनेह ग्वारि मन अटक्यो छांडहु दियो परत नहिं पगरो । परम मगन ह्वै रही चितै मुख सबते भाग याहिको अगरो॥३१॥ रागकान्हरो॥दान लेहौं सब अंगनिको। अति मदगलित तालफलते गुरु इनि युग उरज उतंगनिको ॥ खंजन कंज मीन मृगशावक भवँर जवँर भ्रुवभंगनिको । कुंदकली बंधूक बिंबफल बर ताटंक तरंगनिको ॥ कोकिल कीर कपोत किसलता हाटक हंस

फनिगनिको । सूरदास प्रभु हँसि वश कीन्हों नायक कोटि अनंगनिको ॥३२॥ राग काफी ॥
कान्ह भलेहो भलेहो । अंगदान हमसों तुम मांगत उलटी रीति चलेहो॥कौन दोष कीन्हों
माखन छीनों काहेको तुम औरहि भाव मिलेहो। दान लेहु कछु और कहतहो कौन प्रकृतिही-
लेहो॥ हारे तोरचो चीरहि फारचो बोलत बोल हठीलेहो। ऐसो हाल हमारो कीन्हों जातीहुती दही
लेहो॥ हमहैंतुम्हरे गाउँकी कछुयाते ऐंड गही लेहो। सूरदास प्रभु और भए अब तुम नहिं होहु
पहीलेहो ॥३३॥ राग पूरबी॥तूमोसोंदान माँगिकिनु लैहो नंदकेलाला । ऐसीवातनिझगरोठानोंहो
मूरख तेरो कौन हवाला ॥ नंदमहरकी कानि करतहैं छांडिदेहु ऐसो ख्याला। सूरदास प्रभु मन
हरिलीन्हों हँसतहि ग्वारिनि भई बिहाला ॥३४॥ राग गूजरी ॥ सूधे दान काहे न लेत । और
अटपटी छांडि नंदसुत रहहु कँपावत बेत ॥ बृंदाबनकी बीथिनि तकि तकि रहत गुमान
समेत। इनि बातनि पति पावत मोहन जानत होहु अचेत ॥ अबलनि खैंकि खैंकि
पकरतहो मारग चलन न देत । सोई तुम कछु कहि न जनावत कहा तुम्हारे हेत ॥आजु न जानदेहुं री
ग्वालिनि बहुत दिननिको नेत । सूरदास प्रभु कुंजभवन चलि जोर उरनि नख देत॥ ३५ ॥
राग कान्हरो ॥जोबनदान लेउँगोतुमसों।जाके बल तुमबदतिन काहुहि कहा दुरावति हमसों ॥ ऐसो
धन तुम लियेफिरतिहो दानदेत सतराति। अतिहि गर्वते कह्यो न मोसों नितप्रति आवतिजाति॥
कंचन कलश महारसभारे हमहू तनक चखावहु । सूर सुनहु करि भार मरति कत हमहि न मोल
दिवावहु॥३६॥ कहा कहत तू नंदढिठौना।सखी सुनहु री बातैं जैसी करत अतिहिअचभौना॥
वदन सकोरत भौंह मरोरतनैननिमें कछु टोना ॥ जोबनदान कहाधों मांगत भई कहूं नहिं होना॥
हम कहें बात सुनहु मनमोहन कालि रहे तुम छौना । सूरश्याम गारी कहा दीजे इह बुधिहै घर
खोना॥३७॥राग पूरबी॥ऐसे जिन बोलहु नंदलाला । छाँडिदेहु अचरा मेरो नीके जानत औरसी
बाला ॥ बार बार मैं तुमहि कहतिहौं परिहैं बहुरि जंजाला । जोबनरूप देख ललचाने अबहींते
ए ख्याला ॥तरुणाई तनु आवन दीजे कित जिय होत बिहाला । सूरश्याम उरते कर टारहु टूटै
मोतिनमाला ॥ ३८ ॥ राग सुघराइ ॥ कहागति प्रकृति परी हो कान्ह तुम्हारी धरत कहा कत
राखत घेरे । जे बतियां तुम हँसि हँसि भाषत इहै चले चहुँ फेरे ॥अब सुनिहै इह बात आजुकी
बनमें कान्ह युवति सब नेरे। सकुचतिहैं घरघर घेराको नेक लाज नहिं तेरे ॥अतिहि अबेरभई
घर छांडे नित हँसत मुखतन हरि हेरे ।सूरदास प्रभु झुकत कहा हो चेरी है कहुकेरे ॥ ३९ ॥
रागटोडी॥कहा कहतु तुमसों में ग्वारिनि।दान देहु सब जाहु चली घर अतिकत होत गँवारिनि॥
कबहूं बातनहीं घर खोवति कबहुँ उठति दैगारिनि।लीन्हें फिरतिरूपत्रिभुवनको ऐनोखीबनिजा-
रिनि॥पेलाकरति देति नहिं नीके तुमहो बडी बंजारनि । सूरदास ऐसो गुन जाके ताके बुद्धि
पमारनि ॥४०॥पुरिया कान्हरो॥ कान अब नारि गह्योहै जानि। मांगत दान दहीको अबलौं लैकछु
अबरे ठानि ॥औरनिसों तुम कहा लियो है सो सब हमहि देखावहु आनी॥मांगतहैं दधि सो हम
देहैं कहत कहा यह बानी ॥ छांडि देहु अचरा फटि जैहै तुमको हम नीके पँहिचानी। सूर श्याम
तुम गति परि नागर नागरि अतिहि सयानी ॥४१॥ रागकान्हरो ॥ लैहौं दान अंग अंगनको ।
गोरे भाल लाल सेंदुरछवि मुक्ता बर शिर सुभग मंगको॥नकबेसरि खुटिला तरिवनको गरहमेल
कुच युग उतंगको । कंठ सिरी दुलरी तिलरी उर माणिक मोती हार रंगको ॥ बहु
नग लगे जरावकी अंगिया भुजा बहूटनि वलय संगको । कटि किंकिणिको दान

जु लैहौं तिन रीझत मन अनंगको। जेहरि पग जकरचो गाढे मनो मंद मंद गति यह मतंगको। जोबन रूप अंग पाटंबर सुनहु सूर सब यह प्रसंगको॥४२॥ राग टोडी॥ अरी यहढीठ कान्ह बोलि न जानै बरवस झगरो ठानै। जो भावत सोइ सोइ कहि डारत ऐसो निधरक नहिं कहूं देख्यो रूप जोबन अनुमानै। अंग अंगके दान लेत नहिं घरकेको पहिचानै। हम दधि बेचन जातिहैं मथुरा मारग रोकि रहत गहि अंचल कंसकी आन न मानै॥ ऐसी बात सँभारि कहौ हरि हम तुमको पहिचानै। सूर श्याम जो हमसों मांगत सो पैहौ कहूँ और त्रियनपै ये बातैं गढि ठानै॥ ४३॥ ॥ राग मलार॥ तोहिं कमरी लकुटिया भूलिगईपीतवसन दुहुँ करन बलासी। गोकुलकी गाइनि चरैबो छोंडि दीन्हीं कीन्हीं नवलबधू संग नवल नेह आयो परम बिलासी॥ गोरस चोराइ खाइ वदन दुराइ राखै मन न धरत वृंदाबनको मवासी। सूरश्याम तोहिं घरघर सब जानै इहां कोहै तिहारी दासी॥ ४४॥ वै बातैं भूलिगईं नंदमहरके सुवन करतहौ अचगरी। बनबन धेनु चरावत फिरत निशि बासर धावत बैन बजावत दानी भए गहि डगरी॥ बनमें पराई नारि गेकिराखी बनवारी जान नहीं देत ह्यां कौन ऐसी लंगरी। मांगत योबनदान भलेहो जूभले कान्ह मानतन कंसआन को बसिहै व्रजनगरी। कबहुं गहत दधि मटुकी अचानक कबहुं गहतहो अचानक गगरी॥ सूर श्याम जहँतहाँ खिझावत जो मनभावत दूरि करौ लंगर सगरी॥४५॥ राग पूरबी॥ तुमकबतेभयेहो जू दानी। मटुकी फोरि हार गहि तोरचो इन बातन पहिचानी॥ नंदमहरकी कान करतिहीं नातर करती मेहमानी। भूलिगए सुधि ता दिनकी जब बांधे यशोदा रानी॥ अबलौंसही तुम्हारी ढीठो तुम यह कहत डरानी। सूर श्यामकुंकछु करत न बनिहै नृप पावै कहुँ जानी॥ ४६॥ दधि मटुकी हरि छीनिलई। हार तोरि चोली बंद तोरचो जोबनकै बल ढीठ भई॥ ज्यों ही ज्यों हम सूधे बोलत त्यों त्यों अतिही सतरगई। बाद करति अबहीं रोवहुगी बार बार कहि दई दई॥ अंश परायो देहु न नीके मांगतही सब करत खई। सूर सुनहुं मैं कहत अज-हुँ लौं प्रीति करहु जो भई सो भई॥ ४७॥ राग काफी॥ कन्हैया हार हमारो देहु। दधि लवनी घृत जो कछु चाहो सो तुम ऐसेहि लेहु॥ कहा करैं दधि दूध तिहारो मोसों नाहीं काम। जोबनरूप दुराइ धरचोहै ताको लेति न नाम॥ नीके मन है मांगत तुमसों बैर नहीं उर नाखति। सूर सुनहु री ग्वारि अयानी अंतर हमसों राखति॥४८॥ राग गौरी॥ हमको लाज न तुमहि कन्हाई। जो हम एहि मारग सब आई तौ तुम हमसों करत ढिठाई॥ हाहा करतिपाँइतुम लाग-ति रीती मटुकी देहु मँगाई। काको बदन प्रातही देख्यो घरते हम छींकतहु न आई॥ उतहि जात हीं सखी सहेली मेंही सबको इतहि फिराई। सूरश्यामअधमईहमहि सब लागैतुमहिभलाई ॥४९॥ राग बिलावल॥ मैं भरुहाये लागतहौं। कनककलशरसमोहिंचखावहु जो मैंतुमसोंमागतहौं॥ वोही ढंग तुमरहे कन्हाई उठीं सबै झिझिकारि। लेहुअशीशसबनकेमुखते कतहि दिवावतगारि॥ नीके देहु हार दधि मटुकी बात कहत नहिंजानत। कैहैं जाइ यशोदासों प्रभु सूर अचगरी ठानत॥ ॥५०॥ हार तोरि बिथराइ दियो। मैया पै तुम कहन चली कत दधिमाखनसब छीनिलियो॥ रिस करि धाइ कंचुकी फारी अब तो मेरो नाउँ भयो। कालि नहींएहिमारग पैहौ ऐसो मोंसोंबैर ठयो॥ भलीबात घरजाहु आजु तुम मांगत जोवन दान नयो। सूरदास मुखही रिस युवतिन उर उर अंतर काम जयो॥५१॥ राग नट॥ मोहिं तोहिं जानिबी नँदनंदन जब वृंदाबनते गोकुल जैबो। सखिन कहति छीनिले मेरी मटुकिया गारी दैबो॥ मुहँमोरिबोबाउअधिकाई सोलैबो। एक गाँउ

एकहि सँग बसिये कैसे री यहि मग ऐबो ॥ युवतिनको मुख देखि रहतहौ ललचाने कैसेपैबो। कैसे हार तोरि मेरो डारचोबिसरतनहिं रिसकरधैबो ॥ सुन री सखी ढीठ नँदनंदन चलोसबै यशोमतिसों हम लरिबो।सूर श्याम दधि माखनलीन्हों हारनदेहो बैरसमुझिकहिबो॥५२॥राग सारंग॥ तैं कत तोरचो हार नौसरिको।मोती बगरि रहे सब बनमें गयो कानको तरिको॥ एअवगुणजुकरत गोकुलमें तिलक दिये केसरिको॥ढीठगुवालदहीकेमाते वोढनहार कमरिको॥जाइ पुकारैंयशुमति आगे कहत जो मोहन लरिको । सूरज श्याम जानि चतुराई जेहि अभ्यास महुवरिको ॥ ५१॥ राग बिलावल॥सुनहु श्याम हम अब चलीं यशोमतिके आगे। तौ वदियो हमको अबहीं तुमको धरि माँगे ॥ इक इक करि बिथराइके मोतिन लर तोरचो । यह सुनि सुनि मुसकाइके हरि भौंह सकोरचो ॥ चलीं महरिपै सुंदरी उरहनले हरिको । अबहींबोलिबँधाएलंगरयहलरिको॥गईंनंद घरको सबै यशुमति जहां भीतर । देखि महरिको कहिउठीं सुत कीन्हों ईतर ॥ मारग चलन न पाइए री हरिके आगे । सूरदास प्रभु त्रासते ब्रज तजि हम भागे॥५४॥ अपने री कुँवर कन्हाईसों माई तू कहति काहि न। आनकी आन कहत नित हमसों उन मनकी कछु जानति नाहिन ॥ बहुत बचति ब्रजराजकी कानि न हिसति कहां ह्यांते जाहिन। ऐसो भयो कुल कौन तिहारे यौवन दान लियो मोपै चाहिन ॥ अतिउत्पातकहांलौंकीजै पीपरको बनदाहिन । आनकी आन कहत नित हमसों उन मनकी कछुजानतनाहिंन ॥ काहूबिलोकनिवानि सिखायो मैं अब पहिचानति ताहिन । बूझिधौं देखिह्यांकौनसयानीहरिमेरोमन चुरवायो कापहिचाहिन॥ जाइ नमिलोसूरकेप्रभुकोअरुझेनसोंअरुझाहिन ॥५५॥ राग सुघडाई ॥ यशुमति तेरोबारो अतिहि अचगरो । दूध दही माखन ले ढारि दियो सगरो ॥ भोरहोत नितप्रति करैहै झगरो । ग्वालबाल संग लये जाइ गहे डगरो ॥ हम तुम एक सम कौन काते अगरो । लियो दियो कछु सोऊ डारि देहु झगरो॥सूरदास प्रभु सब गुणनि अगरो । और कहूंजाइरहैंछांडिब्रजबगरो ॥ ५६ ॥राग सूही॥मैंतुम्हरे मनकी सब जानी । आपु सबै इतरातिहैदोपन देत श्यामको आनी॥ मेरो हरि कहँ दशहि वरपको तुम्हरी यौवन मद उदमानी । लाज नहीं आवति इन लँगरिनि कैसे धौं कहि आवति बानी ॥ आपुहि हार तोरि चोली बँद उर नखघात बनाइ निशानी । कहाँ कान्हकी तनक अँगुरियां यह कहि बार बार पछिनानी ॥ देखहु जाइ और काहूको हरिपर सबै रहत मँडरानी । सूरदास प्रभु मेरोनान्होतुमतरुणीडोलतिअठिलानी॥५७॥राग जयतश्री ॥ जबदधि बेचन जाहिं तबमारगरोंकि रहै।ग्वालिनि देखति धाइरी अंचल आइ गहै॥ अहोनंदकी नारि गारि ऐसी क्योंदीजै।एकठौरबस वास सुनहु ऐसी नहिं कीजे ॥ सुत दैसोतुमहूंतोखीझतिकोरैहै यहिगाँउ।जैहैंब्रजतजि अनतही बहुरि सुनो नहिं नाउँ ॥५८॥कहाकहति डरपाइ कछू मेरो घटिजैहै। तुम बाँधति आकाश बात झूठी को सैहै॥ यौवन दिन द्वै सबहिको तुमऐसीइतराति । झूठेहि कान्हहि दोपदैतुमहींब्रज तजि जाति ॥ ५९ ॥ हम यह झूठीकहीओरसोंबूझि न देखौ । हमसों माँगतदानकरहिकौडिनकोलेखौ॥ मटुकी डारे शीशते मर्कट लेइचुलाइ। महाढीठमाने नहींसखन सहित दधिखाइ॥ ६० ॥ ग्वारिन ढीठि गँवारि कान्ह मेरो अति भोरो ।तेरे गोरस बहुत भयो री मेरे थोरो॥ बोलत लाज नहीं तुमहिं सबही भई गँवारि । ऐसी कैसे हरि करे कतहि बढावति रारि॥ ६१॥ अहो यशोदा महरि पूतकी मानी पीवे। हमहिं कहाहै होत बहुत दिन मोहन जीवै ॥ सुतके कर्म न जानईकरे आपनी टेक । दश गैयन करि कोउ अधिक अहिर जाति सब एक ॥ ६२ ॥ कहा गैयनकी चली कहा

अब चली जातिकी। चकृत भई मैं तुमहिं कहत अनमिलत बातकी ॥ जैसी मोसों कहतिहौ को सुनिकै पतिआइ। कौन प्रकृति तुमको परी मोहिं कहौ समुझाइ ॥६३॥ अहो यशोदा बात कालिकी सुनी कि नाहीं। बंशीबटकी छांह गही हरि मेरी बाहीं। हौं सकुचनि बोली नहीं बहु सखियनकी भीर। गहि बहियां मोहि लै चले हंससुताके तीर ॥ ६४ ॥ येरी मदमत ग्वालि फिरति जोबन मदमाती। गोरस बेचन हारि गूजरी अति इतराती॥ अनमिलती बातैं कहति सुनिपैहै तेरो नाँह। कहँ मोहन कहँ तू रहै कबहि गही तेरी बाँह ॥ ६५ ॥ सांची सब मैं कहति झूठ नहिं कहिहौं तुमसों। सुतकी राखति कानि बिलग मानतिहौ हमसों ॥ कुंजनमें क्रीडा करै मनु वाहीको राज। कंस सकुच नहिं मानई रहत भयो शिरताज ॥ ६६ ॥ ऐसी बातैं कहति मनहुँ हरि बरष तीसको। दुसह सह्यो नहिं जाइ नेक डर करहु ईशको ॥ धनि धनि तुम यह कहतिहो मोको आवै लाज। माखन मांगत रोइकै तेहि दोष देत बिन काज ॥ ६७: ॥ हरि जानतहैं मंत्र यंत्र सीखो कहुँ टोना। बनमें तरुण कन्हाइ घरहि आवत है छोना ॥ एक दिवस किन देखहू अंतर रहौ छपाइ। दशको है धौं बीसको नैननि देखौ जाइ॥६८॥जाहु चली घर आपने नैननि भरि हम देख्योहै। तीस बीस दश बरष एक दिन सब लेख्योहै॥ डीठि लगावति कान्हको जरैंबरैं वै आंखि। धिंगरि धींग चाचरि करैं मोहि बुलावति साखि॥६९॥धींग तुम्हारो पूत धींगरी हमको कीन्हीं। सुतको हटकति नाहिं कोटि इक गारी दीन्हीं॥महतारी सुत दोउ बने वे मग रोकत जाइ। इनहिं कहन दुखआइये ये सबको उठतिरिसाइ॥७०॥कहा करौं तुमबात कहूंकी कहूं लगावति। तरुणिन इहै सोहात मोहिंकैसे यह भावति॥बहुत उरहनोमोहिं दियो अब ऐसो जनि देहु। तुम तरुणी हरि तरुण नहिं मन अपने गुणिलेहु॥ निरउत्तर भईं ग्वालि बहुरि कहि कछू न आयो। मन उपज्यो कछु लाज गुप्त हरिसों चित लायो ॥ लीला ललित गोपालकी कहतसुनत सुखदाइ। दान चरित सुख देखिकै सूरदास बलिजाइ॥ ७२ ॥ १०३६ ॥ राग रामकली ॥ नँदनंदन इक बुद्धि उपाई। जे जे सखा प्रकृतिके जाने ते सब लए बोलाई॥ सुबल सुदामा श्रीदामामिलि और महर सुत आए। जो कछु मंत्र हृदय हरिकीन्हौं ग्वालन प्रगट सुनाए ॥ ब्रजयुवती नितप्रति दधि बेचन बनि बनि मथुरा जाति। राधा चंद्रावलि ललितादिक बहु तरुणी यकभांति॥ कालिंदी-तट कालि प्रातही द्रुम चढि रहौ लुकाइ। गोरस लै जबहीं सब आवैं मारग रोकहु जाइ ॥ भली बुद्धि इह रची कन्हाई सखनि कह्यो सुख पाइ। सूरदास प्रभु प्रीति हृदयकी सब मनगए जनाइ ॥ ॥ ७३ ॥ प्रातहिउठीं गोपकुमारि। परस्परबोलीं जहां तहाँ यह सुनी बनवारि ॥ प्रथमहीं उठिसखा आये नंदके दरबार। आइयेउठिकै कन्हाई कह्योबारंबार॥ग्वालटेर सुनत यशोदा कुँवरदियोजगाइ। रहे आपुन मौन साधे उठे तब अकुलाइ ॥ मुकुट शिर कटि कसि पितांबर मुरलि लीन्हीं हाथ। सूर प्रभु कालिंदी तट गए सखा लीने साथ ॥ ७४ ॥ राग रामकली ॥ भली करी उठि प्रातहि आए। मैं जानत सब ग्वारि उठी जब तब तुम मोहिं बोलाए॥ अब आवति ह्वैहैं दधि लीन्हें घर घर ते ब्रजनारी। हँसे सबै कर तारी दैदै आनँद कौतुक भारी॥प्रकृति प्रकृति अपने ढिग राखे संगी पांच हजार। और पठाइ दिये सूरज प्रभु जे जे अतिहि कुमार ॥७५ ॥ राग बिलावल ॥ हँसत सखनियहकहत कन्हाई। जाइ चढौ तुम सघन द्रुमनि पर जहँ तहँ रहौ छिपाई ॥ तबलौं बैठिरहौ मुहँ मूंदे जब जानहु अब आई। कूदिपरोगे द्रुमनि द्रुमनिते दैदै नंद दोहाई ॥चकित होहिं जैसे युवती गण डरनि जाहिं अकुलाई। बेनु बिषान मुरलि ध्वनि कीजो शंख शब्द घहनाइ ॥ नितप्रति जाति

हमारे मारग इह कहियो समुझाई । सूर श्याम माखन दधि दानी यह सुधि नाहिन पाई ॥ ७२ ॥ श्याम सखन ऐसो समुझावत । ब्रजबनिता ललितादिक इनको देखि बहुत सुख पावत ॥ कालि जात यहि मारग देखी तब यह बुद्धि उपाई।अब आवति ह्वैहैं बनि बनि सब मोहीसों चितलाई॥ तुमसों कछू दुरावत नाहीं कहत प्रगटकरि बात। सुनहु सूर लोचन मेरे बिनु राधा मुख अकुलात॥ ॥ ७७ ॥ ब्रजयुवती मिलि करति बिचार । चलो आजु प्रातहि दधि बेचन नित तुम करति अबार । तुरत चलो अबहीं फिरि आवैं गोरस बेचि सवारे। माखन दधि घृत साजतिमटुकी मथुरा जान बिचारे ॥ षटदशसहस शृंगार करतिहैं अंग अंग सब निरखि सँवारति। सूरदास प्रभु प्रीति सबनिकी नेकन हृदय बिसारति॥७८॥ राग धनाश्री ॥ युवती अंग शृंगार सँवारति। बेनी गुथि मांग मोतिनकी शीशफूल शिर धारति ॥ गोरे भाल बिंद सेंदुरपर टीका धरयो जराउ। वदन चंद्र पर रवि तारागण मानों उदित सुभाउ॥सुभग श्रवण तरिवन मणि भूषित यह उपमा नहिं पार। मनहुँ काम रचि फंद बनाए कारण नंदकुमार ॥ नासा नथ मुकुताकी शोभा रह्यो अधर तट जाइ। दाडिम कनशुक लेत बन्यो नहिं कनक फंद रह्यो आइ ॥ दमकत दशन अरुण धरणीतर चिबुक डिठौना भ्राजत।दुलरी अरु तिलरी बन्द तापर सुभग हमेल बिराजत॥ कुच कंचुकी हार मोतिन अरु भुजन बिजयठे सोहत । डारन घुरी करनफुंदना बनि कंज पास अलि जोहत ॥ क्षुद्रघंटिका कटि लहँगा रंग तन तनसुखकी सारी। सूर ग्वालि दधि बेचन निकरी पग नूपुर-ध्वनि भारी॥७९॥ राग नटनारायणी ॥दधि बेचन चलीं ब्रजनारि ।शीश धरि धरि माट मटुकी बडी शोभा भारि॥निकसि ब्रजके गईं गोंडे हरष भई सुकुमारि । चलींगावति कृष्णके गुण हृदय ध्यान बिचारि॥ सबनके मनजो मिलैं हरि कोउ न कहति उघारि। सूर प्रभु घट घटके व्यापी जानि लई बनवारि ॥ ८० ॥ राग जयतश्री ॥ हरिदेखी युवती आवतिजब। सखन कह्योतुमजाइचढौ द्रुम बैठि रहौ दुरि जहां तहां सब ॥ चढे सबै द्रुम डार ग्वाल गण सुनत श्याम मुख बानी। धोखे धोखे रहे सबै हम श्याम भली यह जानी ॥ नव सत साजि शृंगार युवति सब दधिमटुकी लिये आवत । सूर श्याम छबि देखत रीझे मन मन हरष बढावत॥८१॥ राग धनाश्री॥सखा और संगलिये कन्हाई।आपुन निकसि गये आगेको मारग रोक्यो जाई॥यहि अंतर युवती सब आईं बन लाग्यो कछु भारी । पाछे युवति रहीं तिन टेरत अबहिं गई तुम हारी ॥ तरुणी जुरि यक संग भईं सब इत उत चलीं निहारत।सूरदास प्रभु सखा लिये सँग ठाढे इहै बिचारत॥८२॥ राग गौरी ॥ग्वारिन तब देखे नँदनंदन।मोर मुकुट पीतांबर काछे खौरि किये तनु चंदन॥तबयह कह्यो कहाँ अबजैहौ आगे कुँवर कन्हाई।यह सुनि मन आनंद बढायो मुख कहैं बात डराई॥कोउ कोउ कहति चलौ री जाई कोउ कहैं फिरि घर जाई। कोउ कोउ कहति कहा करिहैं हरि इनको कहा पराई ॥ कोउ कोउ कहति कालिही हमको लूटि लई नँदलाल। सूर श्यामके ऐसे गुणहैं घरहिफिरो ब्रजबाल ॥ ८३ ॥ राग सोरठ॥ग्वालन सैन दियो तब श्याम । कूदि कूदि सब परहु द्रुमनते जात चली घर बाम॥सैन जानि तब ग्वाल जहां तहँ द्रुम द्रुम डार हलाए। बेनु बिषान शंख मुरली ध्वनि सब एक शब्द बजाए ॥चकृत भईं तरु तरु प्रति देखति डारनि डारनि ग्वाल । कूदि कूदि सब परे धरणिमें घेरि लईं ब्रजबाल ॥नित प्रतिजातदूध दधि बेचन आजुपकरि हम पाई।सूर श्यामको दान देहु तब जैहौ नंद दोहाई ॥ ८४ ॥ राग नट ॥ ग्वारिनि यह भली नहिंकरति। दूध दधि घृत नितहि बेचन दान देत डरति ॥ प्रातही लै जाति गोरसबेचि आवति राति । कहो कैसे जानिये

तुम दान मारे जाति॥ कालिंदी तट श्याम बैठे हमहिं दियो पठाय। यह कह्यो हरि दान माँगहु जाति नितहि चुराइ ॥ तुम सुता वृषभानुकी वै बडे नंदकुमार । सूर प्रभुको नाहिं जानति दान हाट बजार ॥ ८५ ॥ राग कान्हरो ॥ यह सुनि हँसीं सकलब्रजनारी । आनि सुनहु री बात नई इक सिखयेहैं महतारी ॥ दधि माखन खैबेको चाहत मांगि लेहु हम पास । सूधे बात कहौ सुखपावैं बांधन कहत अकास ॥ अब समुझी हम बात तुम्हारी पढे एक चटशार। सुनहु सूर यह बात कहौ जिनि जानति नंदकुमार ॥ ८६ ॥ राग धनाश्री॥बात कहति ग्वालिनि इतराति। हम जानी अब बात तुम्हारी सूधे नहिं बतराति ॥ इहै बडो दुख गाँव बासको चीन्हे कोउ न सकात । हरि मांगतहैं दान आपनो कहत मांगि किन खात ॥ हाट बाट सब हमहिं उगाहत अपनो दान जगात।सूरदासको लेखो दीजे कोउ न कहै पुनि बात ॥८७ ॥ राग कान्हरो ॥ कौन कान्ह को तुम कहा मांगत। नीके करि सबको हम जानति बातें कहत अनागत ॥ छांडिदेहु हमको जनि रोकहु वृथा बढावति रारि। जैहै बात दूरि लौं ऐसी परिहै बहुरि खँभारि ॥ आजुहि दान पहरि ह्यां आए कहां दिखावहु छाप ।सूर श्याम वैसेहि चलौ ज्यों चलत तुम्हारोबाप ॥८८॥राग कान्हरो॥ कान्ह कहत दधिदान न दैहौ।लेहौं छीनि,दूध दधि माखन देखतही तुम रैहौ ॥ सब दिनको भरि लेहुँ आजुही तब छांडौं मैं तुमको। उघटतिहौ तुम मात पितालौं नहिं जानो तुम हमको॥ हम जानतिहैं तुमको मोहन लैलै गोद खिलाए । सूर श्याम अब भए जगाती वै दिन सब बिसराए ॥ ८९ ॥ अजहूं मांगिलेहु दधि देहौं । दूध दही माखन जो चाहो सहज खाहु सुख पैहौं ॥ तुम दानीह्वै आए हमपर यह हमको नहिं भावत। करौ तहीं लै निवहै जोई जाते सब सुख पावत ॥ हमको जानदेहु दधि बेंचन पुनि कोउ नाहिन लैहै। गोरस लेन प्रातही सब कोउ सूर घरचो पुनि रैहै॥ ९०॥ राग कान्हरो ॥दान यिये बिन जान नपैहो। जब देहौ उगाइ सब गोरस तबहिं दान तुमदैहो ॥ तुमसों बहुत लेनहै मोको यह लै ताहि सुनावहु । चोरी आवति बेंचि जाति सब पुनि गोरस बहुरो कहँ पावहु ॥ मांगत छाप कहा दिखराऊं को नहिं हमको जानत। सूरश्याम तब कह्यो ग्वारिसों तुम मोको क्यों मानत॥ ९१ ॥ राग रामकली ॥कहा हमहिंरिसकरत कन्हाई। यह रिस जाय करौ मथुरापर जहां है कंस बसाई ॥ हम अब कहां जाय गुहरावैं बसत तुम्हारे गाउँ। ऐसे हाल करत लोगनके कौन रहै यहि ठाउँ ॥ अपने घरके तुम राजा हो सबको राजा कंस । सूर श्याम हम देखत ठाढे अब सीखे ए गंस ॥९२॥ राग देवगंधारी॥कापरदानपहिरि तुम आए। चलहु जु मिलि उनहींपै जैएजिन तुम रोकन पंथ पठाए ॥ सखासंग लीन्हेजु संति-के फिरत रैनि दिन बनमें धाए । नाहिन राज कंसको जान्यो बाट रोकते फिरत पराए ॥ लीन्हे छीनि बसन सबहीके सबही लै कुंजनि अरुझाए । सूरदास प्रभुके गुण ऐसे दधिके माट भूमि ढरकाए ॥ ९३ ॥ राग सूही ॥ जाइ सबै कंसहि गुहरावहु । दधि माखन घृत लेन छँडाए आजुहि मोहि हजूर बोलावहु ॥ ऐसेको कह मोहिं बतावति पल भीतर गहि मारौं। मथुरापतिहि सुनोगी तुमहीं जब वाके धरि केश पछारौं ॥ बार बार दिन हमहिं बतावत अपनो दिन न बिचारो। सूर इंद्र ब्रज जबहिं बहावत तब गिरि राखि उबारो ॥९४ ॥ राग गूजरी ॥ गिरि वर धरचो आपने घरको। ताहीके बल तुम दान लेतहौ रोंकि रहतहौ हमको ॥ अपनेही मुख बडे कहावत हमहू जानति तुमको। यह जानति पुनि गाइ चरावत नितप्रति जातहौ बनको ॥ मोर मुकुट मुरली पीतांबर देखो आभूषन सब बनको ।सूरदास कांधे कामरिहू जानति हाथ

लकुट कंचनको ॥ ९५ ॥ राग बिलावल ॥ यह कमरी कमरी कारि जानति । जाके जितनी बुद्धि हृदय-
में सो तितनी अनुमानति ॥ या कमरीके एक रोमपर वारौं चीर नील पाटंबर ॥ सो कमरी तुम निंदति
गोपी जो तीनिलोक आडंबर ॥ कमरीके बल असुर संहारे कमरिहिते सब भोग । जाति
पांति कमरी सब मेरी सूर सबहि यह योग ॥ ९६ ॥ राग बिलावल ॥ धनि धनि यह कामरिहो मोहन
श्यामलालकी । इहै ओढि जात बनहि इहै सेज करतहौं तुम मेह बूंद निरवारन इहै छांह घामकी ॥ इहै
उठि गुन करतहै पुनि शिशिर शीत इहै हरति गहनेलै धरति ओट कोट वामकी । इहै जाति इहैपाँति
परिपाटी यह सिखवति सूरदास प्रभुके यह सब विसरामकी ॥ ९७ ॥ अब तुम सांची बात कही ।
एतेपर युवतिनको रोकत मांगत दान दही ॥ जो हम तुमहि कह्यो चाहतही सो श्रीमुख प्रगटायो ।
नीके जाति उघारि आपनी युवतिन भले हँसायो ॥ तुमकमरीके ओढनहारे पीतांबर नहिं छाजत ।
सूरदास कारेतनु ऊपर कारी कमरी भ्राजत ॥ ९८ ॥ मोसों बात सुनहु व्रजनारि । एक उप-
खान चलत त्रिभुवनमें तुमसों आजु उघारि ॥ कबहूँ बालक मुँह न दीजिये मुँह न दीजिये नारि ।
जोइ मनकरै सोइ करिडारै मूँड चढतहै भारि ॥ बात कहत अठिलात जाति सब हँसत देति कर
तारि । सूर कहा ए हमको जानैं छाछिहि बेचनहारि ॥ ९९ ॥ यह जानति तुम नंदमहरसुत ।
धेनु दुहत तुमको हम देखति जबहि जात खरिकहि उत ॥ चोरी करत रहौ पुनि जानति घर घर
ढूँढत भांडे । मारग रोकि भये अब दानी वै ढँग कबते छांडे ॥ और सुनहु यशुमति जब बांधे तब
हम कियो सहाइ ॥ सूरदास प्रभुयह जानति हम तुम व्रज रहत कन्हाइ ॥ ११०० ॥ राग आसावरी ॥ को
माता को पिता हमारे । कब जनमत हमको तुम देख्यो हँसी लगत सुनि बात तुम्हारे ॥ कब माख-
न चोरी करि खायो कब बांधे महतारी । दुहत कौनकी गैया चारत बात कही यह भारी ॥
तुम जानति मोहिं नंद ढुटौना नंद कहां ते आए । मैं पूरन अविगति अविनाशी
माया सबनि भुलाए ॥ यह सुनि ग्वालि सबै मुसकानी ऐसेउ गुण हौ जानत । सूर श्याम
जो निदर्‍यो सबही मात पिता नहिं मानत ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ तुमको नंदमहर भरुहाए ।
माता गर्भ नहीं तुम उपजे तौ कहौ कहांते आए ॥ घर घर माखन नहीं चुरायो ऊखल नहीं बँधाए ।
हाहा करि यशुमतिके आगे तुमको हमहि छुड़ाये ॥ ग्वालनि संग संग वृन्दावन तुम नहिं गाइ
चराये । सूर श्याम दशमास गर्भ धरि जननि नहीं तुम जाये ॥ २ ॥ राग केदारो ॥ भक्तहेतु
अवतार धर्‍यो । कर्म धर्मके वश मैं नाहीं योग जग्य मनमें न कर्‍यो ॥ दीनगुहारि सुनौं श्रवणनि
भरि गर्व वचन सुनि हृदयजरौं । भाव अधीन रहौं सबहीके और न काहू नेक डरौं ॥ ब्रह्मा कीट
आदिलौं व्यापक सबको सुख दै दुखहि हरौं ॥ सूर श्याम तब कही प्रगटही जहां भाव तहँते न टरौं ॥
॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ कान्ह कहांकी बात चलावत । स्वर्ग पताल एक करि राखो युवतिनको कहि
कहा बतावत ॥ जो लायक तौ अपने घरको बनभीतर डरपावत । कहा दान गोरसको ह्वैहै सबै
न लहु दखावत ॥ रीती जान देहु घर हमको यतनेही सुख पावत । सूरश्याम माखन दधि लीजे
युवतिन कत अरुझावत ॥ ४ ॥ माखन दधि कहा करौं तुम्हारो । मैं मनमें अनुमान करौं नित
मोसों कैहे बनिज पसारो ॥ काहेको तुम मोहिं कहतहौ जोबन धन ताको करि गारो । अब कैसे
घरजान पाइहौ मोको यह समुझाइ सिधारो ॥ सूर बनिज तुम करत सदाई लेखो करिहौं आजु
तिहारो ॥ राग सहवी ॥ ऐसी कहौ बनिजको अटकी । मुख मुख हेरि तरुनि मुसकानी नैन सैन
दै दै मत्र मटकी ॥ हमहू कह्यो दान दधिको कहा मांगत कुँवर कन्हाई । अबलौं कहा मौन

धरि बैठे तबहीं नहींसुनाई॥हँसि वृषभानुसुता तब बोली कहा बनिज हम पास।सूर श्याम लेखो करि लीजै जाहिं सबै ब्रजबास॥५॥राग बिलावल ॥ कहौ तुमहि हमको कहा बूझति।लैलै नाम सुनावहु तुमहीं मोसों काहे अरूझति ॥ तुम जानति मैंहू कछु जानत जो जो माल तुम्हारे।डारिदेहु जापर जो लागै मारग चलौ हमारे॥इतनेहीको सोर लगायो अब समुझी यह बात। सूरश्यामके वचन सुनहु री कछु समुझतिहौ घात ॥ ६ ॥ इनहीं धौं बूझौ यह लेखो । कहा कहैंगे श्रवणनि सुनिये चरित नेक तुम देखो ॥ मनमन हरष भई सब युवती मुख ये बात चलावति। ज्यों ज्यों श्याम कहत मृदुबानी त्यों त्यों अति सुख पावति ॥ कोउ काहूको भेद न जानत लोग सकुच उर मानत । सूरदास प्रभु अंतर्यामी अंतर्गतिकी जानत ॥ ७ ॥ कहो कान्ह कह गथलै हमसों। जा कारण युवती सब अटकीं सो बूझतहैं तुमसों ॥ लौंग नारियर दाख सुपारी कहा लादे हम आवैं। हींग मिरच पीपरि अजवाइनि ये सब बनिज कहावैं ॥ कूट काइफर सोंठि चिरैता कटजीरा कहुँ देखत। आलमजीठ लाख सेंदुर कहुँ ऐसेहि बुधि अवरेखत॥ बाइबिरंग बहेरा हर्रै कहुँ बैल गोंद व्यापारी। सूर श्याम लरिकाई भूली जोबन भए मुरारी ॥ ८ ॥ ॥ राग सूही ॥ कवनबनिज कहिमोहिंसुनावति।तुम्हरोगथलादोंगयंदपरहींगमिरचपीपरिकहागावति ॥ अपनो बनिज दुरावतहौ कत नाउँ लियो यतनोही। कहा दुरावतिहौ मोआगे सत जानत तुव गोही॥बहुत मोलको वावा तुम्हरो कैसे दुरत राए। सुनहु सूर कछु मोल लेहिंगे कछु इक दान भराए ॥ ९॥राग टोडी ॥दधिको दान मेटि यह ठान्यो।सुनहु श्याम अतिचतुर भएहौ आजु तुमहि हम जान्यो॥जो कछु दूध दह्यौ हम देती लैखाते तुम ग्वाल।सोऊ खोइ हाथते बैठे हँसति कहति ब्रजबाल ।यह सुनि श्याम सबनि करते दधि मटकी लई छँडाई। आपन खाइ सखनको दीन्हों अति मन हरप बढाई॥कछु खायो कछु भुँइ ढरकायो चितै रहीं ब्रजनारि। सूर श्याम वनभीतर युवतिन एढंगकरतमुरारि॥१०॥राग रामकली ॥प्यारी पीतांबर उर झटक्यो।हरितोरी मोतिनकी माला कछु गर कछुकर लटक्यो ।ढीठो करन श्याम तुम लागे जाइ गही कटि फेट।आपु श्याम रिस करि अंकम भरि भई प्रेमकी भेट॥ युवतिन घेरि लियो हरिको तब भरि भरि धरि अँकवारि। सखा परस्पर देखत ठाढे हँसत देत किलकारि॥ हांक दियो करि नंददोहाई आइगए सबग्वाल। सूर श्यामको जानत नाहीं ढीठभइ हैं बाल ॥ ११॥राग भैरव ॥ हम भई ढीठ भले तुम्ह ग्वाल। दीन्हों ज्वाब दईको चैहो देखौरी यह कहा जंजाल॥बनभीतर युवतिनकोरोंकतहम खोटी तुम्हरे ये हाल। बात कहनको यो आवतहै बडे सुधर्मा धर्महिपाल ॥ साखि सखाकी ऐसिन भरिहौ तब आवहु ते जीतिभुआल। आयेहै चढि रिसकरि हमपर सूर हमहि जानत बेहाल ॥१२॥रागबिलावल ॥ जानी बात तुम्हारी सबकी।लरिलाईके ख्याल तजौ अब गई वान वह तबकी ॥ मारग रोंकत रहे यमुनको तेहि धोखेहो आये । पावहुगे पुनि कियो आपनो युवतिन हाथ लगाये ॥ जो सुनिहैं यह बात मात पितु तब हमसे कहा कैहैं ।सूर श्याम मोतिन लर तोरी कौन ज्वाब हम देहैं ॥ १३ ॥राग बिलावल नट ॥ आपुन भईं सबै अब भोरी ।तुम हरिको पीतांबर झटक्यो उन तुम्हरी मोतिन लर तोरी ॥ मांगत दान ज्वाब नहिं देती ऐसी तुम जोबनकी जोरी। डर नहिं मानति नँदनंदनको करति आनि झकझोरझोरी ॥ सक तुम नारि गँवारि भली हौ त्रिभुवन में इनकी सरि को री। सूर सुनहु लेहैं छँडाइ सब अबहिं फिरौगी दौरी दौरी॥१४ ॥राग नट ॥कहा बडाई इनकी सरि में।नंद यशोदाकेप्रतिपाले

जानति नीकेकरि मैं ॥तुम्हरे कहे सबन डर मान्यो हरिहि गई अति डरि मैं । बसुदेव डारि रातिही भागे आयेहैं शुभघरिमैं । अंग अंगको दान करतहैं सुनत उठी रिस जरिमैं । तब पीतांबर झटकि लियो में सूर श्यामको धरि मैं ॥ १५ ॥राग गौरी ॥ याते तुमको ढीठ कही । श्यामहि तुम भई झिरकन हारी एतेपर पुनि हारि नही॥ तबते हमहिं देतहौ गारी हमको दाहति आपु दही । बनिज करति हमसों झगरतिहौ कहा कहैं हम वहुत सही ॥ समुझि परी अब कछु जिय जान्यो ताते हौ सब मौन रही। सूर श्याम ब्रज ऊपर दानी यहि मारग अब तुम निबही॥१६॥ ॥ राग कल्याण ॥तुम देखत रैहौ हम जैहैं।गोरस बेंचि मधुपुरीते पुनि येही मारग ऐहैं॥ऐसेही बैठे सब रैहौ बोले ज्वाब न देहैं । धरिलेहैं यशुमतिपै हरिको तब धौं कैसे कहैं॥काहेको मोतिनलर तोरी हम पीतांबर लैहैं। सूर श्याम इतरात इते पर घर बैठ तब रैहैं॥१७॥ मेरे हठ क्यों निबतन पैहौ । अबतो रोकि सबनिको राख्यो कैसे करि तुमजैहौ॥दान लेउँगो भरि दिनदिनको लेखो करि सब देहौ । सौंह करतहौं नंदबबाकी मैं कैहौं तब जैहौ ॥ आवत जात रहत येही पथ मोसों बैर बढैहौ ।सुनहु सूर हमसों हठ मांडति कौन नफा करि लैहौ॥१८॥ राग कान्हरो॥कौन बात यह कहत कन्हाई। समुझति नहीं कहा तुम मांगत डरपावत करि नंद दोहाई॥ डरपावहु तिनको जे डरपहिं तुमते घटि हम नाहीं ।मारग छाँडिदेहु मनमोहन दधि बेचन हम जाहीं ॥ भली करी मोतिनलर तोरी यशुमतिसों हम लैहैं।सूरदास प्रभु इहौ बनत नहिं इतनो धन कहां पैहैं ॥१९॥ एक हार मोहिं कहा देखावति। नखशिखते अंग अंग निहारहु ए सब कतहि दुरावति ॥ मोतिन माल जराइको टीको कर्णफूल नकबेसर । कंठसिरी दुलरी तिलरीको और हार एक नवसर ॥ सुभग हमेल कनक अँगिया नग नगन जरितकी चौकी । बाहुढाड कर कंकन बाजू बंद येतेपर तौकी॥छुद्रघंटिका पग नूपुर जेहरि बिछिया सब लेखौ । सहज अंग शोभा सब न्यारी कहत सूर ये देखौ ॥ २० ॥राग जैतश्री॥याहूमें कछु बांट तुम्हारो । अचरज आइ सुनहु री माई भूषण देखि न सकत हमारो॥कहो ढिठाई हिएते आपुन की यशुमति की नंद । घाटधरयो तुम इहै जानिकै करत ठगनके छंद॥जितनो पहिरिआपु हम आई घरहै याते दूनो ।सूर श्याम हो बहुत लोभाने बन देख्यो धौं सूनो ॥ २१ ॥ राग गौरी बाँट कहा अब सबै हमारो। जबलौं दान नहीं हम पायो तबलौं कैसे होत निहारो ॥आभूषणकी कौन चलावत कंचनघट काहे न उघारो। मदनदूतमोहिं बात सुनाई इनमें भरयो महारस भारो ॥ एक ओर यह अंग भूषण सब एक ओर यह दान बिचारो। सुनहु सूर कहा बांट करैं हम दान देहु पुनि जहां सिधारो ॥२२ ॥राग कल्याण ॥ श्याम भये ऐसे रसनागर । दिन द्वै घाट रोकि यमुनाको युवतिनमें तुम भए उजागर ॥ कांधे कामरि हाथ लकुटिया गाइ चरावन जाते। दही भातकी छाक मँगावत ग्वालन सँग मिलि खाते ॥।अब तुम कर नवलासी लीने पीतांबर कटि सोहत । सूर श्याम अब नवल भए तुम नवल नारि मन मोहन॥ १३ ॥राग गौरी॥दान देतकी झगरो करिहौ। प्रथमहि यह जंजाल मिटावहु ता पाछे तुम हमहि निदरिहौ ॥ कहत कहा निदरेसे हो तुम सहज कहति हम बात। आदिपुन्यादि सबै हम जानति काहेको सतरात ।।रिसि करिकरि मटुकी शिर धरिधरि डगरि चलीं सब ग्वालिनि ।सूर श्याम अंचलगहिझकी जैहो कहां बजारिनि॥२४॥राग कल्याण॥अब तुमको मैं जान न दैहों॥दान लेउँ कौडी कौडीकरि बैर आपनो लैहों॥गोरस खाइ बच्योसो डारयो मटुकी डारीफोरि। दैदै गारि नारि झकझोरी चोलीके बँद तोरि ॥हँसत सखा कर तारी दैदै बनमें रोकी नारि।सुनत

लोग घरते आवहिंगे सकिहौ नहीं सम्हारि ॥ घरके लोगनि कहा डरावत कंसहि आनि बुलाइ । सूर सबै युवतिनके देखत पूजाकरौंबनाइ॥२५॥राग गौरी॥जो तुमहीहौ सबकेराजा।तौ बैठौ सिंहासन चढिकै चमर छत्र शिरआजा ॥ मोर मुकुट मुरलीपीतांबर छाँडिदेहु नटवरको साजा । बेनु बिषान शृंग क्यों पूरत बाजै नौबति बाजा॥यह जो सुनैं हमहु सुख पावैंसंगकरैंकछुकाजा।सूरश्यामऐसी बातें सुनि हमको आवति लाजा ॥ २६॥राग कल्याण॥ तुम्हारे चित रजधानी नीकी । मेरे दास दासनिके चेरे तिनको लागति फीकी॥ऐसी कहि मोहिं कहा सुनावति तुमको इहै अगाध । कंस मारि शिर छत्र धरावों कहा तुच्छ यह साध ॥ तबहीं लौं यह संग तिहारो जबलगि जीवत कंस । सूर श्यामके मुख यह सुनि तब मनमन कीन्हों संस॥२७॥ राग जैतश्री ॥ भली करी हरि माखन खायो । इहौ मानि लीनी अपने शिर उबरो सो ढरकायो ॥राखी रही दुराइ कमोरी सोलैप्रगट देखायो ।यह लीजै कछु और मँगावैं दान सुनत रिसपायो॥दान दियेबिनु जान नपैहौकबमैंदान छुटायो । सूर श्याम हठ परे हमारे कहो न कहा लदायो॥२८॥रागधनाश्री॥लेहौं दानइननकोतुमसों। मत्तगयंद हंस हम सोहैं कहा दुरावतितुम सो॥केहरिकनककलशअमृतके कैसे दुरै दुरावति। विद्रुम हेम वज्रके किनुका नाहिन हमहि सुनावति ॥खग कपोत कोकिला कीर खंजनहू शुकमृगजानति। मणि कंचनके चित्र जरेहैं एतेपर नहिं मानति ॥सायक चाप तुरय बनिजतिहौ लिये सबै तुम जाहू। चंदन चमर सुगंध जहाँ तहँ कैसे होत निबाहू ॥ यह बनिजति वृषभानुसुतातुम हमसों बैर बढावति ।सुनहु सूर एतेपर कहतिहैं हम धौं कहालदावति॥२९॥राग सोरठ॥ यह सुनि चकृत भई व्रजबाला।तरुणी सब आपसमें बूझति कहा कहतगोपाला ॥ कहां तुरंग कहां गजकेहरि कहांहंस सरोवर सुनिये।कंचनकलश गढाये कब हम देखे धौं यह गुनिये ॥ कोकिल कीर कपोत बननमें मृग खंजन शुक संग। तिनको दान लेतहैं हमसों देखहु इनको रंग ॥ चंदन चौंर सुगंध बतावत कहांहमारे पास। सूरदास जो ऐसे दानी देखिलेहु चहुँ पास ॥३०॥राग गुनकरी॥ भूलिरहे तुम कहाँ कन्हाई। तिनको नाउं लेत हम आगे जो सपने कहुँ दृष्टि न आई॥ हैवर गैवरसिंह हंस बर खग मृग कहँ हम लीन्हें । सायक धनुष चक्र सुनि चकृत चमर न देखे चीन्हें ॥ चंदन और सुगंध कहतहौ कंचन कलश बतावहु।सूर श्याम ये सब जो हैहैं तबहिं दान तुम पावहु॥ ॥३१॥ राग गूजरी ॥ इतने सबै तुम्हारे पास । निरखि न देखहु अंग अंग अब चतुराईके गांस॥तुरतही निरुवारि डारहु करति कहत अबेर । तुम कहो कछु हमहुँ बोलें घरहि जाहु सबेर । कनक तुम परतक्ष देखहु सजे नवसत अंग । सूर तुमसोरूपजोबन धरयोएकहि संग ॥ ३२॥ राग बिलावल॥ प्रगटकरौंसब तुमहिंबतावैं।चिकुरचमरघूंघटहै बरबर भुवसारंग देखावैं॥३२॥ बाणकटाक्षनयनखंजन मृग नासा शुक उपमाउं । तरिवन चक्र अधर विद्रुम छबि दशन वज्र कनठाउ ॥ ग्रीव कपोत कोकिला बाणी कुच घट कनक सुभाउ। जोबन मद रस अमृत भरेहैं रूप रंग झलकाउ॥ अंग सुगंध बसन पाटंबर गनि गनि तुमहि सुनाउँ।कटि केहरि गयंदगति शोभा हंससहित यकताउँ॥फेरकिये कैसे निबहतिहै घरहिगए कहा पाउँ।सुनहु सूर यह बनिज तुम्हारे फिरि फिरि तुमहि मनाउँ ॥३३॥ राग नट॥माँगत ऐसे दान कन्हाई।अब समुझीहमबाततुम्हारी प्रगटभई कछु धौंतरुनाई॥यहिलालच अँकवारि भरतहौ हार तोरि चोली झटकाई।अपनी ओर देखि धौं लीजे ता पाछे करिये बरिआई॥ सखालिये तुम घेरतपुनिपुनिबनभीतर सब नारि पराई।सूरश्याम ऐसी नबूझिये इनिबातनिमर्यादा जाई॥ ३४॥ राग नट ॥ हमपर रिसकरतिव्रजनारि।बात सूधेहम बतावत आपु उठत पुकारि ॥ काहे

मर्यादा घटावति कबहुँ दैहै गारि ।प्राततें झगरो पसारो दानदेहुनिआरि॥बडेघरकी बहूबेटीकरति वृथा झवारि।सूर अपनो अंशपावैं जाहिंघरझखमारि॥३५॥राग सारंग॥तुमहिउलटि हमपरसतराने। जो कछु हमको कहन बूझिए सो तुम कहि आगे अतुराने ॥ यह चतुराईकहांपढी हरिथोरेदिन अति भये सयाने । तुमको लाज होतकी हमको बात परे जोकहुँमहराने॥ ऐसोदानऔरपै मांगहु जो हमसों कहौ छबिछाने । सूरदास प्रभु जानदेहु अब बहुरि कहौगे कालि बिहाने ॥ ३६ ॥ श्यामहि बोलि लियो ढिग प्यारी।ऐसी बात प्रगट कहुँ कहिये सखनि मांझ कत लाजन मारी॥ एक ऐसेहि उपहास करत सब नापर तुम यह बात पसारी ।जाति पांतिके लोग हँसिहिंगे प्रगट जानिहैं श्याम भतारी ॥ लाजन मारतहौ कत हमको हाहा करति जाति बलिहारी । सूर श्याम सर्वज्ञ कहावत मात पितासों द्यावत गारी ॥३७॥ जबहि ग्वारि यह बात सुनाई । सखा सबनि तबहीं लखि लीन्हीं सदा श्यामके प्रकृत सुभाई॥सुनहुप्यारिएक बात सुनावों जो तुम्हरेमनआवै। तुम प्रति अंग अंगकी शोभा देखतहरि सुख पावै ॥ तुम नागरी नवल नागर वै दोउमिलिकरौ बिहार।सूरश्यामश्यामातुम एकै कहा हँसिहैसंसार॥३८॥राग नट॥नंदसुवनयहबातकहावत।आपुन जोबनदान लेनहै तापर जोइ सोइ सखनि सिखावत ॥ वै दिनभूलिगए हरि तुमको चोरी माखन खाते । खीझतही भरि नयन लेतहे डरडरातभजि जाते ॥ यशुमति जबऊखलसों बांधति हमही छोरति जाइ।सूर श्याम अब बडे भयेहौ जोबनदानसुहाइ॥३९॥राग टोडी॥ लरिकाईकीबात चलावति । कैसी भई कहा हमजानैं नेकहु सुधिनहिंआवति॥ कब माखन चोरी करि खायो कबबांधे धौं मैया।भले बुरेको मात पिता तन हरषतही दिनजैया ॥ अपनी बात खबर करि देखहु न्हात यमुनके तीर।सूर श्याम तब कहत सबनिके कदम चढाए चीर ॥४०॥राग गूजरी॥ सब रही जल मांझ उघारी।बारबार हाहा करि थाकीं मैं तट लिये हँकारी ॥ आईं निकसि बसनबिनु तरुनी बहुत करी मनुहारी । कैसे हास भए तब सबके सो तुम सुरति बिसारी॥ हमहि कहति दधि दूध चुराये अरु बांधे महतारी। सूर श्यामके भेद वचन सुनि हँसि सकुचीं ब्रजनारी ॥४१॥ कहा भए अति ढीठ कन्हाई।ऐसी बात कहत सकुचत नहिं कहा धौं अपनी लाज गँवाई॥जाहु चले लोगनिकेआगेझूठी बाणी कहत सुनाई।तुम हँसि कहत ग्वाल सुनिकै सब घरघर कैहैंजाई॥बहुत होहुगेदशहिवरसके बात कहतहौ बनेबनाई । सूरश्यामयशुमतिकेआगेइहैबातसबकैहैंजाई ॥४२॥राग हमीर॥ झूठीबात कहा मैंजानौं। जो हमको जैसेही भजेरी ताकोंतैसहि मानौं॥तुम पतिकियो मोहिको मनदै मैंहौं अंतर्यामी। योगीको योगीह्वै दरशौं कामीको ह्वै कामी ॥हमको तुम झूठे करिजानति तौ काहे तप कीन्हों । सुनहु सूर अब निठुर भई कत दान जात नहिं दीन्हों॥४३॥ राग गौरी॥दानसुनत रिस होइ कन्हाई। और कहौ मो सब सहि लैहैं जो कछु भली बुराई ॥ महतारी तुम्हरीके वैगुण उरहन देत रिसाई। तुम नीके ढँग सीखे बनमें रोकत नारिपराई ॥ आवन जाव न पावत कोऊ तुम मगमें घटवाई । सूरश्या महमको खिझावतखीझतबहिनीमाई ॥ ४४ ॥ काहेको तुमझेरलगावति । दानदेहुघर जाहु बेंचि दधि तुमहींको यह भावति ॥ प्रीति करौ मोसों तुम काहेन बनिज करति ब्रजगाउँ। आवहु जाहु सबै यहि मारग लेत हमारो नाउँ॥लेखो करौ तुमहिअपने मनजोइ देहौसोइलेहौं। सूरसुभाइ चलहुगी जब तुम पुनिधौं मैं कह कैहौं॥४५॥ राग कान्हरो ॥सुनहु आइके हरिगुण माई।हम भई बनिजारिनि आपुन दानि भए कुँवर कन्हाई ॥ कहा बनिज लै आई धौं हम ताको मांगत दान।कालिहिके ढँग पुनि आएहैं नहिं जानत कछु आन ॥ तुम गवांरि एही मग आवति जानि बूझि गुण

इनिके ।सूर श्याम सुंदर बहु नायक सुखदायक सबहिनके ॥ ४६॥ राग टोडी॥काहेको हमसों हरि लागत । बातहि कछू खोल रस नाहीं को जानै कहा मांगत ॥ कहा स्वभाव पर्‌यो अबहींते इनि बातन कछु पावत।निपट हमारे ख्याल परे हरि बनमें नितहि खिझावत ॥ पैंडो देहु बहुत अब कीनों सुनत हँसहिंगे लोग।सूर हमहिं मारग जिनि रोकहु घरते लीजे वोग॥ ४७ ॥ राग सूही॥अबलों इहै करचो तुम लेखो । मोको ऐसी बुद्धि बतावत करकंकण दर्पण लै देखो ॥ आपुहि चतुरि आपुही सब कछु हमको करति गवाँर। ओगहै लेत फिरों इनके घर ठाढे ह्वैहैं द्वार ॥ घाट छांडि जैहो तबलैहौं ज्वाब नृपति कहा देहौं। जा दिनते यहि मारग आवति तादिनते भरिलैहौं॥ इनिकी बुद्धि दान हम पहिरो काहेन घर घर जैहो । सूर श्याम तब कहत सखिनसों जान कौनविधि पैहौ ॥ ४८॥ राग टोडी ॥ भली भई नृप मान्यो तुमहू । लेखो करैं जाइकंसहिपैचलैंसंगतुमहमहू ॥ अबलों हम जानीही घरही पहिरचोहै तुमदान। कालि कह्यो हो दान लेनको नंदमहरकी आन ॥ तो तुम कंस पठाएहैं ह्यां अब जानी यह बात।सूर श्याम सुनि सुनि यह बाणी भौंह मोरि मुसकात॥ ॥ ४९॥ राग आसावरी॥ कहा हँसत मोरतहो भौंह। सोई कह्यो मनहिकहिआईतुमहिनंदकीसौंह॥ और सौंह तुमको गोधनकी सौंह माइ यशुमतिकी । सौंह तुमहि बलदाऊकी है कहो बात वा मनकी ॥ बार बार तुम भौंह सकोरचो कहा आपु हँसि रीझे । सूर श्याम हम पर सुख पायो की मनही मन खीझे॥५०॥राग रामकली॥हँसत सखनसोंकहतकन्हाई।मैयाकी बाबाकी दाऊजीकी सौंह दिवाई ॥ कहति कहा काहे हँसि हेरचो काहे भौंहसकोरचो।यहअचरज देखो तुम इनिको कब हम वदन मरोरचो॥ऐसी बातनि सौंह दिवावति अधिक हँसी मोहिंआवत। सूर श्याम कहि श्रीदामासों तुम काहेन समुझावत॥५१॥राग धनाश्री ॥श्रीदामागोपिन समुझावत । हँसत श्यामके तुम कहा जान्यो काहे सौंह दिवावत ॥ तुमहूं हँसो आपनेसंग मिलि हमनहिंसौंह दिवावैं । तरुणिनकी यह प्रकृति अनैसी थोरेहि बात खिसावैं॥ नान्हे लोगनि सौंह दिवावहु वै दानी प्रभुसबके । सूर श्यामकोदानदेहु री मांगतठाढेकबके॥५२॥राग जैतश्री॥हम जानतिवै कुँवर कन्हाई । प्रभु तुम्हरे मुख आजु सुनी हम तुम जानत प्रभुताई ॥ प्रभुता नहीं होनि इनि बातनि मही दहीके दान । वै ठाकुर तुम सेवक उनके जान्यों सबको ज्ञान॥ दधिखायोमोनिनलगनारचो घृत माखन सोउ लीजे ।सूरदास प्रभु अपने सदका घरहि जान हम दीजे ॥ ५३॥ तुम घर जाहु दानको दैहै । जेहि बीरादैमोहिंपठायोसो मोसों कहालैहै॥तुम गृह जाइ बैठि सुखकरिहो नृप गारी को खैहै । अबहीं बोलि पठावैगो री तासन्मुख को जैहै॥जान कहै तुमको तुम जैहो विधिना कैंस सैहै । सूर मोहिं अटक्योहै नृपवर तुमबिनु कौन छँडैहै ॥ ५४ ॥ नृपकोनाँउ लेततेही मुख जेहि मुख निंदा कालि करी । आपुन तो राजनिकराजाआजु कहा सुधि मनहि परी॥भले श्याम ऐसी तुम कीनी कहा कंसको नाउँलियो ।जब हम सौंह दिवावनलागीं तबहिं कंसपर रोपकियो॥ जाको निंदि बंदियै सो पुनि वह ताकोनिदरै । सूरसुनीवह बातकालिकी तबजानीइनिकमडरै ॥ ॥५५ ॥राग आसावरी ॥कहा कहति कछुजानिनपायो।कब कंसहि धौं हम करजोरचोकबयाको हम माथ नवायो ॥ कबहूं सौंह करत देख्यो मोहिं लेत कबहुँ मुखनाऊं ।निपटहिग्वारिगँवारि भई तुम बसतिहमारे गाऊं ॥ कहा कंस केतने लायकको जाको मोहिं देखावति। सुनहु सूरयहिनृपके हमतें इह तुम्हरे मन आवति॥५६ ॥राग टोडी ॥ कौन नृपति जाके तुमहो।ताको नाउँ सुनावहु हमको यह सुनिकै अति पावभो॥ यह संसार भुवन चौदह भरि कंसहिते नहिं दूजो। सो नृपकहारहन

सुनि पावैं तब ताहीको पूजो ॥ कहा नाउँ केहि गाँउ बसतहै ताहीके ह्वैरहिए। सूरदास प्रभु कहे बनैगी झूठे हमहि निदरिए ॥ ५७ ॥ मोसों सुनहु नृपतिको नाउँ। तिहूँ भुवन भारि गम्यहै जाको नर नारी सब गाउँ ॥ गण गंधर्व वश्य वाहीके अवरनहींसरिताहि॥उनकीअस्तुति करौं कहांलगि मैं सकुचतहौं जाहि॥तिनहीको पठयो मैं आयो दियो दानकोवीरा। सूररूपजोबन धन सुनिकै देखत भयो अधीरा ॥ ५८ राग गौरी ॥ पाई जाति तुम्हारे नृपकी जैसे तुम तैसे वोऊ हैं। कहां रहे दुरि जाइ आजुलौं एई ढंग गुणके सोऊ हैं ॥ यह अनुमानकियोमनमेंहमएकहि दिन जनमें दोऊ हैं। चोरी अपमारग बटपारचो इनि पटतरके नहिं कोऊ हैं॥श्यामवनीअब जोरी नीकी सुनहु सखी मानत तोऊ हैं। सूर श्याम जितने रँग काछत युवती जन मनके गोऊहैं ॥ ५९ ॥ ठगति फिरति ठगिनी तुम नारी। जोइ आवति सोइ सोइ कहडारति जाति जनावत दै दै गारी ॥ फँसिहारिनि बटपारिनि हम भईं आपुन भए सुधर्मा भारी। फंदाफाँसि कमानबानसों काहू डारत देख्यो मारी॥जाकेमन जैसोई बरतैमुखबानीकहिदेतउघारी। सुनहुसूरप्रभुनीकेजान्यो ब्रज युवती तुम सब बटपारी ॥६०॥ राग सूही ॥ अपने नृपको इहैसुनायो। ब्रजनारीबटपारिनिहैं सब चुगली आपुनि जाइ लगायो॥राजा बडे बात यह समुझीतुमकोहमपरधौंसपठायो।फँसिहारिनि कैसे तुव जानी हम कहुँ नाहिंन प्रगटदेखायो ॥ब्रजवनिताफँसिहारीजोसबमहतारीकाहेन गनायो॥फंदा फाँसि धनुष त्रिपलाडू सूरश्यामनहिंहमहिंबतायो॥६१॥राग भैरव॥ फंदाफाँसिबतावहु जो। अंगनि धरे छपाइ जहां जो प्रगट करौ सब दीहौंतौ ॥ प्रथमहि शीश मोहिनी डारति ऐसे ताहि करत वशहो। बिषलाडू दरशावति ले पुनि देह दशापुनि बिसरति ज्यों ॥ ता पाछे फंदा गर डारति एहि भांतिनि करि मारतिहो।सुनहु सूर ऐसे गुणतुम्हरे मोसों कहाउचारतिहौ ॥६२॥ प्रगट करौ यह बात कन्हाई। बान कमान कहां केहि मारचो काके गर हम फांसि लगाई ॥ काके शिर पढि मंत्र दियो हम कहां हमारे पाशदिनाई। मिलवत कहां कहांकी बातैं हँसत कहति अति गइ सकुचाई॥तव मानैं सवहमहुँ बतावहु कहो नहीं जो नंद दोहाई। सूर श्याम तब कह्यो सुनहुगी एक एक करि देउँ बताई ॥ ६३ ॥ राग रागिनी ॥ मोसों कहादुरावतिनारी। नयनशयनदैचितहि चुरावति इहै मंत्र टोना शिरडारी ॥भौंह धनुष अंजन गुन बान कटाक्षनि डारति मारि। तरिवन श्रवन फांसि गर डारति कैसेहुँ नहीं सकत निरवारि ॥ पीन उरज मुख नैन चखावति इह विषमोदक जात न झारि। घालति छुरी प्रेमकी बानी सूरदास को सकै सँभारि॥६४॥ राग टोडी ॥ अपनोगुण औरनि शिरडारत। मोहन जोहन मंत्र यंत्र टोना सब तुमपर वारत॥ तनुत्रिभंग अंग अंगमरोरनि भौंह वंक करि हेरत। मुरली अधर बजाइ मधुर सुर तरुनी मृगवनघेरत॥नटवरभेष पीतांबर काछे छैलभए तुम डोलत। सूर श्याम गवरे ढंगए अवरनिको ढँगबोलत॥६५॥ जानी बात मौन धरि रहिए। इहै जानिहमपर चढि आए जोभावैसोकहिए ॥ हम नहिंबिलग तुम्हारो मान्यो तुम जनि कछु मन आनो। देखहु एकदोइजनिभाषहु चारिदेखिदुइगानो॥दोवल देति सबै मोहीको उन पठयो मैं आयो। सूर रूप जोबनकी चुगली नैननि जाइ सुनायो ॥ ६६ ॥ राग बिलावल ॥ तव रिसकरिकै मोहिं बोलायो। लोचन दूत तुमहिं इहि मारग देखतजाइसुनायो॥सोइ मन महलनते सुनि बानी जोबन महलनि आयो। अपने कर बीरा मोहिं दीन्हों तुरत मोहिं पहिगयो ॥ बैठ्योहै सिंहासन चढिकै चतुराई उपजायो। मनतरंग आज्ञाकारी भृत तिनको तुमहि लगायो॥ तिनको नाम अनंग नृपतिवर सुनहु बात सुखपायो। सूर श्याममुख बात सुनत यह

युवतिन तनु बिसरायो॥६७॥राग सूही॥व्रज युवती सुनि मगन भईं। यह बानी सुनि नंदसुवन मुख मन व्याकुल तन सुद्धिगईं ॥ को हम कहां रहति कहँ आई युवतिनके यह सोच परयो । लागी कामनृपतिकी सांटी जोबन रूपहि आनि अरयो ॥ तृषितभईं तरुणी अनंगडर सकुचि रूपजोब नहिं दियो । सूरश्याम अब शरन तुम्हारे हृदय सबनि यहध्यानकियो॥६८॥राग जैतश्री॥ मनयह कहति देह बिसाराये । यह धन तुमहीको सँचि राख्यो तेहि लीजै सुखपाये॥ जोबनरूप नहीं तुम लायक तुमको देत लजाति । ज्यों बारिधि आगे जल कनिका बिनय करति एहि भांति ॥ अमृत-रस आगे मधुरंचक मनहिं करत अनुमान। सूर श्याम शोभाकी सीवाँको पटतरको आन ॥६९ ॥ अंतर्यामी जानिलई । मनमें मिले सबनि सुख दीन्हों तब तनुकी कछु सुरति भई ॥ तब जान्यो बनमें हम ठाढी तनु निरख्यो मन सकुचिगईं। कहति परस्पर आपुसमें सब कहां रहीं हम काहि रईं॥ श्याम बिना ये चरित करै को यह कहिकै तनु सौंपदईं । सूरदास प्रभु अंतर्यामी गुप्तहि जोबनदान लईं ॥७०॥राग रामकली॥यह कहिउठे नंदकुमार । कहा ठगिसीरहीबाला परयो कौन बिचार॥ दानको कछु कियो लेखो रही जहं तहं सोचि । प्रगट करि हमको सुनावहु मेटि जिहिदै दोचि॥बहुरि यहि मग जाहु आवहु राति सांझ सकार। सूरऐसो कौन जोपुनि तुमहिरोक-नहार॥७१॥राग गूजरी॥हमहिं और सो रोकेकौन।रोकनहारोनंदमहर सुत कान्हनामजाकोहैतौन॥ जाके बलहै कामनृपतिको ठगत फिरत युवतिनको जौन। टोनाडारिदेत शिर ऊपर आपुरहतठाढो है मौन॥सुनहु श्याम ऐसी न बूझिए बानिपरी तुमको यह कौन।सूरदास प्रभु कृपा करहु अब कै-सेहु जाहिं आपने भौन॥७२॥राग सूही॥ दान मानि घरको सब जाहु । लेखो मैं कहुँकहुँ जानतहौं तुमसमुझे सब होत निबाहु॥पछिली देहु निवारि आजु सब पुनि दीजो जब जानौ कालि।अब मैं कहत भलीहौं तुमसों जो तुम मोको मानौ ग्वालि ॥ वृन्दावन तुम आवत डरपति मैं देहौं तुमको पहुँचाइ । सुनहु सूर त्रिभुवन वश जाके सो प्रभु युवतिनके वश आइ ॥ ७३ ॥ को जानै हरि चरित तुम्हारे। अवहूं दान नहीं तुम पायो मन हरिलिये हमारे॥लेखोकरिलीजै मनमोहन दूधदह्यो कछु खाहु। सदमाखन तुम्हरेहि मुखलायक लीजै दान उगाहु॥ तुम खैहो माखनदधि मोहन हमसब देखि देखि सुख पावैं। सूर श्याम तुम अब दधिदानी कहिकहि प्रगट सुनावैं॥ ७४ ॥राग गुंड॥कान्ह माखन खाहु हमसब देखैं। सद्य दधि दूध ल्याईं अबटि अबहिं हम खाहु तुम सफल करि जन्म लेखैं॥ सखा सब बोलि बैठारि हरि मंडली वनहिंके पात दोना लगाये। देत दधि परुसि व्रजनारि जेंवत कान्ह ग्वालसँगबैठि अति रुचि बढाये।धन्यदधिधन्यमाखन धन्यगोपिका धन्यराधा वश्यहै मुरारी। सूर प्रभुके चरित देखि सुरगन थकित कृष्ण सँग सुख करति घोषनारी ॥७५॥राग जैतश्री॥ माखन दधि हरि खात ग्वालसँग । पातनिके दोना सबके कर लेत पतौखनि मुख मेलत रँग ॥ मटुकिनते लैलै परुसतिहैं हर्षभरी व्रजनारि । यह सुख तिहूं भुवन कहुँ नाहीं दधि जेंवत वनवारि ॥ गोपी धन्य कहति आपुनको धन्य दूध दधि माखन । जाको कान्ह लेत मुख मेलत कियो सबनि संभापन ॥ जो हम साध करति अपने मन सो सुख पायो नीके । सूर श्याम पर तन मन वारति आनँद जी सबहीके ॥ ७६ ॥ राग देवगंधार॥ गोपिकाअतिआनंदभरी। माखन दधि हरिखातप्रेमसों निरखेति नारि खरी ॥ कर लैलै मुख परस करावत उपमा बढी सुभाइ । मानहु कंज मिलतहूं शशिको लिये सुधाकर आइ ॥ जाकारण शिव ध्यान लगावत शेष सहस मुख गावत। सोई सूर प्रगट व्रजभीतर राधामनहिं चुरावत ॥ ७७ ॥रागरामकली॥राधासों माखनहरि माँगत । औरनिकी

मटुकीको खायो तुम्हरोकैसो लागत॥लैआई वृषभानुसुता हँसि सदलोनीहै मेरी । लै दीन्हों अपने कर हरिमुख खात अलप हँसि हेरी॥ सबहिनते मीठो दधिहै यह मधुरे कह्यो सुनाइ । सूरदास प्रभु सुख उपजायोव्रजललनामनभाइ७७राग रामकली मेरे दधिको हरिस्वाद न पायो ।जानतइनगुजरिनिकोसोहैलयो छिडाइमिलि ग्वालनिखायो।धौरी धेनु दुहाइछानि पयमधुर आंचमेंअवटिसिरायो॥ नई दोहनी पोंछि पखारी धरि निर्धूम खिरनिपर तायो । तामें मिलि मिश्रित मिश्री करि दै कपूर पुट जावन नायो ॥ सुभग ढकनियां ढांपि बांधि पट जतन राखि छीके समदायो ॥ हौं तुम कारण लै आई गृह मारगमें न कहूं दरशायो । सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि कियो कान्ह ग्वालिनि मनभायो ॥७९॥राग नट॥गोपिन हेतु माखन खात ।प्रेमके वश नंदनंदन नेक नहीं अघात ॥ सबै मटुकी भरी वैसिहि प्रेम नहीं सिरात । भाव हृदये जान मोहन खात माखन जात॥ एक कर दधि दूध लीने एककर दधि जात।सूर प्रभुको निरखि गोपी मनहि मनहि सिहात ॥८० ॥राग बिहागरो ॥ गोपी कहति धन्य हम नारि । धन्यदूध धनिदधिधनिमाखन हम परुसतिजेंवत गिरधारि॥।धन्य घोष धनि निशि धनिवह घरि धनि गोकुल प्रगटे बनवारि ।धन्यसुकृतपाछिलोधन्यधनि धन्य नंद यशुमति महतारि ॥ धनिधनि ग्वाल धन्य बृंदाबन धन्य भूमि यह अति सुखकारि। धन्य दान धनि कान्हमँगैया धन्य सूर तृण द्रुम बन डारि॥८१॥राग नट॥गण गंधर्व देखि सिहात । धन्य व्रजललनानि करते ब्रह्म माखन खात॥नहीं रेख न रूप नहिं तनु बरन नहिंअनुहारि ।मात पितु दोऊ न जाके हरत मरत न जारि ॥ आपु करता आपु हरता आपु त्रिभुवन नाथ । आपही सब घटके व्यापी निगमगावत गाथ ॥ अंगप्रति प्रतिरोम जाकेकोटिकोटि ब्रह्मंड।कीट ब्रह्म प्रयंतजल थल इनहिते यह मंड ॥ विश्वविश्वभरन एई ग्वालसंग विलास । सोइ प्रभु दधिदान मांगत धन्य सूरजदास ॥८२ ॥राग रामकली॥कंसहेतु हरि जन्म लियो।पापहि पाप धरा भई भारी तब हमसबनि पुकार कियो ॥ शेषशैन जहँ रमासंगमिलितहां अकाश भई यह बानी। असुर मारि भुवभार उतारौं गोकुल प्रगटौं आनी ॥ गर्भ देवकीके तनु धरिहौं यशुमतिको पय पीहौं । पूरब तप बहु कियो कष्टकरिइनको बहुत ऋनीहौं॥यह बानी कहि सूर सुरनको अब कृष्णा अवतार। कह्यो सबनि व्रजजन्म लेहु सँग हमरे करहु बिहार८३राग गौरी॥ब्रह्म जिनहिं यहआयसुदीन्हो। तिनतिनसंगजन्मलियो व्रजमें सखी सखा करि परगट कीन्हो॥ गोपी ग्वाल कान्ह दुइ नाहीं ये कहुँ नेक न न्यारे जहांजहां अवतारधरत हरिये नहिं नेकबिसारे॥एकै देह विहार करि राखे गोपीग्वाल मुरारि।यहसुख देखिसूरके प्रभुकोथकितअमरसँगनारि॥ ८४॥ राग गौरी॥अमरनारिअस्तुतिकरैंभारी। एकनिमिषव्रजवासिनका सुख नहिं तिहुँभुवन बिचारी॥धन्य कान्ह नटवरवपु काछे धन्य गोपिका नारी।एक एकते गुण रूप उजागरि श्याम भावती प्यारी ॥ परुसति ग्वारि ग्वार सब जेंवत मध्य कृष्ण सुखकारी । सूरश्याम दधिदानी कहि कहि आनँद घोषकुमारी ॥८५॥राग बिलावल ॥ धन्य कृष्ण अवतार ब्रह्म लियो। रेखन रूप प्रगट दरशन दियो॥जल थलमें कोउ और नहीं बियो।दुष्टन बधि संतनिको सुख दियो ॥१॥जो प्रभु नरदेही नहिं धरते। देवै गर्भ नहीं अवतरते ॥ कंसशोक कैसे उर टरते । माता पिता दुरित क्यों हरते॥२॥ जो प्रभु व्रजभीतरनहिंआवैं। नंदयशोदा क्योंसुख पावैं॥ पूरबतप कैसे प्रगटावैं । बेदवचन कैसे ठहरावैं॥३॥ जो प्रभु भेष धरैंनहिं बालक।कैसेंहोइ पूतना घालक ॥ अँगुठा पिवत शकटसंहारक। तृणा अकाश शिलापर डारक॥ ४ ॥ जो प्रभु व्रज माख-

न न चोरावैं । क्यों गोपिनको आपु जनावैं॥भुजा उलूखल नहीं बँधावैं॥ जमलामोक्षकौनविधि पावैं॥५॥ सो प्रभु दधिदानी कहवावें। गोपिनको मारग अटकावें ॥ करिलेखो कै दानसुनावें। आपुन खीझें उनहिं खिझावें ॥६॥ ब्रजवासी जो धन्य कहावें । जहां श्याम दधिदान लगावैं॥ मांगि खात आनंद बढावें ।युवतिनसों कहि कहि परुसावें ॥७॥ तेई हरि नटवर वपु काछे । मोर मुकुटपीतांबरआछे॥ग्वालसखाठाढेसबपाछे॥सूरश्याम गोपिन सुख साछे॥८॥८६॥राग सूही॥ यह महिमा येईपै जानैं । योग यज्ञ तप ध्यान न आवत सो दधि दान लेत सुख मानैं ॥ खात परस्पर ग्वालन मिलिकै मीठोकहि कहि आपु बखाने। विश्वंभर जगदीश कहावत ते दधिदोनामाँझ अघाने ॥ आपुहि हरता आपुहि करता आपु बनावत आपुहि भाने। ऐसे सूरदासके स्वामी ते गोपिनके हाथ बिकाने ॥ ८७॥राग रामकली॥ धनि बडभागिनी ब्रजनारि। खात लै दधि दूध माखन प्रगट जहां मुरारि ॥ नहीं जानत भेद जाको ब्रह्म अरु त्रिपुरारि । शुक सनक मुनि येउ न जानत निगम गावत चारि ॥ देखि सुख ब्रजनारि हरिसंग अमर रहे भुलाइ । सूर प्रभुके चरित अगनित बरनिकापैजाइ॥८८॥राग बिलावल॥ब्रजवनितायहकहतिश्यामसोंमाखनदूधदह्योअरुल्यावैं।मटुकिनते हम देहिं खाहु तुम देखिदेखि नैननि सुख पावैं॥गोरस बहुत हमारे घरघर दान पाछिलो लेहु । खायो जौन दान आजुहिको मांगतहैं सब देहु ॥ सबै लेहु राखहु जिनि बाकी पुनि न पाइहौ मांगे। आजुहि लेहु सबै भरिदेहैं कहति तुम्हारे आगे॥ कह्यो श्याम अब भई हमारी मनहिं भई परतीति। जब चैहैं तब मांगिलेहिंगे हमहिं तुम्हें भइ प्रीति ॥ बेचहु जाइ दूध दधि निधरक घाट बाट डर नाहीं । सूर श्याम बश भई ग्वारिनी जात बनत घर नाहीं ॥ ८९ ॥ राग टोडी ॥ सुनहु सखी मोहन कहा कीन्हों । एक एकसों कहति बात यह दान लियो की मन हरि लीन्हों ॥ यह तौ नाहिं वदी हम उनसों बूझहुँ धौं यह बात । चकृत भईं बिचार करत यह बिसरिगईं सुधि गात ॥ उमचिजाति तबहीं सब सकुचति बहुरि मगन ह्वैजाति । सूर श्यामसों कहौं कहा यह कहत न बनत लजाति॥९०॥राग धनाश्री॥श्यामसुनहु एकबात हमारी । ढीठो बहुतकियोहमतुमसों सो बकसो हरि चूक हमारी॥ मुख जो कही कटुक सब बानी हृदय हमारे नाहीं।हँसिहँसि कहति खिझावति तुमको अतिआनँद मनमाहीं॥ दधिमाखनको दान और जो जानो सबै तुम्हारो । सूर श्याम तुमको सब दीनों जीवनप्राण हमारो ॥ ९१ ॥ नंदकुमार कहा यह कीन्हौं। बूझति तुमहिं कहौ धौं हमसों दान लियो की मन हरिलीन्हौं ॥कछू दुराव नहीं हम राख्यो निकट तुम्हारेआईं। येतेपर तुमहीं अब जानौ करनी भली बुराई ॥ जो जासों अंतर नहिं राखे सो क्यों अंतर राखे । सूर श्याम तुम अंतर्यामी वेद उपनिषद भाषे ॥९२॥ राग टोडी ॥सुनहु बात युवती इक मेरी। तुमते दूरि होत नहिं कतहूँ तुम राखौ मोहिं घेरी ॥ तुम कारण बैकुंठ तजतहौं जनम लेत ब्रज आई । बृंदावन राधासँग गोपी यह नहिं बिसरचो जाई॥ तुम अंतर अंतर कहा भाषति एक प्राण द्वै देह। क्यों राधा ब्रज बसे बिसारचो सुमिरि पुरातन नेह॥ अब घर जाहु दान मैं पायो लेखो कियो न जाइ। सूर श्याम हँसिहँसि युवतिनसों ऐसी कहत बनाइ॥९३॥राग नट॥ घर तनु मनहिं बिना नहिं जात।आपु हँसिहँसि कहतहौ जू चतुरईकी बात ॥ तनहिंपर है मनहिं राजा जोइ करै सोइ होइ। कहौ घर हम जाहिं कैसे मन धरचो तुम गोइ ॥ नयन श्रवन विचार सुधि बुधि रहे मनहिंलुभाइ। जाहिं अबही तनहिं लै घर परत नाहिंन पाइ ॥ प्रीतिकरि दुविधा करी कत तुमहि जानौं नाथ । सूरके प्रभु दीजिये मन जाइँ घर लै साथ ॥ ९४ ॥राग कान्हरो॥ मनभीतर है वास हमारो । हमको

लैकरि तुमहिं छिपायो कहा कहति यह दोष तुम्हारो ॥ अजहुँ कहौ रैहैं हमअनतहि तुमअपनो मन लेहु । अब पछितानी लोकलाज डर हमहिं छांडि तुम देहु॥घटती होइ जाहितेअपनी ताको कीजै त्याग । धोखे कियो वास मन भीतर अब समुझे भइ जाग॥मन दीन्हो मोको तब लीन्हों मन लैहो मैं जाउ।सूर श्यामऐसीजनिकहिये हमयहकहीसुभाउ॥९५॥तुमहिबिना मन धिक अरु धिक घर ।तुमहि बिना धिकधिक मातापितु धिक कुलकानिलाजडर॥धिकसुत पतिधिकजीवन जगको धिक तुमबिन संसार॥धिकसो दिवस पहर घटिका पल धिक धिक यह कहि नंदकुमार॥ धिकधिकश्रवणकथाबिनु हरिकेधिकलोचनबिनरूप।सूरदासप्रभुधिक तुमबिनुघरधिकयौबन भीतरके कूप॥९६॥अथ दानलीला ॥ राग रांझीहठीली ॥सुनि तमचुरको शोर घोषकी बागरी। नवसत साजि शृँगार चलीं बन नागरी ॥१॥ नवसतसाजि शृंगार अंग पाटंबर सोहै।एकते एक विचित्ररूपत्रिभुवन मन मोहै ॥ इंदा बिंदा राधिका श्यामा कामा नारि।ललिता अरु चंद्रावली सखिनमध्य सुकुमारि ॥२॥ कोउ दूध कोउ दह्यो मह्यो लै चलीं सयानी ।कोउ मटुकी कोउ माट भरी नवनीत मथानी ॥ गृहगृहते सब सुंदरी जुरि यमुनातट जाइ । सबनि हरष मनमें कियो उठीं श्यामगुण गाइ॥३॥यह सुनि नंदकुमार सैन दै सखा बोलाए।मन हरषित भए आपु जाइ सब ग्वाल जगाए ॥ यह कहिकै तब साँवरे राखे द्रुमनि चढाइ । और सखा कछु संग लै रोकिरहे मग जाइ॥४॥ एक सखी अवलोकतही सब सखी बोलाई । यहि बनमें इक बार लूटि हम लई कन्हाई॥ तनक फेर फिरि आइए अपने सुखहि बिलास।यह झगरो सुनि होइगो गोकुलमें उपहास॥५॥उलटि चलीं तब सखी तहां कोउ जान न पावै । रोकिरहे सब सखा और बातनि बिरमावै ॥ सुबल सखा तब यह कह्यो तुम ग्वालिनि हरियोग। कैसे बातें दुरति हौं तुम उनके संयोग ॥ ६॥ किनहुशृंगकोउ बेनु किनहु वनपत्र बजाये । छांडि छांडि द्रुमडार कूदि धरनी धँसि धाये ॥ सखिनमध्य इत राधिका सखामध्यबलवीर ।झगरोठान्यो दानकोकालिंदीकेतीर॥कहत नँदलाडिले॥७॥ दैनारिन दधिदान कान्ह ठाढे वृंदावन।और सखा हरिसंग बच्छ चारत अरु गोधन॥वे बडे नंदकेलाडिले तुम बृषभानुकुमारि।दह्यो बह्योके कारने कतहि बढावतिरारि॥ कहत ब्रजनागरी॥८॥सूधे गोरस मांगि कछू लै हमपै खाहू। ऐसे ढीठ गँवार कान्हबरजतनहिंकाहू।एहिमग गोरसलैसबै दिनप्रति आवहिं जाहिं।हमहिं छाप देखरावहू दानचहतकेहिपाहिं॥कहत नँदलाडिले॥९॥इतेमान सतरात ग्वारि हम जान न देहैं।अनउत्तरकहाकहतितुमहिंवशकान्ह भयेहैं॥अब तुम ऐसीजनिकरौयावृंदावनवीच। पुहुमि माहँ ढरकाइहैं मचिहै गोरस कीच ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ १० ॥ कान्ह अचगर्‌यो दूत लेहु सब आँगनवारी। कापहिं माँगत दान भए कबते अधिकारी ॥ मात पिता जैसे चलें तैसे चलिये आपु । कठिन कंस मथुरा बसें को कहि लेइ सँतापु ॥ कहत नंदलाडिले॥ ११ ॥ कहै न जाइ उताल जहां भूपाल तिहारो । हौं वृंदाबन चंद्र कहा कोउ करै हमारो ॥ शेष सहसफन नाथि ज्यों सुरपति करे निरंस।अग्नि पान किये सांवरे केतिक बपुरो कंस॥कहत ब्रजनागरी ॥१२॥ जाके तुम सुकुमार ताहि हम नीके जानैं। जो पूछो सति भाउ आदि अहीरवलिभानैं ॥ बातनि बडे न हूजिये सुनहु श्याम उतपाति॥गर्भसाटि यशुदालियोतब तुम आए राति॥कहत नंदलाडिले॥१३॥अरी ग्वारि मैमंत वचन बोलत जुअनेरो।कब हरिबालक भए गर्भ कब लियो बसेरो॥प्रबल असुर पुहुमी बडे बिधि कीन्हे ये ख्याल। कमलकोश अलिभोरए ज्यों तुम भुरयो गुपाल ॥ कहत ब्रजनागरी ॥१४॥तुम भुरएहो नंद कहतहैं तुमसों ढोटा। दधि

ओदनके काज देह धरि आए ॥ गढिगढि मिलवत लाडिले भली नहीं यह श्याम । या धोखे जिनि भूलहू हम समरथकी बाम ॥ कहत नँदलाडिले ॥१५॥ तुम समरथकी बाम कहा काहूको करिहौ । चोरी जाती बेचि दान सब दिनको भरिहौ ॥ जो प्रभु देह न धरै दीन खल कौनउ धारै। कंसकेश को गहै विघ्न ब्रजको को टारै ॥ कहा निगम कहि ध्यावतो कहा मुनिजन धरते ध्यान । दरशपरश बिन नामगुनको पावै पद निर्वान । कहत ब्रजनागरी ॥१६॥ जो पै दरशनपरस नाम गुण केलि कन्हाई । तुम निर्भयपद हेत वेदबिधि इहै बताई॥ योग युक्ति तप ध्यावहीं तिनगति कौनदयाल । जलतरंग ज्यों मीनगति विधे कर्मके जाल ॥ कहत नंदलाडिले ॥१७॥ जटाभस्म तनुदहै बृथा करि कर्म बँधावै। पुहुमि दाहिनी देहि गुफाबसि मोहिं नपावै॥ तजि अभिमानजोगावहीगदगदसुरहि प्रकाश । तासु मगन हो ग्वालिनी ता घट मेरो बास॥ कहत ब्रजनागरी ॥ १८॥ जुपै चाहि लै श्याम करत उपहास घनेरो । हम अहीरि गृह नारि लोक लज्जाके जेरो ॥ ता दिन हम भईं बावरी दियो कंठते हार। तबतेघरघेराचल्यो श्याम तुम्हारोजार॥ कहत नँदलाडिले ॥१९॥ सखा सबनि मिलि कह्यो ग्वारि एक बात सुनावै । तो तनु ज्योति सुभाउ रूम उपमा को पावै॥ गुप्त प्रीति बिधना करी रसिक साँवरेयोग । यह बिचार सुनि ग्वारिनी न्याउ हँसैगो लोग॥ कहत ब्रजनागरी॥२०॥ ऐसी बातेंकान्ह कहत हमसोंकाहेते। चोरी खाते छांछिनयनभरिलेतगहेते ॥ देत उरहनो रावरे बछरा दाँवरि जोरि। जननी ऊखलबांधतीहमही देती छोरि॥ कहतनँदलाडिले॥२१॥ बालकरूप अजान कहा काहू पहिचानै। अनउत्तरकोउ कहै भली अनभलीन मानै॥ वहदिनसुमिरो आपनो न्हाति यमुनके पानि । सब मिलि मो हाहा करी वस्त्र हर्‌यो मैं जानि ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ २२॥ बहुत भए हौ ढीठ देत मुखऊपर गारी। जेहि छाजै तेहि कहो इहां कोउ दासि तुम्हारी ॥ तुमसों अब दधिकारने कौन बढ़ावै रारि । काहेको इतरातहौ रोकि पराई नारि ॥ कहत नँदलाडिले ॥ २३ ॥ लियो उपरना छीनिदूरि डारनि अटकायो । दियो सखनि दधि बाँटि माट पुहुमी ढरकायो ॥ फेंट पीतपट साँवरे कर पलाशके पात। हँसत परस्पर ग्वाल सब विमल विमल दधिखात॥ कहत ब्रजनागरी ॥ २४॥ कान्ह बहोरि न देहु दही काहेको माते । बसिये एकहि गाउँ कानि राखतिहैं ताते॥ तब न कछू बनिआइहै जब बिरुझैं सब नारि। करि लरिकनिके बर करत यहपुनि धरिहैं लाड उतारि॥ कहत नँदलाडिले॥२५॥ गहि अंचल झकझोरि तोरि हारावलि डारी। मटुकी लई उतारि मोरि भुज कंचुकि फारी ॥ लैलै ठाढे ग्वार सब दोना एकएक हाथ। खातजातदधि दूध ले हँसत मिलें इकसाथ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ २६ ॥ झीनी कामरि काज कान्ह ऐसी नहिं कीजै। काचपोत गिरिजाइ नंदघर गथौ न पूजे॥ बिनही लीने आपियै सो कामरिको तोल। लाख मुँदरिया जाइगी कान्ह तुम्हारो मोल॥ कहतनंदलाडिले॥२७॥ शिवबिरंचिसनकादिआदितिनहूँ नहिं जानी। शेष सहसफन थक्यो निगम कीरति न बखानी ॥ तेरी सों सुनि ग्वालिनी इहै मेरे मन-मांह । भुवन चतुर्दश देखिए वा कामरिकी छांह ॥ शेष न पायो अंत पुहुमि जाकी फनवारी । पवन बुहारत द्वार सदा शंकर कुनवारी॥ धर्मराज जाकी पवरि सनकादिक प्रतिहार । मेघ छयान-वै कोटि सब जल ढोवहिं प्रतिवार॥ कहत ब्रजनागरी॥ २८ ॥ जिनहि इतो परताप गाइ सो कनहि चरावै। परदाराके जाइ आपु कत लज्जा पावै॥ बरके बाढे रावरे बातैं कहत बनाइ । ग्वारनिपै लै खातहैं जूठी छाक छिनाइ॥ कहत नँदलाडिले॥२९॥ धेनुरूप मम देह करत कौतूहल न्यारे। गोकुल गुप्त विलासजानि को सकै हमारे॥ या बृंदावन ग्वारिनी जित तित अमृतबेलि । तिहूंलोकमें गाइ ये

मेरे रसकी केलि॥कहत ब्रजनागरी॥३०॥ अबलौं कीन्ही कानि कान्ह अब तुमसों लरिहैं । अधर नयन रस कोप विरचि अनउत्तर करिहैं॥मो आगेको छोहरा जीत्यो चाहै मोहिं।काके बलइतरातहौ देहुँ न नख भरि तोहिं॥कहत नँदलाडिले॥३१॥ चितैवदन मुसकाइ हाथ दधिपूरन दोना। इत सुंदरी बिचित्र उतहि घनश्याम सलोना ॥ अतितामस तोहि ग्वालिनी मैं सब जानतआदि । खोटी करनी जाहि मेरेकी सोई करे उपादि ॥ कहत ब्रजनागरी ॥३२॥ तोहिं न छांडौं कान्ह दान तुमको नहिं देहौं । बिना कहे ब्रजलोग कहा काहू पतिऐहौं ॥ लाज नहीं तुम आवई बोलत जब सतराइ । कहूं कंस सुनि पाइहै गहत फिरहुगे पाइ ॥ कहत नँदलाडिले ॥ ३३ ॥ सुनत हँसे नँदलाल ग्वारि जिय तामस मान्यो । सींच्यो अमृतबैन कोप कर्षत नहिं जान्यो ॥ कहां बसतिहौ बावरी सुनहु न मुग्ध गँवारि । ब्रजबासी कहा जानिहीं तामसको व्यवहारि॥ कहत ब्रजनागरी ॥३४॥ जननी जन परिहरचो तात कुलधर्म नशायो । गोपराइके गेह पुत्र ह्वै नाम धरायो ॥ इतनेते इतनो कियो खाटी छांछि पिवाइ । तुमहि दोष नहिं लाडिले ओछो गुण क्यौं जाइ॥कहत नंदलाडिले ॥३५॥ अबिगत अगम अपार आदि नाहीं अबिनासी । परम पुरुष अवतार माया जिनकी है दासी ॥ तुमहि मिलेओछे भएकहा रही करि मौन । तुम्हरेआगे न्यावहे दुहूमें ओछो कौन ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ३६ ॥ हमहि ओछांई भई जबहि तुमको प्रतिपाले। तुम पूरे सब भांति मात पितु संकट घाले ॥ कहा चलत उपराबटे अजहूं खिसी न गात । कंस सौंह दे पूछिये जिन पटके हैं सात॥ कहत नंदलाडिले ॥३७॥ कंसकेश निग्रहौं पुहुमिको भार उतारौं।उग्रसेनशि रछत्र चमर अपने कर ढारौं ॥ मथुरा सुरनि बसाइहौं असुर करौं यमहाथ । दनुज वदन बिरदावली सांचो त्रिभुवननाथ ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ३८ ॥ तब न कंस निग्रह्यौ पुहुमिको भार उतारचो। चोरी जायो मातु गोद गोकुल पगधारचो ॥ अब बहुतै बातें कहौ दही दूधके मात । जो ऐसे बलवंत हो मथुरा काहे न जात ॥ कहत नँदलाडिले ॥ ३९ ॥ जो जैहौं मधुपुरी बहुरि गोकुल नहिं ऐहौं ।यह अपनो परताप नंद यशुमतिहि सुनैहौं ॥ वचनलागि मैं है कियो यशुमतिको पयपान ।मोहि ग्वार जनि जानहू ग्वारिनि सुनहु निदान॥कहत ब्रजनागरी ॥४०॥ हम ग्वाली तुम तरनिरूपरस रवि शशि मोहै । तीनलोक परताप छत्र सिंहासन सोहै ॥ गयो गर्व गति ग्वालिनी देखि चरित तेहि काल। हम अहीर ढीगे दई तुम जैजै मदनगोपाल ॥ और दिननते आजु दही हम ऊखा ल्याई । देखत ज्योति बिलास दई मुख वचन ढिठाई ॥ कान्ह बिलग जिनि मानहु राखहु पिछलो नेहु। दही दूधकी को गनै कछु हमहूपैते लेहु ॥ धन्य नंदको गेह धन्य गोकुल जहँ आये। धनि गोपनकी नारि जहां तुम रोकन धाये ॥ धनिधनि झगरो आजुको इह सुख नाहिन पार। नंदनँदन पर कीजिये तन मन धन बलिहार ॥ लै दधि आगे धरचो कान्ह लीजै जो भावै । खाइ जाइ मंजार काज एकौ नहिं आवै॥ हम अनखी या बातको लेत दानको नाउँ । सहज भाव रहो लाडिले बसत एकही गाउँ । कहत नँदलाडिले॥ ४१ ॥ अभरन दियो मँगाइ कियो गोपिन मनभायो । हिलिमिलि बढ्यो सनेह आपु कर माट उठायो॥ नंदनँदन छबि देखिकै गोपिन वारो प्रान । कुंजकेलि मनमें बसी गायो सूर सुजान॥ ४२ ॥ ११६०॥ राग बिलावल॥जबहिं कान्ह यह बात सुनाई। ब्रजयुवती अति गई मुरझाई॥ कंस सँहारन मथुरा जैहौं । बहुरी फिरि ब्रजको नहिं ऐहौं॥ दैवै गर्भवास हौं लीन्हौं । तुमको गोकुल दरशन दीन्हौं ॥ नंद यशोदा अति तप कीन्हों । मोसो पुत्र

माँगि तब लीन्हों ॥ मोसो दूजो और न कोई। हरता करता मैंही सोई ॥ तुमसो सुत पयपान कराऊं। यह तुमसों मैं माँग पाऊं ॥ मोसो सुत तुमको मैं दैहौं। मथुरा जनमि गोकुलहि ऐहौं ॥ नंद यशोदा बचन बँधायो। ताकारण देही धरि आयो॥ यह बाणी सुनि ग्वारि झुरानी। मीन भये मानो बिन पानी ॥ इहै कथा तब गर्ग सुनाई। सोई आपु कहत री माई ॥ नरदेही करि मोहि न जानो। ब्रह्मरूप करि मोको मानो ॥ षोडश बरष मिलि सुख करिहौं। मथुरा जाइ देव उद्धरिहौं ॥ केश गहे अरि कंस पछरिहौं। असुर कठोर यमुन लै डरिहौं ॥ रंगभूमि करि मल्लन मारौं। प्रबल कुवलियादंत उपारौं ॥ सुनहु नारि हरिमुखकी बानी। यह सुनिसुनि तरुणी बिकलानी ॥ तन मन धन इनपर सब वारहु। जोबनदान देहु रिसि टारहु। षोडश वर्ष गए धौं जैहैं। ब्रजते जाइ मधुपुरी रैहैं ॥ राजा उग्रसेनको करिहैं। कनकदंड आपुन कर धरिहैं॥ मात पिता वसुदेव देवकी। यशुमति धाइ कहतिहैं इनकी ॥ अब तिनके बंधन मोचहिंगे। दरशबिनापुनि हम लोचहिंगे॥ मथुरा नारिनको सुख दैहैं। तब घट प्राण कहौ क्यों रैहैं॥ कहत हँसी यह बात अयानी। जानतिहौ तुम कछुक सयानी॥ जोबन दान लेहिंगे तुमसों। चतुराई मिलवतिहैं हमसों ॥ इनके गांस कहा री जानौ। इतनी कही एक जनि मानौ ॥ जो चाहै सो दीजै इनको। ज्यो बिन देखे रहत न जिनको॥ आपुआपु यह बात बिचारैं। नारि नारि मन धीर न धारैं ॥ आगे धरैं दूध दधि माखन। प्रथमहिं यह कीजै संभाषन ॥ बडे चतुर तुम अहो कन्हाई। तरुनि सबनि कहि इहै सुनाई ॥ जानी बात तुम्हारे मनकी। दूरि न कीजै यह रिस तनकी॥ सबनि धरयो दधि माखन आगे। लेहु सबै अब बिनही माँगे ॥ तुम रिस करत देखि सुख पावैं। याते बारहिं बार खिझावैं ॥ तनु जोबन धन अर्पन कीन्हों। मन दै मन हरिको सुख दीन्हों ॥ सुभग पात दोना लिये हाथनि। बैठ सखा श्यामएकसाथनि ॥ मोहन खात खवावत नारी। माँगिलेत दधि गिरिवरधारी ॥ आपुहि धन्य कहति ब्रजनारी। रुचिकरि माँगि खात बनवारी ॥ और खाउ मोहन दधिदानी ॥ यह कहि कहि तरुणी मुसुकानी ॥ सुख दीनो हरि अंतर्यामी। ब्रज युवतिनके पूरनकामी ॥ देखत रूप थकित ब्रजनारी। देह गेहकी सुद्धि बिसारी ॥ सूर श्याम सबके सुखकारी। कह्यो जाहु घर घोपकुमारी ॥ ६१ ॥ राग रामकली ॥ युवती ब्रज घर जान बिचारति। कबहुँक मटुकी लेत शीशपर कबहुँ धरणि फिरि धारति ॥ देखत श्याम सखासब देखत चितैरहीं ब्रजनारि। रीती मटुकिनमें कछु नाहीं सकुचति मनहिं विचारि ॥ तब हँसि बोले श्याम जाहु घर तुमको भई अबार। सकुचति दान पाछिलेको तुम मैं करिहौं निर्वार ॥ यह कहिके हरि ब्रजहि सिधारे युवतिन दान मनाई। सूर श्याम नागर नारिनके चित लैगए चुराई ॥ ६२ ॥ राग बिलावल अलहिआ ॥ रीती मटकी शीश लै चलीं घोपकुमारी। एक एककी सुधि नहीं को कैसी नारी ॥ बनहीमें बेंचति फिरैं घरकी सुधि डारी। लोक लाज कुलकानिकी मर्यादा टारी ॥ लेहुलेहु दधि कहतिहैं बनशोर पसारी। द्रुम सब घर करि जानहीं तिनको दे गारी ॥ दूध दह्यो नहिं लेहुरी कहिकहि पचिहारी। कहति सूर घर कोउ नहीं कहां गई दईमारी ॥ ६३ ॥ राग सोरठ ॥ या घरमें कोउ है की नाहीं। बारबार बूझति बृक्षनको गोरस लैहौ कि नाहीं ॥ आपुहि कहति लेहु नाहीं दधि और द्रुमन तर जाती। मिलति परस्पर विवश देखि तेहि कहति कहा इतराती ॥ ताको कहति आपु सुधि नाहीं सो पुनि जानत नाहीं। सूर श्याम रसभरी गोपिका बनमें यों बितताहीं ॥ ६४ ॥ गौरी ॥ मटुकी शीश धरैं। बनकी घरकी सुरति न काहू लेहु दही यह कहत फिरैं ॥ कबहुँक जाति कुंज भीतरको तहाँ

श्यामकी सुरति करैं । चौंकि परति कछु तनु सुधि अवाति जहां तहाँ सखि सुनति ररैं ॥ तब यह कहति कहौं मैं इनिसों भ्रमि भ्रमि बनमें वृथा मरैं । सूर श्यामके रस पुनि छाकति वैसेहीढंग बहुरि ढरैं ॥ ६५ ॥ राग नट ॥ तरुणी श्यामरस मतवारि । प्रथम जोबनरस चढायो अतिहि भई खुमारि ॥ दूध नहिं दधि नहीं माखन नहीं रीतो माट । महारस अँगअंग पूरण कहां घर कहां बाट ॥ मातु पितु गुरुजन कहांको कौन पति को नारि । सूर प्रभुके प्रेम पूरन छकिरहीं ब्रजनारि ॥ ६६ ॥ राग रामकली ॥ गोरस लेहु रीकोउआइ । द्रुमनिसों यहकहतिडोलतिकोनलेइबुलाइ ॥ कबहुँ यमुनातीरको सब जातिहैं अकुलाइ । कबहुँ बंसीवटनिकट जुरि होति ठाढी धाइ ॥ लेहु गोरसदान मोहन कहां रहे छपाइ । डरनि तुम्हरे जाति नाहीं लेत दह्यो छिडाइ ॥ मांगिलीजै दान अपनो कहतिहैं समुझाइ । आइहो पुनि रिस करत हरि दह्यो देत बहाइ ॥ एक एकहि बात बूझत कहां गए कन्हाइ । सूरप्रभुके रंगराची जियगयो भरमाइ ॥ ६७ ॥ राग जैतश्री ॥ बैठिगई मटुकी सब धरिकै । यह जानत अबहींहैं आवत ग्वाल सखा सँग हरिकै ॥ अंचलसों दधिमाट दुरावति दृष्टि गई तहां परिकै । सबनिमटुकिया रीती देखी तरुनी गई भभरिकै ॥ कहिकहि उठीं जहां तहँ सब मिलि गोरस गयो कहुँ ढरिकै । कोउकोउ कहैं श्याम ढरकायो जान देहु री जरिकै ॥ यहि मारग कोऊ जिनि आवहु रिस करि चलीं डगरिकै । सूर सुरति तनुकी कछु आई उतरत काम लहरिकै ॥ ६८ ॥ रागनट ॥ चकृत भईं घोषकुमारि । हम नहीं घर गईं तबते रहीं बिचारि बिचारि ॥ घरहिते हम प्रात आई सकुचि वदन निहारि । कछु हँसति कछु डरति गुरुजन देतिह्वै-हैंगारि ॥ जो भई सो भई हम कहँ रहीं इतनी नारि । सखासँग मिलि खाइ दधि तबही गए बन-वारि ॥ इहांलौंकी बात जानति यह अचंभो भारि । इहै जानति सूरके प्रभु गए शिर कछु डारि ॥ ६९ ॥ राग धनाश्री श्यामबिना यह कौन करै । चितवतही मोहनी लगावत नेक हँसनिपर मनहिं हरै ॥ रोकिरह्यो प्रातहि गहि मारग लेखो करि दधिदान लियो । तनुकी सुधि तबहींते भूली कछु पढिकै शिर नाइदियो ॥ मनके करति मनोरथ पूरण चतुर नारि एहिभांति कहै । सूर श्याम मन हर्यो हमारो तेहि बिनु कहु कैसे निबहै ॥ ७० ॥ मन हरिसों तनु घरहि चलावति । ज्यों गज मत्त जाल अंकुशकर घर गुरुजन सुधि आवति ॥ हरिस्सरूप इहै मद आवत डर डार्यो जु महावत । गेह नेहबंधन पग तोर्यो प्रेमसरोवर धावत ॥ रोमावली सूंड विविकुच मनों कुंभस्थल छबिपावत । सूर श्यामकेहरि सुनिके जोबनगज दर्प नवावत ॥ ७१ ॥ युवतिगई घर नेक न भावत । मात पिता गुरुजन पूछत कछु औरै और बतावत ॥ गारी देति सुनति नहिं नेकहु श्रवण शब्द हरि पूरे । नैन नहीं देखति काहूको जो कहुँ होहिं अधूरे ॥ वचन कहति हरिहीके गुनको उतही चरण चलावै । सूर श्याम बिन और न भावै कोउ जितनो समुझावै ॥ ७२ ॥ सोरठ ॥ लोकसकुच कुलकानि तजी । जैसे नदी सिंधुको धावै तैसे श्याम भजी ॥ मात पिता बहुत्रास दिखायो नेक न डरी लजी । हारि मानि बैठे नहिं लागति बहुतै बुद्धि सजी ॥ मानत नहीं लोकमर्यादा हरिके रंग मजी । सूर श्यामको मिलि चूने हरदी ज्यों रंग रजी ॥ ७३ ॥ बारबार जननी समुझावति । काहेको तुम जहँतहँ डोलति हमको अतिहि लजावति ॥ अपने कुलकी खबरि करौ धौं सकुच नहीं जिय आवति । दधि बेचहु घर सूधे आवहु काहे झेर लगावति ॥ यह सुनिकै मन हर्ष बढायो तब इक बुद्धिबनावति । सुनि मैया दधिमाट ढरायो तेहि डर बात न आवति ॥ जान-देहि कितनो दधि डार्यो ऐसे तब न सुनावति । सुनहु सूर यहि बात डरानी माता उर लै लावति

॥ ७४ ॥राग सारंग ॥नेक नहीं घरमों मन लागत। पिता मात गुरुजन परबोधत नीके वचन बाणसम लागत॥तिनको धिग धिग कहति मनहिंमन इनको बनै भलेही त्यागत । श्यामबिमुख नर नारि वृथा सब कैसे मन इनिसों अनुरागत ॥ इनको बदन प्रात दरशै जिनि बारबार बिधिसों यह मांगत। यह तनु सूर श्यामको अर्प्यो नेक टरत नहिं सोवत जागत॥७५॥राग धनाश्री ॥ पलकओट नहिं होत कन्हाई । घर गुरुजन बहुतै बिधि त्रासत लाज करावत लाज न आई ॥ नयन जहां दरशन हरि अटके श्रवण थके सुनि वचन सोहाई। रसना और नहीं कछु भाषत श्यामश्याम रट इहै लगाई ॥ चित चंचल संगहिसँग डोलत लोकलाज मर्याद मिटाई ।मन हरिलियोसूरप्रभु तबहीं तनु बपुरेकी कहाबसाई॥१६॥राग बिलावल ॥चलीं प्रात हीगोपिका मटुकिनलै गोरस। नयन श्रवन मन चित बुधि ये नहिं काहूके बश ॥ तनु लीन्हें डोलत फिरैं रसना अटक्यो जस। गोरस नाम न आवई कोऊ लैहै हरिरस॥जीव पर्‌यो या ख्यालमें अरु गए दशा दश। बझे जाइ खग-बृंद ज्यों प्रिय छबि लटकनि लस॥छांडिदेहु डरात नहिं कीन्हो पावै तस। सूर श्याम प्रभु भौंह-की मोरनि फांसी गस॥७७॥राग कान्हरो ॥ दधिबेचत ब्रजगलिन फिरैं । गोरसलेन बोलावत कोऊ ताकी सुधि नेकहु न करैं॥उनकी बात सुनत नहिं श्रवणनि कहति कहा ये घर न जरैं । दूधदह्यो ह्यां लेत न कोऊ प्रातहिते शिर लिये ररैं ॥ बोलि उठति पुनि लेहु गोपालहि घर घर लोक-लाज निदरैं। सूर श्यामको रूप महारसजाके बल काहू न डरैं॥७८॥गोरसको निजनाम भुलायो। लेहुलेहु कोऊ गोपालहि गलिनगलिन यह शोर लगायो ॥ कोउ कहै श्याम कृष्ण कहै कोऊ आजु दरश नाहीं हम पायो ।जाके सुधि तनकी कछु आवति लेहु दही कहि तिनहि सुनायो॥ एक कहिउठत दान मांगत हरि कहूँ भई की तुमहिं चलायो । सुनहुसूर तरुणी जोबनमद तापर श्याम महारस पायो॥७९॥ग्वालिनि फिरति बेहालहिसों ।दधि मटुकीशिर लीन्हे डोलति रसना रटति गोपालहिसों॥गेह नेह सुधि देह बिसारे जीव पर्‌यो हरिख्यालहिसों ।श्यामधामनिजबास रच्यो रचि रहित भई जंजालहिसों॥छलकत तक्र उफनि अँग आवत नहिं जानति तेहिकालहिसों। सूरदासचित ठौरनहींकहुँ मन लाग्योनँदलालहिसों॥८०॥राग मलार ॥ कोऊमाई लैहैरीगोपालहि। दधिको नाम श्यामसुंदर रस बिसरिगई ब्रजबालहि ॥ मटुकी शीशफिरत ब्रजबीथिन बोलत वचन रसालहि । उफनत तक्रचहूँदिशि चितवति चित लाग्यो नँदलालहि ॥ हँसति रिसाति बोलावति बरजति देखहु उलटी चालहि ॥ सूर श्यामबिनु और न भावै या बिरहिनि बेहालहि ॥ ८१ ॥ राग गौडमलार ॥ ग्वालिनि प्रगट्यो पूरन नेहु। दधिभाजन शिरपर धरे कहति गुपालहि लेहु॥ बन बीथिन निजपुर गली जहीं तहीं हरिनाउँ । समुझाई समुझत नहीं सिख दै बिथक्यो गाउँ ॥ कौन सुनै काके श्रवण काकी सुरति सकोच। कौन निडर डर आपको को उत्तम को पोच ॥ प्रेम पिये बर बारुनी बलकत बल न सँभार । पग डगमग जित तित धरति मुकुलित अकल लिलार॥ मंदिरमें दीपक दिये बाहेर लखै न कोइ। तिन्हैं प्रेम परगट भए गुप्त कौनपै होइ ॥ लज्जा तरलतरंगिनी गुरुजन गहरी धार । दुहूँ कूल तरुनी मिलीं तिहि तरत न लागी बार ॥ विधि भाजन ओछो रच्यो शोभासिंधु अपार । उलटि मगन तामें भई तब कौन निकासनिहार॥ जैसे सरिता सिंधुमें मिली जु कूल बिदारि । नाम मिट्यो सलिलै भई तब कौन निबेरै बारि॥ चित आकर्ष्यो नंदसुत मुरली मधुर बजाइ । जिहि लज्जा जग लज्जियो सो लज्जा गई लजाइ ॥ प्रेम मगन ग्वालिनि भई सूर सु प्रभुके संग । नैन बैन मुख नासिका ज्यों कैंचुलि तजै भुजंग॥८२॥

राग सुघराइ ॥ छोटी मटुकिया मधुर चाल लेचलोरी गोरस बेंचन रसाल ।हरबराइ उठि आइ प्राततें बिथुरी अलक अरु बसन मरगजै तैसीये सोहति कुँभिलानीमाल ॥ गेह नेह सुधि नेक नआवति मोहिरही तजि भव जंजाल । औरै कहति और कहिआवति मनमोहनके परी ख्याल ॥ जोइजोइ बूझत है री कहा यामें कहति फिरति कोऊ लेहु गोपाल । सूरदास प्रभुके रसबश भई चतुर ग्वालिनी तनु मनु गति बेहाल ॥८३॥ राग कान्हरो ॥ दधि मटुकी शिरधरे ग्वालिनी कान्हकान्ह करती डोलै । बिवश भई तनु न सँभारे री गोरस सुधि बिसरिगई आपु बिकानी बिनु मोलै ॥ जोइजोइ पूछत यामें है री कहा लेहुलेहु करति फिरति डोल डोलै ॥ सूरदास प्रभुके रस बश भई ग्वालिनी बिरहाबश तनुगति भई डोलै ॥८४॥ राग धनाश्री ॥ बेचतिही दधि ब्रजकीखोरि । शिरको भार सुरति नहि आवति श्यामश्याम टेरत भई भोरि ॥ घरघर फिरति गोपालहि बेंचति मगन भई मन ग्वारि किशोरि । सुंदर वदन निहारन कारन अंतर लगी सुरतिकी डोरि ॥ ठाढी भई विथकि मारगमें माँझ हाट मटकी सो फोरि । सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि चित चिंतामणि लियो अजोरि ॥८५॥ राग बिलावल ॥ नरनारी सब बूझतजाई।दही मही मटुकीशिर लीन्हें बोलतिहो गोपाल सुनाई ॥ हमहिं कहो तुम करति कहा यह फिरति प्रातहीते हो आई । गृह द्वारो कहुँ है की नाहीं पिता मात पति बंधु न माई ॥ इतने उत उतते इत आवति विधि मर्यादा सबै मिटाई । सूर श्याम मन हरयो तुम्हारो हम जानी इह बातबनाई ॥८६॥ रागधनाश्री ॥ कहति नंदघर मोहिं बतावहु । द्वारहि मांझ बात इह कहती है कहाँ मोहिं दिखावहु ॥ याही गाँव किधौं औरै कहुँ जहां महरको गेहु । बहुत दूरिते में आईहौं कहि काहे न यश लेहु ॥ अतिही संभ्रम भई ग्वालिनी द्वारेही पर ठाढी।सूरदास स्वामीसों अटकी प्रीति प्रगट अतिबाढी ॥ ८७॥ राग गुंडमलार ॥ ग्वारिनि नंददुआर नंदगृह बूझै।इतहिते जाति उत उतहितेफिरैइत निकटहै जाति नहिं नेक सूझै॥भई बेहाल ब्रजबाल नँदलालहित अर्पि तनमन सबै तिन्हें दीन्हों ।लोकलज्जातजी लाज देखत लजी श्यामको भजी कछु डर न कीन्हों ॥ भूलिगयो दधि नाम कहति लैहो श्याम नहीं सुधि धाम कहुँ है कि नाहीं । सूरप्रभुको मिली मेटि भलिअनभली चून हरदी रंगी देहछाहीं ८८॥ राग रामकली ॥ तब एक सखी प्रीतम कहति।प्रेम ऐसो प्रगट कीन्हों धीर काहेनगहति॥ ब्रज घरनि उपहास जहँतहँ समुझि मन किनु रहति।बात मेरी सुनत नाहिन कतहिनिंदासहति ॥ मातु पितु गुरुजननि जान्यो भली खोई महति। सूरप्रभुको ध्यानचितधरिअतिहि काहे बहति ॥८९॥ राग धनाश्री ॥ आपुकहावतिबडीसयानी॥तबतूकहतिसबनिसोंहँसिहँसिअबतूप्रगटहिभईदिवानी॥ कहाँगई चतुराई तेरीअतिहीकाहे भईअयानी । गुप्त प्रीति परगट तैं कीन्हीं सुनति कछू घरघरकी बानी ॥ एकहि बेर तजी मर्यादा मात पिता गुरुजनहिं भुलानी । सुनहु सूर ऐसी न बूझिऐ शीश धरेमटुकीबिततानी॥९०॥ राग नट॥ सुनु री ग्वारिमुगुधगवाँरि । श्यामसों हित भलेकीन्होंराखिसकै उचारि॥ ओछी बुधितैं करी सजनी लाज दीन्ही डारि ।लाजआवति मोहिं सुनिरी तोहि कहत गँवारि॥ कृष्णधन कहाप्रगट कीजै।दियो ताहि उघारि। अजहुँ काहेन समुझि देखति कह्यो सुनुरी नारि ॥ ज्वाब नाहिन आवईमुख कहतिहौं जो पुकारि।सूर प्रभुकोपाइकै यह ज्ञान हृदय बिचारि ॥९१॥ राग कान्हरो ॥ कछुकैहै कीमौनहिरैहै । कहाकहतिहौंतोसोंकबकीतोको ज्वाब कछूमोहि देहै॥ सुनिहै मात पितालोगनिमुख यह लीलाउनि सबैजनैहै। प्रातहिते आई दधिबेंचनघरहिआजुजैहै कि नजैहै॥मेरोकह्योमानिहैनाहींऐसहिभ्रमिभ्रमिद्योसबितैहै। मुखतोखोलिसुनौंतेरीबानीभलीबुरी

कैसी घर कैहै ॥ गुप्तप्रीति काहे न करि हरिसों प्रगट किए कछु नफा बढेहै । सूर श्यामसों प्रीति निरंतर लाज किये अंतर कछु ह्वैहै ॥ ९२॥ कहा कहति तू मोहि री माई। नंदनँदन मन हरि लियो मेरो तबते मोको कछु न सोहाई॥अबलौं नहिं जानति मैं कोही कबते तू मेरे ढिग आई । कहाँ गेह कहां मात पिताहैं कहां सजन गुरुजन कोभाई॥कैसी लाज कानि है कैसी कहा कहतिह्वै रिसि-आई। अबतौ सूर भजी नँदलालहि की लघुता कीहोउ बडाई॥राग धनाश्री॥बारबार मोहिंकहासुना-वति। नेकहु टरत नहीं हृदयते अनेक भांति मनको समुझावति ॥ दो बल कहा देति मोहि सजनी तूतो बडी सुजान। अपनीसी मैं बहुतै कीन्ही रहति न तेरी आन॥ लोचन और न देखत काहू और सुनत नहिं कान । सूर श्यामको बेगि मिलावहु कहति रहत घट प्रान ॥ ९३ ॥ सबै हिरानी हरि-मुख हेरे । घुँघट ओट पटओट करे सखि हाथौ हाथ न मेरे ॥ को है लाज कौनको डर है कहाकहैं भौतेरे। को अब सुनै श्रवन हैं काके निपट निगमके टेरे॥मेरे नैननहो नैननकी जोपे जानत फेरे। सूरदास है चेरी कीनी मन मनसिजके चेरे॥९४॥राग नट॥ मेरे कहेमें कोऊ नाहीं । कहा कहौं कछु कहि नहिं आवै एकहु नहीं डराहीं ॥ नयन ए हरि दरशनलोभी श्रवण शब्द रसाल। प्रथमही मन गयो तनुतजि तब भई बेहाल ॥इँद्रियनपर भूप मनहै सबनि लिये बुलाइ।सूर प्रभुकोमिल सब ए मोहिं करिगये बाइ॥९५॥राग गौरी॥कहा करौंमन हाथ नहीं । तू मोसों यह कहत भलीरी अपनो चित मोहिं देत नहीं ॥ नयन रूप अटके नहिं आवत श्रवन रहे सुनि बात तहीं । इंद्री धाइमिलीं सब उनको तनुमें जीव रह्यो सँगही॥ मेरे हाथ नहीं ये कोऊ घटलीन्हें इक रही महीं ।सूरश्याम संगते कहूँ टरत न आनिदेहि जौ मोहि तुही॥९६॥राग सारंग ॥बिकानी हरि मुखकी मुसकानि। परवशभई फिरति सँग निशिदिन सहज परी यह बानि॥नैननिनिरखि बसीठी कीन्हीमनुमिलयो पय पानि । गहि रतिनाथ लाज निजपुरते हरिको सौंपी आनि ॥ सुनि सखि सुमुखि नंदनंदनकी दासी सबजगजानि।जोइजोइ कहत करत सोई कृत आयसु माथे मानि॥ गयोज्ञातिअभिमान मोह मद पति परजन पहिचानि। सूर सिंधु सरिता मिलि जैसे मनसा बूँद हिरानि ॥ ९७॥ अबतो प्रगट भई जग जानी । वा मोहनसों प्रीति निरंतर क्यों व रहैगी छपानी॥ कहा करौं सुंदरि मूरति इनि नयननिमांझ समानी । निकसत नहीं बहुत पचि हारी रोमरोम अरुझानी ॥ अब कैसे निरवारि जातिहै मिली दूध ज्यों पानी । सूरदास प्रभु अंतर्यामी उरअंतरकी मानी ॥ ९८ ॥ कहा करैगो कोऊ मेरो । हौं अपने पतिव्रतहि न टरिहौं जग उपहास करौ बहुतेरो ॥ कोउ किन लै पाछे मुख मोरै कोउ कहै श्रवन सुनाइ न टेरो । हौं मति कुशल नाहिनै काची हरिसँग छांडि फिरौं भवफेरो ॥ अबतौ जी ऐसी बनिआई श्यामधाम मैं करौं बसेरो। तेहिरँग सूर रँग्यो मिलिके मन होइ न श्वेत अरुन फिरि पेरो॥ ९९ ॥ रागधनाश्री ॥ माई री गोविंदासों प्रीतिकरत तबहीं काहेनहट-की री। यहतौ अब बात फैलगई बईबीज बटकी री॥ घरघर नित इहै बेर बानी घटघटकी ।मैं तो यह सबै सही लोकलाज पटकी ॥मदके हस्ती समान फिरति प्रेम लटकी ॥ खेलतमें चूकि जाति होति कला नटकी। जल रजु मिलि गांठि परी रसना हरिरटकी ॥ छोरेते नहीं छुटति कइक बेर झटकी ॥ मेटे क्योंहू नमिटतिछाप परी टटकी। सूरदास प्रभुकी छबि हिरदे मेरे अटकी॥ १२००॥ राग आसावरी ॥ मैं अपनो मन हरिसों जोर्‍यो । हरिसों जोरि सबनिसों तोर्‍यो ॥ नाच कछ्यो तब घूँघुट छोर्‍यो । लोकलाज सब फटकि पिछोर्‍यो ॥ आगे पाछे नीके हेर्‍यो। मांझबाट मटुकी शिर फोर्‍यो ॥ कहि कहि कासों करति निहोर्‍यो। कहा भयो कोऊ मुख मोर्‍यो ॥सूरदास प्रभुसं

चित जोरचो । लोक वेद तिनुकासो तोरचो॥१॥सखीरी श्यामसों मन मान्यो । नीके करि चित कमलनैनसों घालि एकठो सान्यो ॥ लोकलाज उपहास नमान्योन्योतिअपुनही आन्यो। या गोबिंदचंदकेकारनबैर सबनिसोंठान्यो ॥ अब क्योंजातिनिबेरिसखी रीमिलोएकपय पान्यो। सूरदास प्रभुमेरो जीवन हैपहिली पहिचान्यो ॥२॥ नंदलालसों मेरो मन मान्यो कहा करैगो कोई री। मैं तो चरण कमल लपटानी जो भावै सो होईरी॥ बाप रिसाइमाइघर मारैहँसै बिरानो लोग री ।अब तौ श्यामहिसोंरति बाढी बिधिनारच्यो संयोग री ॥ जाति महतिपतिजाइनमेरी अरु परलोक नशाईरी।गिरिधरवर मैं नेक नछाँडौं मिलीनिशान बजाईरी ॥ बहुरिकबहिं यह तनु धरिपैहौं कहाँ पुनि श्रीबनवारी री।सूरदास स्वामीके ऊपर यह तनुडारौंवारी री॥३॥ राग सारंग ॥ करनदै लोगनको उपहास ।मन क्रम वचन नंदनंदनको नेक नछाँडौं पास ॥ सब या ब्रजके लोग चिकनियां मेरे भाए घास ।अबतोइहै बसी री माई नहिं मानौंगी त्रास॥ कैसे रह्योपरै री सजनी एकगाँवको बास ।श्याममिलनकी प्रीतिसखी री जानत सूरजदास॥४॥ राग रामकली॥ एक गाउँको बास धीरज कैसेकै धरौं । लोचन मधुप अटक नहिं मानत यद्यपि जतन करौं ॥ वे येहि मग नितप्रति आवतहैं हौं दधि लै निकरौं। पुलकित रोम रोम गदगद सुर आनँद उमँगि भरौं॥ पल अंतर चलिजात कलपभरि बिरहाअनल जरौं । सूर सकुच कुलकानि कहाँलगि आरजपथहि डरौं॥५॥मेरो मन हरि चितवनि अरुझानो। फेरत कमलद्वार ह्वै निकसे करत शृंगार भुलानो ॥ अरुन अधर दशननि द्युति राजति मोहन मुरि मुसकानो । उदधितनया सुत पांति कमलके बंदन भुरके मानो ॥ सुभग कपोललोल मणिकुंडल इह उपमा केहि बानो । उभय अंक अति पान अमीरस मीन ग्रसत बिधि भानो ॥ यहि रस मगन रहति निशि वासर हारि जीति नहिं जानों ।सूरदास चितभंगहोत क्यों जोजेहिरूप समानो॥६॥राग रामकली॥ हौं सँग साँवरेके जैहौं । होनी होइ सो होवै अबहीं यश अपयश काहू न डरैहौं॥ कहा रिसाइ करै कोउ मेरो कछु जो कहै प्राण तेहि दैहौं। दैहौं त्यागि राखिहौं यह व्रत हरिरति बीज बहुरि कब वैहौं ॥का यह सूर अजिर अवनी तनु तजि अगास पियभवन समैहौं। का यह ब्रजवापीक्रीडा-जलभजिनँदनंदसबै सुखलैहौं॥ ७॥ राग धनाश्री॥तैंमेरेहितकहतसहीरी। यह मोकोसुधिभलीदिवाई तनु बिसरे मैं बहुत बही री॥ जबते दानलियोहरि हमसों हँसिहँसि री कछु बात कहीरी। काकेवर काके पितु माता काके तनुकी सुरतिरहीरी ॥ अब समुझति कछु तेरीवाणीआई हौंलइदहीमहीरी। सुनहु सूर प्रातहिते आई यह कहिकहि जिय लाज गहीरी ॥ ८ ॥ सुनरी सखी बात एक मेरी। तोसों धरौं दुराइ कहौं केहि तू जानहि सब चितकी मेरी ॥ मैं गोरस लै जाति अकेली कालि कान्ह बहियाँ गहि मेरी । हारसहित अचरा गहो गाढे एक कर गही मटुकिया मेरी॥ तब मैं कह्यो खीझि हरि छांडहु टूटैगी मोतिनलर मेरी। सूर श्याम ऐसे मोहि रिझई कहा कहति तू मोसों मेरी ॥ ९ ॥तऊ न गोरस छांडिदयो । चहुँ फल भवन गह्यो सारँगरिपु वाजि धरा अथयो ॥ अमी वचन रुचि रचतकपट हठि झगरो फेरि ठयो।कुमुदिनि प्रफुलितहौं जियसकुची लैमृगचंद जयो ॥ जानिनिशा शशिरूप विलोकत नवलकिशोरभयो । तबते सूर नेक नहिं छूटत मनअप-नाइलयो॥ १० ॥ राग नट॥ सखी वहगई हरिपै धाइ । तुरतही हरिमिलो ताको प्रगटकहीसुनाइ॥ नारि एक अति परमसुंदरि बरनि कापै जाइ। प्रातते शिर धरे मटुकी नंदगृह भरमाइ ॥ लेहु लेहु गोपाल कोउ दह्यो गई भुलाइ । सूर प्रभु कहुँ मिले ताको कहति करि चतुराइ॥११॥ राग कान्हरो॥

नंदग्रामको मारग बूझैं है कोऊ दधि बेंचनहारी॥सुनहु न श्याम कठिन तनुगारे बिधुबदनी अरु हाट-कढारी॥ अब याको सुर ताहि बिरंचे जाहि बिरंचि शीश पग धारी। कमल कुरंग चलत बरुना भष राख्यो निकट निषंग सँवारी॥गति मराल शावक ता पाछे जावक मुक्ता चुनत बिसारी। सूरदास प्रभु कहत बनै नहिं सुखसंपति वृषभानुदुलारी॥१२॥राग बिलावल॥शिर मटुकी मुख मौन गही॥भ्रमिभ्रमि विवश भई नवग्वालिनि नवलकान्हके रस उमही॥ तनुकी सुधि आवति जब मनहीं तबहिं कहति को लेत दही। द्वारे आइ नंदके बोलति कान्ह लेहु किन सरस मही॥ इत उत ह्वै आवति फिरि इहईं महरि तहाँ लगि द्वार रही। अवर बोलावत ताहि न हेरत बोलति आनि नंद दरही॥ अंग अंग यशुमति तेहि चरची कहा करति यह ग्वारि बही। सुनहु सूर यह ग्वारि भ्रमानी कबकी एही ढंग रही॥ १३ ॥राग रामकली॥ कबकी मह्यो लिये शिर डोलै॥ झूठेही इत उत फिरि आवै इहां आनि पै बोलै॥ मुँहसों भरी मथनियाँ तेरी तोहिं रटत भई सांझ। जानतिहौ गोरसको लैबो याही बाखरि मांझ॥ इत धौं आइ बात सुनि मेरी कहे बिलग जिनि मानै। तेरे घरमें तुही सयानी और बेचि नहिं जानै॥ भ्रमतहि भ्रमत भ्रमिगई ग्वालिनि बिकलभई बेहाल। सूरदास प्रभु अंतर्यामी आइ मिले गोपाल॥ १४॥ भयो मन माधवकी अवसेर। मौनधरे मुख चितवति ठाढी ज्वाब न आवै फेर॥ तब अकुलाइ चली उठि बनको बोलै सुनत न टेर। बिरहविवशचहुंघा भरमतिहै श्यामकहा कियो झेर॥ अबहू बेगिमिलो नँदनंदन दान करोनिरबेर।सूरश्यामअंकम भरिलीन्ही दूरिकियो दुख ढेर॥१५॥राग बिलावल॥सांची प्रीति जानि हरि आए। पूरन नेह प्रगटदरशाए॥लई उठाइ अंक भरि प्यारी। भ्रमि भ्रमि श्रम कीन्हों तनु भारी॥मुखमुख जोरिअलिंगन दीन्हों।बारबारभुजभरिभरि लीन्हों॥वृंदावन घन कुंजलतातर। श्यामा श्याम नवल नवला बर॥ मनमोहन मोहनि सुखकारी। कोककलागुण प्रगटे भारी॥ छूटे बंद अलक शिर छूटे। मोतिनहार टूटि सुख लूटे॥सूरश्याम बिपरीत बढाई। नागरि सकुचि रहीलपटाई॥१६॥ राग रामकली॥ यहकहिमौनसाध्योग्वारि। श्यामरस घटपूरि उछलित बहुरि धरयो सँभारि॥ वैसेही ढंग बहुरि आई देहदशा बिसारि। लेहु री कोऊ नंदनंदन कहै पुकारि पुकारि॥सखीसों तब कहति तू री को कहांकी नारि। नंदके गृह जाउँ कित ह्वै जहाँहैं बनवारि॥ देखि वाको चकृत भई सखि बिकल भ्रम गई मारि। सूर श्यामहि कहि सुनाऊं गए शिर कहा डारि॥॥ १७॥राग नट॥ श्यामाश्याम करत बिहार। कुंजगृह रचि कुसुमशैया छबि बरनि को पार॥ सुरति सुख करि अंग आलस सकुचि बसन सँभारि। परसि पद भुज कंठ दीन्हे बेठेहैं बर नारि॥ पीत कंचन बरन भामिनि श्याम तनु अनुहारि। सूर घन अरु दामिनी मिलि प्रगट सुख बिस्तारि॥ १८॥ राग कान्हरो॥ राधा वसनश्यामतनुचीन्ही। सारँगबदनबिलास बिलोचन हरि सारंग जानि रति कीन्ही॥ सारँग वचन कहत सारंगसों सारँगरिपु दै राखति झीनी। सारँगपानि कहत रिपु सारँग सारँग कहा कहति लियो छीनी॥सुधापान करि कुच नीकी बिधि रह्योशेष फिरि मुद्रा दीन्ही। सूर सुदेश आहि रतिनागर भुज आकर्षि बान कर लीन्ही॥ १९॥ तुमसों कहा कहौं सुंदरघन। या ब्रजमें उपहास चलतहै सुनिसुनि श्रवन रहति मनहीमन। जा दिन सबनि बछरु नोई करि मो दुहिदई धेनु बंसीबन। तुम गही बाँह सुभाइ आपने हौं चितई हँसि नेक बदनतन॥ ता दिनते घर मारग जित तित करत चबाउ सकल गोपीजन। सूर श्यामसों सांच पारिहौं यह पतिबरत सुनहु नँदनंदन॥२०॥ राग भैरव॥ कहाकहौंसुंदर घन तुमसों। घेग इहै

चलावत घर घर श्रवण सुनत जिय खुनसों ॥ भैनी मात पिता बंधव गुरु गुरुजन यह कहैं मोसों। राधा कान्ह एक सँग बिलसत मनहींमन अपसोसों॥ कबहुँक कहौं सबनिपरित्यागौं बूझतिहौंअब गोसों। सूर श्याम दरशन बिन पाये नयन देत मोहिं दोसों॥२१॥ राग रामकली ॥ बात यह तुमसों कहत लजाउँ। सुनि न जात घरघरको घेरा काहूमुख न समाउँ ॥ नर नारी सब इहै चलावत राधा मोहन एक। मात पिता सुनि सुनि अति त्रासत मैं एकै वे अनेक॥ आपुजबहि द्वारेह्वै निकसत देखत सबै सुगात। निंदति तुमहिं सुनावतिमोको सुनत न नेक सोहात॥ धिग नर धिग नारी धिगजीवन तुमहिंबिमुख धिगदेह।सूरश्यामयहकोऊ न जानत तनु ह्वैहै जरिखेह२२॥ राग गूजरी॥ श्याम यह तुमसों क्यों न कहौं। जहाँतहाँ घरघरको घेरा कौनीभांति सहौं॥ पिता कोपि करवाल लेत कर बंधु बधनको धावै। मात कहै कन्या कुलको दुख जनि कोऊ जग जावै ॥ बिनती एक करौं कर जोरे यहि बीथिन जिनि आवै। जे जनसब आपुनकोजानतते जय जन्मन पावैं॥मनक्रम वचन कहतिहौं सांची मैं मन तुमहि लगायो। सूरदास प्रभु अंतर्यामी क्यों न करहु मनभायो ॥ २३ ॥ राग रामकली॥ हँसि बोले गिरिधर रसबानी। गुरुजन खिझतकतहिरिसपावति काहेकोपछितानी॥ देहधरेको धर्म इहै है सजन कुटुँब गृहप्रानी। कहन देहु कहि कहा करैंगे अपनी सुरति हिरानी॥ लोकलाज काहेको छाँडति ब्रजही बसे भुलानी। सूरदास घट द्वै करि मन ये भेद नहीं कछुजानी ॥२४॥ राग जयतश्री॥ ब्रजबसि काके बोल सहौं। तुम बिन श्याम और नहिं जानौं सकुचनि तुमहिं कहौं ॥ कुलकी कानि कहाँलौं करिहौं तुमको कहां लहौं। धिगमाताधिग पिता विमुख तुव भावै तहां वहौं॥कोऊ करै कहै कछु कोऊ हरप न शोक गहौं।सूरश्याम तुमको बिनु देखे तनमन जीव दहौं॥२५॥ ब्रजहि बसे आपुहिबिसरायो। प्रकृति पुरुप एकैकरि जानहु वातनि भेद करायो॥ जल थल जहां रहौं तुम बिनु नहिं वेद उपनिपद गायो। द्वै तनु जीव एक हम तुम दोऊ सुख कारण उपजायो॥ब्रह्मरूप द्वितिया नहिं कोई तब मन त्रिया जनायो। सूरश्याम मुख देखि अल्प हँसि आनँदपुंज बढायो ॥२६ ॥ राग रामकली ॥तब नागरि मनहरप भई। नेह पुरातन जानि श्यामको अति आनंदमई॥ प्रकृति पुरुप नारी मैं वे पति काहे भूलिगई। को माता को पिता बंधु को यह तो भेट नई ॥ जन्म जन्म युग युग यह लीला प्यारी जानिलई। सूरदास प्रभुकी यह महिमा याते विवश भई ॥ २७ ॥ राग सूही ॥ सुनहु श्याम मेरी इक बिनती। तुम हरता तुम करता प्रभुजू मात पिता कौने गनती ॥ गैवर भेंति चढावत रासभ प्रभुता मेटि करत हिनती। अवलौं करी लोक मर्यादा मानहु थोरहि दिनती ॥ बहुरि बहुरि ब्रज जन्म लेतहौं इह लीला जानी किनती। सूरश्याम चरणनित मोको राखत रहै कहा मिनती॥ ॥ २८ ॥रागधनाश्री॥ देह धरेको यह फल प्यारी। लोकलाज कुलकानि मानिये डरिये बंधुपिता महतारी ॥ श्रीमुख कह्यो जाहु घर सुंदरि बडे महर वृपभानुदुलारी। तुम अवसेर करत सब ह्वैहैं जाहु वेगि देहैं पुनि गारी ॥ हमहूँ जाहिं ब्रज तुमहु जाहु अब गेह नेह क्यों दीजै डारी। सूरदास प्रभु कहत प्रियासों नेक नहीं मोते तुम न्यारी ॥२९॥ राग धनाश्री ॥ देहधरेकोकारणसोई। लोक लाज कुल कानि न तजिये जाते भलो कहै सबकोई ॥ मातपिताके डरको माने मानैंसजन कुटुँब सब लोई। तात मात मोहूको भावत तनु धरिकै मायावश होई ॥ सुनि वृपभानुसुता मेरी बानी प्रीति पुरातन राखहु गोई। सूर श्याम नागरिहि सुनावत मैं तुमएक नहीं हो दोई॥३०॥ राग सारंग॥ अब कैसे दूजे हाथ बिकाऊं। मन मधुकर कीन्हो वा दिनते चरणकमल निज ठाऊं॥ जो जानौं

और कोई करता तऊ न मन पछिताऊं।जो जाको सोई सो जानै अघतारन नर नाऊं॥जबपरतीति होइ या युगकी परमिति छुटत डेराऊं।सूरदास प्रभु सिंधु शरण तजि नदी शरन कत जाऊं ॥३१॥राग बिलावल॥ घर पठई प्यारी अंकम भरि।कर अपने मुख परसि त्रियाके प्रेमसहित दोऊ भुज धरिधरि॥सँग सुख लूटि हरष भई हिरदय चली भवन भामिनि गजगति ढरि। अंग मरगजी पटोरी राजति छबि निरखत रीझत ठाढे हरि ॥ बेनी डुलति नितंबनि पर दोउ छीन लंकपर वारों केहरि । फिरि चितयो तब प्यारी पियतन दुहूँ मनै आनंद हरष करि ॥ राधा हरि आधाआधा तनु एके द्वै ब्रजमें है अवतरि।सूरश्याम रसभरी उमँग अँग वहछबिदेखिरह्योरतिपति डरि॥३२राग बिलावल॥घरहि जाति मन हरष बढाये । दुख डारयो सुख अंग भारभरि चली लूहिसो पाये ॥ भौंह सकोरति चलति मंदगति नेक वदन मुसुकाए ।तहँ एक सखी मिली राधाको कहति भये मनभाए॥ कुंजभवन हरिसंग विलसि रस मनके सुफल कराए । सूर सुगंध चुनावन हारे कैसे दुरत दुराए॥३३॥राग जयतश्री॥कहा फूली आवत री राधा। मानहुँ मिली अंक भरि माधव प्रगटत प्रेम अगाधा॥ भ्रुकुटी धनुष नैन सर साधे वदन विकास अगाधा । चंचल चपल चारु अवलोकनि काम नचावति ताधा ॥ जेहि रस शिव सनकादि मगन भए शंभु रहत दिन साधा ।सो रस दिये सूर प्रभु तोको शिवा न लहति अराधा ॥ ३४॥ राग सोरठ ॥ राधेसों रस बरनि न जाई । जा रसको सुर भान शीश दियो सो तैं पियो अकुलाई ॥ पचिहारे सब बाल कमलमुख चंद्रवदन ठहराई । अजहुँ कमंध फिरत तेहि लालच सुंदरि सैन बुझाई ॥ मोहनते रसरूप आगरी कटति न जानि निकाई । सूरदास पपिहाके मुखमें कैसे सिंधु समाई॥३५॥राग नट॥मोसों कहा दुरावति राधा।कहां मिली नँदनंदनको जिन पुरयोमनकोसाधा॥ व्याकुलभई फिरतही अबहीं कामव्यथा तनुबाधा।पुलकित रोमरोम गदगद अब अँगअँग रूपअगाधा ॥ नहिं पावत जो रस योगीजन तब तप करत समाधा ।सुनहु सूर तेहि रस परिपूरन दूरि कियो तनुदाधा॥३६॥ राग आसावरी॥कहाकहति तूभई बावरी॥तू हँसि कहति सुनै कोउऔरै कहा कीन्हों चाहति उपाव री॥ सो तो सांच मानि यह लैहै हमहिं तुमहिं बातै सुभावरी।मेरी प्रकृति भलेकरि जानति मैं तोसों करिहौं दुराव री॥ऐसी कैसे होइ सखी री घर पुनि मेरो हैबचावरी। सूर कहति राधा सखि आगे चकित भई सुनि कथा रावरी॥३७॥राग सारंग॥श्याम कौन कारेकी गोरे। कहां रहत काके वै ढोटा वृद्ध तरुण की वोहैं भोरे॥ इहई रहत कि और गाउँ कहुँ मैं देखे नाहिंन कहुँ उनको।कैहे नहीं समुझाइ बात इह मोहि लगावतिहौ तुम जिनको॥कहांरहांमैंवे धौं कहँके तुम मिलवतिहौ काहे ऐसी । सुनहु सूर मोसी भोरीको जोरिजोरि लावतिहौ कैसी ॥३८ ॥ जाहु चली मैं जानी तोको। आजुहि पढिलीन्ही चतुराई कहा दुरावति मोको ॥ एही ब्रज तुम हम नँदनंदन दूरि कतहुँ नहिं जैहे । मेरे फंद कबहुँ तो परिहौ मुजरा तबहीं देहैं॥उनहिं मिले वितपन्न भई अब वै दिन गए भुलाई। सूरश्यामसँगते उठि आई मोसों कहति दुराई॥३९॥ राग सोरठ ॥हँसत कहत कीधौं सतभाव।तेरीसौं मैं कछू न समुझतिकहा कह्यो मोहि बहुरि सुनाउ॥ मेरी शपथ तोहिं री सजनी कबहुँ कछु पायो यहि भाउ ।,देख्यो नयन सुन्यो कहुँ श्रवणनि झूठे कहति फिरतिहौ दाउ ॥यह कहती औरै जो कोऊ तासों मैं करती अपडाउ।सूरदास यह मोहि लगावति सपनेहुँ जासों नहिं दरशाउ॥ ४०॥रागधनाश्री॥ राधे तेरो वदन विराजत नीको। जब तू इतउत बंक बिलोकति होत निशापति फीको॥भ्रुकुटी धनुप नैन शर साधे शिर केसरिको टीको।

मनु घूँघटपटमें दुरि बैठो पारधिपति रतिहीको॥गति मैंमत नागज्यों नागरि करे कहतिहौं लीको। सूरदास प्रभु विविधभांतिकरि मन रिझयोहरिपीको॥४१॥राग बिहागरो॥राजतिराधेअलक भलीरी। मुक्ता मांग तिलक पनगिनि शिर सुतसेमत भष लेन चली री॥कुमकुम आड स्रवत श्रमजल मिलि मधु पीवत छबिछीट चली री। चारु उरोज उपर यों राजत अरुझे अलिकुल कमलकली री॥ रोमावलि त्रिबली उर परशत वंश चढे नट काम बलीरी। प्रीति सोहाग भुजा शिरमंडन जघनसघन विपरित कदली री॥जावक चरण पंचशरसायक समर जीति लै शरन चली री।सूरदास प्रभुको सुख दीन्हो नखशिखराधे सुखनिफलीरी४२॥रामकली॥सजनी कत यहबात दुरैहौं।ऐसीमोहिंकहै जिनि कबहूं झूठेपर दुख पैहौं॥तोतेपीतम और कौनहै जाके आगे कैहौं।मोकोउचटाएकछुपैहौ बहुरि नाउँ नहिं लैहौं॥ यह परतीति नहीं जिय तेरे सो कहा तोहि चुरैहौं।सूरश्याम धौं कहां रहत हैं काहेको तहां जैहौं॥४३॥राग धनाश्री॥चतुर सखी मन जानिलई।मोसों तौ दुरावयहकीन्हों याके जिय कछुत्रास भई॥तब यह कह्यो हँसत री तोसों जिनि मनमें कछु आने।मानी बात कहां वै कहं तू हमहूँ उनहिं न जाने॥ अबै तनक तू भई सयानी हमआगेकी बारी।सूरश्याम ब्रजमें नहिं देखे हँसत कह्यो घरजा री॥४४॥राग बिलावल॥ सकुचसहित घरको गई वृषभानुदुलारी। महरि देखि तासों कह्यो कहँ रही री प्यारी॥घर तोहि नेक न देखऊँ मेरी महतारी।डोलत लाज न आवई अजहूँ है बारी॥ पिता आजु रिस करतहै दैदै कहै गारी।सुता बडे वृषभानुकी कुल खोवनहारी॥बंधव मारन कहतहैं तेरे ढँग कारी।सूरश्यामसँग फिरतिहै जोबनमतवारी॥४५॥राग गुंडमलार॥कहारी कहति तू मातु मोसों।ऐसी बहिगई कोश्यामसँग फिरै जो वृथा रिस करति कहा कहौं तोसों॥कही कौने बात बोलिये तेहि मात मेरे आगे कहै ताहि देखों।तात रिस करत भ्राता कहै मारिहौं भीति बिन चित्र तुम करति रेखो॥तुमहु रिस करति कछु कहा मोहिं मारिहौ धन्य पितु भ्रात माता अरुनही। ऐसे लायक नंदमहरको सुत भयो तिनहिं मोहिंकहति प्रभु सूर सुनही॥४६॥राग गूजरी ॥ काहेको परघर छिनछिन जाति।गृहमें डाटि देनिशिखजननी नाहिंन नेक डराति॥ राधा कान्ह कान्ह राधा ब्रज ह्वैरह्यो अतिहि लजाति। अब गोकुलकोजैबो छांडौ अपयशहू न अघाति॥ तू वृषभानु बडेकी बेटी उनके जाति न पांति। सूर सुता समुझावति जननी सकुचत नहिं मुसकाति॥४७॥राग कान्हरो ॥खेलनको में जाउँ नहीं। और लरिकनी घरघर खेलति मोहीको पै कहति तुही॥ उनके मात पिता नहिं कोई खेलति डोलति जहीं तहीं। तोसी महतारी बहि जाई मैं रैहौं तुमही बिनहीं॥ कबहूं मोको कछू लगावति कबहुँ कहति जिन जाहु कहीं।सूरदास बातैं अनखोही नाहिंन मोपै जात सही॥४८॥राग सारंग॥मनही मन रीझति महतारी। कहा भई जो बाढ़ि तनक गई अबहीं तौ मेरी है बारी॥ झूठेही वह बात उडी है राधा कान्ह कहत नर नारी।रिसकी बात सुताके मुखकी सुनत हँसी मनही मन भारी॥ अबलौं नहीं कछू इहि जान्यो खेलत देखि लगावैं गारी । सूरदास जननी उर लावति मुख चूमति पोछति रिस टारी॥४९॥रागसुहा॥सुता लये जननी समुझावति। संग बिटिनिअनके मिलि खेलौ श्यामसाथ सुनिसुनि रिस पावति॥ जाते निंदा होइ आपनी जाते कुलको गारी आवति। सुनि लाडिली कहति यह तासों तोको याते रिस करि धावति॥अब समुझी मैं बात सबनकी झूठेही यह बात उठावति। सूरदास सुनिसुनि यह बातैं राधामन अतिहरष बढावति॥ ५० ॥ राग नट ॥राधा विनय करति मनहींमन सुनहु श्याम अंतरके यामी।मात पिता कुल

कानिहि मानत तुमहिं न जानतहैं जगस्वामी॥ तुम्हरो नाम लेत सकुचतहैं ऐसेठौर रही हौंआनी। गुरुपरिजनकी कानि मानियो बारंबार कही मुख बानी॥ कैसे संग रहौं बिमुखनके यह कहिकहि नागरि पछितानी।सूरदास प्रभुको हिरदय धारि गृहजनदेखिदेखि मुसुकानी ॥५१॥ राग धनाश्री॥ जब प्यारी मन ध्यान धरयो । पुलकित उर रोमांच प्रगट भए अचर टरि मुख उघरिपरयो ॥ जननी निरखिरही ता छबिको कहन चहै कछु कहि नहिं आवे॥ चकृत भई अँगअंग बिलोकत दुख सुख दोऊ मन उपजावे॥पुनिमन कहति सुता काहूकी कीधौं यह मेरीहै जाई। राधा हरिके रंगहि राची जननी रही जिये भरमाई॥ तब जानी मेरी यह बेटी जिय अपने तब ज्ञान कियो । सूरदास प्रभु प्यारीकी छबि देखि चहति कछु सीख दियो ॥५२॥ राग सोरठ॥ राधा दधिसुत क्यों न दुरावति। हौंजु कहति वृषभानुनंदिनी काहेको तू जीव सतावति॥जलसुत दुखी दुखीहै मधुकर द्वै पंछीदुख पावत।सारँगदुखीहोत सारँगबिनु तोहि दया नहिं आवत॥सारँग रिपुको नेक ओट कहि ज्यों सारँग सुखपावत । सूरदाससारँग केहिकारण सारँगकुलहि लजावत ॥५३॥ राग बिहागरो॥ मेरीसिखश्रवण काहेन करति। अजहुं भोरी भई रेहै कहति तोसों डरति॥ शशि निरखि मुख चलत नाहिंन नयन निरखि कुरंग। कमल खंजन मीन मधुकर होतहै चितभंग ॥ देखिनासा कीर लज्जितअधरदशन निहारि। बिंब अरु बंधूक बिद्रुम दामिनी डर भारि॥ उरनिरखि चक्रवाक बिथके कटिनिरखिबन-राज। चाल देखिमराल भूले चलत तबगजराज ॥ अंगअंग अवलोकि शोभा मनहिं देखिबिचा-रि।सूर मुख पट देति काहेन बरष दश युग भारि॥५४॥ राग सूहा बिलावल॥अब राधा तू भई सयानी। मेरी सीख मानि हिरदय धरि जहँ तहँ डोलति बुद्धि अयानी॥ भई लाजकीसीमातनुमें सुनि यह बात कुँवारि मुसकानी।हँसति कहा मैं कहति भलीतोहिं सुनत नहीं लोगनकी बानी ॥आजुहितेकहुँ जान न देहौं मा तेरी कछु अकथ कहानी। सूर श्यामके संग न जैहौं जाकारण तू मोहिं सुगानी ॥५५॥ रागटोडी॥भलीबात बाबा आवनदे। कान्ह लगाइ देति मोहिं गारीऐसे बडे भएकबते वे॥ कालि मोहिं मारगमें रोकी जातरही सखियनसंग दधि लै। कहनलगे मेरो देहुखिलौना तादि-न लै भागी चुराइके॥छठि आठैं मोहिं कान्ह कुँवरसों तिनकों कहति प्रीतितोसों है। सूर जननि सुनिसुनि यह बानी पुनिपुनि मुख निरखति बिहँसतिहै॥५६॥ राग गौरी॥बडी भईनहिंगईलरि-काई। बारेहीके ढंग आजुलौं सदा आपनी टेक चलाई॥ अबहीं मचलिजाइगी तब पुनि कैसे मोसों जाति बुझाई। मानी हारि महरि मन अपने बोलिलई हँसिकै दुलराई॥ कंठ लगाइलई अतिहितसों पुनिपुनि कहि मेरी रिसहाई। सूरदास अतिचतुर राधिका राखिलई नीके चतुराई ॥५७॥राग गुंडमलार॥श्याम नगजानि हिरदै चुरायो। चतुर बरनागरी महामणिलखिलियौ प्रियसखी संग नाहिन जनायो॥कृपिनि ज्यों धरति धन ऐसेडिठकियोमनजननि सुनि बातहँसिकंठलायो। गांसदियो डारि कह्यो कुँवरि मेरी बारि सूर प्रभुनाम झूठे डरायो ॥ ५८ ॥ राग कल्याण॥ सखियनइहै बिचार परयो । राधा कान्ह एक भए दोऊ हमसों गोप करयो ॥बृंदावनतें अबहीं आईअतिजिय हरष बढाये। औरै भाव अंग छबि औरै श्याम मिले मनभाये॥ तब वह सखी कहति मैं बूझी मोतन फिरि हँसि हेरयो। जबहिं कही सखि मिले तोहिं हरि तब रिस करि मुख फेरयो॥ औरै बात चलावनलागी मैं वाको पहिचानी। सूर श्यामके मिलत आजही ऐसी भई सयानी ॥५९॥ राग सोरठ ॥ सुनहु सखी राधाकीबातें। मोसोंकहति श्यामहैं कैसेऐसी मिलई घातें॥ की गोरे की कारे रँग हरि की जोबन की भोरे। कीयहिगाउँ बसतकी अनतहि दिननि बहुत की थोरे ॥कीतू कहति बात हँसि मोसों की बूझति सतिभाऊ। सपनेहूं उनको नहिं देखे वाके सुनहु उपाऊ॥ मोसों कही

कौन तोसी प्रिय तोसों बात दुरैहौं । सूर कही राधा मोआगे कैसे मुख दरशैहौं॥ ६० ॥ राग गौरी ॥ वह निधरक मैं सकुचिगई । तब यह कह्यो जाहि घर राधा मैं झूठो तैं सांच भई ॥ त्यौंरी मोहन मोतन चितवै नेक रहों तो करै खई । कामभंडार लूटि नीके करि निदरिगई मैं चकृत भई ॥ घर धौं जाइ कहा अब कैहै अब कछु अवरै बुद्धि नई । सूर श्यामअंगसंग रँग राची मनमानो सुख लूटिलई ॥ ६१ ॥ राग बिलावल ॥ सुनिसुनि बात सखी मुसकानी । अबहीं जाइ प्रगट करिदैहैं कहाँ रहै यह बात छपानी ॥ औरनिसों दुराव जो करती तौ हम कहती भली सयानी । दाईआगे पेट दुरावति वाकी बुद्धि आज मैं जानी ॥ हम जातहि वह उघरि परैगी दूध दूध पानीसो पानी । सूरदास अब करति चतुरई हमहिं दुरावति बातन ठानी ॥ ६२ ॥ रागरामकली ॥ अपनो भेद तुम्हैं नहिं कैहै । देखहु जाइ चरित तुम वाके जैसे गाल बजैहै ॥ बडे गुरूकी बुद्धि पढी वह काहूको न पत्यैहै । एको बात मानिहै नाहीं सबकी सौंहैं खैहै ॥ मैं नीकेकरि बूझिरहीहौं अब बूझे रिस पैहै । सुनहु सूर रसछकी राधिका बातन बेरबढैहै ॥ ६३ ॥ राग बिलावल ॥ कहा बैर हमसों वहकरिहै । वाकी जाति भले करि पाई हमको कहा निदरिहै ॥ कैहै कहा चोरटी हमसों बातैबातउघरिहै । दूरि करौं लँगराई वाकी मेरेफंद जो परिहै ॥ हमसों बैर किये कहा पैहै काज कहा पुनि सरिहै । सूरदास मटुकी शिरलीन्हें बहुरि वैसही रहिहै ॥ ६४ ॥ चलहु सखी जैये राधाघर । बूझे बात कहा धौं कैहै निधरक है कीधौं मनमें डर ॥ कीधौं हमहिं देखि भजिजैहै की उठि हमको मिलिहै । कीधौं बात उघारि कहैगी की मनहीमन गिलिहै ॥ कीधौं हँसि बोलै की रिस करि कीधौं सहजसुभाई । कीधौं सूरश्यामरसमाती जोबन गर्व बढाई ॥ ६५ ॥ युवती जुरि राधा ढिग आई । लखिलीनी तब चतुरनागरी ये मोपर सब हैं रिसहाई ॥ आदर नहीं कियो काहूको मनमें एक बुद्धि उपजाई । मौन गह्यो नहिं बोलतितिनसों बैठिरही करिकै चतुराई ॥ आपुहि बैठिगईं ढिग सिगरी जब जानी यह तौ चतुराई । सूरदास वे सखी सयानी और कहूंकी बात चलाई ॥ ६६ ॥ राग जैतश्री ॥ चतुर चतुरकी भेंट भई । वैतौ निठुर मौनह्वै बैठी इन सबहिन लखि ताहि लई ॥ मुहांचही युवतिनतब कीन्हीं देखौ उलटी रीति भई । कहा हमारो मन यह राखै अरु हमहींपर सतरिगई ॥ बूझहुयाहि खूटधरिकै तू कहा आजु यह मौन लई । सुनहु सूर हमसों कहा परदा हम करिदीन्हीं साट सई ॥ ६७ ॥ रागगौंड ॥ राधिका मौनव्रत किन सधायो । धन्य ऐसौ गुरू कानके लागतै मंत्र दै आजुही वह लखायो ॥ कालि कछु और प्रातहि कछु औरही अबहिं कछु और ह्वैगई प्यारी । सुनत यह बात दौरि आईं सबै तोहिं देखत भईं चकृत भारी ॥ अब कहो बात या मौनको फल कहा सुनिजु लीजै कछू हमहु जानें । एकही संग भईं सबै जोबन नई अब होहु गुरु हम तुमहिं मानें ॥ देहि उपदेश हमहूं धरैं मौन सब मंत्र जब लियो तब हम न बोली । सूर प्रभुकी नारि राधिका नागरी चरचिलीन्हो मोहि करति ठोली ॥ ६८ ॥ राग मारू ॥ की गुरुकहौकि मौनै छांडौ । हमहिं मूरखवदति आपुहिढंग सदनि पाइ अबसदतिहठकतहिमांडौ ॥ एकहीसंगहमतुमसदारहतिहैं आजुहीचटकितू भई न्यारी । अब हमसोंकियोऔरकोउ वियो कहाधौं कहैकहा देहि गारी ॥ कहा तोहि भयोतेरी प्रकृति कौन हरी रीति यह नई तैंहीचलायो । सूरसुनिनागरी गुणनकीआगरी निठुरईसों बात कहिसुनायो ॥ ६९ ॥ राग गौरी ॥ तुमप्रीतमकी बैरनि मेरी । वासोंकहति मिलीजो मारग यहमोसोंअतिकहीअनेरी ॥ कहति कहा श्यामहिं मिलिआई मैं चकिरहीसौंह मोहिं तेरी । मेरे अँगछबि औरकहति कछु युवती सुनत रहीं मुख हेरी ॥ मैंजिनको सपनेहूनदेखेतिनकीबात कहत फिरिफेरी । सूरदास गुणभरी

राधिकामहिमा कोजाने यहिकेरी॥७०॥राग कल्याण॥तुमसों कछुदुरावहै मेरो। कहांकान्ह कहमैंसु-
नि सजनी व्रजघरघर यह चलतहै घेरो॥और कहत सब मोहिं न व्यापै तुमहुँकहौ यह बानी।आदर
नहीं कियो याहीते तुमपर अतिहि रिसानी॥ हमतौ नहीं कह्योकछु तोसों ताहीपर रिस करती।
सूर तबहिं हमसों जो कहती तेरी घां ह्वै लरती॥७१॥राग रामकली॥ सखीतू राधहि दोषलगावति।
तैंरी श्याम कहां ए देखे बातन बैर बढावति॥हमआगे झूठी नहिं कैहै सखियन सैन बतावति।
ऐसी बात अरी मुख तेरे कैसी धौं कहि आवति॥ भेदहि भेद कहतिहै बातें ऐसे मनहिं जनावति।
सूर श्याम तैं देखे नाहीं कीधौं हमहिं दुरावति॥७२॥राग नटनारायण॥ काकोकाको मुख माई बात-
नको गहिए।पांचकी सात लगायो झूंठी झूंठीकैबनायो सांची जो तनक होइ तौलों सबसहिये॥
बातनि गहौ अकास सुनत न आवै सांस बोलि तौ कछू न आवै ताते मौन गहिये।ऐसे कहैं नर
नारिविनाभीति चित्रकारि काहेको देखे मैं कान्ह कहा कहौ सहिये॥ घरघर इहै घेर वृथा मोसों
करैं बैर यहसुनि श्रवणनि हृदय सहि दहिये। सूरदास बरु उपहास सहौं ईसुर मेरे नंदसुवन
मिलैं तोपै कहा चहिये॥७३॥राग गुंडमलार॥दुरत नहिं नेह अरु सुगंध चोरी। कहा कोउ कहै तू
सुनतिकाहे न रहै तनहि कत दहै सुनि सीखमोरी॥लोग तोहि कहतहैं पापको गहतहैं कहाधौंलह-
तहैं सुनहु भोरी।खरिकहू नहिं मिलै कहै कह अनभले करनदे गिले तू दिननि थोरी॥ नंदको
सुवन अरु सुता वृषभानुकी हँसत सब कहैं चिरजिवै जोरी। सूर प्रभु कहां तू कहां वे अपने भव-
न मैं लखी तोहि तोसीनवोरी॥७४॥राग बिलावल॥कैसेहैं नंदसुवन कन्हाई। देखे नहींनयनभरिकबहूं
व्रजमें रहत सदाई॥ सकुचतिहौं एकबात कहत तोहिं सो नहिं जात सुनाई।कैसेहु मोहिंदेखावहु
उनको यह मेरे मन आई॥ अतिही सुंदर कहियत हैं वेमोकों देहि बताई।सूरदासराधाकी बानी
सुनत सखी भरमाई॥७५॥राग धनाश्री॥सुनहुसखी राधाकीबानी।व्रजवसिहारे देखे नहिंकबहूँ लोग
कहत कछु अद्भुतबानी॥ ये अब कहति देखावहु हरिको देखहु री यह अकथ कहानी। जो हम
सुनत रहीं सो नाहीं अब ऐसेहि यह बात बहानी॥ज्वाब न देत बनै काहूसों मनमें काहु न मानी।
सूर सबै तरुणीसुखचाहतचतुरचतुरईठानी॥७६॥राग बिलावल॥ सुनिराधे तोहिं श्यामदेखावें। जहां
तहां व्रजगलिन फिरतहैं जबहीं वे यहि मारग आवैं॥जबहींहमउनको देखैंगी तहांई तोहिंबोलैहैं।
उनहूंके लालसा बहुत यह तो देखे सुख पैहैं॥ दरशनते धीरज जब रैहै तब हम तोहिं बतैहैं।
तुमको देखि श्यामसुंदर घन मुरली मधुर बजैहैं॥तनु त्रिभंग करि अंगअंगमों नानाभाउ जनैहैं।
सूरदास प्रभु नवलकान्हवर पीतांबर फहरै हैं॥ ७७॥ रागगुंडमलार॥नंदनँदन दरशन जब पैहो।
एक द्वै तीनि तजि चारि बानी पांच छह निदरि तबहिं सातैं भुलैहो॥ आठहू गाँठि परिहै नवहु
दशदिशा भूलिहौ ग्यारहों रुद्रजैसे।बाहरहौं कला ते तपनि तपते मिटत तेरहों रतन मुख छबिन
तैसे॥ निपुन चौदह बरन पंद्रहौं सुभग अति बरष षोडश सतरहों न रैहे। जपन अठारहों भेद
उनईस नहिं बीसहूं बिसौ तैं सुखहि पैहै॥ नैनभरि देखि जीवन सफल करि लखि व्रजहिमें र-
हति तैं नहींजाने।सूरप्रभुचतुर तुमहूंमहा चतुरहो जैसितुम तैसेवोऊसयाने॥७८॥राग देवगंधार॥ मन
मन हँसति राधिका गोरी। ऐसे श्याम रहत व्रजभीतर बूझतिहै भै भोरी॥ तुम उनको कहुँ
देखेहैंकी सुनी कहतिहौ बात।चतुराई नीके गहि राखी कहत सखी मुसिकात॥ कबहूं तौ काहू
फंदपरिहो तबहीं लीजौ चीन्हि।सूरश्यामको पीतांबर बेसरि लीजो मेरी छीनि॥७९॥राग नट॥यह
सुनि हँसि चलीं व्रजनारि। अतिहि आईं गर्व कीन्हें गईं घर झखमारि॥ कबहुं तौ हमदेखिहैं

एक संग राधा कान्ह।भेदहमसों कियो राधा निठुर भई निदान्ह॥बीस बिरियां चोरकीतौकबहुँ मिलिहै साहु। सूर सब दिन चोरको कहुँ होतहै निरबाहु॥८०॥ राग कान्हरो ॥ भेद लियो चाहति राधासों ।बैठिरहौ अपने घर चुपकै काम कहा काहू बाधासों॥यह मन दूरि धरौ अपनो ले अति बर बोलि गई कह कीन्हों ।कैसे निर्भय रही सबनिसों भेद न काहुहि दीन्हों ॥ वह कैसे फँद परे तुम्हारे वाके घात न जानौ।सूर सबै तुम बडी सयानी मोहिं नहीं तुम मानौ॥८१॥राग बिलावल ॥ फेरिपाइ देखौ मैं धरिहौं।सुनु री सखी प्रतिज्ञा मेरी तेरी दिन तासों लरिहौं॥हमको निदारि रहीहै राधा रिसनि रही मैं जरिहौं। तब मेरे मन धीरज ऐहै चोरीकरत पकरिहौं ॥ राति दिवस मोहि चैन नहीं अब उनको देखत फिरिहौं । । सूरदास स्वामीके आगे नीके ताहि निदरिहौं ॥८२॥ राग नटनारायण ॥ गोपी इहै करति चबाउ। देखौं धौं चतुरई वाकी हमहिं कियो दुराउ ॥ लरिकईते करत ए ढँग तबै रह सतिभाउ ।अब करति चतुरई जाने श्याम पढाये दाउ॥ कहांलौं करिहै अचगरी सबै ए उपजाउ।आजु बाची मौन धरिजो सदा होत बचाउ॥दिवसचारिक भोर पारहु रहौ एक सुभाउ । सूर कालिहि प्रगट ह्वैहै करनदै अपडाउ॥८३॥राग सूहा बिलावल॥कहा कह-ति तू बात अयानी । तुम इह कहति सबै वह जानति हम सबते वह बडी सयानी ॥ सात वरप-ते ये ढँग सीखे तुम तौ यह आजुहिंहै जानी।वाके छंद भेद को जानै मीनकबहि धौं पीवतपानी ॥ हरिके चरितसबैउहि सीखे दोऊ हैं वे बारहबानी। कालिगई वाके घर सब मिलि कैसी बुद्धि मौन-की ठानी॥केती कही नेकु नहिं बोली फिरीआइ तब हमहिं खिसानी ।सूरश्यामसंगतिकीमहिमा काहूको नेकहु न पत्यानी॥८४॥राग मारू॥तब राधा सखियनपै आई।आवत देखि सबनि मुख मूँदो जहँ तहँ रहीं अरगाई ॥ मुख देखत सब सकुचि गईं यह कहां अचानक आई। करति रहीं चुगुली हम याकी तरुनी गईं लजाई ॥ अति आदर करि बैठक दीन्हों कह्यो कहां तुम आई । कहा आजु सुधि करी हमारी सूर श्याम सुखदाई॥८५॥ राग धनाश्री ॥मैं कह आजु निवेरी आई। बहुते आदर करति सबैमिलि पहुनेकी करिये पहुनाई ॥ कैसी बात कहति तू राधा बैठनकोनहिं कहिये । तुम आई अपने घरते ह्यां हमहुँ मौन धरि रहिये ॥ जानिलई वृषभानुसुता हँसि कह्यो तरक तुम कीन्हों । सूरदास ता दिनको बदलो दाउँ आपनो लीन्हों ॥८६॥रागधनाश्री॥ दाउघाउ तुमहीं सब जानति।सदा मानि तुमको हम आईं अबहूं तैसे मानति॥तुम वह बात गांस करि राख्यो हमको गई भुलाई। ता दिन कह्यो नहीं मैं जानौं मानि लई सति भाई॥ चोर सबनिचोरीकरि जानै ज्ञानीमन सब ज्ञानी। सूरदास गोपिनकी बाणी राधासुनि मुसकानी॥८७॥सखी तुम बातकहीयह सांची।जाके हृदय जौन कहै मुखते तौन कैसे हरि कौन कहिलीकखांची॥हरषिव्रजनारि भरिलेत अँकवारि सब कहति तू कहा इह बात जानै ।हम हँसति कहति तू रिस कहा गहतिरी नागरी रा-धिका बिलगु मानै॥तुमहिं उलटी कहौ तुमहिं पलटी कहौ तुमहिं रिस करति मैं कछु न जानौं।सूर प्रभुकोनाममोहिं तुमही कह्योश्रवन यहसुन्योंतुम कछू मानौ॥८८॥अथ ग्रीष्मलीला॥सखिनसहित यमुना-बिहार॥ टोडी॥पुनि कहियो अब न्हान चलौगी । तब अपनो मनभायो कीजो जब मोको हरि संग मिलौगी ॥उहै बात मनमें गहि राखी मैं जानति कबहुँ नबिसरौगी । बडी बार मोको भई आए न्हान चलतकीबहुरि लरौगी॥गहिगहिबांह सबनि करि ठाढी कैसेहू घरते निसरौगी।सूरराधिका कहति सखिनसों बहुरि आइ घरकाज करौगी॥८९॥राग मारू॥राधिका संग मिलिगोपनारी।चलीं झिलिमिलि सबै रहसि बिहँसति तरुनि परस्पर कौतुहल करत भारी ॥ मध्य ब्रजनागरी रूप रस

आगरी घोष उजागरी श्याम प्यारी । जुरीं ब्रजसुंदरी दशन छबि कुंदरी काम तनु दुंदरी करनहारी ॥ अंग अँग सुभग अति मग चलति गजगति कृष्णसों एकमति यमुन जाहीं।कोउ निकसि जाति कोउ ठठकि ठाढी रहति कोउ कहति संग मिलि चलहु नाहीं ॥ युवति आनंदभरी भई जुरिकै खरी नई छरहरी सुठिबैस थोरी । सूर प्रभु सुनि श्रवण तहां कीन्हों गवन तरुणि मन रवन सब व्रजकिशोरी ॥ ९० ॥ राग नटनारायण॥ गईं ब्रजनारि यमुनातीर। देखि लहरितरंग हरषीं रहत नहिं मनधीर ॥ संग राजति कुँवरि राधा भई शोभा भीर।स्नानको वे भईं आतुरसुभगजलगंभीर॥ कोउ गई जल पैठि तरुनी और ठाढी तीर। तिनहि लई बोलाइ राधा करति सुख तनकीर ॥ एक एकहि धरति भुजभरि एक छिरकति नीर। सूर राधा हँसतिबाढी बढी छबि तन चीर ॥९१॥ राग जयतश्री ॥ राधा जल बिहरत सखियन संग। ग्रीवप्रयंत नीरमें ठाढी छिरकत जल अपने अपने रंग ॥ मुखपर नीर परस्पर डारति शोभा अतिहि अनूप बढी तब । मनहु चंद्र गन सुधा गई खनि डारतहैं आनंद भरे सब॥ आई निकसि जानु कटिलों सब अँजुरिनते जल डारत।मानहुँ सूर कनकवल्ली जरि अमृत पवन मिस झारत॥९२ ॥ राग नट ॥ यमुनाजल बिहरतब्रजनारी। तट ठाढ़े देखत नँदनंदन मधुर मुरलि करधारी ॥ मोरमुकुट श्रवणनमणिकुंडल जलजमाल उरभ्राजत। सुंदर सुभग श्याम तनु नव घन बिच बगपांति बिराजत । उर बनमाल सुभग बहुभांतिनु श्वेत लाल सित पीत।मानों सुरसरितट बैठे शुक बरनबरन तजि भीत।पीतांबर कटिमैं छुद्रावलि बाजत परम रसाल । सूरदास मनों कनक भूमि ढिग बोलत रुचिर मराल ॥ ९३ ॥ राग बिहागरो ॥ नटवर भेष काछे श्याम । पद कमल नख इंदु शोभा ध्यान पूरण काम ॥ जानु जंघ सुघटनि करभो नाहिं रंभा तूल । पीतपट काछनी मानहु जलजकेसर झूल । कनक छुद्रावली पंगति नाभि कटिके भीर ।मनहुँ हंस रसाल पंगति रहेहैं ह्रद तीर॥झलक रोमावली शोभा ग्रीव मोतिन हार। मनहु गंगा बीच यमुना चलीमिलि त्रिय धार॥बाहुदण्ड बिशाल तट दोउ अंगचंदनुरेनु। तीरतरु वनमालकी छबि ब्रजयुवति सुखदेन। चिबुक पर अधरनि दशनद्युति बिंबु बीज जलाइ। नासिका शुक नयन खंजन कहत कवि सरमाइ ॥ श्रवण कुंडल कोटि रवि छबि भ्रुकुटि कामकोदंड । सूर प्रभु है नीपके तर शीश धरे श्रीखंड ॥ ९४ ॥राग पूरबी॥उपमा धीरज तज्यो निरखि छबि । कोटिमदन अपनोबल हार्यो कुंडलकिरनि बीच जो छप्योरवि॥खंजन कंज मधुप विधु तडिघन दिनकर रहत कहूं दबि । हरिपटतर दै हमहि लजावत सकुच नहीं आवत खोटे कवि॥अरुन अधर दशननि दुति निरखत बिद्रुमशिखर लजाने सब। सूर श्याम आछे वपु काछे पटतर मेटि बिराने अब॥९५॥राग गौरी॥उपमा हरि तन देखि लजाने । कोउ जलमें कोउ वनमें रहे दुरि कोऊ गगन समाने॥मुख निरखत शशि गयो अंबरको तडित दशन छबि हेरो । मीन कमल करचरन नयन डर जलमों कियो बसेरो॥भुजा देखि अहिराज लजाने बिवरनि पैठे धाइ। कटिनिरखत केहरि डर मान्यो बनवन रहे दुराइ॥गारीदेहि कविनके वर्णत श्री अंगपटतर देत । सूरदास हमको विरमावतनाउँ हमारो लेत ॥ ९६ ॥ राग सारंग ॥ ऐसे गोपाल निरखितिलतिल तनु वारौं । नवकिशोर मधुर मूरति शोभा उर धारौं॥अरुण तरुण कंज नयन मुरली कर राजै। ब्रजजन मन हरन बेन मधुर मधुर बाजै।ललितवर त्रिभंग सुतन बनमाला सोहै । अति सुदेश कुसुमपाग उपमाको को है॥ चरण रुनित नूपुर कटिकिं किन कलकूजे । मकराकृत कुंडलछबि सूरकौन पूजे ॥९७॥राग कान्हरो॥बनि मोतिनकी माल मनोहर ।शोभित श्याम सुभग उर ऊपर

मनो गिरिते सुरसरी धसी धर ॥ तट भुजदंड भौंर भृगुरेखा चंदन चित्रि तरंगनि सुंदर। मणिकी किरणि मीन कुंडल छबि मनों मकर मिलन आवत त्यागे सर।ता ऊपर रोमावलिराजतमणिवर तीखन ज्योति सितावर । संतहि ध्यान स्नान करत नित कर्मकीच धोवत नीकेकर ॥ यज्ञोपवीत विचित्र सूर सुनि मध्यधार धारा जो वानीवर । शंख चक्र गदा पद्म पानि मनो कमल कूल हंसनि कीन्हे घर९८॥ राग नटनारायण ॥ राधेनिरखिभूलीअंग।नंदनंदनरूपपरगतिमतिभई तनुपंग॥ इत सकुचअति सखिनको उत होत अपनी हानि।ज्ञानकरि अनुमान कीन्हों अबहि लैहै जानि॥ चतुर सखियन परखि लीन्ही समुझि भई गँवारि।सबै मिलि इतन्हान लागींताहि दियोबिसारि॥ नागरी मुख श्याम निरखत कबहुँ सखियन हेरि । सूर राधा लखतिनाहीं इन दई अब टेरि॥९९॥ रागकान्हरो॥ जब जान्यो येन्हाति सबै।हरि प्रति अंग अंगकी शोभाअँखियनमगह्वै लेउँअबै॥कमल कोशमें आनि दुरावों बहुरि दरश धौं होइ कबै । यह मन करि युवतिन तनु हेरति सकुचतिहै पुनिनहीं फबै॥कबहुँक कहै तजौं मर्यादा इनिसोंमें करि गोप तबै।सूर श्याम तबहींमनमानै संगहि रैहौं जाइ जबै॥रागगौरी॥चित राधारतिनागरओर।नयन वदन छबि यों उपजत मानों शशिअनुराग चकोर॥सारस सर अचवनको मानहु फिरत मधुप युग जोर।पान करत त्रियतन मानत पलकन देत अकोर ॥ लिये मनोरथ मानि सकल ज्यों रजनि गए पुनि भोर। सूर परस्पर प्रीतिनिरंतरदंपतिहै चितचोर ॥ राग कल्याण ॥ यह कछु भोरेहिभाइभई । निरखतवदन नंदनंदनको अबरहतीसोगई॥ हिरदै जामि प्रेम अंकुर जरि सप्त पतार गई।सो द्रुम पसरि शिखर अंबरलों सब जग छाइलई॥ बचन सुजंत्र मुकुल अवलोकनि गुननिधि पुहुप मई । परस परम अनुराग सींचि सुखलगी प्रमोदजई॥ मनके सकल मनोरथ पूरण समर भरी नई।सूरदास फल गिरिधर नागर मिलि रस रीति ढई ॥१००॥ राग रामकली॥चितवन रोकेहू न रही।श्याम सुंदर सिंधु सन्मुख सरित उमँगि बही।प्रेम सलिलप्रवाह भँवरनि मिलि कबहुँ न थाह लही । लोभ लहरि कटाक्ष घूँघट पट करार ढही ॥ थके पल पथ नाव धीरज परत नहिंन गही।हिलिमिलि सूरस्वभावश्यामहि फेरिहून चही॥राग जैतश्री ॥देखीहरि राधा उत अटकी। चितैरही एकटक हरिहीं तन ना जाइये कौन अँग लटकी ॥ कालि हमें कैसे निदरतिही मेरे चित वह टरति न खटकी । न्हातरही कैसे सँग मिलिकै चित चंचल बिरहाकी चटकी॥बात करत तुलसी मुख मेलै नयन शयन दै मुँह मटकी।सूर श्यामके रूपभुलानी राधाके चित सुधि न घटी॥१॥राग बिलावल॥चितै रही राधा हरिको मुख।भ्रुकुटीविकट विशालनयनयुग देखत मनहिं भयो रतिपति दुख॥ उतहि श्याम एकटक प्यारी छबि अंगअंग अवलोकत ।रीझि रहे उत हरि इत राधा अरस परस दोउ नोकत ॥ सखिन कह्यो वृषभानुसुतासों देखे कुँवरकन्हाई। सूर श्याम एई हैं ब्रजमें जिनकी होति बडाई ॥२॥राग रामकली॥हमहि कह्यो हो श्याम देखावहु। देखहु दरश नयन भरि नीके पुनि पुनि दरश न पावहु ॥ बहुत लालसा करत रही तुम वे तुम कारण आए।पूरी साध मिली तुम उनको याते हमहिं बोलाये॥नीके सगुण आजु ह्यां आई भयो तुम्हारो काज । सुनहु सूर हमको कछुदैहो तुमहि मिले ब्रजराज ॥३॥ राधा कह्यो आजु इन जानी ।बारबार मैं हरितन चितई तबहीं येमुसकानी॥कालि कह्यो मैं इनसोंवैसे अबतो बात न ठानी । इहि चतुरई परी मोहीपर मनमन अतिहिलजानी॥मेरीबात गई इनिआगे अबहिं करति बिनपानी ।सूरदास प्रभु कहा कहौं मैं तुअब हाथ बिकानी॥४॥राग बिलावल॥मैं अनिही यह पोच करी ।ये मेरी मर्यादा लेहैं ता दिन इनसों बहुत लरी ॥ सुंदर श्याम कमलदल लोचन तुम अब

होहु सहाइ। ऐसी कहौं बात इन आगे मेरी पति जिन जाइ॥ तब यक बुद्धि रची मनही मनअति आनंद हुलास। सूर श्याम राधा आघातन कीन्हों बुद्धि प्रकाश॥ ५ ॥ राग गुजरी॥राधा चलन भवनहि जाहिं। कबहिकी हम यमुन आई कहहिं अरु पछिताहिं॥ कियो दरशन श्यामको तुम चलोगी की नाहिं। बहुरि मिलिहो चीन्हि राखहु कहति सब मुसकाहिं॥हम चली घर तुमहूँ आवहु सोच भयो मनमाहिं। सूर राधासहित गोपी चलींब्रज समुहाहिं॥ ६॥ राग बिलावल॥ कहि राधा हरि कैसेहैं।तेरेमन भायेकी नाहीं कीसुंदरकी नैसेहैं॥ की पुनि हमहि दुराव करोगी कीकैहौ वै जैसे हैं।की हम तुमसों कहतरही ज्यों सांच कहौकी तैसेहैं॥ नटवर भेष काछनी काछे अंगनि रतिपति सैसेहैं। सूर श्याम तुम नीके देखे हम जानति हरि ऐसे हैं॥ ७ ॥ राधा मनमें इहै बिचारति। ये सबमेरे ख्याल परीहैं अबहीं बातनलै निरुवारति॥मोहूते येचतुर कहावतियेमनही मन मोको नारति। ऐसे वचन कहौंगी इनको चतुराई इनकी मैं झारति ॥ जाके नंदनँदन शिर समरथ बार बार तनु मन धन वारति॥ सूर श्यामके गर्व राधिका सूधे काहूतन न निहारति ॥ ८ ॥ राग सूही ॥राधा हरिके गर्व गहीली।मंद मंद गति मत्त मतंग ज्यों अंग अंग सुखपुंज भरीली ॥पग द्वै चलति ठटकि रहैठाढी मौन धरे हरिके रसगीली। धरनी नख चरननि कुरवारति सौतिन भागसुहाग डहीली ॥ नेक नहीं पियते कहुँ बिछुरति तातेनाहिंन काम दहीली।सूरसखी बूझेयह कैहों आजु भईइह भेटपहीली॥ ९॥ राग आसावरी ॥ क्योंराधा फिरिमौन गह्योरी।जैसे नउआ अंध झँवर खर तैसेहि तैंयह मौन कह्योरी॥बातनहीं मुखते कहि आवति की तेरोमनश्याम हर्यो री।जानि नहीं पहिचानि न कबहूँ देखतही चित तिनहि ठर्योरी॥ साँची बात कहौतुम हमसों कहा सोच सो जियहि पर्योरी। सूर श्यामतन देखि रही कहा लोचन इकटकते न टर्योरी॥१०॥राग धनाश्री॥ कहा कहति तुम बात अलेखे।मोसों कहति श्याम तुम देखे तुम नीके करिदेखे॥कैसो बरन भेषहै कैसो कैसे अंग त्रिभंग।मों आगे वह भेद कहौ धौंकैसोहै तनु रंग॥मैंदेखे कीनाहींदेखे तुम तो बारहजार।सूर श्याम द्वै अँखियनदेखति जाको वार न पार११॥राग कान्हरो॥हम देखे यहि भाँति कन्हाई।शीशश्रीखंडअलकबिथुरे मुख श्रवणनि कुंडल चारु सोहाई॥कुटिल भ्रुकुटि लोचन अनियारे सुभग नासिकाराजत।अरुन अधर दशनावलिकी द्युति दाडम कन तन लाजत॥ ग्रीवहार मुक्ता वनमाला बाहुदंड गजशुंड। रोमावली सुभग बगपंगति जात नाभि ह्रद झुण्ड ॥ कटि पटपीत मेखला कंचन सुभग जंघ युग जान।चरन कमल नखचंद्र नहीं सम ऐसे सूर सुजान॥१२॥ राग बिलावल॥बनेहैं बिशाल कमलदल नैन। ताहूमें अति चारु बिलोकनि गूढभाव सूचत सखि सैन॥बदन सरोज निकट कुंचित कच मनहुँमधुप आएमधुलैन।तिलक तरनिशशि कहत कछुक हँसि बोलत मधुर मनोहर बैन॥मदननृपतिको देश महामद बुधि बलबसि न सकत उर चैन। सूरदास प्रभु दूत दिनहि दिन पठवत चरितचुनौती दैन॥१३॥राग देवगन्धार॥मोहन बदन बिलोकत अँखियन उपजत है अनुराग। तरनि ताप तलफत चकोरगति पिवत पियूष पराग॥ लोचननलिन नये राजत रति पूरण मधुकर भाग। मानहु अलि आनंद मिले मकरंद पिवत रतिफाग॥ भँवरिभाग भ्रुकुटीपर कुमकुम चंदनबिन्दु बिभाग। चातक सोम शक्र धनु घनमें निरखत मनु बैराग ॥ कुंचित केश मयूर चंद्रिका मंडलसुमन सुपाग। मानहु मदन धनुष शर लीन्हें बरपतहै बन बाग॥ अधरबिंब बिहँसान मनोहर मोहन मुरली राग। मानहु सुधापयोधि घेरि घन ब्रजपर बरपन लाग॥ कुंडल मकर कपोलनि झलकत श्रम सीकरके दाग। मानहु मीन मकर मिलि क्रीडत शोभित शरद

तड़ाग। नासा तिलक प्रसून पदबिपर चिबुक चारु चित खाग ।दाडिम दशन मंदगति मुसकनि मोहत सुर नर नाग ॥ श्रीगोपाल रसरूप भरीहै सूर सनेह सोहाग। ऐसी शोभा सिंधु विलोकत इन अँखियन केभाग॥ १४॥ राग धनाश्री ॥ हम देखे यहिभांति गोपाल। छंदकपट कछु जानति नाहीं सूधी हैं ब्रजकीसब बाल॥झूठीकीसांची नहिं भाषैं सांची झूठी कबहुँ नःहोइ।सांचीकीझूठी करिडारैं यह सोई जानैं धनि जोइ ॥ इतननिमें दुराव कछु नाहीं भेदाभेद विचार । सूरदासते झूठीमिलवैंतिनकीगतिजानैकरतार ॥ १५ ॥राग आसावरी॥ झूठी बात न होतिभलाई।चोरजुआर संग बरु करिये झूठेको नहिं कोउ पतिआई ॥ सांचीकी झूठी करिडारैं पंचनमें मर्यादा जाई । बोलि उठी एक सखी बीचही तैं कह जानै लाज बडाई ॥यामेंकछू नफाहै उनको जातेमनऐसी-ये भाई।सूरस्वभाउपरचोएसोईकोजानैरीबुद्धिपराई॥ १६॥राग धनाश्री॥ऐसेहमदेखेनँदनंदन।श्याम सुभग तनु पीत बसन जनु मनहु जलदपर तडित सुछंदन ॥ मंद मंद मुरली मुख गरजनि सुधावृष्टि बरषत आनंदन।बिबिध सुमन बनमाला उर मनु सुरपति धनुष नहीं येहि छंदन॥मुक्ता-वली मनहुँ बगपंगति सुभग अंग चरचित छबि चंदन। सूर नीप तरुवरतर ठाढे प्रभु सुरनरमुनि बंदन॥१७॥राग देवगंधार॥तुमको कैसे श्याम लगे।न्हातरहीं जलमें सब तरुनी तब तुअ नैनाकहां खगे ॥ अंग अंग अवलोकन कीन्हों कौन अंग पर रहे पगे। भूल्यो स्नान ज्ञान तनु भूली नंदसुवन उतते न डगे ॥ जानति नहीं कहूँ नहिं देखे मिलिगई ऐसे मनहि सगे। सूर श्याम ऐसे तैं देखे मैं जानति दुख दूरभगे॥१८ ॥राग गौरी॥ तुम देखे मैं नहीं पत्यानी।मैंजानति मेरी गति सबही इहै सांच अपने मन आनी जो तुम अंग अंग अवलोक्यो धन्य धन्य मुख अस्तुति गानी। मैं तौ अंग अंग अवलोकति दोऊ नयन भये भरपानी॥कुण्डल झलक कपोलनि आभा इतनहिं माँझ बिकानी।एकटक रही नैन दोउ रूंधे सूरश्यामको नहिं पहिचानी॥१९॥ राग नट॥मेरी अँखियांअजान भई। एक अंगअवलोकत हरिकेऔरै अंगरई॥ये भूली ज्योंचोर भरे घर नौनिधि नहीं लई। फेरत पलटत भोर भए कछु लई न छांडिदई॥ पहिलेहि रति करिकै आरति करि ताहि गई। सूर सकति हठि दोष लगावति पल पल पीर नई ॥ २० ॥राग सारंग॥ विधातहि चूक परी मैं जानी। आजु गोविंदहि देखि देखि हौं इहै समुझि पछितानी॥ रचि पचि सोचि सँवारि सकल अंग चतुर चतुरई ठानी। दृष्टि न दई रोमरोमनि प्रति इतनिहि कला नशानी॥ कहाकरौं अतिसुख द्वै नयना उमँगि चलत पग पानी । सूर सुमेर समाइ कहां धौं बुधिवासना पुरानी ॥२१॥राग धनाश्री॥द्वै लोचन तुम्हरे द्वै मेरे। तुम प्रतिअंग बिलोकन कीन्हो मैं भई मगन एक अँग हेरे ॥ अपनो अपनो भाग्य सखी री तुम तनमय मैं कहूँ न नेरे। जो बुनिये सोई पुनि लुनिये और नहीं त्रिभुवन भट भेरे ॥ श्यामरूप अवगाहि सिंधुते पार होत चढि डोंगन केरे। सूरदास तैसे ए लोचन कृपा जहाज बिना को पेरे॥२२॥राग आसावरी॥ पावै कौन लिखे बिन भाल॥ काहूको पटरस नहिं भावत कोउ भोजनकहुँ फिरत बिहाल ॥ तुम देख्यो हरि अंग माधुरी मैं नहिं देख्यो कौन गोपाल।जैसे रंक तनक धन पाए ताहिमहां वह होत निहाल॥तुमहि मोहि इतनो अंतरहै धन्य धन्य ब्रजकी तुम बाल। सूरदास प्रभुकी तुम संगनि तुमहिं मिले यह दरश गोपाल॥ ॥२३॥राग कल्याण॥सुनहु सखी राधाकी बानी। हमको धन्य कहति आपुन धृग यह निर्मल अति जानी ॥ आपुन रंक भई हरिधनको हमहि कहति धनवंत । यह पूरण हम निपट अधूरी हम असंतयह संत ॥ धृग धृग हम धृग बुद्धि हमारी धन्य राधिका नारि। सूर श्यामको एहि

पहिचानी हम भईं अंत गँवारि॥२४॥राग गुंडमलार॥ धन्य राधा धन्य बुद्धि हेरी।धन्य माता धन्य पिता धनि भगति तुव धिग हमहिं नहीं सम दासि तेरी ॥ धन्य तुव ज्ञान धनि ध्यान धनि परमान नहीं जानति आन ब्रह्मरूपी । धन्य अनुराग धनि भाग धनि सौभाग धन्य जोबन रूप अति अनूपी ॥ हम बिमुख तुम सुमुख कृष्णप्यारी सदा निगम मुखसहस अस्तुति बखानैं । सूर श्यामा श्याम नवल जोरी अटल तुमहिं विन कान्ह धीरज न आनैं ॥ २५ ॥ राग बिहागरो ॥ जैसे कहै श्याम हैं तैसे। कृष्णरूप अवलोकनको सखि नयन होहिं जो ऐसे ॥ तैं जु कहति लोचन भरिआये श्याम कियो तेहि ठौर । पुण्यस्थली जानि सु बिराजे बात नहीं है और ॥ तेरे नयन वास हरि कीन्हों राधा आधा जानि । सूर श्याम नटवर वपु काछे निकसे वहि मग आनि ॥ २६॥राग कान्हरो ॥ अचानक आइगए तहां श्याम । कृष्णकथा सब कहत परस्पर राधासंग मिली ब्रजवाम ॥ मुरली अधर धरे नटवरवपु कटि कछनीपर वारौंकाम। सुभग मोर चंद्रिका शीशपर आइगए पूरण सुख धाम ॥ तरु तमालतरु तरुन कन्हाई दूरि करन युवतिनतनुताम। सूर श्याम बंशीध्वनि पूरत श्रीराधाराधा लै नाम॥२७॥ राग सूही बिलावल ॥ थकित भई राधा ब्रजनारि । जो मन ध्यान करति अवलोकन ते अंतर्यामी बनवारि ॥ रतनजटित पग सुभग पाँवरी नूपुरध्वनि कल परम रसाल। मानहुँ चरणकमलदललोभी निकटहि बैठबालमराल॥ युगलजंघ मरकतमणिशोभा विपरित भांति सँवारे।कटिकाछनीकनकछुद्रावलि पहिरे नंददुलारे॥ हृदयविशाल माल मोतिनबिच कौस्तुभमणिअतिभ्राजत। मानहु नभ निर्मल तारागन तामधि चंद्र बिराजत।दुहुँकर मुरलि अधर परसाये मोहन राग बजावत ॥ चमकत दशन मटकि नासापुटलटकि नयन मुख गावत ॥ कुंडल झलक कपोलनि मानहुँ मीन सुधासर क्रीडत।भ्रुकुटी धनुष नैन खंजन मानो उडत नहीं मन व्रीडत ॥ देखि रूप ब्रजनारि थकित भईं क्रीटमुकुट शिर सोहत।ऐसे सूर श्याम शोभानिधि गोपीजन मन मोहत॥२८॥ राग कल्याण ॥ जबते निरखे चारु कपोल । तबते लोकलाज सुधि बिसरी देखे मनबोल॥निकसे आनि अचानक तिरछे पहिरे नील निचोल।रतन जटित शिर मुकुट बिराजत मणिमय कुंडल लोल ॥ कहा करौं वारिजमुखऊपर बिथके षटपद जोल ।सूरश्यामकरिये उत्कर्षा बश कीन्हीबिनमोल॥२९॥राग पूरबी॥चारु चितौनि चंचल डोल । कहि न जाति मनमें अति भावति कछु जो एक उपजत गति गोल ॥ मुरली मधुर बजावत गावत चलत करजु अरु कुण्डल लोल। सब छबि मिलि प्रतिबिंब बिराजत इंद्रनील मणि मुकुर कपोल॥ कुंचित केश सुगंध सुबसु मनु उडिआए मधुपनके टोल । सूर सुभग नासिका मनोहर अनुमानत अनुराग अमोल॥३०॥राग गौरी॥ नँदनंदन वृंदावनचंद।यदुकुलनभ तिथिद्वितियदेवकी प्रगटेत्रिभुवनवंद ॥ जठरकुहूते बहरि बारिनिधि दिशिमधुपुरी सुछंद । बसुदेव शंभु शीश धरि आने गोकुल आनँदकंद ॥ ब्रज प्राची राकातिथि यशुमति शरद सरस ऋतु नंद । उडुगन सकल सखा संकर्पन तम दनुकुल योनिकंद॥ गोपीजन तेहि धरत चकोरगति निरखि मेटि पल द्वंद । सूर सुदेश कला षोडश परिपूरन परमानंद ॥३१॥ राग गौरी ॥ देखि सखी हरिको मुख चारु । मनहु छिडाइलिये नँदनंदन वा शशिको सत सारु ॥ रूप तिलक कच कुटिल किरनि छबि कुंडल कल विस्तारु । पत्रावलि परिवेप सुमन सारि मिल्यो मनहु उडदारु॥ नयनचकोर विहंग सूरसुनि पिवत न पावत पारु । अब अंबर ऐसो लागत है जैसो झूठोथारु॥ ३२ ॥ रागकान्हरो॥ देखि रीहरिके चंचल तारे । कमल मीनको कहाँ एती छबि खंजनहू न जात अनुहारे॥ वै देखि निरखि नमित

मुरलीपर कर मुख नयन एक भए वारे । मनु सरोज विधु वैर विरचिकरि करत नाद बाहन चुचुकारे॥उपमा एक अनूपम उपजत कुंचित अलक मनोहर भारे।बिडरत बिझुकि जानि रथते मृग जनु सशंकि शशि लंगर सारे । हरि प्रतिअंग विलोकि मानि रुचि व्रजवनितानि प्राण धन वारे। सूर श्यामसुख निरखि मगन भइं यह विचारि चितअनत न टारे॥ ३३॥ राग सोरठ ॥हरिमुखनिरखत नैन भुलाने । ये मधुकर रुचि पंकज लोभी ताहीते न उडाने॥ कुंडल मकर कपोलनके ढिग जनु रवि रैनि विहाने। भ्रुव सुन्दर नैननि गति निरखत खंजन मीन लजाने॥अरुणअधर ध्वज कोटि वज्रद्युति शशिगन रूप समाने।कुंचित अलक सिलीमुख मानो लै मकरंद निदाने॥तिलक ललाट कंठ मुकुतावलि भूषनमय मनि साने।सूरदास स्वामी अँग नागर ते गुण जात न जाने॥ ॥ ३४॥राग केदारो॥देखिरी नवल नंदकिशोर। लकुटसों लपटाइ ठाढे युवतिजन मन चोर ॥ चारु लोचन हँसि बिलोकनि देखिकै चित भोर।मोहनी मोहन लगावत लटकि मुकुट झकोर॥श्रवण ध्वनि सुर नाद मोहत करत हिरदे कोर । सूर अंग त्रिभंग सुंदर छबि निरखि तृण तोर ॥३५॥ रागकान्हरो॥व्रजवनिता देखति नँदनंदन।नवघन नील वरन ता ऊपर खौर कियो तनु चंदन॥कनकवरन कटि पीत पिछोरी उरभ्राजत वनमाला ।निर्मल गगन श्वेत बादरपर मनो दामिनीजाला। मुक्तामाल विपुल वग पंगति उडत एक भई जोति। सूर श्याम छबि निरखति युवती हरप परस्पर होति॥ ३६॥ राग सूही॥ प्रातसमय आवत हरि राजत । रत्नजटित कुंडल सखि श्रवणनि तिनकी किरननि सुरतन लाजत ॥ सातैं राशि मेलि द्वादशमें कटि मेखला अलंकृत साजत । पृथ्वी मथि पिता सो लैकर मुख समीप मुरली ध्वनि बाजत ॥ जलधि तात तेहि नाम कंठ केकिनके पंख मुकुट शिर भ्राजत । सूरदास कहैं सुनहु गूढ हरि भक्तनि भजत अभक्तनि भाजत ॥३७॥राग नट॥हरितन मोहिनी माई । अंग अंग अनंग शत शत वरनि नहिं जाई॥ कोउ निरखि शिर मुकुटकी छवि सुरति बिसराई। कोउ निरखि बिथुरी अलक मुख अधिक सुखदाई॥कोउ निरखि रही भालचंदन एकचित लाई।कोउ निरखि बिथुरी भृकुटिपर नैन ठहराई॥ कोउ निरखिरही चारुलोचन निमिष भरमाई। सूर प्रभुकी निरखि शोभा कहत नहिं आई ॥३८॥राग सारंग॥हरिमुख किधौं मोहनी माई ।अवलोकत अघात नहिं मेरे नैना ठग ठगोरी लाई॥ कुण्डलकिरनि निकट भ्रूलोचन आरति मीन हग सम चपलाई।श्रवनरंध्र नहिं निपुन दास जनु काम कुवैनी कलित बनाई ॥ छाजत रदन रदन दकी छवि मंद माधुरी गिरा सुहाई। जया कुसुम दल मनहु कमलपर तडितजुथ कोश कोकिला गाई ॥ सबविधि वशीकरनकी वार्का वलिनवलाक अनुज बलझाई ।सूरदास प्रभु वदन विलोकत जकित थकित चित अनत न जाई ॥ ३९ ॥ राग गुंडमलार॥ श्याम सुखराशि रसराशि भारी । रूपकी राशि गुणराशि यौवनराशि थकित भई निरखि नवतरुनि नारी ॥ शीलकी राशि जसराशि आनंदराशि नीलनव जलद छवि वरनकारी । दयाकी राशि विद्याराशि बलराशि निर्दयराशि दनुजकुल प्रहारी ॥ चतुराई राशि छलराशि कलराशिहरि भजे जेहि हेतु तेहि देनहारी । सूरप्रभुश्याम सुखधाम पूरण काम लसति कटि पीत मुखमुरलिधारी ॥ राग बिहागरो ॥सुंदर बोलत आवत बैन।नाजानौं तेहि समय सखीरी सवतन श्रवन कि नैन ॥ रोमरोममें शब्द सुरतिकी नखशिख ज्यों चखऐन। येते मान बनी चंचलता सुनी न समुझी सैन ॥ तबतकि जकि ह्वैरही चित्रसी पल न लगत चितचैन। सुनहु सूर यह सांच कि संभ्रम सपन किधौं दिन रैन ॥ ४०॥ राग मलार॥ नैना माई भूले अनतन

जात । देखि सखी शोभा जो बनी है माधवके मुसकात ॥ दाडिम दशन निकट नासा शुक चोंच चलाइ न खात । मनो रतिनाथ हाथ भृकुटी धनु ता अवलोकि डरात ॥ वदन प्रभा मुख चंचल लोचन आनँद उर न समात । मानहु भौंह युवारथ जोते शशि न चलतमृग मात ॥ कुंचित केश मधुर ध्वनि मुरली सूरदास सुर सात । मनहु कमलपर कोकिल कूजत अलिगण उपर उडात ॥ ४१ ॥ राग कान्हरो ॥ श्याम कमलपद नखकी शोभा । जे नखचंद्र इंद्र शिर परसे शिव विरंचि मन लोभा ॥ जे नखचंद्र सनक मुनि ध्यावत नहिं पावत भरमाहीं । ते नख चंद्र प्रगट व्रजयुवती निरखिनिरखि हरषाहीं ॥ जे नखचंद्र फनीन्द्र हृदयते एकौ निमिष न टारत । जे नखचंद्र महामुनि नारद पलक न कहूँ बिसारत ॥ जे नखचंद्र भजन खल नाखत रमाहृदय जेहि परसत ॥ सूर श्याम नखचंद्र विमल छबि गोपीजनमिलि दरशत ॥ ४२ ॥ राग आसावरी ॥ श्यामहृदय जल सुतकी माला अतिहिअनूपम छाजे री मनहु बलाकपांति नवघनपर यह उपमा कछु भ्राजे री ॥ पीत हरित सित अरुण मालवन राजत हृदय विशाल री । मानहु इंद्रधनुष नभमंडल प्रगट भयो तिहिकाल री ॥ भृगुपदचिह्न उरस्थल प्रगटे कौस्तुभमणि ढिग दरसत री । बैठे मनु वरवधू एकसँग अर्धनिशा मिलिहरपत री ॥ भुजाविशाल श्यामसुंदरकी चंदनखौरि चढाए री । सूर सुभग अँग अँगकी शोभा व्रजललना ललचाए री ॥ ४३ ॥ राग मलार ॥ निरखि सखि सुंदरताकी सीवँ । अधर अनूप मुरलिका राजति लटकि रहनि अधग्रीवँ ॥ मंदमंद सुर पूरत मोहन राग मलार बजावत । कबहुँक रीझि मुरलिपर गिरिधर आपुहि रस भरि गावत ॥ हर्षित लखि दशनावलि पंगति व्रजवनिता मन मोहत । मर्कतमणि पुट बिच मुकुताहल बदन धरे मनु सोहत ॥ मुख विकसत शोभा एक आवत मनो राजीव प्रकाश । सूर अरुण आगमन देखिकैप्रफुलित भए हुलास ॥ ४४ ॥ राग टोडी ॥ गोपीजन हरिबदन निहारति । कुंचितअलकबिथुरि रहे भुवपर तापर तनमन वारति ॥ वदन सुधा सरसीरुह लोचन भृकुटी दोउ रखवारी । मनोमधुप मधुपानहि आवत देखि डरत जिय भारी ॥ एक एक अलक लटकि लोचनपर यह उपमा एक आवत । मनहु पन्नगिनि उतरि गगनते दलपर फन परसावत ॥ मुरली अधर धरे कल पूरत मंदमंद सुरगावत । सूर श्याम नागर नारिनकेचंचल चितहि चोरावत ॥ ४५ ॥ राग सूहीबिलावल ॥ देखिसखी यह सुन्दरताई । चपलनैन बिच चारुनासिका यकटक नैन रही तहां लाई ॥ करति विचार परस्पर युवती उपमा आनति बुद्धि बनाई । मानहु खंजन बिच शुक बैठो यह कहिकै मन जात लजाई ॥ कछु एक तिलक प्रसूनकी आभा मन मधुकर जहां रह्यो लुभाई । सूरश्याम नासिका मनोहर यह सुंदरता उन कहां पाई ॥ ४६ ॥ राग रामकली ॥ मनोहरहै नैननकी भांति । मानहुं दूरिकरतबल अपने शरद कमलकी कांति ॥ इंदीवर राजीव कसेसे जीते सब गुण जाति । अतिआनंद सुप्रौढा नाते विकसत दिन अरु राति ॥ खंजरीट मृग मीन बिचारति उपमाको अकुलाति । चंचल चारु चपल अवलोकनि चितहि न एक समाति ॥ जबलगि परत निमेष अंतर युग समान पल जात । सूरदास वह रसिक राधिका निमिष परति अनखात ॥ ४७ ॥ आजु सखी देखे श्याम नए री । निकसे आनि अचानक अबहीं इत फिरिफिरि चितए री ॥ मैं तबते पछिनाति इहै तनु नैन नबहुत भए री । जो विधिना इतनी जानतहे कत दृग दोइ दये री ॥ सबदे लेउँ लाख लोचनकहे जो कोउ करत नये री । हरिप्रतिअंग बिलोकनको मन मैं पन कै पठए री ॥ अपने चोप बहुत कहँ पइये येहरिसंग गये री ॥ थकेचरण सुनि मृगमनोगुण मदनबाण बिधये री ॥ ४८ ॥ राग गूजरी ॥ देखिरी हरिके चचंल नैन । खंजन मीन मृगज चपलाई नहिं पटतर एकसैन ॥ राजिवदल इंदीवर शतदल

कमलकुशेशय जाति। निशि मुद्रित प्रातहिं ए बिगसत ए बिगसत दिनराति॥ अरुण श्वेत सित झलक पलकप्रति कोबरणै उपमाइ। मनो सरस्वति गंगा यमुना मिलि आगम कीन्हों आइ॥ अवलोकनि जलधार तेज अति तहां न मन ठहरात। सूर श्याम लोचन अपार छबि उपमा सुनि शरमात॥४९॥ राग सोरठ॥ देखु सखी मोहन मन चोरत। नैनकटाक्ष बिलोकनै मधुरी सुभग भ्रुकुटिविवि मोरत॥ चंदनखौरि ललाट श्यामके निरखत अति सुखदाई। मानहुं अर्धचंद्रतट अहिनी सुधा चोरावन आई॥ मलयज भाल भ्रुकुटिकी रेखा करि उपमा एक ल्यावत। मनो एकसंग गंग यमुन नभ तिरछी धार बहावत॥ भ्रुकुटी चारु निरखि ब्रजसुंदरि यह मन करतिबिचार। सूरदास प्रभु शोभा-सागरकोउ नपावतपार॥५०॥ राग रामकली॥ देखि री देखि कुण्डललोल। चारुश्रवणनि ग्रहित कीन्हीं झलक ललित कपोल॥ बदन मंडलसुधा सरवर निरखि मन भयो भोर। मकर क्रीडत गुप्त परगट रूप जल झकझोर॥ नैन मीन भुवंगिनी भुअ नासिका थलबीच। सरस मृगमद तिलक शोभा लसतिहै गलकीच॥ मुखबिकास सरोज मानहु युवतिलोचन भृंग॥ बिथुरि अलकें परीं मानहु प्रेमलहरि तरंग॥ श्याम तुम छबि अमृत पूरण रच्यो काम तडाग। सूर प्रभुकी निरखि शोभा ब्रजतरुणि बडभाग॥ ५१॥ राग धनाश्री॥ हरिमुख निरखति नागरि नारि। कमलनयनके कमल बदनपर वारिज वारिज वारि॥ सुमति सुंदरी परस प्रियारस लंपट माडी आरि। हारि जोहारि जो करत बसीठी प्रथमहि प्रथम चिन्हारि॥ राखत ओट कोटि यतननिकरि झांपति अँचल झबारि। खंजन मनहु उडनको आतुर सकत न पंख पसारि॥ देखि स्वरूप श्यामसुंदरको रही न पलकसँभारि। देखहु सूर अधिकसूरतितिन अजहुँ न मानी हारि॥५२॥ हरिमुख किधौं मोहनी माई। बोलत बचन मंत्रसो लागत गति मति जाति भुलाई॥ कुटिल अलक राजत भ्रुव ऊपर जहँ तहँ रहे बगराई। श्याम फांसि मन कर्ष्यो हमरो अब समुझी चतुराई॥ कुंडल ललित कपोलनि झलकत इनकी गति मेंपाई। सूर श्याम युवती मन मोहन ये सँगकरत सहाई॥५३॥ राग नट॥ निरखति रूप नागरि नारि। मुकुटपर मनअटकि लटक्यो जात नहिंनिरु-आरि॥ श्यामतनुकी झलक आभा चंद्रिका झलकाइ। बारबारविलोकि थकि रहीं नयनहीं ठहराइ॥ श्याम मर्कतमणि महानग शिखिनि निर्त्तत मोर। देखि जलधर हर्ष ऊपर नहीं आनंद थोर॥ कोउ कहति सुरचाप मानो गगन भयो प्रकाश। थकित ब्रजललना जहां तहँ हरष कबहुँ उदास॥ निरखि जो जेहि अंग राचीं तहीं रहीं भुलाइ। सूर प्रभु गुणराशिशोभा रसिक जन सुखदाइ॥ ५४॥ राग बिहागरो॥ देखिरी देखि शोभाराशि। काम पटतर कहादीजै रमा जिनकी दासि॥ मुकुटशिर श्रीखंड सोहै निरखि रहीं ब्रजनारि। कोटि सुरकोदंड आभा छिरकि डारै वारि॥ केशकुंचित बिथुरि भुवपर बीच शोभा भाल। मनहुं चंद्रहि अबल जान्यो राहु घेरो जाल॥ चारु कुंडल सुभग श्रवणनि को सकै उपमाइ। कोटिकोटि कला तरनि छबि देखि तनु भरमाइ॥ सुभग मुख-पर चारु लोचन नासिका यहि भाँति। मनो खंजनबीच शुक मिलि बैठे हैं एक पांति॥ सुभग नासा तर अधरछबि रसभरे अरुनाइ। मनो बिंब निहारि शुक भ्रुव धनुष देखि डेराइ॥ हँसत दशननि चमकताई वज्रकन रुचिपांति। दामिनी दारिम नहीं सम कियो मन अतिभ्रांति॥ चिबुकपर चितवन चोरावत नवल नंदकिशोर। सूर प्रभुकी निरखि शोभा भई तरुनी भोर॥ ५५॥ राग सोरठ॥ तनमन नारि डारतवारि। श्यामशोभासिंधुजान्यो अंगअंग निहारि॥ पचि रहीं मन ज्ञान करिकरि लहति नाहिंन तीर। श्यामतन जलराशि पूरण महा गुण गंभीर॥ पीत पट

फहरानि मानो लहरि उठत अपार।निरखि छबिथकितीरबैठीं कहूं वार न पार॥चलतअंगत्रिभंग करिकै भौंह भाव चलाइ। मनो बिचबिच भौंर डोलत चित परत भरमाइ ॥ श्रवण कुंडल मकर मानो नैन मीन विशाल ।सलिल झलकनि रूपआभा देखरी नँदलाल ॥ बाहुदंड भुजंग मानो जलधिमध्य बिहार । मुक्तमाला मनो सुरसरि ह्वै चली द्वय धार ॥ अंगअँग भूषण विराजत कनकमुकुटप्रभास । उदधि मथि नग प्रगट कीन्हो श्रीसुधा परगास ॥ चकृत भई तिय निरखि शोभा देहगति बिसराइ। सूर प्रभु छबिराशि नागर जानि जानि न जाइ ॥५६॥राग सारंग॥ बैठी कहा मदनमोहनको सुंदर बदन विलोकि । जा कारण घूँघटपट अब लौं अँखियां राखी रोकि॥ फबि रही मोरचंद्रिका माथे छबिकी उठत तरंग । मनहु अमरपतिधनुष विराजत नवजलधरके संग ॥ रुचिर चारु कमनीय भाल कुंकुमको तिलक दिये। मानहु अखिल भुवनकी शोभा राजत उदय किये ॥ मणिमय जडित लोल कुंडलकी आभा झलकत गंड । मनहु कमल-ऊपर दिनकरकी पसरी किरनि प्रचंड ॥ भ्रुकुटी कुटिल निकट नैननके चपल होत यहि भाँति । मनहु तामरस पारस खेलत बालभृंगकी पांति ॥ कोमल श्याम कुटिल अल-कावलि ललित कपोलन तीर ।मानहु सुभग शरद इंदुऊपर मधुपनिकी अति भीर ॥ अरुण अधर नासिका निकाई बदत परस्पर होड । सूर सो मनसा भई पांगुरी निरखि डगमगे गोड॥५७॥ राग केदारो॥करि मन नंदनंदन ध्यान । सेइ चरणसरोज शीतल तजि विषै रस पान ॥ जानुजंघ त्रिभंग सुंदर कलित कंचन दंड ।काछिनी कटि पीतपट्ट दुति कमलकेसर खंड ॥ मनुमराल प्रवाल छौना किंकिनी कलराउ । नाभिह्रद रोमावली अलि चले सैन सुभाउ॥ कंठ मुक्तामाल मलयज उर बने बनमाल ।सुरसरीके तीर मानो लता श्याम तमाल ॥ बाहु पानि सरोज पल्लव गहे मुख मृदु बेनु।अतिबिराजत बदन विधुपर सुरभि रंजित रेनु ॥ अरुण अधर कपोल नासा परमसुंदर नैन। चलित कुंडल गंडमंडल मनहु निर्तत मैन ॥ कुटिल कच भ्रू तिलकरेखा शीशशिखि श्रीखंड।मनु मदन धनुशर सँधाने देखि धनु कोदंड ॥ सूर श्रीगोपालकी छबि दृष्टि भरिभरि लेत ।प्राणपतिकी निरखि शोभा पलक परन नदेत॥ ५८ ॥ राग नट नारायण॥सजनी निरखि हरिको रूप। मनसि वचसि विचारि देखो अंगअंग अनूप॥कुटि-लकेश सुदेश अलिगन बदन शरदसरोज।मकर कुंडल किंकिनी छबि दुरति फिरति मनोज ॥ अरुण अधर कपोल नासा सुभग ईषदहास।दशनकी द्युति तडित नवशशि भ्रुकुटि मदनविलास। अंगअंग अनंग जीते रुचिर उर बनमाल।सूर शोभा हृदय पूरण देत सुखगोपाल॥५९॥ राग नट॥ नैननि ध्यान नंदकुमार ।शीश मुकुटश्रीखंड भ्राजित नहीं उपमा पार॥ कुटिल केश सुदेश राजत मनहुँ मधुकरजाल । रुचिर केसरि तिलक दीन्हों परम शोभा भाल॥भ्रुकुटि बंकट चारु लोचन रहीं युवती देखि । मनो खंजन चाप डरिडरि उडत नहिं तेहि पेखि ॥ मकर कुंडल गंड झलमल निरखि लज्जित काम ।नासिकाछबि कीर लज्जित कवि न बरनत नाम ॥ अधर विद्रुम दशन दाडिम चिबुकहै चितचोर ।सूर प्रभुमुख चंद्र पूरण नारिनैन चकोर ॥ १४००॥राग केदारो॥हमारे श्याम लालहो ।नैन विशालहोमोही तेरी चालहो॥ मोरमुकुट डोलनि मुख मुरली कल मंद । मनो तमाल शिखा शिखि नाचत आनंद ॥ मकराकृतकुंडल छबि राजत लोल कपोल । ईषद अधर मुसुकनि बिच मधुर २ बोल ॥ चपल चितवनि मनोहर राजत भ्रुवभंग। धनुष बाण डारिके वशहोत कोटि अनंग ॥ बदनसुधाको सरोवर कुटिल अलक वारि। व्रजयुवती मृगिनीरचि तिनके

फल पारि ॥ पीतांबर छबि निरखत दामिनि द्युति लजाइ । चमकि चमकि सावन मनो घनमें दुरिजाइ ॥ चरण कमल अवलंबित राजित बनमाल। प्रफुलित ह्वै लता मनो चढी तरुतमाल॥सूरदास वा छबिपै वारौं तन मन प्राण।गिरिधरपिय देखि देखि कहाकरौंअनुमान ॥१॥ राग सारंग॥देख सखी सुंदरघनश्याम।सुंदर मुकुट कुटिल कचसुंदर सुंदरभालतिलकछबिधाम॥सुंदर भ्रुव सुंदर अति लोचन सुंदर अवलोकनि विश्राम ।अतिसुंदर कुंडल श्रवणनिवर सुंदर झलकनि रीझत काम ॥सुन्दर चारु नासिका सुंदर सुंदर मुरली अधर उपाम। सुंदर दशन चिबुक अति सुंदर सुंदर हृदय बिराजत दाम॥ सुंदर भुजा पीत कटि सुंदर सुंदर कनक मेखला झाम। सुंदर जंघ जानु पद सुंदर सूरउधारन नाम ॥२॥ राग धनाश्री ॥ देखिदेखि रीनंदकुलकेउधारी। मात पितु दुरित उद्धरन ब्रज उद्धरन धरनि उद्धरन शिर मुकुटधारी ॥ पतित उद्धरन अपने भक्त उद्धरन दीनउद्धरन कुंडलनि धारी । जगत उद्धरन तिहुँ लोकके उद्धरन बलिहि उद्धरन पग पीठ धारी ॥पूतना उद्धरन दनुजकुल उद्धरन तृणा उद्धरन मुख मुरलिधारी । शकट उद्धरन केशी प्रबल उद्धरन बका उद्धरन अरुणअधर धारी ॥ अघा उद्धरन गाइ ग्वालके उद्धरन वृषभ उद्धरन बनमालधारी।बच्छ उद्धरन ब्रह्मा उद्धरन येइ प्रभु यज्ञके पति यज्ञोपवीत धारी॥काली उद्धरन फनफन सहित उद्धरन दवा उद्धरन अंग मलयधारी।ग्राह उद्धरन गजराज उद्धरन ये शिला उद्धरन कटि पीत धारी॥यदुकुल उद्धरन द्रौपदी उद्धरन रुक्मिणी उद्धरन कर लकुट धारी। सिंधु उद्धरन सीता प्यारी उद्धरन जय बिजयके उद्धरन धनुपधारी ॥ त्रास उद्धरन प्रहलादके उद्धरन प्रबलनरसिंह अवतार धारी। हिरणकश्यप उद्धरन हिरण्याक्षके उद्धरन वेद उद्धरन बलभुजाधारी ॥ धरम उद्धरन यह कर्म उद्धरनप्रभु सुभग कटि किंकिनी पीतधारी । सूर उद्धरन सुरलोकके उद्धरन हरि कंस उद्धरन एई मुरारी ॥ ३ ॥ नंदनँदन मुख देख्यो नीके । अंगअंग प्रति कोटि माधुरी निरखि होत सुख जीके ॥ सुभग श्रवण कुंडलकी आभा झलक कपोलनि पीके । दहदह अमृत मकर क्रीडत मनो यह उपमा कछु हीके॥और अंगकीसुधि नहिं जानें करे कहतिहौंलीके। सूरदास प्रभु नटवर काछे रहतहैं रतिपति वीके ॥४॥ राग रामकली॥देखि री देखि कुंडल झलक। नैन द्वै छबि धरौं कैसे लगत तापर पलक ॥ लसत चारुकपोल दुहुँबिच सजललोचन चारु। मुख सुधासर मीन मानों मकरसंग विहार॥कुटिल अलक सुभाइ हरिके भुवनिपर रहे आइ । मनो मन्मथ फाँदि फंदनि मीन विवि तट ल्याइ॥चपल लोचन चपल कुंडल चपल भ्रुकुटीबंक। सखी व्याकुल देखि अपने लेत बनत न शंक ॥ सूर प्रभु नँदसुवनकी छबि बरनि कापै जाइ। निरखि गोपीनिकरि विथकी विधिहि अति रिस पाइ ॥ ५ ॥ राग जयतश्री ॥ विधिना अतिही पोच कियो री। कहा विगार कियो हम वाको ब्रज काहे अवतार दियो री॥यह तौ मन अपने जानत हौं येते पर क्यों निठुर हियो री । रोमरोम लोचन एकटक करि युवतिन प्रति काहे न ठयोरी॥ अँखियाँ द्वै छबिकी चमकनि वह हम तौ चाहति सबै पियोरी । सुनि सजनी यह करनी अपनी अपनेही शिर मानि लियो री ॥ हम तौ पाप कियो भुगतै को पुण्य प्रगट क्यों निठुर हियो री । सूरदास प्रभुरूप सुधानिधि पुटथोरो विधि नहींवियोरी॥६॥ राग धनाश्री॥ सुनरी सखी वचन एक मोसों । रोम रोम प्रति लोचन चाहति द्वै सावित हैं तोसों ॥ मैं विधना सों कहाँ कछु नहिं नितप्रति निमको कोसों । यों जो नीके दोऊ रहते निरखत रहती होसों ॥ एक एक अंग अंग छबि धरती मैं जो कहती तोसों । सूर कहा तू कहति

अयानी काम परचो सब जोसों ॥ ७ ॥ रागकान्हरो ॥ कहा काहूको दोष लगावै । निमिषौ कहा कहति कहो बिधिसों कहा नैननि पछितावै ॥ श्याम हितू कैसे करि जानति आंगे निठुर कहावै । क्षणमें और और अँग शोभा जो ए देखन पावै ॥ जबहीं एकटक करि अवलोकत तबहीं वै झलकावै । सूर श्यामके चरितलखै को एई बैर बढावै ॥८॥ रागनट ॥ लहनी करमके पाछे । दियो अपनों लहै सोई मिलै नहिं पाछे ॥ प्रगटही हैं श्याम ठाढे कौन अँग केहि रूप । लह्यो काहू कहो मोसों श्याम हैं ठगभूप ॥ प्रेम जावक धनी हरिसे नैन पुट कह लेहि । अमृतसिंधु हिलोरि पूरण कृपा दरशन देहि ॥ पाइए सोई सखी री लिखो जितनो भाल । सूर उत कछु कमी नाहीं छबि समुद्र गोपाल ॥९॥ राग सूही बिलावल ॥ देखि सखी अधरनकी लाली । मणि मरकतते सुभग कलेवर ऐसेहैं बनमाली ॥ मनो प्रातकी घटा साँवरी तापर अरुन प्रकाश । ज्यों दामिनि बिच चमकि रहत है फहरत पीत सवास ॥ कीधौं तरुन तमाल बेलि चढि युग फल बिंब सु पाक्यो । नासा कीर आय मनों बैठो लेत बनत नहिं ताक्यो ॥ हँसत दशन एक शोभा उपजत उपमा यदपि लजाइ । मनों नीलमणि पुट मुकुतागन बंदन भरि बगराइ ॥ किधौं वज्रकन लाल नगनि खचि तापर बिद्रुम पांति । किधौं सुभग बंधूक कुसुमपर झलकत जलकन कांति ॥ किधौंअरुनअंबुजबिच बैठी सुंदरताई आई । सूर अरुण अधरनकी शोभा वर्णत बरनिनजाई ॥१०॥ राग धनाश्री ॥श्यामरूपदेखनकी साध मेरी माई । कितनोपचिहारिरहीदेतनहिंदिखाई ॥ मनतौ निरखत सुअंग में रही भुलाई । मोसों यह भेद कहौ कैसे वहि पाई ॥ आपुन अंग अंग बिधो मोको बिसराई । बार बार कहत इहै तू क्यों नहिं आई ॥ अबहूं ले जात साथ वाहि बोले लाई । सूर श्याम छबि अगाध निरखत भरमाई ॥ ११ ॥ राग बिलावल ॥ सुनहु सखी मैं बूझनितुमकोकाहू हरिको देखेहैं । कैसो तन कैसो रँग देखियत कैसी बिधि करि भेषेहैं ॥ कैसो मुकुट कुटिल कच कैसे सुभग भाल भ्रुव नीकेहैं । कैसे नैन नासिकाकैसीश्रवणनिकुंडल पीकेहैं ॥ कैसेअधरदशन दुति कैसी चिबुक चारु चित चोरतहैं । कैसे निरखि हँसत काहू तन कैसे बदन सकोरत हैं ॥ कैसी उरमाला है शोभित कैसी भुजा बिराजतहैं । कैसेकर पहुँची हैंकैसी कैसी अँगुरिआ राजत हैं ॥ कैसी रोमावली श्यामके नाभि चारु कटि सुनियतहैं ॥ कैसी कनकमेखलाकैसीकछनी यह मन गुनियतहैं ॥ कैसे जंघ जानु कैसे दोउ कैसी वद नख जानतिहैं । सूर श्याम अंग अंगकी शोभा देखे की अनुमानतिहैं ॥१२॥ राग रामकली ॥ ऐसे सुने नंद कुमार । नख निरखि शशि कोटि वारत चरण कमल अपार ॥ जानु जंघ निहारि रंभा करनि डारत वारि । काछनी पर प्राण वारत देखि शोभा भारि ॥ कटि निरखि तनु सिंह वारत किंकिनी जु मराल । नाभिपर ह्रद आपुवारत रोमावलि अलिमाल ॥ हृदय मुकुतामाल निरखत वारि अवलिबलाक । करजकरपरकमलवारत चलति जहं तहं साक ॥ भुजापर वर नाग वारत गये भागि पताल । ग्रीवकी उपमा नहीं कहुं लखति परम रसाल ॥ चिबुकपर चित वारि डारत अधर अंबुज लाल । बंधूक बिद्रुम बिंब वारत ते भये बेहाल ॥ बचन सुनि कोकिलावारत दशन दामिनि कांति । नासिकापर कीर वारत चारु लोचन भांति ॥ कंज खंजन मीन मृग शावकनि डारति वारि । भ्रुकुटि पर सुर चाप वारत तरनि कुंडल हारि ॥ अलक पर वारत अँध्यारी तिलक भाल सुदेश । सूर प्रभु शिर मुकुटधारे धरे नटवर भेष ॥१३॥ राग सारंग ॥ ऐसी बिधि नंदलाल कहत सुने माई री । देखे जो नैन रोम रोम प्रति सुभाई री ॥ विधिने द्वै नैन रचे अंग ठानि ठान्यो । लोचन नहिं बहुतदिये जानिकै भुलान्यो ॥ चतुरता

प्रवीनता विधाताको जानै। अब कैसे लगत हमहि वाते न अयाने॥ त्रिभुवनपति तरुन कान्ह नटवर बपु काछे। हमको द्वै नैन दिये तेऊ नहिं आछे॥ ऐसो बिधिको विवेक कहाँ कहा वाको। सूर कबहुं पाऊं जो कर अपने ताको॥ १४॥ राग नट॥ मुखपर चंद्र डारौं वारि। कुटिल कच पर भौंर वारौं भौंह पर धनु वारि॥ भाल केसरि तिलक छबिपर मदन शत शर वारि॥ मनु चली बहि सुधा धारा निरखि मन धौं वारि॥ नैन खंजन मृग मीन वारौं कमलके कुलवारि॥ मनों सुरसति यमुन गंगाउपमा डारौं वारि॥ निरखिकुंडल तरनि वारौं कूप श्रवननि वारि॥ झलक ललितकपोल छबिपर मुकुर शतशत वारि॥ नासिका पर कीर वारौं अधर विद्रुम वारि। दशन ए कन वज्र वारौं बीज दाडिम वारि॥ चिबुकपर चित बित्त वारौं प्राण डारौं वारि। सूरहरिकीअंगशोभाकोसकैनिरवारि॥ १५॥ राग सोरठ॥ श्याम उर सुधादह मानौ। मलय चंदन लेप कीन्हें बरन यह जानौ॥ मलय तनु मिलि लसतिशोभा महाजल गंभीर। निरखि लोचन भ्रमत पुनि२धरत नहिं मन धीर॥ उरज भँवरी भँवर मानों मीनमणिकी कांति। भृगुचरण हृदय चिह्न ये सब जीव जल बहुभांति॥ श्यामबाहु बिशाल केसरि खौरि विविधि बनाइ। सहज निकसे मगर मानों कूल खेलत आइ॥ सुभग रोमावलीकी छबि चली दहते धार। सूर प्रभुकी निरखि शोभा युवति बारंबार॥ १६॥ मनु मधुकर पद कमल लुभान्यो। चित्त चकोर चन्द्र नख अटक्यो यकटक पल न भुलान्यो॥ बिनही कहे गये उठि मोते जात नहीं मैं जान्यो। अबदेखो तनमें वे नाहीं कहा जियहि धौं आन्यो॥ तबते फेरि तके नहिं मोतन नखचरणन हित मान्यो। सूरदास वे आपु स्वारथी परवेदन नहिंजान्यो॥ १७॥ रागमारू॥ श्याम सखि नीके देखेनाहीं। चितवतही लोचन भरिआए बार बार पछिताहीं॥ कैसेहू करि यकटक राखति नेकहिमें अकुलाहीं। निमिष मनो छबिपर रखवारे ताते अतिहि डराहीं॥ कहा करैं इनको कहा दोषन इन अपनीसी कीन्हीं। सूर श्याम छबिपर मन अटक्यो उन सब शोभा कीन्हीं॥ १८॥ राग गौरी॥ मन लुबध्यो हरिरूप निहारि। जादिन श्याम अचानक आयो तबते मोहिं बिमारि॥ इंद्रिन संग लगाइ गयो ज्यों डग निकसे द्वारि। ऐसे हाल करति री कोऊ रहीअकेली नारि॥ फेरि न मेरीउहिसुधि लीन्हीं आपु करत दुख भारि। सूर श्यामको उरहनो देहौं पठवत काहे न मारि॥ १९॥ अथ अनुरागसमयके पद॥ रामकली॥ पुनि पुनि कहतिहैं व्रजनारि। धन्य बडभागिनी राधा तेरे वश गिरिधारि॥ धन्य नंदकुमार धनि तुम धन्य तेरी प्रीति। धन्य तुम दोउ नवलजोरी कोक कला निजीति॥ हमबिमुख तुम कृष्ण संगिनि प्राण एक द्वै देह। एक मन एकबुद्धि एकचित दुहुनि एक सनेह॥ एकछिनुबिन तुमहि देखे श्याम धरत न धीर। मुरलिमेंतुवनाम पुनिपुनि कहतहैं बलबीर॥ श्याममणि मैं परखि लीन्हों महाचतुर सुजान। सूर प्रभुके प्रेमहीवश कौन तोसरि आन॥ २०॥ राग बिहागरो॥ राधा परम निर्मल नारि। कहतिहौं मन कर्मना करि हृदय दुविधाटारि॥ श्यामको एक तुही जान्यो दुराचरनी और। जैसे घट पूरण न डोले अध खुलौ डगडोर॥ धनी धन कबहूँ न प्रगटै धरै धनहि छिपाइ। तैं महानग श्यामपायो प्रगटि कैसे जाइ॥ कहतिहौं यह बात तोसों प्रगट करिहौं नाहिं। सूर सखी सुजान राधा परस्पर मुसकाहिं॥ २१॥ राग गौरी॥ श्यामको तैंहीं है पहिचाने। सांची प्रीति जानि मनमोहन तेरेहि हाथ बिकाने॥ हम अपराध कियो कहि तुमसों हमहीकुलटी नारि। तुमसोंउनसों बीच नहीं कछु तुम दोऊ वरनारि॥ धन्य सुहाग भाग है तेरी धनि बडभागी श्याम। सूरदास प्रभुसे पति जाके तोसी जाके वाम॥ २२॥ राग सोरठ॥ राधा श्यामकी प्यारी। कृष्णपति सर्वदा

तेरे तू सदा नारी ॥ सुनत बाणी सखीमुखकी जिय भयो अनुराग । प्रेमगदगद रोम पुलकित समुझि अपने भाग ॥ प्रीति परगट कियो चाहै वचन बोलि न जाइ । नंदनंदन कामनायक रहे नैननि छाइ ॥ हृदयते कहुँ टरत नाहीं कियो निहचल वास । सूर प्रभु रसभरी गधा दुरत नाहिं प्रकाश॥ २३ ॥राग जयतश्री॥सुनि सजनी मेरी एक बात। तुम तौ अतिही करतिबडाई मन मेरो सरमात ॥ मोसों हँसति श्याम तुम एकै यह सुनिकै मरमात । एक अंगको पार न पावति चकित होइ भरमात ॥ वह मूरति द्वै नयन हमारे लिखी नहीं करमात । सूर रोमप्रति लोचन देतो बिधनापर तरमात ॥२४ ॥राग कल्याण॥ जो बिधना अपवश करिपाऊं। तौ सखि कह्यो होइ कछु तेरो अपनी साध पुराऊं ॥ लोचन रोमरोमप्रति माँगौं पुनिपुनि त्रास दिखाऊं । यकटक रहें पलक नहिं लागें पद्धति नई चलाऊं ॥ कहा करौं छबिराशि श्यामघन लोचन द्वै नहिं ठाऊं । एतेपर ये निमिष सूर सुनि यह दुख काहि सुनाऊं ॥ २५ ॥राग बिलावल॥ कहाकरौं बिधि हाथ नहीं।वहसुख यह तनुदशा हमारी नैननिको रिस मरत महीं ॥ अंगअंग नीकी बिधि बनये द्वै नैना देखति जबहीं ।ऐसो कौन ताहि धरिआनै कहा करौं खीझति मनहीं ॥ बडो सुजान चतुरई नीकी जगतपिता कहियत सबहीं । सूर श्यामअवतार जानि ब्रज लोचन बहुत न दिये हमहीं ॥ २६ ॥ अब समुझी यह निठुर बिधाता । ऐसेहि जगतपिता कहवावत ऐसे घात करै सोदाता॥कैसो ज्ञान चतुरई कैसी कौन बिबेक कहांको ज्ञाता । जैसो दुख हमको एहि दीन्हों तैसे याको होत निपाता । द्वैलोचन तनुमें करिदीन्हों याहीते जान्यो पितु माता । सूर श्यामछबिते अघात नहिं बारबार आवत अकुलाता ॥२७॥राग सूही बिलावल॥द्वै लोचन साबित नहिं तेउ।बिनु देखे कल परत नहीं छन येतेपर कीन्हेंयह टेउ ॥ बारबार छबि देख्यो चाहत साथी निमिष मिलेहैं येउ।ते तो ओट करत छिनहीछिन देखतही भरिआवत दोउ॥कैसे मैं उनको पहिचानौं नैनबिना लखिये क्यों भेउ । ये तो निमिष परत भरि आवत निठुर बिधाता दीन्हें येउ ॥ कहा भई जो मिली श्यामसों तू जान्यो जानै सबकोउ। सूर श्यामको नाम श्रवन सुनि दरशन नीके देत न वोउ॥२८॥ राग सूही ॥ श्यामहिं मैं कैसे पहिचानौं॥क्रमक्रमकरि एक अंग निहारति पलकओट ताको नहिं जानौं ॥ पुनि लोचन ठहराइ निहारति निमिष मेटि वह छबि अनुमानौं । औरै भाव और कछु शोभा कहौ सखी कैसे उर आनौं॥ छिनछिन अंग अंग छबि अगणित पुनि देखौं फिरिकै हठ ठानौं।सूरदास स्वामीकी महिमा कैसे रसना एक बखानौं॥२९॥राग सारंग ॥ श्यामसों काहेकी पहिचानि । निमिष निमिष वह रूप न वह छबि रति कीजै जेहि जानि ॥ यकटक रहत निरंतर निशिदिन मन मतिसों चित सानि । एकौ पल शोभा कि सींवाँ सकत न उरमहँ आनि ॥ समुझि न परै प्रगटही निरखत आनँदकी निधि खानि । सखि यह बिरह संयोगकि मम रस दुख सुख लाभ कि हानि॥ मिटति न घ्रतनै होम अग्निरुचि सूर सुलोचनि बानि । इत लोभी उत रूप परमनिधि कोउ न रहत मिति मानि ॥३०॥राग रामकली॥ कहा करौं नीकेकरि हरिको रूप रेख नहिं पावति । संगहिसंग फिरति निशिवासर नैननिमिष न लावति ॥ बँधी दृष्टिज्यों डोर गुडीवश पाछे लागी धावति ।निकट भये मेरीये छाया मोको दुख उपजावति ॥ नखशिख निरखि निहारचोड चाहति मन मूरति अति भावति । जानौं नहीं कहांते निजछबि अंगअंगमें आवति॥अपनी देह आपको बैरिनि दुरतनदुरीदुरावति । सूर श्यामसोंप्रीति निरंतर अंतर मोहिंकरावति॥३१॥राग धनाश्री ॥ जोदेखौंतोप्रीतिकरौंरी।संगहिरहौं फिरौं निशिबासर चितते नेक नहीं बिसरौं री॥कैसे दुरति दुराये मेरे उनबिन धीरजनहींधरौंरी ।

जाउँ तहीं जहँ रहैं श्यामघन निरखत यकटकते न टरौं री॥सुनि री सखी दशा यह मेरी सोकहि धौं अब कहा मरौं री। सूर श्याम लोचनभरि देखौं कैसे इतनी साध भरौं री ॥ २२॥ राग बिलावल ॥ हरि दरशनकी साध मुई। उडियै उडी फिरति नैननि सँग फर फूटे ज्यों आक रुई ॥ जानौं नहीं कहाँते आवति वह मूरति मनमाहँ उई। बिनदेखेकी व्यथा बिरहिनीअति जुरजरति न जाति छुई ॥ कछुवै कहत कछू कहि आवत प्रेमपुलकि श्रमस्वेद चुई। सूखति सूर धानअंकुरसी बिनुबरषा ज्यों मूल तुई ॥ २३॥ राग धनाश्री ॥ सुन री सखी दशा यह मेरी। जबते मिले श्यामघन सुंदर संगहि फिरति भई जनु चेरी ॥ नीके दरश देत नहिं मोकों अंगन प्रति अनंगकी टेरी। चपलाते अतिही चंचलता दशन चमक चकचौंधि घनेरी ॥ चमकत अंग पीतपट चमकत चमकति माला मोतिनकेरी।सूर समुझि बिधिनाकी करनी अतिरिस करति सौंह मुँह तेरी॥ २४॥ राग मारू ॥ आजुके दिनाको सखी अति नहीं जो लाख लोचन अँगअंग होते। पूरती साध मेरे हृदय माँझ देखत सबै छबि श्यामको ते॥ चित्तलोभी नैनद्वार अतिही सूक्ष्म कहाँ वह सिंधु छबि है अगाधा। रोम जितने अंग नैन होते संग रूप लेती निदरि कहति राधा ॥ श्रवण सुनिसुनि दहै रूप कैसे लहै नैन कछु गहै रसना न ताके। देखि कोउ रहै कोउ सुनि रहै जीभबिन सो कहै कहा नहिं नैन जाके ॥ अंगबिनु है सबै नहीं एकौ फबै सुनत देखत जबै कहन लोरे। कहै रसना सुनत श्रवन देखत नैन सूर सब भेद गुनि मनहिं तोरे॥ २५ ॥ राग धनाश्री ॥ इनहूँमें घटिताई कीन्हीं। रसना श्रवण नैनके होते की रसनाहीको नहिं दीन्हीं ॥बैर कियो बिधना हमको रचि याकी जातिअबै हम चीन्हीं।निठुर निर्दयी याते औरन श्यामबैर हमसोंहै लीन्हीं॥ या रसहीमेंमगन राधिकाचतुरसखी तबहीं लखि भीनी।सूर श्यामके रंगहि राची टरत नहीं जलते ज्यों मीनी॥ २६॥ राग सोरठ ॥ धन्य धन्य बडभागिनि राधा।नीके भजी नंदनंदनको मेटि भवनजन बाधा॥नवल श्याम नवला तुमहूं हो दोउ तुम रूप अगाधा।मैं जानी यह बात हृदयकी रही नहीं कछु साधा॥संगहि रहतिसदापियप्यारी क्रीडत करति उपाधा। कोककला वितपन्न भईहो कान्हरूप तन आधा॥प्रेम उमँगि तेरे मुख प्रगट्यो अरस परस अवलाधा।सूरदास प्रभु मिले कृपाकरि गये दुरित दुखदाधा॥ २७॥ राग धनाश्री ॥ कहि राधिकाबात अब सांची।तुमअब प्रगट कही मोआगे श्यामप्रेमरस मांची॥तुमको कहां मिले नँदनंदन जब उनके रंगरांची।खरिक मिले की गोरस बेचत की बिषहरते बांची॥कहे बनै छांडो चतुराई बात नहीं यह कांची। सूरदास राधिका सयानी रूपराशि रस खांची॥ २८॥ राग गौरी ॥ कबरी मिले श्याम नहिं जानौं।तेरी सौं,कहिकहत सखी री अबहूं नहिं पहिचानौं॥खरिकमिलेकी गोरस बेचत की अबहीं की कालि।नैननि अंतर होत न कबहूं कहति कहारीआलि॥ एकौ पल हरि होत न न्यारे नीके देखे नाहीं । सूरदास प्रभु टरत न टारे नैननि सदा बसाहीं ॥ २९ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम मिले मोहिं ऐसे माई। मैंजलको यमुनातट आई॥औचक आये तहांकन्हाई। देखतही मोहनी लगाई॥तबहीते तनु सुरति गँवाई।मुधे मारग गई भुलाई॥ बिनदेखे कल परै न माई। सूर श्याम मोहनी लगाई ॥ ३० ॥तबहीते हरिहाथ बिकानी। देहगेह सुधि सबै भुलानी॥अंगशिथिल भई जैसे पानी। ज्यों त्यों करि गृह पहुँची आनी ॥ बोले तहाँ अचानक बानी। द्वारे देखे श्याम बिनानी ॥ कहा कहौं सुनि सखी सयानी। सूर श्याम ऐसी मति ठानी ॥ ३१ ॥ राग धनाश्री ॥ जा दिनते हरि दृष्टि परे री।ता दिनते इन मेरे नैननि दुखसुख सब बिसरेरी॥मोहन अंग गोपाललालके प्रेम पियूष भरे री। धसे उहां मुसुकानि बाहुले रचि रुचि भवन करे री॥

पठवतिहौं मन तिनहिं मनावन निशि दिन रहत अरे री। ज्यों ज्यों मान करति उलटावत त्यों त्यों होत खरे री॥ पचिहारी समुझाइ सोचि पचि पुनिपुनि पाँइ परे री। सो सुख सूर कहांलौं बरनौं यकटकते न टरे री॥ राग सारंग॥ जबते प्रीति श्यामसों कीन्हीं। तादिनते मेरे इन नैननि नेकहु नींद न लीन्हीं॥सदा रहैं मन चाक चढ्यौसो और न कछू सोहाइ।करत उपाइबहुत मिलि-बेको इहै बिचारत जाइ॥ सूर सकल लागत ऐसीयह सोदुखकासों कहिये। ज्यों अचेत बालककी बेदन अपनेही तन सहिये॥४२॥ राग अडानो॥ को जानै हरि कहा कियो री।मन समुझति मुख कहत न आवै कछुएक रसलोचन जु पियो री॥ ठाढीहुती अकेली आँगन आनि अचानक दरश दियो री। सुधि बुधि कछु न रही तेहिअवसर मेरो मनकिधौं पलटि लयो री॥ ता सुखहेतु दहति दुख दारुण छिन छिन जरति जुडात हियो री। सूर सकल आनत उर अंतर उपमाको पावति न बियोरी॥४३॥ राग सारंग॥ मेरेहरिअँगनाह्वै जु गए री। निकसेआइअचानकसजनीइतफिरिफिरि चितये री॥ अतिदुखमें पछिताति यहैकहि नैनन बहुतठये री।जोबिधि इहै कियो चाहतहौंद्रैमुहि कत बनएरी॥सब दैलेउँ लाख लोचनसखि जो कोउजडत नए री।थाके सूर पथिक मगमानोमदन व्याधबिधएरी॥४४॥राग कान्हरो॥पीतांबरकीशोभासखीरीमोपैकहीनजाई।सागरसुतापति आयुध मानो वनरिपु रिपुमै देति दिखाई॥जाअरि पवनताहिमहिंसुव स्वामी आभा कुंडल कोटिदिखाई। छायापति तनु बदन बिराजत बंधुक अधरनगए लजाई॥नाकीनायकु वाहनकी गति मुरली सुधु-नि बजाई।सूरदासप्रभु हरिसुतवाहन तासुत हरिले सरह बनाई॥४५॥ राग सारंग॥ टगनिनटारइहछवि मनमें चुभी। श्याम सुघन पीतांवर दामिनि चातक अँखियाहो जाइ तुभी॥ है जलधार हार मुकुता मनों बक पंगति कुमुद माल सुभी। गिरा गंभीर गरज मनु सुनि सखी खानि के श्रवन देखुभी॥ मोहन बानीहौं ठगी रही इकटकहौं जु उभी। सूरदास मोहन मुख निरखत उपजी सकलतनकामगुँभी॥४६॥राग बिलाबल॥नंदकेलालहरयोमनमोर।हौंबैठीपोवतिमोतिअनलरकां-करि डारि चले सखि भोर॥ बंक बिलोकनि चाल छबीली रसिक शिरोमणि नंद किशोर। कहि काको मन रहत श्रवण सुनि सरस मधुर मुरलीकी घोर। इंदु गोविंदु बदनके कारन चितवति नैन बिहंग चकोर। सूरदास प्रभुके जु मिलनको कुच श्रीफलहो करनि अकोर॥ ॥४७॥ राग अडानो॥ मेरो मन गोपाल हरयो री। चितवतही उर पैठि नैनमगनाजानोंधौं कहा करयो री॥ मात पिता पति बंधु सजन जन सखिआँगन सब भवन भरयो री। लोक बेद प्रतिहार पहरुआ तिनहूंपै राख्यो न परयो री॥ धर्म धीर कुलकानि कुंचि करितेहि तारोदै दूरि धरयो री। पलक कपाट कठिन उर अंतर इतेहु जतन कछुवै नसरयोरी॥बुधिबिवेकबल सहित सच्यो पचि सुधन अटल कबहूं न टरयो री। लियो चुराइ चितैचित सजनीसूर सो मोतन जात जरयो री॥४८॥ राग अडानो॥ मेरो मनतबतेनफिरयोरी।गयो जुसंग श्यामसुंदरकेनहांतकबहूं न टरयो री॥जोबनरूपगर्व धन सचिसचि हों उरमें जु धरयो री।कहाकहौं कुलशीलस कुचसचि सरबस हाथ परयो री॥ बिनु देखे मुख मनु हारिको यह निशिदिन रहत अरयो री। सूरदासयावृथा लाजते कछुअ न काज सरयोरी॥ ४९॥ राग सारंग॥यह सबमेंही पोच करी।श्यामरूपनिरखत नैननि भरि भौंहनि फंद परी॥ वे किशोर कमनीय मुगध मैं लुबुधनहूं न डरी। अब छवि गई समाइ हियेमें टारतहू न टरी॥ अति सुख दुख संभ्रम व्याकुलता विधुमुखसनमुखरी।बुधि बिबे-क बल बचन बिवशह्वै आनँद उमँगि भरी॥ यद्यपि शूल सहत सुनि सूर सु अंगहउदैनअरी।

तद्यपि मुख मुरलिका विलोकति उलटि अनंग जरी ॥ ५० राग आसावरी ॥ सखी री ना जानौं तबहीते मोको श्याम कहाधौं कीन्हो री।मेरी दृष्टिपरेजादिनतेज्ञानजान हरिलीन्हो री॥द्वारेआइ-गए औचकहीं मैंआंगनही ठाढी री । मनमोहनमुख देखिरही तब कामव्यथा तनु बाढी री॥नैन सैन दैदै हरि मोतन कछुएक बात बतायो री । पीतांबर उपरैना करगहिअपने शीशफिरायोरी॥ लोकलाज गुरुजनकी शंका कहत न आवै बानी री।सूरश्याम मेरेआँगन आए जात बहुत पछिता-नी री॥५१॥सोरठ॥ मन हारिलीन्हों कुँवर कन्हाई । जबते श्याम द्वारह्वैनिकसे तबतेरी मोंहिं घर न सुहाई ॥ मेरे हित आइ भयेहरि ठाढे मोतेकछु न भई री माई । तबहींते व्याकुल भई डोलति बैरी भए मातपितु भाई ॥ मो देखतशिरपाग सँवारीहँसि चितयेछबि कही न जाई। सूरश्यामगिरि-धर बर नागर मेरो मन लैगए चोराई॥ ५२॥राग धनाश्री॥प्रेमसहितहरि तेरेआये। कछुसेवातैंकरीकि नाहीं कीधौं वैसहि उनहिपठाये॥काहेते हरिपाग सँवारी क्यों पीतांबर शीश फिराये।गुप्तभावतो-सों कछु कीन्हों घर आए काहे बिसराये ॥ अतिही चतुर कहावत राधा बातनहीं हरि क्यों न भुराये । सूर श्यामको बस करि लेती काहेको रहते पछताये ॥ ५३ ॥ गुरुजनमें बैठी आये हरि बेंदी सँवारन मिस पाइलागी।चतुर नायकहु पाग मसकि मनहीमन रीझे गुप्तभेद प्रीति तनजागी॥ हस्तकमल हरि हेरि हृदय धरे भामिनि उत आप कंठलागी। सूरदास अति चतुर नागरी पिय अति नागर दुहुँ कह्यो मनमें सुहाग भागी ॥ ५४ ॥ श्याम अचानक आइगये री । मैं बैठीगुरु-जन बिच सजनी देखतही मेरे नैन नयेरी ॥ तबइक बुद्धि करी मैं ऐसी बेंदीसों कर परसकियो री । आपु हँसे उत पाग मसकिहरि अंतर्यामीजानिलियो री ॥ लैकर कमल अधरपरसायोदेखि हरषि पुनि हृदय धर्‌यो री । चरण छुवै दोउ नैन लगाये मैं अपने भुज अंक भर्‌यो री ॥ ठाढे रहे द्वार अति हित करि तबहीते मन चोरि गयोरी । सूरदास कछु दोष न मेरो उत गुरुजन इत हेतु नयो री॥५५॥करत मोहिं कछुवै तौ न बनी । हरि आए चितवतहिरही सखिजैसेचित्रधनी॥ अति आनंद हरष आसन उर कमल कुटी अपनी । न्योछावर अंचलको फहरनि अर्धनैन जल धार घनी ॥ गुरुजन लाज कछू न सकी कहि सुनि मन बुधि सजनी ।हृदयउमँगि कुचकलशप्र-गट भये टूटी तरकि तनी ॥ अब उपजति अति लाज मनहि मन समुझति निजकरनी। सूरदास मेरी जडमति मंगल प्रभु मांझ गुनी ॥ ५६ ॥ सेवा मानि लई हरि तेरी।अब काहे पछिताति राधिका श्याम जात करि फेरी ॥गुरुजनमें भावहि की पूजा और कहौ कछु टेरी। मोहन अति सुख पाय गये री चाहति हौ कह मेरी॥तेरे वशभए कुँवर कन्हाईकरतिकहा अवसेरी।सूरश्याम तुमको अतिचाहतनतुम प्यारीहरिकेरी॥ ५७॥ राग आसावरी ॥राधाभाव कियो यह नीको तुम बेंदी उन पाग छुआई।ऐसे भेद कहा कोउजानैतुमहीजानौगुप्तदुराई॥तुम जुहार उनको जब कीन्हों तुम-को उनहु जुहार कियो । एकै प्राण देह द्वै कीन्हें तुम वे एकै नहीं बियो ॥ तुमपगपरसिनैनपर राख्यो उनि करकमलनि हृदय धर्‌यो। सूर श्याम हृदय तुम राखे तुमउनको लै कंठभर्‌यो ॥५८॥ राग बिहागरो॥ अरीमाईएकगाँवकेबसत एकबारहरि कीन्ही पहिचानि।निशिदिनरहैदरशकी आशा मिल अचानक आनि॥ भाग्य दशा आँगनही आये सुंदर सरबसजानि। नीके करिदेखनहुँनपाए बहिजाइ कुलकानि। कल न परत हरि दरशन बिन री मोहिंपरीयहबानि। सूरजदासबिकानी री मैं नंदसुवनके पानि ॥ ५९ ॥ कहा करौं गुरुजन डर मान्यो । आए श्याम कौनहित करिकै मैं अपराधिनि कछु न जान्यो ॥ ठाढे श्याम रहे मेरे आँगन तबते मन उन हाथ बिकान्यो । चूकपरी

मोको सबही अंग कहा करौं गई भूलि सयान्यो ॥ वे उतहीको गये हरष मन मेरी करनीसमुझि अयान्यो । सूर श्याम सँग मन उठि लाग्यो मोपर बारंबार रिसान्यो ॥ ६० ॥ राग सारंग॥ अचानक आये री हरिमेरे चितै तब होंरही छबि निहारि । कुंडल लोल कपोल रहे कचश्रमजल-सों कर कंजसों टरि ॥ गुरुजन बिच मैं आँगन ठाढीअतिहितदरशन दियो मया करि सूरदास स्वामी अंतर्यामी वै हँसि चितये सुख करि॥६१॥राग गौरी॥मैं अपने कुलकानिडरानी।कैसेश्याम अचानक आये मैं सेवा नहिं जानी ॥उहै चूक जिय जानि सखी सुनि मन लैगए चुराइ । तनते जात नहीं मैं जान्यो लियो श्याम अपनाइ॥ऐसे ढंग फिरतहरिघरघरभूलकियोअपराध।सूरश्याम मन देहि न मेरो पुनि करिहौं अनुराध६२॥राग कांफी॥मोहीसांवरेसजनी तबते गृह मोको न सोहाई। द्वार अचानकह्वै गये री सुंदर बदन दिखाई ॥ ओढे पीरी पामरी पहिरे लाल निचोल ।भौंहेंकांट कटीलियां सखिवश कीन्ही बिनमोल॥मोर मुकुटशिर सोहई अरुअधर धरे मुखबैन ।मोहनमूरति हृदय बसै छबि लागिरही दोउनैन ॥ श्यामरूपमें मन गिध्यो भलो बुरो कहौ कोइ।सूरदासप्रभु संग गयो मन मनों उनहींकोहोइ॥६३॥ मोहनबिनुमननरहै कहा करौं माई री। कोटिभांतिकरि करि रही समुझाई री ॥ लोकलाज कौनकाज मानत यदुराईरी।हृदयते टरतनाहिंमुखसुंदरताईरी॥ ऐसेहैं त्रिभंगी नवरंगी सुखदाई री । सूर श्याम बिन न रहों ऐसी बनिआईरी॥६४॥मेरोमननरहै कान्ह बिना नैन तपै माई । नवकिशोर श्याम बरन मोहनी लगाई॥बनकीधातुचित्रित तनु मोर चंद्र सोहै । बनमाला लुब्ध भँवर सुर नरमुनि मोहै॥नटवर वपु भेष ललितकटि किंकिनि राजै । मणि कुंडल मकराकृत तरुन तिलक भ्राजै ॥ कुटिलकेश अति सुदेश गोरज लपटानी । तडित वसन कुंद दशन देखिहों भुलानी॥ अरुन श्वेत कुंभ वज्रखचित पदिक शोभा। मणिकौस्तुभकंठ लसत चितवत चित लोभा॥अधर सधर मधुर बोल मुरलीकलगावै। भ्रुवविलास मंदहास गोपिन्ह जिय भावै॥ कमलनैन चितके चैन निरखि मन वारों । प्रेम अंश अरुझि रहो उरते नहिं टारों ॥ गोप भेष धरि सखी री संगसंग डोलौं । तन मन अनुराग भरी मोहन संग बोलौं ॥ नवकिशोर चितके चोर पलकओट न करिहौं। सुभग चरन कमल अरुन अपने उर धरिहौं ॥ असन वसन शयन भवन हरिबिनु न सुहाइ ।बिनु देखे कल न परै कहा करौं माइ ॥ यशोमति सुत सुन्दर तनु निरखि हों लोभानी । हरिदरशन अमल पर्यो लाजन लजानी॥ रूपराशि सुख बिलास देखत बनि आवै । सूर प्रभु रूपकी सीवा उपमा नहिं पावै ॥६५॥राग गौरी॥मनमेरो हरि साथ गयो री । द्वारे आय श्याम घन सजनी हँसि मोतनते संग लयो री ॥ ऐसे मिल्यो जाइ मोको तजि मानहुँ उनही पोषि जयो री । सेवा चूकपरी जो मोते मनउनकोधौं कहाकियो री ॥ मोको देखि रिसात हते यह तेरे जिय कछु गर्व भयो री । सूर श्याम छबि अंग भुलानो मन वच कर्म मोहिं छाँडि दयो री ॥ ६६ ॥राग रामकली ॥ मैं मन बहुत भांति समुझायो । कहा करौं दरशनमें अटक्यो बहुरि नहीं घटआयो॥ इन नैननके भेद रूपरस उरमें आनि दुरायो।वर-जतही बेकाज सु पत ज्यों पलट्यो जोन मिधायो ॥ लोक वेद कुल निदरिनिडरह्वै करतआपनो भायो । मुख छबि निरखि बाँधि निशि खग ज्यों हठि अपुनपो बँधायो ॥ हरिको दोष कहा कहि दीजै यह अपने बल धायो । अति विपरीति भईसुनि सूरप्रभु मुरड्यो वदन जगायो ॥६७॥ रागबिलावल॥ मनहि बिना कहा करौं सखी री। घर तजिकै कोउ रहत पराये में तबहींते

फिरत बही री ॥ आइ अचानकही लैगएहरि बारबारमैं हटकिरही री।मेरो कह्यो सुनत काहेको लेगये हरि हरिके उतही री॥ऐसी करत कहूंरी कोऊ कहाकरौं मैंहारि रही री।सूरश्यामकोयह न बूझिये ढीठ कियो मनको उनहीं री॥६८॥ राग टोडी॥माखनकी चोरी तैं सीखे करनलगेअब चितहूकी चोरी। जाके दृष्टिपरे नँदनंदन सोउ फिरति गोहन डोरी डोरी ॥ लोकलाज कुलकानि मेटि करि बन बन डोलति नवलकिशोरी। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि जबते देखे निगम बानि भई भोरी॥६९॥राग आसावरी॥क्यों सुरझाऊँ री नँदलालसों अरुझिरह्यो मनमेरो। मोहन मूरति कहुँ नैकु न बिसरति कहिकहि हारि रही कैसेहु करत न फेरो ॥ बहुत यतन घेरिघेरि राखति फेरिफेरि लरत सुनत नहिं टेरो । सूरदास प्रभुके सँग रसवश भई डोलत निशि वासरकहुँनिरखत पायोन डेरो ॥ ७० ॥ राग बिलावल ॥ मैं अपनो मनहरतनजान्यो । कब धौं गयो संग हरिके वह कीधौं पंथ भुलान्यो ॥कीधौं श्याम हटकिहैराख्योकीधौंआपु रतान्यो। काहेते सुधि करी नमेरी मोपर कहा रिसान्यो ॥जबहीते हरि ह्यां ह्वै निकरे बैरतबहितेठान्यो। सूरश्याम संग चलन कह्यो मोहिं कह्यो नहीं तब मान्यो ॥७१॥राग गूजरी॥ श्याम करतहैमनकी चोरी। कैसे मिलत आनि पहिलेही कहि कहि बतियां भोरी ॥ लोकलाजकी कानि गमाई फिरत गुडीवश डोरी ।ऐसेढंगश्याम अब सीखे चोर भयो चितकोरी॥माखनकीचोरीसहिलीन्हो बात रही वह थोरी ।सूरश्याम भए निडर तबहिंते गोरस लेत अजोरी॥ ७२ ॥राग टोडी॥सुनहु सखी हरि करत न नीकी। आपस्वारथीहैं मन मोहन पीर नहीं औरनकी॥ ह्वैतो निठुरसदा मैंजानति बात कहत मनहीकी। कैसे उनहिं वहां करि पाऊं रिस मेटौं सब जीकी ॥ चितवत नहीं मोहिं सपनेहूं कोजानैउनहीकी।ऐसेमिले सूरकेप्रभुको मनहुँ मोललैबीकी॥७३॥राग आसावरी माई री कृष्ण नाम जबते श्रवण सुन्यो री तबते भूली री भवन बावरीसी भईरी। भरिभरि आवै नैन चित न रहत चैन बैननिहू सुध्यो भूली मनकी दशा सब औरे ह्वैगई री॥कोमाताकौनपिता कौन भैनी कौन भ्राता कौन प्राण कौन ज्ञान कौन ध्यान मदन हई री।सूर श्यामजबते परेरीमेरे दृष्टिवामकाम धाम निशियामलोकलाजकुलकानिनईरी ॥७४॥राग रामकली॥राधातैंहरिकेरँगराची। तोते चतुर और नहिं कोऊ बात कहों मैं सांची॥ तैं उनको मन नहीं चुरायो ऐसी है तू काची। हरितेरोमन अबहि चुरायो प्रथम तुहीहैनाची॥तुम अरुश्याम एकहौ दोऊ बाकीनाहींबाची ।सूर श्याम तेरे वश राधा कहति लीक मैं खांची ॥७५॥रागजयतश्री॥तू काहेकोकरति सयानी ।श्याम भए वश पहिले तेरे तब तू उनके हाथ बिकानी ॥ बाकी नहीं रही नेकहु अब मिली दूध ज्यों पानी।नँदनंदन गिरिधर बहुनायक तू तिनकी पटरानी ॥ तोसी कौन बडिभागिनि राधा यह नीके करि जानी ।सूर श्याम सँगहिलिमिलि खेलोअजहुँ रहति बौरानी ॥७६ ॥राग सोरठ ॥ मन हरि लीन्हों कुँवर कन्हाई । तबहीते मैं भई बौरानी कहा करों री माई॥ कुटिल अलक भीतर अरुझाने अब निरुवारि न जाई। नैन कटाक्ष चारु अवलोकनि मोतन गये बसाई॥ निलजभई कुलकानि गँवाई कहा ठगोरी लाई ।बारंबार कहति मैं तोको तेरे हिये न आई॥ अपनीसी बुधि मेरी जानति उतनी मैं कहांपाई। सूरश्याम ऐसी गति कीन्ही देह दशा बिसराई ॥ ७७ ॥राग रामकली॥ राधा हरि अनुराग भरी । गदगद मुख बाणी परकाशत देह दशा बिसरी॥कहति इहै मन हरि हरिलैगये एही परनिपरी । लोक सकुचशंका नहिं मानति श्यामहिरंग ढरी ॥ सखी सखीसों कहति बावरी येहि हमको निदरी।सूर श्याम सँगसदारहतिहै बूझेहून करी॥७८॥राग सूही बिलावल॥

तुम जानति राधाहै छोटी। चतुराई अँग अंग भरीहै पूरण ज्ञानन बुद्धिकी मोटी ॥ हमसों सदा दुरावति सोइहि बात कहै मुख चोटी पोटी। कबहुँ श्यामते नेक न बिछुरति किये रहति हमसों हठ ओटी॥नँदनंदनयाहीके वश हैं विवश देखि वेंदीछबि चोटी। सूरदास प्रभु वै अति खोटे यह उनहूते अतिही खोटी॥७९॥राग बिलावल॥सखीकहति तू बात गँवारी। याकी सरिकैसेकोउहै है जाकेवशहैं श्रीवनवारी॥व्रजभीतर इह रूप आगरी व्रतलीन्हों दृढगिरिवर धारी। प्रीति गुप्तहीकीहै नीकी यापर मैं रीझीहौं भारी॥सांची कहौं नेह ऐसोई पाछे मोको दीजो गारी॥सूरदास राधा जो खोटी तौ देखो यह कृष्ण पियारी॥ ८०॥ राग गूजरी॥ सुनहु सखी राधासरिको है। जे हरिहैं रतिपति मनमोहन याको मुख सो जोहै॥ जैसे श्याम नारि यह तैसी सुंदर जोरी सोहै। इह द्वादश वेऊ दशद्वैके व्रज-युवतिन मनमोहै। मैं इनको घटि बढि नहिं जानति भेद करै सो को है। सूर श्याम नागर इह नागरि एक प्राणतनुद्वैहै॥ ८१॥ राग गूजरी॥ सुनि सजनी ए ऐसे लागत। एक प्राण युग तन सुख कारण एको निमिष न त्यागत ॥ बिछुरत नहीं संगते दोऊ बैठे सोवत जागत। पूरवनेह आजु यह नाहीं मोसों सुनहु अनागत ॥ मेरी कही सांचि तुम जानो कीजे आगत स्वागत। सूर श्याम राधावर ऐसे प्रीतिहिते अनुरागत॥८२॥ राग जैतश्री ॥सखी सखीसों धन्य कहैं। इनको हम ऐसे नहिं जाने व्रजभीतर ए गुप्त रहैं॥धन्य धन्य तेरी मति साँची हम इनको कछु और कहैं। राधा कान्ह एकहैं दोऊ तो इतनो उपहास सहैं। वै दोऊ एक दूसरी तू है तोहूको सखि श्याम चहैं। सूर श्याम धनि अरु राधा धनि तुहूं धन्य हम वृथा बहैं॥८३॥राग धनाश्री॥ धन्य धन्य यह तेरी बानी। तैं नीके हरिको पहिचानें अब हम तुमको जानी ॥ राधा आधा देह श्यामकी तू उनकी बिचवानी। राधाहूते अधिक श्यामसों तेरी प्रीति पुरानी ॥ जो हरिकी संगिनि तू नाहीं आदि नेह क्यों मानी। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि यह रसकथा बखानी॥ ८४॥ रागपूर्वी ॥ हे माई राधा मोहन सहज सनेही। सहज रूप गुण सहजलाडिली एक प्राणद्वै देही॥ सहज माधुरी अंग अंगप्रति सहज सदा वन गेही। सूर श्याम श्यामा दोउ सहजहि सहज प्रीति करिलेही॥८५॥ रागआसावरी ॥राधा नंदनँदन अनुरागी।भव चिंता हिरदे नहिं एको श्याम रंग रस पागी॥ हरद चून रँग पय पानी ज्यों दुविधा दुहुँकीभागी।तनमन प्राण समर्पण कीन्हों अंगअंग रतिखागी॥ व्रजवनिता अवलोकन करिकरि प्रेम विवश तनत्यागी। सूरदास प्रभुसोंचितलाग्यो सोवततेमनु जागी॥ राग मारू॥गोपी श्यामरंग राची।देह गेह सुधि बिसारीबढीप्रीति सांची॥दुविधाउघरि भई गई मति वह काची। राधाते आपु विवश भई उघरि नाची ॥ हरितजिजो और भजे पुहुमि लीक खांची।मात पिता लोक भीत वाकी नहिं बाची॥ सकुच जबहिं आवे उर बारबार झांची। सूरश्याम पद पराग ताहीमें माची॥ ८६॥ राग मारू ॥ श्याम जल सुजल व्रजनारि खोरें। नदी माला जु जल तट भुजा अति सबल धार रोमावली यमुन भोरें॥ नयन ठहरात नहिं बहत अति तेजसी तहां गयो चित्त धीरज सँभारें। मन गयो तहीं आपुन रहीं निकट जल एक एक अंग छबि सुधि बिचारें। करति अस्नान सब प्रेम बुडकी देहि समुझि जिय होइ भाजि तीर आवें। सूर प्रभु श्याम जलराशि व्रजवासिनी करति अनुमान नहिं पार पावें॥ ८७॥ ॥ राग बिलावल ॥ श्यामरंग राची व्रजनारी। और रंग सब दीन्ही डारी॥ कुसुमरंग गुरुजन पितुमाता। हरितरंग भैनी अरु भ्राता॥ दिनाचारि में सब मिटि जैहैं। श्यामरंग अजरायल रैहैं॥उज्ज्वलरंग गोपिका नारी।श्यामरंग गिरिवरके धारी॥ श्यामहिंसंसबरंग बसेरो।

प्रगट बताइ देउ कहि झेरो ॥ अरुणश्वेत सित सुंदर तारे । पीतरंग पीतांबरधारे ॥ नानारंगश्याम गुणकारी । सूरश्याम रँग घोषकुमारी ॥ ८८ ॥ राग बिहागरो ॥ श्यामसलोनेरूपमें अरी मन अरयो। ऐसे ह्वै लटक्यो तहां ते फिरि नहिं मटक्यो बहुत जतन मैं करयो ॥ ज्यों ज्यों खैंचति त्यों त्यों मगनहोत ऐसी धरनि धरयो । मोसोंवैरकरतउनकीछां देख्योजाइ ढरयो॥ज्यों शिवछत दरशन रविपाये जेही गरनि गरयो। सूरदास प्रभुरूपथक्यो मन कुंजल पंक परयो॥८९॥ राग देवाष॥निशि दिना इनि नैननिको री नंदलालकीलागीरहैलालसाई । मुरलीरसतानभरीश्रवननरी जबतेरी परी कैसेहू टरति नहीं हृदयते बिहारी यदुराई ॥ कहाकहौं तोसोंयह सजनीमनमेरो लैगयो चोराई ॥ सूरश्यामको नाम धरौं पुनि धरयो न जाइ सुधि न रहै तनुमाई ॥९०॥ देख सखी मेरोमन न रहै श्यामबिना । अतिहि चतुर जान जाननि मनि वह छबिपर मैं भई लीना ॥ अपनी दशा कहौं मैं कासों बन बन डोलति रैनिदिना । मनतो चोरि लियो पहिलेहीझुरिझुरिह्वै रही छीना॥वै मोहन मनहरत सहजही हरिलै ताको करत हीना । सूरदास रसिक रसीले बहुनायकहैं नाउँजीना ॥ ॥९१॥राग सारंग॥नैननि नींदौ गईरी निशिदिन पल पल छतियां लाग्यौ रहै धरको। उत मोहन मुख मुरली सुनत सुध्यो नरही इत घेरा घरको ॥ ननदी तौन दिये बिनुगारी नैकहू रहतिसासु सपनेहूमें आनि गोउति काननिमें लए रहै मेरे पाइँनको खरको।निकसनहूं ना पाइये रीकासोंदुख कहिये देखहू न पाइयेरी सूरदास प्रभुके तन मेरेज्यो ऐसी भयो जैसो हाथ पाथरतरको॥९२॥ राग सुघराई॥मोहन मुरलीबजाइहौंरिझाई।तिनही मोहीरी हौंमोही रीसांझ समै देखेकन्हाई॥आनि निकसे मेरे आँगनह्वै तबते चितवत यह पीर भई री । काकी देह गेह सुधि काके हेहरि कैसे मैं ही री ॥ तेरे कहे कहतिहौं बानी मैं हरिहाथ बिकानी तबते यकटक जोइरही री । मिलत नहीं नहिं संगते त्यागत कहाकरौं बूझो तोहीरी ॥ सूर श्याम तबते नहिं आये मन जबते हरिलीन्हों वेतो एसेहैं द्रोही री॥राग अडानो॥९३॥व्रजकी खोरिठाढोसाँवरो ढोटौनातबहौं मोहीरीहौंमोहीरी। जबते मैं देखे श्यामसुंदर री चलि न सकत पगदइहै काम नृप द्रोही री ॥ कोलै आइ कोने चरन चलाइ कौने बहियां गही सोधों कोही री।सूरदास प्रभु देखे सुधि रही नहिं अति विदेहभईअबमैं बूझनि तोही री ॥ राग सुघराई॥आंखिन में बसे जियरे में बसे हियरे में बसत निशि दिन प्यारो । मनमें बसे तनमें बसे रसनामें बसे अंग अंग में बसत नंदवारो ॥ सुधिमें बसे बुधिहूमें बसे उरजनमें बसत पिय प्रेम दुलारो । सूर श्याम बनहू मैं बसत घरहूमें बसत संग ज्यों जलरंग न होत न्यारो॥९४॥ राग सोरठ ॥नँदनंदन बिन कल न परै।अति अनुराग भरी युवती सब जहांश्याम तहां चित्त ढरै ॥ भवन गई मन तहाँ न लागै गुरु गुरुजन अति त्रास करै । वे कछु कहैं करैं कछु औरै सासु ननँद तिनपर झहरै॥इहै तुमहि पितु मात सिखायो बोल करतिनहिं रिसन जरै। सूरदास प्रभुसे चित अरुझ्योयह समुझो जियज्ञानधरै॥९५॥राग जैतश्री॥ सासुननँद घरत्रासदेखावै। तुम कुलवधू लाज नहिं आवति बार बार यह कहि समुझावै ॥ कबही गई न्हान तुम यमुना यह कहिकहि रिस पावै। राधाको तुम संग करतिहौ व्रज उपहास उडावै॥वेहैं बडमहरकी बेटी तौ ऐसी कहवावै । सुनहु सूर यह उनही फावै ऐसी कहति डरावै ॥९६॥राग सारंग॥हम अहीर व्रजबासी लोग। ऐसे चलो हँसै नहिं कोऊ घरमें बैठि करो सुख भोग ॥ दही मही लवनी घृत बेंचोसबै करो अपने उतयोग। शिरपर कंस मधुपुरी बैठो छिनकहिमें करिडारो सोग॥फूंकि फूंकि धरणी पग धारो अब लागी तुमकरन अयोग । सुनहुसूर अबजानोगी तब जब देखै राधा संयोग ॥९७॥

राग धनाश्री॥तुम कुलवधू निलज जिनि ह्वैहौ। यह करनी उनहींको छाजै उनके संग न जैहौ ॥ राधा कान्ह कथा ब्रज घरघर ऐसे जनि कहवैहौ ॥ यह करनी उन नई चलाई तुम जनि हमहिं हँसैहौ। तुमहौ बडे महरकी बेटी कुल जिन नाम धरैहौ। सूरश्याम राधाकी महिमा इहै जानि सरमैहौ ॥९८॥राग गाडौ॥यह सुनिकै हँसि मौन रही री। ब्रज उपहास कान्हराधाको यह महिमा जानी उनही री ॥ जैसी बुद्धि हृदय है इनके तैसीयै मुख बात कही री। रविके तेज उलूक न जानै तरनि सदापूरन नभही री॥ विषकोकीट विषहि रुचि मानै जानै कहा सुधारसही री। सूरदासतिलतेलसुवादीस्वादकहा जानैघृतही री॥९९॥राग सोरठ॥अहिरजातिगोधनकोमानैं।नँदनंदन सुरनरमुनि वंदन तिनकी महिमा क्यों ये जानैं॥धनि राधा उपहास धन्य यह सदा श्यामहीके गुणगानैं। परमपुनीत हृदय अतिनिर्मल बारबार बाजही बखानैं॥ श्यामकामकी पूरनहारी ताको कुलटीकरिपहिचानैं।सूरदासऐसेलोगनकोनाउँनलीजैहोत बिहानैं॥१५००॥राग बिहागरो॥बिधिना संगति मोहिं यह दीनी। इनको नाम प्रात नहिं लीजै कहा निठुरई कीनी॥ मनमोहन गोहन बिन अबलौं मानो बिते युगचारि।विमुखनमेंते कबधौं छूटौं कब मिलिहौं बनवारि॥ एकएकदिन विहात कैसेहूं अब तौ रह्यो न जाइ। सूर श्यामदरशन बिन पाये बारबार अकुलाइ॥ १ ॥ विमुखजननिको संग न कीजै। इनके विमुख बचन सुनि श्रवननि दिनदिन देही छीजै ॥ मोको नेक नहीं ये भावत परवशको कहा कीजै।धिग जीवन ऐसो बहुदिनको श्यामभजन पल जीजै॥ धिग ये घर धिग ये गुरुजनको इनमें नहीं बसीजै। सूरदासप्रभुअंतर्यामी इहै जानिमन लीजै ॥२॥राग नट॥ राधा श्यामरंग रँगी। रोमरोमनि भिदिगयो सब अंगअंग पगी॥ प्रीति दै मन लैगए हरि नंदनंदन आप। श्यामरस उनमत्त नागरि दुरत नहिं परताप॥ चली यमुना जाति मारग हृदय इहै बिचार। सूर प्रभुको दरश पावैं निगम अगम अपार॥३॥राग धनाश्री॥ चितको चोर अबहिं जो पाऊं। हृदय कपाट लगाइ जतनकरि अपने मनहिं मनाऊं॥ जबहिं निशंकहोति गुरुजनतें तेहि औसर जो आवै। भुजनि धरौं भरि सुदृढ मनोहर बहु दिनको फलपावै॥ लै राखौं कुचबीच चापिकरि प्रतिदिनको तनुताप विसारौं। सूरदास नँदनंदको गृहगृह डोलनिको श्रम टारौं ॥ ४ ॥ रागबिलावल॥ इतते राधा जाति यमुनतट उतते हरि आवत घरको। कछिकाछिनी भेष नटवरको बीच मिली मुरलीधरको ॥ चितैरही मुखइंदु मनोहर वा छबिपर वारति तनको। दूरिहुतें देखतही जाने प्राणनाथ सुंदर घनको॥ रोम पुलकि गदगद बाणी कहि कहाँजात चोरे मनको। सूरदास प्रभु चोरी सीखे माखनते चितवित धनको ॥ ५ ॥ इह न होइ जैसे माखन चोरी। तबवह मुख पहिचानि मानि सुख देती जान हानि हुती थोरी॥उनहि दिननि सुकुँवार हते हरिहौं जानत अपनो मन भोरी। ब्रजबसि बास बडेके ढोटा गोरसकारण कानि न तोरी॥अबभए कुशल किशोर नंदसुत हौं भई सजग समान किशोरी। जात कहाँ बलि बाँह छडाए मूसेमन संपति सब मोरी॥ नखशिखलौं चित चोर सकल अँग चीन्हेपर कत करत मरोरी। एक सुनि सूर हर्‍यो मेरो सर्वस अरु उलटीडोलौं सँगडोरी ॥ ६ ॥ राग गौरी॥ भुजा पकरिठाढे हरि कीन्हें। बाँह मरोरी जाहुगेकैसे मैंतुमको नीके करि चीन्हें ॥ माखनचोरी करत रहे तुम अब तौ भए मनचोर। सुनत रही मन चोरतहैं हरि प्रगट लियो मन मोर॥ऐसे ढीठ भएतुम डोलत निदरे ब्रजकी नारि। सूरश्याम मोहू निदरौगेदेत प्रेमकीगारि ॥७॥ राग सारंग॥ बहु बलु किनकु जानौयदुराइ। तुम जोतरकिमोहि अबलापै तौ चलिहौ भुजा छडाइ ॥ कहिअत,हो अति चतुर सकल अँग आवत बहुत

उपाइ। तौ जानौं जो अबके ए ढँग को सकै देते जाइ ॥ सूरदास स्वामी श्रीपतिको भावत अंतर भाइ।सहि न सके रतिवचन उलटि हँसि लीनी कंठ लगाइ॥ ८ ॥राग ईमन॥मैं तुमरे गुण जाने श्याम। औरनको मन चोरिरहेहो मेरो मन चोरे किहि काम ॥ वै डरपति तुमको धौं काहे मोको जानत वैसी वाम।मैं तुमको अबहीं बांधौंगी मोहिं बूझि जैहो तब धाम॥ मन लैहो पहुनाई करिहौं राखौं अटकि द्योस अरु याम। सूरश्यामयह कौनभलाई चोररह्यो तहांतुम्हरोनाम ॥९॥ राग कल्याण॥ब्रजमें ढीठभए तुम डोलत। अब तो श्याम परे फँग मेरे सूधे काहे न बोलत॥ मन दीजै मर्यादा जैहै रहत चतुरई कीन्हें।दुखकरि देहु कि सुखकरि दीजै अबतौ बनिहै दीन्हें॥ ऐसे ढँग तुम करत कन्हाई जीतिरहे ब्रजगाउँ। सूर आजु बहुतै दुख पाये मन कारण पछिताउँ ॥१०॥राग शुद्धमलार॥सुन री कुलकीकानि ललनसोंमैं झगरो मांडौंगी।मेरेइनके कोउ बीचपरो जिनि अधर दशन खांडौंगी ॥ चतुर नाइकसों काम परचोहै कैसे ह्वै छांडौंगी।सूरदासप्रभु नंदनँदनको रसलै डांडौंगी॥११॥रागकान्हरो॥चोरीके फल तुमहिं दिखाऊं।कंचनखंभडोरकंचनकी देखो तुमहिं बँधाऊं ॥ खंडों एक अंग कछु तुमरो चोरी नाउँ मिटाऊं। जो चाहौं सोई सब लैहौं यह कहि डांड मँगाऊं॥ बीच करन जो आवै कोऊ ताको सौंह दिवाऊं। सूरश्याम चोरनके राजा बहुरि कहां मैं पाऊं॥१२॥राग गंधारी॥रहि री लाज नहिं काज आज हरि पाये पकरन चोरी। मूसि मूसि लैगए मन माखन जो मेरे धन हो री ॥ बांधौंकंचनखंभ कलेवर उभै भुजा दृढ डोरी।चांपों कठिन कुलिश कुच अंतर सकै कौन धौं छोरी॥ खंडौं अधर भूलि रस गोरस हरे न काहूको री। दंडौं कामडंड परघरको नाउँ न लेइ बहोरी॥ तब कुलकानि आनि भई तिरछी क्षमि अपराध किशोरी। शिर परपानि धराइसूरडरसकुचि मोचि शिरडोरी॥१३॥ राग बिहागरो ॥बीचकियोकुल लज्जा आई। सुनि नागरि बकसी यह मोको सन्मुख आए धाई ॥ चूकपरी हरिते मैं जानी मनलै गए चुराई। ठाढे रहे सकुचि तो आगे राख्यो वदन दुराई॥तुम हौ बडे महरकी बेटी काहे गई भुलाई। सूरश्यामहैं चोर तुम्हारे छाँडि देहु डरपाई॥१४॥राग गौरी॥कुलकी लाज अकाज कियो। तुम बिन श्याम सोहात नहीं कछु कहा करौं अति जरत हियो ॥ आपु गुप्त करिराखी मोको मैं आयसु शिर मानिलियो। देह गेह सुधि रहत बिसारे तुमते हितु नहिं और बियो ॥ अब मोको चरणनि तर राखो हँसि नँदनंदन अंग छियो। सूर श्याम श्रीमुखकी बाणी तुमपै प्यारी बसत जियो ॥ १५ ॥राग जैतश्री॥ मात पिता अति त्रास दिखावत। भ्राता मारन मोहिं धिरावै देखे मोहिं न भावत ॥ जननी कहति बडेकी बेटी तोकों लाज न आवत। पिता कहै कैसी कुल उपजी मनहीमन रिस पावत ॥ भैनी देखि देति मोहिं गारी काहे कुलहि लजावति। सूरदास प्रभुसों यह कहिकहि अपनी विपतिजनावति॥ १६ ॥ राग बिहागरो॥सुंदर श्यामकमलदल लोचन। विमुख जननकी संगतिको दुख कबधौं करिहौ मोचन ॥भवन मोहिं भाठीसो लागत मरति सोचही सोचन। ऐसी गति मेरी तुम आगे करतकहा जिय दोचन॥ धिग वै मातपिता धिग भ्राता देतरहत मोहिं खोचन। सूर श्याम मन तुमहिं लुभानो हरदि चूनरँग रोचन॥१७॥ राग रामकली॥कुलकी कानि कहांलौं करिहौं। तुम आगे मैंकहौं न साँचीअबकाहू नहिं डरिहौं॥लोग कुटुँब जगके ज कहियत पेला सबहि निदरिहौं। अब यह दुख सहि जात न मोपै बिमुख वचन सुनि मरिहौं ॥आपु सुखी तो सब नीके हैं उनके सुख कहा सरिहौं। सूरदास प्रभु चतुरशिरोमणि अबकें हौं कछु लरिहौं ॥ १८॥ राग कान्हरो॥ प्राणनाथहोमेरी सुरतिक्यों न करो। मैंजोदुख

पावतिहौं अपने तन मन मेरी सुरति करौ। दीनदयालु कृपा करो मोको काम द्वंद्व दुख और विरह हरौ॥तुम बहुवरनि रवन मैं जानति याहीके धोखे मोसों काहेको लरौ। सूरदास स्वामी तुमहो अंतर्यामी मनसा वाचा ध्यान तुमसों धरौं॥ १९ ॥राग कान्हरो॥हौं या मायाही लागी तुम कततोरत। मेरो ज्यो तिहारे चरननिही लाग्यो धीरज क्यों रहै रावरे मुख मोरत। को लै बनाइ बातैं मिलवति तुम आगे सो किन आइ मोसों अब जोरत। सूर श्याम पिय मेरे तौ तुमहि जिय तुम बिनु देखे मेरो हियो कोरत॥२०॥रागबिलावल॥सुनहु श्याम मेरी एक बात। हरिप्यारीके मुखतन चितवत मनही मनहु सिहात॥ कहा कहति वृषभानुनंदिनी बूझतहैं मुसुकात। कनकबरन सुंदरी राधिका कटि कृश कोमल गात॥ तुमही मेरे प्राण जिवन धन अहो चंद्र तुअ भ्रात। सुनहु सूर जो कहति रही तुम कहौ न कहा लजात॥ २१ ॥राग गुंड॥ नागरी श्यामसों कहत बानी। सुनहु गिरिधर नवल शीशश्रीखंडधर जयति सुर नागरस सहस बानी॥ रुद्रपति छुद्रपति लोकपति वोकपति धरनिपति गगनपति अगम बानी। अखिल ब्रह्मांडपति तिहूँभुवनअधिपति नीरपति पवनपति अगम बानी॥ सिंहके शरन जंबुक त्रास करै अब कृष्ण राधा एक जग बतानी॥सूरप्रभु श्याम तुवनामकरुणाधामकरौमनकाम सुनिदीनबानी॥२२॥राग गुंडमलार॥बिहँसिराधाकृष्णअंक लीनी।अधरसों अधरजुरि नैनसोंनैन मिलि हृदैसों हृदय लगि हरष कीन्ही॥कंठ भुजजोरि नारि उछंगलीन्हीं भवन दुखटारि सुख दियो भारी।हरषि बोले श्यामकुंजबन घन धाम तहां हमतुम संग मिलैंप्यारी॥ जाहु गृह परमधन हमहु जैहैं सदन आइ कहुँपास मोहि सैन दैहौ।सूर यहभाव दे तुरतही गमन करि कुंजगृह सदनतुम जाइ रैहौ॥२३॥राग गुंडमलार॥यह सुनत नागरीमाथनायो। श्याम रसवश भरे मदनजियमें डरे सुंदरीबातको भेद पायो।खरे ब्रजयमुनबिच दुहुँनि मन अति सकुच और कछु बनै नहिंबुद्धिठानी। तबहि ब्रजनारिआवतदेखियमुनाते एकब्रजहिते जु राधा लजानी॥ श्याम हँसिकै चले तुरत ग्वालनि मिले कहां सब रहे कहि हांक दीन्हीं। भाव यह करि गए सूरप्रभु गुन नए नागरी रसिकजियजानिलीन्हों॥२४॥ राग टोडी ॥ राधा हरिकेभावहि जान्यो। इहै बात कैहौं इन आगे मनही मन अनुमान्यो॥ उन देखी राधा मग ठाढी श्याम पठाए टारि। बूझतही कछु बुद्धि रचैगी बडी चतुर यह नारि॥ इत वृषभानुसुता मन सोचति मोहि देखि हरिसंग। सूर अबहिं बातनि करि धरिहैं जानति इनके रंग २५॥ राग गुंडमलार ॥ चतुर वर नागरी बुद्धि ठानी। अबहिं मोहिं बूझिहैं इनहि कैहौं कहा श्याम सँग आइ मोहिं प्रगटजानी॥ भावकरि गए हरि ग्वाल बूझत रहे जानि जियलई अति चतुर रासी। यह रचौं बुद्धि एक कहा ए कहैं मोहिं मेरेमन सबै घोषवासी॥उतहुँकीइतहुँकी सबै जुरिएकठी कहति राधाकहां जाति है री।सूरप्रभु-को अबहिं देखे हम तेरे ढिग कहां गए तिनहिंपछितातिहैरी॥२६॥ राग गूजरी ॥कान्हकहाबूझत हैं तुमको। ह्यांहीते लखि लीन्ही तबहीं कहा दुरावति हमको॥मन लैगए चुराइ तुम्हारो सो अपनो तुम पायो। अपनो काज सारि तुम लीन्हों हम देखतहि पठायो॥ सदा चतुराई फबती नाहीं अतिही निझरि रहीहौ। सूर श्यामधौं कहां रहतहैं यह कहिकहियुतहीहौ ॥ २७॥ राग अलहिया ॥ कहति रही तब राधिकाजब हरिसंग पेखो। बेसरि लीज्यो छीनिकै मुख तन कहा देखो॥ देहो बेसरि की नहीं की लेहिं छडाइ। चतुराई प्रगटी अबै ऐसीहौ माइ॥ बार बार नागरि हँसे तरुनी बेहानी। ऐसेहि बेसरि लेहुगी सब भई अयानी॥ हम मूरख तुम चतुरहौ कछु लाजनआवै। सूर श्याम सँग नहां रही अब कहा दुरावै॥ २८॥ राग सोरठ॥ इहै कहन मोको तुम आई। इतते पै

उतते तुम सब मिलि काहे ऐसी धाई ॥ बेसरि एक लेहुगी को को पीतांबर न देखावहु।बेसरि अरु पीतांबर लै तब घर घर जाइ सुनावहु ॥ तारी एक बजत की दोऊ इतनोइ ज्ञान बिचारो । सुनहु सूर ए बेसरि लैहैं जानो ज्ञान तुम्हारो ॥२९॥रागजयतश्री॥सुनि राधा तोसों हम हारी। तेरे चरित नहीं कोइ जानैं वशकीन्हों गिरिधारी॥अबहीं कान्ह टारिकरि पठए धनि तेरी महतारी । अंग अंग रचि कपट चतुरई बिधिना आपु सँवारी॥अबहीं प्रगट दुहुँनि हम देख्यो जानतिदैमोगारी। सूर श्यामके यह बुधि नाहीं जितनीहै तो धारी॥३०॥रागकन्हरा॥श्याम भले अरु तुमहुँ भली हौ। बेसरि छीनतिहौ बेकाजहिं जाहु नघरहि चली हो ॥ कैसे दौरिपरी मेरेपर मानहुँ संग मिली हो। और भई सब बनकी बेली आपुन कमल कली हो ॥ तब कहती गहि बाँह दुहुँनकी जो तुम चतुर अली हो।सूरदास राधा गुणआगरि नागरि नारिछलीहो॥३१॥अलहिया राग विलावल॥अब हमसों सांचीकहो वृषभानुदुलारी।कछु तो तोसों कहतहैं ठाढे गिरिधारी॥हाहाहमसों सोइ कहोदैहौ जिनि गारी। हमको देखतही गए उत ग्वाल हँकारी॥ भेदकरै जो लाडिली तोहि सौंह हमारी। तूठाढी काहे रही मग मेरी प्यारी॥सहज होइ तू कहिअबै उरतेरिस टारी।सूर श्यामकी भावतीकहै कहाँ कहा री ॥ ३२॥रागगूजरी ॥मैं यमुना तन जात सही री।ब्रजते आवत देखि सखिनको इन कारण ह्यां परखि रही री॥उतते आइगए हरितिरछे मैं तुमहीतन चितै रहीरी। बूझनलगे कान्ह ग्वालनको तुमतो देखे उनहि नहीं री॥कछु उनसों बोली नहिं सन्मुख नाहि तहां कछु बैन कहीरी।सूर श्याम गए ग्वालनि टेरत ना जानौं तुम कहागही री॥३३॥रागटोडी॥तुम मेरी बेसरिकोधाई।सकुचि गई सुनिसुनि यह बानीतरुनिन राधा भले लजाई॥यह तौ बात लगति कछुसाँची हगपर न्याइ रिसाई । टेरत कान्ह गए ग्वालनको श्रवन परी ध्वनि आई॥बेसरि नाउं लेत सरमानी तब राधा झहरानी।सूरदास ब्रजनारि मनहि मन यह गुनिगुनि पछितानी॥३४॥ राग गूजरी॥राधा तू अतिहीहै भोरी । झूठेहि लोग उठावत घर घर हम जान्यो अति तोरी॥कंठ लगाइ लई रिस छांडौचूक परी हम बोरी । तुम निर्मल गंगाजलहूते दुरत नहीं वह चोरी ॥ घर जैहौ की यमुना जैहौ हम आवैं सँगगोरी।सूरदासप्रभुप्यारीभुरी राधाचतुर दिननकी थोरी॥ ३५॥रागआसावरी॥ अहो सखी तुम ऐसी हौ । अबलौं तुम कुलटी करि जानति मोको रीसब तैसीहो॥ अपने मनजैसीतैसेइ सब मोहु जनावत तैसी हो । जोरीभलीबनैगीहरिसोंछांहनिहारो कैसी हो॥अबलागीमोकोदुलरावन प्रेमकरतिटरिबैसीहो।सुनहु सूर तुमरेछिनछिन मति बडीप्रेमकी गैसी हो॥३६॥॥ राग टोडी॥हँसति नारि सब घरहि चली ।हम जानीराधाहैखोटीहमखोटी राधिका भली ॥ इतते युवति जाति यमुना जे तिनको मगमें परखिरही। श्याम कहूँते आइ कढे ह्यां चले गए उत हेरतही ॥ इतनीतबहि नहीं यह जानी झूँठेहीसबआनिगही।सूरश्यामअपनेरँगआयेहमवाको नहिं भली कही३७॥रागबिलावल राधा श्याम सनेहिनी हरि राधा नेही । राधा हरिके तन बसे हरि राधा देही॥ राधा हरिके नैनमें हरि राधा नैननि । कुंजभवन रति युद्धके जोरति बल मैननि ॥ और न काहूको रुचै घरघर गए दोऊ । मात पिता सतिभाइसों यह जानै न कोऊ।कैसेहु करि करि दिन गयो निशि कटत न क्योंहू । दोउ [illegible] विरह मगन भए निशि भई अगोंहू ॥ विरह सरोवर बूडई अंधकार सिवार । सुधि अवलंबन टकही कहूँ वार न पार ॥ तमचुर टेरि पुकारई बूडे जिनि कोई॥ सूर प्रात नवका मिल्यो आनन्द मन [illegible]॥३८॥राग धनाश्री॥मन मृग बेध्यो मोहन नैनबानसों।गूढ भावकीसैन अ[illegible] तकि नाक्यो भ्रुकुटी कमानसों ॥ प्रथम नादबल घेरि निकट लै मुरली सप्तकसुर बंधान-

सों।पाछे बंक चितै मधुरै हँसि घात किये उलटे सुठानसों॥सूर सुमार बिथा या तनुकी घटतनहीं औषधी आन सोंहै।हैसुख तबहीं उरअंतर आलिंगन गिरिधर सुजानसों॥३९॥राग बिलावल ॥ कान्ह उठे अति प्रातही तलबेली लागी । प्रिया प्रेमके रस भरे रति अंतर खागी॥श्याम उठत अवलोकिकै जननी तब जागी । सुन्दर वदन विलोकिकै अंग अंग अनुरागी ॥ माता पूँछति सुअनको बलि गई मेरे बारे । कहा आजु अचरज कियो तुम उठे सवारे ॥ झारी जल दँतवन दियो छबि परत न वारयो । उत्तम जललै प्रेमसों सुत वदन पखारयो॥करी मुखारी अतुरई नागरि रसछाके । सूर श्याम ऐसी दशा त्रिभुवन वश जाके॥४०॥राग बिलावल॥उत वृषभानुसुता उठी वह भाव विचारै । रैनि बिहानी कठिनसों मन्मथ बल भारै ॥ग्रीव मुतसरी तोरिकै अचगरसों बांध्यो। इहै बहानो करिलियो हरि मन अनुराध्यो॥ जननी उठी अकुलाइके क्यों राधा जागी। कहां चली उठि भोरही सोवै न सभागी ॥ अब जननी सोऊं नहीं रवि किरनि प्रकाशी।तूहु उठेकाहे नहीं जागे व्रजवासी ॥ आपु उठी आँगन गई फिरि घरही आई। कबधौं मिलिहैं श्यामको पल रह्यो न जाई ॥ फिरि फिरि अजिरहि भवनही तलबेली लागी॥सूर श्यामके रसभरी राधा अनुरागी ॥ ॥४१॥ राग गुंडमलार ॥ सुतासों कहति वृषभानु घरनी । कहा तू राधिका भोरते फिरति है तेरी गति मोपै नहिं जाति बरनी॥तोरि मोतिसरी तब गुप्त करि धरयो कहुँ एहि मिसि सकुचि रही मुख न बोलै। मनहु खंजन चपल चन्द फंदा परयो उडत नहिं बनत इत उतहि डोलै ॥ कहा तेरी प्रकृति परी धौं लाडिली अबहिते कहां तू जाहिगी री । सूर कहे जननि बोले नहीं आज तू परुसि धरिहौं खाइगी री ॥४२॥राग नट॥जननी पुनि पुनि ग्रीव निहारै । देखों नहीं मुतसरी माला सो जिनि कतहूं डारै॥ बोलै नहीं बात यह सुनि रही मनलागी मुसकान। अबही मोको खीझि पठैहै बनिहै काको जान ॥भली बुद्धि मेरे चित आई कृष्णप्रीति है साँची । सूरदास राधिका नागरी नागरके रँगराँची ॥ ४३ ॥राग सोरठ॥ जननी अतिहि भई रिसहाई। बार बार कहै कुँवरि राधिका मोतिसरी कहां गमाई ॥ बूझेते तोहि ज्वाब न आवै कहा रही अरगाई।चौसर हार अमोल गरेको देहु न मेरी माई॥ कालिहिते रीतो गर तेरो डारि कहूँ तू आई। सुनहु सूर माता रिस देखतराधा हँसति डेराई ॥ ४४॥ राग बिलावल॥सुन रीमैयाकालही मोतिसरीगँवाई। सखिन मिले यमुना गई धौं उनहि चुराई ॥ कीधौं जलहीमें गईयह सुधिनहिं मेरे। तबते मैं पछितातिहौं कहति न डर तेरे ॥ पलकनहीं निशि कहूँ लगी मोहिशपथ रीतेरी। येहि डरते मैं आजुही अति उठी सबेरी॥ महरि सुनत चकृत भई मुख ज्वाब न आवे । सूर राधिका गुनभरी कोउ पार न पावै॥४५॥राग गुंडमलार॥क्रोध करि सुतासों कहति माता । तोहिं बरजत मैं री अचगरी रिसपरी गर्व गंजन नामहै विधाता॥ तेरोदोष नहीं भ्रमती तू जहीं तहीं नदी डोंगर बन बन पात पाता । मातपिता लोककी कानि मानै नहीं निलजभई रहनिनहींलाज गाता ॥ भली नहिंउन करी शीशतोको धरी जगतमें सुता,तू महरताता।बात सुनिहैश्रवण भई बिनही भवन सूर डारैमारि आजु भ्राता॥४६॥राग धनाश्री॥जाहु तहीं मोतिसरी गमाई।तबहींतो घर पैठन पैहो अब ऐसे ढँग आई॥जो बरजों आपुन सोई करै देखो री गुन माई। एकएक नग सतसत दामनिके लाख टका दै ल्याई ॥ जाके हाथ परयो सो दैहै घर बैठे निधि पाई ।सूरसुनत री कुँवरि राधिका तोको नहीं भलाई॥ ४७ ॥राग टोडी॥भरि भरि नैन लेतिहै माता । मुखते कछु आवै नहिं बाता ॥ रीतो ग्रीव निहारत जबही । हियो उमँगिआवतहै तबही ॥ मोतिसरीते

मुख परम विराजै। मानों शशि पारसबिच भ्राजै॥ मोतिसरी माला कहां गँवाई। जीव विना करिहै वह भाई॥जाधौं देखि कहूंधो पावै। सूर जोरिकर विधिहि मनावै॥४८॥रागगुंडमलार॥कहा वह मोतिसरी जो गँवाई री। बाबासों और लेहौं मँगाई री॥वै कहा करैंगी सैंति राखेरी॥तादिना तूहीधौं कितिक भाषै री॥ नैन भरिलेति कह और नाहीं री। छोर मोतिसरीको मोहिं रिसाही री॥संदूकन भरिधरे ते न खोलै री॥कहा मोसों खीझरबोलै री॥सुता वृषभानुकी हरदमनहीरी। सूर प्रभु सैन दै बोले वनही री॥४९॥रागगौरी॥सुनि राधा अब तोहि न पत्यैहौं। और हार चौकी हमेल अब तेरे कंठ न नैहौं॥लाख टकाकी हानि करी तैं सो अब तोसों लैहौं।हार विना ल्याये लरिहौं री घर नहिं पैठन दैहौं॥ जब देखौं ग्रीवहै मोतिसरी तबहीं तो सचुपैहौं। नातर सूर जनमभरि तेरो नाउँ नहीं मुख लैहौं॥ ५० ॥ राग कल्याण॥ सुनि री राधा अतिलडबौरी यमुन गई जब संग कोन हीं। बूझति नहीं जाइ अपनिनको न्हातरही जब जोन जोन हीं॥ काको नाउँ धरौं तो आगे ललिता चंद्रावली नहीं नहीं। बहुत रहीं सँग सखी सहेली कहौं कहा मैं सैन सैनहीं॥ देखौंजाइ यमुनतटहीमें जहां धरिकै मैं न्हात रही ही। सूरजाइ बूझौं धौंवाको ब्रजयुवती एक देखिरही ही॥५१॥राग कल्याण॥जैहै कहां मोतिसरी मेरी।अब सुधि भई लई वाहीने हँसत चली वृषभानुकिशोरी॥ अबही मैं लीन्हे आवतिहौं मेरे संग आवै जिनिकोरी। देखोधौं कह करिहौं वाको बडे लोग सीखतहैं चोरी॥ मोको आजु अबेर लागिहै ढूँढूंगी ब्रज घर घर खोरी। सूर चली निधरकहै सबसों चतुर राधिका बातन भोरी ॥ ५२ ॥ नंदसुअन बारबार रवनीपथ जोहै री।लोचन हरि करि चकोर राधामुख चंद ओर देखत नहिं तिमिर भार मनही मन मोहै री॥ नैना दोउ भृंगरूप वदन कमल शरदरूप तरनिको प्रकाश मिलन बिनाचपल डोलै री। लोचन मृग सुभग जोर राग रूप भए भौंर भौंह धनुष शर कटाक्ष सुरति व्याध तोलै री॥ कीधौं एक वच्छ चारु प्यारी मुखरूप सार श्याम देखि रीझि मन इहै सांच मानी। सूरश्याम सुखदधाम राधाहेज:हिनामआतुर पियजानिगवनप्यारीअतुरानी॥५३॥राग देवगंधार॥श्यामअतिराधाविरहभरे। कबहुँ सदन कबहुं आँगनही कबहुँ पौरि खरे॥जननी आतुर करतिर सोई देखि देखिहरि जात। कहा अबेर करति तू अब री भूख लगी अतिमात॥ मैं बलिजाउँ श्यामघन सुंदर अब बैठो तुम आई। सूर सखा सँग सबै बोलावहु हलधर नहीं बताई॥५४॥राग बिलावल ॥ महरि कह्यो नँदलाडिल सँग सखा बोलावहु। करैं कलेऊ आइकैहलधरहुबोलावहु॥ हलधर लयोबोलाइकै मोहन करि आदर। दाऊजी चलिजेंइये यह कहि मनसादर॥कान्ह जाइतुम जेवहू मोको रुचिनाहीं। सखा संग हरिलैगएबैठ एकठाहीं॥ पटरस व्यंजन को गनै बहुभांति रसोई। सरस कनिक बेसन मिलै रुचि रोटी पोई॥ प्रेमसहित परुसन लगी हलधरकी माता।ग्वाल सखा सब जोरिकै बैठे नँदताता॥ सखासबै जेंवन लगे हरि आयसु दीन्हों। सूरदासप्रभु आपुहूकरजोरहि लीन्हों॥५५॥राग आसावरी॥नंदमहर घरके पिछवारे राधा आइ बतानीहो। मनौ आँबदल मोरदेखिकै कुहकि कोकिला बानीहो॥ झूठहिनामलेत ललिताको काहे जाहु परानीहो। वृंदावन मग जाति अकेली शिरलिये दही मथानीहो॥ मैं बैठी परखति ह्यां रैहों श्याम तबहितेजानीहो।कोककला गुणआगरिनागरिमूरचतुरई ठानीहो॥५६॥राग रामकली॥श्यामसखाजेंवतहीछाँडे। करकोकोरडारि पनवारे नागर आपु चले अति चाँडे ॥ चकृतभई देखत जननीदोउ चकृतभए सबग्वाल। अति आतुर तुम चले कहांहो हमहि कहो गोपाल॥ अबही एक सखा यह कहि गयो गाइ रही

बन ब्याइ। सुनहु सूर मैं जेंवन बैठो वह सुधि गई भुलाइ॥५७॥रागललित॥धौरी मेरी गाइ बियानी। सखन कह्यो तुम जेंवहु बैठे श्याम चतुरई ठानी॥गाइ नहीं ह्वां बछरा नाहीं वहँहेराधारानी।सखा हँसत मनही मन कहि कहि ऐसे गुणनि निधानी॥जननी भेद नहीं कछुजानै बारबार अकुलानी। सूर श्याम भूखो उठि धायो मेरे न गाइ बियानी ॥५८॥रागकल्याण॥ सैनदै नारिगईबनधामको। तबहिं करकौर दियो डारिनहिं रहिसकै ग्वाल जेंवत तजे मोहि गई श्यामको ॥ चछे अकुलाइ बनधाइ ब्यानी गाय देखिहों जाइमनहरष कीन्हों। प्रिया निरखति पंथ मिलैं कबहरिकंतगयेयहि अंतर हँसि अंक लीन्हों॥अतिहि सुखपाइ अतुराइ मिलेधाइ दोउ मनो अति रंक नव निधिपाई सूर प्रभुकी प्रिया राधिका अति नवल नवल नंदलालके मनहि भाई ॥ ५९ ॥रागधनाश्री ॥ पिछवारे ह्वै बोलि सुनायो। कमलनयन हरि करत कलेऊ करनाहिन आतन लायो ॥ गाइ एक बन ब्याइ रहीहै येहि मिस आतुर उठिधायो। बेनु न कियो लकुट नहिं लीन्हों हरबराइ कोउ सखन बोलायो ॥ चौंकि परे चकृत ह्वै जित कित सत्य आहिकी सपन भयो ज्ञायो। फूले फिरत शंकना मानत मानहु सुधा किरनि छबि छायो ॥ मिलि बैठे संकेत लतातर कियो सबै जितनो मनभायो। सूरदास सुंदरी सयानी उलटि अंक गिरिधर पर नायो॥६०॥राग देवगंधार॥दोऊ राजत रति रणधीर। महासुभट प्रगटे भूतल वृषभानु सुता बलबीर ॥ भौंहैं धनुष चढाइ परस्पर सजे कवच तनुचीर। गुण संधान निमेष घटत नहिं छुटे कटाक्षनितीर ॥ नखनेजा आकृत उरलागे नेक न मानत पीर। मुरली धरनि डारि आयुधलै गहे सुभुज भटभीर॥ प्रेम समुद्र छांडि मर्यादा उमँगि मिले तजि तीर। करत विहार दुहूँ दिशते मानो सींचत सुधा शरीर ॥ अति बल जोबन धाइ रुचिर रचि वदन मिली श्रमनीर। सूरदास स्वामी अरु प्यारी विहरत कुंज कुटीर ॥६१॥ राग कान्हरो॥नवल निकुंज नवलनवला मिलि नवलनिकेतनि रुचिर बनाये। बिलसतविपिनविलास विविधवर वारिजबदन बिकच सचुपाये। लागत चंद्रमयूष सुतौ तनु लताभवन रंध्रनि मग आये॥ मनहुँ मदनवल्लीपर हिमकर सींचत सुधाधार सत नाये ॥ सुनि सुनि सूचति श्रवन सुंदरी मौन किये मोदति मनलाये। सूरसखीराधा माधौ मिलि क्रीडतहैं रतिपतिहि लजाये॥६२॥राग कल्याण ॥ हरषि पिय प्रेम तिय अंक लीन्हीं। पिये विनवसनकरि उलटिधरिभुजनभरि सुरति रति पूर प्रति निबलकीन्हीं॥आपने कर नखनिअलक कुरवारही कबहुँ बाँधिअतिहि लगतलोभा।कबहुँमुख मोरि चुंबन देत हरष ह्वै अधर भरि दशन वह उनहि शोभा॥ बहुरि उपज्यो काम राधिकापति श्याम मगन रस ताम नहिं तनु सँभारैं। सूर प्रभु नवलनवला नवलकुंजगृह अन्त नहिं लहत दोउ रति विहारैं ॥६३॥राग नट॥नागर श्याम नागरी नारि।सुरतिगतिरणजीत दोऊ अंगमन्मथधारि॥श्याम तनु घन नील मानो तडित तन सुकुमारि। मनो मर्कत कनक संयुत खच्यो काम सँवारि ॥ कोकगुन करि कुशल श्यामा उत कुशलनन्दलाल। सूर श्यामअनंगनायक विवशकीन्होंबाल ॥ ॥६४॥राग मलार॥ उल्हरि आयो शीतल बूँद पवन पुरवाई। बाढे द्रुम सघन बन दोउहो चहूँ ओर घटा छाई॥अनमने भए कन्हाई भीजत देखि राधिका माधव कारी कामरि ओढाई॥अति दरेरकी झरेर टपकत सबअँबराई॥कांपत तनु त्रियाके पिय हँसिके ग्रीवा लगाई । भए एक ठौर सूर श्याम श्यामा भरि कोर अरस परस रीझत उपरै नाहींमें समाई॥६५॥राग मलार॥ दीजेकान्ह काँधेहूको कंबर। नान्ही नान्ही बूँदन बरषन लागी भीजत कुसुंभी अंबर ॥ बार बार अकुलाइ राधिका देखि मेघ आडंबर॥हँसि हँसि रीझि बैठि रहे दोऊ ओढि सुभग पीताम्बर॥शिवसनका-

दिक नारद शारद अंत न पावैं तुम्बर। सूर श्याम गति लखि न परत कछु खात ग्वालन तजि संबर॥ ६६॥ रागगौरी॥ सुरति अंत बैठे बनवारी। प्यारी नैन जुरत नहिं सन्मुख सकुचि हँसत गिरिधारी॥बसन सँभारि तन लेत गये दोऊ आनँद उर न समाइ।चितवत दुरिदुरि नैन लजौंही सो छबि बरनि न जाइ॥ नागरि अंग मरगजी सारी कान्ह मरगजे अंग। सूरज प्रभु प्यारी बश कीन्ही हाव भाव रति रंग॥६७॥राग सोरठ॥रीझे श्याम नागरी छबिपर। प्यारी एक अंग पर अटकी यह गति भई परस्पर॥देह दशाकी सुधि नहिं काहू नैन नैन मिलि अटके। इन्दीवर राजीव कमल पर युग खंजन जनु लटके॥ चकृत भए तनुकी सुधि आई बनही में भई राति। सूर श्याम श्यामा बिहार करि सो छबिकी एक भांति॥ ६८ ॥ राग आसावरी॥कान्ह कह्यो बन रैनि न कीजै सुनहु राधिका प्यारी हो। अति हितसों उरलाइ कह्यो अब भवन आपने जारी हो॥ मात पिता जिय जान न कोई गुप्त प्रीति रस भारी हो। करते कौर डारि मैं आयो देखत दोउ महतारी हो॥ तुम जो प्यारी मोही लागत चन्द्र चकोर कहारी हो। सूरदास स्वामी इन बातन नागरिरिझई भारी हो॥६९॥ राग कल्याण॥प्यारी उठि पियके उर लागी। आलस अंग लटकि लट आई देखि श्याम बडभागी॥ सुरति मौन निशि बीती मानों हँसनि प्रात भयो जागी। अति सुख कंठ लगाइ लई हरि अरस परस अनुरागी॥ नवतनमें वनबेली दामिनि सहज मैंटि मिलि पागी। सूरदास प्रभुको अंकम भरि कामद्वंद्व तनु त्यागी॥ ७०॥ राग गौरी॥ कहा करौं पग चलत न घरको। नैन विमुख जिन देखे जात न लुब्धे अरुन अधरको॥ श्रवण कहत वे वचन सुनैं नहिं रिस पावत मो परको। मन अटक्यो रस मधुर हँसनि पर डरत न काहू डरको॥ इंद्री अंग अंग अरुझानी श्यामरंग नटवरको।सुनहु सूर प्रभु रही अकेली कहा करौं सुंदर वरको॥७१॥ श्याम अ पनी चितवनिबरजो अरु मुखकी मुसकानि। तुम्हरे तनक सहजके कारन सहियत सरवस हानि॥ इजै बिजै दोऊ आपुसमें निरये बिधना आनि। विद्यमान सबही इन देखत बशकरबेकी बानि॥ आपुनही डहकाय अपुनपो कहियतकहाबखानि।सूर सुगंधगँवाइ गांठिको रही बौरईमानि॥७२॥राग बिहागरो॥अतिहित श्याम बोले बैन।तुम बदन देखे बिना ये तृप्तहोत न नैन॥पलक नहिं चितते टरति तुम प्राणवल्लभ नारि। सुनति श्रवननि वचन अमृत हरष अंतर भारि॥ मात पित अवसेर करिहैं गवन कीजे गेह। सूर प्रभु प्रिय त्रिया आगे प्रगटिपूरन नेह॥७३॥ श्याम प्रगट कीन्हों अनुराग। अति आनंद मनहि मन नागरि बदति आपने भाग॥ सुंदरघन उत व्रजहि सिधारे इतहि गमन करि नारि। दंपति नैन रहे दोउ भरि भरि गये सुरति रति सारि॥ जननी मन अवसेर करतिही हरि पहुँचे तेहि काल। सूर श्यामको मात अंकभरि कहति जाउँ बलिलाल॥ ७४॥ मैं बलि जाऊं कन्हैयाकी। करते कौन डारि उठिधायो व्यात सुनी बनगैयाकी॥ धौरी गाइ आपनी जानी उपजति प्रीति लवैयाकी। तातो जल समोइ पग धोवति श्याम देखि हित मैयाकी॥जो अनुराग यशोदाके उर मुखकी कहति नन्दैयाकी। यह मुख सूर और कहुँ नाहीं सौंह करत बलभैयाकी॥७५॥राग ईमन॥ कान्ह प्यारे वारने जाऊं श्याम सुंदर मूरति पर। छबिसों छबीली लटकि वदनपर॥ चंद्रिकाकी लटकनि अतिहि विराजत मुरली सुभग धरेकर। सुंदरनैनबिशाल भौंहसुरचापमनो तिलकबिराजित ललित भालपर। सूरश्याम मेरे अतिबानक बन्यो बनमाला अतिही उरराजत कटि तट सोहत पीतांबर॥७६॥राग बिहागरो॥वह तो मेरी गाइ न होई। सुन मैया मैं वृथा भरम्यो बन

जो देखों नैनन भरिजोई ॥ वृंदावन ढूँढ्यो यमुनातट देख्यो बन डोंगरी मंझारी।सखा संगकोउ नहीं अकेलो कांधे कामरि कर लकुटधारी ॥ वहतौ धेनु और काहूकी युवती एक मिलीधौं कोन। सूर संग मेरे वह आई मोको उहि पहुँचायो भौन ॥ ७७॥ रागरामकली ॥ राधा अतिही चतुर प्रवीन । कृष्णको सुख दे चली हँसि हंसगति कटिछीन ॥ हारके मिस इहां आई श्याम मणिके काज।भयो सब पूरण मनोरथ मिले श्रीब्रजराज॥गाँठि आँचर छोरिकै मोतसरी लीन्ही हाथ । सखी आवत देखि राधा लई ताको साथ॥युवति बूझति कहां नागरि निशि गई एकयाम। सूर ब्यौरो कहि सुनायो मैं गई तेहि काम॥७८॥ राग कान्हरो॥ ऐसी री निधरक तू राधा । ब्रज घरघर बनबन डोली तू नहीं कियो कहुँ बाधा ॥ मोको संग बोलि तू लेती करनीकरी अगाधा। प्रातहिते तूअबआवतिहै रैनि याम लगि,आधा॥पायो हार किधौं पुनिनाहींदेखौंरीमोहिं साधा। आंचर हेरिग्रीव देखरायो दामन मोल उपाधा ॥ मनमन कहति बात यह मिलवति गई श्याम अवराधा।सूर सखी लखिलीनी ताको यहतौहै कछु दुविदाधा॥७९॥ राग धनाश्री॥कहिराधाकिनहार चोरायो । ब्रजयुवतिनि सबहिन मैं जानति घरघर लैलै नाम बतायो ॥ श्यामा कामा चतुग नवला प्रमुदा सुमदा नारी।सुखमा शीला अवधा नंदा वृंदा यमुना सारी॥कमला तारा विमला चंदा चंद्रावलि सुकुमारी ।अमला अवला कंजा मुकुता हीरा नीला प्यारी॥ सुमना बहुला चंपा जुहि-ला ज्ञाना भाना भाऊ।प्रेमा दामा रूपा हंसा रंगा हरषा जाऊ॥दर्वा रंभा कृष्णा ध्याना मैना नैना रूपा। रत्ना कुमुदा मोहा करुना ललना लोभानूपा॥इतनिनमेंकहि कौने लीन्हो ताको नाउं बता-उ । सूर श्याम हैं चोर तिहारे मैं जानति सब दाउ ॥८०॥ शंकराभरन ॥ सुरति रति मानि आइ पियपै तैं गजगति गामिनी । मरगज हार बिथुरे बार देखियत आइगई एक याम यामिनी ॥ और शोभा सोहाइ अंगअंग अरसाइ बोलतिहै कहा अलसामिनी। सूरदास छबि निरखति रही रसवश है री धनि धनि धनि तू भामिनी ॥ ८१ ॥ राग कान्हरो॥उरझारीलटैंछूटी आननपरभीजी फुलेलनसों आली हरिसंग केलि । सोधे अरगजी अरु मरगजी सारी केसरि खोरि बिराजित कहुँकहुँ कुचनि पर दरकी अँगिया घन बेलि ॥आलस हैं भरे नैनबैन अटपटात जात ऐंडात जम्हात गातअंगमोरि बहियां झेलि । सूरज प्रभुप्यारी प्यारेसंग करि रसबिलास अरसपरस दोउ अंकौ मेलि॥ ८२ ॥ राग ललित ॥ आइ तू डगमगात ऐंडात जँभावति रगमगी रंग मगी रंग भरिके। चंद उदे मुख देखतहीं कर दर्पन प्रतिबिंब निहारि धौं पीक लीक नैननि छबि परके ॥ बिथुरे अलक सुथरे मुख ऊपर अति आनंद उर हरिके । सुखकेलि करिकै सूरज प्रभु रसिकराइ रसवश कीन्ही बनाइ नवला नवल रीझि मन ढरिकै॥८३ ॥राग बिलावल ॥सुनि री राधा अबहिं नई। बातैं कहाबनावति मोसों हमहूंते तुम चतुर भई॥कहां ग्वालि कहँ हार तुम्हारो कहां तहां तू आजु गई। मनहीं जानि-लेहु मैं जान्यो जाके रंग तू सदा रई ॥ तेरे गुण परगट करिहौं मैं ऐसी रीति कहूँ न भई। सूर श्याम जबते सँग कीन्हों तबहीते मैं जानिलई॥ ८४ ॥राग बिलावल ॥ इन बातन कछु पावति री। बिनदेखे लोगनसों सुनिसुनि काहे बैर बढावति री॥ मोको जहां अकेली देखति तबहींये उपजा-वति री । ब्रजयुवतिनकी संगति त्यागो पुनिपुनि क्रोध करावति री ॥ कैसी बुद्धि तुम्हारीसबकी ऐसिहि तुमको भावति री।सूरशीशतृणदैबूझतिहौंसांचकहतकीबनावति री ॥८५ ॥राग गुंडमलार॥ करति अवसेर वृषभानुनारी । प्रातते गई वासर गयो बीति एक यामनिशिगईधौं कहांवारी॥हार-के त्रास मैं कुँवरि त्रासी बहुत तिहि डरन अजहुँ नहिं सदन आई।कहाँ मैं जाउँ कहाँ धौं रही रूसिकैं

सखिनसों कहति कहीं मिली माई॥ हार वहिजाइ अतिगई अकुलाइकै सुताके नाउँ इक उहै मेरे। सूर यह बात जो सुनैं अबहीं महर कहैंगे मोहिं ये ढंग तेरे॥८६॥राग सोरठ ॥राधाउर डरात गृह आई। देखतही कीरति महतारी हरपि कुँवरि उर लाई॥ धीरज भयो सुता माता जिय दूरि गयो तनु सोच। मेरीको मैं काहे त्रासी कहा कियो यह पोच॥ लै री मैया हार मोतसरी जाकारण मोहिं त्रासी। सूर राधिकाके गुण ऐसे मिलि आई अविनाशी॥८७॥ राग बिहागरो॥ परमचतुर बृषभानुदुलारी। यह मति रची कृष्णमिलिबेको परमपुनीत महा री। उत सुख दियो नंदनंदनको इतहि हरप महतारी। हार इतो उपकार करायो कबहुँ न उरते टारी॥जे शिव सनक सनातन दुर्लभ ते वश कियो मुरारी। सूरदास प्रभु कृपा अगोचर निगमनहूँ ते न्यारी॥ ८८॥ रांग भैरवी॥ श्याम भए वश नागरिके। नैन कटाक्ष बंक अवलोकनि रीझे घोप उजागरिके॥ चित मधुकर रस कमलकोशको प्यारी वदन सुधागरिके। लोकलाज संपुट नहिं छूटत फिरि फिरि आवत वागरिके॥ मिलन प्रकाश मनावत मन मन कहा कहौं अनुरागरिको।सूर श्याम वशवाम भए हैं धनि ऐसी बडभागरिको॥८९॥राग आसावरी॥श्याम भए वृपभानुसुतावशऔर नहीं कछुभावै हो।जो प्रभु तिहूं भुवनकोनायक सुरमुनि अंत न पावै हो॥जाको शिव ध्यावतनिशि वासर सहसानन जेहि गावै हो।सो हरि राधावदन चंदको नैनचकोर त्रसावै हो॥जाको देखिअनंग अनागतनागरिछबि भरमावैहो।सूरश्यामश्यामावश ऐसेज्यों सँगछांहडुलावै हो।॥९०॥राग जैतश्री ॥कबहूँ श्यामयमुनतट जात।कबहूं कदम चढत मग देखतमन राधाबिन अति अकुलात।कबहुं जात वन कुंजधामको देखि रहत कछु नहीं सुहात।तब आवत वृषभानुपुराको अति अनुराग भरे नँदतात॥प्यारी हृदय प्रगटही जानति तव मन मांझ सिहात। सूरदास प्रभु नागरिके उर नागर श्यामल गात॥ ९१॥ राग गूजरी॥ राधाश्याम श्यामराधारँग।पियाप्यारीको हृदयेराखतप्यारी रहतिसदाहरिकै सँग॥नागरि नैन चकोर वदन शशि पिय मधुकर अंबुज सुंदरि मुख। चाहत अरस परस ऐसे कारि हरि नागरि नागरि नागरसुख॥ सुख दुख सोचि रहत मनहीमन तब जानत तनकोयहकारन।सुनहुँ सूरकुलकानिर्जीयदुखदोऊफलदोउकरतबिचारन॥९२॥राग सूहीबिलावल॥ यमुनाचली राधिका गोरी। युवति वृंद बिच चतुरनागरी देखे नंदसुअन तेहि खोरी॥ व्याकुलदशाजानिमोहनकी मनही मन डरपी उन ओरी। चतुर काम फंग परे कन्हाई अब धौंइनहि बुझावै को री॥ इतसखियनसों बात बनावति अति ह्वैगई तनकसी भोरी। सूर उतहि हरि भाव बतावत धीरधरो मिलिहैं दोउ जोरी॥ ९३॥ राग जयतश्री ॥तब राधाइकभावबतावति। मुखमुसकाइ सकुचिपुनिलीन्हो सहज चली अलकैं निरुवारति॥ एक सखी आवत जललीन्हें तासोंकहति सुनावति।टेरिकह्यो घर मेरे जैहो मैं यमुनाते आवति॥ तब सुखपाइ चले हरि घरको हारि प्यारीहि मनावत।सूरज प्रभु वितपन्न कोकगुन तातेहरिहरिध्यावत॥ ९४॥राग धनाश्री ॥श्यामकोभावदैगईराधा। नारि नागरिन काहू लख्यो कोउ नहीं कान्हकछु करतहैबहुअनुराधा॥ चितैहरिवदन याकोहँसत मैं लखी वेउ तहिं गए कछु हरप किये। भावतो भावके सींगनाहीं सने ये महाचतुर चतुरईलिये॥ आजुही रैनि दोउ संग ये मिलहिंगे रहे कहि परसपर मनहि जानी। सूर व्रजनागरी नारि नागरिनसँग फिरीव्रज तुरत लैयमुनपानी॥९५॥राग टोडी॥भावदियोआवैगेश्याम।अंगअंग आभूपन साजति राजति अपने धाम॥रतिरण जानि अनंग नृपतिसोंआपनृपतिराजति बलजोरति। अति सुगंध मर्दन अँगअँग ठनि वनिवनिभूपनभपति॥बीराहारचीरचोलीछबिसैना सजिश्रृंगार।

पान वचन सन्नाह कवच दै जोरो सूर अपार ॥९६॥ राग कान्हरो॥प्यारीअंगशृंगारकियो। बेनीरची सुभग कर अपने टीका भाल दियो॥ मोतियन मांग सँवारि प्रथमही केसरि आड सँवारि। लोचन आँजि श्रवण तरवन छबि को कबि कहै निवारि॥ नासा नथ अतिही छबि राजत बीरा अधरनि रंग। नवसत साजि चीर चोली बनि सूर मिलनि हरि संग॥९७॥ राग कल्याण॥ नागरि नागरपंथनिहारै।उदै बाल शशि अस्तभयो अब जियजिय इहै बिचारै॥कीधौं अबहीं आवत ह्वैहैं की आवन नहिं पैहैं। मात पिताकी त्रास उतहि इत मेरे घरहि डरैहैं॥ अंग शृंगार श्यामहित कीन्हें वृथा होन ये चाहत। सूर श्याम आवैं की नाहीं मन मन इह अवगाहत॥ ९८॥ राग कान्हरो॥श्यामा निशिमें सरस बनी री। मृगरिपु लंक तासु रिपु गज ता ऊपर मधु केलि ठनी री।कीर कपोत मधुप पिक तुंबर रिपु सुत रेख बनी री। उडुपति बिंब धरे अति शोभा सुख बाला जोरि चिनी री॥कनक खंभ रचि नवसत साजे जलधर भख जब श्रवन सुनी री। करगहि सत्र सात परिसारँग दंपतिहीकी सुरति ठनी री॥ उमापतिहि रिपुको ललचानी वनरिपु तनमें अधिक जरी री।सूरदास प्रभु मिलो राधिका तन मन शीतल रोमभरी री॥राग बिहागरो॥ राधा रचिरचि सेज सँवारति। तापर सुमन सुगंध बिछावति बारंबार निहारति॥ भवन गवन करिहैं हरि मेरे हरष दुखहि निरुवारति। आवैं कबहुँ अचानकही जो सुभग पावँडे डारति॥ यह अभिलापहिमें हरि प्रगटे पुरुष भवन सकुचानी। वह सुख श्रीराधा माधोको सूर उरहि यह जानी॥ ९९॥ कहाकहौं सुखकह्यो न जाइ। वह अभिलाप श्यामकी आवनि दुहुँ उर आनँद उर न समाइ॥ द्वादशकान्ह द्वादशी आपुन वह निशि वै हरि राधा योग। वह रसकी झझकनि वह महिमा वहमुसकनि वैसोसंयोग।वैहितबोल परस्पर दोऊ ठटकत कहत प्रेम पहिचानि। सूर श्याम कर बाम भुजा धरि उछंगलई वह मुख पहिचानि॥१६००॥रागकान्हरो॥ श्याम सकुच प्यारी उर जानी। लई उछंगि बाम भुज भरिकै बार बार कहि बानी॥ निरखति सकुच बदन हरिप्यारी प्रेमसहित दोऊ ज्ञानी। करत कहापियअति उताइली मैं कहुँ जात परानी॥कुटिल कटाक्ष बंक करि भ्रुकुटी आनन मुरि मुसकानी।सूरश्यामगिरिधर रतिनागर नागरि राधारानी॥ १॥नागरि नागर करत बिहार। कामनृपति सैना दुहुँ अंगनि शोभा वार न पार॥अधरअधर नैननिनैननिभ्रुव भाल कियो इकठौर। मनइंदीवर कमल कसेसे चारि भँवर रंग और॥ बंदन भाल बिहँसनि दोऊ अरस परस वरनारि। मनों विच चंद चकोर परस्पर कमल अरुन रविधारि॥ हावभाव रति अति उपजायो पियप्यारी मन एक। सूरदास स्वामी स्वामिनि मिलि कोक कलानि अनेक॥२॥राग गुंडमलार॥श्यामा श्याम परम कुशल जोरी। मनों नव जलद पर दामिनिकी कला सहज गति मेटि श्रुति भई भोरी॥ अलक बिथुरी श्याम मुख पर रहे मनों बल राहु शशि घेरि लीन्हों। चितै मुख चारु चुंबन करति सकुच तजि दशन छत अधर पिय मगन दीन्हों॥ परत श्रम बूँद टप टपकि आनन बाल भई बेहाल रति मोह भारी। बिधुपर सुदत विध्वंत अमृत चुवत सूर विपरीत रति पीडि नारी॥ ३॥ राग कुरंग॥ कुंजके निकट कुंज सुरति निरसि सों सेज राजत सुख गात। छूटिगई तनकी चोली दरकि तरकि गये चारो याम रजनी बिहानी भोर रे भोर प्रात॥ आलससों उठि बैठ अरस परस दोउ दंपति अति मन मन मुसकात। सूर आम पूरी श्यामा श्याम बनी जोरी निशिरस सुधि आये नैन नैननिजात॥ ४॥ राग ललित॥ राजत दोउ रतिरंग भरे। सहज प्रीति विपरीति निशा सब आलस सेज परे॥ अति रणवीर परस्पर दोऊ नेकहु कोउ न मुरे। अंग अंग बल अपने अरिनिसों रति संग्राम लरे॥ मगन मुरछि रहे खेत सेज पर इत

उत कोउ न परे । सूर श्याम श्यामा रति रणते एक पग पल न टरे ॥ ५ ॥ राग बिभास ॥ श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परस दोउ करत बिहार । उन उनकी पहिरी मोतिनकी माला उन उनको पहिरयो नवसरिहार ॥ लटपट पेंच सँवारति प्यारी अलक सँवारत नंदकुमार । सूरदास प्रभु नागरि नागर विपरीतै भूषण शृंगार ॥ ६ ॥ राग ललित ॥ करि शृंगार दोऊ अलसाने । प्रथम बोल तमचुर सुनि हरषे पुनि पौढे लपटाने ॥ रति रण युद्ध याम त्रय नीके सेज परे उठि पुनि मुरझाने । मानों शूर खेत सम लरिकै गिरे उठत फिरि गिरे लजाने ॥७॥ राग ललित॥ बोले तमचुर चारों यामको गजर मारयो पौन भयो शीतल तम तमता गई । प्राची अरु-नानी धानि किरिन उज्यारी नभ छाई उडगन चंद्रमा मलिनता लई ॥ मुकुले कमल वच्छ बंधन बिछोहि ग्वाल चरै चलीं गाय द्विज पैंती करको दई॥सूरदास राधिका सरसबानीबोलिकेहैजागो प्राणप्यारे जू सबारेकी समै भई ॥ ८ ॥ राग बिभास ॥ चिरई चुहचुहानी चंदकी ज्योति परानी रजनी बिहानी प्राची पियरी प्रवानकी । तारका दुरानी तमघटेचुरबोलेश्रवणभनक परी ललितके तानकी ॥ भृंग मिले भारजा बिछुरी जोरी कोक मिले उतरीपनचअबकामकेकमानकी। अथ-वत आये गृह बहुरि उवत भान उठौ प्राणनाथ महा जान मणि जानकी ॥ ब्रज घर घर इहै करत चवाव लोग बार बार कहनि करनि पग आनकी।सूरदास प्रभु नदसुवन सिधारो धामसुनत उठनि छबि कृपाके निधानकी॥९॥ राग बिलावल ॥ जागिये प्राणपति रैनि बीती।चंद्रकी द्युतिगई पहै पीरीभई सकुच नाहीं दई अतिहि भीती॥मात पितु बंधु गुरुजन अबहिं जानिहैं लखैं जिनि कहूं यह लाज भारी । सखिन आगे नहीं नहीं सब दिन कही मोहि घेरे रहति सबै नारी ॥ उठे मुसुकाइ अकुलाइ अतुराइके निकसि गए श्याम ब्रजनारि जान्यो । सूर प्रभु नंदनदन दरश दे गये निरखि यकटक रही पल भुलान्यो ॥१०॥राग बिलावल॥ प्रगट दरश दै गए कन्हाई।राधागृहते निकसत देखे यह उनकी मन साध पुराई ॥ शीश मुकुट मोतिन उरमाला पीतांबर पट सहज फिराई । श्याम बरन तन निरखि भुलानी अंग अंग छबि कह्यो न जाई ॥ करति सोच राधा मन अपने आलस भरे गये हरि माई । सूर श्याम निशि नेक न सोये इहै कहति पुनि पुनि पछिताई ॥ ११ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम गये देखे जिनि कोई । सखियनसों निबहन पुनि पैहौं इनि आगे राखौं रसगोई ॥ देखै आइ द्वारकै नागरि जहँा तहँा ब्रजनारी। सकुचि गई युवतिनके देखत दुखकीन्ही जिय भारी ॥ मन चिंता अतिही उपजायो बारबार पछितानी । सूर श्यामसों प्रीति गुप्तही आजु सबनि इन जानी ॥१२॥ राग बिलावल ॥ बारबार राधा पछितानी । निकसे श्याम सदन मेरेते इन अटकरि पहिचानी॥ नितही नित बूझति ये मोसों मैं इनपर सत-राति । अबतौ हरि प्रगटही देखे पुनिपुनि कहति लजाति॥यक ऐसेहि झकझोरति मोको पायो नीको दोउ । सूर आजु केहि भांति दुराऊं सोचति करति उपाउ॥१३॥सोच परयो मन राधिका कछु कहत न आवै । कछु हरषे कछु दुख करै मन मौज बढावै॥निशि रस रंगहिमेंपगीतनु सुधि बिसरावै । कबहुँ बिचारति निठुर ह्वै सखि ज्वाब न आवै॥अबहीं मोको बूझिहैं युवती चतुरावै॥ तिन सन्मुख कैहों कहा प्रभुसूर मनावै॥१४॥राग नटनारायण ॥कबहूं मगन हरिके नेह । श्याम संग निशि सुरतिको सुख भूलि अपनी देह॥जबहिं आवति सुधिसखिनकी रहति अति सरमाइ । तब करति हरि ध्यान हिरदै चरण कमल मनाइ॥होइज्यों परबोध उनको मेरीपति जिन जाइ।निदरि निदरि सबको रहीहूं आजुलौं यहि भाइ।अबहिं सब जुरि आइहैं ह्यां तुम बिना न उपाइ।सूरप्रभु

ऐसी करौ कछु बहुरि न जाहुं लजाइ॥१५॥राग टोडी॥ज्वाब कहा मैं देहौं उनको। की आवति अबहीं की छिनकहि चोर कहैंगी मोको॥ कैसे हूं पति रहै विधाता अब यह करौं सँभारि। घेरेहि रहति दुराऊं कबलों ऐसी नागरि नारि॥ नैना भए चकोर रहत हैं मुख शशि पूरण श्याम। सुनहु सूर यहदशाहमारीये ब्रजकीसब बाम॥१६॥राग जैतश्री॥ये सब मेरेहि खोज परी। मैंतौ श्याम मिलीनहिं नीके आजु रही निशि संग हरी॥ युवतीहैं सब दई सँवारी घर बनहू में रहति भरी। कैसे धौं यह साध मिटैंगी कहां मिलैंजो एक घरी॥ प्रगट करैं तो बनति नहीं कछु लोक सकुच कुल लाज मरी। ते परगट अबहीं इन देखे सूरज प्रभु ब्रजराज हरी॥१७॥राग धनाश्री॥तब नागरि मन हरष बढायो। परमकुशल राधा हरि प्यारी हृदय बुद्धि उपजायो॥ अब आवैं कैसेहु अँग बूझै ज्वाब मनहि ठहरायो। अति आनंद पुलक तनुकीन्ही सोच मोच बिसरायो॥प्रगट गए जैसे नँदनंदन उहै ध्यान उपजायो। सूरदास प्रभु रूप बखानों इनको जो दरशायो॥१८॥राग ललित॥ राधा हरिके गर्व भरी। सखियनको आगम जब जान्यौ बैठी रही खरी॥उत ब्रजनारि संग जुरिकै वे हँसति करति परिहास। चलौ न जाइ देखिये री वे राधाको जु अबास॥ कैसो वदन शृंगार कौन बिधि अंगदशा भइ कैसी। सूर श्याम सँग निशि रस कीये निधरक ह्वैहै वैसी॥ ॥१९॥राग जैतश्री॥सुनो सखी राधाके मनकी यह करनी सखियन नहिं जान्यो। जब हम जाति चली यमुनाको तबही मैं वाको पहिचान्यो॥ तबहि सैन दे श्याम बुलायो गृह आवन को भाउ। उनके गुण धौं को नहिं जानत चतुर शिरोमणि राउ॥ सुनहु सखी अंतर नहिं कीजिय मूड परे अपनेही। सूरश्याम सुख हमहि दुरावति आजु मिले सपनेही॥२० ॥राग सारंग॥ तुम जो कहति राधिका भोरी। आजु रही अब कहां दुराई कौन दिननकी थोरी॥ ज छोटीतेई हैं खोटी साजति माजति जोरी। बंदी भाल नयन नित आंजति निरखि रहति तनु गोरी॥ चमकति चलै बदन मटकावै ऐसी जोबन जोरी। सूर सखीतेहि कहतिअयानीमनमोहनहिंठगोरी॥ २१॥राग रामकली॥राधाको मैं तबहीं जानी। अपने कर जे मांग सँवारै रचि रचि बेनी बानी॥मुख भरि पान मुकुर लै देखति तिनसों कहति अयानी। लोचन आंजि सुधारति काजर छाँह निरखि मुसुकानी॥ बारबार उरजनि अवलोकति उनते कौन सयानी। सूरदासजैसीहैतैसीमैंवाकोपहिचानी॥२२॥राग गुंडमलार॥राधिका सदन ब्रजनारि आई। रही मुख मूँदिकै बचन बोलै नहींनैनकी सैन दैदै बुलाई॥ इनितबहिं लखि लई रचतिहै चतुरई बुद्धि रचिकै अबहिं और कैहै। चोर चोरी करै आपने जंघबल प्रगटकैहै तुमहिं नहिं पत्यैहैं॥ भौंह देखो निरखि ज्वाब देहै कौन तुमहुँ राखति गर्व बोलि देखो। सूर प्रभु संगते अति निधरक भई नैन सुख और तुम नहीं पेखो॥२३॥ राग सूही॥ आजु कहा मुख मूँदि रही री।सुनति नहीं हो कुँवरि राधिका कापर रिसकरि मौनगही री। हमको यह काहे न सुनावति हम हैं तेरी संग सखीरी। यह कहि कहि मुसकात परस्पर चतुर नारि यह तबहिं लखी री॥ कीधौं ध्यान करति देवनिको कीधौं ऐसी प्रकृति परी री।सूर जबहिं आवति हम तेरे तब तब ऐसी धरनि धरी री॥२४॥रागबिलावल॥बार बार युवती सब राधासों भाखैं।तुम दुराव करती हौ हम तुमसों राखैं॥इतनो सोच पर्यो कहा मुख ज्वाब न आवै।हमतोहैं तेरी सखी सो कहि न सुनावै॥कछु दिनते तेरी दशा तनु रहति भुलाये।निठुर भई कापरइतोकह सूर सुभाये॥२५॥राग गुंडमलार॥राधिका कहति ये करति हांसी। रहति मुखमुख हेरि नैनकीसेन दै कहति मोको कृष्ण उपासी॥ सुनहुँ री सखी मैं कहा तुमसों कहौं कहा बूझति मोहिं कहति

राधा । आजुही प्रात इक चरित देख्यो नयो तबहिते मोहिं यह भई बाधा ॥ कहौं जो एक करि देखती नैन भरि भोरते भोर ह्वै रही माई। सूर प्रभु श्याम की श्यामता मेघकी यहै जिय सोच कछु नहिं सोहाई॥२६॥राग रामकली॥कर घरकी घर सेर सखी री।की स्रक सीपजकी बगपंगतिकी मयूर की पीड पखी री ॥ की सुरचाप किधौं बनमाला तडित किधौं पटु पीत। किधौं मंदगरजनि जलधरकी पगनूपुर रवनीत ॥ की जलधरकी श्याम सुभग तनु इहै भोरते सोचति। सूर श्याम रसभरी राधिका उमँगि उमँगि रसमोचति ॥२७॥राग रामकली॥आजु सखी अरुणोदय मेरे नैनन धोख भयो । की हरि आजु पंथ यहि गौने की धौं श्याम जलद उनयो। की बगपंगति भ्रांति उरपरकी मुकतमाल बहुमोल। की धौं मोर मुदित नाचत की वरहि मुकुट की डोल ॥ की घनघोर गंभीर प्रात उठि की ग्वालनकी टेरनि। की दामिनि कौंधति चहुँदिश की सुभग पीतपट फेरनि॥ की बनमाल लाल उरराजत की सुरपति धनु चारु । सूरदास प्रभु रस भरि उमँगी राधा कहति बिचारु॥२८॥राग बिलावल॥सुनहु सखी राधाकहनावति।हम देख्यो सोई इन देखे ऐसेहि दोप लगावति ॥ यह पुनीत हमही अपराधिनि तनु अपराध बढावत। श्यामाश्याम सबकेसुखदायकताते कहि मनभावत ॥ इतनेहि रहौ और जिनि भाषहु अजहूं लाज न आवत। सूर श्याम राधा जो एकै तऊ नहीं कहि आवत॥२९॥राग सूही बिलावल॥राधाको कछु और सुभाउ। हम देखति हरिको औरहि रँग यह निरखति सतिभाउ॥यह है बिन कलंककी सांची हम कलंकमें सानी । हम हरिकी दासी सम नाहीं यह हरिकी पटरानी ॥ याकी स्तुति हमकहा करीहैं रसना एक न आवै । सूरश्याम कोई नहिं जाने भजन प्रताप बतावै ॥३०॥राग गुंडमलार॥राधिका हृदयते दोप टारौ।नंदके लाल देखे प्रात काल ते मेघ नहिं श्याम तनु छबि बिचारौ॥इंद्रधनु नहीं वन दाम बहु सुमनके बगपंक्ति नहीं वर मोतीमला । शिखी वह नहीं शिरमुकुट श्रीखंड पछ तडित नहिं पीत पट छबि रसाला॥ मंद गर्जनि नहीं चरण नूपुर शबद भोरहीं आजु हरिगवन कीन्हों।सूर प्रभु भामिनी भवन कारि गवन मनरवन दुखके दवन जानिलीन्हों॥३१॥भोरजे गयेतेइ श्यामबैरी।धोखो मोहिं भयोतबलखे नहिं एक कारि नीलवनमेघ छबिचीन्ह तनु लै री॥शिखीकी भांति शिरपीड डोलत सुभगचापते अधिक वन मालशोभा।सांवरीघटा बगपांतिहूतेरुचिर मोतिबरदामउर देखिलोभा॥तडिततेपीतपटु क्रीट मकगजई गरज नहिंप्रातही ग्वाल बोले। सूर प्रभु सखी यह बात सांची कही पवनवशमेघ ज्यों अंग डोले॥३२॥राग कल्याण॥धन्यहो धन्यतुम घोपनारी।मोहिंधोखो गयो दरश तुमको भयो तुमहि मोहिं देखो री बीच भारी॥जा दिना संग मैं गई अस्नानको यमुनके तीर देखे कन्हाई॥पीड श्रीखंड शिर भेप नटवर कछे अंग इक छटा मैंही भुलाई ॥एकद्योस आइ ठाढे भए द्वार हरि आजहू द्वारह्वै गए मेरे।सूर प्रभु तादिना तुमहिंकहि दियोमोहिं आजमैंलखेसोउकहे तेरे३३॥रागआसावरी॥ तुम कैसे दरशन पावति री।कैसे श्याम अंगअवलोकति क्यों नैननको ठहरावत री॥ कैसे रूप हृदय राखतिहो वै तो अति झलकावत री । मोको जहां मिलत हैं माई तहँ तहँ अति भरमावत री॥मैं कवहूं नीके नहिं देखे कहा कहौं कहत न आवत री।सूर श्याम कैसे तुम देखतिमोहिं दरश नहिं द्यावत री॥३४॥ राग आसावरी ॥धन्य धन्य वृषभानुकुमारी।धनि माता धनि पिता धन्य तुम धनि तोसी उपजाई री ॥ धन्य दिवस धनि निशा तबहिंकी धन्य घरी धनि याम । धन्य कान्ह तेरे वश जे हैं धनि कीन्हें वश श्याम ॥ धनि मति धनि गति धनि तेरो हित धन्य भक्ति धनि भाउ । सूर श्याम पति धन्य नारि तू धनि धनि एक सुभाउ ॥ ३५॥ राग जैतश्री॥तोहिं श्याम

हम कहाँ देखावैं । तुमते न्यारे रहत कबहुँ वै नैक नहीं बिसरावैं ॥ एक जीव देही द्वै राची यह कहि कहि जु सुनावैं । उनकी पटतर तुमको दीजै तुम पटतर वे पावैं ॥ अमृत कहा अमृत गुण प्रगटे सो हम कहा बतावैं । सूरदास गूँगेको गुर ज्यों बूझति कहा बुझावैं ॥३६॥ राग टोडी ॥ सुनि राधा यह कहा बिचारै।वे तेरे रँग तू उनके रँग अपनो मुख काहे न निहारै॥जो देखै तौ छांह आपनी श्यामहृदय त्यां छाया।ऐसी दशा नंदनंदनकी तुम दोउ निर्मल काया॥नीलांबर श्यामलतनुकी छबि तुवछबि पीत सुवास।घन भीतर दामिनी प्रकाशत दामिनिघन चहुँ पास।सुनरी सखी बिलछ कहौं तोसों चाहति हरिको रूप।सूर सुनहु तुम दोउ समजोरी एक एक रूप अनूप॥३७॥ राग धनाश्री ॥ सुनि ललिता चंद्रावलि बात।मोसों श्याम नेह मानतहैं तुमसों कहति लजात॥तुमतो सदा रहति हरिसँगही भेद कहो यह मोहिं । हाहा करति पाइँहों लागति शपथहै मेरी तोहिं ॥ काहेको इतरात सखीरी तोते प्यारी कौन । सूर श्याम तेरे बश ऐसे ज्यों पर्वतवश पौन ॥ ॥ ३८ ॥ राग नट ॥ पिय तेरे वश योंरी माई।ज्यों संगहिसँग छाँह देहबश प्रेम कह्यो नहिं जाई॥ ज्यों चकोर वश शरद चंद्रके चक्रवाक बश भान । जैसे मधुकर कमलकोश बश त्यों बश श्याम सुजान॥ ज्यों चातक बश स्वाति बूंदके तनके बश ज्यों जीय । सूरदास प्रभु अतिबश तेरे समझि देखि धौं हीय॥२९॥ राग धनाश्री॥ तू रीछांह किये हरि राखति ।अपनेमन तू जानतिनीके मुख मोसों यह भाषति॥ अतिबश रहत कान्ह री तोको मुकुर हाथ लै देखो । तैसीयै मनमोहनकी गति उहै भाव मन लेखो ॥ तुम हौ वाम अंग दक्षिण वै ऐसे करि एक देह। सूर मीन मधुकर चकोरको इतनो नहीं सनेह ॥ ४० ॥राग देसाष॥ नँदनंदन वश तेरे री।सुनि राधिका परम बडभागिनि अनुरागिनि हरिकेरे री ॥ जा दिनते तोहिं खरिक मिले हरि धेनु दुहावन आईरी। ता दिनते बश भये कन्हाई कहा ठगोरी लाई री॥ अब तू कहति कहा मो आगे बातन मोहिं भुलावै री। सूरदास ललिताकी बाणी सुनि सुनि हरष बढावै री ॥४१ ॥राग टोडी॥ ललिता मुख सुनि सुनि वै बानी। मैं ऐसी जियमें यह आनी॥और नहीं कोउ ब्रज मोसरिकी। हौंराधा आधा अँग हरिकी॥अपनेही बश पियको करिहौं । कहूं जात देखौं तब लरिहौं ॥ घरघर सबै गईं व्रजनारी। यहि अंतर आये गिरिधारी ॥ हरि अंतर्यामी अविनाशी। जानि राधिका गर्व उदासी ॥ सूर श्याम राधा तन हेर्यो। नागरि देखतही मुख फेर्यो॥४२॥राग सारंग॥बरज्यो नहिं मानत उझकत फिरत हौ कान्ह घर घर । तुम मिषही मिष देखत फिरत युवतिनके भवन कौन कौनके घर ॥ कोउ अपने घर काम काज जैसे तैसे तुम आवत हौ दर दर । सूरदास प्रभु अतिहि अचगरी देत डोलन नेक नहीं जियमें डर॥ ४३॥ राग बिलावल ॥ यह जान्यो जिय राधिका द्वारे हरि लागे। गर्व कियो जिय प्रेम को ऐसे अनुरागे॥ बैठिरही अभिमानसों यह ठौर न पायो। हृदय श्याम सुखधाममें अभिमान बसायो । राधा के यह जानिकै आपुन पछिताहीं। जहां गर्व अभिमान हैतहां गोबिंद नाहीं ॥ तहां नेकहूँ नहिं रहे नहीं दरशन दीन्हों । सूरश्यामअंतरभयेजब गर्वहि चीन्हों॥ ४४ ॥ राग धनाश्री॥राधा चकित भई मनमाहीं ।अबहीं श्याम द्वारह्वैझांकेह्यांआये क्यों नाहीं ॥ आपुन आइ तहां जो देखे मिले न नंदकुमार । आवत हे फिरि गये श्याम घन अति ही भयो विचार॥ सूने भवन अकेली मैंही नीके उझकि निहार्यो। मोते चूक परी मैंजानीताते मोहिं बिसरायो ॥ एक अभिमान हृदय करि बैठी एते पर झहरानी । सूरदास प्रभु गयेद्वारके तब व्याकुल पछितानी॥ ४५ ॥ राग सारंग॥मैं अपने जिय गर्व कियो।वेअंतर्यामीसबजानतदेख

तही उन चरचि लियो॥कासों कहौं मिलावै अब को नैक न धीरज धरत हियो॥वै तो निठुर भये या बुधिते अहंकार फल इहै दियो॥तब आपुनको निठुर करावति प्रीतिसुमरि भरिलेतहियो।सूर श्याम प्रभु वे बहुनायक मोसी उनके कोटि त्रियो ॥४६॥ राग बिहागरो॥श्याम बिरह बन मांझ हेरानी। संगी गये संग सब तजिकै आपुन भई देवानी॥श्याम धाम में गर्वहि राखति दुराचारिनी जानी। तातै त्यागि गये आपुहि सब अंग २ रति मानी॥अहंकार लंपट अपकाजी संग न रह्यो निदानी।सूर श्याम बिन नागरि राधा नागर चित्त भुलानी॥४७॥ राग बिहागरो॥महाविरहबन मांझ परी। चकृत भई ज्यों चित्रपूतरी हारि मारग बिसरी॥ संग वटपार गर्व जब देख्यो साथी छोंडि पराने। श्याम सहज अँग अंग माधुरी तहां वै जाइ लुकाने॥ यह बन माँझ अकेली व्याकुल संपति गर्व छँडाये।सूर श्याम सुधि टरत न उरते यह मनो जीव बचाये॥४८॥ राग मारू॥विरहवन मिलन सुधि त्रास भारी।नैन जल नदी पर्वतउरज येइ मनो सुभग बेनीभईअहिनि कारी॥ नैन मृग श्रवन बन कूप जहँ तहँ मिले भ्रम गली सघन नहिं पार पावै। सिंह कटि व्याघ्र अंग अंग भूषन मनो दुसह भये भार अतिही डरावै॥शरनकरि अत्रडरि डरलहत कोउ नहीं अंग सुख श्याम बिन भये ऐसे।सूर प्रभु नाम करुनाधाम जाउँ क्यों कृपा मारग बहुरि मिलै कैसे॥४९॥ राग टोडी॥राधा भवन सखी मिलि आई। अति व्याकुल सुधि बुधिकछु नाहीं देहदशा बिसराई। बांह गही तेहि बूझन लागी कहा भयो री माई। ऐसी विवश भई तुम काहे काहे न हमहि सुनाई। कालिहि और बरन तोहिं देखी आजु गई मुरझाई। सूर श्याम देखे की बहुरो उनहि ठगोरी लाई॥५०॥ राग हमीर॥श्याम नाम चकृत भई श्रवन सुनत जागी-आये हरि यह कहि कहि सखिन कंठ लागी॥मोते यह चूक परी मैं बडी अभागी॥अबकै अपराध क्षमहु गये मोहिं त्यागी॥ चरण कमल शरन देहु बार बार मांगी।सूरदास प्रभुके वश राधा अनुरागी॥ ५१॥राग बिहागरो॥सखी रहीं राधा मुख हेरी। चकृत भई कछु कहत न आवै करन लगीं अवसेरी॥ बार बार जल परसि वदनसों वचन सुनावत टेरी।आजु भई कैसी गति तेरी व्रजमें चतुर निवेरी॥तब जान्यो यहतौ चंद्रावलि लाज सहित मुख फेरी। सूर तबहिं सुधि भई आपनी मेटी मोह अँधेरी॥५२॥राग जैतश्री॥कहा भयो तू आजु अयानी।अतिही चतुर प्रवीन राधिका सखियनमें तू बडी सयानी॥कहिधौं बात हृदयकी मोसों ऐसी तू काहे वितानी। मुखमलीन तनुकी गति औरै बूझति बारबार सो बानी॥ कहादुरावकरौंरी तोसोंमैंतोहरिके हाथबिकानी। सूर श्याम मोको परत्यागी जा कारण मैं भई देवानी॥५३॥अब मैं तोसों कहा दुराऊं। अपनी कथा श्यामकी करनी तोआगे कहि प्रगट सुनाऊँ॥मैं बैठीही भवन आपने आपुन द्वार दियो दरशाऊँ। जानि लई मेरे जियकी उन गर्वप्रहारन उनको नाऊँ।तबहींते व्याकुलभई डोलति चित न रहै कितनो समुझाऊं। सुनहु सूर गृह वन भयो मोको अब कैसे हरि दरशन पाऊं॥ ५४॥ राग नटनारायण॥सखीमिलि करौ कछु उपाउ।मार मारन चढ्यो बिरहिनिनिदरिपायोदांउ॥हुताशन धुजजात उन्नत बह्यो हरिदिशवाउ। कुसुमशर रिपुनंद बाहन हरषि हरषित गाउ॥ वारिभवसुत तासु भावरि अब न करिहौं काउ। बार अवकी प्राणप्रीतम बिजै सखी मिलाउ॥ ऋतुबिचारि जु मान कीजे सोउ बहि किन जाउ। सूर सखी सुभाउ रैहौं संग शिरोमणि राउ॥५५॥राग नट॥ मिलवहु पार्थ मित्रहि आनि। जलजसुताके सुतकी रुचि करे भई हितकी हानि॥ दधिसुतासुत अवलि उरपर इंद्र आयुध जानि। गिरिसुता पति तिलक करकस हनत

सायक तानि ॥ पिनाकि पति सुत तासु बाहन भषक भष विषखानि । शाखामृग रिपु बसन मलयज हित हुताशन बानि ॥ धर्मसुतके अरि सुभावहि तजत धरि शिर पानि। सूरदास विचित्र बिरहिनि चूक मनमन मानि ॥ ५६ ॥राग टोडी॥सुनि सजनी यह करनी तेरी। हमसों भेद करे हित उनसों ऐसे गुन उनकेरी ॥ आजुहिते ऐसे ढँग आये अबहींतो दिन हे री। ऐसे टूटिपरी उनऊपर तुमही कीन्हों वैरी ॥ अजहूँ कह्यो मानिहै मेरे कीधौं नहीं करे री ॥ सूर श्यामसों मानु करै किन काहे वृथा मरे री ॥५७॥ राग सोरठ॥ तैंही उनको मूंड चढायो । भवन विपिन सँगहीसँग डोलैऐसेहि भेद लखायो ॥ पुरुषभँवर दिनचारि आपने अपनो चाउ सरायो। नँदनंदन बहुरवनि रवन वै इहै जानि बिसरायो ॥ अपनी बात आपने काहे हमको तब न सुनायो। सुनहु सूर बिनमान कहौ किन अपनो पिय अपनायो ॥५८॥राग कान्हरा॥ रैनिमो जागत बिहानी मोहनसों मैं मान कियो ताते भई अधिक तनुतपति । सेज सुगंध तलप लागत पावकहूँ दाह सखी री त्रिविध पवन उडुपति ॥ ऐसीके व्यापी हौं मन्मथ मेरो जी जानै माई श्यामश्याम कहि रैनि जपति। वेगि मिलाउ सूरके प्रभुको भूलिभिमान करौं कबहू नहिं मदन वानते कँपति ॥ ५९ ॥ राग धनाश्री॥मानबिनानहिं प्रीतिरहैरी।धाइमिलकी गतितेरीसीप्रगट देखि मोहिंकहाकहे री॥ अपनो चाउ सारि उन लीन्हों तू काहे अब वृथा बहै री । बैठि रहे काहे नहिं दृढ ह्वै फिरि काहे न तू मान गहे री ॥ अपनो पेट दियो तैं उनकोनाक बुद्धि तियसबैकहै री। सूरश्याम ऐसेहैं माई उनको बिनु अभिमान लहै री॥६०॥राग मलार॥सजौं क्यों मान मन न मेरे हाथ पियकी सुरति करि उमँगी भरत । मोसोंमानत वामश्याम,गुनिगुनि अभिलाष करत ॥ जो मोकानि न मानि आनि जुवरत तिन बिनु न सरत। अपमानतहू मुदित मूढ यश अपयशहू न डरत ॥ रिसमें रस विपदै चरचत नँदलाल हठि प्राणहरत। भ्रममें तो रिस करत न रसबश मोहिसों उलटि सरत । स्वारथ सब इंद्री समहूं पर बिरहा धीर धरत । सूरदास घरकी फूटैडी कैसेधीरधरत॥६१॥ राग कान्हरो ॥ चारिचारि दिन सबै सुहागिनि ह्वैचुकी मैं स्वरूप अपनी । कोउ अपने जिय मान करै माई मोहितो छूटति अति कँपनी ॥ मेरो कह्यो करि मान हृदय धरि छांडिदेहु अति तपनी । सूर श्याम तबही मानैंगे तबहिं करैंगे जपनी ॥ ६२ ॥ हमारी सुरति बिसारी बनवारी हम सरबस दैदै हारीं। सखिपै वे न भये अपने सपनेहुँ वै मुरारी गिरिधारी ॥ वे मोहन मधुकर समान अनबोलीमन लावत री । धावत हम व्याकुल विरह व्यापि दिन प्रति नीरज नैना ढारि ढारि ॥ हम तन मन दै हाथ बिकानी वे अति निठुर रहत हैं मुरारि । सूरदास प्रभु सुनहु सखी बहु रवनिरवनपिय हमयकव्रत धरि मदन अगिनि तनु जारिजारि॥६३॥ राग गौरी ॥ मैं अपनीसी बहुत करी री। मो-सां कहा कहति तू माई मनके सँग मैं बहुत लडी री। राखौं अटकि उतहिको धावै उनकोवेप्रिय परनि परी री ॥ मोसों बैर करै रति उनसों मोको छांडी द्वार खडीरी । अजहू मान करौंमनपाऊं यह कहि इतउत चितै डरी री । सुनहू सूर पांच मत एकै मोमें मैंही रही परी री ॥६४॥ राग गौरी ॥ मन जिनि सुनै बात यह माई । कौरे लग्यो होइगो कितहूं कहिदैहै कोजाई॥ ऐसे ढगनि रहति हौं वाको चुगुली जाइ करैगो । उनसों कहि फिरि ह्यां आवैगो मोसों आनि लरैगो । पंच संगलीन्हें वह डोलत कोऊ मोहिं न मानैं। सूरश्याम कोउ उनहिं सिखायो वै इतनो कहजानैं॥६५॥रागबिलावल॥ मेरो मन कहिबेको है। जबहींते हरिदरशन कीन्हें नैनभेद कियो जो है ॥ इंद्री सहित निरखि लैगयो रही अकेली हमही। येतेपर तुम मान करावत तौ मन देहु न तुमही॥ मोको दोयक नि

कहाहौ तुम तौ सबै अयानी। सूर श्यामकोबेगि मिलावहुहारिआपनीमानी॥६६॥राग रामकली॥ सारँग सारंगधरहि मिलावहु। सारँग बिनय करत सारंगसों सारंग दुख बिसरावहु॥ सारंग समय दहत अति सारंग सारंग तिनहिं दिखावहु। सारंगपति सारंगधर जैहै सारंग जाइ मनावहु॥ सारंग चरण सुभग कर सारंग सारंग नाम बोलावहु। सूरदास सारंग उपकारिनि सारंग मरत जिवावहु॥६७॥ राग बिहागरो॥ मोते यह अपराध पर्‍यो। आये श्याम द्वार भये ठाढे मैं अपने जिय गर्व धर्‍यो॥ जानिबूझि मैं यह कृत कीन्हों सो मेरेही शीश पर्‍यो। मन अपने ढँग हीमें मोसों बारंबार लर्‍यो॥ मैं अति बिमुख रही ये सन्मुख नीके उनहिं ठर्‍यो। सूरदास मन आपु स्वारथी अपनो काज कर्‍यो॥६८॥ राग सोरठ॥ मन जो कह्यो करै री माई। तेरी कहीबात सब होती मिलौ उनहिंको धाई॥ निलज भई तनुसुधि बिसराई गुरुजन करत लराई। इत कुलकानि उतहि हरिको रस मनतो अति अपुडाई॥ आप स्वारथी सबै देखियत है मोकों दुखदाई। सूरदास प्रभु चित अपनो करि तनकहिं गये रिसाइ॥६९॥ राग देशाख॥ मैं अबहीं करौं मान पैमन थिर न रहै। कोटियतन करि करि पचिहारी मोहिं बिसारिगये को उनसों जुकहै॥ मोकों निदरि मिल्योहै हरिको येतेपर तनु मदन दहै। सूर श्यामसँग नेक न त्यागत सोवत जागत वरु अपमान सहै॥७०॥ मनहिं कह्यो करि मानपै कह्यो न करै। बारबार हरिसों गुहरावत मोहिं मँगावत पुनिपुनि आनि लरै॥ घटहूमें इंद्री बशताके लै निकस्यो मोहिं कौन डरै। सुनि सजनी मैं रही अकेली बिरहदहेली इत गुरुजन झहरै॥ अब बिनु मिले बनत नहिं आली निशिदिन पलपल रह्यो न परै। सूर श्याम बहुरवनि रवन जो भलेहीं रहैं वे चित यह नहीं धरै॥७१॥ राग बिलावल॥ भूलि नहीं अब मान करौं री। जाते होइ अकाज आपनो काहे बृथा मरौं री॥ ऐसे तनमें गर्व न राखौं चिंतामणि बिसरौं री। ऐसीबातकहै जो कोऊ ताके संग लरौं री॥ आरजपंथ चले कहा सरिहै श्यामहि संग फिरौं री॥ सूरश्याम जो आप स्वारथी दरशन नैन भरौं री॥७२॥ राग आसावरी॥ चूकपरी मोते मैं जानी मिलैं श्याम बकसाऊं री। हाहा करि दशननि तृण धरिधरि लोचनजलनि ढराऊं री॥ चरणगहौंगाढेकरिकरसों पुनिपुनि शीश छुवाऊं री। मुख चितवौं फिरि धरणि निहारौं ऐसी रुचि उपजाऊं री॥ मिलौंधाइ अकुलाइ भुजनिभरि उरकी तपति जनाऊं री। सूर श्याम अपराध क्षमहु अब यह कहिकहि जु सुनाऊं री॥७३॥ राग गौरी॥ माई मेरो मन पियसों यों लग्यो ज्यों सँग लागी छांहि। मेरो मनपियके जीव बसतहै पियको जीव मोमें नाँहिं॥ ज्यों चकोर चंदाको निरखै इतउत दृष्टि न जाहिं। सूरश्याम बिनु छिनछिन युगसम क्योंकरि रैनिबिहाहिं॥७४॥ राग जयतश्री॥ उनको यहअपराध नहीं। वै आवतहैं नीके मेरे मैंही गर्व कियो तनहीं॥ मेरे गर्वते सह्यो कछू नहिं एक भई तनुदशा नहीं। सुख मिटिगयो हिये दुखपूरन अवरैहों इनहीं बिनहीं॥ अब जो दरश देहिं कैसेहू फिरत रहौं सँगहीं सँगहीं। सूरदास प्रभुको हियरेते अंतर करौं नहीं छिनहीं॥७५॥ राग बिलावल॥ अबके जो पिय पाऊं तो हिरदय मांझ दुराऊं। हरिको दरशन पाऊँ अभूषण अंग बनाऊं॥ ऐसोकोजो आनि मिलावै ताहि निहाल कराऊं। जो पाऊं तौ मंगल गाऊं गोतिनचौक पुराऊं॥ रसकरि नाचौं गाऊं बजाऊं चंदन भवन लिपाऊं। जो मोहन वश मेरे होवहिं हीरालाल लुटाऊं॥ मणि माणिक न्यवौछावरि करिहौं सो दिन सुदिन कहाऊँ। केनकि करनवेलि चम्मेली फूलन सेज बिछाऊँ॥ तापर पियको पौढाऊं मैं अचरा वायु डुलाऊं। चंदन अगर कपूर अरगजा प्रभुके खौरि बनाऊं॥ जो बिधना कबहूं यह करतो कामको काम पुराऊं। सूर श्याम बिनदेखे सजनीकैसे मन अपनाऊं॥७६॥

॥राग सांकरण॥अरी मोहिं पिव भावै को ऐसी जो आनि मिलावै। चौदह विद्या प्रवीन अतिही सुंदर नवीन बहुनायक कौन मनावै ॥ नेक दृष्टि भरि चितवै मो बिरहिनिको माई कामद्वंद्व बिरह तपनि तनुते बुझावै । सूरदास प्रभु मोको करहिं कृपा अब नितप्रति विरह जगावै॥॥७७॥राग बिलावल॥धीरज करि री नागरी अब श्यामहिं ल्याऊं। अतिव्याकुल जिनि होहि री सुख अबहिं कराऊं॥ देखि दशा सहि नहिं सकी मनहीं अकुलानी । मैं राधाकी प्रिय सखी यह कहि पछितानी॥ झुरि झुरि पियरी भईहै यह तौ सुकुमारी। ऐसी चूक परीहै मोपै कहा करों गिरधारी ॥ प्यारीको मुख धोइके पट पोंछि सँवारयो। तरक बात बहुतै कही कछु सुधि न सँभारयो ॥ सावधान करिकै गई ल्याऊं गिरिधरको। सूर तहां आतुर गई पाये हरिवरको ॥७८॥ राग टोडी॥ललिता मुख चितवत मुसुकाने। आपु हँसी पिय मुखअवलोकत दुहुँनिमनहिंमन जाने॥ अति आतुर धाई कहाँ आई काहे वदन झुराये। बूझतहैं पुनिपुनि नँदनंदन चितवत नैन चुराये॥ तब बोली वह चतुर नागरी अचरजकथा सुनाऊं। सूरश्याम जोचलौ तुरतही नैननिजाइदिखाऊं॥७९॥राग सारंग॥अद्भुत एक अनूपम बाग । युगल कमलपर गज क्रीडतहै तापर सिंह करत अनुराग॥हरिपर सरवर सरपर गिरिवर गिरिपर फूले कंज पराग । रुचिर कपोत बसे ता ऊपर ता ऊपर अमृत फल लाग ॥ फलपर पुहुप पुहुपपर पल्लव तापर शुक पिक मृग मद काग । खंजन धनुष चंद्रमा ऊपर ता ऊपर इक मणिधर नाग ॥ अंग अंग प्रति औरऔर छबि उपमा ताको करतनत्याग।सूरदास प्रभु पिवहु सुधारसमानोअधरनिकेबडभाग८०राग रामकली॥पद्मिनिसारँग एक मझारि । आपहि सारंग नाम कहावै सारंग बरनी वारि॥ तामेंएक छबीलो सारंग अधसारंग उनहारि । अध सारँग पर सकलइ सारंग अधसारंग विचारि॥तामहिं सारंग सुत शोभित है ठाढी सारंग संभारि।सूरदास प्रभु तुमहूंसारंग बनी छबीली नारि॥८१॥राग रामकली॥ बिराजतअंग अंग इति बात। अपने कर करि धरे बिधाता पट खग नव जलजात ॥ द्वै पतंग शशि बीस एक फनि चारि विविधरँग धात । द्वै पिक बिंब बतीस वज्रकन एक जलजपर थात ॥ इक सायक इक चाप चपल अति चिबुकमें चित्त बिकात।दुइ मृणाल मातुल ऊभे द्वै कदलिखंभ बिनपात॥ इक केहरि इक हंस गुप्त रहैं तिनहिं लग्यो यह गात। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको अति आतुर अकुलात॥८२॥राग सारंग ॥आजु मैं देखी एक बाम नईसी। ठाढी हुती अंगनाद्वारेबिधना रची किधौं मदनमई सी ॥ हमतन चितै सकुचि अंचल दै वारिज वदन परि वारि वईसी ।मनौ द्वै ढंग चले हैं दृगनिलै ललित वलितहरि मनहिं नई सी॥जनु पावसते निकसि दामिनी नेक दमकि दुरि ओट लई सी । भोजन भवनकछू नहिं भावत पलकन मानो करत खई सी ॥ यह मूरति कबहूँ नहिं देखी मेरी अँखियन कछु भूल भई सी । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको मनमोहन मोहनी अचई सी॥८३॥राग सारंग॥बरणौंश्रीवृषभानुकुमारी। चितदै सुनहु श्यामसुंदरछबि रति नाहीं अनुहारी ॥ प्रथमहिं सुभग श्याम वेनीकी शोभा कही बिचारि। मनो फनिंग रह्यो पीवनको शशि मुख सुधा निहारि ॥ कहिये कहा शीश सेंदुरको कितौ रही पचिहारि । मानो अरुन किरनि दिनकरकी पसरी तिमिर विदारि ॥ भ्रुकुटी निकट निकट नैननिके राजत अति वरनारि । मनहुँ मदन जग जीति जेर करि राख्यो धनुष उतारि ॥ ताबिच बनी आड केसरिकी दीन्ही सखिन सँवारि।मानो बंदि इंदुमंडलमें रूप सुधाकी पारि॥ चपल नैन नासाबिचशोभा अधरसुरंगसुठार।मनोमध्य खंजन शुक बैठ्यो लुबध्यो बिंबबिचारि॥

तरिवन सधर अधर नकबेसरि चिबुक चारि रुचिकारि।कंठसरीदुलरी तिलरीपरनहिंउपमा कहुँ चारि ॥ सुरंग गुलाब माल कुचमण्डल निरखत तन मन वारि। मानों दिशि निर्धूम अग्निके तप बैठी त्रिपुरारि॥जो मेरो कृत मानहु मोहन करे ल्याऊं मनुहारि। सूररसिक तबहीपैबदिहौं मुरली सकौ सँभारि॥८४॥राग मलार॥लाल उनि सुनी मनोहर वंसी। नहिं संभार अजहुँ युवतिन बल मदन भुवंगम डंसी॥ कैसे ल्याऊं संगीत सरोवर मगनभई गतिं हंसी। अंकेउटरि चलहु आपुनपै मेलि भौंह दृढ फंसी॥वृंदावनकी माल कलेवर लता माधुरी गंसी। सूरदास प्रभु सबसुख दाता लै भुजबीच प्रशंसी॥८५॥राग धनाश्री॥मनसिज माधव मानिनिहि मारिहै।त्रोटि परलवअरतपरमौ अरनिरखिनिमुखको तारिहै॥ किसलय कुसुम कुंतसम सायक पायक पवन बिचारिहै।द्रुम वल्ली यह दीप युग बनी जनति अनल त्रिय जारिहै॥ भँवर जु एक चक्रत चामरकर भरि बंडुप खग डारिहै। पुनि पुनि बाज साज सुनि सुंदरि त्रसित तिनहिं देखे मारिहै॥ बिरह विभूति बढी वनितावपु शीश जटा बनवारिहै। मुख शशि शेष रह्यो सित मानौं भई तभौं उनहारिहै॥ जोनइते-पर चलहु कृपानिधि तो वह निजकर सारिहै। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि तुमतजि काहिपुका-रिहै॥८३॥राग सारंग॥ सिवन अवधि सुंदरी वधो जिन। मुकुतामांग अनंगगगनमें नवसतसाजे अर्थ श्याम घन। भाल तिलक उडुपति न होय इह कबरिग्रथित अहिपति न सहसफन। नहिं विभूति दधिसुत न कंठजड इह मृगमद चंदनचरचित तन॥नहिं गजचर्मसे असितकंचुकीदेखि बिचारि कहां नंदीगन। सूर सुहरिअबमिलहुकृपाकरि बरवससरमकरतहठ हमसन८७राग सारंग॥नेककुंज कृपा करि आइये। अतिरिस कृशह्वैरही किशोरी करि मनुहारि मनाइये॥ कर कपोल अंतर नहिं पावत अतिउसास तन ताइये।छूटेचिहुरवदन कुँभिलानी सुहथसँवारिबनाइयो॥इतनो कहागाँठि-को लागत जो बातनि यशपाइये।रूठेहिआदरदेतसयाने इहैसूरजसगाइये८८राग धनाश्री॥ प्रियमुख देखो श्याम निहारि। कहि न जाइ आननकी शोभा रही बिचारि बिचारि॥क्षीरोदकघूँघटहातो कारि सन्मुख दियो उघारि। मनो सुधाकर दुग्धसिंधुतेकढ्यो कलंक पखारि॥मुक्तामांग शीश-पर शोभित राजत इहि आकारि।मानो उडगन जानि नवल शशि आये करन जुहारि॥भाललाल सेंदूर बिंदुपर मृगमद दियो सुधारि।मनो बंधूक कुसुमऊपर अलि बैठो पंखपसारि॥ चंचलनैन चहुंदिश चितवत युगखंजन अनुहारि। मनहुँ परस्पर करत लराई कीर बचाई रारि॥ बेसरिके मुकतामें झाईं बरन बिराजत चारि। मानो सुरगुरु शुक्र भौम शनि चमकत चंद्र मझारि॥ अधर बिंब दशननकी शोभा दुति दामिनि चमकारि। चिबुक बिंदु बिच दियो बिधाता रूपसींव निरवारि॥ ज्योनि पुंज पटतर देवेको दीजे कहा अनुहारि। जनु युग भानु दुहूँ दिश उगए तम दुरि गयो पतारि॥ लाल सुमाल हार हीरावलि सखियन गुही सुढारि। मनहुँ धुंई निर्धूम अग्निपर तप बैठ त्रिपुरारि॥ सन्मुख दृष्टि परे मनमोहन लजित भई सुकुमारि। लीन्ही उमँगि उठाइ अंकभरि सूरदासबलिहारि॥८९॥राग नट॥भुजभरि लईहृदय लाइ। बिरहव्याकुल देखिबाला नयन दोउ भरि आइ॥ रैनि बासर बीचहीमें दोउ गए मुरुझाइ। मनो वृक्ष तमाल बेली कनक सुधा सिंचाइ॥ हरष डहडह मुसुकि फूले प्रेमफलनि लगाइ॥काम मुरछनि बेलि तरुकी तुरतही बिसराइ॥ देखि ललिता मिलनि वह आनंद नहीं समाइ।सूरके प्रभु श्याम श्यामा त्रिविध ताप नशाइ॥९०॥राग रामकली॥ललिता प्रेमविवश भई भारी।वह चितवनिवहमिलनि परस्परअतिशोभा बलहारी॥यकटक अंगअंग अवलोकति उत वश भए बिहारी। वह आतुर छबि लेत देति वै

इकते इक अधिकारी ॥ ललिता संग सखिन शोभा सखि देख्यो छबि पियप्यारी।सुनहु सूर जो अग्नि होम घृत ताहूते यह न्यारी॥९१॥राग धनाश्री ॥देखिसखी राधा अकुलानी।ऐसे अंगअंग छबि लूटत मिलेहुँ श्यामको नहीं पत्यानी ॥ जैसे तृषावंत जलअचवत वहतौ पुनि ठहरात।यह आतुर छबि लै उर धारति नेक नहीं तृपितात॥ जो चकोर इकटक निशि चितवत याकी सरि सोउ नाहिं । ज्यों घृतहोम वह्निकी महिमा सूरप्रगट यामाहीं॥९२॥राग केदारो॥ यद्यपि राधिकाहरिसंग-हावभाव कटाक्ष लोचन करत नानारंग॥हृदय व्याकुल धीर नाहीं वदन कमल विलास । तृषामें जल नाम सुनि ज्यों अधिक अधिकहि प्यास ॥ श्यामरूप अपार इत उत लोभ पुट विस्तार । सूर मिलनन लहत कोऊ दुहुँनि बल अधिकार॥९३॥राग केदारो॥राधेहि मिलेहुँ प्रतीत न आवति॥ यदपिनाथ विधुवदन विलोकति दरशनको सुख पावति ॥ भरिभरि लोचन रूप परमनिधि उरमें आनि दुरावति । बिरहबिकल मति दृष्टि दुहूँ दिशि सचि सरधा ज्यों धावति॥ चितवत चकित रहति चितअंतर नैननिमेष न लावति । सपनो आहि कि सत्य ईश इह बुद्धि वितर्क बनावति ॥ कबहुँक करत बिचार कौन हौं को हरि केहि यह भावति। सूर प्रेमकी बात अटपटीमनतरंगउपजा-वति॥९४॥रागरामकली ॥देखेहुँ अनदेखेसे लागत । यद्यपि करत रंग भरे एकहि इकटक रहे निमिष नहिं त्यागत॥इत रुचि दृष्टि मनोज महासुख उत शोभागुण अमित अनागत । बाढ्यो बैर कर्ण अर्जुन ज्यों दुइमहँ एक भूलि नहिं भागत ॥ उत सन्मुख सो सावधान सजि इत सनाह अँग अँग अनुरागत । ऐसे सूर सुभट ए लोचनअधिकौअधिक श्याम सुखमागत॥९५॥ राग कान्हरो ॥ देखियत दोउ अहँकार परे । उत हरिरूप नैन याके इत मानहु सुभट अरे ॥ रुचिर सुदृष्टि मनोज महासुख इन इत एक करे । उन उत भूषणभेद विविध रचि अँग अँग धनुष धरे ॥ ए अतिरतिरणरोप न मानत निमिष निषंग झरे। बाहु व्यथहि न वदत पुलकारुह सब अंग सरस-चरे ॥ वे श्री ए अनुराग सूर सजि छिनुरवढत खरे । मानहु उमँगि चल्योचाहतहै सागरसुधाभरे ॥९६॥राग बिहागरो॥नखशिखते अँगअंग रूप छबि देखिदेखिनैनना न अघाने।निशिअरु दिन,यक टकही राखे पलक लगाइ न जाने॥छबितरंग अगनित सरिताएँ जलनिधि लोचन तृप्ति न माने। सूरदास प्रभुशोभाको अति लालिची रहेललचाने॥९७॥राग बिभास॥ललिता संग सखिनको लीन्हें। दंपतिसुख देखत अति भावत एकटक लोचन दीन्हें॥प्यारी श्यामअंगकी शोभा निदरे देख्योइ चाहति । उत नागर नागरिनैननिको निदरि रूप अवगाहति ॥ उत उदार शोभाकी सींवाँ इत लोभहि नहिं पार।सूर श्याम अँगअँगकी शोभा निरखत बारहिंबार॥९८॥राग गुंडमलार॥निदरि अंग छबि लेति राधा । यह कहति किंतिक शोभा करेंगे श्याम मेटिहौं आज मन सबै साधा॥ उतहि हरि रूपकी राशि नहिं पार कहुँ दुहुँनि मन परस्पर होड कीन्हों । इतहि लुब्धे वै उतहि उदार-चित दुहुँन बल अंत नहिं परत चीन्हों ॥ जुरे रणवीर ज्यों एकते एक सरस सुरत कोउ नहीं दोउ रूप भारी।सूर स्वामीस्वामिनीराधिकासरस निरस कोउ नहीं लखिलईनारी॥९९॥राग मारू॥ रुंधे रति संग्राम खेत नीके । एकते एक रणवीरजोधा प्रबल सुरत नहिं नेक अति सबल जीके॥भौं-ह कोदंड शर नैन जोधानुकी काम छूटनि कटाक्षनि निहारें । हँसनि द्विज चमक करिवरनि लोहन झलक नखन छत घात नेजा सँभारें॥पीतपट डारि कंचुकी मोचित करनि कवच सन्ना-ह ए छुटे तनते । भुजा भुज धरत मनो द्विरद शुंडनि लरत उर उरनि भिरे दोउ जुरे मनते ॥ लटकि लपटानि मानो सुभट लरिपरे खेत रति सेज चुंबितान कीन्हों । सूर प्रभु रसिक

प्रिय राधिका रसिकिनी कोकगुन सहित सुख लूटिलीन्हों ॥ १७०० ॥राग नट ॥किशोरी अँग अँग भेंटी श्यामहिं । कृष्ण तमाल तरलभुज शाखा लटकि मिली जैसे दामहिं॥ अचरज एक लतागिरि उपजै सोउ दीने करुणामहिं। कछुक श्यामता सांवल गिरिकी छायो कनकअगामहिं॥ गिरिवर धरन सुरति रतिनायक रति जीते संग्रामहिं । सूर कहै ये उभय सुभटबिच क्योंजु बसै रिपु कामहिं॥ राग नट॥रसना युगल रस निधि बोलि।कनक बेलि तमाल अरुझी सुभुज बंधन खोलि ॥ भृंगयूथ सुधाकरनि मनो घनमें आवत जात । सुरसरीपर तरनितनया उमँगि तट न समात॥कोकनदपर तरनि तांडव मीन खंजन संग।करति लाजै शिखर मिलिकै युग्म संगम रंग॥ जलदते तारा गिरत मनो परत पयनिधि माहिं । युग भुजंग प्रसन्नमुख ह्वै कनकघट लपटाहिं ॥ कनक संपुट कोकिलारव बिवश ह्वै दे दान। बिकच कंजअनारलगि अधर लसि करतपयपान दामिनी थिर घनघटा चर कबहुँ ह्वै एहि भांति । कबहुँ दिन उद्योत कबहूं होत अतिकुहुराति ॥ सिंह मध्य सनाह मणिगण सरस सरके तीर । कमल मनु बिननाल उलटै कछुक तीक्षन नीर॥ हंस सारस शिखर चढि दोउ करत नाना नाद। मकर निजपद निकट बिहरत मिलन अतिअह-लाद॥प्रेम हित करि क्षीरसागर भई मनसा एक । श्याम मणिके अंग चंदन अमीके अभिषेक ॥ सूरदास सखीसभा मिलि करत बुद्धि बिचार । समय शोभा लगि रही मनो सूमको संसार ॥ राग रामकली ॥शोभा सुभग आनन ओर।त्रासते तनु त्रसित तिरछेचितैदेतअकोर ॥निरखिसन्मुख कियो चाहत बदन बिधुकी जोर। तुलाबिच लै केश तौले गरुअ आनन गोर॥ दरशपति रुचि मुदित मनसिज चपल दृग दृग कोर । कोस क्रीडत मीन मानों नीर नीरज भोर ॥ श्यामसुंदर नैन युग बर झलक कज्जल कोर।सुधा सर संकेत मानो कूप दानव ओर ॥ श्रवण मणि ताटंक मंजुल कुटिल कुंतल छोर । मकर संकट काम वापी अलक फंदनि डोर ॥ चिकुर अध नव मोति-मंडल तरल लट तृण तोर ।जनु विध्वंसित ब्यालबालक अमीकी झकझोर। श्रमस्वेद सीक-र गंड मंडित रूप अंबुज कोर।उमँगि ईषद श्रम तज्यो पीयूष कुंभ हिलोर॥ हँसत दशननि चमक बिज्जुल लसित कठिन कठोर । मुदित मधुपन बिंदगन मकरंद मध्य न थोर ॥ निरखि शोभा समर लज्जित इंदु भयो भ्रमभोर।सूर धन्य सुवन किशोरी धन्यनंदकिशोर॥।॥राग बिलावल॥ धन्य कान्ह धनि राधा गोरी । धनि वह भाग सुहाग धन्य वह धन्य नवल नवला नव जोरी ॥ धनि यह मिलनि धन्य यह बैठनि धनि अनुराग नहीं रुचि थोरी। धनि यह अरस परस छबि लूटनि महाचतुर मुख मोरे भोरी ॥ प्यारी अंग अंग अवलोकति पिय अव-लोकत लगत ठगोरी । सूरदास प्रभु रीझि थकित भए नागरि एर डारत तृण तोरी ॥ ॥राग धनाश्री॥ नागरि छबिपर रीझत श्याम । कबहुँक वारतहैं पीतांबर कबहुँक वारतमुकुतादाम॥ कबहुँक वारतहैं कर मुरली कबहुँक वारत मोहन नाम । निरखि रूप मुख अंत लहत नहिं तनु मनु वारत पूरणकाम ॥ बारंबार सिहात सूर प्रभु देखिदेखि राधासी वाम। इनको पलकओट नहिं करिहौं मन इह कहत वासरहु याम॥राग बिलावल॥श्यामनिरखिप्यारीअंगअंग।सकुचिरहतमुखतन नहिं चितवत जेहि बश रहत अनंत अनंग ॥ चपल नैन दीरघ अनियारे हावभावनानामतिभंग॥ वारों मीन कोटि अंबुजगण खंजन वारत कोटि कुरंग ॥लोचन नहिं ठहरात श्यामके कबहुँअंग नैना मुख रंग।सूरदास प्रभु योंप्यारीबश ज्यों बशडोर फिरत सँग चंग॥ राग टोडी॥श्याम भएराधा बश ऐसे । चातक स्वाति चकोर रहत ज्यों चक्रवाक रवि जैसे ॥ नाद कुरंग मीन जलकी गति

ज्यों तनुके बस छाया। यकटक नैन अंगछबि पोहै थकित भए पति जाय॥उठे उठत बैठे बैठ-तहैं चले चलत सुधि नाहीं। सूरदास बडभागिनि राधा समुझि मनहिं मुसुकाहीं॥ राग आसावरी॥ निरखि श्याम प्यारीअंग शोभा मन अभिलाष बढावतहैं। प्रिया अभूषण मांगत पुनिपुनि अपने अंग बनावतहैं॥ कुंडलतट तरिवन लै साजत नासा बेसरि धारतहैं॥ बेंदी भाल मांग शिर पारत बेनी गूँथि सँवारतहैं॥प्यारीनैननिको अंजन लै अपने लोचन अंजतहैं। पीतांबर ओढनीशीशदे राधाको मनरंजतहैं॥कंचुकि भुजनि भरत उर धारत कण्ठ हमेल भ्रजावतहैं। सूर श्यामललचतिय तनुपर करि शृंगार सुख पावत हैं॥राग नट॥श्यामा श्याम छबिकी साध। मुकुट मंडल पीतपटछबि देखि रूप अगाध॥प्रिया हाहा करति पुनि पुनि देहुप्रीतम मोहि। अंग अंग सँवारि भूषण रहति वह छबि जोहि॥ काछि कछनी पीत पटु कटि किंकिनी अतिशोभ। हृदय वनमाला बनावत देखि छबि मन लोभ॥ श्रवण कुंडल धारि शोभा शीश रचि श्रीखंड। सूर श्याम सुहागिनी रुचि कनक कर लै दंड॥राग रागिनी कर्णाटकी॥ श्रीगोपाललालजी बन्सीनेकमैंपाऊं।हो मदनगुपाल तुम्हारी मुरलीमैं नेकु बजाऊं॥ टेक॥ मुरलीबजाऊं रिझाऊं गिरिधर गाऊं आज सुनाऊं। जेइ जेइ तान तुमसी गीतगावत तेइ कर्णाटी गौरी मैं गाय सुनाऊं॥ हो०॥ तहां लगि गान गाऊं मोहन जहां लगि सात सुरन मैं पाऊं। सुरन विमान थकित करि राखौं कालिंदी थिर नीर बहाऊं॥हो०॥ बेनी शीशफूल पहिरो हरि मैं शिर मुकुटबनाऊं। तुम वृषभानुसुता है बैठो मैं नंदलाल कहाऊं॥ हो०॥ तिहारो आभूषणमें पहिरौंअपनोतुमहिंपहिराऊं।तुम मानिनिको मान करि बैठो मैं गहि चरण मनाऊं॥ हो०॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको भक्ति भाव नीके करि पाऊं। कीजे कृपा अनेक अनुचर पर अनुपम लीला गाऊं॥ हो०॥ राग नट॥ तिहारी लाल मुरली नेक बजाऊं। जो जिय होत प्रीति कहिबेकी सो धरि अधर सुनाऊं॥ जैसी तान तुम्हारे मुखकी तैसिय मधुर उपाऊं। जैसे फिरत रंध्र मगु कँगुरी तैसे मैंहुं फिराऊं॥जैसे आपुअधर धरि फूंकत मैंअधरनि परसाऊं। हाहाकरति पाय हौं लागति बांस बँसुरिया पाऊं॥ सारंग नट पूरवी मिलिकै राग अनूपम गाऊं।तुम्हरे भूषण मोको दीजे अपने तुमहि बनाऊं॥ तुम बैठो दृढ मान साजिकै मैं गहि चरण मनाऊं।तुम्ह राधेहौं माधोई माधो ऐसी प्रीति जनाऊं॥ यह अभिलाष बहुत मेरे जिय नैननि इहै देखाऊं। सूरश्याम गिरि-धरन छबीले भुजभरि कंठ लगाऊं॥ राग नट॥ हरिजी मुरली तुम्हैं सुनाऊं। तुम सुरपुरवोप्राण-नाथ प्रभु हौं अँगुरियन चलाऊं॥ मधुरे सुर गति राग रागिनी भलीतान उपजाऊं। जेहि जेहि भांति रिझहुँ नँदनंदन तेहि तेहि भांति रिझाऊं॥ अंश बाहु धरि करिविक्रम ज्यों ते मनु सुखहौं पाऊं। सूरज अटक्यो मन चलैन पगु मन अभिलाष बढाऊँ॥ राग नट॥ प्यारी कर बांसुरी लई। सन्मुख होइ तुम सुनहु रसिक पिय ललित त्रिभंग भई॥ उठन राग रागिनी तरंगन छिनु छिनु उपजि नई। आलबाल नँदलाल श्रवनवर जनु मोहनी वई॥ नमित सुधाकर बदन अमित छबि मनमोहन चितई। मानहुँ मत्त चकोर मेचक मृग तनु सुधि बिसरिगई॥ कटि पीतांबरछाइ नाह-को छलबल कै रिझई। सूर सखी हँसि कमलनैन कह:राधे अंक दई॥राग गूजरी॥ मुरली लई करते छीनि। ता समय छबि कही जाति न चतुर नारि नवीन। कहति पुनि पुनि श्याम आगे मोहि देउ सिखाइ। मुरलिपर मुख जोरि दोऊ अरस परस बजाइ॥ कृष्ण पूरत नाद उछरत प्यारी रिसकरि गात। वार वारहि अधर धरि धरि बजत नहिं अकुलात॥ प्रिया भूषण श्याम

पहिरत श्यामभूषण नारि। सूर प्रभु करि मानु बैठे त्रिय करति मनुहारि ॥ राग बिलावल ॥ कहति नागरी श्यामसों तजौ मानु हठीली । हमते चूक कहा परी त्रिय गर्व गहीली ॥ हँसतहिंमें तुम रिस कियो कहा प्रकृति तुम्हारी । बार बार कर धरतिहै कहिकहि सुकुमारी ॥ वृथा मान नहिं कीजिये शिर चरणन धारति । आनन आनन जोरिकै पिय मुखहि निहारति ॥ निठुर भई हौ लाडिली कबके हम ठाढे । तुम हमपर रिसि करतहौ हमहैं तुव चाढे ॥ श्याम कियो हठ जानिकै इक चरित बनाऊं । सुनहु सूर प्यारी हृदय रस बिरह उपाऊं ॥ राग बिलावल ॥लाल निठुरह्वै बैठि-रहे । प्यारी हाहा करति न मानत पुनि पुनि चरण गहे ॥ नहिं बोलत नहिं चितवत मुखतन धरणी नखन करोवत ।आपु हँसति पुनि पुनि उर लागत चकित होत मुख जोवत ॥ कहा करत ए बोलत नाहीं पिय यह खेल मिटावहु । सूर श्याम मुख कोटि चंद्रछबि हँसिकै मोहिं देखावहु॥राग धनाश्री ॥ नागरि हँसति हृदय डर भारी। कबहुँ अंक भरि लेति उरजबिच कबहुँ कर-ति मनुहारी ॥ मान करत नीके नहिं लागे दूरिकरौ यह ख्याल । नेक नहीं चितवत राधा तन निठुर भए नँदलाल ॥ शीश धरति चरणनि लै पुनि पुनि त्रियको रूप निहारत । सूरदास प्रभु मान धर्यो दृढ धरणी नखनबिदारत॥राग गुंड॥निरखित्रियरूप पिय चकित भारी। किधौंवेपुरु-ष मैं नारिकी वै नारि मैंहिं हौं पुरुष तनु सुधि बिसारी॥आपतन चितै शिर मुकुट कुंडल श्रवन अधर मुरली माल बन बिराजै। उतहि प्रियरूप शिर मांग बेनी सुभग भाल बेंदी बिंदमहाछाजै ॥ नागरी हठ तजौ कृपाकरि मोहिं भजौ परी कह चूक सो कहो प्यारी । सूर प्रभु नागरी रसबिरह मगन भई देखि छबि हँसत गिरिराजधारी ॥ राग धनाश्री॥ निरखत पियप्यारीअंगअंग बिरहशोभा। कबहूँ पियचरण परति कबहूँ भुज अंक भरति कबहूँ जिय डरति वचन सुनिबेकी लोभा ॥ कबहुँ कहति पियसों पिय कबहुँ कहति प्यारी हो हाहा कारि पाँइ परतिविकल भई बाला। कबहुँउठति कबहुँ बैठ पाछे ह्वै रहति कबहुँ आगे ह्वै वदन हेरि परी बिरह ज्वाला ॥ काहे तुम कियो मान बोले बिन जात प्रान दंपति हैं संग दशा ऐसी उपजाई । रीझे प्रिय सूर श्याम अंकम भरि लई बाम बिरह द्वंद्व मेटि हरष हृदय उपजाई ॥ राग धनाश्री ॥ प्रिया पिय लीन्ही अंकमलाइ। खेलतमें तुम बिरह बढायो गई कहा बितताइ ॥ तुमही कह्यो मान करिबेको आपुहि बुद्धि उपाइ । काहे विवश भई बिन कारण ऐसी गई डराइ ॥ सुन प्यारी हम भाव बतायो अंतर गए जनाइ।बारंबार अलिंगन दीन्हो अबहिं रही मुरझाइ ॥ सींची कनकलता सूरज प्रभु अमृत वचन सुनाइ । अति सुखदे दुखको बिसरायो राधारवन कन्हाइ॥राग गुंडमलार ॥ श्याम तनु पिया भूषण बिराजै।कनक-मणि मुकुट कुंडल श्रवन बनमाल अधर मुरली धरे नारि छाजै॥ निरखि छबि परस्पर रीझे दोउ नारि वर गयो तजि बिरह उर प्रेम पागे।सूरप्रभु नागरी हँसति मन मन रसति बसत मन श्यामके बड भागे॥ राग नट॥नागरि भूषण श्याम बनावत।श्रीनागर नागरि अँगशोभा कियो निरखि मन भावत ॥ श्यामा कनक लकुट कर लीन्हे पीतांबर उर धारे । उत गिरिधर नीलांबर सारी घूँघट वोट निहारे ॥ वचन परस्पर कोकिल वाणी श्याम नारि पति राधा।सूर स्वरूप नारि पति काछे पति नारी तनु साधा ॥राग नट ॥नीके श्याम मान तुम धार्यो।तुम बैठे दृढमान ठानि मैं देख्यो मान तुम्हारो॥ यह मन साध बहुतही मेरे तुम बिन कौन निवारे।नागरि पियतन अपनी शोभा बारहि बार निहारे ॥ बेनी मांग भाल बेंदी छबि नैननि अंजन रंग । सूरनिरखि पिय घूँघटकीछबि पुलक नमावति अंग॥राग धनाश्री ॥कुंजबनगमनदंपतिबिचारै।नारिको वेशकरिनारिकोमनहिहरि

मुकुर लै भावती छबि निहारै ॥ भामिनी अंग वह निरखि नटवर भेष हँसतही हँसत सब मेटि डारे । सहज अपनो रूप धरो मन भावती और भूषण तुरत अंगधारे ॥ त्रियाकोरूपधरिसंगराधा कुँवरि जात ब्रज खोरि नहिं लखत कोऊ । सूर स्वामीस्वामिनी बने ऐकसे कोउ न पटतरअरस परस दोऊ ॥ राग गौरी॥ नँदनंदन त्रिय छबि तनु काछे। मनो गोरी साँवरी नारि दोउ जातसहजमें आछे ॥ श्याम अंग कुसुँभी नई सारी फलगुंजाकीभांति । इत नागरि नीलांबर पहिरेजनु दामिनि घन कांति ॥ आतुर चले जात बनधामहि अतिमन हरष बढाए । सूर श्याम वा छबिको नागरि निरखतिनैन चुराए ॥ राग कान्हरो ॥ मनही मन रीझतिहै राधा बारबार पिय रूप निहारै । निरखि भाल बेंदी सेंदुरकी वा छबि पर तन मन धन वारै ॥ यह मन कहति सखी जिन देखैं बूझेपर कहा कैहौं । तिहूं भुवन शोभा सुखकी निधि कैसे उनहि दुरैहौं ॥ पग जेहरि बिछिअनकी झमकनि चलत परस्पर बाजत । सूर श्याम श्यामा सुख जोरी मणि कंचन छबि लाजत ॥ राग कल्याण ॥ श्यामा श्याम कुंजबन आवत । भुज भुजकंठ परस्पर दीन्हें यह छबि उनहीं पावत ॥ इततें चंद्रावली जात ब्रज उतते ए दोउ आए । दूरिहिते चितवत उनही तन इकटक नैन लगाए ॥ एक राधिकादूसरिकोहैयाको नहिं पहिचानौं । ब्रज वृषभानुपुरा युवतिनको इकइक करि मैं जानौं ॥ यह आई कहुँ और गाँवते छबि सांवरी सलोनी । सूरआजु इह नई बतानी एकै अंग न विलोनी॥ ॥राग सोरठ॥राधा सकुचि श्याम मुख हेरति। चंद्रावली देखिकै आवति ब्रजहीकोपियफेरति ॥जाहु जाहु मुखते कहिभाषति करते कर नहिं छूटति। उतहि सखी आवत सकुचानी इतहि श्याम सुख लूटति ॥ दुखसुख हरष कछू नहीं जानति श्याम महा रसमाती।सूरउतहि चंद्रावलिइकटक उनहींके रँग राती ॥ राग गौरी॥यह वृषभानुसुता वह को है । याकी सरि युवतीकोउनाहींयहत्रिभुवनमनमोहै॥ अतिआतुर देखनको आवति निकट जाय पहिचानों । ब्रजमें रहति किधौं कहुँ औरै बूझेते तब जानों ॥ यह मोहनी कहांते आई परम सलोनी नारि । सूर श्याम देखत मुसुकानी करीचतुरई भारि ॥ राग गौरी ॥ इनते निधरक और न कोइ । कैसी बुद्धि रचीहै नोखी देखी सुनी न होइ ॥ इह राधासों हाथबिधाता बुद्धि चतुरई ठानी। कैसे श्याम चुराइ चली लै अपने भूषण ठानी ॥ और कहा इनिको पहिचाने मोपै लखे न जात। सूरश्याम चंद्रावलि जाने मनहीं मन मुसुकात॥ राग कान्हरो ॥ सकुच छांडि अब इनहि जनाऊं । एतौ चले आपने काजहि मैंकाहे न समझाऊं ॥ मनहीं मनमें जीति जाहिंगे जानि बूझि निदराऊं। यह चतुरई काछिके आये सो अब प्रकट देखाऊं ॥ बडे गुणज्ञ कहावत दोऊ इनको लाज लजाऊं । सूर श्याम राधाकी करनी महिमा प्रगट सुनाऊं ॥राग सारंग॥कहिराधा ये कोहै री।अति सुंदरि साँवरी सलोनी त्रिभुवन जन मन मोहैरी॥ और नारि इनकी सरि नाहीं कहो न हमतन जोहै री।काकी सुता बधू है काकी काकी युवती धौं है री॥ जैसी तुम तैसी हैं एऊ भली बनी तुमसौं है री ।सुनहु सूर अति चतुर राधिका एई चतुरनीकी गौंहै री ॥राग ईमन ॥ मथुराते ये आईहैं। कछु सम्बन्ध हमारी इनसों ताते इनहि बुलाई हैं॥ललिता संग गई दधि बेचन उनही इनहिं चिन्हाई है । उहैं सनेह जानि रीसजनी भवनआजुहमआई है ॥ तबहींकी पहिचान हमारी ऐसी सहज सुभाई है । सूर मोहिं देखन इहां आवत आपु संग उठि धाई है ॥ राग सोरठ ॥इनको ब्रजही क्यों नबुलावहु । की वृषभानुपुरा की गोकुल निकटहि आनि बसावहु ॥ वोऊ नवल नवल तुमहू हो मोहनको दोउ भावहु।मोकोदेखिकियोअतिघूंघट काहे न लाज छुडावहु ॥ यह अचरज देख्यो नहिं कबहूं युवतिहि युवति दुरावहु । सूर सखी

राधासों पुनि पुनि कहति जु हमहिं मिलावहु॥ राग हमीर॥ सांवरे तनु कुसुंभी सारी सोहत है नीकी री। मानो रतिपति सँवारि बनी रवनी जीकी री॥ राधाते अतिहि सरस श्याम देखिपावै री। ऐसी यह नारि और नारि मन चुरावै री॥ घूंघट पट बदन ढांकि काहे इन राख्यो री। चितवहु मोतन कुमारि चंद्रावलि भाष्यो री॥आपुहि पट दूरि कियो तरुणिबदन देखैरी।मनहींमन सफल जानि जीवन जग लेखै री॥ नैन नैन जोरति नहिं भावसों लजानेरी। सूर श्याम नागरिमुखचितवत मुसुकाने री ॥राग बिहागरो॥मथुरामें बस वास हमारो। राधाते उपकार भयो यह दुर्लभ दरशन भयो तुम्हारो॥ बार बार कर गहि गहि निरखत घूँघट वोट करो किन न्यारो। कबहुँक कर परसत कपोल छुइ चुटकि लेत ह्यां हमहिं निहारो॥ कछु मैं हूं पहिचानति तुमको तुमहिंमिलाऊं नंददुलारो। काहेको तुम सकुचति हौ जी कहौ काह है नाम तुम्हारो॥ ऐसी सखी मिली तोहिं राधा तौ हमको काहे न बिसारो।सूरदास दंपति मन जान्यो यासे कैसेहोत उबारो॥राग रामकली॥ राधा सखी मिली मनभाई।जबते इनसों नेह लगायो बहुत भई चतुराई॥ और भई इतने तुमको सखी गृहजनसों निठुराई। काहूके मनमें नहिं आनति हमहुँ सबन बिसराई॥ तुम हौ कुशल कुशल हैं एऊ आपु स्वारथी माई। सूर परस्पर दंपति आतुर चतुर सखी लखिपाई॥ राग रामकली॥ इह सखि अबलौं कहां दुराई। राति दिवस हम कबहुँ न देखी अब जु कहांते आई॥ त्रिभुवनकी शोभा सब गुणानिधि है बिधि एक उपाई। विद्यमान वृषभानुनंदिनी सहचरि सब सुखदाई॥ अपने मन तकि तकि तनु तोलति विय जन सुंदरताई। दुसर रूपकी राशि राधिका कहौ कौन प्रभुताई॥ राचिरही रस सुरति सूर दोउ निरखी नैन निकाई। चीन्हे हौं चलेजाहु कुंजगृह छांडिदेहु चतुराई॥राग रामकली॥ ऐसी कुँवरि कहां तुम पाई।राधाहूँते नख शिख सुंदरि अबलों कहां दुराई॥ काकी नारि कौनकी बेटी कौन गाउँते आई। देखी सुनी न ब्रज वृंदावन सुधि बुधि रहति पराई॥ धन्यसुहाग भाग याको यह युवतिनके मनभाई। सूरदास प्रभु हरषि मिलेहँसि लेउर कंठलगाई॥राग गुंडमलार॥नंदनंदन हँसे नागरी मुख चितै हरपि चंद्रावली कंठ लाई। वामभुज रवनि दक्षिण भुजा सखीपर चलेवन धाम सुख कहि न जाई॥ मनो बिबिदामिनीबीच नव घन सुभगदेखिछबिकामरतिसहित लाजे। किधौं कंचनलता बीच तमाल तरुभामिनी बीच गिरिधर बिराजै।गएगृहकुंजअलिगुंजसुमनन पुंज देखिआनंदभरे सूरस्वामी।राधिका रवन युवतीरवन मनहरन निरखि छबिहोत मन काम कामी॥राग बैराटी॥ बसेरी हेली नयननिमें षटइंदु। नँदनंदन वृषभानुनंदिनी सखी सहित शोभित जगवंदु। द्वादशही पतंग शशि सौ बीस षट फणि चौबीस धातुचतुरंगछंदु॥ द्वादशही पिक बिंब सौ बानवै वज्रकनषटकमलनि मुसिक्यात मंदु॥द्वादशहीमृणाल कदलीखंभद्वादशद्वादशते मातु लेहि गिनंदु। द्वादशही सायक द्वादश चाप चपलई खग व्यालीस माधुरी फंदु॥चौबिसही चतुष्पद शोभा अति कीनी मानौ चलत चुवतकरभा मकरंदु॥नील गौर दामिनि बिच पीत घन षोडशगजत अनूपम छबि श्रीगोकुलचंद। साठि जलजहीअरु द्वादश सरवरअंगही अंग सरस रस कंदु। सूर श्यामपर तनुमनुहि वारतललिता इतिदेखिभयोआनंदु॥राग केदारो॥कुंज सुहावनो भवन बांने ठनि बैठे राधावरन। वरनवरन कुसुम प्रफुल्लित शशिकीकिरनिजगमगात तमोई बहै त्रिविध पवन॥ आलिंगन पिक मंगल गावत ध्वनि सुनिसुनि ममनहि भावत देखत दम्पति विवश अयन। सूरदास प्रभु पिय प्यारी दोउ राजत साजत सखी वारति रति पति

शयन ॥राग बिलावल ॥सँग शोभितवृषभानुकिशोरी । सारंग नैन बैनबरसारंगसारंग बदनकहे छबि कोरी॥ सारंग अधर सधर कर सारंग सारंग जति सारंग मति भोरी। सारंग दशन बसन पुनि सारंग सारंग बसन पीतपट डोरी॥सारंग चरन पीठपर सारंग कनक खंभ अहि मनहुँ चढो री। सारंग बरन पीठि पर सारंग सारंग गति सारंग कटि थोरी॥ सारंग पुलिन रजनि रुचि सारंग सारंग अंग सुभग भुज जोरी। बिहरत सघन कुंज सखि निरखति सूर श्याम घन दामिनि गोरी॥ राग बिलावल॥कुंजभवन राधा मनमोहन ।रति बिलासकरि मगनभए अति निरखतनैनलजोहन॥ त्रियतनुको दुख दूरि कियो पिय देदै अपनी सोंहन। बार बार भुज धरि अंकम भरि मिलि बैठ दोउ गोहन॥पीतांबर पटसों मुख पोंछत हरषि परस्पर जोहन।सूर श्याम श्यामा मन रिझवत पीन कुचनि टकटोहन॥राग बिहागरो ॥ बनहि धाम सुख रैनि बिहाई।तैसिय नवल राधिकानागरितैसेइ नवल कन्हाई॥ जैसोइ पुलिन पवित्र यमुनको तैसोइ मंद सुगंध। जैसोइ कंठ कोकिला कुहुकनि तैसोइ सुख सम्बंध॥ रति बिहार करि पिय अरु प्यारी प्रात चले ब्रजधाम। सूरदास दोउ बांहां जोरी राजत श्यामा श्याम॥राग ललित॥नवल निकुंज नवल रस दोऊ राजत हैं रंग भीने।कुसुमनि सेज भोर उठि आवत आलसयुत अंशनि भुज दीने॥ अरुन नैन कुच रेख बिराजत श्रम जल बसन पलटि तनु लीने। सूरज प्रभु पिय प्यारीको सुख निरखत सखिन सहित ललिता हगदीने॥ ॥ राग कान्हरो ॥बरन बरन बादर मनहरन उदय करन बनधामते निकसत ऐसे दोऊ लागे॥श्याम घटा मध्य मानो दामिनि भामिनि राजति लाजति दुरिजाति कबहुँ प्रकट होत हारी तामें अरुन भए नैन सोसबै निशिके जागे॥मोर मुकुट पीतवसन इंद्रधनुष बीच बीच मंद मंद गरजि बोलनि पिय रंग अनुरागे। सूरदास प्रभु पिय प्यारीकी छबि गावत पावत कवि उपमा जे तेउ बडभागे राग अडानो ॥ बांहांजोरी निकसे कुंजते प्रात रीझिरीझि कहैं बात। कुंडलझलमलात झलकतविवि गात चकचौंधीसी लागति मेरे इन नैननि आली रपटत पग नहिं ठहरात॥ राधा मोहन बने घन चपला ज्यों चमकि चमकि मेरी पूतरीनमें समात। सूरदास प्रभुके वे वचन सुनहु मधुरमधुर अब मोहिंभूली रीपांचऔरसात॥राग बिलावल॥नवलकिशोर किशोरीबांहांजोरीआवतहैंरतिरंगअनुरागे। कबहुँ चरनगति डगति लगत छबि नैन बैन अलसात जम्हात ऐंडात गति आनंद निशासुख जागे॥ बानक देखत रीझि रही हौं चंदन वंदन माल बिना गुन अंजन पीक पलट लागे। सूरदास प्रभु प्यारी राजतआवत भ्राजत बनेहैं मरगजे बागे॥राग सारंग॥अरुझिरहेमुकुताहलनिरवारतसोहन घूँघर-वारे बार। रतिमानी सँग नँदनंदनके छूटे बंदकंचुकी टूटे हार॥निशिके जागे दोउ नैना ढरकिरहे चलति जोवन मदभार।सूर श्यामसँग इह सुखदेखत रीझ बारंबार॥राग बिलावल॥नवलश्यामनवला श्रीश्यामा।दोउ राजतबांहांजोरीचलेजातब्रजधामा॥याछबिकीउपमादेवेको त्रिभुवननहिंअभिरामा दामिनि घनपटतरदीवेको सकुचतकविलियेनामा॥सुधा शरीर परस्पर दोऊसुखदायकदिनजामा। सूरदासप्रभुनागरनागरिजीतेरतिपति कामा ॥राग ललित॥दोउबनते ब्रज धामगये।रतिसंग्राम जीति पिय प्यारी भूपण सजति नए॥ वे ब्रजगये आपु अपने गृह चितते कोउ न टारत।मन वाचा कर्मना एक दोउ एको पल न बिसारत॥जैसे मीन नीर नहिं त्यागतएखंडित ए पूरन।सूरश्यामश्यामादोउ देखो इत उत कोउन अधूरन॥राग धनाश्री॥बहुरि फिरि राधासजति शृंगार।मानहुकामहार पहिराव-ति अंग रण जीते सुरति अपार॥ कटि तट सुभटनि देत रसन पट भुज भूपण उरहार। कर कंकन काजर नकबेसरि दीन्हों तिलक लिलार॥ बीरा बिहँसि देत अधरनिको सन्मुख महे प्रहार। सूर

दास प्रभुके जु बिमुख भए बांधति कायरवार॥राग कान्हरो॥आज अति राधा नारि बनी। प्रतिप्रति अंग अनंगजात रसवश त्रैलोक्यधनी॥शोभित केश विचित्र भांतिद्युति शिखि शिखंड हरनी। रची मांग सभाग रागनिधि कामधामसरनी॥अलक तिलकराजत अकलंकित मृगमद अंक बनी। खुभी नजराव फूलदुति यों मनौं दुर्द्धर गति रजनी ॥ भौंह कमान समान बान मनो हैं युग नैनअनी। नासा तिलक प्रसून बिंबधर अमल कमल बदनी॥ चिबुक मध्य मेचक रुचि राजति बिंद कुंद रदनी। कंबु कंठ विधि लोक बिलोकत सुन्दरि एक गनी॥ बाँह मृणाल लाल कर पल्लव मद गज गति गवनी। पतिमन मणि कंचन संपुट कुच रोमराजि तटनी॥ नाभि भँवर त्रिवली तरंग गति पुलिन तुलिन ठटनी। कृशकटि पृथु नितंब किंकिनि युत कदलिखंभ जघनी॥ रचि आभरण शृंगार अंग सजि रतिपति ज्यों सजनी। जीते सूर श्याम गुण कारण मुख न मुरचो लजनी॥राग बिलावल॥नँदनंदन बश कीन्हेंराधा भवनगए चित नैक नलागत।श्यामा श्याम रूपमंदिर सुख अंतरते सो नेक न त्यागत॥जा कारण बैकुंठ बिसररत निज अस्थल मनमें नहिंभावत। राधा कान्ह देह धरि पुनि पुनि या सुखको वृन्दावन आवत॥ बिछुरन मिलन बिरह सुख नवतन दिन दिन प्रीति प्रकाशत। सूर श्याम श्यामा बिलासरस निगम नेति नित भाषत॥॥राग टोडी॥ निगम नेति नेति गावतहैं जाको। राधा बश कीन्हीहै ताको॥ निशि बनधाम संग रहे दोऊ। एकै सँग नैक टरैं न कोऊ॥ प्रात गए घर घर रस पागे। अरस परस दोऊ अनुरागे॥ अपनी अपनी दशा विचारैं। भाग बडे कहि बारंबारैं॥ प्यारी फेरि अभूषण साजति। बैठी रंगमहलमें राजति॥ज्यों चकोर चंदाको आतुर। त्यों नागरि बश गिरिधर चातुर॥आये उझकि झरोखे झाँक्यो। करत शृङ्गार सुंदरी ताक्यो॥ जालरंध्र मग नैनलगायो।सूर श्याम मनको फलपायो॥ राग टोडी॥आधोमुखनीलांबरसोंढांकिबिथुरीअलकैं सोहैं॥एकदिशा मनोमकरचाँदिनीएक दिशा सघन बीजरी ऐसे हरिमन मोहैं॥कबहुँककरपल्लवनसोंकेशनिरुवारतिपाछे लैडारतिनिकसतशशि संपूरण सन्मुख जब जोहै। सूरदास प्रभु यह छबि न्यारे दुरिदेखतहैं त्रिभुवनमें उपमा सोकोहै॥ राग टोडी॥एक कर दर्पण एक कर अचरा कजराहि सँवारति ललना मुखकालिम दूरि करतिहै उलटि भँवर फिरि कमल परत। शीशफूल अतिराजत नगनिजडचो ताकी उपमाकहे शेषशीश मणि मनो वरत॥ करनफूल करननिहि सँवारति अलकैं निरवारति वंदन बिंदु ललाट करत। सूर श्याम दुरिदेखत दर्पणको मुख यकटकते पलकहु न टरत ॥राग गुंडमलार॥करति शृंगार वृषभानु वारी। रहे यकटक जाल रंध्र मग हेरिकै श्याम मन भावती परमप्यारी॥ कबहुँ बेनी रचति फूलसों मिलै कच कबहुँ रचि मांग मोती सँवारै। कबहुँ राखति शीशफूल लटकाइके कबहुँ वंदन बिंदु भाल भारै॥ कबहुँ केसारि आड रचति दर्पण हेरि कबहुँ भ्रूनिरखि रिसकरि सकोरै। निरखिअपनो रूप आपुहीविवश भई सूर परछाँहको नैनजोरै॥ राग टोडी॥इह सुंदरी कहांते आई। बार बार प्रतिबिंब निहारति नागरि मन मन रही लुभाई॥ करते मुकुर दूरि नहिं डारति हृदय माँझ कछु रिस उपजाई।देखै कहूं नैन भरि याको नागर सुंदर कुँवरकन्हाई॥ मेरी कहा चलै या आगे यह धौं आजु अरसते आई। सूरदास याको या व्रजमें ऐसी को बैरनि जो ल्याई॥ राग हमीर॥मुकुर छांह निरखि देहकी दशा गँवाइ।बोली धौं कौनेकीआपुनही गमन कियो एसीको वैरनिहै या व्रजमेंमाइ॥बिथकी अंगअंग निरखि बारबारहै परखि ललिता चंद्रावलि कहँ इतनी छबिपाइ। मनमें कछु कहन चहै देखतही ठठुकिरहै सूर श्याम निरखत द्युति

तनु सुधि बिसराइ॥राग बिलावल॥कहति छाँहसोंनागरी कोहैतू माई।मिली नहींब्रजगाँवमेंरी कहो कहां ते आई॥नाम कहाहै सुंदरी कहि सोंह दिवाई।कहौ न मेरे साधहै मुख वचन सुनाई॥दिननि हमहुँ तुम सरबरी तुव छबि अधिकाई। और संग नहिं कोउ लई यह कहि डरपाई ॥ जानति हौं यह नहिं सुनी ह्यांकी अधमाई। अभरन लेत छिडाइकै ब्रज ढीठ कन्हाई ॥ सदन जाहु मेरे कहे पटु अंग छपाई। सूर श्याम जो देखिहै करिहै बरिआई ॥राग धनाश्री॥मैं उनके गुण नीके जानति।सदन जाहु मर्यादा जैहै कह्यो न काहे मानति॥अपनी दशा कहौं तो आगे जैसीबिपति बनाइ। मथुरा चली जाति दधि बेचन घेरि लई इन आइ ॥ गोरस लियो अभूषण छीन्यो तुम एक हम अनेक। सूर श्याम जो देखन पैहै करिहै अपनी टेक ॥ राग बिलावल ॥ तेरे हित को कहतिहों मानो जिनि मानो।तू आई हैआजुहीउनको का जानो॥ऐसो ढीठ नहीं कहूंत्रिभुवनमें माई। नारिपराई देखिकै हँसि लेत बोलाई ॥ सो अपने सहजहि मिलै उनके गुण ऐसे। भूषण लेत मँगाइके औरौ गुण नैसे ॥ काहू को नहिं डरपही मथुरापति धरकै। मनको भायो करत है कबहूं नहिं हरकै ॥ तुम सुंदरि काकी वधू घर जाहु सवारी। सूर श्याम सुनि सुनि हँसैं मनही मन भारी ॥राग मारू॥ नागरी चरित पिय चकित भारी। अंगकी छबि निरखि प्रथमही बिबस ह्वै प्रतिबिंब निरखत देह सुधि बिसारी॥एक राधा दूसरी वाहि जानि जिय नागरी पास आवत लजाही।नैन ठहराइ ठहराइ पुनि पुनि रहै कहै नहिं कछू हरषत डराही ॥ पुनि उठत जागि देखै मुकुर नारि कर ललचात अंकभरि लैन लोरै। सूर प्रभु भावतीके सदा रसभरे नैन भरि भरि प्रिया रूप चोरै॥राग गुंडमलार॥धन्य हरि नैन धनि रूपगाधा। धन्य वह मुकुर धनि धन्य प्रतिबिंब मुख धन्य दंपति रहतिभेषआधा॥धन्य शृंगारधनिधन्यनिरखनि श्माम धन्य छबि लूटि लूटत मुरारी। सूर प्रभु चतुर चतुरी नवल नागरी रहै प्रतिबिंब पर नैन जोरी॥ रागकेदारो ॥ श्यामाजू आपनोरूपदेखिरीझिरीझि नेकहु दर्पण दूरि नकरति। अपनी छबि जु निहारति अपनों तन मन वारति विवस ह्वै प्रतिबिंब के पांइन परति॥कबहुँ श्यामकी सकुच मानति यह जिय अनुमानति यासों जिनि प्रीति करै एही डर डरति। सूरदासप्रभुप्यारीकी छबि निरखत न्यारे ह्वै दृष्टिन इतउत टरति॥राग आसावरी ॥नाम काहसुंदरी तुम्हारो क्यों मोसों नहिं बोलति हौ। हँस हँसति चितएचितवति तुम तनु डोले तनु डोलति हौ॥ परम चतुर मैं जानति तुमको मोपर भौंह मरोरति हौ। लटकति सुभग नासिका बेसरि पुनिपुनि वदनसकोरति हौ॥ अरुन अधर चित हरन चिबुक अतिदामिनि दशनलजावति हौ। ऐसे वचनमुखकीमाधुरी काहे न हमहि सुनावति हौ॥ कहौ बचन काकी तुम घरनी काके मनको चोरति हौ। सुनहु सूर सहजहि कीधौं रिस मोसोंलोचनजोरति हौ॥राग सोरठ ॥ कछुरिस कछु नागरि जियधरकी। यह तो जोबन रूप गहीली शंकन मानति हरकी॥यह विपरीत होनहै चाहत ब्रज यह आयसुमानी।यह तौ गुणनि उजागरि नागरिवैतो चतुरबिनानी॥कर दर्पण प्रतिबिंब निहारति चकित भई सुकुमारी। सूर श्यामअंगनिरखतवा छबि मगनागरिभोरीभारी॥राग बिलावल॥ सुताबिवसवृपभानुकी देखी गिरिधारी। लोचन यकटक दैरही प्रतिबिंब निहारी ॥ अपनी छबिपर आपनो तनमनधन वारै। वारवार हाहा करै त्रिय नाम न सारै॥ बूझति ताको कौन तू को है री प्यारी। मैं देखी तौआजुही सुंदरि गुणभारी ॥ त्रिभुवन में कोऊ नहीं तेरी उपमा री। यह कहि मुख मन सोचई भई सौति हमारी॥ दृष्टि परै जिनि श्यामके तबही बश ह्वैहै। सोच करै पछिताति है सँगही

सँग रैहे ॥ ऐसी सुंदरि नारिको जबहीं वे पैहे । दोउ भुज भरि अँकवारि के हँसि कंठ लगैहै ॥।॥यह वैरिनि मोको भई धौं कहँते आई।मोतन यकटक हेरई में रहीलजाई॥श्यामहि बश करिलेइगी मैं जानी भाई । देखि दशा यह वामकी प्रतिबिंब भुलाई ॥ इकटक नैन टरै नहीं छबिकी अधिकाई।पिय हरषे आनँद भरे शोभा यह पाई ॥कबहुँ चलत त्रिय पासको फिरि रहत लुभाई।सूरश्याम तृण तोरही मनमन मुसुकाई ॥राग बिहागरो ॥ नागरि,रही मुकुर निहारि। आनि औचक नैन मूँदे कमल कर गिरिधारि ॥ चौंक चकृत भई मनमें श्यामको जिय जानि। मैं डरतिही अबहिं जाको मिले ताको आनि ॥ तबहिं तनुकीसुरति आई लख्यो तनु प्रतिछाहिं। सकुचि मनहीमन दुरावति परस्पर मुसुकाहिं ॥ समुझि चितमें कहति सखिअनि विपुल लेलै नाम । सूर प्रभु उर शीश परसे बीच बेनी श्याम॥राग बिहागरो ॥ मूँदिरहे पिय प्यारी लोचन।अति हित बेनी उर परसाए वेष्टित भुजा अमोचन॥ कंचनमणि सुमेर अँग दोऊ शोभा कहीनजाइ। मनों पन्नगी निकसि ताबिच रही हाटक गिरि लपटाइ ॥ चपल नैन दीरघ अति सुंदर खंजनते अधिकाई। अति आतुर भषकारण धाई धरती फनन समाई॥ मन हरषति मुख खिझति सखिन कहि चतुर चतुरई भाव । सूर श्याम मनकामनके फल लूटतहै एहि दाव॥राग रामकली॥करत मन-काम फल लूटिदोऊ।रहे दोउ नैन पिय मूँदि कोमल करनि बरनि नहिं सकत वह उपम कोऊ ॥ हृदय भरि वाम सुखधाम मोहन काम मनो घन दामिनि झकोर लीन्हें ॥ महा आनंद सुखसिंधु उछलत दोऊ सूर प्रभु नागरी तुरत चीन्हें॥राग कान्हारो ॥बैठी रही कुँवरि राधा हरि अँखिया मूँदी आइ।अतिहि विशाल चपल अनियारे नहिं पिय पानि समाइ॥खन खोलत खन ढांकतना गरि मुख रिस मन मुसुकाइ। ज्यों मणि धर मणि छांडि बहुरि फिरि फन तर धरत छपाइ ॥ श्याम अंगुरिअनि अंतर राजत आतुर दुरि दरशाइ। मानो मरकतमणि पिंजरनिमें विवि खंजन अकु-लाइ ॥ कर कपोल बिच सुभग तरौना शोभा बढी सुभाइ। मनो सरोज द्वै मिलत सुधानिधि विवि रवि संग सहाइ ॥ अपने पानि पकरि मोहनके कर धरि लिए छिड़ाइ । कमल चकोर चंचरि जनु द्वै शशि दिनकर जुरति सगाइ ॥ उपमा काहि देउँ को लायक देखी बहुत बनाइ । सूरदास प्रभु दंपति देखत रतिसों काम लजाइ ॥राग गुंडमलार॥ श्याम भुज वाम गहि सन्मुख आने । भले जू भले मैं सखी धोखे रही रहे लोचन मूँदि अति करपिराने ॥दौरि पैठे भवनकहि कबहिं कीन्हों गवन नारि मनरवन तुमहो कन्हाई । सूर प्रभु हरषि प्यारी अंक भरिलई मुकुरकी कथा तब कहि सुनाई॥ राग गूजरी॥नागरि यह सुनिकै मुसकानी। को जानै पिय महिमा तुम्हरी नैननि चितै लजानी ॥ मैं बैठी प्रतिबिंब विलोकति अपने सहज सुहाइ। आपुन कहाँ अचानक आये तुव गति लखी न जाइ॥ इक सुन्दरदूजे अति नागर तीजे कोकप्रवीन। सूरदास प्रभु अबहीं तौ तुम यशुमति सुवन नवीन ॥ रागबिलावल॥हँसत चले तब कुँवर कन्हाई। मनके करे मनोरथ पूरण राधाके सुखदाई ॥उत हरषत हरि भवन सिधारे नागरि हरष बढाई। जब आवत सुधि मुकुर विलोकनि तब तब रहति लजाई ॥ यहि अंतर सखियन सँगलीन्हें चंद्रावलि तहँ आई। सूर तुरत राधिका सबनिको आदर करि बैठाई॥ राग रामकली ॥अति आदरसों बैठक दीन्हों।बरगृह चंद्रावलि आई अतिही आनँद कीन्हों॥श्याम संग सुख प्रगट्यो चाहति पुनि धीर-ज धरि राखति। जोइ जोइ कहति वचन गदगदसों बारबार मुख भाषति ॥ सखी संगकी कहति राधिका आजु कहा तैं पायो। सुनहु सूर इतने आदरसों कबहूं नहीं बोलायो ॥ राग आसावरी॥ हम

तेरे नितही प्रति आवैं सुनहु राधिका गोरी हो।ऐसो आदर कबहुँ न कीन्हों मेरी अलकसलोरी हो॥काहे आजु हरष जिय उपज्यो कहा विभव तुम पायो हो। कीधौं आजु मिले नँदनंदन पछिलहु दुख बिसरायो हो॥उमँग्यो प्रेम रहत नहिं रोके सखियन कहति सुनावै हो। सूर श्याम मेरे भवन पधारे यह कहिकहि मन भावै हो॥राग बिहागरो॥ आये श्याम अबहिं मेरे गेह।कही जाति न सखी मोपै मिले जौन सनेह ॥ करति अंग शृंगार बैठी मुकुर लीन्हें हाथ। आइ पाछे भए ठाढे चतुर बर ब्रजनाथ ॥ भाव इक मैं कियो भोरे ताहि कहत लजाउँ। निरखि अपनी छाँहको त्रिय और जानि डराउँ ॥ जालरंध्रनि रहे ठाढे निरखि कौतुक श्याम।नैन औचक आनि मूँदे सुनहु हरिके काम ॥ देतिहौं उरहनों तुमको भये डोलत चोर। सूर प्रभु आये अचानक भवन बैठी भोर॥ राग बिलावल ॥श्याम संग सुख लूटति हौ।सुनि राधे रीझे हरि तोको अब उनते तुम छूटति हौ॥ भली भई हरिके रस पागी वै तुमसों रति मानतहैं।आवत जात रहत घर तेरे अंतरही पहिचानत हैं ॥ तुम अति चतुर चतुर वे तुमते रूप गुणनि दोउ नीके हो।सूरदास स्वामी स्वामिनि दोउ परमभावते जीके हो॥राग अडानो॥ भलेही मेरे लालन आये री आजु मैं फूली अंग न समाई। गाऊं बजाऊं रसप्रेम भरि नाचौं तन मनधन न्यवछावर करि डारों एहि बिधि करति बधाई॥धनि धनि भाग धनिधनि री सुहाग धनि अनुराग धनि धन्य कन्हाई।धनि धनि रैनि धनि धनि दिन जैसो आजु धनि घरी धनि पल धनि धनिधनिमाई॥धनि गेह धनिदेहधनि री शृंगार वह धनि प्रतिबिंब धनि रहीमैं भुलाई। धनि धनि सूर प्रभु धनि अवलोकनि धनि नैन मूँदे कर धनिधनि पिय सुखदाई॥राग ईमन॥बनि बनि आवत हैं लाल भाग बडेरो मेरे।दरश देखनको अति सुखउपजत और सन्मुख जब हेरे॥तब मैं हँसति जब मंद मुसुकात वै आनंद मानि पियआवत नेरे।सूरदास प्रभुकी सुरतिहैमहारसालटरतिनसांझसबेरे॥राग ईमन॥ श्यामअचानकआए री।पाछेतेलोचनदोउमूँदेमोको हृदय लगाए री ॥ लहनो ताको जाके आवै मैं बडभागिनिपाए री।यह उपकार तुम्हारोसजनीहूसे कान्ह मिलाए री ॥ ल्याइ तुरत जादिन तू हरिको मैं अपराध क्षमाए री। सूरदास प्रभु नैननि लाग भावत नहिं बिसराए री॥अथ नैननि समयके पद॥राग टोडी ॥हरि अनुराग भरी ब्रजनारी। लोक सकुच कुलकानि बिसारी॥सासु ननँद हारी देगारी।सुनत नहीं कोउ कहत कहारी॥सुत पति नेहजगत इहजान्यो।ब्रजयुवतीतिनुकासो मान्यो॥काचो सूततोरिसो डारयो।उरगकंचुकी फिरि न निहारयो॥ज्यों जलधार फिरे पुनिनाहीं।जैसेनदीसमुद्रसमाहीं॥जैसेसुभट खेतचढिधावे।जैसे सती बहुरि नहिं आवै ॥ ऐसे भजी नंदनंदनको। सकुची नहिं त्यागत गृह जनको ॥ सूरज प्रभु सब घोषकुमारी। ज्यों गज पंक न सकैं निवारी ॥ राग सोरठ॥ एहिअंतर तेहि खोरिहीनँदनंदन आए। सखिन सहित ब्रजनागरी पल बिनु टकलाए॥ मोर मुकुट शिरसोहई श्रवणनि वर कुंडल। ललित कपोलनि झलमले सुंदर अति निर्मल ॥ तरुनि गईं चकचौंधिकै नहिं नैन थिराहीं ॥ सूरश्याम छवि निरखिकै युवती भरमाहीं ॥ राग सोरठ ॥ देखो श्याम अचानक जात । ब्रजकी खोरि अकेले निकसे पीतांबर कटिपर फहरात ॥ लटकत मुकुट मटक भौंहनिकी चटकत चलत मंद मुसुकात। पग द्वै जात बहुरि फिरि हेरत नैन सैन दैकै नँदतात॥ निरखत नारि निकर विथकित भए दुख सुख व्याकुल झुलति सिहात । सूर श्याम अँगअंग माधुरी चमकि चमकि चकचौंधत गात ॥ राग सोरठ ॥ सघन कल्पतरु तर मनमोहन। दक्षिण चरन चरनपर दीन्हें तनु त्रिभंग मृदु जोहन ॥ मणिमय जडित मनोहर कुंडल शिखी चंद्रिका शीश रही फबि। मृगमद तिलक अलक

घुँघरारी उर बनमाल कहौं जो वै छबि ॥ तनु घन श्याम पीत पट शोभित हृदय पदिककी पाँति दिपत दुति । वन तनु धात विचित्र विराजित वंशी अधरनि धरे ललित गति ॥ करज मुद्रिका कर कंकन छबि कटि किंकिणि नूपुर पग भ्राजत । नख शिख कांति विलोकि सखी री शशि औ भान मदन तनुलाजत॥नखशिख रूप अनूप विलोकति नटवर भेष धरे जु ललित अति। रूपराशि यशुमतिको ढोंटा वरणि सकै नहिं सूर अलपमति ॥राग सोरठ॥लोचन हरत अंबुज मान। चकित मन्मथ शरन चाहत धनुष तजि निज बान॥ चिकुर कोमल कुटिल राजत रुचिर विमल कपोल। नील नलिन सुगंध ज्यों रस थकित मधुकर लोल । श्याम उर पर परम सुंदर सजल मोतिन हार। मनो मर्कत शैलते बहिचली सुरसरि धार ॥ सूर कटि पट पीत राजत सुभग छबि नँदलाल। मनो कनकलता अवलि बिच तरल विटप तमाल ॥ राग रामकली॥मोहन माई री हठ करि मनहि हरत। अंग अंग प्रति और और गति अतिही छबि जु धरत ॥ सुंदर सुभग श्याम कर दोऊ तिनसों मुरली अधर धरत । राजत ललित नील कर पल्लव उभै उरग मनो सुभट लरत॥ कुंडल मुकुट भाल भ्रुव लोचन मनों शरद शशि उदै करत। सूरदास प्रभु तनु अवलोकत नैन थके इत उत न टरत॥राग रामकली ॥ मन तो हरिही हाथ बिकानो। निकस्यो मान गुमान सहित वह मैं यह होत न जानो॥नैननि साँटि करी मिलि नैननि उनहींसों रुचि मानो । बहुत जतन करि हौं पचिहारी इतको नहीं फिरानो। सहज सुभाइ ठगोरी डारी शीश फिरत अरगानो॥सूरदास प्रभु रसवश गोपी बिसरि गयो तनु मानो ॥राग सोरठ॥ मनतो गये नैन हैं मेरे । अब इनसों वहि भेद कियो कछु एउ भए हरिके चेरे॥तनिक सहाय रहेहैं मोको येऊ दिन मिलि घेरे। क्रमक्रम गए कह्यो नहिं काहू श्याम संग अरुझे रे॥ज्यों दीवाल गिले परकारक डारतही युग डेरे । सूर लटकि लागे अँग छबि पर निठुर न जात उखेरे॥ राग बिहागरो॥ सजनी मनहिं अकाज कियो।आपुन जाइ भेद करि हमसौं इन्द्रिन्ह बोलि लियो॥मैं उनकी करनी नहिं जानी मोसों वैर कियो॥जैसे करि अनाथ मोहिं त्यागी ज्यों त्यों मानि लियो॥अब देखौ उनकी निठुराई सो गुनि मरति हियो।सूरदास ए नैन रहेहैं तिनहूँ कियो वियो ॥राग बिहागरो ॥ मेरे जिय इहई सोच पर्‍यो।मनके ढंग सुनो री सजनी जैसे मोहिं निदर्‍यो॥आपुन गयो पंच सँग लीन्हें प्रथमहि इहै कर्‍यो । मोसों वैर प्रीति करि हरिसों ऐसी लरनि लर्‍यो॥ज्यों त्यों नैन रहे लपटाने तिनहूँ भेद भर्‍यो।सुनहु सूर अपनाइ इनहुँको अबलौं रह्यो डर्‍यो॥राग गौरी॥मन बिगर्‍यो ए नैन बिगारे। ऐसो निठुर भयो देखौ री तब ए मोते टरत न टारे॥इन्द्री लई नैन अब लीन्हें श्यामहि गीधे भारे। ए सब कहो कौनहैं मेरे खानाजाद विचारे॥इतनेते इतनेमें कीन्हें कैसे आजु बिसारे। सुनहु सूर जे आप स्वारथी ते आपुनही मारे॥राग गौरी॥आपु स्वारथीकी गति नाहीं।विधिना ह्यां काहे अवतारे युवती गुनि पछिताहीं॥जनमें संग संग प्रतिपाले संगहि बडेभए।जबउनको आसरो कियो जिय तबहीं छोडि गए॥ऐसेहैं एस्वामिकारजी तिनको मानतश्याम। सुनहुसूरअब परगट कहियत ऐसेउनके काम॥राग कान्हरो॥ हमते गए उनहुते खोवैं। ह्यांते खदिदेहिं वै हमतनहम उन तन नहिंजोवैं॥जैसी दशा हमारी कीन्हीं तैसे उनहिविगोवैं।भटके फिरे द्वार द्वारिनि सब हमदेखे वै रोवैं॥आवहु इहै मतोरीकरिए निधरक वै सुख सोवैं। सूरश्यामको मिले जाइकै कैसे उनकोधोवैं॥ राग धनाश्री ॥मनके भेद नैन गए माई। लुब्धे जाइ श्यामसुन्दर रस करीनकछू भलाई।जबहीं श्याम अचानक आए इकटक रहे लगाई । लोक सकुच मर्यादा कुलकी छिनहीमें बिसराई॥ व्याकुल

फिरति भवन वन जहँ तहँ तूल आक उधराइ। देह नहीं अपनीसी लागति यह है मनो पराइ॥ सुनहु सखी मनके ढँग ऐसे ऐसी बुद्धि उपाइ। सूर श्याम लोचन वश कीने रूप ठगोरी लाइ॥ राग नट॥ नैन न मेरे हाथ रहे। देखत दरश श्यामसुंदरको जलकी ढरनि बहे॥ वह नीचेको धावत आतुर ऐसेहि नैन भए। वहतौ जाइ समात उदधिमें ए प्रतिअंग रए॥ वह अगाध कहुँ वार न पार न एउ शोभा नहिं पार। लोचन मिले त्रिवेनी ह्वैके सूर समुद्र अपार॥ राग बिहागरो॥ मनते ए अति ढीठ भए। वे तो आइ बोलते कबहूं एजु गए सुगए॥ ज्यों भुवंग काँचरी बिसारत फिरि नहिं ताहि निहारत। तैसेहि जाइ मिले इकटक ह्वै डरत लाज निरवारत॥ इंद्रिन सहित मिल्यो मन तबहीं नैन रहे मोहिं शालत। सूर श्याम सँगही सँग डोलत औरनिके घर घालत॥ राग सोरठ॥ लोचनगएनिदरिकेमोकों। तोहूको व्यापी री माई कहा कहतिहै मोकों॥ मैं आई दुख कहन आपनी तेरे दुखअधिकारी। जैसेदीनदीनसों याचै वृथा होइ श्रम भारी॥ मन अपनो वश कैसेहुं कीजे याहीते सचुपावै। सूरदास इंद्रिन समेत अरु लोचन अबहिं मँगावै॥ राग गौरी॥ नैना नीके उमहि रहे। मन जब गयो नहीं मैं जान्यो ए दोउ निदरि गहे॥ एतौ भए भावते हरिके सदा रहत इनमाहीं। कर मीडति शिर धुनति नारि सब यह कहि कहि पछिताहीं॥ मूरखके ज्यों बुद्धि पाछिली हमहूं करि दियो आगे। अबतौ मिले सूरके प्रभुको पावतिहो अब मांगे॥ राग पूरवी॥ नैना नहिं आवैं तुव पास। कैसेहूं करि निकसे ह्यांते अतिही भए उदास॥ अपने स्वारथके सब कोई मैं जानी यह बात। यह शोभा सुख लूटि पाइकै अब वै काहि पत्यात॥ पटरस भोजन त्यागि कहोंको रूखी रोटी खात। सूरश्यामरसरूपमाधुरी एतेपर न अघात॥ राग जैतश्री॥ नन परे रस श्याम सुधामें। शिव सनकादि ब्रह्मनारदमुनि एलुब्धेहैं जामें॥ ऐसो रस विलास नाना विधि खात खवावत डारत। सुनहु सखीवैसी निधितजिकैक्यों वै तुमहि निहारत॥ जिनि वह सुधापान मुख कीन्हों ते कैसे कटु देखत। त्यों ए नैनभए गर्वीले अब काहे हम लेखत॥ काहेको अपसोचमरतिहौ नैन तुम्हारे नाहीं। मिले जाइ सूरजके प्रभुको इत उत कहूं न जाहीं॥ राग भैरव॥ नैनपरेहरिपाछेरी। मिले अतिहिअतुराइ श्यामकोरीझिनटवरकाछेरी॥ निमिष नहीं लागत इकटकही निशिवासर नहिं जानत री। निरखत अंग अंगकी शोभा ताही पर रुचि मानत री॥ नैन परे परवश री माई उनको इनि बश कीन्हे री। सूरज प्रभु सेवा करि रिझए उन अपने करि लीन्हे री॥ राग कल्याण॥ नैना हरि अंगरूप लुब्ध री माई। लोकलाज कुलकी मर्यादा बिसराई॥ जैसे चंदा चकोर मृगीनाद जैसे। कंचुरि ज्यों त्यागि फनिग फिरत नहीं तैसे॥ जैसे सरिताप्रवाह सागरको धावै। कोऊ श्रम कोटि करे तहां फिरि न आवै॥ तनुकी गति पंगुकिए सोचति ब्रजनारी। तैसेई मिल जाइ सूरजप्रभु ढारी॥ राग कल्याण॥ लोचन भए श्याम वश्यकहा करौं माई री। जितही वै चलत तितहि आपु जात धाई री॥ मुसुकनि दै मोललिए किए प्रगट चेरी। जोइ जोइ वै कहत करत रहत सदा नेरी॥ उनकी परतीत श्याम मानत नहिं अजहूं। अलकनि रजुबांधि धरे भाजै जिनि कबहूं॥ मन लै इन उनहि दयो रहत सदा सँगही। सूर श्याम रूप राशि रीझे वा रँगही॥ राग बिहागरो॥ नैना भए वजाइ गुलाम। मन बेच्यो लै वस्तु हमारी सुनहु सखीएकाम॥ प्रथम भेद करि आयो आपुन माँगि पठायो श्याम। बेचि दिये निधरक हरि लीन्हें मृदुमुसुकनि दै दाम॥ यह वाणी जहँ तहँ परकाशी मोल लिएको नाम। सुनहु सूर यह दोष कौनको यह तुम कहो न वाम॥ रागमारू॥ कियो वह भेद मन और नाहीं। पहिलेही जाइ हरिसों कियो भेद वहि और वे काज कासों बताहीं॥ दूसरे आइके इन्द्रियनि लैगयो ऐसे अपदाँव सब इनहिं

कीन्हें । मैं कह्यो नैन मोको संग देहिंगे इन्हहुँ लै जाइ हरिहाथ दीन्हें ॥जोकहूँ कछू सो मनहिं-सों कहि रहें इहां कछु श्यामको दोष नाहीं । सूर प्रभु नैन लै मोल अपवश किए आपु बैठे रहत तिनहि माहीं ॥ राग बिलावल ॥ कहाभए जो ऐसे लोचन मेरे तोकछु काजनहीं। मैंतोब्याकुलभई पुकारति वै सँग लै जु गए मनहीं ॥ त्रिभुवनमें अति नाम जगायो फिरत श्याम सँगही सँगहीं । अपने सुखको कहा चाहिये बहुरि न आए मोतनहीं ॥सो सुपूत परिवारचलावै एतौलोभीधृग इनहीं । एते पर ए सूर कहावत लाज नहीं ऐसे जनहीं ॥ राग कान्हरो॥ इनबातन कहुँ होत बडाई। लूटतहैं छबिराशि श्यामकी मनो परी निधि पाई ॥ थोरेहीमें उघरि परैंगे अतिहि चले इतराई। डारत खात देत नहिं काहू वोछे घर निधि आई॥ यह संपतिहै तिहूं भुवनकी सबै इनहि अपनाई। धोखे रहत सूरके स्वामी काहू नहीं जनाई॥राग बिलावल॥नैन परे हैं बहुलूटमिमें मैं नोखेनिधिपाए। छोह लगत वह समुझिकै इन हमहिं जिवाए ॥ इनके नेक दया नहीं हम पर रिस पावैं । श्याम अक्षयनिधि पाइकै तउ कृपण कहावैं ॥ ऐसे लोभी ए भए तब इनहि न जान्यो । संगहि संग सदा रहैं अतिहित करि मान्यो ॥ जैसी हमको इन करी यह करै न कोई। सूर अनल कर जो गहै डाढै पुनि सोई॥राग कान्हरो ॥नैन आपने घरके री।लूटन देहु श्याम अँग शोभा जो हम-पर वै तरकेरी॥यह जानी नीके कर सजनी नहीं हमारे डरके री । वै जानत हम सरि को त्रिभुवन ऐसे रहत निधरके री ॥ ऐसी रिस आवत है उन पर करैं उनहि घर घरके री। सूर श्यामके गर्व भुलाने वै उनपर हैं ढरके री॥राग गौरी॥ नैना कह्यो न मानैं मेरो।मो बरजत बरजत उठिधाए बहुरि कियो नहिं फेरो ॥ निकसे जलप्रबाहकी नाईं पाछे फिरि न निहारचो । भवजंजाल तोरि तरुवनके पल्लवहृदय बिदारचो ॥ तबहींते यह दशा हमारी जब एऊ गए त्यागी। सूरदास प्रभु-सों वे लुब्धे ऐसे बडे सभागी ॥ राग टोडी ॥ इन नैननि मोहिं बहुत सतायो।अबलौंकानिकरीमैं सजनी बहुतै मूड चढायो ॥ निदरे रहत गहे रिस मोसों मोहीं दोषलगायो। लूटत आपुन श्री अँग शोभा मनो निधनि धन पायो॥ निशहू दिन ए करत अचगरी मनहि कहा धौंआयो। सुनहु सूर इनको प्रतिपालत आलस नेक न आयो ॥ राग रामकली ॥ लोचन भए श्यामकेचेरे। एते पर सुख पावत कोटिक मो तन फेरि न हेरे ॥ हाहा करत मरत हारि चरणन ऐसे बश्य भए उनहीं । उन-को बदन बिलोकत निशि दिन मेरो कह्यो न सुनहीं॥ ललित त्रिभंगी छबि पर अटके फटके मो-सों तोरि ।सूरदशा यह मेरी कीन्हीआपुनहरिसोंजोरि॥राग धनाश्री ॥हरिछबि देखिनैनललचाने। इक टक रहे चकोर चंद ज्यों निमिष बिसरि ठहराने ॥ मेरो कह्यो सुनत नहिं श्रवनन लोक-लाज न लजाने । गये अकुलाइ धाइ मो देखत नेकहु नहीं सकाने ॥ जैसे सुभटजातरणसन्मुख लडत न कबहुँ पगने। सूरदास ऐसी इन कीनी श्याम रंग लपटाने॥राग गुंडमलार॥नैनतोकहेमेंनहीं मेरे । बारहीं बार कहि हटकिराखति निकसिगये हरिसंगनहिं रहे घेरे ॥ ज्यों व्याध फंदते छूटत खग उडिचलत तहां फिरि तकत नहिं त्रास माने। जाइ वन द्रुमनिमें दुरत योंही गये श्याम तनु रूप बनमें समाने ॥ पालि इतने किए आज उनके भए मोल करिलए अब श्याम उनको । सूर यह कहति ब्रजनारि व्याकुल प्रेम नैन लैगये पछितात मनको ॥ राग जैतश्री ॥ नैना हाथ न मेरे आली । इतहै गये ठगोरी लावत सुंदर कमलनैन बनमाली ॥ वे पाछे ए आगे धाये मैं बरजत बरजत पचिहारी । मेरे तन ह्वै फेरि न चितए आतुरता वह कहौंकहा री ॥ जैसे बरत भवन तजि भजिए तैसेहिगये फेरिनहिंहेरचो।सूरश्यामरस रसे रसीलेपयपानीकोकरेनिबेरचो ॥राग रामकली॥

श्याम रँग रँगे रँगीले नैन। धोए छुटत नहीं यह कैसेहु मिलैं पघिलि ह्वै मैन ॥ औचकही आँगन ह्वै निकसे दै गये नैननि सैन । नख शिख अंग अंगकी शोभा निरखि लजत शत मैन ॥ ए गीधे नहिं टरत वहांते मोसों लैन न दैन। सूरज प्रभुके सँग सँग डोलत नेकहु करत न चैन॥ राग ईमन ॥नैन भए हरिहीके री। जबते गए फेरि नहिं चितएऐसेगुण इनही- के री ॥ और सुनो उनके गुण सजनी सोऊ तुमहिं सुनाऊं री। मोसों कहत तुहूं नहिं आवै सुनत अचंभो पाऊं री ॥ मन भयो ढीठ इनहिके कीन्हे ऐसे लोन हरामी री। सूरदास प्रभुइनहिंपत्याने आखिर बडे निकामी री॥राग बिलावल॥नैन लुब्धे रूपको अपने सुख माई। अपराधीअपस्वारथी मोको बिसराई॥मन इंद्री तहँई गए कीन्ही अधमाई।मिलेधाइ अकुलाइकेमैंकरति लराई॥अति- हि करी उन अपतई हरिसों समताई। वै इनसों सुखपाइकै अति करत बडाई॥अब वै भरुहाने फिरैं कहुँ डरत न माई। सूरज प्रभु मुँह पाइकै भए ढीठ बजाई॥राग सारंग॥ढीठ भए ए डोलत हैं मौन रहत मोपर रिसपाई हरिसों खेलत बोलतहैं॥ कहा कहौं निठुराई उनकी सपनेहुँ ह्यां नहिं आवतहैं। लुब्धे जाइ श्याम सुंदरको उनहीके गुण गावतहैं ॥ जैसे उन मोको परतेजी कबहूं फिरि न निहारतहैं। सूर भलेको भलो होइगो वेतोपंथ बिगारतहैं॥राग बिलावल॥ सुन सजनी तू भई अयानी। या कलियुगकी बात सुनाऊं मैं तोहिं जानति बडी सयानी॥जो तुम करौ भलाई को- टिक सो नहिं मानै कोई। जे अनभले बडाई ताकी मानै जोई सोई ॥ प्रगट देखि कहुँ दूरि बताऊं हमहुँ श्यामको ध्यावैं। सुनहु सूर सब व्याकुल डोलैं नैन तुरत फल पावैं॥राग बिलावल॥नैन करैं सुख हम दुख पावैं। ऐसो को परवेदन जानै जासों कहि जु जनावैं ॥ ताते मौन भलो सबहीते कहिकैमान गँवावैं।लोचन मन इन्द्रीहरिको भजि तजि हमको रिस पावैं ॥ वेतोगएआपने करते वृथा जीव भरमावैं। सूर श्यामहैं चतुरशिरोमणि तिनसों भेद सुनावैं॥राग धनाश्री ॥ इननैननि- की कथा सुनावैं। इनको गुण अवगुन हरिआगे तिन लै भेद जनावैं॥ इनसों तुम परतीत बढ़ा- वत एहैं अपने काजी। स्वारथ मानिलेत रति करिकै बोलत हांजी हांजी ॥ ए गुण नहिं मानत काहूको अपने सुख भरिलेत। सूरज प्रभु ए ऐसेहैं सब फिरि पाछे दुख देत॥राग सोरठ॥ये नैनायों आहिं हमारे। इतनेते इतने हम कीन्हें बारेते प्रतिपारे ॥ धोवति पुनि अंचल लै पोछति आंजति इनहि बनाई। बडे भए तबलों न मानि यह जहं तहं चलत भगाई ॥ ऐसे सेवक कहां पाइ- हौ इहै कहैं हरिआगे। ए अब ढीठ भये ह्यां डोलत इनहिं बनैपरि त्यागे॥सूर श्याम तुमत्रिभुवन- नायक दुखदायक तुम नाहीं ॥ ज्यों त्योंकरि यह हम हि मिलावहुइहै कहति बलिजाहीं॥राग सूही॥ नैननिको अब नहींपत्याउँ।बहुरचोउनको बोलतिहौंतुम हाइ हाइ लींजैनाहिं नाउँ ॥ अब उनको मैं नाहिं बसाऊं मेरे उनको नाहीं ठाउँ।व्याकुलभईडोलिहौं ऐसेहि वेजहँरहैंतहांनहिंजाउँ॥खाइखवाइ बडे जब कीन्हें बसेजाइ अब औरहिगाउँ। अपनोकियो फलहिपावैंगेमैं काहे उनको पछिताउँ। जैसे लोन हमारो मान्यो कहा कहौं कहि काहि सुनाउँ । सूरदासमैं इनबिन रैहौं कृपाकरैंउनको शरमाउँ ॥राग सूही॥सतरहोति काहेको माई। आए नैनधाइकै लीजेआवत अबह्यां वे बेहाई॥जिनि अपनो घर डर परित्याग्यो तौ उनि वहां कछू निधि पाई। परे जाइ वा रूप लूटिमें जानतिहौं उनकी चतुराई ॥ बिनकारणतुम शोर लगावति वृथा होति कापर रिसयाई। सूर श्याममुखमधुर हँसनिपर बिबसभए वैतनबिसराई॥राग बिहागरो॥लोचनआइ कहाह्यां पावैं।कुंडलझलक कपोलनि रीझि श्याम पठाए उनहीं आवैं ॥ जिनि पायो अंमृत वट पूरण छिनु छिनु खात अघात । ते

तुमसों फिरिके रुचि मानैं कहति अचंभव बात ॥ रस लंपट वे भए रहतहैं ब्रज घरघर यह बानी। हमहूँको अपराध लगावहिं एऊ भई देवानी॥ लूटहिं ए इंद्रीमन मिलिकै त्रिभुवन नाम हमारो।सूर कहाँ हरि रहत कहाँ हम यह काहे न बिचारो॥रागधनाश्री॥नैननते यह भई बडाई।घरघर इहै चवाव चलावत हमसों भेट न माई ॥ कहां श्याम मिलि बैठी कबहूं कहनावति ब्रज ऐसी। लूटहिं ए उपहास हमारो यह तौ बात अनैसी ॥ एई घर घर कहत फिरतहैं कहा करें पचिहारी। सूर श्याम यह सुनत हँसतहैं नैन किये अधिकारी ॥राग सारंग॥नैन भएअधिकारी जाइ । यह तुमबातसुनी सखि नाहीं मन आए गए भेद बताइ॥जब आवैं कबहूं ढिगमेरे तबतब इहै कहतहैं आइ॥हमहीं लै मिलयो हम देखत श्यामरूपमें गए समाइ॥ अब वोऊ पछितात बात कहि उनहूंको वे भएबलाइ। अपनो कियो तुरत फल पायो जैसी मन कीन्ही अधमाइ ॥इंद्री मन अब नैनन पाछे ऐसे उन वश किए कन्हाइ । सूरदास लोचनकी महिमा कहा कहैं कछु कही न जाइ ॥राग रामकली॥ जबते हरि अधिकार कियो । तबहींते चतुरई प्रकाशी नैनन अतिहि कियो ॥ इंद्रिनपर मन नृपति कहावत नैनन इहै डरात । काहेको मैं इनहि मिलाए जानि बूझि पछितात ॥ अब सुधि करन हमारी लागे उनकी प्रभुता देखि।हियो भरत कहि इनहि ढराऊं वे इकटक रहे पेखि॥अबमानीहौंदोष आपनी हमहीं बेच्यो आइ। सूरदास प्रभुके अधिकारी एई भए बजाइ ॥राग बिलावल॥यद्यपि नैन भरत ढरि जात। इकटक नैक नहीं कहुँ टारत तृप्ति न होत अघात ॥ अपनेही सुख भरत निशादिन यद्यपि पूरणगात। लैलै भरत आपने भीतर औरहि नहीं पत्यात ॥ जोइ लीजै सोई है अपनो जैसे चोर भगात। सुनहु सूर ऐसे लोभी धनि इनको पितु अरु मात ॥ ॥रागसोरठ॥नैना अतिही लोभ भरे । संगहि संग रहत वे जहँ तहँ बैठत चलत खरे ॥ काहूकी परतीति न मानत जानत सबहिन चोर। लूटत रूप अखूट दामको श्यामवश्ययो भोर ॥ बडे भाग मानी यह जानी कृपिण न इनते और । ऐसी निधि मैं नाउँ न कीन्हों कह लैहैं कहँ ठौर ॥ आपन लेहिं औरहूं देते यश लेते संसार। सूरदास प्रभु इनहि पत्याने को कहै बारहि बार ॥राग कान्हरो॥ऐसे आपस्वारथी नैन ।अपनोईपेटभरतहैं निशिदिनऔर नलैन नदैन ॥बस्तु अपार परयो वोछे करए जानत घटिजैहै। को इनसों समुझाइ कहै यह दीन्हेही अधिकैहै॥सदा नहीं रैहो अधिकारी नाउँ राखि जो लेते। सूर श्याम सुख लूटैं आपुन औरनहूको देते ॥ ॥राग बिलावल॥जे लोभी ते देहिं कहारी। ऐसे नैननहीं मैं जानेजैसे निठुरमहा री॥ मन अपनो कबहूं बरु ह्वैहै ए नहिं होहिं हमारे।जबते गए नंदनंदन ढिग तबते फिर न निहारे॥ कोटि करौं वै हमहिं न मानैं गीधे रूप अगाध॥सूर श्याम जो कबहूं त्रासैं रहै हमारी साध ॥राग नट॥ नैना भये घरके चोर। लेत नहिं कछु बनै इनसों देखिछबि भए भोर ॥ नहीं त्यागत नहीं भागत रूप जाग प्रकाश । अलक डोरनि बांधि राखे तजौ उनकी आश॥मैं बहुत करि बरजि हारी निदरि निकसे हेरि। सूर श्याम बँधाइ राखे अंगके छबि घेरि॥ राग बिलावल ॥ भली करी उन श्याम बँधाए। बरज्यो नहीं करयो उन मेरो अति आतुर उठि धाए ॥ अलपचोर बहुमाल लुभाने संगी सबन धराए । निदरि गए तैसो फल पायो अब वै भए पराए ॥ हमसों इन अति करी ढिठाई जो करि कोटि बुझाए। सूर गए हरि रूप चुरावन उन अप-वश करि पाए॥राग बिहागरो॥लोचन चोर बांधे श्याम।जातही उन तुरत पकरे कुटिल अलकनि दाम॥ सुभग ललित कपोल आभा गीध दाम अपार ।और अंग छबि लोग जागे अब नहीं

निरवार॥ संग गए वै सबै अटके लटक अंग अनूप। एक एकहि नहीं जानत परे शोभा कूप॥ जो जहां सो तहां डारचो नेक तनु सुधि नाहिं। सूर गुरुजन डरहि मानत इहै कहि पछिताहिं॥ ॥ राग जैतश्री॥ लोचन भए पखेरू माइ। लुब्धे श्याम रूप चाराको अलक फंद परे जाइ। मोर मुकुट टाटी मानो यह बैठनि ललित त्रिभंग। चितवनि ललित लकुट लासा लट कांपै अलक तरंग॥ दौरि गहनि मुख मृदु मुसुकावनि लोभ पींजरा डारे। सूरदास मन व्याध हमारो गृह बनते जु बिसारे॥ राग गुंडमलार ॥कपट कन दरश खग नैन मेरे। चुनत निरखनि तुरत आपुही उडि मिले परचो चारा पेट मंत्र केरे॥ निरखि सुंदर वदन मोहनी शिर परी रहे एकटक निरखि डरत नाहीं। लाज कुलकानि बश फेरि आवत कबहुँ रहत नहिं नेकहू उतहि जाहीं॥ मृदु हँसनि व्याध पढि मंत्र बोलनि मधुर श्रवण ध्वनि सुनत इत कौन आवैं। सूर प्रभु श्याम छबि धामही- में रहैं गेह बन नाम मनते भुलावैं॥ राग मारू॥ नैन खग श्याम नीके पठाए। किये वश कपट कनमंत्रके डारिकैलएअपनाइ मनो इनपठाए॥ बेगिधे उनहिंसों रूपरस पान करि नेकहू टरत नहिं चीन्हि लीन्हें। गये हमको त्यागि बहुरि कबहूं न फिरे केचुरी उरग ज्यों छोंडि दीन्हें॥ एक ह्वै- गए हरदीचून रंगज्यों कौनपै जात निरुवारि माई। सूर प्रभुकृपामय कियो उन वास रुचि निज देह बन सघन सुधि भुलाई॥ राग बिहागरो॥ नैना ऐसे हैं विश्वासी। आप काज गौने हमको तजि तबते भए निरासी॥ प्रतिपालन करि बडे कराये जानि आपनो अंग। निमिष निमिषमें धोवति आंजति सिखए भाव तरंग॥ हम जान्यो हमको ये ह्वैहैं ऐसे गए पराई। सुनहु सूर बरजतही बरजत चेरे भए बजाइ॥ राग जैतश्री॥ नैना भए प्रगटही चेरे। ताको कछु उपकार न मानत हम ए किए बडेरे॥ जो बरजों यह बात भली नहिं हँसत न नेक लजात। फूले फिरत सुनावत सबको एतेपर न डरात॥ इहो कही हमको जिनि छाँडो तुम बिनु तनु बेहाल। तमकि- उठे यह बात सुनतही गीधे गुण गोपाल॥ मुकुट लटक भौंहनकी मटकनि कुंडल झलक कपोल। सूर श्याम मृदु मुसुकनि ऊपर लोचन लीन्हें मोल॥ राग सोरठ॥ लोचनभृंग भए री मेरे। लोकलाज बन घन वेली तजि आतुरह्वै जु गडेरे॥ श्यामरूप रस बारिज लोचन तहां जाइ लुब्धे रे। लपटे लटकि पराग बिलोकनि संपुट लोभ परे रे॥ हँसनि प्रकाश विभास देखिकै निकसत पुनि तहां बैठत। सूर श्याम अंबुज कर चरणनि जहँ तहँ भ्रमि भ्रमि पैठत॥ राग रामकली॥ लोचनभृंगको- सरसपागे। श्याम कमलपदसों अनुरागे॥ सकुचकानि बनवेली त्यागी॥ चले उडाइ सुरति रति पागी॥ मुक्तिपराग रसहि इन चाख्यो। नव सुख फूल रसहि इनि नाख्यो॥ इनते लोभी और न कोई। जो पटतर दीजै कहि सोई॥ गए तबहिते फेरि न आए। सूर श्याम बेगहि अटकाए॥ राग सारंग॥ नैना पंकज पंग खचे। मोहन मदन श्याम मुख निरखत भ्रूवबिलास रचे॥ बोलनि हँसनि विराजमान अतिश्रुति अवतंस सचे। जनुपिनाककीआशलागि शशि सारंग शरनबचे॥ चंदचकोर चातक ज्यों जलधर हर रिपु हरषि नचे॥ पुहुपवास लै मधुप शैलवन धनु करि भवन रचे॥ परमप्रीतिके कुंड महागज काढत बहुत पचे। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको मुनिजन मानि मचे॥ राग सारंग॥ नैना बींधे दोऊ मेरे। मानो परे गयंद पंकमहिं महासबल बलकेरे॥ निकसत नहीं अधिक बल कीने जतन न बने घनेरे। श्यामसुंदरके दरश परसमें इत उत फिरत न फेरे॥ लंपट लवनि अटक नहिं मानति चंचल चपल अरेरे। सूरदास प्रभु निगम अगम सुनि सुनि सुमिरत बहुतेरे॥ राग धनाश्री॥ मेरे नैन कुरंग भए। जोबन बनते निकसि चले ए मुरली नाद रए॥ रूप व्याध

कुंडल दुति ज्वाला किंकिनि घंटा घोष। व्याकुल ह्वै एकहि टक देखत गुरुजन तजि संतोष ॥ भौंह कमान नैन शर साधनि मारनि चितवनि चार। ठौर रहैं नहिं टरत सूर वै मंद हँसनि शरधार ॥ राग रामकली ॥ नैन भए वश मोहनके।ज्यों कुरंग वश होत नादके टरत नहीं तागोहनते।ज्योंमधुकर वश कमलकोशके ज्यों वश चंद चकोर। तैसेहि ए वश भयेश्यामके गुडी वश्य ज्यों डोर॥ज्योंवश स्वातिबून्दके चातक ज्यों वश जलके मीन।सूरजप्रभुकेवश्य भए ए छिनु२प्रतिजुनवीन॥राग देवी ॥ ऐसेवश्यनकाहुहिकोउ। जैसेवश नँदनंदनकोए नैनामेरेदोउ॥ चन्द्रचकोर नहीं सरिइनकी एको पल न बिसारत। नाद कुरंग कहा पटतर इन व्याध तुरतही मारत ॥ ए वश भए सदा सुख लूटत चतुर चतुरई कीन्हों। सूरदास प्रभु त्रिभुवनके पति ते इन वश करि लीन्हों॥ राग जैतश्री ॥ ए नैना अप-स्वारथके। और इनहि पटतर क्यों दीजै वे हैं सब परमारथके॥ बिना दोष हमको परित्याग्यो सुख कारण भए चेरे। मिले धाइ बरज्यो नहिं मान्यों तके न दायि न डेरे॥ इनको भलो होइगो कैसे नैक न सेवा मानी। सूर श्याम इनपर कहा रीझे इनकी गति नहिंजानी ॥राग सूही ॥ नैना लोनहरामी ए। चोर ढुंढ बटपार अन्याई अपमारगी कहावैं जे॥ निलज निर्दयी निशंक पातकी जैसे आप स्वारथी तजिकै। बारेते प्रतिपालि बढाए बडे भए गए तब तजिकै॥हमको निदरि करत सुखहरिसँगवैउनिलीन्हो हितकरिकै॥ मिले जाइसूरजके प्रभुको जैसे मिलत नीर अरुपै॥ राग जैतश्री ॥ नैन मिले हरिको ढरि भारी। जैसे नीर नीर मिलि एकै कौन सके ताको निरुवारी॥वातचक्र ज्यों तृणहिं उडत लै देहसंग ज्यों छांह। पवन वश्य ज्यों उडत पताका ए तैसे छबि मांह। मम पाछे ए आगे धावत इंद्री इनहि लजाने। सूर श्याम जैसे इन जाने त्यों काहू नहिं जाने॥ राग नट ॥ लोचन भए अतिही ढीठ। रहतहैं हरि संग निशि दिन अतिहि नवल अहीठ॥ वदत काहू नहीं निधरक निदरि मोहिं न गनत। बार बार बुझाइ हारी भौंह मोपर तनत॥ज्यों सुभट रण देखि टरत न लरत खेत प्रचारि। सूर छबि सन्मुखहि धावत निमिष अत्रनि डारि ॥राग बिलावल॥ सुभट भए डोलत ए नैन। सन्मुख भिरत मुरत नहिं पाछे शोभा शूर डैरन ॥ आपुन लोभ अत्र लै धावत पलक कवच नहिं अंग। हाव भाव रस लरत कटाक्षनि भृकुटी धनुष अपंग॥ महाबीर ए उत अंग अंग बल रूप सैन पर धावत। सुनहु सूर ए लोचन मेरे यकटक पलक न लावत॥ राग जैतश्री ॥ सेवा इनकी वृथा करी। ऐसे भए दुखदायक हमको एही सोच मरी॥ घूँघट ओट महलमें राखति पलक कपाट दिए। ए जोइ कहैं करैं हम सोई नाहिन भेद हिए॥ अब पाई इनकी लँगराई रहते पेट समाने। सुनहु सूर लोचन बटपारी गुण जोइ सोइ प्रगटाने॥राग गौरी ॥नैना हैं री ए बटपारी। कपट नेह करिकरि इन हमसों गुरुजनते करी न्यारी॥ श्याम दरश लाडू करि दीन्हो प्रेम ठगौरी लाइ। मुख परसाई हँसन मधुरता डोलत संग लगाइ॥ मन इनसों मिलि भेद बतायो विरह फाँस गरे ारी। कुललज्जा संपदा हमारी लूटि लई इन सारी॥ मोह विपिनमें पडी कहरतिहौं नेह जीव नहिं जात। सूरदास गुण सुमिरि सुमिरि वे अंतरगति पछितात॥ राग बिहागरो ॥ तिनको श्याम पत्याने सुनियत। ह्यांऊ जाइ अकाज करैंगे गुण गुनि गुनि शिर धुनियत॥ विवश भई तनुकी सुधि नाहीं विरह फाँस गयो डारि। लगनि गांठि बैठी नहिं छूटति मगन मूरछा भारि॥ प्रेमजीव निसरत नहिं कैसेहु अंतर अंतर जानति। सूरदास प्रभु क्यों सुधि पावैं बार बार गुण गावति॥रागसारंग॥रोमरोम ह्वै नैन गए री। ज्यों जलधर पर्वतपर बरषत बूंद बूंद ह्वै झरनि दए री ॥ ज्यों मधुकर रस

कमल पान करि माते तजि उनमत्त भये री। ज्यों कांचुरी भुअंगम तजही फिरि न तकै जुगए सुगए री॥ऐसी दशा भई री इनकीश्यामरूपमेंमगन रए री॥सूरदास प्रभु अगणित शोभानाजानौं केहि अगछएरी॥ राग सारंग॥नैननिरखिअजहूँ न फिरे री॥हरिमुख कमलकोश रस लोभीमनहुमधुप मधु माति गिरे री॥ पलकनि शूल सलाकसहीहै निशिवासरदोउ रहत अरे री। मानहुबिवर गए चलि कारे तजि कंचुरी भयेनिररेरी॥ ज्यों सरिता पर्वतकी खोरी प्रेम पुलक श्रमस्वेद झरे री॥बूंद बूंद ह्वै मिले सूर प्रभुना जानो केहिघाटतरे री॥ राग सारंग॥नैनगए सु फिरे नहिंफेरि। यद्यपिघेरिघेरि मैं राखति रहे नहीं पचिहारी टेरि॥कहाकहौं सपनेहुँ नहिंआवतवश्यभएहरिहीके जाई। मोते कहा चूक उनिजानी जाते निपटगए बिसराई॥ छिनहूकी पहिचानि नमानी उनको हम प्रतिपाले प्रेम। जो तजि गए हमारे वैसेइ उन त्याग्यो हमहैं वोहिनेम।मात पिता संगहि प्रतिपाले सँगही संग रहे निशियाम।सुनहु सूर ए बालसँघाती प्रेम बिसारि मिले ढरिश्याम॥ राग नट ॥नैननि देखिवेकी ठौर। नन्द गोपकुमार सुंदर किएचंदन खौर॥ शीशपिंड शिखंड भ्राजत नखशिखा छबिऔर।सुभगगावनि मृदुबजावनिबैन सुललितगौर॥कुटिलकच मृगमदतिलकछबि वचन मंत्रठगौर।सूरप्रभुनटरूप नागरनिरखिलोचनवौर॥ राग मलार॥तबतेनैनरहे यकटकही। जबतेश्यामत्रिभंगललितगतिजात भई इन तकही॥मुरलीधरेअरुनअधरनि पर कुंडल झलक कपोल।निरखत यकटक पलक भुलानोमानो बिकाने मोल॥ हमको वै काहे न बिसारैंअपनी सुधि उन नाहिं। सूर श्याम छबिसिंधुसमाने वृथा तरुनि पछिताहिं ॥ राग मलार॥नैना नैननिमाँझ समाने। टारे न टरत एक मिलि मधुकर सुरसमत्त अरुझाने॥ मन गति पंगु भई सुधि बिसरी प्रेम पराग लुभाने। मिले परस्पर खंजन मानों झगरत निरखि लजाने॥मन वच क्रम पलवोट न भावत छिनु युग वरस समाने।सूर श्यामके वश्य भए ए जेहि बीते सो जाने॥ राग गौरी ॥ मेरे माई लोभी नैन भए। कहाकरौं ए कह्योनमानेबरजतही जो गए॥ रहत न घूँघटवोट भवनमें पलक कपाट दए। लए फँदाइ बिहंगम मानो मदन व्याध विधए॥ नहिं परमिति मुखइंदुसुधानिधि शोभा नितहि नए। सूर श्याम तनु पीतबसन छबि अंग अनंग जितए॥ राग बिहागरो ॥ नैना लोभहिं लोभ भरे। जैसेचोर भरे घरहीमें बैठब उठत खरे॥ अंग अंग शोभा अपार निधि लेत न सोच परे। जोइ देखै सोइ सोइ निमोंले करलै तहीं धरै॥ त्यों लुब्धे ए टरत न टारे लोकलाज न डरे। सूर कछू उनिहाथ न आयो लोभ जाग पकरे ॥ राग सेर ॥नैना वोछे चोर सखी री। श्याम रूपनिधि नोखे पाई देखत गए भरी री॥ अंग अंग छबि चित्त चलायो सो कछु रहति परी री। कहा लेहिं कह तजौं विवश भए तैसियकरनि करी री॥ पुनि पुनि जाइ एक एक लेते आतुर धरणि धरी री। भोरे भए भोरसो ह्वैगयो धरे जगार परी री॥ जो कोउ काज करै बिन बूझे पेलि महत्त हरी री। सूर श्याम वश परे जाइकैज्यों मोहिं तजी खरी री॥ राग मलार ॥नैना मारेहू पर मारत। राखी छबि दुराइ हृदयमें तिनको हिय भरि डारत॥ आपुन गए लभी कीन्ही अब उनहि इहांते टारत। बरबशही लै जान कहतहैं पैज आपनी सारत॥ऐसे खोज परचो यह लेहैं आवत जातन हारत।उनके गुण कैसे कहि आवै सूर पयारहि झारत॥ राग मलार ॥नैना खोज परेहैं ऐसे।नेक रही हरिमूरति हृदय डाह मरतहैंजैसे॥ मनतौ गयो इंद्रियन लैकै बुधि मति ज्ञान समेत।जिनकी आशसदा हम राखैं तिन्ह दुख दीन्हो जेत॥ आपुन गए कौन सो चालै करत ढिठाई और। नेक रही छबि दुति हिरदेमें ताहि लगावत ठौर॥ गए रहे आए एहि कारज भरि ढारतहैं ताहि। सूरदास नैननिकी महिमा कोहै

कहियें काहि ॥ राग सारंग ॥ नैना यहि ढंग परे कहा करौं माई। आएफिरिकौनकाज कबहिंमैंबुलाई ॥ अबलौं इह आश रही मिलिहैं ये आई। भाँवरिसी पारि फिरैं नारि ज्यों पराई॥ आवतहैं ताहि लेन ऐसे दुखदाई। मारेको मारतहैं बडे लोग भाई ॥ अतिही ए करत फिरत दिनही ढिठाई। सूर दास प्रभु आगे चलौ कहैं जाई ॥ रागगौरी ॥ यहतोनैननिही जु कियो। सर्वसजोकछुरह्योहमारे सो है हारेहि दियो॥ बुधि बिबेककुलकानि गँवाई इंद्रिन कियो वियो। आपुन जाइ बहुरिआयो यह चाहत रूप लियो ॥ अबलाग्यो जिय घातकरनको ऐसोनिठुरहियो। सुनहुसूरप्रतिपालेको गुण वैरइ मानि लियो॥ राग नट ॥ मेरे नैन चकोर भुलाने। अहनिशि रहत पलकसुधि बिसरे रूप सुधा न अघाने॥ पल घटिका घरी याम दिनहिदिन युगही युग बरजाने। स्वाद परयो निमिषौ नहिं त्यागत ताही मांझसमाने॥ हरि मुख विधु पीवत ए व्याकुल नेकहु नहीं थकाने। सूरदास प्रभु निरखिललिततनु अंगअंगअरुझाने॥ राग सारंग ॥ हरिमुख विधु मेरी अँखियां चकोरी। राखे रहति वोट पटजतननि तऊ न मानत कितक निहोरी॥ बरबसही इन गही मूढता प्रीत जाय चंचलसों जोरी। बिबश भए चाहत उडिलागन अटकत नेक अंजनकीडोरी॥ बरबसहीइनगही चपलता करत फिरत हमहूंसों चोरी। सूरदास प्रभुमोहननागर बरषिसुधारस सिंधु झकोरी ॥ राग बिहागरो ॥ लोचन लालचते न टरे। हरि सारंगसों सारंग गीधे दधिसुत काज जरे ॥ ज्यों मधुकर वश परे केतकी नहिं छांते निकरे। ज्यों लोभी लोभहिं नहिं छांडत ए अति उमँगि भरे ॥ सन्मुख रहत सहत दुख दारुण मृग ज्यों नहीं डरे। वह धोखे यह जानतहै सब हितचितसदाकरे ॥ ज्यों पग फिर फिर परत प्रेमवश जीवत मुरछि मरे। जैसे मीन अहारलोभते लीलत परे गरे ॥ ऐसेहि ए लुब्धे हरि छबिपर जीवत रहत भिरे। सूर सुभट ज्यों रण नहिंछांडत जबलौं धरनि गिरे ॥ रागनट ॥ मेरे नैननि कोउ समुझावै री। अपनो घर तुम छांडे डोलत मेरे ह्यां लै आवै री ॥ इहै बूझि देखौ नीकेकरि जहां जात कछु पावै री। वृथा फिरतनटके गुण देखत नानारूप बनावैरी॥ देखतकेसबसांचे लागत ताहि छुवननहिं पावै री। सूर श्याम अँगअग माधुरी शत शत मदन लजावै री ॥ राग नट ॥ हरि छबि अंग नटके ख्याल। नैन देखत प्रगटसबकोउ कनकमुकुता लाल॥ छिनकमें मिटिजात सोपुनि और करत बिचार। त्योंही एछबि और औरै रचत चरित अपार ॥ लहैतबजो हाथआवैदृष्टिनहिं ठहरात। वृथा भूले रहतलोचन इनहि कहैको बात ॥ रहतनिशिदिनसंगहरिकेहरषनहींसमात। सूर जबजब मिलेहमको महाविह्वलगात॥ राग कान्हरो ॥ भईगई ए नैनन जानत। फिरि फिरिजातलहत नहिं शोभा हारेहुँ हारि न मानत॥ बूझहु जाइ रहतनिशि बासर नेक रूप पहिचानत। सुनहुसखी सतरात इतेपर हमपर भौंहैं तानत ॥ झूठे कहत श्यामअंग सुंदर बातैं गढिगढिबानत। सुनहुसूरछबिअति अगाधगति निगम नेति जेहि गावत॥ राग बिहागरो ॥ श्यामछबिलोचनभटकि परे। अतिहि भएबेहाल सखीरीनिशिदिन रहतखरे॥ हमते गए लूटिलेवेको उनहि परयो अबसोच। अपनो कियो तुरत फल पायो गखति घूँघट वोट॥ इकटक रहत पराए वश भए दुख सुख समुझि न जाइ। सूर कहो ऐसो को त्रिभुवन [illegible] सिंधु थहाइ ॥ राग नट ॥ नैन भये वोहितके काग। उडि उडि जात पार नहिं पावे फिरि आवत नहिं लाग॥ ऐसीदशा भई री इनकी अब लागे पछितान। मो बरजत बरजत उठि धाये नहिं पायोअनुमान॥ वह समुद्रवोछेवासनए धरैंकहांसुखराशि। सुनहु सूर ए चतुर कहावत वह छबि महा प्रकाशि॥ राग गौरी ॥ हारि जीत नैना नहिं जानत। धाए जात तहींको फिरि फिरि वै कितनो अपमानत ॥ परे रहत द्वारे शोभाके वोई गुण गुणि गानत। हरपत रहत सबनिको निदरे नेकहु

लाज न आवत॥ अबतो रहत निपसई कीन्हें यद्यपि रूप न जानत । दुख सुख बिरह संयोग समेत जनु सूरदास यह गावत॥ राग रामकली ॥नैना मानपमान सह्यो । अति अकुलाइ मिले री बरजत यद्यपि कोटि कह्यो ॥ जाकी बानि परी सखि जैसी तेही टेक रह्यो । ज्यों मर्कट मूठी नहिं छांडत नलिनी सुवा गह्यो ॥ जैसे नीरप्रवाह समुद्रहि बह्यो सुबह्यो सुबह्यो । सूरदास इनि तैसिय कीन्हीं फिरि मोतन न चह्यो ॥ राग सोरठ ॥ यह नैननिकी टेव परी । जैसे लुबधति कमलकोशमें भ्रमराकी भ्रमरी ॥ ज्यों चातक स्वातिहि रटलावै तैसिय धरनि धरी। निमिष नहीं मिलवत पल एकौ आपुदशा बिसरी ॥ जैसे नारि भजै परपुरुषहि ताके रंग ढरी । लोक वेद आरजपथकी सुधि मारगहू न डरी ॥ ज्यों कंचुकी त्यागि वोहि मारग अहिघरनी न फिरी। सूरदास तैसेहि ए लोचनकी धौं परनि परी॥ राग बिहागरो ॥नैना गये न फिरे री माई । ज्यों मर्यादा जाति सुपतकी बहुरचो फेरि न आई ॥ जैसे बाला दशा बितावै फिरै नहीं तरुनाई। ज्यों जल ढरत फिरत नहिं पाछे आगेहि आगे जाई॥ ज्यों कुलवधू बाहिरी परिकै कुलमें फिरि न समाई । तैसी दशा भई इनहूँकी सूरश्यामशरनाई ॥ राग सूही ॥जबते नैन गये मोहिं त्यागि। इंद्री गईगयोतनुतेमनउनहिंबिनाअवसेरीलागि ॥ वे निर्दयी मोह मेरे जिय कहा करौं मैं भई बेहाल। गुरुजन उतै इहां इनि त्यागी मेरे बाँटे परचो जंजाल ॥ इतकी भई न उतकी सजनी भ्रमतभ्रमत मैं भई अनाथ । सूर श्यामको मिलजाइ सब दरशन करि वे भये सनाथ॥ राग बिलावल॥नैना मेरे मिलि चले इंद्रीमनसंग।मोकोव्याकुलछाडिकै आपुन करैं रंग॥ अपनो यह कबहुँ न करे अधमनिकेकाम। जनमगमायोसाथहीअब भईनिकाम॥ धिग जन ऐसे जगतमें यह कहिकहि पछिताति । धर्म हृदय जिनके नहीं धिगधिग तिनकी जाति॥ मनसावाचाकर्मनामोहिगएबिसारि। सूरसुमिरिगुननैनकेबिलपतिब्रजनारि॥ राग बिलावल॥नैननिसों झगरो करिहौं री। कहा भयो जो श्याम संग हैं बांह पकरि सन्मुख लरिहौं री॥ जनमहिते प्रतिपालिबडे कियेदिनदिनको लेखो करिहौं री। रूपलूटि कीन्हो तुम काहे अपने बांटको धरिहौं री॥ एक मात पितु भवन एक रहे मैं काहे उनको डरिहौं री। सूर अंश जो नहीं देहिंगे उनके रँग मैं हूँढरिहौं री॥ राग आसावरी ॥मोहूते वे ढीठ कहावत। जबहींलौंमैंमौन धरेहौं तबलौं वेकामनापुरावत ॥ मैं उनको पहिलेहिकरिराख्यो वेमोको काहे बिसरावत । आपकाजको उनहिं चले मिलि बांट देत रोई अब आवत ॥ बहुतै कानि करी मैं सजनी अब देखो मर्याद घटावत । जोजैसो तैसो त्योंचलिए हरिआगे गढि बात बनावत॥ मिल रहें नहिं उनको चाहति मेरो लेखोक्योंन बुझावत। सूर श्यामसँगगर्वबढायो उनहींके बल बैर बढावत ॥ राग धनाश्री॥ नैना न रहें री मेरे अटके। कछु पढिदिये सखी एहि ढोंटा घूँघरवारी लटके ॥ कज्जल कुलुफ मेलि मंदिरमें पलक संदूक पट अटके । निगम नेति कुललाज टूटि सब मन गयंदके उटके ॥ मोहनलाल करो वश अपने हो निमेषके मटके। पुरनर नारिन सुरपुर तुरतै सूर लगाए नटके॥ राग कार्फी ॥ नैना अटके रूपमें पल रहत बिसारे । निशिवासर नहिं संग तजैं भरिभरि जल ढारे॥ अरुन अधर द्युति चमकही चपला चकचौंधनि । कुटिलअलक छबिघुंघरे सुमनासुत शोधनि॥ चंपकलीसी नासिका रंग श्यामहिं लीन्हें । नैन विशाल समुद्रसो कुंडल श्रुति दीन्हें॥ तहँ ए रहे भुलाइकै कछु समुझि न जाई। सूर श्याम वेवश किए मोहनी लगाई ॥ राग जैतश्री॥ लोचन भूलिरहे तहां जाई । अंगअंग छबि निरखि माधुरी इकटक पल बिसराई ॥ अति लोभी अचवत अघातहैं तापर पुनि ललचात । देत नहीं काहूको नेकहु आपुहि डारत खात ॥ ओछे हाथ परी अपारनिधि काहू काम न आवै । सूर सबै

इनको क्यों सौंप्यो यह कहिकहि पछितावै ॥ राग धनाश्री ॥ नैनन यह कुटेव पकरी।लूटें श्याम रूप आपुनहीं निशि दिन पहर घरी ॥ प्रथमहिं इन यह नोखे पाई गए अतिहि इतराइ। मिले अचानक बडभागी हैं पूरण दरशन पाइ ॥ लोभी बडे कृपण को इनसरि कृपा भई यह न्यारी। सूरश्याम उनको भए भोरे हमको निठुर मुरारी ॥ राग गौरी ॥ सुन सजनी मोसों इक बात। भाग बिना कछु नहीं पाइए तू काहे पुनिपुनि पछितात ॥ नैनन बहुत करी री सेवा पल पल घरी पहर दिन राति। मन वच क्रम दृढता इनकी है धन्यधन्य इनकी है जाति ॥ कैसे मिले श्याम इनको ढरि जैसे सुतके हितको मात । सूरदास प्रभु कृपासिंधु वे सहज बडे हैं त्रिभुवनतात ॥ राग भैरव ॥ नैन श्यामसुख लूटतहैं। इहै बात मोको नहिं भावै हमते काहे छूटतहैं ॥ महाअक्षय निधि पाय अचानक आपुहि सबै चुगवतहैं। अपने हैं ताते यह कहियत श्याम इनहिं भरुहावतहैं ॥ यह संपदा कहौ क्यों पचिहै बालसँघाती जानतहैं। सूरदास जो देते कछुइक कहौ कहा अनुमानतहैं॥ राग रामकली॥सजनी मोते नैनगए।अबलौं आश रही आवनकी हरिके अंग छए ॥ जबते कमलवदन उन दरश्यो दिनदिन और भए। मिले जाय हरदी चूने ज्यों एकहि रंग रए ॥ मोको तजि भए आपु स्वारथी वा रस मत्त भए। सूर श्यामके रूप समाने मानो बूंद तए॥ राग बिहागरो॥नैन गएरीअतिअकुलात।ज्योंधावतजलनीचे मारग कहूं नहीं ठहरात ॥ कहा कहौं ऐसी आतुरता पवन वश्य ज्यों पात। ज्यों आये ऋतुराज सखी री द्रुमन तेज झहरात ॥ आइ बसी ऐसी जिय उनके मैं व्याकुल पछितात ।सूरदास कैसेहुँ न बहुरे गीधे श्यामल गात॥॥ राग रामकली॥लोभीनैन हैंये मेरे।उतहिश्यामउदारमनकेरूपनिधि टेरे ॥ जातही उन लूटि खाई तृषा जैसे नीर।क्षुधामें ज्यों मिलत भोजन होत जैसे धीर॥वे भए री निठुर मोको अब परी यह जान। अष्ट सिधि नव निद्धि हरितजि लेहिं ह्यां कह आन ॥ आपने सुखके भए वे हैं जो युगअनुमान। सूर प्रभु करि लियो आदर बडे परम सुजान ॥ राग आसावरी॥ नैननते हरि आपस्वारथी आजबात यह जानी री।एउनको वे इनको चाहत मिले दूध अरु पानी री ॥ सुनियत परमउदार श्याम घन रूपराशि उनमाहीं री।कीजे कहा कृष्णकी संपति नैन नहीं जु पत्याहीं री॥ बिलसत डारत रूप सुधानिधि उनकी कछु न चलावैरी। सुनहु मृग हम स्वातिबूँदलौं रटलागी नहिं पावै री ॥राग सारंग ॥जाते परचोश्यामघननाउं।इनतेनिठुर और नहिं कोई कवि गावत उपमाउँ॥ चातकके रट नेह सदा वह ऋतुअनऋतु नहिं हारत। रसना तारूसों नहिं लावत पीवै पीव पुकारत ॥ वे बरषत डोंगर बन धरणी सरिता कूप तडाग। सूरदास चातकमुख जैसेबूंद नहीं कहुँ लाग॥ राग मलार॥ श्यामघन ऐसे हैं री माई। हमकोदरश नहीं सपनेहू धरे रहत निठुराई॥ षटऋतु व्रत तनु गारि कियो क्यों चातक ज्योंरट लाई। उनमें है चित सदा हमारो नेक नहीं बिसराई ॥ इंद्री मन लूटत लोचन मिलि इनको वै सुखदाई। सूर स्वाति चातककीकरनी ऐसे हमहि कन्हाई॥ राग सारंग ॥नैनन हरिको निठुर कराए।चुगली करी जाइ उनआगे हमते वे उचटाए॥ इहै कह्यो हम उनहिं बोलावत वे नाहिंन ह्यां आवत। आरज पंथ लोककी शंका तुमतन आवत पावत ॥ यह सुनिकै उनहमहि बिसारी राखत नैनन साथ। लोभावश करिकै लूटतहैं बात आपने हाथ ॥ संगहि रहत फिरत नहिं कतहूं आपस्वारथी नीके।सुनहु सूर वे एऊ तैसेइ बड़े कुटिल हैं जीके॥ कपटी नैननते कोउ नाहीं। घरको भेद औरके आगे क्यों कहिबेको जाहीं॥ आप गए निधरक है हमते बरजि बरजि पचिहारी। मनका-

मना भयो परिपूरण हरि रीझे गिरिधारी ॥ इनहिं बिना वे उनहिं बिना ए अंतर नाहीं भावत। सूरदास यह युगकी महिमा कुटिल तुरत फल पावत ॥ राग बिलावल॥ कहा भए जो आपस्वारथी नैनन अपनी निंद्य कराई। जो यह सुनत कहत सोइ धृग धृग तुरतहि ऐसी भई बडाई। कहा चाहिए अपने सुखको इनतो सीखी इहै भलाई । अजहूँ जाइ कहै कोउ उनसों काहेको तुम लाज गँवाई ॥ अचरज कथा कहतिहौं सजनी ऐसी इह तुमसों चतुराई । सुनहु सूर जे भजि उबरेहैं तिनको तुम अब चाहति माई ॥ राग बिहागरो ॥ सजनी नैना गए भगाइ। अवातीरको नीडवरे री कैसे फिरिहैं धाइ ॥ बरत भवन जैसे दहियतहै निकसे त्यों अकुलाइ । सोउ अपनो नहिं पथिक पंथके वासा लीन्हों आइ ॥ ऐसी दशा भईहै इनकी सुखपायो ह्वां जाइ । सूरदास प्रभुको ए नैना मिले निसान बजाइ॥ राग बिलावल॥ मोहन बदन बिलोकि थकितभए माईरीएलोचनमेरे। मिले जाइ अकुलाइ अगमने कहा भयो जो घूँघट घेरे ॥ लोकलाज कुलकानि छाँडिकरिबरबस चपल चपरि भए चेरे। काहेको वादिहि बकति बावरी मानत कौनमतेअब तेरे ॥ ललितत्रिभंगी तनु छबि अटके नाहिंन फिरत कितौऊ फेरे ॥ सूरश्याम सन्मुखरति मानत गए मगबिसरि जाहिं नहिं डेरे॥ राग रामकली ॥ थकितभए मोहनमुख नैन। घूँघट वोट न मानत कैसेहुबरजतबरजत कीन्हो गौन॥ निदरि गई मर्यादा कुलकी अपनो भायो कीन्हो । मिले जाइ हरि आतुरह्वैकैलूटिसुधारस लीन्हो ॥ अब तू बकति वादिरी माई कह्यो मानि रहि मौन। सुनहु सूर अपनो सुख तजिकै हमहिं चलावै कौन ॥ राग देवगंधार॥ मेरे इन नैनन इते करे। मोहनवदनचकोर चंद्र ज्यों यकटक-ते न टरे ॥ प्रमुदित मणि अवलोकि उरग ज्यों अति आनंद भरे। निधिहि पाइ इतराइ नीच ज्यों त्यों हमको निदरे॥ मृदु मुसुकानि मनो ठग लडुआ मिषि गति मति सुध बिसरे। फेरि लगे अँग अँग सो हरिके समुझि न सुधि पकरे॥ ज्यों अटके गोचर घूँघट पट शिशु ज्यों अरनि अरे। धरे न धीर अनमने रुदनबल सो हठकरनिपरे। रही ताडि खिझिलाइ लकुट लै एकहु डर न डरे। सूरदास गथ खोटो काहे पारखि दोष धरे ॥ राग जैतश्री ॥ नैनन दशा करी यह मेरी। आपुन भए जाइ हरिचेरे मोहिं करत हैं चेरी ॥ जूठो खइए मीठे कारण आपुहि खात लडावत। और जाइ सो कौनन फेको देखन तौ नहिं पावत ॥ काज होइ तौ इहौ कीजिए वृथा फिरै को पाछे। सूरदास प्रभु जब जब देखत नट सवाँगसो काछे ॥ ॥ राग बिलावल॥ को इनकी परतीति बखाने। नैना धौं काहेते अटके कौन अंग ढरकाने॥ उनके गुण वारेहिते सजनी मैं नीकेकरि जाने। चेरे भए जाइ ए तिनके कैसे उनहि पत्याने॥ छिन छिनमें औरै गति जिनकी ऐसे आप सयाने। सूर श्याम अपने गुण शोभा को नहिं वश करि आने॥ राग रामकली॥ नैननि कठिन बानि पकरी। गिरिधर लाल रसिक बिन देखे रहत न एक घरी॥ आव-तही यमुनाजल लीन्हें सखी सहज डगरी। वे उलटे मग मोहिं देखके हौं उलटी उन लै गगरी॥ वह मूरति तबते इन बलकरि लै उरमांझ धरी। ते क्यों तृप्ति होत अब रंचक जिनि पाई सिगरी ॥ जग उपहास लोकलज्जा तजि रहे एक जकरी। सूर पुलक अँगअंग प्रेम भरि श्याम संग तकरी ॥ राग रामकली ॥ नैननि बानि परी नहिं नीकी। फिरत सदा हरि पाछे पाछे कहा लगनि उन जीकी॥ लोकलाज कुलकी मर्यादा अतिही लागति फीकी। जोबीतति मोकोरी सजनी कहौं काहि यह हीकी ॥ अपने मन उन भली करीहै मोहि रहे हैं बीकी । सूरदास ए जाइ लुभाने मृदु मुसुकनि हरि पीकी ॥ राग धनाश्री ॥ ऐसे निठुर नहीं जग कोई॥ जैसे निठुर

भये डोलतहैं मेरे नैना दोई ॥ निठुर रहत ज्यों शशि चकोरको वै उन बिन अकुलाहीं । निठुर रहत दीपक पतंग उडि ज्यों जरि बरि मरिजाहीं ॥ निठुर रहत जैसे जल मीनहि तैसिय दशा हमारी ।सूरदासधृगधृगतिनकोहैजिनकेनाहींपीरपरारी ॥ राग धनाश्री ॥ नैनामानैंननहिंमेरोबरज्यो। इनके लिए सखी री मेरो बाहर रहै न घर ज्यो॥यद्यपि जतन कियेराखतिहीतदपिनमानतइरज्यो। परवश भई गुडी ज्यों डोलति परच्यो पराए कर ज्यो ॥ देखे बिना चटपटी लागति कछू मूड पढि पर्ज्यो । को बकि मरे सखीरी मेरे सूरश्यामके थरज्यो ॥ राग नटनारायण ॥ नैनाकह्योमानत नाहिं । आपनेहठ जहां भावत तहांको ए जाहिं ॥ लोकलज्जा वेदमारग तजत नहीं डराहिं । श्याम रसमें रहत पूरण पुलक अंगन माहिं ॥ पियहिके गुण गुणत उरमें दरश देखि सिहाहिं । वदत हमको नेक नाहीं मरहिं जो पछिताहिं ॥ धरनि मन बिच धरी ऐसी कर्मना करि ध्याहिं। सूर प्रभुपदकमल अलि ह्वै रैनि दिन न भुलाहिं ॥ राग आसावरी ॥ परी मेरे नैनन यह बानि। जब लगि मुख निरखत तब लगि सुख सुंदरताकी खानि ॥ ए गीधे बीधे न रहत सखि तजी सबनिकी कानि । सादर श्रीमुखचंद्र विलोकत ज्यों चकोर रति मानि ॥ अतिहि अधीर नीर भरि आवत सहत न दरशनहानि । कीजेकहा बांधिकरिसौंपी सूरश्यामके पानि ॥राग जैतश्री ॥ नैननऐसी बानि परी । लुब्धे श्याम चरणपंकजको मोको तजी खरी ॥ घूँघटओट किए राखतिही अपनीसी जु करी ।गए पेलि ताको नहिं मान्यो देखौ ज्यों निदरी ॥ गए सुगए फेरि नहिं बहुरे का धौं जियहि धरी । सुनहु सूर मेरे प्रतिपाले ते वश किए हरी ॥ राग सारंग॥नैनन हौं समुझाइ रही। मानत नहीं कह्यो काहूको कठिन कुटेव गही॥अनजानतही चितै वदनछबि सन्मुख शूल सही। तनु बिसरच्यो कुलकानि गवांई जग उपहास सही ॥ ऐतेपर संतोष न मानत मर्यादा न गही । तनु बिसरच्यो वपुश्याम सिंधुमें कहूँ न थाह लही ॥ रोमरोम सुंदरता निरखत आनँद उँमगि ढही।सूरदास इन लोभिनके सँग वन वन फिरत बही॥राग रामकली॥ नैना कह्यो न मानैं मेरो।हारि मानिकै रही मौन ह्वै निकट सुनत नाहिं टेरो॥ऐसे भए मनो नहिं मेरे जबहिं श्याम मुख हेरो।मैं पछिताति जबहिं सुधि आवति ज्यों दीन्हों मोहिं डेरो ॥ एतेपर कबहूं जब आवत झगरत लरत घनेरो । मोहूं बरबस उतहि चलावत दूत भयो उनकेरो ॥ लोक वेद कुलकानि न मानैं अतिही रहत अनेरो । सूर श्याम धौंकहाठगोरी लाइकियोधरि चेरो॥राग कल्याण॥कबहुं कबहुँ आवत ए मोहिं लेन माईरी। आवतही इहै कहत श्याम तोहिं बोलाई री ॥ नेकहू न रहत विरमि जात तहां धाई री ।मानो पहँचान नहीं ऐसे बिसराई री ॥ उनको सुख देत मोहिं बहिवेको पाई री ॥ सूर श्याम सँगही सँग निशिबासर जाई री॥राग बिहागरे॥मेरे नैननही सब दोष।बिनही काज औरको सजनी कतकीजै मन रोष॥यद्यपि हौं अपने जिय जानति अरु बरजैं सब घोष॥ तद्यपि वा यशुमतिके सुत बिन कहूं न सुख संतोष॥कहि पचिहारि रही निशिवासर और कंठ करि सोष।सूरदासअबक्यों बिसरतुहै मधुरिपुको परितोष ॥राग सोरठ॥मेरे नैना दोप भरे । नँदनंदन सुंदर बर नागर देखत तिनहिं खरे ॥ पलक कपाट तोरिकै निकसे घूँघट वोट न मानत । हाहा करि पाँइन परि-हारी नेकहु जो पहिंचानत ॥ ऐसे भए रहत ए मोपर जैसे लोग बटाउ । सोऊ तौ बूझेते बोलत इनमें इह निठुराउ॥ए मेरे अब होहिं नहीं सखि हरिछबि बिगरि परे । सुनहु सूर एसेउ जन जग-में करता करनि करे॥राग रामकली॥नैना मोको नहीं पत्याहिं। जे लुब्धे हरिरूप माधुरी और गनन ए नाहिं ॥ जिनि दुहि धेनु औटि पय चाख्यो ते मुखपरसैं छाक।ज्यों मधुकर मधुकमल

कोश तजि रुचि मानतहै आक॥ जे षटरस मुख भोगकरतहैंते कैसे खरि खात । सूरसुनहुलोचन हरिरसतजि हमसों क्यों तृपितात॥राग देवगंधार॥ मेरे नैननहीसबखोरि। श्यामवदनछवि निरखि जुअटके बहुरेनहींबहोरि॥जोमैं कोटि जतन करिराखति घूँघट वोट अगोरि।ज्यों उडि मेलिवधिक खग छिनमें पलकपिंजरनतोरि॥बुधि विवेक बलवचनचातुरी पहिलेहि लईअजोरि।अतिआधीन भई सँग डोलति ज्यों गुड्डीवश डोरि ॥ अबधौं कौन हेतु हरि हमसों बहुरि हँसत मुख मोरि । मनहु सूर दोउ सिंधुसुधा भरि उमँगि चले मिति फोरि ॥राग गौरी॥ यह सब नैननहीको लागे । अपनेही घर भेद करो इन बरजतही उठि भागे ॥ ज्यों बालक जननीसों अरुझत भोजनको कछु माँगे । त्योंही ए अतिही हठ ठानत इकटक पलक न त्यागे ॥ कहत देहु हरिरूप माधुरी रोवत हैं अनुरागे। सूर श्याम धौं कहा चखायो रूपमाधुरीपागे॥राग धनाश्री॥लोचन टेक परे शिशु जैसे। मांगतहैं हरिरूप माधुरी खोज परे हैं नैसे॥बारंबार चलावत उतही रहन न पाऊँ वैसे । जात चले आपुनही अबलौं राखे जैसे तैसे ॥ कोटियतन कहिकहि परबोधति कह्यो नमानहिं कैसे। सूर कहूं ठगमूरी खाई व्याकुल डोलत ऐसे ॥राग जैतश्री॥ इन नैननकी टेव न जाइ । कहा करौं बरजतही चंचल पर मुख लागत धाइ ॥ बाट घाट जहां मिलत मनोहर तहां मुखचलत छपाइ । गीधे हेम चोर ज्यों आतुर वह छबि लेत चुराइ ॥ मनहु मधुप मधुकारण लोभी हरिमुखपंकज पाइ। घूँघट पटबश जलहि मीन ज्यों अधिक उठतअकुलाइ॥निलजभए कुलकानि न मानततिन-सों कहा बसाइ। सूर श्याम सुंदर मुखरा बिन देखेरह्यो न जाइ॥राग सोरठ॥जाकेजैसी टेव परीरी। सो तौ टरै जीवके पाछे जोजो धरनि धरी री ॥ जैसे चोर तजै नहिं चोरीबरजेहु वहै करैरी। बर-ज्यो जाइ हानि पुनि पावत कतही बकत मरी री॥ यद्यपि व्याधवधे मृग प्रगटहि मृगिनी रहै खरीरी । ताहू नादवश्य ज्यों दीन्हों शंका नहींकरी री॥ यद्यपि मैं समझावति पुनिपुनियहकहि कहि जु लरी री ।सूर श्यामदर्शनते इकटक टरत न निमिषघरी री॥राग सारंग॥ ए नैना मेरेढीठ भए री । घूंघट ओट रहत नहिं रोके हरिमुख देखन लोभ गएरी ॥ जो मैं कोटि जतन करि राखे पलक कपाटनि मूंदि लए री । उतरे उमँगि चले दोउ हठकरि करौं कहा मैं जान दए री ॥ अतिहि चपल बरज्यो नहिं मानत देखि वदन तन फेरि नए री । सूर श्याम सुन्दर रस अटके मानहुँ लोभी उहइँ छए री॥राग नट॥नैना ढीठ अतिही भए ।लाज लकुट दिखाइ त्रासों नेकहू न नए ॥ तोरि पलक कपाट घूंघट वोट मेटि गए। मिले हरिको जाइ आतुर जे हैंगुणनिमए॥ मुकुट कुंडल पीत पट कटि ललित भेष ठए। जाइ लुब्धे निरखि वह छवि सूर नंद जए ॥ राग बिलावल॥नैना झगरत आइकै मोसों री माई । खूँट धरतहैं धाइकै चलि श्याम दुहाई ॥ मैं चकृत ह्वै ठगिरहौं कछु कहत न आवै। आपुन जाइ मिले रहैं अब मोहिं बोलावै ॥ गए दरश जो देहिं वे तहां अपनी छाया । और कछू वह है नहीं री उनकी माया ॥ कपटिनके ढँग ए सखी लोचन हरि कैसे। सूर भली जोरी बनी जैसेको तैसे ॥ राग सूही ॥ नैननको मत सुनहु सयानी । निशि दिन तपत सिरात न कबहूं यद्यपि उमँगि चलै पानी ॥ हों उप-चार अमित उर आनति खल भई लोकलाज कुलकानी । कछु न सोहाइ दहति दरशन दव वारिजबदन मंद मुसुकानी ॥ रूप लकुट अभिमान निडर ह्वै जग उपहासन सुनतलजानी । बुधि विवेक बल वचन चातुरी मनहुँ उलटि उनमांझ समानी ॥ आरजपथ गुरु ज्ञान गुप्तकरिविकल भई तनुदशा हिरानी । याचत सूर श्याम अंजनको वह किशोर छवि जीवहितानी॥ राग सारंग॥

नैन न भलो मतो ठहरायो। जबहीं मैं बरजति हरि सँगते तबहीं तब हठरायो ॥ जरत रहत एते पर निशि दिन छिनु बिनु जनम गँवायो।ऐसी बुद्धि करन अब लागे मोको बहुत सतायो ॥ कहा करौं मैं हारि धरी जिय कोटिजतन समुझायो । लुब्धे हेमचोरकीनाईं फिरिफिरि उतही धायो ॥ मोसों कहत भेद कछु नाहीं अपनोइ उदर भरायो।सूरदास ऐसे कपटिनको बिधिना हाथ छडायो ॥ राग बिहागरो ॥ मेरे नैना अटकिपरे । सुंदरश्याम अंगकीशोभानिरखत भटकिपरे॥ मोरमुकुट लट घूँघरवारे तामें लटकि परे । कुंडल तरनिकिरनिते उज्ज्वल चमकनि चटकि परे ॥ चपल नैन मृग मीन कुंज जित अलिज्यों लुब्धि परे । सूर श्याम मृदु हँसनि लोभाने हमते दूरि परे ॥ राग बिहागरो ॥ नैनन साधैयहैरही । निरखत बदननंदनंदनकोभूलिनतृप्तिकही ॥ पचिहारे उनकी रुचि कारण परमिति तौ न लही।मगन होत अब श्यामसिंधुमें कतहुँ न थाह लही॥ रोम रोम सुंदरता निरखत आनँद उमँगि बही । दुख सुख सूर बिचार एक करि कुलमर्याद ढही ॥ ॥ राग नट ॥ नैनन साध रही सिराइ। यद्यपि निशि दिन संगहि डोलत तद्यपिनहींअघाइ।पलक नहिं कहुँ नेक लागत रहत इकटक हेरि । तऊ कहुँ तृपितात नाहीं रूप रसकी ढेरि ॥ ज्यों अगिनिघृत तृप्ति नाहीं तृषानहींबुझाइ।सूर प्रभु अति रूप दानी नैन लोभ न जाइ॥राग कल्याण ॥ श्यामअंग निरख नैन कहुँ अघात नाहीं ।एकहि टक रहे जोरि पलपल नहिं सकत तोरि जैसे चंदा चकोर तैसी इन पाहीं॥छबि तरंग सरितागण लोचन ए सागर जनु प्रेम धार लोभ गहनि नीके अवगाही। सूरदास एते पर तृप्ति नहीं मानत ए इनकी सोइ दशा सखी बरणी नहिं जाही ॥ राग बिहागरो ॥ लोचन सपनेके भ्रम भूले । जोछबिनिरखत सो पुनिनाहीं भरमहिंडोरेझूले॥इक टक रहत तृप्ति नहिं कबहूं एते पर हैं फूले । निदरे रहत मोहिं नहिं मानत कहत कौन हमतूले ॥ मोते गए कुम्हीके जरलौं ऐसे वे निरमूले। सूर श्याम जलराशि परे अब रूप रंग अनुकूले॥ राग गौरी॥ मेरे नैना ई अति ढीठ। मैं कुलकानि किये राखतिही ये हठि होत बसीठ ॥ यद्यपि वे उत कुशल समर बल ए इत अतिबल हीठ । तदपि निदरि पटजातपलकछिदि जूझत देत न पीठ॥अंजनत्रास तजत तमकत तकि तानत दरशन डीठ । हेरेहू नहिं हटत अमित बल बदन पयोधि पईठ ॥ आतुर अडत अरुझि अँगअँग अनुराग नमिति मननीठ । सूर श्यामसुंदर रस अटके नहिं जानत कटु मीठ ॥राग बिलावल॥नहीं ढीठ नैननते और ।कितनो मैं बरजति समुझावति उलटिकरत हैं झौर ॥ मोसों लरत भिरत हरि सन्मुख महा सुभट ज्यों धावत । भौंह धनुष शर सरस कटाक्षन मारु करत नहिं आवत ॥ मानत नहीं हारि जो हारत अपने मन नहिं टूटत । सूरश्याम अँग अँगकी शोभा लोभ सैनसों लूटत॥राग बिहागरो॥लोचन लालची भारी । इनके लए लाज या तनकी सबै श्यामसों हारी ॥ बरजत मात पिता पति बंधव अरु आवै कुलगारी । तदपि न रहत नंदनंदनबिन कठिन प्रकृतिहठि धारी।नख शिख सुभग श्यामसुंदरके अंगअंग सुखकारी । सूर श्यामको जो न भजै सो कौन कुमति है नारी ॥राग कल्याण ॥ अतिरसलंपट नैनभये चाख्यो रूप सुधारस हरिको लुब्धे उतहि गये॥ ज्यों व्यभिचारि भवन नहिंभावत औरहिपुरुष रई । आवत कबहुँ होत अति व्याकुल जैसे गवन नई॥ फिरि उतहीको धावत जैसे छुटत धनुपते तीर । चुभे जाय हरिरूपवोपमें सुंदर श्यामशरीर ॥ ऐसे रहत उतहिको आतुर मोसों रहत उदास । सूर श्यामके मन वच क्रम भए रीझे रूप प्रकाश ॥राग सूही॥ए नैना अति चपल चोर । सरबस मूसि देत माधवको सुधि बुधि सुधन बिबेक न मोर॥ अनजानत कल बैन श्रवण

सुनि चितै रहत उत उनकी वोर। मोहन मुख मुसुकाइ चले मानों भेद भयो यह लायो अंकोर॥ हरिको दोष कहा कहि दीजै जो कीजै सो इनको थोर। सूर संग सोवत न परी सुधि पायो मरम वियोगन भोर॥ राग गौरी॥ नैन करत घरहीकी चोरी। चोरन गए श्यामअँगशोभा उतशिरपरी ठगोरी॥ अपवश करि इनको हरि लीन्हें मोतन फेरि पठाए। जो कछु रही संपदा मेरे सुधि बुधि चोर लिवाए॥ ए धाए आए निधरकसों लैगए संग लगाइ। सूर श्याम ऐसे हैं माई उलटी चाल चलाइ॥ राग सारंग॥ नैनन प्राण चोरि लै दीने। समुझत नहीं बहुत समुझाए अति उत-कंठ नवीने॥ अति हौ चतुर चातुरी जानत सकल कला जु प्रवीने। लोभ लिये परवश भइ माई मीन जु वंसी भीने॥ कहा कहौं कहिबे नहिं लायक मते रहत भर-हीने॥ आपु बँधाइ पुंजि लै सौंपी हरिरस गतिके लीने। ज्यों डोरे वश गुड़ी देखि-यत डोलत संग अधीने। सूरदास प्रभु रूपसिंधुमें मिले सलिल गुण कीने॥ राग नट॥ ये लोचन लालची भए री। सारंगरिपुके रहत न रोंके हरिस्वरूप गिधए री॥ काजर कुलफ मेलि मैं राखे पलक कपाट दए री। मिलि मनदूत पैजकरि निकसे बहुरि श्यामपै दौरिगए री॥ ह्वै आधीन पंचतेन्यारे कुललज्जा न नए री। सूर श्यामसुंदररस अटके मानो उहईं छए री॥ राग बिहागरो॥ लोचन लोभ-हिमें ये रहत। फिरैं अपनेकाजहीको धीर नाहीं गहत॥ देखि मृपनि कुरंग धावत तृप्ति नाहीं होत। ए लहत ना हृदय धावत तऊ नाहिंन वोत॥ हठी लोभी लालची इनते नहींकोउ और। सूर ऐसे कुटिलको छबि श्याम दीन्हों ठौर॥ राग रामकली॥ लोचन मानत नाहिंन बोल। ऐसे रहतश्यामके आगे मनुदै लीन्हें मोल॥ इत आवत दै जात देखाई ज्यों भँवरा चकडोर। उनते मुत्र न टारत कतहूँ मोसों मानत कोर॥ नीके रहे सदा मेरे वश जाइ भए ह्वां जोर। मोहन शिर मोहिनीलगाई जब चितए उनि वोर॥ अब मिलिगए श्याम मन माने निशि बासर इक ठौर। सूर श्यामके चोर कहावत राखेहैं करिगौर॥ राग रामकली॥ नैना उनही देखे जीवत। सुंदर वदन तडाग रूप जल निर-खनि पुटभरि पीवत॥ राखे रहत और नहिं पावै उन मानी परतीति। सूर श्याम इनसों सुख मानत देखे इनकी प्रीति॥ राग गूजरी॥ नैना नाहिंन कछू विचारत। सन्मुख समर करत मोहनसों यद्यपि हैं हठिहारत॥ अवलोकत अलसात नवल छबि अमित तोष अति आरत। तमकि तमकि तरकत मृगपति ज्यों घूँघट पटहि विदारत॥ बुधि बल कुल अभिमान रोष रस जोवत भषहि निवारत। निदरे विरह समूह श्यामअँग पेखि पलक नहिं पारत॥ श्रमित सुभट सकुचत साहस करि पुनि पुनि सुखहि सम्हारत। सूर स्वरूप मगन झुकि व्याकुल टरत न इकटक टारत॥ ॥ राग बिहागरो॥ श्याम रंग नैना राचेरी। सारंग रिपुते निकसि निलजभए अबपरगटह्वैनाचेरी॥ मुरली नाद मृदंग मृदंगी अधर बजावन हार। गायन घर घर घेर चलावत लोभ नचावन हार॥ चंचलता नृत्यनि कटाक्षरस भाव बतावत नीके। मूरदास ए रीझे गिरिधर मन माने उनहीके॥ ॥राग रामकली॥ नाचत नैन नचावत लोभ। यह करनी इननई चलाईमेटिसकुच कुलशोभ॥ घूँघट घट त्याग्यो इन मन क्रम नाचहिपर मन मान्यो। घरघर घेरि मृदंग शब्दकरि निलजकाछनी वान्यो॥ इंद्री मन समाज गायन ए ताल धरे रहैं पाछे। सूर प्रेमभावनिसों रीझे श्याम चतुर वर आछे॥ राग धनाश्री॥ नैनन सिखवत हारि परी। कमलनैन मुख बिनु अवलोके रहत न एक घरी॥ हां कुलकानि मानि सुनि सजनी घूँघट ओट करी। वे अकुलाइ मिले हरि लै मन लै तनहूकी बुद्धि हरी॥ तबते अंगअंग छबि निरखत सो चितते न टरी। सूर श्याममिलिलोक

वेदकी मर्यादा निदरी॥ राग बिलावल ॥इन नैननसों री सखीमैं मानी हारि। साट सकुच नहिंमानहीं बहुबारनि मारि॥ डरत नहीं फिरि फिरि अरैं हरि दरशन काज। आपु गए मोहूं कहैं चलि मिलि ब्रजराज॥ घूंघट घरमें नहिं रहैं कहि रही बुझाइ। पलक कपाट विदारिकै उठि चले पराइ॥ तबते मौनभई रहौं देखत ए रंग। सूरज प्रभु जहँ जहँ रहै तहँ तहँ ए संग॥ राग गूर्जरी ॥ नैना बहुत भांति हटके। बुधि बल छल उपाइ करि थाकी नेक नहीं मटके। इत चितवत उतही फिरि लागत रहत नहीं अटके। देखतही उडि गए हाथते भए बटा नटके॥ एकहि परनि परे खग ज्यों हरिरूप मांझ लटके। मिले जाइ हरदी चूना त्यों फिरि न सूर फटके॥ राग जैतश्री ॥ बहुत भांति नैना समुझाए। लंपट तदपि सकोच न मानत यदपि घुंघट पट अटकि दुराए॥ निरखि नवल इतराहिं जाहिं मिलि विविखंजन अंजन जनुपाए। श्याम कुँवरके कमल वदनको महामत्त मधुकर ह्वै धाए॥ घूंघट वोट तजी सरिता ज्यों श्यामसिंधुके सन्मुख धाए। सूर श्याम मिल करि पलकनसों बिनमोलहि हठि भए पराए॥ राग सोरठ॥नटके बटा भए ए नैन। देखतिहौं पुनि जात कहांधौं पलक रहत नहिं ऐन॥स्वांगीसे ए भए रहतहैं छिनहीछिन ए और। ऐसे जात रहत नहिं रोके हैहूते अति दौर॥ गए सु गए गए अब आए जात लगी नहिं बार। सूर श्याम सुंदरता चाहत जिनको वारनपार॥ राग बिहागरो॥ मोते नैन गए री ऐसे। देखे बधिक पिंजराते खगछूटिभजत-हैं जैसे॥ सकुच फांसिमें फँसे रहत हैं ते धौं तोरैं कैसे। मैं भूली यहि लाज भरोसे राखतिही ए वैसे॥ श्यामरूप बनमांझ समाने मोपै रहैं अनैसे। सूर मिले हरिको आतुरह्वै ज्यों सुरभी सुत तैसे॥ राग जैतश्री॥ लोचनभए पराए जाइ। सन्मुख रहत टरत नहिं कबहूं सदा करत सिवकाइ॥ ह्यां तौ भए गुलाम रहतहैं मोसों करत ढिठाइ। देखत रहति चरित इनके सब हरिहि कहौंगी जाइ॥जिनको मैं प्रतिपालि बडे किए तेतुम वशकरि पाइ।सूर श्यामसों यह करि लेहौं अपने बल पकराइ॥राग टोडी॥अब मैंहूं यहि टेक परी।राखों अटकि जान नहिं पावें क्यों मोको निदरी॥ मौन भई में रही आजुलौं अपनोइ मन समुझाऊं।एऊ मिले नैनही डागरि देखति इनहु भगाऊं॥ सुन री सखी मिले ए कबके इनहीको यह भेद।सूरदास नहिं जानी अबलौं वृथा करति तनुखेद॥राग धनाश्री॥नैना भए पराए चेरे। नंदलालके रंग गए रँगि अब नाहिन वश मेरे॥ यद्यपि यतन किये जुगवतिही श्यामल शोभा घेरे। तउ मिलि गए दूध पानी ज्यों निबरत नहीं निबेरे॥कुल अंकुश आरजपथ तजिकै लाज सकुच दिये डेरे। सूरश्यामकेरूप भुलाने कैसहुँ फिरत न फेरे॥राग रामकली॥जाकी जैसी वानि परी री। कोऊकोटि करै नहिं छूटै जोजेहि धरनि धरी री॥ बारेहीते इनके एढंग चंचल चपल अनेरे। बरजतही बरजत उठि दौरे भए श्यामकेचेरे॥ ये उपजे वोछे नक्षत्रके लंपट भए बजाइ। सूर कहातिनकी संगति जेरहैं पराए जाइ॥राग आसावरी॥ नैननको री इहै सुहाइ। लुब्धे जाइ रूप मोहनको चेरे भएबजाइ॥फूले फिरतगिनतनहिंकाहू आनँद उर न समात। इहै बात कहि सबन सुनावति नेकहु नहीं लजात॥ निशि दिन करि सेवाप्रतिपाले बडे भए जब आइ। तब हमको ये छांडि भगाने देखो सूरसुभाइ॥ राग कान्हरो ॥ देखत हरिको रूप नैना हारे री पै हारि न मानत। भए भटकि बलहीन क्षीनतनु तउ अपनी जै जानत॥ दुरत न पटुकी वोट प्रगट ह्वै बीच पलक नहिं आनत। छुटिगये कुटिल कटाक्ष अलक मनो टूटि गए गुण तानत॥ भाल तिलक भ्रुव चाप आप लै सोइ संधान सँधानत। मन क्रम वचन समेत सूर प्रभु नहिं अपवल पहिंचानत॥ राग सूही॥ हारिजीतिदोऊ समइनके।लाभहानि

काको कहियत है लोभ सदा जियमें जिनके ॥ ऐसी परनि परी री जाके लाज कहा ह्वैहै तिनके। सुंदर श्याम रूपमें भूले कहा वश्य इन नैननि के॥ऐसे लोगनको सब मानत जिनकी घरघर हैं भनके। लुब्धे जाइ सूरके प्रभुको सुनत रही श्रवणनि झनके॥ अथ अँखियाँ समयके पद ॥ राग धनाश्री॥ अँखियनके इहई टेव परी। कहा करौं वारिजमुख ऊपर लागति ज्यों भ्रमरी॥ चितवति रहति चकोर चंद्र ज्यों बिसराति नहिंन घरी। यद्यपि हटकि हटकि राखतिहौं तद्यपि होति खरी॥ गडि जुरही वा रूप जलधिमें प्रेमपियूषभरी। सूरतहां नगअंग परसरसलूटति निधि सिगरी॥राग धनाश्री॥ अंखियां निरखि श्याम मुख भूलीं। चकित भईं मृदु हँसनि चमक पर इंदु कुमुद ज्यों फूलीं॥ कुललज्जा कुलधर्म नाम कुल मानत नाहिंन एकौ। ऐसे ह्वै ये भजीं श्यामको बरजत सुनति न नेकौ॥ लुब्धीं हरिके अंग माधुरी तनुकी दशा बिसारी। सूर श्याम मोहनी लगाई कछु पढिकै शिरडारी॥राग जैतश्री ॥ अंखियां हरिके हाथ बिकानी। मृदु मुसुकानि मोल इन लीन्हीं यहसुनि सुनि पछितानी॥ कैसे रहत रहीं मेरे वश अब कछु औरै भांति। अब वै लाज मरति मोहिं देखत बैठी मिलि हरिपांति॥ स्वपनेकीसी मिलनि करतहैं कब आवति कब जाति। सूर मिलीं ढरि नंदनँदन को अनत नहीं पतियाति॥ राग बिहागरो॥ अंखियनि ऐसी धरनि धरी। नंदनँदन देखे सचुपावैं मोसों रहति डरी॥ कबहूं रहति निरखि मुख शोभा कबहुँ देह सुधि नाहीं। कबहूं कहति कौन हरि को मैं यों तनमय ह्वै जाहीं॥ अँखियाँ ऐसे भजीं श्यामको नहीं रह्यो कछु भेद। सूर श्यामकी परम भावती पलक न होत बिछेद॥ राग रामकली॥ अँखिअन श्यामअपनी करी। जैसेही उन मुहं लगाई तैसेही ए ढरी॥इनकिए हरि हाथ अपने दूरि हमते परी। रहति बासर रैनि इकटक छाँह घाम खरी॥ लोकलाज निकास निदरी नहीं काहुहि डरी। ए महा अति चतुर नागरि चतुर नागर हरी॥ रहति डोलति संग लागी डटति ज्यों नहिं टरी। सूर जब हम हटकि हटकति बहुत हमपर लरी॥ राग बिहागरो ॥अँखिअनि तबते बैर धर्यो। जब हम हटकति हरिदरशन-को सो रिस नहिं बिसर्यो॥ तबहींते उन हमहिं भुलाई गईं उतहिको धाइ। अबतौ तरकितरकि ऐंठतिहैं लेनी लेति बनाइ॥ भईं जाइ वे श्यामसुहागिनि बड भागिनि कहवावैं। सूरदास वैसी प्रभुता तजि हमपे अबवे आवैं॥ राग जैतश्री ॥ धन्यधन्य अँखियाँ बडभागिनि। जिन बिनश्याम रहत नहिं नेकहु कौन्हीं बने सुहागिनि॥ जिनको नहीं अंगते टारत निशिदिन दरशन पावैं। तिनकी सरि कहि कैसे कोई जे हरिके मनभावैं॥ हमहींते ए भईं उजागरि अब हमपर रिस माने। सूर श्याम अति विवश भए हैं कैसे रहत लुभाने॥ राग बिलावल ॥ ए अँखियां बडभागिनी जिनरीझे श्याम। अँगते नेक न टारहीं बासर अरु याम॥ ए कैसी हैं लोभिनी छबि धरतिचुराइ। औरन ऐसी करिसकै मर्यादा जाइ॥ यह पहिले मनही करी अबतो पछिताति। उनके गुण गुणिगुणि झुरै याहू न पत्याति॥ इंद्री वश न्यारी परी सुख लूटति आँखि। सूरदास जेसँगरहैंते ऊमरैं झांखि॥ राग बिलावल ॥ अँखिअनितेरीश्यामको प्यारीनहिंऔर। जिनकोहरि अँगअँगमें करिदीन्हों ठौर॥ जो सुख पूरण इन लह्यो कहा जानै और। अम्बुजहरिमुखजारको दोउ भौंरीजौर॥ यहि अंतर श्रवणन परी मुरलीकी शोर। सुरचकितभई सुंदरीशिर परीठगोर॥ राग बिहागरो ॥ अँखिअनकी सुधि भूलिगई। श्याम अधर मृदु सुनत मुरलिका चकृत नारि भई॥ जो जैसे तैसेहि रहिगईं सुख दुख कह्यो न जाइ। लिखी चित्रकीसी सब ह्वैगईं इकटक पल बिसराइ॥ काहू सुधि काहू सुधि नाहीं सहज मुरलिका गान। भवनरवनकी सुधिन रहीतनु सुनत शब्द वह कान॥ अँखिअनते

मुरली अतिप्यारीवह बैरनि यहसौति । सूरपरस्पर कहतगोपिका यह उपजी उदभौति॥राग सारंग॥ अधररस मुरली लूटन लागी । जा रसको षटऋतु तनु गारयो सो रस पिवत सभागी॥ कहां रही कहँते इह आई कौने याहि बुलाई । चकृत कहा भई ब्रजवासिनि यह तौ भली न आई ॥ सावधान क्यों होत नहीं तुम उपजी बुरी बलाइ । सूरदास प्रभु हमपर याको कीन्हीं सौति बजाइ ॥ राग सारंग ॥ आवतही याके ये ढंग । मनमोहन बस भए तुरतही ह्वैगए अंग त्रिभंग ॥ मैं जानी यह टोना जानति करिहै नाना रंग । देखो चरित भजे हरि कैसे या मुरलीके संग ॥ बातनमें कह ध्वनि उपजावति सुरते तान तरंग । सूरदाससे दूर सदनमें पैठो बडो भुजंग ॥अध्याय २९ बंशी ध्वनि सुनगोपीमोहन॥रासलीलापंचाध्यायी राग टोडी ॥ मुरली सुनत भई सब बौरी । मनहुँ परी शिरमांझ ठगोरी ॥ जो जैसे सो तैसे सोरी । तनु व्याकुल सब भई किशोरी ॥ कोउ धरणि कोउ गगन निहारै । कोउ कर करते बासन डारै ॥ कोउ मनही मन बुद्धि बिचारै । कोउ बालक नहिं गोद सँभारै॥ घर घर तरुनी सब बिततानी । मन मन कहति कौन यह बानी ॥ छुटि सब लाज गई कुलकानी। सुत पति आरजपंथ भुलानी ॥ लैलै नाम सबनिको टेरे । मुरली ध्वनि घरहीके नेरे ॥ कोउ जेंवत पतिहीतन हेरे । कोउ दधिमें जावन पय फेरे॥कोउ उठि चली जैसही तैसे । फिरि आवहिं घरहीमें पैसे ॥ घर पाछे मुरलीध्वनि ऐसे । आँगन गए नहीं वह जैसे ॥ गृह गुरुजन तिनहूं सुधि नाहीं। कोउ कतहूं कोउ कतहूं जाहीं ॥ कोउ निरखत कोउ काहूमाहीं । मुरछ्यो मदन तरुणि सब डाहीं ॥ व्याकुल भई सबै ब्रजनारी। मुरलीसो बोली गिरिधारी ॥ चलीं सबै जहँ तहँ सुकुमारी । उपजी प्रीति हृदय हरि भारी ॥ मुरली श्याम अनूप बजाई । बिधि मर्यादा सबनि भुलाई ॥ निशि बनको युवती सब धाई । उलटे अंग अभूषण ठाई ॥ कोउ चलि चरण हार लपटाई। काहू चौकी भुजनि बनाई ॥ अँगिया कटि लहँगाउर लाई । यहशोभावरणी नहिं जाई॥ कोउउठिचली जातिहै कोऊ । कोउ मग गई मिली मग कोऊ ॥ सूरदास प्रभु कुंजबिहारी । शरदरास रसरीति बिचारी॥ राग गुंडमलार॥ शरदनिशि देखि हरि हरष पायो । बिपिनवृंदावनसुभगफूलेसुमनरासरुचि श्यामके मनहिं आयो ॥ परमउज्ज्वल रैनि छिटकिरही भूमिपर सद्य फल तरुन प्रति लटकि लागे । तैसोई परमरमणीक यमुनापुलिन त्रिविध बहै पवन आनंद जागे ॥ राधिकारवन वन भवन सुख देखिकै अधर धरि बेनु सुललित बजाई । नाम लैलै सकल गोपकन्यानके सबनके श्रवन वह ध्वनि सुनाई ॥ सुनत उपज्यो मैन परत काहु न चैन शब्द सुनि श्रवन भई विकल भारी । सूर प्रभुध्यान धरिकै चलीं उठि सबै भवनजन नेह तजि घोषनारी ॥७९॥ राग बिहागरो॥ सुनहु हरि मुरली मधुर बजाई । मोहे सुर नर नाग निरंतर ब्रजवनिता मिलि धाई ॥ यमुना नीर प्रवाह थकित भयो पवन रह्यो मुरझाई । खग मृग मीन अधीन भए सब अपनी गति बिसराई ॥ द्रुमवल्ली अनुराग पुलकतनु शशि थक्यो निशि न घटाई । सूर श्याम वृन्दावन विहरत चलहु सखी सुधि पाई ॥ ८० ॥ राग बिहागरो ॥ मुरली सुनत उपजी बाइ । श्यामसों अति भाव बाढो चलीं सब अकुलाइ ॥ गुरुजननसों भेद काहू कह्यो नहीं उघारि । अर्ध रैनि चलीं घरनिते यूथ यूथनि नारि ॥ नंदनंदन तरुनि बोलीं शरद निशिके हेत । रुचि सहित बनको चलीं वै सूर भईं अचेत ॥८१॥ राग गुंडमलार ॥सुनत मुरलीभवन डर न कीन्हों । श्यामपै चित्त पहुँचाइ पहिले दियो आप उठि चलीं सुधि मदन दीन्हों ॥ कहत मनकामना आजु पूरण करैं नंदनंदन सबनि बन बुलाई । जानि लायक भजी तरुनि सुत पति तजी

काहु नहिं लजीं अति प्रेम धाई ॥ तज्यो कुलधर्म गोधन भवन जन तजे पगीं रस कृष्ण बिन कछु न भावै । सूर प्रभुसों प्रेम सत्य करिकै कियो मन गयो तहां इनको बुलावै ॥ ८२ ॥ राग सोरठ ॥ मुरली मधुर बजायो श्याम । मन हरि लियो भवन नहिं भावै व्याकुल ब्रजकी बाम ॥ भोजन भूषणकी सुधि नाहीं तनुकी नहीं सँभार । गृह गुरुलाज सूतसो तोरचो डरीं नहीं व्यवहार ॥ करत शृंगार विवश भई सुंदरि अंगनि गईं भुलाई । सूर श्याम बन बेणु बजावत चितहित राम रमाई ॥ राग गुंडमलार ॥ करत शृंगार युवती भुलाहीं । अंग सुधि नहीं उलटे वसन धारहीं एक एकनि कछू सुरति नाहीं ॥ नैन अंजन अधर अंजहीं हरषसों श्रवण ताटंक उलटे सँवारैं । सूर प्रभु मुख ललित बेणु ध्वनि बन सुनत चलीं बेहाल अंचल न धारैं ॥ राग नट ॥ हरि मुख सुनत बैन रमाल । बिरह व्याकुल भई बाला चलीं जहँ गोपाल ॥ पय दुहावन चलीं कोऊ रह्यो धीरज नाहिं । एक दुहनी दूध जावनको शिरावत जाहिं ॥ एक उफनतही चलीं उठि धरचो नहीं उतारि । एक जेंवन करत त्याग्यो चढै चूल्है दारि ॥ एक भोजन करि संपूरन गई वैसहि त्यागि । सूर प्रभुके पास तुरतहिमनगयोउठिभागि ॥ ८४ ॥ राग रामकली ॥ मनगयोचित्तश्यामसोंलाग्यो । नानाबिधिजेंवनकरि परस्यो पुरुष जेंवावत त्याग्यो ॥ इक पय प्यावत चलि तजि बालक छोह नहीं तब कीन्हों । चली धाइ अकुलाइ सकुच तजि बोलि वेनु ध्वनि लीन्हों ॥ इक पति सेवा करत चली उठि व्याकुल तनु सुधि नाहीं । सूर निदरि बिधिकी मर्यादा निशि वनको सब जाहीं ॥ राग जैतश्री ॥ जबहीं वन मुरली श्रवण परी । चकृत भई गोपकन्या सब काम धाम बिसरी ॥ कुल मर्याद वेदकी आज्ञा नेकहु नहीं डरीं । श्याम सिंधु सरिता ललनागन जलकी ढरनि ढरीं ॥ अंग मर्दन करिवेको लागीउबटन तेल धरी । जो जेहि भांति चली सो तैसेइ निशि वनकुंज खरी ॥ सुत पति नेह भवन जन शंका लज्जा नहीं करी । सूरदास प्रभु मन हरिलीन्होंनागरनवलहरी ॥ ८६ ॥ राग केदारो ॥ सुनि मुरली शबद ब्रजनारि । करति अंग शृंगार भूली काम गयो तनु मारि ॥ चरणसों गहि हार बांध्यो नैन देखति नाहिं । कंचुकी कटि साजि लहँगा धरति हृदयमाहिं ॥ चतुरता हरि चोरिलीन्हीं भई भोरी बाल । सूर प्रभुरतिकाममोहन रासरुचि नँदलाल ॥ ८७ ॥ राग रामकली ॥ ब्रजयुवतिन मन हरचो कन्हाई । रास रंग रस रुचि मन आन्यो निशि बन नारि बुलाई ॥ तब तनु गारि बहुत श्रम कीन्हों सो फल पूरण दैन । बेणुनाद रस विवश कराई सुनि ध्वनि कीन्हों गौन ॥ जाको मन हरि लियो श्याम घन ताहि सँभारै कौन । सूरदास ज्यों नारि कंठ मिलि करै सु भावै जौन ॥ ८८ ॥ राग धनाश्री ॥ चलीं बन बेणु सुनत जब धाइ । मात पिता बंधव इक त्रासत जाति कहां अकुलाइ ॥ सकुच नहीं शंकाहू नाहीं रैनि कहां तुम जाति । जननी कहति दईकी घाली काहेको इतराति ॥ मानति नहीं और रिस पावति निकसी नातो तोरि । जैसे जलप्रवाह भादोंको सो को सकै बहोरि ॥ ज्यों केंचुरी भुवंगम त्यागत मात पिता यों त्यागे । सूर श्यामके हाथ बिकानी अलि अंबुज अनुरागे ॥ ८९ राग गुंडमलार ॥ सुनत मुरली अलि न धीर धरिकै । चलीं पित मात अपमान करिकै ॥ लरत निकसीं सबै तोरि फरिकै । भई आतुर वदन दरश हरिकै ॥ जाहि जो भजै सो ताहि रातै । कोऊ कछु कहै सब निरस बातै ॥ ता बिना ताहि कछुनहींभावै । और तो जोरि कोटिक दिखावै ॥ प्रीतिकी कथा वह प्रीति जानै । और करि कोटि बातैं बखानै ॥ ज्यों सलिल सिंधु बिनु कहुँ न जाई । सूर वैसी दशा इनहुँ पाई ॥ ९० राग सूही ।बिलावल ॥ घरघरते निकसीं ब्रजबाला । लैलै नाम युवति जन जनके मुरलीमें सुनि सुनि ततकाला ॥ इक मारग

इक घरते निकरी इक निकसत इक भई बेहाल। इक नाहीं भवननिते निकरी तिनपै आए परम कृपालु ॥ यह महिमा ओई पै जानैं कविसों कहा बरणि यह जाइ। सूरश्याम रस रास रीतिसुख बिन देखे आवै क्यों गाइ ॥ ९१ ॥ राग मला०॥ रासरसरीति नहिंवरणिआवै। कहाँवैसीबुद्धि कहाँ वह मन लहौं कहां इह चित्त जिय भ्रम भुलावै ॥ जो कहौं कौन मानै निगम अगम जो कृपाबिन नहीं या रसहि पावै। भावसोंभजै बिन भावमें ए नहीं भावही भावमहँ यह बसावै ॥ यहै निजमंत्र यह ज्ञान यह ध्यानहै दरश दंपति भजन सार गाऊं। इहै मांग्यो बारबार प्रभुसूरके नैनद्वौरहैं नर देहपाऊं ॥ ९२ ॥ राग केदारो ॥ मुरली ध्वनिकरी बलवीर।शरदनिशिकोइंदुपूरण देखि यमुनानीर॥ सुनत सो ध्वनि भई व्याकुल सकल घोषकुमारि। अंग अभरण उलटि साजीरहीकछुनसँभारि॥ गई सोरह सहस हरिपै छांडि सुत पति नेह । एक राखी एक पति सो गई तजि निज देह ॥ दियो तिन तिय आन मधुरे चितै लोचनकोर। सूर भजि गोविन्द यों जग मोहबंधन तोर ॥ ९३ ॥ राग सारंग ॥ सुनो शुक कह्यो परीक्षित राव। गोपिन परम कंत हरि जान्यो लख्यो न ब्रह्मप्रभाव ॥ गुणमय ध्यान कीन्ह निर्गुण पद पायो तिन केहि भाइ। मेरे जियसन्देह बढ्यो यह मुनिवर देहु नशाइ॥ शुक कह्यो कुटिल भाव मन राखे मुक्त भयो शिशुपाल। गोपी हरिकी प्रिया मुक्ति लहैं कहा अचरज भूपाल ॥ काम क्रोधमें नेह सुहृदता काहू विधि करै कोई।धरैं ध्यान हरिको जे दृढकरि सूरसोहरिसोहोई॥९४॥ राग गुंडमलार॥सुनतबनबेनुध्वनिचलीं नारि। लोकलज्जा निदरि भवन तजि सुन्दरी मिलीं बन जायके बनबिहारी॥ दरशके लहत मन हरष सबको भयो परसकी साध अति करति भारी। इहै मन वच कर्म तज्यो सुत पति धर्म मेटि भवभर्म सहि लाज गारी ॥ भज जेहि भाव जो मिलै हरि ताहि त्यौं भेदभेदानहीं पुरुषनारी।सूर प्रभु श्याम ब्रजबाम आतुरकाम मिलीं ननधाम गिरिराज धारी॥ ९५ ॥ राग सूही विलावल॥ देखि श्याम मन हरष बढायो।जैसिय शरद चांदनीनिर्मल तैसोइ रासरंग उपजायो॥तैसिय कनकवरन सब सुंदरि यह शोभापर मन ललचायो॥ तैसी हंससुता पवित्र तट तैसेइ कल्पवृक्ष सुखदायो। करौं मनोरथ पूरण सबके इहि अंतर इक खेद उपायो। सूर श्याम रचि कपट चतुरई युवतिनके मन यह भरमायो ॥ ९६॥ राग विहागरो ॥ निशि काहे वनको उठि धाई। हँसि हँसि श्याम कहत हैं सुन्दरि की तुम ब्रजमारगहि भुलाई ॥ गई रही दधिबेचन मथुरा तहां आजु अवसेर लगाई। अति भ्रम भयो विपि क्यों आईमारग वह कहि सबनि बताई ॥ जाहु जाहु घर तुरत युवतिजन खिझत गुरुजन कहि डरवाई। की गोकुलते गमन कियो तुम इन बातन है नहीं भलाई ॥ यह सुनिकै ब्रजबाम कहतभई कहा करत गिरिधर चतुराई। सूर नाम लै लै जन जनके मुरली बारंबार लगाई ॥ ९७॥ राग विहागरो॥ यह जिनि कहौ घोषकुमारि।हम चतुरई नहींकीन्हीं तुम चतुर सब ग्वारि ॥ कहां हम कहां तुम रही ब्रज कहां मुरलीनाद। करतिहौ परिहासहमसों तजौ यह रसवाद॥ बडेकी तुम बहू बेटी नामलै क्यों जाइ। ऐसेही निशि दौरि आई हमहिं दोष लगाइ ॥ भली यह तुम करी नाहीं अजहुँ घर फिरिजाहु। सूर प्रभु क्यों निडरि आई नहीं तुम्हरे नाहु ९८ ॥ राग जैतश्री ॥ मात पिता तुम्हारे धौं नाहीं । बारंबार कमलदललोचन यह कहि कहि पछिताहीं ॥ उनके लाज नहीं वन तुमको आवन दीन्हीं राति। सब सुंदरी सबै नवयौवन निठुर अहिरकी जाति ॥ की तुम कहि आई की ऐसेहि कीन्हीं कैसी रीति। सूर तुमहिं यह नाहीं बूझी बडी करी विपरीति ॥ ९९ ॥ राग रामकली ॥ अब तुम

कही हमारी मानो। बनमें आइ रैनि सुख देख्यो इहै लह्यो सुख जानो ॥ अब ऐसी कीजो जिनि कबहूं जानति हौ मन तुमहूं। यह ध्वनि सुनै कहूं जो कोऊ तुमहिं लाज अरु हमहूं ॥ हमतौ आज बहुत सरमाने मुरली टेरि बजायो। जैसो कियो लह्यो फल तैसो हमही दोषन आयो॥ अब तुम भवन जाहु पति पूजहु परमेश्वरकी नाहीं। सूर श्याम युवतिनसों कहिकहि सब अपराध क्षमाहीं ॥ ॥ ७०० ॥ राग सूहीबिलावल ॥ यह युवतिनको धर्म न होई। धृग सो नारि पुरुष जो त्यागै धृग सो पति जो त्यागै जोई ॥ पतिको धर्म रहै प्रतिपाले युवती सेवाहीको धर्म। युवती सेवा तऊ न त्यागै जो पति कोटि करै अपकर्म ॥ बनमें रैनि वास नहिं कीजै देख्यो बन वृंदावन आई। विविधसुमन शीतल यमुना जल त्रिविध समीर परसि सुखदाई ॥ घरहीमें तुम धर्म सदाही सुत पति दुखित होत तुम जाहु। सूर श्याम यह कहि परबोधत सेवा करहु जाइ घर नाहु ॥१॥ राग बिहागरो॥ यह बिधि वेद मारग सुनो। कपट तजि पति करौ पूजा कहा तुम जिय गुनो ॥ कंत मानहु भव तरोगी और नहिंन उपाइ। ताहितजि क्यों विपिन आई कहा पायो आइ ॥ बिरध अरुबिन भागहूकोपति-तजो पति होइ। जऊ मूरख होइ रोगी तजै नाहीं जोइ ॥ इहै मैं पुनि कहत तुमसों जगतमें यह सार। सूर पति सेवा बिना क्यों तरोगी संसार ॥२॥ राग बिहागरो ॥ कहा भयो जो हमपै आई कुल-की रीति गमाई। हमहूँको बिधिको डरभारी अजहूं जाहु चँडाई ॥ तजि भरतार और जोभजिए सो कुलीन नहिं होई। मरे नरक जीवत या जगमें भलो कहै नहिं कोई ॥ हम जो कहत सबैतुम जानत तुमहूँ चतुर सुजान। सुनहु सूर घर जाहु हमौ घर जैहैं होत विहान ॥३॥ राग बिलावल॥ निठुर वचन सुनि श्यामके युवती बिकलानी। चकृत भई सब सुनिरहीं नहिं आवै बानी ॥ मनो तुषार कमल-न परयो ऐसे कुँभिलानी। मनो महानिधि पाइकै खोये पछितानी ॥ ऐसीह्वैगईतनुदशा पियकी सुनि वानी। सूर विरह व्याकुल भई बूडी बिनपानी ॥ ४ राग मारू ॥ श्याम उर प्रीति मुख कपट वानी। युवति व्याकुल भई धरणि सब गिरि गईं आश गई टूटि नहिं भेद जानी ॥ हँसत नँद-लाल मन मन करत ख्याल ए भई बेहाल ब्रजबालभारी। रुदनजल नदी सम बहिचल्यो उरजबिच मनों गिरि फोरि सरिता पनारी ॥ अंग थकि पथिक नहिं चलत कोऊ पंथ नावरसभाव हारि नहीं आनै। सूर प्रभु निठुर करि कहा ह्वैरहेहो उनहिं बिन और को खेद जानै ॥ ५ ॥ राग जैतश्री ॥ निठुर वचन जिनि बोलहु श्याम। आश निराश करौ जिनि हमरी व्याकुल वचन कहनि-हैं वाम ॥ अंतर कपट दूरि करि डारौ हमतनु कृपा निहारो। कृपासिंधु तुमको सब गावत अपनो नाम सँभारो ॥ हमको शरण और नहिं सूझै कापै हम अब जाहिं। सूरदास प्रभु निजदासनिको चूककहा पछिताहिं ॥६॥ राग गौरी॥ तुमपावतहम घोप न जाहिं। कहा जाइ लेहैं ब्रजमें हम यह दरशन त्रिभुवनमें नाहिं ॥ तुमहूते ब्रज हितूकोउ नहिं कोटि कहौ नहिं मानैं। काके पिता मातहैं काके काहू हम नहिं जानै ॥ काके पति सुत मोह कौनको घरहै कहां पठावत। कैसो धर्म पापहै कैसो आश निराश करावत ॥ हमजानैं केवल तुमहीको और वृथा संसार। सूरश्याम निठुराई तजिए तजिय वचन बिनसार ॥ ७ ॥ राग जैतश्री॥ तुमहो अंतर्यामि कन्हाई। निठुर भए कत रहत इतेपर तुम नहिं जानत पीर पराई ॥ पुनि पुनि कहत जाहु ब्रजसुंदरि दूरि करौ पिय यह चतुराई। आपुहि कही करौ पतिसेवा ता सेवाको हैं हम आई ॥ जो तुम कहो तुमहिं सब छाजै कहा कहैं हम प्रभुहि सुनाई। सुनहु सूर इहई तनु त्यागैं हमपै घोप गयो नहिं जाई ॥ ८ ॥ राग बिहागरो ॥ कैसे हमको ब्रजहिपठावत। मनतौ रह्यो चरण लपटानो जो एतनी यह

देह चलावत ॥ अटके नैन माधुरी मुसकनि अमृत वचन श्रवणनको भावत । इंद्री सबै मनहिके पाछे कहो धर्म कहि कहा बतावत॥इनको करी आपनो लायक तौ क्यों हम नाहीं जिय भावत। सूर सैन दै सरवस लूट्यो मुरली लैलैनाम बुलावत॥ ९॥ राग कान्हरो ॥भवननहीं अब जाहिंकन्हाई। सुजन बंधुते भई बाहिरी अब कैसे वे करत बडाई। जो कबहूं वे लेहिं कृपाकरि धृग वे धृग हम नारि । तुम बिछुरत जीवन धृग राखें कहौ न आपु बिचारि ॥ धृग वह लाज विमुखकी संगति धनि जीवन तुम हेत । धृग माता धृग पिता गेह धृग धृग सुतपतिको चेत ॥ हम चाहति मृदु हँसनि माधुरी जाते उपज्यो काम । सूर श्याम अधरन रस सींचहु जरति विरह सब वाम॥ ॥ १० ॥ राग कान्हरो ॥सुनहु श्याम अब करहु चतुरई क्यों तुम बेणु बजाइ बुलाई। बिधि मर्याद लोककी लज्जा सबै त्यागिहम धाई आई ॥ अब तुमको ऐसी न बूझिये आश निराश करौजिनि साई। सोइ कुलीन सोई बडभागिनि जो तुव सन्मुख रहे सदाई ॥ ते धनि पुरुष नारि धनि तेई पंकजचरणरहैंदृढताई। सूरदासकहिकहाबखानैंयहनिशियहअँगसुंदरताई॥ ११॥राग रामकली॥ बिनती सुनिये श्यामसुजान।अतिहि मुख अपमान कीन्हों दृढ न इनते आन॥अबकरौदुखदूरि इनको भजौं तजि अभिमान। बिरह द्वंद्व निवारिडारो अधररस दैपान॥मनहिमनयहसुखकरतहरि भए कृपानिधान । सूरनिश्चयभजीमोकोंनहींजानतिआन॥ १२॥राग बिलावल॥मोहिंबिनाएऔरन जानैं ॥ बिधिमर्यादलोककीलज्जातृणहूतेघटिमानैं॥इनमोकोनीकेपहिचान्योकपटनहींउरराख्यो। साधुसाधु पुनिपुनि हरषित ह्वै मनहींमन यहभाख्यो।पुनिहँसिकह्योनिठुरताधरिकैक्योंत्याग्यो गृहधर्म । सूर श्याम मुख कपट हृदय रति युवतिनके अति भर्म॥ १३ ॥ राग गुण्डमलार॥तजौ नँद-लाल अति निठुरई गहि रहे कहा पुनिपुनि कहत धर्म हमको । एकही ढंग रहे वचन सब कटु कहे वृथा युवतिन दहे मेटि प्रनको ॥ विमुख तुमते रहैं तिनहि हम क्यों गहैं तहाँ कह लहैं दुख देहिं भारी । कहा सुत पति कहा मात पित कुल कहा कहा संसार वन वन बिहारी॥ हमहिंसबुझाइ यह कहो मूरख नारि कहो तुम कहां नहिं भर्म जानैं । सुनहु प्रभु सूर तुम भले की वे भले सत्य करि कहौ हमअबहिं मानें॥ १४ ॥ राग रामकली॥ तुमहि विमुखधृगधृग नर नारि।हमतौ यहजानति तुव महिमा को सुनिए गिरिधारि ॥ साँची प्रीति करी हम तुमसों अंतर्यामी जानो ॥ गृह जनकी नहिं पीर हमारे वृथा धर्म हमठानो ॥ पाप पुण्य दोऊपरित्यागे अब जो होइ सुहोई । आशनिराश सूरके स्वामी ऐसी करै न कोई ॥ १५ ॥राग जैतश्री॥ आश जिनि तोरहु श्याम हमारी । बैन नाद ध्वनि सुनि उठि धाई प्रगटत नाम मुरारी ॥ क्यों तुम निठुर नाम प्रगटायो काहे बिरद भुलाने । दीन आजु हमते कोउ नाहीं जानि श्याम मुसुकाने ॥ अपनेभुजदंडन कर गहिए विरह सलिल-में भासी ।बारबार कुलधर्म बतावत ऐसे तुम अबिनासी ॥ प्रीति वचन नवकाकरिराख्योअंकम भरि बैठावहु। सूर श्यामतुमबिनु गतिनाहीं युवतिनपारलगावहु॥ १६॥राग नट॥ चितदैसुनहुअंबुज-नैन । कृपणके गथ भयो हमको सरस अमृत बैन ॥ हम गुणी नवबाल रिझवति तुम तरुण धनराशि । कैसेहूं सुखदान दीजै विरह दारिद नाशि । करहु यह यश प्रगट त्रिभुवन निठुर कोठी खोलि । कृपा चितवनि भुज उठावहु प्रेमवचननि बोलि ॥दीनवाणी श्रवण सुनि सुनि द्रए परम कृपाल। सूर एकहु अँग न काची धन्यधनि व्रजबाल ॥ १७ ॥ राग बिहागरो॥हरिसुनि दीन वचन रसाल । विरह व्याकुल देखि बाला भरे नैन विशाल ॥चारु आनन लोरधारा वरणि कापै जाइ। मनहुँ सुधातडाग उछले प्रेम प्रगटि देखाइ ॥ चंद्रमुख परि निडरि बैठे सुभग जोर चकोर ।पियत

मुख भरि भरि सुधा शशि गिरत तापर भौंर ॥ हरष वाणी कहत पुनि पुनि धन्य धनि ब्रजबाल। सूर प्रभु करि कृपा जोह्यो सदय भए गोपाल॥१८ ॥ राग बिहागरो ॥श्याम हँसि बोले प्रभुता डारि। बारंबार बिनय कर जोरत कटिपट गोद पसारि॥ तुम सन्मुख मैं विमुखतुम्हारो मैं असाध तुम साध। धन्यधन्य कहिकहि युवतिनको आप करत अनुराध॥ मोको भजी एकचित ह्वैकै निदरि लोक कुलकानि।सुत पति नेह तोरितिनुकासो मोही निजकरि जानि॥जाके हाथपेट फल ताको सो फल लह्योकुमारि। सूरकृपापूरणसोंबोलेगिरिगोवर्धनधारि॥१९॥राग सूहीबिलावल॥ कहत श्याम यह श्रीमुखबानी। धन्यधन्य दृढ नेम तुम्हारो बिनदामन मोहाथबिकानी॥निर्दय वचन कपटके भाषे तुम अपने जिय नेक न आनी। भजी निशंक आय तुम मोको गुरुजनकी शंका नहिं मानी॥ सिंह रहै जंबुक शरणागत देखी सुनी न अकथ कहानी।सूरश्यामअंकम भरि लीन्हीं विरह अग्नि झर तुरत बुझानी॥२० राग मारू ॥कियो जेहि काज तप घोषनारी।देउँ फल हौं तुरत लेहु तुम अब घरी हरष चित करहु दुख देहु डारी ॥ रासरस रचौं मिलि संग बिलसहु सबै बिहँसि हरि कह्यो यों निगमबानी। हँसत मुख मुख निरखि वचन अमृत बरषिप्रियारसभरे सारंगपानी॥ ब्रजयुवती चहुँ पास मध्य सुंदर श्याम राधिका वाम अति छबि बिराजै। सूर नव जलद तनु सुभग श्यामलकांति इंद्रबधु पांति बिच अधिक छाजै ॥ २१॥ राग नट ॥ हरि मुख देखि भूले नैन। हृदय हरषित प्रेम गद्गद मुख न आवत बैन ॥ काम आतुर भजी गोपी हरि मिले तेहि भाइ। प्रेमवश्य कृपालु केशव जानिलेत सुभाइ ॥ परस्पर मिलि हँसत रहसत हरषि करत विलास। उमँगि आनंद सिंधु उछल्यो श्यामके अभिलाष॥ मिलति इकइक भुजनि भरि भरि रास रुचि जिय आनि।तेहिसमय सुख श्यामश्यामा सूर क्यों कहैगानि॥ २२॥राग बिहागरो॥ रास रुचि जबहिश्याम मन आनी।करहु शृंगार सँवारि सुंदरी हँसत कहत हरि बानी॥जोदेखे अँग उलटे भूषण तब तरुनिन मुसुकानी।बारबार पिय देखिदेखि मुख पुनिपुनि युवति लजानी॥ नवसत साजि भई सब ठाढी कोछबि सकै बखानी॥ वहछबिनिरखि अधीर भई तनु कामनारि बिततानी॥ कुच भुज परसि करी मनइच्छा कछु तनुतृषा बुझानी। सुनहु सूर रस रास नायका सुंदरि राधा रानी॥ २३ ॥ राग सोरठ ॥ अंचल चंचल श्याम गह्यो। लैगए सुभगपुलिन यमुनाके अँग अँग भेष लह्यो ॥ कल्पतरोवर तर बंसीबट राधा रति गृहधाम। तहां रास रस रंग उपायो सँग शोभति ब्रजवाम॥ मध्य श्याम घन तडित भामिनी अतिराजत शुभ जोरी। सूरदास प्रभु नवल छबीले नवल छबीली गोरी ॥२४ ॥ राग टोडी ॥जहां श्यामघन रास उपायो। कुमकुमजल सुख वृष्टि रमायो॥ धरणीरज कपूरमय भारी। बिविध सुमन छबि न्यारीन्यारी॥युवतीजुरिमंडली बिराजैं॥बिचबिच कान्ह तरुनिबिच भ्राजैं॥ अनुपम लीला प्रगट देखायो। गोपिनकोकीयोमन भायो॥ बिच श्रीश्याम नारि बिच गोरी। कनकखंभ मर्कत खचि धोरी॥शोभा सिंधु हिलोर हिलोरी। सूर कहा मति वरणै थोरी ॥ २५ ॥ राग गुंडमलार ॥ रास मंडल बने श्याम श्यामा। नारि दुहुं पास गिरिधर बने दुहुँनि बिच सहस शशि वीस द्वादश उपामा ॥ मुकुटकी छबि निरखि कहा उपमा कहौं नैन जानत नहीं देह जानै। सुभगतन मेघ ता बीच चपला चमक निरखि नृत्यत मोर हरष मानै॥करतिआनंदपियसंगलक्ष्मीपुंज बढत रसरंगछिनछिनहिओरै। सूर प्रभु रास रसनागरी मध्य दोउ परस्पर नारि पति मनहि चोरै ॥ २६ ॥ परस्पर श्याम ब्रजबाम सोहैं। शीशश्रीखंड कुंडल जडित मणि श्रवण निरखि छबि श्याम मन तरुणिमोहैं॥

नासिका ललित बेसरि बनी अधर तट सुभग ताटंक छबि कहि न जाई । धरणि पग पटकि कर झटकि भौंहनि मटकि मनहिंमन तहां रीझे कन्हाई ॥ तब चलत हरि मटकि रहीं युवती भटकि लटकि लटकन खटकि छबि बिचारैं । कहति प्रभु सूर बहुरौ चलौ वैसही हमहु वैसे चलैं जो निहारैं ॥ २७ ॥ निरखि ब्रजनारि छबि श्याम लाजै । विविध वेनी रची मांग पाटी सुभग भाल बेंदीबिंदु इंदु लाजै ॥ श्रवण ताटंक लोचन चारु नासिका हंस खंजन कीर कोटि लाजै।अधर विद्रुम दशन नहीं छबि दामिनी सुभग बेसरि निरखि काम लाजै ॥ चिबुक तर कंठ श्रीमाल मोतीन छबि कुच उँचनि हेमगिरि अतिहि लाजै । सूरकी स्वामिनी नारि ब्रजभामिनी निरखि पिय प्रेम शोभा सुलाजै ॥ २८ ॥ राग बिहागरो ॥ बनी ब्रजनारिशोभा भारि । पगनि जेहरि लाल लहँगा अंग पचरँग सारि ॥ किंकिणी कटि कुनित कंकन करचुरी झनकार । हृदय चौकीचमकि बैठी सुभग मोतिनहार ॥ कंठश्री दुलरीविराजत चिबुक श्यामल बिंद । सुभग बेंदी ललित नासा रीझिरहे नँदनंद ॥ श्रवणपर ताटंककी छबि गोर ललित कपोल । सूर प्रभु वश अति भएहैं निरखि लोचनलोल ॥ २९ ॥ राग जतश्री ॥ सुरगण चढि विमान नभदेखत । ललनासहित सुमन गण वरषत जन्म धन्य ब्रजहीको लेखत ॥ धनि ब्रजलोग धन्य ब्रजबाला विहरत रास गोपाल । धनि बंसीवट धनि यमुनातट धनि धनि लता तमाल ॥ सबते धन्य धन्य बृंदाबन जहींकृष्णको वास । धनि धनि सूरदासके स्वामी अद्भुत राचो रास ॥ ३० ॥ राग बिलावल ॥ नैन सफल अब भए हमारे । देवलोक नीसान बजाए वरषत सुमन सुधारे ॥ जैजैध्वनि किन्नर मुनिगावत निरखतयोग बिसारे । शिव शारद नारद यह भाषत धनि धनि नंददुलारे ॥ सुरललना पतिगति बिसराए रही निहारिनिहारि । जात न बनै देखि सुख हरिको आईलोक बिसारि ॥ यह छबितिहूं भुवन कहुँ नाहीं जो बृंदावन धाम । सुंदर त्रय गुण रसकी सीवां सूर राधिका श्याम ॥ ३१ ॥ राग आसावरी ॥ हमको विधि ब्रजबधू न कीन्हीं कहा अमरपुर वास भए । बार बार पछितात यहै कहि सुख होतो हरि संग रए ॥ कहा जन्म जो नहीं हमारो फिरि फिरि ब्रज अवतार भलो । बृंदावन द्रुम लता हूजिए करतासों माँगिए चलो ॥ यह बांछना होइ क्यों पूरण दासी ह्वै वरु ब्रज रहिए । सूरदास प्रभुअंतर्यामी तिनहि बिना कासों कहिए ॥ ३२ ॥ राग बिहागरो ॥ धन्यनंद यशुदाके नंदन । धनि श्रीखंड पिंड शिर लटकनि धनि कुंडल धनि मृगमद चंदन ॥ धनि राधिका धन्य सुंदरता धनि मोहनकी जोरी । ज्यों घनमध्य दामिनीकी छबियह उपमा कहौंथोरी ॥ धनि मंडली जुरी गोपिनकी ताबिच नंदकुमार । राधा श्याम सब गोपकुमारी क्रीडत रास बिहार ॥ षटदश सहस गोपकी नारी षटदश सहस गुपाल । काहूसों कहुँ अँतर नाहीं करत परस्पर ख्याल ॥ धनि ब्रजवास आश यह पूरण कैसे होतिहमारी । सूर अमरललनागण अंमर विथकीं लोक बिसारी ॥ ३३ ॥ राग मलार ॥ मानो माई घनघन अंतरदामिनि । घन दामिनि दामिनिघन अंतर शोभित हरि ब्रजभामिनि ॥ यमुन पुलिन मल्लिका मनोहर शरद सुहाई यामिनि । सुंदरशशि गुण रूप राग निधि अंग अंग अभिरामिनि ॥ रच्यो रास मिलि रसिकराइसों मुदित भई ब्रज-भामिनि । रूपनिधान श्यामसुंदर घन आनँद मनविश्रामिनि ॥ खंजन मीनमराल हरनछबि भान भेद गजगामिनि । को गति गुनही सूर श्यामसँगकामविमोह्योकामिनि ॥ ३४ ॥ राग मलार ॥ देखो माई रूप सगेवर साज्यो । ब्रजवनिता वरवारि बृंदमें श्री ब्रजराज बिराज्यो ॥ लोचन जलज मधुप अलकावलि कुंडल मीन सलोल । कुच चक्रवाक विलोकि वदन बिधु बिछरि रहे अन-

बोल ॥ मुक्तामाल बालबगपंगति करत कुलाहल कूल । सारस हंस मध्य शुकसैना वैजयंति समतूल ॥ पुरइनि कपिश निचोल विविध रँग विहँसत सचु उपजावै । सूर श्याम आनंदकंद-की शोभा कहत न आवै॥३५॥राग सूही॥तरुतमाल गोपाल लालवनमाल गिरिधरहृदय विशाल । कबहुँक गोधन सँग लै बालक कबहुँ फिरत सँग सखा ग्वाल । धनि व्रजनायक सबगुण लायक कियो महरि पोषी प्रतिपाल। कबहुँक बनिकै रहैं जु बनए गोरस दान लेत तत्काल ॥ पैठि पतालहि नाथ्यो काली फनप्रति नृत्यत विविधताल।धनि भूषन धनि मुकुट जर्‌यो नग हीरा चूनी लाल॥धन्य सूर प्रभुता धरे राजै सँगसँग बनिताजाल। कुंडल लोल कपोल विराजत दशन चमक सपनाल॥३६॥ राग कान्हरो ॥भालतिलक शोभित शिर केसरि नैना विविधि बने।कटि कछनी चंदन खौरि श्यामबरन घनसुंदर ऐसे नटनागरके जैए री वारने॥त्रिभंगी ह्वै नृत्य करत व्रजयुवतिन मंडली बिच दुहुँदुहुँ बिच श्याम घने । मोरमुकुट शीश धरे राजतहै सूर प्रभु निरखिनिरखि असगन भजे जैजैध्वनि भने॥३७॥राग धनाश्री॥रासमंडलमध्य श्याम राधा।मनो घनबीच दामिनी कौंधति सुभग एक हैं रूप द्वै नाहिं बाधा ॥ नायका अष्ट अष्टहु दिशा सोहहीं बनी चहुँपास सब गोपकन्या। मिले सब संग नहिं लखति कोउ परस्पर बने षटदशसहस कृष्ण सैन्या॥सजे शृंगार नवसात जग-मग रह्यो अंगभूषणरैनि बनी तैसी।सूर प्रभु नवल गिरिधर नवल राधिका नवलव्रजसुता मंडली जैसी ॥३८॥राग भैरव॥युवति अंग छबि निरखत श्याम। नंदकुमार श्रीअंगमाधुरी अवलोकति व्रजवाम॥ परी दृष्टि कुच उचनि पियाकी वह सुख कह्यो न जाई।अँगिया नील मांडनी राती निरखत नैन चुराई॥वै निरखति पिय उर भुजकी छबि पहुँचनि पहुँची भ्राजति।करपल्लव मुद्रिका मोहन ... छबिपर मन लाजति ॥ बंदन बिंद निरखि हरि रीझे शशिपर बालविभास। नंदलाल व्रजलालकि छबि क्यों बरणै सूरजदास ॥३९॥ राग गौरी ॥श्यामतनु राजतपीत पिछौरी। उरचंदनमाल काछनी काछे कटि किंकिनि छबि रोरी ॥ बेनी सुभग नितंबनि डोलत मंदगामिनी नारी। मृथन जघन बांधि नाग बँद तिरनीपर छबि भारी॥नखनि रंग जावककी शोभा देखत पियमन भावत । सूर-दास प्रभुतनु त्रिभंग ह्वै युवतिन मनहि रिझावत॥४०॥राग सारंग ॥नीलांबर पहिरे तनु भामिनि जनु घनमें दमकतहै दामिनि । शेष महेश लोकेश शुकादिक नारदादि मुनिकी है स्वामिनि ॥ शशि-मुख तिलक दियो मृगमदको खुटिला खुभी जगयजरी । नासा तिल प्रसून बेसरि छबि मोतियन माँग सुहागभरी ॥ अति सुदेश मृदु चिकुर हरत चित गूँथे सुमन रसालहि। कबरी अति कमनीय सुभग शिर राजति गौरी बालहि॥ सिगरी कनक रत्न मुक्तामणि लटकनि चितहि चुरावै। मानो कोटिकोटि शत मोहनि पाँइनि आनि लगावै ॥ कामकमान समान भौंह दोउ चंचल नैनसरोजे। अलिगंजन अंजन दै रेखा बरषत बाण मनोजै ॥ कंबुकंठ नाना मणिभूषण उर मुक्ताकी माल। कनक किंकिणी नूपुर कलरव कुंजत बाल मराल ॥ चौकी हेम चंद्रमणि लागी हीरारतन जराय खची । भुवन चतुर्दशकी सुंदरता राधेके मुख मनहुँ रची ॥ सजल मेघ घन साँवल सुंदर बासअंग अति सोहै। रूप अनूप मनोहर मोहै ता उपमा कहि कोहै ॥ सहज माधुरी अंगअंग प्रति सुबस किए व्रजनाथ घनी।अखिललोक लोकेश बिलोकत सब लोकनमहिं एक गनी ॥ कबहुँक हरि-सँग नृत्यति श्यामा श्रमकन बूँद बिराजत यों। मानहु अधरसुधाके कारण शशि दूजो शुक्रबल-लयों ॥ रमा उमा अरु शची अरुंधति दिन प्रति देखन आवैं। निरखि कुसुम सुरगण हैं बर्षत प्रेम मुदित यश गावैं ॥ रूपराशि सुखराशि राधिका शील महागुणराशी। कृष्णचरण ते पावहिं श्यामा

जे तुव चरण उपासी ॥ जगनायक जगदीश पियारी जगतजननि जगरानी । नित विहार गोपाललाल सँग वृन्दाबन रजधानी॥अगतिनकी गति भक्तनकी पति श्रीराधापद मंगलदानी। अशरनशरनी भवभयहरनी वेद पुराण बखानी ॥ रसना एक नहीं शत कोटिक शोभा अमित अपारी । कृष्णभक्ति दीजै श्रीराधे सूरदास बलिहारी॥४१॥राग बिहागरो॥नृत्यत श्याम नानारंग। मुकुट लटकनि भ्रुकुटि मटकनि धरे नटवर अंग ॥ चलत गति कटि रुनित किंकिनि घूँघरू झनकार । मनो हंस रसाल बानी अरसपरस बिहार॥लसति कर पहुँची सो पुंजय मुद्रिका अति ज्योति । भावसों भुज फिरत जबहीं तबहिं शोभा होति॥कबहुँ नृत्यत नारि गतिपर कबहुँ नृत्यत आपु।सूरके प्रभु रसिककी मणि रच्यो रास प्रतापु॥४२॥राग बिहागरो॥गति सुधंग नृत्यत ब्रजनारी। हावभाव नैनासैना दैदै रिझवति गिरिधारी ॥ पगपग पटकि भुजनि लटकावति फंदा करनि अनूप।चंचल चलत झूमिये अंचल अद्भुत है वह रूप ॥ दुरि निरखत अंगरूप परस्पर दोउ मनहिंमन रिझवत।हँसिहँसि वदन वचन रस प्रगटत स्वेद अंग जल भीजत॥बेनी छूटि लटैं बगरानी मुकुट लटकि लटकानो । फूल खसत शिरते भए न्यारे सुभग स्वातिसुत मानो ॥ गान करति नागरि रीझे पिय लीन्हीं अंकम लाइ।रसवश ह्वै लपटाइरहे दोउ सूर सखी बलिजाइ॥ ॥४३॥राग गौरी॥नृत्यत अंगअभूषण बाजत।गति सुधंगसों भाव देखावत इकते इक अति राजत॥ कहत न बनै रह्यो रस ऐसो वर्णत वरणि न जाइ । जैसेइ श्याम तैसियै गोपी अतिही छबि अधिकाइ॥कंकन चुरी किंकिनी नूपुर पग पैजनि बिछिया शोभित।अद्भुत ध्वनि उपजत इन मिलिकै भ्रमि २ इत उत जोवत ॥ सुनिसुनि श्रवण रीझि मनहीमन राधा रासरसज्ञा । सूर श्याम सबके सुखदायक लायक गुणनि गुणज्ञा॥४४॥राग केदारो ॥उघटत श्यामनृत्यत नारि। धरे अधर उपंग उपजै लेतहै गिरिधारि ॥ ताल मुरज रबाब बीना किन्नरी रससार। शब्दसंग मृदंग मिलवत सुघर नंदकुमार॥नागरी सब गुणनि आगरि मिलि चलति पियसंग। कबहुँगावति कबहुँनृत्यत कबहुँ उघटति रंग ॥ मंडली गोपाल गोपी अंगअँग अनुहारि। सूरप्रभु धनि नवल भामिनि दामिनी छबिडारि ॥४५॥ राग बिहागरो ॥ नृत्यत हैं दोउ श्यामा श्याम। अंग मगन पियते प्यारी अति निरखि चकित ब्रजवाम ॥ तिरप लेति चपलासी चमकति झमकति भूषण अंग। या छबिपर उपमा कहूं नाहीं निरखत विवश अनंग ॥ श्रीराधिका सकलगुण पूरण जाके श्याम अधीन। संगते होत नहीं कहुँ न्यारी भई रहति अतिलीन॥रससमुद्र मानो उछलत भयो सुंदरताकी खानि।सूरदास प्रभु रीझि थकितभये कहत न कछू बखानि ॥४६॥राग कल्याण ॥ कबहुँ पिय हरपि हिरदय लगावै ॥ कबहुं लैलै तान नागरी सुघरप्रति सुघर नँदसुवनको मन रिझावै ॥ कबहुँ चुंबन देति आकर्षि जिय लेति करति बिनचेत सब हेतु अपने । मिलति भुज कंठ दै रहति अँग लटकिकै जात दुख दूरि ह्वै झझकि सपने ॥ लेति गहि कुचनिबिच देत अधरनि अमृत एक कर चिबुक इक शीश धारै। सूर प्रभु स्वामिनी श्याम अति सन्मुख ह्वै निरखि मुख नैन इकटक निहारै॥४७॥ राग आसावरी ॥ जो सुख श्याम करत बृंदावन सो सुख तिहुँपुर नाहीं हो। हमको कहाँ मिलत रज उनकी यह कहिकहि अकुलाहीं हो ॥ सुनहु प्रिया श्रीसत्य कहतहौं मोते और न कोई हो। नंदकुमार रासरससुख बिन बृंदावन नहिंहोई हो॥ हरता करताको प्रभु मेंही वह सुख मोते न्यारो हो॥ सूर धन्य राधावर गिरिधर धनि सुख नंद-दुलारो हो ॥४८॥ राग बिहागरो॥ रसवश श्याम कीन्ही नारि। अधर रस अचवत परस्पर संग सब

ब्रजनारि ॥ काम आतुर भजीं बाला सबनि पुरई आश । एक इक ब्रजनारि इकइक आप करयो प्रकाश ॥ कबहुँ नृत्यत कबहुँ गावत कबहुँ कोकविलास । सूरके प्रभु आश नायक करत सुख दुख नाश ॥ ४१ ॥ राग कल्याण ॥ हरषि मुरली श्याम नाद कीन्हों । करषि मनतिहुँ भुवन सुनिथकि रह्यो पवन शशिहि भूल्यो गवन ज्ञान लीन्हों ॥ तारकागण लजे बुद्धि मनमन सजे तबहि तनुसुधि तजे शब्द लाग्यो । नाग नर मुनि थके नभ धरणितनतके शारदा स्वामि शिव ध्यान जाग्यो ॥ ध्यान नारद टरचो शेष आसन चल्यो गई बैकुंठ ध्वनि मगन स्वामी । कहत श्रीप्रियासों गधिकारवन ए सूर प्रभु श्यामके दरशकामी ॥ ५० ॥ राग बिहागरो ॥ मुरली ध्वनि बैंकुठ गई । नारायण कमला सुनि दंपति अति रुचि हृदय भई ॥ सुनहु प्रिया यह बाणी अद्भुत वृंदाबन हरि देख्यो । धन्य धन्य श्रीपति मुख कहिकहि जीवन ब्रजको लेख्यो । रासबिलास करत नँदनंदन सो हमते अति दूरि । धनि बन धाम धन्य ब्रजधरनी उडि लागे ज्यों धूरि ॥ यह सुख तिहूं भुवनमें नाहीं जोहरि-सँग पल एक । सूर निरखि नारायण इकटक भूले नैननिमेक ॥ ५१ ॥ राग कल्याण ॥ जबहरि मुरली-नाद प्रकाश्यो । जंगम जड थावर चर कीन्हें पाहन जलज विकाश्यो ॥ स्वर्ग पताल दशों दिशि पूरण ध्वनि आच्छादित कीन्हों । निशिवर कल्प समान बढाई गोपिनको सुख दीन्हों ॥ मैमत भए जीव जल थलके तनुकी सुधि न सँभार । सूर श्याममुख बैन मधुर सुनि उलटे सब व्यवहार ॥ ५२ ॥ राग पूरवी ॥ मुरली गतिविपरीतिकराई । तिहूंभुवन भरि नादसमानो राधारवन बजाई ॥ बछरा थन नाहीं मुख परसत चरत नहीं तृण धेनु । यमुना उलटी धार चली बहि पवन थकित सुनि बेनु ॥ बिह्वल भए नहीं सुधि काहू सुर गंधर्व नर नारि । सूरदास सब चकित जहां तहँ ब्रजयुवतिन सुखकारि ॥ ५३ ॥ राग केदारो ॥ मुरली सुनत अचल चले । थके चर जल झरत पाहन बिफल वृक्षन फले ॥ पय स्रवत गोधननि थनते प्रेमपुलकित गात । झुरे द्रुम अंकुरित पल्लव विटप चंचलपात ॥ सुनत खग मृग मौन साध्यो चित्रकी अनुहारि । धरणिउमँ-गि न माति धरमें यती योग विसारि ॥ ग्वाल गृहगृह सहज सोवत उहै सहज सुभाइ । सूर प्रभु रसरासके हित सुखद रैनि बढाइ ॥ ५४ ॥ राग केदारा ॥ रासरस मुरलीहीते जान्यों । श्यामअधरपरबैठि नाद कियो मारग चंद्र हिरान्यो ॥ धरणि जीव जलथलके मोहे नभमंडल सुर थाके । तृण द्रुम सलिल पवन गति भूले श्रवण शब्द परचो जाके ॥ बच्यो नहीं पाताल रसातल कितिक उदै लौं भान । नारद शारद शिव यह भाषत कछु तनु रह्यो न सयान ॥ यह अपार रस रास उपायो सुन्यो न देख्यो नैन । नारायण ध्वनि सुनि ललचाने श्याम अधर सुनि बैन ॥ कहत रमासों सुनिसुनि प्यारी बिहरत हैं वन श्याम । सूर कहाँ हमको वैसो सुख जो विलसति ब्रजवाम ॥ ५५ ॥ जीती जीती है रनवंसी । मधुकर सूत वदत बंदी पिक मागध मदन प्रशंसी ॥ मथ्यो मान बल दर्प महीपति युवतियूथ गहि आने । ध्वनिको खंड ब्रह्मंड भेद करि सुर सन्मुख शर ताने ॥ ब्रह्मादिक शिव सनक सनंदन बोलत जै जै बाने । राधापति सर्वस अपनो दैपुनिताहाथविकाने ॥ खग मृग मीन सुमार किए सब जड जंगम जित भेष । छाजत छत मद मोह कवच कटि तज-त न नैन निमेष ॥ अपनी अपनी ठकुराइनिकी काढतिहै भुवरेख । बैठी पीठ पानि गर्जति है देति सबनि अवशेप । रविको रथ ले दियो सोमको षटदश कला समेत । रच्यो यज्ञ रसरास राजसू वृन्दाविपिन निकेत ॥ दान मान परधान प्रेमरस बध्यो माधुरी हेत । अधिकारी गोपाल तहां हैं सूर सबनि सुख देत ॥ ५६ ॥ अथ श्रीकृष्णविवाह वर्णन ॥ राग सारंग ॥ जाकोव्यासवर्णत रास । हैगंधर्ववि-

वाह चितदै सुनो विविध विलास ॥ कियो प्रथम कुमारि यह व्रत धरयो हृदय निवास । नंदसुत पति देव देवी पूज मनकी आस॥ दियो तब परसाद सबको भयो सबन हुलास । मंत्र नयना तरुन वर तर यमुनजलहरि पास ॥ धरयो लग्न जो शरद निशिकी सुधि करी गुरु रास । मोरमुकुट समीर मानों कनक कंकन रास॥वेणुध्वनि सुनि श्रवण सायक कमलवदन प्रकास । रूपप्रति प्रति रूप कीन्हें भए अंश निवास॥अधर निधि बेधीर करिकै करत आनन हास । फिरत भाँवरि वस्थ भूषण अग्नि मानो भास ॥ सुरनारि कौतुक लागि आईं छाँडि सुत पति पास । जिय परी ग्रंथ कौनछोरैं निकट ननँद न सास॥निरखि श्रुतिमति कुसुमअंजलि वरषि प्रसुन अकास । लेतया रस रासको रस रसिक सूरजदास ॥ ८७॥ राग सूही ॥यह व्रत हिय धरि देवी पूजी।हैकछु मन अभिलाष न दूजी॥दीजै नंदसुवन पति मेरे । जोपै होइ अनुग्रह तेरे ॥ वरष दिनन भरि तप तनु कियो।तब करि अनुग्रह देवी बर दियो॥ राग छंद ॥करि अनुग्रह वर जोदीन्होंवरष युवतिन तप कियो।त्रैलोकभूषण पुरुष सुंदर रूप गुग नाहिंन वियो ॥ उबटि खौरि शृंगारि सखिअन कुँवरि चोरी आनियो । जाहित कियो व्रतनेम संयम सोघरी बिधि बानियो ॥ १ ॥ मोरमुकुटरचि मौरबनायो। माथेपर धरि हरि बरुआयो ॥ तनु श्यामल पट पीत दुकूले । देखत घन दामिनि मन भूले ॥ ॥ राग छंद ॥ दामिनी घन कोटि वारौं जब निहारौं वहछबी। कुंडल विराजतगंडमंडल नहींशोभा शशि रवी॥ और कौन समान त्रिभुवन सकल गुण जेहिमाहिआं। मनो मौर नाचत संग डोलत मुकुटकी परिछाहिआं ॥ २ ॥ गोपीजन सब नेवते आई । मुरलीध्वनि ते पठइ बुलाई ॥ बहु विधि आनँदमंगल गाए। नवफूलनके मंडप छाए ॥ राग छंद ॥ छायेजुफूलन कुंज मंडप प्रीतिग्रंथि हिए परी । अति रुचिर रूप प्रवीण राधा निकट वृन्दा शुभ घरी ॥ गाए जु गीत पुनीत बहु विधि वेद रव सुंदरि ध्वनी। नंदसुत वृषभानुतनया रासमें जोरी बनी ॥ ३ ॥ मिलि मनदै सुख अवन वैसे । चितवनि वार किए सब तैसे ॥ तापरि पाणिग्रहण विधि कीन्ही । तब मंडल भरि भाँवरि दीन्ही ॥ राग छंद ॥ देत भाँवरि कुंज मंडफ पुलिनमै वेदी रची । बैठे जु श्यामा श्याम वर त्रैलोककी शोभा खची ॥ उत कोकिलागण कर कोलाहल इत सकल व्रजनारियाँ । आई जुनिवती दुहूँ दिशि मनों देति आनँद गारियाँ ॥ ४ ॥ भए जो मन्मथ सैन्य बराती । द्रुम फूले वन अनवन भाँती॥सुर बंदीजनसवजस गाए।मघवाजे मिरदंगबजाए ॥ राग छंद ॥बाजहिंजेबाजनसकल नभ सुर पुहुपअंजलि वरपहीं । थकिरहे व्योम बिमान मुनिगन जैशबद करि हर्षहीं ॥ सूरदासहि भयो आनँद पुजी मनकीसाधा । श्रीलालगिरिधर नवलदूलह दुलहनी श्रीराधा राग बिहागरो॥ प्रथम व्याहविधि ह्वैरह्यो कंकनचार बिचारि । रचिरचिपचिपचि गूंथि बनायो नवल निपुनव्रजनारि ॥ नहिं छूटे मोहन डोरनाहो ॥ बडेहोवहुतबछोरियोहो ये गोकुलके राइ। की कर जोरिकरौ बिनतीकै छुवौ श्रीराधाजीके पांइ॥यह न होइ गिरिकोधरिबोहोसुनहुकुँवरगोपीनाथ।आपुनको तुम बडे कहावत कांपन लागेहैं दोउ हाथ॥ बहुरि सिमिटि व्रजसुंदरी मिलि दीन्हीगांठि बनाइ । छोरहु बेगिकिआनहु अपनीयशुमतिमाइबोलाइ॥सहजसिथिलपल्लवतेहरिजूलीन्होंछोरिसवारि। किलकि उठीं सब सखी श्यामकी अब तुम छोरौ सुकुमारि॥पचिहारीकैसेहुनहिंछूटतबँधीप्रेमकी डोरि । देखि सखी यह रीति दुहुँनकी मुदित हँसीं मुख मोरि ॥ अब जिनि करहु सहाय सखी री छोडहु सकल सयान।दुलहिनि छोरि दुलहको कंकन की बोलि बबा वृषभान ॥ कमल कमल करु बंधियहो पानि पियगोपाल । अलि कुल साँचेसे लगे रोमकटीले नाल ॥ लीला रास

गोपाललालकी जो रसरसिक बखान। सदा रहो इह अविचल जोरी बलि बलि सूर समान ॥५८॥ ॥ राग सारंग ॥ कान्ह तुम्हारी माइ महाबल सबजगअपवश कीन्होहो। नेकचितै मुसुकाइकै उनि सबको मन हरि लीन्होहो ॥ कछु कुलधर्म न जानिए वाके रूप सबै रँग राचे हो । बिन देखे समुझे सुने जग ठगत न कोऊ बाचे हो॥पहिरे राती कंचुकी शिर श्वेत उपरना सोहैहो । कटि नीलो लहँगा कस्यो सो को जो निरखि न मोहैहो॥बोली चतुरानन ठगे सब अमर उपरना राते हो।अतरौटा अवलोकिकैं सब असुर महामद माते हो॥एकनि दिन दरशन ठगे निशि एकनलै सँग सोवैहो। एकनले मंदिर चढै रचि एकनि बिरचि विगोवै हो॥अकथ कथा वाकी सबै कछु कहौं तो कहिय न जाहीहो।छैलनके सँग यों फिरै जैसे तनु सँग छाहीं हो॥सुनि ताकी सब अपतई शुक सनकादिक भागे हो।नेक दृष्टि पथ परि गई शंकर शिर टोना लागे हो॥ योग युक्ति बिसरी सबै उर काम क्रोध मद जागे हो।लोकलाज सब छांडिके उठि धाइ चले सँग नाँगेहो॥और कहाँ लगि वर्णिये परपुरुष न उबरन पावैहो। जो सोवत अतिनींदमें हो तहऊँ जाइ जगावैहो ॥ यहिबिधि इह डहकै सबै भरि जल थलहु जीव जेतेहो। चतुर शिरोमणि श्याम सुन्यो कनि कहौं कहांलगि केतेहो ॥ यहि लाजन मरिए सदा हारि जब सब कहत माय तुम्हारी हो । सूरदास प्रभु वरजिकै किनि मेटहु कुलकी गारी हो॥५९॥राग काफी॥सनकादिक नारद मुनिशिव विरंचि जान।देवदुंदुभी मृदंग बाजे वर निसान॥वारने तोरन बँधाए हरि कीन्हो उछाह ।ब्रजकी सब रीति भई बरसाने व्याह ॥डोरनकर छोरनको आई सकल धाइ।फूली फिरैं सहचरी आनँद उर न समाइ॥गजवर गति आवनि पग धरनि धरत पाँव। लटकत शिर सेहरो मनो शिखि श्रीखंड सुभाव ॥ शोभित सँग नारि अंग सबै छबि विराज । गज रथ बाजी बनाइ चवँर छत्र साज ॥ दुलहिनि वृषभानु सुता अंग अंग भ्राज। सूरदास प्रभु दूलह देखो श्रीब्रजराज ॥ ६० ॥ राग सारंग ॥ दूलह देखोंगी जाइ उतरे संकेत वट केहि मिस देखन पाऊं । फूल गूथि माला लै मालिनि ह्वै जाऊं॥नंदनंदन प्यारेको बिरिआ करि लाऊं।तमोलिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देउँ॥अपने गोपाल लालके मैं वागे रचि लेउँ । बजाजिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देउँ ॥ वृंदाबनचंदको मैं भूषण गढि लेउँ।सुनारिनि ह्वै जाउँ निरखि नैननि सुख देउँ ॥ चंदन अरगजा कुर केसर धरि लेउँ।गंधिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देउँ॥६१॥राग बिहागरो॥ वृषभानुनंदिनी अतिछबि बनी।श्रीवृन्दाबनचंद राधा निर्मल चांदनी॥श्याम अलक बिच मोती दुति मंगा ॥ मानहु झलमलित शीश गंगा । श्रवण तांटक सोहै चिकुरकी कांति। उलटि चल्यो है राहु चक्रकी भांति ॥ गोरे लिलाट सोहै सेंदुरको बिंद । शशिकी उपमा देत कविको है निंद ॥ चपल उनींदे नैन लागत सोहाये। नासिका चंपकलीको द्वै अलिधाये ॥ वदन मंजनते अंजन गयो दूरि ।कलंक रहित शशि पुनि कला पूरि॥ गिरिते लता भई यह हम सुनि । कंचन लताते द्वै गिरि भए पुनि ॥ कंचनसे तनु सोहै नीलांबरसारी ।कुहूनिसामध्य जनु दामिनि उजियारी ॥ नख शिख शोभा मोपै वरणि न जाई।तुमसीतुमही राधा श्याम मनभाई॥यह छबि सूरदास सदा रहै बानी । नँदनंदनराजा राधिकादे रानी॥६२॥रागदेवगंधार॥दोऊ राजत श्यामा श्याम।ब्रजयुवती मंडली बिराजत देखति सुरगन वाम॥धन्य धन्य वृंदावनको सुख सुरपुर कौने काम। धनि वृषभानु सुता धनि मोहन धनि गोपिनको नाम ॥ इनकी को दासी सरि ह्वैहै धन्य शरदकी याम कैसेहु सूर जनम ब्रज पावै यह सुख नहिं तिहुँ धाम॥६३॥राग केदारो॥विराजत मोहन मंडलरास।श्यामा सुधा सरोवर

मानो क्रीडत विविध विलास ॥ ब्रजयुवती सत यूथ मंडली मिलि कर परस करे। भुज मृणाल भूषण तोरण युत कंचन खंभ खरे ॥ मृदुपद न्यास मंद मलयानिल बिगलित शीश निचोल। नील पीत सित अरुन ध्वजा चल सीर समीर झकोल ॥ विपुल पुलक कंचुकि बँद छूटे हृदय अनंद भए। कुच युग चक्रवाक अवनी तजि अंतर रैनि गए । दशन कुंद दाडिम द्युति दामिनि प्रगटत ज्यों दुरिजात। अधर बिंब मधु अमी जलदकन प्रीतम वदन समात ॥ गिरत कुसुम कबरी केशनते टूटतहैं उरहार । शरद जलद मनो मंद किरन कन कहूं कहूं जलधार ॥ प्रफुलित वदन सरोज सुंदरी अति रस रंग रँगे । पुहुकर पुंडरीक पूरन मनों खंजन केलि खगे। पृथु नितंब करभीर कमल पद नखमणि चन्द्र अनूप। मानहु लुब्ध भयो वारिज दल इंदु किए दशरूप ॥ श्रुति कुंडल धर गिरत न जानति अति आनंद भरी । चरण परसते चलत चहूं दिशि मानहुँ मीन करी॥ चरणरुनित नूपुर कटि किंकिनि करतलतालरसाल ।तरनीतनय समेत सहज सुख मुख रति मधुर मराल ॥बाजत ताल मृदंग बांसुरी उपजति तान तरंग। निकट विटप मनो द्विजकुल कूजत वय बल बढै अनंग ॥ सकलविनोद सहित सुरललना मोहे सुर नर नाग। विथकित उडपति बिंद विराजत श्रीगोपाल अनुराग ॥ याचत दास आश चरणनकी अपनी शरन वसाव। मन अभिलाष श्रवण यश पूरित सूरहि सुधा पिआव ॥६४॥ राग सूही॥ रासरसिक गोपाललाल ब्रजपाल संग विहरत वृंदावन। सप्त सुरन मुरली बाजत गाजत भ्राजत राजत अधरनि ध्वनि सुनि मोहे सुर नर गंधर्व गन ॥ तरुण कान्ह तरु तमालके तट तरुणि गोपिका यूथ निकट पट पीतांबर नीलांबर तन तन ॥ नृत्य करत उघटत संगति पद ताथेई थेई ता कहत सूर प्रभु निरखि परस्पर रीझत मनमन ॥ ६५ ॥ राग बिहागरो ॥ आज निशि शोभित शरद सुहाई । शीतल मंद सुगंध पवन वहे रोमरोम सुखदाई॥ यमुनापुलिन पुनीत परमरुचि रचि मंडली बनाई। राधा वाम अंगपर कर धरि मध्यहि कुँवर कन्हाई ॥ कुंडल संग ताटंक एक भए युगल कपोलनि झाई ।एक उरग मानो गिरि ऊपर द्वै शशि उदय कराई ॥ चारि चकोर परे मनो फंदा चलतहैं चंचलताई । उडुपति गति तजि रह्यो निरखि लजिसूरदास बलि जाई॥६६॥ ॥राग केदारो ॥ आजु हरि ऐसे रास रच्यो ।श्रवण सुन्यो न कहूं अवलोक्यो यह सुख अबलौंकहां सच्यो॥प्रथमहि सचे समाज साज सुर सबै मोहे कोउ न बच्यो।एकहि बार थकित थिर चर कियो को जानै को कबहि नच्यो॥गत गुण मद अभिमान अधिक रुचि लै लोचन मन तहँइ खच्यो॥ शिव नारद शारदा कहत यों हम इतने दिन वादि पच्यो ॥ निरखि नैन रसरीति रजनि रुचि काम कटक फिरि कलह मच्यो। सूर धनुप धीरज न धरचो तब उलटि अनंग तच्यो ॥ ॥ ६७ ॥ आजु हरि अद्भुत रास उपायो । एकहि सुर सब मोहित कीन्हें मुरली नाद सुनायो ॥ अचल चले चल थकित भए सब मुनिजन ध्यान भुलायो । चंचल पवन थक्यो नहिं डोलत यमुना उलटि वहायो ॥ थकित भयो चंद्रमासहित मृग सुधासमुद्रबढायो।सूर श्याम गोपिनसुख दायक लायक दरश दिखायो ॥ रागसोरठ॥ मोहनयह सुख कहांधरचो । जो सुख रासरैनिउपजायो त्रिभुवन मनहि हरचो॥मुरलीशब्द सुनत ऐसो को जो व्रतते न टरचो । बचे न कोउ मोहित सब कीन्हें प्रेम उद्योत करचो ॥ उलटि काम तनु काम प्रकाश्यो अद्भुत रूप धरचो । सूरदास शिव नारद शारद कहत न कह्यो परचो॥८६॥ राग बिहागरो ॥आजु निशि रास रंग हरि कीन्हों। व्रजवनिता बिच श्याममंडली मिलि सबको सुख दीन्हों ॥ सुरललना सुरसहित विमोहे रच्यो

मधुरसुर गान ॥ नृत्य करत उघटत नानाबिधि सुनि मुनि बिसरयो ध्यान । मुरली सुनत भए सब व्याकुल नभधरनीपाताल॥ सूर श्याम काको नकिएवशरचिरसरासरसाल॥६९॥ राग केदारो॥ बनावत रासमंडल प्यारो । मुकुटकी लटकझलककुंडलकी निरतत नंददुलारो ॥ उर बनमाल सोहै सुंदर वर गोपिनके सँग गावै । लेत उपज नागर नागरि सँग बिच बिच तान सुनावै ॥ वंसी-वट तट रास रच्यो है सब गोपिन सुखकारो । सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको भक्तनप्राण अधारो॥ ॥ ७० ॥ राग बिहागरो ॥ दूलह दुलहिनि श्यामा श्याम । कोककला वितपन्न परस्पर देखत लज्जित काम ॥ जा फलको ब्रजनारि कियो व्रत सो फल पूरण पायो । मनकामना भयो परिपूरण सबहित मानि मनायो ॥ राग रागिनी प्रगट देखायो गायो जो जेहि रूप । सप्त सुरनके भेद बतावति नागरि रूप अनूप ॥ अतिहि सुघर पियको मन मोह्यो अपवश करति रिझावति । सूर श्याम मोहन मूरतिको बारबार उर लावति ॥७१॥ राग रामकली ॥ श्यामा श्याम रिझावति भारी । मन मन कहति और नहिं मोसी पियको कोऊ प्यारी ॥ ध्रुवा छंद धुरपद यश हरिको हरिही गाय सुनावति । आपुन रीझि कंतको रिझवति यह जिय गर्व बढावति ॥ नृत्यति उघटति गति संगीत पद सुनत कोकिला लाजति । सूर श्याम नागर अरु नागरि ललनासुलपमंडलीराजति॥७२॥ राग रामकली ॥ रिझवतिपियहिबारंबार। निरखिनैनलजात हरिके नहीं शोभापार ॥ चलि सुलप गज हंस मोहति कोक कला प्रवीन । हँसि परस्पर तान गावति करति पियहि अधीन ॥ सुनत वनमृग होत व्याकुल रहत चक्रत आइ । सूर प्रभु वश किए नागरि महाजाननि राइ ॥ ७३ ॥ प्यारी श्याम लई उर लाइ । उरज उरसों परसको सुख वरणि कापै जाइ ॥ कनक छबि तन मलय लेपन निरखि भामिनि अंग । नासिका शुभ बास लैलै पुलक श्याम अनंग ॥ देत चुंबन लेत सुखको मानि पूरण भाग। सूर प्रभु वश किए नागरि वदतिधन्य सुहाग ॥७४॥ राग बिहागरो ॥ रीझे परस्पर वरनारि। कंठभुजभुज धरे दोऊसकत नहिंनिर वारि ॥ गौर श्याम कपोल सुललित अधर अंमृत सार । परस्पर दोउ पियरु प्यारी रीझि लेत उगार ॥ प्राण इक द्वै देह कीन्हें भक्त प्रीति प्रकास । सूर स्वामी स्वामिनी मिलि करत रंग विलास ॥ ७५ ॥ गावत श्याम श्यामा रंग । सुघर गति नागरि अलापति सुर धरति पियसंग॥ तान गावति कोकिला मनो नाद अलि मिलि देत। मोर संग चकोर डोलत आप अपने हेत ॥ भामिनी अंग जोन्ह मानो जलद श्यामलगात । परस्पर दोउ करत क्रीडा मनहि मनहि सिहात । कुचनि बिच कच परम शोभा निरखि हँसत गोपाल ॥ सूर कंचन गिरि बिचनि मनों रह्यो है अंधकाल ॥७६॥ मोहन मोहनीरस भरे। भौंहमोरनि नैन फेरनि तहाँते नहिं टरे ॥ अंग निरखि अनंग लज्जित सकै नहिं ठहराइ। एककी कहा चलै शतशत कोटि रहतलजाइ॥ इते पर हस्तकनि गति छबि नृत्य भेद अपार । उडत अंचल प्रगटि कुच दोउ कनकघट रससार ॥ दरकि कंचुकि तरकि माला रही धरणी जाइ । सूर प्रभु करि निरखि करुणा तुरत लई उचाइ ॥७७॥ राग जैतश्री॥ प्रेमसहित माला कर लीन्ही । प्यारी हृदय रहत यह जानी भुवपर नहीं पतीन्ही ॥ पीतवसन ले श्रमजल पोंछत पुनिलै कंठ लगाइ । चरणन कर परसतहैं अपने कहत अतिहि श्रम पाइ ॥ कुच श्रम देखि पवन मुखहीके फूंकि झुरावत अंग। सूरदास प्रभु भौंह निहारत चलत त्रियाके रंग ॥ ॥ ७८॥ राग भैरव॥ हाहाहो पिय नृत्य करो। जैसे करि मैं तुमहि रिझाई त्यों मेरो मन तुमहु हरो॥ तुम जैसे श्रम वायु करतहो तैसे मैहुँ डुलावोंगी। मैं श्रम देखि तुम्हारे अंगकोभुजभरि कंठलगा-

वोंगी ॥ मैं हारी त्योंही तुम हारो चरण चापि श्रम मेटोंगी । सूर श्याम ज्यों उछँगि लई मोहिं यों मैंहूं हँसि भेटोंगी ॥ ७९॥ राग रामकली ॥ नृत्यत श्याम श्यामा हेत । मुकुट लटकनि भ्रुकुटि मटकनि नारि मन सुखदेत ॥ कबहुँ चलत सुधंग गतिसों कबहुँ उघटत बैन । लोलकुंडल गंड मंडल चपल नैननि सैन ॥ श्यामकी छबि देखि नागरि रही इकटक जोहि । सूरप्रभु उर लाइ-लीन्हों प्रेमगुण करि पोहि ॥ ८० ॥ रागमलारकमोद ॥ अरुझि कुंडललट बेसरिसों पीतपट वनमाल बीच आनि उरझेहैं दोउ जन । प्राणनसों प्राण नैन नैननसों अटकि रहे चटकीली छबि देखि लपटात श्याम घन ॥ होड होडी नृत्य करैं रीझि रीझि अंक भरैं ताता थेई थेई उघटतहैं हरषि मन । सूरदास प्रभु प्यारी मंडली युवति भोरी नारिको अंचल लैलै पोंछतहैं श्रमकन ॥ ८१ ॥ ॥ राग अडानो ॥ मोहनलाल संग ललनायों सोहैं ज्यों तरुतमालकेढिग सुभगसुमन जरदको । वदन कांति अनूप भांति नहिं सँभारति नीलांबर गगन मैं नवघन बिच प्रगट्यो शशि मनो शरदको ॥ मुक्तालड तारागन प्रतिबिंबित बेसरिको चूने मिलि रंग जैसे होत है हरदको । सूरदास प्रभु मोहन गोहनकी छबि बाढी मेटति दुख निरखि नैनमैनकेदरदको ॥ ८२ ॥ राग पूर्वी ॥ नँदनंदन सुघराई मोहन बंशी बजाई । सरिगमा पधनिसा संसत सुरनि गाई । अतिअनगीत संगीत सुघर और तान मिलाइ । सुर ध्याय ताल ध्याय नृत्य ध्याय निपुणराय मृदंग बजाइ ॥ सूर प्रभु नवल बाल सकल कलागुण प्रवीण अरस परस रीझि रिझाइ ॥ ८३ ॥ राग विहागरो ॥ पियके संग खेलत अधिक श्रम भयो आउ री ह्यांको बयारि । अपनो अंचल लै सुखउरी रुचिर वदन श्रमकनके वारि ॥ नृत्यत उलटि गए अँग भूषन विथुरी अलक बाँधौं सँवारि । सूर रची रचना वृंदावन व्रजयुतिन सुखको वनवारि ॥ ८४ ॥ राग केदारो ॥ प्यारी देखि विह्वल गात । नंदनंदन देखि रीझि अंक भरि लपटात ॥ कबहुँ लेहि उछंग बाला कहि परस्पर बात । प्रेम रस करि भरे दोऊ नैन मिलि मुसुकात ॥ रास रस कामना पूरन रैनि नहीं बिहात । सूर प्रभु सँग व्रजतरुणि मिलि करत सुखन सिहात ॥ ८५ ॥ राग कल्याण ॥ रच्योरासरंग श्यामसबही सुख दीन्हों । मुरली सुर करि प्रकाश खग मृग सुनि रस उदास युवतिन तजि गेहवास बनहि गवन कीन्हों । मोहे सुरअसुर नाग मुनिजन गन भए जाग शिव शारद नारदादि चकृत भए ज्ञानी । अमरगन अमरनारि आईं लोकनि विसारि ओकलोकत्यागिकहति धन्य धन्य बानी ॥ थकित भयो गति समीर चंद्रमा भयो अधीर तारागन लज्जितभए मारग नहिं पावैं । उलटियमुन बहति धार बिपरीत सबहीबिचार सूरज प्रभु संगनारिकौतुक उपजावैं ॥ ८३ ॥ राग टोडी ॥ नंद-कुमार रासरस कीनों । व्रजतरुनिनि मिलिकै सुखदीनों ॥ अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायो । कियो श्याम सबहिन मन भायो ॥ बिच गोपी बिच मिले गोपाल । मणिकंचन सोहति शुभमाल ॥ राधा मोहन मध्य बिराजैं । त्रिभुवनकीशोभा येभ्राजैं ॥ रास रंग रस राख्यो भारी । हाव भाव नाना नागरि भारी ॥ रूप गुणनि करि परम उजागरि । नृत्यत अंग थकित भई नागरि ॥ उमँगि श्याम श्यामा उर लाई बारंबार कह्यो श्रमपाई ॥ कंठ कंठ भुजदोऊ जोरे । घन दामिनिछूटतिनहिंछोरे ॥ सूर श्याम युवतिन सुखदाई । युवतिनकेमन गर्व बढाई ॥ ८७ ॥ राग सूही ॥ नव नागरिअतिगर्व-बढायो । मो समान त्रिय और नहीं कोउ गिरिधर मैंही वशकरि पायो ॥ जोइजोइकहति करत सोइ सोइ पिय मेरे हित यह रास उपायो । सुन्दर चतुर और नहिं मोसी देह धरेको भाव जना-यो ॥ कबहुँक बैठि जाति हरि कर धरि कबहुँक कहति मैं अति श्रम पायो । सूर श्याम गहि

कंठरहीत्रियकंध चढौंयहवचनसुनायो॥८८॥राग बिलावल॥कहै भामिनी कंतसोंमोहिं कंधचढावहु। नृत्यकरत अतिश्रम भयो ता श्रमहि मिटावहु॥धरणी धरत बनैं नहीं पग अतिहि पिराने। त्रिया-वचन सुनि गर्वके पिय मन मुसुकाने॥ मैं अविगत अज अकल हौं यह मर्म न पायो। भाव-वश्य सबपै रहौं निगमनि यह गायो॥ एक देह द्वै प्रान हैं दुबिधा नहिं यामें। गर्व कियो नरदेह-ते मैं रहौं न तामें॥ सूरज प्रभु अंतर भए संगते तजि नारी। जहांतहां ठाढी रहीं सब घोष-कुमारी॥ ८९ ॥ अध्याय ॥३०॥ अथ श्रीकृष्णअंतर्धानलीला॥ राग रामकली॥ गर्व भयो ब्रजनारिको तबहीं हरि जाना।राधाप्यारी संग लिए भये अंतर्धाना॥गोपिन हरि देख्यो नहीं तब गईं अकु-लाई। चकित होइ पूछनलगीं कहां गए कन्हाई॥ कोउ मर्म जानै नहीं व्याकुल सब बाला। सूर श्याम ढूँढत फिरैं जिततित ब्रजबाला॥९०॥ राग बिहागरो॥ तब हरि भए अंतर्धान॥ जब कियो मन गर्व प्यारी कौन मोसी आन॥ अति थकित भई चलत मोहन चलि न मोपै जाइ। कंठभुज गहिरही यह कहि लेहु जबहि चढाइ॥गए संग बिसारि रिसमें बिरस कीन्हों बाल। सूर प्रभु दुरि चारित देखत तुरत भई बेहाल॥९१॥ राग टोडी॥ श्याम गए युवतीसँग त्यागि। चकित भई तरुणिन सँग जागि॥ प्यारी संग लगाइ बिहारी। कुंजलतातर कतहू डारी॥ संग नहीं तहँ गिरिवर धारी। दशहुदिशा तन दृष्टि पसारी॥ परी मुरुछि धरनी सुकुमारी। काम बैर लीन्हों शर मारी॥त्राहित्राहि कहिकहि बनवारी। भइ व्याकुल तनुदशा बिसारी॥ नैनसलिल भीजीं सब सारी। सूर संग तजि गए मुरारी॥९२॥ अध्याय ॥३१॥ तथा। ३२॥ गोपीविरह ॥ राग बिहागरो॥ व्याकुल भई घोषकुमारि। श्याम तजि सँगते कहां गए यह कहति ब्रजनारि॥दशौदिश नभ द्रुम-न देखति चकित भई बेहाल। राधिका नहिं तहाँ देखी कह्यो वाके ख्याल॥ कछुक दुख कछु हरष कीन्हों कुंज लेगई श्याम। सूर प्रभु संगमहीं देखो करे ऐसे काम॥९३॥राग धनाश्री॥ बिकल ब्रजनाथवियोगन नारि। हाहा नाथ अनाथ करौ जिन टेरति बाँह पसारि॥ हरिजूके लाड गर्वजो तनुसखी सकी न वचनसँभारि। जनिअतहैअपराधहमारो नहिंकछु दोष मुरारि॥ढूँढतिबाट घाट वन घन तन मुरछि नैन जलधारि। सूरदास अभिमान देहको बैठी सरबसहारि॥९४॥ राग नट॥ बायें कर द्रुम टेके ठाढी। बिछुरे मदनगोपाल रसिक मोहिं बिरह व्यथा तनु बाढी॥ लोचन सजल वचन नहिं आवै श्वास लेति अति गाढी। नंदलाल ऐसी हमसों करी जलते मीन धरिकाढी॥ तब कित लाड लडाइ लडइते वेनी कुसुम गुहि गाढी। सूर श्याम प्रभु तुमरे दरशबिनु अब न चलत दृग आढी॥ ९५॥ राग सारंग॥अकेली भूलि परी वनमाँहिं। कोऊ बायु बही कतहूंकी छूटिगई पियबाँहिं॥जहँजहँ जाउँ तहां डर लागत डगर न पावत नाहिं। सूरदास प्रभु तुमरे दरशबिनु वेइ क-दम वै छांहिं॥९६॥राग बिहागरो॥वन कुंजन चलीं ब्रजनारि। सदा राधा करति दुविधा देतिरसकी गारि॥ संगही लै गई हरिको सुख करत वनधाम॥ कहां जैहैं ढूँढि लैहैं महारसकी वाम॥ चरणचिह्ननि चलीं देखति राधिकापगनाहिं। सूर प्रभुपगपरसि गोपी हरषिमन मुसुकाहिं॥९७॥ राग कान्हरो॥ हँसिहँसि युवती कहति परस्पर प्यारीको उरलाइ गए री। श्याम कामतनु आतुरताई ऐसे वामा वश्य भए री॥पुनि देखत राधिका चिह्न पग पियपग चिह्न न पावैं।की पियको प्यारी उर लीन्हों यह कहि भ्रम उपजावैं॥ वै गिरिधर उरधरि क्यों लेहीं वै गिरिधर उर लीन्हों।सूरभई आतुर ब्रजनारी पियप्यारीपग चीन्हों॥९८॥ राग बिलावल॥ जो देखेद्रुमकेतरेमुरछी सुकुमारी। चकितभई सब सुंदरी यहतौ राधानारी॥ याहीको खोजति सबै यह रही कहांरी। धाइपरींसब

सुंदरी जो जहांतहां री ॥ तनकी तनकहु सुधि नहीं व्याकुल भई बाला ।यहतौ अति बेहाल है कहां गए गोपाला॥बारबार बूझति सबै नहिं बोलति बानी । सूर श्याम काहे तजी कहि सब पछितानी॥९९॥राग सारंग॥राधे कतनिकुंज ठाढीरोवति।इंदुज्योतिमुखारबिंदकीचकित चहूँदिशि जोवति॥द्रुमशाखा अवलंब बेलि गहि नखसों भूमि खनोवति। मुकुलित कच तन घनकि ओट है अँसुवनि चीर निचोवति॥सूरदास प्रभु तजी गर्वतेभये प्रेम गतिगोवति॥१८००॥राग भैरव॥ क्यों राधा नहिं बोलतिहै ।काहे धरणि परी व्याकुल है काहे नैन न खोलतिहै ॥ कनकबेलिसी क्यों मुरझानी क्यों बनमांझ अकेली है ।कहां गए मनमोहन तजिकै काहे बिरहदहेलीहै॥श्याम नाम श्रवणनि ध्वनि सुनिकै सखियन कंठ लगावतिहै । सूर श्याम आए यह कहिकहि ऐसे मन हरषावतिहै ॥१॥राग बिहागरो॥कहां रहे अब लौं तुम श्याम। नैन उघारि निहारिरही तहां जो देखै ब्रजबाम॥लागी करन बिलाप सबनसों श्याम गए मोहिं त्यागि । तुमको नहीं मिले नँदनंदन बूझतिहै तब जागि ॥ निरखि बदन वृषभानु कुँवरिको मनो सुधा बिन चंद । राधा बिरह देखि बिरहानी यह गति बिन नँदनंद॥या बनमें कैसे तुम आई श्याम संग हैं नाहीं। कछु जानति कहां गए कन्हाई तहँा तोहिं लैजाहीं ॥मैं हठ कियो बृथा री माई जिय उपज्यो अभिमान। सूर श्याम ऊपर मोहिं आनी ह्वैगए अंतर्धान॥२॥ राग बिहागरो॥ मैं अपने मन गर्व बढायो । इहै कह्यो पिय कंध चढौंगी तब मैं भेद न पायो॥यह बाणी सुनि हँसे कंठभरि भुजनि उछंगि लई । तब मैं कह्यो कौन है मोसी अंतर जानिलई ॥कहँा गए गिरिधर मोकोतजि ह्यां कैसे मैं आई । सूर श्याम अंतर भए मोते अपनी चूक सुनाई॥३॥राग बिहागरो॥ रुदन करति वृषभानुकुमारी । बारबार सखियन उर लावति कहां गए गिरिधारी ॥ कबहूं गिरति धरणि पर व्याकुल देखि दशा ब्रजनारी ॥ भरि अँकवारि धरति मुखपोंछति देति नैन जल ढारी ॥ त्रिया पुरुषसों भाव करतिहै जाने निठुर मुरारी। सूरश्याम कुल धर्म आपनो लये रहत बनवारी॥४॥राग गौरी॥नँदनंदनउनको हमजानति। ग्वालन संग रहत जे माई यह कहिकहि गुण गानति ॥ बनबन धेनु चरावत वासर त्रिया बधत डर नाहीं ॥ देखि दशा वृषभानुसुताकी ब्रजतरुणी पछिताहीं ॥ कहा भयो त्रिय जो हठ कीन्हों यह न,बूझिए श्यामहिं।सूरदास प्रभु मिलहुकृपाकरिदूरिकरहु मन तामहिं॥५॥राग कल्याण॥राधिका-सों कह्यो धीर मनधरिरी।मिलैंगे श्याम व्याकुल दशा जिनिकरै हरषजिय करौ दुखदूरिकरि री ॥ आपु जहँतहँ गईं बिरह सब पगिरईं कुँवरिसों कहि गईं श्यामल्यावैं।फिरति बनबन बिकल सहस सोरह सकल ब्रह्मपूरन अकल नहीं पावैं ॥ कहँा गए यह कहति सबै मग जोवहीं कामतनु दहति ब्रजनारिभारी । सूर प्रभु श्यामदुरि चरितदेखहिं सकल गर्व अंतरहृदय हेत नारी॥६॥राग बिलावल॥ श्याम सबनिको देखहीं वै देखति नाहीं । जहांतहां व्याकुल फिरैं तनु धीरज नाहीं ॥ कोउ वंशीवटको चलीं कोउ बन घन जाहीं । देखि भूमि वह रासकी जहँतहँ पगछाहीं॥ सदा हठीली लाडिली कहिकहि पछिताहीं । नैन सजल जल ढारिकै व्याकुल मनमाहीं॥ एक एक ह्वै ढूँढहीं तरुनी बिकलाहीं । सूरज प्रभुकहुँ नहिं मिले ढूँढति द्रुमपाहीं॥७॥ राग रामकली ॥कहि धौंरीवन-वेलि कहूं तुम देखेहैं नँदनंदन । बूझहुँ धौं मालती कहूं तैं पाएहैं तनुचंदन ॥ कहि धौंकुंदकदम बाकुल वट चंपक लता तमाल । कहि धौं कमल कहां कमलापति सुंदर नयन विशाल ॥ श्याम श्याम कहि कहति फिरति यह ध्वनि वृंदावन छायो री ॥ गर्व जानि पिय अंतर ह्वै रहे सो मैं वृथा बढायो री॥ अब बिन देखे कल न परत छिन श्यामसुंदर गुण गायो री । मृग मृगनी द्रुम

बन सारस खग काहू नहीं बतायो री॥मुरली अधरसुधारस लै तरु रहेयमुनके तीर।कहितुलसीतुम सब जानतिहौ कहँ घनश्यामशरीर॥ कहि धौंमृगी मयाकरि हमसोंकहि धौंमधुप मराल। सूरदास प्रभुके तुम संगी हौ कहाँ परमदयाल ॥८॥ कहूं न देख्यो री मधुबनमें माधौ। कहाँ धौं गमन कीन्हों कहाँ धौं बिलमि रहे नैन मरत दरशनकी साधौ ॥ जबते बिछुरे श्याम तबते रह्यो न जाइ सुनौ सखी मेरोइ अपराधौ। सूरदास प्रभु बिनु कैसे जीवहिं माई घटत घटत घटि रह्यो प्राण आधो॥९॥ राग आसावरी॥ कहूं न पाऊंरी सब ढूँढ़ि वनघन श्यामसुंदरपर वारौं तन मन। नैनन चटपटी मेरे तबते लागी रहति कहां प्राणप्यारो निर्धनको धन॥ चंपक जाई गुलाब बकुल फूले तरुप्रति बूझति कहुँ देखे नँदनंदन। सूरदास प्रभु रासरसिक बिनु रास-रसिकिनी बिरहबिकल करि भई हैं मगन॥ १०॥राग काफी॥ कोऊ कहुँ देखे री नंदलाल।साँवरो सलोना ढोंटा नैन विशाल॥ मोर मुकुट बनमाल रसाल। पीतांबर सोहै मोहै मनगोपाल॥निशि बन गईं जहां सबै ब्रजबाल। अंतर्धान भए रचि ख्याल॥द्रुमद्रुम ढूँढत भईं बेहाल। सूर श्याम बिनु बिरह जंजाल॥११॥राग सारंग॥तुम कहुँ देखे श्याम बिसासी।नैक मुरलिका बजाइ बाँसकी लैगए प्राण निकासी॥कबहुँक आगे कबहुँकपाछेपगपगभरतउसासी। सूरश्यामके दरशनकारण निकसीचंद्रकलासी॥१२॥बागेसरी ॥राग कान्हरो॥मोहनमोहनकहिकहिटेरैंकान्हहवौयहिबनमेंरे।कहियत हौ तुम अंतर्यामी पूरण कामी सबकेरे॥ ढूँढतिहैं द्रुम वेली बाला भई बेहाल करति अवसेरे। सूरदासप्रभु रासविहारी श्रीवनवारी वृथा करत काहे झेरे॥ १३ ॥ राग अडानो॥कहो कान्ह ए बातैं हैं तिहारी बनवारी सुखहीमें भए न्यारे। इक सँग एक समीप रहतहैं तिन तजि कहां सिधारे॥ अब करि कृपा मिलौ करुणामय कहियतहौ सुखकारे। सूर श्याम अपराध क्षमहु अब समझी चूक हमारे॥१४॥राग परागी॥केहि मारगमैंजाउँ सखीरीमारग मुहिं बिसर्‌यो। नाजानौं कित ह्वै गए मोहिं जात न जानि पर्‌यो॥ अपनो पिय ढूंढति फिरौं री मोहिं मिलबेको चाव। कांटो लाग्यो प्रेमको पिय यह पायो दाव॥ बन डोंगर ढूंढति फिरी घरमारग तजि गाउँ। बूझों द्रुम प्रति रूख राय कोउ कहै न पियको नाउँ॥ चकित भई चितवत फिरी व्याकुल अतिहि अनाथ। अबकैजो कैसेहुँमिलौ तौ पलक न तजिहौं साथ॥हृदयमाहँ पियघर करौं रीनैननबैठक देउँ। सूरदास प्रभुसँग मिलौंबहुरि रास रसलेउँ॥१५॥राग श्रीराग॥कान्ह प्यारो कहुँ पायो री।श्याम श्याम कहि कहति फिरति यह ध्वनि वृन्दावन छायो री॥ गर्व जानि पिय अंतरह्वै रहे सो मैंवृथा बढ़ायो री। अब बिनुदेखे कल न परत छिन श्यामसुंदर गुण गायो री॥ मृग मृगिनी द्रुम वनसारस खग काहू नहीं बतायो री। सूरदासप्रभु मिलहुकृपाकरियुवतिन टेरि सुनायो री॥१६॥रागबिहागरो॥ हो कान्ह मैं तुम्हें चाहौंतुम काहे ना आवो।तुम धनतुमतन तुममन भावो॥ कियो चाहों अरसपरस करौं नहिं मान।सुन्यो चाहौं श्रवण मधुर मुरलीकी तान ॥ कुंज कुंज जपति फिरी तेरे गुणनकी माल। सूरदासप्रभु वेगि मिलौ मोहिं मोहन नँदलाल॥ १७॥ राग काफी ॥ सखी मोहिं मोहन लाल मिलावै। ज्यों चकोर चंदाको इकटक भृंगी ध्यान लगावै॥ बिनु देखे मोहिं कल न परै री यह कहि सबन सुनावै। बिन कारण मैं मान कियो री अपनेहिमन दुखपावै॥ हाहाकरि करि पाँइन परि परि हरिहरि टेर लगावै।सूर श्याम बिनु कोटि करौ जो और नहीं जिय आवै॥ ॥ १८॥ राग आसावरी॥हौंतौ ढूंढिफिरिआई री माईरी सिगरोवृन्दावनकहुँनहींपाएरीनँदनंदन।अन्तर्हित रहे जाइ कौनेधौंराखे छपाइ मोको न कछु सुहाइ कहांजाइ रहे कामकंदन॥ मोहीतेपरी रीचूक

अंतर भए हैं जाते तुमसों कहति बातैं मैंहीं कियो द्वंदन । सूरदास प्रभु बिनु भई हौं
बिकल आली कहां रहे बनमाली सुर नर मुनि जन बंदन ॥ १९ ॥ राग बिलावल ॥ मिलहु
श्याम मोहिं चूक परी । तेहि अंतर तनुकी सुधि नाहीं रसना रट लागी न टरी ॥
धरणि परी व्याकुल भई बोलति लोचन धारा अंसु झरी । कबहूं मगन कबहुँ सुधि आवति शरन
शरन कहि बिरह जरी॥ कृष्णकृष्ण करि टेरि उठतिहैं युगसम बीतत पलक घरी । सूर निर-
खि व्रजनारिदशा यह चकित भई जहँतहां खरी ॥ २० ॥ देखि दशा सुकुमारिकी युवती सब
धाई । तरु तमाल बूझति फिरैं कहिकहि मुरझाई ॥ नँदनंदन देखे कहूं मुरली कर धारी । कुंडल
मुकुट बिराजई तनु कुंडल भारी। लोचन चारु विशाल हैं नासा अति लोनी ।अरुण अधर दशना-
वली छबि बरणै कोनी ॥ बिंब पँवारे लाजहीं दामिनिद्युति थोरी । ऐसे हरि हमको कहौ कहुँ
देखेहौ री ॥ अंगअंग छबि कहा कहैं देखे बनि आवै । सूर सुगूँगे खाइ ऊख क्यों स्वाद बतावै ॥२१॥
॥ राग बिलावल ॥ अति व्याकुल भई गोपिका ढूंढति गिरिधारी। बूझतिहैं बन बेलिसों देखेबनवारी॥
जाईजुही सेवती करना कनिआरी । बेलि चमेली मालती बूझति द्रुमडारी॥ खुझा मरुआ कुंद-
सों कहैं गोद पसारी । बकुल बहुलि बट कदमपै ठाढी व्रजनारी ॥ बार २ हाहा करैं कहुँ हौ
गिरिधारी । सूर श्यामको नाम लै लोचन जल ढारी ॥ २२ ॥ कहूं न पावैं श्यामको
बूझत बन बेली । सबै भई व्याकुल फिरैं तन मदन दहेली ॥ मृगनारीसों बूझहीं बूझैंसुकुमारी।
कमल सरोबर बूझहीं बिरहा तनु भारी॥कनक बेलिसी सुंदरी द्रुमके तर डारी । मानों दामिनि
धरणि परी की सुधा पनारी ॥ इत उतते फिरि आवहीं जहँ राधा प्यारी । सूर श्याम अजहूं नहीं
करि मिलत कृपा री ॥२३ ॥ राग बिहागरो॥करतिहैं हरिचरित्र व्रजनारि । देखि अतिही बिकल
राधा इहै बुद्धि विचारि ॥ एक भई गोपालको वपु ऐक भई बनवारि । एक भई गिरिधरनसमरथ
एक भई दैत्यारि ॥ एक भई वै धेनु बछरा एक भई नँदलाल। एक भई जमला उधारन इक त्रिभंग
रसाल॥ एक भई छबि राशि मोहन कहत राधा नारि । एक कहति उठि मिलहु भुज भरि सूर
प्रभु री प्यारि॥२४॥रागजैतश्री॥ सुनत ध्वनि श्रवण उठीं अकुलाइ।जो देखैं नँदनंदनहींवै सखियन
भेष बनाइ ॥ कहा कपट करि मोहिं देखावति कहां श्याम सुखदाइ ।कृष्ण कृष्ण शरणागत कहि
कै बहुरि गिरी भहराइ ॥ पुनि दौरीं जहँ तहँ व्रजबाला बन द्रुम शोर लगाइ । सूरदास प्रभु अंत-
र्यामी विरहिनि लेहु जिवाइ ॥२५॥ राग कान्हरो॥कृपासिंधु हरि क्षमा करौ हो ।अनजाने मन गर्व
बढ़ायो सो अपने जिनि हृदय धरौ हो ॥ सोरह सहस पीर तन एकै राधा जिव सब देह ।
ऐसी दशा देखि करुणामै प्रगट्यो हृदय सनेह ॥ गर्व हत्यो तनु बिरह प्रकाश्यो प्यारी
व्याकुल जानि । सुनहु सूर अब दरशन दीजै चूक लई इनि मानि ॥ राग केदारो ॥ अहो तुम
आनि मिलौ नँदलाल । दुर्बल मलिन फिरत हम बन बन तुम बिनु मदनगोपाल ॥ द्रुम
बेली पूंछति सब उझकति देखति ताल तमाल। खेलत रास रंग भरि छांड़ी ले जु गये एकबाल ॥
सूरदास सब गोपी पछिली क्रीड़ा करति रसाल । गोपी वृन्दमध्य जगजीवन प्रगट भए तेहिकाल ॥
॥ २७ ॥ हरि बिनु लागत है बन सूनो।ढूँढति फिरति सकल व्रजयुवती दहत काम दुखदूनो॥तजि
सुत पति ... श्रवणनिधाईं मुरलिनादमृदु कीनों । व्यापत मकर मीन अति आतुर मनहुँ मीन
जल हीनो ॥ चितवति चकित दिशन दिश हेरति मनमोहन हरलीनो । द्रुम बेली पूछैं सब सुंदरि
नवल जान कहुँ चीनो ॥ कदली वोट निचोरत अंचल अधर सुधारस पीनो । सूर श्यामप्रियप्रेम

उमँगि रस हँसि आलिंगन दीन्हों ॥ २८ ॥राग बिहागरो॥राधेभूलिरही अनुराग । तरुतरु रुदनकरत मुरझानी ढूँढि फिरी बनबाग॥कुँवरि ग्रसित श्रीखंड अहित भ्रम चरण शिलीमुख लाग । बाणी मधुर जानि पिक बोलत कदम करारत काग ॥ कर पल्लव किसलय कुसुमाकर जानि ग्रसित भए कीर। राका चंद्र चकोर जानकै पिवत नैनको नीर॥व्याकुल दशा देख जगजीवन प्रगट भए तेहि काल। सूर श्याम हित प्रेम अंकुर उर लाइ लई भुज बाल ॥२९॥राग कल्याण ॥न्याय तजी श्यामा गोपाल । थोरी कृपा बहुत करि मानी पांवर बुधि ब्रजबाल ॥ मैं कछु कपट सबनसों कीन्हों अपयशते न डेरानी । हम एकही संग एकहि मत सबकोउ नहिं बिलगानी ॥ हम चातक घन नँदनंदन बरषन लागे हित कीन्हों ।तु बडी प्रबल पवनसम सजनी प्रेमबीच दुख दीनो ॥ जानि दीन दुखी सब सुखके निधि मोहन बेनु बजायो । सूर श्याम तब दरश परश करि मिलि संताप नशायो ॥ ॥ ३० ॥राग कान्हरो ॥ प्रगट भऐ नँदनंदन आइ।प्यारी निरखि विरहअतिव्याकुलकरतेलईउठाइ ॥ उभय भुजा भरि अंकम दीन्हों राखी कंठ लगाइ ।प्राणहुते प्यारी तुम मेरे यहकहिदुखबिसराइ॥ हँसत भए अंतर हम तुमसों सहज खेल उपजाइ ।धरणी मुरझि परी तुम काहे कहांगई चतुराइ ॥ राधा सकुचि रही मन जान्यो कह्यो न कछू सुनाइ । सूरदास प्रभु मिलि सुख दीन्हों दुख डारचो बिसराइ ॥ ३१ ॥राग कान्हरो नँदनंदन उर लाइलई ।नागरिप्रेम प्रगट तनु व्याकुल तबकरुणाहरि-हृदय भई । देखि नारि तरुतर मुरझानी देहदशा सब भूलिगई ।प्रिया जानि अंकम भरि लीन्हीं कहिकहि ऐसी काम हई॥ वदन बिलोकि कंठ उठिलागी कनकवेलि आनंद जई।सूर श्याम फल कृपादृष्टि भए अतिहि भई आनंद मई॥अध्याय ॥ ३३ ॥ श्रीकृष्णमिले गोपिनको फेर रास लीला व जलक्रीडा॥ राग सूही ॥ अंतरते हरि प्रगट भए । रहत प्रेमके वश्य कन्हाई युवतिनको मिलि हर्ष दए ॥वैसहि सुख सबको फिरि दीन्हों उहै भाव सब मानिलियो । वह जानति हरिसंग तवहिते उहैबुद्धिसब उहै हियो॥उहै रासमंडल रस जानति बिचगोपी बिच श्याम धनी।सुर श्याम श्यामा मधिनायक उहै परस्पर प्रीति बनी॥३२॥ राग सारंग ॥बहुरि श्याम सुखरास कियो । भुजभुजजोरि जुरीं ब्रजबाला वैसेही रस उमँगि हियो ॥ वैसेहि मुरलीनाद प्रकाश्यो वैसहि सुर नर वश्य भए ।वैसे उडुगण सहित निशापति वैसेहि मारग भूलिगए॥वैसेहिदशा भई यमुनाकी वैसेहि गतिजतिपवनथक्यो। वैसेहि नृत्य तरंग बढायो वैसेहि बहुरोकामजक्यो ॥ उहै निशा वैसेहिमनयुवतीवैसेहीहरिसबनि भजे।सूरश्यामवैसेइमनमोहनवैसेहिप्यारी निरखिलजे॥३३॥राग बिहागरो॥ श्यामछबिनिरखतनाग-रिनारि।प्यारीछबिनिरखतमनमोहनसकत न नैनपसारि॥पियसकुचतनहिं दृष्टि मिलावत सन्मुख होत लजात । श्रीराधिका निडरि अवलोकत अतिहि हृदय हरषात ॥ अरसपरस मोहनिमोहन मिलि सँग गोपी गोपाल । सूरदास प्रभु सब गुण लायक दुशमनके उर शाल ॥ ३४ ॥रचीरस रास श्याम सुजान । प्रथम मुरलीनाद करि हरि हरचो सबको ज्ञान ॥ सबनिउलटी रीति कीन्हों देव सुर नर आदि।ब्रजबधू मनकाम पूरण कियो पुरुष अनादि ॥ सहज सुख निशि ग्वाल सोवत सो रची षटमास।हेतु युवती सुख बढावन कियो पूरण आस॥ मेटि अंतर्धानकोदुख उहैराख्यो भाउ । सूर प्रभुमहिमाअगोचर निगम अंत न पाउ ॥ ३५ ॥ राग नट॥मोहन रच्यो अद्भुतरास।संग मिलि वृषभानुतनया गोपिका चहुँ पास ॥ एकही सुर सकल मोहे मुरलि सुधा प्रकाश । जलहु थलके जीव थकिरहे मुनिन मनहि उदास ॥ थकित भए समीर सुनिकै यमुन उलटी धार । सूर प्रभु ब्रजवाम मिलि मन निशा करत विहार॥३६॥बिहरत रासरंग गोपाल।नवलश्यामहि संग

शोभित नवल सब ब्रजबाल ॥ शरद निशि अति नवल उज्ज्वल नवलता वनधाम । परम निर्मल पुलिन यमुना कल्पतरु विश्राम ॥ कोश द्वादश रासपरमिति रच्यो नंदकुमार । सूर प्रभु सुख दियो निशि रमि कामकौतुक हार ॥ ३७ ॥ राग मलार ॥ रासरमश्रमित भई ब्रजबाल। निशिसुखदै यमुना तट लैगए भोर भयो तेहि काल॥ मनकामना भए परिपूरण रहीन एकौ साध। षोडससहस नारिसँग मोहन कीन्हों सुखआगाध॥ यमुनाजल बिहरतनँदनंदन संगमिली सुकुमारि। सूर धन्यधरनीवृंदावन रवितनयासुखकारि ॥ ३८ ॥ राग गुंडमलार ॥ संग ब्रजनारिहरि रासकीन्हों। सबनकी आश पूरनकरी श्यामले त्रियनिपियहेतसुखमानिलीन्हों ॥ मेटि कुलकानिमर्याद बिधिवेदकीत्यागि गृहनेह सुनि बैनधाई । फवी जैजैकरी मनहि सब जेधरीशंककाहुनकरी आपमाई ॥ ज्यों महामत्त गजयूथ करनीलिए कूल सरकोरि डर कही मानैं । सूरप्रभु नंदसुत निदरि निशिरस करयो नाग नरलोक सुर सबै जानैं ॥ ३९ ॥ अथ जलक्रीडा ॥ राग गुंडमलार ॥ रैनि रस रास सुखकरत बीती । भोरभए गए पावन यमुनके सलिल न्हात सुख करत अति बढी प्रीती ॥ एक इक मिलति हँसि एक हरि संग रसि एक जल मध्य इक तीर ठाढी । एकइक डरति इक एक भरि कै चलति एकसुख लरति अति नेह बाढी ॥ काहु नहिं डरति जल थलहु क्रीडा करति हरति मन निडरि ज्यों कंत नारी। सूर प्रभु श्याम श्यामा संग गोपिका मिटी तनुसाध भई मगन भारी ॥ ४० ॥ राग गौरी ॥ यमुनजल क्रीडतहैं नँदनंदन । गोपीवृंद मनोहर चहुँ दिश मध्य अरिष्ट निकंदन ॥ पकरे पाणिपरस्पर छिरकत शिथिल सलिल भुजचंदन । मानों युवति पूजि अहिपतिको लग्यो अंक दै वंदन ॥ कुच भरि कुटिल सुदेश अंबुकनि चुवति अग्रगति मंदन । मानहु भरि गंडूष कमलते डारत अलि आनंदन ॥ भुज भरि अंक अगाध चलत लै ज्यों लुब्धक खग फंदन । सूरदास प्रभु सुयश बखानत नेति नेति श्रुति छंदन ॥ ४१ ॥ राग कान्हरो ॥ बिहरतहैं यमुनाजल श्याम । राजतहैंदोउ बांहांजोरी दंपति अरु ब्रजवाम ॥ कोउ ठाढी जल जानु जंघलों कोउ कटि हिरदै ग्रीव । यह सुख बरणि सकै ऐसो को सुंदरताकी सींव ॥ श्याम अंग चंदनकी आभा नागरि केसरि अंग। मलयज पंक कुमकुमा मिलिकै जल यमुना इक रंग॥ निशिश्रम मिटयो मिट्यो तनु आलस परसि यमुन भई पावन । सूर श्याम जल मध्य युवति गन जन जनके मन भावन ॥ ४२ ॥ जलक्रीडा सुख अति उपजायो । रास रंग मनते नहिं भूलत उहै भेद मन आयो ॥ युवती कर करजोरि मंडली श्याम नागरी बीच । चंदन अंग कुमकुमा छूटत जलमिलितट भई कीच ॥ जो सुखश्याम करत युवती सँग सो सुख तिहुँपुर नाहीं। सूर श्याम देखत नारिनकोरीझिरीझि लपटाहीं ॥ ४३ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ बिहरत नारि हँसत नँदनंदन । निर्मल देह छूटि तनु चंदन ॥ अति शोभा त्रिभुवन जन वंदन । पावत नहिं गावत श्रुति छंदन ॥ कंचन पीठ नारि अति शोभा । वे उनको वे उनको लोभा ॥ कबहुँ अंकभरि चलत अगाधहि ॥ अरस परस मेंटत मन साधहि ॥ कोउ भाजै कोउ पाछे धावै । युवतिनसों कहि ताहि मँगावै ॥ ताको गहि अथाह जल डारैं । मुख व्याकुलतारूप निहारैं ॥ कंठ लगाइ लेत पुनि ताही । देत अलिंगन रीझत जाही ॥ सूर श्याम ब्रज युवतिन भोगी। जाकोध्यावतशिव मुनियोगी ॥ ४४ ॥ राग टोडी ॥ ऐसे श्यामवश्य राधाके । नामलेतपावन आधाके ॥ प्यारी श्याम अंजली डारै । वा छबिको चितलाइ निहारै ॥ मनो जलद जलडारत ढारै । मन मनही तन मन धन वारै ॥ निरखि रूप नहिं धीर सम्हारै । सूर श्यामके अंकम धारै ॥ ४५ ॥ राग ललित ॥ राधे छिरकति छींट छबीली। कुच कुमकुम कंचुकि बंद टूटे लटकिरही लटगीली ॥ बंदन

शिर तांटक गंड पर रतन जटित मणिलीली । गति गयंद मृगराज सुकटिपर शोभित किंकिणि ढीली ॥मच्यो खेल यमुना जल अंतर प्रेम मुदित रस झीली । नंदसुवन भुज ग्रीव बिराजत भाग सुहाग भरीली ॥ वर्षत सुमन देवगण हर्षित दुंदुभि सरस बजीली।सूर श्याम श्यामा रस क्रीडत यमुन तरंग थकीली ॥४६॥राग रामकली॥श्यामाश्याम सुभग यमुना जल निर्भ्रम करत बिहार। पीत कमल इंदीवरपर मनो भोरहि भए निहार॥श्रीराधा अंबुज कर भरिभरि छिरकत बारंबार। कनकलता मकरंद झरत मनु हालत पवन सँचार ॥ अतसीकुसुम कलेवर बूँदें प्रतिबिंबित निरधार।ज्योति प्रकाश सुघनमें खोलत स्वाति सुवन आकार॥ धाइ धरे वृषभानु सुता हरि मोहे सकल शृंगार। विद्रुम जलद सूर मनों विधु मिलि स्रवत सुधाकी धार ॥ ४७ ॥ राग रामकली ॥ यमुनजल गिरिधर करत बिहार । इत उत गोपवधू मिलि छिरकत हस्तकमल सुखसार ॥काहूकी कंचुकी छूटी काहूके बिथुरे हैं बार ॥ काहु खुभी काहू नकबेसरि काहूके टूटेहैं हार ॥ सूरदास कहँलौं बरणौं मैं लीला अगम अपार॥४८॥ रीझे श्याम नागरि रूप। तैसियै लट बगरि ऊपर स्रवत नीर अनूप।स्रवत जल कुच परत धारा नहीं उपमा पार।मनों उगलत राहु अमृत कनक गिरिपर धार॥ उरज परसत श्याम सुंदर नागरी सरमाइ । सूर प्रभु तनकाम व्याकुल गए मननि जनाइ ॥ ४९ ॥ राग सारंग ॥देख री उमँग्यो सुख आज।जल बिहार बिनोद सुखरुचि रतनको है साज॥भीजे पट लपट्यो सुभग उर रही केसर जयन। अरस परस स्वभाव मानो जगे निशिके नयन ॥ कछुक कुंचित केश माई सरस शोभा भयो । सुभग राजत कामद्रुमको मनों अंकुर नयो ॥ युवति गण सब यूथ जितकित भरत अंचल नीर। सूर सुभग गोपाल तन व्रज सुखद श्याम शरीर ॥५०॥ ॥राग रामकली॥श्यामा श्याम अंकम भरी ।उरज उर परसाइ भुज भुज जोरि गाढे धरी॥तुरत मन सुख मानि लीन्हों नारि तेहि रँग ढरी । परस्पर दोउ करत क्रीडा राधिका नव हरी ॥ऐसहीसुख दियो मोहन सबै आनँद भरी । करति रंग हिलोर यमुना प्रेम आनँद झरी ॥ रास निशिश्रमदूरि कीन्हों धन्य धनि यह घरी । सूर प्रभु तट निकसि आए नारि सँग सब खरी ५१ ॥राग गूजरी॥ ठाढे श्याम यमुना तीर। धन्य पुलिन पवित्र पावन जहां गिरिधर धीर ॥ युवति बनि बनि भई ठाढी और पहिरे चीर। राधिका सुख श्याम दायक कनकबरन शरीर ॥ लालचोली नील डँडि- आ संग युवतिन भीर । सूर प्रभु छबि निरखि रीझे मगन भयो मन कीर ॥ ५२ ॥ राग नट ॥ ललकत श्याम मन ललचात । कहत हैं घर जाहु सुंदरि मुख न आवत बात ॥ सहसपटदशगो- पकन्या रैनि भोगी रास । एक छिन भईकोउनन्यारी सबनिपुरईआस ॥ बिहँसिसबघरघरपठाई व्रजगई व्रजबाल। सूर प्रभु नँदधाम पहुँचे लख्योकाहु न ख्याल॥५३॥ राग बिलावल व्रजवासीसब सोवत पाये । नंदसुवनमति ऐसीठानी घरलोगनउन जाइ जगाए॥उठे प्रात गाथा मुखभाषतआतुर रैनि बिहानी । ऐंडत अंगजम्हातवदनभरि कहतसबै यह बानी॥जो जैसे सो तैसे लागेअपनेअपने काज । सूर श्यामके चरित्र अगोचर राखी कुलकी लाज ॥ ५४ ॥ राग जैतश्री॥व्रजयुवती रस रास पगी । कियो श्याम सबको मनभायो निशि रतिरंग जगी ॥ पूरण ब्रह्म अकल अविनाशी सबनि संग सुख दीन्हों । जितनी नारि भेष भए तितने भेद न काहू चीन्हों ॥ वह सुख टरत न काहू मनते पतिहित साध पुराई। सूर श्याम दूलह सब दुलहिनि निशि भांवरि दै आई ॥ राग सोरठ॥ साध नहीं युवतिन मन राखी। मनबांछित सबन फल पायो वेद उपनिषद साखी ॥भुजभरिमिली कठिन कुच चापे अधर सुधारस चाखी। हाव भाव नैनन सैननदै वचनरचन मुख भाषी ॥शुक

भागवत प्रगट करि गायो कछू न दुबिधा राखी। सूरदास ब्रजनारि संग हरि बाँकी रही न कोऊ काखी ॥ ५६ ॥राग कान्हरो॥ धनि शुक मुनि भागवत बखान्यो । गुरुकी कृपा भई जब पूरण तब रसना कहि गान्यो॥धन्य श्याम वृंदाबनको सुख संत मयाते जान्यो। जो रस रास रंग हरि कीन्हें वेद नहीं ठहरान्यो ॥ सुर नर मुनि मोहित सब कीन्हें शिवहि समाधि भुलान्यो । सूरदास तहां नैन बसाए और न कहूँ पत्यान्यो॥५७॥राग धनाश्री॥ शरद सोहाई आई राति।दह दिशि फूलिरही बन जाति ॥ देखि श्याम मन अति सुख भयो ❀ शशिगो मंडित यमुना कूल । बरषत विटप सदा फल फूल॥त्रिविध पवन दुखदवनहै ❀ श्रीराधा रवन बजायो बैन ।सुनि ध्वनि गोपिन उपज्यो मैन॥जहां तहांते उठि चलीं ❀ चलत न काहुहि कियो जनाव। हरि प्यारीसों बाढ्योभाव॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १॥ घर डर बिसरयो बढ्यो उछाह । मन चीते हरि पायो नाह ॥ ब्रजनायक लायक सुने ❀ दूध पूतकी छांडी आश ।गोधन भरता करे निराश॥साँचे हित हरिसों कियो ❀ खान पान तनुकी न सँभार । हिलग छँडाई गृह व्यवहार ॥ सुधि बुधि मोहन हरि लई ❀ अंजन मंजन अँगन शृंगार। पट भूषण छूटे शिर बार ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ २ ॥ एक दुहावतते उठि चली । एक सिरावत मग महँ मिली ॥ उतसहकंठा हरिसों बढी ❀ उफनत दूध न धरयो उतारि । सीझी थूली चूल्हे दारि ॥ पुरुष तात ज्यों जेवतहुते ❀ पय प्यावत बालक धरि चली । पतिसेवा तजि करी न भली॥ धरयो रह्यो जेवन जिते ❀ तेल उबटना त्याग्यो दूरि। भागन पाई जीवन मूरि॥ रासरसिक गुण गाइहो॥३॥ अंजतही इक नैन बिसारयो। कटि कंचुकि लहँगा उर धारयो॥हारलपेटयो चरणनसों ❀ श्रवणन पहिरे उलटे तार॥तिरनी पर चौकी शृंगार ॥ चतुर चतुरता हरिलई ❀ जाको मन जहां अटके जाइ । ता वनिताको कछु न सोहाइ ॥कठिन प्रीतिको फंदहै ❀ श्यामहि सूचत मुरलीनाद । सुनि धुनि छूटे विषै सवाद ॥ रासरसिक गुण गाइहो ॥४ ॥ एक मात पित रोकी आनि। सही न हरि दरशनकी हानि॥ सबहीको अपमानकै ❀ जाको मन मोहन हरि लियो।ताकोकाहूकछुना कियो॥ ज्यों पतिसों त्रिय रतिकरै ❀ जैसे सरिता सिंधुहि भजे। कोटिक गिरि भेदतनहिंलजै॥ तैसी गति तिनकी भई ❀ इकजे घरते निकसी नहीं।हरि करुणा करि आये तहीं ॥रासरसिकगुण गाइहो ॥ ५ ॥निरस कबौं न करै रसरीति।रसिकहिलीलारसपरप्रीति॥यहमतशुकमुखजानिबो ❀ ब्रजवनिता पहुँची पियपास । चितवत चंचल भ्रुकुटिबिलास॥हँसिबूझी हरिमानदै ❀ कैसेआई मारग मांझ ! कुलकी नारि न निकसै सांझ ॥ कहा कहैं तुम योगहो ❀ ब्रजकीकुशलकहौबडभाग । क्यों तुम छाँड सबन सोहाग ॥ रासरसिक गुणगाइहो ॥ ६ ॥ अजहूं फिरिअपनेघरजाहु। परमेश्वर करि मानों नाहु॥बनमें निशि बसिए नहीं ❀ श्रीवृन्दावन तुम देख्यो आइ। सुखद कुमोदिनि प्रफुलित जाइ॥ यमुनाजलसीकरघनो ❀ घरमहँयुवती धर्महि फबै। ताबिनसुतपतिदुःखित सबै ॥ यह विधना रचना रची ❀ भरताकी सेवा सतसार । कपट तजै छूटै संसार ॥ रासरसिक गुणगाइहो ॥७॥ बिरध अभागी जो पति होई ।मूरखरोगी तजै न जोई ॥ पतित बिलक्षकछाँडिए ❀ तजि भरतारहि जारहि लीन। ऐसी नारि न होइ कुलीन ॥ यशविहीन नरकहि परै ❀ बहुत कहा समुझाऊं आज । हमहूं कछु करिबे गृहकाज॥ हमतेको अति जानतहै ❀ श्रीमुखवचनसुनत बिलखाइ । व्याकुल धरणि परीमुरझाइ॥ रासरसिक गुण गाइहो ॥८॥दारुण चिंता बढी नथोर । क्रूरवचन कहे नंदकिशोर ॥ और शरन सूझै नहिं ठौर ❀ रुदन करत नदी बढी गंभीर। हरि

करि आनहि जाने पीर। कुच थंभन अवलंब है ❀ तुम्हरी रही बहुत पिय आश। बिन अपराध न करहु निराश॥ कैतौ रुखाई छांडिये ❀ निठुर वचन जिनि बोलहु नाथ। निजदासी जिनि करहु अनाथ॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ ९ ॥ मुख देखत सुख पावत नैन। श्रवण सिरात सुनत मृदु बैन॥ सैननहीं सरबस हरचो ❀ मंद हँसनि उपाजयो काम। अधरसुधा ध्वनि करि विश्राम॥ वरषि सींचि विरहानला ❀ मुरली सुनते भई सवाइ। तबते और न कछू सोहाइ॥ कहौ घोष हम जाहिं क्यों ❀ सजन बंधु को करिहै कानि। तुम बिछुरत पिय आतमहानि॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥१०॥ बेनु बजाइ बुलाई नारि। सहि आई कुल सबकी गारि॥ मन मधुकर लंपट भयो ❀ सोऊ सुंदरि चतुर सुजान। आरज पंथ सुने तजि गान॥ तिन देखत पुरुषउ लजै ❀ बहुत कहा वरणों यह रूप। और न त्रिभुवन शरण अनूप॥ बलिहारी या रातिकी ❀ सुन मोहन बिनती दै कान। अपयश होइ किये अपमान॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ ॥ ११ ॥ तुम हमको उपदेश्यो धर्म। ताको कछू न पायो मर्म॥ हम अबला मतिहीन हैं ❀ दुख-दाता सुत पति गृह बंधु। तुम्हरीकृपाबिनु सब जग अंधु॥ तुमते प्रीतम और को ❀ तुमसोंप्रीति करहिं जे धीर। तिनहिं न लोक वेदकी पीर॥ पाप पुण्य तिनके नहीं ❀ आशापाश बँधीहमबाल। तुमहिं विमुख ह्वैहैं बेहाल॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ १२ ॥ विरद तुम्हारो दीनदयाल। कर-सोंकर धरि करि प्रतिपाल॥ भुजदंडनि खंडहु व्यथा ❀ जैसे गुणी देखावै कला। कृपण कबहुँनहिं मानै भला॥ सदय हृदय हमपर करौ ❀ ब्रजकी लाज बडाई तोहि। करहु कृपा करुणाकर जोहि॥ तुमहिं हमारे गति सदा ❀ दीन वचन जब युवतिन कहे। सुनत वचन लोचन जल बहे॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥१३॥ हँसि बोले हरि बोली बोडि। करजोरे प्रभुनासब छोडि॥ हौं असाधु तुम साधु हौ ❀ मो कारण तुम भई निशंक। लोकवेद बपुराको रंक॥ सिंहशरन जंबुक बसै ❀ बिनदाम-न हौं लीन्हों मोल। करत निरादर भई न लोल॥ आवहु हिलिमिलि खेलिये ❀ ब्रजयुवतिन घेरे ब्रजराज। मनहुँ निशाकर किरनसमाज॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ १४ ॥ हरिमुख देखत भूले नैन। उर उमँगे कछु कहत न बैन॥ श्यामहि गावत कामवश ❀ हँसत हँसावत करि परि-हास। मनमें कहत करैं अब रास॥ अंचल गहि चञ्चल चल्यो ❀ ल्यायो कोमल पुलिनमँझार। नखशिख भूषण अंग सँवार। पट भूषण युवतिनसजे ❀ कुचपरसत पुजई सबसाध। रससागर मनो मदन अगाध॥ रास रसिक गुण गाइहौं॥ १५ ॥ रसमें विरस जु अन्तर्धान। गोपिनके उपजै अभिमान॥ बिरहकथामें कौन सुख ❀ द्वादश कोस रास परमान। ताको कैसे होत बखान॥ आस पास यमुना हिली ❀ तामें मानसरोवर ताल। कमल विमल जल परम रसाल॥ सेवहिं खग मृग सुखभरे ❀ निकट कल्पतरु बंशीबटा। श्रीराधा रति कुंजनि अटा॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ ॥ १६ ॥ नव कुमकुम रज वरषत जहां। उडत कपूर धूरि जहँ तहां॥ और फूल फल को गनै ❀ तहँ घनश्याम रास रस रच्यो। मर्कतमणि कंचनसों खच्यो॥ अद्भुत कौतुक परगट कियो ❀ मंडल जोरि युवति जहां बनी। दुहुँ दुहुँ बीच श्याम घन धनी। शोभा कहत न आवई ❀ घूँघट मुकुट विराजत शीस। शोभित शशि मनो सहस बतीस॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ ॥ १७ ॥ मणि कुंडल ताटंक बिलोल। बिहँसत लज्जित ललित कपोल॥ अलक तिलक वेसरि बनी ❀ कंठशिरी गजमोतिनहार। चंचरि चुरि किंकिणिझनकार॥ चौकी चमकति उरलगी ❀ कौस्तुभमणि राजति रुचिपोति। दशन दमक दामिनिते ज्योति॥ सरस अधर पल्लव बने ❀ चिबुक

मध्य श्यामल रुचि बिंद । देखि सबनि रीझे गोविंद ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ १८॥ सघन विमान गगन भरिरहे। कौतुक देखन अमर उमहे ॥ नैन सुफलसबके भए ❀ बाजे देवलोक नीसान । बरषत सुमन करत सुर गान ॥ मुनि किन्नर जयजयध्वनि करैं ❀ युवतिन बिसरेपतिगतिगेह। प्रेममगन सब सहितसनेह ॥ यह सुख हमको हो कहां ❀ सुंदरता सब सुखकी खानि। रसना एक न परत बखानि ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ १९॥ नीलकंचुकीमांडनि लाल । भुज निनवै आभूषण माल ॥ पीत पिछौरी श्यामतनु ❀ अँगुरिन मुँदरी पहुँची पानि । कछि कटि कछनी किंकिनि बानि ॥ उर नितंब बेनी तुरै ❀ नाराबंधन सूथन जंघन । पाँयन नूपुरबाजतसंघन ॥ नखन महावर खुलिरह्यो ❀ श्रीराधा मोहन मंडल माँझ । मनहु विराजत चंदा साँझ ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ २० ॥ पग पटकत लटकत लट बाहु । मटकत भौंहन हस्त उछाहु ॥ अंचल चंचल झूमका ❀ दुरिदुरि देखत नैनन सैन । मुखकी हँसी कहत मृदु बैन ॥ मंडित गंड प्रस्वेदकण ❀ चौरी डोरी विगलित केश । झूमत लटकत मुकुट सुदेश ॥ फूल खसत शिरते घने ❀ कृष्णवधू पावन यश गाइ । रीझत मोहन कंठ लगाइ ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ २१ ॥ बाजत भूषण ताल मृदंग । अंग दिखावत सरस सुधंग ॥ रंग रह्यो न कह्यो परे ❀ नूपुर किंकिनि कंकण चुरी । उपजत मिश्रित ध्वनिमाधुरी ॥ सुनतसिरानेश्रवणमन ❀ मुरली मुरजरबाब उपंग । उघटत शब्द विहारीसंग । नागरि सब गुण आगरी ❀ गोपीमंडल मंडित श्याम । कनक नीलमणि जनु अभिराम ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ २२ ॥ तिरप लेति सुंदर भामिनी । मनहु विराजत घनदामिनी । या छबिकीउपमा नहीं ❀ राधाकीगतिपरत न लखी । रससागरकी सीवाँ नखी ॥ बलिहारी वारूपकी ❀ लेति सुघर औघर गति तान । दै चुंबन आकर्षति प्रान ॥ भेंटति मेटति दुख सबै ❀ राखति पियहि कुचनबिचआनि ।दै अधरामृत शिरपर पानि ॥ रासरसिकगुण गाइहौं ॥ २३ ॥ हरषित वेणु बजायो छैल । चंद्रहि बिसरी नभकी गैल ॥ तारागण मनमें लज्यो ❀ मुरलीध्वनि बैकुंठहि गई । नारायण सुनि प्रीति जु भई ॥ कहत वचन कमला सुनो ❀ श्रीकुंजबिहारी विहरत देखि । जीवन जन्म सफलकरि लेखि ॥ इहसुख तिहुँपुरहैकहां ❀ श्रीवृंदावन हमतेदूरि । कैसे धौं उड़िलागै धूरि॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥२४॥कोलाहल ध्वनि दहदिश जाति । कल्पसमान भई सुखगति ॥ जीवजंतु मैंमतसबै ❀ उलटि बह्यो यमुनाको नीर । बालक बच्छ न पीवैं क्षीर ॥ गयागमन ठगे सबै ❀ गिरिवर तरुवर पुलकित गात । गोधन थनते दूध चुचात ॥ सुनि खग मृग मुनिव्रत धर्यौ ❀ महि फूली भूल्यो गति पौन । सोवत ग्वाल तजत नहिं भौन । रासरसिक गुण गाइहौं ॥२५॥ राग रागिनी मूरतिवंत । दूलह दुलहिनि सरस वसंत ॥ कोक कला संगीत गुरु ❀ सप्तसुरनकी जाति अनेक।नीके मिलवति राधा एक॥मन मोह्यो पियको सुघरि ❀ छंदध्रुवनिके भेद अपार । नाचति कुँवरि मिलै झपतार ॥ कह्योसबै संगीतमें ❀ पिकनि रिझावति सुन्दर सुपद । सरस स्वल्पध्वनि उघटत सुखद॥रासरसिक गुण गाइहौं॥२६॥चलति सु मोहति गति गज हंस । हँसतपरस्पर गावत गंस॥तान मान मृगमथनके ❀ गौरी चंदनचरचित बाहु॥लेत सुधाप पुलकतनु नाहु॥ दै चुंबन हरि सुख लियो ❀ श्यामल गौर कपोल सुचारु । रीझि परस्पर लेत उगारु ॥ एक प्राण द्वैदहहैं ❀ नाचत गावत गुणकी खानि । श्रमित भए टेकत पिय पानि ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ २७ ॥ पिक गावत अलि नादहि देत । मोर चकोर फिरत सँग हेत ॥ सघन सुमन हारहैं मनो ❀ कच कुच विंदरसे हँसि श्याम । चलत भौंह नैननअभिराम ॥ अंगन

कोटि अनंग छबि ❀ हस्तकभेद ललित गति लई। अंचल उडत अधिक छबि भई॥ कुचविगलित मालागिरी ❀ हरि करुणाकरि लई उठाइ। पोंछत श्रमजल कंठलगाइ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥२८॥ तिनहिं लिवाइ यमुनजल गए। पुलिन पुनीत निकुंजनि ठए ॥ अंगश्रमित सबके भए ❀ जैसे मदगज कूल विदारि। तैसे सँग लै खेली नारि ॥ शंक न काहूकीकरी ❀ मेटी वेद लोककुलमेंडि। निकसि कुँवरि खेल्यो करि पैंडि ॥ फबी सबै जो मन धरी ❀ जल थल क्रीडत व्रीडतबही। तिनकी लीला परत न कही ॥ रास रसिक गुण गाइहौं ॥ २९ ॥ कह्यो भागवत शुक अनुराग। कैसे समुझै बिन बडभाग॥ श्रीगुरुसकलकृपाकरी ❀ सूर आश करि वरण्यो रास। चाहतहौं वृंदावन बास॥ श्रीराधावर इतनी कर कृपा ❀ निशिदिन श्याम सेउँमैं तोहिं। इहै कृपा करि दीजैमोहिं॥ नवनिकुंज सुखपुञ्जमय ❀ हरि बंसी हरि दासी जहां। हरि करुणा करि राखहु तहां ॥ नित विहार आभार दै ❀ कहतसुनत बाढत रसरीति। वक्ता श्रोता हरिपद प्रीति ॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ ३० ॥ १८५६ ॥ राग धनाश्री॥ मैं कैसे रस रासहि गाऊं। श्रीराधिका श्यामकी प्यारी तुव बिन कृपा बास ब्रज पाऊं। अन्य देव सपनेहु न जानौं दंपतिको शिर नाऊं। भजन प्रताप शरन महिमाते गुरुकी कृपा दिखाऊं ॥ नवनिकुंज बन धाम निकट इक आनँदकुटी रचाऊं। सूर कहा बिनती करि बिनवै जन्मजन्म यह ध्याऊं॥ ५७ ॥ राग बिहावल॥ तुहहीमोको ढीठकियो। नैन सदा चरणनतर राखे सुख देखत नहिं गनत वियो॥ प्रभु तुम मेरी सकुच मिटाई जोइ सोइ माँगत पेलि। मांगौं चरण शरण वृंदावन जहां करत नित केलि॥ यह वाणी भजनकी श्रवण बिन सुनत बहुत शरमाऊं। श्रीवृषभानुसुता पति सेऊं सूर जगत भरमाऊं॥ ५८ ॥ राग बिहागरो ॥ रासरस लीला गाइ सुनाऊं। यह यश कहैं सुनैं मुख श्रवणन तिन चरणन शिर नाऊं॥ कहा कहौं वक्ता श्रोता फल इक रसना क्यों गाऊं। अष्टसिद्धि नवनिधि सुख संपति लघुता करि दरशाऊं॥ जो परतीति होइ हिरदयमें जगमाया धिग देखै। हरिजनदरशहरिहिसमपूजै अंतर कपट न भेषै ॥ धनिधनि वक्ता तेहि धनि श्रोता श्याम निकट हैं ताके। सूर धन्य तिनके पितु माता भावभजनहै जाके ॥ ५९ ॥ राग बिलावल॥ वृंदावन हरि रास उपायो। देखि शरदनिशि रुचि उपजायो॥ अद्भुत मुरलीनाद सुनायो। युवति सुनत तनुदशा गँवायो॥ मिलि धाईं मनको फल पायो। जंगम चले जु चलनि थिरायो॥ उलटी यमुना धार बहायो। सुनि धुनि चंचल पवन थकायो॥ सुर नर मुनिको ध्यान भुलायो। चंद्र गगनमारग बिसरायो ॥ रूप देखिमनकामलजायो। रसमेंअंतरविरस जनायो॥ युवतिनके तनु विरह बढायो। बहुरि मिले हित अति उपजायो ॥ हावभावकरिसबन रिझायो। कल्प रैनि रसहित उपजायो ॥ प्रातसमय यमुनातट आयो। नारिनके निशि श्रमहिं मिटायो ॥ युवतिन प्रति प्रति रूप बनायो। शिव नारद शारदयह गायो॥ ध्यान टर्‌यो चित तहां लगायो। राधावर निज नाम कहायो ॥ सूरदास कछु कहिके गायो। रमाकंत जासुको ध्यायो। सो सुख नंदसुवन ब्रज आयो ॥ ६० ॥ गोपी पदरज महिमा बिधि भृगुसों कहीं। बरष सहस्रन कियो तप मैं तोऊ न लही॥ यह सुनिकै भृगु कह्यो नारद आदिक हरि भक्ता। माँगें तिनकी चरणरेणु तोहिं यह जुगुता॥ सो निज गोपीचरणरज वांछित हौ तुम देव। मेरे मन संशय भयो कहौ कृपा करि भेव ॥ ब्रजसुंदरि नहिं नारि ऋचा श्रुतिकी सबआहिं। मैंअरुशिव पुनि लक्ष्मी तिनसम कोऊ नाहिं ॥ अद्भुत है तिनकी कथाकहौंसोमैंअवगाइ। ताहिसुनैजोप्रीतिकै सो हरि पदहि समाइ ॥ प्राकृत लै भए पुरुष जगत सब प्रकृत समाइ। रहैएकवैकुंठलोकजहांत्रि-

भुवन राइ ॥ अक्षर अच्युत निर्विकार है निरंकार है जोई ।आदि अंत नहिं जानिअत आदि अंत प्रभु सोई ॥ श्रुति बिनती करि कह्यो सर्व तुमही हौ देवा ।दूरि निरंतर तुमहिं हौ तुम निज जानत भेवा ॥ या बिधि बहु अस्तुति करी तब भइ गिरा अकाश । मांगो बर मनभावते पुरवों सो तुम आस । श्रुतिन कह्यो कर जोरि सने आनंद देह तुम । जो नारायण आदि रूप तुम्हरो सो लखो हम ॥ निर्गुण रहित जो निज स्वरूप लख्यो न ताको भेव । मन बाणीते अगम अगोचर देखरावहु सो देव ॥वृंदावन निजधाम कृपाकरि तहां देखायो। सब दिन जहां वसंत कल्पवृक्षनसों छायो ॥ कुंज अद्भुत रमणीक तहां बेलि सुभग रहीं छाइ । गिरि गोबर्धन धातुमय झरना झरत सुभाइ ॥ कालिंदीजल अमृत प्रफुल्लित कमल सुहाइ । नगन जटित दोउ कूल हंस सारस तहँ छाइ॥क्रीडत श्याम किशोर तहां लिये गोपिका साथ । निरखि सो छबि श्रुति थकित भईं तब बोले यदुनाथ ॥ जो मन इच्छा होइ कहो सो मोहिं प्रगट कर । पूरण करौं सो काम देउँ तुमको मैं यह बर ॥ श्रुतिन कह्यो ह्वै गोपीका केलि करैं तुमसंग। एवमस्तु निज मुख कह्यो पूरण परमानंद ॥ कल्पसार स्तब्रह्म जबै सब सृष्टि उपावै । अरु तेहि लोगन वर्ण आश्रम धर्म चलावै ॥ बहुरि अधर्मी होहिं नृप जग अधर्म बढि जाइ ।तब बिधि पृथ्वी सुर सकल करैं बिनय मोहिं आइ॥ मथुरामंडल भरतखंड निजधाम हमारो । धरौं तहां मैं गोप भेष सो पंथ निहारो ॥ तब तुम होइकै गोपिका करिहौ मोसों नेह ।करौं केलि तुमसोंसदा सत्य बचन मम येह॥ श्रुति सुनिकै हरिबचन भाग्य अपनी बहुमानी । चितवन लागे समय दिवस सो जात नजानी ॥भारभयो जब पृथ्वीपर तब हरि लियोअवतार। वेदऋचा होइगोपिका हरिसों कियो विहार ॥ जो कोइ भरता भाव हृदय धरि हरि पद ध्यावै । नारि पुरुष कोउ होइ श्रुति ऋचा गति सो पावै ॥ तिनके पदरज जो कोई बृंदाबन भूमाहिं । परसै सोऊ गोपिका-गति पावै संशय नाहिं ॥ भृगु ताते मैं चरणरेणु गोपिनकी चाहत । श्रुतिमति बारंबार हृदय अपने अवगाहत ॥ यह महिमा रज गोपिका जब बिधि दई सुनाइ । तब भृगु आदिक ऋषि सकल रहे हरिपद चित लाइ ॥सर्वशास्त्रको सार इतिहास सर्व जो। सर्व पुराणको सार युत श्रुति-नको ॥ बंदनरज बिधि सबै कह्यो बिधि दियो ऋषिन्ह बताइ। व्यास त्रिपद वामनपुराण कह्यो सूर सोइ अब गाइ ॥६१॥ राग गूजरी ॥श्यामा श्यामके उर बसी।रैनिनृत्यतरिझैपियमन तडित-ते छबि लसी ॥ श्याम ता रस मगन डोलत सबत्रियनमें जसी । कोककलाप्रवीन सुंदरि कंठ गुण कर कसी ॥ करत सदन शृंगार बैठी अंग अँग प्रति रसी। सूर प्रभु आए अचानक देखि तिनको हँसी॥ ६२ ॥ राग रामकली ॥पिय निरखत प्यारी हँसिदीन्हों। रीझेश्यामअंगअँगनिरखत हँसि नागरि उर लीन्हों ॥ आलिंगन दै अधर दशन खंडि कर गहि चिबुक उठावत। नासासों नासा लै जोरत नैन नैन परसावत ॥ यहि अंतर प्यारी उर निरख्यो झझकि भई तब न्यारी। सूर श्याम मोको दिखरावत उर लाए धरि प्यारी ॥ ६६ ॥ अथ राधाको मान ॥ राग टोडी ॥ अब जानी पिय बात तुम्हारी । मोसों तुम मुहँकी मिलवतहौ भावतिहै वह प्यारी॥ राखे रहत हृदयपर जाको धन्य भाग्य हैं ताके । ऐसी कहूँ लखी नहिं अबलौंवश्यभएहौयाके ॥ भली करी यह बात जनाई प्रगट देखाई मोहि । सूर श्याम यह प्राणपियारी उरमें राखी पोहि ॥ राग धनाश्री ॥ ६४ ॥ सुनत श्याम चकृत भए बानी । प्यारी पियमुख देखि कछुकहँसिकछुक हृदय रिस मानी ॥ नागरि हँसति हँसी उरछाया तापर अति झहरानी।अधरकंप रिसभौंहमरोरचोमनही-

मन गहरानी॥इकटक चितै रही प्रतिबिंबहि सौतिशाल जिय जानी। सूरदास प्रभु तुम बडभागी बडभागिनिजेहि आनी॥६५॥प्यारी सांच कहति की हाँसी।काहेको इतनो रिस पावति कत तुम होहु उदासी॥पुनिपुनि कहति कहा तबहींते कहा ठगीसी ठाढी। इकटक चितरही हिरदै तन मनो चित्र लिखि काढी॥समुझी नहीं कहा मन आई मदन त्रसै तुम आगे। सूर श्याम भए काम आतुरे भुजा गहन पिय लागे॥६६॥मोहिं छुवौ जिनि दूरि रहौजू॥ जाको हृदय लगाइ लई है ताकी बाँह गहौजू॥तुम सर्वज्ञ और सब मूरख सो रानी अरु दासी।में देखति हिरदय वहबैठीहम तुमको भइ हांसी॥ बाँह गहत कछु शरम न आवत सुख पावत मनमाहीं। सुनहु सूर मोतनको इकटक चितवति डरपति नाहीं॥ ६७ ॥राग बिलावल॥ कहा भई धन बावरी कहि तुमहिं सुनाऊं। तुमते को है भावती कोहृदय बसाऊं॥ तुमहिं श्रवण तुम नैन हौ तुम प्राणअधारा। वृथा क्रोध त्रिय क्यों करौ कहि बारंबारा॥ भुज गहि ताहि बतावहू जो हृदय बतावति। सूरज प्रभु कहै नागरी तुमते को भावति॥६८॥राग नट॥ माधो नाहिंन डरति जो हृदय बसति। ऐसी ढीठ मेरे जानि तुमहिं कीन्ही है कान्ह मो सन्मुख देखति न त्रसति॥ झुकेते झुकति भाल भ्रुकुटीकुटिल किये रूखीह्वै रहत हँसेते हँसति।तबहीते इकटक चितवत और सिसकत हौं डरते इत उत नधसति॥ जाहीसों लगत नैन ताही खगत बैन नख शिखलौं सब गात ग्रसति। जाके रँग राचे हरि सोई है अंतरसंग काँचकी करोतीके जलज्यों लसति॥बिहँसि बोले गोपाल सुनि री ब्रजकी बाल उछंग लेत कत धरणि खसति। अपनी छाया निहारि काहेको करति आरि कामकी कसौटी सूर कर्षते कसति॥६९॥राग कान्हरो॥ काहेको हौ बात बनावत। अब तुमको पिय मैं पत्याति हौं छांह आपनीधरणि बतावत॥ वा देखत हमको तुम मिलिहौ काहेको ताको अनखावत।जैहै कहूं निकसि हिरदैते जानि बूझि तेहि क्यों उचटावत॥ जो वह कहै करौ तुम सोई कहा मोहिं पुनि पुनि समुझावत। सूर श्याम नागर वह नागरि भले भले जू मोहिं खिझावत॥ ७०॥ ॥राग गुंडमलार॥ वृथा हठ दूरि किनि करौ प्यारी। कहा रिस करति ह्यां छांह अपनी देखिउरको-उनहीं रिस जरति भारी॥ तुमहिं धन रहति मन नैनमें तुम बसति कनकसो कसिलेहुकहाबैठी। चतुरई कहां गई बुद्धि कैसी भई चूक समझे बिना भौंह ऐंठी॥ यह सुनत रिसभरी रही नहिं तहाँ खरी ओटह्वै झरहरी मानकीन्हों।जाहु मनमन कह्योमैं बहुत सुख लह्यो सौतिदेखराइ मोहिं सूर दीन्हों॥ ७१॥ राग कल्याण॥ कियो अतिमान वृषभानुवारी। देखि प्रतिबिंब पियहृदयनारी॥ कहा ह्यांकरत लैजाहु प्यारी। मनहिमन देत अति ताहि गारी॥सुनत यह वचन पिय विरह बाढो। कियो अति नागरी मान गाढो॥काम तनु दहत नहिं धीरधारे। कबहुँ बैठत उठत बारबारे। सूर अतिभए व्याकुल मुरारी। नैन भरिलेत जलदेत ढारी॥ ७२॥राग बिहागरो॥मानकर्यो त्रियबिन अपराधहि। तनुदाहति बिनकाज आपनो कहत डरत जिय वादहि॥कहारही मुख मूँदि भामिनी मोहिं चूक कछु नाहीं।झझकि रही क्यों चतुर नागरी देखि आपनीछाहीं॥ अजहूँदूरिकरौरिस उरते हृदये ज्ञान बिचारो। सूर श्याम कहिकहि पचिहारे हठ कीन्हों जिय भारो ७३॥राग सोरठ॥ काम श्यामतनु चटप कियो। मनो धर्यो नागरि जिय गाढौसूख्यो कमल हियो॥ व्याकुल भए चले वृंदावन मिली दूतिका आनि। बारबार हरिवदन निहारति सकै न दुख पहिचानि॥ कैसी दशा आजु मैं देखति कहौ न मोहिं सुनाइ। सूर श्याम देखे तुम व्याकुल आए कहा गँवाइ॥ ॥७४॥राग गौरी॥ व्याकुलबचन कहतहैं श्याम। वृथा नागरी मानबढायो जोरकियोतनुकाम॥

यह कहतहि लोचन भरिआए पायो बिरह सहाइ।चाहत कह्यो भेद ता आगे वाणी कही न जाइ ॥ और सखी तेहि अंतर आई व्याकुल देखि मुरारि।सूर श्याम मुख देखि चकित भई क्यों तनु रहे बिसारि॥७५॥राग विहागरो ॥ कहति दूतिका सखिन बुझाइ ।आजु राधिका मान करयो है श्याम गए कुँभिलाइ॥करसों कर धरि लाल लईगहि सखिन सहित बनधाम ।सुख दै कह्यो लिए आवतिहौं संग विलसियो बाम॥मो आगेकी महरि बिटनियां कहाकरै वह मान।सुनहु सूर प्रभु कितकि बात यह करै न पूरण काम॥ ७६ ॥ राग भैरव ॥ श्याम कुंज बैठारि गई ॥ चतुर दूतिका सखियन लीन्हें आतुरताई जानिलई ॥मनहींमन इक रचि चतुराई इहै कहौंगी बात नई । अबहीं लै आवतिहौं ताको इहै भई कछु बहुत दई ॥करि आई हरिसों परतिज्ञा कहा कहै वृषभानुजई । सूर श्यामसों मान करयो है आजुहि ऐसी कहा भई ॥ ७७ ॥ रागनट ॥ सखिन संग लै तहां गई ।दूतिकामुख निरखि राधा जानि हिरदय लई॥अतिचतुर वृषभानुतनया सहज बोलि लई । सहज वचन प्रकाश कीन्हों कहा कृपा भई ॥तुरतही यह कहि सुनायो श्याम बोले तोहिं । सूर प्रभु बन बोलि पठई तोहिं कारण मोहिं॥७८॥राग टोडी ॥ काहेको बन श्याम बोलाई । याही-ते तुम धाई आई ॥ कहा कहौं तोको री माई । तुमहुँ भली अरु भले कन्हाई ॥ अब इक नई मिली है आई । ताहीको अब लेहिं बुलाई ॥ ताको राखी हृदय दुराई । तोको ह्यांते टारि पठाई ॥ सूर श्याम ऐसे गुण राई । उनकी महिमा कही न जाई ॥ ७९ ॥ रागधनाश्री ॥ आजु कछू घर कलह भयोरी । वही आजु अनमनी बत्यानी यह कहि मान ठयो री ॥ मोसों कछुक कह्यो नहिं मोहन सहज पठाई लेन । कहा पुकार परी हरि आगे चलो न देखो नैन ॥ तेरो नाम लेत हरि आगे कहत सुनाइ२ ।सूर सुनहु काको काको गथ तैं धौं लियो छँडाइ ॥ ८० ॥राग सूही ॥ वृन्दावन हरि बैठे धाम। काहेको गथ हरयो सबनको काहे अपनो कियो कुनाम ॥ डारिदेहु कह लियो परायो मेरो कह्यो मानि री बाम । तबहींते उन शोर लगायो तोकों बोलीहै यहि काम ॥ चलहु तुरत जिनि झेर लगावहु अबहीं आइ करो विश्राम । सूर श्याम तेरी घां झगरत तू काहे तिनसों करैताम ॥८१॥राग जैतश्री॥ यह कछु नोखी बात सुनावति । काको गथ धौं मैं लीन्हों है बारबार बन मोहिं बोलावति॥मेरी घां हरि लरत कौनसों इतीमया मोहिं कीन्हीं । जैसेहैं हरि तेरे माई मैं नीकेकरिचीन्हीं ॥ कीबैठो की भवन जाहु की मैंउनपै नहिं जाउँ । सूरदास प्रभुको री सजनी जन्म न लैहौं नाउँ ॥८२॥ राग गौरी ॥ मैं कहा तोहि मनावन आई । प्रगट लिए सबको ब्रज बैठी कहा करति अधिकाई॥जाइ करौ ह्यां बोध सबनिको मोपर कत सतरानी ।श्यामलरत तबहींते उनसों तिनपर अतिहिरिसानी ॥ बारबार तू कहा कहतिरी ब्रज काको मैं लीन्हों। सूरदास राधा सहचरिसों ज्वाब निदरिकै दीन्हों॥८३॥राग सोरठ॥तैं कछु नहिं काहूको लीन्हों। प्रगट कहौं तबहींमानौगी ज्वाबनिदरिमोहिं दीन्हों ॥ तब वदिहौं ऐसेहि ह्यां केहै जहँ बैठे सब बैरी । मेरे कहे बहुत रिस पावति संपतिसबकी लैरी॥इकइक करि सब तोहिं दिखाऊँ कहि आवहु बनजाइ।की दीजौ की पुनि सब लीजौ सूर श्यामपै आइ ॥८४॥राग सूही॥जिनजिन जाइ श्यामके आगे तेरी चुगली बहुत करी । बारबार जिनमां हरिखीझे तेरी घां है महूं लरी ॥ श्याम भेद करि मोहिं पठाई तू मोहींपर खीझपरी । जाइ करो रिस वैरिनिआगे जाके जाके गथहि हरी॥ धरति अकाश बनहुके आए देखत तिनको अतिहि डरी।सूर श्यामबिनु न्याव चुकै क्यों तिनपरतू अतिही झगरी॥८५॥राग धनाश्री॥ ते जनपुकारे

हरिपै जाइ। जिनकी यह सब सौज राधिका तैं तेरे तनु लई छँडाइ॥ इंदु कहै हौं बदन बिगोयो अलकन अलि समुदाइ। नैननि मृग वचनन पिक लूटे बिलपत हरिहि सुनाइ॥ कमल केरि केहरि कपोत गज कनक कदलि दुखपाइ। विद्रुम कुंदभुजंग संगमिलि शरण गए अकुलाइ॥ अतिअनीति जियजानिसूरप्रभुपठईमोहिंरिसाइ। बोलीहैव्रजनारिवेगिचलिअबउत्तरदेआइ॥८६॥ राग कल्याण॥ चल राधे हरि रसिक बुलाई। कमलनयन कछु मर्म कह्यो नहिं मोहन वदन करन पुट आई॥ अँगअँग सर्वसु हरन लगी री रचि बिरंचि तुवबनक बनाई। अब जो पुकार करततेरेतनु जितनी उनकी शोभ चुराई। मांग उरग नवतरनि तरौना तिलकभालशशिकी ससकाई। भ्रुकुटी शरधनु साधि बचन वर सुरपुर परिहै मदन दोहाई॥ दाडिम वज्र पंक्ति पंकजदल दामिनि घन दुतिरदन दोहाई। कंबुकपोत कंठनिशिवासर बाहुबली कटिकंजलताई॥ उरभयभेषशेष अंबरजनु मनो छबि कटि मृगराज सुहाई। हंस पुकार करत सूरज प्रभु दीन बंधु हौं लेन पठाई॥८७॥ राग कान्हरो॥ मान करौ तुम और सवाई। कोटि करौ एकै पुनि ह्वैहौ तुम अरु वे मनमोहन माई॥ मोहनसों सुनि नाम श्रवणही मगन भई सुकुमारी। मान गयो रिस गई तुरतही लजित भई मन भारी॥ धाइ मिली दूतिका कंठसों धन्यधन्य कहि बानी। सूर श्याम बन धाम जानिकै दरशनको अतुरानी॥८८॥ राग बिलावल॥ हँसिकै कह्यो दूतिकाआगे श्यामहि सुख दै री तू जाई। करि अस्नान अभूषण अँगभरि मैं आवति तो पाछे धाई॥ यह सुनि हर्ष भई अतिही सखि गई तहां जहँ श्याम। अति व्याकुल तनुकी सुधि नाहीं विह्वल कीन्हों काम॥ की वनमें कीघरहीबैठे की वासर की याम। सूर श्याम रसना रट लागी राधाराधा नाम॥८९॥ राग रामकली॥ श्याम नारिके विरह भरे। कबहुँक बैठत कुंज द्रुमनतर कबहुँक रहत खरे॥ कबहुँक तनुकी सुरति बिसारत कबहुँक तनु सुधि आवत। तब नागरिके गुणहि बिचारत तेइ गुण गुनिगुनि गावत॥ कहूं मुकुट कहुँ मुरलि रही गिरि कहुँ कटि पीत पिछौरी। सूर श्याम ऐसी गति भीतर आई दूतिका दौरी॥९०॥ ॥राग बिलावल॥ श्यामभुजा गहि दूतिका कहि आतुर बानी। काहेको कदरातहौमैंराधाआनी॥ बिरह दूरि करिडारिए सुख करौ कन्हाइ। त्रियानाम श्रवणनिसुन्यो चितएअकुलाई॥ मिलेदूतिकहि अंक दै लोचन भरिआए। प्यारीप्यारी बोलिकै युवती उर लाए॥ तब बोली हँसि दूतिका पिय आवति नारी। सूर श्याम सुनिबोलवैहरषेबनवारी॥९१॥ राग गूजरी॥ धीर धरौ प्यारीअब आवति। मैं जु गई परतिज्ञा करिकै सो कहि बात जनावति॥ मनचिंता अब दूरिकरौ जू कहो नकहमोहिंदैहो। बनि आवति वृषभानुनंदिनी भुजभरि अंकम लैहो॥ यह सुंदरता और नहीं कहुँ बडभागीसोपावै। सूर श्याम दूतिका वचन सुनि करयुग काम मनावै॥९२॥ राग जैतश्री॥ यहसुनिकै मन श्याम सिहात। पुलकित अंग रहै नहिं धीरज पुनिपुनि पंथ निहारत जात॥ कुंजभवन कुसुमनकी सेज्या अपने हाथ निवारत पात। जे द्रुम लता लटकि तनु लागत ते ऊंचे धरि पुलकित गात॥ प्यारीअंग अतिकोमल जानत सेजकलीचुनिडारत। सूर श्याम रीझत मनहींमन सुधिकरि छबिहि निहारत॥९३॥ राग कल्याण॥ दूतिका हँसति हरि चरित हेरै। कबहुं कर आपने रचतसुमनन सेज कबहुँ मग निरखि कहूँ भयो झेरै॥ कामआतुर भरे कबहुँ बैठत खरे कबहुँ आगे जाइ रहत ठाढे। चतुर सखि देखि पुनि राधिकापै गई झेर कयोंकरतिधन कंतचाढे॥ सुनत प्यारी हँसी पियाके मन बसी रूप गुण कर यशी प्रेमरासी। सूर प्रभुनाम सुनि मदन तन बल भयो अंग प्रति छबि उपर रमा दासी॥९४॥ राग धनाश्री॥ धनि वृषभानुसुता बडभागिनि। कहा निहारति अंग

अंग छबि धन्य श्याम अनुरागिनि॥ और त्रिया नखशिख शृंगार सजि तेरे सहज न पूरे । रति रंभा उरवसी रमासी तोहिं निरखि मन झूरे ॥ ए सब कंत सुहागिनि नाहीं तू है कंतहि प्यारी । सूर धन्य तेरी सुंदरता तोसी और न नारी ॥ ९५ ॥ सहज रूपकी राशि नागरी भूषण अधिक विराजै । सुख सौरभ संमिलित सुधानिधि कनकलतापर छाजै ॥ वदनारविंद धारमिलि शोभित धूमिल नील अगाध । मनहुँ बाल रवि रस समीर शंकित तिमिर कूटहै आध ॥ माणिक मध्य पास चहुँ मोती पंगति झलक सिंदूर । रेंग्यो जनु तम तट तारागण ऊगत घेरचो सूर ॥ की मन्मथरथ चक्र कि तरिवन रवि रथ रंचित साज।श्रवणकूपकी रहट घटिका राजत सुभगसमाज॥ नासा नथ मुक्ता बिम्बाधर प्रतिबिंबित असमूच । बींध्यो कनक पासि शुक सुंदर करिकबीज गहि चूंच ॥ कहँलगि कहौं भूषणनभूषित अंगअंगके रूप। सूर सकलशोभाश्रीपतिके राजिवनैन अनूप ॥ ९६ ॥ राग कान्हरो ॥ विराजत राधा रूप निधान । सुंदरताको पुंज प्रगटही को पटतर त्रिय आन ॥ सिंदुर शीश मांग मुक्तावलि कचकबरी अविनान । मनहुँ चंद्र मुख कोपि हन्यो रिपु राहु विषम बलवान ॥ तरल तिलक ताटंक गंडपर झलकत कल विय कान । मानहु शशि सहाय करिबेको रण बिरचे द्वै भान ॥ दीरघनैननासिकाबेसरिअरुणअधरछबिवान ।खंजन शुक नहिं बिंब समितको लज्जित भए अजान ॥ को कहि सकै उरोजन की छबि कंचनमेरु लजान। श्रीफल सकुचि रहे दुरिकानन सिखरहिबो विहरान॥ रोमवलि त्रिवलीछबि छाजत जनु कीन्ही यह ठान। कृश कटि सबल डंड बंधन मनों विधि दीन्हो बंधान॥ अंग अंग आभूषणकी छबि कापै होइ बखान । सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि विलसहु श्यामसुजान॥ ९७॥ रागसारंग ॥ राजत तेरे बदन शशी री । किरनि कटाक्षबाणबर सांधे भौंहकलंक कमानकसी री ॥ पीनपयोधर सघन उन्नत अति तापर रोमावली लसी री । चक्रवाकखगचंचुपुटीते मनुसैवल मंजीरखसीरी॥ ज्यों नाभी सर एक नाल नव कनककमल विवि रहे बसी री । सूरज श्रीगोपालपियारी मेरी अध तम धराधसीरी॥९८॥राग गूजरी ॥सुनिराधेतेरेअंगनऊपरसुंदरतानबची। लोकचतुर्दशनीरसलागत तू रसरास रची॥ नखशिख विशिख कुसुमकी सेना को तुम अवधि रची। सहज माधुरी रोमन वर्षत रतिरणकीच मची ॥ तोसी नारि श्यामसे नायक बिधि बेकाज पची। सूर सुमेरु कूटकी सम्बरक्योंपूजैघुँघची॥ ९९ ॥ राग नट ॥राधे देखितेरोरूप। पटई हौं हरिशंकि मनु दलसज्योमनसिज भूप ॥ चाल गज शृंखला नूपुर नीबि नव रुचि ढाल । किंकिनी घंटा घोष माधो भये भै बेहाल॥ कंचुकी भूषण कवच सजि अति कुच कसे रणबीर । अंचलध्वजा अवलोकि नाहीं धरत पिय मन धीर॥भौंहैं चाप चढाइ कीन्हों तिलक शर संधान। नैनकीतकि देखि गिरिधर तज्योहै मदमान॥ चमर चिकुर सुदेश घूँघट छत्र शोभित छाँह । ज्यों कह्यो त्योंही मिलाऊं दै दयालुहि बाँह॥ राधिका अति चतुर सुंदरि सुनि सु वचन बिलास । सूर रुचि मनसा जनाई प्रगटि मुख मृदुहास॥ ॥ १००॥ राग कल्याण ॥ आजु अंजनदियो राधिका नैनको।मीन गणहीन मृगलजित खंजनचकित अधिक चंचलसरस श्याम सुखदेनको ॥ लसति दाडिम दशन भौंह मन्मथ फंद स्वल्पलट लटकि रही रहत नहिं चैनको।कसनि कंचुकि बंद उर मुकुतमालमुखनिरखि उडराजतजिगयोसुरऐनको ॥ रुनित नूपुर चरण क्षुद्रकटि घंटिका कनक तनु गौर छबि उमँगि उपरैनको। सूर सुनिसून उठि नवल गिरिधर सेज चलीहै गजगति मनो मदनगढ लैनको ॥ १ ॥ राग टोडी ॥ रसिक शिरमौर ढोरि लगावत गावत राधाराधा नाम। कुंजभवन बैठे मनमोहन अलिगोहन सोहन बोलत मुख

तेरोई गुणग्राम ॥श्रवण सुनत प्यारी पुलकित भई प्रफुलित तन मन रोमरोम सुखराशि वाम । सूरदास प्रभु गिरिवर धरको चली मिलन गजराज गामिनी झनक रुनुक वनधाम ॥ २ ॥ ॥राग देवगंधार॥चलौ किन मानिनि कुंजकुटीर । तुवबिन कुँवर कोटि बनिता तजि सहतवदनकी पीर ॥ गद्गदसुर पुलकित विरहानल नैन विलोकत नीर । क्वासि क्वासि वृषभानु नंदिनी बिलपत बिपिन अधीर।वंसी विशिखमाल व्यालावलि पंचानन पिक कीर।मलयज गरल हुताशनमारुत शाखामृग रिपुवीर॥हियमें हरषि प्रेम अतिआतुर चतुरचलहुपियतीर।सुनि भयभीतवज्रके पिंजर सूर सुरतिरणधीर॥३॥राग कल्याण नवेलीसुनिनवलपियानवनिकुंजहैरी।भावतेलालसोंभावतीकेलिकारि भावती भावतो रसिक रस लै री । त्यागि अभिमान गुणरूप सौभाग रति मानिनी मनुहारि मैन सुख दैरी । एक ब्रजवास आवत जात देखियत आपनी जातिपति पेंड घेरी ॥ ललित उदार हित पीर करि कीर मति धीर तनु मेटि मन्मथको भै री। कला चौंसठि संगीत शृंगाररस कोकबिधि बंद प्रगट भेदसे सै री ॥ सुरतिसागर साज स्रवत जस रसलाज अंग अनुकूल रतिराज रण जैरी । कामशर कनक कुच प्रगट भृङ्गी चिह्न दागि मेले कंत आपनो कै री ॥ जासु आलाप सुनि दारुसे पल्लवे पुहुप मधुधार कर भारभर नै री । मुरलिका गान तुवनाम मधुराधुनी सुधागुण सिंधु नहिं गनत निज मेरी । हीनजल मीन ज्यों दरशबिन कमल्ल लै प्राण प्रीतम नहीं धीरज धरै री॥प्रीतिकी रीति गति होतिहैरीहरषिनिरखिरतिकरि चिबुक अशनि ढै री।अधरमधुलोभ,पंथान चितवत चकित कमल गुल्लालदल तल रचै री ॥ अरुण शीतल मृदु पातदल सरि करत सेज चढि दल मही चरणके बैरी । तुव कामकेलि कमनीय कामिनिवृंद चंद चकोर चातक स्वाति तै री ॥ सूर सुनि श्रवण तजि भवन करि गवन मन रवन तनु तबहि कहँ सगति गै री ॥ ४ ॥ रागकन्हारो ॥मनो गिरिवरते आवति गंगा। राजति अतिरमणीकराधिका यहि विधि अधिकअनूपम अंगा॥ गौर गात द्युति बिमल वारिनिधि कटितट त्रिवली तरल तरंगा । रोमराजि मनो यमुन मिली अध भवँर परत मानो भ्रुवभंगा ॥ भुजबल पुलिन पास मिलि बैठे चारुचक्कवे उरज उतंगा । मनो मुख मृदुल पाणि पंकेरुह गुरुगति मनहुँ मराल विहंगा ॥ मणिगण भूषण रुचिर तीरवर मध्यधार मोतिनमे मंगा । सूरदास मनो चली सुरसरी श्रीगोपाल सागर सुख संगा ॥ ॥ ५ ॥ राग सूहो ॥नाहिंन नैन लगे निशि यहि डर। जबते जाइ कह्यो हँसि हरिसों समर सोचउनके जिय धरधर ॥ भौंह कमान तिलक भलुका करि रुचि सुदेश सीमंत सुरँग शर । वलय ताटंक चक्र नख नेजा दामिनिसे चमकत रद असि बर । गज उरोज वरबाजि विलोचन बंकट बिशद विशाल मनोहर ॥ लाल ढाल अंचल चंचल गति चमर चिकुर राजत ता ऊपर। अंगअंग सज सुभट सहायक बने विविध भूषण बानेवर ॥ कामिनि आजुहि आनि रहैगी कामकटक लैकुंज झँडातर । चरन रुनित नूपुर रणतूरा सुनत श्रवण कांपहिंगे थरथर ॥ तब जानबी किशोर जोर रुपि रहौ जीति करि खेत सबै पर । ऐंचि करौ जो कहीं किशोरी वे जो भीत ह्वै रहे बैठि घर ॥ यहै मतो मुखमुख जोरहौ तहीं करहु पार लै पकरि पियहि कर । सहचरि चतुरातुर लै आई बाँह बोल देकरि कहत वह छर । रोष सुरत तन मिलि अंकम भरि लै लटकी दै दंत पियाधर ॥ जुरत सुरत संग्राम मच्यो छबि छूटिछूटि कच टूटि हार लर । अति सनेह दुहुँ बिसरि देह भिरि मैन मल्ल मुरझाइगिरेधर॥ बिविधबिलासकोशवशकीने राधा नारि नंदनंदनवर। निगमन नेति कह्यो निर्गुण सो कह गुणाधि बरणिहैसूर नर ॥ ६ ॥ राग टोडी ॥ फूलनको महल

फूलनकी सेज्या फूले कुंजविहारी फूली राधाप्यारी। फूले वै दंपतिनवल मगन फूले फूले करैंकेलि न्यारी न्यारी॥ फूली लता वेलि बिविध सुमनगण फूले आनन दोउ हैं सुखकारी । सूरदास प्रभु प्यारी पर वारत फूले फूल चंपक वेलि निवारी॥ ७॥ राग धनाश्री ॥ आज रंग फूले कुँवर कन्हाई । कबहुँक अधर दशन भरि खंडित चाखत सुधा मिठाई॥ कबहुँक कुचकर परसि कठिन अति तहां वदन परसावत। मुख निरखति सकुचति सुकुमारी मनहीमन अति भावत ॥ तब प्यारी मुख गहि कर टारति नेक लाज नहिं आवत । सूरदास प्रभु कामशिरोमणि कोककला देखरावत ॥ ८ ॥ राग बिहागरो ॥ देखो सात कमल इकठौर । तिनको अति आदर देबेको धाय मिलेद्वै और॥ मिलत मिले फिरि चलत न बिछुरत अवलोकत यह चाल। न्यारे भए बिराजतहैं सब अपमे सहज सनाल ॥ हरि तम श्याम निशा निशिनायक प्रगट होत हँसिबोले। चिबुक उठाय कह्योअब देखो अजहुँ रहति अनबोले । इतनी जतन किए नँदनंदन तब वह निठुर मनाई । भरिके अंक सूरके स्वामी पर्यंकपरि ह्वां आई ॥ ९ ॥ राग केदारो ॥ पियको भावति राधा नारि। उलटि चुंबन देति रसिकन सकुच दीन्हीं डारि॥ परस्पर दोउ भरे श्रमजल फूँकि फूँक झुरात। मनो बूझिअनंगज्वाला प्रगट करत लजात ॥ बहुरि उठे सँभारि भट ज्यों अँग अनंग सँभारि । सूर प्रभु वनधाम विहरत बने दोउ वरनारि ॥ १० ॥ राग रामकली ॥ विहरत वन दोउ मन इककरे । एक भाव इक भए लपटिकै उर उर जोरि धरे॥ मनो सुभट रण एकसंग जुरि करिवर नहींडरे । अधर दशनछत नखछत उरपर घायन फरहि परे ॥ यह सुख यह उपमा पटतर को रतिसंग्राम लरे । सूर सखी निरखत अंतर भई रतिपति काज सरे॥ ११ ॥ आजु अति शोभित हो घनश्याम । मानहुँ हैं जीते नँदनंदन मनसिजसों संग्राम ॥ मुकुलित कच न समात मुकुटमें रोष अरुण दोउ नैन । श्रम सूचत मानो आलस गति बोलत बनत न बैन । नखछतशोणित प्रस्वेद गातते चंदन गयो कछु छूटि । मदन सुभट केसर सुदेश मनु लगे कवचपट फूटि ॥ दशन अंकपर प्रगट पीक मनो सन्मुख सहे प्रहार । सूरदासप्रभु परमसूरमें जाने नंदकुमार ॥ १२ ॥ राग कल्याण॥ सकुचिमन परस्पर बसन लीन्हें । प्यारी पिया निपुन कोकगुन कलामें उनिधनहिं कंतबल अबलकीन्हें॥ स्वेदकन गंडमंडलनि नासानि तट पिय निरखि पीतपट पोंछिडारयो । निरखि प्यारी पोंछि वैसही पियवदन कछु सकुच कछु हरषिकै निहारयो ॥ नागरी डरन पिय पीत पट उर धरे बहुरि जिनि आपनी छाँह देखै । सूर प्रभु स्वामिनीअंग छबि दामिनी झलक प्रतिबिंब परमान भेषै ॥ ॥ १३ ॥ राग रामकली ॥ सँग राजति वृषभानुकुमारी । कुंज सदन कुसुमनि सेज्यापर दंपति शोभा भारी ॥ आलस भरे मगन रस दोऊ अंग अंग प्रति जोहत । मानहुँ गौर श्याम कै शशि तम बैठे सन्मुख सोहत ॥ कुंजभवन राधा मनमोहन चहूँ पास ब्रजनारी । सूर रहीं लोचन इकटक करि डारति तन मन वारी ॥ १४ ॥ राग नट ॥ इकटक रहीं नारि निहार । कुंज घर श्रीश्याम श्यामा बैठे करत विहार ॥ नैन सैन कटाक्षसों मिलि करत रंग बिलास । नहीं शोभा पार पावति वचन मुख सुख हास ॥ तरुणि श्रीवृषभानुतनया तरुण नंदकुमार । सूर सो क्यों बरणि गावै रूपरस सुखसार ॥ १५ ॥ राग धनाश्री ॥ चितै राधा रतिनागर ओर । नैन वदन छबि यों उपजत मनो शशि अनुराग चकोर ॥ सारस रस अचवनको मानो तृपित मधुप युग जोर । पान करत कहुँ तृप्ति न मानत पलक न देत अकोर॥ लिये मनोरथ मानि परस्पर जानिगई भयोभोर। सूरश्यामश्यामा आपुसमें करत रहत चितचोर॥ १६ ॥ राग बिलावल॥

देखो शोभासिंधु समाति । श्यामा श्याम सकल निशि रसवश जागे होत प्रभात॥ लै पाहनसुत कर सन्मुख दै निरखिनिरखि मुसुकात । अचरज सुभग वेद जलजातक कनक नीलमणि गात ॥ उदित जराउ हार पंचति यों रवि शशि किरनि तहांसे दुरात । चंचल खग वसु अष्टकंजदल शोभा वरणि न जात॥ चारि कीरपर पारस विद्रुम आनि अलीगण खात।सुखकी राशि युगल मुख ऊपर सुरदास बलिजात ॥ १७ ॥राग रामकली॥देख सखी पंच कमल द्वै शंभु ।एक कमल ब्रज ऊपर राजत निरखत नैन अचंभु ॥ एक कमल प्यारी कर लीन्हें कमल सुकोमल अंग । युगल कमल सत कमल बिचारत प्रीति न कबहूं भंग ॥षट जु कमल मुख सन्मुख चितवत बहुविधि रंगत-रंग। तिनमें तीन सोमवंशी वश तीनि शाप सुख अंग ॥ जेइ कमल सनकादिक दुर्लभ जिनहीं निकसी गंग । तेई कमल सूर नितचितवत निपट निरंतर संग॥१८॥राग नट ॥देख सखि चारिचंद्र इक जोर । निरखनि बैठि नितंबिनि पियसँग सूरसुताकी ओर॥ द्वैशशि श्याम नवल घन सुंदर द्वै कीन्हें बिधि गोर । तिनके मध्य चारि शुक राजत द्वै फल आठ चकोर ॥ शशि सुरंग-पर बाल कुंदकलि अरुझिरह्यो मन मोर । सूरदास प्रभु अति रतिनागर बलिबलि युगलकिशोर ॥ १९॥ राग नट॥देखरी प्रगट द्वादश मीन । षट इंदु द्वादशतरणि शोभित विमल उडुगण तीन॥ षटअष्ट अम्बुज कीर षटमुख कोकिला सुर एक। दश दोइ विद्रुम दामिनी षटतीनि व्यालविशेक॥ त्रिवलि षट श्रीफल विराजत परस्परबर नारि। ब्रज कुँवरि गिरिधर कुँवरपर सूर जन बलिहारि ॥ २० ॥ राग नट॥दंपति कुंजद्वार खरे । शिथिल अँग मरगजे अंबर अतिहि रूप भरे॥ सुरतही सब रैनि बीती कोकपूरण रंग । जलद दामिनि संग सोहत भरे आलस अंग॥ चकृत ह्वै ब्रजनारि निरखत मनो चंद्र चकोर। सूर प्रभु वृषभानुतनया बिलसिरतिपतिजोर॥२१॥राग ललित॥ सघन कुंजते उठे भोरही श्यामाश्याम खरे।जलद नबीन मिली मनो दामिनि वरषि निशा उसरे॥ शिथिल वसन तनु नील पीतद्युति आलसयुत पहिरे । श्रमजल बूंद कहूं कहुँ उडुगण बदरन वरन करे ॥ भूषण बिविधभांति मँडवारी रतिरस उमँगि भरे । काजर अधर तमोरनैनरँग अँगअँग झलक परे ॥ प्रेमप्रवाह चली मनो सरिता टूटी माल गरे । शोभा अमित विलोकि सूर प्रभु क्यों सुख जात तरे ॥ २२ ॥ राग बिलावल॥राजत दोउ निकुंज खरे ।श्यामानव किशोर पिय नव रँग अति अनुराग भरे। अति सुकुमारि सुभग चंपकतनु भूषण भृङ्ग अरे। मर्कत कमल शरीर सुभग हरि रति जिय वेष करे ॥ चंचित चारु कमलदल मानो पियके दशन समाति । मुख मयंक मधु पियत करन कसि ललना तउ न अघाति ॥लाजत मदन दुराइ मधुन मृदु मुसकनि मन हरिलेत। छूटी अलक भुअंगनि कुचतट पैठी त्रिबलि निकेत ॥ रिस रुचि रंग बिरहके मुखलौं आने सोम समेति। प्रेम पियूष पूरि पोंछति पिय इत उत जान न देति॥ वदन उघारि निहा-रि निकट करि पियके आनि धरे। बिष शंका नख रहत मुदित मनो मनसिज ताप हरे ॥ युगल किशोर चरणरज वंदौं सूरज शरण समाहि। गावत सुनत श्रवणसुखकारी विपदुरीत दुरिजाहिं॥ ॥ २३ ॥ राग नट॥जो सुख श्याम प्रियासंग कीन्हों।सो युवतिन अपनोहि करिलीन्हों॥दुविधा हृदय कछू नहिं राख्यो । अति आनंद वचन मुख भाष्यो ॥ इहै कहति तब की अब नीके। सकुचि हँसी नागरि सँग पीके । नैनकोर पियहृदय निहारचो । उन पहिलेहि पितांबर धारचो । सूरदास इह लीला गावै ।हरिपदशरण अक्षै फल पावै॥२४॥राग नट॥धनि ब्रजसुंदरीधनि श्याम। धन्य धनि वृषभानुतनया राधिका जेहि नाम ॥ गेह गेहनि गई तरुणी श्याम गए नँदधाम।

भवन गई वृषभानुतनया कोककला सुजाम ॥ करत मनकामना पूरण एक निशि सब वाम । सूर प्रभु जा सदन जात न सोइ करत ततु ताम॥ २५ ॥ अथ खंडितासमय ॥ राग बिलावल॥ नाना रँग उपजावत श्याम । कोउ रीझति कोउ खीझति वाम ॥ काहूके निशि वसत बनाई । काहू मुख छ्वै आवत जाई ॥ बहुनायक ह्वै विलसत आप । जाको शिव नहिं पावहिं जाप ॥ ताको ब्रजनारी पति जानैं । कोउ आदर कोऊ अपमानैं ॥ काहूसों कहि आवत सांझ । रहत और नागरि घर मांझ ॥ कबहुँ रैनि सब संग विहात । सुनहु सूर ऐसे नँदतात ॥ २६ ॥ राग बिलावल ॥ अब युवतिनसों प्रगटे श्याम । अरस परस सबहिन यह जानी हरि लुब्धे सबहिनके धाम ॥ जादिन जाके भवन न आवत सो मनमें यह करति बिचार । आजु गए औरहि काहूको रिस पावति कहि बडे लबार ॥ यह लीला हरिके मन भावति खंडित वचन कहत सुख होत । सांझ बोलदै जात सूर प्रभु ताके आवत होत उदोत ॥ २७॥ राग रामकली ॥ ठाढे नंद-द्वार गोपालै । बोलि लीन्हें देखि ललिता सैन दै ततकाल ॥ हँसत गए हरि गेह ताके कोउ न जानत और । मिली हरिके लाइ उरभरि चापि कुचन कठोर ॥ कह्यो मेरे धाम कबहूं क्यों न आवत श्याम । सूर प्रभु कहि आजु नागरि आइहैं हम जाम ॥ २८ ॥ राग बिलावल ॥ ललिताको सुख दै गए श्याम । आज बसैंगे रैनि तुम्हारे प्राणपियारी हौ तुम वाम ॥ यह कहिकै अनतहि पगधारे बहुनायकके भेद अपार । सांझ समय आवन कहिआए सौंह बहुत करि नंदकुमार । वह बैठी मारग हरि जोवति इकइक पल बीतत इक याम । सूर श्याम आवनकी आशा सेजसँवारी व्याकुलकाम ॥ २९ ॥ राग गौरी ॥ सांझहिते हरिपंथ निहारै । ललिता रुचि करि धाम आपने सुमन सुगंधनि सेज सँवारै ॥ कबहुँक होत वारने ठाढी कबहुँक गनति गगनके तारे । कबहुँक आइ गली मग जोवत अजहुँ न आए श्याम पियारे ॥ वे बहुनायक अनत लुभाने औरवामके धाम सिधारे । सूर श्यामबिनु विलपति बाला तमचुर शब्द जहाँ तहँ पुकारे ॥ ३० ॥ ललिता तमचुरटेर सुन्यो । वे बहुनायक अनत लोभाने नहिं आए जिय कहा गुन्यो ॥ बिनकारण दैआश गए पिय बारबार तिय शीश धुन्यो । सेज सँवारि पंथ निशि जोवत अस्त आनिभयो चंदपुन्यो॥ तब बैठी मनमारि आपनो कछु रिस कछु मन सोच परयो । सूर श्याम याते नहिं आए मात पिताको त्रास धरयो ॥ ३१ ॥ राग जैतश्री ॥ सोच परयो नागरि मनमाहीं । कीकाहूकेअनतलोभाने की पितुमात त्रास मनमाहीं ॥ वे निशि बसे महल शीलाके सुख सब रैनि गँवाई । उठे अकुलाइ भोर भयो जान्यो तब नागरिसुधि आई ॥ सहज चले गोपीसों कहिकै जिय सकुचे अति भारी सूर श्याम ललितागृह आए चितैरही मुँह प्यारी॥ ३२॥ राग ललित॥ प्यारी चितैरही मुख पियको। अंजन अधर कपोलनि वंदन लाग्यो काहू त्रियको ॥ तुरत उठी दर्पण कर लीन्हे देखो वदन सुधारो। अपनो मुख उठि प्रात देखिकै तब तुम कहूं सिधारो ॥ काजर बिंदन अधर कपोलन सकुचे देखि कन्हाई। सूर श्याम नागरि मुख जोवत वचन कह्यो नहिं जाई ॥ ३३ ॥ शीलाके घरते ललिताके आए ॥ राग आसावरी॥ दर्पण लै प्यारी मुख आगे कहति पिया छबि हेरोजू । मेरी सौं हाहा कहि पुनिपुनि उत काहे मुख फेरोजू ॥ सकुचत कहा बोलके सांचे मेरे गृहतौ आएजू॥ रैनि नहीं तौ अब जु कृपा भई धनि जिन स्वांग कराएजू॥ मेरी कही विलग जिनि मानो मैं तुव करत बड़ाईजू । सूरश्यामसन्मुख नहिंचितवत रहेधरणि शिरनाईजू ॥ ३४॥ राग ललित॥ क्योंमोहन दर्पण नहिं देखत। क्योंधरणी पगनखनकरोवत क्यों हमतन नहिं पेखत॥ क्यों ठाढे बैठतक्यों

नाहीं कहा परी हम चूक । पीतांबर गहि कह्यो बैठिए रहे कहा ह्वै मूक ॥ उघरिगयोउरते उपरैना नखछत बिनगुनमाल । सूर देखि लटपटी पागपर जावककी छबिलाल ॥३५॥ राग इंमन ॥ ऐसी कहौ रँगीले लाल । जावकसों कहाँ पाग रँगाई रँगरेजिन मिलिहै को बाल ॥ बंदन रंग कपोलन दीन्हों अधर अरुण भए श्याम रसाल । जिन तुम्हरे मन इच्छा पुरई धनिधनि पिय धनिधनि वह बाल ॥ माला कहाँ मिली बिनगुनकी उरछत देखि भई बेहाल । सूर श्याम छबि सबै बिराजी इहै देखि मोको जंजाल ॥ ३६ ॥ राग गुंडमलार ॥ काहेते सकुचत पिय दृष्टि नहीं तुम जोवत मोहनरूप विहारी । निकसे समाचार सब सोवत घूमति आँखि तिहारी ॥ नैन जगे पल लगे जातहैं पौढत तल्प हमारी । विविध कुसुम रचना रचि पचिकै अपने हाथ सवाँरी ॥ कहत सूर उर तप्यो भोर भयो हम बैठी रखवारी ॥ ३७ ॥ राग बिलावल ॥ ज्वाब नहीं पिय आवई क्यों कहाँ ठगाने मैंतबहीं-की बकतिहौं कछु आजु भुलाने ॥ हाँ नाहीं नहिं कहतहो मेरीसों काहे । आए क्यों चकृत भए मोको रिसि दाहे ॥ कहाँ रहे कासों बन्यो तहईं पगधारो । सूर श्याम गुणरावरे हिरदे न बिसारो ॥ ३८ ॥ राग बिलावल ॥ काहेको कहि गए आइहैं काहे झूठी सोंहैं खाए । ऐसे में जाने नहिं तुमको जे गुणकरि तुम प्रगट देखाए ॥ भलीकरी दरशन हरि दीन्हें जन्मजन्मके ताप नशाए । तबचितए हरि नेक त्रियातन इतनेहि सब अपराध क्षमाए ॥ सूर दास सुंदरी सयानी हँसि लीन्हें पिय अंकम लाए ॥ ३९ ॥ राग बिलावल ॥ नैनकोर हरिहेरिकै प्यारी वश कीन्ही । भाव कह्यो आधीनकोललिता लखिलीन्ही ॥ तुरत गयो रिस दूरिह्वै हँसि कंठ लगाए । भली करी मनभावते ऐसेहु मैं पाए ॥ भवनगई गहि बांहलै जागे निशिजाने । अंग शिथिलनिशि श्रमभयो मनहीमन ज्ञाने ॥ अँगसुगंध मर्दन कियो तुरतहिं अन्हवाये । अपनेकर अँग पोंछिकेमन साध पुराये ॥ चीर अभूषणअंगदैबैठे गिरिधारी ॥ रुचिभोजन पियको दियो सूरज बलिहारी ॥ ४० ॥ राग कल्याण ॥ कियो मनकाम नहिं रही बाकी । प्रियारिसदूरिकै दियो रसपूरिकै अनँगबल दूरिकै गोपजाकी । नंदसुत लाडिले प्रेमके चांडिले सौंह दै कहतहैं नारि आगे । तुम परम भावती प्राणहूँते खरी सुख नहीं लहत मैं तुमहिं त्यागे ॥ तुमहिं धन तन तुमहिं तुमहिं मनहीं बसौ और त्रिय नहीं मो मनहिं भावै । सूर प्रभु चतुर-वर चतुर नागरिनके चतुरई वचन कहि मन चुरावै ॥ ४१ ॥ राग भैरव ॥ इहै भाव सब युवतिनसों । ऐसे वचन कहत सब आगे भूलि रहति मनमोहनसों । बिन देखे रिसभाव बढावत मिलिआई दै सौंहनिसों । मुख देखत दुख रहत नहीं तनु चितवत मुरि दोउ भौंहनसों ॥ और त्रिया अँग चिह्न बिराजत रिस मनहीं मन छोहनसों । सूर श्याम सब गोपकुमारी टरति नहीं कहुँगोहन-सों ॥ ४२ ॥ राग बिलावल ॥ ललिताको सुख दै चले अपने निजधाम । बीच मिली चंद्रावली उन देखे श्याम ॥ मोरमुकुट कछनी कछे नटवर गोपाल । रही बदन तनु हेरिकै अति हित व्रजबाल ॥ गली साँकरी कोउ नहीं आतुर मिलि धाइ । कहां कहां पिय रहतहो हमको बिसराइ ॥ श्याम कह्यो हँसि वामसौं तुम्हरे निशिवास । सूर हृदयकीकलपनासुनिभईहुलास ॥ ४३ ॥ राग आसावरी ॥ श्याम वामको सुख दै बोले रैनि तुम्हारे आऊंगो । मात पिता जिय त्रास धरतहौं तऊ आइ सुख पाऊंगो ॥ तुव मिलबेकी साध भुजा भरि उरसों कुच परसाऊंगो । नैन बिशाल भाल उरबैठे ते तुव हाथ गहाऊंगो ॥ तव तनु परसि कामदुख मेटों जीवन सफल कराऊंगो । सुनहु सूर अधरन रस अँचवों दुहुँ मन तृषा बुझाऊंगो ॥ ४४ ॥ राग गूजरी ॥ सुनि सुनि वचन नारि मुसकानी । गई सदन अति ह्वै उतावली आनँदसहित लजानी ॥ फूली फिरति कहति नहिं काहू मीन मिल्यो

जनु पानी। बारंबार श्यामरति रसकी कही प्रगट करि बानी॥ वासर कल्पसमान न बीतत कैसेहुँ रैनि तुलानी। सूर देखि गति गत पतंगकी अवधि जानि हरषानी॥ ४५॥ राग कल्याण॥ राधिकागेह हरिदेह बासी। और त्रिय घरनघर तनु प्रकाशी॥ ब्रह्मपूरण एक द्वितिय नहिं कोऊ। राधिका सबै हरि सबै कोऊ॥ दीपसें दीप जैसे उजारी। तैसेही ब्रह्म घरघर बिहारी॥ खंडिता वचन हित यह उपाई। कबहुँ कहुँ जात कहुँ नहिं कन्हाई॥ जन्मको सफल हरि इहै पावैं। नारि रसवचन श्रवणन सुनावैं॥ सूर प्रभु अनतही गमन कीन्हों। तहां नहिं गए जहँ बचन दीन्हों॥ ४६॥ राग टोडी॥ श्याम गए सुखमाके धाम। देखत हर्ष भई मन वाम॥ आतुर मंदिर गए समाइ। प्यारी प्रेम उठी झहराइ॥ श्याम भामिनी परम उतार। कोककला रस करत बिचार॥ बोलत पिय नहिं आवति पास। गद्गद बानी कहति उदास॥ धाइ जाइ पति अंकम लाइ। हाहा कहि२लेत बलाइ॥ अति आतुर पतिके नति काम। कहा प्रकृति पाई यह वाम॥ बाँह गहत कीन्हों धन मान। तब हरि कीन्हें एक सयान॥ तब प्यारी चरणन शिर धारी। कामव्यथा जान्यो सुकुमारी॥ अल्प हँसी मुख हेरि लजानी। सूरज प्रभु त्रियमनकी जानी॥ ४७॥ राग गुंडमलार॥ श्याम कर भामिनीमुख सँवारयो। बसन तनु दूरि करि सबल भुज अंक भरि कामरिस वाम परि निदरि धारयो। अधर दशनन भरे कठिन कुच उरलरे परे सुखसेज मन मुरछि दोऊ। मनो कुँभिलाइ रहे मैनसे मल्ल दोउ कोक परवीन घटि नहीं कोऊ। अंग विह्वल भए नैन नैनन नए लजित रतिअंत त्रिय कंत भारी। सूर धनि धन्य सुखमा नारिवश श्याम याम युग भई पतिते नन्यारी॥ ४८॥ राग बिहागरो॥ चंद्रावली श्याममग जोवति। कबहुँ सेज करझारि सँवारति कबहूँ मलयरज भोवति॥ कबहुँ नैन अलसात जानिकै जल लै लै पुनि धोवति। कबहुँ भवन कबहूँ आँगन ह्वै ऐसे रैनि बिगोवति॥ कबहुँक विरह जरति अति व्याकुल आकुलता मनमों अति। सूर श्याम बहुरवनि रवन पिय यह कहि तब गुण तोवति॥ ४९॥ राग ललित॥ ऐसेहि ऐसेहि रैनि बिहानी। चंद्र मलीनचिरैयाबोली सुनी कागकी बानी॥ वे लुब्धेअनतहिं काहूकेमनकी आश भुलानी। कपटी कुटिल क्रूर कहा जानैं श्यामनामजिय आनी॥ कोकिल श्याम श्यामअलि देखो श्यामरंगहैपानी। श्यामजलद अहिश्यामकहावत सूर श्याम सोबानी॥ ५०॥ राग गुंडमलार॥ वामसँग श्याम त्रययाम जागे। कोक विद्या निपुण सकलगुणमे सुपुन सुरति संग्राम जुरि नहींभागे॥ अंग आलस भरे नैन निद्राढरे नेक सेज्या परे निशा बीती। सूर प्रभु नंदसुत चले अकुलाइके गए ता धाम रसकाम जीती॥ ५१॥ राग बिभास॥ चंद्रावलि धाम श्याम भोर भए आए। इत रिस करि रही वाम रैन जगी चारि याम देख्यो जो द्वार कान्ह ठाढ सुखदाये॥ मंदिरते रहि निहारि मनहीमन देत गारि ऐसे कपटी कठोर आए निशि बीते। रिस नहिं सकी सँभारिबैठि चली द्वारि नारि ठाढे गिरिधारि निरखि छबि नख शिखहीते॥ बिनुगुन बनि हृदय माल ताबिचनखछतरसाल लोचन दोउ दरशिलाल जैसी रिस गाढी। जावकरँग लग्योभालंबदन भुजपरविशाल पीकपलक अधर झलक वाम प्रीति गाढी॥ क्यों आए कौन काज नाना करि अंग साज उलटे भूषण शृंगार निरखत हौं जाने। ताहीके जाहु श्याम जाके निशि बसे धाम मेरे गृह कहा काम सूरदास गाने॥ ५२॥ राग बिलावल॥ तहीं जाहु जहिं रैनि बसे हो। काहेको दाइन हौ आएअंगअंग देखति चिह्न जैसेहो॥ अरगजे अंग मरगजी माला वसन सुगंधभरेसे हो। काजर अधर कपोलन चंदन लोचन अरुन धरेसे हो॥ पलकनिपीकमुकुर लै देखो एको नहीं अनैसेहो। सूरदास प्रभु

पीठ बलै गडे नागरि अंक भरेसे हो ॥५३॥ राग सारंग ॥ तहँइ जाहु जहँ रैनि रहे बसि। कैतव कत दामिनि पद प्रगटत आए मारन दुअन बान कसि॥ सिथिल सरोज रोर सुठि शोभित शीशहुते कछु पाग रही धसि। जावक रस मनो संबर अरिगण पिया मनाई पद ललाट घसि॥ बिन गुण माल मराल तरनि गति मगन चाल पद परत रहत खसि। चंदनचरचित कुच उर उपटित मनु नवघनमें उदित दोउ शशि॥ सखियन समाचार लिखि पठए तन कागज नख लिखनि रुधिर मसि॥ सूरदास प्रभु श्रीगोपाल हैं मानौ जागत गई निशा नशि॥५४॥ राग बिलावल॥ तहइँ जाहु जहां निशा बसे हो। जानत हौं पिय चतुर शिरोमणि नागरि नागर रासरसे हो॥ घूमतहो मनो प्रिया उरगिनी नव बिलास श्रमसे जु डसेहो। काजर अधरनि प्रगट देखियत नागवेलि रँग निपट लसेहो॥श्याम उरस्थल ऊपर रेखा मनहुँ गगन शशि उदित दिसेहो। लटपटी पाग महावरके रँग मानिनिपगपर शीश घसे हो॥विगलितवसन मरगजी माला पीठ वलयके चिह्न लसेहो। सूरदास प्रभु प्रियावचन सुनिनागरनगधर नैकहँसेहो॥५५॥ तहइँ जाहु जहँ रैनि हुते। काहे दुराव करत मनमोहन मिटे चिह्न नहिं अंग जुते॥ विनही गुन उग्हार बिराजत परम प्रीति हिय लाइ सुते। बिथुरी अलक अटपटे भूषण काम कुटिल कुचबीच गुते॥ दशनदाग नखरेख बनीहै भामिनिभवन भले भुगुते। सूर सुदेश अधरमधु पीके लोचन अलस उनींदहुते॥५६॥ तहइं जाहु जहां रैनि गँवाई।काहेको मुँह परसन आए जानतिहौं चतुराई॥ वाके गुण मनते नहिं टारत बोलत नाहीं बैन। या छबिपर मैं तन मन वारौं पीक विराजित नैन॥ भली करी यह दरश दिखायो ताते नैन सिराने। सूर श्याम निशिको सुख लूट्यौ हमको मया बिहाने॥५७ राग सुघराई॥आए लाल ललित भेष किये। पीक कपोल अधर पर काजर जावक भाल दिए॥चंदन खौरि मेटि अब आए कुमकुम रंग हिए।पीतांबर तहां डारि कौनको नीलांबरहि लिए॥लालीदै पीरी लै आए देखत पुलकि जिए। सूरदास प्रभु नवल रसीले वोऊनवल त्रिए॥५८॥ ॥राग सूही॥ जागे हौजू गवरे नैना क्यों न खोलौ। भये त्रियाके वशनिसि जागे सरबस भोरभये उठि आए भूले कहा डोलौ॥ चंदन मिटाये तनु अतिही अलसात नागरीकी पीकलीक लागीतो कपोलौ। पीतांबर भूलिआए प्यारी जीको पटु ल्याए भोर भए उठे सूर किए आए दोलौ॥५९॥ ॥राग बिलावल॥पीतांबर पट कहा भयो। नीलांबरओढेहो आए अति दुहुँ डहो नयो॥तैसोइअंग वसन रंग तैसोइ कहा कहौं यह शोभा। तैसिय बनी मरगजीकेसर ता त्रियके मनलोभा॥ एते पर क्यों बोलत नाहीं कहा खोइसे आए। सूर श्याम यह अब मैं जानी नागरिचित्त चुराए॥६०॥ ॥ राग भैरव॥हाहाहो पिय बातकहौ। आप कछू जिय तरक गहत हो तौ तुम मोसों मौनगहो॥ कहा चूक हमको पिय लागै रूसिरहेहो काहेजू। तबहींते वैसेहि हो ठाढे मोतनको नहिं चाहेजू॥अब हमको अपराध क्षमैंगे कृपा करौ मुख बोलोजू। सूर श्यामअब तजो निठुरई गांठि हृदयकीखोलोजू॥ ॥६१॥राग बिलावल॥ रूखेहौ पिय रूखेहो। उत्तरको उत्तर न देतहौ देखतही न कछू खेहो॥ वह चितवनि न होइ नैननकी वचनहुंते उतहूखे हो। वह मुखकमल विकास नहीं रति सायक शरहि विदूषेहो॥ की छुटि गई संपदा करते की ठगठगे कछूसेहो। मेरेहु जान सूर प्रभु सांचे मदन चोर मिलि मूसेहो॥६२॥ मदनचोरसों जानि मुसायो। अपनी लाली खोइ पीककीलाली पलकनि पायो॥ह्यांते गए चतुरई लीन्हें सो सब उनहिं छपायो॥ आलस अबल जम्हात अंग ऐंडात गात दरशायो। कंचन खोय कांच लै आये चिढतो भलो फवायो। सूर कहूँ घर पर मन नाहीं जैसे हाल करायो॥६३॥राग काफी॥ लाल उनींदे नयना आलस भरि आए। अरुझि काम-

कीबेलिसों कौने बिरमाए ॥ सिथिल पाग दस्तारकी जावकरँग भीने। पाँइ परे अपवश करे तब सरबस दीने ॥ लाली मेरे लालकी सबही तन ढीले । लाली लै लालनगएआएमुखपीले॥ बिनगुन माल हिये लसै प्रिय प्रीति निसानी । सखि रसाल हमको दई तुम देहु बिरानी ॥ पग डगमग इतको धरो उतको दृग धाए । अभ्यंतर अंतर बसे पिय मोमन भाए ॥ उलटि तहां पग धारिए जासों मन मान्यो । छपदकंजतजि बेलिसों लटि प्रेम नजान्यो ॥ तब हँसिबोलेश्यामजीतुमतकोप्यारी। तुमबिनु कल मोको नहीं अतिही सुखकारी ॥ वचनचतुई छांडिदेहु कहाये पढि आए । सूरश्याम गुणराशि हौ नीके प्रगटाए॥६४॥ राग सुघराई॥ आए लाल यामिनी जागेसे भोर।नील कलेवर कोमल ऊपर रगडिगए कुच जे कठोर॥निशि वसिरहे मानिनीके गृह ह्यांउठिआएभोर।सूरदासप्रभुवचन बनावत अबचोरत मन मोर॥६५॥ आए लाल ललित भेप किये । पीक कपोल अधरपर काजर जावक भाल दिए ॥ चंदनखौरि मेटि अब आए कुमकुम रंग हिए। पीतांबर कहांडारि कौनको नीलांबरहि लिए ॥ लाली दै पियरी लैआए देखत पुलकि जिए। सूरदास प्रभु नवलरसीले वोऊ नवल त्रिए ॥ ६६ ॥ मैं जानी जिय जहँ रति मानी। तुम आएहो ललना जब चिरिआं चुहचुहानी ॥ मुखकी बात कहा कहौं ठानी बात नहीं पहिचानी। येतेपर अँखियांरससानी अरुपगिया लपटानी॥भाले जावकरंग बनानी अधरैं अंजन परगट जानी।बिनगुण बनी माल सब अंगन उलटी सकल निसानी ॥ सूरदासप्रभुगुननिधानी अंतरगतिकीमैंसबजानी।धनित्रियतुमकोजोसुखदानी संगम जागत रैनि बिहानी ॥६७॥ राग बिभास॥ मैं जानी पिय बात तुम्हारी।भोरभए मेरेगृह आए ऐसे भोरे भारी ॥ ह्यां आए मुख परसन मेरे हृदय टरति नहिं प्यारी। कपट चतुरई दूरि करौजू अपयश लेत रु गारी ॥ कहा सांच मैं खोवत करते झूठे कहा फबावति।सूर श्याम नागर नागरि वह हम तुम्हरे मन आवति ॥ ६८ ॥ राग काफी॥ रैनि रीझे की बात कहो । काहेको सकुचत मनमोहन ठाढे क्यों न रहौ ॥ पीतांबर कहा भयो तुम्हारो कीधौं लियो गहो । नीलांबर पहरावनि पाई सन्मुख क्यों न चहो ॥ तब हँसि चले श्याम मंदिर तन कछु जिय लाज गहो। सूर श्याम ह्यांई अब रहिए अति पुनीत तुमहो ॥६९॥ राग बिलावल॥ तुमरीझे की उनहिं रिझाए। हाहा यह पिय प्रगट सुनाए कोटिक सौंह दिवाए ॥ जावक भाल चिह्न मैं जान्यों हठ करि पाँय लगाए। नैनन पीक मया उनि कीन्हीं अंजन अधर लगाए॥ बिनुगुन माल मिली कहँ तुमको कंकन पीठि देखावहु । सूर श्याम हमतौ यों जानति तुमहू कहि न सुनावहु ॥ ७० ॥ माधव नीकी विधिसों आए । नखरेखा उर मंडित मानो द्वितिया चंद उगाए ॥ बिगलित वसन पाग डोलतिहै केहरि चाल चलाये । सर्बसु आनि जु रहे सूरप्रभु उत मेरे मन भाए ॥ पाउँ धारिए वामधाम जहँ चारोंयामगँवाए॥७१॥ राग बिलावल॥ आजु हरिपायोहै मुँहमाँग्यो। जबतेतुमसों बिचारयो मनसिज देसिलवारयो त्यागयो ॥ कहुँ जावक कहुँ बने तमोर रंग कहुँ अंग सेंदुर दाग्यो। मानो रन छूटे घायलको जहँ तहँ शोणित लाग्यो ॥ नख मानो चंद्र बाण साजिकै झझकारत उर आग्यो। सूरदासमानिनिरण जीत्यो भ्रमर संग डरि रणभाग्यो ॥७२ ॥ आजु हरि रैनिउनींदे आए ॥ अंजन अधर ललाट महाउर नैन तमोर खवाए। बिनुगुन माल बिराजत उर पर चंदन खौरि लगाए। मगन देह शिर पाग लटपटी जावक रंग रँगाए ॥ हृदय सुभग नखरेखबिराजत कंकन पीठि बनाए । सूरदास प्रभु इहै अचंभव तीन तिलक कहां पाए ॥ ७३ ॥ आजु हरि आलसरंग भरे । कबहुँक बाँह जोरि एंडावत बहुत जम्हात खरे ॥ बैठोगे की पांव धारिए देखत नैन

सिराने। साँझ आइकै दरशन दीन्हों की अब होत बिहाने ॥ कबके द्वार भए पिय ठाढे भोरे बडे कन्हाई। सूर श्याम ह्वां सुरति करत वह ह्यां तुम झेर लगाई ॥ ७४ ॥ सौंह करनको भोरही तुम मेरे आए। रैनि करत सुख अनतही ताके मन भाए ॥ अँग अंग भूषण औरसे माँगे कहुँपाए। देखि थकित यह रूपको लोचन अरुनाए। मान कियो वोहि मानिनी धनि पाइँ पराए ॥ यह चतुराई कहँ पढी उनहीं समुझाए। सूरदास प्रभुसांचिलै उपमा कविगाए ॥ ७५॥ राग गौरी॥ तुमको कमलनैन कवि गावत। वदन कमल उपमा यहु सांची ता गुनको प्रगटावत॥ सुंदरकर कमलनकी शोभा चरणकमल कहवावत।और अंग कहि कहा बखानों इतनेहिको गुण गावत॥ श्याम नाम अद्भुत यह बाणी श्रवण सुनत सुख पावत। सूरदास प्रभु ग्वालसँगाती जानी जाति जनावत ॥ ७६ ॥ तुम न्याय कहावत कमलनैन। कमल चरणकर कमल वदनछबि अरज सुनाइत मधुर बैन ॥ प्रात प्रगट रति रविहि जनावत हुलसत आवत अंक दैन। निशि दै द्वार कपाट सदनबधु मधु पति प्यावत परमचैन॥ मिलेहु मांझ उदास अनत चित वसत सदा जल एक ऐन। सूर कपट-फल तबहिं पाइहौ अपनी अरप जब देहै भैन ॥ ७७ ॥ राग भैरव॥ धीर धरहु फल पावहुगे। अपनेही पियके सुख चांडे कबहूं तौ वश आवहुगे॥ हमसों कहत औरकी औरै इन बातन मन भावहुगे। कबहुँ राधिका मान करैगी अंतरविरह जनावहुगे ॥ तब चरित्र हमहीं देखैंगी जैसे नाच नचावहुगे। सूर श्याम अतिचतुर कहावत चतुराई बिसरावहुगे ॥ ७८ ॥ राग देवगंधार ॥ यह कहि प्यारी भवन गई। रीझे श्याम देखि वा छबिपर रिस मुख सुंदरई ॥ द्वारकपाट दियो गाढे करि कर आपने बनाई। नेक नहीं कहुं संधि बचाई पौढिरही तबजाई ॥ यहि अंतर हरि अंत-र्यामी जो कछु करै सु होई। जहां नारि मुख मूँदी पौढिरही तहां संग रहे सोई ॥ जो देखे ह्यां संग बिराजत चली त्रिया झहराई। एक श्याम आंगनही देखे इक गृह रहे समाई॥ उतकोवैअति बिनय करतहैं इक अंकम भरिलीनी। सूर श्याम मनहरन कहावहु मन हरिकै वश कीनी॥७९॥ राग कल्याण ॥ तब नागरि रिस भूलिगई। पुलकि अंक अँगिया उर दरकी अंग अनंग जई ॥ अंकम भरि पिय प्यारी लीन्हीं निशिसुख वासर दीन्हों।मान छँडाइ हुलास बढायो सुफल मनो-रथ कीन्हों ॥ तब निजधाम श्याम पगधारे तहां सहचरी आई। सूरज प्रभु रसभरी नागरी देखि रही मनलाई ॥ ८० ॥ राग आसावरी ॥ चंद्रावली हरषसों बैठी तहां सहचरी आई हो।औरैबदनऔर अँगशोभा देखिरही चख लाई हो॥ कहा आज अतिहरषित बैठी कहा लूटिसी पाई हो।क्यों अँग शिथिल मरगजी सारी यह छबि कही न जाई हो॥ मोसों कहा दुराव करतिहै कहा रही शिर नाईहो। मैं जानी तोहिं मिले सूर प्रभु यशुमति कुँवरकन्हाईहो ॥८१॥ राग आसावरी॥ चंद्रावली करतिचतुराई सुनत वचन मुख मूँदिरही। ज्वाब नहीं कछु देति सखी क्यों हाँ नाहीं कछु बैन कही॥ गूँगेगुरकी दशा भई है पूरण श्याम सोहाग सही। आये श्याम सदन सुखभारी दुख निवारि आनंद करी। वहै ध्यान हरिके अनुरागी वह लीला चितते न टरी॥ तब बोली मोसों कछु बूझति कहा कहौंमुख बनै नहीं। सूर श्याम युवतीमन मोहन तिनको गुण नहिं परत कही ॥८२॥ राग बिलावल ॥ हाहा कहि चंद्रावलि मोसों हरिके गुण मैंहू सुनिलेउँ। श्रवणन मग सुनि हृदय प्रकाशौं पुनि पुनि उत्तर देउँ ॥ की तोहिं मिले तीर यमुनाके की तोहिं मिले भवनही माँझ। कहौं तोहिं मेरे गृह आए मानो अस्त होत रवि साँझ ॥ कहूं वामके धाम बसे निशि भोर सदन गए मेरे आइ। सूर श्याम जो चरित उपायो कहनचहौं मुख कह्यो न जाइ ॥ ८२ ॥ राग गौरी ॥ अब तो कहे बनैगी

माई। कहा श्याम अचरज सो कीन्हों कहत कह्यो नहिं जाई॥कैसे लाल अनतते आए कैसे तेरे गेह। कैसे मान कियो क्यों मिटिगए कैसे बढ्यो सनेह॥ तब गद्गद वाणी मुख प्रगटी सुन सजनी दै कान। सूरजप्रभुके चरित सुनाऊँजैसेबिसरयोमान ॥८४॥राग बिलावल॥ प्रातसमैमेरेमोहन आए। कुंचित केश कमल मुख ऊपर हृदय रहो वन अलिकुल छाए॥डगमग चाल परत न सुध पग इहि बिधि तौ मेरे मन भाए। कहुँ कहुँ पीक कहूं काजर कहुँ नखरेखा अति बनत सुहाए॥ मो तन बीच निरखि मुसुकाने छोरिपीतपटअंक दुराए। सूरश्याम माधव बलि बलि अब श्यामजानि हौं पाए ॥८५॥राग गौरि॥मैं हरिसोंहो मानकियोरी। आवतदेखि आन बनितारति द्वारकपाटदियो री॥अपनेही कर सांकर सारीसंधिसंधिसीयो री।जोदेखौंतोसेजसुमूरति कांप्यो रिसनिहियो री॥ जब झुकि चली भवनते बाहर तब हठि लौटिलियो री। कहाकहौंकछुकहत न आवै हेतुगोबिंद वियो री॥ बिसरि गई सब रोष हरष मन पुनि फिरि मदन जियो री। सूरदास प्रभु अति रति-नागर छलिमुखअमृतपियो री ॥ ८६॥राग बिलावल॥तबहींते भयो हरपहियो री। वैसे आइचरित ए कीन्हें सदन पैठि मन चोरि लियो री।अंग वामछबि शेष देखिकै रिस उपजी जियभारी।क्रोध गयो उर आनँद उपज्यो सुख तनुदशा बिसारी॥ ऐसे चरित कौनको आवै जेकीनेगिरिधारी। सूर श्याम रतिपतिके नायक सब लायक बनवारी ॥८७॥ राग भैरव॥ नंदनँदनसुखदायक हैं।नैन सैनदै हरत नारिमन काम कामतन, दायक हैं॥ कबहूं रैनि बसत काहूके कबहुँ भोर उठि आवत हैं। सुनहु सूर जेइजेइ मन भावत तेइतेइ रँग उपजावत हैं॥ ८८॥ राग बिलावल॥ अनतहि रैनि रहे कहुँ श्याम। भोर भए आए निजधाम ॥नागरि सहजरही मनमाहीं। नंदसुवन निशि अनत न जाहीं॥महरसदनकी मेरे गेह। हिरदय है त्रिय इहै सनेह॥आये श्याम रही मुख हेरि। मनमनकरन लगी अवसेरि॥ रतिरस चिह्न नारिके बानि। सूर हँसी राधा पहिचानि॥८९॥राग रामकली॥ आज बने पिय रूप अगाध। परउपकार हेतु तनुधारयो पुरवत सब मन साध॥धर्मनीति यह कहाँपढी जू हमहूं बात सुनावहु। कहो कहांकाको सुख दीनो काहेन प्रगट बतावहु॥ धनि उपकार करत डोलतहौआजबात यह जानी।सूर श्यामगिरिधर गुननागर अंग निरखि पहिचानी॥९०॥रागगूजरी पियछबि निरखि हँसति त्रियभारी।कहां महाउर पाग रँगाई यह शोभा इक न्यारी॥अरुणनयनअलसान देखियत पलक पीक लपटानो।अधर दशनछत बंदन राजत बंधुकपर अलिमानो॥ हृदय रुचिर मोतिनकी माला नखरेखा तेहितीर।बिनुगुण माल सूरके स्वामी कुंकुम श्यामशरीर॥९१॥ राग बिलावल॥ धन्य आजु यह दरशदियो।धन्यधन्य जासों अनुरागे तब जानीनहिंऔरवियो॥भले श्याम वह भली भावती भले भली मिलि भली करी। यह मेरे जिय अतिहि अचंभित तौबिछुरत क्यों एक घरी॥ जाहु तहीं सुख दीनो मोको वे सुनिकै रिस पावैंगी। सूर श्याम अतिचतुर कहावत बहुरो मननमिलावैगी ॥९२॥ क्यों आये उठि भोर इहां। काहेको इतनो शरमाने रैनिरहे फिरि जाहु तहां॥ हमको कहा इती गरुआई उनहीं क्यों न सम्हारो जू। उन आए ह्यां नाहींजान्यो अजहूंलों पगधारो जू ॥ हमहूं बोलि वहाँई लीजो डर उनको हमहूकोहै। सूर श्याम तिनहीं सुख दीजे जो बिलसैं संग तुमकोले ॥ ९३॥राग रामकली॥ उनहींको मन राखे काम। ह्यां तुम आए ह्यां नाहीं बातसुनतहां नाहीं श्याम ॥ देखौं अंगअंग प्रतिशोभा मैंतो भूलीहौं यहिरूप। धनि पिय बने बनी वेऊ हैं इकइक रूप अनूप॥ सो छबिमोहिं देखावन आए मायाकरी बहुतहरिआजु। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि वहो रसिकनी बन्यो समाज॥ ९४॥ राग बिलावल॥रसिकरसिकई जानिपरी। नैननते अब न्यारे हूजे तबहींते अति रिसनि भरी॥ तुम जोवन अरु सो नवजोबनि

येतेपर सब गुणनि भरी । लाज नहीं मेरे गृह आवत जाहु जाहु करि त्रिय झहरी ॥ अंजन अधर कपोलन बंदन पीक पलक छबि देखि डरी । सूरश्याम रतिचिह्न देखावन मेरेआए भलेजु हरी॥ ॥ ९५ ॥ राग धनाश्री ॥ श्याम त्रियासन्मुख नहिं जोवत । कबहुं नैनकी कोरनिहारत कबहुँवदन पुनि गोवत ॥ मनमन हँसत त्रसत तनु परगट सुनत भावती बात । खंडित वचन सुनत प्यारी-के पुलक होत सब गात ॥ इह सुख सूरदास कछु जानै प्रभु अपनेको भाव । श्रीराधा रिस करति निरखि मुख सो छबिपर ललचाव ॥ ९६ ॥ पियको सुख प्यारी नहिं जानै । जोइ आवत सोइसोइ कहिडारत जाहुजाहु तुम गानै॥ काहेको मोहिं डाहन आए रैनि देत सुख वाको । भली नवेली नोखी पाई जो जाको सो ताको ॥ चंदन बंदन प्रियअँग कुमकुम शेप लिए ह्यां आए । सूर श्याम यह तुमहिं बडाई औरनको शरमाए॥ १७ ॥ राग बिलावल ॥ औरनकोछबि कहादेखावत। तुमहीको भावत मनमोहन हम देखत रिसपावत॥आपुनको भइ बडी प्रतिष्ठा जावकभाल लगाए। याको अरथ नहीं कोउ जानत मारत सबन लजाए।पियनिधरक हमअतिसकुचतहैंदर्पणलैमुखदे-खो। सूर श्याम क्यों बोलत नाहीं क्यों हमतननहिं पेखो९८राग गौरी॥श्याम हँसे प्यारीमुखहेरो। रिसहि उठी झहराइ कह्यो यह बश कीन्हों मनमेरो॥जायहँसोपियताहीआगे मैंरीझीअतिभारी। ऐसे हँसिहँसि ताहि रिझावहु देउँ कहाअब गारी॥होत अबार गमन अबकीजे धरणीकहानिहारत। सूर श्याम मनकी मैं जानी ताके गुणहिं बिचारत ॥९९॥ राग देवगंधा ॥मैं जानी पियमनकीबात। धरनी पगनख कहा करोवत अब सीखे ए घात ॥तुम जानत जिय हमहि सयाने अरु सबलोग अयाने । रैनि वसत कहुँभोर हमारे आवत नहीं लजाने॥ यह चतुरई पढी ताहीपै सो गुण हमते न्यारो । धनि धनि सूरदासके स्वमी काहे हम न बिसारो ॥ २०० ॥ मैं जानेहौंजू ललना तहीं न सिधारिए जहां नयो नेहरा । मुँहकी हलभलई मोहूसों करन आए जियकी जासों ताहीसों तुमबिन सूनो वाको गेहरा ॥ निशिके:सुखकी कहेदेत अधर नैना उर नख लागे छबि देहरा । वेगि सबारे पाँइ धारिए सूरके स्वामी नतरभीजैगो पियरोपट आवतहैपिय मेहरा ॥१॥राग मलार॥ ठाढे रहो आँगनही हो पिय जोलौं मेह न नखशिख भीजौ । परनदेहु बडीबडी बूँदें तुम चीर उतारि और वस्त्र पहिरो तब गेहदेहरी पांव दीजो॥ कहिए बात रैनिकी सांची ता पीछे सौहैं की-जो । सूर श्याम तुम हौ बहुनायक देह सुधारि मोहिं छीजो ॥ २ ॥ मोहूसोंनिठुरईठानीमोहन प्यारे काहेको आवन कह्यो सांचे । प्रीतिके वचन बाचे विरहअनल आंचे अपने गरजको तुम एक पांइ नाचे ॥ भले हौजू जाने लाल अरगजे भीने माल केसरितिलक भाल मैनमंत्र काचे । निशिचिह्न चीन्हें सूरश्याम रतिभीनेताहीके सिधारोपियजाके रंग राचे॥३॥ राग मालकौशिक ॥तुम जिनि सकुचो प्यारेलाल मेरे जात्रियसों रति मानी ताहीकेरहोअब।मैं इतनेहीमें भलोमानौं प्रीतम जो मेरे आँगन पाँव धारे आपन जब ॥ नैन तृप्त भए दरश देखतही श्रवण तृप्त भए वचन सुने तब । सूरदास प्रभु चरण छुए कहति रोमरोम पुलकित अंग भए सब ॥ ४ ॥ राग कान्हरो ॥ नैन चपलता कहां गँवाई । मोसों कहा दुरावत नागर नागरि रैनि जगाई ॥ ताहीके रँग अरुण भए हैं धनि यह सुंदरताई । मनो अरुण अंबुजपर बैठे मत्त भृंग रस आई ॥ उडि न सकत ऐसे मतवारे लागत पलक जँभाई । सुनहु सूर यह अंगमाधुरी आलसभरे कन्हाई ॥५॥राग बिलावल॥ नैनकी चंचलता कहा कीन्हें भीने रंग कौनके हो श्याम हमहूँसों करत दुरावत । औरनि-को वदन देखिबेको नेम लियो ताके पलकनि राखे भार भरे नए आवत ॥ पुहुपगंध लोभ

भँवर उडिन सकत फिरि बैठत जा समीप रति मानी संग लिए आवत रतिकीरति गावत। सूरदास प्रभु प्यारे प्यारी रसवश कीन्हें मुखकी हमहि बनावत ॥ ६ ॥ राग कान्हरो ॥ जाके रस रैनि आजु जागे हो लालजाई। जावक तिलक भाल दीयो है नंदलाल बिनुगुन बनी माल कहत अनोखी अरु बातनि बनाई ॥ अधर अंजनदाग मिट्यो है पीक पराग और मिटी बंदनकी ललाई। अंग अंग शिथिल भएहो प्रेम सूरके स्वामी मिटि गई चंचलताई ॥ ॥ ७ ॥ रंग भरि आएहो मेरे ललना बातैं कहतहो अटपटी। अति अलसात जम्हातहो प्यारे पिय प्रगट त्रिया परताप छुटत नहिंन अंतरकी गटी ॥ यह चतुराई अधिकाई कहाँ पाई श्याम वाके प्रेमकी गढि पढ़ेहो पटी। सूरदास प्रभु गिरिधर बहुनायक तन मन नैन चटपटी ॥ ८ ॥ ॥ राग ईमन ॥ डोलत महलमहल इहै टहल हम जानति तुम बहुनाइक पिये। आयेहो सुरति किए ठाटकरख लिये सकसकी धकधकीहिये। छूटे बंदन अरु पागकी बांधनि छूटी लटपटे पेच अटपटे दिये। सूरदास प्रभु हौ बहुनायक मेरे पाँवधारे बैठो जु बैठो भली किये ॥ ९ ॥ महल महल अब डोलतहो। इहै कामते धाम बिसार्‌यो बूझे काहे न बोलतहो॥ बहुनायककी आजु मैंजानी कहा चतुरई तोलतहो। निशिरस कियो भोर पुनि अटके शिथिल अंग पुनि डोलतहो ॥ टटके चिह्न पाछिले न्यारे धकधकात उर जोलतहो॥ जाहु चले गुन प्रगटसूर प्रभु कहा चतुरई छोलत हो ॥ १० ॥ अँग अँग रंग भरे आऐहो। रंगभरी पाग भालरँग शोभा रँग रँग नैन पगाएहो॥ रँग कपोल रँग पलकनि शोभा अधरन श्याम रँगाए हो। नखछत रंग चारु उर रेखा रतिरँग रैनि जगाए हो॥ कंकण वलय पीठि गडि लागे उरपर छाप बनाए हो। सूर श्याम वामारँग पागे अनुरागे मन भाए हो ॥ ११ ॥ राग बिलावल॥ बारबार मैंकहतिहौं पिय तहाँ सिधारो। आएहो मन हरनको हरि नाम तुम्हारो॥ भली बनी छबिआजुकी क्यों लेतजम्हाई। रैनिआजसोएनहीं रति काम जगाई ॥ वह गति तुम रतिनाथ हो हम कैसे भावैं। सूरश्याम तेबहुगुणी जे तुमहिं रिझावैं॥ १२ ॥ राग सोरठ ॥ सकुचत श्याम कहत मृदुबानी। किनि देख्यो किनि कही बात यह मो हुजूर कहै आनी ॥ याते वचन बोलि नहिं आवत रिस पावतहौं भारी। जोरि कहति बातैं तुमआगे खोटी ब्रजकी नारी॥ तुमहूंते ऐसी को प्यारी सौंहकरौंजोमानौ। सुनहु सूर जो बूझति मोकोमैंकाहुनपहिचानौं ॥ १३ ॥ राग बिलावल॥ को पतिआइ तुम्हारी सौंहनि। वा तियकोअनुराग देखियत प्रगट रावरी भौंहनि॥ तुलसीको कहि नीम प्रगट कियो मोहीते करि बोहनि। प्रात आइ मन पोषन लागे आए चालन कोहनि॥ मुँहहींकी हमसों मिलवत जिय बसत जहाँ मनमोहनि। सूर सुवस घर छाँडि हमारो क्यों रति मानत खोहनि ॥ १४ ॥ राग भैरव॥ बिन बोले पिय रहिए जू। नाहीं कही कहै कहा ताको अब ऐसे जिनि दहिए जू ॥ मौनरहोतो कछूगँवावहु इन बातन कछुलहिए जू। सौंह कहा करिहौ सुनि पावहिं सन्मुख ह्वै धौं कहिए जू॥ एतेपर कहा वादनलागे कैसे रिस मन सहिए जू। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि रसिकहि सबगुण चहिए जू॥ १५ राग बिलावल॥ आइगईं ब्रजनारी तहाँ। सौंह करत पिय प्यारीआगे आनँद विरहमहाँ ॥ प्यारी हँसि देखी सखियनको अंतर रिस है भारी। नैनसैन दै अंग देखावति पिय शोभा अधिकारी ॥ श्याम रहे मुख मुँदि सकुचिकै युवति परस्पर हेरैं। सूरदास प्रभुअँग अनूप छबि कहँपायो केहिकेरैं॥ १६॥ तब नागरी कहति सखियनसों एतेपर क्यों सौंह करैं। दरशन प्रात देतहैं हमको निशि औरनके चित्त हरैं॥ तुमहीं देखिलेहु अंगबानक एतेपर क्यों सही परैं। कृपा करैं अब तहीं सिधारैं सो

आगेते अब जु टरैं॥ यह छबि देखि सनाथ भई मैं अब ताहीपर जाइ ढरैं। सूर श्याम रिस देखि चले डरि कहौ सखीअब ह्यांन फिरैं ॥१७॥राग बिहागरो॥श्याम गएत्रियमानकियो।देखोमोहिंदोप तुम देती उन ऐसे मन चोरिलियो ॥ जाहु सदन तुमहूं सब अपने मैं बैठी हौं धाम ।जानदेहु अब ह्यां जनि आवैं ऐसेनको कहा काम ॥ अनतहि बसत अनतही डोलत आवत किरिन प्रकास। सुनहु सूर पुनि तौकहिआवैंतिनगि गएता पास ॥१८॥ अथ राधाजूको मान ॥ राग बिलावल॥यहकहि-कै त्रिय धाम गई। रिसनि भरी नख शिख लौं प्यारी जोबन गर्व मई ॥ सखी चलीं गृह देखि दशा यह हठ करि बैठी जाइ ।बोलत नहीं मान करि हरिसों हरि अंतर रहे आइ ॥ यहि अंतर युवती सब आईं जहां श्याम घर द्वारे। प्रिया मान करि बैठिरही है रिस करि क्रोध तुम्हारे॥तुम आवत अतिही झहरानी कहा करी चतुराई।सुनत सूर ए बात चकित पिय अतिहि गए मुरझाई॥ ॥१९॥राग बिहागरो॥बहुरि नागरी मान कियो।लोचनभरिभरिढारिदियेदोउ अतितनुबिरहहियो॥ देखतही देखत भए ब्याकुल त्रिय कारण अकुलाने। वे गुन करत होत अब काचे कहियत परम सयाने॥ यह सुनिकै दूती हरि पठई देखि जाय अनुमान।सूर श्याम यह कहतहि पठई तुरत तजहि जेहि मान॥२० ॥राग केदारो॥दूती दई श्याम पठाइ। और मुख कछु बातन आवै तहां बैठी जाइ ॥ प्रिया मन परवाह नाहीं कोटि आवैं जाहिं। सौति साल सलाइ बैठी डुलति इत उत नाहिं ॥ भीति बिन कह चित्र रेखै रही दूती हेरि। सूर प्रभु आतुर पठाई करत मन अवसेरि ॥ ॥ २१ ॥ राग कान्हरो॥दूती मन अवसेर करै। श्याम मनावन मोहिं पठाई यह कतहूं चितवैनटरै॥ तब कहि उठी मान अति कीन्हों बहुत करी हरि कहौ करौ।ऐसे बिन वे नहीं जानिहैं अबकबहूं जनि उनहिं ठरौ ॥ मैं आवति यमुनातटते ब्रज सखी एक यह बात कही। सुनहु सूर मैं गहि न सकी गृह कही श्यामकी प्रकृति सही॥२२ ॥ राग बिहागरो ॥ अब द्वारेते टरत न श्याम।अबपरघर-की सौंह करत हैं भूलि करौं नहिं ऐसे काम ॥ अब तू मान तजै जिनि उनसों इहै कहन आई तेरे धाम। अब समुझी औरौ समुझयो वै हम जब कहैं करैं तब ताम॥ अब मोको यह जानि-परी है काहूके न बसे कहुँ याम। सूरदास दूतीकी वाणी सुनति धरति मनही मन वाम ॥२३॥ राग सूहो ॥ जब दूती यह वचन कह्यो। तब जानी हरि द्वारे ठाढे उर उमँग्यो रिस नहीं रह्यो॥ काहेको हरि द्वार खरेहैं किन राखे कहि जीभ गरे। मौन गहे मैंही कहिआवौं तू काहेको रिसनि जरे ॥ चतुर दूतिका जानि लई जिय अब बोली गयो मान सबै। सूर श्यामपै आतुर आई कहत आनकी आनफबै ॥२४॥राग केदारो ॥ काहिमनाऊंश्यामललबालजोरैनहिंडीठि। मुखहूंजोबोलै तौ ममहीकी लहिये ऐसी तिहारी अदीठि॥ अपनी सी बहुत कही सुनिसुनि उनसबै सही बारू-की बूंद ताको कहा करै बसीठि। सूरदास पिय प्यारी आपुहीं जाइ मनाय लीजै जैसी बयारि बहै तैसी ओढिए जू पीठि ॥ २५ ॥ललन तुम्हारी प्यारी आजु मनायो न मानति। बृझिनपरति जानि का बैठी कियो जु इत रिस तुमही लैकोटिअवगुणगानति॥भरिभरिअँखियननीरलेतिपढा-रति नाहीं अतिरिस कँपति अधर फरकि करि भ्रुकुटी तानति। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि आपुन चलिए तौ भली बानति ॥२६॥राग पूरबी ॥ हौंकैसेकैलयाऊंजोमरमपाऊंश्यामवाकीमान मानो गढवै भयो। तनु कंचनगिरि प्रगट कियो तामें बसन कोटि रच्यो अंचल ड्योढी ओट दियो॥ वचन पौरिआ बोलन खोलै मुखपौरि मूँदिरह्यो॥ मोहन भौंहें कमान नैना रिसके बान ताते जाइ न निकट गयो ॥ साम दाम दण्ड भेद सबै मैं करि देख्यो सूरदास प्रभु चतुर कहावन

आपुन चलिए जो तुमहूंपै जाय लयो ॥२७॥राग नट॥ विहरत मानसरसकुमारि। कैसेहूं निकसत नहीं हो रही करि मनुहारि ॥ मौन पारि अपार रचि अवगाह अंश जु वारि। मन गह्योवे डरत नाहीं थकित प्रगट पुकारि ॥ सूर श्याम सरोज लोचन डुलन जनु जलचारि। ग्राह ग्राहक प्राण चाहक करत तहँ डर डारि ॥ चिकुर सइबर निकरि अरुझति सकति नहिं निरुवारि। नील अंचल पत्र पद्मिनि उरज जलज निहारि ॥ रच्योरचिरुचि मान मानिनि मनमरालमुरारि। सूर आपुन आनिए गहि बाँह नारि निकारि॥२८॥राग विहागरो॥ यह सुनि श्याम विरह भरे। कहुँ मुकुट कहुँ कटि पितांबर मुरछि धरणि परे॥ युवति भरि अंकवारि लीन्हों है कहा गिरिधारि। आपुही चलि बाँह गहिए अंक लीजै नारि॥ अतिहि व्याकुल होत काहे धरो धीरज श्याम। सूर प्रभु तुम बडे नागर विवश कीन्हें काम॥राग गम कली॥ श्यामहिं धीरज दे पुनि आई। वाणी इहै प्रकाशत मुखमें व्याकुल बडे कन्हाई ॥ बारंबार नैन दोउ ढारत परे मदन जंजाल। धरणि रहे मुरझाइ बिलोके कहा कहौं बेहाल ॥ बैठी आइ अनमनी ह्वैकै बारबार पछितानि। सूर श्याम मिलिकै सुख देहिन जो तुम बडी सयानि ॥ ३० ॥ तुही प्रिया भावती नाहिंन आन। निशि दिन मन मन करत मनोहर रसवश केलि निदान ॥ ध्यान बिलास दरश संभ्रम मिलि मानत मानिनि मान। अनुनय करत विवश बोलतहैं दै परिरंभण दान ॥ प्रथम समागमते नानाबिधि चरित तिहारे गान। सूरश्यामकह वर अंतर सुनि सुयश आपने कान ॥ ३१ ॥राग सारंग॥ श्यामातूअति श्यामहि भावै। बैठतउठत चलत गउचारत तेरिय लीला गावै ॥ पीतै पीत वसन भूषण सजि पीतधातु अँग लावै। चंद्रानन सुनि मोर चन्द्रिका माथे मुकुट बनावै ॥ अति अनुराग सैन संभ्रम मिलि संग परमसुख पावै। बिछुरत तोहि कासि राधा कहि कुंजकुंजप्रति धावै ॥ तेरो चित्र लिखै अरु निरखै बासरबिरहगँवावै। सूरदास रसरसी रसिकसों अंतर क्योंकरि आवै॥३२ ॥ राग बिहागरो ॥मनमन पछितायो रहिजैहै। सुनि सुंदरि यह समो गएते पुनि न शूल सहिजैहै ॥ मानहु मीन मँजीठ प्रेमरँगतैसेहीगहिजैहै। काम हर्ष हेरै हरि अंतर देखतही बहिजैहै ॥ इते भेदकी बात सखी री कत कोऊ कहिजैहै। बस्त भवन खनि कूप सूर त्यों मदन अगिनि दहिजैहै ॥ ३३ ॥ राग केदारो ॥ तेई नैन सुहावनेहो नेक न भावत न्यारे री। पलक ओट प्राण जाते तेरे री ध्यानचकोरचंदामेरेनैनचितवनिपर चेरे री॥ कमल कुरंग जु मधुप उपमा नहिं आवै चंचल रहत चितेरे री। सूरदास प्रभुकी तुहि जीवनि कतहि करत त्रिय झेरे री॥ ६४ ॥ राग आसावरी ॥ बनत नहीं राधे मानकिए।नंदलाल आरतकै पठई सौंह करतिहौं शीश छुए॥ जाके पद कमला कर लीने मनवचक्रम चितउन्हें दिये। ता प्रभुकी पठई हौं आई तू जु गर्वकी मोट लिये ॥ हरिमुख कमल सच्यो रस सजनी अति आनंद पीयूष पिये। सूरदास सकल सुख हरिसँग कृपा विमुख कै काल जिए ॥ ३५॥ राग सारंग ॥ जबजब सुरति करत। तबतब डबडबाइ दोउ लोचन उमँगि भरत ॥ जैसे मीन कमलदलको चले अधिक अरत। पलक कपाट न होत तबहींते निकसि परत ॥ आंसु परत ढरिढरि उरऊपर मुक्ता मनहुँ झरत। सहज गिरा बोलत न बनत हित हेरिहरत ॥ राधा नैन चकोर विना मुख मानहु चंद्र जरत। सूर श्याम तुम्हरे दरशन बिन नाहिंन धीर धरत ॥ ॥ ३६ ॥ रागसारंग ॥ चितै चलि ठुठुकि रहत। तव पद चिह्न परसि रसवश भए आधे वचन कहत ॥ किसलय कुसुम पराग अंवपै फेन अहत। कंटक जनु भू कठिन जानियत कष्ट लहत॥

कमलकोश कोमलविभाग अनुराग वहत । सूरदास सुंदर अतिशीतल मृदु वैन सहत ॥ ३७ ॥ हरि तोहिं बारंबार सम्हारैं। कहिकहि नाम सकल युवतिनके कहूं नहीं रुचि जेहि उर धारैं ॥ कबहुँक आँखि मूँदिकरि चाहत चित धरि ठौर निहारैं। तब प्रसिद्ध लीला वन विहरत अब नहिं तुमहिं बिसारैं ॥ जो जाको जैसो करि जानै सो तैसे हित मानै। उलटी रीति तुम्हारी सुनिकै सब अचरज करि जानै ॥ क्यों पतियाँ पठवै नहिं उनको बाँचि समुझि सुख पावैं। सूर श्याम हैं कुंजधाममें अनत न मन विरमावैं ॥ ३८ ॥ राधे हरि तेरो नाम बिचारैं। तुम्हरेइ गुण ग्रथित करि माला रसना करसों टारैं॥ लोचन मूँदि ध्यान धरि दृढकरि नेक नपलक उघारैं। अंगअंग प्रति रूपमाधुरी उरते नहीं बिसारैं ॥ ऐसो नेम तुम्हारो पियके कह जिय निठुर तिहारे। सूर श्याम मनकाम पुरावहु उठि चलि कहे हमारे ॥३९॥ राग बिलावल ॥ चल राधे हरि बोली री। उठि चलि वेगि गहर कत लावति वचन श्यामकी डोली री॥ तनुजोबनऐसेचलिजैहै जनु फागुनकी होलीरी। भीजि बिनशि जाई क्षणभीतर ज्यों कागजकी चोली री ॥ तोपर कृपा भई मोहनकी छांडि सबै तू छोली री। सूरदास स्वामी मिलिबेको ताते तू निर्मोलीरी ॥ ४० ॥ राग केदारो ॥ जाके दरशनको जग तरसत ताहि दरश नेक दैरी। जाकीमुरलीकीध्वनिसुरमुनिमोहे तातन नेक चितै री ॥ शिव विरंचि जाको पार न पावत सो तेरे चरणन परसतु है री। सूरदास वश तीनि लोक जाके है सो तो वश माई री तू मुखध्वनि सुनाइ मोहिलैरी ॥ ४१ ॥ राग भूपाली ॥ तुव को है री कौन पठाई तेरी को मानै। तू जो कहति श्याम कौनसे देखे नसुनेकोपहिचानै॥ और कहति कहि नेम लियो ह्यां को वैसी वै जानै। सूरदास प्रभु रसिक बडे तोकोपठईअतिस्यानै ॥ ॥४२॥ राग सारंग ॥ अति हठ न कीजे री सुनि ग्वारि। हौं जु कहति तू सुन याते शठ सरै नएको द्वारि ॥ एक समय मोतियनके धोखे हंस चुनतहै ज्वारि। कीजै कहा काम अपनेको जीतिमानिए हारि ॥ हौं जो कहतिहौं मान सखी री तनको काज सँवारि। कामी कान्ह कुँवरके ऊपर सरबस दीजै वारि ॥ यह जोबन बर्षाकी नदी ज्यों बोरति कतहि करारि। सूरदास प्रभु अंत मिलहुगी ए बीते दिन चारि ॥४३॥ राग रामकली ॥ कहा तुम इतनेहिको गर्वानी। जोवन रूप दिवस दशहीको ज्यों अँजुरीको पानी ॥ करि कछु ज्ञान अभिमान जानदे है अब कौन मति ठानी। तन धन जानि याम युग छाया भूलति कहा अयानी॥ नवसै नदी चलत मर्यादा सूधी सिंधु समानी। सूर इतर ऊपरके बरषे थोरेहि जल इतरानी॥४४॥ राग पूरिया ॥ तू चलिप्यारी री एतोहठ छांडिमानिरी॥ परम विचित्र गुण रूप आगरी अतिहि चतुर त्रिय भारी री ॥ मदनमोहनतन मदन दहतहै तेरी उनकी पीरन न्यारी। सूरदासप्रभुविरहविकलहैं नेक न निरखि निहारी री॥४५॥ राग बिहागरो ॥ वादि बकति काहेको तू कत आई मेरे घर। वे अति चतुर कहा कहिये जिन तोसीमूरख लैनपठाईतनु बेधति वचनन शर ॥ उतकी इत इतकी उत मिलवति समुझति नाहिन प्रीतिरीति कोही तूको है गिरिवर धर। सूरदास प्रभु आनि मिलैंगे छेहैं पगअपने कर॥४६॥ ज्योंज्यों मैं मिहोरे करों त्यों त्यों यों बोलति है री अनोखी रूसनहारी ॥ बहियां गहत सतराति कौनपर मगधरी उँगरीकौन-पै होत पीरी कारी॥ कौन करत मान तोसी और न त्रिय आन हठ दूरिकरिधरि मेरेकहे आगी। सूरदास प्रभु तेरो पथ जोवत तोहिं तोहिं रट लागी मदन दहत तनु भारी ॥४७॥ राग मलार ॥ तऊ तो गँवारि अहीरि। तोसों कछु नँदनंदन हँसि कह्यो इतनेहीको तू कबकी अन उत्तर बोलति कह्यो नहिंन मानतिही री। श्यामसुंदर हँसि हँसि देत सुनि सुनि करत कानि इक-

टकहि ग्वारिनि जु रही री । कहा कहौं हरिसों अब तोसीकोमुँहलगाइवारिफेरिडारौंतोहिंपियके एक रोमपरही री। सूरदास प्रभुको कहा कहि बरणौं एती कबहूं काहूकी न सही री॥४८॥ राग नट॥ एकतौ लालन लाडनि लडाइ दूजे यौबन बावरी । उनके गरब जिनि भूलिरहै री इमसों करि लीन्हें सुख अनेकदिन दिन चारि होत अधिक चावरी ॥ मेरो कह्यो तू मानि री माई सब त्रियानको इहै सुभाव री।मैं जु कहति करि सूर श्यामसों हिलिमिलि रहिए उठतबैसको इहै दाँव री ॥ ४९ ॥ राग कान्हरो ॥ रहि री मानिनिमाननकीजै। यहजोबनअँजुरीकोजलहैज्योंगोपाल माँगे त्यों दीजे ॥ छिनुछिनु घटति बढति नहिं रजनी ज्योंज्यों कला चंद्रकी छीजै। पूरब पुण्य सुकृतफल तेरो काहे न रूप नैनभरि पीजै ॥ सौंह करत तेरे पाँइनकी ऐसे जियनि दशौ दिन जीजै । सूर सु जीवनि सुफल जगतकी वैरी बांधि विवश करिलीजै ॥ ५० ॥ सुन प्यारीराधिका सुजान । कहिधौं कौन काज सरिहै री यहि झूठे अभिमान ॥ जिनके चरण रमा नित लोलित सब गुण रूप निधान। तिनके मुखके वचन मनोहर सो तू करति न कान ॥ परमचतुर सुंदर सुखकारी तोसी त्रिया न आन । कीजै कहा कृष्णकी संपति बिना भोग बिनदान ॥ ऐसी व्यथा होत निशि हरिको जिनि हठि करौ बिहान । नाहिंन कढत औरके काढे सूर मदनके बान ॥ ॥ ५१ ॥ राग रामकली ॥ आज हठि बैठी मान किए । महाक्रोध रसअंश तपत मिलि मनु बिष विषम पिये ॥ अधमुख रहति विरहव्याकुल सिख मूरि मंत्र नहिं मानै। मूक न तजै सुनि जाति ज्यों सुधि आए तनु जानै ॥ एक लीक बसुधापर काढी नभतन गोद पसारी। जनु बोहित तजिकै पैरनको दधि ज्यों अवनि निहारी ॥ ज्यों अतिदीन सुखी सबही अँग कतहू शांति न पावै। त्यों बिन पियहि त्रिया प्रातहिते एकै बात मनावै ॥ कबहुँक धुकति धरनि श्रम जलभरि महाशरदर-विसास। इकटक भई चित्र पूतरि ज्यों जीवनकी नहिं आश ॥ तब उपचार कियो मैं करकस लैरस पार्‍यो कान । मुर्छा जगी नहीं मुख बोली लै बैठी फिरि मान॥ हौं तौ थकी करति बहु जतननि जीकी व्यथा न पाई। बूझहु लाल नवल नागर तुम एकैं सैन बताई ॥ शिव आकार दिखायो कछु इक भाव दोष रस नाहीं । सूरदास प्रभु रसिक-शिरोमणि लै मेलीपगछाहीं ॥ ५२ ॥ राग देवगंधार ॥ प्रिया पिय नाहिं मनायो मानै । श्रीमुख वचन मधुर मृदुवाणी मादक कठिन कुलिशते जानै॥ शोभित सहित सुगंध श्याम कच कलकपोल अरुझानै। मनहु बिधुतुद ग्रस्यो कलानिधि तजत नहीं बिन दानै । बालभाव अनुमरति भरति दृग अग्र अंशुकन आनै । जनु खँजरीट युगल जठरातुर लेत सुभष अकुलानै ॥ गोरेगात लसत जो असितपट और प्रगट पहिचानै । नैन निकट ताटंककी शोभा मंडल कबिन बखानै । मानो मन्मथ फंद त्रासते फिरत कुरंग सकानै ॥ नासापुटनि सकोचति लोचति बिकट भ्रुकुटि धनु तानै। जनु शुक निकट निपट सरसाये पटपट सुभग परानै ॥ जनु खद्योत चमक चलि शकित कछु निशितिमिर हिरानै।यह सुनिकैअकुलाइ चलेहरि कृतअपराध क्षमानै॥सूरदास प्रभु मिलि परस्पर मानिनि मिलिमुसकानै॥५३॥ राग धनाश्री॥ मानि मनायो मोहन री । सकुच समेति चली उठि आतुर वनकी गैल गही॥बिधिमुख निरखिविमुख करि लोचनपुनि विधुवदन चही ॥ दरशत परसत रूप आज निज भ्रू नख लेखि कही । पुहुप सुरंग सारंग रिपु ओट देखी तब चतुर लही ॥ पानि सुपरसत शीश परस्पर मुसकाने तबही । तृण तोर्‍यो गुनजात जिते गुन

काढति रेख मही। सूर श्याम बहुरोमिलि विलसहु जातिअवधि अबही॥५४॥राग सारंग॥चलीबन मान मनायो मानि। अंचल ओट पुहुप दिखरायो धरयो शीशपर पानि ॥ शुचितन चितै नैन दोउ मूँदे मुखमहँ अँगुरी आनि। यह तौ चरित गुप्तकी बातैं मुसकाने जिय जानि॥ रेखा तीनि भूमिमर खाँची तृण तोरयो कर तानि। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि विलसहु श्याम सुजानि ॥५५॥राग गुंड॥सैनदैकह्यो वनधाम चलिए श्याम इहै करि कामअब आनिमिलिहौं।भावहीकह्यो मन भाव दृढ राखिवो दै सुख तुमहिं सँग रंगरलिहौं॥ जानि पिय अतिहि आतुर नारि आतुरी गई वनतीरतनुशुद्धि हेती। सूर प्रभु हरष भए कुंजवन तहाँ गए सजत रतिसेज जे निगम नेति ॥ ॥५६॥ राग गुंडमलार॥ श्याम वनधाम मग वाम जोवैं। कबहुँ रचि सेज अनुमान जियजिय करत लता संकेततर कबहुँ सोवैं ॥ एक छिन इक घरीघरी इक याम सम याम वासरहुते होत भारी। मनहिंमन साध पुरवत अंग भाव करि धन्य भुज धनि हृदय मिले प्यारी ॥ कबहिं आवै सांझ सोच अति जिय माँझ नैन खग इंदु ह्वै रहे दोऊ। सूर प्रभु भामिनी वदन पूरण चंन्द्र रस परस मनहिं अकुलात वोऊ ॥ ५७ ॥ राग नटनरायणी॥ दूती संग हरिके रही। श्याम अति आधीन ह्वै कै जाहु तासों कही॥ वेगि आनि मिलाइ मोको परम प्यारी नारि॥ देखि हरितनु कामव्याकुल चली मनहिं बिचारि ॥ गई तहँ जहँ करति राधा अंग अंग शृंगार। सूरके प्रभु नवल गिरिधर संग जानि विहार॥ ५८ ॥राग बिहागरो ॥ राधा सखी देखि हरषानी। आतुर श्याम पठाई याको अंतर्गतकी जानी ॥ वह शोभा निरखत अँग अँगकी रही निहारि निहारि। चकित देखि नागरि मुख वाको तुरत शृंगारनि सारि॥ ताहि कह्यो सुख दै चलि हरिको मैं आवति हौं पाछे।वैसेहि फिरी सूरके प्रभुपै जहां कुंज गृह काछे॥ ॥५९॥ राग केदारो॥ दूती देखि आतुर श्याम। कुंजगृहते निकसि धाए काम कीन्हों ताम॥बोलि उठी रसाल बाणी धन्य तुव बड़भाग। अबहिं आवति बनी बाला किए मन अनुराग॥ कहावरणौं अंग शोभा नैन देखौं आज। सूर प्रभु नेक धरौ धीरज करौ पूरण काज॥ ६० ॥ राग ईमन॥ बड़े भाग्यके मोटे हौ।ऐसी त्रिया और को पावै बने परस्पर जोटेहौ॥वैसिय नारि सुंदरी छोटीतैसेइ तुम बलि छोटे हौ। पूरबपुण्य सुकृतफलकी वह आपु गुननकरि घोटे हौ॥ परम सुशील सुल-क्षण नारी तुमहिं त्रिभंगी खोटे हौ। सूर श्याम उनके मन तुमहीं तुम बहुनायक कोटे हौ ॥६१ ॥ राग काफी॥ सुनिहो मोहन तेरी प्राणप्रियाको वरणौं नंदकुमार। जो तुम आदिअंतमेरो गुण मानहु यह उपकार॥ चंद्रमुखी भौंहें कलंकबिच चंदनतिलक लिलार। मनु बेनी भुवंगि-के परसत स्रवत सुधाकी धार॥ नैन मीन सरवर आननमें चंचल करत बिहार। मानो कर्णफूल चाराको खैंकत बारंबार॥ बेसरि बनी सुभगनासापरमुक्ता परम सुढार। मनो तिल फूल अधर बिंबधार दुहुँ बिच बूँद तुषार॥ सुठि सुठान ठोढी अतिसुंदर सुंदरताको सार। चितवत चुअत सुधारस मानो रहिगई बूँद मँझार॥ कंठशिरी उर पदिक विराजत गजमोतिनको हार। दहिनावर्त्त देत मनो ध्रुवको मिलि नक्षत्र की मार॥ कुचयुग कुंभ शुंडि रोमावलि नाभि सु हृद आकार। जनु जल सोखिलयो से सविता जोबन गज मतवार॥ रत्नजटित गजरा बाजूबंद शोभा भुजन अपार। फुंदा सुभग फूल फूले मनो मदन विटपकी डार। छीन लंक कटि किंकिणी ध्वनि बाजत अति झनकार॥ मौर बाँधि बैठो जनु दूलह मन्मथ आसन तार। युगल जंघ जेहरि जरावकी राजत परम उदार। राजहंस गति चलति किशोरी अति नि-

तंबके भार ॥ छिटकि रह्यो लहँगा रँग तासँग तन सुखवत सुकुमार । सूर सुअंग सगंध समूहनि भँवर करत गुंजार ॥ ६२ ॥ राग नट ॥ आज राधिका रूप अन्हायो । देखत बनै कहत नहिं आवै मुखछबि उपमा अंत न पायो ॥ अलबेली अलक तिलक केसरिको ता बिच सेंदुर बिंदु बनायो । मानो पून्यो चंद्र खेत चढि लरि सुरभानसों घायल आयो ॥ काननकी बारी अतिराजत मनहुँ मदन रथचक्र चढायो । मानहु नाग जीति मणि माथे भरिसोहागको छत्र तनायो ॥ बंकित भौंह चपल अतिलोचन बेसरि रस मुकुताहलछायो । मानो मृगनि अमीभाजन भरि पिवत न बन्यो दुहूँ ढरकायो ॥ अधरदशन रसना कोकिल ज्यों तिमिरजीति बिचचिबुक लगायो। मनहुँ देखि रवि कमलप्रकाशत तापर भृंगीसावक स्वायो ॥ कंचुकि श्याम सुगंध सँवारी चौकीपर नग बन्योबनायो । मानो दीपक उदित भवनमें तिमिर सकुचि शरणागत आयो॥ भूषण भुजा ललित लटकन वर मनहु मिले अलिपुंज सुहायो । एतेहूपर रूठि सूर प्रभु लै दूती दर्पण देखराये॥६३॥ राग बिलावल॥देखत नवलकिशोरी सजनी उपजत अति आनंद।नवसत सजे माधुरी अँगअँग वश कीन्हें नँदनंद॥कंबुकंठ ताटंकगंडपर मंडितबदनसरोज।मोहनके मनबांधिवेकोमनो पूरी पासि मनोज॥नासापरम अनूपम शोभित लज्जित कीर बिहंग। मनो विधु अपने कर बनायके तिलप्रसूनके अंग॥ भुजविलास करकंकण शोभित मिलिराजत अवतंस।तीन रेखकंचनके मानो बहु बनाइ पियअंश ॥कुंकुम कुचन कंचुकीअंतर मंगलकलश अनंग । मधुपूरण राखे पियकारण मधुर मधुपके अंग॥ कीरति विशद विमल श्यामाकी श्रीगोपाल अनुराग। गावत सुनत सुखद कर मानो सूर दुरे दुखभाग ॥६४॥ राग जैतश्री॥नवनागरीहो सकलगुणआगरीहो ।हरिभुजग्रीवाहो शोभाकी सींवाहो श्याम छबीली भावती गौरश्यामछबिपावती॥ सैसवतामेंहेसखीजोबनकियो प्रवेश। कहा कहौं छबि रूपकी नखशिख अंग सुदेश॥ श्रीपति केलि सरोवरी सैसव जल भरि पूरि । परगट भई कुचस्थली सोख्यो जोबन सूरि ॥छुटेकेशमज्जनसमय देखि विरुधअहिभोर। भोर कहूं निशिमें रमे उतरि चले अहि ओर॥शीश सुचिक्कन केशहो बिच सीमंत सँवारि।मानहुँ किरनि पतंगते भयो दुधां तमहारि॥केसरि आड लिलाटहो बिच सेंदुरको बिंदु।चक्र तजे ता नैन मृग जनु बैठो रथ इंदु॥नैनन ऊपरकहाकहौं ज्योंराजत भ्रुवभंग ।जुवा बनावत चंद्रमा चपल होत सारंग॥ चंपकलीसी नासिका राजत अमल अदोस।तापर मुक्ता यों बन्यो मनो भोर कनओस॥ मुक्ता आपु बिकाइहो उरमें छिद्रकराइ।अधर अमृतहिततपकरैअधमुख ऊरधपाइ॥अधरनकी छबि कहतहौं सदा श्याम अनुकूल। बिंबपँवारे लाजहीं हरपत वरपत फूल ॥ पांति कांति दशनावली रहे तमोल रँग भीज। वंदन सो शशिमें बए मनो सौदामिनिके बीज ॥ गुंजाकीसी छबि लई मुक्ता अति बडभाग ।नैननकी लई श्यामता अधरनको अनुराग ॥ बेसरि मुक्तामनि-न धनि धनि नामा व्रज नारि । गुरु भृगुसुत बिच भौमहो शशिसमीप ग्रह चारि॥खुँटिलासुभग जगइके मुकुता मणि छबि दंत । प्रगट भयो घनमध्यते शशि मनो नखत समेत ॥ सुंदर सुघर कपोलहो रहे तमोर भरिपूर । कंचन संपुट द्वै पला मानहु भरे सिंदूर ॥ चिबुक डिठो-ना जब दियो मोहन धोखे जात। निकस्यो अलि शिशु कुंजते मनहुँ जानि परभात॥ जेहि मारग वनवाटिका निकसति आनि सुभाइ। मधुप कमलबन छांडिकै चलत संग लपटाइ ॥ जहांजहां तू पगधरै तहांतहां मन साथ। अति अधीन पिय ह्वैरहै तन मन दै तेरे हाथ ॥ देखि बदनके रूपको मोहन रह्यो लुभाइ । इकटक रह्यो चकोर ज्यों दृष्टि न इतउत जाइ ॥ तोहिं श्यामसों है

सखी बढी निरंतर प्रीति। तू तन मन धन श्यामके तैं हरि पाए जीति ॥ मदनमोहन तू वश करै अति प्रवीन नँदलाल ।सूरदास गावै सदा कीरति विशद विशाल॥६५॥राग नट॥ राधासंगललिता लिए। श्याम आतुर जानि बाला गवन आतुर किए॥किंकिणीध्वनि श्रवण सुनि हरि अतिहि पुलकित हिए। नारिआवत जानि गिरिधर नहीं धीरज जिए॥चले आतुर धाइ आगे संग सहचरि विए । सूर प्रभु रतिरंग रा न्दे देखि रीझीं त्रिए॥६६॥ पियछबिनिरखत नागरी अँगदशाभुलानी अंतर्गत आनँदभरी ललिता हरषानी॥सहचरिसों कहि सुमन लै हरि भेंट भराए। अति अधीन पिय ह्वैरहे वश परे डराए ॥ मारग सुमन बिछावहीं पग निरखि निहारे।फूलेफूले मग धरे कलिआं चुनिडारे।ऐसे वश पिय बामके सुख सूरज जानै। जो जेहि भावनि हरिभजै तेहितैसोइ मानै ॥६७॥राग पूरबी॥पीछे ललिता आगे श्यामा प्यारी ताआगे पिय मारग फूल बिछावत जात।कठिनकठिन कली बीनि करत न्यारीप्यारीके चरणकोमल जानि सकुच अति गडिबेहिडरात॥दीरघ लता अपने कर निरुवारत ऊंचे लै डारत द्रुम बेली पात । सूरदास प्रभुकी ऐसी अधीनता देखत मेरे नैन सिरात ॥६८॥ राग कान्हरो ॥ बडे बडे बार एँडिन परसत श्यामा पीछे अपने अंचलमें लिए ।वेणी गूँथन मिस फूल सुगंध फेट भरे डोलत बोलत नाहिन सकुचहूँ हिए॥अरु कुसुमी सारीमें अलक झलक गोरे तनु मनो अहि कुल चंदन वंदन सों पूजा किए। सूरदास प्रभु त्रिय मिलि नैन प्राण सुख भयो चितए करुखिअनि अनकनि दिए ॥ ६९ ॥ राग रामकली ॥ वरन वरन वन फूलि रह्यो । हर्षित ह्वै वृषभानुनंदिनी सँग सब सखिन कह्यो ॥ कुसुमकली देखत रुचि उपजत यह कहि तिनहिं सुनावति । आपुन चुनति गोदलै धारति युवतिन कहति चुनावति।। हँसत परस्पर दैदै तारी श्याम लिए करबाहीं। सूरदास प्रभु काम आतुरे और ध्यान चित नाहीं ॥ ७० ॥ डोलत बाँकी कुंजगली। व्रजवनिता मृगशावकनैनी बीनति कुसुम कली ।।कमल बदनपर विथुरि रहीं लट कुंचित मनहुँ अली । अधर बिंब नासिका मनोहर दामिनि दशन छली ॥ नाभि परसलौं रस रोमावलि कुच युग बीच चली।मनहुँ विवरते उरग रिग्यो तकि गिरिके संधिथली।पृथुनितंब कटि छीन हंसगति जघन सघन कदली । चरणमहावर नूपुरमणिमयबाजत भाँति भली॥ओटभए अवलोकिपरस्पर बोलत अली अली । सूर सु मोहन लाल रसिकसँग वन घन मांझ रली ॥ ७१ ॥ राग भूरवा ॥ सखियन सँग राधे कुँवरि बीनति कुसुमकलियाँ । एक वयक्रम एकहि बानक रूप गुणकी सींव मन भावत: सुंदर श्याम लालके कर सोहति रँगीली डलियाँ ॥ एक अनूपम माल बनावति एक परस्पर बेनी गूंथति भ्राजति कुंज महलियाँ ।सूरदास प्रभु सँग मिलि कौतुक देखत हरषि हरषि प्यारी अंकम भरियाँ ॥ ७२ ॥ राग कल्याण॥ लैगए धाम वन श्याम प्यारी। कहे पलटाइ दोउ भुजनि लपटाइकै कह्यो पिय वचन हौ निठुर नारी । बिहँसि वृषभानुतनया कहति हम निठुर तुम सुहृद बात वह जिनि चलावो।निठुर अरु सुहृद सो मनहिंमन जानिहै कहा यह कथाकी सुरति धावो॥ परस्पर हँसे दोउ रसे रति रंगमें करत मनकाम फल पुरुष नारी । सूर प्रभु कोकगुणमें निपुणहैं बडे कामबल तोरि रस रह्यो भारी॥ ७३ ॥ राग सूही बिलावल॥गिरिधर नारि अबल अति कीन्ही। सबल भुजा धरि अंकम भरिभरि चापि कठिन कुच ऊपर लीन्हीं॥ कोक अनागत क्रीडापर रुचि दूरि करत तनुसारी । कमल करनि कुच गहत लहत पुट देखो वह छबि न्यारी ॥ बारबार ललचात साध कारि सकुचति पुनिपुनि बाला । सूर श्याम यहकाम

करो जिनि धनिधनि मदनगोपाला॥७४॥राग रामकली॥सुता दधि पतिसों क्रोधभरी ।अम्मर लेत भई खिझि बालहि सारँगसंग लरी ॥ तब श्रीपति अति बुद्धि बिचारी मणि लै हाथ धरी । वे अति चतुर नागरी नागर लै मुख मांझ करी ॥ चाखत चरण शेष चलि आयो उदयाचलहि डरी । सूरदास स्वामी लीला उर अंकम लगि उबरी ॥ ७५ ॥ सकुचि तनु उदधि-सुता मुसकानी। रवि सारथी सहोदर तापति अंबर लेत लजानी ॥ सारंग पाणि मूँदि मृगनैनी मणि मुखमाँह समानी । चरण चापि महि प्रगट करी पिय शेष शीश सहिदानी । सूरदास तब कहे करै अब लाज बहुरि तब यह मति ठानी । भुज अंकम भरि चापि कठिन कुच श्याम कंठ लपटानी ॥ ७६ ॥राग बिलावल ॥ वह छबि अंत निहारत श्याम । कबहुँक चुंबन देत उरज धरि अति सकुचत तब वाम ॥ सन्मुख नैन न जोरति प्यारी निलज भए पिय ऐसे । हाहा करति चरण कर टेकति कहा करत ढँग नैसे ॥ बहुरि कामरस भरे परस्पर रति बिपरीत बढाइ । सूर श्याम रतिपति विह्वल करि नागरि रहि मुरझाइ ॥ ७७ ॥ पिय प्यारी तनु श्रमित भए। सकुचिउठी नागरि पट लीन्हों श्याम लजाइ गए ॥ सावधान रति अंग भए पिय प्यारीतन नहिं हेरत । नागरि कुटिल कटाक्षनि हेरति भ्रुकुटी बंकन फेरत ॥ ऐसे गुण तुम किनहिं सिखाए तरुणीकटि कसिदीन्हीं। सूर कहति पियसों त्रिय बातैं आज तुमहिं मैं चीन्ही ॥७८॥राग धनाश्री॥हर्षि श्याम त्रियबांह गही।अपनेकर सारी अँग साजत यह इक साध कही॥ सकुचत नारि वदन मुसकानी उतको चितै रही।कोककला करि पूरण दोऊ त्रिभुवन और नहीं॥ कुंजभवन सँग मिलि दोउ बैठे शोभा एक चही।सूर श्याम श्यामाशिर बेनी अपने करन गुही ॥ ७९॥ मोहन मोहनीअंग शृंगारत । बेनी ललित करि गूथत निरखत सुंदर माँग सँवारत । शीशफूल धरि पाटी पोंछत फूंदनि झँवा निहारत । बंदन बिंद जराइकी बेंदी तापर बनै सुधारत॥ तरिवन श्रवण नैन दोउ आँजत नासा बेसरि साजत । बीरी मुख भरि चिबुक डिठौना निरखि कपोलनि लाजत ॥ नखशिख सजति शृंगार भावसों जावक चरणन सोहत । सूर श्याम त्रिय-अंग सँवारत निरखि आप मन मोहत ॥८०॥ राग ललित ॥ऐसेहि सुख सब रैनिबिहानी।भोरभए ब्रजधाम चले दोउ मन मन नारि सिहानी ॥ प्यारी गई वृषभानुपुरा तन श्याम जात नँदधाम। सुखमा महल द्वारही ठाढी उन देखी वह वाम॥प्रात चले बनते ब्रज आए मन मन करत विचार। सुनहु सूर ठठकत सकुचत ता गृह गए नंदकुमार ॥ ८१॥ अथबहुरोखंडिता सुखमा घरआए। रागदेवगंधार॥ किनते आएहो नँदलाल । ले भवनमें सब भेद बूझो सुनिहौ वचन रसाल॥ ऐसी कौन बाल जा धोखे तुम आइ द्वार है झांके।मिटत नहीं चितवनि हित चितकी उहै टेव नितनितकी मैंपहिचाने नैना बाँके॥कबहुँ जम्हात कबहुँ अँग मोरत अटपटात मुखबात न आवै रैनिकहूँ धौं थाके।सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि रसिकरसिकईजानी नामलेहुरहे जाके॥८२॥राग ललित ॥वनतनतेआए अति भोरगति रहे कहुँ गाइन घेरत आएहोज्यों चोर॥अंग२उलटे आभूषणबनहूँमेंतुमपावत।बढभागी तुमते नहिं कोई कृपा करत जहँ आवत ॥ औचक आइगृए गृह मेरे दुर्लभ दरशन दीन्हों । सूर श्याम निशि हौ कहुँ जागेपावतिअंगअँग चीन्हों॥८३॥राग बिलावल॥लाल उनींदेनैनाभए राजतहैं रतनारे नैना मानहुँ नलिन नए॥पीक कपोल ललाट महाउर बंदन वलित खए । जनु तनुजामें मध्य अ[illegible]दल कामके बीज बए ॥ बिनगुन हार पयोधर मुद्रा हृदय सुदेशढए।अंजन अधर सुमंत्र लिख्यो रति दीक्षा लेन गए ॥ सूर श्याम बिथुरे कच मुखपर नख नाराच हए । ता ऊपर आनंद

इंदु जनु मानहुँसमर जए॥८४॥रागबिलावल॥रैनि जागेअतिरसपागेअनुरागेनवत्रियसंग॥मोसन्मुख कत आएहो दहन पिय रसमसे नैन अटपटे बैननि तहाँई जाहु जाके रंग॥ बिन गुन बनी माल पीक कपोलनि लाल जावक तिलकभाल कीन्हें रसवश अंग।सूरदास प्रभु रजनी बिहाइ आए मेरे जीति अनंग॥८५॥राग बिलावल॥भोरभए मुख देखि लजाने।रतिके केलि बेलि सुख सींचतिशोभित अरुणनैनअलसाने॥काजररेख बनी अधरनपरनैन कपोलपीक लपटाने।मनहुँ कंजऊपर बैठअलि उड़ि नसकत मकरंद लोभाने॥हैहियहार अलंकृत बिनुगुन आइ सुरतिरण जीति सयाने। सूरदास प्रभु पांइधारियेजानतिहौंपरहाथ बिकाने॥८६॥राग सारंग॥अरुणोदयबेला अरुणनैन॥निशिजागे अलसात श्यामधौं मोहन बोलत मधुरे बैन॥ आनन जलप्रसेव गतचलियों आए मधुकरमधुहि लैन। बारबार रजनीमुख सींचति उमँगिउमँगि रसप्रीति दैन॥क्रीडत सघनकुंज वृंदाबनबंशीवट यमुनाके ठैन।सूरदासप्रभुसब बिधिनागरपीवतहौरस परमचैन॥८७॥राग बिहागरो॥आजुनिशिकहाँ हुते प्यारे।तुमरी सों कछु कहिन जाति छबि अरुण नैन रतनारे॥मेचक अधर निमेष पीक रुचि सो चिह्न देखि तुम्हारे।हृदय हार बिनही गुण लंकृत मृगमद मिल्यो लिलारे॥दशन बसन पर छाप हृदय छबि दई वृषभानु सुतारे। अरु देखो मुसुकाइ इतेपर सरबसु हरत हमारे॥ सूर श्याम चतुरई प्रगटभई आगेते होहु न न्यारे॥८८॥कहौ श्याम कहाँरैनिगँवाई॥ अब ए चिह्न प्रगटदेखि-अत हैं मोसों कौन करत चतुराई॥लटपटी पाग अलक जो बिथुरी बात कहत आवत अलसाई॥ तुमसों चतुर सुजान नागरी जाके रस तुम रहे लोभाई॥ सूरदास प्रभु तहँहि सिधारो नूतन प्रीति जहां उपजाई॥८९॥अथ सुखमाके घर सखी एक आई॥ राग विभास॥सुनत सखी तहँ दौरि गई। सुने श्याम सुखमाके आए धाई तरुणि नई॥ कोउ निरखति मुख कोउ निरखत अँग कोउ निरखत रँग और। रैनि कहूं फँग पगे कन्हाई कहति सबै करि रौर॥ तब कहिउठी नारि सुखमा यह भाग्य हमारे आए। सूर श्याम धनि वाम तुम्हारी जिन निशि बश करि पाए॥९०॥ राग सारंग॥ क्यों अब दुरतहैं प्रगट भए। कहतहैं नैन निशाके जागे मानो सरसिज अरुण नए॥ जावक भाल नागरस लोचन मसिरेखा अधरनि जो ठए। बलया पीठि वचन अलि सोहै बिन गुण कंठ हार बनए॥ भुज ताटंक ग्रीव सोहै चंदन चिह्न कपोल दशन ग्रसए। आलिंगन चंदन कुच चर्चित मानो द्वै शशि उरहि उए॥ चरण सिथिल अरु चाल डगमगी घूमत घायल समर जए। सरवत सकल अंग शोणित है श्यामा नखसायक जो दए॥ राजत बसन पीत उर राते अति आतुर होइ उलटि लए। सूर सखी कैसे मनमानै सुंदर श्याम कुटिलनगए॥९१रागबिलावल॥ माई आजु लाल लटपटात आए अनुरागे। शोभित भूषण अंगअंग अलस भरे रैनि उनींदे जागे॥ लटपटे शिर पेच पाग छूटे बंदन वागे। सूर श्याम रसिकराइ रसवश कीन्हे सुभाइ जागे जहां सोइ त्रिया बडभागे॥९२॥ राग विभास॥ हो माई आज अनत जागे री मोहन भोरहिमेरेकी-न्हों है आवन। शोभित भूषण अंगअंग आलसभरे लैलै लागे अनमिली मिलावन॥ अब कैसे पतिआति हो प्रीतम सांचे हो सौंहनि बोल निबाहन बातैं बनावन। सूर श्यामरसिकराइजावक-चिह्न लगाइ अब आये मोहन असल सलावन॥९३॥ राग सुघराई आज बन्यौ बनरंग पियारो। ब्रजबनिता मिलि क्यों न निहारो॥ लटपटी पाग महाउर लागी।कुँवरिमनावतिअतिबडभागी॥ पीक कपोलअधर मसिलागे। आलसवलित सबै निशि जागे॥कहुँ चंदनकहुँ बंदनकी छबि। रैनि रंग अँगअंग रह्यो फबि॥ सूर श्यामके यह छबि देखो। जीवनजन्म सफलकरिलेखो॥९४॥

आज बने नव रंग छबीले। डगमगात पग अँग अँग ढीले ॥ जावक पाग रँगी धौं कैसे।जैसे करी कहौ पिय तैसे॥ बोलत वचन बहुत अलसाने। पीक कपोलनसों लपटाने॥ कुमकुम हृदय भुजन छबि वंदन। सूर श्याम नारिन मन फंदन ॥९५ ॥राग गौरी॥आजबनेव्रजते बन आवत।यद्यपि हैं अपराध भरे हरि देखि तऊ मोहिं भावत॥नखरेखा मुक्तावलिके तट अंग अनूप लसी । मनो सुरसरी ईश शीशते लै बिधुकला धसी ॥केलि करत काहू युबती कर कुमकुम भरि उर दीन्हों। मनो भारती पंचधार ह्वै नभ ते आगम कीन्हों॥ बीच बीच कमनीय अंगपर श्यामल रेख रही। सूरसुता मनो कनक भूमिपर धार प्रवाह बही ॥ निरखत अंग सूरके प्रभुको प्रगटत भई त्रिवेनी । मन वच कर्म दुरित नाशनको मानहु स्वर्ग निसेनी ॥९६॥ राग रामकली ॥ सखी शोभा अनूपम अति राजै । नैन कोनकी अंजन रेखा पटतर कहूं न छाजै ॥ खंजरीट मनो ग्रसित पन्नगी यह उपमा कछु आवै । दुग्ध सिंधुकी गरल सुधा ज्यों कोटिक भ्रम उपजावै ॥ की सुरसरिता सूरतनय तट की पय पिवति भुअंगिनि । की अति मान मानि सागरते उलटी यमुन तरंगिनि ॥समरारीको सुयशकुयश की प्रगट एकही काल । किधौं रुचिर राजीवकोशते निकसि चली अलिमाल ॥ सूरदास दासिनि हितकर की हरि हलधरकी जोरी । राधावर निशि रसिकशिरोमणिकविकुलपरीठगोरी॥९७॥राग अडानो॥लालआयेहौउनींदेआपुनपौढियेपलकामेरेपलोटिहौं पाइ।मेरी सकुच जियमें कत आनत हौंतो आज्ञाकारिणि हौं तुम जिनि जानो मोसों औरनिकेसे सुभाइ ॥ यह अचरज आवत इनि बातन मान करत नहिं मानत मोसों आए मान मनाइ।सूर श्याम ता वामहि वश करि लीन्ही कंठ लगाइ ॥ ९८ ॥आजु अति रैनि उनींदे लाल। तुम पौढौ मैं चरण पलोटौं जिय जनि जानो ख्याल ॥सुमन सुगंधसेजहैडासीदेखतिअंगविहाल। मेरे कहे न्हाहु कछु भोजन करौ न मदनगोपाल॥ निशि श्रम भयो पीर मोहि आवत सुनत परस्पर बाल ।सूर श्याम सुनि वचन कपट त्रिय भरिलीन्ही अंकमाल ॥ ९९ ॥ राग बिलावल ॥ श्यामहिं सुख दै राधिका निजधाम सिधारी। चितते कहुँ उतरत नहीं श्रीकुंजविहारी॥ रैनि विपिन रतिरस रह्यो सो मनहिं बिचारै । पियसँगके अँग चिह्न जे दर्पणहि निहारै॥ यहि अंतर चंद्रावली राधागृह आई ।अंग सिथिल छबि देखिके जहँतहँ भरमाई ॥ कह्यो चहति कहत न बनै मनमन अनुमानै।सूर श्यामसँग निशि बसी निहचै यहजानै ॥२१००॥राग आसावरीचंद्रावलि सखियन सँग लीन्हें राधाके गृह आई हो । आजु अंग शोभाकछु औरै हरि सँग रैनि महाई हो॥ अबतो नहीं दुराव रह्यो कछु कहो सांचहम आगे हो।अधर दशनछत उरजनि नख छत पीक पलक दोउ पागे हो ॥ हम जानी तुम कहो प्रगट करि श्यामसंग सुख माने हो। सुनहु सूर हम सखी परस्पर क्यों न रैनि यश गाने हो ॥१॥ राग बिलावल ॥कहति सखिनसों राधिका तुमकहति कहा री । मेरीसौं की हँसतिहौ सुनि चकित महारी॥ पीक कपोलन यौं लग्यो मुख पोछनलागी॥ कहां श्याम कहां में रही कबधौं निशि जागी ॥ उरज करज निजकरजको गर हार सँवारत । सहज कछुक निशिमें जगी वचनन शर मारत ॥कहति औरकी औरई में तुमहिं दुरैहौं । सूर श्यामसँग जो मिलौं तुमसों नहिं कैहौं ॥ २ ॥ राग बिलावल ॥आजु बनी नवरंग किशोरी ।रसिक कुँवर मोहन विन गोरी॥ बिथुरी अलक शिथिल कटि डोरी ॥कनकलता मनो पवन झकोरी॥अधर दशनछत कछु छबि थोरी। दर्पण लै देख्यो मुख गोरी॥ सुख लूटत अतिही भई भोरी । सूर सखी डारत तृण तोरी ॥ ३ ॥ राग टोडी ॥ आजु बनी वृषभानुकुमारी । गिरिधर वर राधा

तू नारी ॥ हमसों करत दुराव वृथा री । इन बातन तू लहति कहा री ॥ आलस अंग मरगजी सारी। ऐसी छबि कहि कालि कहां री ॥ सूरदास छबिपर बलिहारी । धन्यधन्य तुम दोउबरनारी ॥४॥ राग सारंग ॥ बानक बनी वृषभानुकिशोरी।नखशिखसुंदर चिह्न सुरतके अरु मरगजी पटोरी॥ उर भुज नील कुचुकी फाटी प्रगटे हैं कुचकोरी।नवघनमध्य देखिअत मानहु नवरवि रथ निसुथोरी। आलस नैन शिथिल कज्जल बलमनिताटंकन मोरी।मानहु खंजन हंस कंजपर लरतचूँचपढतोरी॥ बिथुरी लट लटकी भ्रुकुटीपर बिकट माँग नग रोरी। मानहुँ कर कोदंड काम अलि सैन कमल हित जोरी ॥ अति अनुराग पियत पियूष हरि अधर सिंधु ह्रद थोरी। सूर सखी निशि संग श्यामके प्रगट प्रात भई चोरी ॥ ५॥ राग सानुव ॥ राधे तू अति रंगभरी। मेरे जान मिली मनमोहन अचरा पीक परी ॥ हौं जानतिहौं फौज मदनकी लूटिलई सगरी । छूटी लट टूटी नकबेसरि मोतिनकी दुलरी ॥अरुण नैन मुख शरद निशाकर कुसुम गलित कबरी । सूरदास प्रभु गिरिधरके सँग सुरतसमुद्र तरी ॥ ६ ॥ राग नट ॥ मैं जानीहैरी तेरेजियकी बात सोई अरु गातचिह्नकहेदेत माई । आलस तनु मोरे भुज जोरे जम्हाइ री अटपटात माई री लागत मोहिं सुहाई वाही पियके मन भाई ।॥ बैन ऐन नैन सैन देखिये रसीले शृंगार हार बार बिथरिरहे री रति कँपति देति क्यों न जनाई । सूरदास प्रभुकी सुन जरी आली तेरे अंगअंग भयो उदोत वह हिलनि मिलनि खिलनिकी तेरे प्रेमप्रीतिजनाई॥७॥ राग सूही ॥ नहिं दुरतहरि पियको परस। उपजतहै मनको अति आनँद अधरनरँग नैननको अरस ॥ अंचल उडत अधिकछबि लागत नखरेखा उर बनी बरस । मनो जलधरतर वालकलानिधि कबहुं प्रगटि दुरि देत दरश ॥ बिथुरी अलक सुदेश देखियत श्रम जलते मिट्यो तिलक सरस । सूर सखी बूझेहुँ न बोलती सो कहि धौं तोहिं कौन तरस॥ ॥८॥ राग बिलवल॥ तोहिं छबि राजैरीब्रजराजकेसंगजागेकी।करसोंकरजोरि मिलीजम्हातअरु ऐंडात होति दुरि धुरिरही अलक लसी आगेकी॥ कबहुंकबहुं पलक झपकिझपकि आवत तेमन भावत अँखियां अरुण भई प्रेमपागेकी । सूँरदास प्रभुको जु प्रगट उमँगि देखत श्यामसुंदर उर लागेकी ॥९॥ राग देशाख॥अरी मैं जानिपाए चिह्नदुरैंनदुराए।अति अलसात जम्हात पियारी श्यामके काम पुराए ॥ कहा दुराव करति री प्यारी कोटि करै मुख नैन झुराए । सुमनहारसी मरगजी डारि पिय रँग रैनि जगाए ॥ प्रगट नहीं तू करति डरति कहि सुरति सेज रति काम लराए। सूर श्याम तोहिं रसवश कीनी जात न मन बिसराए ॥ १० ॥ राग सारंग ॥ काहेकोदुरावति नैन नागरी । जानतिहौं नँदलाल रसिक पिय मिलि सब रैनिजागरी ॥ सुरतसमैके मुखतमोर मिलि लोचन परस लाग री । मनहुँ शरदविधु भए पद्मयुग युग मुकुलित अनुरागरी॥ उरज करज मानो शिवशिरपरशशिसारंग सुभाग री । अरुण कपोल अंक अलकै मिलि उरग कामिनी आगरी ॥ हरि पुनि चतुर चतुर अति कामी कै तु रूपकी आगरी। सूरदास प्रभु वश करिलीन्हें धनि त्रिय तेरो सुहाग री॥११॥ राग टोडी॥ लालसोंरतिमानीजानीकहेदेतनैनागीरंगभोए।चंचलअंचलकतहि दुरावति रूपराशि अति मानहु मीन महाउर धोए॥ पीक कपोलन तरिवनके ढिग झलमलात मोतिनछबि जोए।सूरदासप्रभुछबिपररीझेजानतिहौंनिशिनेकन सोए॥१२॥ राग आसावरी॥ देख री नखरेख बनी उर । अंचल उडत अधिक छबिउपजति मनहुउदित शशि दुति दुतियावर॥शोभा कहा कहत बनिआवहि निरखिनिरखि नैननिसन पावति । लागति पाइ दशौ दिशिमेलति लिए रजनिकर अलिन वदावति॥ सुनि श्रवणन उनमान करतिहौं निगम नेति यह लखनि लखी री।

मानो विधु जु विधुंतु ग्रहणडर आयो तेरे शरण सखीरी ॥ मोतिन माल मुकति मनवांछित हरि हर हरिहि ज्यु आज जपत जप । मनहु दक्ष ऋषिशापनिवारण उभै ईश जिय जानि करत तप ॥ छाँडि सकुच साँचो कहि मोसों हौं जानति मन परम पराए । सूरदास प्रभु मिलन प्रगट भयो पियको परसु कैसे दुरत दुराए॥ १३ ॥ राग बिलावल ॥ सुरतसमैके चिह्नराधिका राजतरंगभरे। जहँजहँ रतिरणकोप कियो प्रीतम कर दशन धरे ॥ आडमिटी छूटी अलक आलसवश लोचन लखि लुकत खरे। मानहु धनुष धरे कर साज्यो जनु तूणके बाण झरे ॥ सिंधुसुता तनु रोमराजि मिलि राजत वरण खरे। मानहुँ विधु मनकामना तीरथ तप करि तीर परे ॥ दशन अंक सहि पीक प्रगट मुख सन्मुखहू न डरे। सूर श्याम शोभासुखसागर सबअँग भरनिभरे॥ १४॥ राग बिलावल ॥ भामिनि शोभा अधिक भईरी। सुपक बिंब शुकखंडित मंडित अधरसुधा मधु लाल लई री ॥ राजित रुचिर कपोल महावर रद मुद्रावलि नाह दई री । मनहुँ पीकदल सींचि स्वेदजल आलवाल रतिबेलि बई री ॥ कंचुकिबँद विगलित सुललित छबि उच्च कुचनि नखरेख नई री। मनहु सिंदूर पूर द्युति दरशित कंचनकुंभ दरार लई री ॥ आलस भ्रुकुटि अलक छूटी मनु लूटि पनच सत जूझ जई री। नैन सु बने कटाक्ष लगे शर शिथिल भई मति मैन ढई री ॥ ढीली नीवी गोरी अति भोरी पियके सँग रँग राग रई री । सूरज श्रीगोपालविलासिनि चंद्रवदनि आनंदमई री ॥ १५ ॥ द्वै कर जोरि लेत जंभुआई। शोभा कहति बनति नहिं मोपै आजु सखी पियसंगते आई ॥ सोइ आभा पुनि फेरि फबतहै बिधि आपुन रुचि रचित बनाई। मानहुँ कुमुदिनि कनक मेरु चढि शशि सन्मुख मृदु सहित सिधाई । शोभित चिकुर ललाट वदनपर कुंचित कुटिल अलक बिथुराई। नागवधू मनु अमीकोशते लै मधुपान अमर ह्वै आई ॥ झुकिझुकि परत प्रेममदमाती उमँगिउमँगि तन देति दिखाई। सूरदास प्रभुसखीसयानी चुटकिनि देततबहिं लखि पाई॥ १६॥ राग धनाश्री॥ आलसभरि शोभित भामिनी। राजत सुभग नैन रतनारे हरिसँग जागत गई यामिनी॥ बांह उँचाइ जोरिजमुहानी ऐंडानी कमनीय कामिनी। भुज छूटे छबि यों लागी मनो टूटि भई द्वैटूक दामिनी॥ कुचउतंग वररचित कंचुकी विलसति त्रिवली उदरछामिनी । देखिअति मनहु मदननृप नव हरि रसजीते राधा नामिनी ॥ बिथुरी अलक शिथिल कटिडोरी नखछत छरित मरालगामिनी । दुगुन सुरति सजि श्रीगुपाल भजि समुदित सूरजदास स्वामिनी ॥ १७ ॥ राग नट ॥ खंजन नैन सुरँगरसमाते। अतिशयचारुविमलदृग चंचल पलपिंजरा न समाते॥ बसे कहूँ सोइ बात कहीसखिरहे इहाँ केहिनाते। सोइ संज्ञादेखति औरासी विकल उदास कलाते ॥ चलिचलि आवत श्रवणनिकट अति सकुचत टंक फँदाते । सूरदास अंजनगुणअटके नतरु कबैउडिजाते॥ १८॥ राग बिलावल॥ भोरहि शोभा शिरसिंदूर। युगलपटा घनघटा बीच मनो उदय कियो नवसूर ॥ मन्मथरथ आनंदकंद मुख चंद्रकलापरिपूर। चक्रताटंक निशंक सु दृग मृग जनु ग्न तम सम जूर ॥ सुंदर बर नासिका देशपर बेसरि मुक्ताहूर । किधौं तूल तिलफूल निकरकन किधौं असुरगुरुचूर । रद सद दामिनि अधरसुधा मधु रपा झपा झकि झूर॥ वचनरचन माधुरी सधरपर कवन कोकिला कूर । उच्च उरोज मनोज नृपतिके जोबन कोटि कँगूर ॥ हरि स्यार कटितटि लरकिजाइ जिनि विशद नितंब गरूर । कदलीजंघ मराल मंदगति रूप अनूपसमूर। सूरदासशोभास्वामिनिपर वारतसखितृण तूर॥ १९॥ राग रामकली॥ मोसोंकहा दुरावनि प्यारी । नंदलालसँग रैनि वसी री कोककलागुणभारी॥ लोचनपलक पीक अधरनको कैसे

दुरत दुराए। मनो इंदुपर अरुण रहे बसि प्रेम परस्पर भाए ॥ अधर दशनछतकी अति शोभा उपमा कही न जाइ। मनो कीरफल बिंब चोंच दै भख्यो न गयो उडाइ ॥ कुच नखरेख धनुषकी आकृत मनो शिवशिर शशि राजै ॥ सुनत सूरप्रियवचनसखीमुखनागरिहँसिमनलाजै ॥ २० ॥ राग धनाश्री ॥ प्यारी सुनत सखीमुखबानी हँसि मुसकाइ रही। नैनन रही लजाइ मुदित चित मानी बात सही॥तोसों कहा दुराव करौं री तू प्राणनते प्यारी। कहाकहौं वहमिलिनिश्याम-की क्रीडा कहति उघारी॥ रतिसुख अंत रची इकलीला कहौं कि धरौं दुराइ।सूरदास प्रभुके गुण आली· चित्तहि रह्यो समाइ ॥ २१ ॥ राग सोरठ ॥राधा अब जिनिकछूदुरावै।हाहाकरिचरणनशिर नावति अपनी सौंह दिवावै ॥ उहै कथा मोसों कहि प्यारी चरित कहा री कीन्हों।जा रसमें तू मगनभईहै कौन अंग सुख दीन्हों ॥ उछलतभए सुधा उरघटते मुखमारग न सँभारे ।सूरश्यामरस छकी राधिका कहत न बनै बिचारे ॥ २२ ॥राग गुंडमलार॥श्यामरतिअंतरसइहैकीन्हों।कहतपुनि पुनि कहा अंग अंबर जहू मैं रही सकुचि गहि आप लीन्हों ॥ कियो तब मैं कहा लरी सारंगसों सार्ङ्गधर धरति तब चरण चापी। शेष सहसों फननि मणिनकी ज्योति अति त्रासतेकंठलपटाइ कांपी ॥रही उनकी टेक चलैमेरी कहा धरनि गिरिराज भुज सबल धारी। सूरप्रभूके सखी सुनहु गुण रैनिकेवेपुरुष मैं कहाकरौंनारी॥ २३॥॥ राग नट॥ आजहौंअधिकहँसीमेरीमाई।कामविवशमो-सों रति बाढी अवलोकत मुरझाई ॥ रवि शशि कांति उग्र भवन में ठाढीही इकठाँई। बिस्मय बढि प्रतिबिंब प्रतिह प्रति अंक दई यदुराई॥करअंचर मुख मुदित रही हौं दीन देखि हँसि आई॥ सूरदास प्रभुनिश्चयजानी तबहिं उलटिउरलाई२४॥राग आसावरी॥धन्यधन्यवृषभानुकुमारीगिरिवर-धर वश कीन्हे री। जोइजोइ साध करी पिय रसकी सो सब उनको दीन्हे री ॥ तोसी त्रिया और को त्रिभुवन पुरुप श्यामसे नाहीं री। कोककला पूरण तुम दोऊ अब न कहूं हरि जाहीं री। ऐसे बश तुम भई परस्पर मोसों प्रभू दुरावै री। सूर सखी आनँद न सम्हारति नागरि कंठ लगावै री ॥२५॥राग बिलावल॥श्याम गए उठि भोरही वृंदाके धाम।कामाके गृह निशि बसे पुरयो मनकाम ॥ सांझ गए कहि आइहैं बहुनायक नाम। सेज सँवारति;आश लै ऐसेहि गई याम ॥ अरुणउदय द्वारे खरे देखत भई ताम। रिसनि रही झहराइके मनहींमन वाम॥ चिह्न और अंग नारिके बिनगुन उर दाम।सूरदास प्रभु गुणभरे आलस तनु झाम॥२६॥अथ वृन्दागृहगमन॥राग बिलावल॥लालन आए रैनि गँवाई। निशि भई छीन बोलि तमचुर खग ग्वालन ढीली गाई॥ अरुन किरनि सुख पंकज विग-लित मधुप लियो रसजाई। चंद्र मलीन भयो दिनमणिते कुमुद गए कुँभिलाई॥ आजकी रैनि गई मुहिं जागत तुम बिनु कछु न सोहाई। सूर श्याम या दरश परस बिनु निशि गई नींद हेराई॥२७॥ राग बिलावल॥नीकेआए गिरिवरधारी नागर। तुम्हरी चिंताते अरुन नैन भएसकल निशाकेजागर॥ रतिके समाचार लिखि पठए सुभग कलेवर कागर। जियकी कृपा हम तबहीं जानी भोर भुलाए आगर ॥ बलि बलि गई मुखारविंदकी सुरति सिंधु रससागर । जाके रसबश भए सूर प्रभु ऐसी कौन उजागर ॥ २८ राग बिभास॥ तुम्हारे पूजिय पिय पाँइ । बहुत बात उपजति है तुमको कहत बनाइ बनाइ ॥ अरुण अधर श्याम भये कैसे आए पट लपटाइ ॥ चारु कपोल पीक कहाँ लागी ऊरज पत्र लिखाई॥ नंदकुमार जहाँ निशिजागे तहँ सुख देखौ जाई। सूरदास सब भाँति अटपटी अब मन क्यों पतिआई॥२९॥राग बिलावल॥मोहनकाहेकोलजात।भूँदि कर मुख रहे सन्मुख कहि न आवत बात ॥ अहि लता रँग मिट्यो अधरन लग्यो दीपक जात।

रुचिर कुसुम बँधूक मानो समय गथ कुंभिलात ॥ नैन मुद्रित सकुच जैसे उदय शशि जलजात । निकसि चल युग पूतरी जनु अलि उरझि अधगात॥ चारि याम जु निशि उनींदे अलसवश- हि जँभात। सूर ऐसी मदन मूरति निरखि रति मुसुकात ॥ सकल निशि जागेके हैंनैन। जानति हौं अति किए कोकनद आन खनि सुख चैन ॥ लटपटी पाग चाल गति उलटी रसन अटपटे बैन । लगत पलक उघरत न उघारे मनु खंडित रसऐन ॥ तमचुर टेरतही उठि धाए अब दूनो दुखदैन । जानी प्रीति सूर प्रभु अब हम सुरति भई गति मैन॥३०॥ आजु और छबि नंदकिशोर। मिलि रिस रुचि लोचन भए रोचन चितवत चित्त पराई ओर ॥ शोभित पीठि प्रगट करकंकन शोभित हार हिए बिनु डोर। शोभित पीतवसन दोउ राते अधरन अंजन नैन तमोर ॥ नखशिख ज्यों शृंगार अटपटे पाए मनहु पराए चोर । फूले फिरत दिखावत औरन निडर भए दै हँसनि अकोर॥कहत न बनै सुनतहु न आवै वैसनि वर्णत कविन कठोर॥अचरज क्यों न होत इन बा- तन सूर ग्रहण देखेजनु भोर ॥३१॥ राग बिलावल सूही॥ अतिहिअरुणहरिनैनतिहारे।मानहुरतिरसभए रंगमगे करत केलि पिय पलक न पारे ॥ मंदमंद डोलत शंकितसे शोभित मध्य मनोहर तारे। मनहु कमल संपुटमहँ वीधे उडि न सकत चंचल अलिवारे॥ झलमलातरतिरैनिजनावतअतिरस- मत्त भ्रमत अनियारे। मानहु सकल जगत जीतनको कामबाणखरसानसँवारे॥अटपटातअलसात पलकपट मूँदत कबहूँ करत उघारे। मनहुँ मुदित मर्कतमणि आँगन खेलत खंजरीट चटकारे॥ बारबार अवलोकि कुरुखियन कपटनेह मन हरत हमारे।सूर श्याम सुखदायकलोचनदुखमोचन रोचन रतनारे॥३२॥ राग बिलावल॥ नहिंनदुरतनैनारतनारे।बंधुककुसुमपरशोभितसुंदरश्यामशिली- मुखतारे॥कुटिल अलक रही बिथुरि वदनपर सकुचसहित हरि नरम निहारे। भौंहशिथिलमनुम- दन धनुष गुन गरे कोकनद बान बिसारे। मूँदइ आवत नैन अलसवश छीन भए उघरत न उघारे। सूरदास प्रभु सोइ कहौ तुम को भामिनि जहँ रति रण हारे ॥३३॥ रति संग्राम वीररस माते। हैं हरि शूर शिरोमणि अजहूँ नहिंन सँभारत ताते ॥ आनहि बरन भए दोउ लोचन अपने सहज बिनाते। मानहुँ भीर परी जोधनकी भए क्रोध अति राते ॥ परिमल लुब्ध मधुप जहँ बैठत उठि न सकत तेहिठाते । मनहु मदनके हैं शर पा- ए फोंक बाहिरि घाते॥ बैठिजात अलसान उनींदे क्रम २उठत तहांते। मनु मूरछा कटाक्ष नाटस- ल कढि न सकत हियराते॥ डगमगात घूमत जनु घायल शोभा सुभट कलाते । सूरदास प्रभु रतिरण जीते अब सकात धौं काते ॥३४॥ नैन उनींद भए रँग राते। मनहु सुरंग सुमनपर सजनी फिरत भृंग मदमाते ॥ प्रेम पराग पाँखुरी पल दल प्रफुलित मदन लताते। सुभग सुवास विलास विलोकनि प्रगट प्रीति करि ताते॥ तैसोइ मारुत मंद जम्हावरि मिली मुदित छबियाते। सींचेसूरश्याममानिनिकर हितसों केलिकलाते॥३५॥ राग रामकली॥ आएसुरतिरंगरसमाते। मानहु छिन विश्राम नमित पिय श्रमित भएहैं ताते ॥डगमगातमग धरत परत पग उठत न वेगि तहांते।मनु गजमत्त चरण सांकर करिगहि आनत तेहिठाँते॥उर नखछत कंकनछत पाछे शोभितहै रुहिराते॥ मदन सुभटके बाण लागि मनो निकसि गए वोहि घाते॥ सांचे करत आपने बोलनि टरत न म- र्यादाते। सूरश्याम कहि गए आजुहैं दगधारे तेहि नाते॥३६॥ राग बिलावल॥ अरुण नैन राजत प्रभु मोरे। रतिसुख सुरति किए सखिसँगमनो जीतिसमरमन्मथशर जोरे॥ अति उनींद अलसात क्रमगति गोलक चपल सिथिल कछु थोरे। मनहु कमलके कोश तमी तमउठत रहत छबि रिपुदल दौरे॥ शोभित सुभग सजल प्रतिकारे संगम छबितारे तनु डोरे। मनो भारती भँवर मीन शिशु

जात तरल चितवत चित चोरे॥वरणि न जाइ कहाँ लगि बरणौं प्रेमजलधिवेला बल बोरे॥सूरदास सो कौन त्रिया जिनि हरिके अंगअंग बल तोरे॥३७॥काहेको पिय भोरही मेरे गृह आए। इतने गुण हमपै कहाँ जे रैनि रमाए॥ ताहीके पगुधारिए चकृत मैं जाने। बिनगुण गडिमालारही नहिं कहुँ विहराने॥ आएहौ सुखदेनकोऐसेइ हितकारी। सूरश्यामतुम योगको को वैसीनारी॥३८॥ कृपा करी उठिभोरहीं मेरेगृहआए। अब हम भइ बडि भागिनी निशिचिह्न देखाए॥जावकभालनसों दियो नीके वश पाए। नैन देखि चकृत भई क्यों पान खवाए॥ अधरन पर काजर बन्यो बहु रंग कहाए। बंदन बिंदुली भालकी भुज आप बनाए॥ यह मोसों तुमहीं कहो उरछत अरुनाए। सूर श्याम यशराशिहौ धनि त्रिया हँसाए॥३९॥ राग भैरव ॥ जाहु तहां कहा सोचतहौ। जासँग रैनि बिहात न जानी भोर भए तेहि मोचतहौ॥ औरनकोछिनयुग बीततहैतुमनिहचीते नागरहौ। झूमत नैन जम्हात बारही रतिसंग्राम उजागरहौ॥ मैंअब कहतितिहारे हितकीताहीके गृह सोइरहौ॥सूर श्यामवैसीत्रियकोहैवहरस वाही बनन लहौ॥४०॥हमहींपरपियरूखेहौ॥बोलत नहीं मूकक्यों ह्वैरहेअँग रँगहीनकछूखेहौ॥तबनिरखतऔरहिहितकीधौंहमसों कहुँतुमलूखेहौ।तब हँसि बदन मिलत आजुहि कछु और भए निठुर पूषेहौ॥ डगमगात पग उतहि परतहै चित चंचल उत हूषेहौ।सूरदास प्रभुसाँचभाषि गए त्रियाअंग बल मूपे हौ॥ ४१॥ राग बिलावल॥हरषि श्याम त्रियबाँह गही। चूक परी हमको यह बकसो आवनको कहि गए सही॥रिसन उठी झहराइ झटकि भुज छुवत कहा पिय शरम नहीं। भवन गई आतुर है नागरि जोआईमुखसबैकही॥ मेरे महल आजुते आवहु सौंह नंदकी कोटि लही। सूर श्याम जब लौं जग जीवौं मिलौं नहीं बरु कामदही॥४२॥राग नटनारायण॥नागरि निठुर मान गह्यो। पीठ दै रिस काँपि बैठी फिरिन उतहि चह्यो॥ श्याम मन अनुमान कीन्हों रिसनिव्याकुल नारि। तिनकही रिस खोइडारौं यह प्रतिज्ञा धारि॥सखी एक स्वभावअपने गए ताके गेह। यहचरित सब कह्यो तासों चतुरि लख्यो सनेह॥ गई आतुर नारिताके लख्योनैननि कोर।चकित बाला नंदसुतबिन लह्यो हठकोछोर॥ भुजा गहि कहि कियो का रिस कहि सही ब्रजग्वारि।सूर प्रभुसों मान कीन्हों हृदयदेखिबिचारि॥४३॥राग कान्हरो॥ बाँह गह्यो कहि आँगन ल्याई। बहुनायक उनको नहिं जानति बडी चतुरहो माई॥ मैं जो कहति श्रवण सुनि चित धरि जोबन धन सपनेको। चलुगहि भुजा मिलै किनहरिसों कहा निठुर भई तोको॥ तूँही गहति न बाँह जाइकै मोसों बाँह गहावति।सुनहु सूर मैंसौंह करीहै तू मोहिं तिनहिं मिलावति॥ ४४॥ कहा कहति तू मिलिहि रहीहै। मोसों करति कहा चतुराई उन इह भेद कहीहै॥ जो हठ कर्‌यो भली नहिं कीन्ही ए दिन ऐसे नाहीं।की इहइं पियको न बोलावै की तहइं चलिजाहीं॥ वै सब गुणलायक तूनागरि जोबन दिनद्वैचारि।सूर श्यामको मिलि सुख लेहि न पुनि पछितैहै नारि॥ ४५॥ बहुरि पछितैहै री ब्रजनारि। देखि जाइ ठाढे मग जोवत सुंदर श्याम मुरारि॥ऐसी निठुर नेक नहिं चितवति चंचल नैन पसारि। कहा गर्व या झूठे तनको देखि हाथ लै वारि॥ तजि अभिमान मानरी मानिनि मैंजुकरतिमनुहारि। सूर हंस स्वातीसुतधोखे कबहुँक खात जुवारि॥ ४६॥ राग केदारो॥ मोसों मानि भावै न मानि लाल मनाइहै री तेरी आँखिन में पैयत है। कत सकुचति मैं तौ सब जानति ऐसी प्रीति क्यों दुरैयतहै॥ मेरो बिलग मानति यह जानति या बातनमें कछु पैयतहै। सूर श्याम न्यारे न बूझिये यह मोको नहिं भावै काहेको अनखैयतहै॥४७॥ राग बिलावल॥बहुरि मिलो-

गी कालिही चित समुझि सयानी। मेरो कह्यौ न क्यों करे क्यों भई अयानी ॥ अनलहि औषधि अनलहै सब जानिरहीहौ। काहेको हठ करतिहौ बेकाज बहीहौ ॥ धरणीधर व्याकुल खरे री गर्व गहेली। सूर कह्यो सुनि मानिलै मैं कहति सहेली ॥ ४८ ॥ राग सोरठ ॥ श्याम धरयो त्रिय मोहन रूप। दूती प्रिया संग इक लीन्हें अंग त्रिभंग अनूप ॥ अंतर द्वार आइ भए ठाढे सुनत त्रियाकी बातें। सरस बचन जु कहति सखि आगे कहौ मिलौं केहि नातें ॥ कपटी कुटिल क्रूर कहि आवत यह सुनि सुनि मुसकाने। सूरदास प्रभुहैं बहुनायक तुही कहति यह बाने ॥ ४९ ॥ राग मलार ॥ जौलौं माई हौं जीवन भरि जीवों। तबलगि मदनगोपाललालके पंथ न पानी पीवों॥ करौं न अंजन धरौं न मरकत मृगमदतनु न लगाऊं। हस्त वलयकटिना पटु मेचक कंठ नपोति बनाऊं॥ सुनौं न श्रवणन अलि पिकबाणी नैन न नवघन देखों। नीलकमल कर धरौं न कबहूं श्याम सरीखे लेखों ॥ इतनी कहत आइगए मोहन लिये प्रिय दूती संग। छूटिगई रिसटेक मानकी निरखि रसिकके अंग ॥ अति रति लीन भई भामिनि सँग तब कर गहि कर लीन्हों। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि मिलि जु सुधा सुख दीन्हों ॥ ५० ॥ राग धनाश्री ॥ कवि गावत हरि मोहन नाम। गाढो मान दूरि करि डारयो हरष भई मन वाम॥ ऐसे चरित और को जानै धन्य धन्य नंदलाल। जो ए गुण तौ हरत त्रियन मन अतिहरषित भई बाल॥ मिटयो काम तनु-ताम तुरतही रिझई मदनगोपाल। सूर श्याम रस बश करिलीन्हीं इहै रच्यौ इक ख्याल ॥ ५१ ॥ राग मलार ॥ सखी री कठिनमानगढ टूटयो। श्रीगोपालबिहँसनिबलआतसचल्योअतिहिगोलनको जूटयो ॥ करि प्रतिहार तज्यो सुर गोपुर कांच कोट सम फूटयो। काम अग्नि उपजी उर अंतर मौन सुभटको तब रण छूटयो॥ कुच लोचन दोउलरै सौंह ह्वै भौंह कमान कुटिल शर छूटयो। विद्राचारि गोपालकीसूरतजि सर्बस लुटयो ॥५२॥ राग गुंडमलार ॥ श्यामगुणराशिमानिनिमनाई। रह्यो रस परस्पर मिटयो तनु बिरहझर भरी आनंद त्रिय उर न माई ॥ कबहुँ रति सहज कबहूं करति विपरीत बासरहुते सब रैनि बीती। श्रमित दोउ अंग भए अतिहि विह्वल परे सेज रति-पति अधिक बढी प्रीती ॥ भोर भए चले निज सदन पितु मातके फिरे सकुचे देखि नंद द्वारे। सूर प्रभु श्याम सकुचि गए प्रमदाधाम कहत ए गुण भले हरि तुम्हारे॥ ५३ ॥ सुखमाके धामते आएमम क्षाके धाम ॥ राग गुंडमलार ॥ कहाँहै श्याम कहँ गमन कीन्हों। कहां तुमरहत कबहूंदरश देतनहिं धोखे गए आय हम मानिलीन्हों ॥ नैन आलसभरे चरणउतलरखरे कहाहौडरसे कहौ मोसों। रैनिकहुँ बसे त्रिय कौनसों रसेहौ उर करज कसे सो कहौ गोसों॥ भले जूभले नँदलाल वेऊ भली चरण-जावक पाग जिनहिं रँगी। सूर प्रभुदेखिअँगअँग बानक कुशल मैं रही रीझिवह नारि चंगी ॥५४॥ राग कल्याण॥ सुनत हँसिचलेहरि सकुचिभारी। यह कह्यो आजु हम आइहैं गेहतुव तरकजिनिकहौ हम समुझि डारी। नारि आनँदभरी रागँसी ह्वै ढरी द्वार अपने खरी अंगपुलकी। गएँ कहि सूर प्रभु रैनि बसिहैं आजु सजति शृंगार कछु सकुच कुलकी॥५५॥ अंगशृंगार सुंदरिबनावै। मिलौंगी श्याम निजधाम करि आजुही रैनि बिलसौं काम मन मनावै ॥ सरस सुमना जात शीश करसों करति सीमंत अलक पुनि पुनि सँवारै। मांग सूधी पारि निरखि दर्पण रहति ग्रंथि कबरी छांह पट निहारै। कमल खंजन मृगज मीन लोचन जिते सारंगसुत लेति तहां आँजै। हार उर धरति नख शिखहू भूषण भरति सूर प्रभु मिलनहित नारि राजै॥५६॥ राग कान्हरो॥ बिधुबदनी अरु कमल निहारै। जमुनासुत लै कमलन मंजित धनपति धामको नाम सँवारै ॥ तरनि तात बनितासुत ता छवि कमलन रुचि रवि ग्रंथित चारे। कमल कमलपर रेख बनावति सारंगरिपु पाहन गति

दारै॥ उर हारावलि मेलति कमलन मनहुँ इंदु पारसढिग पारै।सूरश्यामकेनामहिजीतनकमला-
पतिके पदहि बिचारै ॥ ५७॥ राग आसावरी ॥अँग शृंगार सँवारि नागरी सेज रचतहरि आवहिंगे।
सुमन सुगंध रचत तापर लै निरखि आइ सुख पावहिंगे॥ चंदन अगर कुमकुमा मिश्रितश्रमते अंग
चढावहिंगे । मैं मन साध करौंगी सँग मिलि वै मनकाम पुरावहिंगे॥रतिसुखअंतभरौंगीआलस
अंकम भरि उर लावहिंगे ।रसभीतर मैं मान करौंगी वै गहि चरण मनावहिंगे ॥ आतुर जबदेखों
पिय नैनन बचन रचन समुझावहिंगे । सूर श्याम युवतीमनमोहन मेरे मनहिं चुरावहिंगे ॥ ५८ ॥
नंदसुवन बहुनायकी अनतहि रहे जाई । वह अभिलाष करतरही ताको बिसराई॥वासरऐसेहीगयो
निशि याम तुलानी ।नारि परी अति सोचमें बिरहा अकुलानी ॥आवन कहिगए सांझही अजहूं
नहिं आए । कीधौं कतहूं रमिरहे फँग परे पराए॥वेई हैं बहुनायकी लायक गुणभारी । सूरश्याम
कुमुदाभवन सुधि करि पगधारी ॥ ५९ ॥ राग केदारो ॥ रहे हरि रैनि कुमुदागेह । परस्पर दोउ प्रेम
भीजे बढ्यो अतिहि सनेह ॥ एकक्षण इक याम बितवति कामरसवश गात। ताहि बीतत याम युग-
सम गनत तारा जात ॥ उनहिं वैसेइ याहि ऐसे रजनि गई भयो भोर।सूर मोसों करिचतुरई गए
नंदकिशोर ॥ ६० ॥ राग नट ॥कुटिलई हरिकरी मोसों। चित्तचिंताभरी सुंदरि करति मन गोसों॥
कहिगए निशि आइहैं हरि अनत बिरमे जाइ ।रैनि बीती उदित दिनकर देखि त्रिय मुरझाइ ॥
भवनही मनमारि बैठी सहज सखि इक आइ । देखि तनुअतिबिरहव्याकुल कहतिबचनसुनाइ॥
बोलि ढिग बैठारि ताको पोंछि लोचन लोर ।सूर प्रभुके बिरह व्याकुल सखी लखि मुखओर
॥६१ ॥ राग गौरी॥आजु तोहिं काहे आनँद थोर । यह बिपरीति सखी तो महियां इन्दु बिन्दु
इकठोर ॥ हरदावन संतत अधिकारी ज्यों बिधु चंद्रचकोर । दधि गृह युगल तु क्यों न बनावति
बिगसत अंबुज भोर॥ कंपित श्वास त्रास अति मोकति ज्यों मृग केहरि कोर । सूरदास स्वामी
रतिनागर तौन हरयो मनमोर॥६२॥राग गौरी॥आजु बिनु आनँदको मुख तेरो।कहा रही मनमारि
भोरहीं अतिव्याकुल मनमेरो॥मोसों गोपकरैजिनिसुंदरि नहिं पावतिवह भाव।सुनौं बात कैसीउप-
जीहै कछु जिनि करे दुराव ॥तब बोली मधुरी बाणीसों कहा कहौं री तोहिं।तेरे श्याम भले गुण
नागर कपटी कुटिल कठोहिं॥ निशिवसिबेकी अवधि वदी मोहिं साँझ गए कहि आवन।सूर
श्याम अनतहि कहुँ लुब्धे नैन भये दोउ सावन॥६३॥राग सोरठ॥ऐसे गुण हरिकेरी माई। मैंपहि-
चानि रहीहौं नीके कुटिल शिरोमणिराई ॥ अब मोसों उनसों कह बनिहै कछु मैं गई बुलावन।
आपुहि काल्हि कृपा यह कीन्हीं अजिर करिगए पावन॥तोसों मिलें कहूं मेरी सौं तिनसों तूयह
कहिए । सूरदास प्रभु बोलनिसांचे लाज कछूजिय गहिए ॥६४॥राग बिहागरो॥सखी री औरसुन-
हु इक बात ।आजु गोपाल हमारे आए उठि करि नहिं मिसि प्रात॥ कतहूं रैनि उनींदे मोहन
अपने गृहतन जात । आगे द्वार नंद हैं ठाढे ताते गए न सकात ॥डगमगात डग धरत परत पग
आलसवंत जम्हात। मानहु मदन दंड दै छाँडे चुटकी दैदै गात ॥ जो मैं कह्यो कहां रहे
मोहन तौ सन्मुख मुसकात। ताते कछू न उत्तर आयो सूर श्याम सकुचात ॥ ६५ ॥ राग केदारो॥
तब हरि यह चतुरई करी । कह्यो मेरे धाम आवन टार दै गए हरी ॥ आपुही श्रीमुख गए कहि
सही कैसी परी।सेज रचि सब रैनि जागी तब रिसनि हौं जरी॥श्यामदेखे द्वार ठाढे मनहिं मन
झरहरी।कहत सूरसुनाइ हरिकोधन्ययहशुभघरी॥६६॥राग बिलावल॥सखीनिरखि अँग अंगश्यामके।
कहुँ चंदन कहुँ बंदन रेखा कहुँ काजर छबि लखत वामके ॥ आलसभरे नैन रतनारे चतुरनारि

सँग जगे यामके । अपने मन हरि सोच करत यह परी त्रिया फँग कठिन तामके ॥ मान कियो मोतन फिरि बैठी आए हैं यह सुनत नामके। सूर श्याम इक बुद्धि विचारी मनमोहन रति सहित कामके ॥ ६७ ॥ राग सूही ॥ श्याम सैनदै सखीबोलाई। यहकहिचलीजाउँगृहअपनेतूतोमानकियो री माई ॥ अंतर जाइ भए हरि ठाढे सखी सहज निकसी तहँ जाई । मुख निरखत दोउ हँसे परस्पर भवन जाहु मैं लेउँ मनाई ॥ अंग दिखाइ गई हँसि प्यारी सुरतिचिह्न नीकी सुघराई । सूरप्रभुगुन पार लहै को जानीबूझि करीरिसहाई॥६८॥राग बिलावल॥ इहैकहीकहिमौनरही।मन मन कहति दरश अब दीन्हों निशि सबरैनि डही॥ मधुरे वचन सुनाइ सखीसों रिसवश भरे कही। आए कहां जाहिं ताहीके चतुर त्रिया ढिगही ॥ वाबिन उनको कौन मिलेगी नहिं कोउ फिरति बही । सूरज प्रभु इतको जिनि आवैं पग धारैं उतही ॥ ६९ ॥ राग गौरी ॥ सखी गई कहि लेउ मनाई। ज्ञाननमणि विद्यामणि गुणमणि चतुरनमणि चतुराई॥प्रिया हृदय यह बुद्धि उपाई ह्यां तौ नहीं कन्हाई । आतुर चली यमुन जलखोरन काहू संग नलाई ॥ पहुँची जाइ सुरवितनयातट न्हाइ चली अतुराइ । सूर श्याम मारग भए ठाढे बालक मोहनराइ ॥७०॥ राग बिलावल॥ पाँचबरसके लाल ह्वै त्रियमोहन आए। नागरि आगे ह्वैगई तब बोलि सुनाए॥कह्यो कहां री जातिहै काकी तू नारी। मोहिं पठाई श्याम लैजाकी तूप्यारी ॥ यह सुनि नारिचकित भई आपुन तहां आए । तब करसों कर गहिलियो देखत मन भाए ॥ अगम चरित प्रभु सूरके ते लखै न कोई । श्यामनाम श्रवणन पर्यो हरषी मुख जोई॥ ७१॥ राग रामकली ॥ हरषी निरखि रूप अपार ।गह्यो करसों सदन ल्याई जानि गोपकुमार ॥ श्याम मोको बोलि पठई कहत है यह लाल ।भवनलै इन भेद बूझौं सुनौं वचन रसाल ॥ हृदय आनँद भई बाला प्रेमरस बेहाल । कुँवरि अंतःपुर गई लै रच्यो हरि तहां ख्याल ॥ तरुण ह्वै करि उरज परसे दियो अंचल टारि। सूर प्रभु हँसि लई प्यारी भुजन अंकम धारि ॥७२॥राग टोडी॥मुख निरखत त्रिय चकित भई । जो देखी अति तरुण कन्हाई यह को लखै दई ॥ छाँडिदेहु ऐसे मन मोहन हँसिमन लजित भई। ऐसे छंद रचत पिय धनि धनि कीन्ही करनि नई ॥अंकम भरि त्रिय कंठ लगाई कुच उर चापि लई।सूरश्यामभामिनिमनमोहनरतिरससों भोगई॥७३॥राग बिलावल॥श्याममनाई मानिनीहरषित भई अंग। रैनि विरहतनको गयो जे करे अनंग ॥ सुता महर वृषभानुकी सुधि कीनी श्याम । ताको सुख दै हरि चलेप्यारीके धाम॥ प्यारी आवत पिय लखे चितई मुसकाइ।जिय डरपे मोहिं देखिके सुख कह्यो न जाइ॥अब न पियहि उचटाइहौं मोको सरमात। त्रास करत मेरी जिती आवत सकुचात॥आनि द्वारठाढे भएनायक बहुनाम।सूर प्रभुअंग सहजही निरखति रुचिसों वाम॥७४॥ ॥राग गुंडमलार॥श्याम डर वाम निज धाम आए। उतहि प्रमदा धाम सखी सहजहि गई अंगके चिह्न कछु और पाए ॥ देखि हरषी नारि सकुच दीन्ही डारि अतिहि आनँद भरी श्याम रंगी । सखी बूझति ताहि हँसतजामुखचाहि श्यामको मिली री बनी चंगी ॥ कहन लागी कहा कहततूआज मोहिं ताहिनाहींकरतिदुरति कैसे।मिले प्रभु सूर तोहिं जानियहचतुरई नहीं तू करति नहिंलखति जैसे ॥ ७५ ॥ राग सूही॥नैना तो अतिरंगीले चिहुर छूटेछबीले काजरपीक लागिलेआरसी देख। मरगजे वदन अधर दशननि छत कहुँ कहुँ नीकी लागी चंदन रेख ॥ काहेको मोहिं दुरावति सजनी जानी अरसपरस छबिशेष।सूरदास प्रभु नंदसुवन सँग अबहीं सुरति रंग कोसो भेष॥७६॥ राग बिलावल॥अबतूकहादुरावैगी।मोहिंकहतनहिंकाहिकहैगीकबलौंबातलुकावैगी॥मोसीऔरकौन

प्रिय तेरे जासों प्रेम जनावैगी॥मेरीसों उनकीसौंतोको कहा दुराए पावैगी।औरनसीमोहूकोजानति मोते बहुरि रमावैगी॥सूर श्याम तोहिं बहुरि मिलैहौं आखिरतौप्रगटावैगी॥७७॥प्रमदाअतिहर्षित भई सुनि बात सखीके।रोमरोम पुलकित भई उपजी रुचि हीके॥कहति अबहिं ह्याँते गए नँदसुवन कन्हाई। चरित कहा उनके कहौं मुख कह्यो न जाई॥ साँझगए कहि आइहैं मोसोंरीआली।अनत बिरमि कतहूं रहे बहुनायक ख्याली॥ रैनिरही मैं जागिकै भोरहिउठिआए। मान कियो रिस पाइकै पलमाँह छँडाए॥ अगणित गुण प्रभु सूरके कहि तोहिं सुनाऊं। अबहिंचरित करिकै गए तेही गुण गाऊं॥७८॥ राग रामकली ॥ आजुसखीयमुना मगमोहनमोहिं छली छँदलाइ। कोतू आहि कौनकी वनिता बात एक सुनि आइ॥ बिहँसि कह्यो मोहिं श्याम पठायो सुनत विरह गतिभूली। रति जल जलज हियो हुलस्यो मन पलक पाखुरी फूली॥ जानि कुमार गह्यो करसों करल्याई भवन बोलाइ। नैन मूँदि अंचल गहि डारचो मैं माधो मिलि आइ॥ छैलछुयो उर वदन विलोक्यो सकुचि रही मुसकाइ। छाँडहु सूर श्याम तुम्हरी अब आवनि जानि न जाइ॥७९॥राग धनाश्री॥ आवत ही मैं तोहिं लख्यो री।तुमहु भली उनको मैं जानति अधर बिंब मनो कीर भख्योरी॥ अँग मरगजी पटोरी देखी उर नखछत छबिभारी। धनि वै नंदसुवन धनि नागरि कियो सुरतिरण हारी॥ हँसतगई सखी भवन आपने मन आनंद बढाए। सूर श्याम राधिका धामके द्वारे शीश नवाए॥८०॥ राग सारंग ॥ राधिका श्यामतनदेखिमुसक्यानी।हारबिन गुण बन्योअधर काजर रेख नैन तंमोर तुतरातवानी॥ पागलटपटी बनी उरह छूटी तनी अंगकी गति देखि मन लजानी।उलटि कंकन पीठि बाहु विह्वल ढीठ चतुरई चतुर्भुज अधिक ठानी॥ पाणि पल्लव अधर दशन गहिरही बैन बोली वचन हारि मानी। बलि बलि सूर प्रभु अंगभरि प्राणपति नागरी नवल उरघालि सानी॥८१॥ राग बिलावल ॥ भली करी पिय ऐसेहूं मेरे गृह आए। लीन्हें कंठ लगाइ कै बडभागिनि पाए॥ कहा सोच जिय करतहौ भुजगहि कर लीन्हों। गई भवन भीतर लिये तहँ बैठक दीन्हों॥ श्याम सकुचि अँग हेरहीं नागरि पहिचानी। चिह्न निहारत डर कहा आवतही जानी॥ या छबिपर उपमा कहौं जो त्रिभुवन होई। तुम जानत यह रूपको अरु लखै न कोई॥ चंदन वंदन पानरंग अधरन काजर छवि। सूर श्याम उर करजको को वरणि सकै कवि॥८२॥ काहेको पिय सकुचतहौ। अब ऐसो जिनिकाम करौ कहुँ जो अतिही जिय अकुचतहौ॥ अबकी चूक नहीं जिय मेरे और दिननको जानि रहौ। सौंह करौ मेरी मो आगे डरडारौ जिन मौन गहौ॥ यह सुनि श्याम हरषि कुच परसे बारबार शिव सौंह करी।सूर श्याम गिरिधर गुण नागर बात आजुते सहीपरी॥८३॥ राग गुंडमलार ॥श्याम सौंह कुच परस कियो। नंदसदनते अबहीं आवत और त्रियनको नेमलियो॥ ऐसी शपथ करौ काहेको जो कछुआजुकरी सु करी। अबजुकालिते अनत सिधारो तब जानोंगे तुमहि हरी॥ मैं सतिभाव मिली हँसि तुमको कहा आजुकी सौंह करौ। सूर श्याम जो भई सुभई जू अबते सबको नेमधरौ॥८४॥ राग गुंडमलार ॥अहो राजत राजीवनैन मोहन छबि उरग लता रंग लाग। जेहि बनितारसवश कीन्हें निशि प्रगट होत अनुराग॥ सिथिल अंग अरु सिथिल पाग वनी सिथिलचरणगति आज। मनहुँ सेज रेवा ह्रदते उठि आवतहैं गजराज॥ भाल मध्य जावकरँग देखत लागतिहै मोहिं लाज। तुम अपने जिय यों जानतहौ तिलकलोक जई राज॥ हंस बंधु रव लोचन ललना मिलित निशाकृति काज। वदन चंद वियसंधि जानि नहिं बढत किरनि मनलाज॥ भवनजीव

सुत लग्यो अधरपर यह छबि कही न जाइ। मनो बंधूक सुमन ऊपर विय अलिसुत बैठेआइ॥ कुच कुमकुम अवलेप तरुनि किए शोभित श्यामलगात। गत पतंग राका शशि विय संग घटा सघन शोभात॥ श्याम हृदय लछने ता ऊपर लगी कज्जलांकृत रेष। मनहुँ वसंतराज रुचि कीरति अरुण किसलतरु भेष॥कामबाण वर लिए पंच चितवत प्रति अँग अँग लाग। अब न जान गृह देउँ पियारे जब आए तब भाग॥ तादिनते वृषभानुनंदिनी अनत जान नहिं दीन्हें। सूरदास प्रभु प्रीति पुरातन यहि विधि रसवशकीन्हें॥८५॥अथ बडोमानसमय॥ राग बिलावल॥ सखियन सँग लै राधिका निकसी ब्रजखोरी। चली यमुनअस्नानको प्रातहिउठिगोरी॥ नंदसुवन जागृहवसे तेहि बोलन आई। जाइ भई द्वारे खरी तब कढे कन्हाई॥ औचक भेट भई तहां चकृत भए दोऊ। ये इतते वै उतहिते नहिं जानतकोऊ॥ फिरीसदनको नागरी सखि निरखत ठाढी। स्नान दानकी सुधि गई अति रिस तनु बाढी॥श्याम रहे मुरझाइकै ठग मूरीखाई। ठाढे जहँकेतहँ रहे सखियन समुझाई॥ इतनेहीके ह्वै गए गहिबाँह लैआई। सूरजप्रभुको ले तहां राधा दिखराई॥राग रामकली॥ राधहि श्याम देखी आइ। महामान हृढाय बैठी चितै कांपै जाइ॥ रिसहि रिस भईमगनसुंदरि श्याम अति अकुलात। चकितह्वै जकि रहे ठाढे कहि न आवैबात॥देखिव्याकुलनंदनंदन सखी करति विचार। सूरप्रभुदोउ मिलेजैसेकरोसोइउपचार॥८५॥राग कान्हरो॥सखी एकगई मानिनि पास। लखति नहिं कछु भाव ताको मिटीमनकीआस॥ कहौं कासों कौन सुनिहै रिसनि नारि अचेत। बुद्धि सोचति त्रिया ठाढी नेक नहीं सुचेत॥श्याम व्याकुल अतिहिआतुर यहि कियो हृढ मान।सूर सहचरिकहतिराधा बडीचतुरसुजान॥८७॥राग कान्हरो॥ नहिंतेरोअतिहीहठनीको। मेरो कह्यो सुनहु ब्रज सुंदरि मान मनायो नागर पियको॥सोइ अतिरूप सुलक्षणनारी रीझे जाहि भावतो जीको।प्यासे प्राण जाइँ जो जलबिनु पुनि कह कीजै सिंधु अमीको।तो जूमान तजहुगी भामिनि रविकी रसमि कामफल फीको।कीजै कहा समय बिनु सुंदरिभोजन पीछे अचवनघीको॥ सूरस्वरूप गर्व जोबनके जानतिहौ अपने शिर टीको।जाके उदय अनेक प्रकाशत शशिहि कहा डर कमलकलीको॥८८॥राग सारंग॥चितयो चपल नैनकीकोर।मन्मथबाण दुसह अनियारे निकसे फूटि हिए वहि ओर॥ अति व्याकुल धुकि धरणि परे जिमि तरुण तमाल पवनके जोर। कहुँ मुरली कहुँ लकुट मनोहर कहुँ पट कहूँ चंद्रिका मोर॥ खन बूडत खनहीखन उछलत विरहसिंधुके परे झकोर। प्रेम सलिल भीज्यो पीरोपट फट्यो निचोरत अंचल छोर॥ फुरै न वचन नैन नहिं उघरत मानहुँ कमल भए बिनभोर।सूर सुअधर सुधारस सींचहु मेटहु मुरछा नंदकिशोर॥८९॥राग नट॥राधे तेरे नैन किधौं मृगवारे।रहतनयुगल भौंह युग जोते भजत तिलकरथ डारे॥ यदपि अलक अंजन गहि बांधे तऊ चपल गति न्यारे।घूंघट पट बागरज्यों बिडवतजतन करत शशि हारे॥ खुटिला युगल नाक मोती मणि मुक्तावलिग्रीव हारे।दोउ रुख लिये दीपकर मानो किये जात उजियारे॥मुरलीनाद सुनत कछु धीरज जिय जानत चुचकारे।सूरदास प्रभु रीझि रसिक पिय उमन प्राण धनवारे॥९०॥राधे तेरे नैन किधौंरी बान।यों मारे ज्यों मुरछि परै धर क्यों करि राखै प्रान॥ खगपर कमल कमल पर केदलि केदलि पर हरि ठान।हरि पर सर सरवर पर कलसा कलसा पर शशिभान।शशिपर बिंब कोकिला ताबिच कीर करत अनुमान॥ बीच बीच दामिनि दुति उपजत मधुपयूथ असमान॥तूनागरि सब गुणनि उजागरि पूरण कलानिधान।सूरश्याम तो दरशन कारण व्याकुल परे अजान॥९१॥राग नट॥राधे तेरे नैन किधौं बटपारे।

चितवत दृष्टि बाण भरि मारत घूमत ज्यों मतवारे॥करि अंजन मनो पियमनरंजन खंजन नैन सँवारे। चलिमुसक्याय श्यामसुंदरपै नाचत ज्यों नट वारे॥ थकित भए देखत नँदनंदन तिनसों कहिकै हारे।सूरदासप्रभुतुम्हरे मिलनकोकोटिमान पचिहारे॥९२॥राग सारंग॥चपलभामिनिके भौंहैं बंक।अलक तिलक छबि चित्र लिखीसी श्रुति मंडल नाटंक ॥ तेरो रूप कहाँलौं वरणौं नागरताको अंग। उर सुदेश रोमावलि राजत मृगअरिकोसो लंक ॥तेरे नैन सुभट अनियारे नगधरन निशंक।सूरजचरितचुनौतीपठवतभयोमदन मनरंक९३राग मलार॥यहऋतुरूसिबेकीनाहीं। वरषत मेघ मेदिनीके हित प्रीतम हरषि मिलाहीं ॥जे तमाल ग्रीषमऋतु डाहीं ते तरुवरलपटाहीं। जे जलबिन सरिता ते पूरण मिलन समुद्रहि जाहीं॥ जोबन धन है दिवस चारिको ज्यों बदरीकी छाहीं । मैं दंपति रस रीति कहीहै समुझि चतुर मनमाहीं॥ यह चित धरहु सखी री राधेका दै दूतीकोबाहीं । सूरदास हठि चलहु राधिका सँगदूती पियपाहीं ॥९४॥राग बिलावल॥ दधिसुतवदनी राधिका दधि दूरि निवारौ । दधिसुत दृष्टि मेलि दधिसुतमें दधिसुत पतिसों क्यों न बिचारौ॥ घरहिछाँडिकै घरहि पकरिलै घरहु लता घनश्याम सवाँरौ ।हार पहिरि कहि हार पकरि करि हार गुबर्धननाथ निहारौ ॥ समुझि चली वृषभानुनंदिनी आलिंगन गोपाल पियारौ । विद्यमान कलहंस जात गलि सूरदास अपनो तनु वारौ ॥९५॥राग सोरठ॥राधे हरिरिपु क्यों न छपावति। मेरुसुतापति ताके पति सुत ताको क्यों न मनावति ॥ हरि बाहन ता बाहन उपमा सो तैं धरे दृढावति । नव अरु सात बीस तोहिं शोभित काहेगहरुलगावति॥ सारँग वचन कह्यो करिहरिको सारँग वचन निभावति।सूरदास प्रभु दरश विना तुव लोचन नीर बहावति ॥९६॥राग नट॥राधे हरिरिपु क्यों न दुरावति। शैलसुतापति तासु सुतापति ताके सुतहि मनावति ॥ हरिबाहन शोभा यह ताकी कैसे धरे सुहावति। द्वै अरु चारि छहौ वै बीते काहेको गहरु लगावति॥ नौ अरु सात राज तहँ शोभित ते तू कहि क्यों दुावति । सूरदास प्रभु तुमरे मिलनको श्रीरंग भरि आवति ॥ ९७ ॥ राग सारंग ॥राधे हरिरिपु क्यों न दुरावति।सारँगसुतबाहनकीशोभासारँगसुतन बनावति ॥शैलसुतापति ताके सुतपति ताके सुतहि मनावति। हरिबाहनके मीत तासु पति तापति तोहिं बुलावति ॥ राकापति नहिं कियो उदौ सुनि यासमये नहिं आवति। बिधिविलास आनंदरसिक सुख सूर श्याम तेरे गुण गावति ॥ ९८ ॥ राधा तैं बहु लोभ करचो।लावनरथतापति आभूषण आनन ओप हरचो। भ्रुकुटि कोदंड अवनि धरि चपला विवश ह्वै कीर अरचो । पिक मृणाल अलिअरित रूप सम,ते वपु आप धरचो ॥ जलचरगति मृगराजसकुचिजियसोचनजाइ परचो। सूरदास प्रभुको मिलि भामिनि निशि सब जात टरचो॥ ९९ ॥राग गौरी॥ राधेयामेंकहा तिहारो। मुख हिमकर तनु हाटक बेनी सो पन्नग अँग कारो ॥ गतिमराल केहरि कटि कदली युगल जंघ अनुहारो। नैन कुरंग वचन कोकिलके नासा शुक कहां गारो ॥ विद्रुम अधर दशन दाडिमकन करो न तुम निरवारो। सूरदास प्रभु त्रिभुवनपतिको एकौ न उनहिं उबारो॥२२००॥ राग बिहागरो ॥ तोहिं किनरूठब सिखई प्यारी। नवल वैस नव नागरि श्यामा वैनागरगिरिधारी॥ सिगरी रैनि मनावत बीती हाहा करि हौं हारी । एतेपर हठ छांडत नाहीं तूवृषभानुदुलारी ॥शरद समय शशि दरशि समर सर लागे उन तन भारी। मेटहु त्रास दिखाय वदनविधु सूर श्याम हितकारी ॥ १ ॥राग ईमन॥ आजु तेरे तनमें नयो जोबन ठौरठौर सु बनायो पिय मिलिमेरेमन क्याहे हसि रही बे काज । अधिक राखैं बडाई तोहि तोहि करैं माई और सब त्रियनमें तू अधिकाई

अरु तिनमें भाग सुहाग बिराजत आज ॥ रिस दूरि करो छिआ मानि मेरे कहे तोहिं रूसनै न आवै लाज। सूर प्रभुको औसेर अतिही भई अबेर री वेग चलि सजि शृंगार काढि माठी खग वारो आइकै साज ॥ २ ॥राग पूरबी॥देख री कमलनैन मधुरमधुर बैननि हँसिहँसि कबके करत मनुहारि । जब हरि नीचे चितवत भरिभरि अँखियन लाडिली वारति मानकी रिस निवारि॥ अति आसक्त जानि मनमोहन रीझि मान दान दै प्रीति बिचारि । सूरदास प्रभुके चरणन पूज री आली प्रेम उमँगि अंसु ढारि ॥३॥राग ईमन॥अनबोली क्यों न रहै री आली तू आई मोसोंबात बनावन। बहुत सही हौं घर आए तेऊपर जात न तू लागी है पाछिली सुरति दिवावन ॥ वे अति चतुर प्रवीण कहा कहौं जिन पठई तोको बहरावन। सूरदास प्रभु जियकी होनी की जानति कांच करोतीमैं जल जैसे ऐसे तू लागी प्रगटावन॥४॥राग कान्हरो॥तू आई है बात बनावन । जाहि न ह्यांते बैठिरही है ए आई है मोहिं मनावन ॥ आरि करत कहि मोहिं सुनावत जाइ रहे नहिं ताके । को उनकी ह्यां बात चलावै इतनो हित है काके ॥ इक रिस जरति मनहिं मन अपने तोहीको वै भावत । सूरदास दरशन ता गृहको उहै ध्यान मन भावत ॥ ५॥राग केदारो॥यह कहि क्रोध मगन भई । रही एकटक साँस बिन तन बिरह विवश भई ॥ बारबार सखी बुलावति कहा भई दई । नारि नउमी दशा पहुँची ह्वै अचेत गई ॥ श्याम व्याकुल धरणि मुरछे त्रिया रोष हई। सूर प्रभु गए तीर यमुना काम जरनि ठई ॥ ६ ॥राग कान्हरो॥ रिसमें रसकी बात सुनाई । चतुर सखिन यह बुधि उपजाई ॥ क्रोध मगन त्रिय चतुर जगाई । जागतै दूतिका बोली तोको श्याम बुलाई ॥ उमधि गई तनु सुरति सँभारी फिरि बैठी लै मान । कान्ह गए यमुनातट व्याकुल यह गति देखि अजान॥काहेको बिपरीति बढावति यहकहि गई हरिपास । देख जाइ सूरके स्वामी कुंजद्रुमनतर बास॥ ७॥राग बिहागरो ॥ हरिमुख राधाराधा बानी । धरणीपरेअचेतनहींसुधिसखी देखि बिकलानी ॥ वासर गयो रैनि इक बीती बिन भोजन बिनपानी । बाँह पकरि तब सखिन जगायो धनिधनि शारँगपानी ॥ ह्यां तुम विवश भए हौ ऐसे ह्वां तो वै विवशानी । सूर बने दोउ नारि पुरुष तुम दुहुँकी अकथ कहानी ॥ ८ ॥ राग अडानो ॥ लाल अनमने कत होतहो तुम देखो धौं देखो कैसेकैसेकरि ल्याइहौं। जलनिकटकीबारुजैसेगाढेगहि ऐसी कठिन होती त्रियाकी प्रकृति हौंतो करहीकर पघिलाइहौं । रिस अरु रुचि हौं समुझिदेखिहौं वाके मनकी ढरनि वाकी भावती बात चलाइहौं। सूरदास प्रभु तुमहिं मिलैहौं नेक न ह्वैहौंन्यारेजैसेपानीमें रंगमिलाइहौं॥९॥ राग भैरव ॥ सखी गई हरिकोसुखदै।व्याकुलजानिचतुरई कीन्ही अब आवति प्यारीको लै ॥ आतुरगई मानिनीआगे जाइ कह्यो अजहूँ रिस है। मोहन रहे मुरछि द्रुमके तर त्रिभुवनमें ह्वैहै यश है ॥ अजहूं कह्यो मानि री मानिनिउठिचलिमिलिपियको जिय लैहै। सूर मानगाढो त्रियकीन्होंकहैबातकोउकोटिकलै॥१०॥राग सारंग॥ तूचलिरीबनबोली श्याम । कमलनैनके तू अति वल्लभ सुरति करी हरि आतुर काम ॥ मुरलीमें तुव नाम प्रकाशत तेरे हितको सुन री बाम । कोमल करनि सुमन बहु तोरत रुचिसों सेज रचत गृह धाम ॥ मन क्रम वचन शपथ चरणनकी बिसरत नहीं तुम्हारो नाम।सूरदास प्रभुको मिलि भामिनि जो पायो चाहत विश्राम॥११॥राग रामकली॥रसिक राधे बोली नंदकुमार । दरशनको तरसत हरिलोचन तू शोभाकी धार ॥ खंजरीट मृग मीन मधुप मिलि रंभा रचि अनुसार। गोरि सकुचि शशि विरथ कियो रथ मेरु उलटयो बडि तार॥ कौन हेतुते मिटयो सितासित बिछुरी कौन बिचार। मन्दाकि-

नि मानो शिर धरिकै रुद्रनि करी पुकार॥राख्यो मेलि पीठिते परधन हर जु कियो बिनहार।
सूरदास प्रभुसों हठ कीन्हों उठिचल क्योंन सवार॥ १२ ॥ राग सारंग ॥ बोलतहैं तोहिं नंदकिशोर।
मान छाँडि सखीनेक चितैरी पैयांलागौं करौं निहोर॥ तरिवन तिलक बनी नकबेसरिचख काजर
मुख सुरँग तमोर। सब शृंगार बन्यो यौबनपर लै मिलि मदनगोपाल अकोर ॥ लताभवनमें सेज
बिछाई बोलत सकल विहंगम मोर।सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको ज्यों दामिनिघनचंद्रचकोर॥१३॥
राग केदारो ॥ चल राधे बोलत नंदकिशोर। ललित त्रिभंग श्यामसुंदर घन नाचत ज्यों बन मोर ॥
छिनछिन विरस करतिहै सुंदरि क्यों बहरत मन मोर । आनँदकंद चंद वृंदाबन तू करि नैन
चकोर ॥ कहा कहौं महिमा तुअ भागकी पुण्य गनत नहिं ओर। सूर सखी पियपै चलि नागरि लै
मिलि प्राण अकोर ॥ तोहिं बोलै री मधु केशी मथन। यमुनाकूल अनुकूल तृपारन चकित विलो-
कत सकल पथन ॥ न करु बिलँब भूषण कृत दूषण चिहुर बिहुर नाना करन गथन ।
समुद कुमुद गति मकर मिलन दुति पसित भए सब नाथ नथन ॥ निकुंजनिकी सैन साजे
एकाकी रमत सखी बियो न सथन । अति जु कुसुमवास सखी री तुम्हारी आश
हरिजू रचि धरे अपने हथन॥युग जु जातपल श्रीगोपालके कुटिल तमकिरी चढे हैं रथन ।सूरदास
अतिगति कामरत वासर गतभयोतुम्हरीकथन॥ १४ ॥राग सारंग ॥माननि मानमनायोमोर।हौंमाई
पठई हौं तोपै प्रीतम नंदकिशोर ॥ तेरे बिरह वृषभानुनंदिनी मोहन बहरावत डोर । तानतरंग
मुरलिमें लैलै नाम बुलावत तोर ॥ बलि तुहि जाउँ बेगि लै मिलऊ श्याम सरोज वदन तुव
गोर ।सूरदास ऐसी दृष्टि सुधानिधि चरणकमल कमलाचितचोर ॥ १५ ॥ माननिनेकचितयहि
ओर। नाशत तिमिर वदन प्रकाशते ज्यों राजत रवि भोर ॥ तुव मुख कमल मधुप मेरो मन
बिंध्यो नैनकी कोर। वक्रविलोक माधुरी मुसुकनि भावतहै प्रिय तोर ॥ अंतर दूरिकरौ अंचलको
होइ मनोरथमोर।सूर परस्पर रहौप्रेमवशदोउमिलिनवलकिशोर॥ १६ ॥ राग नट ॥कहि पठई हरिबात
सुचितदै सुनि राधिका सुजान। तैंजु वदन झाँप्यो झुकि अंचल इहै न दुख मेरे मन मान॥ यहपै
दुसह जु इतनेहि अंतर उपजि परै कछु आन।शरद सुधा शशिकी नवकीरति सुनियत अपने
कान॥ खंजरीट मृग मीन मधुप पिक कीर करतहैं गान। बिद्रुम अरु बंधूक बिंब मिलि देत
कविन छबिदान॥ दाडिमदामिनि कुंदकली मिलि बाढ्यो बहुत बखान। सूरदास उपमा नक्षत्र
गन सब शोभित बिनभान॥ १७॥ राग सारंग॥ रही दै घूँघटपटकी ओट। मनो कियो फिरिमान
मवासो मन्मथ बंकट कोट॥ नहसुत कील कपाट सुलक्षण दै दृग द्वार अगोट। भीतर भाग
कृष्णभूपतिको राखि अधर मधु मोट॥ अंजन आड तिलक आभूषण सचि आयुध बड छोट।
भ्रुकुटीसूरगहीकरसारँगनिकरकटाक्षनिचोट॥ १८॥ राग बिलावल ॥तैं जुनीलपटओटदियोरी।सुन
राधिका श्यामसुंदरसों बिनहि काज अतिरोष कियो री॥ जलसुत बिंब मनहु जल राजत मनहुँ
शरद शशि राहु सियो री। भूमिघिसनि किधौंकनकखंभ चढिमिलि रसहीरस अमृतपियो री॥
तुम अतिचतुर सुजान राधिका कत राख्यो भरि मानु हियो री। सूरदास प्रभु अँग
अँग नागरि मनो काम कियो रूप वियो री ॥ १९ ॥ सारँगारिपुकी ओट रहे दुरि सुंदर
सारँग चारि। शशि मृग फनिग ध्वनिग दोउ अँगसँग सारँगकी अनुहारि॥ तामें एक और सुत
सारँग बोलत बहुरि बिचारि। परकृत एक नामहैं दोऊ किधौं पुरुष किधौं नारि॥ ढाकति कहा
प्रेमहितसुंदरिसारँगनेकउघारि।सूरदास प्रभु मोहे रूपहि सारँगवदननिहारि॥२०॥यहितेरे वृंदा बन

बाग । सुन राधिका कदमविटपनकी शाखाएक अमीफल लाग ॥ श्याम अरुणकछु अधिक पीत छबि वरणि जाइ नहिं अंगविभाग। अतिसुपक्क मुरलीके परसत चुइचुइ उमँगिपरत रसराग॥ब्रजवनिता वर बारि कनकमय रोके रहत सुधासुरनाग। तुवप्रताप छुइसकत न सुंदरि सुर मुनिमर्कटकोकिल काग ॥ मैं मालिनि जतननिजल जुगयो सींचनसु हथपरे कर दाग। सूर सु श्रमउठिभेटिपरस्पर पिउ पियूषपाएबडभाग॥२१॥ राग सारंग ॥देखिश्यामकोवदनशशिमाई मोहिंअपनपौभूल्यो । विद्यमान या दृष्टिसरोवर मोहन वारिज फूल्यो॥वारि अगाध सघन वृंदावन चंचल लता तरंग। निगम मृणाल समृति पत्रावलि गावत मुनिजन भृङ्ग॥सुरभी सुभग हंस गोवृषमृग जलचर जीव अनंत । सूर कछू यह ह्यां री अद्भुत; लीला कमलाकंत ॥२२ रागबिलावल ॥ अब राधे नाहिंन ब्रज नीति । नृपभयोकान्हकाम अधिकारीउपजी है ज्योंकठिन कुरीति॥ कुटिलअलकभ्रुवचारुनैन मिलि सचरे श्रवणसमीप सुमीति । वक्रविलोकनिभेदभेदिया जोइकहतसोइकरतप्रतीति॥ पोचपिशुन लस दशनसभासद प्रभु अनंग मंत्री बिनभीति। सखि बिनमिलै तौनाबनिऐहै कठिन कुराज राजकी ईति ॥ मंदहास मुख मंद बचन रुचि मंदचाल चरणन भइप्रीति।नखशिखते चित चोर सकलअँग जस राजा तस प्रजा वसीति ॥ तेरो तनु धनरूप महागुण सुंदर श्याम सुनी यह कीर्ति।सुकरिसूर जेहि भाँतिरहैपति जिनि बल बाँधि बढावहु छीति॥२३ ॥राग नट ॥राधेतेरेरूपकी अधिकाइ । जो उपमा दीजै तेरे तनु तामें छबि न समाइ । सिंह सकुचि सर व्यथा मरति दिन बिन सोइ नी सुकाइ। शशि उर घटत हेम पावक परि चंपक कुसुम रहे कुम्हिलाइ॥ इभ तूटत अरु अरुण पंकभएबिधिना आन बनाइ।कद्रुज पैठि पताल दुरेरहि खगपति हरिबाहन भएजाइ॥हंसदुरयो सर दुरयो सरोरुह गज मृग चले पराइ।सूरज दास बिचारि देखि मन तोर रसन पिक रही लजाइ ॥२४॥राग मलार ॥ राधे तेरो रूप न आनसो ॥ सुरभीसुतपतिताको भूषण सुत धनउदितनपुंजे भानसो ।अमी रसाल कोकिला जु साधे अंबुज चित अँकुराभिरामसो॥विद्रुमअधरदशन दाडिम बित्र भृकुटी किए सुठानसो । सूरदासप्रभुसोंकबमिलिहौसुफलरूप कल्यानसो॥२५ ॥रागसारंग॥ राध यह छबि उलटि भई । सारँगऊपर सुंदर कदली तापर सिंह ठई ॥ ताऊपर द्वै हाटक बरणौं मोहन कुं मई ॥ तापर कमल कमलबिच विद्रुम तापर कीर लई। ताऊपर द्वै मीन चपल हैं मउनी साध रही । सूरदास प्रभु देखिअचंभो कहत नपरत कही॥ २६ ॥ राग केदारो॥ लागो या वदनकी बलाइ । खंजन तेरे खरे कटाक्षनि न्याउ गुपाल बिकाइ ॥ का पटतर द्यों चंद्र कलंकी घटत बढत दिन लाजलजाइ । जा शशिकीतुमआरि करतहौ चंद्र निहारौ आइ॥ढोटाजोपैखरो अगरो बात कहत बनाइ ।सूरदासप्रभुतुम्हरेमिलनतेतनुकी तपत बुझाइ॥२७॥राग बिलावल॥ जलसुतप्रीतमा तारिपुबंधन आयुध आनन बिलख भयो री। मेरुसुतापति बसत जु माथे कोटि प्रकाश रिसाइ गयो री ॥ मारुतसुतपति अरिपुर वासी पितु बाहन भोजन न सोहाइ । हरसुत बाहन अशन सनेही मानहु अनल देह दव लाइ॥ उदधिसुतापति ताकर बाहन ता बाहन कैसे समुझावै। सूर श्याम मिलि धर्मसुवनरिपु ता अवतारहि सलिल बहावै ॥ २८॥ राग नट ॥ लोचनश्यामजूके सायक । नैन चितै वृषभानुनंदिनी वश करि गोकुलनायक ॥ यहै जानि पठई नँदनंदन तुम सब विधि सुखदायक । तू ब्रजनाथशिरोमणि सजनी श्यामसुँदर पिय लायक ॥ लग लागे पागे उर अंतर कठिन शिलीमुख पायक ।सूरदासप्रभुमोहन जोरी करी कुंज मनभायक ॥ २९॥राग सारंग ॥ जबते श्रवण सुन्यो तेरो नाम। तबते हा राधा राधा हरि इहै जु मंत्र जपत दुरि दाम ॥ बस

निकुंज कालिंदीके तट सुरभी सखा छांडि सुखधाम। विरह वियोग महायोगी ज्यों जागतही बीतत युगयाम ॥ कबहुँक किसलय पीठ सुचिर रुचि कबहुँक गान करत गुणग्राम। कबहुँक लोचन मूँदि मौन ह्वै चित चिंतत अँगअँग अभिराम ॥ तर्फत नैन हृदयं होमत हवि मन वच क्रम औरै नहिं काम। तरफत नैनहु देत मनोहर ब्रह्मभोज बोलत विश्राम।सूरश्यामकृशगातसबहि बिधिदरशनदेपुरवैपियकाम॥३०॥ राग अडानो॥ मोहननीकोरीअतिनीको।तासोंनरूसनकीजै हितकै मनाइ लीजै हँसतहँसत दूरि करै न रिस जीको॥अतिहिमानिनीजजेतेऊमैंमनाइदईअतिहि कठिन हठ देख्यो री तो तीको। दूसरी यामिनि गईत्योंत्योंतूहठीलीभईसूरनिरखिमुखदेखो प्यारी पीको॥३१॥ राग बिहागरो ॥और सखी इक श्याम पठाई।हरिको बिरहदेखिभईव्याकुलमान मनावन आई॥ बैठी आइ चतुरई काछे वह कछु नहीं लगार। देखतिहौं कछु और दशा तुव बूझति बारंबार। मनमन खिझति मानिनी याको कौने इहां पठाई। सूर सबन कछु मान मनायो सो सुनिकै इह आई॥ ३२॥ राग बिहागरो॥ अजहूं मान तजत नहिं प्यारी।मदननृपतिके सैन साजिकै घेरे आनि विहारी॥ इतने कटक देखि मनमोहन भीत भए भय भारी। कुसुमबाण जित तितते छूटत खगरव घटा सवारी ॥ पल्लव पट निशान भँवरा भर मंजरी सलिल साटी। सूरदास प्रभुके सहायको उठि चलि वेगि हकाटी॥ ३३॥ राग सारंग॥ वेगि चलौ बलि कुँवरि सयानी। समय वसंत विपिन रथ हैंगे मदन सुभट नृप फौज पलानी॥ चहुँदिशि चांदनि निशा चंचली मनो धवलधर धूरि उडानी। सोरहकला छपाकरकी छबि शोभित शीश छत्र शिर तानी ॥ बोलनि हँसनि चपल बंदीजन मनहु प्रशंसत पिक वर वानी। धीर समीर रटत वरअलिगण मनहुँकमोदिकमुरलिसुठानी ॥कुसुमशरासनअधिकविराजतकठिन मानगढ अति अभिमानी।सूरदास प्रभुकी है यह गति करहु सहाय राधिका रानी॥३४॥ राग मलार॥सुन री सयानी त्रिय रूसिबेको नेम लियो पावसदिनन कोउ ऐसो है करत री। दिशिदिशि घटा उठी मिलि री पियासों रूठी निडर हियो है तेरो नेक न डरत री॥चलिए री मेरी प्यारी मोको मान देनहारी प्राणहूते प्यारे पति धीर न धरत री। सूरदास प्रभु तोहिं दियो चाहै हितचित हँसि क्यों नमिलै तेरो नेम है टरत री॥३५॥सेज रचिपचि साज्यो सघन कुंजनिकुंज चित चरणन लाग्यो छतिया धरकि रही। हाहा चल प्यारी तेरो प्यारो चौंकिचौंकि परै पातकी खरक पिय हियमें खरक रही॥ बात न धरत कान तानतिहै भौंहबान तऊ न चलति वाम अँखिया फरक रही। सूरदास मदन दहत पिय प्यारी सुनि ज्योंज्यों कह्यो त्योंत्यों बरु उतको सरकि रही॥ ३६॥ तूतो मोसों बात न कहति माई चलौगी कहांते। काहेको गहरु कीजै बिन थर कहा लीजै दीजै जाइ उत्तर मैं आईहौं जहांते॥ अनोखी मानिनी नई पाहन पूतरी भई बैन न वदति और जगति नहांते।आई हौं शपथ खाइ जात न परत पाँइ सूरदास प्रभु नवल पहाँते॥ ३७॥राग सारंग॥उतते वे पठवत इतते ए नहिं मानत हौं तौ दुहुंनि बिच चकडोरी कीनी।क्रोध भेष मुख सुदेश नैनन छबि न कहि आवै आतुर ह्वै उठिधाई रावरे लीनी॥तामरस लोचन हावभाव छिन करै माने न मानिनी मान रंगभीनी।सूरजप्रभु राइशिरोमणिआपुहि चलि देखौक्योंननायका नवीनी॥३८॥ हौं पिय रीझि आई गईही मान छुडावन पिय रीझि आई।ऐसी छबि राजतहै मोपै सो वरणीनहिं जाई॥ आपुन चलिए वदन देखिए जौलौं रहे निठुराई।सूर श्याम प्यारी अति गजति रावरीय दुहाई॥३९॥राग कल्याण॥मैं तुम्हें हँसत खेलत छांडिगईअबन्यारेअनबोले रहेदोऊ।इततुमरूखे ह्वै

रहे गिरिधर उत अनमनी अंचल उरमाइ मुख जंघ लगाइ रही ओऊ ॥ नीची दृष्टि करी धरणी नखनि करोवति एहो पिया तबहीं एकएक घूँघटतन चितै रही आहि कहाहो करो अब सोऊ। सूरदास प्रभुप्यारी अंकभरि जाइ लीजैछोडोछोडो कहनदेहु औरनमानैकोऊ४०राग ईमन॥अजहूँ रैनि तीन यामहै जू काहेको हरबरात श्यामजू।मैंतौ वाकीप्रकृतिलिएकैहौंबातजोपैरिसदेखिहौंतौ घरिक लागिहै तिहारी प्यारी लाडिली वामहैजू॥पैजकिएजाति ताहिअबलिएआवतिहौंमेरैंतौति-हारे सुख सुख है याते कौन काम है जू।सुनहु सूरज प्रभु अबके मनाइ ल्याऊँ बहुरि रुठायहौ जू तौ मेरी रामराम है जू ॥ ४१ ॥ राग सारंग॥ जहांबैठेमाधौतहांतूबुलाईराधेयमुनानिकटशीतल छहिआं आछी नीकी लागति कुसुँभि सारी गोरे तन परमचतुर चलि हरिपहिआं ॥ दूती एक गई मोहनपै जाइ कह्यो यह पियपहिआं। सूरदास सुनि चतुर राधिका श्याम रैनि बृंदाबन-महिआं॥४२॥राग सही॥झूमकसारीतनगोरोहो।जगमगिरहोजराइकोटीकोछबिकीउठतझकोरोहो। रत्नजडितके सुभग तरौना मनहु जात रबि भोरे हो। दुलरीकंठ निरखि पियइकटक दृगभएरहेच-कोरेहो।सूरदासप्रभुतुम्हरेमिलनकोरीझिरीझितृणतोरेहो४३॥राग ईमन॥बिरसकीजैनभामिनिरसमें रिसकी बात। हौं पठई तोहिं लैन साँवरे तोहिंबिनु कछु न सोहात॥हाहाकरतितेरेपायँनपरतिहौं छिनछिन निशि घटिजात। सूर श्याम तेरो मग जोवत अति आतुर अकुलात॥४४॥राग बिलावल॥उठ राधे कत रैनि गँवावै। महिसुत गति तजि जलसुतगति ले सिंधुसुतापति भवन नभावै॥अलि बाहनको प्रीतम बाला ता बाहन रिपु ताहि सतावै। सो निवारि चलि प्राणपियारी धर्म सुनहि मति भाव न पावै ॥ शैलसुतासुतबाहन सजनी ता रिपु ता मुख शब्द सुनावै। सूरदास प्रभु पंथनिहारत तोहिंऐसो हठक्योंबनिआवै॥४५॥राग बिहागरो ॥ उत्तरनदेतमोहनीमौनह्वैरहीरीसुनि सब बात नैकहु न मटकी री। अबधौं चलैगी कब रजनी गई री सब शशिबाहनघरनीवेदेखिलट-कीरी॥चैन री करे थरे री मानि कपोल भव नख लिखे तिलहु न कछु मटकी री॥मुगुध बधूरी शठ काहेको करोहैहठ परमभावती तूनागर नटकीरी॥ध्रुवसमान आएरीजुसप्तऋषि बहुरितौवेरह्वैहै तमचुर रटकी री।सूर सखि जाइबलि राधिकाकुँवरि चलिआजुछबिनीकी तेरेआछेनीलपटकीरी॥४६॥राग सारंग॥जिनि हठ करहु सारँगनैनी॥सारँगसजिसारँगपरसारँग ता सारँगपरसारँगबेनी॥ सारँग रमन दशन पुनि सारँग सारग सुत दृग निरखी पैनी ॥सारँग कहो सु कौनबिचारौसारँग-पति सारँग रचि मैनी ॥ सारँग सदनहि लै जु बरन गई अजहुँ न मानति गत भई रैनी। सूरदास प्रभु तुव मगजोवै तूअंधकरिपु तारिपुसुखदैनी॥४७राग बिहागरो॥शर्वरीसर्व बिहानीतोहिंमनावति गयागनी। शुक्र उदय होन लाग्यो जागे तमचुर ढरिआई जु मृगानी॥प्रफुलित ममल गुंजारकरत अलि पहुफाटी कुमुदिनि कुँभिलानी॥सूर श्यामबन मुरछि परेहैंमाननिवारो मोपैक्योंझहरानी४८ राग बिहागरो॥श्यामा प्यारीबोलन लागे तमचुर घटिगई रजनी॥अरी वै मनमोहन ब्रजनायकठाढे सजनी ॥ ठाढे हैं हरि कुंज द्वारे ललित वेणु बजाइ हो। श्रवण सुनत कैसे रहत कैसे तोहिं गेह सुहातहो। तुम कुँवरि वृषभानुकी कछु नेह प्रीति न जानहू। कहि पठई हरि तोहिं काहे न चित्तमें कछु आनहू॥नंदनंदन कह्यो ऐसे सुंदरीह्यां आइहो॥और नहिं कछु काज बनमें नेकमधुर सुर गाइहो ॥ सूर प्रभुहि बिचारि मनमें प्रीतिसों उर लाइए । यहै पुनि पुनि मैं कहति राधिका मनवांछित फल पाइए॥४९राग केदारो॥मोहन तेरेअधीनभएरी इतिरिसकबते कीजतरीगुणआगरी नागरी।तेरे अनउत्तर सुनिसुनि श्याम हँसिहँसिदेत नैकचितै इत भागआगरी॥तेरोई भागसुहाग तेरोई अनुराग तेरेही माथ रति री तू सुन रूपउजागरी॥सूरदास प्रभु तेरो मग जोवत तुहीतुही रट लागी जैसमृगिनी भूलीबागरी॥५०राग नट॥कौनकुमतिआई री जोकह्योनमानति।छाँडिमानसुन

बात सयानी कत हरिसों हठ ठानति॥यह निशि वृथा विहाय पियाबिन सोच नहींउरआनति। बोउत श्याम श्याम दामिनिको मनो शरद ऋतु जल घटत न जानति॥धनुष कलाप सही सब सिखि के भई सयानी गानति॥सूर सुंदरी आपुही कहा तू शर संधानति ॥५१॥तू सुन कानदैरी मुरलीध्वनि तेरे गुण गावैं श्याम कुंज भवन । सन्मुख ठाढे है ताहीको अंक भरत तेरे तनु परसे ज्यों आवतु पवन ॥तेरो स्वरूप आनि उरअंतर नैन मूँदि निकसन कहत न करतगवन॥सूरदास प्रभुकेतू तन मन रमिरही रोमरोमप्रति याहीते नाम पायो राधारवन॥५२॥राग केदारो॥ प्यारी है प्रीतम आरति करतु।तुम्हरे काजे कुँवरि राधिका मेरे पांइनि परतु॥ वरहीमुकुट लुढतअवनी-पर नाहिंन निजभुजभरतु।बारंबार रहटकेघट ज्यों भरिभरि लोचन ढरतु॥अति आधीन मीनज्यों जलबिनु नाहिंन धीरज धरतु।सूरसुजान सखी सुन तुम बिनु मन्मथ पावक जरतु॥५३॥राग सारंग॥ मृगनैनी तू अंजन दै। नवल कुंज कालिंदसुतातट पीको सर्वसु लै॥ शोभित तिलक मृगमद रुचि शुचि भुव बंक चितै॥ हाटक घाटै सुधा पियनको नागिनि लट लटकै।नैन निरखि अँग अंग निरखियो अनख पिया जु तजै॥बादर बसन उतारिवदन यों चंदा जों न छपै।खंजन मीन अंजन दै सकुचेकविसो काहिं गनै॥सूरश्यामको वेगि दरश देहु काम मदनजुडहै॥५४॥राग नट॥राधे कत रिस सरस तई।तिष्ठति जाइ बारबारनि पै होति अनीत नई॥नित तुव जलनि सिंधुसुतमानत मृगमद श्याम दई। जल थल खगनि सुमन गुरु दोऊ द्विज दुति किरन भई॥ विहरत कुंज विलासिनि पद्मिनि सकुच नसे तकई। दुखी दुरे फल त्राहि विरहिनी अतिअपराध बई॥ अब तुम जाहु निकुंज भामिनी नातरु करत खई।परसै सूर चतुर चिंतामणिविपुल विलास मई॥५५॥ राग देवगंधार॥मानिनि मानत क्यों न कह्यो। प्रथम श्याममन चोरि नागरी अबक्यों मानगह्यो॥ जानति कहा रीति प्रीतमकी वन जन जोग मह्यो। रुद्र वीर रवि शेष सहसमुख तिनहूँ न अंत लह्यो॥ बैठे नवल निकुंज मंदिरमें सो रस जात बह्यो। सूरज सखि मोहनमुख निरखहु धीरज नाहिं रह्यो॥५६॥राग नट॥ कुंजभवनमें ठाढे देखो अँखियनभरितबमैंजाऊंगी बलि। मोपै न देखे परे खरे द्रुमडार गहे अकेले नेक तू ठाढीहो ढिग चलि॥ तेरोरी वदन प्रफुलित अंबुज हरिजूके नैना मैं देखे अतिआतुरअलि। सूरदास नँदनंदन प्यारे नेक न कीजे हाहा दूरि करोमानैमिलि॥५७ राग केदारो॥ तेरेमानबनहुतैरीमानिनिनीकोलागतऐसेहिजौलौंलालहिले आऊं। औरनकी हाँसी खेल तिहारी रुपय माय विरसमें यह रस नैनन आनि देखाऊं॥ उलटि पियपै जाऊंनौतम चोप बढाऊं सोरह कलाको शशि कुहू बिगसाऊं। सूरदास प्रभु गिरिधरन-सोंहिलिमिलिबेकोयहसुखरूपअनूपमपाऊं॥५८॥राग बिहागरो॥कहतश्यामसोंजाइमनावोमेरेकहे न मानैजू। कहा रही मौन घालि न कहू अनुमानैजू॥ कहा मनमें घालि बैठी भेद मैंनहिं लखि सकी। आप ह्यां वह वहां बैठी जात आवत हौं थकी॥ नेकहू जो कह्यो मानै कोटि भांतिन मैं कही।हाहा करि मनुहारि करिकरि सुनतही अतिरिस गही॥ कहा बैठे चले बनिहै आपुहू नहिं मानिहौ। तुमकुँवर घरहीके बाढे अबकछू जियजानिहौ॥ बेगि चलिए अनखिजैहै तुम इहां उह वहां जरतिहै। वाके जिय और ह्वैहै कपट करि हठ धरतिहै॥ राधिका अति चतुर जानौ जाइ ता ढिगही रहौ। कहा जो मुख फेरि बैठी मधुर मधुर वचन कहौ। सूरप्रभु अब बनै नाचे काछ जैसो तुम कछ्यो। कहियत गुण प्रवीन राधाक्रोधहीमें विष भछ्यो॥५९॥ सुनि यह श्याम विरहभरे। बारंबारहि गगन निहारत कबहूँ होतखरे॥ मानिनी नहिं मानमोच्यो

दूसरी निशि आजु । तब परे मुरछाइ धरणी काम कर्यो अकाजु॥ सखिन तब भुज गहि उचाए कहा बावरे होत। सूर प्रभु तुम चतुर मोहन मिलो अपने गोत॥ ६०॥ राग बिलावल सूही॥ श्याम चतुरई कहाँ गँवाई । अब जाने घरके बाढेहो तुम ऐसे कहा रहे मुरझाई॥ बिना जोर अपनी जौंवनके कैसे सुख कियो चाहत । आपुन दहत अचेत भए क्यों उत मानिनि मन दाहत ॥ उहई रहो कहैगी तुमको कतहूँ जाइ रहे बहुनायक। सूर श्याम मनमोहन कहियत तुम हो सबहीगुणके लायक॥ ६१॥ राग रामकली॥ तब हरि रच्यो दूतीरूप। गए जहँ मानिनी राधा त्रियास्वांग अनूप॥ जाइ बैठ कहत मुख यह तू इहाँ वन श्याम । मैं सकुचि तहँ गई नाहीं फिरी कहि पति वाम ॥ सहज बातैं कहत मानो अब भई कछु और । तू इहां वै वहां बैठे रहत एकहि ठौर॥ कहो मोसों कहा उपजी वै रटत तुव नाम । सुनतिहै कछु बचन राधा सूर प्रभु वनधाम ॥ ६२ ॥ राधे तैं अति मान कर्यो । यह कहि हरि पछितात मनहिंमन पूरब पाप पर्यो ॥ पहिली अपनी कथा चलायो जब त्रिय भेष धर्यो । तब तेहि रूप अनूप सुमुखि सुनि त्रिभुवन चित्त हर्यो । मोहे असुर महामद माते सुर मुख अमृत भर्यो । शिव गणसहित समेत महामुनि को व्रतते न टर्यो॥ तातनकी छबि निरखि सूर शिव छत ज्यों ज्ञान गर्यो। जेहि जार्यो जगकाम सु माधौ तेरे हठ जात जर्यो ॥ ६३॥ राग बिहागरो॥ इतो श्रम नाहिंन तबहूं भयो । धरणीधर बिधि वेद उधार्यो मधुसो शत्रु हयो ॥ द्विज नृप कियो दुसहदुख मेट्यो बलिको राज लयो। तोर्यो धनुष स्वयंबर कीनो रावन अजित जयो॥ अघ बक वत्स अरिष्ट केशि मथि दावानल अचयो॥ त्रिय- वपुधर्यो असुर सुरमोहे को जगं जो नद्रयो॥ जानोनहीं कहा यारसमेंजेहिशिरसहजनयो। सूरसुत्रल अवतौ हिंमनावतमोहिंसबबिसरिगयो॥ ६४॥ राग मलार॥ समुझिरीनाहिंननईसगाई। सुनराधिकेतोहिं माधौ सों प्रीति सदाचलिआई॥ जबजब मान कियो मोहनसों बिकल होत अधिकाई। बिरहानल सब लोक जरतहैं आपु रहत जलशाई॥ सिंधु मथ्यो सागर बल बाँध्यो रिपुरणजीति मिलाई ॥ अब सो त्रिभुवननाथ नेहवश बन बाँसुरी बजाई । प्रकृति पुरुष श्रीपति सीतापति अनुक्रम कथा सुनाई । सूर इती रसरीति श्यामसों तैं ब्रजवसि बिसराई॥ ६५॥ राधिका तजि मान मयाकरु। तेरे चरण शरण त्रिभुवनपति मेटि कल्प तू होहि कल्पतरु ॥ जिनके चरण कमल मुनि वंदत सो तेरो ध्यान धरे धरणीधर। अहोबावरी कहा तैं कीन्हों प्रीतम पठैदियो बैरनिघर ॥ तुम नागरि वै श्री नागर वर तुम सुंदरि वै श्रीसुंदर बर। वे हरि तो दुख हरत सबनको तू वृषभानुसुता हरिको हर॥ जो श्रुति कछुक कह्यो चाहतिहै उनहिं जानि सखि मोहीसों लर। तबहीं सूर निरखि नैनन भरि आयो उघरि लाल ललिताक्षर॥ ६६ राग बिलावल॥ श्याम चतुरई जानतहौं। एगुण तुमअजहूं नहिछां- डो इन छंदनिमें मानतिहौं ॥ तुमरसबादकरन अबलागे जे सबतेउ पहिचानतिहौं । वै बातैं अब दूरि गईं जु ते गुणगुणिगुणिगानतिहौं॥ यह कहि बहुरि मानगहिबैठीजियहीजियअनुमानतिहौं। सूर करोजोइजोइमनभावै इहैबातकहिभानतिहौं॥ ६७॥ राग बिहागरो ॥ यहकहिबहुरिमानकियो। रिसनि थरथर होति बाला योग नेम लियो ॥ कहति मनमन बहुरि मिलिहौं अब न करौं बिलास। ध्यान धारे विधिको मनावै लेति उरध उसाँस॥ त्रियाको जिनि जन्म पाऊं जिनि करै पतिनारि। जनम तौ पाषाण माँगौं सूर गोद पसारि॥ ६८ ॥ ॥ राग बिलावल॥ श्यामचले पछिताइकै अति कीन्हों मान । व्याकुल रिस तन देखिकै सब गयो सयान॥ बैठे शीश नवाइकै बिनधीरज प्रान । दूती तुरत बोलाइकै पठई दै आन॥ बिरहाके वश हरि परे त्रिय कियो अनुमान। धीर धरौ मैं जातिहों करिये कछु ज्ञान ॥ सावधान करिकै गई दूतिका सुजान । सूर महा वह

मानिनी मानो पाषान ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ ६९ ॥प्यारी अंश परायो दै री। मेरी सिख सुन रसिक राधिका मनमें न्याउ चितै री ॥ आप आपनी तिथिवाई दुहि अचवत अमरसवै री। हर सुरेश सुर शेष समुझि जिय क्यों प्रभु पान करै री ॥ वह झूठो शशि जानि बदन विधु रच्यो विरंचि इहै री। सौंप्यो सुपति बिचारि श्याममित सो तूँ रही लटि लै री ॥ जाकी जहां प्रतीति सूर सो सर्वस तहां सचै री।सिंधु सुधानिधि अर्पिअबहिंउठि विधु पुनि नहीं पचै री ॥ राग बिहागरो ॥ राधिका हरि अतिथि तुम्हारे। रतिपतिअशन काल गृह आए उठि आदर करि कहे हमारे ॥ आसन आधी सेज सरकि दै सुख पैहै पद हरषि पखारे। अर्घ्यादिक आनंद अमृतमें ललित लोल लोचन जलधारे॥ धूप सुवास ततक्षण वशकरिमनमोहत हँसि दीप उजारे। वचनरचन भ्रुवभंग अवर अँग प्रेम मधुर रस परसिन न्यारे ॥ उचितकेलिकटु तिक्त त्यागि पट अमल उलटि अंकम हठि हारे। नखछत छार कसाई कुचग्रह चुंबनसर्पिसमर्पि सवारे ॥ अधरसुधा उपदंश सींक शुचि विधु पूरण मुखवास सचारे। सूर सुकृत संतोपि श्याम-को बहुत पुण्य यह व्रत प्रतिपारे॥७१॥ राग धनाश्री ॥अब मोहिं जानिए सो कीजे।सुन राधिका कहत माधो यों जो बूझिए दंड सो लीजे ॥ उर उर चापि बाँधि भुजबंधन नखनाराच मर्म तकि दीजे। भौंह चढाइ रिसाइ दशन दशि अधरसुधा अपने मुख पीजे ॥ जिनि करै बिलंब भामिनी सुरस सोई करौ जेहि गात पसीजे। ग्रंथि गुणनि गहि गूढ गांठि दै छुटै न कबहूँ श्रमजल भीजे॥ सुन सखि सुमुखि पाँइ लागतिहौं दंपति अरसपरस तनु छीजे। सूर श्यामसँग रस मिलिविलसहु जीवन सफल यहै सुख लीजे ॥७२॥ राग गुंडमलार ॥गह्यो दृढ मान वृषभानुवारी। डुलै बरु स्वर्ग सुरपति सहित सुरनसों डुलै कंचन मेरु रहि निहारी ॥ रैनि रवि उठौ वासर चंद्र होइ बरु डुलैं सब नखत यह होइ भाखै। धरणि पलटै सिंधु मर्यादको तजै शेषशिर डुलैनहिं मान नाखै॥ बांझ सुत जनै उकठो काठ पल्लवै विफल तरु फलै बिन मेघ पानी।सूर प्रभु यह सुनौ बरु अचलचल थके मनहिं मन दूतिका कहति बानी॥७३॥ राग कान्हरो॥दूती यह अनुमान करै। कासों कहौं सुनै को मेरी कैसे कह्यो परै॥हरि पठई मोको आतुर करि यह जिय सोच करै।कैसे वचन कहौंया आगे यह अनुमान करै॥चतुर चतुरई फबै न यासों सुनि रिस अतिहि करै। सूर सहजही मान मनाऊँ जो यह कबहुँ करै॥७४॥ मानलीला॥राग मलार॥मान मनायो राधा प्यारी। दहियतमदन मदननायकही पीर पीरते न्यारी॥तू जु झुकतहै और रूसने अबकाहि कैसे रूषी। बिनही शिशिर तमक तामसते तुव मुख कमल विदूषी॥सुनियतबिरद रूप रसनागरि लीन्ही पलटि कछूसी।तेरे हती प्रेम संपति सखी सो संपति केहि मूसी। उन तन चितै आपतन चितवहुअहोरूपकीराशी। पिय अपनो ना होइ तऊ ज्यों ईस सेइए कासी॥तुमतौ प्राण प्राणवल्लभके वे तुव चरणउपासी। सुनिहै कोऊ चतुर नारि कत करत प्रेमकी हांसी॥ज्योंज्यों मौन भई तुमउनके बाढी आतुरताई। कान्ह आन बनितारत सुनिसुनि जिय बैठी निठुराई ॥ हिए कपाट जोरिजडि ताके बोलतनहीं बुलाई। हा राधाराधा रट लागी चित चातककी नाई॥ जोपै मानत भांवरि नाहीं भाँवरि मानन होई। हियते वादि प्रेमरति वति हौं अंत भावतो सोई ॥ जो गोरी पियनेहगरब तौ लाखकहैकिन कोई।काहू लियो प्रेमपरचो वह चतुर नारि है सोई ॥ कत होरही नारि नीची करि देखत लो-चन झूले। मानहु कुमुद रूठि उडुपति सों किए धर्म मुख फूले ॥ वै तो हित वृषभानुनंदिनी सेवत यमुनाकूले। तेरे तनक मान मोहनके सबै सयानप भूले ॥ अहो इंदुवदनी सुन सजनी

कत पलकन पल जोरै। तुव मुख दरश आशके प्यासे हरिके नयन चकोरै ॥ तेरे बल भामिनी वदत नहिं उपजत काम हिलोरे। सुनियत हते चतुर नागर ते तनक मान भये भोरे ॥ तब दूती फिरि गई श्यामपै श्याम वहां पग धरिए । जेहि हठ तजै प्राणप्यारी सो जतन सवारे करिए ॥ वे वैसे तुम ऐसे वैसे कहो काज का सरिए। कीजै कहा चाव अपनी कत इहां मसूसन मरिए॥ अपनी चोप आप उठि आए ह्वैरहे आगे ठाढे । भूलिगयो सब चतुर सयानप हुते जो बहु गुण गाढे॥ डोलत नहिं बोलत न बुलाए मनहुँ चित्र लिखि काढे । परयोनकामनारिनागरसों हैंघर-हीके बाढे ॥ निबह्यो सदा औरहीको हठ यह जो प्रकृति तुम्हारी। आपुनहीअधीनह्वैठाढे देखि गोवर्धनधारी ॥ प्राणहि पियहि रूसनो कैसो सुन वृषभानुदुलारी । कहूँ न भई सुनी नहिं देखी रहै तरँग जल न्यारी ॥ रिस रूसनो मिलन पलकनको अति कुसुंभरँग जैसो। रहै न सदा छुटत छिनभीतर प्रात ओस तृण तैसो ॥ वे हैं परममलीन किए मन उठि कहि मोहन वैसे । घर आए आदर न चूकिए बैठी दूध अचैसे ॥ वे तौ भँवर भावते वनके और वेलिके तोषी । कीजै मान मदनमोहनसों बात कहै हँसि नोखी॥ तुम जानहु की लाल तुम्हारो तुमहिं उनहिं हैऐसी।याहीते तुम गर्व भरीहौ वे ठाढे तुम वैसी ॥ जोबनजल वर्षाकिनदीज्योंचारिदिनाकोआवै।अंतअवधिहीलौं नातो जो कोटिक कलह उठावै॥ वल्लभको वल्लभको मिलिबो तुमहिं कौन समुझावै । लै चलि भवन भावतेहिं भुज गहि को कहि गारि दिवावै ॥ झुकि ठेली ह्यांते रिसहाती कौने सिखै पठाई । लै किन जाहि भवन अपने ह्यां लरन कौनसों आई ॥ कांपतिरिसन पीठिदै बैठी सहचरि और बुलाई । कछु सीरी कछु ताती वाणी कान्हहि देत दोहाई ॥ कबहुँक लै धरि दर्पण मोहन ह्वै रहे आगे ठाढो । इत नागरी उतहि वै नागर इन बातनको चाढो ॥ बडे बडाईको प्रतिपालैं बडो बडाई छीजै । ताके बडी बडी शरणागत वैर बडेसों कीजै ॥ तू वृषभानु बडे-की बेटी तेरे ज्याए जीजै । राखहु वैर हिए गहि मोसों वैरि हिपीठि न दीजै॥ भामिनिऔरभुअंगिनि कारी इनके विषहि डरैए। राचेहू विरचे सुख नाहीं भूलि न कबहुँ पत्यैए॥इनके वश मन परे मनोहर बहुत जतन करिपैए। कामी होइ काम आतुर तेहि कैसेकै समुझैए ॥जे जे प्रेमछके मैं देखे तिनहिं न चातुरताई । तेरे मान सयान सखी तोहिं कैसेकै समुझाई ॥ बहुरो भए सह-चरी मोहन ताकें अपनी घातैं ।लागे काम सखीके धोखे कहत कुंजकी बातैं ॥सुधि करि देखि रूसनो उनको जब खाई हाहा तैं ।आप पीर परपीर न जानति भूली जोबन मातैं॥कबहुँ न भयो सुन्यो नहिं देख्यो तनुते प्राण अबोले ।होत कहाहै आलसहू मिस छिन घूँघटपट खोले।।पावति कहा मानमें तू री कहा गँवावतिहै हँसि बोले।कालिहि प्राणनाथ तुमप्यारी फिरिहौ कुंजनि डोले॥ कहा रही अतिक्रोधहिए धरि नेक न दया दयानी।प्रगटयोजानि मदनमोहनतनु बातबातअधिका-नी ॥ हितकी कहे अनख लागतिहै समुझहु भले सयानी । मनकी चोप मान कीजतु कह थोरेही गरवानी ॥ रही मूंदि पटसों हठि भामिनि नेक न बदन उघारे। हरि हित वचन रसाल कठिन पाहन ज्यों तृन उवारे ॥ धरे ग्रीवपट सन्मुख ठाढे नेक न कोप निवारे।जा आधीन देव सुर नर मुनि सो दीनता पुकारे ॥ खन गावै खन बेन बजावै कमलभृंगकी नाहीं । खन पायनतन हाथ पसारै छुवन न पावै छांहीं ॥ खनखन लेहि बलाइ वामकी लालच करि ललचाहीं ।कहैआनकी आन सौंह दै खनखन हाहा खाहीं॥ कबहुँक निकट बैठि कुसुमावलिअपनेकरपहिरावै।जोइजोइ बात भावतिहि भावै सोइसोइ बात चलावै ॥जितहिजितहि रुख करै लडैती तितही आपुनआवै।

नाचत जाके डर त्रिभुवन तेहि नेकहु मान नचावै॥जिन नैनन देखत सुख भूले ते दुख नैनसमोवै। जो मुख सकल सुखनिको दाता सो मुख नेक न जोवै॥ जेहि लिलाट त्रिभुवनको टीको सो पाँइनतन सोवै। राजहिं जाहि सनक अरु शंकर बिरंचै ताहि बिगोवै॥ एते मान भये वश मोहन बोलत कटुक डराई। दीपक प्रेम क्रोध मारुत छिन परसत जिनि बुझिजाई॥ ताते करि हरि छल दूतीको कहत बात सकुचाई। कपटी कान्ह पत्याहि न राधे तोहिं वृषभानुदोहाई॥ पठई मोहिं दई उरमाला जहां कहूँ रति मानी। हौं बहराइ इतहि आई री आली तोहिं डरानी॥ काहेको रूसनो बद्यो है मोसों कहो कहानी। नवनागर पहिचानि राधिका यह छल अधिक रिसानी॥जनिए कहा कौन अपराधिनि आनि कान है लागी।सुनिसुनि उठीसुंदरीके जिय प्रगट कोपकी आगी॥ यद्यपि रसिक रसाल रसीली प्रेमपियूषन पागी।कितीदईशिख मंत्र साँवारे तउ हठ लहरि न जागी॥कहिए कहा नंदनंदनसों जैसे लाड लडाई। कौन न भई मानिनी उनसों जेते मान मनाई॥ नवनागर तबहीं पहिचाने नागरि नागरताई।इन छँदबंदनि छंदै पैए प्रेम न पायो जाई॥ हारे अबलासों बल मोहन तजत न पाणि कपोलै।मानहु पाहनकी प्रतिमासी नेक न इतउत डोलै॥ इन ब्योसनि रूसनो करतिहौ करिहौ कबहिं कलोलै। कहा दियो पढि शीश श्यामके खैंचि आपनो सो लै॥तोहिं हठ पर्‍यो प्राणवल्लभसों छूटत नहीं छुड़ाए। देखहु मुरछि पर्‍यो मनमोहन मनहु भुअंगिनि खाए॥ काहेको अपराध लेतिहै करति कामको भायो। नेक निरखि उठि कुँवरि राधिका जो चाहतिहै ज्यायो॥ बहुरो लियो जगाइ मनोहर युवतिन जतन बनायो। बिरहताप बरदाप हरनको सरस सुगंध चढायो॥जिते करे उपचार मनहु तनु जरत माँझ घृत नायो। कामअग्निते बिना कामिनी, कहि कौनें सचुपायो॥ जिनके हित तू त्रिभुवन गाई ठकुरानी करि पूजी। आनँदअंग संग सुख विलसत बननायक है कूजी॥ अनुदिन कामविलास विलासिनि वै अलि तू अंबूजी। ऐसेपियसों मान करतिहै तोसी मुग्ध न दूजी॥ मेरो कह्यो मानती नाहिंन ह्यां अरु कौनकहैगो।राखत मान तिहारो मोहन ऐसी कौन सहैगो॥ जानहुगी तब मानहुगी मन जब तनु मदन दहैगो। करतिहौ मान मदनमोहनसों माने हाथ रहैगो॥ नख लिखि कह्यो जाहु तहईं उठि जाके हाथ बिकाने। राचे रहत रैनि दिन मोहन हरद चून ज्यों साने॥ मुख मेरो हौ मान मनावत मन अंतहि रुचि माने। गावत लोग विरद सांचोई हरि हित कौन सिराने॥ तुम मम तिलक तुमहिं मम भूषण तुमहिं प्राण धन मेरे। हौं सेवक शरणागत आए जानहु जतन घनेरे॥तेरीसों वृषभानुनंदिनी एक गांठि सौ फेरे। हितसों वैर नेह अनहितसों इहै न्याव है तेरे॥ परधन खन दवन दारुन द्रुम डोलनि कुंजनमाहीं। चारन धेन फेन मथि पीवन जीवन रोकत खाहीं॥ डासन कास कामरी ओढन बैठन गोप सभाही। भूषण मोर पयूषन मुरली तिनके प्रेम कहाही॥ प्रेम पतंग परे पावक में प्रेम कुरंग बँधेसे।चातक रटै चकोर न सोवै मीन बिना जल जैसे॥ जहां मान तहां मान मनायो प्रेम न गनिये ऐसे। प्रेममांझ जो करहिंरूसनो तिनहिंप्रेम कहिकैसे॥ कांपत रिसनपीठि दै बैठी मणि माला तन हेर्‍यो। निरखि आप आभास सयानीबहुरि नैनमुख फेर्‍यो॥ लिएफिरतउरमाँझदुराए जानत लोग अँधेरो। एते मान भावती तो कत मान मनावत मेरो॥ तेरीसौं आभास तिहारो यहां और को जोहै॥ लै दर्पण मणिधर्‍यो पांइतर देखि दुहुँनिमें कोहै॥लघु अपराध दासको त्रासे ठाकुरको सब सोहै। निरखिनिरखि प्रतिबिंब उहै तनु नैन नैनमिलि मोहै॥ नेक मोहिंमुसकात

जानि मनमोहन मन सुख आन्यो । मानो दव द्रुम जरत आश भयो उनयो अंबर पान्यो ॥ जो भाई सो सौंह दिवाई तब सूधे मन मान्यो । दियो तमोर हाथ अपने करि तब हरि जीवन जान्यो ॥ हँसिकरि कह्यो चलौ हरि कुंजन हौं आवतिहौं पाछे । लकुटी मुकुट पीत उपरैना लालकाछनी काछे ॥ गोदोहनकी बेर जानि सँग लिए बछरुवा आछे । जो न पत्याहु जाहु मुरलीधर हमहिं तुमहिं हैं साछे ॥ सघनकुंज अलिपुंज तहां हरि किसलय सेज बनाई । आतुर जानि मदनमोहन तनु कामकेलि चलि आई ॥ हँसे गोपाल अंक भरिलीनी मनहुँ रंक निधि पाई । रति विपरीति प्रीति पियप्यारी वर्णत वरणि न जाई ॥ आलिंगन चुंबन परिरंभन दियो सुरतिरस पूरो । छिटकिरही श्रमबूँद बदनपर अरु पांइन खुभि चूरो ॥ मुखके पवन परस्पर सुखवत गहे पानिपिय जूरो । बूझत जानी मन्मथचिनगी फिरिमनो दियो मरूरो ॥ आलसमगन बदन कुँभिलानो बाला निर्बल कीन्हीं । थकित जानि मनमोहन भुज भरि त्रिया अंक भरिलीन्हीं ॥ गोरे गात मनोहर उरजन लसत फुलेल कंचुकी भीन्हीं । मनु मधु कलस श्यामताईकी श्याम छापसी दीन्हीं ॥ इत नागरी नवल नागर उत भिरे सुरतिरणसोऊ । नैनकटाक्ष बाण असिवर नख बरषि निदाने दोऊ ॥ टूटे हार कंचुकी दरकी घाइल मुरे न कोऊ । प्रगट्यो तेज तरनि पदवीकी लाज लजाने दोऊ ॥ यहि डर रहत पितांबर वोढे कहा कहौं चतुराई । भोरयो काम प्रेमहू भोरयो भुरई बैस भुराई ॥ पति अरु प्रिया प्रगट प्रतिबिंबित ज्यों जल दर्पण झाँई । अब जिनि कहै हिएमें कोहै बहुरि परी कठिनाई ॥ करजोरे बिनती करै मोहन कहौ पाँइ शिर नाऊं । हों सेवक निज प्राणप्रियाको यह कहि पत्र लिखाऊं ॥ तेरी सौं वृषभानुनंदिनी अनुदिन तुव गुण गाऊँ । अब जिन मान करहि मोसों हो इहै सौंज करिपाऊँ ॥ हँसिकरि उठिप्यारी उर लागी मान मैनदुख पायो । तुम मन देहु आन वनिता तो मैं मन काहि लगायो ॥ लै बुलाइ उर लाइ अंकभरि पछिलो दुख बिसरायो । श्याम मान है प्रेम कसौटी प्रेमहि मानसहायो ॥ टूटे बंद छुटी अलकावलि मरगज तनके वागे । अंजन अधर भाल जावकरँग पीक कपोलन पागे ॥ बिनगुन माल पीठि गडि कंकन उपटि-उठे उर लागे । रसिक राधिकाके सुखको सुख लूट्यो श्याम सभागे ॥ नवल गोपाल नवेली राधा नये नेह वश कीन्हें । प्राणनाथसों प्राणपियारी प्राणलटकिसो लीन्हें ॥ विविध विलासकला रसकी विधि उभै अंग परबीनो । अतिहितमानमान तजि मानिनि मनमोहनसुखदीनो ॥ राधा कृष्ण केलि कौतूहल श्रवण सुनैं जे गावैं । तिनके सदा समीप श्याम नितही आनंद बढावैं ॥ कबहुँ न जाइ जठर पातक जिहिको यह लीला भावै । जीवनमुक्त सूर सो जगमें अंत परमपद पावै ॥ ७९ ॥ राग गुंडमलार ॥ राधिका वश्यकरि श्याम पाए । विरह गयो दूरिजियहरषहरिके भयो सहस मुख निगम जिन नेति गाए ॥ मान तजि मानिनी मैनको बल हरयो करत तनु कंतके त्रास भारी । कोक विद्या निपुण श्याम श्यामा विपुल कुंजगृह द्वार ठाढे मुरारी ॥ भक्तहित हेतु अवतारलीला करत रहत प्रभु तहां निज ध्यान जाके । प्रगट प्रभु सूर ब्रजनारिके हित बँधे देन मनकाम फल संग ताके ॥ ७६ ॥ हिंडोरलीलाको सुख ॥ श्रीकृष्ण राधिका गोपिन संग झूलाईंगे ॥ राग मारू ॥ वृंदावन श्यामलघन नारि संग सोहै जू । ठाढे नवकुंजनतर परमचतुर गिरिधर वर राधापति अरसपरस राधा मन मोहै जू ॥ नीपछांह यमुनतीर ब्रजललना सुभग भीर पहिरे अँग विविध चीर नवसत सब साजै । बार बार बिनय करति मुख निरखति पाइ परति पुनिपुनि कर धरति हरति पियके मन काजै ॥ विहँसति प्यारी समीप घनदामिनि संग रूप कंठ गहति कहति कंत झूल-

नकी साधा। यमुनपुलिन अति पुनीत पिय इहां हिंडोर रचौ सूरज प्रभु हँसति कहति ब्रज-तरुनी राधा॥७७॥राग रागी मलारी॥हिंडोरेहरिसँगझूलिएहोअरुपियकोदेहिंझुलाय।गई बीतिग्रीषम शरद हितु ऋतु सरस वर्षा आय॥अब इहै साधपुरावहू हो सुनहु त्रिभुवनराइ।गोपांगना गोपालजू-सों कहति गहिगहि पाइ॥ गढनहार हिंडोरनाको ताहि न लेहु बोलाइ।बन बननि कोकिल कंठ निरखत करत दादुर शोर। घनघटा पीरी श्वेत बगपंगति निरखिये नभ ओर॥ तैसियै दमकति दामिनी तैसोइ अंमर घोर। तैसोइ रटत पपीहरा बिच तैसोइ बोलत मोर॥ तैसि हरीहरी भूमि हुलसति होति नहिं रुचि थोर।तैसिऐ रँग सुरँग बिधिवधू लेतिहै चितचोर॥तैसिऐ नन्हीं बूँदनि बरषतु झमकिझमकि झकोरि। तैसिऐ भरि सरिता सरोवर उमँगि चलीं मिति फोरि॥ सुनि बिनय श्रीपति बिहँसि बोले विश्कर्मा श्रुतिधारि। खचि खंभ कंचनके रचि पचि राजति मरुवा मयारि।पटुली लगे नगनाग बहुरंग बनीडाँडी चारि।भँवरा भवैंभजि केलि भूले नागर नागरि नारि॥ पहिरि चुनिचुनि चीर चुहिचुहिचूनरी बहुरंग।कटि नीललहँगा लालचोली उबटिकेसारि अंग॥ नवसात सजि नई नागरी चलीं झुंडझुंडनि संग॥मुख श्याम पूरणचंदको मनो उमँगि उदधि तरंग। तहँ त्रिबिध मंद सुगंध शीतल पवन गवन सुभाइ। उर उड़त अंचल उघरि मुख मिलि नैन नैन लगाइ॥ तैसो यमुना पुलिन परम पुनीत सब सुखदाइ। तैसिऐ गोपी कंठ लगावति मोहन मोहनराइ॥गिरिराजधारन गोपिकनसों करत कौतुक केलि।झूलत झुलावतकंठ लावत बढी आनँद बेलि॥ कबहुँ रहसत मचत लै सँग एक एक सहेलि। झकझोरि झमकत डरत प्यारी प्रीतम अंकम मेलि॥तेहि समय सकुचि मनोजकी छबिजक्यो धनुशर डारि।अंमर बिमानन सुमनवरषत हरषि सुरसँगनारि॥मोहे सुरगण गंधर्व किन्नर रहे लोक बिसारि।सुनिसूरश्यामसुजानसुंदरसबन-के हितकारि॥ ७८॥ राग सारंग ॥सुरँग हिंडोरना माई झूलतश्यामाश्याम।दोयखंभबिश्वकर्मा बनाए कामकुंद चढाइ। हरित चूनी जटित नग सब लाल हीरा लाइ॥ बहुत बिद्रुम बहुत मुक्ता ललित लटके कोर। बहुरंग रेशम वरुह वरुही होत राग झकोर॥श्यामश्यामासंगझूलतसखीदेतिझुलाय। सब सरस शृंगार कीने रूप बरणि न जाइ। लालसारी नीललहँगा श्वेतअँगिया अंग। रोमावली नहिं मनो यमुना त्रिवलि तरल तरंग॥ कहूं यूथनि युवति ठाढी कहूं ठाढेग्वाल। कहूंतरुणीगीत गावैं कहुँ करैं सब ख्याल॥ कहूं दादुर कहूं चातक कहूं बोलैं मोर। चहुँओर चितै चकोरहिगए देखि री इहि ओर॥ दशन दाडिम दमकि विकसी हँसी जब मुसुकाइ। दमकि दामिनि निरखि लज्जित बहुरि गई छिपाइ॥ मीन खंजन कंज मानो उडत नाहिंन भोर। बिंबके ढिग कीर बैठे गहत नाहिंन ठौर॥ देखि सखी उरोज कंचन शंभु धर्यो बनाय। नहिं होहिं श्रीफल सुंदरीके कमलकली सोहाय॥ बीच मुक्ताहार मिलि सुरसरि जनु उतरी धाय। वार चकईपारचकवादिनहु मिलत न आय॥ लखि लंक कह्यो न जाय सखि री अंग देखिरि चारु।भृंगभ्रमभ्रमबनगयोकटि गयो केहरि हारु॥चाल देखि मराल लज्जित गएसरतजिगेह।अनुमानिकेअभिमान गजशिरअजहुँ डारत खेह॥ राग रागिनी सँचिमिलाईगावैंसुघरगुंडमलार।सुहवी।सारंगटोडीभैरवीकेदार॥मालवाइ राग गौरी अरुआसावरीराग। कान्हरोहिंडोलकौतुकतानबहुबिधिलाग॥देखिसखिरीएकअचरज राहु शशि इक ठोर। उडत अंचल लपटिवेनी दपटि झपटे मोर॥कनकजटित जराइ बीरेकविजो उपमा पाइ। सूर शशि है एक ब्रज मनो उगे तीनों आय॥ ७९ ॥ राग मलार॥ यमुना पुलिनहि रच्यो रंग सुरंग हिंडोरनो। रमत राम श्याम संग ब्रजबालक सुखपावतहँसिबोलनो॥द्वैखंभकंचन-

के मनोहर रत्नजडित सुहावनो।पटली बिच विद्रुम लागे हीरालाल खचावनो ॥ सुंदर डाँडी चुनी बहुत लायो कोटिक मदन लजावनो । मरुवा मयारि पिरोजा लाल लटकत सुंदर सुढिर ढरावनो॥ मोतिनहिं झालरि झूमका राजत बिच नीलमणि बहुभावनो । पंचरँग पाट कनक मिलि डोरी अतिहि सुघर बनावनो । स्फटिक सिंहासन मध्य राजत हाटकसहित सजावनो॥ हीरालालप्रवाल पिरोजा पंगति बहु मणि पचित पचावनो । मनो सुरपुरतेहि सुरपति पठइ दियो पठावनो॥ विश्वकर्मा सुतिहार श्रुतिधर सुलभ सिलप दिखावनो । तेहि देखे त्रय ताप नाशै ब्रज बधू मनभावनो॥ सुनि श्यामानवसत सँगसखीलै बरसाने तेहि आवनो।जब आवत बलराम देख्योमधु मंगलतन हेरनो । तब मधुमंगल कहि ग्वालसों गैयाहो भैया फेरनो ॥ उठ संकर्षण करि शृंग वेणु ध्वनि धौरी काजरी धेनु टेरनो ॥ गैयां गईं बगराइ सघन वृंदावन वंसीवट यमुनातट घेरनो । पहिरे चीर सुही सुरंग सारी चुहचुह चूनरी बहुरंगनो ॥ नील लहँगा लाल चोली कसि उबटिकेसरि सुरंगनो । नवसत सजि शृंगार नागरि मरिगमय भूषण मंगनो ॥ सादर मुख गोपाललालको चित्त चकोर रस संगनो । श्यामा श्याम मिले ललितादिहि सुख पावत मनमोहनो ॥ गावत मलारी सुराग रागिनी गिरिधरन लाल छबि सोहनो । पचरंग वरन पाटहि पवित्रा बिच बिच फोंदा गोहनो॥नाचति सखी संगीत परस्पर पहिरि पवित्रा सोहनो ॥ माथेमोरमुकुट चंद्रिका राजहि वृंदा वैजंती माल कंज प्रसावनो । कुंडल लोल कपोलनके ढिग मानो रविप्रकाश करावनो ॥ अधर अरुण छबि कोटि वज्र द्युति शशि गुण रूप समावनो । मणिमय भूषण कंठ मुक्तावलि देखत कोटि अनंग लजावनो ॥ सखि हरषि झूलै वृषभानुनंदिनी शोभित सँग नँदलालनो । मणिमय नूपुर कुनित कंकन किंकिनी झनकारनो॥ ललिता विशाखा ब्रजवधू झुलावैं सुरुचि सार सारको सारनो । गौर श्यामल नील पीत छबि मानोघन दामिनि संचारनो ॥ तैसोइ नन्हीनन्ही बूँदनि वरषै मधुरमधुर ध्वनि घोरनो।तैसीही हरीहरी भूमि हुलसावनि मोरमरालसुख होत न थोरनो॥जहाँ त्रिविध मंद सुगंध शीतल पवन गवन सुहावनो ।तहँ विहरत उठत सुवासु उडत मधुप सुहावनो॥ चढि विमानन सुर सुमन वरषैं जैजैध्वनि नभ पावनो ।श्यामाश्याम विहरत वृंदावन सुरललना ललचावनो॥शुक शेष शारद नारदादिक बिधि शिव ध्यान न पावनो।सूर श्याम सुप्रेम उमँग्यो हरियश सुलीला गावनो ॥ राग गुंडमलार॥ हिंडोरनोमाईझूलतगोकुलचंद । संग राधा परमसुंदरि सवन करत अनंद॥ द्वै खंभ कंचनके मनोहर रतनजडित सुरंग। चारिडाँडी परम सुंदरि निरखि लजित अनंग ॥ पटली पिरोजा लाल लटकत झूमका बहुरंग । मरुवेतिमाणिक चुनी लागी बिचबिच हीरा तरंग ॥ कल्पद्रुम तर छांह शीतल त्रिविध मंद समीर । वर लता लटकहिं भार कुसुमनि परसि यमुनानीर ॥ हंस मोर चकोर चातक कोकिला अलि कीर । नवनेह नवल किशोर राधा नवलगिरिधर धीर ॥ ललिताविशाखा देहिं झोंटा रीझिअँगनसमाति। अति लाडिली सुकुमारि डरपति श्यामतन लपटाति ॥ गौर श्यामल अंग मिलि दोउ भए एकहि भांति । नील पीत दुकूल द्युति घन दामिनी दुरिजाति ॥ कुंजपुंज झुलें झुलावत सहचरी चहुँ ओर । मनो कुमुदिनि कमल फूले निरखि युगुलकिशोर॥ ब्रजबधू तृण तोरि डारति देति प्राण अकोर । जन सूरको ब्रजवास दीजै नागर नन्दकिशोर ॥ ८१ ॥राग राजी श्रीहठी ॥ हिंडोरे झूलत श्यामा श्याम । ब्रजयुवती मंडली चहूँधा निरखति विथकित काम॥ कोउ गावति कोउ हरषि झुलावति कोउ पुरवति मनसाध। कोउ सँग मचति कहति कोउ मचिहौं उपजौ

रूप अगाध ॥ कोउ डरपति हाहा करि बिनवति प्यारी अंकमलाय । गाढे गहति पियहि अपने कर पुलकित अंग डराय ॥ अब जिनि मचो पांय लागतिहौं मोको देहु उतारि । यह सुनि हँसत मचत अति गिरिधर डरत देखि अति नारि ॥ प्यारी टेरि कहत ललितासों मेरीसौं गहि राखि । सूर हँसति ललिता चंद्रावलि कहा कहति पिय भाखि ॥८२॥ राग राझीरमागिरी ॥ हिंडोरना माई झूलतहैं गोपाल। संग राधा परम सुंदरि चहूंघां ब्रजबाल ॥ सुभग यमुनापुलिन मोहन रच्यो रुचिर हिंडोर । लाल डाँडी फटिक पटुली मणिन मरुवा घोर ॥ भँवरा मयारिनि नील मरकत खचे पाँति अपार। सरल कंचन खंभन सुंदर रच्यो काम सुतिहार॥भाँति भाँतिन पहिरि सारी तरुणि नवसत अंग । सुंदरी वृषभानुतनया नैन चपल कुरंग ॥ हँसति पियसँग लेति झूमक लखति श्यामल गात । मनो घनमें दामिनी छबि अंगमें लपटात ॥ कबहुँ पुलकति कबहुँ डरपति हँसति निरखति नारि ॥ कबहुँ देति झुलाइ गोपी गावहीं नवनारि ॥ सूर प्रभुके संगकोसुख वरणि कापै जाइ । अमर वर्षत सुमन अंबर विविध अस्तुति गाइ ॥ ८३ ॥ राग राझीमलारी ॥ यमुना-पुलिन रच्यो हिंडोर । घोष ललना संग तरुणी तरुण नवल किशोर॥ एक सँग लै मचत मोहन एक देत झुलाय ।एक निरखति अंग माधुरि एकएक उठिगाय ॥ श्यामसुंदर गोपिकागण रहीं घेरि बनाय । मनो जलदको दामिनी गण चहति लेन लुकाय॥ नारिसँग बनवारि गावत कोकिला छबि थोर । डुलत झूलत मुकुट शिरपर मनो नृत्यत मोर ॥ सुभग मुख दुहुँ पास कुंडल निरखि युवती भोर । चक्रवाक चकोर लोचन करिरहीं हरि ओर ॥ थकित सुर ललना सहित नभ श्याम निरखि विहार। हरषि सुमन अपार बरषत मुखहि जैजैकार ॥ कहत मन मन इहै बांछा भए न वन द्रुमडार । देह धरि प्रभु सूर विलसत ब्रह्म पूरण सार ॥८४॥ राग केदारो॥ हिंडोरने हरिसँग झूलन आईं।पचरँग बरन पाटको डँडिया अतिही बानक सौंजु बनाई ॥ झूलति युवति नंदललना सँग एक बैस इकदाई । सूरदास प्रभु मोहन नागर आपुन झूलि झुलाई ॥८५॥ राग ईमन॥झूलन आईं रंग हिंडोरे।पचरँग बरन कुसुंभी सारी पहिरे कंचुकी सौंधे बोरे॥मुक्तामाल ग्रीवते लर छुटि छबिके उठत झकोरे।सूरदास प्रभु मन हरिलीन्होंचपलनयनकी कोरे ॥ ८६ ॥ राग बिहागरो ॥ ललना झूलति रंग हिंडोरे । शोभा तनु श्याम गोरे।नील पीतपट घन दामिनि डोरे।शोभासिंधु मन बोरे॥गोपीजन चहुँओरे । नैननसों नैन जोरे॥झुलवति थोरे थोरे।पवन गवन आवै सौंधेकी झकोरे॥तन मन वारौं छबिपर तृण तोरे। सूर प्रभु चित चोरे नेक अंग मोरे ॥ सुन मुरलीकी घोरैं । सुखधू शीश ढोरैं ॥ ८७ ॥ राग मलार ॥ झूलत श्याम श्यामा संग । निरखि दंपति अंगशोभा लजित कोटि अनंग ॥ मंद त्रिविध बयारि शीतल अंग अंग सुगंध । मचत उडत सुबासु सँग गण रहे मधुकर बंध ॥ तैसियै यमुना सुभग जहँ रच्यो रंग हिंडोर । तैसियै ब्रजबधू बनि हरि चित्त लोचन कोर ॥ तैसो वृन्दाविपिनघनबन कुंजद्वारविहार। विपुल गोपी विपुल बनगृह रवन नंदकुमार ॥ नित्य लीला नित्य आनँद नित्य मंगल गान।सूर सुर मुनि मुखन अस्तुति धन्य गोपी कान्ह।॥८८॥राग मलार॥ हिंडोरे हरिसँग झूलहिं घोषकुमारि। ब्रजवधू बिधि क्योंनकीनी कहति सब सुरनारि॥मरुवालगे नग ललितलीला सुबिधिशिल्पसँ-वारि।वज्रकी कीलैंलगीं सुठि सुभग शोभाकारि॥खंभजांबूनदसुविद्रुम रचीरुचिरमयारि।मनु सुता रविकी दिखावति भुजा युगुल पसारि॥ मणिलाल माणिक जटित भँवरा सुरँग रंग रसार।शुक शेष नारद शारदा उपमा कहै को पार॥डाँडी खचि पचि पचि मर्कत मय पांति सुढार । उवत

रथ रविते धसी यमुना धरे विविधार॥ विविधार धारा धसी अधक्यों फटिक पटुली संग। बविनि-
कसि तिरछी बीच ह्वै मिलि गगनते जनु गंग । ढिग जरित भरि मंजीर इतउत चरण पंकजरंग।
प्रतिबिंब झलमल झलक मिलि सरस्वती आनिबिनंग ॥ बनमहलकेद्वारेरच्योनवरंग रंगहिंडोर।
मनो कोटि मन्मथ मोद मोहन तरुणि तरुण किशोर॥ बदनतन चित चोरि चितवत झलकलो-
चनकोर । शरद बिधु मधु लुब्धको मनु उडिउडि मिलत चकोर ॥ उडि मिलत तहां चकोर अति
छबि ललित चलित सुखैन। मनहु अंबुज बासको सँग मिलित मधुकर ऐन॥झुमकि झूमकि लेति
दै द्रुमडी मचै रुचिकैन । गावति सुकंठ राग राज्ञी नागरि गिरिधरकी जित सैन॥ कनक नूपुर
कुनित कंकन किंकिनी झनकार । तहँ कुँवरि बृषभानुकी सँग सोहै नंदकुमार॥ नील पीतदुकूल
साँवल गौर अंग बिकार । मनहु नौतन घन घटामें तडित,तरल अकार ॥ अनिमेष दृग दिए
देखहीं मुख मंडली वरनारि । मानहु शृंगार नवीन तरुप्रति रची कंचन वारि ॥ हँसि हावभाव
कटाक्ष घूँघट गिरत लेति सम्हारि । मनु हरन मुनि शोभा सु लै रति काम डारति वारि ॥अधउरध
झमकि झकोर इतउत झलक मोतिनमाल। ऋतु समय सावन जानि मनि बगपाँति उडत विशा-
ल ॥ श्री शीश फूल अमोल तरिवन तिलक सुंदर भाल । सारी सुरँग मिलि नील लहँगा शुभित
कंचुकि लाल ॥ मन मुदित मोदित मानिनी मुख माधुरी मुसुकानि । ढरहरति ढरति हिंडोर
डाँडी डरति धरि दुहुँ पानि ॥ उर उडत अंचल छोर छबि दुति पीतपट फहरानि । कहै सूर सो
उपमा नहीं कहुँनेति निगमहु गानि ॥८९॥ राग मलार ॥ गोपीगोबिंदकेहिंडोरे झूलन आय।रंगम-
हलमें जहँ नँदरानी खेलति सावनी तीज सुहाय ॥ श्रीखंड खंभ मयारि सहित सु सुमर मरुवा
बनाइ । तापर कितिक जु भ्रमत भँवरा डाँडी जटित जराइ॥ हेम पटुली मध्य हीरा पूजि रोचन
लाइ।सखी विविध विचित्र राग मलार मंगलगाइ॥नंदलाल पावसकाल दामिनि नागरी नवसंग।
बोलत जु दादुर अरु पपीहा करति कोकिल रंग॥ तहँ वरहि नृत्यत वचन मुख दुतिअलि चकोर
बिहंग । बलि भाइ सहित गोपाल झूलत राधिका अधंग ॥ जलभरित सरवर सघन तरिवर इंद्र
धनुष सुदेश । घन श्याम मध्य सफेद बग जुरि हरित महि चहुँ देश॥गगन गर्जत बीजु तरपति
मधुर मेह अशेश । झूलहिं ते बिह्वल श्याम श्यामा शीश मुकुलित केश॥ताटंक तिलक सुदेश
झलकत खचित चूनी लाल । आकृती विकृती वदन प्रहसित कमलनैन विशाल॥कर जु मुद्रिक
किंकिनी कटि चाल गजगति बाल । सूर मुररिपु रंग रंगे सखी सहित गोपाल॥ ९० ॥
राग सुहवी ॥ झूलत सुंदर युगल किशोर।नँदनंदन बृषभानुनंदिनी पियत सुधारस नयन चकोर॥
भ्रुकुटी वक्र धनुष श्रीशोभित तिलक भाल मनो सायक जोर। मंदमंद मुसुकात श्यामघन निर-
खत करत कटाक्षन कोर ॥ अंजनको पति रंजन लागे राजत अधरन दशन तमोर ।
मृगमद आड बने करकंकन मोतिन हार शृंगार न डोर ॥ लियो शिरते पटु झटकि
मनोहर उघरिगए कुच कलश कठोर । सूर सु निरखि भए वश प्रीतम तब प्यारीसों
करत निहोर ॥९१॥ अध्याय ।३४॥ विद्याधर शापमोचन वृंदावनविहार शंखचूडदानववधवर्णन ॥ राग बिलावल ॥
नंद सब गोपी ग्वाल समेत । गए सरस्वतीके तट एक दिन शिव अंबिका पूजा हेत ॥ पूजा
करत सकल दिन बीत्यो होइगई तहँ सांझ। ब्रजबासी सब श्रमित होइकै सोइरहे वनमांझ ॥
अर्ध निशा इक उरग आयकै लपटिगयो नँदपाइ। चौंकि परचो दुख पाइ पुकारचो हाहा कृष्ण
छुडाय ॥ ग्वालन मिलि श्रीकृष्ण जगाए छुवत पाँइ अहि दीनों छोड । विद्याधरको रूप धारि

कह्यो नाथ करै को तुमरी होड ॥ सब देवनके देव तुमहिं हो मैं देख्यो अब जोई ॥ ऋषि अंगिरा शाप मोहिं दीन्हों भयो अनुग्रह सोई ॥ हरिआज्ञाको पाय नाय शिर गयो आपने लोक। सूरदास हरिके गुण गावत ब्रज आए ब्रजलोग ॥ ९२ ॥ जागो मोहन भोर भयो। वदन उघारि श्याम तुम देखो रविकी किरनि प्रकाश कियो॥संगी सखा ग्वार सब ठाढे खेलतहैं कछु खेल नयो ।आँगन ठाढी कुँवरि राधिका उनको कहा दुराइ लयो ॥ हँसि मोहन मुसुकाय कह्यो कबहूँ वृषभानुके गेह गयो । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको सर्बसु लै हरि आपु दयो॥९३॥ मैं हरिकी मुरली बन पाई । सुनयशुमति सँग छाँडि आपनो कुँवर जगाइदैन हौं आई ॥ सुनतहि वचन विहँसि उठि बैठे अंतर्यामी कुँवर कन्हाई । इहके संग हुती मेरी पहुँची दै राधे वृषभानुदोहाई ॥ मैं नाहिंन चित लाय निहारो चलौ ठौर सब देहुँ बताई। सूरदास प्रभु मिलि अंतर्गति दुहुँन पढी एकै चतुराई ॥९४॥ राग कान्हरो ॥ बिहरत कुंजन कुंजबिहारी । बग शुकबिहँग पवन थकि थिर रह्यो तान अलापत जब गिरिधारी ॥ सरिता थकित थकित द्रुमवेली अधर धरत मुरली जब प्यारी । रवि अरु शशि देखो दोउ चोरन शंकागहि तव वदन उज्यारी॥आभूषण सब साजिआपने थकित भईब्रजकीकुलनारी।सूरदासस्वामीकीलीला अब जोवै वृषभानुकुमारी॥९५॥ राग गुंडमलार ॥ गगनउठीघटाकारीतामेंबगपंगतिन्यारीन्यारी । कान्हकृपाकरिदेखियेसुरचापकी छबि बरनबरन रँगधारी ॥ बीचबीच दामिनी कौंधति जनु चंचल नारी । बिटबाहर गृहगृह प्रति दुरिजाति आवति,बिकल मदनकी जारी ॥ वन बरुही चातक रटै द्रुम द्युति सघन संचारी। सूर श्याम हित जानिकै तब काम कोविद निजकर कुटी सँवारी॥९६॥राग सारंग॥अद्भुत कौतुक देखि सखी री श्रीवृंदावनमें होड परी री। उत घनउदित सहित सौदामिनि इतहि मुदित राधिका हरी री ॥ उत बगपांति शोभित इत सुंदर धामविलास सुदेश खरी री। वहां घन गर्ज इहां ध्वनि मुरली जलधर उत इत अमृत भरी री ॥ उतहि इंद्रधनु इत बनमाला अति विचित्र हरिकंठ धरी री । सूर साथ प्रभुकुँवरि राधिका गगनकीशोभादूरि करीरी ९७॥ राग सोरठ॥नवल नागरि नवल नागर किशोर मिलि कुंज कोमल कमलदलन सेज्या रची । गौर साँवल अंग रुचिर तापर मिले सरसमणिमृदुल कंचन खची॥ सुरनीमी बंधुहित पिय मानि पियके भुजनमें कलहमोरुण मची । सुभग श्रीफल उरोज पाणि परसत रोषहू करि गर्व दृग भाग्य भामिनि लची ॥ कोक कोटि करभ सरसिकहरि सूरज बिबिध कल माधुरी किमपि नाहिन बची।प्राण ये मन रसिक ललितादि लोचन चसकि पिवति मकरंद सुखराशि अंतर सची ॥९८॥राग नट॥ राधे जलसुत करजु धरे । अतिही अरुण अधिक छबि उपजति तजतहंस सगरे॥चुगत चकोर चले हैं सन्मुख झझके रहे खरे । तब मुसिकाय वृषभानुनंदिनी दोऊ मिलि झगरे ॥ रवि अरु शशि दोऊ एकै रथ सन्मुख आनि अरे। सूरदास प्रभु कुंजविहारी आनँद उमगि भरे ॥ ९९ ॥ राग कान्हरो॥श्यामा वदन देखि हरि लाज्यो । यहै अपूर्व जानि जिय लघुता खीन इंदु एही दुख भाज्यो॥क्रीडत कुंज अटा रजनीमुख प्रेम मुदित नवसत अँग साज्यो । विधु लंछन जानत सुर नर सब मृगमद तिलकहु लाज्यो॥विथकित रथ चकित अवलोकत सुंदरि सँग हरिराज विराज्यो । विस्मय मिटि शशि पेखि समीपहि कहि अब सूर उभै हरि गाज्यो ॥ २३०० ॥ कंदुक केलि करत सुकुमारी।अतिहि सूक्ष्मकटितटआई जिमि विशदनितंब पयोधर भारी॥अंचल चंचल फटी कंचुकी विलुलित वर कुच सटी उघारी। मनु नवजलद बंधु कीनो विधु निकसी नभसि क-ै

ल। अनियारी॥तरल तिलक ताटंक निकट तट उभय परस्पर शोभ शृंगारी।जलरुहहंस मिलेमनो नाचत ब्रज कौतुक वृषभानुदुलारी ॥ मुक्तावलिको हार लोलगति तापर लटपटात लट कारी । तामें सो लर मनो तरंगिनि निशिनायक तम मोचनहारी ॥ अरु कंकन किंकिण नूपुर छबि निशापान समद्युति रतिनारी।श्रीगोपाललालउर लाइबलिबलिसूर मिथुन कृतभारी॥१॥राग नट ॥ देखे चारि कमल इकसाथ। कमलनि कमल गहे लावतिहै कमलहि मध्यसमात ॥ सारँगपर सारँग खेलत है सारँग ही सों हँसि हँसि जात। सारँग श्याम औरहू सारँग सारँगसों करै बात ॥ आरि सारंग राखि सारँगको सारँगगहि सारँगको जात। तौलै राखि सारँग सारँगको सारँग लै आऊवा हाथ ॥ सोइ सारँग चतुरानन दुर्लभ सोई सारंग शंभु मुनि ध्यात । सेवत सूरदास सारँगको सारँग ऊपर बलि बलि जात ॥२॥ राग नट ॥हरि उर मोहनि वेलिलसी। तापर उरग ग्रसितत बशोभित पूरन अंश शशी ॥ चापति कर भुजदंडरेख गुनअंतरबीच कसी। कनककलशमधुपानमनोकरभुजनि उलटिधसी ॥ तापर सुंदरअंचर झँाप्यो अंकित दंशतसी । सूरदासप्रभुतुमहिंमिलतजनुदारिव बिगरि हँसी॥३॥ राग कान्हरो॥मोहनीमोहनकीप्यारी।रूपउदधिमथिकीबिधिहठिपचिरचीयुवति न्यारी ॥ चंपककनक कलेवरकी द्युति शशिनबदनसमतारी । खंजरीटमृगमीनकिगुरुतानैननसबै निवारी ॥ भ्रुकुटी कुटिल सुदेश शोभ अति मनहु मदन धनु धारी। भाल विशाल कपोल मधुप छबि नासा जित मदगारी ॥अधर बिंब बंधूक निरादर दशन कुंद अनुहारी ।परमरसालश्याम सुखदायक वचनन सुनि पिकहारी॥ कुँवरि अही जनु हेमखंभलगि ग्रीव कपोतबिसारी । बाहु मृणाल जु उरज कुंभ गजनिम्ननाभिसुभगारी ॥ मृगारिपुखीन कटी राजति युग जंघ सरस अति भारी । अरुण रुचिर जु बिडाल रसनसम चरणतली ललितारी॥एक समय करपर धरि मुक्ता ग्रसन मरालबिचारी । सारंगमत्त जानिमानैगहि भयहिजुविपिनबिसारी ॥ जहँ जहँ दृष्टिपरति तहँ अरुझत भरि नहिं जातचितारी।सूरदास,प्रभु रसवश कीन्हें अंग अंग सुखकारी ॥४॥रागनट॥ उपर देखियतहैं शशि सात।सोवति हुती जुकुँवरि राधिकाचौंकिपरी अधरात॥खंडखंड होइगिरे गगनते वास पतिनके भ्रात।कै बहु रूप किए मारगते दधिसुत आवत जात॥ बिधु बहुरेविधुकिए शिखंडी शिवमेंशिवसुतजात । सूरदासधारैको धरणी श्यामसुनोयह बात॥५॥राग बिलावल॥ आजु वन राजत युगलकिशोर। दशन वसन खंडित मुख मंडित गंड तिलक कछु थोर ॥ डगमगात पग धरत शिथिलगति उठ कामरस भोर ।रतिपति सारँग अरुणमहाछबि उमँगि पलक लगे भोर॥ श्रुति अवतंस विराजत हरिसुत सिद्ध दरश सुतओर । सूरदास प्रभु रस वश कीन्ही परी महारण जोर ॥६ राजत युगल किशोर किशोरी । प्रातसमय देखियत ग्रीव भुज श्याम शिथिल आलस गति गोरी ॥ रहे उघटि बलहीन विलासिनि बरणौंकहा मदन रँग बोरी। मनो अंग अँगसुखफलके हित द्युति बसंत मारुत झकझोरी॥ शशिमुख सखी श्याम लोचन छबि प्रगटत मिलत उभय पदकोरी । मनु रवि देखि हरषि कछु सकुचत निरखत युवति लेत चित चोरी ॥ थकित सुमन दृग अरुन उनींद कुरुखकटाक्ष करत मुरि थोरी । खंजन मृग अकुलात घात उर श्याम व्याध बाँधे रति डोरी॥नील अलक ताटंक अकढे श्याम गंड उबटित वर छोरी । मनहु शेष मधुसर कूरमरज काढत उभय रूपधरि तोरी ॥ कोमल कठिन कपोल अमल अति तहँ उपटित क्रीडा रद रोरी । मदनकोशपर शैल सँचारी छापतापमोचन मधु घोरी ॥ नैन बैन कर चरण चिकुर चलशिथिल उभय श्रम स्वेद नचोरी। मनु सेना संग्राम मध्यते प्रीति अमी दै जाइ बहोरी॥

थाके रंग रणकी छबि छाजत हारि मानि नहिं रहत निहोरी। सूर सुभट दोउ खेत न छाँडत मानहु आइ खडे दल जोरी ॥७॥राग सारंग॥देखौ माधौ राधा की रत।सुरत समै संतोष न मानत फिरि फिरि अंक भरत ॥ मुखके अनिल सुखावत श्रमजल यह छबि मनहिं हरत। मानहु काम अग्नि निर्ज्वाला भई ज्यों ज्वाला फेरि करत॥ दुतिय प्रेमकी राशि लाडिली पलकन बीच धरत । सूर श्याम श्यामा सुख क्रीडत मनसिज पाइँ परत॥८॥राग सारंग॥नैननको फल सुफल राधिका प्यारी। श्रमजल भर वृंद बदन मृदु अरबिंद प्रसेद मकरंद अलि अलकअनुसारी ॥ नैन मेचक रेख अधर रंग विशेष नासिका जलज मनहुँ गुंजारी। भौंह मन्मथ धनुष पूरि त्रिभुवन विजय तिलक तीक्षण सीमंत सार सारी ॥ताटंक दुति छुटि केश बिथुरी लटें घट कुर्बुरतर उदित उजियारी। गंड सूक्ष्म इंदु मनहु दिनकरउदै सकुचे सतदल सूछकै निवारी॥दशन हीरकी पाँति बिचबिच मुसकाति वरणि न जात मृदुवचन किलकारी । विमल मुक्तामाल लसत उच्चकुचन पर मदन महादेव मनो दई है लचारी॥ दोउ बसत एक ठौर काज निविसत भोर बिरुद्ध त्यागि बात बनी अति भारी । कमल विकच करनावली मुद्रिका वलय पुट भुज वेलि शुक चारी ॥ स्कंध बेनी धरे मान मनसिज हरे श्रीगुंजमध्य कुंज सुरंग सारी।निम्ननाभी लेश कटि अति सुदेश बनी अधार जंघनिअतिभारी ॥ मनहु मन्मथ अजित करि हरिहि देत होत नादकिंकिणि झनकारी।अति विशद गुरुनितंब चौरबांधे कोउ नाहिंन समतारी॥मंदगति युगल पटलपर अमल पद्म पानि पटतर न तुम्हारी।अभिमानपूरन बंक सूर प्रभु यदपि थकितभयेगिरि निरखिगिरिधारी॥ओटनिरखैसखी मनहुचित्रितलिखीयुक्ति संयोगपर जाहि बलिहारी॥९॥ राग केदारो ॥ नागरताकी राशि किशोरी। नवनागरकुलमूलसाँवरो वरवशकियो चितै मुख मोरी॥ रूप रुचिर अँगअंग माधुरी बिनभूषण भूषितव्रजगोरी । छिनछिन कुशल सुगंध अंगमें कोककरभसर सिंधु झकोरी॥ चंचलरसिकमधुपमोहनमनराखेकनककमल कुच कोरी । प्रीतम नैनयुगल खंजन खग बांधे विविधनितंबन डोरी॥ अवनी उदरनाभिसरसी-में मनहु कछुक मादक मधुरोरी । सूरदास पीवत सुंदर बर सींव सुदृढ निगमनिकी तोरी ॥ १० ॥ ॥ राग केदारो॥ आजु तनु राधा सज्यो शृंगार । नीरजसुत सुतबाहनको भख श्याम अरुणरँगकौन बिचार ॥ मुद्रापति अचवन तनयासुत उरहि बनावहि हार । गिरिसुत तिन पति विवश करनको अक्षत लै पूजत रिपुमार ॥ पंथपिता आसनसुत शोभित श्याम घटा बग पंक्ति अपार । सूरदास प्रभु हंससुतातट क्रीडत राधा नंदकुमार॥ ११ ॥ राग ललित ॥ देख सखी सायक बलजोर। बीस कमल परगट देखियतहै राधा नंदकिशोर ॥ सोरहकला सँपूरण मोह्यो ब्रज अरुणोदय भोर। तामें सखि द्वै कमल लागिरहे चितवत चारि चकोर ॥ मनु मदमत गजराज अरे हैं कोटि मदन भै भोर। सूरदास बलिबलि या छबिकी अलकनकी झकझोर॥१२॥राग सारंग॥मोरनकेचँदवा माथे बने राजत रुचिरसुदेश री। वदनकमल ऊपर अलिगण मनो घूँघरवारे केश री ॥ भौंह धनुष दृग बान चपल अति भाल तिलक जनु वान री।भोरहोत रवि अंधकारको कियोउग्धसंधानरी ॥ मणिगण जडित मनोहर कुंडल राजत लोल कपोल री । कालिंदीमें रवि प्रतिबिंबित चंचल पवन अडोल री॥सुभग नासिका मुक्ता शोभित झलमलात छबि होत री। भृगुसुत मानो अमल विमल सखि घनमें किए उदोत री ॥ अरुण अधर सु श्रमित मुख बोलत ईषद कछु मुसुकात री। मानहु सुपकबिंबते प्रगटत रस अनुराग चुतात री ॥ दशनदमक दामिनिसी चमकति शोभा कहत न आवै री । याहीते दाडिम उर विगलित तिनकी सम नहिं पावैरी॥चिबुकचारुमर्कतमणि

दुति सखि राजति त्रिवली ग्रीव री । मानहु सप्त तीनि रेखा करि कामरूपकी सींव री ॥ उन्नत विशाल हृदय राजतहै तापर मुक्ताहार री । मानहु साँवर गिरिते सरिता अध आवत द्वै वार री ॥ भुज भुजंग मनु चंदन चरचित करगहि मुख धरि वंस री।मानहु सुधा सरोवरके ढिग कूजत युग कलहंस री ॥ कंचन वस्त्र पीत उपरैना शोभित सावँर अंग री । मानहु आवत आगे पाछे निशि वासर इक संग री ॥ नाभि सरोज सुधा सरसी जनु त्रिवली सिढी बनाइ री । ब्रजवधु नैन मृगी आतुरह्वै अति प्यासी ढिग आइ री॥कटि प्रदेश सुंदर सुदेश सखि तापर किंकिणि राजै री।अति नितंब जंघन शोभितहै देखत मृगपति लाजै री ॥ पीनपिंडुरिया साँवल सीरी चरणाम्बुज नख लाल री । मंद मंद गति वो आवतिहै मत्त दुरदकी चाल री ॥ सूरदास सरवसहि निरंतर मनमोहन अभिरामरी।वृंदावनमें बिहरत दोऊ मम प्रभु श्यामा श्याम री॥ १३॥देखि हरिजूके नैननकी छवि। इहै जानि दुख मानि मनहु अंबुज सेवत रवि॥खंजरीट अति वृथा चपलता गयेबन मृग जल मीन रहे दबि। तहउँ जानि तनु तजत जबहि कछु पटतर देबे कहत कुकवि ॥ इनसे येइ पचि हारि रही हौं आवै नाहीं कहत कछू फवि ।सूर सकल उपमा जो रही यों ज्यों होइ आवै कहत होमत हवि १४॥राग गूजरी॥किशोरी देखत नैन सिरात ।बलि बलि सुखद मुखारविंदकी चंद्रबिंदु दुरिजात॥अघमोचन लोचन रतनारे फूले ज्यों जलजात । राजत निकट निपट श्रवणनके पिशुन कहत मन बात ॥ गौर लिलाट पाट पर शोभित कुंचित कच अरुझात। मानो कनक कमल मकरंदहि पीवत अलि न अघात ॥ नकबेसरि वंसीके संभ्रम भौंह मीन अकुलात । मनु ताटंक कमठ, घूँघट पट जालावलि अकुलात । श्याम कंचुकी मांझ सांझ फूले कुच कलश न समात। मानहु मत्तगयंद कुंभपर नील ध्वजा फहरात ॥ नखशिखलौं रसरूप किशोरी विलसत साँवल सुकृतगात । यहसुख देखत सूर अवर सुख उडे पुराने पात॥ १५ ॥ बसो मेरे नैननमें ए जोरी ।सुंदरश्यामकमलदललोचनसँगवृषभानुकिशोरी ॥ मोरमुकुट मकराकृतकुंडल पीतांबर झकझोरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको का वरणौं मति थोरी॥ राग बिलावल ॥ शंखचूड तेहि अवसर आयो। गोपी हुतीं प्रेमरसमाती तिन ताको कछुसुद्धि न पायो ॥ चल्यो पराइ सकल गोपी लै दूरि गयो तब उन सुधि आयो। को यह लियेजात कहां हमको कृष्णकृष्णकहिकहि गोहरायो॥ गोपीटेर सुनत हरि पहुँचे दानव देखि डरायो । मुष्टिक मारि गिराइदियो तेहि गोपिन हर्ष बढायो ॥ मणि अमोल ताकेशिरताही दियेहलधरहिआयो।सूर चले वनते गृहको प्रभु विहँसतमिलिसमुदायो॥ १६॥राग सोरठ॥सोइ सुख नंद भाग्यतेपायो।जोसुख ब्रह्मादिकको नाहीं सोइ सुखयशुमतिगोदखिलायो॥सोइसुखसुरभीवच्छवृंदावनसोइसुखग्वालन टेरि सुनायो । सोइ सुख यमुनाकूल कदम चढि कोपकियोकालीगहिल्यायो। सुखहीसुखडोलत कुंजनमें सबसुखनिधि बनते ब्रज आयो । सूरदास प्रभुसुखसागरअतिसोइसुखशेषसहसमुखगायो ॥१७॥ राग बिलावल ॥ कौन परीनँदलालहिंबानि।प्रातसमैजागनकीबिरियांसोवतहैंपीतांबरतानि॥ मात यशोदा कबकी ठाढी दधि ओदन भोजन लिये पान। तुम मोहन जीवन धन मेरे मुरली नेकु सुनावहु कान ॥ संग सखा ब्रजबाल खरे सब मधुबन धेनु चरावन जान ॥ यह सुनिश्रवण उठे नँदनंदन वंसी वेणु माँग्यो मृदु आन॥जननी कहति लेहु मनमोहन दधि ओदन घृत आन्यो सानि।सूरजब लिबलिजाउँ वेणुकीजिहि लगिलालजगे हितमानि ॥१८॥ अध्याय:३९राग बिलावल ॥ भोर भयो जागो नँदनंद । तात निशि विगत भई चकई आनंद मई तरनिते चंद

भयो मंद॥तमचुरखगरोर अलिकरैं तबशोरवेगिमोचन करहु शुभगल फंद। उठहुभोजनकरहुशिशु खौरि उतारि धरहु जननीप्रतिदेहु रूप निजफंद॥ त्रियन दधिमथन करहिं मधुर ध्वनि श्रवण सुनि कृष्णगुण विमल यश करत आनंद। सूर प्रभु हरिनाम उधारत जगजीवन गुण को न देखि छकित भयोछंद॥१९॥राग बिलावल॥जागिए गोपाललाल ग्वाल द्वार ठाडे रैनि अंधकारगयो चंद्रमामलीन भयो तारागण देखियत नहिं तरणि किरणि बाढे॥ मुकुलित भए कमलजाल गुंज करत भृंगमालप्रफुलित वन पुहुप डार कुमुदिनि कुँभिलानी। गंधर्व गुण गान करत स्नान दान नेम धरत हरत सकल पाप वदत विप्र वेद वानी॥ बोलत नंद बार बार मुख देखें तुव कुमार गाइन भई बड़ीबार वृंदावन जैबे। जननी कहै उठो श्याम जानत जिय रजनि ताम सूरदास प्रभु कृपालु तुमको कछु खैबे॥२०॥रसोई बर्णन॥भोजन भयो भावते मोहन।तातोइ जेंइ जाहु गो गोहन॥खीर खांड खीचरी सँवारी। मधुर महेरि सो गोपन प्यारी॥ राइ भोग लियो भात पसाई। मूँग ढरहरी हींग लगाई॥ सदमाखन तुलसी दै तायो। घिरत सुवास कचोरा बनायो॥ पापर बरी अचार परम शुचि। अदरख अरु निबुवन ह्वैहै रुचि॥सूरन कारि तरि सरस तरोई।सेमि सींगरी छवैंकिझोरई॥ भरता भँटा खटाई दीनी। भाजी भली भाँति दश कीनी॥ साग चना सँग सब चौराई। सोवा अरु सरसों सरसाई॥ बथुवा भली भाँति रचि राँध्यो। हींग लगाइ राइ दधि साँध्यो॥ पोई परवर फाँग फरी चुनि। टेंटी टेंट सुछोलि कियो पुनि॥ कुंदुरु और ककोरा कौरे। कचरी चार चँचेडा सौरे॥ बने बनाइ करेला कीने॥ लोन लगाइ तुरत तलि लीने॥ फूले फूल सहींजन छौंके। मन रुचि होइ नाजुके औंके॥ फूल करील कली पाकर नम। फली अगस्त्य करी अमृत सम॥ अरु यहि अँबिली दई खटाई। जेंवत षटरस जात लजाई॥ पेठा बहुत प्रकारन कीने। तिनसों सबै स्वाद हरि लीने॥ खीरा रामतरोई तामैं। अरुचिन रुचिअंकुर जिय जामैं॥ सुंदर रूप रताळू रातो।तरि करि लीन्हों अबहीं तातो॥ ककरी कचरी अरु कचनारयो। सुरस निमोननि स्वाद सँवारयो॥ कयौ भाँति केरा करि लीने। दै करवँदा हरदि रँगभीने॥ बरबरील अरु बरा बहुत बिधि। खारे खाटे मीठे हैं निधि॥ पानौरा राइता पकौरी। उभकौरी मुँगछीसुठिसौंरी॥अमृत इडहर है रससागर। बेसन सालन अधिकौ नागर॥ खाटी कढी विचित्र बनाई। बहुत वार जेंवत रुचि आई॥ रोटी रुचिर कनकबेसन करि। अजवाइनि सैंधो मिलाइ धरि॥ अबहिं अगाकरि तुरत बनाई। जे भजिभजि ग्वालन सँग खाई॥मांडे माँडि दुनेरो चुपरे। वह घृत पाइ आपुही उखरे॥ पूरि सपूरि कचौरी कौरी। सदल सु उज्ज्वल सुंदर सौरी॥ लुचई ललित लापसी सोहै। स्वाद सुवासु सहज मन मोहै॥ मालपुआ माखन मथि कीन्हें। ग्रह ग्रासित रविसम रँग लीन्हें॥ लावन लाडू लागत नीके। सेव सुहारी घेवर घीके॥ गोझा गूँद गालमसूरी॥ मेवा मिलै कपूरन पूरी॥ शशि सम सुंदर सरस अँदरसे। ऊपर कनी अमी जनु बरसे॥ बहुत जलेब जलेबी बोरी। नाहिंन घटित सुधाते थोरी॥ देखत हरष होतहै समी। मनहु बुदबुदा उपजत अमी॥ फेनी घुरि मिसि मिली दूधसँग। मिश्री मिश्रितभई एक रँग॥ साज्यो दही अधिक सुखदाई। ता ऊपर पुनि मधुर मलाई॥ खोवा खोइ औटिहै राख्यो। सुहै मधुर मीठे रस चाख्यो॥ बासौंधी सिखरनि अति सौंधी। मिलै मिरच मेटत चकचौंधी॥ छाँछ छबीली धरी धुँगारी। झरहै उठत झारकी न्यारी॥ इतने जतन यशोदा कीन्हें। तब मोहन बालक सँग लीन्हें॥ बैठे आइ हँसत दोउ भैया। प्रेममुदित परसतिहै मैया॥

थार कटोरा जरित रतनके ॥ भरि सब वासन विविध जतनके । पहिले पनवारौ परसायो । तब आपुन कर कौर उठायो ॥ जेंवत रुचि अधिको अधिकैया । भोजनहूं बिसरति नहिं गैया ॥ शीतल जल कपूर रस रचयो । सो मोहन निज रुचि करि अचयो ॥ महरि मुदित नित लाड लडावै । ते सुख कहाँ देवकी पावै ॥ धरि तुष्टी झारी जल ल्याई । भरयो चुरू खरिका लै आई ॥ पीरे पान पुराने बीरा । खात भई दुति दाँतनि हीरा ॥ मृगमद कन कपूर कर लीने । बाँटि बाँटि ग्वालनको दीने ॥ चंदन और अरगजा आन्यो । अपने कर बलके अँग बान्यो ॥ ता पाछे आपुनहूं लायो । उबरयो बहुत सखन पुनि पायो । सूरदास देख्यो गिरिधारी । बोलि दई हँसि जूंठनि थारी ॥ यह जेवनार सुनै जो गावै । सो निजभक्ति अभयपद पावै ॥ २१ ॥ राग बिलावल ॥ रामकली ॥ भोजन करत मोहनराइ । हरषि मुखतन देत मोहन आपु लेत छडाइ ॥ देखहीं मुख नंदको तब आनँद उर न समाइ । निरखि प्रभुकी प्रगटलीलाजननि लेति बलाइ ॥ नंदनंदन नीर शीतल अँचै उठे अघाइ ॥ सूर जूंठनभक्त पाईदेवरहे लुभाइ २२ ॥ राग बिलावल ॥ देख सखीब्रजते बन आवत । रोहिणि-सुत यशुमतिसुतकी छबि गौर श्याम हरि हलधर गावत ॥ नीलांबर पीतांबर ओढे यह शोभा कछु कही न जात । युगल जलद युग तडित मनहुँ मिलि अरस परस जोरतहैं नात ॥ शीश मुकुट मकराकृत कुंडल झलकै विविध कपोलहिं भाँति । मनहु जलद युग पास युगल रवि तापर इंद्र-धनुषकी कांति ॥ कटि कछनी कर लकुट मनोहर गोचारन चले मन उनमानि । ग्वाल सखा बिच श्रीनँदनंदन बोलत वचन मधुरि मुसुकानि ॥ चितै रहीं ब्रजकी युवती सब आपुसहीमें करत बिचार । गोधनवृंद लिए सूरज प्रभु वृंदावन गए करत बिहार ॥ २३ ॥ ग्वाल वचन श्रीकृष्ण प्रति ॥ राग गौरी ॥ छबीले मुरली नेक बजाउ । बलि बलि जात सखा यह कहि कहि अधर सुधारस प्याउ ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभ वृन्दावन दुर्लभ प्रेमतरंग । ना जानिये बहुरि कब ह्वैहै श्याम तुम्हारो संग ॥ विनती करहिं सुबल श्रीदामा सुनहु श्याम दै कान । जा रसको सन-कादि शुकादिक करत अमर मुनि ध्यान ॥ कब पुनि गोपभेष ब्रज धरिहौ फिरिहौ सुरभिन साथ । कब तुम छाक छीनिकै खैहौ हो गोकुलके नाथ ॥ अपनी अपनी कंध कमरिया ग्वालन दई डसाइ । सौंह दिवाइ नंदबाबाकी रहे सकल गहि पाइ ॥ सुनिसुनि दीनगिरामुरलीधरचितए मुख मुसकाइ । गुणगभीर गोपाल मुरलि कर लीन्हों तबहिं उठाय ॥ धरि कर बेनु अधर मन-मोहन कियो मधुरध्वनि गान । मोहे सकल जीव जल थलके सुनि वारयो तन प्रान ॥ चपलनयन भ्रुकुटी नासापुट सुनि सुंदर मुख बेन । मानहु नृत्यक भाव दिखावत गति लिये नायक मैन ॥ चमकत मोरचंद्रिका माथ कुंचित अलक सुभाल । मानहु कमलकोश रस चाखत उडिआए अलिमाल ॥ कुंडल लोल कपोलन झलकत ऐसी शोभा देत । मानहु सुधासिंधुमें क्रीडत मकर पानके हेत ॥ उपजावत गावत गति सुंदर अनाघातके ताल । सरबस दियो मदन-मोहनको प्रेम हरषि सब ग्वाल ॥ शोभित वैजंती चरणनपर श्वास पवन झकोरि । मनहु ग्रीव सुरसरि बहि आवत ब्रह्मकमंडलु फोरि ॥ डुलति लता नहिं मरुत मंदगति सुनि सुंदर मुखबैन । खग मृग मीन अधीन भए सब कियो यमुनजल सैन ॥ झलमलात भृगुकी पदरेखा सुभग साँवरे गात । भानो पट विधु एक रथ बैठे उदय कियो अधरात ॥ बांके चरणकमल भुज बाँके अवलोकनि जु अनूप । मानहु कल्पतरोवर बिरवा आनि रच्यो सुरभूप ॥ आयसु दियो गुपाल सबनको सुखदायक जिय जान । सूरदास चरणन रज माँगत निरखत

रूपनिधान॥२४॥ राग सारंग॥रीझतग्वालरिझावतश्याम।मुरलिबजावतसखन बोलावतसुबलसुदामा लैलै नाम ॥ हँसत सखा सब तारी दैदै नाम हमारो मुरली लेत । श्याम कहत अब तुमहु बोलावहु अपने करते ग्वालन देत ॥ मुरली लैलै सबै बजावत काहूपै नहिं आवै रूप। सूर श्याम तुम्हरेहि मुख बाजत कैसे देखोरागअनूप॥२५॥ रागटोडी ॥हरिबराबरि वेणुकौन बजावै। जगजीवन विदित मुनिनाचन वेणु सो बजावै चतुरानन पंचानन सहसानन ध्यावै॥ ग्वालबाल लिए यमुना कच्छ बच्छ चरावै । सुर नर मुनि अखिल लोक कोउ न पार पावै ॥ तारन तरन अगणित गुण निगम नेति गावै ॥ तुमको यशुमति आँगन अपने दै करताल नचावै। सूरदासप्रभु कृपाधामहैंभक्तनवश्य कहावै ॥ २६ ॥ अथ परस्पर गोपिकावच विरहअवस्था ॥ राग टोडी ॥ मुरली सुनत देहगति भूली । गोपी प्रेमहिंडोरे झूली ॥ कबहूँ चकृत होहिं सयानी । स्वेदचलै द्रव जैसेपानी॥ धीरज धरिइक इकहिं सुनावहिं। यह कहिकै आपुहि बिसरावहिं ॥ कबहूँ सुधि कबहूँ बिसराई । कबहूं मुरली-नाद समाई॥ कबहूं तरुणी सब मिलि बोलैं। कबहूं रहैं धीर नहिं डोलैं ॥ कबहूँ चलैं कबहुँ फिरिआवैं। कबहुँ लाज तजि लाज लजावैं ॥ मुरली श्यामसुहागिनि भारी । सूरदास प्रभुकी बलिहारी ॥ २७॥ राग बिहागरो ॥ अधर धरि मुरली श्याम बजावत।सारंग गौरी नटनारायण करिकै गौरी सुरहि सुनावत ॥ आपु भए रसवश ताहीके औरन वश करवावत । ऐसोको त्रिभुवन जल थलमें जो शिर नहीं धुनावत ॥ सुभग मुकुट कुंडल मणि श्रवणन देखत नारिन भावत । सूर-दास प्रभु गिरिधर नागर मुरलीधरनकहावत॥२८॥ राग सारंग ॥ अधररस मुरली सौतिन लागी। जा रसको षटऋतु तप कीन्हों सो रस पिवतसभागी॥कहांरहीकहँतेइह आई कौने याहि बोलाई। सूरदास प्रभु हमपर ताको कीने सवति बजाई ॥ २९ ॥ राग केदारो ॥ मुरली मोहनी भई। करी जुकरनि देव दनुजनि प्रतिवह विधि फेरिढई ॥ वह पयनिधि इन ब्रजसागर मथि प्याइपियूषनई। सिंधुसुधा हरिवदन इंदुकीइह छलछीनि लई॥आपु अँचैअचवाइ सप्तसुर कीन्हेंदिगविजई। एकहि पुट उत अमृत सूर इत मदिरा मदनमई ॥३०॥ जोपै मुरलीकोहित मानौ॥ तौ तुम बारबारऐसे कहि मनमें दोष न आनौ। बासर श्यामबिरह अहिग्रासित हूजत मृतकसमान। लेति जिवाय मंत्र सुरस कही करति न डर अपमान ॥ निज संकेत खिलावतिअजहूँ मिलवतिसारँगपानि। शरदनिशा रस रास करायो बोलिबोलि मृदुवानि॥ परकृत शील सुकृत उपमा रमि तासों यों कत कहिए।परमा-नंदसूरदासक्योंमेटिकृत न्याइइतो दुख सहिए ॥३१॥ राग मलार ॥ अधरमधुकतक मुईहमराखि । संचित किए रही सरघासो सकी न सकुचनि चाखि ॥ शशि सहि शीत जाइ यमुनातटदीन वचन दिन भाषि ।पूजि उमापतिको वर पायो मनहींमनअभिलाषि ॥ सोइ अब अमृत पीवति मुरली सबहिनकेशिरनाखि।लिएछँडाइनिडरसुनि सूरजधेनुधूरिदै आँखि॥३२॥राग नट॥सखीरीमाधोहि दोष न दीजै।जोकछु करिसकिये सोई या मुरलीकोअब कीजै॥ बारबारवन बोलि मधुरध्वनि अति प्रतीति उपजाइ । मिलि श्रवणन मन मोहि महारस तनकी सुधि बिसराइ ॥ मुखमृदु वचन कपट अंतर गति हम यहबात न जानी। लोक वेद कुल छाँड़ि आपनो जोइजोइ कही सु मानी॥अजहूँ वहै प्रकृति याके जिय लुब्धकसंग जु साधी।सूरदास क्योंही करुणामय परति नहींआराधी॥३३॥ मुरली तो यह आहिबांसकी ।बाजत श्वास परत नहिं जानतिभई रहतिपियपासकी।चेतनको चित हरति अचेतनि भूखी डोलत मासकी ॥ सूरदास सब ब्रजवासिनसों लिये रहतिहैगाँसकी ॥३४॥ जादिनते मुरली कर लीन्ही । तादिनते श्रवणन सुनिसुनिसखिमनकी बातसबलैदीन्ही।लोकवेद

कुल लाजकानि तजि मर्याद वचन मितिकीन्ही। तबहीतेतनुसुधिबिसराई निशिदिनरहतिगोपाल अधीन्ही॥ शरदसुधानिधि शरदअंश ज्यों सींचत अमी प्रेमरसभीनी। ताऊपर शुभदरश सूर प्रभु श्रीगोपाल लोचनगति छीनी॥ ३५॥ मुरली भई आजु अनूप। अधरबिंबबजाय करधरि मोहे त्रिभुवनभूप॥ देखि गोपी गाइ गाइन देखि गृह वन कूप। देखि मुनिजन नाग चंचल देखि सुंदररूप॥ देखि धरणि अकाश सुर नर देखि शीतल धूप। देखि सूरअगाध महिमा भए दादुर चूप॥ ३६॥ राग कान्हरो॥ मुरलिया मोको लागत प्यारी। मिली अचानकआइ कहांतेऐसी रही कहांरी॥ धनियाके पितु मात धन्य यह धन्यधन्य मृदु बोलनि। धन्य श्याम गुण गुणिकै ल्याये नागरि चतुर अमोलनि॥ इह निर्मोल मोल नहिं याको भली न याते कोई। सूरदास याको पटतर को तौ दीजै जोहोई॥ ३७॥ राग गौरी॥ मोहनमुरलीअधरधरी। कंचनमणिमयखचितरचितअतिकर गिरिधरन परी॥ औधरतान बँधान सरस सुर अरु रस उमँगि भरी। हरिकर्षतमनतनयुवतिनकेनग खग विवश करी॥ पियमुखसुधा विलासविलासिनि सुरत सँगीत समुद्र तरी। सूरदास त्रैलोकविजययुत दर्प मीमपति गर्व हरी॥ ३८॥ राग केदारो॥ मुरली श्यामके करअधरबिंब रमी। लेपि सर्वसुयुवति जनको बदन बिंदतअमी॥ पिबति न्यारे गर्व मारे नेकु नाहीं नमी। बोलिशब्द सुसप्त सुर मिलि नाग मुनि गति दमी॥ महाकठिन कठोर आली बांसबंश जु जमी। सूर पूरण परसि श्रीमुखनेकनाहींझमी॥ ३९॥ राग मलार॥ बाँसुरीविधिहूतेपरवीन। कहिएकाहि आहिकोऐसोकियोजगत आधीन॥ चारि वदन उपदेश विधाता थापी थिर चर नीति। आठ वदन गर्जति गर्वीली क्यों चलिए यह रीति॥ विपुल विभूति लई चतुरानन एक कमल करि थान। हरिकरकमलयुगलपर बैठी बाढ्यो यह अभिमान॥ एकबेर श्रीपतिके सिखये उन लियो सब गुण गान। इनके तौ नँदलाल लाडिलो लग्यो रहत नितकान॥ एक मराल पीठि आरोहण विधि भयो प्रबल प्रशंस। इन तौ सकल विमान किए गोपीजन मानस हंस॥ श्रीवैकुंठनाथ उर वासिनि चाहत जापद रेन। ताको मुख सुखमय सिंहासन करि बैसी यह ऐन॥ अधरसुधा पी कुलब्रत टारचो नहीं सिखा नहिं नाग। तदपि सूर या नंदसुवनको याहीसों अनुराग॥ ४०॥ राग सारंग॥ बंसीवैरपरीजुहमारी। अधर पियूप अंश तिनहींको इन पियो सब दिन निजनिज प्यारी॥ इकधौं हरि मन हरति माधुरी दूजे वचन हरत अनियारी। बाँस बंश हरि वेध महाशुभ अपने छेद न जानत कारी॥ सुन्यो सुपति जानी ब्रजके पति सो अपनाइ लियो खवारी। सुन अनीति सूरज प्रभुकेरी अधर गोपाल जेअपनेधारी॥ ४१॥ राग मलार॥ जबजबमुरलीके मुख लागत। तबतब श्याम कमलदललोचन नख शिखते रस पागत॥ बात न कहत रहत टेढ होइ बाँह अलिंगन मानत। भ्रुकुटी अधर बिंब नासा पुट सूधो चितवन त्यागत॥ पलइक माँह पलटिसो लीजत परगटप्रीतिअनागत। सूरदास स्वामी बंसीवश मुरछिनिमेप नजागत॥ ४२॥ ॥ बंसीबचन राग मलार॥ ग्वालिनी तुम कत उरहन देहु। पूछहु जाइ श्यामसुंदरको जिहि बिधि जुरचो सनेहु॥ बारेहीते भई विरत चित तज्यो गाँउ गुण गेह। एकहि चरण रही हौं ठाढी हिम ग्रीपम ऋतु मेह॥ तज्यो मूल शाखा सो पत्रनि सोच सुखानी देहु। अगिनि सुलाकत मुरचो न अँग मन बिकट बनावत वेहु॥ बकती कहा बाँसुरी कहि कहि करिकरि तामस तेहु। सूर श्यामइहिभाँतिरिझैकै तुमहु अधररस लेहु॥ ४३॥ राग मलार॥ ज्योंज्योंमुरलिहिमहत दियो। त्यों त्यों निदरि श्याम कोमल तन वदन पियूष पियो॥ रोकेरहति पाणिपल्लव पुट होत न कछू

वियो। बैठति अधरन पीठ परमरुचि सकुचति नाहिं हियो ॥ जान्यो जग रतिपति शिव जारयो सो यह सूर जियो। विधि मर्याद मेटि इन जोजो रुचिआयो सोकियो॥४४॥राग सारंग॥इनमुरली कछु भलो न कीन्हों। अधर सुधा रसवर सु हमारो आपुन पियो अरुऔरन दीन्हों॥वीरुध द्रुम तृण सोहसलिलतट पूजति गौरि भयो तनु छीनो। सोमधु सूरज परसिकुटिल चित सबहिनकेदेखत हरि लीनो॥४५॥अथ श्रीकृष्ण ब्रज आवन ॥राग गौरी॥नटवर भेष धरे ब्रज आवत।मोरमुकुट मकराकृत कुंडल कुटिल अलक मुखपर छबि पावत ॥ भ्रुकुटी बिकट नैन अति चंचल यह छबि पर उपमा इक धावत। धनुष देखि खंजन बिवि डरपत उडि न सकत उठिबे अकुलावत॥ अधर अनूप मुरलि सुर पूरत गौरी राग अलापि बजावत। सुरभीवृन्द गोप बालक सँग गावत अति आनंद बढावत॥ कनक मेखला कटि पीतांबर नृत्यत मंद मंद सुर गावत। सूर श्याम प्रतिअंग माधुरी निरखत ब्रजजनके मन भावत ॥४६॥राग कान्हरो॥ ब्रजयुवती सब कहत परस्पर बनते श्याम बने ब्रज आवत। ऐसी छबि मैं कबहुँ न पाई सखी सखीसों प्रगट देखावत॥ मोरमुकुट शिर जलजमाल उर कटितट पीतांबर छबि पावत। नव जलधर पर इंद्रचाप मनो दामिनि छबि बलाक वन धावत ॥ जेहि जु अंग अवलोकन कीन्हों सो तन मन तहँहीं बिरमावत। सूरदास प्रभु मुरली अधर धरे आवत राग कल्याण बजावत ॥ ४७ ॥ राग गुण सारंग ॥ मेरे नयन निरखि सचुपावैं। बलि बलि जाउँ मुखारबिंदकी बनते पुनि ब्रज आवैं ॥ गुंजाफल अवतंस मुकुटमणि वेणु रसाल बजावैं। कोटि किरणि मुखमें जो प्रकाशत उडुपति वदन लजावैं ॥ नटवर रूप अनूप छबीलो सबहिनके मनभावैं। सूरदास प्रभु चलत मंदगति विरहिन ताप नशावैं॥ ४८ ॥ राग गौरी॥बलिबलि मोहनि मूरतिकी बलिबलि कुंडलबलिनैन विशाल।बलिभ्रुकुटी बलितिलक विराजत बलि मुरली बलि शब्द रसाल ॥ बलि कुंडल बलि पाग लटपटी बलि कपोल बलि उर वनमाल। बलि मुसुकानि महामुनि मोहत बलि उपरैना गिरिधर लाल॥बलि भुज सखाअंसपर मेले बलि कुलही बलि सुंदर चाल।बलि काछनी चोलनाकी बलि सूरदास बलि चरण गोपाल ॥४९ ॥राग जैतश्री ॥ सुंदर साँवरे हो तैंचितलियोचुराइ।संगसखासाँझकेसमयेनिकसेद्वारे आइ॥ देखि अद्भुत रूप तेरे रहे नयन उर छाय।पाग ऊपर गोसमावल रंगरंग रचि बनाइ ॥ अति सुंदर शुक नासिका राजत लोल कपोल। रत्नजडित कुंडल ज्यों झलकत करन कपोल ॥ कटितट काछ विराजई पीतांबर छबि देत। अमृत कमल मुख भापई तन मन वश करिलेत ॥ भौंहैं धनुष दुइ वरुनि मनो मदन शर साध। जाहि लगै सोइ जानै संग लेत बलि बांध ॥ अंगअंगपर बलिगई मुरली नेक बजाइ। सुनि सचुपावैंगोपिकासूरदासबलिजाइ॥५०॥राग बिलावल॥श्याम कछु मोतनही मुसुकात। पीतांबर पहिरे चरण पाँवरी ब्रजबीथिनमें जात ॥ अतिबुधि बंदि बंद नखशिखलौं सौंधे भीने गात। अलकावली अधर मुख बीरा काँध कमल कर दिशहि फिरावत॥ धन्य भाग्य ब्रजके जो सखी री धनिधनि उनके जननी तात। धन्य जे सूरदास प्रभु निरखत अति भूँखे लोचन न अघात॥५१॥ राग अडानो॥श्यामसुंदरआवैंवनतेबनेआजुदेखिदेखिनैनरीझे। शीशमुकुट डोलश्रवणकुंडल लोल भ्रुकुटीधनुष नैनखंजन झीझे॥ दशन दामिनि ज्योती उरपर माल मोती,ग्वालबाल सब आवैं रँगभीजे। सूर प्रभु श्याम प्रभु राम संतनके सुखद धामअंगअंग प्रति छबि निरखि जीजै ॥५२॥ राग कान्हरो ॥ विराजतरीबनमालगरेहरेहरिआवतवनते।पुहुपनि लाल पाग लटकिरही वाम भाग सो छबि टरत न मनते ॥ मोर मुकुट शिर श्रीखंड गोरज

मुखपर मंडित नटवर भेष धरे आवत छबिते । सूरदास प्रभुकी छबि ब्रजललना निरखि थकित तन मन न्यवछावरि करति आनंद बरते॥५३॥ राग गौरी॥ ब्रजको देखि सखी हरि आवत। कटि-तट सुभग पीतपट राजत अद्भुत भेष बनावत ॥ कुंडल तिलक चक्र रज मंडित मुरली मधुर बजावत। हँसि मुसुकानि नेक अवलोकनि मन्मथ कोटि लजावत ॥ पीरी धौरी धुमरी गौरी लेलै नाम बोलावत । कबहूँ गान करत अपने रुचि करतल ताल बजावत ॥ कुसुमित दाम मधुप कल कुंजत संग सखा मिलि गावत ।कबहुँक नृत्य करत कौतूहल सप्तक भेद दिखावत ॥ मंद मंद गति चलत मनोहर युवतिन रस उपजावत। आनँदकंद यशोदानंदन सूरदास मन भावत॥५४॥ राग गौरी॥ कमलमुख शोभितसुंदरबेनु।मोहनराग बजावत गावत आवतचारे धेनु ॥ कुंचितकेश सुदेश वदनपर जनु साज्यो अलिसैनु।सहि न सकति मुरली मधु पीवति चाहत अपनो ऐनु ॥भ्रकुटि मनो कर चाप आप लै भयो सहायक मैनु । सूरदास प्रभु अधरसुधा लगि उपज्यो कठिन कुचैनु ॥५५॥ राग केदारो॥ नैनन निरखि हरिको रूप।मनबुद्धि दै मुख चितै माई कमल अयन अनूप॥कुटिल केश सुदेश अलिगण नैन शरद सरोज।मकरकुंडलकिरणिकी छबि दुरत पियत मनोज ॥ अरुन अधर कपोल नासा सुभग ईषद हास।दशन दामिनि जलद नवशशि भ्रुकुटि वदन विशाल॥अंग अंग अनंग जीते रुचिर उर वनमाल। सूर शोभा हृदय पूरण देत सुख गोपाल ॥५६॥ राग केदारो॥ हरिको वदन रूपनिधान ।दशन दाडिमबीज राजत कमलकोशसमान॥ नैन पंकज रुचिर दृगदल चलन भौंहन बान । मध्य श्याम सुभग मानो अलिहि बैठो आन ॥ मुकुट कुंडल किरनि किरननि किय किरनकी हान । नासिका मृगतिलक ताकत चिबुक चित्त भुलान।सूरके प्रभु निगमवाणी कौन भाँति बखान॥५७॥ राग नट ॥ माधोजूके वदनकीशोभा।कुटिल कुंतलकमलमुख मनों मधुपरस लोभा ॥ भ्रुकुटि धनु नवकंज पारस सदृश चंचल मीन । मुकुट कुंडल किरनि रवि छवि परस विगासित कीन ॥ सुरभिरेणु पराग रंजित मुरलि ध्वनि अलिगुंज । निरखि सुभग सरोज मुदित मराल सम शिशुपुंज ॥ दशन दामिनि बीच मिलि मनो जलद मध्य प्रकाश । गावत निगम वाणी नेति क्यों कहि सकै सूरजदास॥५८॥ राग नट॥ देखिरीदेखमोहनओर।श्यामसुभग सरोज आनन चारु चित्त चकोर॥ नील तनु मनु जलदकी छबि मुरलि सुर घनघोर। दशन दामिनि लखत बदननि चितवनि झकझोर ॥ श्रवण कुंडल गंड मंडल उदित ज्यों रवि भोर। बरहि मुकुट विशाल माला इंद्रधनु छबि थोर॥ वनधातु चित्रित भेष नटवर मुदित नवल किशोर। सूर श्याम सुभाइ आतुर चित लोचनकोर ॥५९॥ राग कल्याण ॥ माधोजूकेतनुकीशोभाकहतनाहिंबनि आवै । अचवत आदर लोचन पुट दोउ मनु नहिं तृपिता पावै ॥ सघनमेघ अतिश्याम सुभगवपु तांडत वसन वनमाल। शिरशिखंड वनधातु विराजत सुमन सुरंग प्रवाल॥ कछुक कुटिल कमनीय सघन अति गोरज मंडित केश ।अंबुज रुचि परागपर मानो राजत मधुप सुदेश ॥ कुंडल लोल कपोल किरणि गण नैन कमलदल मीन। अधर मधुर मुसकानि मनोहर करत मदनमन हीन॥ प्रति प्रति अंग अनंग कोटि छबि सुन सखि परमप्रवीन। सूरदृष्टि जहँ जहँ परति तहँ तहँ रहति है लीन॥६०॥ राग हमीर ॥इहेकोऊजानैरी।वाकी चितवनिमैंकिचंद्रिकामैंकिधौंमुरलीमांझठगोरी॥ देखत सुनत मोहि जा सुर नर मुनि मृग और खगो री।अरी माई जबते दृष्टि परे मनमोहन गृह गयो मन न लग्यो री।सूर श्याम बिनु छिन न रहौंमेरोमनउनहाथपगोरी॥६१॥ राग कल्याण॥लालके रूप माधुरी नैनन निरखी नैक सखी री।मनसिजमन हरन हँसि साँवरो सुकुमारराशि नख शिख

अंगअंग निरखि शोभाकी सींव नखीरी। रँगमगी शिर सुरंग पाग लटकि रही वामभागचंपकली कुटिल अलक बिच बीच रखी री ॥ आयत दृग अरुण लोल कुंडल मंडित कपोल अधर दशन दीपतिकी छबि क्योंहू नजात लखीरी। उभय भुजदंड मूल पीन अंस सानुकूल कनक मेखला दुकूलदामिनी धरखीरी ॥ उरपर मंदार हार मुकुतालर बर सुढार मत्त द्विरद गति त्रियनि देहदशा करखीरी । मुकुलित वय नवकिशोर बचनरचन चितके चोर माधुरी प्रकाश अनूप मंजरी चखी री ॥सूर श्याम अतिसुजान गावत कल्यानतान सप्त सुरन कल इतेपर मुरलिका वरषीरी॥६२॥राग गौरी॥ढोटाकौनकोइहरी॥श्रुतिमंडल मकराकृतकुंडलकनक कंठदुलारी॥ घन तन श्याम कमलदल लोचन चारु चपलतुलरी। इंदुवदन मुसुकानि माधुरी अलकन अलिकुल री ॥ उर मुक्ताकी माल पीतपट मुरली सुर गौरी। पग नूपुर मणिजडित रुचिर अति कटि किंकिणिरव री॥बालकवृंद मध्य राजतहैं छबि निरखत भुलरी। सोइसजीवन सूरदासकी महरि रहे उर री॥६३॥राग गौरी॥इह ढोटा नंदको है री।नहींजानति बसतिब्रजमेंप्रगटगोकुलरी ॥ धरयो गिरिवर वामकर जेहिं सोई है यह री। दैत्य सब इनहीं सँहारे आपु भुजबल री ॥ ब्रजघरनि जो करत चोरी खात माखन री। नंदघरनी जाहि बांध्यो अजिर ऊखल री ॥ सुरभिगण लिए वनते आवत सबइ गुण इन री।सूरप्रभु ए सबहि लायक कंसडरजिनरी॥६४॥यशुमतिको सुतइहैकन्हाई। इनहिं गोवर्द्धन लियो उठाई॥इंद्र परयो इनहींके पाई। इनहीकी ब्रज चलत बडाई ॥ बकी पिवावन इनहीं आई। योजन एक परी मुरझाई। इनहिं तृणा लै गयो उडाइ । पटक्यो द्वार शिलापर आइ ॥ केशी सुर इनहीं संहारयो। अघा बकासुर इनहीं मारयो ॥ श्याम वरन तनु पीत पिछौरी। मुरली राग बजावत गौरी ॥ देखि रूप चकृत भई बाला । तनुकी सुधि न रही तेहिं काला ॥ सूर श्यामको जानति नीके। मगन भई पूँछत सुख जीके ॥६५ ॥रागगौरी॥ आवत बनते सांझ देखे मैं गायनमाँझ काहूको ढोटा री एक शीश मोरपँखिआ। अतसीकुसुम जैसे चंचल दीरघ नैन मानौ रसभरी जो लरति युग झँखिआ ॥ केसरिकी खौरिकिए गुंजा वनमाल हिये उपमा न कहिआवे जेती तैं नखिआ ॥ राजत पीत पिछौरी मुरली बजावैगौरीध्वनि सुनि भई बौरी रही पलक अँखिआ॥चल्यो न परत पग गिरिपरीसूधे मग भामिनि भवन ल्याईकर गहे कँखिआ ॥ सूरदास प्रभु चित्त चोरिलियो मेरे जान और न उपाव दाँवसुनो मेरीसखिआ॥६६॥ रागदेवगंधार ॥ इकदिन हरिहलधर सँग ग्वालन । प्रात चले गोधन बन चारन॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत।कोउ सिंगी कोउ नाद सुनावत॥खेलत हँसत गए वनमहियाँ । चरनलगीं जितकित सब गैयाँ॥हरि ग्वालन मिलि खेलन लागे।सूर अमंगल मनके भागे॥६७॥अध्याय॥ ३६॥वृषभासुर वध केशी हेतु ॥ राग सोरठ ॥ यहि अंतर वृषभासुर आयो।देखे नंदसुवन बालकसँग इहै घातहैपायो॥ गयो समाइ धेनुपति हैकै मनमें दाउँ बिचारे। हरि तबहीं लखिलियो दुष्टको डोलत धेनु बिडारे ॥गैयां बिडरि चलीं जिततितको सखा जहांतहां घेरें। वृषभ शृंगसों धरणि उकासत बल मोहन तन हेरैं ॥ आवत चल्यो श्यामके सन्मुख निदरि आपु अँग सारी। कूदि परयो हरिऊपर आयो कियो युद्ध अति भारी ॥ धाइ परे सब सखा हाँक दै वृषभ श्यामको मारयो। पाउँ पकरि भुजसों गहि फेरयो भूतलमाँह पछारयो ॥ परयो असुर पर्वतसमान है चकित भए सब ग्वाल। वृषभ जानिकै हम सब धाए यह कोऊ बिकराल॥देखि चरित्र यशोमतिसुतकेमनमें करत बिचार । सूरदास प्रभु असुरनिकंदन संतन प्राणअधार ॥६८॥ राग गौरी॥धनिकान्हधनि धनि ब्रज आये। आजु सबनि घरिके यह खातो धनि तुम हमहिं बचाए ॥।यह ऐसो तुम अतिहि

तनकसे कैसे भुजन फिरायो । पलकहि माँझ सबनके देखत मार्‍यो धरणि गिरायो ॥ अबलौं हम तुमको नहिं जान्यो तुमहिं जगतप्रतिपालक । सूरदास प्रभु असुर निकंदन ब्रजजनके दुखदालक ॥६९॥ राग कल्याण ॥ आवतमोहनधेनुचराए। मोरमुकुटशिरउर बनमाला हाथलकुटगोरजलपटाए ॥ कटिकछनी किंकिणिध्वनि बाजत चरण चलत नूपुर रवराए। ग्वालमंडली मध्य श्याम घन पीतवसन दामिनिहि लजाए ॥ गोपसखा आवत गुण गावतमध्य श्याम हलधर छबिछाए। सूरदास प्रभु असुर सँहार्‍यो ब्रज आवत मन हर्ष बढाए ॥७०॥ ये गोरेणु रंजितआवतहैंमोहनलाल। श्याम सुभग तनु तडित वसन बग पंगति मुक्तहार वनमाल ॥ गोपदरज मुखपर छबि लागति कुंडल नैनविशाल । बल मोहन वनतेबने आवत लीने गैयाजाल॥ ग्वालमंडलीमध्यविराजतबाजत वेणु रसाल । सूरश्यामवनते ब्रजआए जननिलिए अँकमाल॥७१॥ राग कान्हरो ॥ तेरोमाई गोपाल रणशूरो । जहँजहँ भिरतप्रचारि पैजकरि तहीं परतहैपूरो ॥ वृषभरूप दानवइक आयोसो क्षणमांह सँहार्‍यो । पाँव पकरि भुजसों गहि वाको भूतलमाहँ पछार्‍यो ॥ कहत ग्वाल यशुमतिधनिमैया बडो पूततैं जायो। यह कोउ आदिपुरुषअवतारी भाग्य हमारे आयो ॥ चरणकमलपैबंदितरहिये अनुदिन सेवाकीजे । बारंबारसूरकहैप्रभुकी हरषिबलैयालीजे॥७२ ॥ राग सोरठ॥ यशुमतिबारबार पछितानी। सुनिकरतूतिवृषभसुरकीजब ग्वाल कहीमुखवानी॥ गैयनभीतरआइसमान्यो कान्हहि मारन ताक्यो । मैं नहिं काहूको कछु घाल्यो पुण्यनि करवर नाक्यो ॥ सुन यशुमतिमैया कत खीजत हरिके भाए ख्याल। पर्वत तूल देह धरिकै पलकमें कियो बेहाल ॥ तुम्हरी रक्षाको यह नाहीं यहब्रजकेरखवार । सूरदासमनमोह्यो सबको मोहननंदकुमार॥७३॥ राग सारंग ॥ हमहिंडर कौनको री मैया। डोलत फिरत सकल वृन्दावन जाके मीत कन्हैया ॥ जब जब गाढ परतहै हमको तहँ करिलेत सहैया । चिरजीवहु यशुमति सुत तेरो हरि हलधर दोउ भैया ॥ इनते बड और नहिं कोऊ इहि सब देत बडैया। सूरश्यामसन्मुख जेआए ते सबस्वर्ग चलैया॥७४॥ रागकान्हरो ॥ हँसिजननीसों बात कहत हरि देख्यो मैं वृन्दावननीको। अतिरमणीकभूमि द्रुम वेली कुंज सघन निरखत सुखजीको॥ यमुनाके तट धेनु चराई कहत मात मनवीके ।भूखमिटीवनफलकेखाएप्यास यमुनजल पीके ॥ सुनति यशोदा सुतकी बातें अतिआनंद मगनतबहीके। सूरदासप्रभु विश्वभरन ए चोर भए ब्रज तनकदहीके ॥७५॥ गोविंद गोकुलकी जीवनिमेरे।जाहि लगाइरहीतनमन धन दुख भूलत मुख हेरे ॥ जाके गर्व बढ्यो नहिं सुरपति रह्यो सात दिन घेरे। ब्रजहित नाथ गोवर्धन धारे सुभग भुजननख नेरे ॥ जाके यश ऋषि गर्ग बखान्योकहत निगम निज टेरे । सोइ अब सूर सहितसंकर्षणपाएजतन घनेरे ॥७६ ॥ अध्याय ॥ ३७ ॥ अथ केशीवध ॥ राग मारू ॥ असुरपति अतिही गर्वधर्‍यो । सभामाँझ बैठो गर्जतहै बोलत रोष भर्‍यो ॥ महामहा जे सुभट दैत्यबल बैठे सब उमराउ।तिहूँभुवन भरि गमि है मेरी मो सन्मुख कोआउ ॥ मो समान सेवकनहिं मेरे जाहि कहौं कछु दाव। काहि कहौं को ऐसोलायक ताते मोहिं पछिताव ॥ नृपतिराइ आयसु दै मोको ऐसो कवन बिचार । तुम अपने चित सोचत जाको असुरनके सरदार ॥ जो करि क्रोध जाहि तन ताको तिनको है संहार । मथुरापति यह सुनि हरषित भयो मनहिं धर्‍यो अतिभार ॥ श्वेतछत्र फहरात शीशपर ध्वज पताक बहुबान। ऐसोको जो मोहिं न जानत तिहूँ भुवन मेरीआन ॥ असुरवंश जे महाबली सब कहौं काहि ह्वाँ जान ।तनकतनकसे महर ढिटौना करि आवै बिनप्रान ॥ यह कहि कंस चितै केशीतन कह्यो जाइ करि काज । तृणावर्त शकटा अरु पूतना उनके कृत सुनि लाज ॥ तोते कछु ह्वैहै यों जानत धरि आनै ज्यों बाज। छलकै

बल कै मारु तुरतही लै आवहु अब आज ॥अतिगर्वित ह्वै कह्यो असुरभट कितिक बात यहआ-
हि । कह मारौं जीवत धरिलावौं एक पलकमेंताहि ॥आज्ञापाइ असुर तब धायो मनमेंयह अव-
गाहि। देखौं जाइ कौन वह ऐसे कंस डरतहै जाहि॥ मायाचरित करि गोपपुत्र भयो ब्रजसन्मुख
गयो धाइ । बल मोहन ग्वालनबालक सँग खेलत देखे जाइ॥ धाइ मिल्यो कोउ रूप निशाचर
हलधर सैन बताइ ।मनमोहन मनमें मुसुकाने खेलत फलनि जनाइ ॥ द्वै बालक बैठारि सया-
ने खेल रच्यो ब्रजखोरि । और सखा सब जुरिजुरि ठाढेआपुदनुजसँग जोरि ॥ फलको नाम बु-
झावन लागे हरि कहिदियो अमोरि।कंध चढे जिमि सिंह महाबल तुरतहि घींच मरोरि॥तब के-
शी ह्वै बरवपु काछ्यो लैगयो पीठि चढाइ। उतरि परे हरि ता ऊपरतेकीन्हों युद्धअघाइ॥ दाउ
घाउ सब भाँति करतहै तब हरि बुद्धि उपाइ । एक हाथ मुखभीतर नायो पकरि केश धरि जाइ॥
चहुँघा फेरि असुर गहि पटक्यो शब्द उठ्यो आघात ।चौंकि पर्‍यो कंसासुर सुनिकै भीतर
चल्यो परात ॥ यह कोइ नहीं भलो ब्रजजनम्योयातेबहुतडरात । जान्योकंस असुरगहिपटक्यो
नंदमहरकेतात ॥ और सखा रोवत सब धाए आइ गये नर नारि । ग्वालरूप सँग खेलत हरिके
लैगयो कांधेडारि ॥ धाए नंद यशोदा धाई नितप्रति कहा गुहारि। ना जानियेआहि धौं को यह
कपटरूप वपुधारि ॥ यशुमति तब अकुलाइ परी गिरितनुकी सुधि न रहाइ ।नंद पुकारत आरत
व्याकुल टेरत फिरत कन्हाइ ॥ दैत्य सँहारि कृष्ण तहँ आए ब्रजजन मरत जिवाइ।दौरि नंद उर
लाय लियो सुत मिली यशोदा माइ॥खेलत रह्यो संग मिलि मेरे लैउड़िगयो अकास।आपुनही
गिरिपर्‍यो धरणिपर मैं उबर्‍यो तेहि पास॥उर डरात जियबात कहत उहि आएहैं करि नाश।सूर
श्याम वर यशुमति लैगईब्रजजनमनहिंहुलास॥७६॥ अथ भौमासुरवध ॥ राग बिलावल ॥ हरि ग्वालन
मिलि खेलन लागे वनमें आँखिमिचाइ । शिशु होइ भौमासुर तहँ आयो काहू जान न पाइ ॥
ग्वालरूप होइ खेलनलाग्योग्वालनको लैजाइ चुराइ । धरै दुहाइ कंदराभीतर जानीबातकन्हाइ॥
गुदी चांपिकै ताहि निपात्यो पर्‍यो धरणि मुरछाइ । सूर ग्वाल मिलि हरि गृह आए देव
दुंदुभी बजाइ ॥ ७८॥ राग कान्हरो ॥ कहति यशोदा बात सयानी ।भावी नहीं मिटै काहूकी
कर्ताकी गति काहु न जानी ॥ जन्म भयो जबते ब्रज हरिको कहा कियोकरिकरिरखवानी। कहां
कहांते श्याम न उबर्‍यो केहि राख्यो ता अवसर आनी॥केशी शकट अरु वृषभपूतना तृणावर्त्त-
की चलति कहानी । को मेरे पछिताइ मरै अब अनजानत सब करी अयानी ॥ लै बलाइ छाती-
सों लाए श्याम राम हरषति नँदरानी । भूँखे भए प्रात अधखातहि तातेआजु बहुत पछितानी ॥
रोहिणि तुरत न्हवाइ दुहुँनको भोजनको माता अतुरानी । ल्याई परसि दुहूँकी थारी जेंवत
बलमोहन रुचि मानी ॥ माँगि लियो शीतल जल अँचयो मुख धोयो चरणन लै पानी। बीरा
खात देखि दोउ बीरा दोउ जननी मुख देखि सिहानी ॥ रत्नजटित पलकापर पौढे वरणि
न जाइ कृष्ण रजधानी । सूरदास कछु जूंठनि मांगत तब पाऊं कहि दीजै बानी ॥७१॥ राग
बिलावल ॥ नित्य धाम वृन्दावन श्याम । नित्य रूप राधा ब्रजबाम ॥ नित्य रास जल नित्य
विहार। नित्य मान खंडिताभिसार ॥ ब्रह्मरूप एई करतार । करन हरन त्रिभुवन संसार ॥ नित्य
कुंज सुख नित्यहिंडोर । नित्यहि त्रिविध समीरझकोर ॥ सदा वसंत रहत जहँ वास । सदाहर्ष
जहँ नहीं उदास॥ कोकिल कीर सदा तहँ रोर । सदारूप मन्मथ चितचोर ॥ विविध सुमनवन
फूले डार । उन्मत मधुकर भ्रमत अपार ॥ नव पल्लव बनशोभा एक । विहरत हरिसँग सखी
अनेक॥ कुहूकुहू कोकिला सुनाइ। सुनिसुनि नारि भई हरषाइ ॥बारबार सो हरिहि सुनावति।

ऋतु वसंत आयो समुझावति॥ फागुचरित रस साध हमारे। खेलहिं सब मिलि संग तुम्हारे॥ सुनिसुनिसूर श्यामसुसकाने।ऋतुवसंतआयोहरषाने॥८०॥वसंतलीला॥रागवसंत॥राधेजूआज वरणो वसंत।मनहु मदन विनोद विहरत नागरी नवकंत॥मिलत सन्मुख पाटलपटलभरंत मानजुही।बेलि प्रथम समाज कारण मेदिनी कुच गुही॥ केतकी कुच कलस कंचन गरे कंचुकि कसी। मालती मद चलित लोचन निरखि मृदु मुख हँसी॥बिरहव्याकुल मेदिनीकुल भई वदन विकास।पवन परिमल सहचरी पिक ज्ञान हृदय हुलास॥उतसखाचंपक चतुरअति कुंद मनौ तनमाल।मधुपमणि मालामनोहर सूरश्रीगोपाल॥८१॥राग वसंत॥ऐसोपत्र पठायोऋतुवसंत।तजहु मान मानिनि तुरंत॥ कागज नवदल अंबुज पात।देति कलममसिभवँर सुगात॥ लेखनिकाम बाणकेचाप।लिखि अनंग कसि दीनी छाप॥मलयाचल पठयो बिचारि। वाचल पिक सब नेहु नारि॥ सूरदास क्यों होइ आन।भजि हरि गोपी तजि सयान॥ ८२ ॥ बेगि चलहु पिय चतुर सयानी। समय वसंत विपिन रथ हय गज मदन सुभट नृप फौज पलानी॥ चहूँ दिशा चांदनी चमू चली मनहु प्रशंसित पिक बर वानी।बोलतहँसतचपल बन्दीजनमनहु धवल सोइ धूर उडानी॥ सोलह कला छपाकरकीछबि शोभित छत्रशीशशिरतानी।धीरसमीर रटतबनअलिगणमनहुकामकरमुरलि सुठानी॥कुसुम शरासन बान विराजत मनहु मानगढअनुअनुमानी। सूरदास प्रभुकीवेइगति करहु सहाय राधिका रानी॥८३॥राग वसंत॥देख्यो वृंदावन कमलनयन। मनु आयो है मदन गुण गुदर दयन॥ १ ॥ भए नवद्रुम सुमन अनेक रंग। प्रति लसित लता संकुलित संग॥ करधरे धनुष कटि कसि निखंग।मनौ बने सुभट सजि कवच अंग॥ २ ॥ जहां बान सुमति बह मलय बात। अति राजत रुचिर विलोल पात॥ धपि धाय धरत मन तुरै गात। गति तेज वसन बाने उडात॥३॥कोकिल कूजतहैं हंस मोर।रथ शैल शिला पदचर चकोर॥ वर ध्वज पताक तरतारकेरि। निर्झरनिसान डफ भँवर भेरि॥४॥ सूरदास इमि वदत बाल।करिकाम कृपण शिवक्रोध काल॥ हँसि चितय चारु लोचन विशाल। तेहि अपने करि थपिए गोपाल॥५॥ राग वसंत॥राजत तेरे वदन शशी री। किरनि कटाक्ष बाण बरसाधे भौंह कलंक कमान कसीरी॥ पीन पयोधर सघन उन्नत अति तापर रोमवाली लसी री। चक्रवाक खग चोंचपुटीते मनु सेनिवल मंजीर खसीरी॥ ज्यों नाभीसर एकनाल नव कनककमल विवि रहे बसी री। सूरज श्रीगोपालपियारी मेरु नये अधतम धग धसी री॥८४॥कोकिल बोली वन वनफूले मधुप गुंजारन लागे। सुनिभयोभोर रोर वंदिनको मदन महीपति जागे॥ तिन दूने अंकुरद्रुम पल्लव जे पहिले दवदागे। मानहु रतिपति रीझि याचकन बरनवरन दए बागे॥ नई प्रीति नई लता पुहुप नए नए नयन रस पागे। नए नेह नवनागरि हरपति सूर सुरँगअनुरागे॥८५॥ देख्यो वृंदावन खेलहिं श्रीगोपाल। सबबनिठनि आईं व्रजकी बाल॥ नववल्ली सुंदर नव तमाल। नव कमल महा नव नवरसाल॥ अपने कर सुंदर रचित माल। अवलंबित नागर नंदलाल॥ नवकेसरि नव अरगजा घोरि। छिरकति नागरि कहँ नव किशोरि॥ नवगोपवधू राजहीं संग। गजमोतिन सुंदर लसित मंग॥गोपीन ग्वाल सुंदर सुदेश।छिरकत सुगंध भये ललित भेप॥श्रीनंदनंदनके भ्रुवविलास।आनंदितगावतसूरदास॥८६॥ दिय देख्यो वन छबि निहारि। बारबार यह कहति नारि॥नव पल्लव बहु सुमन रंग। द्रुमबेली तनुभयो अ[illegible]॥ भँवरभँवरी भ्रमत संग।यमुन करति नाना तरंग॥त्रिविध पवन मनहर्ष दयन। [illegible] [illegible] ॥वे हरत चयन॥सूरजप्रभु करि तुरग नयन।चलेनारि मन सुखद मयन॥आयो पिय [illegible]॥ ऋतुवसंत।दंपतिमन सुखविरहिनिन अंत॥फागु खिलावहु संग कंत। हाहा करिकरि तृण

गहै दंत॥तुरत गए हरि लै मनाय। हरषि मिले उर कंठ लाय॥दुख डारयो तुरतहि भुलाय। सो सुख दुहुँके उर न माय॥ ऋतुवसंत आगमन जानि। नारिन राखो मानबानि॥ सूरदास प्रभु मिलेआनि। रसराख्यो रतिरंग ठानि॥८८॥आयो जान्यो हरि ऋतु वसंत।ललना सुख दीन्हों तुरंत॥फूलेबरन२ सुमन पलास। ऋतुनायक सुखको विलास ॥ संग नारिचहुँ आस पास। मुरली अमृत करत भास ॥ श्यामा श्याम विलास एक। सुखदायक गोपी अनेक॥तजब नहीं काहू छनेक। अलख निरंजन विविध भेक॥ फागुरंग रस करत श्याम। युवतिन पूरन करन काम ॥ वासरहू सुख देत याम। सूर श्याम बहु कंत वाम ॥ ८९ ॥ देखत नव ब्रजनाथ आजु अतिउपजतुहैअनुराग।मानहु मदन वसंत मिले दोउ खेलत फूले फाग ॥ झाँझि झालरिनि झारि निसान डफ भँवर भेरिगुंजार। मानहु मदन मंडली रचि पुरबीथिन विपिनि विहार ॥ द्रुमगणमध्य पलास मंजरी मुदित अग्नि-की नाईं।अपनेअपने मेरनि मानो उनि होरी हरषि लगाईं ॥ केकी काग कपोत और खग करत कुलाहल भारी। मानहु लैलै नाउँ परस्पर देत दिवावत गारी ॥कुंजकुंजप्रतिकोकिलकूजति अति रस बिमल बढी। मनु कुलवधू निलज भइ गृहगृह गावति अटनि चढी ॥ प्रफुलितलता जहां जहँ देखत तहाँ तहाँ अलि जात। मानहु सबहिनमें अवलोकत परसत गणिका गात ॥ लीन्हें पुहुपपराग पवन कर क्रीडत चहुँदिशि धाइ। रस अनरस संयोग बिरहिनी भरि छाँडति मनभाइ ॥ बहुबिधि सुमन अनेक रंगछबि उत्तम भाँति धरे। मनु रतिनाथ हाथसों सबही लैलै रंगभरे ॥ और कहाँ लगि कहौं कृपानिधि वृंदाविपिन विराज। सूरदासप्रभुसबसुखक्रीडत श्याम तुम्हारे राज॥९०॥ सुंदर वर संग ललनाहो बिहरत वसंत समय ऋतु आइ।सकल शृंगार बनाइ ब्रजसुंदरि कमलनयनपै लाइ॥ सरिता शीतल बहत मंदगति रवि उत्तरदिशि आयो। अतिरसभरी कोकिला बोली विरहिनि विरह जगायो ॥ द्वादश वन रतनारे देखियतचहुँदिशिटेसू फूले। मौरे अँबुवा अरु द्रुम बेली मधुकर परिमल भूले॥ इत श्रीराधा उत श्रीगिरिधर इत गोपी उत ग्वाल।खेलत फागु रसिक ब्रजवनिता सुंदर श्यामतमाल॥ खावासाखि जवारा कुमकुमा छिरकत भरि केसरि पिचकारी।उडत गुलालअबीरजोरतहँबिदिशदीपउजियारी॥तालपखावजबीनबाँसुरी डफ गावत गीत सुहाए। रसिक गोपाल नवल ब्रजवनिता निकसि चोंहटेआये॥झमिझमिझमकसब गावति बोलति मधुरी बानी। देति परस्पर गारि मुदितमन तरुनी बाल सयानी ॥ सुरपुर नरपुर नागलोकपुर सबही अति सुख पायो।प्रथम वसंत पंचमी लीला सूरदास यश गायो॥९१॥सुंदरवर संग ललना विहरी वसंत सरस ऋतुआई। लैलै छरी कुँवरि राधिका कमलनयनपर धाई ॥ द्वादश वन रतनारे देखियत चहुँदिशि टेसू फूले। मौरे अँबुवा अरु द्रुम बेली मधुकर परिमल भूले ॥ परिता शीतलबहत मंदगति रवि उत्तरदिशि आयो। प्रेम उमंगि कोकिला बोली विरहिनि बिरह जगायो॥ताल मृदंग बीन बाँसुरि डफ गावत मधुरी बानी। देत परस्पर गारि मुदित है तरुणी बाल सयानी ॥ सुरपुर नरपुर नागलोक जलथल क्रीडारस पावे। प्रथम वसंत पंचमी बाला सूरदास गुण गावै॥९२॥खेलत नवलकिशोर किशोरी। नँदनंदन वृषभानुसुता चित लेत परस्पर चोरी॥ औरौ सखी जाल बिच शोभित सकल ललित तनु गावति होरी। तिनकी नख शोभा देखतही तरनिनाथहूकी मति भोरी॥ एक गोपाल अबीर लिए कर इक चंदन एक कुमकुम रोरी। उपर छिरकि रस सर भरि बहु कुल क्रीडा परिमिति फोरी ॥ देति अशीश सकल ब्रजयुवती युग युग अविचर जोरी। सूरदास उपमा नहिं सूचत जो कछु कहो सु थोरी ॥९३॥राग श्रीहठी॥तेरे

आवैंगे हरि आजु खेलन फागु री । सगुन सँदेशो हो सुन्यो तेरे आँगन बोलैकागुरी ॥ मदनमोहन तेरे बश माई सुनि राधे बडभागु री । बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ का सोवै उठि जागुरी ॥ चोवा चंदन और कुमकुमा केसरि लै पैयां लागु री । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको श्रीराधा अचलसुहागु री ॥ ९४ ॥ हो आजुनंदलालसोंखेलौंगीसखीहोरी । ललिता बिशाखा अंगनालिपावो चौकपुरावो तुम रोरी ॥ मलयज मृगमद केसरिलैलै मथिमथि भरो कमोरी । नवसत साजि शृँगार करौ सब भरि भरि लेहु गुलालहि झोरी ॥ ज्यों उडुगणमें इंदु बिराजत सहेलिन मध्य राधिका गोरी । इक गोरी इक साँवरी हो इक चंचल इक भोरी ॥ बरजति सखी बरज्यो नहिं मानै लैपिचकारी दौरी । उन रंग लै पियऊपर डारचो पियहु रंगमें बोरी ॥ ब्रह्मा इंद्र देवगण गंधर्व बरषे बहुत वाटिका खोरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको चिरजीवो राधावर जोरी ॥ ९ ॥ राग मालकौशिक[1] ॥ नागर रसिक अरु रसिक नागरी । बलिबलि जाउँ देखि अब दंपति प्रमुदित लीला प्रथम फाग री ॥ राधा दधि मथन करति अपने गृह प्रबल धरि सुकर पागरी । तब हरि उठि आए औचानक उससि शशी चसढरित गागरी । लै उसाँस अंजरि भरिलीनो विदुरति दधि जु अनूपम आगरी ॥ अति उमगति श्याम घन छिरके मनु बगपांति बिछुरि गई मागरी ॥ मोहन मुसकि गही दौरतमें छूटि तनी छंद रहित घाघरी । जनु दामिनि बादरते बिमुख वपु तरपि ततक्षण लई तलाग री ॥ आनंदित परम दंपति ऐसे पटने परस परत दाग री । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि का बरणौं ब्रजयुवतिभागरी ॥ ९३ ॥ रागि बँगाली[2] ॥ श्रीमदनमोहनजू मति डारौ केसरि पिचकारी । दधिही मथन जाहुँ यमुनाजलहो मोहन तुम कुंजबिहारी ॥ मर्म न गुरुजन पुरजन जानैं नहिं या बृंदावनकी नारी । सासु रिसाय लरै मेरी ननँदी देखैं रंग देहिं मोहिं गारी ॥ मुरलिमाहिं गावत बंगाली अधर चुवत अमृत बनवारी । मुदित पियत संतन सुखकारी पूरब खचित तेहिगिरिधारी ॥ मृदु मुसुकानि युवति मन मोहत हो हरि माखनचोर मुरारी । सूरदास प्रभु दोउ चिरजीवो श्रीब्रजनाथ वृषभानु दुलारी ॥ ९७ ॥ राग धमारि ॥ ठाढी देखी नंद दुआरे हो सुंदरि एक दह्यो । बाढीहो प्रीति ललना गिरिधरसों गुरुजन सबहिन बिसरि दिये ॥ नयनन कज्जल नासिका बेसरि मौक्तिक मोर अति राज । ढार सुढार बन्यो जाको मोती रहत अधर मुख छाज ॥ कटि लहँगा पहुँची बंद अँगिया फुँदना बहु विधि सोहै । रतन जराव जरी जाको जेहरि हंसचाल मृग मोहै ॥ कंचन कलश भराए यमुनजल मोतियन चौक पुराये । मनहु सुछौना हंसन कैसे चुगन सरोवर आए ॥ तुमतो कहावतहो नँदनंदन सारँग बुद्धि है थोरी । सूरदास प्रभुनंदके लालको बनीहोछबीली जोरी ॥ ९८ ॥ राग कान्हरो[3] ॥ हरि संग खेलत हैं सब फाग । यहि मिस करत प्रगट गोपी उर अंतरको अनुराग ॥ सारी पहिरि सुरँग कसि कंचुकि काजर दैदै नैन । बनि बनि निकसि निकसि भई ठाढी सुनि माधौके बैन ॥ डफ बाँसुरी रुंज अरु महुअरि बाजत ताल मृदंग । अति आनंद मनोहर वाणी गावत उठत तरंग ॥ एक कोध गोविंद ग्वाल सब एक कोध ब्रजनारि । छांडि सकुच सब देति परस्पर अपनी भाई गारि ॥ मिलि दश पांच अली बलि कृष्णहि गहि लावति उचका-

१ मालकौशिकरागः-श्यामांगः पीतवासा मधुरिपुगलजो वंशवाद्यस्त्रिभंगो रत्नानां कंठमालो विरचिततिलकः कुंकुमैर्भालमध्ये ॥ रागोयं मालकौशी प्रचरति शिशिरे कंठदेशे जनानां प्रायः सूर्योदयादौ स्वरनिचयविदां तुष्टये भूपतीनाम् ।

२ वंगालयाभाति यस्या अलिकपटलके शीतरश्मिर्नितांतं भर्तुः संतमिदंवी मलयजरचितं सर्वदेहे प्रलेपम् ॥ शुक्लं वासो दधत्या तरुणतनुमदालस्यमनेभगत्या युष्माकं सा मुदेस्तात्सुवजनहृदयानन्दकर्ता कटाक्षः ।

३ चन्द्रज्योतिसमानसुन्दररदा रत्नान्विते कुंडले बाहोमौक्तिकरत्नहारहृदयस्तत्कुंडले कर्णयोः ॥ नानापुष्पसुवासवासिततनुः पीतांशुकंराभृतः संगीतेन विचक्षणो दिविषदां संमोहनः कानरः ॥ रागः कानरः ।

य। भरि अरगजा अबीर कनक घट देति शीशते नाय॥ छिरकति सखी कुमकुमा केसरि भुरकति बंदन धूरि। शोभित हैं मनो शरद समय घन आएहैं जल पूरि॥दशहूँ दिशा भयो परिपूरणसूर सुरंग प्रमोद।सुरवनिता कौतूहल भूलीं निरखतिश्यामविनोद॥९९॥राग आसावरी॥यमुनाके तट खेलति हरि सँग राधा सहित सब गोपी हो। नंदको लाल गोवर्धन धारी तिनके नख मणि ओपी हो॥ चलहु सखी जैये तहां छिन जियरा न रहाय हो। वेणु शब्द मन हरिलियो नाना राग बजाइ हो॥ सजल जलद तनु पीतांबर छबि करमुख मुरली धारि हो। लटपटी पाग बने मनमोहन ललना रहीं निहारि हो॥ नैनसों नैन मिले करसों कर भुजा ठये हरि ग्रीवा हो। मध्यनायक गोपाल विराजत सुंदरताकी सींवा हो॥ करत केलि कौतूहल माधव मधुरी वाणी गावै हो। पूरणचंद्र शरदकी रजनी संतन सुख उपजावै हो॥ सकल शृंगार कियो व्रजवनिता नख शिख लोभलटानी हो। लोक वेद कुल धर्म केतकी नेक न मानत कानी हो॥ बलि जाउँ बलके वीर त्रिभंगी गोपिनके सुखदाई हो। सकल व्यथा जु हरी या तनुकी हरि हँसि कंठ लगाई हो॥ माधव नारि नारि माधवको छिरकत चोवा चंदन हो॥ ऐसो खेल मच्यो उपरापरि नँदनंदन जगबंदन हो।ब्रह्मा इंद्र देव गण गंधर्व सबै एक रस वरषैं हो।सूरदास गोपी बड भागिन हरिसुखक्रीडा करषैं हो॥२४००॥राग गौरी॥मानो व्रजते करिनि चलीं मदमाती हो।गिरिधर गजपै जाइग्वारिमदमातीहो॥कुल अंकुश मानै नहीं मदमातीहो।शंका बढे तुराइग्वारिमदमातीहो॥ अवगाहै यमुना नदी मदमातीहो। करति तरुनि जलकेलि ग्वारि मदमाती हो॥ चहुँ दिशते मिलि छिरकहीं मदमाती हो। सुंड दंड गज पोल ग्वारि मदमाती हो॥ वृंदाबन वीथिनि फिरैं मदमाती हो। संग मदन गजपालि ग्वारि मदमाती हो॥ कबहुँ नैन कर दै मिलैं मदमाती हो॥ तैसिय गजगति चाल ग्वारि मदमाती हो। नागबेलि चलती फिरैं मदमाती हो॥ मोदकमांझ कपूर ग्वारि मदमाती हो॥ सुगंध पुढे श्रवणन चुवै मदमाती हो।मंडित मांग सिंदूर ग्वारि मदमाती हो॥केसरि लाई सानिकै मदमाती हो। घुँघरू घंट घुमाइ ग्वालि मदमाती हो॥ ऊपर कुच युग घंटसों मदमाती हो। मुक्तामाल तुराइ ग्वालि मदमाती हो॥अंगअंग छिरकै श्यामको मदमाती हो।कुमकुम चंदन गारि ग्वारि मदमाती हो॥ सूरदास प्रभु क्रीडहीं मदमाती हो।सँग गोकुलकीनारिग्वारिमदमातीहो॥१॥ राग काफी॥ खेलतअतिरसमसेरँगभीने हो। अति रसकेलि विशाल लाल रँगभीने हो॥ जागत सब निशिगत भई रँगभीने हो।भलेकान्हभले आए प्रातकाल रँगभीने हो॥ बोलत बोल प्रतीतिके रँगभीने हो॥ सुंदर श्यामल गात लालरँग भीने हो॥अति लोहित दृग रँगमगे रँगभीने हो। मानो भोर भए जलजात लाल रँगभीने हो॥ पिये अधर मधुपान मत्त रँगभीने हो। कहत कहूँकी कहूँ बात लाल रँगभीने हो॥केश शिथिल वरवेश सिथिल रँगभीने हो।शशि मुख सिथिल जँभात लाल रँग भीने हो॥चाल सिथिल भुवभाल सिथिल रँग भीने हो। अंगअंग अलसात लाल रँगभीने हो॥ सकुचत हो कत लाडिले रँगभीने हो। दुरत न उर नखघात लाल रँगभीने हो॥ सूरदास प्रभु नँदकिशोर रँगभीनेहो।बहुनायक विख्यात

१ श्यामांगी मुकुरं करेण दधती हारं गळे मौक्तिकं ताटंकान्वितकर्णकंकणकरा दिव्यांबरैः संयुता॥ रंभाया घनकाननेषु रमती त्वष्यापयंती शुभमासावर्यपि किन्नरैरपि सुरैर्गीता निशांते दिवि॥ राज्ञी आसावरी।

वीणाहाटकंककणे च दधती पद्माक्षिपद्मानना वस्त्रं कैरवपत्रकोमळसमं शास्त्रे परं पंडिता॥ मालश्री सखिसंयुता त्रिभुवने गीतार्थपुंसां प्रिया भूपालीरहिता प्रियाय करुणामाकुर्वती श्रीहठी।

लाल रँगभी नेहो॥ १॥ राग गौरी॥ गोकुल सकलग्वालिनीहो घर घर खेलैंफागु मनोराझूमकरो। तिन में श्रीराधा लाडिलीहो जिनको अधिक सुहाग मनोरा झूमकरो॥ १॥ झुंडनिमिलिगावतिचलीं हो झूमक नंददुवार मनोरा झूमकरो। आजु परब हँसि खेलो हो मिलि संग नंदकुमार मनोरा झूमकरो॥ २॥ रसिकराइ सुंदर वरहो श्रीराधा जिन प्राण मनोरा झूमकरो। मोहन दरश दिखावहू हो डरहु तो नंदकी आन मनोरा झूमकरो॥ ३॥ प्रगटप्रीतिगोकुल भईहो अब कैसे करत दुराव मनोरा झूमकरो। हम न दरश बिन जीवहीं हो कोउ कछु करहु उपाव मनोरा झूम करो॥ ४॥ यशुमतिसुत चित चुभि रहीहो वह तुमहीं मुसुकान मनोरा झूमकरो। अब न अनत रुचि ऊपजैहो सहजपरी यह बानि मनोरा झूमकरो॥ ५॥ दुरत श्याम धरि पाएहो राधा धाय भरी अँकवारि मनोरा झूमकरो। कनक कलश केशरि भरीहो लै धाईं व्रजनारि मनोरा झूमकरो॥ ६॥ भरहु भरहु सखि श्यामहीं होपीत पिछौरी पागमनोरा झूमकरो। देह गेहसुधि बिसरी हो नँदनंदन अनुराग मरोरा झूमकरो॥ ७॥ छूटे केश कंचुक बंदहो टूटे मोतिन मालमनोरा झूमकरो॥ चोवा चंदन अरगजा हो उडत अबीर गुलाल मनोरा झूमकरो॥ ८॥ करकट ताल बजावहींहो छिरकत सब व्रजनारि मनोरा झूमकरो। हँसि हँसि हरिपर डारहींहो अरुन नयनफुलवारिमनोरा झूमकरो॥ ९॥ सुर नर मुनि कौतुक भूलेहो आनँद बरषै फूल मनोरा झूमकरो। गगन विमानन छायोहो झेहनसूझे नाहिनसूरमनोराझूमकरो॥ १०॥ सूरगोपालकृपाबिनुहो यहरसलहै न कोइ मनोरा झूमकरो। श्रीवृषभानु किशोरी हो श्याममगन मन होइ मनोरा झूमकरो॥ ११॥ राग सारंग॥ आली री नँदनंदन वृषभानु कुवरिसों बाढ्यो अधिक सनेह। दोऊ दिशिपै आनँद वरषत ज्यों भादौंको मेह॥ सब सखियाँ मिलिगईं महरिपै मोहन माँगो देहु। दिनाचारि होरीके औसरबहुरि आपनो लेहु॥ झुकिझुकि परतिहै कुँवरि राधिका देति परस्पर गारि। अब कहां दुरे साँवरे ढोटा फगुवा देहु हमारि॥ हँसिहँसि कहति यशोदा रानी गारी मति कोउ देहु। सूरजदासश्यामके बदले जो चाहो सो लेहु॥ ४॥ रागटोडी॥ या गोकुलकेचौहटेरंगभीजीग्वालिनि। हरिसँगखेलें फाग नैन सलोनरी रँगराची ग्वालिनि॥ डरति न गुरुजन लाज नैन सलोनेरी रँग राचीग्वालिनि। दुंदुभिबाजें गहगहे रँगभीजी ग्वालिनि॥ नगर कोलाहल होइ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। उमह्यो मानुष घोष यों रँग भीजी ग्वालिनि॥ भवन रह्यो नहिं कोइ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। डफ बाँसुरी सुहावनी रँग भीजी ग्वालिनि॥ ताल मृदंगउपंगनैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। झाँझ झालरी किन्नरी रँगभीजी ग्वालिनि॥ आउझवरमुहचंगनैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। उतहि संग सब ग्वाल लिए रँग भीजी ग्वालिनि॥ सुंदरनंदकुमार नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। उत श्यामा नवयौवना रँग भीजी ग्वालिनि॥ अंबुजलोचन चारु नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। टसूके कुसुम निचोइकैरँग भीजी ग्वालिनि॥ भरें परस्पर आनि नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। चोवा चंदन अरगजा रँगभीजी ग्वालिनि॥ कुमकुम चंदन सानि नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। रत्नजटित पिचकारियाँ रँगभीजी ग्वालिनि॥ कर लिए गोकुलनाथ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। छिरकहिं मृगमद कुमकुमा रँगभीजी ग्वालिनि॥ जो राधेके साथ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। सुरंगपीतपट रँगिरह्योरँगभीजी ग्वालिनि॥ सुभग सांवरे अंग नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। नीलवसन भामिनिवनीरँगभीजी ग्वालिनि॥ कंचुकि कुसुम सुरंग नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। अरुण नुतनपल्लव धरे

रँगभीजी ग्वालिनि ॥ कूजित कोकिल हंस नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। नृत्य करत अलिकुल मिले रँगभीजी ग्वालिनि॥ अति आनंद अधीर नैनसलोन री रँगराची ग्वालिनि चढि विमान सुर देखहीं रँगभीजी ग्वालिनि। देहदशा बिसराइनैन सलोन री रँगराचीग्वालिनि॥ राधा रसिकरसज्ञ हो रँगभीजी ग्वालिनि। सूरदास बलि जाइ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि ॥ ५ ॥ राग गौरी ॥ खेलत हो हो हो हो होरी। अतिसुख प्रीति प्रगट भई उत हरि इतहिं राधिका गोरी। हो हो हो हो होरी बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ बिच बिच बाँसुरी ध्वनि थोरी ॥ १ ॥ गावत दैदै गारि परस्पर उत हरि इत वृषभानु किशोरी। मृगमद साखजवाद कुमकुमा केसरि मिलै मिलै मथि घोरी ॥ २ ॥ गोपी ग्वाल गुलाल उडावत मत्त फिरैं रतिपति मनो धौरी। भरति रंग रति नागरि राजति मानहु उमँगि बिलावल फोरी ॥ ३ ॥ छुटिगई लोकलाज कुलशंका गनत न गुरु गोपिनको कोरी। जैसे अपनेमें रमतेमें चोर भोर निरखत निशि चोरी ॥ ४ ॥ उन पट पीत किए रँगराते इन कंचुकी पीत रँग बोरी। रही न मन मर्याद अधिक रुचि सहचारि सकति गाँठि गहि जोरी ॥ ५ ॥ वरणि न जाइ वचनरचना रचि बहु छबि झकझोरा झकझोरी। सूरदास शारदा सरलमतिसो अवलोकि भूलि भई भोरी ॥ ६ ॥ ६ ॥ राग गूजरी ॥ ब्रजकी बीथिन बीथिन डोलत। मदगोपाल सखा सँग लीने हो हो हो लै बोलत ॥ ताल मृदंग बीन डफ बाँसुरी बाजत गावत गीत। पहिरे वसन अनेक बरन तनु नील अरुन सित पीत ॥ सुनि सब नारि निकसि ठाढी भई अपने अपने द्वार। नवसत साजे प्रफुलित आनन जनु कुमुदिनी कुमार ॥ चपल नैन अतिचतुर चारु तुम जनु फुलवारी लाई। देखतही नँदनंद परमसुख मिलत मधुप लौं धाई ॥ राखत गहि भुजबल चहुँदिशि जुरि अति रिस मुँह अकुलात। मानहु कमल कोश अलि अंतर भँवर भ्रमत वन प्रात ॥ छाँडति भरि भायो अपनो करि राजत अंग विभाग। मानहुउडि विचलेहैं अलि कुल आश्रित अंग पराग ॥ अंतर कछु न रह्यो तेहि अवसर अति आनंद प्रमाद। मानहु प्रेम समुद्र सूर सुख लै उपटित मर्याद ॥ ७ ॥ ऊँचोसो गोकुल नगर जहँ हरि खेलत होरी। चल सखि देखन जाहिं पिया अपनेकी चोरी ॥ बाजत ताल मृदंग और किन्नरकी जोरी। गावति दै दै गारि परस्पर भामिनि भोरी ॥ बूका सुरँग अबीर उडावत भरि भरि झोरी। इत गोपिनको झुंड उतहि हरि हलधर जोरी ॥ नवल छबीले लाल तनी चोलीकी तोरी। राधाचली रिसाइ ढीठ-सों खेलै को री। खेलतमें कैसो मान सुनहु वृषभानुकिशोरी। सूर सखी उर लाइ हँसति भुजगहि झकझोरी ॥ ८ ॥ राग पूरवी ॥ ऐसीको खेलै तोसों होरी। बारबार पिचकारी मारत तापर बाँह मरोरी ॥ नँदबाबाकी गऊ चरायो हमसों करो बरजोरी। छाकै छीनि खात ग्वालनकी करत रहे माखन दधि चोरी ॥ चोवा चंदन और अरगजा अबिर लिए भरि झोरी। उडत गुलाल लाल भए बादर केसरि भरीहैं कमोरी ॥ श्रीवृंदावनकी कुंजगलिनमें गावो मुरली राधा गोरी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको चिरजीवो यहजोरी ॥ ९ ॥ राग सारंग ॥ निकसि कुँवर खेलन चले रँगहोहो होरी। मोहन नंदकुमार लाल रँग हो हो होरी ॥ कंचन माट भराइकै रँग होहोहोरी। सौंधे भरी कमोरीलालरँग होहो होरी ॥ झाँझ ताल सुरमंडरे रँग होहो होरी। बाजत मधुर मृदंग लाल रँग होहो होरी ॥ तिनमें परम सुहावनी रँग हो हो होरी। महुवरि बाँसुरी चंग लाल रँग होहो होरी ॥ खेलतरँगीले लालजू रँग हो हो होरी। गए वृषभानुकीपौरि लाल रँग होहो होरी ॥ जेब्रज हुतीं किशोरी लाल रँगहोहोहोरी। ते सब आईंदौरिलाल रँग होहोहोरी ॥ सखियनसुख देखनकारने रंगहोहोहोरी। गांठि दुहुँनकीजोरि

लाल रँग होहो होरी ॥ जोपै फगुवा दियो न जाइ रँग होहो होरी ।श्रीराधाजूके लागो पांइलाल रँग होहो होरी॥यह सुख सबके मनबसोरँग होहो होरी। सूरदास बलि जाइ लाल रँगहोहोहोरी ॥ १० ॥ राग सारंग[1] ॥करलिए डफहि बजावे होहो सनाकखेलार होरीकी । संग सखा सब बनि बनि आवत छबि मोहन हलधर जोरीकी ॥१॥ तालमृदंग बजावत गावत भावत ध्वनि मुरली थोरीकी। लालगुलालसमूह उडावत फेंटकसेअबीर झोरीकी ॥खेलतफाग करतकौतूहलमत्त फिरैं मन्मथधोरीकी।बरनबरन शिर पाग चौतनी कछिकटि छबि चंदन खोरीकी ॥ २ ॥ उतहि सुनति वृषभानुसुता लई तरुनि बोलि सब दिन थोरीकी । नीलांबर कंचुकी सुरँगतनु अति राजति राधा गोरीकी ॥ मनु दामिनि घनमध्य रहति दुरि प्रगट हँसनि चितवनि भोरीकी। नखशिख सजि शृंगार ब्रजयुवती तनडँडियाकुसुमी बोरीकी ॥३॥पानभरे मुख चमकत चौका भाल दिये वेंदी रोरीकी । कनककलश कोटिक भरि लीन्हें भरि फूले रँगरँग घोरीकी॥युवतिवृंद ब्रजनारि संग लै जाइ गहनि ब्रजकी खोरीकी।घरघरते धुनि सुनि उठिधाई जे गुरुजनपुरजन चोरीकी ॥ ४ ॥ हाथन लै भरिभरि पिचकारी नानारंग सुमन तोरीकी॥ कोउ मारति कोउ दाँउ निहारति अरसपरस दौरा दौरीकी ॥ उतहि सखाकरजेरी लीन्हें गारीदेहिं सकुचतोरीकी।इतहिं सखी कर बांस लिए बिच मारु मची झोरा झोरीकी ॥ ५ ॥ पाछेतेललिताचंद्रावलि हरि पकरे भुजभरि कोरीकी । ब्रजयुवती देखतही धाई जहां तहां सब चहुँ ओरीकी ॥ इक पट पीतांबर गहि झटक्यो एक मुरली लई कर मोरीकी। इक मुखसों मुख जोरि रहति इक अंक भरति रतिपति ओरीकी॥६॥तब तुम चीरहरेयमुनातटसुधि बिसरे माखनचोरीकी। अबहमदाँवआपनोलैहैं पाँयपरो राधा गोरीकी॥ अपने अपने मन सुख कारण सब मिलि झकझोरा झोरीकी। नीलांबर पीतांबरसों लै गांठिदई कसिकै डोरीकी ॥ ७ ॥कनक कलश केशरि भरि ल्याई डारि दियो हरिपर डोरीकी । अति आनंद भरी ब्रजयुवती गावति गीत सबैहोरीकी॥अमर विमान चढेसुख देखत पुहुपवृष्टि जैध्वनि गोरीकी।सूरदास सोक्योंकरि वरणै छबिमोहन राधाजोरीकी॥८॥११॥ राग रागिनी श्रीहठी॥हरि सँग खेलन फागु चली । चोवा चंदन अगर अरगजाछिरकति नगर गली ॥ राती पीरी अँगिया पहिरे नूतन झूमक सारी । मुख तमोर नैनन भरि काजर देहिं भावती गारी ॥ ऋतुवसंत रतिआगम नायक यौबनभार भरी । देखन रूप मदनमोहनको नँदद्रुआर खरी ॥ कहि न जाइ गोकुलकी महिमा घर घर गोकुल माहीं । सूरदास सो क्योंकरि वरणै जो सुख तिहुँ पुर नाहीं ॥१२॥राग गौरी ॥ ठाढो हो ब्रजखोरी ढोटाकौनको।लटिहि लकुट त्रिभंगि एकपद मनो मन्मथ गौनको । मोर मुकुट कछनी कसे री पीतांबर कटि शोभ। नैन चलावैफेरिकैं री निरखि होत मन लोभ॥भौंहमरोरै मटकिकै री यमुना रोकत घाट। चितै मंद मुसुकायकैं री जियकरिलेय उचाट।हँसत दशन चमकायकै री चकचौंधीसी होति।बगपंगति नवजलदमैं री उर माला गजमोति ॥ कर पिचकारी रत्न जरित री तकि तकि छिरकत अंग।टेसूके कुसुम निचोयकै री अरु केसरिको रंग ॥फेंट गुलाल भराइकै री डारत नैनन ताकि। एते पर मन हरत है री कहा कहौं गति वाकि॥ पुनि हाहा करि मिलत है अरु नाना रंग बनाय । नंदसुवनके रूपपर री जनसूरदास बलिजाय१३राग श्रीहठी॥साँवरो ढोटाकोहैरीमाइ जाकेवारिजनैनविशाल।

१ श्यामोबाहुचतुष्टयेनसहितःपीतांबरस्तार्क्ष्यगः शार्ङ्गयोबिद्धातिबाणसहितंशंखंचचक्रंगदाम् ॥ वांमांगेरमणीयुतःप्रियतनः श्रीविष्णुवत्सवेदा सारंगोमघवान्वितैःसुरगणैःसंस्तूयमानोनरैः ॥ १ ॥ राग सारंग ॥

अधर धरे मुख मुरली बजावत गावत श्रीराग रसाल ॥ मंदमंद मुसकनि सरोजमुख शोभा वरणि न जाइ। बाँकी भौंहैं तिरछी चितवनि चितवत लियो चुराइ ॥ अति लोने सोनेसे कुंडल कौने रचे हो सँवारि । मनो काम किल फंद बनाए फंदे मीन ब्रजनारि॥ शिर पगिया बीरामुखसोहैं सरस रसीले बोल । अति आधीन भई ब्रजवनिता वश कीने बिनमोल ॥ कहा करौं देखे बिनुसजनी कल न परै पल प्रान। ग्वालन संग रंग भरयो भावत गावत आछी तान॥ताते और कौन हितु मेरे सखिचलि नेकुदिखाय।मदनमोहनजूकी चरणरेणुपरसूरदासबलिजाय ॥१४॥ राग नटनारायण ॥ खेलत श्याम फाग ग्वालन संग ।एक गावत एक नाचत एक करत बहु रंग॥बीनमुरजउपंगमुरली झांझ झालरि ताल।पढत होरी बोलि गारीनिरखिकैब्रजबाल॥ कनककलशनघोरिकेसरिकरलिये ब्रजनारि । जबहिं आवत देखि तरुनिन भजत दै किलकारि॥ दुरिरही इक खोरि ललिता उतते आवत श्याम । धरे भरि अँकवारि औचक धाय आय ब्रजवाम ॥ बहुत ढीठो दैरहेहोजानवी अब आजु । राधिका दुरि हँसति ठाढी निरखि पियमुखलाजु॥ लियो काहूमुरलिकरतेकोउगह्यो पटपीत ।गूथि बेनी मांग पारे लोचन आँजि अनीति॥ गए करते छटकि मोहन नारि सब पछिताति । शीश ध्वनि कर मीजि बोलति भली लैगए भांति ॥ दाँवहमनहिंलेनपायोवसन लेती लाल । सूर प्रभु कहां जाउगे अब हम परी यहख्याल॥१५॥राग काफी॥मोहनगएआजुतमजाहु दाँव हम लेहिंगीहो।लालन हमहिं करे जे हाल उहै फल देहिंगीहो॥आजुहिदाँवआपनोलेतीभले गएहौ भागि। हाहा करते पाँइन परते लेहु पितांबर मांगि ॥ बेनी छोरत हँसत सखासँग कहत लेहु पट जाइ । सौंह करतहौ नंदबबाकी अपनी विदति कराइ ॥ जो मैं लेहुँ पितांबरअबहींकहा देहुगे मोहिं ।इत उत युवती बितवन लागीं रहीं परस्पर जोहि ॥एक सखा हरि त्रियारूप करि पठै दियो तिन पास। गयो तहां मिलि संग त्रियनके हँसति देखि पटवास ॥ मोहि देहु राखौं दुरायके श्यामहिं जिनि लै देहु । लियो दुराय गोदमें राख्यो दाँव आपनो लेहु॥पीतांबर जिनि देहु श्यामको यह कहि चमक्यो ग्वाल।सूर श्याम पट फेरत करसों चकितनिरखिब्रजबाल॥१६॥ चकित भईंहरिकीचतुराई।हमहिंछलीइनकुँवर कन्हाई॥ कहा ठगोरी देखत लाई। धिरवतिहैकहि भलीबनाई॥एक सखी हलधरवपु काछयो। चली नीलपट ओढेआछ्यो॥ श्याममिलनताकोतहां आए।अजग्र जानि चलेअतुराए॥मिले साँकरी ब्रजकी खोरी। ढूकीरहींजहाँतहँ गोरी ॥ गह्योधाइ भुज दोउ लपटानी। दौरि परीं सब सखी सयानीं॥निरखिनिरखि तरुनी मुसकानी॥गारि नारि सब देहिं सुहानी । नंदमहरलौं जाति बखानी॥सूर श्याम उचरयो मुखबानी। गईं लिवाइ जहँ राधारानी ॥१७॥ राग धनाश्रीमला ॥ छैलछबीले मोहना जाके घुँघरारेकेशरी। मोर मुकुट कुंडल लसे करिलीन्हों नटवर भेष री॥राखेभौंह मरोरिकैरी सुंदर नैनविशाल।निरखि हँसनिमुसकानिकी री अतिहि भई बेहाल ॥ कीर लजावनि नासिका अधर बिंबते लाल। दशनचमकदामिनिहूतेरी श्यामहृदय वनमाल॥ चिबुक चित्तको हरनहै री राजत ललित कपोल । मारग गहि ठाढो रहै री अरुबोलतमीठे बोल॥ चंदनखौरि विराजै री श्यामल भुजा सुचारु । ग्वालसखासबसंग लिए री वह करत गुलालन मारु ॥ इक भाजत इक भरतहै री कुसुमवरन रँग वोरि।सौंधेकीच मची भली री खेलत ब्रजकीखोरि॥ सुनत चलींसबधाइकैरीवे देखननंदकुमार। फागसांझसी ह्वैरही री उडिउडि गगन अपार ॥ मिलि तरुनी तहाँ जाइकै री जहँ विहरत फागु गोपाल। सूर श्याम सुख देखिकै री बिसरयो तनु तेहिकाल॥१८॥ राग गौरी ॥ घरघरतेसुनिगोपीहरिमुख

देखन आई । निरखि श्याम ब्रजनारि हरषि सब निकट बुलाई ॥ सुनति नारि मुसकाय बांस लीन्हें कर धाई । ग्वालन जेरी हाथ गारि दै त्रिभन सोहाई ॥ शिलानाम ग्वालिनी अचानक गहे कन्हाई । सखिन बोलावति टेरि दौरि आवहु री माई ॥ एक सुनत गई धाइ बीस तीसक तहाँ आई । टूटिपरीं चहुँपास घेरि लीन्हों बलभाई ॥ इक पट लीन्हों छीनि मुरलिआ लई छिंडाई । लोचन काजर आँजि भाँतिसों गारी गाई ॥ जबहिं श्याम अकुलात गहति गाढे उर लाई ॥ चंद्रावलिसों कह्यो गूँथि कच सौंह दिवाई । हाहा करिए लाल कुँवरिके पाँय छुआई । यह सुख देखत नैन सूरजन बलिबलि जाई ॥१९ ॥ राग काफी॥ ललना प्रगट भए गुण आजु त्रिभंगी लाल ऐसे होजू । रोकत घाट बाट गृह बनहूं निबहति नहिं कोउ नारि । भली नहीं यह करत सांवरे हम दैहैं अब गारि ॥ फागुनमें तौ लखत न कोऊ फबति अचगरी भारि। दिन दश गए दिना दश औरे लेहु साध सब सारि॥ पिचकारी मोको जिन छिरको झरकिउठी मुसकाइ । सासु ननद मोको घर बैरिनि तिनहिं कहौं कहा जाइ ॥ हाहाकहि कहि नंददोहाई कहा परी यह बानि । तासों भिरहु तुमहिं जो लायक इह हेरनि मुसकानि ॥ अनलायक हमहैं की तुम हौ कहौ न बात उघारि। तुमहूं नवल नवल हमहूं हैं बड़ी चतुर हौग्वारि॥यहकहिश्याम हँसे बाला हँसी मनहीमन दोउ जानी। सूरदास प्रभु गुणन भरे हौ भरन देहु अब पानी ॥२०॥ राग काफी ॥अरी माई मेरो मन हरि लियो नंदके ढुटोना। चितवनमें वाकेकछु टोना॥निरखत सुंदर अंग सलोना । ऐसी छबि कहूं भई न होना ॥ कालिह रहे यमुनातट जौना । देख्यो खोरि सांकरी तौना॥ बोलत नहीं रहत वह मौना । दधि लै छीनि खात रह्यो दौना ॥ घरघर माखन चोरत जौना। बाटन घाटन देत है घौना॥ खेलत फाग ग्वाल सँग छौना । मुरलि बजाय बिसरावत भौना ॥ मो देखत अबहीं कियो गौना । नटवर अँग सुभ सजे सजौना ॥ त्रिभुवनमें वश कियो न कौना । सूर नंदसुत मदनलजौना ॥ २१॥ माई री मोहन मूरति सांवरो नँदनंदन जेहि नावँरो। अबहिं गए मेरे द्वारह्वै रहत कहत ब्रजगाँवरो ॥ मैं यमुना जल भरि घर आवति मोहिं करि लागो तावरो । ग्वालसखासँगलीन्हेंडोलतकरतआपनोभावरो ॥ यशुमतिकोसुतमहरढुटौना खेलत फागु सुहागरो । सूर श्याम मुरलीध्वनि सुनरी चित न रहतकहुँ ठाँवरो॥२२॥ अरी माई साँवरो सलोनो अति नंदकुँवर री ॥ चंदनकी खौरि भाल भौंह हैं जँवर री ॥ कुंतल कुटिल छबि राजत झँवरे री । लोचन चपल तारे रुचिर भँवरे री ॥ मकर कुंडल गंडझलमल करै री । मनहु मुकुर बिच रवि छबि वरै री ॥ नासिका परम लोनी बिंबाधर तरै री। तहां धरै मुरली सो नाना रंग झरै री॥ यमुनाके तीर ग्वाल संगहि विहरै री। अबहीं मैं देखिआई बंसीवट तरे री ॥ पिचकारी कर लिएधाइ अंगधरै री।नैनन अबीर मारैकाहूसों न डरै री॥बातनहरतमन रांगह्वैढरै री। सूरजको प्रभु आली चितते न टरै री॥२३॥नँदनंदन आली मोहिकीन्हींबावरी। कहा करौं चित क्योंहू रहत न ठाँव री ॥विहरत हरि जहां तहां तुहू आवरी । निशिहू वासर आली मोको उहै चावरी ॥ यमुना जल भरन जाइ इहै करि दाँव री । गुरुजन पुरजनसों और न उपाव री ॥ काफी रागिनी मुख गावै मुरली बजाइरी । ध्वनिसुनितनुभूलीअतिही सुहाइ री ।।चंदनकपूर चूरि फेटन भराइ री । सौंध भरि पिचकारी मारतहै धाइ री ॥ आतुर ह्वै चलि औरजाइकिनिजाइरी। चित न रहत ठौर और न सोहाइ री ॥ मिलि प्रभु सूरजको सकुच गँवाइ री । लाज डारि गारि खाइ कुल बिसराइ री॥२४॥ राग कल्याण खेलतहरिग्वालसंगफागुरंगभारि।एकमारतएकनारत

एक भाजत एक गाजत एक धावत एक पावत एक आवत मारि ॥ एक हर्षत एक छरखत एक करत घातहिको लोचन गुलाल डारि सौंधे ढरकावै। एक फिरत संगसंग एक एक न्यारे २ विहरत टरतदाँव दीबेको वै ज्यों नहिं पावै॥एकगावत एकभावत एकनाचत एकराचत एककरत मृदंग गति जति उपजावै। एक वीणा एक किन्नर एक मुरली एक उपंग एक तुंमर एक रबाब भांति सौं दुरावै ॥ एक पटह एक गोमुख एक आवझ एक झालरी एक अमृतकुंडली एक एक डफ एक कर धारे। सूरज प्रभु बल मोहन संग सखा बहु गोहन खेलत वृषभानुपौरि लिए जात टारे ॥ २५ ॥ राग सावेरी ॥ सुनतहि वृषभानुसुता युवति सब बोलाई। आए बलराम श्याम आई तजि काम वाम धामते आतुर सातनव बनाई ॥ हरषत सब ग्वालबाल अरसपरस करत ख्याल एक मारत एक भाजत राजतवह जोरी।उततेनिकसी कुमारि संग लिए विपुलनारि कोउकोउ नवयौवन भरि कोउकोउ दिन थोरी ॥ इतउत मुख दरश भए पिय पूरण कामकिये मानो शशि उदय भयो आनंदित चकोरी। उत जेरी धरे ग्वाल बाँसन इत परी मार यह छबि नहिं वारपार सोर झोर झोरी॥उत होरीपढत ग्वार इत गारी गावति ए नन्दनाहिंजाए तुम महरि गुणनभारी। कुलटी उनते कोहै नन्दादिक मन मोहै बाबा वृषभानुकी वै सूर सुनहुप्यारी ॥२६॥ राग काफी ॥ श्रीराधा मोहन रंगभरेहो खेल मच्यो ब्रजखोरी। नागरिसंगनारिगणसोहैं श्याम ग्वाल सँग जोरी ॥ हरिलिए हाथ कनकपिचकारी सुरंग कुमकुमा घोरी।उतहि माट कंचन रँग भरि लै आईं तिरिया जोरी॥ आतुर ह्वै धाईं उत नागरि इत बिचले सब ग्वाल। घेरि लईं गहि खोरि साँकरी पकरे मदनगोपाल॥ गह्यो धाइ चंद्रावलि हँसिके कह्यो भलेहो लाल। जिनि बल करौ रहो नेक ठाढ जुरिआईं ब्रजबाल॥ आईं हँसति कहति हरि एई बहुत करतहैं गाल। क्यों जू खबरि कहौ यह कीन्ही करत परस्पर ख्याल ॥ काहू तुरत आइ मुख चूम्यो करसों छुयो कपोल। कोउ काजर कोउ वदन माँडती हर्षहिं करहिं कलोल ॥ कोउमुरली लै लगीं बजावन मनभावनमुख हेरि। किनहूँ लियो छोरि पट कटिते वारति तनपर फेरि ॥ श्रवणन लागि कहति कोउ बातैं बसन हरे तेइ आपु। कालि कह्यो करिहौ कहा मेरो प्रगटभयोसो पापु ॥ कोउ नयननसों नयनजोरिकै कहति न मोतन चाहो।अबहीं तुमअकुलातकहाहो जानहुगे मनलाहो ॥ घेरिरहीं सरघाकी नाहीं करति सबै मनलाहु। इक बूझति इक चिबुक उठावति वश पाए हरि नाहु ॥ पीतांबर मुरली लई तबहीं युवती स्वांग बनाइ। देखत सखा दूरि भए ठाढे निरखत श्याम लजाइ॥ नखछत छाप बनाय पठाए जानि मानि गुण येहु। सूर श्याम हमको जिनि बिसरौ चिह्न इहै तुम लेहु ॥ २७ ॥ राग गुंडमलार॥ खेलत रंग रह्यो एकओर ब्रजसुंदरि एक ओर मोहन। बरनबरन ग्वाल बने महर नंद गोपजने एक गावत एकनृत्यतएक रहत गोहन ॥ बजावत मृदंग ताल अरसपरस करि विहार शोभाको बरनि पार एकएक दै सौंहन। कनकलकुट करन लिए धाए सब हरषि हिए एक ब्रजललना सूरज प्रभु मनमन मिलि भौंहन॥ २८ ॥ राग सारंग ॥ होहोहोहोहोरीकरत फिरतब्रजखोरी।मोहन हलधर जोरीसुवननंदकोरी॥ ग्वाल सखा सँग ढोरी लिए अबीर करि झोरी ॥ मारि भजत जेहि जोरी दावँलेत सोदौरी। एकगावतिहैं धमारी एक एकन देति गोरिगारी। दई सबन लाज डारिबाल पुरुष तोरी॥सौंधे अरगजाकीच मची जहां तहां गलिनोरी। बिच एक एक ऊंच नीच करत रंग झोरी॥ एक उघटत एक नृत्यत एक तान लै तोरी। उपजाइ एक दै करताल हरषि गावतिहैं गोरी ॥ सूरदास प्रभुको सुख

निरखि हरषि होरी । सुरललना सुरनसहित विथकति भई बौरी ॥ २९ ॥ रागनन्दन ॥ वृंदावन परम सोहावनो राधे खेलैं फागु बारे कन्हैया । मोहन बँसिया बजावे भलानदीयमुनाकेतीरबारे कन्हैया ॥ श्रवण सुनत सब धावैंहो झोरिन भरे अबीर बारेकन्हैया । उरमोतिनकीमाला री पहिरे रातुल चीर बारे कन्हैया ॥ ब्रजवधू सब सुंदरि श्रवणन झनकै बीर बारे कन्हैया । चोवा चंदन अरगजा छिरकैं सकल शरीर बारे कन्हैया ॥ एकतो राधा सुंदरी दुसरे परी अबीर बारे कन्हैया। सांकरि खोरिया ब्रजकी हो भई चोवाकी हील बारे कन्हैया ॥ वृंदावनके कुंजन भई दोउ दिश भीर बारे कन्हैया ॥ यहि बिधि होरी खेलहीं गावै निशिदिन सूर बारे कन्हैया ॥ ३० ॥ राग धमार ॥ प्यारी नँदनंदन वृषभानुकुँवरिसों खेळत रंग रह्यो । उडत गुलाल कुमकुमा मानो अंबर आली छाइ रह्यो ॥ अलिसुत युग वरण्यो बंकट छबि जलसुत अधर लह्यो । खंजन मीनमुक्ताहलराजत मनो रविरथ खैंचि रह्यो ॥ हँसि मुसकात सहज स्वारथको रमनिहि रूप थह्यो। दारौं दरनि अरुन अति शोभा मनु शशि ग्रहण गह्यो ॥ गोपी ग्वाल सिमटि सबसुंदरि सज्योशृंगार नह्यो। वरषत कंचन नीर कुसुमजल मनो घन गरज रह्यो ॥ सखि श्यामा श्याम सबै सुखदाई सुखसागर सगरो । सूरदास प्रभु मिल्यो हो कृपा करि जिनि हृदये बिसरो ॥ ३१ ॥ राग सारंग ॥ होहो होरी खेलैं रंगसों ब्रजराजकुँवर वृषभानुपौरी । सुनि मुरली डफ ताल वेणु चढि अटा अटारी दौरि दौरी ॥ जो प्यारी न्यारी छबि सों देखति जलधरको छबि अपार। घनघटा अटा मंद छटकै दै उदित चंद वादर विदार ॥ सो प्यारेकी हितू हती ते झकझोरो खेटक झक झांकवार । भौंहैं मंद भेद भाव हरषै वरषै रंग अपार ॥ इक प्यारी चंदन घसि छिरकै एक लिए लाल गुलाल । इक प्यारी केसरि छिरकतिहै भनत सूर चलि गति मराल ॥ ३२ ॥ राग बिलावल ॥ खेलत मोहन फागु भरे रँग ॥ डोलत सखा समूह लिए सँग ॥ १ ॥ नंदरायसों विनती कीनी । श्याम एककी आज्ञा लीनी ॥ अगणित तब पिचकारी गढाये। कंचन रतनजरापै पाये ॥ २ ॥ मन सहसक केसरि लैदीनो। अमित सुगंध अरगजा लीनो ॥ गोपिन बैठि औसेरकीनो। गाइ चरावनको सँग दीनो ॥ ३ ॥ तब अनंत सखा गन साजे । सकल सँवारि संग लिए बाजे ॥ घरघर ध्वजा पताका वानी । तोरन वारन वासरठानी ॥ ४ ॥ अरन पचासक अबिर सँवारे। बीथिन छिरकि तहां विस्तारे ॥ मोहनचरन धरत तहँ आवैं ॥ द्वारे जुरि युवती मिलिगावैं ॥ ५ ॥ निरखि भरनको सब मिलि धावैं । मोहन इतते सखा सिखावैं ॥ नाहिं गात वस्तर नहिं राखैं। भारिनीके करिमुखकछु भाषैं ॥ ६ ॥ बैठे जहां गोप सब राजैं। आवत देखि सबै उठि भाजैं ॥ मोहनपै कोउ जाननपावै ॥ मद्द मत्त गजवर ज्यों धावै ॥ ७ ॥ सब मिलि बोलत होहोहोरी । छिरकत चंदन बंदन गोरी ॥ एक ग्वोस गोपी जुरि आय। घरहीमें घेरे हरि जाय ॥ ८ ॥ इक भीतर इकरही दुआरे । एक जाइलागी पिछवारे ॥ एक इहां चहुँदिशिते घेरे । एक पैठि मंदिरमें हेरे ॥ ९ ॥ एक लिए कर कमल विराजै । परसै किरणि कोटि शशि भ्राजै ॥ एकलिए शिरसौंधे गागरि । फेट अबीर भरे बहु नागरि ॥ १० ॥ सारी सुभग काछ सब दिये । पाटंबर गाती सब हिये ॥ एकन जाइ दुरे हरि पाये। सैन देइ राधिका बताये ॥ ११ ॥ करति कुलाहल हरि गहि लाई । फूली ज्यों निधनी धन पाई ॥ एक गहे कर दोऊ हरिके। हलधर देखि उतहिको सरके ॥ १२ ॥ केसरि अरु गुलाल मुख लायो । पूरनचंद्र उदयकरि आयो ॥ पीत अरुण रँगनाये शिरते । चली धातु मनोसांवरगिरिते ॥ १३ ॥ एक भरे पिचकारी ताके । देत श्रवणमें नंदललाके ॥ ब्रजजन सकल सुधारस पीते । ऐसी भाँति

पहर दुइ बीते ॥१४॥ देखी निकट राधिका प्यारी। तब हरि लीला और बिचारी॥ तबहरिजाइ दुरे उपवनमें। लगी नायका कुंज सदनमें ॥१५॥ करत कुलाहल ब्रजकी नारी। देखत चढे कदंब विहारी॥ कबहुँक मुरली मधुर बजावैं। श्रवण सुनत जितहीतित धावैं ॥ १६ ॥ जब हरि जानि निकटही आई। डरते तब हरि रहे लुकाई॥ कुंज कुंज कोकिल ज्यों टेरैं। श्रवणनाद भृंगी त्यों हेरैं॥१७॥ कबहूं फिरि आपुसमें खेलति। सकल सुगंध परस्पर मेलति ॥ झुकीं वचन कहती बिनपाये। कहति कछू राधिका लगाए॥१८॥ करनि लालवर वनु भै जैसे। जाइ डोलति वन वनमें तैसे ॥ तब हरि भेष धरयो युवतीको। सुंदर परम भावतो जीको॥ ॥१९ सारी कंचुकि केसरि टीको। करि शृंगार सब फूलनहीको ॥ कर राजति कंदुक नौलासी। छुटि दामिनिसी ईषद हाँसी ॥ २० ॥ सकल भूमि वन शोभा पाइ। सुंदरता उमँगी न समाइ॥ता शोभा ब्रजनारी सोही। रहीं ठगीसी रूप विमोही॥२१॥एक कहति हरिकैसे नैना। एक कहति वैसेई बैना॥ बूझति एक कौनकी नारी। बिधिकी सृष्टि नहीं तू न्यारी ॥२२॥ तब हरि कहत सुनहु ब्रजबाला। बोलति हँसि हँसि वचन रसाला॥ हम तुम मिलि खेलहिंसबजानति। राधाआली मोहिंपहिचानति ॥२३॥हौंहूँसंगतिहारेखेली। जानति होहु अजान सहेली॥ अबहीं कीरति महरि पठाई। राधा इकली खेलन आई ॥ २४ ॥ अब एक बात कहौं हौं जीकी। हौं जानति हौं हारेही पीकी॥ सघन विपिन ऐसे कहँ पावहु। सब मिलि एक संग जिनि धावहु॥२५॥सुनत शोर कत रहिहै नेरे। कोटि करौ पावहु नहिं हेरे॥ ह्वै ह्वै न्यारीन्यारी डोलहु। तनक मूंदि कर मुख जिनि बोलहु॥२६॥ जाइ अचानकही गहि ल्यावहु। सखी एक ज्योंत्यों करि पावहु ॥ राधाको भुज गहिकै लीनी। ऐसे सबका द्वैद्वै कीनी ॥२७॥ मौन किए प्रवेश कियो बनमें। हरिको रूप राखि निजमनमें॥ और सखी खोजति सब कुंजनि। राधा हरि विहरत सुखपुंजनि ॥ २८ ॥ राधा आवति देखि अकेली। फिरीं बहुरि सब बैठि सकेली॥ तब बूझति वृषभानुदुलारी। सखी संगकी कहाँ बिसारी॥ २९ ॥ अति गह्वरमें आइ परी हम। सूर्य न सूझत भयो निशातम॥ ता ठाहरते हौं भई न्यारी ॥ फिरिआई डरपी हौं भारी॥३०॥पुहुपवाटिका हौं फिरिआई। मुकुट पीठिते हो इतआई॥ता ठाहर जो ठाढे पावहिं। चलो जाइधाइ गहि लावहिं ॥३१॥ नारीबात सुनतहीधाई। घेरिलिएकोकिलसुरगाई॥जाहुकहाँ जुअकेले पाये। सकल सुगंध शीशते नाये॥३२॥एक रूप माधुरीनिहारहिं। एक कटाक्ष नयनशर मारहिं॥ एक सुमन लै ग्रथितमाला। शोभित सुंदर हृदय विशाला॥३३॥ खेलत आए पुलिन सुहाए। बैठे तहँ मंडली बनाए॥ मोहन नव शशि मध्य बिराजै। देखि सूर कोटिक छबि छाजै ॥३४॥ राग काफी॥ खेलत फागु कुँवर गिरिधारी। अग्रजअनुज सुबाहु श्रीदामा ग्वाल बाल सब सखा अनुसारी॥इत नागरि निकसीं घरघरते दे आगे वृषभानुदुलारी। नवसत सजि ब्रजराज द्वार मिलि प्रफुलित बदन भीर भई भारी॥ दुंदुभि ढोल पखावज बाजत डफ मुरली रुचिकारी। मारत बाँस लिए उन्नत कर भाजत गोप प्रियजनिसों हारी॥ एक गोप एक गोपी कर गहि मिलिगए हलधरसों भुजचारी। मिटि गई लाज सम्हार न कुचपट बहुत सुगंध दियो शिरढारी॥ बाँह उँचाइ कहत हो हो हो लै लै नाम देत प्रभु गारी।

इतहि राधिका निकसि यूथते सन्मुख पिय छाँडत पिचकारी ॥ इक गोपी गोपाल पकरि कर चली आपने मेर उसारी। आँजति आँखि मनावति फगुवाहँसति हँसावति दै कर तारी ॥ सुर विमान नभ कौतुक भूले कोटि मनोज जाइ बलिहारी । सूरदास आनंदसिंधुमें मगन भए व्रजके नर नारी ॥३५॥ राग काफी ॥नँदनंदन वृषभानुकिशोरी राधा मोहन खेलत होरी।श्रीवृंदावन अतिहि उजागर बरनबरन नवदंपति भोरी॥ एकन करहैं अगरकुमकुमा एकनकर केसरिलैघोरी॥एकअर्थसों भाव दिखावति नाचति तरुनि बाल वृध भोरी ॥ श्यामाउतहि सकल व्रजवनिता इतहिश्यामरस रूपलह्योरी। कंचनकी पिचकारी छूटति छिरकति ज्यों सचुपावें गोरी॥अतिहि ग्वाल दधि गोरस माते गारी देत कहो न करोरी। करत दुहाई नंदराइकी लै जु गयो कलबल छल जोरी ॥ झुंडनि जोरि रही चंद्रावलि गोकुलमें कछु खेल मच्यो री। सूरदास प्रभु फगुवा दीजे चिरजीवो राधावर जोरी॥३६॥राग श्रीहठी॥श्यामा परवश परी हो बिकाय मोहनके खेलत रस रह्योहो । खेलन चले करत अति तरकै मारत पीक पराइ। पेलि चलीं यौवन मदमाती अधरसुधा रस प्याइ। इत लिए कनक लकुटिया नागरि उत जेरी धरे ग्वार। इत हैं रंगरँगीली राधा उत श्रीनंदकुमार ॥ १ ॥ खेलनमें रिस ना करि नागरिश्यामहिं लागी चोट। मोहन है अति माधुरि मूरति राखिये अंचल ओट ॥ मारि डगै जब फिरि चली सुंदरि बेनी तुरे सुअंग । मनहु चंदके वदनसुधाको उडि उडि लगत भुअंग ॥ २ ॥रुंज मुरज डफ झाँझ झालरी यंत्र पखावज तार । मदन भेरि अरु राइगिरी गिरि सुरमंडल झनकार॥एक जु आई आन गाँवते सुंदरि परम सुजान । यह ढोटा धौं आहि कौनको मारत मनसिज बान ॥ ३ ॥ यमुनाकूल मूल वंसीवट गावत गोप धमारि। लैलै नाम गाउँ बरसानो देत दिवावत गारि॥खेलि फागु मिलिकै मनमोहन फगुवादियो मँगाय। हरषित भईं सकल व्रजवनिता सूरदास बलिजाइ ॥४॥३७॥राग नटनारायण॥ हो हो हो हो लैलै बोलैं। गोरस केरा माते डोलैं॥व्रजके लरिकनि सँग लिए डोलैं।वरवरकेरी फरके खोलैं॥गोपीग्वालमिले इक मारी । बचत नहीं बिन दीन गारी॥आनिअचानकअँखियांमीचैं। चंदन बंदनऊपरसीचैं ॥ जो कोइ जाइ रहै घर बैसी । करि बरिआइ ततांऊ पैसी॥हाथन लिए कनक पिचकारी । तकितकि छिरकत मोहन प्यारी ॥ कुमकुम कीच मची अति भारी । उडत अबीरन रँगी अटारी ॥ अति आनंद भरे सब गावें । नाना गति कौतुक उपजावें॥ मोहन गहि आन मिलि धाय । फगुवा हमको देहु मँगाय ॥ भागत कुसुम हार उर टूटे। पीतांबर मोहन के छूटे ॥ शोभा सिंधु बढ्यो अति भारी । छविपर कोटि काम बलिहारी ॥ सूरदास प्रभु करि रस होरी। बरणों कहँलगि मोमतिथोरी॥३८॥ राग श्रीहठी॥नागरि राधापै मोहन लेआयहो ।लोचन आंजि भाल बेंदीके पुनिपुनि पाँइ परायहो॥बेनीगूँथिमाँगशिरपारघोवधूवधू कहि गाइहो । प्यारी हँसति देखि मोहनमुख युवती बने बनाइहो ॥ श्यामअंग कुसुमीनईसारी अपने कर पहिरायहो॥कोउ भुज गहति कहति कछु कोऊ कोउ गहि चिबुक उठाइहो॥कोउ कपोल छुइ कहति लाल अति कोउ मुख मुखहि मिलाइहो।एक अधर गहि सुभग अँगुरिअन बोलत नहीं कन्हाइहो ॥ नीलांबर गहि खूँटचूनरीहँसिहँसिगाँठिजुराइहो॥युवतीहँसनिदेतिकरतारीभयोश्याम मनभायहो ॥ कनककलश अरगजा घोरिकै हरिके शिरढरकायहो॥श्रीवृंदावनअद्भुतहोरीकहत कही नहिं जाइहो॥नंदसुनत हँसि महरि पठाई यशुमति धाई आइहो।पटमें बाँध्यो श्यामछुडायोसूरदासबलिजायहो३९॥राग बिलावल॥सौंधेकीउठतझकोरमोहनरंगभरे।चोवाचंदनअगरकुमकुमसौंधे

१ आलिंग यस्य वक्षः प्रमदशुभवनं कुंकुमोद्भूतरागैरारते मौळौ किरीटं मणिगुणरचिते कुण्डले कर्णयोः स्तः॥ गौरांगः शुक्लवासाः कमलकरतले ताळतूर्य द्विधायं धृधृधीधीति युग्मान् सुरजभववरः पातु वेलावलोयम्॥ राग बिलावल।

माठ भरे ॥ रतनजडित पिचकारी कर गहे बाल खरे।भरि पिचकारी प्रेमसों डारी सोमेरेप्राणहरे॥ सब सखियन मिलि मारग रोक्यो जब मोहन पकरे । अंजन आँजिदियो आंखिनमें हाहा करि उबरे ॥ फगुवाबहुतमँगाइसाँवरे करजोरे अरजकरे। धनिधनि भागसूरप्रभुताकेजाकेसँगविहरे॥४०॥ राग राड़ी टोडी॥ग्वाल हँसे मुख हेरिकै अति बने कन्हाई॥हलधरको लिएटेरि आजुअतिबनेकन्हाई। होहो करिकरि कहतहैं अतिबने कन्हाई। रहे चहूँघां हेरि आजु अति बने कन्हाई॥ ऐसेहि चलिए नंदपै अति बने कन्हाई॥ बलकी सौंह दिवाइ आजु अति बने कन्हाई॥भुजागहे तहांलैगई अति बने कन्हाई ॥ वह छबि वरनि न जाइ आजु अति बने कन्हाई ॥ इत युवती मन हरतिहैं अति बने कन्हाई॥ उतहि चले कै भोर आजु अति बने कन्हाई ॥ और सखी आईं तहां अतिबनेकन्हाई॥ करिकरि नयन चकोर आजु अति बने कन्हाई ॥ महर हँसे छबि देखिकै अति बने कन्हाई॥सुनि जननी तहँ आइ आजु अति बने कन्हाई ॥ हँसि लीन्हों उर लाइकै अति बनेकन्हाई ॥ आनँदउर न समाय आजु अतिबने कन्हाई॥ कछुक खिझी कछु हँसि कह्यो अति बने कन्हाई॥ किन यह कीन्हों हाल आजु अति बने कन्हाई ॥ लेति बलैया वारिकै अति बने कन्हाई॥ ए ऐसियब्रजबाल आजु अति बने कन्हाई ॥ रंगरंग पहिरावनि दई अति बने कन्हाई॥ युवतिन महर बुलाय आजु अति बने कन्हाई ॥यह सुख प्रभुको देखिकै अति बने कन्हाई ॥ सूरदास बलि जाइ आजु अति बने कन्हाई॥ ४१ ॥राग कल्याण॥ ब्रजराज लँडतो गायहो मन मोहन जाको नाउँ । खेलत फाग सुहावनी रंग भीजि रह्यो सब गाउँ॥ ताल पखावज बाजहीहो डफ सहनाई भेरे। श्रवण सुनति सब सुंदरी वै झुंडन आयहो घेरे॥ इतहि गोप सब गजहीं हो उत सब गोकुलनारि।अति मीठी मनभावती हो देहिं परस्पर गारि ॥ चोवा चंदन छिरकहीं हो उडत अबीर गुलाल। मुदित परस्पर खेलहीं हो हो हो बोलत ग्वाल ॥ सब गोपिन मिलि हलधर पकरे छाँडे पाँइ लगाइ। दाऊ आजु भले बने जू आए आँखि अँजाइ ॥ बहुरि सिमटि ब्रजसुंदरी मिलि पकरे गोकुलनाथ । नव कुमकम मुख माँडिकै रचि बेनी गुँथी हो माथ॥ तब नंदरानी बीचकियो बहु मेवादियेमँगाय । पटभूषण पहिराइसबनकोनिरखिसूर बलि जाय॥४२॥ ॥राग गौरी॥ग्वालिनि जोबनगर्व गहेली। राधेके सँग कदम सहेली ॥ १॥ कुमकुम उबटि कनक तनु गोरी।अंग सुगंध चढाय किशोरी ॥ दक्षिण चीर तिपा को लहँगा।पहिरि विविध पट मोलन महँगा॥२॥कबरी कुसुम मांग मोतिअन मनु।केसरि आड लिलाट भ्रुकुटि धनु॥ कज्जल रेख नैन अनिआरे। खंजन मीन मधुप मृग हारे ॥३॥ श्रवणन कुंडल रविसम ज्योती । नकबेसरि लटकैं गजमोती ॥ दशन अनार अधर बिंब जानो । चिबुक चारु मूँद्यो मधु मानो ॥ ४ ॥ कंठ कपोत मुक्तावलि हार।जनु युग गिरि बिच सुरसरिधार॥ कुच चकवामुख शशि भ्रम भूलो। बैठे विधुरि दुहूँअनुकूले ॥५॥कर कंकण चूरो गजदंती । नख मणि माणिक भेदति दंती ॥ नाभी ह्रद तनु हाटकबरनी। कटि मृगराज नितंबिनि तरनी ॥ ६ ॥ कदली जंघ चरण कल नूपुर।गवन मराल करत धरणीपर॥ भूषण अंग सेज सत नौरी।गावति फागु नंदकी पौरी ॥७॥

१ वीणा वामकराग्रकेण दधती ताळी तथा दक्षिणे मुक्ताहारललाटमध्यतिलकं नेत्रालये कज्जलम् ॥ क्षेपं चन्दनकर्दमेन रचितं चित्रांबरं नूपुरी तांबूलं करमोहिनी च मनसा तोडी च मुक्तावली ॥ राग राड़ी टोडी।

२ मुक्तारत्नसुवर्णवज्ररचिते सिंहासने संस्थिते छत्रं शोभितमस्तके परिजनैः संवीज्यते चामरैः॥ताम्बूलंवदने सुगंधितवपुः कंठेषु मुक्तावली कल्याणो विशदांशुकः कमलदकल्याणदो भूभुजाम् ॥ राग कल्याण ।

सुनि सुंदर वर बाहिर आए। हलधर ग्वाल गोपाल बोलाए ॥ इकतन ग्वाल एकतन नारी। खेल मच्यो व्रजके बिच भारी ॥ ८ ॥ कुमकुम चंदन अरगजा घोरी । हाथन पिचकारी लै दौरी ॥ गोपी गोप भए झकझोरे । अंचल गाँठि परस्पर जोरे ॥ ९ ॥ उडतगुलाल अरुणभए अंबर। कुमकुम कीच मची धरणीपर ॥ चंग मृदंग बाँसुरी बाजै। पकरत एक एक भरि भाजै ॥ १० ॥ राधा मिलि इक मंत्र उपायो । हलधर अपनी भीर बुलायो ॥ कानलागिश्यामहिंसमुझायो। संकर्षण गहि श्यामहिं ल्यायो ॥ ११ ॥ हरिके हाथ गहे चंद्रावलि । कज्जल लै आई संझावलि॥ललिता लोचन आँजन लागी । चंद्रावलि मुरली लै भागी ॥ १२ ॥ इकलै लावति हृदय कपोलनि । इक लै पोंछति ललित पटोलनि ॥ इक अवलंबन इक अवलोकति । चुंबन दान देति इक दंपति ॥ १३ ॥ मगन भई अपु वपु न सँभारति ।लालनभुजअपनेउरधारति॥गुरुजनसंत सबै मिलि देखैं । तिनहुँको तरुणी तृण वर लेखैं ॥ १४ ॥ एक कहै पियको मुख माँडौ । एक कहै फगुवा लै छाँडौ ॥ वाम लियो पट पीत छुडाई । राधा राखति कृष्ण बडाई ॥ ॥ १५ ॥ सिमटे सखा छोडावन आए । उन लियो ठेल न मोहन पाए॥ बाँसन मार मची कल आडे । ग्वाल टिके पग एक न छाँडे ॥ १६ ॥ बल कियो बीच ग्वाल समुझाए । मोहन मेवा मोल मँगाए ॥ फगुवा लै लालन छिटकाए । हँसत गोपाल ग्वाल तहँ आए ॥ १७॥ तब मोहन हलधर पकराए । करहु तरुनि अपने मनभाए ॥ नाक नयन मुख कज्जल लायो । केसरि कलश हलधर शिरनायो ॥ ॥ १८ ॥ बहुत भरे बलराम सबन गहि । धौलागिरि मनो धातु चली बहि ॥ न्हान चले यमुनाके कूल । गोपी गोप भए अनुकूल ॥ १९ ॥ जो रस बाढ्यो खेलत होरी। शारद का वरणै मति भोरी॥सूरदास सो कैसेगावै।लीलासिंधु पार नहिं पावै॥२०॥४३॥राग गौरी॥

गारी होरी देत दिवावत । व्रजमें फिरत गोपिकन गावत॥ दूध दहीकेमाते डोलैं।काहेनहोहो हो हो बोलैं ॥ बगलनमें दाबे पिचकारी । बाँधत फेटैं पाग सँवारी । रुकि गए आटनि नारे पैंड । नवकेसरिके माट उलैडे । छज्जनते छूटति पिचकारी । रंगि गईं बाखरि महल अटारी॥ नानारंग गएरंगि वागे । बलदाऊ इत उत ह्वै भागे ॥ न्हान चले यमुनाके तीर । मनमोहन हलधर दोउवीर॥सूरदासप्रभु सबसुखदायक ॥ दुर्लभ रूप देखिबे लायक॥४४॥रागिनी श्रीहठी॥

ऋतु वसंतके आगमहि मिलि झूमकहो।सुखसदन मदनकोजोरमिलिझूमकहो॥१॥कोकिल वचन सोहावनो मिलि झूमकहो। हित गावत चातक मोरमिलि झूमकहो॥वृन्दावन तरुमाल मिलि झूमकहो। सब फूलिही बनराय मिलिझूमकहो॥२॥ जहांनेवारी सेवती मिलि झूमकहो । बहु पांडरविपुल गंभीर मिलि झूमकहो ॥ खुझो मरुवो मोगरो मिलि झूमकहो । कुल केतकि करनि करील मिलि झूमकहो ॥ ३॥ वेलि चमेली माधवी मिलि झूमकहो । मृदुमंजुलबकुलतमालमिलिझूमकहो ॥नववल्ली रस विलसहीं मिलि झूमकहो । मनो मुदित मधुपकी माल मिलिझूमकहो॥४॥ ताल पखावज बाजहीं मिलि झूमकहो । बिच डफ मुरलीकी घोरमिलिझूमकहो॥चलहुतहांअलि जाइए मिलि झूमकहो । जहाँ खेलत नंदकिशोर मिलिझूमकहो ॥५॥यूथनियूथनिसुंदरीमिलि झूमकहो ॥ जिनि जोवत लजत अनंग मिलि झूमकहो ॥ चोवा चंदन अरगजा मिलिझूमकहो। मथि लै निकसीं एक संग मिलि झूमकहो ॥ ६ ॥ प्रति अंग भूषण साजिकै मिलि झूमकहो। लिये कनक कलश भरि रंग मिलि झूमकहो ॥ जाइ परस्पर छिरकहीं मिलि झूम-

कहो ॥७॥ इतते गईं ब्रजसुंदरी मिलि झूमकहो । उतते मोहन नवलन अहीर मिलि झूमकहो॥ बाँस धरे जेरी धरी मिलि झूमकहो । बिच मार मची भई भीर मिलि झूमकहो॥८॥ एक सखि निकसी झुंडते मिलि झूमकहो । तिनि पकरि लई हरिहाथ मिलि झूमकहो॥ बहुरि उठीं दशबीस मिलि झूमकहो । धरिलिये आय ब्रजनाथ मिलि झूमकहो॥९॥ इक पट पीतांबर गह्यो मिलि झूमकहो।इक मुरली लई छिडाय मिलि झूमकहो॥ एक मुख माँडहिं कुमकुमा मिलि झूमकहो । एकगारी दै उठीं गाइ मिलि झूमकहो॥१०॥ प्यारी कर काजर लियो मिलि झूमकहो। हँसि आँजति पियकी आँखि मिलि झूमकहो॥ यहि विधि हरिको घेरि रहीं मिलि झूमकहो । ज्यों घेरिरहीं मधुमाखि मिलि झूमकहो॥११॥ अब तो घात भली बनी मिलि झूमकहो । तब चीर हरे जलभीतर मिलि झूमकहो। सो परी हँसा हम सारिहैं मिलि झूमकहो । सुनि लेहु ललन बलवीर मिलि झूमकहो॥१२॥अब हम तुमहिं न गाइहैं मिलि झूमकहो। मुसकात कहा यदुराय मिलि झूमकहो॥ की हमसों हाहा करौ मिलि झूमकहो । की परहु कुँवरिके पाँइ मिलि झूमकहो॥१३॥ बंकविलोकनि मन हरो मिलि झूमकहो । ठगि तुमहिं रही ब्रजबाल मिलि झूमकहो॥ फगुवा बहुत मँगाय दियो मिलि झूमकहो। मधुमेवा मधुररसालमिलिझूमकहो॥१४॥कहि मोहनब्रजसुंदरी मिलिझूमकहो। तब धाय धरे बल घेरि मिलि झूमकहो॥ शंक सकुच सब छाँडिकै मिलि झूमकहो।चहुँपास रहीं मुख हेरि मिलि झूमकहो॥१५॥ कनक कलश भरि कुमकुमा मिलि झूमकहो । धरि ढारिदिये शिर आनि मिलि झूमकहो॥चंदन बंदन अरगजा मिलि झूमकहो। सब छिरकति करति न कानि मिलि झूमकहो॥१६॥खेलि फागु अनुराग बढ्यो मिलि झूमकहो । फिर चले यमुनजलन्हान मिलि झूमकहो॥ द्विंतिया बैठि सिंहासने मिलि झूमकहो। दोउ देत रत्न मणिदान मिलि झूमकहो॥१७॥ यहि बिधि हरिसँग खेलहीं मिलि झूमकहो । गण गोकुलनारि अनंत मिलि झूमकहो॥सूर सबनको सुख दियो मिलि झूमकहो। रमि रसिक राधिका कंत मिलि झूमकहो॥१८॥ ४९॥रागिनी काफी मनमोहनललनामनहरचो॥ गृहगृहते सुंदरि चलींदेखन ब्रजराज-कुमार। देखिवदन विथकित भई बैठीहैं सिंहदुआर॥ डिमिडिमि पटहढोल डफ बीणा मृदंग उपंग चंगतार । गावत प्रीति सहित श्रीदामा बाढ्यो है रंग अपार॥१॥ इत राधिका सहित चंद्रावलि ललिता घोष अपार। उत मोहन हलधर दोउ भैया खेल मच्यो दरबार। रत्नजटित पिचकारी करलिये छिरकति घोषकुमारि । मदनमोहन पिय रसमातेहैं कछुअन अंग सँभारि॥२॥ मोहनप्यारी सैनदै हलधर पकराए जाय।आपुन हँसत पीतपट मुखदै आएहो आँखि अँजाय॥बहुरि सिमिटि ब्रजसुंदरी मनमोहन पकरेजाय।अधरपान रस करतिपियारी मुरली लई छिडाय॥३॥परिवा सिमिटि सकल ब्रजबासी चले यमुनजल न्हान।वारि कुँवरिपर पट नँदरानी देति बिप्रन बहुदान॥ द्विंतियपाट सिंहासनबैठे चमरछत्र शिरढार।सूरज प्रभुपर सकलदेवता वरषत सुमन अपार॥४॥४६॥ राग श्री॥ठी॥श्यामसंग खेलन चली श्यामा सब सखियनको जोरि। चंदन अगर कुमकुमा केसरि बहुकंचनघट घोरि॥ खेलत मोहन रंग भरे हो लाल प्यारो सुंदर सब सुखराशि॥१॥ फूलनके गेंदुक नवला साजि कनक लकुटिया हाथ।जाय गही ब्रजखोरि राधिका कोटिक युवती साथ॥ उतते हरि आए जब खेलत हो हो होरी सँग। कानपरी सुनिए नाहीं बहुबाजत ताल मृदंग॥२॥ पहिले सुधि पाई नहीं तब घिरे सांकरी खोरि। अब हलधर उलटहु काहे तुम धावहु ग्वालन

जोरि ॥धरत भरत भाजत राजत गेंदुक नवला सन मार। रसन बसन छूटत न सँभारें टूटतहै उरहार॥ ३ ॥ जब मोहन न्यारे करि पाए पकरे चहुँदिश घेरि॥बोलहु जू अब आनिछुडावै बल भैयाको टेरि॥ आजु हमारे वश परेहौ जैहौ कहाँ छिडाइ। की बल छूटहु आपने की यशुमति माय बोलाइ॥४॥एक गहेकर एक फेंट गहि पीतांबर लियो छिडाय। राधा हँसति दूरि भइ ठाढी सखियन देति सिखाय॥ एक श्रवणमें कहि कछु भाजति एकभरति अँकवारि। एक निहारति रूप माधुरी एक अपुनपौ वारि॥ ५ ॥ एक चिबुक गहि बदन उठावति हमतन लाल निहारि। एक नैनकी सैन मिलावति एक उठति दे गारि॥ आईंझूमि सकलब्रजवनिता हरिदेखी चहुँ ओर। राधा दृष्टि परे बिनु मोहन तलफत नैन चकोर॥ ६ ॥ हरि तव अपने करवरसों घूँघट पट कीनो दूरि। हँसत प्रकाश भयो चहुँ दिशिते सुधा किरनि भरि पूरि॥ आँखि दिखावतहौ जु कहा तुम करिहौ कहा रिसाय। हम अपनो भायो करि लैहैं छुवहु कुँवरिके पाय॥ ७॥ तब तुम अंबर हरे हमारे कीन्हें कौन उपाय।अब तौ दाउँ परचो धरि पाए छाडहिं तुमहिंन गाय॥ मुखकी कहति सबै झूठी मनहीं मन बहुत सनेहु॥कूटि करेंगे बलभैयाअब हमहिं छाँडि किनि देहु॥ ८ ॥ तुम जो फगुवा दैहौ कहा चलि बोलहु सांचे बोल।की हमसों हाहा करिए की देहु श्रीदामा ओल॥ हँसि हँसि कहत सहत सबहीकी आभूषण अब लेहु। नासाको मुक्ता अरु मुरली पीतांबर मेरो देहु॥ ९ ॥एक बनाइ देति बीरी कर वल्लभ छुवति कपोल। धन्यधन्य वडभाग सबहिके वश कीने बिनुमोल॥ उडत गुलाल अबीर कुमकुमा छबि छाई जनु सांझनाहीं दृष्टि परत राधामुख चंद्र नीलांबर मांझ॥१०॥ खेलि फाग अनुराग बढ्यो घर मची अरगजा कीच।ब्रजवनिता कुमुदिनी कुसुमगण हरि शशि राजत बीच॥ अष्टसिद्धि नवनिधि ब्रज बीथिन डोलति घरघर द्वार। सदा वसंत बसत वृंदावन लता लटकि द्रुम डार॥ ११ ॥ देखि देखि शोभा सुख संपति यह जिय करति बिचारि। ब्रजबनिता हम किन न भई यों कहति सकल सुरनारि॥ फागु खेलि अनुराग बढायो सबके मन आनंद। चले यमुन अस्नान करनको सखा सखी नँदनंद॥ १२॥ दुष्टनदुख संतन सुखकारण ब्रजलीला अवतार।जयजय ध्वनि सुमनन सुर वर्षत निरखत श्यामबिहार॥ युगलकिशोर चरण रज माँगौं गाऊं सरल धमार। श्रीराधा गिरिवरधर ऊपर सूरदास बलिहार॥१३ ॥४७॥ राग नटनारायण॥खेलत फागु कहत हो होरी। उत नागरीसमाज विराजति इत मोहन हलधरकी जोरी॥ १॥बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ रुंज मुरुंज बाँसुरी ध्वनि थोरी। श्रवण सुनाइगारिदे गावति ऊंची तान लेति प्रिय गोरी॥कोटि मदन दुरि गयो देखि छबि तेउ मोहे जिनहूँ मति भोरी। मोहन नँदनंदन रस विथकित कोहू दृष्टि जात नहिं मोरी॥ २ ॥ कुमकुम रंग भरी पिचकारी उत्तम छिरकति नवल किशोरी।यहि बिधि उमँगि चल्यो रँग जहँतहँ मनु अनुरागसरोवर फोरी॥ कतहुँक मिलि दश बीसक धावति लेति छिडाइ मुरलि झकझोरी।जाइ श्रीदामा लै आवततबदेमानिनि बहुभाँति पटोरी॥३॥भरि करआन अबीर उडावत गोविंदनिकट जाय दुरि चोरी। मनहु प्रचंड पवनवश पंकज गगन धूरि शोभित चहुँ ओरी॥ कनककलश कुमकुम भरि लीन्हों कस्तूरी मिलिकै घसि घोरी। खेल परस्पर कीच मची घर अधिक सुरंग भई ब्रजखोरी॥ ४ ॥ ग्वालबाल सब संग मुदित मन जाय यमुनजल न्हाइ हिलोरी। नए बसन आभूषण पहिरत औरन देत पीतांबर छोरी॥ द्विज समाज समेत करत द्विज तिलक दूब दधि रोचन रोरी। सूर श्याम विप्रन बंदीजन देत रतन कंचनकी बोरी॥५॥४८॥

राग सारंग ॥ बनी रूप रंग रस राधिका ताते अधिक बने ब्रजनाथ हो। ललिता अरु चंद्रावली मिलि बन्यो छबीलो साथ हो॥ताल पखावज बाजहीं सँग डफमुरलीकी घोर हो।नंदद्वार औसर रच्यो दोउ राजत नवल किशोर हो॥एककोंध ब्रजसुंदरी एककोंधग्वाल गोबिंदहो। सरस परस्पर गावहीं दैगारिनारिबहुवृंदहो॥आवहु रीहमदुरि रहैंबलभद्रकृष्णगहिदेहिंहो।लोचन उनके आँजहीं अधरनको रस लेहिंहो॥ शीलानाम ग्वालिनी तेहि गहे कृष्ण धपि धाइहो ।उपरैना मुरली लई मुख निरखि हरषि मुसकाइहो ॥ गहे कृष्ण अचानक राधिका रही कंठ भुज लाइहो।मनके सब सुख भोगए जब परसे यादवरायहो॥ दई कोटि कलश भरि वारुनी बहुत मिठाई पानहो। राधा माधव रस रह्यो सब चले यमुनजल न्हानहो ॥ द्वितिया सकल समाज सो पट बैठे आनँदकंद हो।दान देति ब्रजसुंदरी नगभूषण नवनिधिनंदहो॥बनबीथिनिभरी पुर गलीउमँग्योरंगअपारहो । सूर सुनभ सुर थकिरहे निरखत प्राणअधारहो॥४९॥राग सारंग ॥करत यदुनाथ जलधिजलकेलि। अबलन कर लिए अंबुज अमृत किए दिये नव नव सुख खेलि । जो राजत तिहिंकाल लाल ललना रसाल रसरंग मानहु न्हात मदन वधु सजनी गज गजिनी गज संग ॥ स्रवत सलिल शिव विदित अलकमिव राहु वदन विधुमत। मनहु पान करि भोजन सो अलि जु पिकबल रस बमत॥ध्वनिनकरतसिंधुउतरन धरत तरंग रह्योठहिराइ।पूजे कृष्णउजागर सागर वैरागर पहिराइ॥ भवन गवन यों नंदसुवन तब निकसि चढे रथ कूल। निरखत वरषत कुसुम त्रिदशजन सूर सुमति मनफूल ॥ ५० ॥ राग राज्ञी बैसंती ॥ यदुपति जलकीडतयुवतिन संग।सागरसकुचततजीत-रंग ॥ षोडशसहसदश अष्ट नारि।तिनमें अति शोभित श्रीमुरारि॥उडुगण समेत शशि सिंधुवारि। मनु पुनि आयो चितहित बिचारि॥ मृगमद मलयज केसरि कपूर । कुमकुमा कलित छत अगर चूर॥ जल ताकि परस्पर छपत दूर। मनु धनुष निपुण संग्राम शूर ॥ चलत चारु कल वलय चीर। अरु जलदवृंद छतभित समीर ॥ वदन निकट कच चुवत नीर। मनु मधुप निकर प्यावत न धीर ॥ जहँ नारदादि मुनि करत गान। जग पूरित हरियश सुर वितान ॥ सुर सुमन सुघन वर्षत विमान। जै सूर प्रभू सब सुखनिधान॥५१॥रागसारंग॥ रवितनयाको सलिल गंभीर आवहुरे मिलि न्हाइये। यहँ अति श्रम गँवाइदेहु को पुनि अपने घर जाइये ॥ भीजे गात जातहीं नवतन जो जसुदापै जाइये । लै सबहीको स्वाद मनोहर मीठो हो सो खाइये ॥ ए भूषन ए बसन मनोहर सादर सूरहिं दिखाइये। हरि जानत हौं ब्रज वेगि बिदा ह्वै विमुख जाइ चिताइये ॥ ॥ ५२ ॥ राग कल्याण ॥ यमुना तैं हौं बहुत रिझायो । अपनी सौंह दिए नंददोहाई ऐसो सुख मैं कबहुँ न पायो ॥ मिले मातु पितु बंधु सजन सब सखन संग वन विहरन आयो । अज अनंत भगवंत धरणिधर सुवस कियो प्रिय गान सुनायो ॥ हौं भयो प्रसन्न प्रेमहित तेरे कलिमल हरे जु यह जल न्हायो।अबजियसकुच कछू मति राखहुमांगि सूर अपनेमन भायो॥५३॥राग बिलावल॥ श्यामा श्याम खेलत दोउ होरी। फागु मच्यो अति ब्रजकी खोरी ॥ १ ॥ इतहि बनी वृषभानु किशोरी। सँग ललिता चंद्रावलि जोरी ॥ ब्रजयुवती सँग राजति भोरी ॥ बनि शृंगार श्रीराधा गोरी ॥ २ ॥ उतहि श्याम हलधर दोउ जोरी ॥ वारौं कोटिकाम छबि थोरी ॥ ग्वाल अबीरनकी लिए झोरी। सुरंग गुलाल अरगजा रोरी ॥ ३ गावति सबै मधुर सुर गोरी। तानलेति दैदै

१ मालाकंकणकुंडलैः कनकजेराभूपिता प्रायशः सम्यग्दाडिमबीजदंतकविभिः स्वरर्द्धमाना भृयम ॥ ईषद्धास्यमुखी कठोर-कुचका रक्तांबरं बिभ्रती वासन्ती वरलोढलोचनचलल्लोलानना वर्तते ॥ राज्ञी वासन्ती ।

२ नेत्रे कज्जलरंजितेऽतिललिते नासाग्रमुक्ताफलं भाले भाति सुकुंकुमस्य तिलकं गौरांग चित्रांबरम ॥ वेणीचंपककेतकी-सुकुसुमैः सार्द्धं करे वीटिकां नानासौरभगंधिताखिलवपुर्वल्लावली योषिता॥ राग बिलावल।

झकझोरी ॥ राधा सहित चंद्रावलि दौरी । औचक लीनी पीत पिछौरी ॥ ४॥ देखतही लैगई अजोरी । डारिगई शिरश्यामठगोरी॥ग्वाल देत होगीकीगारी ।वैर कियोहमसों तुम भारी ॥५॥ हँसति परस्पर यौवनवोरी । लै आई हरि पीत पिछोरी ॥ घातकरति मन मुरलीको री। अधरन- ते नहिं टारत जोरी ॥ ६ ॥ भली करी सब हम तुमसों री । सावधान अब होहुकह्यो री॥ श्याम चितै राधामुख ओरी। नैन चकोर चंद्र दरश्यो री ॥ ६ ॥ पियको प्रिय मोहनी लगाय । इहि अंतर गोपी हँसि धाय ॥ गह्यो हरषि भुज ललिता धाय । गई श्यामकी सब चतुराय ॥ ८ ॥ मनमाने सब करति बडाय। राधा मोहन गाँठि जुराय॥ करत सबै रुचिकी पहुनाय । नंदमहरको गारी गाय ॥ ९ ॥ फगुवा हमको देहु दिवाय ।पचरँग सारी बहुतमँगाय ॥ लीन्ही जो जाके मन आय। तुरत सबै युवती पहिराय॥ १० ॥ खेलत फागु रह्योरसभारी। वृद्ध किशोरि बाल अरु नारी ॥ अतिश्रमजानिगएजलतीरा।ग्वाल ग्वालिहलधरहरिवीरा॥ ११॥ परम पुनीत यमुनजलराशी। क्रीड़त जहां ब्रह्म अविनाशी ॥ धन्यधन्य सब ब्रजके वासी । विहरतहैं हरिसँग करि हाँसी ॥ १२ ॥ जलक्रीडातरुणिन मिलि कीनो।ब्रज नर नारिनकोसुखदीनो॥ करि अस्नान चले ब्रजधाम । करे सबनके पूरण काम ॥ १३ ॥ जो सुख नंद यशोदा पायो ।सो सुख नाहीं प्रगट बतायो ॥ सुरवनिता यह साध बिचारैं । कैसे हरिसँग हमहु विहारैं ॥ १४ ॥ धन्य धन्य ए ब्रजकी बाला । धन्य धन्य गोकुलके ग्वाला ॥ सूर श्याम जनके सुखदायक । भुव प्रगटे हरि हलधर भायक॥ १५ ॥ ५४ ॥ राग गौरी ॥ कछु दिन ब्रज औरौरहोहरिहोरीहै। अब जिनि मथुरा जाहु अहो हरि होरीहै॥१॥ सब सुखको फल फागु अहो हरि होरी है॥प्रगट करौ यह जानिकै हरि होरी है। अंतरको अनुराग अहोहरिहोरी है ॥ २ ॥ गनहु द्वैजदिन शो- धिकै हरि होरी है। भूपति ह्वैहै काम अहो हरि होरी है॥ शशि रेखा शिर तिलक दै हरि होरी है॥ सबकोउ करै प्रणाम अहो हरि होरी है ॥ ३ ॥ कनक सिंहासन बैठिहै हरि होरी है ।युवतिनके उर आनि अहो हरि होरी है॥घूँघट आतपतानि अहो हरि होरी है ॥४॥तीज तिहूँ दिश प्रगट है हरि होरी है।अपनी आनन रेख अहो हरि होरी है॥सुनिपग मगडफ डिमिडिमी हरिहोरीहै ॥सोइकरि- है सब देश अहो हरि होरी है॥५॥चौथिचहूँदिश जानिहै हरि होरी है। यह अपनी इक रीतिअहो हरिहोरी है॥मैंजो कहोंपिय निलज अहो हरिहोरीहै॥छांडिसकुचकुलनीति अहो हरि होरी है ॥ ६॥ पांचैं परिमिति परिहरै हरि होरी है। चली सकल इक चाल अहो हरि होरी है॥नारिपुरुष सादर करै हरि होरी है॥वचन प्रीति प्रतिपालिअहोहरिहोरी है॥७॥छठि छ रागरसरागिनीहरिहोरीहै । ताल तान बंधान अहोहरि होरी है ॥चटुल चारु रतिनाथके हरि होरीहैसीखत होइ औधान अहो हरि होरी है॥ ८ ॥ सुनि बातैं सब सजग होइ हरि होरी है। सबन मतो मत एक अहो हरि होरी है ॥ नृप जो कहो सब कोउ करै हरि होरी है । को राखिहै विवेक अहो हरि होरी है। आठैं सुनि सब साजि भए हरि होरी है। राजाकी रुचि जानि अहो हरिहोरी है॥ करहु क्रिया तैं- सी सब हरि होरी है ।आयसु माथे मानि अहोहरि होरी है ॥ १० ॥नौमीनवसतसाजिकै हरि होरी है। उर सुगंध उपहार अहो हरि होरी है ॥ मनहु चली है मायके हरि होरी है । मनसिज भवन जोहार अहो हरि होरी है ॥ ११ ॥ दशै दशै दिशि शोधिकै हरि होरी है। बोलहो नारायण अहो हरि होरी है॥ काज करहुरुचिआपनीहरिहोरीहै।आवहुकाज सिराय अहो हरि होरी है ॥१२ ॥ सुनि आयसु एकादशी हरि होरीहै । बोलेसब शिर नाइ

हरि होरी है ॥ गज जीतहु बल आपने हरि होरी है । ज्ञानविराग छँडायअहो हरिहोरीहै॥१३॥ देखि भले सुभट आपने हरि होरी है।दियो द्वादश द्योस बिचारि अहो हरि होरी है ॥ करहु क्रिया तैसी सबै हरि होरी है । होइ निशंक नरनारि अहो हरि होरी है ॥१४॥ ढोलभेरिडफ बाँसुरी हरि होरी है ।बाजैं पटह निशान अहो हरि होरी है ॥ मिलहुलोकपति छाँडिकै हरि होरी है । नहिं उबरिबो निदान अहो हरि होरी है ॥१५॥ रथ औचक बरात साजैं हरि होरी है । खरन भए असवार अहो हरि होरिहै॥धूरि धातु घट रंग भरे हरि होरी है।धरे यंत्रहथियार अहो हरि होरी है ॥१६॥ जहां तहां सैन्या चली हरि होरी है । मुक्त काछ शिर केश अहो हरि होरीहै॥आपो पर समुझैं नहीं हरि होरी है । राजा रंक अवेश अहो होरी है ॥ १७ ॥ जे कबहूं देखे नहीं हरि होरी है । कबहूं सुनी न कान अहो हरि होरी है ॥ तिन कुलनारि निडर भई हरि होरी है । लागे लोग परान अहो हरि होरीहै ॥१८॥भस्मभरैं अंजन करैं हरि होरीहै। छिरकैं चंदन वारि अहो हरि होरी है ॥ मर्यादा राखैं नहीं हरि होरी है । कटिपट लेहिं उतारि अहो हरि होरीहै ॥ ॥१९॥जहां सुनहिं तप संयमी हरि होरी है । धर्म धीर आचार अहो हरि होरी है॥छेकहिं ताहि निशंक होइ हरि होरी है । पकरहिं तोरि किवाँर अहो हरि होरी है॥२०॥ शठपंडितवेश्या वधू हरि होरी है । सबै भये एकसारि अहो हरि होरी है ॥ तेरसि चौदसि दिवस द्वैक हरि होरीहै। जनु जीते जगझारि अहो हरि हो है ॥ १२ ॥ पून्यो प्रगटी प्राणपती हरि होरी है । दुरेमिले पा-लागि अहोहरि होरी है॥जहां तहां होरी जरै हरि होरी है।मनहुँ मवासे आगि अहो हरि होरी है ॥ २२ ॥ सब नाचहिं गावहीं सबै हरि होरी है । सबै उडावहिं छार अहो हरि होरी है ॥ साधु असाधु न समुझहीं हरि होरी है । बोलहिं वचन विकार अहो हरि होरी है ॥२३॥ अति अनीति मिति देखिकै हरि होरी है । परिवा प्रगटी आनि अहो होरी है ॥ विमल बसन तनु साजहीं हरि होरी है । मर्यादाकी कानि अहो हरि होरी है ॥२४॥ आवतही आदर करैं हरि होरी है। हँसि जोरहिं उठि हाथ अहो हरि होरीहै॥वरन धर्म मिति राखहीं हरि होरी है।कृपाकरौरतिनाथ अहो हरि होरी है ॥ २५ ॥ सुनि विनती ऋतुराजकी हरि होरी है। प्रभु समुझे मनमाहँअहोहरि होरी है॥ जाय धर्म अपने रहो हरि होरी है। बसो हमारे बाँह अहो हरि होरी है ॥ २६ ॥ और कहां लौं बरनिए हरि होरी है । मनसिज के गुणग्राम अहो हरि होरी है ॥ सुनहु श्याम या मासमें हरि होरी है । कियो जु कारण काम अहो हरि होरीहै ॥ २७ ॥ सूर रसिक मणि राधिका हरि होरी है। कहि गिरिधर सों बात अहो हरि होरी है॥ श्याम कृपा करि व्रज रहो हरि होरी है। बरजति मधुवन जात अहो हरि होरी है ॥ २८ ॥ ५३ ॥

॥ राग जयजयवंती ॥ माई फूले फूले हो फूलत श्रीराधे कृष्ण झूलत सरस रसही फूलडोल । फूले फूले फूल जोरत फूले निमिष नहीं मोरत संतन हितही फूलडोल ॥ १ ॥ फूल फटिक खँभ रचित कंचनहीं फूल खचित सरस रसही फूलडोल । पटुली नवरतन पचित हीरालाल मोती जटित संतन हितही फूल डोल ॥ मरुवा मयारि सुठि ढरिरोल प्रवाल पिरोजा झूमका चहुँ ओल सरस रसही फूल डोल । डाँडी हेम हीने चारु गोल चुनी नहीं फूल लगे लोल संतन हितही फूलडोल ॥ ३ ॥ फूले श्रीवृंदावन अनुकूल सघनलता सब फूले फूल सरस रसही फूल-डोल ॥ फूले श्रीयमुनाकूल विविध तरंगरंग फूले फूल संतन हितही फूलडोल ॥ ४ ॥ फूले हीन चंपक चारु चमेली फूले मलयज लवंगलता वेलि सरस रसही फूलडोल । फूलेवेल निवारी फूल

लि फूले मरुवो मोगरो सेवती फूल बेलि संतन हितही फूलडोल ॥ ५ ॥ तहाँ हीन अंब मौरेहैं फूले जहां निबुवा सदाफल फूले सरस रसही फूलडोल।तहाँ कमल केवरे फूले जहाँ केत की कनेर फूले संतन हितही फूलडोल॥६॥फूली माधवी मालती रेलि फूलेहीमधुप करतहैं केलि सरस रसही फूलडोल । फूलेफलेहैं आनँद बेलि फूले पिवत सुमन रस पेलि संतन हितही फूल-डोल ॥ ७ ॥ फूलनके सौंधेवार मानो मधुपछबि अपार सरस रसही फूलडोल । फूलनहीके हिएहैं हार सुरसरी मानो धरेही धार संतन हितही फूलडोल ॥ ८ ॥ माथे मुकुट है रचित फूल फलन-कीहै बेनी शीशफूल सरस रसही फूलडोल।फूलनहीकी हैं बेंदी भाल फूलनके सब नखशिख शृंगार संतन हितही फूलडोल ॥ ९ ॥ फूलेहैं हो धेनु धाम सब ग्वालबाल फूले हैं हो नंदजूके लाल सरस रसही फूलडोल। फूली गोपी हीन तरुन वृद्ध बाल फूलीकरतिहैं नाना बिधि ख्याल संतन हितही फूलडोल ॥ १० ॥फूली रोहिणी यशोमति रानी फूलीहै देविहरिहीरजधानी सरस रसही फूलडोल ॥ फूले हैं नंद संकर्षन सुख मानी फूले गोकुलही प्राणी संतन हितही फूलडोल ॥ ११ ॥ फूलेही बजावैं डफ ताल मृदंग बजे महुवरि मुँहचंग सरस रसही फूलडोल ॥ फूले बजावैं बाँसुरी सुर संग बजावैं अमृत कुंडली उपंग संतन हितही फूलडोल ॥ १२ ॥ फूले बजावैं किन्नरी यंत्र तार गति सुर मंडल झनकार सरस रसही फूलडोल।फूले बजावत गिरि गिरी गार मदन भेरि घहराइ अपार संतन हितही फूलडोल ॥ १३ ॥ फूलेहिनबजावैंरुंज मुरुंज फूले बजावैं झांझि झालरी पुज सरस रसही फूलडोल । फूलेसुर बजावैं दुंदुभीघोरगुंजकूंजत मोर मराल कोकिल कुंज संतन हितही फूलडोल ॥ १४॥ देखि डोल ब्रजजन सबफूले गोपी झुला-वति गिरिधर झूलै सरस रसही फूलडोल ।.फूलेहो मुदित मनोहर फूले रसिकनि रसिकशिरोमणि फूले संतन हितही फूल डोल। हरषि परस्पर गावैं हो होरी बोलत मीठे बोल बोलावैं सरस रसही फूलडोल।फूली प्रमुदित मनोहर भावैं कमलनयनको लाड लडावैं संतन हितही फूल-डोल ॥ १६ ॥ फूली चोवा चंदन बंदन रोरी केसरिमृगमदमथिमथिघोरी सरस रसही फूलडोल। फूली छिरकति नवलकिशोरी अबीर गुलाल भरे सब झोरी संतन हितही फूलडोल ॥ १७ ॥ फूली नाचति वृद्ध बाल यौबनभोरी फूले ग्वाल ग्वालिनि यूथ यूथनि जोरी सरस रसही फूल डोल।फूले करत कुलाहल तिहुँपुर खोरी फूलेहैं नरनारि किशोरी संतनहितही फूलडोल॥१८॥ फूले फगुवा मँगायदियो रस राख्यो तट भूषण पहिराय रह्यो नहीं कास्यो सरसदिशही फूलडोल। फूले हरि हँसिहँसि अमृतभाष्यो फूलेहो जो जैसे तैसे सबको मन राख्यो संतन हितही फूलडोल ॥१९॥फूलेहिन नारद करतहो गान फूले हैं ऋषिमुनि शिव धरत ध्यान सरसरसही फूलडोल॥ फूलेहो बीणा बजावत हरियश बखान मारयो कंस उग्रसेनकी फिरै आन संतन हितही फूलडोल ॥ २० ॥ फूलेहिन कहत हरि मुनि कह्यो जाय तुरतही मोहिं तुम लेहु बोलाय सरस-रसही फूलडोल। फूल्योहिन जधानो मैं असुर आय नदी यमुनामेंही देहुँ बहाय संतन हितही फूलडोल ॥ २१ ॥ फूलेहिन उग्रसेन शिर छत्र धराय फूले मथुरा नरनारि आनँद देहु बढाय सरस रसही फूलडोल। फूलेहिन पितु मातु मिल्यो म्यत बधाय दुसह दुख बिसराउ सुख देहु जाय संतन हितही फूलडोल ॥ २२ फूलेहिन मुनि सुनि ज्ञान हरषाय

सकल भूमि ब्रजरत्नन छाय सरस रसही फूलडोल। फूले हैं त्रिदशपति सुर शची सहिताय नभ चढि बिमान फूले सुमन वरषाय संतन हितही फूलडोल ॥ २३ ॥ फूलेहिन हरषत हो ऋषिराय फूले बिदा भये मुनि बैकुंठ सिधाय सरस रसही फूलडोल। फूले हरषिहरषि हरिको यशगाय फूले पूँछत सुर मुनिकछु कह्यो न जाय संतनहितही फूलडोल ॥ २४॥ फूल्योहिन पढैं पढावैं सुनैं सुनावैं वसि वैकुण्ठ परमपद पावैं संतनहितही फूलडोल। सूरदास प्रभु कैसे करि गावै लीलासिंधुपारनहिंपावै संतन हितही फूलडोल२५॥५४रागरा[१] रामगिरी ॥हरि पिय तुमजिनिचलन कहो। यह जिनि मोहिं सुनावहु बलिजाउँ जिनि जिय गहनि गहो ॥ जब चलिहो तबही कहियो अबहीं जिनिउरहिदहौ। औरहुजन्मप्राणमिलियतहैंपुनितुममिलतनहौ। जानिएईजियतानिमनिसुख अबकी बेर रहौ। यहसुनिसूरदासको लालचकबहूँ जिनिउमहौ॥५५॥राग कल्याण॥ श्रीगोकुलनाथ बिराजत डोल। संग लिएवृषभानुनंदनी पहिरे नील निचोल॥ कंचनखचितलाल मणि मोतीहीरा जटित अमोल। झुलवहिं यूँथ मिली ब्रजसुंदरिहरषति करतिकलोल ॥ खेलति हँसतिपरस्परगावति होहोबोलतिमीठेबोल। सूरदास स्वामी पियप्यारीझूलतहैंझकझोल॥ ५६॥राग कल्याण॥ श्रीझूलत नँदनंदन डोल। कनकखंभ जराय पटुली लगे रतन अमोल॥ सुभग सरल सुदेश डांडी रची विधना गोल। मनो सुरपति सुरसभाते पठैदियो हिंडोल॥ जबहिंझंपतितबहिंकंपतिविहँसि लगति डरोल। त्रिदशपति सजि चढिबिमानन निरखि देंदें ओल॥ थके मुख कछु कहि न आवै सकल मख कृत झोल। सखी नवसत साजि लीन्हें कहत मधुरे बोल ॥ थक्यो रतिपति देखि यह छबि इन्द्र भयो भ्रमभोल। सूरयहमुख गोपगोपीपियत अमृत कलोल॥५७॥राग गौरी ॥डोलत देखि ब्रजवासी फूलैं। गोपी झुलावें गोविंद झूलैं॥ नँदनंदनगोकुलमें सोहैं॥ मुरलि मनोहरमन्मथ मोहैं॥ कमलनयनको लाड लडावें। प्रमुदित मात मनोहर गावैं ॥रसिकशिरोमणि आनँदसागर। सूरदास मनमोहन नागर ॥ ५८ ॥ इति फागुक्रीडा समाप्ता। अध्याय। ३८॥ अथ अक्रूरप्रस्ताव कथावर्णन॥राग बिलावल ॥फागु रंग करि हरि रस राख्यो। रह्यो न मन युवतिनके काख्यो ॥ सखा संग सबको सुख दीनो। नर नारी मन हरि हारलीनो ॥ जो जेहिभाव ताहि हरि तैसे। हिनको हित कंटकको तैसे॥ महरि नंद पितु मातु कहाए। तिनहीके हित तनु धरि आए ॥ युगयुग यह अवतार धरत हरि। हरता करता विश्व रहे भरि॥ धरणी पाप भार भई भारी। सुरन लिए सँग जाइ पुकारी॥ त्राहि त्राहि श्रीपति दैत्यारी। राखिलेहु मोहिं शरन उबारी ॥ राजस रीति सुरन कहि भाषी। भए चंद्र सूरज तहँ साखी॥ क्षीरसिंधु अहि शयन मुरारी। प्रभु श्रवणन तहँ परी गुहारी॥ तब जान्यो कमलाके कंता। दनुज भार पुहुमी मेंमंता ॥ सिंधुमध्य वाणी परकाशी। भुव अवतार कह्यो अविनाशी ॥ मथुरा जन्मि गोकुलहि आये। मातपिता सुत हेतु कहाए ॥ नारद कहि यह कथा सुनाई। ब्रज लोगन सुख दियो कन्हाई ॥ नंद यशोदा बालक जान्यो। गोपी कामरूप करि मान्यो ॥ प्रथम पिवत पय बकी विनाशी। तुरत सुनत नृप भयो: उदासी ॥ यहि अंतर बहु दनुज संहारे। यहि अंतर लीला बहु धारे॥ को माया कहि सकै तुम्हारे। बाल तरुन सुख न्यारे न्यारे ॥ धन्य धन्य ए ब्रजके वासी। वश कीन्हे जिनि ब्रह्म उदासी ॥ अकल कला निगमहुते न्यारे। तिन युवती बन बननि बिहारे॥ आज्ञा इहै मोहिं प्रभु दीन्हों। यह अवतार जबहि भुवलीन्हों॥ दैत्यदहन सुरके सुखकारी। अब मारो प्रभु कंस प्रचारी॥ यह सुनि हँसे सुरनके नाथा। जब नारद गाई यह गाथा॥ श्रीमुख कह्यो जाइ समुझावहु। नृप आयसु

[१] धत्ते श्यामलकंचुकं कुचयुगलं मुक्तावलिं मंजुकं शोणाभं वरकंकणानि करयोः पादद्वये नूपुरौ। चन्द्रास्या मदविह्वला सकरुणां भाषां भृशं भाषती सेषा रामगिरी दिनांतसमये रामेण गीता पुरा ॥ रामगिरी।

करि मोहिं बोलावहु ॥ अंजलि जोरि राज मुनि हरषे। कृपावचन तिनसों हरि वरषे॥तुरत चले नारद नृपवासा । इहै बुद्धि मन करत प्रकासा ॥ संकर्षण हृदये प्रगटाई । जो वाणी ऋषि गाइ सुनाई ॥ आदि पुरुष अज्ञात बिचारी।शेषरूप हरिके सुखकारी ॥ हरिअंतर्यामी जगताता।अनुज हेतु जग मानत नाता॥ इहै वचन हलधर कहि भाष्यो।सुनिसुनि श्रवण हृदय हरि राख्यो॥तुम जन्मे भुवभार उतारन । तुम हौ अखिल लोकके तारन ॥ तुम संसार सारके सारा । जल थल जहाँ तहाँ विस्तारा ॥ तब हँसि कह्यो भ्रातसों बानी । जो तुम कहत बात मैं जानी ॥ कंसनिकंदन नाम कहाऊं।केश गहौं पुहुमी घिसटाऊं॥यहि अंतर मुनि गए नृपपासा।मनमारे मुख करे उदासा ।हरषि कंस मुनि निकट बोलाए । आदर करि आसन बैठाए॥कैसो मुख क्यों ऋषि मनमारे कह चिंता जिय बढी तुम्हारे॥नारद कह्यो सुनो हो राऊ।कहा बैठ कछु करहु उपाऊ॥ त्रिभुवनमें तुम सरि को ऐसो । देख्यो नंद सुवन ब्रज जैसो॥करत कहा रजधानी ऐसी ।यह तुमको उपजी कछु जैसी ॥ दिनदिन भयो प्रबल वह भारी । हम सब हितकी कहैं तुम्हारी॥तब गर्वित नृप बोलो बानी।कहा बात नारद तुम गानी॥कोटिदनुज मोसरि मो पासा। जिनको देखि तरणितनु त्रासा॥ कोटिकोटि तिनके सँग योधा।को जीवै तिनके तनु क्रोधा॥ मल्लनके गुण कहा बखानौं । जिनके देखत काल डरानौं ॥ कोटि धनुर्द्धर संतत द्वारे ।बचै कौन तिनके जु हँकारे॥ एक कुवलिया त्रिभुवनगामी। ऐसे और कितिक हैं नामी॥ग्वालसुतनकी कहा चलावहु।यह वाणी कहि कहा सुनावहु॥ प्रजा लोग ब्रजके सब मेरे । सेवा करत सदा रहैं नेरे॥ताते सकुचतहौं उन काजा ।बालक सुनत होइ जिय लाजा॥ भली करी यह बात सुनाई।सहज बुलाइलेउँ दोउ भाई॥और सुनहु नारद मुनि मोसों। श्रवणन लागि कहौं कछु गोसों॥कतिक बात बलराम कन्हाई। मोदेखत अति काल डराई ॥ आजु कालि अब उनहि बोलाऊं। कहि पठऊं ब्रजसहित मँगाऊं॥ और प्रजा ब्रज आनि बसाऊं। अपने जियकी खुटक मिटाऊं॥ तिनपर क्रोध कहा मैं पाऊं। रंगभूमि गजचरण रुँदाऊं॥ मेरी समसरिको वह नाहीं । यह सुनिकै नारद मुसकाहीं ॥ सत्य वचन नृप कहत पुकारे। अब जाने उनि तौ तुम मारे ॥ यह कहि मुनि वैकुंठ सिधारे । त्रिभुवनमें को बलहि तुम्हारे ॥ कंस परयो मन इहै विचारा । राम कृष्ण वध इहै खँबारा॥ दनुज हृदय हरि इहै उपायो। नारद कही सुनत जिय आयो॥ अब मारौं नहिं गहरु लगाऊं ।मथुरा जहां तहां बल छाऊं॥धकधकात जिय बहुरि सँभारै।क्यों मारौं सो बुद्धि बिचारै॥सूरज प्रभु अविगत अविनाशी।कंसकाल यह बुद्धि प्रकाशी॥५९॥राग कान्हरो ॥ अहो नृप द्वै अरि प्रगट भए । वसे नंदगृह गोकुल थानक दियो सुदिन नगए॥तुमहूँको दुख बहुत जनमको रथ मारग आरोए । तादिनते शिशु सप्त देवकी तेरेही कर सोए॥जो परि राजकाज सुख चाहै वेगि बोलाइ न लीजै। हारि जीति दोउनकी बिधि यह जैसे होइ सो कीजै ॥ ऐसी कहि वैकुंठ सिधारे कष्टनिशाविकराय। सूर श्याम कृत कीवे इच्छा मुनि मन इहै उपाय॥६०॥ राग सोरठ॥नृपति मन इहै बिचार परो।क्यों मारौं दोउ नंद ढोटौना ऐसी अरनिअरो॥ कबहुँक कहत आपु उठि धावौं यहै बिचार करो । सात दिवसमें वधी पूतना यह गुनि मनहिं डरो ॥ पुनि साहस जियजिय करि गर्वो ताको काल सरो । सूर श्याम बलराम हृदयते नेक नहीं बिसरो ॥ ६१ ॥ राग सारंग॥मथुराके निकट चरतिहैं गाई।दुष्टकंस भय करत मन हिमन ज्योंज्यों सुनै कृष्ण प्रभुताई ॥ शीश धुनै नृप रिसन मनैमन बहुत उपाइ करै। घर बैठेहि दशन अधनर धरि चंपै श्वास भरै।जानो असुर बाढिबो गोकुल ज्यों जन दीप पतंग परै।समुझे वचन कहे जे देवी अ॰ प॰ दिले आकास परै॥नारदगिरा सम्हारी पुनिपुनि शिर धुनि आपु सरै। कालरूप देवकी नंदन

प्रगट भयो वसुधाके माहीं।कासों कहौं सूर अंतरकी सुफलकसुतको वचन कही॥६२॥राग सोरठ॥
महर ढोटौना शालिरहे।जन्महिते अपडाव करतहैं गुणि गुणि हृदय कहै॥ दनुजसुता पहिले
संहारी पय पीवत दिन सात। गयो प्रतिज्ञा करि कागासुर आइ गिरचो मुख छात॥ तृणा शकट
छिनमें संहारे केशी हतो प्रचारि।जे जे गए बहुरि नहिं देखे सबहिन डारे मारि॥ ज्यों त्यों करि
इन दुहुँन सँहारौं बात नहीं कछु और। सूर नृपति अति सोच परो जिय यहै करत मन दौर॥६३॥
राग रामकली॥नंदसुत सहज बुलाइ पठाऊं।श्याम राम अतिसुंदर कहियत देखन काज मँगाऊं॥
जैहै कौन प्रेम करि ल्यावै भेद न जानै कोइ। महर महरिसों हित करि ल्यावै महाचतुर जो होइ॥
इहि अंतर अक्रूर बुलायो अति आतुर महाराज। सूर चलौ मन सोच बढायो कौनहै ऐसो काज६४
राग धनाश्री॥अति आतुर नृप मोहिंबोलायो।कौन काजऐसोअटक्योहै मनमनसोचबढायो॥आ-
तुर जाइ पँवरि भयो ठाढो कहो पँवरिआ जाइ। सुनत बुलाइ महलई लीनो सुफलकसुत गयो
धाइ॥ कछु डर कछु जिय धीरज धारे गयो नृपतिके पास। सूर सोच मुख देखि डरा-
नो ऊरध लेत उसाँस॥६५॥ राग मारू॥सोच मुख देखि अक्रूर भरमे।माथ कर नाय करजोरि दोऊ
रहे बोलि लीन्हों निकट वचन नरमे॥ आपुही कंस तहँ दूसरो कोउ नहीं त्रास अक्रूर
जिय कहा कैहै। नृपति जिय सोच जान्यो हृदय आपने कहत कछु नहीं धौं प्राण लैहै॥
निकट बैठारि सब बात तेई कही गए जे भाषि नारद सवारें।सूर सुत नंदके हृदय शालत सदा
मंत्र यह उनहिं अब बनै मारें॥६६॥सुनो अक्रूरयह बात सांचीकरौ आजुमोहिंभोरते चेतनाहीं।
श्याम बलराम यह नाम सुनि ताम मोहिं काहि पठवहुँ जाइ तिनहि पाहीं॥ प्रीति करि नंदसों
सहज बातैं कहे तुरत लै आइ दुहुँ नृपति बोलै। देखिबेकी साध बहुत सुनि गुण बिपुल अतिहि
सुंदर सुने दोउ अमोलै॥ कमल जबते उरग पीठि ल्याए सुने वहै बकशीश अब उनहिं देहैं।
सूर प्रभु श्याम बलरामको डर नहीं वचनइनकेसुनत हरषपैहैं॥६७॥राग सोरठ॥यहवाणीकहिकंस
सुनाइ। तब अक्रूर हिए भयो धीरज डर डारचो बिसराइ॥ मनमन कहत कहा चित बैठी सुनि
सुनि वैसी बानी। अपनो काल आपुही बोल्यो इनकी मीचु तुलानी॥ हरषि वचनअक्रूरकहे
तब तुरत काज यह कीजै।सूर जाहि आयसुकरिपाऊंभोरपठैतेहिदीजै॥६८॥राग बिलावल॥नब
अक्रूर कहत नृपआगे धन्यधन्य नारदमुनि ज्ञानी। बडे शत्रु ब्रजमें दोउ हमको सुनहु देव नीकी
चित आनी॥ महाराज तुमसरि को ऐसोजातेजगतयहचलतकहानी।अबनहिंबचैक्रोधनृपकीन्हो
जैहै छनकि तवा ज्यों पानी॥ यह सुनि हर्ष भयो गवानो जबहि कही अक्रूरसयानी।कालिबुलाइ
सूर दोउ मारौं बारबार यह भाषत बानी॥ ६९॥ इहै मंत्र अक्रूरसों नृप रैनि बिचारी। प्रातनंदसुत
मारिहौं यह कह्यो प्रचारी॥ करि बिचार युग यामलौं मंदिरहि पधारे। कह्यो जाहु अक्रूरसों भए
आलस भारे॥ तुरत जाइ पलका परचो पलकनि झपकानो। श्याम राम स्वपने खडे तहां देखि
डरानो॥ अति कठोर दोउ कालसे भरम्यो अति झझक्यो। जागिपरचो तहँ कोउ नहीं जियही
जिय सुसक्यो॥ चौंकिपरचो सँग नारिके रानी सब जागीं। उठीं सबै अकुलायके तब बूझन
लागीं॥ महाराज झझके कहा सपने कह शंके। सूर अतिहि व्याकुल भए घरघर उरदंके॥७०॥
कंसस्वप्नभ्रमः॥ महाराज क्यों आजुही स्वप्नझझकाने। पौढे जबहीं आनिकै देखे बिलखाने॥
कहा सोच ऐसो परचो ऐसे भूमीको।काकी सुधि मनमें रही कहिये अपजीको॥रानीसबव्याकुल
भईं कछु भेद न पावैं। तब आपुन सहजहि कह्यो यह नहीं जनावैं॥ सावधान करिपौरिआप्रति-

हार जगायो।सूर त्रास बल श्यामके नहिं पलक लगायो॥७१॥ नंदस्वप्नभ्रमः॥राग बिलावल॥उतनंदहि स्वप्नो भयो हरि कहूं हिराने । बल मोहन कोउ लै गयो सुनिकै बिलखाने ॥ ग्वाल बाल रोवत कहैं हरि तौ कहुँ नाहीं। संगहिसँग खेलत रहे यह कहि पछिताहीं॥दूत एक सँग लै गयोबलराम कन्हाई । कहा ठगौरीसी करी मोहनी लगाई॥ वाहीके दोउ ह्वैगये हम देखत ठाढे । सूरज प्रभु वै निठुरह्वै अतिही गएगाढे॥७२॥राग सोरठ॥ब्याकुल नंदसुनतहैं बानी।धरणी मुरछिपरेअति ब्याकुलविवश यशोदा रानी॥ ब्याकुल गोप ग्वालसब ब्याकुलब्याकुलब्रजकी नारी।ब्याकुल सखा श्याम बलके जे ब्याकुल अति जियभारी॥धरणी परत उठत पुनि धावत इहि अंतर नँद जागे। धकधकात उर नयन स्रवत जलसुत अँग परसन लागे ॥ सुसुकत सुनि यशुमति अतुराई कहा महर भ्रम पायो।सूर नंद घरनीके आगे यह भ्रम नहीं सुनायो ॥७३॥कंसकथावदत ॥ राग कल्याण॥एक याम नृपको निशि युगवत भई भारी ।आपुनहूं जाग्यो संग जागीं सब नारी ॥कबहुँ उठत बैठत पुनि कबहुं सेज सोवै ।कबहुँअजिर ठाढेह्वैऐसे निशि खोवै॥बारबार जोतिकसोंघरी बूझिआवै। एक जाइ पहुँचै नहिं और इक पठावै॥जोतिक जिय त्रास परचो कहा प्रात करिहै। सूर क्रोध भऱ्यो नृपति काके शिर परिहै ॥७४॥ ब्याकुल टरै निकट बूझै घरी वाकी।एक एक छिन याम याम ऐसी गति ताकी ॥ को जैहै ब्रजको मन करै केहि पठाऊं। जासों कहि नंदसुवन आजुही मँगाऊं॥ अब नहिं राखौं उठाइ वैरी नहिं नान्हों । मारौं गजपै रुँदाइ मनहि यह अनुमान्हो ॥ पठऊँ अक्रूरहिको ऐसो नहिं कोऊ।सूर जाइ गोकुलतेल्यावै ढिग दोऊ ॥७५॥राग बिलावल॥अरुणोदयउठि प्रातही अक्रूर बोलाए । आप कह्यो प्रतिहारसों इकसनि शत धाये ॥ सोवत जाइ जगायकै चलिए नृप पासा। उहै मंत्र मन जानिकै उठि चले उदासा ॥ नृपति द्वारही पै खरो देखत शिर नायो । कहि खवासको सैनदै शिरपावँ मँगायो॥अपने कर करिकै दियो सुफलकसुत लीन्हों। लै आवहु सुत नंदके यह आयसु दीन्हों॥ मुख अक्रूर हर्षित भयो हृदये बिलखानो । असुरत्रास अति जिय परचो कह कहै सयानो ॥ तुरतहि रथ पलनाइकै अक्रूरहि दीन्हों । आयसु शिरपर मानिकै आतुर ह्वै लीन्हों ॥विलम करौ जिनि नेकहू अबहीं ब्रज जाहू।सूरकाज करिआवहूजिनि रैनि बसाहू ॥ ७६ ॥ राग बिलावल ॥कंस नृपति अक्रूर बोलायो। बैठि एकांत मंत्र दृढकीन्हों राम कृष्ण दोउ बंधु मँगायो ॥ कहूँ मल्ल कहुँ गज दै राखे कहूंधनुषकहुँवीर।नंदमहरकेबालकमेरे कर्षत रहत शरीर॥ उनहिं बुलाय बीचही मारौं नगर न आवन पावैं। सूर सुनत अक्रूर कहत नृप मन मन मौज बढावैं ॥७७॥ राग कल्याण ॥ तुम बिन मेरे हितू न कोऊ। सुन अक्रूर तुरत नृप भाषत नंदमहरसुत ल्यावहु दोऊ॥ सुनि रुचि वचन रोम हरपित गात प्रेमपुलकि मुख कछू नबोल्यो ।यह आयसु पूरव सुकृतवश सो काहूपै जाहि न तोल्यो॥ मौन देखि परिहँसि नृप भीनो मनहु सिंह गो आय तुलानो । वयिक्रमबिनु द्वै सुत अहीरकेरे कातर कत मन शंकानो ॥ आयसु पाइ सुष्ठ रथ कर गहि अनुपम तुरंग साजि धुन जोह्यो । सूर श्यामकी मिलनि सुरति करि मनु निरधन धन पाय विमोह्यो ॥ ७८ ॥ अक्रूरवचन कंससों राग बिलावल ॥सुनहु देव इकबातजनाऊं।आयसुभयो तुरत लैआवहु ताते फिरिहि सुनाऊं॥ बल मोहन बन जात प्रातही जो उनको नहिं पाऊं ।रैहौं आजु नंदगृह बसिके कालि प्रात लैजाऊं ॥ यह कहि चल्यो नृपतिहू मान्यो सुफलकसुत रथ हांक्यो ।सूरदास प्रभुध्यान हृदय धरि गोकुल तनको ताक्यो ॥ ७९॥ अक्रूर गोकुलगमन राग टोडी। सुफलकसुत मन परचो बिचार। कंस निवंश होय हत्यार ॥ डगरमांझरथकीन्होंठाढो।सोचपरचो

मनमन अति गाढो ॥ मंत्रकियो निशि मेरे साथ। मोहिं लेन पठयो ब्रजनाथ॥ गजमुष्टिक चाणूर निहारयो । ब्याकुल नयन नीर दोउ ढारयो॥ अति बालक बलराम कन्हाई।कहा करौंनहिं कछू बसाई।कैसे आनिदेउँमैं जाई।मोदेखत मारै दोउभाई॥ मारै मोहिं बंदि लै बोलै।आगेको रथ नेक न डोलै॥सूरदास प्रभु अंतर्यामी।सुफलकसुत मन पूरण कामी॥८०॥राग कल्याण॥सुफलकसुत हृदय ध्यान कीन्हों अविनाशी।हरन करन समरथ वै सब घटके वासी ॥ धन्यधन्य कंसहि कहि मोहिं जिन पठायो। मेरो करि काज मीच आपुको बोलायो ॥ यह गुणि रथ हांकि दियो नगर परयो पाछे। कछु सकुचत कछु हरषत चल्यो स्वांग काछे॥बहुरि सोच परयो दरश दक्षिण मृगमाला । हरष्यो अक्रूर सूर मिलिहैं गोपाला॥८१॥अक्रूर शकुनपरीक्षा॥राग टोडी॥दक्षिणदरश देखि मृगमाला । अति आनंद भयो तेहि काला॥बहु दिनके मेटौं जंजाला।यहि वन मिलिहैं मोहिं गोपाला॥श्याम जलद तनु अंग रसाला।ता दरशनते होउँ निहाला॥बहुदिनके मेटौं जंजाला।मुख शशि नैन चकोर बिहाला॥तनु त्रिभंगसुंदरनँदलाला।विविध सुमन हृदये शुभमाला॥ सारसहूते नैन विशाला।निश्चै भयो कंसको काला ॥ सूरज प्रभु त्रिभुवनप्रतिपाला ॥ ८२ ॥राग आसावरी॥दहिने देख मृगनकी मालहि । मनौ इन शकुन अबहिं यहि बन इन भुजभरि भेंटोंगो गोपालहि॥ निरखि तनुत्रिभंग पुलक सकलअंग अंकुर धरनि जिमिपाय पावस कालहि। परिहौं पाँयन जाय भेंटिहौंअंकमलाइ मूलते जमी ज्यों वेली चढति तमालहि॥परसिपरमानंद सींचिकै कामनाकंद करिहैंप्रगट प्रीति प्रेम प्रवालहि॥वचनरचनहास सुमन सुख निवासकरहिफलिहैंफलअमोघ रसालहि।स्फुरित शुभ सुबाहु लोचन मन उछाहु फूलिकै सुकृतफल फली तेहि कालहि॥निगम कहतनेति शिव न सकत चेति सूर हृदयै लगाइ लैहौं ता दयालहि ॥ ८३ ॥ राग कान्हरो ॥आजु वै चरण देखिहौं जाय । जे पदकमल प्रिया श्री उरसे नेक न सकै भुलाइ॥ जे पदकमल सकलमुनिदुर्लभ मैंदेखौं सतिभाव। जे पदकमल पितामह ध्यावत गावत नारद जाव ॥ जेपदकमल सुरसरीपरसेतिहूँभुवन यश छाव। सूर श्याम पदकमल परसिहौं मन अति बढयो उराव॥ ८४ ॥ आजु जाइ देखिहौं वै चरण । शीतल सुभग सकलसुख दाता दुसहदवन दुखहरण ॥ अंकुशकुलिश कमलध्वजचिह्नित अरुण कंजके रंग। गउ चारत बन जाइ पाइहौं गोपसखनके सं ॥ जाको ध्यान धरत मुनि नारद शिव विरंचि अरु ईश। तेई चरण प्रगट करि परसौं इन कर अपने शीश॥ देखि स्वरूप रहि न सकिहौं रथते धैहौं धरधाइ।सूरदासप्रभु उभयभुजाधरि हँसिभेटिहैं उठाइ॥८५॥राग नट॥ जब शिर चरण धरिहौं जाइ। कृपा करि मोहिं टेकिलैहैं करन हृदय लगाइ ॥ अंग पुलकित वचन गदगद मनहिंमन सुख पाइ। प्रेमघट उच्छलित ह्वैहैं नैन अंशु बहाइ ॥ कुशल बूझत कहि न सकिहौं बारबार सुनाइ। सूर प्रभुगुण ध्यानअटक्योगयो पंथ भुलाइ॥७६॥राग बिलावल॥ मथुराते गोकुल नहिं पहुचे सुफलकसुतको सांझ भई। हरि अनुराग देहसुधि बिसरी रथ वाहनकी सुरति गई ॥ कहां जात किनमोहिं पठायो कोहौं मैं यहि सोचपरयो। दशहू दिशा श्यामपरिपूरण हृदय हरपआनंद भरयो॥हरि अंतर्यामी यह जानी भक्तवछल बानो जिनको । सूर मिले जो भाव भक्तके गहर नहीं कीन्होंतिनको॥८७॥रागकल्याण ॥ वृंदावनग्वालन सँगगैयनहरिचारे। अपने जनहेत काज ब्रजको पगधारे ॥ यमुना करि पार गाय श्याम देत हेरी। हलधरसँगसखा लए सुरभी गण घेरी॥ धेनु दुहुन सखन कह्यो आपु दुहन लागे। वृंदाबन गोकुल बिचयमुनाके आगे ॥ भक्तहेतु श्रीगोपाल यह सुख उपजायो। सूरजप्रभुको दरशन सुफलकसुतपायो॥८८॥

॥ राग कल्याण ॥ सुफलकसुत हरिदरशन पायो। रहि न सक्यो रथपर सुखव्याकुल भयोउहैमनभायो॥ भूपर दौरि निकट हरि आयो चरणन चित्त लगायो। पुलक अंग लोचन जलधारा श्रीगृह शिर परसायो। कृपासिंधु करि कृपा मिले हँसि लियो भक्त उर लाइ। सूरदास यह सुख सो जानै कहौं कहा मैं गाइ ॥ ८९ ॥ राग गुंडमलार ॥ हरषि अक्रूर हरि हृदय लायो। मिले तेहि भाव जो भाव चितवनि चित्त भक्तवत्सल नाम तौ कहायो॥ कुशल बूझत प्रसन वचन अमृत रसन श्रवण सुनि पुलक अँग अंग कीन्हों। चितै आनन चारु बुद्धि उर विस्तार दनुज अघ दलौं यह ज्वाब दीन्हों ॥ भेदही भेद सब दई वाणी कहि तुरत बोले हेतु इहै वाके। सूर सँग श्याम बलरामअक्रूर सह निपट अति प्रेमके पंथ थाके ॥ ९० ॥ राग बिलावल ॥ श्याम इहै कहिकै उठे नृप हमें बोलाये। अतिहि कृपा हमपर करी जो कालि मँगाए ॥ संग सखा यह सुनतही चकृत मन कीन्हों। कहा कहत हरि सुनतहीं लोचन भरिलीन्हों॥ श्यामसखन मुख हेरिकै तब करी सयानी। कालिचलौ नृप देखिए शंका जिय आनी ॥ हर्षभए हरि यह कहे मनमन दुखभारी। सूर संगअक्रूरकेहरिब्रज पगधारी ॥ ९१ ॥ राग रामकली ॥ अति कोमल बलराम कन्हाई ॥ दुहुनि गोद अक्रूर लिए हँसि सुमनहुते हरुवाई ॥ ग्वालसंग रथ लीन्हें आए पहुँचब्रजकी खोरी। देखत गोकुल लोग जहाँतहँ नंद उठे सुनि शोरी ॥ निशिसपनेके तृषित भएअति सुन्यो कंसकोदूत। सुरनारिनरदेखनधाए घरघर शोर अकूत ॥ ९२ ॥ राग गुंडमलार॥ कंस नृप अक्रूर ब्रज पठाए। गएआगे लेन नंदउपनंद मिलि श्यामबलराम उन हृदय लाए॥ उतरिसादर मिल्यो देखि हरष्यो हियो सोच मन यह भयो कहाँ आयो। राजके काजको नाम अक्रूर यह किधौं कर लेनको नृप पठायो। कुशल तेहि बूझि लैगए ब्रज निजधाम श्याम बलराम मिलि गए वाको ॥ चरण पखराइकै सुभग आसन दियो विविध भोजन तुरत दियो ताको॥ कियो अक्रूर भोजन दुहुँन संग लै नर नारिब्रजलोगसबै देखै। मनो आए संग देखि ऐसे रंग मनहिंमन परस्पर करत मेषै ॥ सारि जेवनार अचवन कै भए शुद्ध दियो तंमोर नँद हर्षि आगे। सेज बैठारि अक्रूरसों जोरि कर कृपा करिकै तब कहन लागे॥ श्याम बलरामको कंस बोले हेतसों नंद लै सुतन हमपास आवैं। सूर प्रभुदरशकी साधअतिहीकरतआ-जुही कह्यो जिनि गहरु लावैं॥ ९३ ॥ राग कान्हरो ॥ सुन्यो ब्रजलोग कहत यह बात। चकृत भए नारि नर ठाढे पांच न आवै सात ॥ चकित नंद यशुमति भई चकृत मनहींमन अकुलात। दैदै सैन श्याम बलरामहिं सबै बुलावत जात ॥ परब्रह्म अविगत अविनाशी मायारहित अतीत। मनो नहीं पहिचानि कहूंकी करत सबै मन भीत। बोलतनहीं नेकचितवतन्है हिं सुफलकसुतसों पाग। सूर हमहिं नृप हितकरि बोलइहै कहत ता आग ॥ ९४ ॥ राग बिहागरो ॥ व्याकुल भए ब्रजके लोग। श्याम मन नहिं नेक आनत ब्रह्म पूरण योग ॥ कौन माता पिता को है कौन पति को नारि। हँसत दोउ अक्रूरके सँग नवल नेह बिसारि ॥ कोउ कहतियह कहां आयो क्रूर याकोनाम। सूरप्रभु लै प्रात जैहै औरसँग बलराम॥ ९५॥ गोपिकाविरहअवस्था वर्णन ॥ चलनचलनश्यामकहतकोउलेनआयो। नंदभवन भनक सुनी कंस कहि पठायो॥ ब्रजकि नारि गृह बिसारि व्याकुल उठिधाई। समाचार बूझनको आतुर ह्वै आई ॥ प्रीति जानि हेतु मानि बिलखि वदन ढाढी। मानहु वै अतिविचित्र चित्रलिखित काढी ॥ ऐसी गति ठौरठौर कहत नबनिआवै। सूरश्याम बिछुरे दुखविरह काहि भावै ॥ ९६ ॥ राग कान्हरो ॥ चलत जानि चितवत ब्रजयुवती मानहु लिखी चितेरे। जहां तहां चकटक मग जोवत फिरत न लोचन कोरे ॥ बिसरिगई गति भाँति देहकी सुनत न श्रवणन टेरे॥

मिलि जु गये मनोपय पानी है निबरत नहीं निबेरे ॥ लागे संग मतंग मत्त ज्यों घिरत न कैसेहु घेरे। सूर प्रेम अंकुर आशा जिय दै नहिं इत उत हेरे ॥ ९७ ॥ राग सारंग ॥ सब मुरझानी री चलिबेकी सुनत भनक । गोपी ग्वाल नैन जल ढारत गोकुल ह्वैरह्यो मूँदचनक ॥ यह अक्रूर कहांते आयो दाहन लाग्यो देह दनक । सूरदास स्वामीके, बिछुरत घट नहिं रैहैं प्राण तनक ॥ ९८ ॥ राग रामकली ॥ अनलते विरह अग्नि अति ताती। माधो चलन कहत मधुवनको सुने तपै अतिछाती ॥ न्याइहि नागरि नारि विरहवश जरत दिया ज्यों बाती।जे जरि मरे प्रगट पावक परि ते त्रिय अधिक सुहाती ॥ ढारति नीर नयन भरिभरि सब व्याकुलता मद माती।सूर व्यथा सोई पै जानै श्याम सुभग रँगराती ॥९९॥ राग आसावरी ॥ श्याम गए सखि प्राण रहैंगे । अरसपरस ज्यों बातैं कहियत तैसेहि बहुरि कहैंगे ॥इंदुवदन खग नैन हमारे जानति और चहैंगे।वासरनिशिकहुँ होत न न्यारे बिछुरन हृदय सहैंगे॥एक कहौं तुम आगे वाणी श्याम नजाहिं रहैंगे।सूरदास प्रभु यशुमतिको तजि मथुराकहा लहैंगे ॥२५००॥ राग मलार ॥ हरि मोसों गौनकी कथा कही। मन गह्वर मोहिं उतर न आयो हौं सुनि सोचिरही॥सुनि सखि सत्यभावकी बातैं विरह वेलि उलही ॥ करवत चिह्न कहे हरि हमको ते अब होत सही॥आजु सखी सपने मैं देख्यो सागर पालि ढही ।सूरदास प्रभु तुम्हरो गवन सुनि जलज्यों जाति बही॥१॥ राग मारू॥बहुतदुख पैयतुहै यहि बात ।तुम जुसुनतहौं माधो मधुबन सुफलकसुतसँगजात॥मनसिजव्यथा दहति दावानल उपजीहै या गात ।सुधौं कहौ तब कैसे जीहौं निज चलिहौं उठि प्रात॥जो पै यही कियो चाहतहै मीचु विरहशरघात।सूरश्याम तौतबकत राखी गिरिकर लै दिनसात॥२॥ अक्रूरवचन॥राग रामकली ॥ देख अक्रूर नरनारि बिलख्यो । धनुभंजन यज्ञहेत बोलेइनहिं और डरनहिंसबनकाहेसँतोख्यो ॥महरिव्याकुलदौरि पाँइ गहि लैपरी नंद उपनंदसँग जाहुलैकै। राजको अंश लिखिलेउदूनो देउँ मैं कहा करौं सुत दुहुँनि दैकै ॥कहति व्रजनारि नैनन नीर ढारिकै इननको काज मथुराकहा है। सूर नृप क्रूर अक्रूर क्रूरै भयो धनुष देखन कहत कपटि महाहै ॥ ३ ॥ यशोदा विनय अक्रूरप्रति राग सारंग ॥ मेरे कमलनयन प्राणते प्यारे । इनको कौन मधुपुरी बैठत राम कृष्ण दोऊजन बारे॥ यशुदा कहै सुनहु सुफलकसुत मैं पयपान जतन करि पारे। ए कहा जानहिं सभा राजकी ए गुरुजन विप्रौ न जुहारे ॥ मथुरा असुरसमूह वसतहैं करकृपाण योधा हथियारे। सूरदासस्वामीएलरिका इन कब देखे मल्ल अखारे॥४॥व्रजवासिनके सरबस श्याम।रेअक्रूरक्रूर बडवारे जीकोजीमोहन बलराम ॥ अपनो लाग लेहु लेखो करि जे कछु राजअंशके दाम । और महर लै संगसिधारैंनगर कहा लरिकनको काम ।संतत साधु परम उपकारी सुनियत बडो तुम्हारो नाम ॥ ५ ॥ यशोदा वचन सखीप्रति ॥ राग मलार॥सखी री हौं गोपालहि लागी । कैसे जियैं वदनबिनदेखेअनुदिनखिन अनुरागी ॥ गोकुल कान्ह कमल दल लोचन हरि सबहिनके प्राण। कौन न्याव अक्रूर कहतहै कहै मथुरा लै जान॥ ६॥तुम अक्रूर बडेके ढोटा अति कुलीन मतिधीर। बैठत सभा बडे राजनके जानतहो परपीर ॥ लीजै लागु यहांते अपनो जो कछु राजको अंश । नगर बोलि ग्वालनके लरिका कहा करैगो कंस ॥ मेरे तौ रामै धन माई माधोई सब अंग ।बहुरिसूरहौंकापै मांगौंपैठि पराए संग ॥७॥ राग रामकली मेरो माई निधनीकोधन माधौ।बारंबारनिरखिसुखमानततजतनहीं पल आधौ ॥ छिनछिन परसत अंग मिलावत प्रेम प्रगट ह्वै लाधौ । निशि दिन चंद्र चकोरकी छबि जनु मिटै न दरशकी साधौ ॥ करिहै कहा अक्रूर हमारो दैहै प्राण अगाधौ। सूर श्याम

घन हौं नहिं पठऊं अबहिं कंस किन बांधौ॥८॥राग सारंग ॥मनहु प्रीति अति भई पातरी।अनुज सहित चले राम हमारे कमलनैन देखौ मिलिन जात री॥अरस परस कछु समुझत नाहीं या ब्रज पोच भलौकी बात री। कंचन काँच कपूर कपट खरी हीरा सम कैसे पोति बिकात री॥ वे दोउ हंस मानसरवरके,छीलरे क्षुद्र मलिन कैसे न्हात री। सूर श्याम मुक्ताफल भोगी को रति करत ज्वारिकन खात री॥९॥राग सोरठ॥नहिं कोई श्यामहिं राखै जाइ।सुफलकसुत वैरी भयो मोको कहति यशोदा माइ॥ मदनगुपाल बिना घर आँगन गोकुल काहि सुहाइ। गोपी रहीं ठगीसी ठाढी कहा ठगोरी लाइ॥ सुंदर श्याम राम लोचन भरि बिनु देखे दोउ भाइ।सूर तिनहिं लै चले मधुपुरी हिरदयःशूलबढाइ॥१०॥राग सोरठ॥यशोदा बारबार यों भाषै।हैकोउ ब्रजमेंहितू हमारो चलत गोपालहि राखै॥ कहा काज मेरे छगन मगनको नृप मधुपुरी बुलाये।सुफलकसुतमेरे प्राण हतनको कालरूप ह्वै आयो॥ वरुए गोधन हरौ कंस सब मोहिं बंदि लै मेलौ। इतनेही सुख कमलनैन मेरी अँखियन आगे खेलौ॥वासर वदन विलोकतु जीवों निशि निज अंकम लाऊं॥ तेहि बिछुरत जो जिवों कर्मवश तौ हँसि काहि बोलाऊं॥ कमलनैन गुण टेरत टेरत अधर वदन कुम्हिलानी। सूर कहांलगि प्रगट जनाऊं दुखितनंदकीरानी११यशोद वचन श्रीकृष्णप्रति सोरठ॥ गोपालराइ केहि अवलंबौ प्राण।निष्ठुर वचन कठोर कुलिशसे कहत मधुपुरी जान॥क्रूर नाम गति क्रूर क्रूरमति काहेको गोकुल आयो। कुटिल कंसनृप वैर जानिकै हरिको लेन पठायो॥जिहि मुख तात कहत ब्रजपतिसों मोहिं कहत हे माइ। तिहि मुख चलन सुनत जीवतिहौं बिधिसों कहा बसाइ॥ को कर कमल मथानी धरिहै को माखन अरि खैहै। वर्षत मेघ बहुरि ब्रजऊपर को गिरिवर कर लैहै॥ हौं बलि बलि इन चरणकमलकी इहई रहौ कन्हाई।सूरदास अवलोकि यशोदा धरणि परी मुरझाई॥१२॥मोहनइतनोमोहिचितधरिये।जननी दुखित जानिकै कबहूँ मथुरागमन न करिये॥ यह अक्रूर क्रूरकृत रचिकै तुमहिं लेनहैआयो। तिरछे भए कर्म कृत पहिले बिधि यह ठाट बनायो॥ बारबार जननी कहि मोसों माखन माँगत जौन। सूर तिनहिं लैवेको आए करिहौसूनोभौन॥१३॥राग सही॥सुफलकसुतके संगते हरि होत न न्यारे॥बारबार जननी कहै मोहिं न तज्यो दुलारे॥ कहा ठगोरी यहि करी मेरेबालक मोह्यो। हाहा कहिकहि मरतिहौं मोतन नहिं जोह्यो॥ नंद कह्यो परबोधिकै सँग मैं लै जैहौं।धनुषयज्ञ देखराइकै तुरतहि लैऐहौं॥ घरघर गोपनसों कह्यो करभार जुरावहु। सूर नृपतिके द्वारको उठि प्रात चलावहु॥१४॥नंदवचनयशोदाप्रति राग मलार॥भरोसोकान्हकोहैमोहिं।सुनयशोदाकंसभयते तू जनि व्याकुल होहि॥पहिलेपूतनाकपटकरिआईस्तननिविषपोहि।वैसीज्योंप्रबलदुदिनकेबाल-कसारि देखावत तोहि॥ अघबकधेनुतृणावर्तकेशीकोबल देख्योजोहि।सातदिवसगोवर्धनराख्यो इंद्र गयो द्रपुछोहि॥ सुनिसुनि कथा नंदनंदनकी मन आयो अवरोहि। सूरदासप्रभुजी कहिए कछु सो आवै सब सोहि१५॥ राग बिहागरो ॥ यशुमति अतिहीभईबेहाल।सुफलकसुतयह तुमहि बूझि ए हरतहौ मेरा बाल॥ ए दोउ भैया ब्रजके जीवन कहति रोहिणी रोइ।धरणीगिरतिदुरति अति व्याकुल कहि गनत नहिं कोइ॥ निठुर भए जबते यह आयो घरहू आवत नाहिं। सूरकहा नृपपास तुम्हारो हम तुमबिनु मरिजाहिं॥१६॥ राग सोरठ॥कन्हैया मेरीछोहबिसारी।क्यों बलराम कहत तू नाहीं मैं तुम्हरी; महतारी॥ तब हलधर जननी परबोधत मिथ्या यह संसारी। ज्यौं सावनकी बेलि प्रफुलिकै:फूलतिहै दिनचारी॥हम बालक तुमको कहा सिखवैं कहूं तुमहिते जात।

सूर हृदयधीरज अबधारौ काहेको बिलखात१७॥राग सोरठ॥यहसुनि गिरी धरणि झुकि माता।कहा अक्रूर ठगोरी लाई लिए जात दोउ भ्राता॥ विरध समयकी हरत लकुटिया पाप पुण्य डर नाहीं। कछू नफा तुमको है यामें सो शोधौ मनमाहीं ॥ नाम सुनत अक्रूर तुम्हारो कूर भएहो आइ ॥ सूर नंदघरनी अति व्याकुल ऐसेहि रैनिबिहाइ॥ १८॥गोपिकावचनपरस्परराग रामकली॥सुनेहैं श्याममधुपुरी जात। सकुचति कहि न सकति काहूसों गुप्त हृदयकी बात ॥ शंकित वचन अनागत कोऊ कहि जु गई अधरात। नींद न परै घटै नहिं रजनी कब उठि देखौं प्रात ॥ नँदनंदन तो ऐसे लागे ज्यों जल पुरइन पात। सूर श्याम सँगते बिछुरतहैं कब ऐहैं कुशलात॥ १९॥ राग सारंग॥सुने नँदलाल मधुपुरी जात।सकुचति कहि न सकति काहूसों गुप्त हृदयकी बात॥ सकृत वचन अनागत सखि कोऊ कहि जु गयो अधरात। रजनी घटै न सूर प्रकाशै कब उठि देखौं प्रात॥उर धकधकी तबहिते लागी अगम जनायो सीरे गात।सूरदास स्वामीके चलिबे ज्यों यंत्रीबिनु यंत्र सकात।२० प्रभात कथावदत॥सखावचन ॥राग भैरव ॥भोर भयो ब्रजलोगनको।ग्वाल सखा सखि व्याकुल सुनिकै श्याम चलतहैं मधुबनको॥सुफलकसुत स्यंदन पलनावत देखैं तहां बलमोहनको।यह सुनि घरघरते उठि धाई नंदसुवनमुख जोवनको॥रोरि परी गोकुलमें जहँतहँ गाइ फिरत पय दोहनको॥सूर बरस कर भार सजावत महरचलत हरिगोहनको२१रागरामकली चलनको कहियतहै रीआजु।अबहीं गई श्रवण सुनि आई करत गमनको साजु॥कौउ एककंस कपट करि पठयो कछु सँदेश दैहाथ।सोलैचल्योहमारीजीवननिधिको अपनेसाथ॥अबयहिशूलनजाति समुझि सहि रही हिये करि लाज।धीरजअवधिआशदै जननिहिंजातचलेव्रजराज॥करिये विनती कमलनयनसों सूरसमौ पहिचान।कौने कर्मभयो दुखदारुनरहतन मेरो कान २२चलत हरिधिग जु रहत ए प्रान। कहां वह सुख अब सहौं दुसहदुख उर करि कुलिशसमान ॥ कहांवहकंठश्यामसुंदर भुज करति अधररस पान। अचवत नयनचकोर सुधाविधु देखहु मुखछबि आन॥ जाकोजग उपहास कियो तबछाँडचोसबअभिमान।सूरसुनिधिहमतेहैबिछुरतकठिनहैकरमनिदान॥२३॥राग कल्याण ॥ हौं सावँरेके संग जैहौं। होनी होइ सु होइ उभैहठयशअपयशकाहूनडरैहौं॥कहारिसाइ करैगो कोऊ जो रोकिहै प्राण तिहि देहौं। देहौं छाँडि राखिहौं यह ब्रत हरिहित बीजु बहुरि को बैहौं ॥ करिहौं सूर अजर अवनीतन मिलि अकास पियभौन समैहौं।बायबीजवापीजलक्रीडातेज मुकुरमुखसबसुखलेहौं॥२४॥यदि अंतर एक सखी आइ हरिके गवनको संदेश वदति राग कल्याण॥श्याम चलन चहत कह्यो सखीएकआई। बलमोहनरथबैठेसुफलकसुतचढनचहतयहसुनिचकितभईविरहदौ लगाई ॥धुकिधुकि सब धरणि परींज्वालाझर लता गिरीं मनो तुरत जलद वरषिसुरतिनीरपरसी। धाई सब नंदद्वार बैठे रथ दोउकुमार यशुमतिलोटतिभुवपरनिठुररूपदरसी॥ कौनपिताकौनमात आपु ब्रह्म जगधात राख्यो नहिं कछू नात नेकुहु मनमाहीं। आतुर अक्रूर चढे रसना हरिनाम रटे सूरज प्रभु कोमल तनु देखि चैननाहीं॥२५॥गोपीवचन मोहनप्रति ॥राग सारंग ॥ बिनतीएकसुनौ श्रीश्याम। चलन न देत चलौ चाहत मन चलन कहौ सो सुनिए श्याम। तुम सर्वज्ञ सकलघट व्यापक जीवन पद सबके विश्राम। संतत रहत कहत ढीठो दै करते सब सोवत सुखधाम ॥ बाहर सरल प्रीति गोपिनको लिए रहत लैलै गुणग्राम। सूरदास प्रभु सकल सुखदाता तिनते न्यारे न ग्राम॥२६॥ राग सारंग॥ बिनुपरबहिउपराग आजु हरितुमहैचलनकह्यो।कोजानैउहिराहु रमापति कत ह्वै शोध लह्यो ॥ वैतकिचुनित नीच नैनन मिलिअंजनरूपरह्यो।विरहसंधिबलपाइ

मैनअति है तिय वदन गह्यो ॥ दुसह दशन मनो धरत श्रमित अति परस परत न सह्यो । देखो देव अमृत अंतरते ऊपर जात बह्यो ॥ अब यह शशि ऐसो लागत ज्यों बिन माखनहि मह्यो । सूर सकलगुणपतिदरशन बिनुमुखछबि अधिक दह्यो ॥२७॥ राग धनाश्री॥ मिलिकिनजाहु बटाऊ नाते।नंद यशोदाके तुम बालक विनतीकरतिहौं ताते ॥ तुम्हरी प्रीति हमारीसेवागनियत नाहिंन काते । रूप देखि तुम कहा भुलाने मीत भए वन याते॥ तुमबिछुरत घनश्याम मनोहर हम अबला सरघाते। कहा करौं जु सनेह न छूटै रूप ज्योति गई ताते ॥ जब उठि दान माँगते हँसिकै संग गात लपटाते । सूरदास प्रभुकौन प्रबलरिपुबीच परयो धौं जाते॥ २८॥हरिकीप्रीति उरमांहि करकै। आय क्रूर लैचले श्यामको हित नाहीं कोउ हरकै ॥ कंचनको रथ आगे कीन्हों हरि हिचढाएवरकै।सूरदास प्रभु सुखके दाता गोकुल चलेउजरकै॥२९॥राग सारंग॥सबब्रजकीशोभा श्याम । हरिके चलत भई हम ऐसी मनहु कुसुम निरमायल दाम ॥ देखियतहौं तुम क्रूर विषमके-से सुनियतहौं अक्रूरहि नाम।विचरतिहौ न आन गृहगृहको शिशु लायक नृपको कह काम॥३० ॥ यशोदा॥विलाप राग बिलावल॥गोपालहिंराखहु मधुबन जात।लाजगए कछु काजन सरिहैं बिछुरत नँदके तात ॥ रथ आरूढ होत बलि२गई होइआयो परभात॥सूरदास प्रभु बोलि न आयो प्रेमपुलकि सब गात॥३१॥ मोहन नेक बदन तनहेरो ॥ राखोमोहिंनातजननीको मदनगुपाललालमुखफेरो। पाछे चढो बिमान मनोहर बहुरो यदुपति होत अँधेरो । बिछुरत भेंट देहु ठाढे ह्वै निरखौं घोष जन्मको खेरो॥ माधो सखा श्याम इन कहिकहि अपने गाइ ग्वाल सब घेरो।गए न प्राण सूर ता औसर नंदजतन करिरहेघनेरो३२अथ श्रीकृष्णमथुरागमनहेतु अक्रूरसाथ॥ राग सोरठ॥जबहींरथ अक्रूरचढे। तब रसना हरिनाम भाषिकै लोचन नीर बढे ॥ महरि पुत्र कहि शोर लगायो तरु ज्यों धरनि लुटाइ।देखति नारि चित्रसी ठाढीः चितए कुँवर कन्हाइ॥ इतनेहिमें सुख दियोसबनकोमिलि हैं अवधि बताइ।तनक हँसे मनदै युवतिनको निठुर ठगोरी लाइ॥बोलतनहीं रहींसबठाढीश्यामठगीं ब्रजनारी।सूरतुरत मधुवन पगधारेधरणीकेहितकारी॥३३॥राग बिहागरो॥चलतहारेफिरिचितयेब्रज पास।इतनेहि धीरज दियो सबनको अवधि गए दै आश।नंदहि कह्यो तुरत तुम आवहु ग्वालसखा लै साथ। माखन मधु मिष्टान्न महर लै दियो अक्रूरके हाथ ॥ आतुर रथहाँक्योमधुवनकोब्रजजन भए अनाथ ।सूरदास प्रभु कंसनिकंदन देवनकरन सनाथ ॥ ३४॥राग नटी॥रहींजहांसोतहां सब ठाढीं ।हरिके चलत देखिअत ऐसी मनहुँ चित्र लिखि काढी ॥ सूखे वदन स्रवत नैननते जल-धारा उरबाढी। कंधनि बाँह धरे चितवति द्रुम मनहु बेलि दवडाढी॥ नीरस करि छाँडीसुफलक-सुत जैसे दूध बिन साढी ।सूरदास अक्रूरकृपाते सही विपति तनु गाढी॥ ३५॥राग सारंग॥चलतहु फेरि न चितए लाल । रथ परबैठि दूरते देखे अंबुजनैन विशाल॥ मींडत हाथ सकल गोकुल-जन बिरहबिकल बेहाल ।लोचन पूरि रहीं जल महियाँ दृष्टि परी जो काल॥ सूरदास प्रभु फिरिके चितयो अंबुजनैनरसाल॥३६॥राग बिलावल॥बिछुरे श्रीब्रजराजआजुतौनैननतेपरतीतिगई। उठि नगई हरिसंग तबहिते ह्वै न गई सखि श्याममई॥ रूपरसिक लालची कहावत सो करनीकछु-वौन भई । साँचे क्रूर कुटिल ए लोचन व्यथा मीन छबि छीनि लई ॥ अब काहे जल मोचत सोचत समौगएते शूल नए।सूरदास याहीते जडभये इनपलकनही दगा दए ॥३७॥सखीवचन परस्पर॥ राग धनाश्री ॥ केतिक दूरिगयो रथ माई। नँदनंदनके चलत सखी री तिनको मिलननपाई।।एकदिवस हौं द्वार नंदके नहीं रहति बिनु आई आजु बिधाता मति मेरी गई भौनकाज बिरमाई ॥

जब हरि ऐसो ख्याल करत हे काहु नबात चलाई।ब्रजही बसत बिमुख भई हरिसों शूल न उरते जाई॥सूरदास प्रभु बिनु ब्रज ऐसो एकौ पल न सोहाई३८॥राग मलार॥सखी री वह देखौ रथ जात। कमल नैन कँधे पर न्यारो पीत बसन फहरात॥लई जाइ जब ओट अटनकी चीरनरहतकृशगात। छत्र पत्र ध्वज कनकदल मनो ऊपर पवन विहात॥ मधु छुड़ाइ सुफलकसुतलैगए ज्यों माछी भईहीन। सूरदास प्रभु बिनु देखियतहैं सकल बिरहआधीन॥३९॥राग सारंग॥पाछेही चितवत मेरे लोचन आगे परत न पाँइ। मन लै चली माधुरी मूरति कहा करौं ब्रजजाइ॥ पवन न भई पताका अंबर भई न रथके अंग। धूरि न भई चरण लपटाती जाती वहँलौं संग॥ ठाढी कहा करौ मेरी सजनी जिहि बिधि मिलहिं गोपाल।सूरदास प्रभु पठे मधुपुरी मुरझि परी ब्रजबाल॥४०॥ राग नट॥तब न बिचारी री यह बात। चलत न फेंट गही मोहनकी अब ठाढी पछितात॥ निरखि निरखि मुख रही मौनह्वै थकित भई पलपात। जब रथ भयो अदृष्ट अगोचर लोचन अति अकुलात। सबै अजान भई वहि औसर धिगहि यशोमति मात। सूरदास स्वामीके बिछुरे कौडी भरि न बिकात॥४१॥रागसारंग॥अब वे बातैं ईहैंरही। मोहनमुखमुसकाइचलतकछुकाहूनहींकही॥ सखी लाजवश समुझि परस्पर सन्मुख सबै सहीं॥ अब वे सालतिहैं उरमहिंया कैसेहु कढति नहीं॥ त्यों ज्यों सलिल करनको सजनी काहेको फिरति बही। हरि चुंबक जहां मिलहिं सूर प्रभु मो लैजाउँ तहीं॥४२॥राग नट॥मेरी वज्रकी छाती बिदरि नहिं जाति। हरिहि चलत चितवत मग ठाढी पछिताति॥ बिद्यमान बिरह शूल उरमें जु समाति। आवनकी आश लागि अवधिही पत्याति॥ प्रेमकथा प्रगट भई शरद रासराति। प्राणनाथ बिछुरे सखि जीवत न लजाति॥ एकै पै सुरति रही वदन कमल कांति। ज्यों ठग निधिहि हरत की रंचक गुरदै काहू भाँति।इमि फिरिमुसकानिसूरमनसागईमाति। चितवनिमन मादकभईजागत अकुलाति॥४३॥राग गौरी॥ आजु रैनि नहिं नींद परी। जागत गनत गगनके तारे रसना रटत गोविंद हरी॥ वह चितवनि वह रथकी बैठनि जब अक्रूरकी बाँह गही।चितवत रही ठगी सी ठाढी कहि न सकी कछु कामदही॥ इतने मन व्याकुल भई सजनी आरज पंथ हुते बिडरी। सूरदास प्रभु जहाँ सिधारे कितिक दूरि मथुरा नगरी॥ ४४॥राग सारंग॥हरि बिछुरत फाट्यो न हियो।भयो कठोर वज्रते भारी रहिकै पापी कहाकियो॥ घोरि हलाहल सुन री सजनी औसर तेहि न पियो। मन सुधि गइ सँभारति नाहिंन पूरो दाँव अक्रूर दियो॥ कछु न सुहाइ गई सुधि तबते भवनकाजको नेम लियो। निशि दिन रटत सूरके प्रभु बिनु मरिबोतऊ नजात जियो॥४५॥राग अडानो॥सुंदर वदनरी सुखसदनश्यामको निरखि नैन मन थाक्यो। वारक इन बीथिन ह्वै निकसे मैं दुरि झरोखनि झांक्यो॥ उन कछु नेक चतुरई कीनी गेंद उछारि गगन मिस ताक्यो। वारौं लाज भई मोको वैरनि मैं गँवारि मुखढाक्यो॥ कछु करिगए तनक चितवनिमें याते रहत प्रेम मद छाक्यो।सूरदास प्रभु सर्वसु लैगए हँसत हँसत रथहाँक्यो॥४६॥राग सारंग॥अरी मोहिं भवन भयानक लागै माई श्यामबिना। देखहिं जाइ काहि लोचन भरि नंद महरके अँगना॥लै जु गए अक्रूर ताहिको ब्रजके प्राणधना॥कौन सहाय करै घर अपने मेटै विधिन घना॥ काहि उठाइ गोद करिलीजै करि करि मन मगना। सूरदास मोहन दरशनबिनु सुख संपतिसपना॥४७॥राग मलार॥सब कोउ कहत गोपाल दोहाई।गोरसबेचन गई बबाकी सौं हौं मथुराते आई॥जबते कह्यो कंससों मोहन जीवत मृत करि लेखो। जागत सोवत आश देवनकी कृष्ण कला सब देखो॥ करते ओघ प्रजा लोगे सब नृपकी शंक नमानि।

ठकुराई तकियो गिरिधरकी सूरदास जनजानी ॥४८॥ यशोदाविलाप ॥राग धनाश्री ॥हैकोइऐसीभांति देखावै।किंकिणिशब्द चलत ध्वनि रुनुझुनु ठुमुकरगृह आवै॥कछुक विलापवदनकी शोभा अरुण कोटि गति पावै। कंचन मुकुट कंठ मुक्तावलि मोरपंख छबि छावै।धूसर धूरि अंग अंगलीने ग्वाल बाल सँगलावै।सूरदास प्रभु कहति यशोदा भाग्य बडेते पावै४९॥रागसोरठ॥मनौंहौंऐसेहीमरिजैहौं। इहि आँगन गोपाललालको कबहुँक कनियांलैहौं॥कब वह मुख बहुरौ देखौंगीकब वैसो सचुपैहौं। कब मोपै माखनमाँगैंगे कब रोटी धरि देहौं ॥ मिलन आश तनु प्राण रहतहै दिन दश मारग चैहौं।जो नसूर कान्हा अइहै तौ जाइ यमुन धँसि लैहौं॥५०॥अध्याय ॥३९॥तथा॥४०॥अक्रूरदर्शनप्राप्ति हेतु तथा श्रीकृष्णस्तुतिवर्णन ॥ राग गुंडमलार ॥मनहिं मन अक्रूर सोच भारी । जननि दुःखित करी इनहिं मैं लैचल्यो भई ब्याकुल सबै घोषनारी॥अतिहिए बालभोजननवनीतकेजानितिन्हैंलीन्हें जात दनुजपास। कुवलयामल्ल मुष्टिक चाणूरसे कियो मैं कर्म यह अति उदासा॥ फेरि लै जाउँ ब्रज श्याम बलरामको कंसलै मोहि तब जीव मारै।सूर पूरण ब्रह्म निगम नाहीं गम्य तिनहिं अक्रूर मन यह बिचारै॥५१॥इहै सोच अक्रूरपरयो।लिए जात इनको मैं मथुराकंसहिमहाडरयो॥धिगमोको धिग मेरी करनी तबहीं क्यों न मरयो॥मैं देखौं इनको अब हतिहै अति ब्याकुल हहरयो । यहि अंतरयमुनातट आएकियो अस्नानखरयो।सूरदास प्रभु अंतर्यामी भक्त सँदेह हरयो॥ ५२॥ ॥राग धनाश्री ॥सुफलकसुत दुख दूरि करयो । यमुनातीर कियो रथठाढो आपुहि प्रगट हरयो तिनहिं कह्यो तुम स्नान करौ ह्यां हमहिं कलेऊ देहु।भूँख लगी भोजन करिहैं हम नेम सारि तुम लेहु॥तबलौं नंद गोप सब आवैं संग मिले सब जैहौं॥सूरदास प्रभु कहतहैं पुनि पुनि तब अतिही सुख पैहौं॥५३॥राग गुंडमलार ॥सुनत अक्रूर यह बात हरषे । श्याम बलरामको तुरत भोजन दियो आपु अस्नानको नीर परसे॥गए कटि नीरलौंनित्य संकल्प करि करत अस्नान इकभाव देख्यो। जैसोई श्याम बलराम स्यन्दन चढे वहै छबि कुँवर सर मांझ पेख्यो ॥ चकृत भए कबहुँ तीरपुनि जल निरखि घोष अक्रूर जिय भयो भारि। सूर प्रभु चरितमें थकित अतिही भयो तहां दरसे नित स्थल बिहारी॥५४॥राग कान्हरो॥कमलपरबज्र धरति उर लाइ।राजति रमा कुंभरस अंतर पति निज थल जलसाइ।वैनतेय संपुट सनकादिक चतुरानन जय विजय सखाइ।औसर बाग विशारद हाहा जित गुण गाइ॥ कनक दंड सारंग विविध रव कीरति निगम सिद्ध सुर धाइ।तिनके चरण सरोज सूर अब किए गुरु कृपा सहाइ ॥ ५५ ॥राग धनाश्री॥हरष अक्रूर हृदय न माइ। नेम भूल्यो ध्यान श्याम बलरामको हृदय आनंद सुख कहि न जाइ॥ब्रह्म पूरण अकल कलाते रहित ए हरता करता समर्थ और नाहीं । कहा बपुरो कंस मिटयो तब मन संस करतहै गंस निवंश जाहीं ॥ हांकि रथ चढि चल्यो विलम अब कहा प्रभु गयो संदेह अक्रूर जीको।नंद उपनंद सँग ग्वाल बहुभार लै आइ सदनहि मिले सूर पीको॥ ५६ ॥अक्रूर श्रीकृष्णस्तुति॥ राग कल्याण ॥बार बार श्याम राम अक्रूरहि गानैं॥अबहीं तुम हरष भए तबहीं मन मारि रहे चले जात रथहि बात बूझतहैं वानैं॥कहौ नहीं सांची सो हमसों जिनि गोप करौ सुनिकै अक्रूर बिमल अस्तुति भानैं । सूरज प्रभु गुण अथाह धन्य धन्य प्रियानाह निगमन अगाध सहसानन नहिं जानैं॥५७॥राग बिलावल॥बार बार मोसों कहा बूझत तुमहौ पूरण ब्रह्म गुसाईं ॥ तुम हर्ता तुम कर्ता एकै तुमहो अखिलभुवनके साईं॥कहामल्ल चाणूरकुवलयाअब जिय त्रासनहीं तिननैको। सूरदास प्रभु कंस निपातहु गहरु न कीजै अब वैसनैको ॥ ५८॥ राग धनाश्री॥बूझतहैं अक्रूर

हि श्याम ।तरनि किरनि महलनि पर झाईं इहै मधुपुरी नाम॥श्रवणन सुनत रहत जाको नित सो दरशन भए नैन। कंचन कोट कँगूरनकी छबि मानहु बैठे मैन ॥ उपवन बन्यो चहूँघा पुरके अतिही मोको भावत।सूरश्याम बलरामहिं पुनिपुनि करपल्लवनिदेखावत॥५९॥श्रीकृष्ण वचन अक्रूरप्रति॥राग कल्याण॥बार बार बलरामको मधुपुरी बतावत।छज्जे महलन देखिकै मन हरष बढावत॥जन्म थान जिय जानिकै ताते सुख पावत।वन उपवन छाये सघन रथ चढे जनावत॥नगरशोरअकनतसुनत अति रुचि उपजावत।सुनत शब्द घरियारके नृपद्वारबजावत॥बरनबरनमंदिर बने लोचन ठहरावत सूरजप्रभु अक्रूरसों कहि देखि सुनावत॥६०॥अक्रूरवचन श्रीकृष्णप्रति राग कल्याण॥श्रीमथुराऐसी आजु बनी।देखहु हरि जैसेपति आगमसजतिशृंगार धनी॥मानहुकोटि कसी कटिकिंकिणिउपवनवसन सुरंग। भूषण भवन विचित्र देखियत शोभित सुंदर अंग॥सुनत श्रवण घरियार घोरध्वनि पाँयन नूपुर बाजत । अति संभ्रम अंचल चंचलगति धामन ध्वजा विराजत॥ ऊँच अटनपर छत्रनकी छबि शीशनमानो फूली।कनक कलशकुचप्रगट देखियतआनँद कंचुकि भूली॥विद्रुमफटिकपची परदा छबि लाल रंध्रकी रेख । मनहु तुम्हारे दरशन कारण भूले नैन निमेष ॥ चितदै अवलोकहु नँदनंदन पुरी परमरुचि रूप । सूरदास प्रभु कंस मारिकै होहु यहांके भूप ॥६१॥ मथुरा हरषित आजु भई ।ज्यों युवती पति आवत सुनिकै पुलकित अंग भई॥ नवसत सजि शृंगार बनि सुंदरि आतुर पंथ निहारति ।उडत ध्वजा तनु सुरति बिसारे अंचल नहीं सँभारति॥उरजप्रगट महलनपर कलसा लखति पास बनसारी।ऊँचे अटनि छाजकी शोभा शीश उँचाइ निहारी॥जालरंध्र इकटक मग जोवति किंकिणि कंचन दुर्ग ।बेनी लसति कहौ छबि ऐसी महलन चित्र उर्ग ॥ बाजत नगर बाजने जहँतहँ और बजत घरिआर ।सूर श्याम बनिता ज्यों चंचल पगनूपुर झनकार ॥६२॥ राग गुंडमलार ॥नगरके पास जब श्याम आए।देखि रथ चढे बलराम अरु श्यामको गए अक्रूर तिनलैआए॥कंसके दूत जहँतहाँते देखिकै गए नृप पास आतुर सुनाए । उठ्यो झझकारि कर ढाल खड्गहि लिए रंग रण भूमिके महल बैठ्यो ॥कुवलया मल्ल मुष्टिक चाणूरसों होहु तुम सजग कहि सबन ऐंठ्यो। एक पठवत एक कहतहैं आइकै एकसों कहत धौं कहां आए।सूर प्रभु शहर पैठार पहुँचे आइ धनुषके पास जोधा रखाए॥६३॥पुरनारिश्रीकृष्णशोभा परस्पर वदति॥ रागधनाश्री॥मथुरा पुरमें शोर परयो ।गजत कंस वंश सब साजे मुखको नीर हरयो ॥ पीरो भयो फेफरी अधरन हिरदय अतिहि डरयो।नंदमहरके सुत दोउ सुनिकै नारिन हर्ष भरयो ॥इंदुवदन नवजलद सुभग तनु दोउ खग नैन कह्यो।सूर श्याम देखत पुरनारी उरउर प्रेम भरयो॥६४॥राग रामकली॥रथपर देखि हरि बलराम । निरखि कोमल चारु मूरति हृदयमुकुतादाम॥ मुकुट कुंडल पीतपट छबि अनुज भ्राता श्याम । रोहिणीसुत एक कुंडल गौरतनु सुखधाम ॥जननि कैसे धरयो धीरज कहति सब पुरवाम । बोलि पठये कंस इनको करै धौं कहा काम ॥ जोरि कर बिधिसों मनावति लै अशीशै नाम । न्हात बार न खसै इनको कुशल पहुँचैं धाम ॥ कंसको निर्वंश ह्वैहै करत इनपर ताम । सूर प्रभु नँदसुवन दोऊ हंस बाल उपाम६५राग कल्याण॥देख री आजु नैनभरिहरिजूके रथकीशोभा। योग यज्ञ जप तप तीरथव्रत कीजतहै जेहि लोभा ॥ चारु चक्र मणिखचित मनोहर चंचलचमर पताका॥ श्वेत छत्र मनो शशि प्राची दिशि उदय कियो निशि राका ॥ घन तन श्याम सुदेश पीत पट शीश मुकुट उर माला । जनु दामिनि घन रवि तारागण प्रगट एकही काला ॥ उपजत छबि कर अधर शंख मिलि सुनियत शब्द प्रशंसा । मानहु अरुण कमल मंडलमें कूजतहैं

कलहंसा । मदन गोपाल देखियत हैं सब अब दुख शोकबिसारी। पैठे हैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो इहाँ सिधारी ॥ आनंदित जित जननि तात हित कृष्ण मिलन जिय भाए। सूरदास यदुकुल हित कारण माधो मधुपुरी आए॥६६॥ राग मलार॥ वे देखो आवतहैं ब्रजते बने वनमाली। घन तन श्याम सुदेह पीतपट सुंदर नैन विशाली ॥ जिन पहले पलना पौढे पय पीवत पूतना दाली । अघ बक बच्छ अरिष्ट केशि मथि जलते काढयो काली॥ जिन हति शकट प्रलंब तृणाव्रत इंद्र प्रतिज्ञा टाली । एते पर नहिं तजत अघोडी कपटी कंस कुचाली ॥ अब विधु वदन विलोकि सुलोचन श्रवण सुनतही आली। धन्य सु गोकुल नारिसूर प्रभु प्रगटप्रीतिप्रतिपाली॥६७॥ रागभैरव॥ एई माधो जिन मधु मारे री। जन्मतही गोकुल सुख दीन्हों नंददुलार बहुत सारे री ॥ केशी तृणावर्त्त वृषभासुर हती पूतना जब बारे री । इंद्रकोप वर्षत गिरि धारचो महाप्रलय ब्रजके टारे री ॥ बलसमेत नृपकंस बोलाए रचे रंग अति भारे री । सूर अशीशदेति सब सुंदरि जीवहिं अपनी माँ प्यारे री ॥६८॥ राग बिहागरो॥ भएसखि नैनसनाथहमारे। मदनगोपालदेखतहि सजनीजबदुखशोक बिसारे॥ पठएहैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो इहां सिधारे। मल्लयुद्ध प्रति कंस कुटिल मति छल करि इहां हँकारे ॥ मुष्टिक अरु चाणूर शैलसम सुनियतहैं अतिभारे । कोमल कमल समान देखियत ये यशुमतिके बारे। ह्वै यह जीति विधाता इनकी करहु सहाय सबारे । सूरदासचिरजीवहु युग युगदुष्ट दलैं दोउ नंददुलारे॥६९॥ अथ दूसरीलीला अक्रूरकी रागमारू॥ यमुनतट आइ अक्रूर अन्हाए। श्याम बलरामको रूप जलमें निरखि बहुरि रथ देखि आचरज पाए॥ किधौं प्रतिबिंब यह जलहिमें देखतो किधौं निजरूप दोउ हैं सुहाए । चकित होइ नीरमें बहुरि बुडकी दई सह सुता सिंधु तहँ दरश पाए ॥ दोउ करजोरि करि बिनयबहुबिधि करीं लियो जब रूप तब प्रभुदुहाई । निकसि कै नीरते तीर आयो बहुरि ताहिढिगबोलि बोले कन्हाई ॥ कहा तुम और देखत हुते तात तुमकह्यो सब जगत तुमहीं भुलायो। गति तुम्हारी न जानै कोऊ तुम बिना राख प्रभु राख मैं शरण आयो॥ हरि कह्यो चलौ मथुरापुरी देखिए सहित अक्रूर पुनि तहां आए। सूर प्रभु कियो विश्राम सब निशि तहां बोधि अक्रूर निजघर पठाए॥७०॥ अध्याय॥४१॥ श्रीकृष्ण मथुरापुरआगमनहेतु॥ रागभैरव॥ भोर भयो जागे नँदलाल । नंदराइ निरखत मुख हरषे पुनि आए सब ग्वाल ॥ देखि पुरी अति परम मनोहर कंचनकोट विशाल । कहन लगे सब सूर प्रभूसों होहु इहां भूपाल ॥ ७१॥ राग परज ॥ हरि बल शोभित यों अनुहार। शशि अरु सूर उदैभए मानो दोऊ एकहि बार॥ ग्वालबाल सँगकरत कौतूहल गवनपुरी मंझार । नगरनारि सुनि देखन धाईं रतिपति गेहबिसार ॥ उलटि अंग आभूपण साजत रही न देहसँभार। सूरदास प्रभु दरश देखिकै भईं चकृत न बिचार ॥७२॥ रागधनाश्री वे देखो आवत दोऊजन । गौर श्याम नट नील पीत पट जनु दामिनी मिलीघन ॥ लोचन बंक बिशाल चितैकै हरत तबै सबके मन। कुंडल श्रवण कनकमणि भूषित जडित लाल अति लोलमीन तन॥ वंदन चित्रविचित्र अंग शिर कुसुमसुवास धरे नँदनंदन। बलिबलि जाउँ चलहिं जेहिमारग संग लगाइ लेत मधुकरगन ॥ धन्य सुभूमि जहां पग धारे जीतहिंगे रिपु आजु रंगरन। सूरदासवैनगर-नारि सब लेत बलाइ वारि अंचलसन ॥ ७३ ॥ अथ रजकवधहेतुरागरामकली॥ नृपतिरजक अंबर नृप धोवत। देखे श्याम राम दोउ आवत गर्वसहित तिन जोवत॥ आपुसहीमें कहत हँसतहैं प्रभु हिरदय यह सालत। तनकतनकसे ग्वाल छोहरन कंस अबहिं वधि घालत॥ तृणावर्त प्रभु आहि हमारो इनहीं मारयो ताहि। बहुत अचगरीयहि करिराखी प्रथममारिहैंयाहि॥ जाको नाम श्याम सोइखोटो तैसेइ

हैं दोउ वीर।सूर नंद वितुपुत्र कहाए ऐसेजाए हीर॥७४॥राग बिलावल॥अंतर्यामी जानिकै सबग्वाल बोलाए।परखिलिए पाछेनको तेऊ सब आए॥ सखावृंद लै तहां गए बूझन तेहि लागे। नृपति पास हम जाहिंगे अंबर कछु माँगे॥हँसे श्याम मुख हेरिकै धोवत गरबानो।मारत मारत सातके दोउ हाथ पिरानो॥ अबहीं दैहैं आइकै कछु हम लैहैं। पहिरावन जो पाइहैं सो तुमहूं दैहैं॥ की पहिलेही लेहुगे हम इहै बिचारे।देहु बहुत गुण मानिहैं आधीन तुम्हारे॥मार मार कहि गारि दै धिग गाइ चरैया। कंसपासहै आइए कामरी वोढैया॥बहुरि अरसते आनिकै तब अंबर लीजो। अरस नाम है महलको जहां राजा बैठ।गारी दैदै सब उठे भुज निजकर ऐंठ॥ पहिरावनकोजुरि चले पैहो मछनसों। सूर अजाके भोग ए सुनिलेहु नमोसों॥७५॥राग बिलावल॥हम माँगतहैंसहज-सों तुम अति रिसकीन्हों। कहा करैं तो जाहिंगे जो तुम हमहिं न दीन्हों॥रिसकरियतक्योंसहज हौ भुज देखत ऐसे। करि आए नट स्वांगसे मोको तुम वैसे॥हमहिं नृपतिसों नात है ताते हम माँगे। बसन देहु हमको सबै कहैं नृपके आगे॥ नृप आगेलौं जाहुगे बीचहि मरिजैहो।नेक जिवनकी आश है ताहू बिना ह्वैहो॥ नृप काहेको मारिहै तुमहीं अब मारत। गहर करत हमको कहा मुख कहा निहारत॥ सूर दुहुँन मैं मारिहौं अति करत अचगरी। बसत तहांबुधिते सिथेवह गोकुल नगरी॥७६॥राग बिलावल॥ श्याम गह्यो भुज सहजही क्यों मारतहमको।कंसनृपतिकी सौंह हैपुनिपुनि कही तुमको॥ पहुँचाकरसों गहिरहे जिय संकटमेल्यो। डारिदियोताहिशिलापर बालक ज्यों खेल्यो॥ तुरत गयो उडि स्वर्गको ऐसे गोपाला। जन्म मरनते रहिगयो वह कियो निहाला॥रजकभजेसबदेखिकै नृप जाइपुकाऱ्यो।सूरछोहरननंदकेनृपसेठिहि माऱ्यो॥७७॥ गौरी यह सुनिकै नृप त्रास भऱ्यो। सबन सुनाइ कही यह वाणी इह नँदनंद कह्यो॥ मारौ श्याम राम दोउ भाई गोकुल देउ बहाइ। आगे दैकै रजक मरायो स्वर्गहि देहु पठाइ॥ दिनदिन इनकी करौं बडाई अहिर गए इतराइ।तौ मैं जो वाहीसों कहिकै उनकी खाल कढाइ॥ सूर कंस इह करत प्रतिज्ञा त्रिभुवन नाथ कहाए॥७८॥रागबिलावल॥ रजक मारि हरि प्रथमही नृपवसन लुटाए। रंग रंग बहु भाँतिके गोपन पहिराए॥ आए नगर लगारको सब बने बनाए॥ इकटक रहीं निहारिकै तरुणिन मनभाए॥ जैसी जाके कल्पना तैसेहि दोउ आए।सूर नगर नर नारिकै मन चित्त चोराए॥७९॥एइवसुदेवकेदोउढोटा।गोरश्याम नट नील पीत पट कलहंसनके जोटा॥ कुंडल एक काम श्रुति जाके श्रीरोहिणिको अंश। उर वनमाल देवकीको सुत जाहि डरतहै कंस॥ लैराखे व्रज सखा नंदगृह बालक भेष दुराइ। सम बल बैस विराट मैनसे प्रगट भएहैं आइ॥ केशी अघ पूतना निपाती लीला गुणनि अगाध।सूर श्याम खलहरन करन सुख अभयकरन सुरसाध॥८०॥राग रामकली॥ येइ कहियत वसुदेवकुमार। कंसत्रास मनमात पठाए कीन्हें नंददुलार॥ प्रथम पूतना इनहिं निपाती काग मरत उठि भाज्यो। शकटातृणा इनहिं संहाऱ्यो काली इनहिं निवाज्यो॥अघाबका संहारन एई असुर सँहारन आए। सूरज प्रभु हितहेतुभावकैयशुमतिबालकहाए॥८१॥राग नट॥ वेहैंरोहिणीसुत राम। गौर अंग सुरंग लोचन प्रलयकैसे ताम॥ एक कुंडल श्रवणधारी दोत दरशीग्राम। नील अंबरअंगधारी श्याम पूरणकाम॥ महा जे खल तिनहुँते अति तरतहैं एक नाम। ब्रह्म पूरण सकल स्वामी रहे ब्रजनिशिधाम॥ताल बन इन बच्छ माऱ्यो ब्रह्म पूरणकाम।सूर प्रभु आकरपि ताते संकर्षणहै नाम॥८२॥ राग रामकली॥ एहैं देवकीसुत श्याम। मुकुट शिर शुभ श्रवणकुंडल करत पूरणकाम॥ महा जे खल

तिनहुँते अति तरत हैं इक नाम। ब्रह्मपूरण सकलस्वामीरहेव्रजवसिधाम॥ नंदपितुमातायशोदा बाँधि ऊखलदाम। लकुट लैलै त्रास कीन्हों करयो इनपर ताम॥ ताहिमान्योहेतुकरिइनहँसति व्रजकी वाम। सूर धनि नँद धन्य यशुमति धन्य गोकुल ग्राम॥ ८३ ॥ अध्याय ॥ ४२। हरि धनुष भूमि आगमन कूबरी उद्धार॥ राग मारू॥ धनुषशाला चले नंदलाला। सखा लिए संग प्रभु रंग नाना करत देव नर कोउ न लखहिं करत ख्याला॥ नृपतिके रजकसों भेंट मगमें भई कह्यो दे वसन हम पहरि जाहीं। वसन ए नृपतिके जासुके प्रजा तुम ए वचन कहत मनडरतनाहीं॥एकही मुष्टिका प्राण ताके गएलए सब वसन कछु सखन दीन्हें। आइ दरजी गयो बोलि ताको लयोसुभगअँग सजत उन बिनय कीन्हें॥ यों सुदामा कह्यो गेह मम अति निकट कृपाकरि तहांहरिचरणधारी। धोइ पदकमल सो हार आगे धरी भक्तितें तासु सब काज सारी॥लिएचंदन बहुरिआनिकुबिजा मिली श्यामअँग लेप कीयो बनाई। रीझि तेहि रूद दियो अंग सूधो कियो वचन शुभ मानि निजगृह पठाई॥ पुनि गए तहां जहं धनुष बोले सुभट हौस मन जिनि करौ बन-विहारी। सूर प्रभु छुअत धनु टूटि धरणी परयो शोर सुनि कंस भयो भ्रमित भारी॥ ८४॥ दूसरी लीला धनुषयज्ञकी विस्तार वदत॥राग गुंडमलार॥ श्याम बलराम गए धनुषशाला। लियो रथते उत-रि रजक मारयो जहां कंदराते निकसि सिंह बाला॥ नंद उपनंद सँग सखा एक थलराखि दोउ बने आवहीं वीर जोटा। असुरसैना खडे देखिकै वे डरे धनुप चहुँ पस रिपु घुटा घोटा॥घेरिलीन्हें श्याम बलरामको तहां बोलि सब उठे हरि धनुषतोरो। सूर तुमको सुनैं भुजनिबलचंड अति हँसत हरि करयो यह वैर जोरौ॥८५॥ राग बिहागरो॥ हमको नृप यहिहेतुबोलाए॥कहांधनुषकहँ हम अति बालक कहि आश्चर्य सुनाए॥ ठाढे शूर बीर अवलोकत तिनसों कहौ न तोरैं। हमसों कहौ खेल कछु खेलैं यह कहिकहि मुख मोरैं॥कंसएकतहां,असुर पठायो इहैकहतवहआयो। बनै धनुप तोरे अब तुमको पाछे निकटबोलायो॥बालकदेखिगहनभुजलाग्यो ताहितुरतही मारयो। तोरि कोदंड मारि सब योधा तब बलभुजा निहारयो॥जाकेअस्त्रतिनहिं तेहिमारयोच लेसामुहीं खौरी। सूरसु कुबरी चंदनलीन्हेंमिलीश्यामकोदौरी॥८६॥राग धनाश्री॥प्रभुतुमकोचंदनमैंल्याई॥ गह्यो श्यामकर कर अपनेसों लिए सदनको आई॥ धूप दीप नैवेद्य साजिकैमंगलकरे बिचारी। चरण पखारि लियो चरणोदक धनिधनि कहि दैत्यारी॥मेरो जनम कल्पना ऐसी चंदन परसौं अंग। सूर श्यामजनके सुखदायक बँधे भावरजु रंग॥८७॥राग गुंडमलार॥कूबरीनारि सुंदरीकीन्हीं। भावमें वास बिनभाव नहिं पाइए जानि हिरदय हेतु मानिलीन्हीं॥ग्रीव कर परसिपग पीठितापर दियो उर्वशी रूप पटतरहि दीन्हीं। चित्त वाके इहै श्याम पति मिलैं मोहिं तुरत सोइ भई नहिं जात चीन्हीं॥ ताहि अपनी करी चले आगे हरी गए जहँ कुवलया मल्ल द्वारयो। बीच माली मिल्यो दौरि चरणन परयो पुहुपमाला श्याम कंठ धारयो॥ कुशल प्रसननि कहे तुरत मनकाम लहि भक्तवत्सल नाम भक्त गावैं। ताहि सुखदै चले पौरिही ह्वै खरे सूरगजपालसोंकहि सुनावैं॥८८॥अध्याय४३कुवलयाहस्तीवमुष्टिकचाणूरवध॥रागकान्हरो॥सुनहु महावत बात हमारी। बारबार संकर्षण भाषत लेत नहीं ह्यांते गज टारी॥ मेरो कह्यो मानि रे मूरख गज समेत तोहि डारौंमारी। द्वारेखडे रहेहैं कबके जिनिरे गर्वकरै जियभारी॥न्यारोकरिगयंद तूअजहूँ जानदेहिकाअंकुशमारी। सूरदास प्रभु दुष्टनिकंदन धरणीभार उतारनकारी ८९॥ राग गुंडमलार॥ बारबार संकर्षणभाषतबारन वनि वारन करि न्यारो। वारन छाँडिदेत किन हमको तू जानतमतंग मतवारो॥बाहर खडेबात कुन पेरी त्रिभुवनपति जिनि जानै बारो। बादिहि मरिजैहै पल भीतर कहेदेत नहिं दोपहमारो॥

बात सुनत रिस भरचो महावत तुमहिं कहा इतनो रे गारो । बादत बडे शूरकी नाँई अबहिं लेतहौं प्राणतुम्हारो॥वारनहिं करौंवारनसहितपटकिहौं बावरेबातकहि मुखसँभारे।बादिमरिजाइगो वारन-हिं छोडिदे वदत बलराम तोहिं बारबारे॥बात मेरी मान गर्वबोलैकहा काल किनिदेखि इतरात कारे।वाम कर गहि शुंडि डारिहौं अमरपुर हांक दै तुरत गजको हँकारे॥ बाजसो टूटि गजराजहांकत परचो मनो गिरि चरण धरि लपकिलीन्हें।वारि बांधे वीर चहूँघा देखतहि वज्रसमथाप बल कुंभ दीन्हों॥कूक पारचो लपकिघींचमनडरचो मतुगंडमधि रंध्र झरवोसुखानो॥क्रोधगजपालके ठिठकिहाथीरह्यो देतअंकुश मसकि कहा सकानो ।बहुरितातो कियोडारितिनपरदियोआयलपटे सुतहु नंदकेरे।सूर प्रभु श्यामबलराम दोउइतै उत बीच करि नाग इत उतहि टेरे॥९०॥राग गुंडमलार॥ क्रोध गजराज गजपाल कीन्हों। गरजि घुमरात मद मार गंडनि स्रवत पवनते बेग तेहि समै चीन्हों ॥ चक्र सो भ्रमत चकृत भए देखि सब चहूँघा देखिए नंद ढोटा । चमकि गए वीर सब चका चौंधीलगी चितै डरपे असुरघटा घोटा॥नील अंबर धौल बरन बलरामबनि पीतअंबर श्याम अंग शोभा।सूर प्रभुचरित पुर नारि देखति खडी महलपर आशिषा देतिलोभा॥९१॥कहतहलधर कह्यो मानि मेरो ।अखिल ब्रह्मण्डके नाथ हैं ह्याँखरे गज मारि जीव अब लेहुँ तेरो॥ यहसुनतरिस भरचो दौरिबेको परचो सूँडि झटकत पटकि कूक पारचो । घात मन करत लै डारिहौं दुहुँनि-पर दियो गज पेलि आपुन हँकारचो॥ लपकि लीन्हों धाइ दबकि उर रहे दोउ भ्रम भयो गजहि कहाँ गए वैधौं।अरचो दै दशन धरनी कढे बीरदोउ कहत अबहीं याहि मारकैधौं।खेलिहैं संगदै हाँक ठाढे भए श्यामपाछे राम भेय आगे।उतहि वै पूंछ गहिजात ए शुंडि छुैफिरतगज पास चहुँ हँसन लागे॥नारि महलन खरीसबै अतिही डरीं नंदकेनंदगज दोउ खिलावैं।सूरप्रभुश्यामबलराम देखति तृषित बचैं इक बेर विधिसों मनावैं ॥ ९२॥खेलतगजसंग कुँवरश्यामरामदोऊ।क्रोधद्विरद व्याकुल अति इनको रिस नेक नहीं चकृत भए योधा तहँ देखत सबकोऊ ॥ श्याम झटकि पूंछ लेत हलधर कर शुंडिदेत महलमहल नारि चरित देखत यह भारी। ऐसेआतुरगोपाल चपल नैन मुखरसाल लिए करन लकुट लाल मनो नृत्यकारी । सुरगण व्याकुल विमान मनमन यहकरत ज्ञान बोलत यह वचन अजहुँ मारचो नहिं हाथी । सूरज प्रभु श्यामराम अखिल लोकके विश्राम सुर पूरन काम करन नाम लेत साथी ॥ ९३ ॥राग सोरठ ॥ तब रिस कियो महावत भारी । जो नहिं आजु मारिहौं इनको कंस डारिहै मारी ॥ अंकुश राखि कुंभपर करष्यो हलधर उठे हँकारी। धायो पवनहुते अति आतुर धरणी दंत खँभारी ॥ तबहारिपूंछ गह्योदक्षिणकरकयुकओरशिरवारी। पटक्यो भूमि फेरि नहिं मटक्यो लीन्हें दंत उपारी॥ दुहुँ कर द्विरददशन इकइक छबि निरखति पुर नरनारी । सूरदास प्रभु सुरसुखदायक मारचौ नाग पछारी ॥९४॥ दूसरी लीला हस्तीवध॥राग मारू नवल नँदनंद रँगद्वार आए। तडितसे पीतपट काछनी कसे कटि खौर चंदन किये मुखसुहाए॥ निरख्यो रूप जिन भयो सोइ सोइ मगन मातु पितुको पुत्रभाव आयो । ब्रह्म पूरण मुनिन परम सुंदर त्रियन कालके रूप सुभटन जनायो ॥ मातुलको देखि हरि कह्यो यों विहँसिकरि पंथतेटारि गजको महावत ।दियो फटकारि उन धारि अभिमान मन शुंडते दौरि गह्यो ताडि आवत ॥ दंत युग विवि युग चरन भीतर निकसि युग करन पूँछको गह्योजाई । महाकरिसिंहभेंटतमहाउरगको महाबल गरुडज्यों गहत धाई ॥ कबहुँ लैजात उत इतै ल्यावत कबहुँ भ्रमत व्याकुल भयो मतुल भारी।गयँद ज्यों गेंदको पटकि हरि भूमिसों दंत दोउ लये निजकर उपारी ॥ भभकिकै दंतते

रुधिरधारा चली छीट छबि बसनपर भई भारी।केसरी चीर पर अबिर मानो पर्‌यो खेलते फागु डार्‌यो खिलारी॥मातुलहु तजि प्राण गयो निर्वाणको सिद्ध गंधर्व जैजै उचारैं।देखि लीलाललित सूरके प्रभूकी नारि नर सकल तन प्राण वारैं॥९५॥राग नट॥ नवल नँदनंद रँगभूमि आए। संग बलरामअभिराम शशिसूर ज्यों निरखिआपनेछबिसों सोहाए॥द्वारगजराज लखि पीतपटकटि कसत मंद मृदु हँसत अति लखत भारी। कछु न कहिपरति तब जबहि फिरि हेरिकै छबीली हरषि पति आसवारी॥ गर्वको गिरि मनो चलत पाँइन तैसं कुवलया प्रवल रिस सहित धायो। बालकै मूस ज्यों पूंछ धरि खेलिए तैसं हरि हाथ हाथी गिरायो॥ गहि पटकि पुहुमिपर नेकनहिं मटकियो दंत मनु मृणालसे ऐंचि लीन्हें। कंध धरि चले दोउ वीर नीके बने निरखि पुरजन प्राण वारि दीन्हें॥शैलसे मल्ल वै धाइ आए शरन कोउ लगे गोड पर थरथराने। कंसके प्राण भयभीत पिंजरा जैसे नव विहंगम मरत फरफराने॥ मधुपुरी युवति सब कहति अति रति भरी देखु री देखु अँग अँग लोनाई। सुनत श्रवणन रही देखि री तेइ सही मधुर मूरति सुरतिपति न पाई॥धन्य राधा केलि वृंदावन कुंज है सबै देखौ माई हम अभागी। धन्य ब्रज बाल नंदलाल गिरिधरनको नित्य निरखि रहति प्रेम पागी। अबलसों अबल भए सबलसों सबल भए:ललितसों ललित तनु मनु प्रकाशी॥ सूर प्रभु ज्ञान करि ध्यान जिन जैसि लई मात पितु दुःख डारे विनाशी॥९६॥राग बिलावल॥ देखो री आवत बै दोऊ। मणि कंचनकी राशि ललिलअति यह उपमा नहिं कोऊ॥ कैधौं प्रात मानसरवरते उडि आए दोउ हंस। इनको कपट करै मथुरापति तो ह्वैहै निर्वंस॥जिनके सुने करत पुरुषारथ तेई हैं की और। सूर निरखि यह रूपमाधुरी नारि करतमनडोर॥९७॥राग कान्हरो॥सजनीयेईहैंगोपालगुसाँई।नंदमहरके ढोटा जिनकी सुनियत बहुत बडाई॥नैनन रूप निरखि देखौं बडभाग परम निधिपाई।चंद्रचकोर मेघ चातकलौं अवलोकोमनलाई॥ सुंदर श्याम सुदेश पीतपट भुजचंदनचरचितकीन्हें।नटवर भेष धरे मनमोहन गज युग दशन कंध धरिलीन्हें॥ नूपुर चारुचरणकटिकिंकिणिवनमालाउर- पर सोहै।कर कंकण मणि कंठ मनोहर सो को युवति जो न मनमोहै॥परमरुचिर मणिकंठकिरन- गन कुंडल मुकुट प्रभा न्यारी। विधुमुख मृदु मुसकानि अमृतसम सकल लोक लोचन प्यारी॥ सत्य शील संपन्न सुमूरति सुर नर मुनि भक्तन भाए। सूरदास प्रभु दुष्टबिनाशन गोकुलतेमथुरा आए॥ ९८॥ राग बिलावल॥ एइ सुत नंदअहीरके।मार्‌योरजकवसनसबलूटेसंगसखाबलवीरके॥ कांधे धरि दोऊ जन आए दंत कुवलया धीरके। पशुपति मंडलमध्य मनो मणि क्षीरधि नीरधि नीरके॥ उडि आए तजि हंस मात मनो मानसरोवरतीरके। सूरदास प्रभु तापनिवारण:हरन संत दुख पीरके॥ ९९॥ राग कल्याण॥हँसतहँसत श्याम प्रबल कुवलया मार्‌यो। तुरत दांत लिए उपारि काँधेपर चले धारि निरखत नर नारि मुदित चकृत गज संहार्‌यो॥ अतिहीकोमलअजान सुनत नृपति जिय सकान तनु बिनु जनु भयो प्राण मल्लनिपै आए। देखतही शंकि गए काल गुण बिहाल भए कंस डरन घेरिलिए दोउ मन मुसुकाए॥ असुर वरी चहूँ पास जिनके बशभुव अकाश मल्लनपै आए करि नास जिय बिचारै। सबै कहत भिरहु श्याम सुनत रहत सदा नाम हारि जीति घरहीकी कौन काहि मारै॥ हँसि बोले श्याम राम कहा सुनत रहे नाम खेलनको हमहिं काम बालकसँग डोले। सूर नंदके कुमार यह है राजस बिचार कहा कहत बार बार प्रभु ऐसे बोले॥ २६००॥ रंगभूमि आए अति नंदसुवन बारे।निरखति ब्रजनारि नेह उरते

न बिसारे॥देखो री मुष्टिक चाणूर इनि हँकारे।कैसे ये बचैं नाथ साँस उरध डारे॥ रजक धनुष जोधा हति दंत गज उपारे। निर्दय इह कंस इनहिं चाहतहै मारे॥कहां मल्ल कहां अतिहिकोमल ए भारे। कैसी जननी कठोर कीन्हें जिन न्यारे॥ बार बार इहै कहति भरि भरि दोउ तारे। सूरज प्रभुबल मोहन उरते नहिं टारे॥१॥राग गुंडमलार॥बोलि लीन्होंकंस मल्ल चाणूरको कहारेकरत क्यों बिलम कीन्हों। वंश निर्वंश करि डारिहौं छिनकमें गारि दैदै ताहि त्रास दीन्हों॥ शत्रु नान्हों जानि रहे अबलौं बैठि जन आपनेको मारिडारौ। द्विरदको दंत उपठायतुम लेतहे उहै बल आजु काहेन सँभारौ॥भली नहिं करी तुम राखि राख्यो उनहिं इहै कहि तुरत वाको पठायो। कछु क्रोध कछु त्रास कछु सोच कछु शोक करै साहस रंगभूमि आयो॥ परस्पर कहि सबन नृपति त्रास्यो मोहिं सुनहु रे बीर अबलौं न मान्यो। की मरौ की मारिडारियो दुहुँनिको होइ सो होइ यह कहत रान्यो॥निरखि दोउ वीर तनु डरे मनहीं महा इहै बुधि करै ज्यों नाशकीजे। लखति पुरनारि प्रभु सूर दोउ मारिहैं कहतिहैं नृपतिपै सुयश लीजै॥ २ ॥राग धनाश्री॥कहति पुर नारि यह मन हमारैं। रजक मारचो धनुष तोरि द्वै खंड करि हत्यो गजराज त्यों इनहु मारैं॥ तृषित अति नारि सब मल्ल ज्यों ज्यों कहैं लरत नहिं श्याम हमसंग काहे। परस्पर मत करत मारिडारौ इनहिं लखत ए चरित निमिषौ न चाहे॥ कहा हैहै दई होन चाहति कहा अबहिं मारत दुहुँन हमहि आगें॥सूर करजोरिअंचल छोरि बीनवें बचैं ए आजुबिधि इहैमांगें ३॥ ॥राग कल्याण॥देखो री मल्ल इनहिं मारनको लोरैं। अतिही सुंदर कुमार यशुमति रोहिणी वार बिलखति यह कहति सबै लोचन जल ढोरैं॥ कैसेहुं ए बचैं आजुपठए धौंकौनकाजनिठुरहियो वाम ताको लोभही पठाए। एतो बालक अजान देखौ उनके सयान कहा कियो ज्ञान इहां काहेको आए॥ कहाँ मल्ल मुष्टिकसे चाणूर शिलाभंजन कहत भुजा गहि पटकन नंदसुवन हरषैं। नगर नारि व्याकुल जिय जानत प्रभु सूरश्याम गर्वहतन नामध्यान करिकरि वे हरषैं॥४॥श्रीकृष्णवचन मल्लप्रति॥रागगुंडलमार॥ सुनौ हो वीर मुष्टिक चाणूर सबै हमहि नृप पास नहिं जान देहौ। घेरि राखे हमहिं नाहिं बूझे तुमहिं जगतमें कहा उपहास लैहौ॥ सबै कैहैंइहै भली मति तुम यहै नंदके कुँवर दोउ मल्ल मारे। इहै यश लेहुगे जान नहिं देहुगे खोजही परे अब तुम हमारे॥ हम नहीं कहैं तुम मनहिं जो यह बसी कहतहौं कहा तैं करै कैसी। सूर हमतन निरखि देखिए आपुको बात तुम मनहिं यह बसी नैसी॥५॥रागतोडी॥ जबहीं श्याम कही यह बानी। यह सुनिकै युवती बिलखानी॥मल्लन कह्यो हमहिं तुम देखौ। अपनो बल अपनो तनु पेखौ॥ चितए मल्ल नंदसुत क्रोधा। कालरूप वज्रांगी जोधा॥ भुजा ऐंठि रज अंग चढायो। गांस धरे हरिऊपर आयो॥ श्याम सहज पीतांबर बांधे।हलधर निरखत लोचन आधे॥तब चाणूर कृष्णपर धायो। भुजभुज जोरि अंग बल पायो॥ प्रथम भए कोमल तन ताको।शिथिल रूप मनमें लस वाको॥तब चाणूर गर्व मन लीन्हों।दुर्गप्रहार कृष्णपर कीन्हों॥फूलहुते अति श्रम करि मान्यो।तेहि अपने जिय मारचो जान्यो॥हरष्योमल्लमारि भयो न्यारो। कहनलग्यो मुख अहिर बिचारो॥ हँसत श्याम जब देखत ठाढे। सोच परचो तब प्राणनि गाढे॥फिरि कहिकहि हरि मल्ल हुंकारचो। मनु कंदरते सिंह पुकारचो॥ हांक सुनत सब कोउ भुलान्यो। थरथराइ चाणूर सकान्यो॥ सूर श्याममहिमा तब जान्यो। निहचै मीचु आपनो आन्यो॥६॥राग धनाश्री॥ भिरचो चाणूरसों नंदसुत बाँधि कटिपीतपट फेंट रणरंग राजै। द्विरद रद कर कलित भेष नटवर ललित मल्ल उर सच्छि तल ताल बाजैं॥ पीन भुज लीन जे

लक्ष रंजित हृदय नीलघन शीत तनु तुंग छाती । देखि रहीं भेष अति प्रेम पुरनारि सब वदति तजि भीर रतिरीतिराती॥मत्त मातंग बल अंग दंभोलि दल काछनी लाल गजमालसोहे।कमल-दलनैन मृदुबैन बंदित वदनदेखिसुरलोक नरलोक मोहे॥बाहुसोंबाहु उर जानुसोंजानुकीचरणसों चरण धरि प्रगटपेलैं।धमकदै घूँघरनि भीरभयबंधुजनसुभटपद पाणि धरिधरनिमेलैं॥चित्तसोंचित्त मनिबंध मनिबंधसों दृष्टिसों दृष्टिधरि शिर चपैया।जानि रिपुहानि तजिकानियदुराजकीबबकि उठि फूलि वसुदेवरैया ॥ ऐसेही राम अभिराम सुर शेष वपु गहि वमुष्टिक महामल्लमारचो।तोरि निजजनक उर केश गहि कंसनर सूर हरि मंचते दुष्ट डारचो॥७॥राग भैरो॥श्याम बलरामरँगभूमि आए।बली लखि रूप सुंदर परम देखि यों प्रबल बलजानि मनमें सकाए॥कह्यो गजकुवलिया हयो भयो गर्व तुम जानि परिहै भिरत सँग हमारे । कालसों भिरैं हम कौन तुम बापुरे पै हृदय धर्म रहियो बिचारे॥श्याम चाणूर बलबीर मुष्टिकभिरे शीश सों शीश भुजभुज मिलावैं।वेउनैगहत वे दौरि उनको गहत करत बल छल नहीं दांव पावैं॥धरि पछारचो दोउ बीर दुहुँ मल्लको हरषि कह्यो सुरनए नंद दोहाई। सूर प्रभु परस लहि लह्यो निर्वान तेहि सुरन आकाश जयध्वनिसुनाई ॥८॥राग गुंडमलार॥गह्यो कर श्याम भुजमल्ल अपनेधाइ झटकि लीन्हों तुरतपटकि धरनी।भटकअति शब्द भयो खुटक नृपके हिए अटक प्राणन परचो चटक करनी ॥ लटकि निरखन लग्यो मटक सब भूलिगयो हटकि गयो गटकि रह्यो मीचु जागी ॥ मुष्टिकै मरदि चाणूर चुरुकुट करचो कंसको कंप भयो उई रंगभूमि अनुरागरागी । मल्ल जेजे रहे सबै मारे तुरतअसुर जोधा सबै तेउसँहारे॥धाइ दूतन कह्योमल्लकोउनहिं रहे सूर बलराम हरि सब पछारे॥९॥अध्याय ॥ ४४ ॥ कंसवधन उग्रसेनराजहेतु राग कल्याण॥ मारे सब मल्ल नंदके कुमार दोऊ। कोट सबन भूलिगए हांकदेतचकृत भए लपकिलपकिहए तुरत उबरचो नहिं कोऊ॥ जोधा चितवतहि मरे हहरि हहरि धरनि परे ज्वाला ज्यों जरे डरे सब भए बिनप्राना। तारागन लिपितहोत जैसे दिनकेप्रकाशयह सुनिनृप भएनिराश रह्यो नहींज्ञाना॥गलबल सब नगर परचोप्रगटे यदुवंशी। द्वारपाल इहै कही जोधाकोउबचेनाहिं कांधेगजदंत धरेसूरब्रह्मअंशी ॥१०॥राग गुंडमलार॥नंदके नंद सबमल्ल मारे निदरि पौरिया जाय नृपपै पुकारे॥सुनत ठाढो भयो हांकतिनको दयो दनुजकुल दहन तातन निहारे। सुभट बोले सबै आइहै पुनि कबै मारिडारे सबै मल्ल मेरे । अचगरी करि रहे बचन एई कहे डर नहीं करत सुत अहिरकेरे ॥ रंगमहलनि खरचो कहा रे तुम करचो ढाल कर खड्ग तहांते चलावै।जिवत अब जाहुगे बहुरि करिहौ राज नहीं जानतसूर कहि सुनावै॥११॥राग धनाश्री भले रे नंदके छोहरा डर नहीं कहा जो मल्ल मारे बिचारे । बारही बार दै हांक ये गए कहां आपने सम असुर ते हँकारे ॥ पौरि गाढौ करौ द्वार बीरनि कहे आप ललकारि मुख गारि दैकै । बहुरि घर जाहुगे धेनु दुहि खाहुगे जान दैहौं तुमहिं प्राण लैकै ॥ कोउ नहिं रे वहां लौटिआवत कहां पग द्वैक धरणि हरि सन्मुख आए। चकृत ह्वैकै गयो मीच दरशन भयो कहारे मीच यह कहि सुनाए ॥ श्याम बलरामको नाम लैलै कहत मीच आई लेन तुमहिं बाजै । सूर प्रभु देखि नृप क्रोध पूरी घरीकस्योकटिपीतपटदेवराजै ॥१२॥रागमारू॥कंध दंत धरिडोलत रंगभूमि बलहरि । उज्वल सावँल वपु शोभित अंग फिरत फरि ॥ द्वारे पैठत कुंजर मारचो डुलाय धरनी डारचो। मुष्टिक चाणूर शिलप सौशील संहारचो ॥ जिहिं ज्यों जिय रूप बिचारचो तसोई रूप धारचो । देवकी वसुदेव जीयको संताप निवारचो ॥ मल्ल सुभट परे भगार कृष्णको

परिसाने।देखि यह पराक्रम तब कंस जिय बिलखाने ॥दुःखदलन अभय दान करै करन दाने। जो जिहि जबहिं कहैं सबै गोवर्धनराने ॥ कंस सुनि अचेत भयो बजनलगेबाजा।कहि अशीश गगन उठे सिद्ध सुर समाजा ॥ सुभट रहे देखतही रोके दरवाजा। सूर नंदनंदन गए जहाँ कंस राजा॥ १३॥राग मारू ॥नवल नँदनंद रँगभूमि राजैं।श्यामतन पीतपट मनो घनमें तडित मोरके पंख माथे विराजैं॥ श्रवण कुंडल झलक मनो चपला चमकि दृग अरुण कमलदलसे विशाला। भौंह सुंदर धनुष बाणसम शिर तिलक केश कुंचित शोभित भृंगमाला॥हिरदय वनमाल नूपुर चरण लोल चलत गजचाल अति बुद्धि राजै। हंस मनो मानसर अरुन अंबुज सुथल निरखि आनंद करि हरषि गाजै॥कुवलिया मारि चाणूर मुष्टिक पटकि वीर दोउ कंध गजदंत धारे। ढाल तरवारि आगे धरी रहिगई महलको पंथ खोजत न पावंत ॥ लातके लगतशिरतेगयोमुकुट गिरि केश धरि लैचले हरषि सावंत। चारिभुज धारि तेहि चारु दरशन दियो चारिआयुध चहूँ हाथ लीन्हें ॥ असुर तजि प्राण निर्वाणपदको गयो विमलगति भई प्रभुरूप चीन्हें। देखि यह पुहुपवर्षा करी सुरन मिलि सिद्ध गंधर्व जै धुनि सुनाई ॥ सूर प्रभु अगम महिमा न कछु कहिपरत सुर नकी गति तुरत अक्रूर पाई॥ १४॥राग मारू॥देखि नृपतमकिहरिचमकितहांईगएदमकि लीन्हों गिरह बाज जैसे। धमकि मारचो घाउ गुमकि हृदये रह्यो झमकि गहि केश लैचले ऐसे ॥ ठेलि हलधर दियो झेलि तब हरि लियो महलके तरे धरणी गिरायो । अमर जयध्वनि भई धाक त्रिभुवन भई कंस मारचो निदरि देवरायो ॥धन्य बाणी गगन धरणि पातालधनिधन्यहो धन्य वसुदेवताता।धन्य अवतार सुर धरनि उपकारको सूर प्रभु धन्य बलराम भ्राता ॥ १५ ॥ राग बिलावल ॥ जय जय ध्वनि तिहुँलोक भई। मारचोकंसधरणिउद्धारचोओकओकआनंदमई॥ रजक मारिकै दंड बिभंज्यो खेल करत गज प्राण लियो। मल्ल पछारि असुर संहारे तुरत सबनि सुरलोक दियो ॥ पुर नरनारीको सुख दीन्हों जो जैसो फल सोई लह्यो। सूर धन्य यदुबंश उजागर धन्यधन्य ध्वनि घुमरि रह्यो ॥ १६ ॥ राग गुंडमलार ॥ हर्ष नर नारि मथुरा पुरीके । सोच सबको गयो दनुजकुल हयो तिहुँ भवन जैजयो हरष कूबरी के ॥ निदरि मारचो कंस प्रगट देखत सबै अतिहि दिन अल्प नँद भए ढोटा । नैन दोउ ब्रह्मसे परम सोभातसे भक्तको जैसे शुभ हंस जोटा ॥ देवदुंदुभि बजी अमर आनँदभएपुहुपगण वरषहीं चैन जान्यो। सूरवसुदेवसुत रोहिणी नंद धनिधनिमिल्योभुवभारअखिलजान्यो॥ १७ ॥राग रामकली॥ तुरत मारचो कंस देवनाथा। निदरि मारचो असुर पूतना आदिते धरणि पावन करी भई सनाथा ॥ लोक लोकन विदित कथा तुरतहि गई करन अस्तुतिहि जहँ तहां आए। देवदुंदुभि पुहुपवृष्टि जै ध्वनि करैं दुष्ट यहमारि सुरपुर पठाए॥ केश गहि करषि यमुनाधार डारिदै सुन्यो नृपनारि पति कृष्ण मारचो । भई व्याकुल सबै हेतु रोवन लागीं मरनकी तुरत जोहत बिचारचो॥गये तहं श्याम बलराम बोधी सबै कहति तब नारि तुम करी नैसी । नृप सुनहु वाम इह काम ऐसोइ रह्यो जानि यह बात क्यों कहति ऐसी ॥ मरति काहे कहा तुमहिंको यहभई जानि अज्ञान तुम होति काहे। सूर नृपनारिहिहरिवचन मान्यो सत्यहरप हैश्यामसुखसबनिचाहे॥ १८॥ ॥राग कल्याण ॥ रानिन परबोधि श्याम महलद्वार आए। कालनेमिबंश उग्रसेनसुनतधाए॥झुकि चरण परचो आइ त्राहित्राहि नाथा। बहुतै अपराध परे छिनहुमें सनाथा॥महाराज कहिश्रीमुख लियो उर लाई। हमको अपराध क्षमहु करी हम ढिठाई ॥ तबहींसिंहासन पाँउउग्रसेनधारे। छत्र

शिर धराइ चमर अपने कर ढारे ॥ ठाढे आधीन भए देवदेव भाषैं । अपने जनकोप्रसाद सारी शिर राखैं ॥ मोकों प्रभु इती कहा विश्वंभर स्वामी । घटघटकी जानतहौ तुम अंतर्यामी ॥ तौ नृप कहत कहातुमको यह कंती। सेवा तुम जिती करी पुनि देहौं तेती ॥ रजक धनुष गजमल्लन कंस मारि काजा।सूरज प्रभु कीन्हों तब उग्रसेन राजा॥राग बिलावल ॥ उग्रसेनको दियो हरि राज । आनँदमगन सकल पुरवासी चमर ढुरावत श्रीब्रजराज॥ जहाँ तहाँते यादव आए डरेडरे जे गए पराइ। मागध सूर करत सब अस्तुति जै जै जै श्रीयादवराइ ॥ युगयुग विरद इहै चलिआयो भए बलिके द्वारे प्रतिहार।सूरदास प्रभु अज अविनाशीभक्तन हेतुलेतअवतार॥२०॥राग बिलावल॥ मथुरा लोगनि बात सुनी यह उग्रसेनको राज दियो । सिंहासन बैठारि कृपा करि आपु हाथसों चमरलियो ॥ मात पिताको संकट हरिहैं देवन जैध्वनि शब्द कियो। रानी सबै मरतले राखीं उनते प्रभु नहिं और वियो ॥ अबहीं सुनि वसुदेव देवकी हरषित ह्वैहै दुहुँनि हियो। सूरदास प्रभु आइमधुपुरीदरशनतेपुरलोगजियो२१ ॥राग रामकली ॥मथुराकेलोगनसुखपाए।नटवरभेषकाछनी काछे नँदनंदन सँग अक्रूरके आए॥ प्रथमहिं रजक मारि अपनेकर गोपवृंद पहिराए। तोरि धनुष लीला नटनागर तब गजखेल खिलाए॥रंगभूमि मुष्टिक चाणूर हति भुजबल तार बजाए। नगरनारि देहिं गारि कंसको अजगुत युद्ध बनाए॥ वरपहिं सुमन अकाश महाध्वनि देव दुंदुभी बजाए। चढिचढि अमर विमान परमसुख कौतुकअमर छाए॥ कंस मारि सुरराज काज करि उग्रसेन शिरनाए।मात पिता बंदितेछोरिहैं सूर सुयशगुणगाए ॥२२ ॥राग रामकली॥मथुराघरघरनि यहबात। रजक धनुष गज मल्ल मारे तनकसे नँदतात ॥ धन्य माता पिता धनि वह धन्यधनि वह राति। जब लियो अवतार धरणी धन्य धनि सोभात ॥हंसकेसे जोट दोऊ असुर कियो निपात । सूर जोधा सबैमारे कहाजानतघात२३॥अध्याय ॥४५॥ वसुदेवदर्शन कुबिजा गृह आगमन नंदविदा गुरुपुत्रहेतुः॥ सुन्यो वसुदेव दोउ नंदसुवन आए । त्रियासों कहत कछु सुनतिहै री नारि रातिहू सुपन कछु ऐसे पाए ॥ गए अक्रूर तिहि नृपति माँगे बोलि तुरत आए आनि कंस मारे। कहा पिय कहत सुनिहै बात पौंरिया जाय कैहे रहौ मष्ट धारे ॥ दिये लोचन ढारि नारि पति परस्पर कहां हम पापकरि जन्म लीन्हों। सात देखत बधे एक ब्रज दुरि बच्यो इतेपरबाँधिहमपंगुकीन्हों॥मारि डारे कहा बंदिको जीवन धिग मीच हमको नहीं मनन भूल्यो । मरै वह कंसनिर्वसविधना करै सूरक्योंहू होइ निर्मूल्यो॥२४॥ राग जैतश्री॥ इहै कहत वसुदेवत्रियाजिनिरोवहुहो।भाग्यविवशसुख दुःख सकल जग जोवहु हो ॥ जल दीन्हेंकरआनि कहतमुखधोवहुनारी । कहियतहैंगोपालहरन दुख गर्व प्रहारी ॥ कबहुँ प्रगटवै होइंगे कृष्ण तुम्हारे तात। आजु काल्हि हरि आइहैंयहसपनेकी बात ॥ अबजिनि होहि अधीर कंस यम आइ तुलानो । देखत जाइ बिलाइ झार तिनुका करि जानो ॥ ऐसो सपनो मोहिं भयोत्रिया सत्यकरिमानि । त्रिभुवनपति तेरे सुवनहैं तोहिं मिलैंगे आनि॥यह अंतर हरि कह्यो मात पितु कहां हमारे। तहां लैगए अक्रूर श्यामबलराम पधारे । बज्रशिला द्वारे दियो दरशनते गयो छूटि। सहज कपाट उघरिगए ताला कूंची टूटि ॥जोदेखे वसुदेव कुँवर दोउ काके ढोटा आए। दरश दियो तेहि प्रेम प्रथम जो दरश दिखाए ॥ धाइ मिले पितु मातको यह कहि मैं निजुतात। मधुरे दोउ रोवन लगे जिनि सुनि कंसडरात॥तुरत बंदिते छोरि कह्यो मैं कंसहि मारयों । योधा सुभट संहारि मल्ल कुवलया पछारयों ॥ जिय अपने जिनि डर करौ मैं सुत तुम पितु मात । दुख बिसरौ अब सुख करौ अब काहे

पछतात ॥ निहचै जननी जानि कंठधरि रोवन लागी । तब बोले बलराम मातु तुमते को भागी ॥ बारबार देवै कहे कबहूं गोद खिलाए नाहिं । द्वादश बरस कहांरहे मातपिताबलि जाहिं ॥ पुनि पुनि बोधत कृष्ण लिखौनहिं मेटै कोई । जोइ जोइ मनकी साध कहौ मैंकरिहौं सोई ॥ जे दिन गए सु ते गए अबसुख लूटहु मात।तात नृपति रानी जननि जाके मोसो तात॥ जो मन इच्छा होइ तुरत देओ मैं करिहौं । गगन धरणि पाताल जात कतहू नहिं डरिहौं ॥मात हृदयकी जब कही तब मन बढचो अनंद ।महर सुवन मैंतौनहीं मैं वसुदेवकोनंद॥राजकरौदिन बहुत जानिको कहैं अब तुमको। अष्टसिद्धि नवनिद्धि देहुँ मथुरा घर घरको॥रमा सेवकिनी देउँ करि करजोरै दिन याम।अब जननी दुख जिनिकरौ करौ जु पूरनकाम॥धनि यदुवंशी श्यामचहूँ युग चलत बडाई । शेष रूप मैं राम कहत नहिं बात बनाई॥सूरज प्रभु दनुकुलदहन हरन करन संसार ।ते पाए सुत तुमहिं करि करौ जु सुख बिस्तार ॥२५॥राग देवगंधार॥ मेरे माथेराखोचरन। दीनदयालु कंस दुखभंजन उग्रसेन दुखहरन॥परम मुदित वसुदेव देवकी गई पाइन परन । मेरो दोष मेटि करुणा करि लैचल गोकुल धरन ॥ ते जन पार भए मनमोहन जे आए तुव शरन । आए सूरदासके जीवनभवजलनवका तरन॥२६रागरामकली॥ तब वसुदेव हरषित गात।श्यामरामहिं कंठ लाए हरषि देवै मात । अमर देव दुंदुभि शब्द भयो जैजैकार ॥ दुष्टदलि सुखदियो संतन ए वसुदेवकुमार । दुखगयो बहि हरष पूरन नगरके नर नारि ॥ भयो पूरव फल संपूरन लह्योसुत दैतारि।तुरत विप्रन बोलि पठए धेनुकोटि मँगाइ।सूरकेप्रभुब्रह्मपूरण पाइ हरषेराइ॥२७॥रागकाफी॥ आजुहो निसान बाजै वसुदेव राइकै । मथुराके नर नारि उठे सुखपाइकै॥अमर विमानसब कहैं हरषाइकै । फूले मात पिता दोऊ आनंद बढायकै॥ कंसको भँडार सब देत हैं लुटाइकै । धेनु जे संकल्प राखीं लईं ते गनाइकै॥ताँबे रूपे सोने सजि राखीं वै बनाइकै। तिलक विप्रन बंदि दइ वै दिवाइकै । मागध मंगन जन लेत मन भाइकै॥ अष्ट सिद्धि नवनिधि आगे ठाढी आइकै। सब पुर नारि आईं मंगलन गाइकै ॥ अंबर भूषण पठै दईं पहिरायकै।अखिलभुवन जन कामना पुराइकै । पुरजन गन धनु देतहैं लुटाइकै ॥ सूरजन दीन द्वारे ठाढो भयो आयकै।कछू कृपाकरि दीजैमोहूकौं दिवाइकै॥२८॥ यज्ञ उपवीतउत्सव ॥ राग बिलावल॥बिसरचोकुलव्यवहारबिचार।हरिहल-धरको दियो जनेऊ करि षटरस जेवनार॥जाके श्वास उसाँस लेतमें प्रगटभए श्रुति चार। तिन गायत्री सुने गर्गसों प्रभु गति अगम अपार॥ बिधिसों धेनु दई बहु विप्रन सहित सर्व लंकार । यदुकुल भयो परम कौतूहल जहां तहां गावत नरनार ॥मात देवकी परम मुदितह्वै देत निछावर बारंबार। सूरदासकी इहै अशीशहै,चिरजीवो दोउ नंदकुमार ॥ २९ ॥ राग धनाश्री ॥ आजु परम दिन मंगलकारी । लोक लोकको टीको आयो मुदित सकल नर नारी ॥ शिव सुरेश शेष औरहु को गनै चतुरानन कर थारी ।हरकर पाट बंध नेवछावरि करत रतन पटसारी ॥ बाजतढोल निशान शंख रव होत कुलाहल भारी।अपने अपनेलोकचलेसब सूरदास बलिहारी ॥ ३० ॥ रागबिलावल ॥जब यदुपतिकुलकंसहि मारचो। तिहूंभुवन भयो शोर पसारचो॥ तुरत माचते धरनि गिरायो । ऐसेहि मारत बिलम न लायो ॥ केश गहे पुहुमीघिसटायो । डारि यमुनके बीच बहायो ॥ जा कंसहि तिहुँ भुवन डराई ।ताको मारचो हलधर भाई ॥ जाकेधनुष टँकोरत हाथा। आसन छँडि भजे सुरनाथा ॥ मारत ताहि बिलंब न कीन्हों।उग्रसेनकोराजस दीन्हों ॥ जैहो जै बसुदेवकुमारा । जै होजै तुम नंद दुलारा ॥ सुर देवी देवै धनि भैया । धनि

यशुमति त्रिभुवनपति धैया ॥ धन्य अक्रूर मधुपुरी लाए । सुर अंमर जै जै ध्वनि गाए॥ दनुज वंश निरवंश कराए । धरनी शिरते भार गँवाए॥ मात पिता बंदिते छोराए॥ यहबाणीसुरलोकनि गाए ॥ जो जैसेतैसे तेहिभाए।सूरज प्रभुसबकोसुखदाए॥३१॥ रागधनाश्री ॥ मथुरादिनदिन अधिक बिराजै। तेज प्रताप राइ केशोको तीनिलोक पर गाजै ॥ कोटिक तीरथ पग पग जाके मधु विश्रात विराजै । करिअस्नान प्रात यमुनाको जियत मरत भैभाजै॥श्रीविट्ठल विपुलविनोद बिहारन व्रजको बसिबो छाजै॥सूरदाससेवक उनहींकोकहत सुनतगिरिराजै॥ ३२ ॥ कंसमारिसुर कारज किए । माता पिताबंदिते छोराए दुख बिसरयो आनंद हिए॥उग्रसेनको धाय मिले हरि अभय अचल करि राज्यदियो । असुरवंश निरवंश छिनकमें ऐसो नहिंकोउ औरवियो॥मिली कूबरी चंदन लैकै ऐसेहि हरिको नामलियो।सुनहु सूर नृप पास जाति हैं बीच सुकृतिअतिदरश दियो ॥३३॥ राग रामकली ॥ कूबरी पूरब तपकरि राख्यो । आएश्याम भवन ताहीके नृपतिमहल सब नाख्यो ॥ प्रथमहि धनुष तोरि आवत हैं बीच मिली यह धाइ । तेहि अनुरागवश्यभएताके सो हित कह्यो न जाइ ॥ देव काज करि आवन कहि गए,दीन्हेंरूपअपार।कृपा दृष्टि चितवतही श्रीभइ निगम न पावत पार ॥ हमते दूरि दीनके पाछे ऐसे दीनदयाल । सूर,सुरनकरिकाज तुरतहीं आवत तहां गोपाल ॥ ३४ ॥ किया सुरकाज गृह चले ताके। पुरुष अरु नारिको भेदभेदा नहीं कुलिन अकुलीन आवतहौ काके ॥ दासदासी श्याम भजनते हूजिए रमा सम भई सो कृष्ण दासी। मिली वह सूर प्रभु प्रेमचंदन चरचिकैमनो कियोतपकोटिकासी॥३५॥रागरामकली॥ भक्त वछल श्रीयादवराइ । गेह कूबरीके पगधारे जाति पाँति बिसराई ॥ पूरब भाग मानि तिन अपने चरण गही उठि धाई। सुरति रही नहिं गेह देहकी आनँद उर न समाई॥प्रभुगहि बाँहपास बैठारी सो सुखकह्यो न जाइ।सूरदास प्रभु सदा भक्तवश रंक न गनहि न राइ ॥३६॥राग नट ॥ कुबिजासदन आए श्याम । कृपा करि हरि गए प्रथमहि भई अनुपम वाम ॥ प्रीतिके वश दीनबंधु सु भक्तवत्सल नाम । मिली मारगमलयलैकरि भएपूरण काम ॥ उर्वशी पटतरहि नाहीं रमाके मनताम । सूर प्रभु महिमाअगोचर बसे दासीधाम॥३७॥ राग धनाश्री ॥कुबिजाहरिकीदासीआहि।जैसेआपुभाजिगोकुलरहेतैसेराखीताहि॥रूपरतनदुराइहो राख्यो जैसे नली कपूर।जैसे छापअमोलरतन भरिकहजानेजोकूर॥वैसेहि रहीकूबरी दासीअविनाशीकी आहि।सूरदास प्रभु कंस मारिके लईआनितिहिचाहि॥ ३८॥मथुराकेनरनारिकहैं । कहा मिली कुबिजा चंदनले कहा श्याम तेहि कृपा चहैं ॥ कहातपस्या करि यहराख्यो जहांतहां पुर इहै चहैं । कछु नहिं कहि आवत हरिदेखी इहैकह्यो प्रभु हेत वहैं॥तबहिं कृपाकरिसुंदरि कीन्ही यह महिमा मोहिं कहत न आवै ।सूरदास भाग कूबरीका कौनताहिको पटतर पावै ॥ ३९ ॥ कुबिजासी भागिनि को नारी । कंसहि चंदन लिए जातही बीचमिले ताको दैतारी॥ हरि करि कृपा करी पटरानी कुबिज मिटायो डारि ।इहइ बात मधुपुरी जहँतहँ दासी कहत डरत जिय भारि॥कुबिजा कहत न भूल्यो कोऊ ताहि उठत दै दै सब गारि । सुनहु सूररानीसुनि पावैत्रास हांतजिनमारडारि॥४०॥राग धनाश्री॥कुबिजातौबडभागीहै। करुणाकरिहरिजाहिनिवाजीआपुरहे तहँ राजीहै ॥पूरब तप फल बिलसन लागी मनके भाव पुरावतिहै । मथुरा नर नारिन मुख बानी रह्यो जहँतहँ जैजै है ॥ दैत्य बिनाशी तुम तहां आए यह लीला जाने पैवै । सूरदासप्रभु भावहिके वशमिलतकृपाकैअतिसुखदैवै॥४१॥श्रीवसुदेव वचन राजा प्रति ॥ राग रामकली॥हरिकीकृपा

जापर होइ।ताहिकछु यह बात नाहीं हृदय देखो जोइ ॥ कहा संशय करत याको कितिक है यह बात। असुरसैन्य सँहारि डारे भक्तजनसों नात ॥ हरन करन समरथ येईहैं कहौं बारंबार । सूर हरिकी कृपाते खलतरिगएसंसार॥४२॥कंसवधलीला दूसरी॥राग बिलावल॥कृष्णकृपा सबहीते न्यारी।कोटि करै तप नहीं मुरारी ॥ भाव भजन कुबिजा भई प्यारी। दनुज भावबिनु मारे डारी ॥प्रथमहि रजक मारि पुर आए। धनुषयज्ञकहँ कंस बोलाए॥तोरि कोदंड बीर सब मारे।हितकुबिजाकेधाम सिधारे ॥ रूपराशि निधि ताको दीन्हों। आवन कह्यो गमन तब कीन्हों ॥ तहां कुबलिया राख्यो द्वारे । जात श्याम बलराम बिचारे॥मालीमिल्यो मालशुचि लैके।लीन्होंकंठ श्याम अति रुचिकै॥मनकामना तुरत फल पायो । कोटिकोटि मुख अस्तुति गायो॥आतुर गयो कुवलिया पासा॥सूरज चंद्र धरणि परगासा॥बालक देखि महावत हरष्यो। कान्ह पूछ धारि तुछकरिपरष्यो॥ कौतुक करि मतंग तब मारयो । गहि पटक्यो तनु नेक न टारयो॥दुहुँन एक इक दंतउपारयो। जहाँ मल्ल तहँको पग धारयो॥ देखत रूप त्रास जिय आन्यो । मनमन काल आपनो जान्यो ॥तब कोमल दरशे यदुराई। तुरत गए आगे सब धाई ॥ मारे मल्ल एक नहिं उबरयो । पटक धरणि नृप श्रवणन घुमरयो ॥ क्रोधसहित तब कंस प्रचारयो।ताहि प्रगटि तुरतहिं तेहि मारयो॥अमर नाग नर कहिकहि भाखैं।सदा आपने जनको राखैं ॥राजा उग्रसेन कहवाए।मात पिता बंदिते छोडाए॥इतने काज किए हरि नीके।कुबिजाप्रेम बँध हारि हीके ॥ आतुरहरि ताके गृह आए । रानिन बोधि महल नहिं भाए॥ चितवत मंदिर भए अवासा । महल महल लाग्यो मणि पासा ॥ जबहिं सुने कुबिजा हरि आए। पाटम्बर पांवडे डसाये ॥ कुबिजाते भई राजकुमारी । रूप कहा कहौं कृष्णपियारी ॥ टेढी ज हरि सूधी कीन्हीं । लक्षण अंगअंग प्रति दीन्हीं ॥ राजा हरि कुबिजा पटरानी । मथुरा घरघर सबही जानी ॥ गोप सखा यह सुनत न माने । त्रासहिमें सब रहतसकाने॥मारयोकंस सुनत सब शंके । बलमोहन आए नहिं दंके॥ब्रजते चले भए षट यामा।व्याकुल महरि होति लेनामा ॥ प्रजा जानि मनमन डरपाहीं। कंस बलमोहन ब्रज जाहीं ॥ यहि अंतर हरि आए तहँई । नंद गोप सब राखे जहँई ॥ नृप उद्धव अक्रूरहि लीन्हों। तहां गवन प्रभु सूरज कीन्हों॥४३॥राग बिलावल॥यदुबंशी कुलउदित कियो।कंस मारिपुहमीउद्धारी। सुरन कियो निर्भय सु हियो॥ घरघर नगर अनन्दबधाईमनवांछितफलसबनिलह्यो। निगड तोरि मिलि मात पिताको हरष अनल करि दुखहि दह्यो ॥ उग्रसेन मथुरा करि राजा ऐसो प्रभु रक्षक जनको । कहुँ जनमें कहुँ कियो पान पय राखि लेत भक्तन पनको ॥ आपुन गए नंद जहँ बासा हलधर अग्रज संग लिए । सूर मिले नँद हरषवन्त ह्वै ब्रज चलिहैं अति हरष हिए ॥ ४४ ॥ अरसपरस सब ग्वाल कहैं । जब मारयो हरि रजक आवतहि मन जान्यो हम नहिं निबहैं ॥ वैसो धनुष तोरि सब योधा तिन मारत नहिं बिलम करयो । मल्ल मतंग तिहूंपुर गामी छिनकहिमें सो धरणि परयो ॥ वैसे मल्लनि दांव बिसारे मारि कंस निरबंश कियो । सुनहु सूर ये हैं अवतारी इनते प्रभु नहिं और बियो ॥ ४५ ॥ नंद गोप सब सखा निहारत यशुमतिसुतको भाव नहीं । उग्रसेन वसुदेव उपंगसुत सुफलकसुत वैसे सँगहीं ॥ जबहीं मन न्यारो हरि कीन्हों गोपन मन इह व्यापिगई । बोलि उठे यहि अन्तर मधुर निठुर ज्योति जो ब्रह्ममई ॥ अति प्रतिपाल कियो तुम हमरो सुनत नन्द जिय झझकिरहे । सूरदास प्रभुकी लीला यह वसुदेव मोसों वचन कहे ॥ ४६ राग बिलावल॥ काहि कहत प्रतिपाल

कियो।मोसोंकहत होहि जिनि ऐसी नैन ढरत नहिं भरत हियो॥ शंकित नंद निरसबानी सुनि विलम करत कहा क्यों न चलैं। कंस मारि रजधानी दीन्ही ब्रजते बहुरौ आनि मिलैं॥ मनहीं मन ऐसी उपजावत वे उत ब्रह्म ब्रह्मदरशी।सूर पिताको मात कौनके रहत सबनमेंवेपरशी॥४७॥ तब बोले हरि नंदसों मधुरे करि बानी। गर्ग बचन तुमसों कही नहिं निहचै जानी॥ मैं आयो संसारमें भुवभार उतारन। तिनको तुम धनिधन्य हौ कीन्हों प्रतिपारन॥ मात पिता मेरे नहीं तुमते अरु कोऊ। एक बेर ब्रजलोगको मिलिहौं सुनो सोऊ॥मिलन हिलन दिनचारिको तुम तो सब जानौं। मोको तुम अतिसुख दियो सो कहा बखानौं॥ मथुरा नर नारी सुनें व्याकुल ब्रजवासी।सूर मधुपुरी आइकै ये भएअविनासी॥४८॥राग टोडी॥निठुर वचन जिनिकहौकन्हाई। अतिही दुसह सह्यो नहिंजाई॥ तुम हँसिकै बोलत ए बानी। मेरे नयन भरत है पानी॥ अब ए बोल कबहुँ जिनि बोलौ। तुरत चलौ ब्रज आँगन डोलौ॥पंथ निहारत यशुमति ह्वैहै। तुमबिन मोको देखि मुखैहै॥ तब हलधर नंदहि समुझावत। कछु करि काज तुरतब्रज आवत॥ जननि अकेली व्याकुल ह्वैहै। तुमहि गए कछु धीरज लैहै॥ बहुत कियो प्रतिपाल हमारो। जाइ कहां उर ध्यान तुम्हारो॥ व्याकुल होन जननि जिनि पावै। बारबार कहिकहि समुझावै॥ व्याकुल नंद सुनत ए बानी। डसि मानो नागिनी पुरानी॥ व्याकुल सखा गोप भए व्याकुल। अंतकदशा भयो भय आकुल॥सूर श्याम मुखनिरखत ठाढे॥मनो चितेरे लिखि सब काढे॥४९॥राग सोरठ॥ गोपालराइ हौं न चरण तजि जैहौं। तुमहिं छाँडि मधुवन मेरे मोहन कहा जाइ ब्रज लैहौं॥ कैहौं कहा जाइ यशुमतिसों जब सन्मुख उठि ऐसे। प्रातसमय दधि मथत छाँडिकै काहि कलेऊ दैहैं। बारहवर्ष दया हम ठाढो यह प्रताप बिनुजाने। अब तुम प्रगट भए वसुदेवसुत गर्गवचन परमाने॥ कत हमलागि महारिपु मारे कत आपदा बिनासी। डारि न दियो कमलकरते गिरि दबि मरते ब्रजवासी॥ बासर संग सखा सब लीन्हें टेरि न धेनु चरैहौ। क्यों रहिहैं मेरे प्राण दरशबिनु जब संध्या नहिं ऐहौ॥ अब तुम राज्य करौ कोटिक युग मातपिता सुख देहौ। कबहुँक तात तात मेरे मोहन या मुख मोसों कैहौ॥ ऊरधश्वास चरणगति थाक्यो नैन नीर न रहाइ। सूर नंद बिछुरे कीवेदनमोपैकहिय न जाइ॥५०॥राग बिलावल॥ वेगिब्रजको फिरियेनँदराइ।हमहिं तुमहिं सुत तातको नातो और परचो है आइ॥ बहुत कियो प्रतिपाल हमारो सो नहिं जीते जाइ। जहां रहैंतहँ तहाँ तुम्हारे डारो जिनि बिसराइ॥मायामोह मिलनअरु बिछुरन ऐसेहीजगजाइ।सूरश्यामकेनिठुर वचन सुनि रहे नयन जल छाइ॥५१॥रागनट॥यह सुनि भए व्याकुल नंद। निठुर बाणी कही जब हरि परिगए दुखफन्द॥ निरखि मुखमुख रहे चकृत सखा अरु सब गोप। चरित ए अक्रूर कीन्हें करत मनमन कोप॥ धाइ चरणन परे हरिके चलहु ब्रजको श्याम। कंस असुरसमेत मारे सुरनके करि काम॥ मोचि बन्धन राज दीनों हर्ष भए बसुदेव। सूर यशुमति बिनु तुम्हरेकौन जानै देव॥५२॥ राग सोरठा॥ नंद बिदा ह्वै घोष सिधारौ। बिछुरन मिलन रच्यो बिधि ऐसो यह संकोच निवारौ॥ कहियो जाइ यशोदाआगे नैन नीर जिनि ढारौ। सेवा करी जानि सुत अपने कियो प्रतिपाल हमारौ॥ हमें तुम्हैं कछु अन्तर नाहीं तुम जिय ज्ञान बिचारौ। सूरदास प्रभु यह बिनती है उर जिनि प्रीति बिसारौ॥५३॥ राग सोरठ॥ मेरे मोहन तुमहिं बिना नहिं जैहौं। महरि दौरि आगे जब ऐहै कहा ताहि मैं कैहौं॥ माखन मथि राख्यो ह्वैहै तुम हेतु चलौ मेरे बारे। निठुर भए मधुपुरी आइकै काहे असुरन मारे॥ सुख पायो वसुदेव देवकी अरु सुख सुरन

दियो। यहै कहत नंद गोप सखा सब विदरन चहत हियो॥ तब माया जडता उपजाई ऐसे प्रभु यदुराई। सूर नंद परबोधि पठावत निठुर ठगोरी लाई॥ ५४॥ राग नट॥ नंदहि कहत हरि व्रज जाहु। किंतिक मथुरा व्रजहि अंतर जिय कहा पछिताहु॥ कहा व्याकुल होत अतिही दूरिहूं कहुँ जात। निठुर उरमें ज्ञान वरत्यो मानिलीन्हों बात॥ नंद भए कर जोरि ठाढे तुम कहे व्रज जाउ। सूर मुख यह कहत वाणी चित नहींकहुँठाउ॥५५॥ राग बिलावल॥तुममेरीप्रभुताबहुत करी। परम गँवार ग्वाल पशुपालक नीच दशा लै उच्च धरी॥ रोग दोष संताप जनमके प्रगट-तही तुम सबै हरी॥अष्ट महासिधि और नवौ निधि करजोरे मेरे द्वार खरी॥ तीनिलोक अरु भुवन चतुर्दश वेद पुराणन सही परी। सूरदास प्रभु अपने जनको देत परमसुख घरी घरी॥ ५६॥राग रामकली॥ उठ कहिमाधौइतनी बात।जितेमानसेवातुमकीन्हींबदलोदयोनजात॥पुत्र-हेतु प्रतिपाल कियो तुम जैसे जननी तात। गोकुल वसत खवावत खेलत दिवस न जान्यो जात॥ होहु बिदा घरजाहु गुसाईं माने रहियो नात। ठाढो थक्यो उतर नहिं आवै लोचनजलनसमात॥ भए बलहीन खीन तनुकंपित ज्यों बयारिवश पात। धकधकात मन बहुतसूरउठिचलेनंदपछिता-त॥ ५७॥ राग नट॥ फिरिकरि नंद न उत्तर दीन्हों। रोमरोमभरिगयोवचनसुनिमनहुँचित्रलिखि कीन्हों॥ यहतो परंपरा चलिआई सुख दुख लाभ अरु हानि। हमपर बबा मयाकरि रहियोसुत अपनो जिय जानि॥ को जलपै काके पल लागे निरखि वदन शिर नायो। दुखसमूह हृदये परिपूरण चलत कंठ भरिआयो॥अधअध पद भुव भई कोटि गिरि जौलगि गोकुल पैठो।सूरदास अस कठिन कुलिशते अजहुँ रहत तनु बैठो॥ ५८॥ राग धनाश्री॥चले नंद व्रजको समुहाइ।गोप सखा हरि बांधि पठाए सबै चले अकुलाइ॥काहू सुधि न रही तबकी कछु लटपटात परे पाइ। गोकुल जात फिरत पुनि मधुवन मन पुनि उतहि चलाइ॥विरहसिंधुमें परे चेतबिनु ऐसेहि चले बहाइ।सूरश्याम बलरामछाँडिकैव्रज आयेनियराइ॥५९राग भैरव॥बारबारमगजोवतिमाता।व्याकुल बिन मोहन बल भ्राता॥आवत देखि गोप नँद साथा। विवि बालक बिनु भई अनाथा॥ धाई धेनु बच्छ ज्यों ऐसे। माखन बिना रहैं धौं कैसे॥व्रजनारी हरषित सब धाई।महरि जहाँ तहँ आतुर आई॥ हरषित मात रोहिणी धाई। उर भरि हलधर लेहुँ कन्हाई॥ देखे नँद गोप सब देखे। बल मोहनको तहां न पेखे॥आतुर मिलनकाजव्रजनारी।सूर मधुपुरी रहे मुरारी॥६०॥अथ नंद व्रजआगमन यशोदावचन नंद प्रति॥ राग सोरठ॥नंदहि आवत देखि यशोदा आगे लैनगई।अति आतुर गति कान्ह लैनको मन आनंद भई॥कहँ नवनीत चोर छाँड मेरे देखत नारि नई। तेहि खन घोष सरोवर मानो पुरइनि हेममई॥ गर्ग कथा तब कहि जु सुनाई सो अब प्रगट भई। सूर मोहिं फिरिफिरि आवत गहि झगरत नेत रई॥६१॥राग कल्याण॥श्याम राममथुरातजि नंदव्रजहिआए।बारबार महरि कहति जनम धिग कहाए॥कहूंकहति सुनी नहीं दशरथकी करनी। यह सुनि नँद व्याकुल है परे मुरछि धरनी॥टेरि टेरि पुहुमि परति व्याकुल व्रजनारी। सूरज प्रभु कौन दोष हमको जुबिसारी॥६२॥राग सारंग॥उलटि पग कैसे दीन्हों नंद।छाँडि कहाँ उभय सुत मोहन धिग जीवन मतिमंद॥ कै तुम धन यौवन मदमाते कै तुम छूटे बंद। सुफलकसुत वैरी भयो हमको लैगयो आनँदकंद॥रामकृष्ण बिन कैसे जीजै कठिन प्रीतिके फंद।सूरदासप्रभु भई अभागिनि तुमबिनु गोकुलचंद॥६२॥राग मलारदोउढोटागोकुलनायकमेरे।काहेनंदछाँडितुमआएप्राणजिवनसबकेरे। तिनके जात बहुत दुख पायो रोरि परी यह खेरे। गोसुत गाइ फिरतहैं दहदिशबने चरित्रनथोरे॥

प्रीति न करी राम दशरथकी प्राण तजे बिन हेरे। सूरनंदसोंकहतियशोदाप्रबलपापसबमेरे।६४॥ राग बिहागरो ॥ यह गति करत नहिं छाजी। हरिबिन विकल भयोनगयोपरिकुलकुठारजननीकत लाजी॥ राम कृष्ण तजि गोकुल आए छतियां क्षोभ रही क्यों साजी। कहाअकाजभयोदशरथको लइ जु गयो अपनी जग बाजी॥ बातै पै रहि रहति कहनको सब जग जात कालकी खाजी। सूर यशोदा कहति सु: धिग मतिजोगिरिधरनविमुखह्वैभाजी॥६५॥ राग सोरठ॥ यशोदाकान्हकान्हकै बूझै। फूटि न गईं तिहारी चारौ कैसे मारगसूझै॥ इकतनुजरोजातविनदेखेअबतुमदीनेफूक। यहछतिया मेरे कुँवरकान्हबिनु फटि नगए द्वै टूक॥ धिग तुमधिगवै चरणअहोपति अधबोलतउठि धाए। सूरश्यामबिछुरनकीहमपैदेनबधाईआए॥ ६६॥ नंद हरितुमसों कहा कह्यो। सुनिसुनिनिठुर वचन मोहनके क्योंकरि हृदय रह्यो॥ ॥ छाँडिसनेह : चलेमंदिरकत दौरिनचरनगह्यो। फाटि न गई वज्रकी छाती कत यहि शूल सह्यो॥ सुरति करत मोहनकी बातैं नैनन नीर बह्यो। सुधिन रही अति गलित गात भयो जनु डसिगयो अह्यो॥ कृष्ण छाँडि गोकुल कत आए चाखनदूध दह्यो। तजे न प्राण सूर दशरथलौं हुतो जन्म निबह्यो॥ ६७॥ मेरो अति प्यारो नँदनंद। आए कहाँ छाँडि तुम उनको पोचकरी मतिमंद॥ बल मोहन दोउ पीड नयनकी निरखतही आनंद। सरवर घोष कुमोदिनि ब्रजजन श्यामवदन बिनचंद॥ काहे न पाँइ परे वसुदेवके घालि पाग गरे फंद। सूरदास प्रभु अबके पठवहुसकललोकमुनिवंद॥६८॥ अथनंदवचन यशोदाप्रति॥ राग रामकली॥ तब तू मारिबोई करति। रिसनि आगे कहि जोआवत अब ले भाँडे भरति॥ रोसकैकरदाँवरी लै फिरति घरघर धरति। कठिन हिय करि तब जो बाँध्यो अब वृथाकरि मरति॥ नृपति कंस बुलाइपठयो वहुतके जिय डरति। इह कछू विपरीतमोमनमाँझ देखी परति॥ होनहारीहोइहैसोइ अब यहां कत अरति। सूर तब किन फेरि राखे पाइ अब केहि परति॥ ६९॥ यशोदा वचन नंदप्रति राग अडानो॥ कहा ल्यायो तजि प्राण जिवन धन। रामकृष्ण कहि मुरछि परी धर यशुदा देखत लोगन॥ विद्यमान हरिवचन श्रवण सुनि कैसे गए न प्राण छूटि तन। सुनी कथा दशरथकी तऊ नहिं लाज भई तेरे मन॥ मंद हीन अति भयो नंदअति होत कहा पिछताने छिनछिन। सूर नंद फिरि जाहु मधुपुरी ल्यावहु सुत करि कोटि जतन॥७०॥ समूहब्रजलोग वचन॥ रागकेदारो॥ कहोनंद कहां छाँडे कुमार। कैसे प्राण रहे सुत बिछुरत पूंछैं गोपी ग्वार॥ करुणा करै यशोदामाता नैनन नीर बहै असरार। चितवत नंद ठगेसे ठाढे मानो हारयो हेम जुआर॥ मुरली नहिं सुनिअतहै ब्रजमें सुर नर मुनि नहिंकरतहैं वार। सूरदास प्रभुके बिछुरेते कोऊ नहीं झांकते द्वार॥७१॥ अथ ग्वालवचन राग नट॥ ग्वालन कही ऐसी जाइ। भए हरि मधुपुरी राजा बडे वंश कहाइ॥ सूत मागध वदत विरदहि वरणि वसुद्यौ तात। राजभूषण अंग भ्राजत अहिर कहत लजात॥ मात पितु वसुदेव देवै नंद यशुमति नाहिं। यह सुनत जल नैन ढारत मीजि कर पछिताहिं॥ मिली कुबिजा मलै लैके सो भई अरधंग। सूर प्रभु वश भए ताके करत नानारंग॥ ७२॥ अथ गोपीवचन कुबजाप्रीत परस्परतरक वदत राग गौरी॥ कुबिजा: मिली कहौ यह बात। मात पितावसुदेव देवकी मन दुख मुख हरषात॥ सुंदरि भई अंग परसतहीं करी सुहागिनि भारी। नृपति कान्ह कुबिजा पटरानी हँसति कहति ब्रजनारी॥ सौतिशाल उरमें अति शाल्यो नखशिखलौं भहरानी। सूरदास प्रभु ऐसेई भाई कहति परस्पर बानी॥७३॥ रागकल्याण॥ कुबिजाको नाम सुनत विरह अनल जूडी। रिसन नारि झहरिउठीं क्रोध मध्य बूडी॥ आवनकी आश मिटी ऊरध सब श्वासा॥

कुबिजा नृपदासी हमसब करी निरासा॥लोचन जलधार अगम विरहनदी बाढी। सूर श्याम गुण सुमिरत बैठी कोउ ठाढी॥ ७४ ॥ राग धनाश्री॥कुबिजा श्याम सुहागिनि कीन्ही।रूप अपार जाति नहिं चीन्ही॥ आपु भए पति वह अरधंगी। गोपिन नावँ धरचो नवरंगी॥ वै बहुरवन नगरकी सोऊ।तैसोइ संगबन्यो अब दोऊ॥एक एकतेगुणन उजागर। वह नागरि वैतौअतिनागर॥वहजोइ कहत श्याम सोइ मानत। निशिदिन वाके गुणहि बखानत॥जानि अनोखी मनहिं चोरावै।सूर प्रभू अब नहिं ब्रज आवै॥७५॥ राग रामकली ॥ कुबिजा नई पाई जाइ। नवल आपुन बनिनवेलीनगररही खेलाइ॥ दास दासी भाव मिलिगयो प्रेमते भए एक। निठुर ह्वै सखि गए हमते जानि साह अनेक॥ लेन जब अक्रूर आयो तुरत लाग्यो कान। नई कुबिजा उन सुनाई सूर प्रभु मन मान॥ ७६॥ राग धनाश्री ॥कैसेरीयहहरिकरिहैं।राधाकोतजिहैं मनमोहन कहा कंसदासी धरिहैं॥ कहा कहति वह भई रानी वै राजा भए जाइ वहां। मथुरा बसत लखत नहिं कोऊ को आयो को रहत कहां॥ लाज बेंचि कूबरी बिसाही संग न छाँडतएकघरी। सूरताहि परतीति न काहू मन सिहात यह करनि करी॥७७॥कुबिजा नहिं तुम देखीहै। दधिबेचन जब जाति मधुपुरीमें नीकेकरि पेखी है॥महल निकट मालीकी बेटी देखत जेहि नर नारि हँसै। कोटि बार पीतरि ज्यों डाहौ कोटिबार जो कहा कसै॥ सुनियत ताहि सुंदरी कीन्ही आपु भए ताको राजी। सूर मिले मन जाहि जाहिसों ताको कहा करै काजी॥७८॥ कोटि करो तनुप्रकृति न जाइ। एअहीरवहदासी पुरकी विधिना जोरी भली मिलाइ॥ ऐसेनको मुख नाम न लीजै कहाकरौं कहिआवतमोहिं। श्यामहिं दोष किधौं कुबिजाको इहै कहौ मैं बूझति तोहिं॥ श्यामहिं कहा दोष कुबिजाको चेरी चपल नगर उपहास। टेढी टेकि चलत पग धरणी यह जानै दुख सूरज दास॥७९॥राग नट॥हरिही करी कुबिजा ढीठ। टहल करती महलमहलनि अब संग बैठी पीठ॥ नेकही मुँह पाइ भूली अति गई इतराइ। जात आवत नहीं कोऊ इहै कहैं पठाइ॥ वे दिना गए भूलि तोको दिवस दशकीबात। सूर प्रभु दासी लोभाने ब्रजवधू अनखात॥८०॥राग नट॥देखो कूबरीके काम। अब कहावत पाटरानी बडे राजा श्याम॥ कहत नहिं कोउ उनहिं दासी वै नहीं गोपाल। वै कहावत राजकन्या वै भए भूपाल॥पुरुष केरी सबै सोहै कूबरी केहि काज।सूरप्रभुकी कहा कहिए बेंचि खाई लाज॥८१॥ यह सुनि हमहिं आवति लाज। जाय मथुरा कंस मारचो कूबरीके काज ॥ लोग पुरमें बसत ऐसेइ सबन इहै सोहात। कबहुँ कोऊ कहत नाहीं श्यामआगे बात॥ कहा चेरी नारि कीन्हीं कहा आपुन होत। तुम बडे यदुवंश राजा मिले दासी गोत॥अजहुँ कहै सुनाइ कोई करैंकुबिजा दूरि। सूर डाहनि मरत गोपी कूबरीके झूरि॥८२॥राग बिलावल॥कंस वध्यो कुबिजाके काज।और नारि तुमको न मिली कहुँ कहा गँवाई लाज॥ जैसे काग हंसकी संपति लहसुन संगकपूर। जैसे कंचन कांच बराबरि गेरू काम सिंदूर॥ भोजन साथ शूद्र ब्राह्मणके तैसोइ उनको साथ। सुनहु सूर हरि गाइ चरैया तौ भए कुबिजा नाथ॥८२॥रागगौरी ॥ भामिनि कुबिजासों रँगराते। राजकुमारि नारिजो पवते तौ कबहिं न अंग समाते॥ रीझे जाइ तनक चंदन लै मधुवनमारगजाते। ताकी कहा बडाई कीजै ऐसे रूप लुभाते॥ ए अहीर वह कंसकी दासी जोरी करी विधातैं। ब्रजवनिता त्यागी सूरज प्रभु बूझी उनकी बातैं॥८४॥राग आसावरी॥वै कहा जानैंपीर पराई।सुंदर श्याम कमलदल लोचन हरि हलधरके भाई॥ मुख मुरली शिर मोर पखौआ बनबन धेनु चराई। जे यमुनाजलरंग रँगे हैं ते ब्रजहूं नहिं तजत कराई॥ उहईं भूले देखि कूबरी हम सब गए बिसराई। सूर

चातकी बूँद भईहौं हेरतहेरतरहीहिराई ८५॥ राग जैतश्री ॥सखीरीकाके मीतअहीर।काहेको भरिभरि ढारतिहौ नैन राहके नीर ॥ आपुन पियत पियावत दुहिदुहि इन धेनुनके क्षीर । निशिवासर छिन नहिं बिसरत हे जो यमुनाके तीर॥ मेरे हियरे दौ लागतिहै जारत तनुकीचीर।सूरदास प्रभु दुखितजानिकै छाँडिगए बेपीर॥ ८६॥ अथ श्यामरंगको तरक वदति राग मलार ॥सखीरीश्यामसबैइक सार। मीठे वचन सुहाये बोलत अंतर जारनहार॥भवँर कुरंग काग अरु कोकिल कपटिनकी चटसार । कमलनयन मधुपुरी सिधारे मिटिगयो मंगलचार ॥ सुनहु सखीरी दोष न काहू जो बिधि लिखो लिलार। यह करतूति इन्हैंकीनाईपूरबविबिध विचार॥उमँगि घटानापि आवे पावस प्रेमकी प्रीति अपार।सूरदास सरिता सर पोषत चातक करत पुकार८७॥राग मलार ॥सखी री श्याम कहा हितुजानैं।कोऊप्रीतिकरै कैसेहूँ वे अपनोगुणठानैं॥देखो या जलधरकी करनीवरषतपोषैआनै। सूरदाससरबस जोदीजैकारो कृतहि न मानै॥८८॥राग सारंग॥ तिनहिं न पतीजैरी जेकृतहिन माने। ज्यों भँवरा रस चाखि चाहिकै तहां जाइ जहां नवतन जाने ॥ कोयल काग पालि कहाकीन्हों मिले कुलहि जब भए सयाने।सोईघात भई नंदमहरकीमधुबनतेजो आने॥तबतौ प्रेम बिचारि न कीन्हों होत कहा अबके पछिताने।सूरदासजे मनके खोटे अवसर परे जाहिं पहिचाने॥८९॥राग धनाश्री॥ तबते मिटे सबै आनंद। या ब्रजके सब भाग संपदालैजु गए नँदनंद॥ विह्वल भई यशोदा डोलति दुखित नंद उपनंद । धेनु नहीं पय स्रवति रुचिर मुख चरति नाहिं तृण कंद॥ विषम वियोग दहत उर सजनी बाढिरहे दुखद्वंद । शीतल कौन करै री माई नाहिं इहां हरिचंद॥रथचढिचलेगहे नहिं काऊ चाहिरही मतिमंद।सूरदासअब कौनछोडावै परेविरहकेफंद॥९०॥राग कान्हरो॥ अब वह सुरति होत कत राजनि । दिनदश रहे प्रीति करि स्वारथ हित रहे अपने काजनि ॥सबै अजान भए सुनि मुरली वधिक कपटकी बाजनि । अब मन थक्यो सिंधुके खग ज्यों फिरिफिरि शरन जहाजनि ॥ वह नातो तादिनते टूट्यो सुफलकसुत मग भाजनि। गोपीनाथ कहाइ सूरप्रभुमारतहौकत लाजनि॥९१ ॥राग गौरी॥ब्रज री मनो अनाथ कियो।सुन री सखीयशोदानंदनसुखसंदेह दियो॥ तब हम कृपा श्यामसुंदरकी कर गिरि टेकि लियो। अरु प्रति गाइ बच्छ ग्वालनकोजल कालिंदि पियो॥ यहसबदोष हमहिं लागतहै बिछुरत फट्यो न हियो।सूरदास प्रभुनंदनँदनबिनु कारणकौनजियो॥९२॥राग केदारो॥अबतो हैं हम निपट अनाथ।जैसे मधु तोरेकीमाखी त्यों हम बिनु ब्रजनाथ॥ अधरअमृतकी पीर मुई हम बालदशाते जोरि। सो छिडाय सुफलकसुत लैगयो अनायासही तोरि ॥ जौलगि पानि पलक मींडत रही तौलगि चलिगए दूरि। करिनिरंध निबहे है माई आँखिन रथपद धूरि ॥ हम निशिदिन करिकृपणकी संपति कियो न कबहूं भोग। सूर बिधाता लिखिराखी वह कुबिजाके मुख जोग॥ ९३ ॥ अथ नंदयशोदावचनपरस्पर रागरामकली ॥ इक दिन नंद चलाई बात । कहत सुनत गुण राम कृष्णके ह्वैआयो परभात ॥ वैसेहि भोर भयो यशुमतिको लोचन जलन समात । सुमिरि सनेह बिहरि उरअंतर ढरिआवत ढरिजात॥यद्यपि वे वसुदेव देवकी हैं निज जननी तात। वार एक मिलि जाहु सूर प्रभुधाइहूनकेनात॥९४॥रागगौरी॥ चूक परी हरिकी सिवकाई । यह अपराधकहांलौं कहिएकहिकहि नंदमहरपछिताई॥कोमलचरण कमल कंटक कुश हम उनपै बनगाइ चराई। रंचक दधिके काज यशोदा बाँधे कान्ह उलूखल लाई ॥ इंद्र कोप जानि ब्रज राखे वरुनफांस मान मेरी निठुराई । सूर अजहुँ नातो मानतहै प्रेमसहित करै नंद दोहाई ॥ ९५ ॥राग सोरठ॥ हरिकी एकौ बात न जानी । कहौ कंत कहा

तज्यो श्यामको अतिहि बिकल पूछति नँदरानी॥ अब ब्रजसूनो भयोगिरिधरबिनु गोकुलमणि बिलगानी। दशरथ प्राण तज्यो छिन भीतर बिछुरत शारँगपानी॥ ठाढी रही ठगोरी डारी बोलत गदगद बानी। सूरदास प्रभु गोकुल तजि गए मथुराही मनमानी॥९६॥राग सारंग॥ लै आवहु गोकुल गोपालहि। पाइन परिकै बहु विनती करि बलि छलि बाहुविशालहि॥ अबकीबारनेकदेखरावहु यहि ब्रज नन्द आपने लालहि। गाइनगनत ग्वाल गोसुत सँगसिखवत वेणु रसालहि॥ यद्यपि महाराज सुख संपति कौन गिनै मोती मणि लालहि। तदपि सूर वे छिन न तजतहैंवाघुँघुर्चाकी मालहि॥९७॥राग सोरठ॥सराहौं तेरो नंद हियो। मोहनसोसुतछाँडि मधुपुरीगोकुल आनिजियो॥ कहाकहौं मेरेलाल लडैते जब तू बिदाकियो। जीवन प्राण हमारे ब्रजको वसुदेव छीनिलियो॥ कह्यो पुकार पारि पचिहारी बरजत गमन कियो। सूरदास प्रभु श्यामलाल धन लै परहाथ दियो॥९८॥ राग बिलावल॥यद्यपि मन समझावत लोग। शूलहोत नवनीत देखिमेरे मोहनके मुखयोग॥ निशिबासर छतियां लै लाऊं बालकलीला गाऊं। वैसे भाग बहुरि फिरि ह्वैहै मोहन मोद खवाऊं॥ जा कारण मुनि ध्यान धरै शिव अंग विभूति लगावै। सो बालकलीला धरि गोकुल ऊखल साथ बँधावै॥ विदरत नहीं वज्रको हिरदय हरि बियोग क्यों सहिए। सूरदास प्रभु कमलनैनविनुकौने बिधि ब्रज रहिए॥९९॥राग कान्हरो॥नंदब्रजलीजै ठोंकिबजाइ। देहु बिदामिलिजाहिं मधुपुरी जहँ गोकुलके राइ। नैनन पंथ गयो क्यों सूझ्यो उलटि दियो जब पाइ॥ रघुपति दशरथ सुनीहै पर मरिवे गुण गाइ॥भूमि मशान विदिति ए गोकुल मनहु धाइ धइ खाइ। सूरदास प्रभुपास जाहिं हम देखैं रूप अघाइ॥२७००॥राग सोरठ॥माई हौं किन संग गई। हो ए दिन जानतही बूडी लोगनकी सिखई॥मोको बैरी भए कुटुँब सब फेरि२ब्रज गाडी। जो हौं कैसेहु जान पावती तौ कत आवत छाँडि॥ अब हौं जाइ यमुनजल बहिहौं कहा करौ मोहिं राखी। सूरदास वा भाइ फिरतहौं ज्यों मधु तोरे माखी॥१॥राग मलार हौं तौ माई मथुराहीपै जैहौं। दासी ह्वै वसुदेवराइकी दरशन देखत रैहौं॥ राखि राखि एते दिवसन मोहिं कहा कियो तुम नीको। सोऊ तौ अक्रूर गए लै तनक खिलौना जीको॥ मोहिं देखिकै लोग हँसेंगे अरु किन कान्ह हँसै। सूर अशीश जाइ दैहौं जिनि न्हातहु बार खसै॥२॥राग सारंग॥पंथी इतनी कहियो बात। तुमबिनु इहां कुँवरवरमेरे होत जिते उतपात॥ बकी अघासुर टरत न टार बालक बनहिं नजात। ब्रजपिंजरी रूँधि मानो राखे निकसनको अकुलात॥ गोपी गाइ सकल लघु दीरघ पीत वरण कृश गात। परम अनाथ देखियत तुमबिनु केहि अवलंबिये तात॥कान्ह कान्ह कै टेरत तबधौं अब कैसे जिय मानत। यह व्यवहार आजुलौं है ब्रज कपट नाट छल ठानत॥दशहू दिशितेउदित होतहैं दावानलके कोट। आँखिनमूँदि रहत सन्मुख ह्वै नाम कवच दै ओट॥ ए सब दुष्ट हते अरि जेते भए एकही पेट॥सत्वर सूर सहाइ करो अब समुझि पुरातन हेट॥३॥राग सारंग॥ कहियो श्यामसों समुझाय। वह नातो नहिं मानत मोहन मनो तुम्हारी धाइ॥ एकबार माखनके काजे राखे मैं अटकाइ। वाको बिलग मानु जिनि मोहन लागत मोहिं बलाइ॥बारहिबार इहै लवलागी गहे पथिकके पाँइ। सूर दासया जननीको जिय राखौ वदन देखाइ॥ ४ ॥राग बिलावल॥यद्यपि मन समुझावत लोग। शूल होत नवनीत देखि मेरे मोहनके मुखयोग॥ प्रातकाल उठि माखन रोटी को बिनमांगे देहै। अब उहि मेरे कुँवर कान्हको छिनछिन अंकम लैहै॥ कहियो पथिक जाइ घर आवहु राम कृष्ण दोउ भैया। सूर श्याम कत होत दुखारी जिनके मोसी मैया॥५॥रागरामकली॥मेरो कहा करत ह्वैहै। कहियउ

जाइ वेगि पठवहिं गृह गाइनिको द्वैहै ॥ दीजै छाँडि नगर वारी सब प्रथम बोरि प्रतिपारो । हमहूँ जिय समुझैं नहिं कोऊ तुम तजि हितू हमारो॥आजुहि आजु काल्हि काल्हिहि करि भलो जगत यश लीन्हों । आजहुँ काल्हि कियो चाहतहौ राज्य अटल करि दीन्हों ॥ परदा सूर बहुत दिन चलती दुहुँहुनि फबती लूटि।अंतहुकान्ह आयहौगोकुल जन्मजन्मकीबूटि॥६॥ संदेशो देवकीसों कहियो । हौं तौ धाइ तुम्हारे सुतकी मया करति रहियो ॥ यदपि टेव तुम जानत उनकी तऊ मोहिं कहि आवै । प्रातहि उठत तुम्हारे कान्हको माखन रोटी भावै ॥ तेल उबटनो अरु तातो जल ताहि देखि भजिजाते। जोइजोइ माँगतसोइसोइ देती क्रमक्रम करिकरिन्हाते॥ सूरपथिक सुनि मोहिं रैनि दिन बढ्यो रहत उर सोच । मेरो अलक लडैतो मोहन ह्वैहै करत सँकोच॥७॥ राग सोरठ॥ मेरो कान्ह कमलदल लोचन॥अबकीबेर बहुरिफिरिआवहु कहालगेजियसोचन॥यह लालसा होत जिय मेरे बैठीदेखतरैहौं । गाइचरावन कान्हकुँवरसों भूलि न कबहूँ कैहौं ॥ करत अन्याय न बरजौं कबहूं अरुमाखनकी चोरी। अपने जियत नैनभरि देखौंहरिहलधरकीजोरी॥ एक बेर ह्वैजाहु इहालौं अनत कहूँके उत्तर। चारिहुदिवसआनि सुख दीजै सूर पहुनई सूतर ॥८॥ अथ पंथीवाक्य देवकीप्रति ॥ राग आसावरी॥हौं इहां गोकुलहीते आई।देवकी माई पाँइ लागतिहौंयशुमति इहां पठाई ॥ तुमसों महरि जुहार कह्यो है कहहु तौ तुमहिं सुनाऊं । बारक बहुरि तुम्हारे सुतका कैसेहुँ दरशन पाऊं ॥ तुम जननी जग विदित सूर प्रभु हौं हरिकी हित धाइ। जा पठवहुतौ पाहुन नात आवहिं वदन दिखाइ ॥९॥ राग सारंग ॥ जो परि राखतहौपहिंचानि। तौ अबकै वह मोहनमूरति मोहिं देखावहु आनि ॥ तुम रानी वसुदेवगेहिनी हौं गँवारि ब्रजवासी। पठेदेहु मेरो लाड लडैतो वारौ ऐसी हाँसी ॥ भलो करी कंसादिक मारे सब सुरकाज किये । अब इन गैयन कौन चरावै भरिभरि लेतहिये॥खान पानपरिधान राजसुख जो कोउ कोटिलडावै। तदपि सूर मेरे बारे कन्हैया माखनही सचुपावै ॥१०॥राग सोरठ॥ मेरे कुँवर कान्ह बिनु सब कछु वैसहि धरयो रहै ।को उठि प्रात होत लै माखन को कर नेत गहै॥सूने भवनयशोदा सुतके गुनि गुनि शूल सहै । दिन उठि घेरतहीं घर ग्वारिनि उरहन कोउ न कहै ॥ जो ब्रजमें आनंद होतो मुनिमनसाहू न गहै। सूरदास स्वामीबिनु गोकुल कौडीहू न लहै॥११॥अथ गोपीविरह अवस्था परस्पर वर्णन। राग सारंग॥चलत गुपालके चले।यह प्रीतमसों प्रीति निरंतरहै ना अरधपले॥धीरजपहिलकरी चलिवेको जैसी करत भले। धीर चलत मेरे नैनन देखे तिहिछिन अंश हले ॥ अंश चलत मेरी वलयन देखे भए अंग शिथले॥मन चालरह्यो हुतो पहिलेहा सबै चले विमले॥ एक न चलै अब प्राणसूर प्रभु असलेउसालसले॥१२॥राग मलार॥लोगसबकहत सयानीबातें।सुनतहिसुगमकहत न-हि आवत बालि जाइ नहिं तातें॥पहिले अग्नि सुनत चंदनसी सती बहुत उमहै।समाचारताते अरु सार पाछे जाइ लहै। कहत फिरत संग्राम सुगम अति कुसुमलता करिवार । सूरदास शिरदेत शूरमा सोइ जानै व्यवहार ॥१३॥ बातनि सबकोइ जिय समुझावे । किहि बिधि मिलनि मिलैं वै माधौ सो बिधि कोउ न बतावै॥यद्यपि जतन अनेक रचीविधि सारि अशन बिरमावै । तद्यपिहठी हमारे नैनन और न देखो भावै॥वासर निशा प्राणवल्लभ तजि रसना और न गावै । सूरदास प्रभु प्रेमहि लगिकै कहिये जो कहि आवै॥१४॥राग नट॥सब मिलि करहु कछू उपाव।मार मारन चढेउ विरहिनि करहु लीनो चाव॥हुताशन ध्वज उमँगि उन्नत चलेउ हरि दिश वाउ।कुसुम शर रिपुनंद वाहन हरषि हरषित गाउ॥वारि भव सुत तात नावरि अब न करिहौं काउ । बार अबकी प्राण-

प्यारो विजय सखा मिलाउ ॥ रुचि बिचारि न मान कीजै सोई किन बहिजाउ। सूर प्रभुकी शरण रहिहौं सकल त्रिभुवन राउ॥१५॥राग सारंग॥करिगए थोरे दिनकी प्रीति । कहँ वह प्रीतिकहांयह बिछुरन कहँ मधुवनकी रीति । अबकी बेर मिलौमनमोहन बहुत भई विपरीति।कैसे प्राण रहत दरशनबिन मनहुँ गए युग बीति ॥ कृपा करहु गिरिधर हमऊपर प्रेम रह्यो तनुजीति । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिन भई भुसपरकी भीति ॥ १६ ॥राग धनाश्री॥ प्रीतिकरिदीनीगरे छुरी।जैसेवधिक चुगाइ कपटकन पीछे करत बुरी॥मुरली अधर चंप करकांपा मोरमुकुटलटवारि। बंक बिलोकनि लगी लोभ सम सकति न पंख पसारि ॥ तलफत छांडि गए मधुवनको बहुरि न कीनी सार ।सूर श्याम सुख संग कलपतरु उलटि न बैठी डार॥१७॥रागमलार॥देखी माधोकी मित्राई। आई उघरि कनक कलईसी दै निज गए दगाई ॥हम जानैंहरिहितूहमारेउनके चित्त ठगाई।छांडी सूरति सब ब्रजकुलकी निठुर लोग भए माई ॥प्रेम निबाहि कहा वै जानैं सांचेअतिही राई।सूरदास विरहिनी विकलमति कर मींजै पछिताई॥१८॥एकहि बेर दई सब टेरी ॥ तब कत डोरि लगाइ चोरि मनु मुरलि अधर धरि टेरी॥बाटघाटबीथीव्रजघरबन संग लगाए फेरी। तिनकी यह करि गए पलकमें पारि बिरहदुख बेरी ॥ जो परि चतुर सुजान कहावत कही समुझियो मेरी । बहुरि न सूर पाइहौ हमसी बिनदामनकी चेरी ॥१९॥राग नट॥अबतौ ऐसेई दिन मेरे।कहा करौं सखि दोष न काहू हरिहित लोनन फेरे ॥ मृगमद मलय कपूर कुमकुमा ए सब संतत चेरे। मादप वन शशि कुसुम सकोमल तेउ देखियत जु करेरे ॥ बनबन बसत मोर चातक पिक आपुन दिए बसेरे । अब सोइ बकत जाहि जोइ भावै बरजे रहत न मेरे ॥ जे द्रुम सींचिसींचि अपने कर कियो बढाय बडेरे । तिन सुनि सूरकिसल गिरिवर भए आनि नैन मग वेरे ॥ २०॥ राग सारंग ॥ बिनु गोपाल बैरिनि भई कुंजैं।जेवैलतालगततनुशीतलअबभईविषमअनलकीपुंजैं॥ वृथा बहुत यमुनातट खगरौ वृथा कमलफूलनि अलि गुंजैं। पवन पानि घनसारि सुमनदैदधिसुत किरनि भानु भै भुंजैं ॥ ए ऊधो कहियो माधोसों मदन मारि कीन्हीं हमलुंजैं।सूरदासप्रभुतुम्ह-रे दरशको मग जोवत अँखियन भईं धुंजैं ॥२१॥ राग कान्हरो॥करकपोलभुजधरिजंघापरलेखति माई नखनकी रेखनि । सोचति बिचार करति वैसी भाँति धरति ध्यान मदन मुख भेजनि॥नैन नीरभरि भरि जु लेतहै गोपी धिग दिन जात अलेखनि । कमलनैन मधुपुरी सिधारे जाके गुण जाने न सहसफन शेषनि॥ अवधि छुडाइ सुनोरी सजनीक्यों जीवहिंनिशिदामिनिदेखनि। सूरदास प्रभु चटकि गए ज्यों नानाबिधिनाचतनटपेखनि॥२२॥राग कान्हरो॥सोचतिराधालिखति नखनमें वचन न कहत कंठ जलतास । छितिपर कमल कमलपर कदली पंकज कियो प्रकाश॥ तापर अलि सारँगपर सारंगप्रति सारँगरिपुलै कियो वास। तहां अरिपंथ पिता युग उदित वारिज विविध रंग भजो अभास ॥ सारंगमुखते परत अंबु ढरि मनशिवपूजतितपतिविनाश।सूरदास प्रभु हरि विरहारिपु दाहतअंगदिखावतवास॥२३॥ राग नट॥मैंसबलिखिशोभाजुबनाई।सजलजलद तन वसन कनक रुचिउरबहुदाम रुराई ॥ उनतकंध कटिखीनविशदभुज अँगअँग प्रति सुखदाई। सुभग कपोल नासिका नैन छबि अलक लिहित धृतपाई ॥ जानतिहीयहलोललेखकरिऐसेहिदिन विरमाई । सूरदास मृदु वचन श्रवणकोअतिआतुरअकुलाई॥२४॥राग गौरी॥सुरतिकरिवहांकीबात रोइदियो।पंथी एकु देखि मारगमें राधा बोलिलियो ॥कहिधौंबीरकहांतेआयोहमजुप्रणामकियो । पालागौं मंदिर पगुधारो सुनि दुख जानि त्रियो ॥गदगदकंठ हियोभरिआयोवचनकहैनदियो । सूर श्यामअभिरामध्यानमनभरिभरिलेतहियो॥२५॥राग मलार॥कहियोपथिकजाइहांरसोंमेरोमन

अटको नैननके लेखे। इहै दोष देदै झगरतहै तब निरखत मुख लगी क्यों निमेखे ॥ कैतो मोहिं बताय दबकियो लगी पलक जड जाके पेखे। ते अब अब इनपैभरिचाहत बिधि जो लिखे दरशन सुख रेखे ॥ यहिबिधि अनुदिन जुरति जतनकरि गनत गए अँगुरिन अवसेखे। सूरदाससुनिइनि झगरनिते नहिं चित घटत वदन बिन देखे॥ राग ईमन ॥नाथ अनाथनकी सुधि लीजै।गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब दीन मलीन दिनहिदिन छीजै।नैन सजल धारा बाढी अति बूडत ब्रज किन कर गहिलीजै ॥ इतनी बिनती सुनहु हमारी वारकहू पतियां लिखि दीजे ॥ चरण कमल दरशन नवनौका करुणासिंधु जगत यश लीजै।सूरदासप्रभुआशमिलनकीएकबारआवन ब्रज कीजै२७॥ रागसारंग ॥ दिशिअति कालिंदीअतिकारी।अहोपथिक कहियौउनहरिसोंभई विरहज्वरजारी ॥ मन पर्यकते परी धरणिधुकि तरंग तलफ नित भारी।तट वारूउपचारचूरजलपरी प्रसेद पनारी ॥ बिगलित कच कुच कास कुलिन पर पंकजु काजलसारी । मनमें भ्रमरते भ्रमत फिरतहै दिशिदिशि दीनदुखारी॥निशिदिन चकई बादि बकतहै प्रेम मनोहरहारी । सूरदास प्रभु जोई यमुनगति सोइ गति भई हमारी॥२८॥परेखो कौन बोलको कीजै ।नाहरिजातिनपांतिहमारी कहामानिदुख लीजै ॥नाहिंन मोर चंद्रिकामाथे नाहिंन उर वनमाल । नहिं शोभित पुहुपनके भूषण सुंदर श्यामतमाल॥ नंदनँदन गोपीजन वल्लभ अब नहिं कान्ह कहावत । वासुदेव यादवकुल दीपक बंदीजन वर भावत ॥ बिसरयो सुख नातो गोकुलको और हमारे अंग। सूर श्याम वह गई सगाई वा मुरलीके संग॥२९॥बटाऊ होहिंनकाके मीत। संगरहतशिरमेलि ठगौरी हरत अचानक चीत॥मोहे नैन रूपदरशनके श्रवण मुरलिकागीत । देखतही हरि लै जु सिधारे बाँधि पिछोरी पीत ॥ याहीते झुकति इहै मग चितवति सुख जु भए विपरीत ।सूरदास बरुभलीपिंगला आशा तजि परतीत ॥ ३० ॥ राग मलार ॥ कहापरदेशीकोपतियारो।पीछेहीपछिताहिमिलहुगेप्रीतिबढाइ सिधारो ॥ ज्यों मृगनाद नादके बींधे लाग्यो बान बिसारो । प्रीतिके लिये प्राण वश कीनो हरि तुम यहै बिचारो ॥ बलि अरु बालि सुपनखा बपुरी हरिते कहा दुरायो।सूरदास प्रभु जानि भलेहो भरयोभरायो डरायो ॥ ३१॥ राग मलार ॥ कहा परदेशीको पतिआरो । प्रीति बढाय चले मधुवनको बिछुरि दियो दुख भारो॥ ज्यों जलहीन मीन तरफत ऐसे वेकल प्राण हमारो । सूरदास प्रभुके दरशनबिनु ज्यों बिनुदीपक भौन अँधियारो ॥ ६२ ॥ राग आसावरी ॥ सखी री हरिको दोष जनि देहु । ताते मन इतनो दुख पावत मेरोई कपट सनेहु ॥ विद्यमान अपने इन नैननि सूनो देखति गेहु । तदपि सखी ब्रजनाथबिना उरफटिनहोतबडवेहु॥ कहिकहि कथा पुरातन सजनी अब जिनि अंतहि लेहु । सूरदास तन योग करौंगीज्योंफिरिफागुन मेहु॥ ३३ ॥ राग मलार ॥अबकछु औरहि चालचली।मदनगोपालबिनायातनुकीसबैबातबदली॥ गृह कंदरा समान सेज भई चाहि सिंहहू थली ।शीतल चंद्र सुतौ सखि कहियत तिनहूं अधिक जली ॥ मृगमद मलय कपूर कुमकुमा सींचति आनि अली। एक न फुरत बिरह ज्वरते कछुलागति नाहिं भली॥वह ऋतु अमृतलता सुनि सूरज अब विषफलनि फली। हरि विधु मुख नहिंनहिंनै फूलतिमनसाकुमुदकली॥३४॥ राग सारंग ॥ इहिबिरियाबनतेब्रजआवते।दूरहितेवहबैनअधरधरि बारंबार बजावते ॥ कबहुँक काहू भाँति चतुर चित अति ऊंचे सुर गावते ।कबहुँकलैलैनाममनोहर धवरी धेनु बुलावते ॥ इहि बिधि वचन सुनाय श्यामघन मुरछे मदन जगावते।आगमसुखउपचार विरह ज्वर वासर ताप नशावते ॥ रुचिरुचि प्रेम पियासे नैनन क्रमक्रम बलहिं बढावते।सूरदास

स्वामी तिहि अवसरपुनिपुनि प्रगटकरावते॥ ३५॥ राग सारंग॥ नहिंबिसरतिवह रति ब्रजनाथ। हौं जु रही हठि रूठि मौन धरि सुखहीमें खेलत इक साथ॥ पचिहारे मैं मनायोनमानौंआपुनचरण छुए हरि हाथ।तबरिस धारिसोईउतमुखकरिझुकि झाँक्यो उपरैनामाथ॥रह्योंनपरै सुप्रेम आतुरअति जानी रजनी जात अकाथ।सूर श्याम हौं ठगी महा निशि पढि जु सुनाए प्रातके गाथ॥३६॥ राग बिलावल॥ माधौ इतने जतन तब काहेको किए। अपने जान जानि नँदनंदन अनेक भयनसों राखि लिए॥ अघ बक वृषभ बच्छ बधनते व्याकुल जीति दावानलहि पिए॥ इंद्र मान मेटे गिरि कर धरि छिनछिन प्रति आनंद हिए॥ हरि बिछुरत की पीर न जानी वचन मानि हम बादि जिए। सूरदास अब वा लालन बिन कहा न सहत एकठिन हिए॥३७॥ राग गौरी॥ यह कुमया जो तबहीं करते। तौ कत इन ये जिवत आजुलौं या गोकुलके लोग उबरते॥केशीतृणावर्तवृषभासुर कहौ कौनके मारे मरते। भूम प्रलंब व्याल दावानल हरि बिन वरहि निघाइ निवरते॥ शंखचूड बक बकी अघासुर सुरपति वरुन कौनते डरते। सूर श्याम तौ घोष कहातौ जो तुम इती निठुराई धरते॥ ३८॥ राग मलार॥ हरि हम तब काहेको राखी। जब सुरपति ब्रज बोरन लीनो दियो क्यों न गिरि नाखी॥ अबलौं हमारी जगमें चलती नई पुरानी साखी। सो क्यों झूठो होय सखी री गर्ग कथा सो भाखी॥ तो हमको होती कत यह गति निशिदिन वर्षत आंखी। सूरदास यों भई फिरत ज्यों मधु दूहेकी माषी॥२९॥ हरिजू वै सुख बहुरि कहां। यदपि नैन निरखत वह मूरति फिरि मन जात तहां॥ मुख मुरलीशिर मोरपंख बने उर घुँघुचिनिको हारु। आगे धेनु रेनु तनु मंडित चितवति तिरछी चारु॥रातिदिवस अँगअँग अपने हित हँसि मिलि खेलत खात। सूर देखि वा प्रभुताउनकीकही न आवै बात॥४०॥ राग सारंग॥ मधुवनतुमक्यों रहत हरे। विरहवियोग श्यामसुंदरके ठाढे क्यों न जरे॥ तुम हौ निलज न लज्जा तुमको फिर शिर पुहुप धरे। शश सियार अरु वनके पखेरू धिग धिग सबन करे॥ कौनकाज ठाढे रहे वनमें काहे न उकठि परे। कपट हेतु कीयो हरि हमसे खोटे होहिं खरे॥ गोविंदगुण उरते नहिं बिसरत रचिरचि कुसुम भरे। बिन देखे वा नंदनँदनको फूलत फेरि फरे॥ जब वे मोहन वेणु बजावत शाखा टेकि खरे। मोहे अस्थावरु जड जंगम मुनिगन ध्यान टरे॥ बिछुरत हियो बलि मोहनके केउ न कल्याण करे। सुख संपति बिछुरी मोहनकी फल फूलनसों करे॥ नैननते बिछुरे नँदनंदन चितते नहीं टरे। सूरदास प्रभु विरहदवानल नखशिखलौं पसरे॥४१॥ राग केदारो॥ जो सखि नाहिंनै ब्रज श्याम। वर्ष होत पलसम अब सो युगवर याम॥ उहै गोकुल लोग वेई उहै यमुनाठाम। उहै गृह जिहि सकल संपति बन भयो सोइ धाम॥ उहै रतिपति अछत मुरारिहि लैन सकतो नाम। सूर प्रभुबिनु अब कलेवर दहन लागे काम॥४२॥ राग जैतश्री॥ हरिनमिले माई जनम ऐसेही लागो जान। चितवत मग दिवस निशा जात युगसमान॥ चातक पिक वचन सखी सुनि न परत कान। चंदन अरु चंदकिरनि मनो अनेक भान॥ भूषण तनु पोत तज्यो रन आतुर त्रान। भीषमलौं सहत मदन अर्जुनके बान॥ सोखति तनुसेज सूर चलेनचपल प्रान। दक्षिण रवि अवधि अटल इतनी जिय आन॥ ४३॥ राग सारंग॥ अब योंहीं लागे दिन जान। सुमिरत प्रीति लाज लागतिहै उर भयो कुलिश समान॥ लोचन रहत वदन विनु देखे वचन सुनें बिनु कान। हृदय रहत हरि पान परस बिन छिदि तन मनसिज बान॥ मानो सखी रहे नहिं मेरे वै पहिले तनु प्रान। बिधि समेतरचि चले नंदसुत विरहव्यथादे आन॥ बिधि बछ हरे और

पुनि कीन्हें वैसेइ वेत विषान।सूरदास ऐसीए कछु यह समुझतहैं अनुमान॥४४॥राग धनाश्री॥ऐसे कोऊ नाहिंनै सजनी जो मोहनै मिलावै । बारेक बहुरि नंदनंदनको यहाँलौं लै आवै ॥ पांइन परि बिनती करि मेरी यह सब दशा सुनावै। निशि निकुंज निशि केलिपरमरुचि रासरंगकी सुरति करावै॥ और कौनहूं बातकी सकुच न सबबिधिकी उपजावै।पुनिपुनि सूर इहै करि हरिसोंलोचन जरत बुझावै॥४५॥केदारो॥बहुरच्योदेखिबो वहिभाँति।अशनबाँटतखातबैठे बालकनकीपाँति॥ एकदिन नवनीत चोरत हौं रही दुरिजाइ । निरखि मम छाया भजे मैं दौरि पकरेधाइ॥पोंछिकर मुख लिए कनियां तब गई रिसि भागि । वह सुरति जिय जाति नाहीं रहो छाती लागि॥ जिन घरनि वह सुख बिलोक्योते लगत अबखान।सूरबिनब्रजनाथ देखेरहत पापीप्रान॥४६॥रामकली॥ मरियत देखिबेकी हौसनि।जिन सतकल्प पलकवर जाते अब सु रही दुख मौसनि॥पलकभरेकी ओट न सहती अब लागे दिनजान।इतनेहूपर बिन साखन घर घटनिकसतन हिंप्रान॥ यदपिमोहिं बहुतै समुझावत सकुचन लीजतु मानि। अंतर हेरि जरत बिन देखे कौन बुझावै आनि॥कुबिजापै आवन क्यों पावत अबतो परिहै जानि॥लीनीबडी यहाऊँकीसब बात पाछिली ते सब गानि॥ आएसूरदिना द्वैतौकहा तौ मानिबो समौसो॥कोटिबेर जल औटिसिरावै तऊकहा पतिलौसो४७ ॥राग सारंग॥जिय हिय हौसै बिच जे रही।सुन री सखीश्यामसुंदरहँसि बहुरि नबाँहगही॥अबवह दिवस बहुरि कबह्वैहै ऐसे जानिसंगही।कहांसु कान्ह कहांरी अबहम कौन बयारिबही॥कासोंकहौं कहत नहिं आवै कहत परै न कही ॥ जो कछु हुती हमारे हरिके हरिके संगनिबही।अपनेकहतहि हलुकी लागै गोबिंदगुणनदही ।सूरदास काटे तरुवरज्यों ठाढीरटतरही॥४८॥राग जैतश्री॥ कहाँलौं मानौं अपनी चूक। बिन गोपाल सखी यह छतिया ह्वै न गई द्वै टूक॥तन मन धन यौवन ऐसे भए भुअंगमको फूक।हृदय जरतहै दावानल ज्यों कठिन बिरहकी हूक॥ जाकी मणि शिरतेहरिलीनी कहा कहत अति मूक।सूरदास,ब्रजवास बसी हम मनो दाहिनो सूक॥ ४९॥राग मलार॥ भलो ब्रज भयो धरणिते स्वर्ग। तब इनपर गिरि अब गिरिपर ए प्रीति किधौं यह दुर्ग॥सुरवासुर छलबोलवारी गढ अत्र अवधि मिति खूटी।प्रिय पतिविरह मदन गढ घेरचोएकौअलँग न टूटी॥ नैन तडाग श्रवण मूरति मठ यंत्र सकत वर बानी। रासकेलि घन पौरिकोट मनु देखि अमर रजधानी ॥ गोरंभन गोपाल गरजनिघन धूमिंदुदुभिन रौकी ।कंटक रोम कँगूरनि प्रति मनो अपनी अपनी चौकी॥चढत त्रिभंगी सौंज साजिसतधसतनहींपल आंखी।देखहु सूरसनेह श्यामकोगगनमंडल हम राखी ॥५०॥सखी री हरि बिनु हरि दुख भारी।सिंहको सुत हर भूषण ग्रासेसोइगति भई हमारी ॥ शिखर बंधु अरि क्यों न निवारत पुहुपधनुषके बिशेष । चक्षुश्रवा उर हार ग्रसी ज्यों छिन द्विदिया वपुरेख ॥ घटसू अशन समै सुत आनन अमी गलित जैसे मेत।जलधरव्योम अंबुकन सुचत नैन होड वदि लेत ॥ द्विजपति प्रभु मिलि आनि मिलावहु हरिसुत आरति जानि । जैसे हरि कर बंध प्रगट भए हरी आरती मानि ॥ षटआनन बाहन काननमें घन रजनी तहँ वासी ।सूरदास प्रभु चतुरशिरोमणि सुनि चातक पिक त्रासी॥५१॥राग सोरठ॥ कहा दिन ऐसेही जैहैं । सुन सखि मदनगोपाल अब किन ग्वालन संग रैहैं ॥ कबहूँ जात पुलिन यमुनाके बहुबिहार बिधि खेलत । सुरत होत सुरभी सँग आवत बहुत कठिन करि झेलत ॥ मृदु मुसुकानि आनि राखो पिय चलत कह्योहै आवन । सूर सो दिन कबहूं तौ ह्वैहै मुरली शब्द सुनावन ॥ ॥५२॥राग मलार॥श्याम सिधारे कौने देश।तिनको कठिन करेजो सखि री जिनकोपियपरदेश॥उन

ऊधो कछु भली न कीन्ही कौन तजनको बेश। छिन बिनु प्रान रहत नहिं हरिबिन निशिदिन अधिक अँदेश ॥ अतिहि निठुर पतिया नहिं पठई काहू हाथ सँदेश। सूरदास प्रभु यह उपजतहै धारिए योगिनवेश ॥९३॥राग मलार॥गोपालहि पावौं धौं केहि देश। शृंगी मुद्रा कनक खपरकरि करिहौं योगिनि भेष॥कंथा पहिरि विभूति लगाऊं जटाबँधाऊँ केश॥हरिकारण गोरखहि जगाऊं जैसे स्वांग महेश ॥ तन मन जारों भस्म चढाऊं बिरहिन गुरु उपदेश । सूर श्यामबिनु हम हैं ऐसी जैसे मणिविन शेष॥९४॥राग केदारो॥ फिरि ब्रज आइए गोपाल।नंदनृपतिकुमार कहिहैंअब न कहिहैं ग्वाल ॥ मुरलिका सुर सप्त दिशि दिशि चले निशान बजाई। दिग्विजयको युवति-मंडल भूप परिहैं पाइ ॥ सुरभिसेन सु सखा भट सँग उठैगी खुर रेनु । आतपत्र मयूरचंद्रिका लसतिहै रवि ऐनु ॥ सदसपति मधुकरनिकर वर मदन आयसु पाइ। द्रुम लता बन कुसुम बानकु वसन कुटी बनाइ॥सकल खगगण पैक पायक पौरिया प्रतिहार।समै सुख गोविंद ब्रजकोकहतसूर बिचार॥९५॥राग जैतश्री॥फिरिकैवसोगोकुलनाथ। अबनतुमहिं जगाय पठवैंगोधननकेसाथ॥बरजै न माखन खात कबहूं दह्यो देत लुढाय।अब न देहिं उराहनो यशुमतिहि आगे जाइ॥दौरिदामन देहिंगी लकुटी यशोदा पानि । चोरी न देहिं उघारिकै अवगुण न कहिहैं आनि॥ कहिहैंनचरणन देन जावक गुहन बेनी फूल। कहिहैं न करन शृंगार कबहीं वसन यमुना कूल ॥ करिहैं न कबहीं मान हम हठिहैं न मांगत दान। कहिहैं न मृदु मुरली बजावन करन तुमसों गान ॥ देहु दरशन नंदनंदनमिलनहूंकी आश।सूर हरिकेरूपकारन मरतलोचन प्यास॥९६॥राग जैतश्री॥ हरिसो प्रीतम क्यों बिसराइ। मिलन दूरि मन बसत चंद्रपर चितचकोर पछिताइ ॥ जलमें रहै जलहिते उपजै जलही बिन कुँभिलाइ । जल तजि हंस चुगै मुक्ताफल मीन कहां उडिजाइ ॥ सोइ गोकुल गोवर्धन सोई सोइ किन करहि अब छाइ। प्रगट न प्रीति करै परदेशी सुख केहि देश समाइ ॥ धरणी दुखित देखि बादर अति वर्षाऋतु बरसाइ । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिन दुख क्यों हृदय समाइ ॥ ९७ ॥ बारक जाइबो मिलि माधो ।को जानै तनु छूटि जाइगो शूल रहै जिय साधो॥पहुनेहु नंद बबाके आवहु देखि लेउँ पलआधो।मिलेही-में विपरीति करी विधि होत दरशको बाधो ॥ सो सुख शिव सनकादि न पावत जो सुख गोपिन लाधो।सूरदास राधा विलपति है हरिको रूप अगाधो ॥९८॥अथ नैनप्रस्तावपद ॥ राग मलार ॥ बारक नैनहूं मिलि जाहु। कमलनैन घन श्याम राधिकहि परसत जो न पत्याहु ॥ जानतहौ कर कमल विरोधी बरन विरोधी बाहु । शशि मुखशत्रु पयोधर गिरि अति तहाँ तुम क्यों वसमाहु ॥ गज गति मंद मरालविरोधीहेम सुरुचि रिपु दाहु। जंघ कदलि कटि सिंह विरोधी न्याय निरखि सकुचाहु॥ चीन्हिलहे चितचोरि सकलअँग एकै सुपतनशाहु। तदपि सूर उनकी रुचि राखहु कत अधिकै ब डराहु ॥९९ ॥ राग सारंग ॥ नैननको मत सुनो सयानी। निशिदिन तपति सिरात न कबहूं यद्यपि उमँगि चलत पटरानी॥ हौं उपचार अमित आनत उर खल भयो लोक लाज कुलकानी। कछु न सोहाइ दही दरशनदौ वारिजबदन मंद मुसकानी॥रूपलकुटअभिमान मनहु उलटी उन माँझ समानी। आरज पथ गुरु ज्ञान कुपित करि सूरज विकल समानी ॥ ६० ॥राग मलार ॥सखि इन नैननते घन हारे। बिनहीऋतु बरषत निशिवासर सदा मलिन दोउ तारे॥ ऊरधश्वास समीर तेज अति सुख अनेक द्रुम डारे । दिशन सदन करि वसे वचन खग दुख पावसके मारे॥ ढुरिढुरि बूँद परत कंचुकिपर मिलि अंजनसों कारे। मानो परनकुटी शिव कीन्हीं विवि मूरति धरि न्यारे ॥ झुमिरि सुमिरि गर्जत जल छाँडत अंशु सलिलके धारे।

बूडत ब्रजहि सूरको राखै बिन गिरिवरधर प्यारे॥६१॥नैनासावन भादौंजीते।इनही विषे आनि राखै मनो समुदनिहूं जलरीते॥ वै झरलाय दिनाह्वै उघरत ए भूलि न मारग देत। वै वर्षत सबके सुख कारण ए नँदनंदन हेत॥ वै परिमान पुजे दहमानत ए दिन धार न तोरत। यह विपरीति होति देखति हौं बिना अवधि जग बोरत॥ मेरे जिय ऐसी आवत भई चतुराननकी मांझ। सूर बिन मिले प्रलय जानिबो इनहीं दिवसनि सांझ॥६२॥निशि दिन वरषतु नैनहमारे। सदा रहत वर्षाऋतु हमपर जबते श्याम सिधारे॥ नैन अंजन न रहत निशि वासर कर कपोल भए कारे। कंचुकि पट सूखत नहिं कबहूँ उर बिच बहत पनारे॥ ऐसे सलिल सबै भई काया पलन जातरिसटारे।सूरदासप्रभुगोकुलबूडत काहेनलेत उबारे॥६३॥राग सारंग॥नैननधौंनाधौहैझर।ऊँचे चढि टेरत अतिआतुर सुरकहि गिरधर गिरिधर॥ फिरत सदन दरशनके काजै ज्यों झष सूखे सर।कौनकौनकी दशा कहौं सुन सब ब्रज तिनते पर॥निशि दिन कलमलात सुन सजनी शिरपर गाजत मदन अर। सूरदास प्रभु रही मौन ह्वै कहि नहिं सकति मैनके भर॥६४॥ अति रसलंपट मेरे नैन। तृप्ति न मानत पिवत कमल मुख सुंदरता मधु बैन॥ दिन अरु रैनि दृष्टि रसना रस निमिष न मानत चैन।शोभासिंधु समाइ कहांलौं हृदय सांकरे ऐन॥ अब यह विरह अजीरणह्वैके वमिलाग्यो दुखदैन।सूरवैदब्रजनाथमधुपुरीकाहिपठाऊँलैन॥६५॥राग केदारो॥ हरि दरशनको तरसत अँखियां।झांकति झपति झरोखा बैठी कर मींडत ज्यों मखियां॥बिछुरी वदन सुधानिधि रिसते लागत नहीं पलखियां।इकटक चितवति उडि न सकति जनु थकित भई लखि सखियाँ॥ बारबार शिर धुनति विसूरति विरह ग्राह जन भखियाँ॥ सूर स्वरूप मिले ते जीवहि काढिकिनारे नखियाँ॥६६॥राग सारंग॥लोचन व्याकुल दोऊ दीन।कैसे रहैं दरशबिनदेखे विधु चकोर ज्यों लीन॥ विवरन भए खंज जों दाधे वारिज ज्यों जलहीन।श्याम सिंधुसोंबिछुरिपरेहैं तरफरात ज्यों मीन॥ ज्यों रतिराज बिमुख भृंगीको छिनुछिनु वाणी हीन। सूरदास प्रभु बिनुगोपालहि कत विधनै एई कीन॥६७॥महा दुखित दोउ मेरे नैन।जादिनते हरि चले मधुपुरी नेकु न कबहूं कीनो सैन॥ भरेरहत अति नीर न निघटत जानत नहिं दिन रैन। महादुखित अतिही भ्रम माते बिन देखे पावत नहिं चैन॥ जो कबहूं पलको नहिं खोलत चाहनचाहत मूरति मैन।छाँडत छिनमें ए जो शरीरहि गहिकै व्यथा जात हरि लैन॥ रसना इहई नेम लियो है और नहीं भाषौं मुख बैन। सूरदास प्रभु जबते बिछुरे तबते सब लागे दुख देन॥ ६८॥अँखियाँ करतिहैं अति आर। सुंदरश्याम पाहुनेके मिसि मिल न जाहु दिनचार॥ बाँह थकी वायसहि उडावत कब देखौं उनहार।मैंतो श्याम श्याम कै टेरति कालिंदीके करार॥कमलवदन ऊपर दुइ खंजन मानो बूडत वार।सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु सकैं न पंखपसार॥६९॥राग धनाश्री॥लोचनलालचते न टरैं।हरिमुख ए रंगसंगविधे दाधौ फिरैंजरैं॥ज्यों मधुकररुचिरच्यो केतकी कंटककोटिअरैं। तैसोई लोभ तजत नहिं लोभी फिरिफिरि फिरी फिरैं॥मग ज्यों सहत सहज सरदारन सन्मुखते न टरैं।जानत आहि हते तनु त्यागत तापर हितहि करैं॥समुझि न परै कवन सच पावत जीवत जाइ मरैं। सूर सुभट हठ छाँडत नाहीं काटो शीश लरैं॥७०॥राग सारंग॥लोचन चातक जीवो न चाहत। अवध गए पावसकी आशा क्रमक्रम करि निरवाहत॥ सरिता सिंधु अनेक अवर सखि विलसत पति सजन सनेह।ए सब जल यदुनाथ जलद बिनु अधिक दहतहैं देह॥ जबलगि नहिं बरसत ब्रजऊपर नौघन श्याम शरीर।तौइह तृषा जायक्यों सूरज आनिओसकेनीर॥७१॥राग मलार॥ नैनन

नैननकी सुधि लीजै। गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब दीन मलीन दिनहिं दिन छीजै॥ नैन सजल जलधार बढे अति बूडत ब्रज किन कर गहिलीजै। इतनी बिनती सुनहु हमारी बारकहू पतिआ लिखि दीजै॥ चरणकमल दरशन नवनौका करुणासिंधु जगत यश लीजै।सूरदास प्रभु आश मिलनकी एकबार आवन ब्रज कीजै॥७२॥ राग केदारो॥ मेरेनयनाबिरहकी बेलि बई। सींचत नीर नैनके सजनी मूल पताल गई॥ बिकसत लता सुभाइ आपने छाया सघन भई। अब कैसे निरुवारौं सजनी सबतन पसरि छई॥को जानै काहूके जियकी छिनछिन होत नई। सूरदास स्वामीके बिछुरे लागे प्रेम झई॥७३॥ राग देवगंधार॥ ब्रजबसिकाकेबोलसहौं। इह लोभी नैननके काजे परवश भई जो रहौं॥बिसरि लाज गई सुधिनहिं तनुकी अबधौं कहा कहौं। मेरे जियमें ऐसी आवत यमुना जाइ बहौं॥ एक बन ढूँढिसकल बन ढूँढ्यो कबहुँनश्याम लहौं।सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको इह दुख अधिक सहौं॥ ७४॥ राग केदारो॥ नैना अब लागे पछितान। बिछुरत उमँगि नीर भरि आई अब न कछू अवसान॥ तब मिलिमिलि कत प्रीति बढावत अब सो भई विषवान।तबतौ प्रीति करी उत्तर होइ समुझी कछु न अजान॥ अब इह काम दहत निशि वासर नाहीं मेरे मान। भयो बिदेश मधुपुरी हमका क्योंहू होत न जान॥ अति चटपटी देखिबे चाहत अब लागी अकुलान। सूरदास प्रभु दीन दुखित ए लै न.गएसँगप्रान॥७५॥ राग आसावरी॥ हौं तादिन कजरा देहौं। जादिन नंदनँदनके नैनन अपने नैन मिलैहौं॥ सुनरी सखी इहै जिय मेरे भूलिन और चितैहौं।अब हठ सूर इहै व्रत मेरो कौकिरखै मरिजैहौं॥७६॥ राग मलार॥ उपमा नैनन एक रही।कविजन कहतकहत सब आए सुधि करि नाहिं कही॥ कहि चकोर बिधुमुख बिन जीवत भँवर नहीं उडिजात। हरिमुख कमलकोश बिछुरते ढोले कत ढहरात॥ अघा बधिक व्याधा ह्वै आय मृगसम क्योंन पलात। भाजिजाहि बन सघन श्याममें जहां न काऊ घात॥ खंजन मनरंजन न होहिं ए कबहिं नहीं अकुलात। पंख पसारि नहो छिन चपला गति हरिसमीप मुकलात॥ प्रेम न होहि कौन बिधि कहिए झूठेही तनु आडत। सूरदास मीनतौ कछुएक जल भरिकबहुँ नछाँडत॥७७॥ राग गौरी॥ कहाइन नैननकोअपराध। रसना रटत सुनत यश श्रवणन इतनी अगम अगाध॥भोजन किये बिनु भूख क्योंभाज बिनखाए सब स्वाध। इकटक रहत छुटत नाहिं कबहू हरि देखनको साध॥ ये दृग दुखी बिना वह मूरति कहौ कहा अब कीजै। एकबेरब्रज आनि कृपाकरि सूर सो दरशन दीजै॥७८॥ राग मलार॥ चितवतही मधुवन तन जात। नैननि नींद परति नहिं सजनी सुनि सुनि बात मनै अकुलात॥ अब ए भवन देखिअत सूनो धाइ धाइ हमको ब्रज खात। कवन प्रतीति करै मोहनकी जेहिं छाँडे निज जननी तात॥ अनुदिन नैन तपत दरशनको हरदि समान देखिअत गात। सूरदास स्वामीके बिछुरे ऐसे भए हमारे घात॥७९॥ राग मलार॥देख सखी उत है वह गाउँ।जहां बसत नँदलाल हमारे मोहन मथुरा नाउँ॥ कालिंदीके कूल रहतहै परम मनोहर ठाउँ। जो तनु पंख होइ सुनसजनी आजुअबहिं उडिजाउँ॥होनीहोउ होउसो अबहींयहि ब्रज अन्न न खाउँ। सूरदासनँदनंदनसोंरतिलोगन कहाडराउँ॥८०॥राग गौरी॥मथुराकेद्रुमदेखिअतन्यारे।वहई श्याम हमारे प्रीतम चितवत लोचन हारे॥ कितिक बीच संदेशहु दुर्लभ सुनियत टेर पुकारे। तुव गुण सुमिरिसुमिरि हम मोहन मदन बान उर मारे।तुम बिन श्याम सबै सुख भूलो गृह बन भए हमारे। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु रैनि गनत गई तारे॥८१॥स्वप्नदर्शनवर्णन॥राग केदारो॥जबतै बिछुरे

कुंजबिहारी । नींद न परै घटै नहिं रजनी व्यथा विरहज्वर भारी ॥ हौं उठि सखिआँगनह्वैआई जगमगिरही जियारी । श्रवणशब्द सुहाइ नसखीरीयमचातकद्रुमडारी॥ उरतेसखीदूरिकरुहारहि कंकन धरहु उतारी॥सूरदास प्रभुबिनअतिव्याकुलकरि वह जतन जुहारी ॥८२॥राग नट ॥सुपनहुमें देखिये जो नैननि नींद परै । विरहिनि ब्रजनाथबिन कहि कौन उपाइ करै॥चंदमंदसमीरशीतल सेज सदा जरै।कहा करौं कौनी भाँति मरौं मन धीरजन धरै॥बहुत उपाइ करै विरहिनि कछु न चाव सरै । सूर शीतल कृष्णबिन कहौकौन तापहरै॥८३॥राग सारंग॥ इतनीदूरिगोपालहिकबहुँ न मिलि आई।.कहिए कहा दोष दीजै किहि अपनीही जडताई ॥ सोवत महा मनो सुपने सखि अवधि निधन निधि पाई । गनतहि आनि अचानक कोकिल उपवन बोलि जगाई।।जोजागौंतो कहा उठि देखौं विकल भई अधिकाई । किसलै कुसुम नवनूत दशहु दिशि मधुकर मदनदोहाई॥ बिछुरत तनु नाम ज्यों हठि तिहि छिन गई नहीं सगुमाई । समुझि न परी सूर दोहेदिन हरि हँसि कंठ लगाई॥८४॥ राग धनाश्री ॥तबहीं जैहैं हेति कहां । जहँ वै श्याम मदनमूरति चल मोहिं लिवाइ तहां॥कुटिल अलक मकराकृत कुंडल सुंदर नैन विशाल।अरुन अधर नासिका मनोहर तिलक तरनि शशिभाल॥दशन ज्योति दामिनिज्यों दमकति बोलत वचन रसाल।उर बिचित्र वनमाल बनी जनु कंचन लता तमाल ॥ घनतन पीत वसन शोभित अति अलिके बलैपराग ॥बिपुलबहू अति कृत परिरंभन मनहुँ बसे द्रुम नाग। सोवतिही सुपनेमहिं सोचति सत्य जानि जिय जागी ।सूरदास प्रभु प्रगट मिलनको चातकज्यों लवलागी ॥८५॥ राग मलार॥ सुपनेहरिआएहौं किलकी । नींद जो सौति भई रिपु हमको सहि न सकीरति तिलकी ॥ जो जागौं तोकोऊ नाहीं रोके रहति न हिलकी । तब फिरि जरनि भई नख शिखते दिआ बाति जनु मिलकी । पहिली दशा पलटि लीनी है त्वचा त्वचकि तनु पिलकी। अब कैसेसहिजातहमारी भई सूरगति सिलकी ॥८६॥राग कान्हरो ॥ मैंजान्योरीआएहैं हरि चौंकिपरेते पछितानी । इते मान तन तलफत वहिंते जैसे मीन बिन पानी ॥ सखीं सुदेहते जरति विरह ज्वर तनुपुनिपुनि नहिं प्रकृत्यो आनी॥कहा करौं अपथि भईमिलिबाढी व्यथा दुःखदुहरानी॥ पठवौं पथिक सब समाचार लिखिबिपतिविरह वपुअकुलानी। सूरदास प्रभुतुम्हरे दरशबिना कैसे घटत कठिनकानी ॥८७॥ राग मलार ॥ज्योंजागोतो कोऊ नाहीं अंत लगीपछितान। हौंजानौंसाँचे मिले माधौ भूलो यहि अभिमान ॥ नींदमाहिं मुरझाइ रही हौं प्रथमपंच संधान।अब उरअंतर मेरी माई सपनें छुटी छलिवान ॥ सूर सकति जैसे लछिमन तन विह्वल होइ मुरझान । ल्याउ सजीवन मूरि श्यामको तौ रहिहैं ए प्रान ॥ ८८ ॥ राग कल्याण॥ हारिबिछुरननिशिनींदगईरी।वन प्रिय विरह शिलीमुख मधुपति वचननि हौंअकुलाई री॥ वह जु हुती प्रतिमा समीपकी सुख संपति दूरंत जई री । ताते भर हरि सुन री सजनी सेज सलिल दृगनीर मई री ॥ अबउ अधार जु प्राण रहत हैं इनि वशहिन मिलि कठिन ठई री। सूरदास प्रभु सुधारस बिना भई सकल तनु बिरह रई री ॥ ८९ ॥ राग केदारो ॥ वहुरचो भूलि न आँखि लगी । सुपनेहूके सुख न सहि सकी नींद जगाइ भगी ॥ बहुत प्रकार निमेष लगाए छूटि नहीं शठगी।जनु हीरा हरि लिए हाथते ढोल बजाइ ठगी॥कर मींडति पछितति बिचारतिइहि बिधि निशा जगी । वहमूरति वहसुखदिखरावैसोईसूर सगी॥ ९० ॥ राग धनाश्री॥अबसखिनींदौतो गई। भागी जिय अपमान जानि जनु सकुचनि ओट लई ॥ अति रिस अहनिशि कंत किए वश

आगम अटक दई। सुपनेहु संयोग सहति नहिं सहचरि सौति भई॥कहतहि पोच सोच मनहीं मन करत न बनति खई।सूरदासतनुतजेभले बनैबिधिबिपरीति ठई॥ ९१॥राग नट॥पियकी बात सुनहि किन प्यारी। जो कछु भयो सोकहिहौं तुमसन होहु सखिनतेन्यारी॥ तवबियोगशोक तौ उपज्यो कामदेव तनु जारी। भेषज अधर सुधाहै तुमपै चलिदै व्यथा निवारी॥ कठिन परे जु कुशल रिपु पूँछे मनकीकहा विचारी।सूरदासप्रभु हृदय है तेरे मानहु सार पुछारी॥९२॥रागमलार॥ हमको सुपनेहूमें सोच। जादिनतेबिछुरेनँदनंदन इह ता दिनते पोच॥ मनो गोपाल आए मेरे गृह हँसिकरि भुजा गही। कहा करौं वैरिनि भई निद्रा निमिष न और रही॥ ज्यों चकई प्रतिबिंब देखिकै आनंदै पियजानि।सूरपवन मिलिनिठुरविधाता चपलकियोजलआनि॥९३॥रागबिहागरो॥ हरिबिनु वैरिननींद बडी। हौं अपराधिनि चतुर विधाता काहे बनाइ गढी॥ तन मन धन यौवन सुख संपति बिरहाअनल दढी।नँदनंदनको रूप निहारतअहनिशि अटा चढी॥जेहिंगोपाल मेरे वश होते सो विद्या नपढी।सूरदास प्रभु हरिनमिलै तौघरतेभली मढी॥९०॥राग मलार॥सुनहु सखी ते धन्य नारि।जो अपने प्राणवल्लभकी सपनेहुँ देखतिहै अनुहारि॥ कहा करौं चलतश्यामके पहिलेहि नींद गई दिनचारि।देखि सखी कछु कहत नआवैझींखिरही अपमानन मारि॥जादिनते नैनन अंतर भयो अनुदिन अति बाढतिहै वारि। मनहुँ सूर दोउ सुभग सरोवर उमँगि चलेमर्यादा डारि॥९५॥राग मलार॥हमकोजागत रैनिबिहानी।कमलनैनजगजीवनकीसखिगावतअकथकहानी विरह अथाह होत निशि हमको बिनु हरि समुद समानी। क्योंकरि पावहि विरहिन पारहि बिन केवट अगवानी॥ उदित सूर चकई मिलाप निशि अलि जो मिलै अरविंदहि। सूर हमैं दिन रात दुसह दुख कहा कहैं गोविंदहि॥ ९६॥ मोको माई यमुना जल होइरही। कैसे मिलौं श्याम-सुंदरको वैरिनि बीच बही॥ केतिक बिच मथुरा औ गोकुल आवत हरि जो नहीं। हम अबला कछु मर्म न जान्यो चलत न फेट गही॥अब पछितात प्राण दुख पावत जात नबात कही। सूर-दास प्रभुसुमिरिसुमुरि गुणदिनदिन शूल सही॥९७॥राग धनाश्री॥नैनसलोनेश्यामहरिकब आवहिं-गे। वै जो देखत रातेराते फूलन फूले डार। हरिबिनु फूलझरीसी लागत झरिझरि परत अँगार। फूल बिनन ना जाउँसखी री हरिविन कैसे फूल।सुन री सखी मोहिं रामदोहाई लागतफूलत्रि-शूल॥ जबते पनिघट जाउँ सखीरी वा यमुनाके तीर।भरिभरि यमुना उमडि चलतहै इननैननके नीर॥ इन नैननके नीर सखी री सेज भई घर नाव। चाहत हौं ताहीपै चढिकै हरिजीकेढिग जाव॥ लाल पियारे प्राण हमारे रहे अधरपर आइ। सूरदास प्रभु कुंजविहारी मिलत नहीं क्यों धाइ॥९८॥राग मलार॥ बहुरो गोपाल मिले सुखनेह कीजै।नैनन मग निरखि वदनशोभारस पीजै॥ मदनमोहन हृदय उर आसन दीजै। परैंन पलक आखिनके देखि देखि जीजै॥ मान छांडिप्रेम भजन अपनो करिलीजै।सूरसोई सुभगनारिजासोंमन भीजै॥९९॥राग केदारो॥सखीरी हरि आवैं केहि हेत। वै राजा तुम ग्वाल बुलावत इहै परेखो लेत। अब शिर छत्र कनक राजतहै मोरपंख नहिं भावत। सुनि ब्रजराज पीठिदै बैठत यदुकुल विरद बुलावत॥द्वारपाल अति पौर बिराजत दासी सहस अपार।गोकुल गाइ दुहत दुख गोयो सूर भए एवार॥२८००॥ राग मलार॥ चलत न माधौकी गहि बाहैं। बारबार पछिताति सबहिते इहै शूल मनमाहैं॥ घर बन कछु न सुहाइ रैनि दिन मनहुँ मृगी दौ दाहैं। मिटति न तपनि बिना घनश्यामहिं कोटि घनी छन छाहैं॥ विलपति अति पछिताति मनहिं मन चंद्र गहे जनु राहैं। सूरदास प्रभु दूरि सिधारे दुख

कहिए केहि पाहैं॥ १॥ राग सारंग॥मनकी मनही माहँ रही । जब हरि रथ चढि चले मधुपुरी सब अज्ञान भही ॥ मति बुधि हरी परी धरणी पर अति बेहाल खरी । अंकुश अलक कुटिल भए आशा ताते अवधि वरी ॥ ज्यों बिनु मणि अहि मूक फिरतहै याबिधि बिधि बिपरीतधरी। मन तो रह्यो पंथ सूरज प्रभु माटी रही धरी ॥२॥ मेरो मन वैसै सुरति करै । मृदु मुसुकानि नेक अवलोकनि हृदयेते न टरै ॥ जब गोपाल गोधनसँग आवत मुरली अधरधरै । मुखकेरेणु झारि अंचलसों यशुमति अंग भरै ॥संझा समय घोषकी डोलन वह सुधि क्यों बिसरै । सूरदास प्रभु दरशनकारण नैनन नीर ढरै ॥ ३ ॥राग आसवरी ॥जाको मन लाग्यो नँदलालहि ताहि और क्यों भावै हो। जैसे मीन दूधमें डारे जलबिनु नहिं सचु पावै हो॥अति सुकुमार डोलत अंगनही परि काहू न जनावै हो। जैसे सरिता मिलै सिंधुको उलटि प्रवाह न आवै हो॥ ऐसे सूरकमललोचनबिनु मन नहिं अनत लगावै हो॥४॥राग सारंग॥ कहां लौं रखिए मन बिरमाई । इकटक शिव धरे नैन लागत श्यामसुता सुत धनआई॥हर बाहन दिव बास सहोदर तिहि मति उदित मुरछि मुहि जाई । गिरिजापति रिपु नखशिख ब्यापत वंश सुधा पिय कथा सुनाई ॥ बिरहिन विरह आपु वश कीन्हें लेउ कमल जिमि पाइ छुआई। वेगिहि मिलौ सूरके स्वामी उदधितनयापति मिलिहै आई॥५॥राग मारू॥कमलनैन अपने गुनन मन हमारो बाँध्यो।लागत तो जानों नहिंविषम बाणसाध्यो॥कठिन पीरबाँध्यो शर मारि गयो माई । लागत तो जानो नहिं अब सहो न जाई॥ मंत्र तंत्र जेतिक करौ तउ पीर न जाई। है कोउ उपचार करै कठिन दरद माई॥ कैसेहुँ नंदलाल पावों नेक मिलौं धाई।सूरदास प्रेमफंद तोरौ नहिं जाई॥६॥राग सोरठ॥ हरि हमसोंकरी री माई मीन जलकी प्रीति । इतनी दूरि दयालु माधौ गई अवधि व्यतीति॥ तलफिकै उन प्राण दीनों प्रेमकी परतीति । नीर निकट न पीर जानी व्यर्थ गयो वपु बीति॥ चलत मोहन कहो हमसों आइहैं रिपु जीति । सूर वा ब्रजनाथके जिय सबै उलटी रीति॥७॥ राग धनाश्री ॥मतिकोईप्रीतिकेफंगपरै। सादर संत देखि मन मानो पेखै प्राण हरै ॥ या पतंग कहा कर्म कीन्हों जीवको त्याग करै। अपने मरबेते न डरतहै पावक पैठि जरै ॥ भौ करत नहीं ताहि निपाते केतिक प्रेम धरै ।शारँग सुनत नाद रस मोह्यो मरिबेते न डरै॥ जैसे चकोर चंद्रको चाहत जल बिन मीन मरै । सूरज प्रभुसों ऐसेमिलिएतौ कहौ कानसरै॥८॥राग सारंग ॥ प्रीति करि काहू सुख न लह्यो ।प्रीति पतंग करी दीपकसों आपै प्राण दह्यो ॥ अलिसुत प्रीति करी जलसुतसों संपति हाथ गह्यो । शारँग प्रीति करी जो नादसों सन्मुख बान सह्यो ॥ हम जो प्रीति करी माधौसों चलत न कछू कह्यो । सूरदास प्रभु बिनु दुख दूनो नैनन नीर बह्यो ॥ ९ राग मला ॥ प्रीति तौ मरनोऊ नबिचारै॥प्रीति पतंग ज्योंति पावक ज्यों जरत न आपु सँभारै ॥ प्रीति कुरंगनादस्वरमोहितबधिकनिकटह्वैमारै। प्रीति परेवा उडत गगनते गिरत न आपु सँभारै॥ सावन मास पपीहा बोलत पियपिय करि जो पुकारै। सूरदास प्रभुदरशन कारन ऐसी भाँति बिचारै ॥ १०॥ जिन कोउ काहूके वश होहि । ज्यों चकई दिनकरवश डोलति मोहिं फिरावत मोहि ॥ हमतौ रीझि लटू भई लालन महाप्रेम तिय जानि । बंध अबंध अमति निशिवासर को सुरझावति आनि॥ उरझे संग अंगअंग प्रति बिरह वेलिकी नाई । मुकुलिति कुसुम नयन निद्रा तजि रूपसुधा सियराई ॥ अति आधीन हीन मति व्याकुल कहांलौं कहौंबनाइ।ऐसी प्रीति करी रचनापर सूरदासबलिजाइ॥ ११॥राग नट॥ दिनही दिन को सहै बियोग । यह शरीर नाहिंन मेरो सखि इहै बिरह ज्वर योग ॥ रचि लक

कुसुम सुगंध सेजसजि बसन कुमकुमा बोरि।नलिनीदलनि दूरिकरि उनते कंचुकिकेबँदछोरि ॥ बन बन जाइ मोर चातकपिक मधुवनटेरिसुनाई।उचित चंद चंदन चढाइउर त्रिबिधसमीरबहाई ॥ रटि मुख नाम श्यामसुंदरको तोहिं सुनाइ सुनाई।तो देखत तनु होमि मदनमुख मिलौंमाधवहि जाई ॥ सूरदास स्वामी कृपालु भए जानि युवति रसरीति । तिहि छिन प्रगट भए मनमोहन सुमिरि पुरातन प्रीति ॥ १२॥राग धनाश्री॥ बहुरि न कबहूँ सखी मिलैं हरि । कमलनयनके कारण सजनी अपनोसो जतन रही बहुतै करि॥जेइजेइ पथिक जात मधुवनतन तिनहुँसोंव्यथा कहति पाँइनि परि । काहु न प्रगट करी यदुपतिसों दुसह दुरासा गई अवधि ढरि ॥ धीरनधरति प्रेमव्याकुल चित लेत उसाँस नीर लोचन भरि। सूरदास तनु थकित भई अब कृष्णविरहसों परि न सकति मरि॥ १३॥पावससमयवर्णन राग मलार॥ब्रजते पावस पै न टरी॥ शिशिर वसंतशरद गत सजनी वीती औधि करी ॥ उनैउनै घन वरपत चख उरसरिता सलिलभरी। कुमकुम कज्जल कीच बहै जनु कुचयुग पारि परी ॥ ताहुमें प्रगट विषम ग्रीषमऋतु इतयो ताप मरी।सूरदास प्रभु कुमुद चंद्रबिनु बिरहातरनि जरी ॥ १४ ॥ अब वर्षाको आगम आयो । ऐसे निठुर भये नँदनंदन संदेशो न पठायो ॥ बादर घोर उठे चहुँ दिशिते जलधर गरजि सुनायो।एकै शूल रही मेरे जिय बहुरि नहीं ब्रज छायो ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत कोकिल शब्द सुनायो । सूरदासके प्रभुसों कहियो नैनन है झर लायो ॥ १५ ॥ माई री ए मेघ गाजैं।मनहुँ काम कोपिचढोकोलाहल कटक बढ्यो बरहा पिकचातक जैजै निसान बाजैं ॥ वरनवरन बादर बनाए तव जगत बिराजैं । दामिनि करवार करनि कंपत सब गात उरनि जलधर समेत सेन इंद्र धनुष साजै ॥ ऐसे अभिलाप धीर विगत विरत ते न लाजै । अबलनि अकेली करि अपनी कुलनीति विसरि अवधि संग सकल सूर भहराइ भाजै ॥ १६ ॥ ब्रजपर बदरा आए गाजन । मधुवनको पठए सुनु सजनी फौज मदन लग्यो साजन ॥ ग्रीवारंध्र नैन चातकजल पिक मुख बाजे बाजन।चहुँदिशिते तनु विरहा घेरो अब कैसे पावतु भाजन॥कहियत हुते श्याम परपीरकआए शंकर काजन । सूरदास श्रीपतिकी महिमा मथुरा लागे राजन ॥ १७ ॥ देखियत चहुँदिशिते घन घोरे। मानोमत्त मदनके हथियन बलकरि बंधन तोरे॥ श्याम सुभगतनु चुअत गंडमदवरषत थोरेथोरे । रुकत न पौन महावतहूपै मुरत न अंकुशमोरे ॥ बल वेनी बल निकसि नयनजलकुच कंचुकि बंद बोरे ।मनो निकसि बगपाँति दांत उर अवधि सरोवर फोरे ॥ तब तेहि समै आनि ऐरापति व्रजपतिसों करजोरे। अब सुनि सूर कान्ह केहरिबिन गरत गात जैसे बोरे॥१८॥ब्रजपर सजि पावस दल आयो ।धुरवा धुंधि बढी दशहूँ दिशि गर्जि निसान बजायो॥चातक मोरइतरपै दागन करत अवाजैं कोयल । श्याम घटा गज अशन वाजि रथ चित बगपांति सजोयल ॥ दामिनि कर करवार बूँद शर इहिबिधि साजे सैन।निधरक भयो चल्यो ब्रज आवत अग्र फौजपति मैन ॥ हम अबला जानिकै तुम बल कहौ कौन विधि कीजै।सूर श्याम अबके इहि औसर आनि राखि ब्रज लीजै ॥१९॥ सखि री पावस सैन पलान्यो।पायो बीचइंद्र अभिमानीहरि बिन गोकुल जान्यो ॥ दशहु दिशासों धूम देखियत कंपतिहै अति देह । मनहु चलत चतुरंगचमू नभ बाढी है खुर खेह ॥ बोलत मोर शैल द्रुम चढिचढि बग जु उडत तरु डारैं । मनु सहनाफहराइ फिरावत भाजन कहत पुकारैं ॥ गर्जत गगन गयंद गुंजरत अरु दादुर किलकारै । सूरदास प्रभु अपने ब्रजकी काहेन करत सँभार ॥२०॥ बदरिया बधन बिरहिनी आई । मारुत मोर करत

चातक पिक अरु नग शिखर सुहाई ॥ नदिया सुचर संदेश क्यों पठऊं बाट तृणनहू छाये। इकहम दीन हती कान्हर विनु औ इन गरजि सुनाए॥ सूनो घोष वैर तकि हमसों इंद्र निसान बजाए। सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि होति हमारे धाए॥२१॥ वरु ए बदराऊ वर्षन आए। अपनी अवधि जानि नँदनंदन गरजि गगन घन छाए ॥ कहियतहै सुरलोक वसत सखि सेवक सदा पराए। चातक पिककी पीर जानिकै तेउ तहांते धाए ॥ तृण किए हरित हरषि वेली मिलि दादुर मृतक जिवाए। साजे निविड नीड तन सिचि सजि पंछिनहू मन भाए॥ समुझत नहीं चूक सखि अपनी बहुते दिन हरि लाए। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि मधुवनवसि विसराए॥२२॥ बहुरि हरि आवहिंगे किहि काम। ऋतु वसंत अरु ग्रीषम बीते अब बादर भए श्याम॥ तारे गनत गनतकेसजनी बीते चारौ याम। औरौकथा सबै बिसराईलेत तुम्हारोनाम॥ छिन अंतर छिन द्वारेठाढी अरु सूखतिहैघाम। सूर श्याम जादिनतें बिछुरेअस्थि रहीकै चाम॥२३॥ किधौं घनगर्जतनहिंउनदेशनि। किधौं हरि हरषि इंद्र हठि बरजे कै धौं दादुर खाए शेषनि ॥ किधौं उहि देशन गवन गम छांडे घरनि न बूँद प्रवेशनि। चातक मोर कोकिला उहिवन बधिकन बधे विशेषनि॥ किधौंउहिदेश बाल नहिं झूलति गावतिसखिन सुदेशनि। सूरदास प्रभु पथिक न चलहीं कासों कहौं सँदेशनि ॥ २४ ॥ देखो माई श्यामसुरति अब आवै। दादुर मोर कोकिला बोलै पावस अगम जनावै ॥ देखि घटा घनचाप दामिनी मदन शृंगार बनावै। विरहिनि देखि अनाथ नाथ बिन चढिचढि व्रजपर आवै ॥ कासों कहौं जाइ को हरिपै यह वसुदेव सुनावै। सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि व्रजवनिता सचुपावै॥ २५॥ तुम्हारो गोकुल हो व्रजनाथ। घेरचो है अरि चतुरंगिनि लै मन्मथ सेना साथ ॥ गर्जत अतिगंभीर गिरा मन मैगल मत्तअपार। धुरवा धूरि उडत रथ पायक घोरनकी खुरतार। चपला चमचमाति आयुध बग पंगति ध्वजा अकार। परत निसाननि घाव तमकि धनु तरपत जिहि जिहि वार। मारैमार करत भट दादुर पहिरे बहु बरन सनाह। अरे कवच उघरे देखियत मनो बिरहिनि घाली आह॥ करै तौ गात अंग चातक पिक कहत भाजि जिनि जाहु। उरनि उरनि वै परत आनि वे जोधा परम उछाहु ॥ भयो अहंकार सुभार सूरवाँ सकति रही उर शालि। हम कत हाथ परे नाहीं गहि रहि न ढाल संभालि॥ अति घायल धीरज दुवाहिआतेज दुर्जन दालि। टूकटूकह्वै सुभट मनोरथ आने झोली घालि॥ निशि वासरकैविग्रह आयो अति संकेतहि घाउ। कापै करौं पुकार नाथ अब नाहिंन तुम बिनु ठांउ॥ नंदकुमारश्याम घन सुंदर कमल नैन सुखधाम। पठवहु वेगि गोहार लगावन सूरदास जिहि नाम॥२६॥ ऐसेमें न सुध्यो करै अति निठुराई धरे उनैउनै घटादेखौ पावसकी आई है। चहुँ दिशिघोर मोरलागी है मदन रोर पिककी पुकार उरअरसी लगाईहै॥ दामिनिकी दमकनिबूँदनिकी झमकनि सेजकी तलफ कैसे जीजियत माईहै। लागेहैं विसारे बान श्यामबिनु युग याम घायल ज्यों घूमैंमनो विषहर खाईहै ॥ मिटै न जियको शूल जातहै यौवन फूल घरी घरी पलपल विरह सताईहै। जगतके प्रभुबिनु कल न परतछिनु ऐसे पापी पिय तोहिं पीर न पराई है ॥ २७॥ ऐसो जो पावस ऋतु प्रथम सुरति करि माधौजू आवहिं। बरनबरन अनेक जलधर अति मनोहर भेष। तिहि समय सखि गगन शोभा सबहिंते सु विशेष॥ उडत खग बगवृंद राजत रटत चातकमोर। बहुविविधविधि रुचि बढावत दामिनी घनघोर ॥ धरनि तृण तनु रोम पुलकित पिय समागम जानि। द्रुमनि वरवल्ली वियोगिनि मिलतिहै पहिंचानि ॥ हंस शुक पिक सारिका अलि गुंज नाना नाद।

मुदित मंडल भेक भेकी विगत विहँग विषाद॥कुटज कुमुद कदंब कोविद कनकआरि सुकंज।केतकी करवीर वेलउ विमल बहुबिधिमंत॥ सघनदल किलकार अंकित सुमन सुकृतसुवास। निकट नैन निहारि माधो मन मिलनकी आस॥मनुजमृग पशुपक्षिपरिमित औरअमितजुनाम ।सुमिरि देश विदेश परिहरि सकल आवहिं धाम॥यहै अवधि उपाउ सोचति कछुन परै बिचार।कौन हित व्रजवास बिसरचो नीक नंदकुमार॥ परम सुहृद सुजान सुंदर ललित गति मृदु हास । बैनवर बहुविधि बजावन गोपशिशु चहुँपास॥ चारुकुंडल लोललसित सुकमलविमल बिशाल। सुदिन कब जब देखवी वन बहुत बाल विशाल ॥ बारबार सु विरहिनी अति विरह व्याकुल होति। बातवेग बिलोल ज्यों अलि दीन दीपकज्योति॥सुनि सँदेसहि हृदयसूरजदास करि परतीति।दरश दै दुखदूरिकीजैप्रेमकीयह रीति॥२८॥राग मलार ॥आजुघनश्यामकीअनुहारि। उनइ आए सँावरेते सजनी देखि रूपकी आरि॥ इंद्रधनुषमानोपीत वसनछबिदामिनिदशनबिचारि। जनु बगपांति माल मोतिनकी चितवत हितहि निहारि ॥ गर्जत गगन गिरागोविंदमिसु सुनत नयन भरे वारि।सूरदास गुण सुमिरि श्यामके बिकलभई व्रजनारि॥२९॥कैसेकै भरिहैं री दिन सावनके।हरित भूमि भरेसलिलसरोवरमिटे मनमोहनआवनके॥ दादुर शोर मोर चातकपिकनिशहि निशासुर पावनके।अब घन घुमडि उमडि दामिनि रूप मदन धनुषधरि धावनके ॥ पहिरि कुसुमसारी कंचुकि तनु झुंडनि झुंडनि गावनके । सूरदास प्रभु दुसह घटत क्यों शोक त्रिगुण शिररावनके॥३०॥राग केदारो॥हरिसुत पावकप्रगटभयोरी॥मारुतसुतबंधौप्रतिप्रोहित ताप्रतिपालन छाँडि गयो री॥हरसुतवाहनअशन सनेही सो लागत अंग अनलमयो री। मृगमदस्वादमोदनहिं भावत दधिसुत भानसमान भयो री॥बारिजसुत प्रतिक्रोध कियो सखिमेटिदकारसकारलयोरी । सूरदास बिनु सिंधुसुतापति कोपि समर कर चाप लयो री॥३१॥ राग मलार॥ऐसेबादरतादिनआये जा दिन श्याम गोवर्धन धारचो। गरजिगरजिघनवरषनलागे मनोसुरपतिनिजवैरसँभारचो॥ सबै सँयोग जुरोहै सजनी हठिकरि घोष उजारचो । अबकोसातदिवसराखैगोदूरिगयोव्रजकोरखवारचो॥ जब बलराम हुते या व्रजमें काहू देव न ऐसो डारचो । अब यह भूमि भयानक लागै बिधिना बहुरि कंस अवतारचो ॥ अब इह सुरति करै को हमरी या व्रज कोऊ नाहिं हमारचो । सूरदास अतिबिकल बिरहिनी गोपिन पिछलो प्रेम सँभारचो ॥ ३२ ॥ जोपैनंदसुवन व्रज होते। तो पै नृप पावस सुनि बिनती कहत न डरती सोते ॥ अब हम अबल जानिकै सखि री हैं गैवररथ जोते। हमपर गरजि गरजि पठवतहैं लेत न सकल सवोते॥ सूरदास प्रभु शैलधरनबिनु कहा सबै अब तोते ॥ ३३॥ इहां नाहिन नंदकुमार ।उहै जानिअजानमघवाकरी गोकुलआर ॥ नैन जलद निमेष दामिनि आँसु वर्षत धार ।दरश रवि शशि दुत्योधीरजश्वास पवन अकार ॥उरज गिरिभै भरन भारी अगम काम अपार। गरजि बिकल वियोग बाणी हरति अवधि अधार ॥ पथिक मथुरा जाइ हरिसों बात कहै बिचार। शत्रुसेन सुधाम घेरचो सूर लगहु गुहार॥ ३४ ॥मानो माई सबन इहै हैभावत ।अब वहिदेशनंदनंदनकहँकोउनसमौजनावत॥धरत न बन नवपत्र फूल फल पिक वसंत नहिं गावत । मुदित न सर सरोज अलि गुंजत पवन पराग उडावत ॥ पावस विविध बरन वर बादर उडि नहिं अंबर छावत । चातक मोर चकोर शोर करि दामिनि रूप दुरावत ॥ हमपर सकल कोप करि सजनी हठिकरि बलहि बढावत ।सूर श्याम परपीर न जानत कत सर्वज्ञ कहावत॥३५॥सखि कोई नई बात सुनि आई। इह व्रजभूमि सकलसुर

संपति सो मदन मिलिक करिपाई ॥ घनदामिनि बगपाँति मनोवे वरषै तडित सुहाई । बोलत बग निकेत गरजै अति मानो फिरत दोहाई ॥ गोकुल मोर चकोर मधुप शुक सुमनसमीरसोहाई। चाहत वास कियो वृंदावन बिधिसों कछु न बसाई ॥ सकत न जानत लागत सूनो कोउ हुते बल वीर कन्हाई। सूरदास गिरिधर बिन गोकुल कौन कौन करिहैठकुराई ॥३६॥ बहुरि बन बोलन लागे मोर। कर संभार नंदनंदनकी सुनि बादरको घोर॥ जिनको पिय परदेश सिधारो सो तियपरी निठोर। मोहिं बहुत दुख हरि बिछुरेको रहत विरहको जोर ॥ चातक पिक चकोर पपीहा ए सबही मिलि चोर।सूरदासप्रभु वेगिन मिलहु जनम परतहै वोर॥३७॥ यहि वन मोर नहींएकामवान। विरह खेद धनुपुहुप भृंग गुन करिल तरैया रिपुसमान ॥ लयो घेरि मनो मृग चहुँदिशिते अचूक अहेरी नहिं अजान। पुहुपसेन घन रचित युगल तनु क्रीडत कैसो वन निधान ॥ महामुदित मन मदन प्रेमरस उमँगिभरे मैं मैन जान। इहि अवस्था मिले सूरदास प्रभु बदर्यो नानागदे जीवनदान॥३८॥आजु बन मोरन गायो आइ।जबते श्रवण सुन्यो सुन सखी री तबते रह्योन जाइ॥ व्रजते बिछुरे मुरलिमनोहर मनहुँ व्याल गयो खाइ। औषध वैद गरूरियो हरि नहिं मानै मंत्र दोहाइ॥चातकपिक दुखदेत रैनिदिन पियपियवचन सोहाइ।सूरदासप्रभुतौपैहै जीवहिजौमिलिहैं हरि आइ॥३९॥शिखिन शिखर चढि टेर सुनायो।बिरहिनि सावधानह्वै रहियो सजि पावस दल आयो॥ नव बादल बानैत पवन ताजी चढि चुटकि दिखायो। चमकत बीजु शैलकर मंडित गरजि निसान बजायो ॥ दादुर मोर चातक पिकके गण सब मिलि मारू गायो। मदन सुभट करबाण पंचलै व्रजतन सन्मुख धायो ॥ जानिविदेशनंदको नंदन अबलन त्रासदिखायो।सूर श्यामपहिले गुण सुमिरिहि प्राण जात बिरमायो ॥ ४० ॥ हमारे माई मोरवा वैर परे। घन गजत बरज्यो नहिं मानत त्यों त्यों रटत खरे॥ करि करि पंख प्रगट हरि इनको लैलै शीश धरे। ताही ते मोहन विरहिनिको एऊ ढीठ करे ॥ को जानै काहेते सजनी हमसों रहत अरे। सूरदास परदेश बसे हरि ए वनते न टरे ॥४१॥ कोउ जाइ बरजौ बोलत मोरनि।टेरनि विरहछिनुनरह्योपरैसुनिदुखहोत करोरनि ॥ रटत पपीहा छिनु न रहाई होत विरहकी रोरनि। चमकत चपल चहूँ दिशि दामिनि अंबर घनकी घोरनि॥ बर्षत बूँद बाण से लागत विरहाशरके जोरनि। चंद्र किरन नैनन भरि पीवत नाहिंन तृप्ति चकोरनि ॥ मन्मथ पीर अधिक तनु कंपित ज्यौं मृग केहरि कोरनि। सूर दास तोहीपर बचिवो मिलि हौ नंदकिशोरनि॥४२॥राग सारंग॥अहोरेविहंगमबनवासी।तेरेबोल-तरजनी बाढत श्रवन सुनत नींदउ नासी॥कहा कहौं कोउ मानत नाहीं इक चंदन औ चंद परासी। सूरदास प्रभु ज्यों न मिलैंगे लेहौं करवत कासी॥४३॥ शारंगश्यामहिसुरतिकराइ।पौढेहोहिंजहां नँदनंदन ऊंचे टेर सुनाइ ॥ गये ग्रीषम पावस ऋतु आई सब काहू चितचाइ। तुम विनु व्रजवासी ऐसे जीवैं ज्यों करिया विननाइ ॥ तुम्हरो कह्यो मानिहैं मोहन चरण पकरि लैआइ। अबकी बेर सूरके प्रभुको नैनन आनि देखाइ ॥४४॥ राग मलार ॥ सखी री चातक मोहिंजिआवत।जैसेहिरैनि रटति हों पिय पिय तैसेही वह पुनि पुनि गावत॥अतिहिसुकंठ दाहु प्रीतमको तारूजीभ नलावत। आपु न पिवत सुधारस सजनी विरहिनि बोलि पिआवत॥जो ए पंछि सहायन होते प्राण बहुत दुख पावत। जीवन सफल सूर ताहीको काज पराए आवत॥४५॥ राग सारंग॥चातक न होइ कोउ विरहिनि नारि।अजहूँ पिय पिय रजनि सुरति करि झूठेहि माँगत वारि॥अति कृशगात देखि सखि याको अहनिशिवाणी रटत पुकारि। देखौ प्रीति बापुरे पशुकी आन जनम मानत नहिं हारि॥

अब पति बिनु ऐसो लागत यह ज्यों सरवर शोभित बिनवारि। त्योंही सूर जानिए गोपी जोन कृपाकरि मिलहुमुरारि॥४६॥राग आसावरी॥अब मेरी को बोलै साखि। कैसे हरिके संगसिधारेअब-लौं यह तनु राखि॥ प्राण उदान फिरत ब्रज बीथिनि अवलोकनि अभिलाषि। रूप रंग रस रास परानो बचन न आवे भाषि॥ सूर सजीवनि मूरि मुकुंदहि लैआईही आँखि।अब सोइ अंज-न देतिसुरचिकरि जिहि जीजै मुख चाखि॥४७॥राग मलार॥बहुत दिनजीवो पपीहाप्यारो।बासररैनि नावँलै बोलत भयो विरह ज्वर कारो॥आपु दुखितपरदुखितजानि जिय चातकनाउँ तुम्हारो। देखो सकल बिचारि सखी जिय बिछुरनको दुख न्यारो॥जाहि लगै सोई पै जानै प्रेम बाण अनियारो। सूरदासप्रभुस्वातिबूँदलगितज्यो सिंधुकरिखारो॥४८॥हौंतौमोहनकेविरहजरीरेतूकतजारत।रेपापी तू पंखि पपीहा पिउपिउपिउ अधरातिपुकारत॥सबजगसुखी दुखी तू जलबिनुतऊ न तनुकी विथहि बिचारत।कहा कठिनकरतूतिन समुझत कहा मृतक अबलनि शर मारत॥ तू शठ बकत सतावतकाहू होतउहै अपने उर आरत।सूर श्याम बिनु ब्रजपर बोलत हठि अगलेऊ जनम बिगारत॥४९॥राग नट॥ जो तू नेकहूँ उडि जाहि। कहा निशिवासर बकत बन विरहिनीतनु चाहि॥ बिधिहि वचनसुदेश बाणी इहां रिझवत काहि। पति बिमुख पिक पुरुष वसु लौ एतौ कहा रिसाहि॥नाहिनै सुख सुनत समुझत बिकल विरह व्यथाहि। राखि यहु तन वा अवधिलों मदनमुख जिनि खाहि॥ तहूँतो तनु दग्धरवलखि फिरि कहा समुहाहि।करि कृपा ब्रजसूरप्रभुबिनुमौनिमोहिं बिसाहि॥५०॥ ॥राग सारंग॥कोकिल हरिको बोल सुनाउ। मधुवनते उपठारि श्यामको इहि ब्रज लैकरि आउ॥ जा जस कारण देत सयाने तन मन धन सब साजु।सुयश बिकात बचनके बदले क्यों नबिसाहत आजु॥ काज कछू उपकार परायो यहै सयानो काज। सूरदास पुनि कहां यह औसर वन वसंत ऋतुराज॥५१॥ सुन री सखी समुझि शिख मेरी। जहां बसत यदुनाथ जगतमणि वारक तहां आउ दै फेरी। तू कोकिला कुलीन कुशल मति जानत व्यथा बिरहिनी केरी। उपवन वैसि बोलि वरबानी वचन सुनाय हमहि करि चेरी॥करियो प्रगट सुनाय श्यामसों अबला आनि अनंगरिपु घेरी। तोसी नहीं और उपकारिनि यह बसुधा सब बुधि करि हेरी॥प्राणनके बदले न पाइयतसेंति बिकाय सुयशकी ढेरी। ब्रज लेआउ सूरके प्रभुको गाऊंगी कलकीरति तेरी॥५२॥राग मलार॥ अब इह वरषौ बीति गई। जिनि सोचहु सुखमान सयानी भली ऋतु शरद भई॥ प्रफुलित सरज सरोवर सुंदर नवबिधि नलनि नई। उदित चारु चंद्रिका अवर उर अंतर अमृत मई॥ घटी घटा सब अभिन मोह मद तमिता तेज हई। सरिता संयम स्वच्छ सलिल जल फाटी काम कई॥ हे सरघा संदेश सूर सुनि करुणा कहि पठई। यह सुनि सखी सयानी आई हरि रति अवधि दई॥५३॥राग मारू॥शरद समैहू श्याम न आए।को जानै काहेते सजनी कहुँ विरहिनबिर-माए॥अमल अकास कास कुसुमिन क्षिति लक्षण स्वाति जनाए।सर सरिता सागर जल उज्ज्वल अलिकुल कमल सुहाए॥ अहि मयंक मकरंद कंद हति दाहक गरल जिवाए। त्रिय सब रंग संग मिलि सुंदरि रचि सचि सींच सिराए॥सूनी सेज तुषार जमत चिरहास चंदन बाए। अबलहि आश सूर मिलिवेकी भए ब्रजनाथ पराए॥५४॥ अथ चंद्रप्रति तरकवदति॥ राग कान्हरो॥ छूटिगई शशि शीतलताई। मनु मोहि जारि भसम कियो चाहत साजत मनो कलंक तनु काई॥ याहीते श्याम अकास देखिये मानो धूम रह्यो लपटाई। ताऊपर दौ देत किरनि उर उडुगण कउनै चढि इत आई॥ राहु केतु दोउ जोरि एक करि कहि इहि समै जरावहि पाई। ग्रसे ते न पचि

जात पापमें कहत सूर बिरहिनिदुखदाई॥५५॥राग केदारो॥यह शशि शीतल काहेते कहियत।मीनकेत अंबुज आनंदित ताते ताहित लहियत॥ बिरहिनि अरु कमलनि त्रासत कहुँ अपकारी रथनहिं यत।सूरदास प्रभु मधुवन गौने तो इतनो दुख सहियत॥५६॥करधनु लिए चंद्रहि मारि।तबतोपै कछुवै न सिरैहै जब अतिज्वर जैहै तनु जारि॥ सूहरवाइ जाइ मंदिरचढि शशिसन्मुख दर्पण बिस्तारि। ऐसी भाँति बुलाइ मुकुर महि अति बल खंड खंड करिडारि॥ सोई अवधि निकट आईहै चलतेंही जो दई मुरारि।सूरसो विनयकरति हिमकरसों अब तू उद्यो छाँडि दिनचारि॥५७॥ ॥राग सारंग॥हरको तिलक हरि विनु दहत। वै कहियत उडुराजअमृतमै तजि स्वभाव मोहिबहनि बहत॥ कत रथ थकित भयो पश्चिम दिशि ग्राह ग्रसित जैसे ग्रहन ग्रहत। छयो न छीन होत सुन सजनी भूमि भवनरिपु कहां बसत॥ जाको ध्यान धरतिहौं दधिसुत मणि महेश जैसे रहनि रहत।सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिना प्राणतजति यह नाहिनै सहत॥५८॥राग मारू॥या बिन होब कहा यह सूनो। लै किन प्रगट कियो प्राचीदिशिविरहिनिकोदुख दूनो॥सबनिरदैसुर असुर शैल सखि सायर सर्प समेत। काहु न कृपाकरी इतननिमें त्रियतन बन दौ देत॥ धन्य कहूं वर्षा रवि तमचुर अरु कमलनको हेतु। युग युग जीवै जर बापुरी मिलै राहु अरु केतु॥चितै चंद्र तन सुरति श्यामकी बिकलभई ब्रजबाल। सूरदास अजहूं इहि औसर काहे न मिलत गुपाल॥५९॥दूरिन करहि बीनको धरिबो। रथ थाक्यो मानो मृग मोहे नाहिन कहूँ चंद्रको टरिबो॥जामें बीती सोई जानै कठिनसु प्रेम पाशको परिबो।प्राणनाथसंगहुते बिछुरे रहत न नैननीरकोझरिबो॥ चंदनचरचि तनु दहत मलयानिल श्रवण विरहानल जरिबो। सूर सु कमलनैनके बिछुरे झूठो सब जतननिको करिबो॥६०॥राग केदारो॥बिधु बैरी शिरपरबसै निशिनींदनपरई।हरि सुरभानसुभटबिनायहि को वश करई॥गगन शिखर उतरै चढै गर्वै जिय धरई। किरनि सकति भुजभरि हनै उरते न निकरई॥ उडु परिवार पिशुनसभा अपयशहिन डरई। सोइ परपंच करै सखी अबला ज्योंबरई॥ घटै बढै यहि पापते कालिमा नटरई॥सूरदुष्टसमुझावही त्योंत्यों जियखरई॥६१॥राग मलार॥कोऊ बरजो री या चंदहि। अतिही क्रोध करत हमऊपर कुमुदिनि कुल आनंदहि॥ कहा कहोंवर्षारवि तमचुर कमलबलाहक कारे। चलत न चपल रहत थिरकै रथ बिरहिनिके तनु जारे॥ निंदत शैल उदधि पन्नगको श्रीपति कमठ कठोरहि। देति अशीश जरा देवीको राहु केतु किनि जोरहि॥ ज्यों जलहीन मीन तनु तलफति ऐसी गति ब्रजबालहि। सूरदास प्रभु आनि मिलावहु मोहन मदनगुपालहि॥६२॥अब हरि कौनसों रति जोरी।काके भए कौनकेह्वैहैं बँधे कौनकी डोरी॥ त्रेता युग इक पत्नी व्रत किए सोऊ बिलपति छोरी।सूर्पनखा वन व्याहन आई नाक निपाति बहोरी॥ पय पीवत जिन हती पूतना श्रुति मर्यादा फोरी। बहुतै प्रीति बढाइ महरिसों बहुरौ ना चितयो उन ओरी॥ आरजपंथ छिडाय गोपिकन अपने स्वारथ भोरी। सूरदास करि काज आपनो गुडी डोरि ज्यों तोरी॥६३॥अब या तनुहि कहो कहा कीजै।सुन री सखी श्यामसुंदर बिन बाँटि विषम विष पीजै॥कै गिरिए गिरि चढि सुनिसजनी शीश शंकरहि दीजै। कैदहिए दारुणदावानल जाइ यमुन धसि लीजै॥ दुसह वियोग विरह माधोको दिनही दिनही छीजै। सूर श्याम प्रीतम बिनु राधे सोचिसोचि जियजीजै॥६४॥राग भोपाली॥हमहि कहा सखी तनके जतनकीअबयायशहि मनोहर लीजै। सकल त्रास सुख याही वपुलौं छाँडि दियेते कछू न छीजै॥ कुसुमित सेज कुसुम सर सरवर हरिके प्राण प्राणपति जीजै। विरह थाह ब्रजनाथ सबन दै निधरक सकल

मनोरथ कीजै ॥ सबन कहत मन रीस रिसाए नहिंन बसाय प्राण तजि दीजै। सूर सु पतिसों चरचि चतुरइतुमयहजाइबधाईलीजै ॥६५॥ राग केदारो ॥जियहिक्योंकमलिनि काँदौहीन।जिनसों प्रीति हुती री सुन सखि तिनहूँ बिछुरि दुख दीन ॥ सागरकूल मीन तरफतहै हुलसिहोत जल दीन । श्याम वारि बिधि लई विरद तजि हमजु मरति लवलीन ॥ शशि चंदन अरुअंभछाँडि गुणवपुजुदहतमिलितीन।सूरदासप्रभुमोन सबैब्रज बिन यंत्री बिन बीन६६॥राग सारंग॥ वैसी शारंग करहि लिये । शारँग कहतसुनत वे शारँगशारँग मनहिं दिये॥ शारँग पथिक बैठिवहशारँगशारंग बिकल हिये । शारँग धुकि शारँग परे शारँग शारँग क्रोध किए॥ शारँग है भुज करहि बिराजत शारँग रूप किए। सूरदासमिलहीं वेशारँगतौपरिशुफलजियै॥ ६७॥राग मलार॥सोसुनियतहैरी द्वै माह । इतनेमहिं सब बात समुझिबी चतुर शिरोमणि नाह॥ आवन कह्यो बहुत दिन लाए करी पाछिली गाह। हमहिं छाँडि कुबिजा मन बाँध्यो कौन वेदकी राह ॥ एतेहुपर संतोष न मानत परे हमारे डाह। सूरदासप्रभुपूरोदीजैदिनदशमानी साह॥ ६८॥ राग सारंग॥ऐसोसुनियतहैद्वैसावन। उहै शूल फिरिफिरि सालत जिय श्याम कह्यो हो आवन॥ तब कत प्रीति करी अब त्यागी अपनो कीनो पावन । यह सुख सखीनिकसि तजिजइयेजहां सुनीए नावन॥एकहिबेर तजी मधुकर ज्यों लागेनेहबढावन।सूर सुरतिक्यों होति हमारी लागीनीकी भावन॥६९॥राग कान्हरो॥ काहेको पिय पियहि रटतहौ पियको प्रेम तेरो प्राण हरैगो । काहेको लेति नयन जल भरिभरि नयन भरेते कैसे शूल टरैगो॥ काहेको श्वास उसाँस लेतिहौ बैरी बिरहको दवा जरैगो ॥ छाल सुगंध सेज पुहुपावलि हारु छुएते हियहारु जरैगो॥ वदन दुराइ बैठि मंदिरमें बहुरि निशापतिउदयकरैगो।सूरसखीअपने इन्ह नैननिचंद्रचितैजिनिचंद्र जरैगो॥७० ॥राग सारंग॥अब हरि हमको माई री मिलत नाहिंन नेकु । नित उठि जाइ प्रातलै बनसँग आगे पाछेचलिनसकति सखी डगएकु॥बाँहा जोटी कुसुम चुनत दोउ द्रुमतन मेरे उर लगि एक दिन नख एक । रसन दशन धरि भरि लिए लोचन तोरन लखि सुधर बरषै एक॥ लावत हृदय खोंचि पुरतपट फरुहुरि लेत परिजन रेक। अब कोउ सोहैवसु सूर प्रभु कौनअधिकजिहिपरिनेक॥७१॥राग मलार॥हौं कछु बोलति नाहीं लाजनि । एक दाइँ मरिवो पै मरिबो नंदनँदनके काजनि ॥ तजि ब्रजबाल आपनो गोकुल अब भाए सुखराजनि । कागज लिखि पतियांनहिंपठवतपायोजियकोमाजनि॥ जे गृह देखि परमसुख होतो बिन गोपाल भए भाजन । कासों कहौं सुनै कोई दुख दूरि श्यामसो साजन ॥ कारी घटा देखि धुरवा जनु विरह लयो करताजनु। सूरदास नागरबिन अब यह कौन सहै शिर गाजनु ॥ ७२ ॥ राग गौरी ॥ बहुदिन ऐसोई हतो री ।हैजातेमेरेआँगनमेंमोहन चरन चलि ऐसो री ॥ बालदशाकी प्रीति निरंतर परी रहतहीठोरी।राधाराधानँदनंदनमुखलागि रह्यो तिहिसोरी ॥ वेणु पाणि गहि मोको सिखावत मोहन गावन गौरी। सूरजदास श्याम शारँग तजि वह सुख बहुरि न भोरी ॥७३॥ राग सारंग ॥ गौरिपूतरिपुतासुतआएप्रीतमताहिननारे।शिव विरंचि जाके दोउ बाहन तिन हरे प्राण हमारे॥मोहिं बरजत उठि गमन कियो उठि स्वादे लुवध रसाल। कुंती नंदतात मुख जोवत अरु वारत अतिचाल॥ उगवै सूर छुटैबे बंधन तौ विरहिनि रति मानै । इहि बिधि मिले सूरके स्वामी भक्त होइ सोजानै॥ ७४॥राग गौरी॥माधोजूदरशनकी औसेरिलै जु गए मन संग आपने बहुरि न दीन्हों फेरि॥तुम्हरेभवननहींभावैमनुजनुराखेवैटेरि। कमल नयो हम हरी हेम अति कासों कहैं दुख टेरि॥ तुम बिछुरे सुख कबहुँ न पायो सब

जग देखति हेरि ।सूरदास सब नातो ब्रजको आए नंद निवेरि ॥ ऋतु वसंत कोकिल कत कूजहिं मदनसांकली खेरि॥७५॥ राग आसावरी ॥ सखी री विरहा यह विपरीत। बिरहिनो वासु क्यों करे पावसकाल प्रतीत ॥ नित नवला नवसात साजिकै अरु वह भावक राखी । ना जानौं नृपति प्राणपति कहां हैं रुचि आँखी ॥ सूरदास गोपालकी सब अवधि गई व्यतीत । बहुरि कब देखिबो मुख तुम्हारो यह नीत॥७६ ॥ राग बिलावल ॥ तोऊ तौ गोपाल आहिं गोकुलबासी। ऐसी बातैं बहुते कहि लोग करत हैं हाँसी ॥ मथि मथि सिंधु सुरन कर पोषी शंभु भए विषुआसी। इमि हति कंस राज औरै दयो चाहि लई इक दासी॥विसरो सूर विरहदुख अपनो अब चली चाल औरासी । ऐसेविहंगप्रीतिनिधिदेखप्रगट नपरखी खासी॥७७ ॥ राग सारंग॥उन ब्रजदेव नेकु चितु करते। कछु जिय आश रहति बिधिवश जो बहुरहु फिरि २ मिलते॥ कहा कहिए हरि सब जानत हैं या तनुकी गति ऐसी। सूरदास प्रभु ताहि सुरुचि मिलिनातरुहमगरवैसी॥ ७८ ॥ राग बिलावल ॥श्यामचितौदीरे मधुबनियां। अपने हाथ पोहि पहिरावत कान्ह कनकके मनियां॥ बहुरि गोकुल काहेको आवत भावत नवजोबनियां। सूरदास प्रभु वाके वश परि अब हरि भए चिकनियां॥७९॥ देखोरी धौंलोग चतुरमधुवनको।वादतनहींगोविंद विमोहैगुणजानौमाधौको॥ जब हरि गमन करौ मधुवनको छाँडो हेतु सबनको।सूरदास प्रभुबेगिमिलावोगोविंदप्यारो निज प्राणनको ॥ ८० ॥ राग धमार॥कहौंरीजो कहिबेकीहोई।प्राणनाथबिछुरेकीवेदनऔरनजानैकोई। ज्यों २ अधर सुधारस लैलैमगन रही मुखजोई।जो रसशिव सनकादिक दुर्लभसोरसबैठी खोई। कहा करौं कछु कहत न आवै सुख सपनो भयो सोई।हमसों कठिनभए कमलापतिकाहि सुनावौं रोई॥ विरह व्यथा अंतरकी वेदन सो जानै जेहि होई । सूरदास सुखमूरि मनोहर लैजो गयो मन गोई ॥ ८१ राग सानुत ॥बिछुरे री मेरे बालसँघाती।निकसि न जात प्राण एपापीफाटतनाहिं वज्रकी छाती॥ हौं अपराधिनिदहीमथतिहीभरियौबनमदमाती। जौहौंजानतिहरिकोचलिबोलाज छाँडि सँग जाती॥ ढरकत नीर नैनभरि सुंदर कछु न सोहात दिवस अरु राती। सूरदास प्रभु दरशनकारन सब सखिअन मिलि लिखिये पाती ॥८२॥ राग मलार॥ हरि परदेश बहुतदिनलाए। कारी घटा देखि बादरकी नैन नीर भरिआए ॥ वीर बटाऊ पंथी हौ तुम कौन देशते आए । इह पाती हमरी लै दीजो जहां साँवरे छाए ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत सोवत मदन जगाए।सूरदास गोकुलते बिछुरे आपुन भए पराए ॥८३॥हमारोहिरदैकुलिसैजीत्यो।फटतनसखीअजहुँउहि आशा वरष दिवस परि बीत्यो ॥ हमहूँ समुझिपरी नीकेकरि यहै असित तनु रीत्यो।बहुरि न जीवन मरनसों साझो करी मधुपकी प्रीत्यो ॥ अबतौ बात घरी पहरन सखि ज्यों उदबसकी। भीत्यो।सूरश्यामदासीसुखसोवहुभयोउभयमनचीत्यो॥८४॥राग सारंग ॥ एकदिवसकुंजनमैंमाई नाना कुसुम लैलै अपने कर दिए मोहिं वह सुरति न जाई ॥ इतनेमें घन गर्जि वृष्टिकरि तनु भीज्यो मो भई जुडाई । कपत देखि उठाइ पीतपट लै करुणामय कंठ लगाई ॥ कहँ वह प्रीति रीति मोहनकी कहाँ अबधौं एती निठुराई । अब बलबीर सूर प्रभु सखि रीमधुवनबसिसबरति बिसराई ॥ ८५ ॥ राग कान्हरे ॥ हौं जानौं मोको सखिमाधोहितु हैकियो ।अतिआदरआतुरअलि ज्यों मिलि मुख मकरंद पियो ॥ वरु वह भली पूतना जाको पयसँग प्राण गयो।मन मधु अचै निपट सूने तन यह दुख अधिक दयो ॥ देखि अचेत अमृत अवलोकनि चले जु सींचि हियो । सूरदास प्रभु वा अधारते अबलौं परत जियो ॥ ८६ ॥ राग सारंग॥ यागतिकीमाईकोजानै।पंकज-

सों पंकज गहि सींचे ए कबहूं न निदानै॥शिबि नृप अरु सनकादिक कपि मुनिराई पर रति-रंग मानै। करि हारी वह लोभनि सोए जु रहत इकता तानै॥ बपु बिचारि अवगनि इनिइनतेभाव कुचित यह ठानै। सूरदास प्रभु शिशुलीलामै नावी रैनि जु वानै॥ ८७॥ नाहिंनै ब्रज नंद-कुमार। परमचतुर सुंदर सुजान सखि या तनुको प्रतिहार॥ रूप लकुट लिएही रहते अलि अनु-दिन नैननि द्वार। तादिनते डर भौन भयो सखि शिवरिपुको संचार॥ दुख आवन कछु अटक न मानत सूनो देखि अगार। अंशु साँस जात अंतरते करत न कछू बिचार॥ निशा निमेष कपाट लगे बिन शशिमूषतसतसार।सूरप्राणलटि लाज नछाँडत सुमिरि अवधि आधार॥८८॥राग मलार॥ ऐसे जो हरि आवहिंगे। निरखि निरखि वह मदन मनोहर नैन बहुत सुख पावहिंगे॥ तैसिहि श्याम घटा घनघोरनि बिच बगपांति दिखावहिंगे। तैसे मोर पिक करत कुलाहल हरषि हिं-डोलना गावहिंगे॥ तैसीयै दमकति दामिनि अरु मुरली मलार बजावहिंगे। अबके चलते जानि सूर प्रभुसबपहिले उठिधावहिंगे॥८९॥राग रामकली॥ब्रज कहाखोरी।छत अरु अछत एकरख अंतर मिटत नहीं कोई करहु कोरी॥बालकहीअभिलाषनि लीला चकृत भई कुललाज न छोरी। विरुध विवेक गोपरस परि करि विरह सिंधु मारत ते बोरी॥ यद्यपि हौ त्रयलोकके ईश्वर परसि दृष्टि चितवतिनबहोरी। सूरदास प्रभु प्रीतिरीति कतते तुम सब अब रहे तोरी॥९०॥राग सारंग॥ हरि मोको हरिभषु कहि जु गयो। हरि दरशत हरि मुदित हरि ब्रज हरिजुलयो॥हरिरिपुतारिपु पतिको सुत हरि बिनु प्रजरि दहे। हरिको तात परस उर अंतर हरि बिनु अधिक वहे॥ हरि तनया सुधि तहाँ वदति है हरि अभिमानन ढायो। अब हरि दवन दिवा कुबिजाको सूरदास मन भायो॥९१॥राग सारंग॥हरि बिनु कौनसों कहिए।मनसिज व्यथा जराति अरनिलौंउरअंतरदहिए॥ कानन भवन रैनि अरु वासर कहूं न सच लहिए। मूके भये यज्ञके पशुलौं कोलौं दुख सहिए॥ कबहुँक उपजै जियमें ऐसी जाइ यमुन बहिए।सूरदास प्रभु कमलनैन बिन कैसे ब्रज रहिए॥९२॥ राग मारू॥किते दिन हरि देखेबिन बीते। एकौ फुरत न श्यामसुंदरबिन बिरह सबै सुखजीते॥ मदनगोपाल बैठि कंचनरथ चितै किए तनु रीते। सुफलकसुत लैगए दगा दै प्राणनहींके प्रीते॥ बहुरि कृपालु घोष कब आवहिं मोहन राम समीते।सूरदास प्रभुबहुरि कृपाकरि मिलहुसुदामामीते ॥९३॥राग सारंग॥कान्हधौं हमसों कहा कह्यो। निकस्यो वचन सुनाइ सखी री नाहिन परतु रह्यो। मैं मतिहीन मर्म नहिं जान्यों भूली मथत मह्यो। अब कहा करौं घोष वसि सजनी दूत दूरि निबह्यो॥सबै अजान भई तेहि औसरकाहू रथन गह्यो। सूरदास प्रभुवृथा लाजकरिदुसहवियोग सह्यो॥९४॥राग नट॥ग्वालिनीछाँडिदेखिरहुखरचो।तेरे विरह विरहिनीव्याकुलभवनकाजविसरचो कर पल्लव उडुपति रथ खैंच्योमृगपति वैर करचो।पंखी पति सबही सकुचाने चातकअनगभरचो। शारंग सुर सुनि भयो वियोगी हिमकर गर्व टरचो। सूरदास सायर सुतहित पति देखत मदन हरचो॥९५॥राग सारंग॥विरह भरचो घर अंगन कोने।दिनदिन बाढत जात सखी री ज्यों कुरखेतके डारे सोने॥तब वह दुख दीनो जब बाँधे ताहूको फल जानि। निजकृत चूक समुझि मनहींमन लेत परस्पर मानि॥ हम अबला अति दीन हीनमति तुमही सब बिधियोग। सूर वदन देखतही अहुठै या शरीरको रोग॥९६॥राग मलार॥जोपै कोउ माधोसों कहै। तो यह व्यथा सुनत नँदनंदन कत पधुपुरी रहै॥ पहिलेही सब दशा बतावै पुनि कर चरण गहै। यह प्रतीति मेरे चितअंतर सुनत न प्रेम सहै॥ यहै संदेश सूरके प्रभुको को कहि यशहि लहै। अबकी बेर दयालु दरश दै

यह दुख आनिदहै॥९७॥राग सारंग॥माधो छांडिबेपहिचानि।तबतेविरह कुटिलया गोकुल कीनो है बिछु खानि॥तनुगिरि जानि आनि अवनी डर इहि उड भीत रहे। गमन कान्ह क्षणक्षण तु काम शशि किरनि कुदार गहे॥ रेणु अंजन जलनैन द्वार ह्वै रह्यो हृदय भरिपूरि । निकसत नाहीं पापरतन ज्यों गयो श्यामसँग दूरि ॥ तुमसों बात और अलिभाषे उलटि ध्यान वपु जीत्यो । द्वै नृप लरत जाइ इंद्रीगत कहौ सूर को नीत्यो॥९८॥राग नट॥मेरे मन इतनीशूलरही।वैबतियांछतियां लिखि राखी जे नँदलाल कही॥ एक दिवस मेरे गृह आए हौंही मथत दही। रति माँगत में मान कियो सखि सो हरि गुसा गही॥ सोचति अतिपछितातति राधिका मूर्छित धरणि ढही।सूरदास प्रभुके बिछुरेते व्यथा न जात सही ॥ ९९॥राग मलार॥हरि इते दिन लाए । आवन कहिगएअजहुँ न आए ॥ चलत चितै मुसुकायके मृदु वचन सुनाये । तेईढँगमोदक भए न धीरजहरितनछूछ करि छिटकाये ॥मोहनयदुनाथके गुण जानि पाए।मनहु सूर घनश्याम सुंदर बहुरि न चरणदिखाए॥ ॥२९००॥यह दुख कौनसों कहौं । जोइ बीतति सोइकहतिसयानी तिन सब शूल सहौं॥जे सुख श्यामसंग सबकीने गहि राखे इहि गात। ते अब भए शीत या तनुको शाखा ज्यों द्रुम पात॥ जो हुती निकट मिलनकी आसा सो तो दूरि गई । यथा योग ज्यों होत रोगिया कुपथी करत नई ॥ यह तनु त्यागि मिलन यों बनिहै गंगा सागर संग । अब सुन सूर ध्यान ऐसो है श्याम राम इक रंग॥१॥राग सारंग॥हम सरघा ब्रजनाथ सुधानिधि राखे बहुत जतन करि सचि सचि। मन मुख भरिभरि नैन ऐन ह्वै उरप्रति:कमल कोशललौं खचि खचि ॥ सुभग सुमन सब अंग अमृतमय तहां तहां राखति चित रचि रचि । मोहन मदन स्वरूप सुयशरस करत सु गुप्त प्रेमरस पचि पचि ॥ सूरजदास पियूष लागि रस पठयो नृपति तेउ गए बचि बचि । अब सोई मधु हर्यो सुफलकसुत दुसह दाह जो उठत तच तचि तचि॥ २ ॥ जबते नंदलाल चले काहू मुरली न वजाई ।उन बिना जिय कठिन पीर निकसिहू न जाई। वृंदावनमें भूलि काहू सारंगौ न गाई॥ गोपिन कठिन हिये तरकिहू न जाई। सूरदास प्रभुकी लीलाऊधो कछुपाई॥३॥राग सारंग॥ माई वै दिना ये देह अछत बिधना जो आनै री। श्यामसुंदर रंग रंग युवति वृंद ठानै री॥यद्यपि अक्रूर मूल परमगति पढ़ावै री।प्राणनाथ कमलनैनबाँसुरी बजावै री॥सोई कहा कहौं कहतकठिन कहे कौन मानै री । सूर सो नंद प्रेम पीर विरही मिले जानै री ॥४॥ सबकोउ कहत सयानी बातैं । समुझि न परत बूझि नहिं आवत कही जात नहीं तातैं॥ पहिले जानिअग्नि चंदनसी सती बहुत उमहै। समाचार ताते औ सीरे आगे जाय लहै ॥ कहत फिरत संग्राम सुगम अति कुसुममाल करवार । सूरदास शिर देत शूरमा सोइ जानै व्यवहार ॥ ५ ॥राग गूजरी ॥ कुँवरिको वैरागी वैराग ।पलटति वसन करति निशि चोरी वपु विलसुत भई जाग॥बेसरि वेह मूँदि मृगमद मथि नख उर धुकधुकी खेद कीनी । चलत चरण चित गयो गलित झिर स्वेद सलिल भेभीनी॥ छूटी भुजबल फुटी बलय कर छुटि लर फटी कंचुकी छीनी । मनहुँ प्रेमकी परनि परेवायाहीसे पढि लीनी ॥अवलोकत इहि भाँति रमापति जानौं अहिमणि छीनी। सूरदास प्रभु कहि न जाइ कछु हौं जानी मतिहीनी॥६॥राग मलार॥हरिको मारग दिन प्रति जोवति। चितवति रहति चकोर चंद्र ज्यों सुमिरिसुमिरि गुण रोवति ॥पतिआँ पठवत मसि नहिं खंडित लिखिलिखिमानहुधोवति।भूषण दिन निशि नींद हिरानी एकौ पल नहिं सोवति ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशबिनु वृथा जनमसुख खोवति ॥७॥ राग बिलावल॥अंतर्यामी कुँवरकन्हाई।गुरुगृह पढत हुते जहाँ विद्या

तहाँ ब्रजकी सुधि आई ॥ गुरुसों कह्यो जोरि कर दोऊ दक्षिणा कहौ सो देउँ मँगाई । गुरुपत्नी कह्यो पुत्र हमारो मृतक भयो सो देहु जिवाई ॥ आनि दिए गुरुसुत यमपुरते तब गुरुदेव अशीश सुनाई । सूरदास प्रभु आइ मधुपुरी ऊधोको ब्रज दियो पठाई ॥ ८ ॥ अध्याय ॥ ॥४६॥उद्धवब्रजआगमन हेतु॥रागनट॥यदुपति जानि उद्धव रीति । जिहिं प्रगट निज सखा कहियत करत भाव अनीति । विरहदुख जहां नाहिं जामत नहीं उपजै प्रेम । रेख रूप न बरन जाके यहि धरचो वह नेम॥त्रिगुणतनु करि लखत हमको ब्रह्म मानत और।बिना गुण क्यों पुहुमि उधरै यह करत मन डौर ॥ विरहरसके मंत्र कहिए क्यों चलै संसार । कछु कहत यह एक प्रगटत अति भरचो अहंकार ॥ प्रेमभजन न नेकु याके जाइ क्यों समुझाइ । सूर प्रभु मन इहै आनी ब्रजहि देउँ पठाइ॥९॥राग नट॥इहअद्वैत दरशीरंग।सदा मिलि एकसाथ बैठत चलत बोलतसंग ॥ बात कहत न बनत यासों निठुर योगी जंग । प्रेम सुनि विपरीत भाषतहोतहै रसभंग॥सदाब्रज-को ध्यान मेरे रासरंग तरंग।सूर वह रस कहौं कासोंमिल्यो सखाभुरंग॥राग नट॥संगमिलिकहौंका-सों बात । यह तो कथत योगकी बातैं जामें रस जरिजात ॥ कहत कहा पितु मात कौनकोपुरुष नारि कहा नात । कहाँ यशोदासी है मैया कहां नंदसम तात ॥ कहाँ ब्रजभानुसुता सँगको सुख यह वासर वह प्रात । सखी सखा सुख नहिं त्रिभुवनमें नहिं बैकुंठ सुहात ॥ वे बातैं कहिए केहि आगेयह गुनि हरि पछितात।सूरदास प्रभु ब्रजमहिमा कहि लिखी वदत बलभ्रात॥१०॥राग धनाश्री॥ कहां सुख ब्रजकोसो संसार । कहां सुखद बंसीवट यमुना यह मन सदा विचार ॥ कहां वनधाम कहां राधासँग कहां संग ब्रजवाम । कहां रसरासबीच अंतरसुख कहां नारि तनु ताम ॥ कहां लता तरुतरु प्रति झूलनि कुंज२बनधाम । कहां विरहसुख बिनु गोपिनसँग सूर श्याम ममकाम ॥सखा हमको मिले ऊधो वचनन मारत ताम ॥भावभजन बिना नाहीं सुख कहां प्रेम अरु योग । काग हंसहि संग जैसो कहां दुख कहां भोग ॥ जगतमें यह संग देखो वचन प्रति कहै ब्रह्म।सूरब्रजकी कथा सो कहैयहकरैजो दंभ॥११॥ राग कान्हरो॥हंसकागको संगभयो।कहांगोकुलकहांगोपगोपिका बिधि यह संग दयो ॥ जैसे कंचन कांचसंग ज्यों चंदन संग कुगंधि । जैसे खरी कपूर एक सम यह भई ऐसी संधि॥ जलबिनु मीन रहत कहुँ न्यारे यह सो रीति चलावत । जब ब्रजकी बातैं यहि कहियत तबहिं तबहिं उचटावत ॥ याको ज्ञान थापि ब्रज पठऊं और न याहि उपाव। सुनहु र याको बन पठऊं यहै बनैगो दाव॥१२॥ राग धनाश्री॥ याहिऔरकछुनहींउपाइ।मेरोप्रगट कह्यो नहिं वदिहै ब्रजही देउँ पठाइ॥गुप्तप्रीति युवतिनकी कहिकै याको करौं महंत।गोपिनको परबोधन कारण जैहै सुनत तुरंत ॥ अति अभिमान करैगो मनमेंयोगिनकीइहभाँति। सूर श्याम यह निहचै करिकै बैठतहै मिलि पाँति॥१३॥जबहीं यह कहौंगो वाहि।मोहिं पठवत गोपिकनपै हरष ह्वैहै ताहि॥योगको अभिमान करिहै ब्रजहि जैहै धाइ।कहैगो मोहिं श्याममानत करौंयहचतु-राइ ॥ आइगए तेहि समय ऊधो सखा कहि लियो बोलि । कंध धरि भुजभएठाढेकरतवचननि-ठोलि ॥ बारबार उसाँस डारत कहत ब्रजकी बात ।सूर प्रभुके वचन सुनिसुनि उपँगसुत मुसकात॥१४॥ राग धनाश्री ॥हरिगोकुलकी प्रीति चलाई।सुनहु उपँगसुत मोहिं नबिसरतब्रजवासी सुखदाई ॥ यह चित होत जाउँ मैं अबहीं यहां नहीं मन लागत।गोपी ग्वालगाइ बनचारणअति दुख पायो त्यागत ॥ कहाँ माखन रोटी कहांयशुमति जेवहुँ कहिकहि प्रेम । सूर श्यामके वचन हँसत सुनि थापत अपनो नेम ॥१५॥ राग रामकली ॥यदुपति लख्योतेहिमुसकात। कहत हममनरहे

जोई सोइ भई यह बात ॥ वचन परकट करन कारण प्रेमकथा चलाइ।सुनहु ऊधो मोहिं व्रजकी सुधि नहीं बिसराइं ॥ रैनि सोवत दिवस जागत नहीं है मन आन । नंद यशुमति नारि नर व्रज तहाँ मेरो प्राण । कहत हरि सुनि उपँगसुत यह कहतहौं रसरीति । सूर चितते टरत नाहीं राधिकाकी प्रीति॥१६॥सखा सुन एक मेरी बात।वह लतागृह संग गोपिन सुधिकरतपछितात॥ बिधि लिखी नहिं टरत कैसेहु यह कहत अकुलात। हँसि उपँगसुत बचन बोले कहा हरि पछितात ॥ सदा हित यह रहत नाहीं सकल मिथ्या जात । सूर प्रभु:यह सुनहु मोसों एकही-सों नात ॥१७॥ जब ऊधो यह बात कही । तब यदुपति अतिही सुख पायो मानी प्रगटसही॥ श्रीमुख कह्यो जाहु तुम व्रजको मिलो जाइ व्रजलोग।मोबिन बिरहभरी व्रजबाला जाइ सुनावहु योग ॥ प्रेम मिटाइ ज्ञान परबोधहु तुम हौ पूरण ज्ञानी।सूर उपँगसुत मन हरषाने यहमहिमाइन जानी॥१८॥राग गौरी॥ऊधो तुम यह निहचै जानो। मन वच क्रम मैं तुमहिं पठावत व्रजकोतुरत पलानो ॥ पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी ताके तुम हौ ज्ञाता। रेख न रूप जाति कुल नाहीं जाके नहिं पितु माता॥यह मत दै गोपिनको आवहु विरह न मनमें भाषतित।सूर तुरत तुम जायकहौयह ब्रह्म विना नहिंआसति॥१९॥राग सारंग॥ऊधो तुम वेगही व्रज जाहु।सुरतिसँदेशसुनाइमेटोवल्लभनि-को दाहु ॥ काम पावक तुलित मनमें बिरहश्वास समीर। भस्म नाहिन होन पावत लोचन-नके नीर॥ आजुलौं इहि भाँति है वा कछुक श्वासशरीर। एतेपर बिना समाधानहिं क्यों धरैं त्रिय धीर ॥ बारबार कहा कहौं तुमसों सखा साधु प्रवीन।सूर सुमति विचारिए जिहि जियैजल-बिनु मीन ॥ २०॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो व्रजको गमन करो। हमहिबिनाविरहिनीगोपिकातिनके दुखहि हरो॥योग ज्ञान परबोधि सबनको ज्यों सुख पावैं नारि। पूरण ब्रह्म अलख परिचै करि मोहिं बिसारैं डारि ॥सखा प्रवीन हमारे तुम हौ तुमते नहीं महंत । सूर श्याम कारण यह पठवत ह्वै आवैंगे संत ॥ २१ ॥ राग नट ॥ ऊधो मन अभिमान बढायो । यदुपति योग जानि जिय सांचो नयन अकाश चढायो ॥ नारिनपै मोको पठवतहैं कहत सिखावन योग। मन-हीमन अपकरत प्रशंसा यह मिथ्या सुखभोग ॥ आयसु मानि लियो शिर ऊपर प्रभु आज्ञा पर-मान। सूरदास प्रभु गोकुल पठवत मैं क्यों कहौं कि आन॥२२॥ राग कान्हरो॥तुमपठवतगोकुलको जैहौं। जो मानिहैं ब्रह्मकी वातें तौ उनसों मैं कैहौं ॥ गदगद वचन कहत मन प्रफुलित बारबार समुझैहौं। आजुइ नहीं करौं तुव कारज कौनकाज पुनि लैहौं॥यह मिथ्या संसार सदाई यह कहि-कै उठि ऐहौं । सूर दिना द्वै व्रजजन सुखदै आइ चरण पुनि गैहौं॥२३॥राग केदारो॥सुनसखाहित प्राण मेरे नाहिनैं सम तोहिं। कैसेहूं करि उऋण कीजो व्रजबधुनते मोहिं॥त्याजियेमैंरतनदीन्हों वृथा गोपकुमारि। सालोक्य सामीप्य नासारोपिता भुजचारि ॥ अंगरही साजो चितासों संधि नहीं तनु ज्ञान। सोइ तुम उपदेशहू जो लहैं पद निर्बान। जो न अबकै कृत करैं तो होइहौं ऋण दास। सूर गाइ चराइहौं ह्वै फेरि बसि व्रजवास ॥२४॥ राग बिहागरो॥तुरतव्रजजाहुउपँगसुतआजु। ज्ञान बुझाइ खबरि दै आवहु एक पंथ द्वै काजु ॥ जबते मधुवनको हम आए फेरि गयो नहिं कोई। युवतिनपै ताहीको पठवैं जो तुम लायक होई ॥ एक प्रवीन अरु सखा हमारे जानी तुम सरि कौन। सोइ कीजो जैसे व्रजबाला साधन सीखैं पौन॥श्रीमुख श्याम कहत यह बाणी ऊधो सुनत सिहात। आयसु मानि सूरप्रभु जैहौं नारि मानिहैं बात॥२५॥ राग गौरी॥ ऊधोव्रजजिनिगह-रु लगावहु। तुम व्रजनारि जानि मन सकुचत कहिधौं योग सुनावहु ॥ बाणी कहत समुझि वै लैहैं

कही हमारी मानो । विरहदाह यह सुनत बूझिहै मानहु अनलहि पानौ ॥ अबहीं जाहु बिकल सब गोपीयोगवचनकहिपोषौ। सूरनंदबाबा जननी यशोमतिकोबेगिजाइ संतोषौ॥२६॥राग सोरठ॥हलधर कहत प्रीति यशुमतिकी । कहां रोहिणी ए तन पावै वह बोलन वह हितकी ॥ एक दिवस हरि खेलत मोसँग झगरो कीन्हों पेलि। मोको दौरि गोदकरि लीनो इनहिं दियो करठेलि॥नँदबाबा तब कान्ह गोदकरि खीझन लागे मोको।सूर श्याम नान्हो तेरो भैया छोह न आवत तोको॥२७॥ राग रामकली॥यशोमति करती मोको हेत।सुनत ऊधो कहतबनत न नैन भरि भरिलेत॥दुहूँकोकुशलात कहियो तुमहिं भूलत नाहिं । श्याम हलधर सुत तुम्हारे और कौन कहाहिं ॥ आइ तुमको धाइ मिलिहैं कछुक कारज और।सूर हमको तुमहिं बिन सुख नहीं है कहुँ ठौर॥२८॥राग बिहागरो॥श्याम कर पत्री लिखी बनाइ । नंदबाबासों बिनती करी करजोरि यशोदामाइ ॥ गोप ग्वाल सखन गहि मिलि मिलि कंठ लगाइ । और ब्रजनर नारिजेहैं तिनहि प्रीति जनाइ॥ गोपिकनिलिखियोग पठयो भाउ जान न जाइ ।सूर प्रभु मन और यह कहि प्रेम लेत दृढाइ ॥ २९ ॥उपँगसुतहाथदई हरिपाती । यह कहियो यशुमति मैयासों नहिं बिसरत दिनराती ॥ कहत कहा वसुदेवदेवकी तुमको हमहैं जाए ।कंस त्रास शिशु अतिहि जानिकै ब्रजमें राखि दुराए॥ कहै बनाइ कोटि कोउ बातैं कहिबलराम कन्हाई।सूरकाज करिकै कछु दिनमें बहुरि मिलैंगे आई॥३०॥राग बिलावल॥ऊधोइतनो कहियो जाइ।हम आवैंगे दोऊ भैया मैया जिनि अकुलाइ॥याको बिलग बहुत हम मान्यो जब कहि पठयो धाइ।वह गुण हमको कहाबिसरिहै बडे किये पय प्याइ ॥ और जु मिल्योनंदबाबासों तब कहियो समुझाइ । तौलों दुखी होन नहिं पावैं थवरी धूमरि प्याइ॥यद्यपि यहाँ अनेक भाँति सुख तदपि रह्यो ना जाइ।सूरदास देखों ब्रजवासिन तबहीं हियोसिराइ॥३१राग आसावरी ॥ ऊधो जननी मेरी को मिलिहौ अरु कुशलात कहोगे । बाबा नंदहि पालागन कहि पुनि पुनि चरण गहोगे ॥ जादिनते मधुबन हम आए शोध न तुमही लीनोहो। दैदै सौंह कहोगे हित करि कहा निठुरई कीन्हो हो ॥ यह कहियो बलराम श्याम अब आवैंगे दोउ भाईहो। सूरकर्मकीरेखमिटै नहिं यहैकह्योयदुराईहो॥३२॥राग केदारो ॥बिधनाइहैलिख्योसंयोग । कहांतेमधुपुरीआए तज्यो माखन भोग ॥ कहां वे ब्रजके सखा सब कहां मथुरा लोग । देवकी वसुदेव सुत सुनि जननि कैहै सोग ॥ रोहिणी माता कृपा करि उछँग लेती रोग । सूर प्रभु मुख यह वचन कहि लिखि पठायो योग॥राग गारा॥पाती लिखि ऊधोकर दीन्ही॥ नंद यशुदहि हेतुकहि दीजो हँसि उपंगसुत लीन्ही ॥ मुख वचनन कहि हेतु जनायो तुमहो हितू हमारे। बालक जानि पठे नृप डरते तुम प्रतिपालन हारे ॥ कुबिजा सुन्यो जात ब्रज ऊधो महलइ लियो बोलाई । हाथनपातिलिखी राधाको गोपिन सहित बडाई ॥ मोको तुम अपराध लगावत कृपा भई अन्यास।झुकत कहा मोपर ब्रजनारी सुनहुनसूरजदास॥३४॥राग मलार ॥ हमपरकाहेकोझुकतब्रजनारी। साझे भाग नहीं काहूको हरिकी कृपा निनारी॥कुबिजा लिखो संदेश सबनको अरु कीनी मनुहारी। हौंतौदासी कंसराइकी देखौ हृदय बिचारी ॥ फलन मांझ ज्यों करुई तोमरी रहत घुरेपर डारी। अबतौ हाथ परी यंत्रीके बाजत रागदुलारी॥३५ ॥राग गौरी ॥ऊधोब्रजहिजाहुपालागौं।यहपातीराधाकर दीजौ यह मैं तुमसों मांगौं ॥ गारी देहिं प्रात उठि मोको सुनत रहत यह बानी। राजाभयेजाइ नँदनंदनमिलीकूबरी रानी॥ मोपर रिस पावत काहेको बरजि श्याम नहिं राख्यो । लरिकाईते बाँधति यशुमति कहा जु माखन चाख्यो ॥ रजु लै सबै हजूर होति तुम सहित सुता वृषभान ।

सूर श्याम बहुरो ब्रज जैहैं ऐसे भए अजान॥३६॥राग धनाश्री ॥ऊधो यह राधासों कहियो।जैसी कृपा श्याम मोहिं कीन्हीआपुकरतसोइरहियो॥मोपर रिस पावत बे कारणमैंहौंतुम्हरीदासी।तुमहीं मनमें गुणिधौं देखो बिन तप पायो कासी॥कहां श्यामकी तुम अर्धंगिनि मैं तुमसरकी नाहीं।सूरज प्रभुको यहन बूझिए क्यों न वहाँलौंजाहीं॥३७॥राग सारंग॥ऊधो जाइ कहियोराधिकाहीतुमइतनी-सी बात। आवनदिए कहो काहेको फिरि पाछे पछितात ॥ अब दुखमानि कहाधौं करिहौ हाथ रहैगी गारी।हमें तुम्हें अंतरहै जेतो जानतहैं बनवारी॥एतो मधुप सबैरस भोगी जहींजहींरस नीको। जो रस खाइ स्वाद करि छाँडे सो रस लागत फीको॥एक कूबर हरि हरयो हमारो जगतमांझ यश लीनों । ताको कहा निहोरो हमको मैंत्रिभंग करि दीनो॥ तुम सब नारि गँवारि अहीरी कहा चातुरी जानो । राखि न सकी आपुवशकै तब अब काहे दुख मानो ॥ सूरदास प्रभुकी ए बातैं ब्रह्म लखे नहिं पारे । जाके चरण पाइकै कमला गतिआपनी बिसारे ॥३८॥राग केदारो ॥सुनियत ऊधो लये सँदेशो तुम गोकुलको जात।पाछे करि गोपिनसों कहियो एक हमारीबात॥मात पिताको नेह समुझिकै श्याम मधुपुरी आए । नाहिन कान्ह तुम्हारे प्रीतम ना यशुमतिके जाए ॥ देखो बूझि आपने जियमें तुम माधो कौने सुख दीने । ए बालक तुम मत्तग्वालिनी सबै मुंडकरिलीने॥तनक दही माखनके कारण यशुदा त्रास दिखावै । तुम हँसि सब बाँधनको दौरी काहू दया न आवै ॥ जो वृषभानुसुता उन कीनीसो सब तुम जिय जानो । ताही लाजतज्यो ब्रजमोहनअबकाहेदुख मानो ॥ सूरदास प्रभु सुनिसुनि बातैं रहे श्याम शिरनाए। इत कुबिजा उत प्रेम गोपिका कहत न कछु बनि आए ॥ ३९ ॥राग बिहागरो॥ऊधो जात ब्रजहि सुने।देवकीवसुदेव सुनिकैहृदय हेत गुने ॥ आपसे पाती लिखी कहि धन्य यशुमति नंद । सुत हमारो पालि पठयो अति दियोआनंद॥ आइकै मिलि जात कबहुँ न श्याम अरु बलराम । इहाँ कहति पठाइ देहैं तबहितनुबिनवाम॥बाल सुख सब तुमहिंलूटयो मोहिंमिले कुमार। सूर यह उपकारतुमते कहतबारंबार॥४०राग बिलावल ॥ तब ऊधो हरि निकट बुलायो। लिखि पाती दोउ हाथ दई तेहि ए मुख वचन सुनायो ॥ब्रजवासी जावत नारी नर जल थल द्रुम वन पात । जो जेहिविधि तासों तैसेहि मिलि अरस परस कुश-लात॥जो सुख श्याम तुमहिते पावत सो त्रिभुवन कहुँ नाहिं। सूरदास प्रभुदे सौंहआपनी समुझत हौ कै नाहिं ॥४१ ॥ राग सारंग॥पहिले प्रणाम नंदराइसों। ता पीछे मेरो पालागनकहियोयशुमति माइसों । बार एक तुम बरसानेलों जाइ सबै सुधि लीजो । कहि वृषभानु महरसों मेरो समाचार सब दीजो ॥ श्रीदामाआदि सकल ग्वालनको मेरेहित भेटिबो । सुख संदेश सुनाइसबनकोदिन दिनको दुख मेटिबो ॥ मित्र एक मन बसत हमारे ताहि मिलै सुख पाइहौ। करिकरि समाधान नीकी बिधि मोहिंको माथो नाइहो ॥ डरियहु जिनि तुम सघन कुंजमें हैं तहँके तरुभारी। वृंदावन मति रहति निरंतर कबहुँ न होत निनारी॥ऊधोसों समुझाइ प्रगट करि अपने मनकी बीती।सूरदास स्वामीसो छलसों कही सकल ब्रज प्रीती॥४२॥कही हरि ऊधोसों ब्रजप्रीति। बोलै चल योग गोपिनको तहां करनबिपरीति ॥तुरत अंक भरि रथहि चढायो बिनय कह्यो करिताहि। विरहा जाल मेटिगोपिनको आवहुकाज निबाहि॥लै रज चरण शीशबंदनि करि ब्रजरैहोंदिनद्वै-का।सूरज प्रभु श्रीमुख कहि पठवत तुमबिनु रहोंननेक॥४३॥राग गौरी॥गहर जनिलावहुगोकुलजाइ। तुमहिं बिना व्याकुल हम ह्वैहैं यदुपति करी चतुराइ ॥ अपनोई रथ तुरत मँगायो दियो तुरत पलनाइ । अपने अंग आभूषण करिकरि आपुनही पहिराइ॥अपनो मुकुटपीतांबरअपनो देत

सबै सुख पाये।सूर श्याम तद्यपि उपंगसुत भृगुपद एक बचाये॥४४॥राग बिलावल॥ऊधो चले श्याम आयसु सुनि ब्रज नारिनको योग कह्यो।हरिके मन यह प्रेम लहैगो वहतो जिय अभिमान गह्यो॥ आतुर चल्यो हर्ष मन कीन्हें कृष्ण महंत करि पठैदियो । स्यंदन उहै श्याम सब भूषण जानि-परै नँदसुवन वियो॥युवती कहा ज्ञान समुझेंगी गर्गवचन मन कहत चल्यो।सूर ज्ञानको मान बढाये मधुवनके मारगहि मिल्यो ॥४५॥राग बिलावल॥जबहिं चले ऊधो मधुवनते गोपिन मनहि जनाइ-गई।बारबार भौंरा लगै कानन कछु दुख कछु हिय हर्ष भई॥जहँतहँ काग उडावन लागीं हरि आवत उडि जाहि नहीं।समाचार कहि जबहिं सुनावत उडि बैठत सुनि अनत कहीं॥सखी परस्पर यह कहि बातैं आजु श्यामकै आवतहैं।किधौं सूर कोई ब्रज पठयो आजु खबरिकै पावतहैं॥४६॥आजु कोउ नीकी बात सुनावै । कै मधुवनते नंदलाडिले कै व दूत कोउ आवै॥भौंरा इक चहुँदिशिते उडि उडि कान लागि कछु गावै।उत्तम भाषा ऊंचे चढिचढि अंगअंग सगुनावै॥सूरदास कोऊ ब्रज ऐसो जो ब्रजनाथ मिलावै॥४७॥राग धनाश्री॥तूतो उडहि नहीं रे काग।जो गोपालगोकुलको आवैं तो ह्वैहै बडभाग ॥ दधि ओदन भरि दोनो देहौं अरु अंचलकी पाग। मिलिहौं हृदय सिराइ श्रवण सुनि मेटि विरहके दाग ॥ जैसे मात पिता नहिं जानत अंतरको अनुराग । सूरदास प्रभु करैं कृपा तब जबते देह सुहाग ॥४८॥राग कल्याण॥मथुराते निकसिपरे गैलमांझ आइ,उहै मुकुट पीतांबर श्याम रूप काछे । भृगुपद एक वंचित उर और अंग आछे॥ज्ञानको अभिमान किए मोको हरि पठयो। मेरोई भजन थापि माया सुख झुठयो॥मधुवनते चल्यो तबहिं गोकुल नियरान्यो । देखत ब्रजलोग श्याम आयो अनुमान्यो ॥ राधासों कहति नारि काग सगुन टेरो । मिलिहैं तोहिं श्याम आजु भयो वचन मेरो॥वैसोइ रथ देखति सब कहति हरष बानी । सूरज प्रभुसे लागत तरुनी मुसकानी ॥ ४९ ॥ अध्याय॥४७॥भवँरगीत ॥ राग बिलावल ॥ राधेहि सखी बतावत री । वैसोई रथ लखौं सेत मैं को उतहीते आवत री ॥ चढिआयो अक्रूर जाहिपर स्यंदन ब्रजतन धावत री।वैसिहि ध्वजा पताका वैसी घरघर सबन सुनावत री॥ कोउ कहै श्याम कहति को ऐहै ब्रजतरुनी हरपा-वत री। सूरश्याम जेहि मग पगधारे तेहि मारग दरशावत री॥५०॥सारंग॥है कोउ वैसीही अनुहारि, मधुवन तनते आवत सखि री देखहु नैन निहारि॥माथे मोरमुकुट कटि किंकिणि पीतवसन रुचि चारि।सूरदास प्रभुबिन सब ऐसी जैसे मीन बिनवारि ॥५१॥राग कल्याण॥ वैसोइ रथ वैसोइ कोउ आवत उतहीते । झुरिझुरि सब मरति विरह गोपीजनकीते ॥ देखो री मुकुटझलक कुंडलकी ओभा। वैसोइ पटपीत अंग सुंदर अतिशोभा॥ आए री नंदसुवन राधा हरषानी।सूर मरत मीन तुरत मिले अगम पानी॥५२॥राग नट॥देखत हरषभई ब्रजनारी।वे निहचै आए बनवारी॥जो जैसे सो तैसे धाई। घर घर लोगन सुने कन्हाई॥ रथहीतन सब निरखनलागे । सपनेको सुख लूटत आगे॥कृपा करी आए गोपाल। गोपिन जानी बिरह विहाल॥ ज्योंही ज्यों रथ आतुर आवै । त्योंही त्योंही पट फहरावै ॥ सूर भईं सुखव्याकुल नारी ।प्रेमविवश अनँद उर भारी ॥५३॥राग बिलावल॥ घरघर इहै शब्द परचो।सुनत यशुमति धाइ निकसी हर्षि हियो भरचो॥नंद हर्षित चले आगे सखा हर्षत अंग। झुंड झुंडन नारि हर्षत चली उदधितरंग॥गाइ हर्षत पय स्रवत थन हुंकरत गउ बाल।उमँगि अंगन मात कोऊ वृध तरुन अरु बाल॥ कोउ कहत बलराम नाहीं श्याम रथपर एक। कोउ कहति प्रभु सूर दोऊ रचित बात अनेक॥५४॥राग बिलावल॥सुने ब्रजलोग आवत श्याम।जहांतहैंते सबै धाईं सुनत दुर्लभ नाम ॥ मनो मृगी वन जरति व्याकुल तुरत वरष्यो नीर । वचन गदगद प्रेमव्याकुल

धरत नहिं मन धीर ॥ एकएक पल युग सबनको मिलनको अतुरात । सूर तरुनी मिलि परस्पर भईं हर्षितगात॥५५॥राग धनाश्री॥नंदगोप हर्षित ह्वै गए लेन आगे।आवत बलरामश्याम सुनत दौरि चलीं वाम मुकुट झलक पीतांबर मनमन अनुरागे ॥ निहचै आए गोपाल आनंदित भईं बाल मिट्यो बिरद जंजाल जोवत तेहिकाल।गदगद तनु पुलक भयो बिरहाको शूल गयो कृष्णदरश अतुर अति प्रेमके बेहाल ॥ रथ ज्योंज्यों निकट भयो मुकुट पीत बसन नयो मनमें कछु सोच भयो श्याम किधौं कोउ।सूरज प्रभु आवतहैं हलधरको नहीं लखत झंखति कहति तो होते संग बीर दोउ॥५६॥राग आसावरी ॥ आजु कोइ श्यामकी अनुहारी।आवत उत उमँगे सुनि सबही देखिरूपकी वारी॥इंद्रधनुषसे उर बनमाला चितवत चित्त हरैं।मनो हलधर अग्रज गोहनके श्रवणन शब्द परैं॥ गईं चलि निकट न देखे मोहन प्राण किए बलिहारी । सूर सकल गुण सुमिरि श्यामके बिकल भईं व्रजनारी ॥५७॥राग बिलावल॥कोउ माई आवतहै तनुश्याम।वैसे पट वैसेइ रथबैठनि वै भूषण वै दाम॥ जो जैसे तैसे उठिधाईं छाँडि सकल गृहकाम।पुलक रोम गद्गद तेही छिन शोभित अँग अभिराम । इतने बीच आइगए ऊधो रहीं ठगी सब वाम ॥ ज्यों निधि पाइ गँवाइ हाथते भईं व्याकुल तनुताम।सूरदास प्रभु कत आवतहैं बसे कूबरीधाम॥५८॥उमँगि व्रज देखनको सब धाए। एकहि एक परस्पर बूझति मोहन दूलह आए॥ सोई ध्वजा पताका सोई जा रथ चढि ता दिवस सिधाए । श्रुति कुंडल अरु पीति बसन स्रक वैसोइ साज बनाए ॥ जाइ निकट पहिचान्यो ऊधो नयन जलज जलछाए। सूर श्याम मिटी दरशनआशा नूतन बिरह जगाए ॥५९॥ जबहिं कहो ए श्याम नहीं । परीं मुरछि धरणी व्रजबाला जो जहां रहीं सु तहीं॥ सपनेकी रजधानी ह्वैगई जो जागी कछु नाहीं । बारबार रथ ओर निहारहिं श्याम बिना अकुलाहीं॥कहा आय करिहैं व्रज मोहन मिली कूबरी नारी।सूर कहत सब ऊधो आए गईं श्यामशर मारी ॥६०॥राग रामकली॥तरुणी गईं सब बिलखाइ । जबहिं आए सुने ऊधो अतिहि गईं झुराइ॥परी व्याकुल जहाँ यशुमति गईं तहँ सब धाइ । नीर नयनन बहत धारा लईं पोंछि उठाइ ॥ एक भईं अब चलौ मारग सखा पठयो श्याम । सुनौ हरिकुशलात ल्यायो महरिसों कहैं वाम ॥ जबहिंलौं रथ निकट आयो तबहुँते परतीति । वह मुकुट कुंडल पितांबर सूर प्रभुअँगरीति ॥६१॥राग बिलावल॥ भली भई हरि सुरति करी । उठौ महरि कुशलात बूझिये आनँद उमँगि भरी ॥ भुजा गहे गोपी परबोधत मानहु सुफल घरी । पाती लिखि कछु श्याम पठायो यह सुनि मनहिं ढरी॥ निकट उपंगसुत आइ तुलाने मानो रूप हरी।सूर श्यामको सखा इहै री श्रवणन सुनी परी॥६२॥राग धनाश्री॥ निरखति ऊधो सुख पायो । सुंदर सुजन सुवंश देखियत याते श्याम पठायो ॥ नीके हरि संदेश कहैगो श्रवण सुनत सुख पैहैं । यह जानति हरि तुरत आयहैं ए कहि हृदय सिरैहैं ॥ घेरि लिए रथ पास चहूँघा नंद गोप व्रजनारी । महर लिवायगए निजमंदिर हरषित लियो उतारी ॥ अरघ देत भीतर तेहि लीन्हों धनिधनि दिन कहि आजु।धनिधनि सूर उपंगसुत आए मुदित कहत व्रजराजु ॥६३॥ अथ नंदवचनउद्धवप्रति राग मलार॥ कबहिं सुधि करत गोपाल हमारी । पूंछत नंद पिता ऊधो-सों अरु यशुदा महतारी॥बहुतै चूकपरी अनजानत कहा अबके पछिताने।वासुदेव घरभीतर आए मैं अहीरकै जाने॥पहिले गर्ग कह्यो हुतो हमसों संग देत गयो भूली।सूरदास स्वामीके बिछुरे राति दिवस भै शूली॥६४॥अथ उद्धववचन राग सारंग॥कह्यो कान्ह सुनु यशुमति मैया।आवहिंगे दिन चारि पाँचमें हम हलधर दोउ भैया॥मुरली बेत विषाण देखियो शृंगी बेर सबेरो।लै जिनिजाइ चुराइ राधिकाकछुक

खिलौना मेरो ॥ जादिनतेतुमसोंबिछुरे हम कोउ नकहत कन्हैया। भोरहिनाहिंकलेऊकीनो सांझ न पयपियोधैया ॥ कहत न बन्यो सँदेशोमोपै जननि जितो दुख पायो। अबहमसोंवसुदेवदेवकी कहत आपनो जायो ॥ कहिए कहा नंदबाबासों बहुत निठुर मन कीनों। सूर हमहिं पहुँचाइ मधुपुरी बहुरो शोधनलीनों॥६५॥ पुनःनंदवचन ॥ राग सारंग ॥ हमतेकछुसेवा नभई। धोखेधोखे रहे धोखही जाने नाहिं त्रिलोकमई ॥ चरण पकरि करि बिनती करिबो सब अपराध क्षमा कीबे। ऐसो भाग होइगो कबहूँ श्याम गोदमें लीबे ॥ कहैं नंद आगे ऊधोके एकबेर दरशन दीबे। सूरदास स्वामीमिलि अबकैसबैदोषगतकीबे॥६६॥अथ सखावचन ॥ राग बिलावल ॥भलीबातसुनियतहैआज। कोऊ कमलनयन पठयो है तन बनए अपनोसो साज ॥ पूँछत सखा कहौ कैसे हैं अब नाहीं कछु करते लाज। कंस मारि वसुदेवगृह आए उग्रसेनको दीन्हों राज ॥ राजा भए ज्ञानही भयो सुख सुरभी सँग बन गोप समाज ॥ अब सुन सूर करै को कौतुक ब्रजमें नाहिं बसत ब्रजराज॥६७॥
॥ अथ ब्रजनरनारीवाक्य ॥ राग सारंग ॥ वैसोइ रथ वैसोइ सब साज। मानहुँ बहुरि बिचारि कछू मन सुफलकसुत आयो ब्रज आज ॥ पहिलेइ गमन गयो लै हरिको परम सुमति राथो रतिराज। अजहुँ कहा कीयो चाहतहै याते अधिक कंसको काज ॥ व्याध जो मृगन बधत सुन सजनी सो शर काढि संग नहिं लेत। यह अक्रूर कठिन कीनो इहि ये इतनो दुख देत ॥ ऐसे बचन बहुत बिधि कहिकहि लोचन भरि सींचत उरगात। सूरदासप्रभु अवधिजानिकैचलीं सबैपूँछन कुशलात॥६८॥राग रामकली ॥ब्रजघरघरसबहोतबधाए।कंचनकलश दूब दधि रोचन महरिमहरवृंदाबन आए ॥ मिलि ब्रजनारि तिलक शिर कीनो करि प्रदक्षिणा पास।पूँछत कुशल नारि नर हरषत आए सब ब्रजवास ॥ सकसकात तन धकधकात उर अकबकात सब ठाढे। सूर उपंगसुत बोलत नाहीं अतिहिरदै ह्वै गाढे ॥ ६९॥सखीवचन गोपीप्रति राग धनाश्री॥आजु ब्रजकोऊआयोहै।कैधौंबहुरि अक्रूर क्रूर ह्वै जियत जानि उठिधायो है॥मैं देख्यो ताको रथ ठाढो तुम सखी शोधन पायो है। कैकरि कृपा दुखित जानिकै हरिसँदेश पठायो है॥चलीं मिलि सिमिटि सखी पूछनकोऊधोदरश दिखायो है। तब पहिंचानि सबै प्रभुको भृत करन जोरिशिरनायोहै॥हरिहैंकुशलकुशलहौतुमहूं कुशल लोग जेहि भायो है। है वह नगर कुशल सूरज प्रभु करि सुदृष्टि जहां छायो है॥ ७० ॥
॥ राग धनश्री ॥ देख्यो नंदद्वार रथ ठाढो। बहुरि सखी सुफलकसुत आयो पर्यो सँदेह जियगाढो ॥ प्राण हमारे तबहिं गयो लै अब किहि कारण आयो।मैं जानी यह बात सत्य कै कृपा करन उठि धायो ॥ इतने अंतर आनि उपंगसुत तिहिक्षण दरशन दीन्हों। तब पहिचानि जानि प्रभुको भृतु परम सुचित मन कीन्हों ॥ तब परणाम कियोअतिरुचिसोंअरु सबही करजोरे। सुनियत हुते तैसई देखे सुंदर सुमति सु भोरे ॥ तुम्हरो दरशन पाइ आपनो जन्म सुफल करि मान्यो। सूरज ऊधो मिलत भए सुख ज्यों खग पायोपान्यो॥७१॥रागधनाश्री॥ बोलक इनहूको सुनि लीजै। कैसी उठनि उठे धौं ऊधो तैसे उत्तर कीजै॥ यामेंकछू खरचियतु नाहीं अपनो मतो न दीजै। कहि री सखी भागिए किहि डर चलहु जाइमुखछीजै ॥द्वैकरजोरि भई सन्मुख ठाढी बचन कहो त्यों जीजै। सूर सुमति सोई दीजै हरि वदन सुधारस पीजै ॥७२॥ राग नट ॥ ऊधो कहो हरिकुशलात। । कहौ आवन किधौं नाहीं बोलिए मुख बात॥ एक छिन युग जात हमको बिन सुने हरिप्रीति। आइ आपै कृपा कीनी अबकहो कछु नीति ॥ तब उपंगसुत सबनि बोले सुनो श्रीमुख योग। सूर सुनिसब दौरिआईं हटकि-

दीनोलोग॥७३॥ अथ उद्धववचन॥ राग सारंग॥गोपीसुनहुहरिकुशलात।कंसनृपकोमारिछोरयोआपनो पितु मात ॥ बहुत विधि व्यवहार करि दियो उग्रसेनहिं राज । नगर लोग सुखी वसतहैं भए सुरनके काज ॥इहै पाती लिखी अरु मुख कह्यो कछु संदेश । सूरनिर्गुण ब्रह्म धरिकै तजहु सकल अँदेश ॥ ७४ ॥ राग केदारो ॥ गोपीसुनहुहरिसंदेश।गए संग अक्रूर मधुवन हत्यो कंस नरेश॥रजक मारयो वसन पहिरे धनुष तोरे जाइ । कुवलया चाणूरमुष्टिक दये धरणि गिराइ॥मातपितुके वंदि छोरे वासुदेवकुमार।राज्य दीन्हों उग्रसेनहि चमर निजकर ढार ॥ कह्यो तुमको ब्रह्म ध्यावो छाँडि विषै विकार।सूर पातीदई लिखिमोहिं पढौगोपकुमार॥७५॥ अथ पातीवाचनअवस्थाराग सारंग॥ पाती मधुवनहीते आई । सुंदर श्याम कान्ह लिखि पठई आइ सुनो री माई॥ अपने अपने गृहते दौरीं लै पाती उर लाई । नैननिरखि निमेष न खंडितप्रेमव्यथा न बुझाई ॥ कहा करौं सूनो यहगोकुल हरिबिन कछु न सोहाई ।सूरदास प्रभु कौन चूकते श्याम सुरति बिसराई ॥ ७६ ॥ निरखत अंक श्याम सुंदरके बारबार लावत लै छाती । लोचनजल कागजमसि मिलिकरि ह्वैगइ श्याम श्यामजूकी पाती ॥ गोकुल वसत नंदनंदनके कबहुँ बयारि न लागी ताती। अरुहम उती कहा कहैं ऊधो जब सुनि वेणुनाद सँग जाती॥ प्रभुकै लाड वदति नहिं काहू निशिदिन रसिक रास रस राती । प्राणनाथ तुम कबहुँ मिलहुगे सूरदास प्रभु बालसँघाती॥ ७७॥ पाती मधुवनते आई । ऊधो हरिके परमसनेही ताके हाथ पठाई ॥कोउ पूछत फिरिफिरि ऊधोको आपुन लिखी कन्हाई। बहुरो दईफेरि ऊधोकोतब उन बाँचि सुनाई॥ मनमें ध्यान हमारो राखो सूरदास सुखदाई॥ ७८ ॥राग मारू॥ लिखिआईब्रजनाथकीछाप। ऊधोबाँधेफिरतशीशपरदेखेआवैताप॥ उलटी रीति नंदनंदनकी घरि घरि भयो संताप । कहियो जाययोग आराधै अविगतअकथ अमाप। हरिआगे कुबिजा अधिकारिनि को जीवै इहि दाप । सूर सँदेश सुनावनलागेकहौकौनयहपाप ॥७९॥ राग मलार ॥ कोउब्रज बाँचतनाहिंनपाती। कतलिखिलिखिपठवतनँदनंदनकठिनबिरहकी कांती ॥ नैनसजलकागज अति कोमल कर अँगुरी अतिताती ।परसेजरैविलोकेभीजै दुहूँ भाँति दुख भाती ॥ क्यों ए वचन सु अंक सूर सुनि विरह मदन शर घाती । मृदु मुख वचन बिना सींचे अब जिवहिं प्रेमरस माती॥काहेको लिखि पठवत कागर। मदनगोपाल प्रगटदरशनबिनु क्यों राखहिं मन नागर ॥ ऊधो योग कहा लै कीबो बिनु जल सूखो सागर॥कहिधौं मधुप सँदेश सुचितदै मधुवन श्यामउजागर।सूरश्यामबिनु क्यों मन राखौं तन योबनके आगर॥८०॥ राग धनाश्री॥ऊधो कहा करैं लै पाती। जब नहिं देख्यो गुपाललालको विरह जरावत छाती॥ जानतिहौं तुम मानति नाहीं तुमहूँ श्यामसँघाती । निमिष २ मो बिसरत नाहीं शरद सुहाई राती ॥ यह पाती लैजाहु मधुपुरी जहँ बसैं श्याम सुजाती । मनजु हमारे उहांलैगए काम कठिन शरघाती ॥ सूरदास प्रभु कहा चलतहै कोटिक बात सुहाती। एकबेर मुख बहुरि दिखावहु रहैं चरणरज राती ॥८१॥राग मलार॥ सँदेशन मधुवन कूप भरे । अपने तो पठवत नँदनंदन हमरे फिरि न फिरे । जेइ जेइ पथिक हुते ब्रजपुरके बहुरि न शोध करे । कै वह श्याम सिखाय प्रबोधे कै वह बीच वरे ॥ कागज गरे मेघ मसि खूटी शरदौ लागि जरे। सेवक सूरलिखेतेआधो पलक कपाट खरे ॥८२॥राग मलार॥ आए नंदनँदनके भेव । गोकुलमांझ योग बिस्तारयो भली तुम्हारी जेव॥ जब वृंदावन रास रच्यो हरि तबहिं कहां तुमहेव । अब यह ज्ञान सिखावन आए भस्म अधारी सेव॥अबलनको लैसोब्रतठान्यो जोयोगिनिको योग।सूरदास ए सुनतनजीवहिं

आतुर विरह वियोग॥८३॥राग सारंग॥यहि अंतर मधुकर इक आयो।निजस्वभाव अनुसार निकट होइ सुंदर शब्द सुनायो॥पूँछन लागीं ताहि गोपिका कुबिजा तोहिं पठायो । कीधौं सूर श्यामसुंदरको हमैं सँदेशो ल्यायो॥८४॥राग मलार॥मधुकरकहायहांनिर्गुणगावहि।ए प्रियकथानगरनारिनसों कहहि जहाँ कछु पावहि॥जिनि परसहि अब चरन हमारे बिरहताप उपजावहि। सुंदर मधु आनन अनुरागी नैनन आनि मिलावहि॥जानति मर्म नंदनंदनकोऔरप्रसंग चलावहि।हमनाहिंन कमलासी भोरी करि चातुरी मनावहिं ॥ अतिबिचित्र लरिकाकी नाईंगुर देखाइबौरावहिं । ज्यों अलि कितव सुमन रसलै तजि जाइ बहुरि नहिं आवहि॥नागर रतिपति सूरदास प्रभु किहि बिधि आनि मिलावहि॥८५॥राग बिलावल॥मधुप तुम कहौ कहांते आए हो।जानतिहैं अनुमान आपने तुम यदुनाथ पठाये हो॥वैसहि बरनबसन तनु वैसेवैभूषणसजिलाएहो।लै सरबसु सँगश्यामसिधारेअब कापर पहिराए हो॥अहोमधुप एकै मन सबको सुतौ उहाँ लै छाए हो।अब यह कौन सयानबहुरिब्रज जाकारण उठि आए हो ॥ मधुवनकी मानिनी मनोहर तहीं जाहु जहाँ भाएहो।सूर जहांलौं श्याम गात हौ जानि भले करि पाये हो॥८६॥राग गौरी॥मधुकर जो हरि कहोसो कहिए।तबहम अबइनहींकी दासी मौन गहे क्यों रहिए॥जो तुम योग सिखावन आए निर्गुण क्यों करि गहिए। जो कछुलिखो सोइ माथेपर आनिपरे सब सहिए ॥ सुंदर रूप लाल गिरिधरको बिनु देखे क्यौं लहिए । सूरदास प्रभु समुझि एकरसअब कैसे निरबहिए॥८७॥ऊधो वचन राग धनाश्री॥ सुनहु गोपी हरिको संदेश । करि समाधि अंतर्गति ध्यावहु यह उनको उपदेश ॥ वै अविगत अविनाशीपूरण सब घट रहे समाइ । निर्गुणज्ञान बिनु मुक्ति नहीं है वेद पुराणन गाइ ॥ सगुण रूप तजि निर्गुण ध्यावो इकचित इक मन लाइ । यह उपाव करि विरह तरौ तुम मिलै ब्रह्म तन आइ ॥ दुसह सँदेश सुनत माधोको गोपीजनबिलखानी।सूरविरहकी कौनचलावे बुडतमीनबिनपानी ॥८८॥ ॥गोपीवचन ॥ राग मलार ॥मधुकर हमहीं क्यों समुझावत। बारंबार ज्ञान गीता ब्रज अबलनि आगे गावत॥नँदनंदन बिनु कपटकथा ए कत कहि रुचि उपजावत । स्रक चंदन जो अंग क्षुधारत कहि कैसे सुख पावत ॥ देखि विचार तहीं जिय अपने नागर हौ जु कहावत। सब सुमननपर फिरत निरखिकरि काहे कमल बँधावत ॥ चरणकमल कर नयनकमल कर वदन कमल वर भावत।सूरदासमनुअलिअनुरागीकेहि बिधिहौबहरावत॥८९॥राग मलार॥ रहुरहुमधुकर मधुमतवारे। कौन काज या निर्गुणसों चिरजीवहु कान्ह हमारे ॥ लोटत पीत पराग कीचमें नीच न अंग सम्हारे । बारंबार सरक मदिराकी अपसर रटत उघारे ॥ द्रुमबेली हमहूं जानतहौ जिनके हौ अलि प्यारे । एक बास लैकै बिरमावत जेते आवत कारे ॥ सुंदर वदन कमलदल लोचन यशुमति नंद दुलारे। तन मन सूर अर्पिरही श्यामहिं कापै लेहिंउधारे॥९०॥मधुकर कौनदेशते आए। ब्रजवाते अक्रूर गए लै मोहन तातेभए पराए ॥ जानी सखा श्यामसुंदरके अवधि बन्धन उठि धाए । अंगविभाग नंदनंदनके यह स्वामित हैं पाए॥ आसन ध्यान वाइ आराधन अलि मन चित तुम ताए। अतिहि बिचित्र सुबुद्धि सुलक्षण गुंजयोग मति गाए॥मुद्रा भस्म विषान त्वचा मृग ब्रजयुवतिन मनभाए। अतसीकुसुम बरन मुरली मुख सूरज प्रभु किन ल्याए॥ ९१ ॥ मधुकर काके मीत भए । त्यागे फिरत सकल कुसुमावलि मालति भोरै लए ॥ छिनुके बिछुरे कमल रति मानी केतकि कत बिधए । छांडन नेहु नाहिं मैं जान्यो लै गुण प्रगट नए॥ नूतन कदम तमाल बकुल वट परसत जनम गए । भुज भरि मिलनि उडत उदास ह्वै गत स्वारथ

समए ॥ भटकतफिरत पात द्रुमबेलिन कुसुम करंज भए।सूर विमुख पदअंबुज छाँडे विषयनिविष वर छए ॥९२॥राग जैतश्री॥मधुकर काके मीत भए । दिवस चारि करि प्रीति सगाई रसलै अनत गए ॥ डहकत फिरत आपने स्वारथ पाखंड अग्र दए ॥ चाँडसरे पहिचानत नाहिंन प्रीतम करत नए।मुंडउ बाँटि मेलि बौराए मन हरि हरि जु लए । सूरदास प्रभु दूत धर्म ढिग दुखके बीज बए ॥ ९३॥राग सारंग॥मधुकर हम न होहिं वै बेली । जिनभजि तजि तुम फिरत और रँग करत कुसुमरत केली ॥ वारेते वर वारि बढी है अरु पोषी पिय पानि। बिनु पिय परस प्रात उठि फूलत होतिसदा हितहानि ॥ ए वेली विरहा वृंदावन उरझी श्याम तमाल । पुहुपवास रसरसिक हमारे विलसत मधुप गोपाल ॥ योग समीर धीर नहिं डोलत रूप डार ढिगलागी । सूर पारीगनि तजति हिएते श्रीगुपाल अनुरागी ॥ ९४ ॥मधुकर कहाँ पढी यह रीति । लोक वेद श्रुतिपंथ रहित सब कथा कहति विपरीति ॥ जन्मभूमि ब्रज सखी राधिका कहि अपराध तजी। अतिकुलीन गुणरूपअमित सुख दासी जाइ भजी ॥ योग समाधि वेद गुण मारग क्यों समुझै जु गँवारि । जो पै गुण अतीत व्यापकहै तोहिं कहाहै प्यारि॥ रहि अलि ढीठ कपट स्वारथहित तजिबहुबचन विशेषि।मन क्रम बचन बचति यहि नाते सूर श्यामतन देखि॥९५॥राग मलार॥ मधुकर काहेको गोकुल आए।हमवे-सीही सच अपनेमें दूने विरह जगाए॥हम जानतिहैं जिनहिं पठाए श्याम सँदेशो ल्याए । जन्म जन्मके दूत तिरोवन को नहिं लार लगाए॥ कहा करहिं कहाँ जाहिं सखी री हरि बिनु कछु नसो-हाए।जन्म सुफलसूरज तिनको जो काज पराए धाए॥९६॥राग मलार॥आए माई दुर्ग श्यामके संगी। जे पहिले रँग रँगे श्यामरँग तिनहीकी बुधिरंगी ॥ हमरी उनकीसी गिलवतहौ ताते भएविहंगी। सूधी कहैं सबन समुझावत ते सांचे सरबंगी ॥ औरनको सरबसु लै मारत आपुन भए अभंगी। सूर सु नाम शिलीमुख पीवैं जे घनकवचउपंगी॥९७॥ सखीवाक्य परस्पर॥राग मलार॥हैकोऊमधुवन-ते आयो । सुनो सुमति सब सखी सयानी हितकरि कान्ह पठायो ॥ जामोहनबिछुरनतेगोकुल इते दिवस दुख पायो।सो इहि कमलनैन करुणामय हृदही माँझ बतायो॥ जो जहँ योगी जतन करतहैं नेकहु ध्यान न आयो । सो यह परमउदार मधुपब्रजबीथिन माँझ वहायो॥ अतिकृपालु आतुर अबलनिको व्यापक अंग गहायो । समुझिसूर सुख होतश्रवणसुनिनेति जुनिगमन गायो ॥९८॥राग सारंग॥परी पुकार द्वार गृहगृहते सुनहुसखी इक योगीआयो। पवनसधावनभवन छो-डावन नवल रिसाल गोपाल पठायो॥आशा अवधि परमऊरध जो तिनहिंकहाहितल्यायो।कनक वेलि कामिनि ब्रजबाला योगअग्नि देवेको धायो॥भवभयहरन असुर मारन हित काल मधुपुरी आयो ॥ ब्रजमें यादव एकौ नाहीं काहेको उलटो सुयश हरायो ॥ सुथल श्यामधाममेंबैठो मृत अधिकार जनायो । सूरबिसारीप्रीतिसाँवरेभलीच तुरता जगतहँसायो॥९९॥राग सारंग॥दैबे आए ऊधो मत नीको।आयोरी मिलिसुनहु सयानी लिएसुयशकोटीको॥ तजन कहत अंबर आभूषण गेह नेह सुतहीको । अंग भस्म करि शीश जटाधरि सिखवत निर्गुण फीको॥ मेरेजानइहैयुवति-नको देत फिरत दुख पीको । ता शरापते भए श्याम तन तउ न गहत डरजीको ॥जाकी प्रकृति परी जिय जैसी सोचनभली बुरीको।जौलगि सूरव्यालडसिभाजैसुखनहिंहोतअमीको४२०००॥ ॥राग नट॥ ऊधो तनक सुयश हरिको श्रवणन सुनि । कंचन काँच कपूरकररस समदुखसुख गुण औगुन॥नामउनकोसुनिगृह कुटुंब तजि जाइ बसतपरकानन॥परमहंस बिहंग देखतहिआवत भिक्षा आँगन ॥ बालकपनको राउ संहारयोलोकलाजडर डारी । शूर्पनखाकीनाकनिवारयो त्रियवश

भए मुरारी ॥ बलिको बाँधि पताल पठायो कीन्हें यज्ञनि आई।सूरप्रीतिजानीतेहरिकी कथातजो नहिं जाई ॥१॥ राग सोरठ ॥ ऊधो श्यामसखा तुम साँचे । कीकरिलियोस्वांगबीचहितेवैसेहिलागत कांचे॥जैसीकहीहमेंहिंआवतहीऔरनकहिपछिताते । अपनोपतितजिऔरबतावतमोहिंमानि कछु खाते । तुरत गमनकीजैम वनकोइहां कहांयहल्याए।सूरसुनतगोपिनकीवाणीऊधोशीशनवाए ॥२॥ राग नट ॥ऊधो बेगि मधुवन जाहु।हम विरहिनी नारिहरिबिनु कौनकरैनिबाहु ॥ तहींदीजे मुरपरैना नफो तुम कछुखाहु। जोनहींब्रजमेंबिकानो नगरनारीसाहु॥ सूरवैसबसुनतलैहेंजिय कहा पछिताहु ॥३॥ राग धनाश्री॥ऊधोऔरकछूकहिबेको । मनमानैसोऊकहिडारौपालागैंहमसुनिसहिबेको॥ यह उपदेश आजुलौं ऐसो काननसुन्योनदेख्यो । निरपतपटेकटुकअतिजीरनचाहतमहि उर लेख्यो ॥ निशिदिन बसत नेक नहिं निकसत हृदय मनोहर ऐन।याको इहां ठौर नाहिंन है लै राखो जहां चैन॥ब्रजवासी गोपालउपासी हमसों बातैं छाँडि । सूर योगधन राखुमधुपुरी कुबिजाके घर गाडि॥४॥ राग नट॥जाहुजाहुऊधो जाने हौ पहिचानेहौ।जैसे हरि तैसे तुमसेवक कपटचतुरई साने हौ ॥ निर्गुण ज्ञान कहां तुम पायो कौने सिखे ब्रज आने हो । यह उपदेश देहु लैकुबिजहि जाके रूप लुभाने हो॥कहांलगि कहौं योगकीबातैं बाँचत नैन पिराने हो ।सूरदास प्रभुहम पर खोटी तुमतौ बारहवाने हो ॥५॥ राग गौरी ॥ ऊधोजाहु तुमहिंहमजाने।श्यामतुमहिंह्यांकोनहिं पठए तुम हौ बीच भुलाने ॥ ब्रजनारिनसों योग कहतहौ बात कहत न लजाने । बडेलोग न विवेक तुम्हारे ऐसे भए अयाने ॥ हमसों कही लईहम सहिकै जिय गुणिलेहु सयाने। कहां अबला कहां दिशा दिगंबर मष्ट करौ पहिचाने ॥ साँच कहौ तुमको अपनी सौं बूझति बात निदाने। सूर श्याम जब तुमहिं पठायो तब नेकहु मुसकाने ॥ ६ ॥ राग गौरी ॥ कहति कहा ऊधोसों तुम बौरी। जाको सुनत रहे हरिके ढिग श्यामसखा यह सोरी॥कहति कहा री मैं पत्याति नहिं तूही कहा बनावति । हमको योग सिखावन आए यह तेरे मन आवति ॥ करनी भली भलेई जानैं कुटिलकपटकी बानी।हरिको सिखाव नहीं री माई इह मन निहचैजानी॥कहां शशिमुखरस कहाँ योगघर इतने अंतर भाषत।सूर सबै तुम भई बावरी याकीपतिकहाराखत॥७॥ राग कान्हरो॥ऐसेहीजन धूत कहावत।मोको एक अचंभो आवत यामें वै कछु पावत ॥ वचन कठोर कहत कहि दाहत अपनो महत गवाँवत । ऐसिउ प्रकृति परी कान्हाको युवतिनज्ञान बतावत ॥ आपुन निलज रहत नख शिखलौं एतेपर पुनि गावत । सूर करत परशंसा अपनी हारेहु जीति कहावत॥८॥राग मलार॥ऐसे जन बेशरम कहावत । सोच बिचार कहूँ इनके नहिं कहि डारत जो आवत ॥ अहिके गुण इनमें परिपूरण यामें कछू न पावत । लघुता लहत महति करि यों हँसि नारिन योग बतावत॥ब्रजमें हीन भए अब जैहै अनतहु ऐसेहि गावत॥९॥राग कान्हरो॥प्रकृतिजो जाके अंग परी । श्वान पूँछको कोटिक लागे सुधी कहुँ नकरी ॥जैसे सुभख नहीं भखछाँडैजन्मत जौन घरी । धोए रंग जात नहिं कैसेहु ज्यों कारी कमरी ॥ ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसीधरनिधरी।सूरहोइसो होइ सोचनहिं तैसेहैं एऊरी॥१०॥राग सारंग॥ऊधो होहुआगेतेन्यारे। तुमहि देखि तन अधिक जरतहै अरु नैननके तारे ॥ अपनो योग सैंति धरि राखौ यहां देत कत डारे । सो को जानत अपने मुख हैं मीठे ते फल खारे ॥ हमरे गिरिधरके जु नाम गुण वसे कान्ह उरवारे। सूरदास हम सबै एकमतए सब खोटे कारे॥११॥राग कल्याण॥जाहुजाहुआगेते ऊधो पति राखतिहौं तेरी । काहेको अब रोष दियावत देखति आँखि बरतहै मेरी ॥ तुम जो

कहतहौ संत हैं गोबिंद कहियत है कुबिजा उन चेरी।दोऊ मिले तैसेई तैसे वह अहीर वे कंसकी चेरी ॥तुम सारिखे बसीठि पठाए कहिये कहा बुद्धि उनकेरी।सूर श्याम वह सुधि बिसराई गावत हे ग्वालन सँग हेरी॥१२॥राग सारंग॥समुझिन परत तुम्हारी ऊधो। ज्यों त्रिदोषउपजेजक लागत बोलति बचन न सूधो॥ आपुनको उपचार करौ कछु तब औरन शिख देहु। बडो रोगउपज्यो है तुमको भौन सबारे लेहु ॥ वहां भेषज नाना बिधिको अरु मधुरिपुसे हैं वैद। हम कातर डरपत अपने शिर यह कलंक है कैद॥साँची बात छाँडि कत झूठी कहौ कौनबिधिसुनहीं। सूरदास मुकुताहलभोगी हंस ज्वारि क्यों चुनहीं॥१३॥ राग सोरठ ॥हमअलिगोकुलनाथअराध्यो।मन बच क्रम हरिसों धरि पतिव्रत प्रेमयोग तप साध्यो ॥ मात पिता हित प्रीति निगम पथ तजि दुख सुख भ्रम नाख्यो। मानापमान परम परितोषन सुस्थल थिति मन राख्यो ॥ सकुचासन कुल शील करषि करि जगत बंद्य कर बंदन। मौनऽपवाद पवन आरोधन हित क्रम काम निकंदन ॥ गुरुजन कानि अग्नि चहुँ दिशि नभ तरनि ताप बिनु देखे। पिवत धूम उपहास जहाँ तहँ अपयश श्रवण अलेखे ॥ सहज समाधि बिसारि वपु करी निरखि निमेष न लागत। परमज्योति प्रतिअंग माधुरी धरत इहै निशि जागत ॥ त्रिकुटी सँगभ्रूभंगतराटकनैन नैन लगि लागे। हँसनि प्रकाश सुमुख कुंडलमिलिचंद्रसूरअनुरागे॥ मुरलीअधरश्रवणध्वनिसो सुनि शब्दऽनहद करि कानै।वरषत रस रुचि बचन संग सुखपद आनंद समानै ॥ मंत्रदियो मनजात भजन लगि ज्ञान ध्यान हरिहीको। सूर कहौगुरुकौनकरैअलिकौनसुनैमतफीको॥१४॥

॥राग धनाश्री ॥ ऊधो हम आजु भई बडभागी। जिन अँखियनतुम श्याम बिलोकेते अँखियाँहम लागी ॥ जैसे सुमन बास लै आवत पवन मधुप अनुरागी। अति आनंद होतहै तैसे अंगअंग सुखरागी। ज्यों दर्पणमें दरशन देखत दृष्टि परमरुचि लागी॥ तैसे सूर मिले हरि हमको विरह व्यथा तनु त्यागी॥१५॥राग सारंग॥विलगजिनि मानो हमारी बात।डरपत वचनकठोरकहतम तिबिनु पानी उडिजात॥ जो कोउ कहैं जरे कछु अपने फिरिपाछे पछितात।जोप्रसाद तुम पावत ऊधो कृष्णनाम लै खात ॥ मन जो तिहारो हरिचरननतर चलतरहतदिनप्रात।सूर श्यामते योगअधिकहै कासों कहिआवै यह बात॥१६॥राग सारंग॥अलिहौं कैसे करि कहौंहरिके रूपके रसहि।अपनेतनमें भेद बहुत बिधि रसना न जानै इन नैनकेदशहि॥बारबार पछताति इहै कहि कहा करौं जो विधि नवसहि॥बिनुवाणी ए उमँगि सजल होइ सुमिरिसुमिरि वा सगुणयशहि।जेदेखत ते वचनरहितहैं जिनहिंवचनतेदरशनदेखहि।सूरसकलअंगनकीइहगतिक्योंसमुझावैंषटपद पेखहि॥ १७राग सारंग॥ सुको जेहि नाहिंन सचुपायो बल गोपालके राज। ऊधो इहै सम्पदा हरिकी आवै सबके काज॥ धनुष तोरि गजमारि मल्ल मथि किए निडर यदुवंश। इन औरन अमरन सुख दीनो करषि केश शिरकंस॥ कुबिजहि रूप दियो यदुनंदन मालीको हितकाम।उग्रसेनवसुदेव देवकी आने अपने धाम ॥ दीनदयालु दयानिधि मोहन हैं हमरे इह आश।सूर श्यामहरिहैं जु कृपाकरि इननैननकी प्यास॥१८॥राग धनाश्री॥मधुकर कहिएकाहि सुनाऊँ।हरि बिछुरतहम कितेसहेहैं जिते विरहकेघाऊ॥ वरु माधो मधुवनही रहते कत यशुदाके आए। कत प्रभु गोपवेष ब्रज धरिकै कत ए सुख उपजाए॥ कत गिरि धरयो इंद्रमद मेटयो कत बन रास बनाए। अब कहा निठुर भए अबलनिको लिखिलिखि योग पठाए ॥ तुम परवीन सबै जानत हौं ताते इह कहि आई॥ अपनी को चालै सुनि सूरज पिता जननि बिसराई॥१९॥उद्धववचन ॥ राग धनाश्री॥जानिकरि बावरी जिनि होहु।तत्त्व

भजे ऐसी ह्वैजेहौ ज्यों पारस परसे लोहु ॥ मेरो बचन सत्य करि मानहु छाँडो सबको मोहु ।जौ लगि सब पानी कीचु परी तौलगि अस्तुति द्रोहु ॥ अरे मधुप बातैं ए ऐसी क्योंकहिआवततोहि। सूरसुबस्तुहिछाँडिअभागेहमहिंबतावतखोहि॥२०॥ गोपी बचन ॥ राग सारंग॥कहिबे जीयनकछुश-क राखौ। लावा मेलिदए हैं तुमको बकत रहौ दिन आखौ ॥ जाकी बात कहौ तुम हमसों सो धौं कहौ को कांधी।तेरो कहो सो पवन भूस भयो बहो जात ज्यों आंधी॥ कत श्रम करत सुनत को इहां है होत जो बनको रोयो। सूर इतेपर समुझत नाहीं निपट दईको खोयो॥२१॥॥राग सारंग॥ मधुकर भली सुमति मति खोई । हाँसी होन लगी है ब्रजमें योगहि राखहु गोई ॥ आतमब्रह्म लखावत डोलत घटघट व्यापक जोई। चापे काँख फिरत निर्गुण गुण इहां गाहक नहिं कोई ॥ प्रेमकथा सोई पै जानै जामें बीती होई । अति रस एतो कहा कोइ जानै बूझि देखावै ओई॥बडो दूत तू बडी उमरको बडिए बुद्धि बडोई। सूरदासपूरोदैषटपदकहतफिरतहौसोई॥२२॥राग धनाश्री॥ मधुप कहि जानत नाहिंन बात। फूंकिफूंकि हियरो सुलगावत उठि किन यहांतेजात॥जेहिउरबसत यशोदानंदन तेहि निर्गुण क्यों समात। कत डोलतभटकत पुहुपनको पान करत किनपात॥यद्य-पि बहुबेली बन बिहरत बसत जाइ जलजात।सूरदास अब मिलवन आए मौन किए कुशलात ॥२३॥ मधुकर छाँड अटपटी बातैं। फिरिफिरि बारबार सोइ सिखवत हमदुखपावत जातैं॥हम दिन देत अशीश प्रात उठि बार खसो मत न्हातै। तुम निशिदिन उरअंतर सोचत ब्रजयुवति-नकी घातै॥पुनिपुनि तुमहिं कहत कत आवै कछुक सकुचहै नातै। सूरजदास श्याम रँग राचेफिरि न चढै रँगरातै॥२४॥ राग मलार ॥ क्यों मन मानतहै इन बातन।पाये जानि सकल सुनि मधुकरजे गुण साँवरे गातन ॥ प्रथम प्रेम निशिहू न तजत अब सकुचतहै जलजातनि । निरस जानि निकटहु नहिं आवत देखि पुराने पातनि॥ सुनियत कथा कान कोकिलकी कपट रंगकी रातनि। निशिदिन श्रम सेवा कराइ उठि अंत मिले पितु मातनि ॥ तब ब्रज बसत वेणुरव ध्वनि करि वन बोली अधरातनि॥अति रतिलोभ तजत नहिं इक क्षण पठै सकत नहिं प्रातनि॥ बालि जीति जिन बलि बंधन किये लुब्धक कैसी हातनि। को पतियाइ सुधौं कहि सूरज संकर्षणके भ्रातनि ॥ २५ ॥राग सारंग॥ उलटी रीति तिहारी ऊधो सुनै सु ऐसी को है। अलपवयस अबला अहीरि शठ तिनहिं योग कत सोहै॥कचखुवि आँधरि काजर कानीनकटी पहिरै बेसरि। मुंडली पटिया पारि सँवारै कोढी लावै केसरि ॥ बहिरी पतिसों बात करै तौ तैसोई उत्तर पावै। सो गति होइ सबै ताकी जो ग्वारिनि योग सिखावै ॥ सिखई कहत श्यामकी बतियां तुमको नाहीं दोषु । राजकाज तुमते न सरैगो काया अपनी पोषु॥ जाते भूलि सबै मारगमैं इहां आनि कहा कहते। भली भई सुधि रही सूर तौ मोह धारमें बहते ॥ २६ ॥राग सारंग॥राखो सब इह योग अटपटो ऊधो पाँइ परौं। कहां रसरीति कहाँ तनु शोधन सुनिसुनि लाज मरौं ॥ चंदन छाँडि विभूति बतावत यह दुख क्यों न जरौं। नासा कर गहि योग सिखावत बेसरिकहां धरौं ॥ सर्गुण रूप रहत उर अंतर निर्गुण कहा करौं। निशि दिन रटना रटत श्याम गुण का करि योग मरौं ॥ मुद्रा न्यास अंग अँग भूषण पतिव्रतते नट रौं।सूरदास याही व्रत मेरे हरि मिलि नहिं बिछुरौं॥२७॥ राग सारंग॥मधुकर हम अयान मति भोरी।जानैं तेइ योगकी बातैं जेहैं नवल किशोरी॥कचंनको मृग कवनै देख्यो किन बांध्यो गहि डोरी।बिनही भीत चित्र किन कीनो किन नभ हठ करिघा-ल्यो झोरी ॥ कहिधौं मधुप वारि मथि माखन काढि जो भरो कमोरी। कहो कौनपै कढो जाइ

कन बहुत सरास पछोरी॥सबते ऊंचो ज्ञान तुम्हारो हम अहीरि मति थोरी । सूरज कृष्णचंद्रको चाहत अँखिआं तृषित चकोरी॥२८॥ अथ नेत्र अवस्थावर्णन राग धनाश्री॥अंखियांहरिदरशनकीभूँखी। अब कैसे रहति श्यामरंग राती ए बातें सुनि रूखी ॥ अवधि गनत इकटक मगजोवत तबएइत्यो नहिं झूखी । इते मान इहियोग सँदेशन सुनि अकुलानी दूखी ॥ सूर सकत हठ नाव चलावत ए सरिता हैं सूखी।बारक वह मुख आनिदेखावहुदुहिपैपिवत पतूखी॥२९॥राग धनाश्री॥ अँखियाँहरि दरशनकी प्यासी । देख्यो चाहत कमलनैनको निशिदिन रहत उदासी ॥ आए ऊधो फिरिगए आँगन डारि गए गर फाँसी । केसरिको तिलक मोतिनकीमाला वृंदाबनकोबासी॥काहूकेमनकी कोउ न जानत लोगनके मनहाँसी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको जाइ करवट ल्यों कासी॥३०॥ राग धनाश्री ॥ नैनन उहै रूप जो देख्यो । तौ ऊधो यह जीवन जगको साँचहु सफलकरिलेख्यो॥ लोचन चपल चारु खंजन मनरंजन हृदय हमारे।सुरंग कमल मीन मनोहर श्वेत अरुनअरुकारे ॥ रत्न जडित कुंडल श्रवणन वर गंड कपोलनि झाई । मनु दिनकर प्रतिबिंब मुकुरमहँ ढूंढत यह छबि पाई ॥ मुरली अधर बिकट भौंहैं करि ठाढी होनि त्रिभंग। मुक्तमाल उर नील शिखरते धसी धरणि जनु गंग ॥ और वेस को कहै वरणि सब अंगअंग केसरि खौर । देखे बनै कहत रसना सों सूर विलोकत और ॥३१॥ राग धनाश्री ॥ नैननंदनंदनध्यान। तहांलै उपदेशदीजैजहांनिर्गुणज्ञान॥ पानि पल्लव रेख गनि गुनि अवधि बिविध बिधान । एतेपर कहि कटुक वचनन हते जैसे प्रान॥ चंद्रकोटि प्रकाश मुख अवतंस कोटिक भान । कोटि मन्मथ वारि छबिपर निरखि दीजत दान ॥ भ्रुकुटि कोटि कोदंड रुचि अवलोकननि संधान । कोटि वारिज वक्र नयन कटाक्ष कोटिक बान । मणि कंठहार उदार उर अतिशय बन्यो निर्मान । शंख चक्र गदा धरे कर पदुम सुधा निधान॥ श्याम तनु पट पीतकी छबि करै कौन बखान । मनहु नृत्यत नील घनमें तडित देती मान । रासरसिक गुपाल मिलि मधु अधर करती पान। सूर ऐसे श्याम बिन को यहाँ रक्षक आन॥३२॥राग गूजरी॥ऊधो इन नैनन नेम लियो।नँदनंदनसों पतिव्रतराख्यो नाहिंन दरश वियो ॥ चंद्र चकोर चित्त चातक जलधरसों बँधो हियो। ऐसेहि इन नैननगोपाल-हि इकटक प्रेम दियो॥ आयो पुहुप ज्ञान ले ए दृग मधुपन रुचि न कियो । हरिमुख कमल अमीरस सूरज चाहत उहै पियो॥३३॥राग कान्हरो॥ऊधो जू नैनन यह व्रत लीन्हों।स्वातिबिनाऊषर सब भरियत ग्रीव रंध्र मत कीन्हों ॥ मुरली गरज तात मुकुतातन मेघ ध्यान जल हीनो । बरुए प्राण जाहिं ऐसेही बयन होय क्यों हीनों ॥ तुम आए लै योग सिखावन सुनत महादुख दीन्हों। कैसे सूरअगोचर लहिएनिगमनपावत चीन्हों ॥३४॥राग सारंग॥जबतेसुंदरवदननिहारचो। तादिनते मधुकर मन अटक्यो बहुत करी निकरै न निकारचो ॥ मात पिता पति बंधु सजन जन तिनहूको कहिबो शिर धारचो । रही न लोकलाज मुख निरखत दुसह क्रोध फीटो करि डारचो ॥ हैबो होइ सु होइ कर्मवश अब जीको सब सोच निवारचो । दासी सूरदास परमानँद भलो पोच अपनो न बिचारचो ॥३५॥ हरिमुख निरख निमेष बिसारे ।तादिनते ए भए दिगंबर इन नैननके तारे ॥ तजी सीख सब सास ससुरकी लाज जनेऊ जारे। घर घूँघुट छाँडौवनवीथि-नि अहनिशि रहत उघारे ॥ सहज समाधि रूपरस इकटक करत न टकते टारे । ताके बीच विघ्न करिबेको मातु पिता पचिहारे ॥ कहत सुनत समुझत मन महिआँ ऊधो वचन तुम्हारे। सूरदास ए हटक न मानत लोचन हठी हमारे॥ ३६॥राग केदारो॥नैनन निपट कठिन व्रत ठानी।जा

दिनते बिछुरे नँदनंदन तादिनते नहिं नेक सिरानी। पलक न लावत रहत ध्यान धरि बारंबार ढुरावत पानी। लाल गोपाल मिले ऊधो मैं कर्महीन कछुओ नहिं जानी। समुझि समुझि उनहार श्यामकी अतिसुंदर वर शारंगपानी। सूरदास ए मोहि रहे अति हरि मूरति मनमाँझ समानी॥३७॥राग सारंग॥ऊधो क्योंराखौंएनैननि।सुमिरि सुमिरि गुण अधिकतपतहैं सुनततुम्हारे बैननि॥ ए जु मनोहर वदन इंदुके शारद कुमुद चकोर। परम तृषारत सजल श्यामघन तनके चातक मोर॥मधु मराल युगपद पंकजके गति विलास जलमीन। चक्रवाक द्युति मन दिनकरके मृग मुरली आधीन॥ सकल लोक सूनो लागत है बिन देखे वहरूप। सूरदास प्रभु नँदनंदनके नखशिख अंग अनूप॥३८॥राग धनाश्री॥और सकल अंगनते ऊधोअँखियाँ बहुत दुखारी।अधिक पिरात सिराति न कबहूं अनेक जतन करि हारी॥ चितवत मग सु निमेष न मिलवत विरह बिकल भई भारी। भरिगई विरह वाइ माधोके इकटक रहत उघारी।अलिआली गुरुज्ञान शलाका क्यों सहि सकति तुम्हारी।सूर सु अंजन आँजि रूप रस आरति हरौ हमारी॥३९॥राग रामकली॥ ऊधो इन नैनन अंजन देहु। आनहु क्यों न श्याम रँग काजर जासों जुरयो सनेहु॥ तपति रहति निशि बासर मधुकर नहिं सुहात बन गेहु। जैसे मीन मरत जल बिछुरत कहा कहौं दुख एहु॥सब बिधि वानि ठानि करि राख्यो खरी कपूरको रेहु। वारक श्याम मिलावहु सूर सुनि क्यों न सुयश यश लेहु॥४०॥राग मलार॥नैना नाहिंनै ये रहत।यदपि मधुपतुमनंद नँदनको निपटहि निकट कहत॥ हृदय माँझ जो हरिहि बतावत सीखो नाहिं गहत।अधपरही संदेशअवधिको उलटे उलटि गहत॥ परी जु प्रकृति प्रगट दरशनकी देखोइ रूप चहत। सूरदास प्रभु बिन अवलोके सुख कोई न लहत॥ ४१ ॥पूरनता ए नैन पुरे।तुम पुनि कहत श्रवण हहिं समुझत दुख अति मरत बिसूरे॥ ए अलि चपल मोद रस लंपट कटु संदेश कथत कत कूरे। कहां मुनि ध्यान कहां ब्रजवासिन कैसे जात कुलिश कर चूरे॥ हरि अंतर्यामी सब बूझत बुद्धि बिचार सु वचन समूरे। वे हरि रत्न रूप सागरके क्यों पाइए खनावत धूरे॥ देखि बिचारि प्रगट सरिता सर शीतल सजल स्वाद रुचि रूरे। सूर स्वाति की बूँद लगी जिय चातक चित लागत सबझूरे॥४२॥राग मलार॥ऊधो अँखियाँ अति अनुरागी।इकटकमगजोवतिअरुरोवतिभूलेहु पलक न लागी॥बिन पावस पावसऋतु आई देखतहैं विदमान।अबधौं कहा कियोचाहतहैंछाँडहु निर्गुण ज्ञान॥ सुनि प्रिय सखा श्यामसुन्दरके जानतु सकल सुभाइ। जैसे मिलें सूरके स्वामी तैसी करहु उपाइ॥४३॥राग बिहागरो॥मधुकर सुनो लोचन बात।रोकिराखीअंगअंगन तऊउडि उडि जात॥ जो कपोत वियोग व्याकुल जाति है तजि धाम। जात यो दृग फिरि न आवत बिना दरशन श्याम॥ मूँदि नैन कपाट पट दै उभै घूँघट ओट। स्वाति सुत ज्यों जाति कीतहूँ निकसि मणि नग फोट॥ श्रवण सुनि यश रहत हरिको मन रहत हरि ध्यान।रहतिरसना नाम रटि रटि कंठ करि गुण गान॥ कछुक दियो सुहाग इनको तो सबै ए लेत। सूरदास प्रभु बिना देखे नैन चैन न देत॥ ४४ ॥ राग सारंग॥ मधुकर ए नैना पै हारे। निरखि निरखि मग कमल नयनके प्रेममगन भए भारे॥ तादिनते नींदौ पुनि नाशी चौंकि परति अधिकारे। सपने तुरिए जागत पुनि वोई वसत जो हृदय हमारे॥यह निर्गुण लै ताहि बतावो जो जानै याकीसारे।सूरदास गोपाल छाँडिकै चूसे टेटा खारे॥४५॥राग धनाश्री॥अँखियाँअबलागीं पछितान।जबमोहन उठिचलेमधुपुरी तब क्यों दीनो जान॥पंथन चले सँदेश न आवे धीरजधरै नप्रान। जादिनके बिछुरेनँदनंदनअँग अँग लागे बान॥ ऊधो अब तुम जाइ सुनावहु आवहिं शारंगपानि। सूरदास चातक भइं गोपी

अंतरगतिकी जानि॥४६॥राग जैतश्री॥कमलनैन कान्हरकी शोभा नैननिते न टरै।ऊधो आए योग सिखावन को जंजाल करै॥जब मोहन गाइनलै आवत ग्वालन संग धरै।बलदाऊ अरुसंग सखा मिलि कहो कैसे बिसरै॥ बंसीवट यमुनातट ठाढे मुरली अधर धरै। सुख समूद विनोद जे कीन्हे को तेहि धरनि धरै॥ये ब्रजवासी भये उदासी को संताप हरै। सूरदासके प्रभुविनु ऊधो को तनुतप्त हरै॥ ४७॥ राग नट॥ सुंदर श्यामके सँग आँखि। प्रथम ऊधो आनिदे हम सगुन डारैं नाखि॥ द्वै तीन सप्त अनंग तजे श्रुति स्मृति कही जो भाषि। हृदय विद्या ज्ञान धरम सु लोचननि अभिलाष॥ जहां जहांकी केलि पिय हरि सोई सर चकई पाँखि। हारि हारि अहेरिया हरि रही झुकि झखि झाँखि॥ कमल कुमुदनि इंदु उडुगन मिलन सूरज साखि। राति ज्यों अक्रूर दिन अलि मदन दह मधु माखि॥ ४८॥ राग मलार॥ सखी री मथुरामें द्वै हंस। वै अक्रूर ए ऊधो सजनी जानत नीके गंस॥एदोउ नीर खीर निरवारत इनहि बधायो कंस। इनके कुल ऐसी चलि आई सदा उजागर वंस॥अब इन कृपाकरीब्रजआए जानि आपनो अंस। सूर सु ज्ञान सुनावत अबलनि सुनत होत मतिभ्रंस॥४९॥राग सारंग॥मानो दोउ एकहि मते भए। ऊधौ अरु अक्रूर वधिक मति ब्रज आखेट ठए॥ वचन पासि विधऐमृग माधो उन रथ नाइ लए।इन हियहेरिमृगीसब गोपी सायक ज्ञानहए॥योगअग्निकीदवादेखियत चहुँ दिश लाइ दए॥५०॥ मानो भरे दोउ एकहि सांचे। नख शिख कमलनयनकी शोभा एकै भृगुपद बांचे॥ दारुजात कैसे गुण इनमें ऊपर अंतर श्याम। हमको है गजदंत प्रचारित बचन कहत नहिं काम॥ एई सब असित देह धरे जेते ऐसेई सब जानि। सूर एकते एक आगरे वा मथुराकी खानि॥५१॥सबै खोटे मधुवनके लोग॥जिनके संग श्यामसुंदर सखी सीखे सबअपयोग॥ आए हैं कहियत ब्रज ऊधो युवतिनको लै योग।आसन ध्यान नैन मूँदे सखि कैसे कटै वियोग। हम अहीरि इतनी का जानैं कुबिजासों संयोग।सूर सु वैद कहा लै कीजै कहे नजानै रोग॥५२॥ राग नट॥मधुवनके लोगन को पतिआइ।मुख औरै अंतरगतिऔरै पतियाँ लिखिपठवत जो बनाइ॥ज्यों कोइल खत काग जिवाए भक्षअभक्ष खवाइ।कुहुकुहानि सुनि ऋतु बसंतकी अंत मिले कुल अपने जाइ॥ ज्यों मधुकर अंबुज रस चाख्यो बहुरि न बूझी बातैं आइ। सूर जहाँ लगि श्यामगातहैं तिनसे कतकीजे सगाइ॥५३॥माई री मधुवनकी यह रीति। नीरसजानितजत छिन भीतर नवल कुसुम रस प्रीति॥तिनहूंके संगिनको कैसे चित आवति परतीति। हमहिं छाँडि बिरमहिं कुबिजा सँग आए न रिपुरण जीति॥ जिनि पतियाहु मधुर सुनि बातैं लागे करन समीति।सूरदास श्यामसँग ऐसो ज्यों भुसपरकी भीति॥५४॥राग मलार॥मधुवनके सबकृतज्ञ धर्मीले। अति उदार परहित डोलतहैं बोलत बचन सुशीले॥ प्रथम आइ गोकुल सुफलकसुत लै मधुरिपुहि सिधारे। उहां कंस इहां हम दीननिको दूनो काज सँवारे॥हरिको सिखै सिखावन हमको अब ऊधो पगधारे। उहां दासी रतिकी कीरतिके इहां योग विस्तारे॥ अब तेहि बिरह समुद्र सबै हम वूडी चहत नहीं। लीला सगुन नावही सुनु अलि तेहि अवलंब रही॥ अब निर्गुणहि गहैं युवतीजन पारहि कहो गईको। सूर अक्रूर छपदके मनमें नाहिंन त्रास दईको॥ ५५॥ ॥राग धनाश्री॥ अब नीके कै समुझि परी। जिनि लगि हुती बहुत उर आशा सोऊ बातनिवरी॥ वै सुफलकसुत ए सखी ऊधो मिली एक परिपाटी। उनतौ वह कीन्ही तब हमसों ए रतन छँडाइ गहावत माटी॥ ऊपर मृदु भीतरसे कुलिशसम देखतके अति भोरे। जोइ जोइ आवत वा मथु-

राते एक डार केसे तोरे ॥ यह सखी मैं पहिले कहि राखी असित न अपने होहीं । सूर काटि जो माथो दीजै चलत आपनी गोहीं ॥५६॥ ऊधो प्रेम रहित योग निरस काहेको गायो हम अबलनिको निठुर वचन कहे कहा पायो ॥ जिन नैनन कमलनैन मोहन मुख हेर्यो ॥ मूँदन ते नैन कहत कौन ज्ञान तेर्यो॥ तामें सुनि मधुकर हमकहा लेन जाहीं ।जामें प्रियप्राण-नाथ नंदनँदन नाहीं। जिनके तुम सखा साधु बात कहो तिनकी।जीवत कहि प्रेम कथा दासी हम उनकी ॥ अविनाशी निर्गुण मत कहा आनि भाख्यो ।सूरदास जीवन प्रभु कान्ह कहां राख्यो॥५७॥राग सारंग ॥जिनिचालहि अलि बात पराई। नहिंकोउ सुनै न समुझतब्रजमेंनईकीरति सब जात हिराई॥जाने समाचार सुखपाए मिलि कुलकीआरति बिसराई। भले ठौर वसि भली भई मति भले ठौर पहिंचानि कराई॥ मीठी कथा कटुकसी लागति उपजतहैं उपदेश खराई। उलटे न्याउ सूरके प्रभुके बहेजातमाँगत उतराई॥५८॥राग धनाश्री ॥ ऊधो योगसिखावनआएअब कैसे धीरज धरौं। जोरि जोरि चित जोरि जुरीनो जोरी जोरि न जानौ॥पहिलोयोग कहा भयो ऊधो अब यह योग दृढानो॥उन हरि हमसों प्रीति करी जो जैसे मीन अरु पानी । तलफि तलफि जिय निकसनलागे पापी पीर न जानी॥निशिवासर मोहिं पलकन लागै कोटि जतनकरि हारी। ज्यों भुंवग तजि गयो केंचुली सो गति भई हमारी ॥एकदिवस हरि अपने हाथन करन-फूल पहिराए। ते मोहन माटीके मुद्रा मधुकर हाथ पठाए॥ बेनीसुभगगुहीकरअपनेहाथनचरणन जावक दीनो। कहा कहौं वा श्यामसुंदरसों निपट कठिन मन कीनो ॥ तुम जो बसत हौ मथुरा नगरी हम जो बसत या गाँव । ऊधो हरिसों यों जाइ कहियो प्राण तजहिं या ठाँव ॥ प्रीतम प्यारे प्राण हमारेरहे अधरपर आइ। सूरदास हरिजीके आगे कौन कहै दुखजाइ॥५९॥जैतश्री ऊधो योग सिखावन आए। शृंगी भस्म अधारी मुद्रा दै यदुनाथ पठाए॥जो पै योग लिखो गोपिनको कत रसरास खिलाए। तबहीं क्यों न ज्ञान उपदेशो अधर सुधारस प्याए॥ मुरली शब्द सुनत बनगवनी पति सुत गृह बिसराए । सूरदास सँग छाँड स्वामिको हमहिं भले पछिताए ॥ ॥६०॥राग धनाश्री॥बहुत दिन गए ऊधो चरणकमल बिनु देखे।दरशनहीन दुखित दिनहीदिन छिन छिन बिपतिबिशेषे॥रजनीमें अति प्रेम पीर बन गृह मन धरैनधीर।बासर मग जोवत उरसरिताभए नैनकेनीर॥जौलौं रही आशसोइ गानगति।घटि रही श्वास । अतिवियोग बिरहिनि तनु तजिहै कहि सो सूरज दास॥६१॥ऊधोवचन॥रागधनाश्री॥ज्ञान बिना कहुँ वे सुखनाहीं। घट घट व्यापक दारु अग्निज्यों सदा बसै उर माहीं॥निर्गुण छाँडि सगुणको दौरति सोचि कहो किहि वाहीं । तत्त्व भजौ ज्योंनिकट न छूटै त्यों तनुके सँग छाहीं॥तिनके कहो कौन जस पायो जे अबलौं अवगाहीं। सूरदास ऐसे कर लागत ज्योंकृषि कीन्हे पाहीं॥६२॥राग सोरठ॥ऊधो प्यारे कही सो बहुरिनकहिए। जो तुम हमें जिवायो चाहत अनबोले होइ रहिए॥ प्राण हमारे घात होतहैं तुमरे भावै हांसी । या जीवनते मरन भलोहै करवट लेवो कासी ॥ पूरबप्रीति सँभारि हमारे तुमको कहन पठायो । हमतौ जरिबारि भस्म भए तुम आनि मसान जगायो ॥ कै हरि हमको आनि मिलावहु कै ले चलिए साथे। सूरश्याम बिन प्राण तजतहैं बनै तुम्हारे माथे ॥ ६३ ॥ राग धनाश्री॥ रे मधुकरकहा सिखावन आयो ।एतौ नैन रूप रस राचे कह्यो न करत परायो ॥ योग युक्ति हम कछुवनजानैं ना कछु ब्रह्मज्ञानो। नवकिशोर मोहन मृदुमूरति तासों मन उरझानो ॥ भली करी तुमआए ऊधो देखो दशा बिचारी। दाइ उपाइ मिलाइ सूर प्रभु आरति हरहुहमारी॥६४॥राग कल्याण॥मधुकरकहा

कियो अब चाहत। ए सब भई चित्रकी पुतरी सून शरीरहि डाहत॥ हमसों तोसों वैर कहा अलि श्याम अजा भयो राहत। झारि झूरि मनतो तू लै गयो बहुरिपयारहि गाहत॥ अब तौ है मारुतको गहिबो का सस मूकी लैहै। सूरज जोवन हमहिंहते तूअपनोकीयो पैहै॥६५॥ राग केदारो॥ ऊधो तुम अपनो जतन करौ। हितकी कहत कुहितकी. लागत इहां बेकाज अरौ॥ जाइ करौ उपचार आपनो हौं जु देत शिख नीकी। कछुवैकहतकछुकहिनहिं आवत ध्वनिदेखतनहिंनीकी॥ साधु होइ तिहि उत्तरदीजै तुमसों मानी हारि। यह जिय जानि नंदनंदन तुम इहांपठाएढारि॥ मथुरा गहौ बेगिइनपाँइन उपज्योहैतनुरोग। सूरसुवैद बेगि ढोहोकिन भएमरनकेयोग॥ ६६॥ राग नट॥ कह्यो तुम्हारो लागत काहे। कोटिक जतन कहौ जो ऊधो हम नबहकिहैं वाहे॥ काहेको अपने जीमें री तू सतलै मनलाहे। यह भ्रमतौ अबहीं भजिजैहै ज्यों पयारके गाहे॥ काशीके लोगनलै सिखयो जे समझे या माहे। सूर श्याम विहरत ब्रज भीतर जीजतुहैमुखचाहे॥६७॥ सारंग॥ आप देखि पर देखि रे मधुकर तब औरन सिख देह। बीतैगी तबहीं जानोगे महाकठिनहैनेह॥ मनजु तुम्हारे हरिचरणनहै तन लै गोकुल आयो। नँदनंदनके सँगके बिछुरे कहिकौने सच पायो॥ गोकुल रहो जाहु जनि मथुरा झूठोमायामोहु। गोपी कहैं सूर सुन ऊधो हमसे तुमहू होहु ६८॥ तू अलि कहा परयो कहि पैडे। ब्रज तू श्याम अजा भयो हमको इहऊंबचतनबैडे॥ यह उपदेश सेतहू भाए जो चढि कहो वरैडे। राजति जतन यशोदा नंदहि हृदय माँझ सब मैडे॥ छांडि राजमारग यह लीला कैसेचलहि कुपैडे। याआदर परअजहूंबैठो टरतनसूरपलैडे॥६९॥ राग सारंग॥ घरहीके बाढेहो रावरे। नाहिन मीत वियोग बशपरे अनव्योगे अलिबावरे। अधरसुधा मुरलीकी पोषे योग जहर कत प्याव रे॥ अबला कही योग हम जानैं ज्यों जल सूखे नावरे॥ वरु मारिजाइ चरे नहितिनका सिंहकोइहै सुभाइरे॥ जानत सूरदासकंठहरियो तजिअनत न ठाँवरे॥७०॥ राग सारंग॥ तुम अलि कासों कहत बनाई। बिनु समुझे हम फिरि बूझतिहैं बारक बहुरौ गाई॥ किहिधौं गमन कीन्हों स्यंदनचढि सुफलकसुतके संग॥ किहि बिधि रजक लिए नानापट पहिरे अपने अंग॥ किहि हति चाप निदरि गज निजबल किहि बल मल्ल मथिजाने। उग्रसेन वसुदेव देवकी किहिबनिगडते आने। तू काकीहै करत प्रशंसा कौने घोष पठायो॥ किहि मातुल हति कियो जगत यश कौन मधुपुरी छायो॥ माथे मोर मुकुट उरगुंजा मुखमुरली कलबाजे। सूरदास यशुदानँद नंदन गोकुलकान्ह विराजे॥७१॥ राग सारंग॥ हमकोहरिकी कथासुनाउ। ए आपनी ज्ञानगाथा अलि मथुराही लै जाउ॥ वै नर नारि नीके समुझेंगी तेरो वचन बनाउ। पालागौं ऐसी इन बातनि उनहीं जाइ रिझाउ॥ जो शुचि सखी श्यामसुंदरको अरु जिय अति सतिभाउ॥ तो बारक आतुर इन नैनन वह मुख आनि देखाउ॥ जो कोउ कोटि करै कैसेहू बिधि विद्या व्यौसाउ। तो सुन सूर मीनके जलबिनु नाहिंन और उपाउ॥७२॥ राग भोपाली॥ ऊधो हरि बिनु ब्रज रिपु बहुरि जिये। जे हमरे देखत नँदनंदन हति हति हुते सो दूरि किये॥ निशिको रूप बकी बनि आवत अति भय करत सु कंप हिए। तापहतै तनु प्राण हमारे रविहू छिनक छँडाइ लिए॥ उर ऊंचे उसाँस तृणावर्त तिहि सुख सकल उडाइ दिए॥ कोटिक कालीसम कालिंदी परसत सलिल न जात पिए॥ बन बकरूप अघासुर समघर कतहूँ तौ न चितै सकिए॥ कैसो कठिन कर्म कैसो बिन काको सूर शरन तकिए॥ ७३॥ राग सोरठ॥ ऊधो तुम ब्रजकी दशा बिचारो। ता पाछे यह सिद्धि आपनी योगकथा विस्तारो॥ जाकारण तुम पठए माधो सो सोचो जियमाहीं। कितोक बीच विरह परमारथ जानत

हौ किधौं नाहीं ॥ तुम परवीन चतुर कहियतहौ संतन निकट रहतहो । जल बूडत अवलंब फेनको फिरि फिरि कहा गहतहो ॥ वह मुसकानि मनोहर चितवनि कैसे उरते टारौं।योग युक्ति अरु मुक्ति परमनिधि वा मुरलीपै वारौं ॥ जिहि उर कमलनैन जु वसतहैं तिहि निर्गुण क्योंआवे। सूरदास सो भजन बहाऊं जाहि दूसरो भावै ॥७४॥राग आसावरी ॥ ऊधो कहांकी प्रीति हमारे। अजहुँ रहत तन हरिके सिधारे ॥ छिदि छिदि जात विरह शर मारे । पुरि पुरि आवत अवधि बिचारे ॥ फटत न हृदय सँदेश तुम्हारे । कुलिशते कठिन धुकत दोउ तारे ॥ वर्षत नैन महा जलधारे । उर पषाण विदरत न विदारे ॥ जीवन मरन दोउ दुखभारे।कहियत सूर लाज पतिहारे ॥७५॥राग सारंग॥ऊधोइतनोसोहिं सतावत।कारीघटा देखिबादरकीदामिनि चमकिडरावत॥हेम-सुतापतिको रिपु व्यापै दधिसुत रथनचलावत। अंबूखंडनशब्द सुनतहीचित चकृत उठिधावत॥ कंचनपुर पतिको जो भ्राता ते सब बलहिं न आवत।शंभूसुतको जो वाहनहै कुहके असलसला-वत॥यद्यपि भूषण अंग बनावत सोइ भुजंग होइ धावत । सूरदास विरहिन अति व्याकुलखगपति चढि किन आवत ॥७६॥राग धनाश्री॥ हमको तुमबिन सबै सतावत।लखो न मधुप चतुरमाधोसो तुमहू सखा कहावत॥ताको तनु हरि हरचो दांनसो कुलसर्वागतदीनी।सोइ मारत करि वारपार करि हमको कानन कीनी ॥ सिंधुते काढि शंभुकर सौंप्यो गुनहगारकी नांई । सोशशि प्रगट प्रधान कामको चहुँदिशि देत दोहाई ॥ अमरनाथ अपराध क्षमा करि तबहिं भोगमुकरायो।प्रात इंद्र कोपित जलधरलै ब्रजमंडलपर छायो ॥ पूंछपूंछ सरदार सखनके इहि बिधि दई बडाई। तिन अतिबोल झोल तनु डारचो अनल भँवरकी नांई॥ पंछ छोरि अलि सूझ पंछ धरि तिनहू कापि जनायो। पत्यो जो रेख ललाट और सुख मेटि दुकार बनायो । कौनकौनकोबिनयकीजिएकाहि जेतिक कहि आई । सूर श्याम अपनेया ब्रजको इहिविधिकानकटाई॥७७॥राग नट॥ ऊधोयहहित लागत काहे । निशिदिन नैन तपत दरशनको तुम जु कहत हृदमाहे ॥ पलकनपरतचहूँदिशिचित-वत बिरहानलके दाहे । इतना आरति काहे न मिलहीं जोपर श्यामइहांहैं॥पालागौंएसेहीरहनदे अवधिआश जल थाहैं । जिनि बोरहि निर्गुण समुद्रमें पुनि पाई बिन चाहैं ॥ उपजि परी जासों तिहि अँगअँग सो अँग बनै निबाहैं।सूर कहा लै करै पपीहा एते सरसरिताहैं॥७८॥राग मलार॥ह्यां तुम कहत कौनकी बातैं ।सुन ऊधो हम समुझत नाहीं फिरि बूझतिहैं तातैं ॥ कोनृपभयोकंसकिनमा-रचो को वसुदेवसुत आहि। ह्यांयशुदासुतपरममनोहरजीजतुहैंमुखचाहि॥ नितप्रतिजातधेनुवनचा-रन गोपसखनके संग । वासरगत रजनीमुख आवत करत ननगति पंग ॥ को अविनाशी अगम अगोचरको विधि वेद अपार। सूर वृथा बकवाद करत कत इहि ब्रज नंदकुमार ॥ ७९॥ ऊधो हरि काहेके अंतर्यामी ।अजहुँ न आइ मिलइहिऔसरअवधिबतावतलामी॥ कीन्ही प्रीति पुहुप शुंडाकी अपने काजके कामी ॥ तिनको कौन परेखो कीजे जे हैं गरुडके गामी॥ आइउघरिप्रीति कलईसी जैसी खाटी आमी। सूर इते पर खुनसनि मरियत ऊधो पीवत मामी ॥ ८० ॥ मधुकर वह जानी तुम साँची। पूरण ब्रह्म तुम्हारो ठाकुर आगे माया नाची ॥ यह इहि गाउँ न समुझत कोऊ कैसो निर्गुण होत। गोकुल बाट परे नँदनंदन उहै तुम्हारो पोत ॥ को यशुमति ऊखलसों बाँध्यो को दधि माखन चोरे।को ए दोऊ रूख हमारे यमलअर्जुन तोरे ॥ को लै बसन चढचो तरुशाखा मुरली मन आकरषै।को रसरास रच्यो वृंदावन हरषि सुमन सुर बरषै ॥ ज्यों डाक्यों तब कत बिन बूड काहेको जीभ पिरावत ।तब जु सूर प्रभु गये कूर लै अब क्यों

नैनसिरावत॥८१॥राग कान्हरो॥निर्गुणकौनदेशको वासी।मधुकरकहिसमुझाइसौंहदैबूझतिसांचकि हाँसी॥कोहै जनक कौनहैजननी कौन नारिकोदासी।कैसोवरन भेषहै कैसो केहि रसमेंअभिलासी॥पावैगो पुनि कियो आपनो जोर करैगो गासी।सुनत मौन ह्वै रह्योबावरोसूरसबैमतिनाशी ॥८२॥राग कल्याण॥ऊधो हमें हरि कत बिसराए।एक दिवस वृंदावनभीतर करकरि पत्र डसाए॥ सुमिरिसुमिरि गुण गाऊँ श्यामके नैन सजल ह्वै आए।पलकको बिछुरे किते दिन वीते प्रीतमभए पराए ॥ शीतल पंथ जोवति हम निशिदिन कित विरहिन बिरमाए। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिना मदनकी ताप सताए ॥८३॥ अथ गोपी कुबिजाप्रति तरक वदति॥राग धनाश्री ॥ ऊधो अब चित भए कठोर। पूरब प्रीति बिसारी गिरधर नौतम राचे ओर ॥ जन्मजन्मकी दासी तुम्हरी नागर नंदकिशोर। प्रीतिके बाण लगाए मधुकर निकरिगए दोउ ओर ॥ जब हरि मधुवनको जु सिधारे धीरज धरत न ढोर।सूरदास चातक भई गोपी कहां गए चितचोर ॥ ८४ ॥ राग मलार ॥ ऊधो हमहिं न जान्यो श्यामहिं। सेवा करत करी कछु औरैगई जाति कुल नामहिं॥ तन मन चोरि प्रीति जो जोरत कौन भलाई तामहिं। ते कहा जानैं पीर पराई लुब्धक अपने कामहिं॥ अंतहु सूर सोई पै प्रकटै होइ प्रकृति जो जामहिं।नागरि नारि रतिके रतिनागर राचे कुबिजावामहिं ॥८५॥ राग गौरी ॥ मधुकर उनकी बात हम जानी।कोऊ हुती कंसकी दासी कृपाकरी भईरानी॥ कुबिजा नाउँ मधुपुरी बैठी लै सुवास मन मानी।कुटिल कुचील जन्मकी टेढी सुंदरि करिघर आनी ॥ अब वह नवल बधू ह्वै बैठी ब्रजकी कहत कहानी।सूर श्याम अब कैसे पैये जासोंमिली सयानी॥८६॥राग मलार ॥बर उन कुबिजा भलो कियो।सुनिसुनि समाचारए मधुकर अधिकजुडात हियो॥ जाको हरि मन हर्‌यो रूप करि हर्‌यो सु पुनि न दियो। तिन अपनो मन हरतनजान्यो हँसिहँसि लोग जियो ॥ सूर तनक चंदन चढाय उर श्रीसर्वसजुपियो।औरसकलनागरिनारिन- को दासी दाँव लियो ॥८७॥ राग केदारो ॥ ऊधो अबकछुकहत न आवै।शिरपरसौतिहमारेकुबिजा चामके दाम चलावै॥ उन कछु मंत्र कर्‌यो चंदनमें ताते श्यामहिं भावै।आपनही रँग रचीसाँवरी शुक ज्यों बैठि पढावै ॥ दासी हुती असुर दैयतकी अब कुलबधू कहावै।त्यों नटनी कर लिए लकु- टिया कपि ज्यों नाच नचावै ॥ टूट्यो नातोयागोकुलकोलिखिलिखि योग पठावै ।सूरदासप्रभु हमहिं निदरि दाधेपर लोन लगावै ॥८८॥ राग कान्हरो॥ सुनिसुनि ऊधो आवतहाँसी।कहांवैब्रह्मा- दिकके ठाकुर कहां कंसकी दासी॥इंद्रादिककी कौन चलावै शंकर करत खवासी। निगम आदि बंदीजन जाके शेष शीशके वासी॥ जाके कमला रहत निरंतर कौन गनै कुबिजासी।सूरदासप्रभु दृढकरि बाँधे प्रेमपुंजिका पासी ॥८९॥ राग मलार ॥तबते बहुरि दरश नहिं दीन्हो।ऊधोहरिमथुरा कुबिजाघर इहै नेम व्रत लीन्हों॥ चारि मास वर्षाके लीन्हें मुनिहु रहत इकठौर।दासीधामपवित्र जानिकै नहिं देखत उठि ओर॥ ब्रजवासी सब ग्वाल कहतहैं कत ब्रज छाँडि गए । सूर सगुनई जात मधुपुरी निर्गुण नाम भए॥९०॥ राग जैतश्री॥कुबरीका न्याउरी जासों गोबिंद बोलै।जिनसों कृपा करी नँदनंदन काहेन ऐंडी डोलै ॥ कारोकारो कुटिल अति कान्हर अंतरग्रंथि न खोलै। हम बौरी बकवाद करतहैं वृथा अरति यह जोलै ॥ प्रीति पुरातन पोरी उनसों नेह कसौटी तोलै। सूर श्याम उपहास चल्यो ब्रज आप आपने टोलै॥ ९१ ॥कामगँवारीसोचपर्‌यो।रूपहीनकुल- हीन कूबरीतासों मन जो ढर्‌यो ॥ उनको सदा स्वभाव सलिलको खेरनी खंड झर्‌यो। सकुचो नहीं जानि ऊंचो तनु उमँगति मन पसर्‌यो॥फेरे फिरत असुर दासीके जनु जड मांड भर्‌यो।

सूरदास गोपालरसिकमणि अकरन करन करयो॥९२॥राग मलार॥काहेको गोपीनाथकहावत।जुपै मधुप हरि हितू हमारे काहेन गोकुल आवत ॥ सुपनेकी पहिंचानि जीयमहिं हमहिं कलंक लगावत। जो परि कृष्ण कूबरिहि रीझे सोइ किन नाम धरावत॥ ज्यों गजराज काजके औसर औरे दशन देखावत।ऐसे हम कहिबे सुनबेको सूर अनत बिरमावत ॥९३॥ कहियत कुबिजा कृष्ण नेवाजी। छुवत अटपटी चाल गई मिटि नवसत कंचुकि साजी॥मिली जाइ आगे दरवाजे चंदन देत ठगी करि बाजी। बाँधो सुरति सुहाग सबनको हरि मिलि प्रीति उपराजी ॥ सुफल भयो पछिलो तप कीन्हों देखि स्वरूप कामरति भाजी। जगतके प्रभु वश किए सूर सुनि सबहि सुहागिनिके शिर गाजी ॥९४॥राग सारंग॥ऊधो जाके माथे भाग।अबलन योग सिखावन आएचेरिहि चपरि सोहाग॥ आए बचन योगकी बेली काटि प्रेमकी बाग ।कुबिजहि करिआए पटरानी हमहिं देत बैराग॥ लौंडीकी डौंडी बाजी जग बढ्यो श्याम अनुराग । कुबिजा कमलनैन मिलि खेलत बारहमासी फाग ॥ मिल्यो सोहायो साथ श्यामको कहाँ हंस कहां काग ।सूरदास प्रभु ऊख छाँडिके चतुर चचोरत आग॥९५॥राग गौरी॥ऊधोजू जाइ कहौ दूरि करैं दासी।नागरनगजिय बिचारि करतहैं सब हाँसी॥हेम कांच हंस काग खरि कपूर जैसो।कुबिजा अरु कमलनैन संगबन्यो ऐसो॥जातिहीनकुलबिहीनकुबिजाकान्हदोऊ।जोऐसिनकेसंगलागैसूर तैसोसोऊ॥९६राग मलार॥ ऊधो कहाहमारी चूक।वे गुण अवगुण सुनिसुनि हरिके हृदयउठतिहै कूक॥वेहीकाज छांडिगएमधुबन हम घटि कहाकरी।तन मन धन आतमानिवेदन सोउ न चितहि धरी॥रीझेजाइसुंदरिकुबिजहि यहि दुख आवै हाँसी। यद्यपि कूर कुरूप कुंदरस तद्यपि हम ब्रजबासी॥एतेऊपर प्राणहरनैं घाट कहहुकहाकहिए। पूरब कर्मलिखे बिधिअक्षरसूरसबैसो सहिए॥९७॥ मला ॥ [illegible] इहै परेखो आवै। तबवहप्रीति चरणजावक शिरअब कुबिजा मनभावै॥नबक[illegible] पाणिधरयो गोवर्धन कतब्रजपतिहिछँडावै। अब वह रूप अनूप कृपाकरि नैनन क्यों न देखावै॥तब कत बन [illegible] धरि मोहन लैलै नाम बुलावै। अरु कत लाड लडाइ राग रस हँसिहँसि कंठ लगावै ॥ [illegible] संग समीप राति दिन तेहि क्यों योग सिखावै। जेहिमुखअमृत पिऊंरसनाभरि [illegible] पिआवै ॥ कर मींडति पछिताति मनहिंमन क्रमक्रम करि समुझावै । सोइसुनि [illegible] बिरहिनि यहि दुख दुख अति पावै॥९८॥राग सोरठ॥मेरेजियइहै परेखो आवै। सरबस [illegible] लीनो राज कूबरी पावै॥तापर एक सुनो री अजगुत लिखिलिखियोग पठावै। सूरकुटिल कुबिजाके हितको निर्गुणवेद सुनावै॥९९॥राग मलार॥ ऊधोआवैइहैपरेखो । जबबारेतबवैरी मिलनी बडे भए इहै देखो॥ योग यज्ञ तप नेम दान व्रत इहै करत तब जात ।क्योंहु बालसुत बढै कुशलसों कठिन मोहकी बात ॥ करि निज प्रगट कपट पिक कीरति अपने काज लगि धीर। काज सरे दुख गए कहौधौं का वायसकी पीर॥जहँजहँरहहु राज्यकरौतहँतहँ लेहुकोटिकोभार। इहैअशीशसूरप्रभुसोंकहिन्हातखिसैजिनि बार॥३१००॥राग मलार॥हरिब्रजकबहिंकह्योहोआवन। वेगिसुवचन सुनाइ मधुप जो मोहिं व्यथा बिसरावन॥ हौंयहबातकहाजानौंप्रभुजात मधुपुरीछावन। पछिली चूक समुझि उरअंतर अब लागी पछितावन ॥ सब निशि सूर सेज भई बैनि शशि सीखो तनुतावन। अब यह कर कच अंगनि ऊपर दशहू दिशि घनसावन॥१॥रागसारंग॥ तुम्हारी प्रीति किधौं तरवारि। दृष्टिधार धरि हती जु पहिले घायलसबब्रजनारि॥गिरीसुमार खेत वृंदावन रण मानी मन हारि।विह्वलविकल सँभारति छिनछिन वदनसुधानिधि वारि॥अब यह

कृपा योग लिखि पठए मनसिज करी गुहारि। कछुइक शेष बच्योहै सूर प्रभु सोउ जिनि डारहु मारि॥२॥ राग सारंग॥ कहौतोजोकहिबेकी होई। प्राणनाथ बिछुरेकीवेदन जानतनाहिंनकोई॥ जोहम अधर सुधारस लेल रही मदन गति भोई। कहा कहौं कछु कहत न आवै तन मन रही समोई॥ विरह व्यथा वेदन उरअंतर जामें बितै जानै सोई। सूरज शिव सनकादिक लोभे सो हम बैठी खोई॥३॥ नट॥ ऊधो तुम ब्रजमें पैठ करी। लै आएहौ नफा जानिकै सबै बस्तु अकरी॥ हमअहीर माखन मथि बेचैं सबन टेक पकरी। इह निर्गुण निर्मोलकी गठरी अब किन करत धरी॥ यहव्यापार वहां जो समातो हती बडी नगरी। सूरदास गाहक नहिं कोऊ दिखिअत गरे परी॥४॥ राग धनाश्री॥ ऊधो योग ठगौरी ब्रज न बिकैहै। मूरीके पातनके बदले को मुक्ताहल दैहै। यह व्यापार तुम्हारो ऊधो एमहि धरयो रहि जैहै। जिनपैते लै आए ऊधो तिनहिके पेट समैहै॥ दाख दाडिम कत कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै। गुणकरि मोहिं सूर सांवरेको निर्गुणही निबहैहै॥५॥ राग सारंग॥ मीठी बातनमें कहा लीजे। जोपै वै हरि होहिं हमारे करन कहैं सोइ कीजै॥ जिन मोहन अपने कर कानन कर्णफूल पहिराए। तिन मोहन माटीके मुद्रा मधुकरहाथ पठाए॥ एकदिवस बेनी वृंदावन रचि पचि बिबिध बनाई। ते अब कहत जटा माथेपर बदलो नाम कन्हाई॥ लाइ सुगंध बनाइ अभूषण अरु कीनी अर्धंग। सो वै अब कहिकहि पठवतहैं भस्म चढावन अंग॥ कहा करौं द्वारे नंदनंदन तुमजो मधुपमधुपाती। सूर न होइ श्यामके मुखको जाहु न जारहु नछाती॥६॥ राग सारंग॥ ऊधो भूलि भले भटके। कहत कही कछु बात लँडते तुम ताही अटके॥ देखौं सकल सयान तिहारो लीने छोरि फटके। तुमहिं दियो बहराइ इतेको वे कुबिजासों अटके॥ लीजो योग सँभारि आपनो जाहु तहींतटके। सूरश्यामतजिकोउन लैहै या योगहिकटुके॥७॥ राग नट॥ ऊधो तुम हौ निकटके वासी। यह निर्गुण लै ताहि सुनावहु जे मुडिया बसैं कासी॥ मुरली अधर सकल अंग सुंदर रूपसिंधुकी रासी। योग कटोरे लिए फिरतहौ ब्रजवासिनकी फाँसी॥ राजकुमार भले हम जानैं घरमें कंसकी दासी। सूरदास यदुकुलहि लजावत ब्रजमें होतहै हाँसी॥८॥ ॥ राग सारंग॥ ऊधो तुम जो निकटके वासी। यह परमारथ बूझि कहो किन नामबडोकीकासी॥ योग रु ज्ञान ध्यान अवराधन साधन मुक्ति उदासी। नाम प्रकार कहा रुचि मानहिं जो गोपाल उपासी॥ परमारथी जहां लौं जेते विरहिनिके दुखदाई। सूरदास प्रभु रँग प्रेमरँग जारो योग सगाई॥९॥ राग मलार॥ मधुप विराने लोगबटाऊ। दिनदशरहेआपनेकारण तजिगए मिले न काऊ॥ प्रीतम हरि हमको सुधि पठई आयो योग अगाऊ। हमको योग भोग कुबिजाको उहि कुल यहै सुभाऊ॥ जान्यो योग नंदनंदनको कीजै कौन उपाऊ। सूर श्यामको सर्वसुदीन्होंप्राणरहे की जाऊ॥१०॥ दिनदिन प्रीति देखिअत थोरी। सुनहु मधुप मधुवन बसि मधुरिपु कुल मर्यादा छोरी॥ गोकुलके मणि त्रिभुवननायक दासीसों रति जोरी। तापर लिखिलिखि योग पठावत बिसरी माखनचोरी॥ काको मान परेखो कीजे बँधी प्रेमकी डोरी। सूरदास विरहिनि विरहा जरि भई साँवरीगोरी॥११॥ राग आसावरी॥ जादिनतेगोपालचले। तादिनतेऊधोया ब्रजके सब सुभाइ बदले॥ घटे अहार बिहार हर्ष हितु सुख शोभा गुणगान। उतल तेज सब रहित सकल विधि आरति असम समान॥ बाढी निशा वलय आभूषण उर कंचुकी उसाँस। नैननजल अंजन अंचलप्रति आवत अवधिकी आस॥ अब यह दशा प्रगटकै तनुकी कहवीजाइ सुनाइ। सूरदास प्रभुसोंकीबोजिहिवेगि मिलहिं अब आइ॥१२॥ राग गौरी॥ हमारीऊधोपीरनहरिबिन जाइ।

जो सोऊं तौ मोहिं हरि मिलैं जागौं देइ अतिदाइ ॥ कमलनैन मधुपुरी सिधारे हमहुँ न संग
लगाइ। अब यह व्यथा कौन बिधि भरिहैं कोऊ देइ बताइ ॥ उदमद यौवन आनि ठाढिकेकैसे
रोको जाइ।सूरदास स्वामीकेमिलिबेतनुकीतपतबुझाइ॥ १३॥राग मलार॥गोपालहिंवारेहीकी टेव।
जानति नहीं कहांते सीखे चोरीके छल छेव ॥ तब कछुदूधदह्योलैखाते करिरहती हौं कानि ।
कैसे सही परत अब मोपै मनमाणिकही हानि॥ऊधोनँदनंदनसों कहियो राजनीति समुझाइ ।
गजहुभए तजत नहिं लोभहि गुप्त नहीं यदुराइ॥बुद्धिविवेक अरु वचनचातुरी पहिलेलई चुराइ ।
सूरदास प्रभुके गुण ऐसे कासोंकहिएजाइ॥ १४॥राग सारंग ॥बिसरतक्यों गिरिधरकीबातैं।अवधि
आश लगि रह्यो मधुप मन तजि न गयो घट तातैं ॥ हरिके विरह छीन भई ऊधो दोउ दुख परे
सँवाते। तन रिपु काम चित्त रिपु लीला ज्ञानगम्य नहिं याते॥श्रवणसुन्योचाहतगुणहरिकोजोवै
कथा पुराते। लोचन रूप ध्यान धर्‍यो निशिदिन कहो घटैको काते ॥ ज्यों नृप प्राण गए सुत
अपने बिरचि रह्यो जो जाते। सूर सुमतितौही पै उपजै हरिआवैं मथुराते॥ १५ ॥राग मलार॥ऊधो
कुलिश भई यह छाती। मेरे मन रसिक लग्यो नँदलालहि झपत रहत दिन राती ॥ तजि ब्रज
लोग पिता अरु जननी कंठ लाइ गए काती। ऐसे निठुर भए हरि हमको कबहुँ न पठई पाती ॥
पियपिय कहत रहै जिय मेरो होइ चातककी जाती। सूरदास प्रभु प्राणहिं राखहु होइकरि बूँद
सेवाती ॥ १६ राग गौरी ॥हम तौ कान्हकेलिकी भूँखी। कहा करौं लैनिर्गुणतुम्हरोविरहिनिविरह
विदूखी ॥ कहिए कहा इहै नहिं जानत कहो योगही योग। पालागौं तुमसे अपने पुर वसतवापुरे
लोग ॥ चंदन अभरन चीर चारु बरु नेकु आपु तनु कीजे ॥ दंड कमंडलुभस्मअधारीतौयुवतिन
कहुँ दीजे। इहै देखि दृष्टि धौं गोपिन क्यों धौं दृढ व्रत पायो । सूरदास यदुनाथ मधुपको प्रेमहि
पढन पठायो ॥१७॥राग गौरी॥तुमहिं मधुप गोपालदुहाई।कबहुँक श्याम करत इहांको मन कैधौं
चित्त सुध्यो बिसराई॥हम अहीरि मतिहीन बावरी हटकतहू हठि करहिं मिताई । वो नागर
मथुरा निर्मोही अँगअँग भरे कपट चतुराई ॥ साँची कहहु देखश्रवणनसुख छाँडहु छिया कुटिल
दुचिताई। सूरदास प्रभु बिरदलाज धरि मेटहु इहांके लोगहँसाई ॥ १८ ॥उद्धववचन॥रागविहागरो॥
गोपी सुनहु हरिसंदेश।कह्यो पूरण ब्रह्म ध्यावो त्रिगुण मिथ्या भेश॥ मैं कहौं सो सत्यमानहुत्रिगुण
डारौ नाखि।पंचत्रिय गुण सकल देहीजगत ऐसो भाखि॥ज्ञानबिनु नरमुक्ति नाहीं यहविषैसंसार।
रूप रेख न नाम कुल गुण बरण अवग्न सार॥मात पितु कोउ नाहिं नारी जगत मिथ्या लाइ।सूरसुख
दुख नाहिं जाके भजोताकोजाइ॥ १९राग सारंग॥ऐसी बातकहौ जिनि ऊधो।नँदनंदनकीकानकरत
नतु आवत आखर मुखते सूधो ॥ बातनहीं उडिजाहिं और ज्यों त्यों हम नाहिंन काची। मन
क्रम वचन विशुद्ध एकमत कमलनैन रँगराची ॥ सो कछु जतन करौ पालागौं मिटै हृदयको
शूल । मुरलीधरै आनि दिखरावो बाढै प्रीति दुकूल॥इनही बातन भए श्याम तनु अजहुँमिला-
वतहौ गढि छोलि।सूर वचन सुनि रह्योठग्योसो बहुरि नआयोबोलि॥२०॥राग सोरठ॥फिरिफिरि
कहा बनावत बातैं।प्रातकाल उठि देखत ऊधो घरघर माखन खातैं॥जिनकीबात कहतहौ हमसों
सो हैं हमसों दूरि।इहां न निकट यशोदानंदन प्राण सजीवनमूरि ॥ बालक संग लिएदधि चोरत
खात खवावत डोलत।सूर शीशनीच्योक्योंनावत अबकाहेनहिंबोलत॥२१॥राग सारंग॥फिरिफिरि
कहा सिखावत मौन। वचन दुसह लागत अलि तेरे ज्यों पजरेपर लौन ॥ सींगी मुद्रा भस्म
अधारी अरु आराधन पौन। हम अबला अहीर शठ मधुकर धरि जानहिं कहि कौन ॥यह मत

जाइ तिनहिं तुम सिखवहु जिनहिं यहै मत सोहत। सूर आजलौं सुनी न देखी पोत पूतरी पोहत ॥२२॥केदारो ॥रहिरहि देख्यो तेरो ज्ञान।सुफलकसुत सर्वसु रस लैगयोतूकरनआयोज्ञान॥वृथा कत अपलोक लावत कहत यह उपदेश ।उरपिकीतर होहु जानिन कहतबैनवलेस ॥ योगमत अति विशद कीरति होहि वांछित काम । सदा तनु प्रताप भरेहैं वै पुरुष तुमधाम॥ हमचरत कंज सुवास लैलै जिवति ऐसी रीति। कहत तिनसन धूम घोटहु नाहिं चाहत प्रीति॥ अजहुँ नाहिंन कहि सिरानो यह कथाको छेव।सूरधोखोतनकहैहमदेखिलीन्हीसेव ॥२३॥राग धनाश्री ॥ऊधोजी हमहिं न योग सिखैए । जेहि उपदेश मिलैं हरि हमको सोव्रतनेम बतैए॥ मुक्ति रहो घर बैठि आपने निर्गुण सुनि दुख पैए। जिहि शिर केश कुसुम भरि गूँदे तेहि कैसे भसम चढैए॥ जानि जानि सब मगन भएहैं आपुनआपु लखैए। सूरदास प्रभु सुनहु नवौनिधि बहुरि कि या ब्रज अइए २४ ॥राग मलार॥हम तो तबहींतेयोग लियो।जबहींतेमधुकरमधुवनकोमोहनगवन कियो॥ रहित सनेह सरोरुह सबतन श्रीखँड भस्म चढाए।पहिरि मेखला चीर चिरातन पुनिपुनि फेरि सिआए॥ श्रुति ताटंक नैन मुद्रावलि औधि अधार अधारी । दरशनभिक्षा माँगत डोलत लोचनपत्र पसारी ॥ बांधो वेणु कंठ शृंगी पिय सुमिरिसुमिरि गुणगावत।करवरबेंत दंडउरउर तन सुनत श्वान दुख धावत॥गोरख शब्द पुकारत आरत रस रसना अनुराग।भोग भुगति भूलेहु भावँनहिं भरी विरहवैराग ॥ भूली भई फिरति भ्रम श्रमके वनबीथिन दिन राति । वारक आवत कुटुंबयात्रा है सोऊ न सोहाति॥ परम गुरू रतिनाथ हाथशिरदियोप्रेम उपदेश । चतुर चेटकी मथुरानाथसों कहियो जाइ आदेश॥ भोगीकोदेखहु यात्रजमें योग देनजेहिआए। देखी सिद्धि तिहारे सिद्धकी जिन तुम इहां पठाए ॥ सूर सुमति प्रभु तुमहिं लखायो हमरे सोई ध्यान। अलि चलि औरै ठौर देखावहु अपनोफोकट ज्ञान॥२५॥राग मलार॥ऊधो करिरहीं हम योग।कहा एतो बाद ठानै देखि गोपीभोग ॥ शीश सेली केश मुद्रा कनक बीरी बीर। बिरह भस्म चढाइ बैठी सहज कंथा चीर ॥ हृदय सींगी टेर मुरली नैन खप्पर हाथ। चाहते हरिदरश भिक्षा दई दीनानाथ ॥ योगकी गति युक्ति हमपै सूर देखौ जोइ ।कहत हमको करन योग सोयोग कैसो होइ॥२६॥ऊधो योग तबहिंते जान्यो।जादिनते सुफलकसुतके सँग रथ ब्रजनाथपलान्यो॥तादिनते सब छोह मोह गयो सुत पितु हेतु भुलान्यो । तजि मायासंसार तर्क जिय ब्रजबनिता ब्रत ठान्यो॥ नैन मूँदि मुख मौन रही धरि तनु तपतेज सुखान्यो । नँदनंदन मुरलीमुखपरधरि उहै ध्यान उर आन्यो ॥ सोइ रूप योगी जेहि भूले जोतुम योगबखान्यो।ब्रह्मउपचिमुए ध्यानकरतही अंत उनहिं पहिचान्यो ॥ कहौ सुयोग कहालै कीजै निर्गुणही नहिं जान्यो । सूरउहै निज रूप श्यामको हैमनमाहँसमान्यो॥२७॥सारंग॥एअलिकहा योगमें नीको।तजि रसरीतिनंदनंदनको सिखवत निर्गुण फीको॥देखति सुनति नाहिंकछु श्र .णनिज्योतिज्योति करि धावति।सुंदरश्याम कृपालु दयानिधि कैसे हौंबिसरावति॥ सुनिरसालमुरलीकीसुरध्वनि सुरमुनिकौतुक भूले।अपनी भुजा ग्रीवपर मेली गोपिनके मन फूले ॥ लोककानि कुलके भ्रम छाँडप्रभुसँग घरबनखेली। अब तुम सूर सिखावनआएयोग जहरकी बेली॥२७॥गौरी॥ऊधोयोग कहतहौ कहायोगकिये। श्याम सुंदर कमलनयन वसो मेरे जिये ॥ योग युगति साधिकै जे तप योगिनि योग सिरायो।ताहूको फल सगुण मूरती प्रगटहि दरशन पायो ॥ मकराकृत कुंडल छबि राजित लोल कपोलै । मोर मुकुट पीत वसन बाँसुरी कर बोलै॥ऐसे प्रभु गुणनिधान दरश देखि जीजै ।राम श्याम निधि

पियूष नयनन भरि पीजै ॥ जाको अयन जलमें तेहि अनलकैसेभावै।सूरजप्रभुगुणनिधाननिर्गुण क्यों गावै॥ २९ ॥ राग मलार ॥मधुकर श्यामहमारेईश।तिनकोध्यानधरैं निशिवासरऔरहिनवैन शीश ॥ योगिन जाइ योग उपदेशहु जिनके मन दश बीस । एकै चितएकैवहमूरतिपलनलगै दिन तीस ॥ काहेको निर्गुण ज्ञान गनत हौ जिततित डारत खीस । सूर हृदयमें बसत निरंतर त्रिभुवनपति जगदीस ॥ ३० ॥ राग सोरठ ॥योगकीगतिसुनतमेरेअंगआगिबई।सुलगिसुलगिहम जरति हीं तुम आनि फूँकिदई॥भोग कुबिजा कूबरीसँग कौन बुद्धि भई । सिंह भष तजि चरत तिनकासुनीबातु नई॥ध्यान धरत न टरत मूरति त्रिविधि ताप तई।सूर हरिकी कृपाजापर सकल सिद्धिमई ॥ ३१ राग मलार ॥॥मधुकररह्योयोगलौं नातो।कतहिबकतबेकामकाजबिनहोहिनह्यांते हातौ ॥ जब मिलिमिलि मधुपान कियोहो तब तू कहिधौं कहातो । अबआयोनिर्गुणउपदेशन सो नहिं हमहिं सुहातो॥काचेगुण ज्यों तनु लैवेधौलैवारिजकोतातो।मेरेजानिगह्योचाहतहौ फेरिकि मैगल मातो ॥ यह लैदेहुसूरकेप्रभुको आयो योग जहातो । जबचहिहै तबमाँगिपठैहैं जो कोउ आवत जातो ॥ ३२ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो योग किधौंयहहाँसी।कीनीप्रीतिहमारेव्रजसोंदई प्रेमकी फाँसी ॥ तुम हौ बडे योगके पालक संग लिए कुबिजासी । सूरदास सोई पै जानैजा उर लागैगाँसी ॥३३॥ राग मारू॥योगविधिमधुबनसिखिअहिजाइ।मनवचकर्मशपथसुनिऊधोसंगहि चलौ लिवाइ ॥ सब आसन रेचक अरु पूरक कुंभक सीखे पाइ । बिन गुरुनिकट संदेशन कैसे यह औगाह्यो जाइ ॥ तुम जो कहत देखिहैं कुबिजहि तेई करब उपाइ। श्रद्धासहित ध्यानएकहि सँग कहत जाउ यदुराइ ॥ सूर सु प्रभुकी जापर रुचि है सो हम करिहैं आइ ।आज्ञाभंगकरैंहम क्यों करि जों पतिव्रत न नशाइ॥३४ ॥धनाश्री ॥योगसँदेशोव्रजमेंलावत।थाकेचरणतुम्हारेऊधो बारबारके धावत ॥ सुनिहैं कथा कौन निर्गुणकी रचिपचि बात बनावत। सगुन सुमेर प्रगट देखियत तुम तृणकी ओट दुरावत ॥ हम जानत परपंच श्यामके बातनहीं बौरावत। देखी सुनी न अबलगि कबहूं जल मथि माखन आवत॥ योगी योग अपार सिंधुमें ढूँढेहूँ नहिं पावत।इहां हरि प्रगट प्रेम यशुमतिके ऊखल आप बँधावत ॥ चुप करिरहो ज्ञान ढकि राखौ कत हौ विरह बढ़ावत । नंदकुमार कमलदललोचन कहि को जाहि न भावत॥काहेको विपरीत बातकहि सबके प्राण गँवावत । सोहं सकित सूर अबलनि जिहि निगम नेति यश गावत ॥३५॥ अथ मन अवस्थावर्णन राग मलार॥ मधुकर कहि कैसे मन मानै । जिनके एक अनन्य व्रत सूझै क्यों दूजो उर आनै ॥ यहुतौ योग स्वाद अलि ऐसो पाय सुधा खरिसानै । कैसे धौं यह बात पतिव्रतसुनि शठ पुरुष बिरानै॥ जैसे मृगिअनताकि बधिक दृग कर कोदंडगहि तानै॥हिंसाकरि पोषत तन मन सुख शिर अपराधनआनै॥बडे बिचित्र कुबिजाके रँगरंगे हमनिर्गुण लिखिठानै॥सूर श्याम निर्गुण रतिमानीमधुप प्राण जिनि छानै ॥३६॥ राग मलार॥कहांलौं राखैं हिय मनधीर।सुनहुमधुप अपनेइननैनन अनदेखे बलबीर॥घरआँगननसुहात रैनिदिन बिसरे भोजन नीर।दाहतदेहचंदचंदन है अरु वह मलयसमीर॥पुनिपुनि उहै सुरति आवतिचित चितयत यमुनातीर।सूरदास कैसे बिसरतहै सुंदर श्यामशरीर॥३७॥राग केदार॥बिनहरि क्यों राखैंमनधीर।एकबेर हरि दरश देखावहु सुंदर श्याम शरीर ॥ तुम जो दयालु दयानिधि कहियत जानतहौ परपीर । बिछुरे प्राणनाथ व्रज अबहींकत हम कतयदुवीर॥मत अपयशआनहुशिरअपने कठिन मदनकीपीर।सूरदास प्रभु मिलन कहतहैं रवितनयाके तीर॥३८॥राग नट॥मेरोमन अनत कहां सचुपावे।जैसे उडिजहा-

जको पंछी उडि जहाज पर आवै ॥ जिहिमधुकरअमृतरसचाख्योक्योंकरीलफलभावै।सूरदासप्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै ॥ ३९ ॥राग सारंग॥मनतोमथुराहीजोरह्यो।तबकोगयोबहुरिनहिं आयो गहे गुपाल गह्यो॥राख्यो रूप चुराइ निरंतर सो हरि शोधु लह्यो।आए औरमिलावनऊधो मनदै लेहु मरयो ॥ निर्गुण साटि गुपालहि माँगत क्यों दुख जात सह्यो। यह तनु यहि आधार आजुलगि ऐसेही निबह्यो ॥ सोई लेत छुडाइ सूर अब चाहत हृदयदह्यो॥४०॥राग सारंग॥ कहा भयो हरि मथुरा गये । अब अलि हरि कैसे सुख पावत तनु दोउ भाँति भए॥ इहां अटक अति प्रेम पुरातन वहां अति नेह नए । उहां सुनियत नृपभेष इहां दिन देखिअत वेणु लए॥कहा हाथ परयो शठ अक्रूरके यह ठगठाट ठए॥अब क्यों कान्ह रहत गोकुल बिन योगनके सिखए॥गजा राज्य करौ गृह अपने साथे छत्र दए।चिरंजीव रहौ सूर नंदसुत जीजत मुख चितए॥४१॥अपनीसी कठिन करत मन निशिदिन । कहिकहि कथा मधुप समुझावत तदपि न रहत नंदनंदनबिन ॥ श्रवणसँदेश नयन बरषत जल मुख बतियाँ कछु और चलावत । अनेकभाँति चित धरति निठुरता सब तजि सुरति उहैजिय आवत ॥ कोटिस्वर्ग सम सुखउ न मानत हरि समीप समता नहिं पावत । थकित सिंधु नौकाके खग ज्यों फिरि फिरि फेरि वहै गुण गावत ॥ जेजे बात विचारत अंतर तेइ तेइ अधिक अनल उर दाहत । सूरदास परिहरि न सकत तन बारक बहुरि मिलो है चाहत ॥४२॥ मधुकर ह्यांनाहिंन मन मेरो । गयोजुसंगनंदनंदनकेबहुरिनकीन्होंफेरो॥उननैनन मुसकानि मोललै कियो परायो चेरो । जाके हाथ परयो ताहीको बिसरयोवासबसेरो। कोसीखै ता बिनु सुन सूरज योगजकाहू केरो । मंदो परयो सिखाउ अनतलै यहिं निर्गुण मत तेरो ॥ ४३ ॥ मुक्तिआनि मंदमों मेली । समुझि सगुन लै चले न ऊधो यह तुमपै सब पुजी अकेली ॥ कै लैजाहु अनतही बेचौ कै लैराख जहाँ विषवेली। याहि लागि को मरै हमारे बृंदाबन चरणनसोंढेली॥धरे शीश घरघर डोलतहौ एकै मति सब भई सहेली । सूरदास गिरिधरन छबीलोजिनकीभुजाकंठ गहि खेली॥४४॥ऊधो मनतौएकै आहि। लै हरि संग सिधारे ऊधो योग सिखावत काहि ॥ सुनि शठनीति प्रसून रस लंपट अबलनिको धांचाहि।अब काहेको लोनलगावत विरहअनलकेदाहि ॥ परमारथ उपचार कहतहो विरहव्यथाहै जाहि।जाको राजरोग कफ बाढत दह्यो खवावतताहि॥ अबलगि अवधि अलंबनकरिकरि राख्योमनहिं सवाहि।सूरदास या निर्गुणसिंधुहि कौनसकेअवगाहि॥४५॥ऊधोमननभएदशबीस।एकहुतोसो गयो श्यामसँगको अवराधे ईश॥इंद्री सिथिलभई केशौ बिन ज्यौं देही बिनशीश॥आशा लगी रहत तनु श्वासा जीजो कोटि बरीस॥तुमतौसखा श्यामसुंदरके सकल योगके ईश। सूरदास वा रसकी महिमा जो पूँछै जगदीश॥४७॥ऊधो जो मनहोत बियो । तौ तुम्हरे निर्गुणको दीजे सो बिधनानदियो॥एक जु हुतो मदनमोहनकोसो छबिछीनि लियो ॥ अब वा रूपराशि बिनु मधुकर कैसे परतु जियो।जो तुम कह्यो सोइ शिरऊपरसूरश्याम पठयो । नाहिंन मीन जिवत जल बाहर जो घृतमें सजियो ॥४७॥ ऊधो यह मन औरनहोई। पहिलेही चढि रह्यो श्यामरँग छूटत नहिं देख्यो धोई॥कै तुम वचन कहेअलि हमसोंसोईकह जो मूल । करत केलि बृंदाबन कुंजन वा यमुनाके कूल॥योग हमहिं ऐसो लागत ज्यों तोचंपेको फूल । अब क्यों मिटत हाथकी रेखें कहो कौन विधि कीजै।सूर श्याम मुख आनि देखावहुजाहि देखे दिन जीजै ॥४८॥मधुकर मो मन अधिक कठोर।बिगसिनगए कुंभ काचे जों बिछुरतनंदकिशोर ॥ प्रेम बनिज कीन्हो हुतो नेह नफा जियजानि।ऊधो अब उलटी भईप्राण पूँजिमेंहानि॥

जो हम प्रीति रीति नहिं जानति तौ ब्रजराज तजी। हमरे प्रेम नेमकी ऊधो मिलिरसरीति लजी॥ हमते भली जलचरी बपुरी अपनोनेम निबाह्यो॥ जलते बिछुरि तुरत तनु त्याग्यो तउ कुलजलको चाह्यो॥ अचरज एक भयो सुन ऊधो जलबिन मीन रह्यो। सूरदास प्रभु अवधिआश लगि मन विश्वास गह्यो॥ ४९॥ राग मलार॥ मधुकर ए मन बिगरि परे। समुझत नहीं ज्ञानगीताको हरि मुसुकानि अरे॥ हरिपद कमल बिसारत नाहिंन शीतल उर सचरे। योग गँभीर अंधकूपनसों ताहि जु देखि डरे॥ बालमुकुंद रूपरसराते ताते वक्र परे। सूधे होहिं न श्वानपूँछ ज्यों कोटिक वैद मरे॥ हरि अनुराग सुहाग भरि अमीके गागर रे। सूरदास प्रभु ऐसी रहनदे कान्ह वियोग भरे॥ ५०॥ इहि उर माखनचोर गडे। अब कैसे निकसत सुनु ऊधो तिरछे है जो अडे॥ यदपि अहीर यशोदानंदन कैसे जात छडे। वहां यादवपति प्रभु कहियत हैं हमैं न लगत बडे॥ को वसुदेव देवकीनंदन को जानै को बूझै। सूर नंदनंदनको देखति और न कोई सूझै॥ ५१॥ राग केदारो॥ मनमें रह्यो नाहिंन ठौर। श्रीनंदनंदन अछत कैसे आनिये उर और॥ चलत चितवत द्योस जागत सपने सोवत राति। हृदयते वह मदन मूरति छिन न इत उत जाति॥ कहत कथा अनेक ऊधो लोग लोभ दिखाइ। कहाकरौं मन प्रेमपूरण घट न सिंधु समाइ॥ श्यामगातसरोज आनन ललित गति मृदु हास। सूर इनके दरशको बलि मरत लोचन प्यास॥ ५२॥ राग सारंग॥ मधुकर श्याम हमारे चोर। मन हरिलियो तनक चितवनिमें चपल नैनकी कोर॥ पकरे हुते और उर अंतर प्रेम प्रीतिके जोर। गए छँडाइ तोरि सब बंधन दैगये हँसनि अकोर॥ औझकि परी रैनि सो बीती दूत मिल्यो मोहिं भोर। सूरदास प्रभु सर्वसु लूट्यो नागर नवलकिशोर॥ ५३॥ अली अब ब्रजनाथ कछू करौ। जा कारण ये देहधरी हैं तिहिके लेखे परौ॥ प्रथमहिं अर्पिदियो हम सर्वसु ए बिरहिनि यों जरौ॥ कोटि मुक्त वारौं मुसकनि पर योग बापुरो सरो॥ सूर सगुन बाँटि दियो गोकुलमें अब निर्गुण को बिसरोताकी छटा छार कँटहरिया जो ब्रज जानों दुसरो॥ ॥ ५४॥ ऊधो भली करी गोपाल। आपुनपै हरि आवत नाहीं विरमि रहे यहि काल॥ चंदन चंदहुते तव शीतल कोकिल शब्द रसाल। अब समीर पावक सम लागत सब ब्रज उलटी चाल॥ हार चीर कंकन कंटक भए तरनि तिलक भए भाल। सेज सिंधु गृह तिमिर कंदरा सर्प सुमन भए माल॥ हमतो न्याय इतौ दुख पावैं ब्रज वसि गोपी ग्वाल। सूरदास स्वामी सुखसागर भोगी भँवर मृणाल॥ ५५॥ मलार॥ हमको इती कहा गोपाल। नंदकुमार कमलदललोचन सुंदरबाहु विशाल॥ इक ऐसीही विरह रही लटि बिन घनश्याम तमाल। तापर अलि पठएहैं सिखवन अबलन उलटी चाल॥ लोचन मूँदि ध्यान चित चितवनि धरि आसन मृगछाल। क्यों सहिजाइ जरे पर चूनो दूनो दुख तिहि काल॥ डारि न दिए कमल करते गिरि दबि रहतीं ब्रजबाल। सूर श्याम अब यह न बूझिए बिछुरि करी बेहाल॥ ५६॥ जब वह सुरति होतिहै बात। सुनो मधुप या बेदनकी रति मन जानैं कै गात॥ रहत नहीं अंतर अति राखे कहत नहीं कहिजात। भई रीति हठि उरग छछूँदरि छाँडे बनै न खात॥ एकहि भाँति सदा या ब्रजमें बीततहै दिन रात। सूरदास प्रभुके मिलि बिछुरन समुझिसमुझि पछितात॥ ५७॥ सारंग॥ यहबात हमारीकौन सुनै। जिन चाह्यो हरिरूप सुरति करि भूलि अँगारनि को चुनै॥ इहां सेवनको ठौर न देखति ताते सुनि मनमें गुनै। कैमुख बिरह बयारि पैनकी बैठे ठानै को धुनै॥ तब उन भाँतिन लाड लडाए अब बूझिए न यह उनै। बालि छाँडिकै सूर हमारे अब नरवाई को लुनै॥ ५८॥ ऊधो कहिए काहि सुनाइ।

हरि बिछुरे हम जिती सहतहैं तिते बिरहके घाइ ॥ वरु माधो मधुबनहीं रहते कत यशुमतिके आए । कत प्रभु गोपवेष ब्रज धारचो कत ए सुख उपजाए ॥ कत गिरि धरचो इंद्रप्रण मेटचो कत वन रास बनाए । अब कह निठुर भए अबलनिपर लिखिलिखि योगःपठाए ॥ तुमपरबीन सबै जानतहौ ताते यह कहि आई ।आपन कौन चलावै सूर जिनमात पिता बिसराई॥५९राग नट॥ ऊधो बात कही नहिं जाइ ।मदनगोपाललालके बिछुरे प्राण रहे मुरझाइ ॥ जब स्यंदन चढि गमन कियो हरि फिरि चितए गोपाल । तबहीं परम कृतज्ञ सबै सुठि संग लगीं ब्रजबाल ॥ अब यह और सृष्टि बिरहनकी बकत बाइ बौरानी । तिनसों कहा होत फिरि उत्तर तुम हौ पूरण ज्ञानी ॥ अब सो साधन घट का कीजै को उपजै परतीति ॥ सूरदास कछु वरणि न आवै कठिन बिरहकी रीति ॥ ६० ॥राग सारंग॥मधुकर जो तू हितू हमारो । पिवहि न रे यह वदन सुधारस छाँडि योग जल खारो॥सुन शठ नीति सुरभि पयदायक क्यों व लेति हल भारो ।जे भयभीत होहिं शृंग देखे क्यों व छुवहिं अहि कारो॥ निजकृत समुझि वेणु दशनन हति धाम सजत नहिं हारो । तावल अछत निशा पंकज भ्रम दल कपाट नहिं टारो॥रे अलि चपल मूढ रसलंपट कतहिबकतबेकाज॥सूरश्यामछबिक्योंबिछुरतिहै नखशिख अंग विराज ॥६१॥राग बिलावल॥ तुम्हारी प्रीति ऊधो पूरब जनमकी अब जु भए मेरे तनहुके गरजी । बहुत दिननते विरमिरहे हौ सँगते बिछोहि हमहिं गए बरजी॥ जादिनते तुम प्रीति करीही घटति न बढ़ति तूलिलेहु नरजी। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनबिनातनु भयोब्योंतविरह भयो दरजी॥६२॥राग सारंग॥हमहिंबोलबोलेकी परतीति ।सुनु ऊधो हम नाहिन जानत तुम्हरे गाँवकी रीति ॥ हमरे प्रीतम तुम जो लै गये आवन कह्यो रिपु जीति । तुम्हरी बोलनि कौन पतीजै ज्यों भुसपरकी भीति ॥ आवन अवधि बदी हरि हमसों सोऊ दिन गए बीति ।सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि सुमिरि पुरातन प्रीति॥६३॥ राग सारंग॥ऊधो जो तुमहमहिं सुनायो।सोहम निपटकठिनई हठ करि या मनको समुझायो॥ युक्ति जतन जिति योग अंगहुगहि अपथ पंथ लैआयो।भटकिभ्रम्यो वोहितके खगज्यों पुनिपुनिहारिजीपै आयो॥हमको सबै अहित लागतहैं तुमःअतिहितहि जनायो। सर सरिता जल होम किएते कहा अग्नि सचुपायो॥अब सोई उपाउ उपदेशो जिहि जिय जाइ जिवायो। वारक मिलैं सूरके स्वामी कीजहु अपनो भायो ॥६४॥राग मलार॥ऊधो हरि कहिये प्रतिपालक । जे रिपु तुम पहिले हति छाँडबहुरि भए मम शालक ॥ अघ बक बकी तृणावर्त केशी ए सब मिलिब्रज घेरत । सूनो जानि नंदनंदन बिनु वैर आपनो फेरत ॥ अरु अपने परिहस मेटनको इन्द्र रह्यो करि घात। सत्वर सूर सहाय करै को रही छिनककी बात॥६५॥राग कल्याण॥ ऊधो तुम जानत गुप्तहि यारी । सबकाहूके मनकी बूझो बांधो मूढ फिरो ढिगवारी ॥ पीत ध्वजा उनकी मनरंजन लाल ध्वजा कुबिजा विचारी । यशकी ध्वजा श्वेत ब्रजबाँधे अपयशकी ऊधोपै कारी॥वै तोप्रेम पुंज मनरंजन हमतो शीश योग व्रतधारी ।सूर शपथमिथ्या लँगराई ए बातैंऊधोकी प्यारी॥६६॥ ॥राग मलार॥श्याम अब न हमारे । मथुरा गए पलटिसे लीन्हें माधोमधुपतुम्हारे॥अबमोहिंआवत पतु पछतावो कैसे वे गुण जात बिसारे। कपटी कुटिल काग अरु कोकिल अंत भए उडि न्यारे॥ करिकरि मोह मगन ब्रजवासी प्रेम प्रतीति प्राण धन वारे। सूर श्यामको कौन पत्यैहै कुटिल गात तनु कारे ॥ ६७ ॥ अथ श्यामरंग तर्क वदाति राग धनाश्री ॥ मधुकर कहा कारेकी जाति । ज्यों जल मीन कमल मधुपनको छिन नहिं प्रीति खटाति ॥ कोकिल

कपट कुटिल वायस छलि फिरि नहिं वह बन जाति। तैसेही रसकेलि रस अचयो बैठि एकही पाँति॥सुतहित योग यज्ञ व्रत कीजतु बहुबिधि नीकी भाँति। देखहु अहि मन मोह मया तजि ज्यों जननी जनि खाति॥ तिनको क्यों मन विषयमें कीजै अवगुण लौं सुखसांति। तैसेसूरसुने यदुनंदन बजी एकरस तांति ॥ ६८ ॥ राग धनाश्री ॥ श्याम सखी कारेहुमें कारे। तिनसों प्रीति कहाकहि कीजै मारग छांडि सिधारे ॥ लोक चतुर्दश विभव कहतहै पटुहि पत्र जल न्यारे।सर-वर त्यागि विहंग उडे ज्यों फिरि पाछे न निहारे॥ तब चितचोर भोर व्रजवासिन प्रेमनेमव्रतटारे। लै सरबस नहिं मिले सूर प्रभु कहिअत कुलट बिचारे ॥ ६९ ॥ राग नट ॥ ऐसे नंदराइके बारे। इतननि जिनि पतियाहु सखी री जितनेहैं तनुकारे ॥खेलतरंगसंग वृंदावन निमिषनहोतनिनारे। पहिले सुख दारुणभए हमको देइ जु गए दुखभारे ॥ उरऊपर भीजत सारंगरिपुनैननीरबहुढारे। सूरदास प्रभु बेगि मिलहु किमि टरत नहींगुण टारे॥ राग सारंग ॥ मधुकर यहकारेकीरीति।मन दै हरत परायो सरबस करै कपटकी प्रीति ॥ ज्यों षटपदअबुजकेदलमेंबसतनिशारतिमानि। दिनकर उए अनत उडिबैठे फिरि न करत पहिचानि ॥ भवन भुजंग पिटारेपाल्योज्योंजननीजियतात। कुलकरतूति जाति नहिं कबहूँ सहज सुडसि भजिजात॥ कोकिल काग कुरंग श्याम घन हमहि न देखे भावैं। सूरदास अनुहारि श्यामकी छिनुछिनु सुरति करावैं ॥ ७१॥राग मलार॥मधुकरदेखि श्यामतनु तेरो। या मुखकी सुनि मीठी बातैं डरपतुहै मन मेरो ॥ कत ए चरण छुअत रसलंपट बरजतही बेकाज। परसत गात स्रवत कुच कुंकुम यहउ करी कछुलाज॥ बुधि विवेक बल वचन-चातुरी सरबस चितै चुरायो। ऐसो धौं उन कहा बिचारो जालगि तू व्रज आयो॥अबकहिकहि आशा गावतहौ हमआगे ए गीत। सूर इतेपरि द्वार कहाहैजो परित्रिगुणअतीत ॥७२॥राग मलार॥ मधुप तुम दिखियतहौ अतिकारे। कालिंदीतट पार बसतहौ सुनियत श्याम सखारे॥ मधुकर चिकुर भुअंग कोकिला,अवधि नहीं दिन टारे। वै अपने मुखहीके राते जियत उहै उनिहारे॥ कपटी कुटिल निठुर निर्मोही दुखदै दूरि सिधारे। बारक बहुरि कबहुँ आवहुगे नैननि साध नि-वारे ॥ उनकी सुनै सु आपु बिगोवै चितचोरत बटपारे। सूरदास प्रभु क्यों मन मानै सेवक करत ननारे ॥ ७३ ॥ सारंग॥भूलतहौकतमीठीबातनि।एतौअलिउनहीकेसंगी चंचलचित्तसाँवरेगातनि॥ वैमुरलीध्वनि जगमन मोहत इनकी गुंज सुमन मधुपातनि। ए षटपद वै द्विपद चतुर्भुज काहूभाँ-ति भेद नहिं भ्रातनि ॥ वै नव निशि मानिनिगृह बासी एहु बसत निशि नव जलजातनि। व उठि प्रात अनत मन रंजत एउडि करत अनत रसरातनि॥ स्वारथनिपुण सद्य रस भोगी जिनि पतिआहु बिरह दुख दातनि। वे माधव ए मधुप सूर कहि दुहुँमें नहिंन कोउ घटि घातनि ॥ ७४ ॥ राग मलार ॥ बिलग मति मानो ऊधो प्यारे। वह मथुरा काजरकी उबरी जे आवैं ते कारे॥तुम कारे सुफलकसुत कारे कारे मधुप भवांरे। तिनहूँमांझ अधिक छबि उपजत कमलनैन मणिपारे॥ मानो नीलमांटमें बोरे लै यमुना जु पखारे। तागुण श्याम भई का-लिंदी सूर श्यामगुण न्यारे ॥७५॥ ऊधो तुम सब साथी भोरे। मेरे कहे बिलगु मानहुगे कोटि कुटिल लै जोरे ॥वै अक्रूर क्रूरकृत जिनके रीते भरे भरे गहि ढोरे। आपुन श्याम श्याम अंतर मन श्यामकाममें बोरे।तुममधुकर निर्गुण निज नीके देखे फटकि पछोरे। सूरदास कारणके संगी कहां पाइयत गोरे ॥ ७६॥ राग भोपाली ॥ ऊधो हम दूबरी वियोग।प्रीतम हुते सोउ गएमधुवन रहे बटाऊ लोग ॥ जो तुम बूझो व्यथा हमारी कहे बनैं तुम आगे। देह बिहार शृंगार नभावैमनतरसे

हरिकाजै ॥ कारीघटा देखि अँधियारी सारंगशब्द नभावै।दिवसरैनिमोहिंबिरहसतावैकबगोपाल घरआवै ॥ सूरदास स्वामी मनमोहन अब करिगए अनाथ। मन क्रम बचन वहांई बसतहैं जहां बसंत यदुनाथ॥ ७७॥ राग सोरठ ॥ऊधो यहहरिकहाकरयो। राजकाजचितदियोसाँवरेगोकुलक्यों बिसरयो ॥ कत गिरि धरयो इंद्रमद मेटयो कत वै सुख उपजाए। अब कह निठुर भए अबलनिपर लिखि लिखि योग पठाये॥ परमप्रबीन सकल बिधि सुंदर ताते यह कहिआवत ।हमरी कहा चलै सुन सूरज मात पिता बिसरावत ॥ ७८ ॥ राग नट॥यदपि मैं बहुतै यतन करे । तदपि मधुप हरि प्रिया जानिकै काहु न प्राण हरे ॥ सौरभ युत सुमनन लै निजकर संतत सेज धरे। सन्मुख सहति दरश शशि सजनी तिहिहुँ न अंग जरे॥ मधुकर मोर कोकिला चातक सुनिसुनि श्रवण भरे । सादर ह्वै निरखति रतिपति दृग नेक न पलक परे॥ निशिदिन रटत नंदनंदनको उरते छिन न टरे। अतिआतुर गुणसहित चमू सजि अंगन शर सचरे ॥ जानत नहीं कौन गुण यहितन जाते सबबिडरे। सूरदाससकुचनश्रीपतिकी सुभटन बलबिसरे७९॥ राग केदारो ॥जिहिदिनतजीब्रजकीभीर। कहौंएअलिलेखितुमसोंसखासुंदर धीर॥ काम नृप शशि नेव अबलनि दूत दुर्ग समीर। सजै सेना बिपुल बादर बदत बंदीकीर॥ लता लघु जनु कुसुम सर कर कली कोटि तुणीर। बरुनबान बसंत कर लै बधतहै आभीर॥ मध्य द्रुम है फूल मानो कवच कंचन चीर।करि कुंभ कुंजर बिटप भारी चमर चारु मयीर॥चमू चंचल चंचल नाहिंन रहीहै पुरतीर समर मारुहु कीटकी रट सहत त्रिया अधीर। जन्म जातक व्याध व्यापक कहौं कासों पीर सूर रसिकशिरोमणिहिबिन जरत यमुनानीर॥ ८०॥ रागकान्हरो ॥ हरि बिछुरनकी शूल न जाई। बलिबलि जाउं मुखाविंदकीवहमूरतिचितरहीसमाई॥ एक समय वृन्दाबनमहियां गहि अंचल मेरी लाज छिडाई। कबहुँकरहसि देत आलिंगन कबहुँक दौरि बहोरत गाई ॥ वै दिन ऊधो बिसरत नाहीं अंबर हरे यमुनतट जाई।सूरदास स्वामी गुण-सागर सुमिरिसुमिरि राधे पछिताई॥ ८१ ॥ राग नट ॥ मोहन माँग्यो अपनोरूप। यह ब्रज बसत अचै तुम बैठी ताबिन उहां निरूप॥ मेरो मन मेरो अलि लोचन लै जु गये धुपिधूप । हमसों बदलो लेन उठिधाए मनो धारि कर सूप ॥ अपनो काज सँवारि सूर सुनि हमहिं बतावत कूप। लेवादेइ धराधरमें है कौन रंक को भूप॥ राग सारंग॥ पठवत योग कछू जिय लाजन। तब ज्यों जतन तंत्र मृग मोहत अब कपटरूपकी बाजन॥ जिय गहिलई क्रूरके सिखए मोह होत कहुँ राजन। सब सुधि परी बचन कन ढोए ढके रहो मुखभाजन॥ यह नृपनीति रह्यो कौनेहु युग नेह होत जस आनन। ताहू तजी सुरति नहिं आवति दुखपाए जन माजन॥ करि दासी दुलहिनि भयो दूलह फिरत ब्याहके साजन।सूर बडे भुव भूप कंस हतेवाकुबिजाकेकाजन॥८३॥ राग मलार ॥ संदेशनि बिरहव्यथा क्यों जाति। जबते दृष्टिपरी वहमूरति कमलवदनकी कांति॥ अवतो जिय ऐसी बनि आई कहो कोउ केहु भाँति। जोइ वह कहै सोई सो सुनो सखी युगवर रैनि बिहाति॥ जौलौं न भेटौं भुजभरि हरिको उर कंचुकि न सोहाति। सूरदास प्रभु कमलनयन बिनु तलफति अरु अकुलाति॥८४ ॥ राग मलार ॥ संदेशनि क्योंनिघटतिदिनराति।कबहुँकश्याम कमलदललोचन कब मिलिहैं उहि भाँति॥ खंजरीट मृग मीन सबै मिलि उपमाको अकुलाति। बारबार मैं बरजति ग्वालनि अपने मारग जाति॥ सहस भाँति अर्पित कीरन सब एकौ चित न मूसमात।सूरदास प्रभु संततहितते कहे सुनत नहिं बात॥ ८५॥गोपालहि लै आवहु मनाइ।अबकी

बेर कैसेहू ऊधो करि छल बल गहि पाइ ॥ दीजो उनहिं सु सारि उरहनो संधिसंधि समुझाइ। जिनहिं छाँडि बटिआमहँ आए ते बिकल भए यदुराइ॥तुमसों कहा कहौंहो मधुकर बातें बहुत बनाइ। बहियां पकरि सूरके प्रभुकी नंदकी सौंह दिवाइ॥८६॥केदारो॥ ऊधो श्याम इहां लै आवहु। ब्रजजन चातक मरत पियासे स्वातिबूँद बरषावहु॥इहाँते जाहु बिलंब करहु जिनि हमरी दशा जनावहु। घोष सरोज भए हैं संपुट होइ दिनमणि बिगसावहु॥जो ऊधो हरि इहां न आवहिं तौ हमैं वहाँ बुलावहु। सूरदास प्रभु हमहिं मिलावहु तब तिहुँ पुर यश पावहु॥ ८७ ॥ कहहु कहा हमते बिगरी।कौने न्याइ योग लिखि पठए हम सेवा कछुऐ न करी॥पाखंड प्रीति करी नँद-नंदन अवधि अधार हुतीसो टरी।मुद्रा जटा ऊधो लै आए ब्रजबनिता पहिरो सगरी॥जातिस्वभाउ मिटै नहिं सजनी अंत तऊबरी कुबरी।सूरदास प्रभु बेगि मिलहु किनि नातरु प्राण जात निकरी ॥८८॥केदारो॥बिरही कहालौं आपु सँभारै।जबते गंग परी हरिपगते बहिबो नहीं निवारै।नैननते बिछुरी भौंहैं भ्रमि शशि अजहूँ तनु गारे। रोमते बिछुरी कमल कंठ भए सिंधु भए जरि छारे॥ बैनते बिछुरी बिधि अवधि भई वेदहिको निरवारे। सूरदास जाके सब अँग बिछुरे केहि विद्या उपचारे॥८९॥ राग मलार॥बहुत दिन गए माई हरिदरशन बिनु देखे।गनतहिगनत गई सुनिसजनी कर अँगुरिनकी रेखे॥ अब इहि बिरह अगर जो करी हम बिसरी नैन निमेषै।होड परति सुनि सूरदास जनि पारहु उनहिंके लेखे॥९०॥राग धनाश्री॥ऊधो भली भई अब आए।बिधि कुलाल कीने काचे घट ते तुम आनि पकाए॥रँग दीनो हो काम श्याम लै अँगअँग चित्र बनाए।याते गरे न नैन मेहते अवधि अटापर छाए॥ ब्रज करि अवाँ योग ईंधनसम सुरति आगि सुलगाए॥ फूँक उसाँस विरह परजारनिसंग ध्यान दर शीश अराए॥ भरे सँपूरण कलश प्रेमजल छुअन न काहू पाए। राजकाजतेगए सूरप्रभु नँदनंदन करलाए ॥ ९१ राग मलार ॥ऊधो भलीकरीइहांआए। तुम देखे जनु माधो देखे दुख त्रय ताप नशाए॥ नँद यशुदाको नातो नछूटत वेद पुराणन गाए। हम अहीरि तू अहिर लाख दश का भयो निर्गुण गाए॥तबयहिघोष खेलावहु खेलहुऊखलभुजा बँधाए। सूरदास प्रभु इहै शूल जिअ बहुरि न दरश देखाए॥ ९२ ॥ मधुकर कहि मधुवनकी रीति। राजा हैं यदुनाथ तिहारे कहा चलावत नीति॥ निशिलौं करत दाह दिनकर ज्यों हुतो सदा शशि शीति। पूरब पवन कहो नहिं मानत गयो सहज वपु जीति। कंसकाज कुबिजाके मारचो भई निरंतर प्रीति।सूर विरह ब्रज भलो न लागत जहींव्याहु तहींगीति॥९३॥राग केदारो॥ हरि बिनु नाहिंन परत रहो। उत गिरि दुर्ग इतहि दव दारुण क्यों दुख जात सहो॥ उठत विरहा धूम पावक जरि बरि वाउ बहो। हरि नागरि फिरि फूंक प्रजारनि पलकनि हृदय दहो॥ यद्यपि घृत लै आयो ऊधो योग सँदेश कहो। तद्यपि भस्म न होत सूर सुनि चलत गुपाल चहो॥९४॥राग मलार॥माधोजी नेक देखाईदेहु।जोयातनमेंताकेबदलेजो चाहोसोलेहु॥भूलीफिरत ठगीसी तबते बिनु बलमति गुण गेहु। जबतेइनअपराधी नयनन बरजत कियो सनेहु॥ कहियो जाइ मधुप पालागौं विरह कियो तनु गेह।रहत आश सुनिसूरदरशके निशिदिनइहैसँदेहु ॥९५॥ गौरी॥ब्रज होइहै कब हरिको आवन। नीके वचन सुनाउमधुपमोहिं विरहव्यथा बिसरावन॥ हौं इहबात कहा जानौं प्रभु जातमधुपुरी छावन।अपनीचूकमानिउरअंतरअबलागीदुखपावन॥ अहनिशि सूरज घरी भई हो तनु श्वासै शशि तावन। या ब्रजकरषिअग्निउरऊपररहो दुसह घन सावन॥९६॥सारंग॥ऊधो जोहरिआवैंतोप्राणरहैं।आवत जातउलटिफिरिबैठत जीवतऔधिगहै॥

जब उई द्दामन ऊखल बाँधिवदन नवाइ रहे।चुभि जु रही नवनीतचोर छबि क्यों भूलति ज्ञानकहे॥ तिनसों ऐसी क्यों कहि आवति जो कुल त्रास सहे।सूर श्याम गुणरसनिधि तजिकै क्यों घट नीर बहे॥९७॥उद्धववचन॥रागनट॥जबलगि ज्ञानहृदयनहिं आवै।तौलगिकोटिजतन करै कोऊ बिनविवेक नहिं पावै॥बिना बिचार सबै सुपनेसो मैं देख्यों सो जोई।नाना दारु बसैं ज्यों पावक प्रगट मथेते होई॥तुम इक कहत सकल घट व्यापक अरु सबहीते नीरे। नखशिखलौं तनु जरत निशादिन निकसि करत किन सीरे॥बातैं कहत सबै सांचीसी मुँहमें लैहो तुरसी। सूर सो औषध हमहिं बतावत ज्यों पितज्वरपर गुरसी ॥९८ ॥गोपीवचन॥राग सारंग॥ तुम जो कहत हरि हृदय रहतहैं। कैसे होइ प्रतीति मधुप सुनि ए इतनी जु सुनतहैं ॥ बासर रैनि कठिन बिरहागिन अंतरप्राणदहत हैं।प्रजरि प्रजरि मनु निकसि धूम अति नैनन नीर बहतहैं॥ कठिन अवज्ञाहोतदेहदुखमर्यादा न गहतहैं।कहे व क्यों मानै मन सूरज ए बातैं जु कहतहैं॥९९॥राग सारंग॥जोपै हिरदयमाँझहरी। तोपै इती अवज्ञा उनपै कैसे सही परी॥तब दावानल दहन न पायो अब यहि बिरह जरी। उरते निकसिनंदनंदन हम शीतल क्यों न करी॥ दिनप्रतिइंद्रनैनजलबरषत घटतन एक घरी। अतिही शीत भीत भीजत तनु गिरि कर क्यों न धरी॥ कर कंकन दर्पण ले देखौ इहि अति अनख मरी। क्योंजीवहिंसुयोग सुनि सूरज बिरहिनिबिरहभरी॥६५०० ॥राग सारंग ॥तुमघटहीमों श्याम बताए। लीजै सँभारि सकल सुख अपने रासरंग जे पाए॥ जो सम दृष्टि आदि निर्गुणपद तौकत चित्त चोराए। मोहन वदन विलोकि मानि रुचि हँसिहरिकंठलगाए॥ हम मतिहीनअजान अल्प मति तुम अनुभौ पद ल्याए। सूरदास तेहि बनिज कवन गुण मूलहुमांझ गवाँए ॥ १ ॥ राग सारंग॥ इनि बातनके मारे मरियत। निर्गुण ज्ञान मधुप लैआए बिनिगोपालकैसेनिशितरियत॥ सबै अटपटी कहरे मधुकर सुनि देखी मधुवनकी रीति। कौन हाल हमरेब्रजबनितन जानतनहीं बिरहकी रीति॥ बुझी अगिनि बहुरौ सुलगाई अंतर्गति बिरहानल जारत। सूरदास स्वामी सुखसागर मिलि काहे न तनु ताप निवारत॥ २ ॥ राग नट॥ बातैं कहत बनाइबनाइ। रंचक बिरह हुते यह गोकुल मधुकर मेट्यो आइ॥ कमलनैनकी मोहन लीला रहति रहीं गुण गाइ। ओछी पूँजी हरै ज्यों तस्कर रंक मरै पछिताइ॥ भली करी हमको लै आए पठये योग सिखाइ। सूरदास स्वामी यह घाली निर्गुण कथा सुनाइ ॥ ३ ॥ राग केदारो॥ ऐसो योग न हमपै होई। सुनिकै वचन तुम्हारो ऊधो नैना आवत रोई॥ कुटिल कुंतल मुकुट कुंडल रही छबि छबि पोई॥ सूर प्रभुबिन प्राण रहै नहिं कोटि करै किन कोई॥४॥ राग सारंग॥ मधुकर कह्यो संदेश सिधारो। बिनु उपदेश सहजही योगी सुधरि रह्यो ब्रज सारो॥ जाको ध्यान धरत गौरी-पति योग युक्ति करि हारो। सो हरि बसतसदाहृदयमें नेक टरतनहिंटारो॥ इह उपदेश आपनो ऊधो राखो ढाँपि सवारो। सूर श्याम जानतभलेजियकी जोनिजहितू हमारो॥५॥राग सारंग॥ ऊधो हमैं कहा समुझावहु। पशु पंछी सुरभी ब्रजकी सब देखि श्रवण सुनि आवहु॥तृण न चरत गो पिवत न सुत पै ढूँढत बनबन डोलैं।अलि कोकिल दै आदि बिहंगम भीतभयानक बोलैं॥ यमुना भई श्याम श्याम बिनु अंध छीन जे रोगी। तरुवर पत्र बसन न सँभारत बिरह वृक्ष भए योगी॥गोकुलके सब लोग दुखित हैं नीरबिना ज्यों मीन। सूरदास प्रभु प्राण नछूटत अवधि आशमें लीन॥ ६ ॥ राग नट ऊधो अवधिआश गई। योगकी गति सुनतमेरेअंगआगिबई॥धरत हृदय न टरत मूरति तिहूँताप तई। हम सुलगिसुलगि उठतही तुम फूँकि आनि दई ॥ सिंह गज

तजि चरत तृण ते सुनत बात नई। अब भोग कुबिजा सुंदरीसों कौन बुद्धि दई॥ नैननीर प्रवाह सरिता ज्वालजाल छई। सूर प्रभुकी कृपा जाको सकल सिद्धि भई॥७॥ हमसों उनसों कौनसगाई। हम अहीर अबला ब्रजवासी वैयदुपति यदुराई॥ कहा भयो जु भए नँदनंदन अब इहपदवी पाई। सकुच न आवत घोष बसतकी तजि ब्रज गए पराई॥ ऐसे भए वहां यादवपति गए गोप बिसराई। सूरदास यह ब्रजको नातो भूलिगए बल भाई॥८॥ राग सोरठ॥ हरिनिर्मोहियासोंप्रीतिकीनी काहेन दुख होई। कपटकी करि प्रीति कपटी लैगयो मन गोई॥ सींचिआ मजीठ जैसो निकट काटी पोई। हमारे मनकी सोई जानै जामें बीती होई॥ कालवदनते राखिलीन्हीं इंद्रगर्व जे खोई। सूर गोपिन ऊधोआगे डहकिदीन्हों रोई॥९॥ ऊधो तुम यह मत लै आए। इकहम जरैं खिझावन आए मानो सिखै पठाए॥ तुम उनके वे नाथ तुम्हारे प्राण एक इकसारे। मित्रके मित्र सजनके सज्जन ताते कहत पुकारे॥ रे सुन मूढ जरत अबलनको परदुख तू नहिं जाने। निपट गँवार होइ जो मूरख सो तेरी बातैं मानै॥ हम रुचिकरी सूरके प्रभुसों दूजो मन न सुहाई। उलटि जाहि अपने पुरमाहीं वादिहि करत लराई॥१०॥ मारू॥ हरिमुखेदेखहीपरतीति। जोतुम कोटिभांति परबोधो योग ध्यानकी रीति॥ नहिंनैं कछू सयान ज्ञानमें इह नीके हम जानैं। कहो कहा कहिये वा प्रभुसों कैसे मनमें आनैं॥ इहै मन एक एक वह मूरति भृंगी कीट समानै। सूर शपथदै ऊधो पूंछो इहि ब्रज कौन सयानै॥११॥ ऊधो बात तिहारी को सुनै। हरिपदपंकज मन मधुकर गह्यो मनबिन बात कछू न बनै॥ योग युक्तिको बडो बिस्तारहै ऐसे ठौर नहिं अपने। ब्रजबासिनको इतनो हियोहै कृष्णलेत संकोच बनें॥ तहांजाउ जहां बैठे योगी इहां कामरस रह्यो धनै। हम अहीर कृष्णमदमाती मुखसों क्यों मित्रपनै॥ जो तुम जानत तत्त्व कृपाला मौन रहौ तुम घर अपने। घर घर फिरत लेव लेव नाहीं वस्तुको मोलहनै॥ भूख न प्यास नीद गई हरिबिनु पति सुत गृहकी कौन तनै। माया और छूटगए यमुना अधिक कहालौं योग बनै॥ सो हरि प्राण प्रणत बल्लभ मोहनलीला हैं अकनै। आवत है कछु कह्यो सूरप्रभु नहिंतौ रहौ तुम मौन बनै॥१२॥ राग मलार॥ बातन को परतीति करै। को अब कमलनयन मूरति तजि निर्गुण ध्यान धरै॥ जो मत वेद कहत युग बीते रूप देख बिन जाने। सो मति मूढ कहत अबलनिसों नहिं सो हृदय समाने॥ जो रस काज देवमुनि चिंततध्यान पलक नहिं आवत। सोइरस सूरगाइग्वालन सँग मुरलीलेकरगावत॥१३॥ राग सारंग॥ नहीं हम निर्गुण पहिचानि। मन मन सार स्वरूप सिंधुमें आपनो हम सानि॥ यद्यपि अलि उपदेशत ऊधो पूरण ज्ञान बखानि। चित चुभिरही मदनमोहनकी जीवन मृदु मुसुकानि॥ जुरयो सनेह नंदनंदनसों तजि परमिति कुलकानि। छूटत सहज न सूरज प्रभु दुख सुखहि लाभ करिहानि॥ १४॥ ऊधो जाइ बहुरि सुनि आवहु कहा कह्यो है नंदकुमार। इह न होइ उपदेश श्यामको कहत लगावन छार॥ निर्गुण ज्योति कहां उनपाई सिखवत बारंबार। कालिहिकरतहुते हमरे अंग अपने हाथ शृंगार॥ व्याकुलभई गोपालहि बिछुरे गयो गुन ज्ञान सँभार। ताते जो भावै सो बकतहौ नाहिंन दोष तुम्हार॥ विरह सहनको हम सरजी है पाहन हृदय हमार। सूरदास अंतर्गति मोहन जीवन प्राण अधार॥१५॥ अलि तुम योग बिसरि जनि जाहु। बांधो गाँठि छूटि परिहै कहूँ बहुरि वहां पछिताहु॥ ऐसी वस्तु अनूपम मधुकर मन जिनि जानहु और। ब्रजवनिताके नाहिं कामको हैतु म्हरे पै ठौर॥ जो हितु करि पठए मनमोहन सो

हम तुमको दीन्यो । सूरदास ज्यों विप्र नारि पर करहि बंदना कीन्यो ॥१६॥ ज्ञान योग अब-
लनि अहीरिसों कहत न आवै लाज। ऊधो सखा श्यामके कहियत पठए हो बे काज॥जा लायक
जो बात होइ सो तैसिये तासों कहिये । विना नाद संगीत सुधानिधि मूढहि कहा सुनइये॥हम
जानी जु बिचार पठाए सखा अंग परवीन। सुखदैहै मोहन कहि बतियां करत योग आधीन ॥
मुरली अधर मोरके पांखें जिन इह मूरति देखि। सोव कहा जानै निर्गुणको सोहै भीति चित्र
अवरेखि ॥ पालागौं तुम बडे सयाने अनबोलेही रहियो । सिखये योग सूरके प्रभुको उनहींसों
फिरि कहियो॥१७॥ राग धनाश्री ॥ऊधो काहेकोभक्त कहावत।जोपैयोग लिखि पठयोहमकोतुमहु
न भस्म चढावत॥ सींगी मुद्रा भस्म अधारी हमहीको कहा सिखावत।कुबिजा अधिकश्यामकी
प्यारी ताहि नहीं पहिरावत॥यहतौ हमको तबहिं न सिखयो जब तेगाइ चरावत।सूरदास प्रभुको
कहियोअबलिखि लिखि कहापठावत॥१८॥नट ॥ऊधो न विरहिनि न हम तुमदास।कहतसुनत
घट प्राण रहतहैं हरि तजि भजहु अकास ॥ बिरही मीन मरै जल बिछुरे छाँडि जीवनकीआस।
दासभाव नहिं तजत पपीहा बरुसहि रहत पियास ॥ पंकज परम कमलमें बिहरत बिधि कियो
नीर निरास। राजिव रविको दोष न मानत शशिसों सहज उदास ॥ प्रगट प्रीति दश रथ प्रति-
पाली प्रीतमको बनवास । सूर श्याम सो पतिव्रत कीन्हों छांडि जगत उपहास ॥ १९ ॥ ऊधो
बिनती सुनो इक मेरी । तबके बिछुरि गए नँदनंदन कामकेदली घेरी ॥ देखो हृदय बिचारि
तुमहिं अब प्रीति रीति सबकेरी । जहां जाकी निधि तहां सब सौंपै ज्यों मृगनाद अहेरी॥ वैद-
शमास रतन रस वसते शशि बिनरैनिअँधेरी।सूरदास स्वामीकब आवैंबास करनब्रजफेरी॥२०॥
॥राग सारंग॥ मधुकर कहा प्रवीन सयाने।जानत तीनि लोककी महिमा अबलनि काजअयाने॥
जे कच कनक कटोरा भरिभरि मेलत तेल फुलेल। तिन केशनको भस्म चढावत टेसू कैसे
खेल ॥ जिन केशन सबरोगहि सुंदर अपने हाथ बिनाइ । तिनको जटा कहा नीकी हैं कहु कैसे
कहि आइ ॥ जिन श्रवणन ताटंक खुभी औ करनफूल खुटिलाऊ। तिन श्रवणन कश्मीरी
मुद्रा लै लै चित्र झुलाऊ॥भालतिलक अंजन चख नासा बेसरि नथमें फुली। ते सबतजिअलि
कहत मलनमुख उज्ज्वल भस्म खुली॥जिहि मुख गीत सुभाषित गावत कहति परस्पर गास ।
ता मुख मौन गहे क्यों जीजै छूटत ऊरध श्वास॥कंठ सुमाल हार मुक्ताके हीरा रत्न अपार।ताहू
कंठ बाँधिबे कारण सींगी योग शृंगार ॥ कंचुकि छीन छीन पटसारी चंदन सरस सुछंद।अब
कंथा एकै अति गुदरी क्यों उपजी मतिमंद ॥ ऊधो ऊधो सब पालागैं देखो ज्ञान तुम्हारो । सूर
सु प्रभु मुख फेरिदेखिहैं चिरजीवै कान्ह हमारो ॥२१॥हमतो दुहूँ भाँति फल पायो।जो गोपाल
मिलें तौ नीको नातो जगत यश गायो॥ कहा हम या गोकुलकी गोपी वरणहीन घटि जाति ।
कहँ वै श्रीकमलाके वल्लभ मिलि बैठी इकपांति।निगम ज्ञान मुनि ध्यान अगोचर सो भए घोष
निवासी । ता ऊपर अब कहौं देखिधौं मुक्ति कौनकी दासी ॥ योग कथा ऊधो पालागों नाकहु
बारंबार।सूर श्याम तजि और भजें जो ताकी जननी छार॥२२॥रागमारू॥मोहिं अलि दुहूँ भांति
फल होति। तब रस अधर लेत जो मुरली अब भइ कुबिजा सौति॥तुम जो योग मत सिखवन
आए भस्म चढावन अंग । इन विरहिनिमैं कहूं तू देखी सुमन गुहाए मंग ॥ कानन
मुद्रा पहिरि मेखला धरैंजटा योग अधारी । इहां तरल तरिवना काके अरु तन सुखकी सारी॥
परमवियोगनि रटत रैनिदिनधरिमनमोहनध्यान।तुमतौचलौबेगि मधुवनको जहाँ योगकोज्ञान ॥

निशिदिन जीजतुहै या ब्रजमें देखि मनोहर रूप। सूर योग लै घरघरडोली लेहुलेहु ज्योंसूप॥२३॥ राग नट॥ जोपै अलि मथुराहू लैजाहु। आरति हरौ श्रवण नैननकी मेटहु उरके दाहु॥ बुधि बल वचन जहाज बांह गहि बिरहसिंधु अवगाहु। पार लगावहु मधुरिपुके तट चंद्र तज्यो जनु राहु॥ देखहु जाइ रूप कुबजाको सहि न सकत यहु घाहु। जीवन जनम सफल करि लेखहिं सूर सबनउत्साहु॥२४॥ लै चल ऊधो अपने देश। मदनगोपाल मिलन मन उमह्यो कौन बसै इह यदपि सुदेश॥ वह मूरति मेरे हृदय बसतहै मुरली अधरपुट कुंतल केश। कुंडल लोल तिलक मृगमद रचि गावत नृत्यत नटवर वेश॥ कहा करौं मोपै रहो न जाइ छिन सब सुखदायक बसत विदेश। सूरज श्याम मिलन कब ह्वैहै दूरि गमन ब्रजनाथ नरेश॥२५॥ राग बिहागरो॥ ऊधोलै चलु रे लै चलु रे। जहां बसैं सुंदर श्यामबिहारी लैचलु रेतहांलै चलु रे॥ आवनआवन कहिगएऊधो करिगए हमसोंछलुरे। हृदय-की प्रीति श्यामजी जानत केतिक दूरि गोकुल रे॥ आपुन जाइ मधुपुरी छाए वहां रहे हिलि-मिलि रे। सूरदास स्वामीके बिछुरे नैन नीरपर वलुरे॥२६॥ राग सारंग॥ गुप्त मतेकी बातकहो जिनि काहूके आगे। कै हम जानैं कै तुम ऊधो इतनी पावहिं मांगे॥ एक बेर खेलत वृंदावन कंटक चुभि-गयो पांइ। कंटकसों कंटक लै काढ्यो अपने हाथ सुभाइ॥ एकदिवस बिहरत बनै भीतर मैं जु सुनाई भूँख। पाके फल वे देखि मनोहर चढे कृपाकरि रूख॥ ऐसी प्रीति हमारी उनकीबसते गोकुलबास। सूरदास प्रभु सब बिसराई मधुवन कियो निवास॥२७॥ राग मलार॥ ऊधो कत ए बातैं चाली। कछु मीठी कछु मधुरी हरिकी वै अंतर सब शाली॥ तब ए वेली सींचि श्याम घन अपनी करि प्रतिपाली। अब ए वेली सूखत हरिबिनु छाँडिगए बनमाली॥ जबहीं कृपा हुती यदुपतिकी रहसि रंग रसरास सुखाली। सूरदास प्रभु तब न मुई हम जिवहिं बिरहकी जाली॥८२॥ राग नट॥ ऊधो इहै बिचार गहो। कै तन गए भलो मानै मन कै हरि ब्रज आइ रहो॥ कानन देह विरहदौ लागी इंद्री जीव जरे। बूझि श्यामघन प्रेम कमलमुख मुरलीवृंद परे॥ चरणसरोवर माहिं मीन मन रहत एक रसरीति। तुम निर्गुणवश तामें डारत सूर कौन यह नीति॥२९॥ ऊधो हम लायक शिख दीजै। यह उपदेश अग्नितै तातो कहो कौन बिधि लीजै॥ तुमहीं कहो इहां इतननमहिं सीखनहारी को है। योगी यती रहित मायाते तिनहीं यह मत सोहै॥ कहा सुनत बिपरीति लोकमहिं यह सबकोई कैहै॥ देख्यों धौं अपने मन सबकोइ तुमहीं दूषण दैहै। स्रक चंदन बनिता विनोदरस क्यों विभूति वपु माजे। सूरदास शोभा क्यों पावत आंखि आंधरीआँजे॥ ३०॥ राग धनाश्री॥ ऊधो हम लायक हमसों कहो। बात विचारि सोहाती कहिए कै अन-बोलै ह्वै रहो॥ भली कहे तुमको अतिशोभा अरु सबहीं पाइ लहो। यह बिपरीति बूझिए तुमको कंध जूव सुरभिनहो॥ एतेपर पुनिपुनि शिखवतहौ योगरत्न दृढकरि गहो। सूर कहै अलि पूरो दीजै निपटहि बातनि मति बहो॥ ३१॥ सारंग॥ कबहूं वै ऊधो बात कहो। तजहुसोच मिलिहैंनँदनंदन हितकरि दुखनि दहो॥ तुम हरि समाधानको पठए हमसों कहन सँदेश। अधिक आनि आरति उपजाई कहि निर्गुण उपदेश॥ इक अति निकट रहत अरु निजयुत जानत सकल उपाई। सोइ करहु जिहि पावहिं दरशन छाँडहु अगम सुभाई॥ हम किंकरी कमललोचनकीवशकीनीमृदुहास। सूरदास अब क्यों बिसरतहै नखशिख अंग विलास॥३२॥ राग मलार॥ सब जल तजे प्रेमके नाते। चातक स्वाति बूँद नहिं छाँडत प्रगट पुकारत ताते॥ समुझत मीन नीरकी बातैं तजत प्राण हठि हारत। जानि कुरंग प्रेम नहिं त्यागत यदपि व्याध शर मारत॥ निमिष चकोर नैन नहिं

लागत शशि जावत युग बीते। ज्योति पतंग देखि वपु जारत भए न प्रेमघटरीते॥कहिअलिक्यों बिसरति वै बातैं सँग जो करी ब्रजराजे। कैसे सूर श्याम हमैं छाँडैं एक देहके काजै॥३३॥ ऊधो जो हरि हितू तुम्हारे। तौ तुम कहियो जाइ कृपा करि ए दुख सबै हमारे॥तनु तरुवर उर श्वास पवनमें बिरह दवा अति जारे। नहिं सिरात नहिं जात छार ह्वै सुलगिसुलगि भए कारे॥ यद्यपि प्रेम उमँगि जल सींचे वरषिवरषि घन हारे। जो सींचे यहिभाँति जतन करि तो एते प्रतिपारे॥ कीर कपोत कोकिला चातक बधिक वियोग बिडारे।क्यों जीवैं यहि भाँति सूर प्रभु ब्रजके लोग बिचारे॥३४॥ राग धनाश्री॥ हमैं तो इतने हीसों काजु॥ कैसेहूं अलि कमलनैनको ब्रज लै आवहु आजु॥और अनेक उपाव तुम्हारे सकल करहु सुख राजु। कैसे हैं निबहत अबलनपै कठिन योगके साजु॥ नखशिख सुभग श्यामघन तनको दरशन हरति विथाजु। सूरदास मत रहत कौन बिधि वदनविलोकनि बाजु॥३५॥अब हरि कौनके रस गीधे। सकत नहीं निरवारि ऊधो शशि बदरी ज्यों वीधे॥ बरतहीन नवल दुलाई तजी सकल कुलकानि। अंधकरि छाँडी मए गहिल वान फून लकुट बिनपानि॥ जतन घुरि निर्गुणभए सब नरकी अभिलाषबिनाचरणसरोज देखे॥३६॥राग कान्हरा॥हरि ठाकुर लोगनसों मधुकरकहो काहेकी प्रीति। ज्यों कीजै तो होइजलधर रविकी ऐसी रीति॥ जैसे मीन कमल चातकही ऐसे दिन गए बीति। तरफत जरतपुकारत निशिदिन नाहिंन कछु इहां नीति॥मन हठ परयो कमंद जोधालौं हारेहु नाहीं जीति।रुकत न प्रेम समुद्र सूर बल वारूहीकी भीति॥३७॥ राग सारंग॥ को गोपाल कहांके वासी कासों है पहिचानि। तुम संदेश कौनके पठये कहत कौनके आनि॥ अपनी चोप मधुप उडि बैठत भोर भले रस जानि। पुनि वह बेलि बढो कै सूखो ताहि कहा हितहानि॥ प्रथम बैन मन हरयो अहिरनको राग रागिनी ठानि। पुनिवह बधिक बिश्वासघाती हनत विषम शरतानि॥ पय प्यावत पूतना बिनाशी छले जु बलिसे दानि। शूर्पनखा ताडका निपाती सूरदास यह बानि॥३८॥राग मलार॥मधुकर कौन मनायो मानै। अविनाशी हरि अंग तुम्हारो कहा प्रीतिरस जानै॥ सिखवहु जाइ समाधि योग रस जे सब लोग सयाने। हम अपने ब्रज ऐसेहि रहिहैं बिरह बाइ बौराने॥ जागत सोवत स्वप्न दिवस निशि रहिहैं रूप परवानै। बारक बालकिशोरी लीला शोभा समुद समानै॥ जिनके तन मन प्राण सूर सुनि मुख मुसकानि बिकानै। परी जु पयनिधि अल्प बूँद जल सु पुनि कौन पहिचानै॥३९॥राग सारंग॥ हरिसुत सुत हरिके तनु आहि। तहांको कहै कौनकी बातैं ज्ञान ध्यान सुमिरै को काहि॥को मुख ममतारस युवतीको को जिनि कंसहतै। हमरे तो गोपतिसे अधिपति बनिता औरनतै॥ गोरज रंध्र रूप रुचिकारी चितैचितै हरिहोत। कबहुंक करनी समेतिले नैकन मानके सोत॥ता रिपु सभै संग शिशु लीन्हें पय आवत तनुघोष। सूरदास स्वामी मनमोहन कत उपजावत दोष॥४०॥ अब हरि और भए माई इतनी दूरि। मधुकर हाथ सँदेशो पठयो चतुर चातुरी घूरि॥ रूपराशि सो सबै गुण परमिति श्याम सजीवन मूरि। तिनसों कहत मनहि मन समझहु हैं सबही भरिपूरि॥ इक सुनि सूर ऐसेहि या तनको रह्यो बिरह झकझूरि। तापर छपद कियो चाहतहै कोइलाहूते धूरि॥४१॥राग कान्हरा॥ कहा जानै कोऊ परपीर। नँदनंदनके बिछुरे सखि री जैसी सही शरीर॥ कहिकहि कथा मधुप समुझावत मन राखहु धरि धीर। नैनमीन कैसे सचुपावत बिनदरशन हरिनीर॥योगसमाधि कहा हम जानैं ब्रजवासिनी अहीर। सोइ कीजै जो मिलै सूर प्रभु भव ऋतु रंगनितीर॥४२॥ हम त्रिय मृतक

जिवत शशि साखी।तुम अलि रविहित कमल विशेषी हरे विकल मधुमाखी॥ मुरलीअधरसुधा ध्वनि सुनि सुख संच्यो श्रवणदुआर। मधुहारी अक्रूर वधिक मुख अवधि लगाई छार॥ मन-को बिरह नैन कहा जानै श्रुति मत तुही सुनावै। सूर भस्म अँग लगी कुटिलता तरु योगै गुण गावै॥ ४३॥ राग रामकली॥ हमारी सुरति लेत नहिं माधो। तुम अलि सब स्वारथके गाहक नेह न जानत आधो॥ निशिलौं मरत कोशअभ्यंतर जो हित कहो सु थोरी।भ्रमत भोर सुख ओर सुमनसँग कमल देत नहिं कोरी॥ राकारास मास ऋतु जेती रजनि प्रीति नहिं थाही। वेस संधि सुख तजी सूर हरि गए मधुपुरीमांहीं॥४४॥राग धनाश्री॥ कैसे जीवें ऊधो हरि परदेश रहे।गरजि गरजि घन बरषन लागे नदिया नार बहे॥ किहि पठवौं मधुपुरी सखीरी मेरो है चरण गहै। बासर गए निहारत मारग चातक रैनि डहै॥ कासों कहौं तपत मन निशिदिन को इह पीर लहै। हमहूं किन लै जाहि सूर प्रभु को ब्रज दुखहि सहै॥ ४५॥ हरि हम काहेको योग बिसारी।प्रेमतरंग बुडत ब्रजबासी तरत श्याम सोइ हारी॥रिपु माधव पिक वचन सुधाकर मरुत मंदगति भारी। सहि न सकत अति विरहत्रास तनु आगि सलाकनि जारी॥ ज्यों जलथाके मीन कहा करै तेउ हरि मेलि अडारी। बिजय अधोमुख लेन सूर प्रभु कहियहु विपति हमारी॥ ४६॥ जो पै इहै हुती उनके मन। तो तब कमलनयन हम कारण कहा किये ब्रज एते जतन॥ विष जल व्याल बरुन वर्षानल अनेक अशुभ हति राखे।संतत संग रहत काहूमिस निठुर वचन नहिं भाषे॥ उन विपदनि कुंचित जो करते कछुअ न जीव सराहती। विधि बश नाउँ बहुरि फिरि मिलती एतो विलंब कत सहती॥ कहिये कहाजोसब जानतहैं यातनुकी मति ऐसी। सूरदास प्रभु हित सचित्त कै बेगि प्रगट कीबो तैसी॥ ४७॥ मोहनसों मुख बनत न मोरे। जिन नैनन मुखचंद्र विलोक्यो जात तरणि नहिं जोरे॥ मुनिमनमंडन योगकर्म ऋतु मंदिर भार सहत कहि कोरे। बनत नहीं द्वै कमलके बंधन कुंजर क्यों व रहत बिनु तोरे॥ नीलांबुज तनु नील बसन मणि चिंत न जात धूमके भोरे। सूरदास जे कमलके बिरही चंप-कबन लागत चित थोरे॥४८॥राग सोरठ॥ बिलग हममानैं ऊधोकाको। तरसत रहे वसुदेव देवकीनहिं हितु मात पिताको॥काको मात पिता को काको दूध पियो हरि जाको। नंदयशोदा लाड लडा-यो नाहिंन भयो हरि ताको॥ कहिवो जाइ बनाइ बात यहको हित है अबलाको। सूरदासप्रभु प्रीतिहै कासोंकुटिल नीच कुबिजाको॥४९॥उघरिआये कान्हकपटकी खानि।सरबसहरो बजाय बाँसुरी अब छाँडे पहिचानि॥ जिन पय पियत पूतना मारी दालत करी न हानि।बलिछलिबांधि पताल पठाये नेक न कीनी कानि॥ जैसे बधिक अधिकमृग बिधवत राग रागनी ठानि। अवधि आश परतीति ओटदै हनत विषमशर तानि॥जैसे नाट सरु टरत न उरते तुम ऊधो अति जानी। सूरदास प्रभुके जियभावै आयसु माथे मानी॥५०॥सारंग॥जीवनमुखदेखेकोनीको।दरशपरशदिन रीति पाइअत श्यामपियारे पीको॥सुनो योग कहि काम हमारे जहां ज्यान हैजीको। नैनमूंदिकैं मृतक देखि वर मधुप ध्यान पोथीको॥ आछे सुंदर श्याम हमारे और जगत सब फीको। खाटी मही कहारुचि मानै सूर खवैया घीको॥५१॥मधुकर को मधुवन रहियो। काके कहे सँदेशोल्याये किनिलिखि लेख दयो॥ कोवसुदेव देवकीनंद को को यदुवंश उजागर। इहां तिन्हसों पहिचानि न काहू फिरि लेइजैए कागर। गोपीनाथ राधिकावल्लभ यशुमतिसुवन कन्हाई॥दिन प्रति लेत दान वृंदावन दूनी रीति चलाई॥ मधुकर हौ तुम भये सयाने कहत औरकी और।सूर सुपथ का-

हू बहिकायो कै भूली यहि ठौर॥५२॥इहां तुमकहत कौनकी बातैं।बिना कहे हम समुझत नाहीं फिरिफिरि बूझति तातैं॥को नृप भयो कंस किन मारचो को वसुदेवसुत आहि। इहां यशुमतिसुत परम मनोहर जीजतहै मुख चाहि॥दिन उठि जात धेनु बन चारन गोप सखनके संग।वासरगत रजनीमुख आवत करत नैनगति पंग॥को परिपूरण कोअविनाशी को विधि वेद अपार।सूरविरथ बकवादकरतहौयहिब्रजनंदकुमार:॥५३॥राग गूजरी॥डसीरीमाईश्यामभुअंगमकारे।चितवनिफिरि मुसकानि महाविष लागत ज्यों शर डारे॥तंत्र नफुरे मंत्र नहिं लागै चले गुणीगुणहारे।प्रेमप्रीतिकी व्यथा तप्त तनु सो मोहिं डारत मारे॥ भली भई तुम आए ऊधो वंद दै चलेहमारे। आनु बेगि गारुरी गोविंदहि जो यहि विषहि उतारे॥आवतलहरि मदन विरहाकी को हरिवेद हँकारे।सूरदास गिरिधरजोआवहिं हम शिर गारुड टारे॥५४॥राग केदारो॥नेह न होइ पुरानोरेअलि।जल प्रवाह ज्यों शोभासागर नित नवतन ब्रजनाथ इहाँ बलि॥जीवतहै आनंदरूप रस बिन प्रतीतिकोमीन चढो थलि।अमी अगाध सिंधु सरविहरत पीवतहू नअघात इतेजलि॥दिनदिन बढतनीरनलिनी ज्योंश्यामरंगमें नैनरहे पलि।सूर गोपालप्रीति जियजाकेछूटत नाहिंननेहसतीसलि॥५५॥धनाश्री॥ अपने सगुन गोपाल माई यह बिधि काहे देति।ऊधोकीइनिमीठीबातनि निर्गुणकैसेलेति ॥ धर्म अर्थ कामना सुनावत सब सुख मुक्ति समेति । काकी भूँख गई मनलाडू सो देखहु चित चेति। जाको मोक्ष बिचारत वर्णत निगम कहतहै नेति। सूर श्याम तजि को भुस फटकै मधुप तुम्हारे हेति॥५६॥हमरी सुधिहु भूलि अलिआए।अब कछु कान्ह कहत औरै हैं समुझि सखा गुण गाए॥ निज स्वारथ रसरीति समुझि उर विकल निमेष न चाहे।कहतहि सुगम सबैकोउजानत कठिनहेतु निरवाहे ॥ अब परतीति बातकी मानैं कहतहैं श्याम पराए । कबलौं चलै कपटको नातो सूरसनेह वनाए॥५७॥मधुकर हम सब कहा करें। पठए हौ गोपाल हेतु करि आयसुतेनटरैं॥रसनाउरवारौं ऊधोपर इहि निर्गुणके साथ॥यह पै नेकु विलगु जिनि मानो अँखियांनाहिंन हाथ॥कवनभाँति गुण कहौं तिहारे हितको धीर धरावो । महाविचित्र नीरबिनु नौका विन जल मीन जिआवो॥ सेवा हीन अपूरब दरशन कब आवहुगे फेरि।सूरदास प्रभुसों यों कहियो केलापोषसँग उबरीबेरि५८ राग गारा॥ए अलि जन्म कर्म गुण गाए।हम अनुरागी यशुमतिसुतकी नीरस कथा बहाए॥ कैसे कर गोवर्धन धारचो कैसे केशी मारचो। कालीदमन कियो कैसे अरु बकको वदन विदारचो ॥ कैसे नंद महोत्सव कीनो कैसे गोपी धाए । पट भूषण नाना भाँतिनके ब्रजयुवतिन पहिराए ॥ दधि माखनके भाजन कैसे गोप सखा लै धाए। वनको धातु चित्र अँग कीनो नाचत भेष सुहाए ॥ तबते कछु न सुहाइ कान्ह बिनु:युगसम बीतत याम । सूर मरहिंगी विरह वियोगिनि रटिरटि माधो नाम ॥५९॥राग नट॥ मधुप आए योग गथ लै दुख अरु हांसी को सहै। कान मुद्रा भस्म कंथा मृगतुचा आसन डहै॥ कान्ह तौ वै निठुर कहिए सखा तिनके रावरे । जरेऊपर लोन लावहिं कोहै उनते बावरे॥श्यामके गुण हम जु जानैं मानु बाँधि नल कियो- संग खेलि खवाइ अपने सोच तो इतनो दियो ॥ एक दिन बैकुंठवासी रास वृंदावनरच्यो।सोइ स्वरूप विलोकि माधौ आइ इन बिधितनु खच्यो ॥ शरद यामिनि इंदुराका लाज तजि कुंजनि गई। बांसुरीको शब्द सुनिकै बधिककी मृगिनीभई॥मुरलिकाहै मदनमूरति मो हृदयमनरमिरई । या [illegible] जगत जानो देद मेरो हट भई॥मंदमति हम कर्महीनो दोष काहि लगाइए।प्राणपति- सों नह बांध्यो कर्म लिख्यो सो पाइए॥ हम न जानें जन्मऐसो रैनिको सपनो भयो।अजुरिनजल

घटत जैसे तैसही यातन गयो ॥ भेदिआसों भेद कहिबो छेदसो छाती परौ । अंत नाहिंन ओर आवै सुख सबै कुबिजा करौ ॥ योग जपतप ध्यान पूजा इह तु हृदय न आवई । सुधारस जेहि स्वाद चाख्यो तिनहिं और न भावई ॥ ज्ञान दृढ तप ध्यान पूजा हरिचरण जिनके हिए । विमुख हैं जेसूरस्वामीफल कहातिनकेजिए॥६०॥ उद्धववचन ॥ रागमलार ॥ वे हरि सकलठौरकेवासी।पूरण ब्रह्म अखंडित मंडित पंडित मुनिन विलासी ॥ सप्तपताल अध ऊर्ध्व पृथ्वीतल जल नभ वरुन बयारी। अभ्यंतर दृष्टी देखनको कारण रूप मुरारी ॥ मन बुधि चित अहंकार दशेन्द्रिय प्रेरक रथमनकारी। ताके काज बियोग बिचारत येअबलाब्रजनारी॥जाकोजैसोरूपमनरुचैसोअपवस करि लीजै । आसन बैसन ध्यान धारणा मन आरोहण कीजै ॥ षटदल अष्ट द्वादशदल निर्मल अजपा जाप जपाली।त्रिकुटी संगम ब्रह्म द्वार भिदि यों मिलिहै वनमाली॥ एकादशगीता श्रुति साखी जिहि बिधि मुनि समुझाए । ते सँदेश श्रीमुख गोपिनकोसूरसुमधुपजनाए॥६१॥अथ गोपी वचन ॥ कर्णाटी ॥देखि रे प्रेम प्रगट द्वादश मीन । ऊधो एकबार नंदलाल राधिका बनते आवत सखिहौं सहित गिरिधर रसभीन॥ गए नव कुंज कुसुमनिके पुंज अलि करैं गुंज सुखहमदेखिभई लवलीन ॥ षट उडुगण षट मनिधर राजत चौबीस धात केहि चित्र कीन। षट इंदु द्वादश पतंग मनो मधुप सुनि खग चौअन माधुरी दशपीन ।द्वादश बिंबाधरसोबानवे बज्रकनमानोषटदामिनि षट जलज हँसि दीन ॥ द्वादश धनुष द्वादशै विष्का मनमोहन षटे चिबुक चिह्न चित चीन। द्वादश व्यालअधोमुख झूलत मधुमानो कंजदलसों बीसद्वै बंसीन ॥ द्वादशै मृणाल द्वादशकदली खंभ मानो द्वादश दारिम सुमन प्रवीन । चौबीस चतुष्पद शशि सौ बीस मधुकर अंगअंग रस कंद नवीन॥ नील नीलै मिलि घटाविविधिदामिनिमनोषोडशशृंगारशोभितहरिहीन।फिरिफिरि चक्र गगनमें अमी बतावत युवती योग मौनकहुँ कीन ॥ वचन रचन रसरासनंदनंदनतेवहीयोग पौन हृदये लवलीन । नंद यशोदा दुखित गोपी गाय ग्वाल गोसुत सब मलिन गातदिनहीदिन दुखीन ॥ बकी बका शकटा तृणकेशीवच्छवृषभरासभै अलिबिनुगोपालइनिबैरकीन।उद्धवयहां मिलाइपरैं पाँयतेरे सूरप्रभु आरति हरैं भईतनुछीन॥६२॥राग गौरी॥मधुकरल्याएयोगसँदेशो।भली श्याम कुशलात सुनाई सुनतहि भयो अँदेशो ॥ आशरहीजियकबहुँमिलैकीतुमआवतहीनाशी। युवतिनि कहत जटा शिर बांधौ तौ मिलिहैं अविनाशी॥ तुमको जिन गोकुलहि पठाए ते वसुदेव कुमार। सूर श्याम हमते कहुँ न्यारे होत न करत विहार ॥ ६३ ॥ राग मलार॥मधुकर वादि वचन कत बोलै। आपुन चपल चपलके संगी चपल चहूँ दिश डोलै ॥ इन बातनकोकौनपत्यैहैअंतर कपट न खोलै। कंचन कांच कपूर कटुखरी एकहि सँग क्यों तोलै ॥ अबअपनीसीहमहिदिखावत मति भूलहु यहु जोलै। सूर श्याम विन रटत बिरहिनी बिरह दाग जनिछोलै॥६४॥राग नट॥ ऊधो सुनत तिहारे बोल। ल्याए हरि कुशलात धन्य तुम घर घर पारचो गोल ॥ कहन देहु कहा करै हमारो वरु उठि जैहै झोल । आवतही याको पहिचान्यो निपटहिओछोतोल॥जिनकेसोच नहीं कहिबेको ए बहुगुणनि अमोल । जानी जात सूर हम इनकी बतचल चंचल लोल ॥६५ ॥ राग धनाश्री ॥ मीठी बात हमारे आगे बारबार अलि कहा सुनावहु।हमहिंखिझाइआपुपतिखोवत यामें कहौ कहा तुम पावहु॥ कहो नजाइ नगर नारिनसोंवेसुनिहैंतिनकोसमुझावहु।ब्रजवासिनी अहीरिनि विरहिनि तिन आगे तुम काहे गावहु ॥ लोचन गए श्याम संगही बडे चतुर तौ वोनहीं बुलावहु । सूर चकोर चंद्र दरशन तजि कैसेजीवैं तरनि दरशावहु ॥ ६६॥ राग धनाश्री॥

मधुकर कहा करन ब्रज आए । योग ज्ञान हमको परबोधन हरितौ नहीं पठाए॥जा मुख मुरली धरि अद्भुत सुर गाइ बजाइ रिझावत ॥ तेहि मुख श्याम कहैंगे ऐसे यह तौ तुमहिं बनावत । अंगअंग आभूषण अपने कर करि हमहिं बनावै । सूरदास प्रभु कैसे तुमकर कंथा जोरि पठावै ॥ ६७ ॥ कहा कहत रे मधुमतवारे। आयो धाइ योग उपदेशन प्रेमभजन गहिडारे॥जेहि मुख सुधा श्याम रस अचवत अब पीवै जल खारे । यहअक्रूरहितेअतिखोटोडारतिहौअहिकारे॥ हम जान्यो यह श्याम सखाहै यहतो औरै न्यारे।सूर कहा याकेमुखलागतकौनयाहिअवगारे६८ रे अलि कासों कहत बनाइ । बिन समुझे फिरि फिरि बूझतहै बारक बहुरोगाइ॥कौनेगमनकियो स्यंदनचढि सुफलकसुतके संग । किन वधिरजक लिये नानापट पहिरे अपने अंग ॥ केहि हति चापि निदरि गज मारयो केहि बल मल्ल मथि भाने। उग्रसेन वसुदेव देवकी केहि व निगडहति आने॥ काकी करत प्रशंसा निशिदिन कौने घोष पठाए । केहिमातुल वधिलियोजगतयशकौन मधुपुरी छाए॥ माथे मोर मुकुट उरगुंजा मुखमुरली कल गाजै।सूरजदासयशोदानंदनगोकुलसदा विराजै ॥ ६९ ॥ राग सारंग॥ तैं अलि कहां पढीयहनीति।लोकवेदश्रुतिज्ञानरहितसबकहतकथा विपरीति ॥ जन्मभूमि ब्रजजननि यशोदा केहिअपराधतजे।अतिकुलनिर्गुणरूपजोअतिसुखदासी जाइ भजे॥ योगसमाधि मूढ मुनि मारग क्यों समुझैं हम ग्वारी।जो त्रैगुणअतीतिव्यापकतातोहम काहे न्यारी ॥ रहि मधु ढीठ कपट स्वारथहित जिय ये वचन विरोषै।मनक्रमवचनबचतिवानाते सूर श्याम तनु धोखै ॥७० ॥ राग सारंग ॥मधुकरजाहिकहोसुनिमेरो।पीतवसनतनुश्यामजालकी राखत परदा तेरो ॥ यहि ब्रजको उपदेशन आयो कत जो रहो करि डेरो । एते मान यह सखी महाशठ छाँडत नाहिंन खेरो॥ऐसी बात कहो तुम तिनसों होइ जो कहिबे लायक। इहां यशोदा कुँवर हमारे छिनु छिनु प्रति सुखदायक ॥ज्यों तू पुहुप पराग छाँडिकै करहि ग्राम वसबास । तौ हम सूर इहै करि देखहिं निमिष न छाँडहिं पास॥ ७१॥ राग रामकली ॥ ऊधोमौने साधिरहे। योग कहि पछितात मन मन बहुरि कछु न कहे ॥ श्यामकोयह नहींबूझेअतिहिरह्यो सिखाइ।कहा मैं कहि कहि लजानो नैन रह्यो नवाइ ॥प्रथमही कहि वचन एकै लियो गुरु करि मानि । सूर प्रभु मोको पठायो इहै कारण जानि॥ ७२॥ राग कल्याण ॥ कहा न कीजै अपने काजै ।अबदिन दश ऐसो करि देखो जो हरि मिलैं योगके साजै ॥ माथे जटा पहिरिउरकंथालावहुभस्मअंगमुख माजै । सींगी बजाइ पहिरि मृगछाला लोचन मूँदि रहौ किन आजै॥सन्मुखह्वैशरसहोसयानी नाहिंन वचन आजुके भाजै । योग बिरहके बीच परमदुख मरियतुहै यह दुसह दुराजै॥ ऊधो कहै सत्य करि मानो वर्षा वदत पंचमी गाजै । ज्यों यमुना जल छाँडि सूर प्रभु लीन्हें बसन तजी कुल लाजै ॥ ७३ ॥ राग सारंग॥ ऊधो कहा मति दीनो हमहिं गोपाल। आवहु री सखीसब मिलि सोचैं जो पावैं नँदलाल॥ घर बाहरते बोलि लेहु सब जावदेक ब्रजबाल। कमलासनबैठहुरी माई मूँदहु नैन विशाल ॥षटपद कही सोऊ करि देखी हाथ कछू नहिं आई। सुंदर श्याम कमलदल लोचन नेकु न देत दिखाई ॥ फिरि भई मगन विरहसागरमें काहुहि सुधि न रही। पूरण प्रेम देखि गोपिनको मधुकर मौन गही ॥ कछु ध्वनि सुनि श्रवणन चातककी प्राणपलटि तनु आए। सूर सो अबकेटेरि पपीहै विरही मृतक जिवाए॥७४॥राग सारंग॥मधुकरभलेहिआएवीर। दुर्लभ दरशन सुलभ पाए जानिहौ परपीर ॥ कहत वचन बिचारि बिनवहुँ शोधि हो मनमाहिं । प्राणपतिकी प्रीति ऊधो हैकि हमसों नाहिं ॥ कोए तुमसों कहै मधुकर कहन योगी नाहिं ।

प्रीतिकी कछु रीति न्यारी जानिहौ मनमाहिं ॥ नैन नींद न परै निशिदिन विरह डाढी देह। कठिन निर्दय नंदके सुत जोरि तोरो नेह॥कौन तुमसों कहै मधुकर गुप्त प्रगटित बात। सूरके प्रभु क्यों बनै ज्यों करै अबलाघात॥७५॥राग सारंग॥ऊधो तैं कत चतुर कहावत।जेनहिं जानैं पीर पराई है सर्वज्ञ जनावत॥ जो पै मीन नीरते बिछुरे को करि जतन जियावत। प्यासे प्राण जातहैं जल बिनु सुधा समुद्र बतावत ॥ हम विरहिनी श्यामसुंदरकी तुम निर्गुणहिं बतावत । योग भोग रस रोग शोग सुख जाने जगत सुनावत ॥ ए दृग मधुप सुमन सब परिहरि कमल वदन रस भावत।सोवत जागत स्वप्न रैनि दिन वह मूरति मोहिं भावत॥कहि कहि कपट सँदेशन मधुकर कत बकबाद बढावत । कारो कुटिल निठुर चित अंतर सूरदास कवि गावत ॥ ७६ ॥ मधुकर एमन ऐसो वैरन । अहो मधुप निशिदिन मरियतु हैं कान्ह कुँवर अवसेरन ॥ चित चुभि रही मनोहर मूरति चपल दृगनके हेरन । तन मन लियो चुराइ हमारो वा मुरलीकी टेरन ॥ कहत न बनै कांध कामरि छबि बन गैयनकी घेरन । वरणि न जाइ सुभग उर शोभा पीतांबरकी फेरन॥ तुम प्रवीन हरि हमहिं बतावत अगहि गहत भट भेरन।नंदकुमार छाँडि को लेहै योग दुखनकी टेरन ॥ जहां न परम उदार नंदसुत मुक्ति परो किन झेरन॥सूर रसिक बिनु को जीवतिहै निर्गुण कठिन करेरन ॥७७॥ राग बिलावल ॥ काहेको रोकत मारग सूधो । सुनहु मधुप निर्गुण कंटकटे राजपंथ क्यों सूधो॥ कै तुम सिखै पठाए कुबिजा कही श्याम घन जूधो । वेद पुराण स्मृति सब ढूँढो युवतिन योग कहूँधो॥ताको कहा परेखो कीजै माँगत छाँछ न दूधो । सूर मूर अक्रूर गयो लै व्याज निबेरत ऊधो ॥७८॥ राग सारंग॥मधुकर समुझि कहो किन बात । काहेको हियरा सुलगावत उठि न इहाँते जात ॥ जहि उर वसत यशोदानंदन निर्गुण कहां समात । कत भटकत डोलत कुसुमनि सँग तुम कित पातन पात यद्यपि सकल वेलि वन विहरत जाइ वसत जलजात । सूरदास व्रज मिलवत आए दासीकी कुशलात॥७९॥राग धनाश्री॥ तुमतो अपनेही सुख झूठे । निर्गुण छबि हरि बिनु को पावे ज्यों आँगुरी अँगूठे ॥ निकट रहतपुनिदूरि बतावत होरस-माहँ अपूछे । दुइ तरंग दुइ नाव पाँव धरि ते कहि कवनन मूठे॥हमसों मिले वर्ष द्वादश दिन चारिक तुमसों टूठे।सूर आपने प्राणन खेलै ऊधो खेलें रूठे॥८०॥ राग मलार ॥ऊधोबूझति है अनुमान। देखिअतनाहिं जतन जीबेको इत विरहा उत ज्ञान ॥ इतहि चंद्र चंदन समीर मिलि लागत अनल निधान। उत निर्गुण अवलोकन मनको कठिन बिरोधी प्रान ॥ इत भूषण भे करत अंगको सब निशि जागि बिहान । उत कहुँ सुनत समाधि कछू नहिंगूढ कठिनको जान॥ दुसहदुराइ विपत्ति वियोगहि नृप बडे दोउ समान।को राखे सूरज यहि अवसरकमलनैनबिनआन॥८१॥राग सारंग॥ मधुकर राख योगकी बात । कहिकहिकथा श्यामसुंदरकी शीतल करि सबगात॥जेइनिर्गुण गुण-हीन गनैगो सुनि सुंदरि अलसात । दीरघ नदी नाउ कागरकी को देखो चढिजात ॥ हम तन हेरिचितै अपनोपटदेखि पसारहिलात॥सूरजदासवासगुणवसिकै कैसेकलपबिहात॥८२॥राग मलार ॥ योगसों कौने हरि पाए । निज आज्ञा तप कियोविधाताकव रस रासखिलाए ॥ योग युक्तिशंकर आराधी परम तत्त्व नवलाए।भुज धरि ग्रीव कबहिं नँदनंदनहिलिमिलिकलसुर गाए॥बगदालभ्य महाऋषि कबहूँ तृण छाया न कराए। वर्षत दुखित जानि मन मोहन कव गिरिवर कर छाए ॥ अति तपपुंज विप्र दुर्वासा दूर्वा तृण नित खाए । चक्र सुदर्शन तपत महामुनि कव मुख अनल समाए॥ बहु तप कियो मार्कंडे द्विज आय सिंधु भरमाए । सप्तकल्प बीती कब कहि

हरि वरुणपासमों ल्याए॥भक्त विरह कातर करुणामय वेद निरंतर गाए। कोहै योग सुनत इह ऊधो सूर श्याम मन भाए॥८३॥राग मलार॥हमारेकौन वेदबिधिसाधै॥बटुआ झोरीदंड अधारा इतनेनको आराधै॥जाको कहूँ थाह नहिं पइअत अगम अपार अगाधै।गिरिधर लाल छबीलेको यह कहा पठायो पाधै॥सुनु मधुकर जिन सर्वस चाख्यो सो अब क्यों सचु पावत आधै।सूरदास मणि श्याम छांडिकै धुँघुचि गांठिको बांधै॥८४॥जिहि तनु गोकुलनाथ भज्यो।ऊधो हरि बिछुरतते विरहिनीसो तनु तबहिं तज्यो ॥ अब या औरै सृष्टि बिरहकी बकत बाइ बौरानी।तिनसों उत्तर कहा देतहौ तुमतो पूरण ज्ञानी ॥ जब स्यंदन चढि गमन कियो हरि फिर चितयो गोपाल।तबहीं परम कृतज्ञ प्राणसँग उठिलागे तेहिकाल ॥ अब औसान घटत कहि कैसे उपजी मन परतीति। सूरदास कछु कहत न आवै कठिन विरहकी रीति॥८५॥राग गौरी॥मधुप बार बार काहेको और कथा कहत।प्रभु-की प्रतीति गए नाहिंन कछु रहत॥पवन तेज अरु अकाश पृथ्वी अरु पान्यो। तामें ते नंद-नँदन कहा घालि सान्यो॥कमलनैन श्याम सुंदर कौन नाहिं भावै। ताको तू गुप्त करै आनै कछु गावै॥सूरसो नंद प्रभु दयालु लीला वपुधारी। निर्गुणते सगुणभए संतन हितकारी ॥८६॥ राग सारंग॥कहिये तासों जो होइ विवेकी।तुमतौ अलि उनहींके संगी अपनीगौंके टेकी॥ऐसीको ठाली वैसीहै तोसों मूँड चढावै॥झूँठी बात तुसीसी बिन कन फटकत हाथ न आवै ॥अजहूँ लौं अंगहु नहिं छाँडत यह मूरख मतिभोरे। मन क्रम वचन सूर अभ्यंतर नँदनंदन हितमोरे॥८७॥ कहिये तासों जो होइ विवेकी। एतो अलि उनहींके संगी अपने बातके टेकी॥ऐसी बात कहौ तुम उनसों जो नहिं जानै बूझै। सूरदास प्रभु नंदनँदन बिनु देखे और न सूझै॥८८॥राग कान्हरो॥ऊधो निर्गुण कहत हो तुमही धौं नेहु। सगुणमूरति नंदनंदन हमहिं आनिय देहु॥ अगमपंथपरमकठिन गमन तहां नाहिं। सनकादिक भूलि फिरे अबला कहां जाहिं॥ पंचतनु परमकान्ह अपर कैसे जानी। मन वच करि कर्मरहित वेदहुकीबानी ॥ कहिए जो निबहिबे अकथन कहुँ सोही। सूर श्याम मुख सु चंद्रलीनी युवतिमोही ॥८९ ॥ ऊधोसूधेनेकु निहारो। हम अवलनिको सिखवन आए सुनो सयान तिहारो॥ निर्गुण कहो कहा कहियतहै तुम निर्गुण अतिभारी। सेवत सगुण श्यामसुंदरको मुक्ति लही हम चारी ॥ हम सालोक्य स्वरूप सयुज्यो रहत समीप सदाई।सो तजिकहत औरकी औरै तुम अलिबडे अदाई ॥ हम मूरख तुम बडे चतुरहो बहुत कहा अब कहिए। बेही काजफिरतभटकत कतअब मारगनिज गहिए॥ अहो अज्ञान कतहि उपदेशत ज्ञानरूप हमही। निशिदिन ध्यान सूर प्रभुको अलि देखति जित तितही ॥९०॥ ऊधो कोउ नाहिंन अधिकारी॥ लै न जाहु यह योग आपनो कत तुम होत दुखारी॥यहतौवेद उपनि-षदको मत महापुरुष व्रतधारी। हम अबला अहीरि ब्रजवासिनि देख्यो हृदय बिचारी॥ को है सुनत कहत कासोंहो कौनकथा अनुसारी॥सूरश्याम सँगजातभयोमनअहिकांचुलीउतारी॥९१॥ ॥राग केदारो॥ ऊधो राखिए यहबात।कहतहो अनगढिन अनहदसुनतहो चपिजात॥योगअलि कूष्मांड जैसो अजा मुख न समात। बार बार न भाषिए कोउ अमृत तजि विष खात॥ नैन प्यासे रूप जलके दिये नहिंन अघात। सूर प्रभु मन हरचो जबलौं तौलगितनुकुशलात॥९२॥ ॥राग सारंग॥ ऊधो औरै कथा कहो। तजियेज्ञान सुनत तावत तनुवरगहिमौन रहो॥रुचि द्रुम प्रीति रीति नैननजल सींचि ध्यान झर लागी। ताके प्रेम सुफल मुनि श्रावत श्याम सुरँग अनुरागी ॥ ग्रीषम अलि आए उपजी व्रज कठिन योग रवि हेरो। वन मुरझात सूर को राखै

महानेह विन तेरो॥९३॥राग सोरठ ॥कै तुमसों छूटैं लरि ऊधो के रहिए गहि मौन।इकहमजरैंजरे पर जारत बोलहु बकुची कौन ॥ एक अंग मिलि दोऊ कारे काको मन पतिआए।तुमसीहोइसो तुमसों बोलै लीने योगहि आए ॥ जा काहूको योग चाहिए सो लै भस्मलगावै।जिनउरध्यान नंदनंदनको तहँ क्यों निर्गुण भावै॥कहो सँदेश सूरके प्रभुके यह निर्गुण अँधियारो।अपनो बोयो आप लोनिये तुम आपहि निरुवारो॥९४॥राग केदारो॥कहा रस बरिआईकी प्रीति ।जो न गडै उर अंतर ऊधो भुसपर कीसी भीति ॥ नैन बैन अरु हृदय मिलत तब बाढत प्रेम प्रतीति।ए दोउ हंस होत जब सन्मुख लेत मनहि मन जीति ॥ ऊधो यहै सँदेशो कहियो मधुबन कैसी रीति । सूरदास सोई जन जानै गई जाहिमहिं वीति ॥९५॥राग मलार॥जौपै इहै प्रीतिकी बात । तौ ऊधो तुम निकट रहत कत निरख साँवरे गात ॥ बात कहत भरिलेत नैनजल सुरति करत अकुलात । जो घटघट हरि रहत निरंतर तौ कत मधुपुरी जात॥ सगुण प्रीति ऐसी प्रतिपालत दुखित होत तनुगात ।तुम निर्गुणसों प्रीति करनको सूर समुझि पछितात ॥ ९६ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो जनि मधुवनतन देखो।कछुक दिवस औरौ ब्रज वसिकै जन्मसफल करि लेखो॥कहाजाइ लेइहो ह्वाँ जामें राजकाजकी बात । बाल किशोर कुमार निरखि मुख घरपर माखन खात॥तुम निर्गुण नित कहत निरंतर निगम नेति यहनीति।प्रगट रूप मदमत्त नयन क्यों छाँडे दरशनप्रीति॥ शिव विरंचि सनकादिक मुनि मन संतत जाको धावत।सूरदास प्रभु गोप सुतन सँग गोधनबृंद चरावत ॥९७॥राग मलार॥ऊधो जीवन धन हम पैए । सोइ होइ जो रचो विधाता औरन दोष लगैए ॥ कीजे कहा कहत नहिं आवै सोचि हृदय पछितैए।मोहनसो वर कुबिजा पायो हमको योग बतैए ॥ आज्ञा होइ सोइ पै कीजै विनती इहै सुनैए ।सूरदास प्रभु तृषा बढी अति दरशन सुधा पियैए ॥ ९८ ॥ राग केदारो ॥ ऊधो खरी जरी हरिके शूलनकी । कुंज किलोल किये बनही बन सुधि बिसरी उन बोलनकी ॥ अरु यह प्रीति कहांलौं बरणौं या यमुनाजल कूलनकी॥ वह छबि छाके अतिहैं दोऊ लोचन बहि गहि झूलनकी । सूरदास प्रभु दरशन दीजै अरु लीजै अनुकूलनकी॥९९॥राग सारंग॥हरिबिनुयहिविधि हैं ब्रज रहियत।पर पीरहि तुम जानत ऊधो तातें तुमसों कहियत ॥ चंदन चंद किरनि पावक सम मिलिमिलि है तन दहियत । जागत यामजात युगयामिनि जतन नहीं निरवहियत ॥ वासरहू या विरह सिंधुको कैसेहु पार न लहियत। फिरि फिरिवहै अवधि अवलंबन बूडत ज्यों तृण गहियत ॥ एक जु हरिदरशनकी आशा तालगि यहु दुख सहित । मन क्रम वचन शपथ सुन सूरज और नहीं कछु चहियत ॥३२००॥ हरिविनु यहि विधि हैं ब्रज जीजतु। पंकज वरषिवरषि उर ऊपर सारँगरिपु जल भीजतु॥वायस अजा शब्दकी मिलवनि याही दुखतनु छीजतु। चन्द्रनचौथि जातगोपिनको मधुपपरखियशलीजतु ॥तारापति अरिके शिर ठाढी निमिष चैन नहिं कीजतु । सूरदास प्रभु वेगि कृपा करि प्रगट दरशमोहिं दीजतु ॥ १ ॥हमारे धन जीवन कृष्ण मुकुन्द । परमउदार कृपानिधि कोमल पूरण परमानंद ॥ निठुर वचन सुनि फटतु हियो यों रहु रे अलि मतिमंद । ब्रजयुवतिनको सुगम जनावत योग युक्ति सुखद्वंद ॥ यहुतौ जाइ उनै उपदेशो सनकादिक स्वच्छंद । बारक हमैं दरश देखरावो सूर श्याम नँदनंद ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ वै बातैं यमुनातीरकी । कबहुँक सुरति करतहैं मधुकर हरन हमारेचीरकी ॥ लीने वसन देखि ऊँच द्रुम रवँकि चढनि बलवीरकी। हम ठाढी जलमाहिंगुसांई खरी जुडाई नीरकी॥ दोऊ हाथ जोरिकै माँगौं दोहाइ नंद अहीरकी।सूरदासप्रभु सबसुखदाता

जानतहैं परपीरकी ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ अब हरि क्यों बसैं गोकुल गवईं । बसत नगर नागर लोगनमें नई पहँचानि भई ॥ इक हरि चतुर हुते पहिलेही अब बहुतै उन गुरु सिखई । हम सब गर्वगँवारि जानि जड अधपर छाँडि दई॥ऊधो मुख जोवत कुबिजाको ब्रजवनिता सब बिसरि गई । याहीते चतुर सुजान सूर प्रभु औ ए ग्वाली सँगनलई ॥४॥ राग गौरी॥प्रेम न रुकत हमारे बूते। किहि गयंद बाँध्यो सुन मधुकर पद्मनालके काचे सूते॥ सोवत मनसिज आनि जगायो पठै सँदेश श्यामके दूते । विरहसमुद्र सुखाइ कवन विधि किरचक योग अग्निके लूते । सुफलक-सुत अरु तुम दोऊ मिलि लैजैये मुक्ति हमारेहूते । चाहति मिलन सूरके प्रभुको क्यों पतियाहिं तुम्हारे धूते ॥५॥ राग मलार ॥वे गोपाल गोकुलके वासी । ऐसी बातैं बहुतै सुनिसुनि लोग करत हैं हाँसी ॥ मथिमथि सिंधु सुधा सुर पोषे शंभु भए विषआसी । इमि हति कंस राज औरहि दे आपु चहे हैं दासी ॥ बिसरयो हमहिं विरह दुख अपनो सुनत चाल ए रासी । जैसे ठग अवलोकि गुप्त निधि प्रगट न परखै फांसी ॥ आरजपंथ छुडाइ गोपिका कुलमर्यादा नासी। आप करत सुख राज सूर प्रभु हमैं देत दुख गासी ॥ ६ ॥ राग धनाश्री ॥ इह कछु नाहिंन नेह नयो। अहो मधुप माधवसों इह ब्रज बिधिते पहिल भयो ॥ बीज मन माली मदन चुर आल-बाल बयो । प्रेमपय सींचो पहिलहीं सुभग जिवरि दयो॥इते श्रम तन श्यामसुंदर बिरव विमल वढयो । मुरली मुख छबि पत्र शाखा दृग दुरेफ चढयो ॥ कमल तजि तनु रचत नाहीं आकको आमोद । सूर जो गुण वचन परसत विनु गोपाल विनोद ॥७॥राग मलार॥ ऊधो अब यह समुझि भई । नँदनंदनके अंग अंग प्रति उपमा न्याइ दई ॥ कुंतल कुटिल भँवर भामिनि वर मालति भुरै लई । तजत न गहरु कियो तन कपटी जानि निराश गई ॥ आननइंदु बरन संपुट तजि करखेते न नई । निर्मोही नवनेह कुमुदिनी अंतहु हेममई ॥ तन घन सजल सेइ निशिबासर रटि रसना छिजई । सूर विवेकहीन चातकमुख बूँदौतौन स्रई॥८॥ राग सारंग॥ऐसो माई एक कोदको हेतु।जैसे बसन कुसुमरँग मिलिकै नेक चटक पुनि श्वेत॥जैसे करनि किसान बापुरो नौनौ बाहै देत।एतेहू-पर नीर निठुर भयो उमँगि आपुही लेत॥ सब गोपी पूछहिं ऊधोको सुनियो बात सुचेत । सूर-दास प्रभु जनते बिछुरे ज्यों कृत राईरेत ॥ ९ ॥ राग सारंग॥मुख देखेकी कौन मिताई । जैसे कृपणहि दीन माँगनो लालच लीने करत,बडाई॥प्रीतम सो जो रहै एकरस निशिबासर बढि प्रेम सवाई। चितमहिं और कपट अंतर्गति ज्यों फल खीर नीर चिकनाई ॥ तब वह करी नंदनंदन अलि वनवेली रसरास खिलाई । अब यह कितनी दूरि मधुपुरी ज्यों उडि भँवर बेलितजि जाई॥ योग सिखाए क्यों मन मानै क्यों व ओसकण प्यास बुझाई। सूरदास उदास भईं हम पाखंड प्रीति उघरि निज आई ॥१०॥ राग मलार॥मधुकर मन सुनि योग डरै । तुमहूं चतुर कहावत अतिही इतनी न समुझि परै॥ और सुमन जो अनेक सुगंधिक शीतल रुचि जो करै । क्यों तुमको कहि बनै सरै ज्यों और सबै अनरै॥ दिनकर महाप्रताप पुंज वर सबको तेज हरै । क्यों न चकोर छाँडि मृग-अंकहि वाको ध्यान धरै ॥ उलटोइ ज्ञान सकल उपदेशत सुनिसुनि हृदय जरै । जंबू वृक्ष कहो क्यों लंपट फलवर अंब फरै॥मुक्ता अवधि मराल प्राणमै अबलगि ताहि चरै । निघटत निपट सूर ज्यों जल बिनु व्याकुल मीन मरै ॥ ११ ॥ राग आसावरी ॥ ऊधो योगयोग हम नाहीं । अबला सार ज्ञान कहा जानैं कैसे ध्यान धराहीं ॥ ते ये मूँदन नैन कहतहैं हरिमूरति जामाहीं। ऐसी कथा कपटकी मधुकर हमते सुनी न जाहीं ॥ श्रवण चीर अरु जटा बँधावहु ए दुख कौन

समाहीं ॥ चंदन तजि अँग भस्म बतावत विरह अनल अति दाहीं । योगी भरमत जेहि लगि भूले सो तो है अपुमाहीं । सूर श्यामते न्यारे न पल छिन ज्यों घटते परछाहीं ॥ ॥१२॥ राग मलार ॥ ऊधो कहिए बात जो हुती । जाहि ज्ञान सिखवन तुम आए सो कहो ब्रजमेंको हुती ॥ अंतहु सिखवन सुनहु हमारी कहियत बात बिचारी । फुरत न वचन कछू कहिबेको रहेबैन सो हारी ॥ देखियतहै करुणाकी मूरति सुनियतहै परपीरक । सोइ करौ जो मिटै हृदयको दाहु परै उर सीरक ॥ राजपंथते टारि बतावत उज्ज्वल कुचल कुपैंडो । सूरदास सो समाइ कहांलौं अजावदनमें कुम्हडो ॥ १३ ॥ राग सारंग ॥ हमतो नंदघोषके वासी । नाम गोपाल जाति कुल गोपक गोप गोपाल उपासी ॥ गिरिवरधारी गोधन चारी वृंदावन अभिलासी । राजा नंद यशोदा रानी जलहि नदी यमुनासी ॥ मीत हमारे परममनोहर कमलनयनसुखरासी । सूरदास प्रभु कहौं कहांलौं अठसिधि नवनिधि दासी ॥ १४ ॥ राग सारंग ॥ गोकुल सब गोपाल उपासी । जे गाहक साधनके ऊधो ते सब वसत ईशपुर कासी ॥ यद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि तऊ रहति चरणनरसरासी अपनी शीतलता नहिं तजई यद्यपि बिधु भयो राहुगरासी ॥ किहि अपराध योग लिखि पठवत प्रेमभक्तिते करत उदासी । सूरदास सो कौन विरहिनी माँगि मुक्तिछाँडै गुणरासी ॥ १५ ॥ राग मलार ॥ ब्रजजन सकल श्यामव्रतधारी । बिना गोपाल और जेहि भावत ते कहिहैं व्यभिचारी ॥ योगमोट शिरबोझ आनि तुम कतधौं घोष उतारी ॥ इतनिक दूरि जाहु चलि काशी जहां बिकतहै प्यारी ॥ यह संदेश सुनै को मधुकर अति मंडली अनन्य हमारी । जो रसरीति कही हरि हमसों सो क्यों जाति बिसारी ॥ महामुक्ति कोऊ नहिं बाँछै यदपि पदारथ चारी । सूरदास स्वामी मनमोहनमूरति-की बलिहारी ॥ १६ ॥ राग धनाश्री ॥ कहांलौं कीजैबहुतबडाई । अति अगाधमनअगमअगोचर मनसो तहाँ न जाई ॥ जाके रूप न रेख बरन वपु नाहिंन संगति सखा सहाई । ता निर्गुणसों नेह निरंतर क्यों निबहै री माई ॥ जलबिन तरंग भीतिबिन हू लेखन बिन चेतहि चतुराई । या ब्रजमें कछु नहीं चाह है ऊधो आनि सुनाई ॥ मन चुभि रही माधुरी मूरति अंगअंग उरझाई । सुंदर श्याम कमलदल लोचन सूरदाससुखदाई ॥ १७ ॥ राग नट ॥ ऊधोकछुक समुझिपरी । तुम जु हमको योगल्याए भली करनि करी ॥ इक बिरह जरिरही हरिके सुनत अतिही जरी । जाहु जिनि अब लोन लावहु देखि तुमहिं डरी ॥ योगपाती दई तुमकर बडे चतुर हरी । सूरदास स्वामीके रँग रचि कहँ धरैं गठरी ॥ १८ ॥ राग कान्हरो ॥ कहत अलि तेरेमुख बातौ । कमलनयनकी कपटकहानी सुनिन भयोतातो ॥ कत ब्रजराज काज गोकुलको सबै किए गहिनातौ । तब नहिं निमिष वियोग सहति उरकरत काम नहिं हातौ । मधुवन जाइकान्ह कुबिजासंग मतिभूलहु सुधिसातौ ॥ ज्यों गजयूथ नेक नहिंबिछुरतशरद मदन मदमातौ । सूर श्याम बिन हमसबअबला या तन कहाँ समातौ ॥ १९ ॥ राग धनाश्री ॥ तुमअलि कमलनयनके साथी । देखत भले काजको जैसे होत धूमके हाथी ॥ सुंदर श्याम गंड मद लंकृत सम श्रम जलकन छाजै । योग ज्ञान दोउ दशन भोग रद करनी कुंभ विराजै ॥ जब शिशु हुते कुमार असुर हति याते प्रीतम जाने । अब भए जाइ विवश दासीके ब्रजते प्रगट पराने ॥ करिकै कपट तुच्छ विद्यावश भगन करत अँग भट ज्यों । सूर अवधि पढि मंत्र सजीवन मरि जीवतहै नटज्यों ॥ २० ॥ राग सारंग ॥ ऐसो सुनियत द्वै वैशाख । जानत हौं जीवन काहेको जतन करौ जो लाख ॥ मृगमद मिलै कपूर कुमकुमा केसरि मलया खाख । जरति अग्निमें ज्यों घृत नायो तनु जरि ह्वैहै राख ॥ ता ऊपर लिखि योग पठावत खाहु नींब तजि दाख । सूरदास ऊधोकी बतियां उडि

उडि बैठीं ताख॥२१॥राग नट॥जानी ऊधोकी चतुराई। बारबार तुम कहत अध्यातम पावत कौन बडाई॥ जो तुम कहत अगाध अगोचर हरिरस तजो न जाई। कौतुक कहत उकुति अपनीतें को तुम कहत कहाई॥ बाहर भीतर ध्यान सगुन बिनु सुनियत दूरि भलाई। सूरदास प्रभुविरह जरी हैं बिनु पावक दौ लाई॥ २२ ॥ राग सारंग॥ जानी अलि ऊधो चतुराई। ब्रजमंडलकी दशा देखिकै कथा सबै बिसराई॥ परमप्रिया पथ देखन पठए कहि गति योग बनाई। इनको आन भाव बिछुरनको लै बाजनि हम लाई॥कहा कह्यो हरि कहा सुन्यो इनि कहि लीला मुख गाई। यद्यपि बिबुध बडे यदुकुलके नेक न बढी बडाई॥ गुणमहि मंत्र सदा श्रीपतिके मुक्तिपुरी अब गाई।नहिं देखी ब्रजवनकी लीला सूर श्याम लरिकाई॥२३॥राग मलार॥ इहिबिधि पावस सदा हमारे।पूरब पवन श्वास उर ऊरध आनि जुरे एकठारे॥बादर श्याम श्वेत नयननमें वरषि आँसु जलढारे।अरुन प्रकाश पलक दुति दामिनि गर्जन नाम पिय्यारे॥ चातक दादुर मोर प्रगट ब्रज बसत निरंतर धारे। ऊधो ए तबते अटके जब श्याम रहे हिततारे॥ कहिए काहि सुनै कत कोऊ या ब्रजके व्यवहारे। तुमहींसों कहिकै पछितानी सूर विरहके धारे॥ २४॥ ॥राग केदारो॥जोपै कोऊ मधुवनहूंलौं जाइ। पतियां लिखौं श्यामसुंदरको कंकन दैहौं ताहि॥ नयननीर सारंगरिपु भीजत युगसम रैनि बिहाइ। अब यह भवन भयो पावकसम हरि बिन मोहिं न सुहाइ॥पछिली प्रीति कहा भई ऊधो मिलते वेणु बजाइ। सूरदास प्रभु बेगिमिलहुकिन पुनि कहा करोगे आइ॥ २५॥राग बिलावल॥ ऊधो कोकिल कूजत कानन।तुम हमको उपदेश करतहौ भस्म लगावन आनन॥औरौ सींगी सखी संगलै टेरत चढे पषानन।बहुरो आइ पपीहा-के मिस मदन दहत निज बानन॥ हमतौ निपट अहीरि बावरी योग दीजिए जानन। कहा कथन मौसीके आगे जानत नानी नानन॥तुमतौ हमहिं सिखावन आए मुक्ति होइ निर्वानन।सूर मुक्ति कैसे पूजतिहै वा मुरलीके तानन॥२६॥ राग सारंग॥ऊधो हरिके अवरै ढंग। जहां न अनंग रस रूप नेहको तहाँ दई गति जो अनंग॥ आपु विषमता तजि दोउ सम भै बानक ललित त्रिभंग। मानो मरिचि देखि तनु भूली भूपथ सुरभि सुरंग॥ तजे कुसुम कर कंटक वन भ्रमि नहिं कामो भ्रूभंग। कनकबेलि शतदल सर मंडित दृढतर लता लवंग॥ श्यामासदन बिसारि भजे पुर चंचल नारि पलंग॥ ते सुख बहुत बहुत पावहिंगे जे करिहैं अँगसंग। काके होहिं जो नहिं गोकुलके सूरज प्रभु श्रीरंग॥२७॥राग आसावरी॥ऊधो हम दोउ कठिनपरी।जो जीवैं तोमुनिजडज्ञा-नी तनु तजि रूप हरी॥ गुण गावैं तौ शुक सनकादिक धाय लीला फरी।आशा अवधिबिचारि रहैं तौ धर्म न ब्रजसुंदरी॥ सखीमंडली सब जो सयानी विरहा प्रेम भरी। शोक समुद तरिबेको नौका जे मुख मुरली धरी॥निशिवासर निरअंकुश अति बड मातो मदन करी। ढाहत धाम सूर प्रभु चितवत गमन करै केसरी॥ २८ ॥राग केदारो॥ऊधो सुनिहौ बात नईसी। प्रेमबानिकी चोट कठिन है लागी होइ कहो कत ऐसी॥ तुमहि बिचारि कहा कहि दीजै आनि कहतरे जैसी। जानै कहा बाँझ ब्यावर दुख जातक जनहिं पीरहै कैसी॥ हम बावरिन आनि बौरावत कहत न तुम्हैं बूझिए ऐसी। सूरदास न्याइ कुबिजाको सरबसु लेइ हमारो वैसी ॥२९॥यशोमति वचन।केदारो॥ऊधो उदित भई सब दुखकी करनी।ब्रजवेली सब सूखन लागीं बात कही नँदघरनी॥ कमलवदन कुँभिलात सबनके गोवन छाँडी तृणकै चरनी। सुख संपति बिति गयो सदनकी लागी अलि अनजलकी झरनी। देखौ चारु चन्द्रमुख शीतल बिन दरशन क्यों मिटती जरनी।सुतसनेह समुझति सु सूर प्रभु फिरिफिरि यशुमति परती धरनी॥ ३०॥

राग सारंग॥ ऊधो पूंछति ते बावरी। गोकुल तजो कूबरी कारण नेहनहोतिजोरावरी॥जैसोबीज बोइए तैसो लुनिए लोग कहत सब बावरी। सूरदास प्रभु पारस परसे लोहोकनकबराबरी॥३१॥ राग गौरी॥ मधुकर देखो दीनदशा।इतनी बातैं तुमसों कहतिहैं जो तुम श्याममखा॥जेकारेतेसबै कुटिलहैं मृतकनके जेहता। तुम विरहिनी विरहदुख जानत कही यह गूढ कथा॥ मन वश भयो श्रवण सुनि मुरली कुंजनि कुंज बसी। अबतौ एक न भए सूर प्रभु घर बन लोगहँसी॥३२॥ राग सारंग॥जैसे कियो तुम्हारे प्रभु अलि तैसो भयो ततकाल।ग्रंथितमूतधरततेहिंग्रीवाजहांधरते बनमाल॥ टेरि देत श्रीदामा द्रुम चढि सरस वचन गोपाल। ते अब श्रवण अक्रूरप्रमुख सब कहत कंस कुशलात॥ कोमल नील कुटिल अलकावलि रेखी राजत भाल। ऐसे शर त्यागे सुन सूरज फंदा न्याइमराल॥ ३३॥राग मलार॥ विरचिमनबहुरि राचोआइ।टूटीजुरैबहुतजतननिकरितऊ दोष नहिं जाइ॥कपट हेतुकी प्रीति निरंतर नोथि चोखाई गाइ।दूध फाटि जैसे भइ कांजी कौन स्वाद करि खाइ॥ केरा पासि ज्यों बेरि निरंतर हालत दुख दैजाइ। स्वातिबूंद जैसे परै फनिक-मुख परत विषै ह्वैजाइ॥एती केती तुमरी उनकी कहत बनाइ बनाइ। सूरजदास दिगंबरपुरते रजक कहा ब्योसाइ॥ ३४॥ ऊधो तुम हौ अति बडभागी। अपरस रहत सनेह तगाते नाहिंन मन अनुरागी॥ पुरइनि पात रहत जल भीतर ता रस देह न दागी। ज्यों जल-माँह तेलकी गागरि बूँदन ताको लागी॥ प्रीतिनदीमहँ पाँव न बोरचो दृष्टि न रूप परागी। सूरदास अबला हम भोरी गुरचैंटी ज्यों पागी॥ ३५॥राग धनाश्री॥ हमते हरिकबहीनउदास।रास खिलाइ पिआइ अधररस क्यों बिसरत ब्रजबास॥ तुमसों प्रेमकथाको कहिबो मनहु काटिबो घास। बहिरो तान स्वाद कहा जानै गूँगो खात मिठास॥ सुन री सखी बहुरि हरि ऐहैं वह सुख बढ़े विलास। सूरदास ऊधो हमको अब भए तेरहौं मास॥ ३६॥ तेरो बुरो नकोईमानै।रसकीबात मधुप नीरस सुनि रसिक होइ सो जानै॥ दादुर बसै निकट कमलनकेजन्मनरसपहिचानै।अलि अनुराग उडत मन बाँध्यो कही सुनत नहिं कानै॥ सरिता चली मिलन सागरको कूलसबैद्रुम भानै। कायर बकै लोभते भागै लरै सो सूर बखानै॥ ३७॥ हम सब जानत हरिकी घातैं। तुम जो कहत वो राज्य करत नहिं जानत हौ कछु कातैं॥ मारे कंस सुरन सुख दीनो असुर जरे पिर पातैं। उग्रसेन बैठारि सिंहासन लोग कहत कुलनातैं॥ तपते राज राजते आगे तुमसब समुझत बातैं। सूर श्याम यहि भाँति सयाने हमहींको वदु सातै॥ ३८॥ राग नट॥ ऊधो हैतूहरिके हितको।हम निर्गुण तबहींते जान्यो गुण मेटचो जब पितुको॥ समुझहु नेक श्रवण दै सुनिएप्रगट बखानौं नितको। कूपरत्न घटकहु क्योंनिकसैबिनुगुनबहुतेवितको॥ पूरणतातोतबहींबूडीसंगगए लै चितको। हमतौ खगहि सूर सुनि षटपद लोक बटाऊहितको॥३९॥राग काफी॥आयोघोषबडो ब्यापारी। लादि पोषि गुणज्ञान योगकी ब्रजमें आनिउतारी॥फाटकदैकेहाटकभागत भोरोनिपट सुधारी। धुरहीते खोटो खायो है लिये फिरत शिर भारी॥ इनके कहे कौन डहकावै ऐसी कौन अनारी। अपनो दूध छाँडि को पीवै खारे कूपको वारी॥ ऊधो जाहु सबेरे ह्यांते बेगि गहर जनि लावहु। मुखमाँगोपैहोसूरजप्रभुसाहुहिआनिदिखावहु॥४०॥राग धनाश्री॥ऊधोयोगकहाहैकी-जतु। ओढिअतहै की डसिअतहै किधौं कहियतकिधौं पतीजत॥ कीकछुभलोखेलबनीसुंदरिकी कछु भूषण नीको। हमरे नँदनंदन जो कहियत जीवनजीवन जीको। तुम जो कहत हरि निगम निरंतर निगम नेति है रीति। प्रगट रूपकी राशिमनोहरक्योंछाँडैपरतीति॥गाइचरावनगएघोषतें

अबहीं हैं फिरि आवत। सोई सूर सहाय हमारे वेणुरसालबजावत॥४१॥ राग मलार ॥मधुकरजानो ज्ञान तिहारो । जानैकहा राजलीलाको अंतअहीरबिचारो॥एकभलीहमसबेसयानीएकसयानीसों मनमानो ।लाज लए प्रभु आवत नाहीं है जो रहे खिसिआनो ॥ लैआवौहमकछूनकेहैंमिलिहैं प्राण पियारे । ब्याहो बीस धरो दश कुबिजा अंतहु श्याम हमारे॥सुन री सखी कहूं नहिं कहिए माधो आवनदीजै। सूरदास प्रभु आनि मिलैं जो हाँसी करिकरि लीजै ॥४२मधुकरतुमहींश्याम सखाई । पालागों यह दोष बकसियो सन्मुख करत ढिठाई ॥ कौनेरंक संपदाविलसीसोवतसपने पाई । धाम धुआँको कहो कवनके कवनै धाम उठाई॥ अरु कनकी माला कर अपने कौने गूँथि बनाई। कहि कागजकी तरनी कीन्हें कौन तर्‌यो सर जाई॥ किन अकाशतेतोरितरैआ आनि धरी घरमाई । और कौन अबलन ब्रत धार्‌यो योग समाधि लगाई ॥ इहि उर आनि रूपदेखेकी आगि उठै अगिआई । सुन ऊधो तुम फिरिफिरि आवत यामें कौन बडाई ॥ सूरदास प्रभु ब्रज युवतिनको प्रेम कह्यो नहिं जाई ॥ ४३ ॥ राग गौरी ॥मनकीमनहींमांझरही।कहिएजाइकौनपैऊधो नाहिंन परत कही ॥ अवधि अधार आश आवनकी तन मन ब्यथा सही। चाहतिहुती गोहारि जितहिते तितहिते धार बही ॥ अब इन योग सँदेशन सुनिसुनि बिरहिनिबिरहदही। सूरदासअब धीर धरहिं क्यों मर्यादा न लही ॥४४॥ राग गौरी ॥तुमहिंदोषनहिंहमअतिबौरी।रूपनिरखिहग लागेहैं ढौरी ॥ चित चोराइ लियो मूरति सौंरी । सुभग कलेवर कुमकुम खौरी ॥गुंजमालउरपीत पिछौरी । यहिते जो नेकुलबुधियौ री ॥ गहत सोइ जो समात अँकौरी ।सूरश्यामसोंकहियोएक ठौरी ॥ यह उपदेश सुनहिं ते औरी ॥ ४५ ॥ राग नट ॥ श्याम तुम ठगसों प्रीति करी । काटे नाक पछोरे पूँछत ताते सब सुधरी ॥ ह्यां ऊधो काहेको आए कौनसी अटक परी । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु सब पाती उघरी ॥ ४६ ॥ राग सारंग ॥ऊधो नवतन राज भयो। नए गोपाल नई कुबिजा बनी नौतन नेह ठयो ॥ नए सखा जोरे यादवकुल अरु नृप कंस हयो ।नवतननारि नए पुर कीन्हों तिन अपनाइ लयो ॥ बिसरे रासविलास कुंज सब अपनी जाति गयो । सूरदास प्रभु बहुत बटोरी दिनदिन होत नयो ॥ ४७ ॥ अब तुम कापर कपट बनावत ।नाहिंनकंसकान्ह नहिं गोकुल को पठवत कहां आवत ॥ जिन मोहन बंसी वारिज करि सुख तन सींचि बढायो। सो पुनि ऊधोकर कारनको योगकुठार पठायो॥ इतनो तौ मानुषही जानैं जिनकेहैं मतिथोरी । धोखेहू बिरवा लगाइके काटत नाहिं बहोरी॥ वै प्रवीन ऊधो अति नागर जानिपरस्परप्रेम।कैसे- कै पठवत वै आवत टारनको हित नेम ॥ स्वर्गहु गए कंस अपराधी पर्‌यो हमारेखोज।दृष्टितेटारि ध्यानहुते टारत वाऊ सबको चोज ॥ विद्यमान आए जे छल करि तिन अपनो फल पायो । ह्याँ है हिरदय सूर श्याम प्रभु बनत न स्वांग बनायो ॥ ४८ ॥ अपने स्वारथके सबकोऊ । चुप करि रहो मधुप सुन लंपट तुम देखे अरु ओऊ ॥जो कछु कहो कह्यो चाहतहौ करि निरवारो सोऊ ।अब मेरे मन ऐसी षटपद होवै होउ सु होऊ॥तब कतरासरच्योवृंदाबनज्योंज्ञानीहू तोऊ। लीने योग फिरत युवतिनमें बडे सुपथ तुम दोऊ ॥ छुटिगयो मान परेखो रे अलि हृदय हतो बहु जोऊ। सूरदास प्रभु गोकुल बिसरो चित चिंतामणि खोऊ ॥ ४९ ॥ राग नट ॥ कहत कत परदेशीकी बात ॥ मंदिर अरध अवधि बदी हमसों हरिअहार चलिजात ॥ शशि- रिपु वरष सूररिपु युगवर हररिपु किए फिरै घात। मघ पंचम लैगए श्यामघन ताते जिय अकुलात ॥ नखत वेद ग्रह जोरि अर्ध करि बनि आवै सोइ खात। सूरदास प्रभु तुम-

हिं मिलनको कर मींडत पछितात ॥ ५० ॥ राग मलार ॥ ऊधो जानी न हरि यह बात। बैठे रथपर चढे भोरही हँसत मधुपुरी जात ॥ सुफलकसुत मिलि ढँग ठान्यो है साधे विषमन घात। जेतक बडे धर्मध्वज नामी संग प्रेम पथ पात ॥ यदुकुलमें दोउ संग सबै कहैं तिनके ए उतपात। एकन हरे प्राण गोकुलके यापर योग कुशलात ॥ यद्यपि सूर प्रताप श्यामको दानव दूरि दुरात। तद्यपि भवन भाव नहिं ब्रज बिनु खोजो दीपै सात ॥ ५१ ॥ हम अलि कैसेकै पतिआहिं। वचन तुम्हारे हृदय न आवत क्योंकरि धीर धराहिं ॥ वपु आकार भेष नहिं जाको कौन ठौर मन लागै। हौं करिरही कंठमें मनिआं निर्गुण कहा रसहिते काज ॥ सूरदास सर्गुण मिलि मोहन रोमरोम सुखराज ॥५२॥ राग मलार ॥ मधुकरजानतहैंसबकोऊ। जैसे तुमअरुसखातिहारे गुणन आगरे दोऊ ॥ सुफलकसुत कारे नखशिखते कारे तुम अरु वोऊ। सरबस हरन करत अपनेसुख कोउ कितो गुण होऊ ॥ प्रेम कृपण थोरे वित वपुरी उबरत नाहिंन सोऊ। सूर सनेह करै जो तुमसों सो पुनि आपु बिगोऊ ॥ ५३ मधुकर तुम रसलंपट लोग।कमलकोश नित रहत निरंतर हमहिं सिखावत योग ॥ अपने काज फिरत बन अंतर निमिष नहीं अकुलात। पुहुप गए बहुरौ बल्लिनके नेक निकट नहिं जात ॥ तुम चंचल अरु चोर सकल अँग बातन को पतिआत। सूर बिधाता धन्यरचे एइमधुपसाँवरे गात॥५४॥ राग सारंग ॥ मधुप रावरीयेपहिंचानि।बासरसमय अनत उठि बैठत पुहुपनकी तजि कानि॥ बाटिका बहु विपिन जिनके एक वै कुम्हिलानि।तहां अगणित फूल फूले कौन ताके हानि॥ काम पावक जरत छाती लोन लायो आनि।योगपाती हाथ दीनी विष लगायो सानि ॥शीशकीमणि हरीजाकीकौन जामें बानि 'निठुरहौतुमसूरके प्रभुब्रज तज्यो यह जानि ॥ ५५ ॥ को कहिहै हरिसों बात हमारी।यहतौ हमतबतेजियजानी जबतें भए मधुप अधिकारी। एकै प्रकृति एकई तवगति जे मनसिज असितहि क्यों भावै। प्रगटेनितनवकंजमनोहर ब्रजकी सरक करन कत आवै॥ कुटिल खान चंपक चंचल मति सबहीते जु निनारी।ता अलिकी संगति बसि मधुपुरी सूरदास प्रभु सुरति बिसारी॥५६॥ मधुकर तुमअतिचतुरसुजान। जे पहिले मनरँगे श्यामरँग अब न चढै रँग आन॥ए दोऊ लोचन विराटके बिधिकियेएकसमान। भेद चकोर कियो ताहूमें विधु प्रीतम रिपुभान॥ बिरहा भेद भयो पालागौंतुमहौपूरणज्ञान।दादुर जलबिन जिवै:पवन भख मीन तजै हठिप्रान॥बाजिवदननैनमेरे षटपद कब करिहैं मधुपान। सूरदास गोपिन परतिज्ञा छुवहिं नयोगबिरान॥ ५७॥ऊधोबिरहीप्रेमकरै। ज्यों,बिन पुट पट गहत न रँगको रंगनरसै परै॥ज्यों धर देह बीज अंकुर गिरि तौ सतफरनि फरै। ज्योंघटअनलदहततनअपनो पुनि पय अमी भरै॥ज्यों रण शूर सहत शर सन्मुख तौ रविरथहि ररै। सूर गोपाल प्रेमपथ चलिकरि क्यों दुख सुखन डरै ॥५८॥ राग मलार ॥ मधुकर प्रीति किए पछितानी। हम जानी ऐसेहि निबहैगी उन कछु औरैठानी॥वा मोहनको कौन पतीजै बोलतमधुरीबानी।हमको लिखि लिखि योग पठावत आपु करत रजधानी ॥ अबतोसेज सुहाइ न हरिबिन चितवत रैनि बिहानी। जबते गमन कियो मधुवनको नैनन वरषत पानी ॥ कहियो जाइ श्यामसुंदरको अंतरगतिकी जानी। सूरदास प्रभु मिलिकै बिछुरे ताते भई दिवानी ॥ ५९ ॥ हमरे हरि हारिलकी लकरी। मन क्रम वचन नंदनंदन उर यह दृढ करि पकरी ॥ जागत सोवत स्वप्न दिवस निशि कान्ह कान्ह जकरी। सुनत योग लागत हमैं ऐसो ज्यों करुई कँकरी॥ सुतौ व्याधि हमको लै आए देखी सुनी न करी। यह तौ सूर ताहि लै सौंपो जिनके मन चकरी ॥ ६० ॥ राग सारंग ॥ बात

हमारी मानो जौतौ।आवन कह्यो हुतोहमजीवति ताते उनही कौतौ॥एक बोलके लीन्हेंसोईअपनी खोई देवति। ताते खरी मरत इहि ठाहर वाही वचनहि सेवति॥ इतनो कह्यो करौ धरि राखौ योग आपने घरको। पैज खैंचि मेटन आए हौ तनक उजारो खरको॥ नँदनंदन लैगए हमारी सब ब्रजकुलकी ऊब। सूर श्याम तजि औरै सूझै ज्यों खेरेकी दूब॥६१॥राग मलार॥ श्याममुख देखेही परतीति। जो तुम कोटि जतन करि सिखवहु योग ध्यानकी रीति॥नाहिं न कछू सयान ज्ञानमहिं यह हम कैसे मानैं। कहो कहा गहिए अनुभवको कैसे उरमें आनैं॥एही मन इक इक वह मूरति भृंगी कीट समानैं। सूर शपथ दै पूँछौ ऊधो यहब्रज लोग सयानैं॥६२॥राग सारंग॥ हरि हैं राजनीति पढिआए।समुझी बातकहत मधुकरसे समाचारसब पाए॥ पहिलेही अति चतुर हुते अरु गुरु सब ग्रंथ दिखाए। बाढी बुद्धि कहत युवतिनको योग सँदेश पठाए॥आगेहूके लोग भलेहो परहित डोलत धाए। अब अपने मन फेरि पाइहैं चलत जो होहिं पराए॥ते क्यों नीति करैं आपुन जिन औरन अपथ छडाए।राजधर्म सुनि इहै सूर जिहि प्रजा न जाहिंसताए॥६३॥ बारक मिलत कहा है होत। इतनेहुँ मान कहा उहि कुबिजा पाएहैं पारिपोत॥ इतनिक दूरि भए कछु औरै बिसरयो गोकुल गोत। कैसे जियहिं बदन बिनु देखे विरहिनि विरहिनि सोत॥ आए योग देन अबलनिको सुरभिकंठ वृष जोत। सूरदास प्रभु तौ पै जीवहिं देखहिं रविहि उद्योत॥६४॥राग मलार॥मधुकर नाहिंन काज सँदेशो। इहि ब्रज कौने योग लिख्यो है कोटि जतन उपदेशो॥ रविके उदय मिलन चकईको शशिके समय अँदेशो। चातक क्यों बन वसत बापुरो बधिकहि काज वधेसों॥ नगर आहि नागर बिनु सूनो कौन काज बसिबेसों। सूर स्वभाव मिटै क्यों कारे फनिकहि काज डसेसों॥ ६५॥ ऊधो हम वह कैस मानैं। धूत धौल लंपट जैसे हरि तैसे और न जानैं॥ सुनत सँदेश अधिक तनु कंपत जनि कोउ डर तहाँ आनै। जैसे वधिक गँवहिंते खेलत अंत धनुहियां तानै॥ निर्गुणवचन कहहु जनि हमसों ऐसी करटि न कानैं॥ सूरदास प्रभुकी हौं जानौं और कहैं औरै कछु ठानैं॥६६॥राग मलार॥ ऊधो अब कछु कही न जाइ।रानीभई कूबरीदासी कापै वरणी जाइ॥ जोइजोइमंत्रकहतकुबिजाहैसोइसोइ लिखत बनाइ।अंत अहीर प्रीति दासीसों मिटत न सहज सुभाइ।' छुटत नहीं गुण अवगुण जाकोकीजे कोटि उपाइ।सूर सुभाइ तजै नहिं कारोकीजैकोटिउपाइ॥६७॥राग मलार॥ बदलेकोबदलोलैजाहु। उनकी एक हमारी दोइ तुम बडे जनैऔ आहु॥ तुम अलि जानि अतिहि भोरेसंसारोचाहतदाव। अपनी बेर मुकरिकै भागत हिए,चौगुने चाव॥अब तुम साखि बँधो तहाँ जाई काहेको पछिताहु। सूरदास वह न्याउ निबेरहु हम तुम दोऊ साहु॥६८॥राग मलार॥ऊधोजी यहि ब्रज बिरह बढे। घर बाहर सरिता सर वन उपवन देखहु द्रुमन चढे॥दिन अरु रैनि सधूम भवनके दिशिदिशि तिमिर मढे। द्वंदकरत अति प्रबल बलीबल जीवन अनल उढे॥ जरि नहिं भई भसम तेही छिन जब हरि वचन रढे। सूरदास विपरीति विधाते यहितनु फेरि ठढे॥ ६९॥ ऊधो जो तुम बात कही। ताको कछुअ न उत्तर आवै समुझि बिचारि रही॥ पालागौं तुमही बूझतहौं तुमपर बुधि उमही। कैसे शीतल होइ पवन जल पिए वियोग दही॥ कुबिजासों पढि तुमहिं पठाए नागर नवल लही। अब जोई पद देहिं कृपा करि सोइ हम करैं सही॥ बिछुरत बिरहअग्नि नाहीं जरी नैनन जल न बही। अब सुनि शूल सहति सब सूरज कुलमर्याद ढही॥ ७०॥ योग मिटि पतिआहू ब्योहारु॥ मधुवन बसि मधुरिपु सुनु मधुकर छाँड ब्रज आभारु॥ धरणीधर गिरिधर कर धरिकै मुरली धर

सुखसारु।अब लिखि योगसँदेशो पठवत व्यापक अगम अपारु॥हांसीअरु दुख सुनहुसखीसुठि श्रवण दशा संचारु।सूर प्राण तनतजतन याते सुमिरिअवधिआधारु॥७१॥राग सारंग॥मधुकर जो हरि कही सो करो।राजकाज चित दियो साँवरे गोकुल क्यों बिसरो॥जेजे घोषरहे हमतेहिलौं संतत सेवा कीनी। बारक कबहुँ उलूखल बाँधे उहै बाँधिजिय लीनी॥जो हमसों कोटि करैंब्रज-नायक बहुतै राजकुमारी। तौ ए नंद कहाँ मिलिहैं औ यशुमतिसी महतारी॥ गोवर्धन कहँ गोपवृंदसचुकहाँगोरससचपैबो।सूरदासअबसोईकरिएबहुरिगोकुलहि ऐबो॥७२॥राग सोरठ॥ऊधो हरि यह कहा विचारी।सदा समीप रहत वृन्दावन करत विहार विहारी॥एकतौ रंग रचे कुबिजाके बिसरिगए सब नारी।कछुइक मंत्र कियोउन दासी तेहि विनोद अधिकारी॥ दिनदशऔररहौतुम इहां देखो दशा विचारी।प्राण रहतहैं आशा लागे कब आवैं गिरिधारी॥ तुमतौकहतयोगहैनीको कहो कवन बिधिकीजै।हमतन ध्याननंदनंदनको निरखिनिरखिसो जीजै॥सुंदरश्यामकंठवैजंती माथे मुकुट विराजै। कमलनैन मकराकृतकुंडल देखतही भवभाजै॥याते योगनआवैमनमेंतूनीके करि राखि।सूरदास स्वामीके आगे निगम पुकारत साखि॥७३॥राग बिहागरो॥मधुकर बहुरि न कबहुँ मिलैं हरि। कमलनयन मिलबेके कारण अपनोसो जतन रही बहुतै करि॥ जेजे पथिक जात मधुवनको तेहिसों व्यथा कहति पाँयन परि। काहे न प्रगट करौ यदुपतिसों दुसह दोषकी अवधि गई ढरि॥ धीर न धरत प्रेमव्याकुल मन लेत उसाँस नीर लोचन भरि।सूरदास तनु थकित भयो अति इह वियोग सायर न सकत तरि॥७४॥ राग सारंग॥मधुकर अब भयो नेह बिरानी। बाहर हेत हतो कहवावत भीतर काज सयानी॥ ज्यों शुक पिंजरमाहँ उचारत ज्यों ज्यों कहत बखानी। छूटतही उडि मिलै अपुन कुल प्रीति न पल ठहरानी॥ यद्यपि मन नहिं तजत मनोहर तद्यपि कपटी जानी। सूरदास प्रभु कवन काजको माखी मधु लपटानी॥७५॥ राग सोरठ॥ हरिते भलो सुरपति सीताको। जाके विरह जतन ए कीने सिंधु कियो नीताको॥ लंका जारि सकल रिपु मारे देखतही मुख ताको। दूत हाथ उन लिखि जो पठयो ज्ञान कह्यो गीताको॥ तिनको कहा परेखो कीजै कुबिजाके मीताको। चढे सेज सो तो सुधि बिसरी जो सब सुख चीताको॥ चढिचढि सेज सातहू सिंधू बिसरी जो चीताको॥ करि अति कृपा योग लिखि पठयो देखो डराई ताको। सूरदास प्रभु हम कहा जानैं अब लोभी बनिताको॥ ७६॥ राग नट॥ ऊधो हम ब्रजनाथ बिसारी। जबते गमन कियो मथुराको चितवत लोचन हारी॥ महाप्रलय तब काहेको राखी इंद्रत्रास भवटारी। छूटत नहीं त्रास हृदयेते तब न मुई अब मारी॥ अवधि बदी हरि ते सब बीतीं आवन कहि जो सिधारी। सूरदास प्रभु कबधौं मिलैंगे लैगए प्राण हमारी॥७७॥ राग मलार॥प्रीति उन देखन को उत जानत। तौ यों बात कहत अलि ऐसे व्यथा नहीं पहिचानत॥ जे गोपाल गृहगृह ब्रजमेंते चोर दूध दधि खात। ते अब दुखित देखि ब्रजवासिन निठुर भए ते जात॥सूर कुटिलता जे सुनियतहैं लोग पुराणनि गावत।नखशिखलौं विषरूप बसतपै मधुवन नाम कहावत॥ ७८॥ तू अलि बात नहीं कहि जानत। निर्गुण कथा बनाइ कहत नहिं विरहव्यथा उर आनत॥ प्रफुलित कमल देखि उठि धावत सब कुल संग लिए। और सुमन सौ बंधु याचतहौ फाटि न जात हिए॥ चातक स्वाति बूँद जो गाहक सदा रहत इकरूप। कहा जानै दादुर जल पैरत सागर औ समकूप॥बात कहौसजि ऐसीजासोंजाकेजियतुम भावहु।सूर वचन जैसोउपदेशत तैसोही तुम पावहु॥७९॥सारंग॥कुटिलबिनु औरनकोईआवै।तौ ब्रजराज प्रेमकी बातैंताकेहाथ पठावै॥प्रीति

पुरातन सुमिरि सांवरे सुरति सँदेशो दीनी । तैं अलि कहत औरकी औरै श्रुति मतिकी उर लीनी ॥ ये हो सखा कहे नहिं मानत गहे योगकी टेक । ऐसे सूर बहुत मधुबनमें कहा दोष हैं एक ॥८०॥ राग धनाश्री॥ बतिअन सबकोऊ समुझावै । ऐसो कोउ नाहिंनै प्रीतम लै ब्रजनाथ मिलावै ॥ आयो दूत कपटको बासी निर्गुण ज्ञान बतावै । सखा हमारे श्याम मनोहर नैनन भरि न देखावै॥ज्ञान ध्यानको मर्म न जानै चतुरहि चतुर कहावै। सूरजदास सबैकाहूको अपनो ही हित भावै ॥८१॥ राग मलार ॥ ऊधो क्यों बिसरत वह नेह । हमरे हृदय आनि नँदनंदनरचि रचि कीन्हे गेह ॥ एक दिवस गई गाइ दुहावन तहां जो वरषो मेह। लिये वोढाय कामरी मोहन निज करि मान्यो देह ॥ अब हमको लिखिलिखि पठवतहैं योगयुक्ति तुम लेहु। सूरदास बिरही क्यों जीवै कौन सयानप येहु॥ ८२॥ ऊधो नंदको गोपाल गिरिधर गयो तृण ज्यों तोर। मीन जलकी प्रीति कीनी नाहिं निबही ओर। अबकि जब हम दरश पावैं देहिं लाखकरोर । हारिसो हीरा खोइकै हौं रहि समुंद्र ढँढोर ॥ ऊधो हमारो कछु दोष नाहीं वै प्रभु निपट कठोर। हौं जपौं तुम नाम निशि दिन जैसे चंद्रचकोर॥हम दासी बिनमोलकी ऊधो ज्यों गुड्डीवश डोर। सूरको प्रभु दरश दीजै नहीं मनसा और ॥८३॥राग सोरठ॥ऊधो अवरै कान्ह भए।जबते यह ब्रज छाँडि मधुपुरी कुबिजाधाम गए ॥ कै वह प्रीतिरीति गोकुल बसि दुख सुख प्रीति निवाहत । अब इह करत वियोग देह द्रुम सुनत काम दव डाहत ॥ जहां स्वारथ हरिगुण साँवरो निर्गुण कपट सुनावत । सूर सुमिरिब्रजनाथ आपने कत न परेखो आवत॥८४॥ राग मारू॥ऊधो जो तुम हमहिं बतायो। सो हम निपट कठिनई करिकरि या मनको समुझायो॥योग याचना जबहिंअगह गहि तबहीं है सो ल्यायो । भटक परचो वोहितके खग ज्यों फिरि हरिहीपै आयो ॥ अबकै तौ सोई उपदेशो जेहि जिय जाइ जिआयो।बारक मिलैं सूरके प्रभु तौ करौं आपनो भायो॥८५॥राग धनाश्री॥ ऊधो मन मानेकी बात । दाख छोहारा छाँडि अमृतफल विषकीरा विष खात॥ जो चकोरको देइ कपूर कोउ तजि अंगार अघात। मधुप करत घर कोरे काठमें बँधत कमलके पात ॥ ज्यों पतंग हित जानि आपनो दीपकसों लपटात। सूरदास जाको मन जासों सोई ताहि सुहात॥८६॥राग सोरठ॥ बातें कहत सयाने कीसी । कपट तिहारे प्रगट देखिअत ज्यों जल नाए सीसी ॥ हौंतो कहति तिहारे हितकी एतेमों कत भरमति। हौंहू मया तिहारे हितकी कछु ब्यौरोसो मरमति ॥ छाइ वसाइ गए सुफलकसुत नेकहु लागी बारन।सूर कृपा करि आए ऊधो तापर लागे टारन॥८७॥राग बिलावल ॥ ऊधो हम ऐसे गोपाल बिनु। सबही ये जैसे हरुओ तनु ॥ सोचत गनत जाइ यहि विधि दिनु। युग निशि होत हमहिं एको छिनु॥ कहियो सूर संदेश श्याम तिनु। जिनि राखौ प्रभु पोच वचन ऋनु॥हरिकित भय ब्रजके चोर।तुम्हरे मधुप वियोगउनके मदनकीझकझोर॥८८॥इक कमलपर खगेंगजरिपु एक कमलपर शशिरिपु जोर। दोउ कमल एक कमल ऊपर जगी एकटक भोर॥ इक सखी मिलि हँसति पूछत खैंचि करकी कोर। तज मुवाइ सु भखत नाहीं निरखि उनकी ओर ॥ बिरस रासनि सुरति करिकरि नैन बहु जल तोर । तीन त्रिवली मनो सरिता मिली सागर छोर ॥ पट कंध अधरनि माल ऊपर अजयारिपुकी घोर । सूर अबलनि मरत ज्यावो मिलो नंदकिशोर॥८९॥ राग सारंग॥मधुकर तोहिं कौनसोंहेतु।जोपैचढत रंगतोऊपर त्यों पैहोब श्यामता सेतु॥ मोहनमणिनिडार मोलीतेकरि आए मुखप्रीति।अतिशठ ढीठ बसीठ श्यामको हमैं सुनावत गीति॥जो कारिखतनुमेटो चाहत तो कमलवदनतनुचाहि। सूर गोपाल सुधारसमें मिलि आवन संग समाहि ॥९०॥ राग सूहो ॥ ऊधो सुनौवृथातनुतात।

पारधी मारि भालक्यों काढै है उरझी हृदयगात॥ऐसे बधिक मृगन मारनको माथे बाँधे पात। सुंदर श्याम नाद बंसीके बँधी काम शर घात।यह तौ पीर बिरहिनी जानै बहुत जियै दिनसात। सूर अबै न आपने जानै क्यों पूँछै कुशलात ॥९१॥राग नट॥जोपै मोहिं कृष्ण जिय भावहिं। तो सुन मधुप यशोदानंदन अबहीं गोकुल आवहिं॥ जिन नैनन मोहन मुख निरख्यो निशिदिन रूप बिचारयो। ते नैना जो रहत सूने गृह प्रीति न हृदय बिदारयो॥जेहि तनु आसन शयन संग सुख हरि समीप रुचि मानी।जिहि तनु बिरह न छुटत सुमिरि गुण नेकहु व्यथा नजानी॥ जिनिश्रवणन सुनि वचन मनोहर मुरली कल मुख बाजति। तिन श्रवणन हरि सुनत मधुपुरीदेतसँदेशनलाजति॥ अतिप्रचंड यह अंड महाभट जाहि सबै जग जानत। सो मदहीन दीनह्वै बपुको कोपि धनुष सर तानत॥सर सौरभ शशि अनिल त्रिविध गुण वैसिय प्रकृति निबाहत।विषम विरह निजजानि मानिमिति तौ या तनुहि न दाहत॥ बन बिलास ब्रजवास रास रस देखि देखि दुख पावत। सूरदास बहुरौ वियोग गति कुकवि निलज ह्वै गावत॥९२॥राग धनाश्री॥अबहरि औरहि रंग राचे।तुमसमसखा श्यामसुंदरके परम सयानप काचे॥बालापनते निकट रहतहो सुन्यो न एक पखानो। जैसे वास बसतहै कोऊ तैसो हो तुम सयानो॥अरु अपने मुख तुम जु कहतहो प्रभु सबही भरिपूर। आवा-गमन करतहौ कापै कोलागत को दूर॥ अरु उपमा पटतर लै दीजे ते सब उनहिंन लायक।जोपै अलख रह्यो चाहत तौ बादि भए ब्रजनायक॥ अरु जो जतन करहुगे हमको ते सब हमहिं अलेखैं।सूर सुमनसा तव सुख मानै कमलनैन मुख देखैं॥९३॥राग मलार॥हरिबिनु जान लगे दिनही दिन। कैसेकै राखैं प्राण कान्ह बिन॥करत जतन कतहि छिनही छिन। सिंहकेस जीभधरे हरे तृण॥ जोपै नाहीं मानत प्रभु वचन ऋन।तौ का कहिए सूरश्याम सिन॥९४॥अब कोउ ऐसी बातकहो। छाँडहु सकुच मिलहु नँदनंदन हितकरि दुखन दहो॥तुम प्रभु समाधानके कारण पठएकहनसँदेश। अधिक आय आरति उपजाई मेटहु विरह कलेश॥ इक तुम निकट रहत उनके अरु जानत सकल सुभाइ। सोई करहु प्रगट दरशन जेहि बेगि मिलैं यदुराइ॥ हम किंकरी कमललोचनकी बश कीनी मृदुहास। सूरदास प्रभु क्यों बिसरतहैं नख शिख अंग प्रकास॥ ९५॥ इहै प्रकृति परिआई ऊधो अनुदिन या मन मेरे। जो कोउ कोटि जतन करौ कैसेहुँ फिरत नहीं मति फेरे॥ जादिनते यशुदा गृह जनमें सुंदर यादवराई। तादिनते वा दरश परस बिनु और न कछू सुहाई॥ क्रीडत हँसत कृपा अवलोकत छिन समान दिन जाते। परमतृप्ति सबही अँग होती लोचन पै न अघाते॥ जागत सोवत स्वप्न श्याम घन सुंदर तनु अति भावे। सु कहि सूर ता कमलनयन बिन बातन क्यों बनिआवै॥९६॥ ऐसी नियत हृदये माँह। याहीमें सब बात बूझबी चतुर शिरोमणि नाह॥ आवन कह्यो बहुत दिन लायो करी पाछिली गाह। हमहि छाँडि कुबिजहि मन दीनों मेटि वेदकी राह॥ एते पर लिखि योग पठावत सिद्ध बतावत थाह। सूर श्याम अब ब्रज किन आवहु दिनदश मानहु साह॥९७॥यहि डर बहुरि न गोकुल आए।सुन री सखी हमारी करनी समुझि मधुपुरी छाए॥ आधीरातको उठि बालक सब मोहिं जगो है आइ। बिन पल्लव बन बहुरि पठैहै मोहि चरावन गाइ॥सूने भवन जाइ रोकत हो अध चोरत नवनीत। पकरि यशोदा पै लइ जैहैं नाचहु गावहु गीत॥ जानो मोहिं बहुरो बाँधेगी कैतव बचन सुनाइ। वै दुख सुमिरि सूर मनहीं मन बहुरि सहै को जाइ॥९८॥ ऊधो वेदवचन प्रमान। कमल मुख पर नैन खंजन निरखि है को आन॥ श्रीनिकेत समेत सब सुख रूप प्रगट निधान। अधर सुधा

पिआइ बिछुरे पठै दीनो ज्ञान॥ ए नहीं हैं कृपालु केशव एहैं हिए समान।निकरि क्यों न गोपाल बोलत दुखिन के दुख जान॥रूप रेख न देखिए तहाँ मूठ सुमिरि भुलान । इनहि दंड अडारि हरि गुण योगजान बखान ॥ बीतराग सुज्ञान योगिन भक्त जनन निवास।निगमबाणीमेटि कहि क्यों सकै सूरजदास ॥ ९९ ॥ आवन आवन कहि गए पै ऊधो अजहूं नहिं आए । इतनी दूरि गोपाल सँदेशन मधुबन दये पठाए ॥ चलत चितै मुसकाइकै मृदु वचन सुनाए । तेही ठगमोदक भए मनधीर न हरि तन छूछो छिटकाए॥जगमोहन यदुनाथकेगुण जानिहु पाए । मनहु सूर यहि लाजते घनश्याम सुंदर वर बहुरि न चरण देखाए॥३४००॥माधो मन मर्याद तजी। ज्यों गजमत्त जानि हरि तुमसों बात बिचारि सजी॥माथे नहीं महावत सतगुरु अंकुश ध्यान कर टूटो। धावत अध अवनी आतुर तजि सोंकर सगुण सु छूटो ॥ इहै यूथ संग लए विहरत त्रिया काननहु माहिं ।क्रोध सोच जलसों रतिमानी कामभक्ष हित जाहिं ॥ अयुत अधार नहीं कछु समुझत भ्रम गहि गुहा रहै । सूर श्याम के हरि करुणामय कवनहि विरदु गहै ॥ १ ॥राग नट॥सखी री पुरवनिता हम जानी।याहीते अनुमान करतहैं षटपदसे अगवानी॥अब तौ राज तहाँ सुनियतहैकुबिजासी पटरानी । प्रथम ग्वाल गाइन सँग रहते भए छाँछकेदानी ॥अर्धनिशा ब्रजनारिसंगलै वन बंसी लीला ठानी ।मन हरिलियो बजाइ बाँसुरी अब होइ बैठे ज्ञानी॥महामच्छ मारतमनमोहन नाहीं समता आनी । सूरदास ए कलपत नैना कहै कौन अब बानी ॥ २ ॥ राग बिलावल॥ जिन कोई वशपरो बरिआए। सरबस दियो आपनो उनको तऊ न कछू कान्हके भाए॥सहज समाधि रहत योगी ज्यों मुद्रा जटा विभूति लगाए।राज करो इह दान तिहारो जौपै देहु बहुतहरिध्याए ॥ ना जानौं अब भलो मानिहैं ऊधो नाचे गाए।सूरदास प्रभुदरशन कारण मानो फिरत धतूराखाए॥ ॥३॥राग मलार॥जौपै कोउ विरहिनको दुख जानै।तौतजिसगुण साँवरी मूरति कत उपदेशैज्ञानै॥ कुमुद चकोर मुदित विधु निरखत कहा करै लै भानै ॥ चातक सदा श्वातिको सेवक दुखित होत बिनपानै॥भवँर कुरंग काक कोयलको कविजन कपट बखानैं ।सूरदास जोसरवसदीजैकारे कृतहि न मानैं ॥ ४ ॥राग मलार॥श्याम बिनु क्यों जीवैं ब्रजवासी।इहि घट प्राण रहत क्योंऊधो बिछुरे कुंजबिलासी॥कुबिजा वर पायो मोहनसो मनो तपकियो कासी।सूर श्यामकोइहै परेखो इक दुख दूजी हाँसी॥५॥राग गौरी॥ऊधो कैसे जीवैं कमलनैन बिनु।तबतौ पलक लगत दुखपावत अब जो निरखि भरिजात अंग छिनु ॥ जो ऊजर खेरेके देवन को पूजै को मानै । तो हम बिनु गोपाल भए ऊधो कठिन प्रीति को जानै॥तुमते होइ करो सो ऊधो हम अबला बलहीन। सूर वदन देखे हम जीवैंज्यों जलभीतरमीन॥६॥राग धनाश्री॥ लरिकाईंको प्रेमकहो अलिकैसे छूटत। कहा करौं ब्रजनाथ चरित अंतर्गति लूटत।।वह चितवन वहचाल मनोहर वहमुसुक्यानि जोमंद ध्वनि गावन।नटवर भेष नंदनंदनको वह विनोदजोबनकोआवन॥चरणकमलकीसौंहकरतहौं इह संदेश मोहिं विषसों लावत।सूरदास मोहिं पलक न बिसरत मोहन मूरति सोवतजागत ॥ ७॥ उद्धव वचन राग धनाश्री॥यह उपदेश कह्योहै माधो । करि बिचार सन्मुख ह्वै साधो॥इंगला पिंगला सुषमना नारी। सून्यो सहजमें बसहिं मुरारी ॥ ब्रह्मभाव करि मैं सब देखो । अलख निरंजन ही को लेखो ॥ पद्मासन इक मन चित ल्यावो । नैन मूँदि अंतर्गति ध्यावो ॥ हृदयकमलमें ज्योति प्रकाशी । सो अच्युत अविगति अविनाशी ॥ याहिप्रकार विषम तम तरिये । योगपंथ क्रम क्रम अनुसरिए । दुसह सँदेश सुनत ब्रजबाला । मुरछि परीं धरणी

बेहाला ॥ अरे मधुप लंपट अनिआई । यह संदेश कत कहैं कन्हाई ॥ नंदभवनमें सदाविराजैं। नटवर भेष सदा हरि राजैं ॥ रासविलास करैं वृंदावन । बिच गोपी बिच कान्ह श्यामघन ॥ अलि आयोहै योग सिखावन । देखिप्रीति लागे शिर नावन ॥ भवँरगीत जो दिन दिन गावै। ब्रह्मानंद परमपद पावै ॥ सूर योगकी कथा बहाई। शुद्ध भक्ति गोपी जन पाई ॥ सांचो मतो जो जिहि बिधि धावै। तैसो भाव हरि हियभरि पावै॥८॥अथ गोपी वचन ॥ राग धनाश्री॥इहांहरिजीबहु क्रीडा करी । सोतो चितते जात न टरी ॥ इहां पय पीवत बकी संहारी । शकटतृणावर्तइहांहरि मारी ॥ वत्सासुरको इहां निपात्यो । बका अघा इहांहरिजी घातो ॥हलधरमारचोधेनुककोइहां। देखो ऊधो हत्यो प्रलंब जहां ॥ इहाँते ब्रह्म हमको गयो हरि । और किए हरिलगीनपलकघरि॥ ते सब राखे संपति नरहरि । तब इहां ब्रह्मा आय अस्तुति करि॥इहां हरि काली उरग निकास्यो । लगेउ जरावन अनल सो नाश्यो॥वस्त्र हमारे हरि जु इहां हरि। कहांलगि कहिए जे कौतुक करि॥ हरि हलधर इहां भोजन किए । विप्रतियनको अति सुख दिए ॥ इहां गोवर्धन कर हरि धारचो । मेघ वारिते हमैं निवारचो॥ शरद निशामें रास रच्यो इहां । सो सुख हमपैबरण्योजातकहां॥वृषभ असुरको इहां संहारचो । भुम अरु केशी इहां पछारचो ॥ इहैं हरि खेलत आँखिमुचाई।कहांलगि बरनैं हरिलीला गाई ॥ सुनि सुनि ऊधो प्रेम मगन भयो। लोटत धर पर ज्ञान गर्ब गयो ॥निरखत ब्रज भूमि अतिसुख पावै।सूर प्रभूकोपुनिपुनि गावै॥९ ॥ राग धनाश्री॥ऊधोजोकरिकृपापाउँधरत हरि तौ मैं तुमहिं जनावों। मौनगहे तुम बैठिरहौ हौं मुरली शब्द सुनावों॥ अबहिं सिधारे बन गोचारन हौंबैठी यश गावों । निशि आगम श्रीदामाके सँग नाचत प्रभुहि देखावों॥ को जानै दुबिधा संकोचमें तुम डर निकट न आवैं । तब इह द्वंद्व बढै पुनि दारुणसखियन प्राणछोडावैं॥ छिन न रहै नंदलाल इहां बिनु जो कोउ कोटि सिखावै । सूरदास ज्यों मनते मनसा अनत कहूं नहिंधावै॥१०॥पुनि उद्धववचन राग सारंग॥मैंब्रजबासिनकी बलिहारी। जिनकेसंगसदाहैंक्रीडत श्री-गोबर्द्धन धारी ॥ किनहूके घर माखन चोरतकिनहूंकेसँगदानी । किनहूंकेसंगधेनुचरावतहरिकी अकथ कहानी ॥ किनहूंके सँग यमुनाके तट बंसी टेर सुनावत। सूरदास बलि बलि चरणनकी इह सुख मोहिं नित भावत ॥११॥ रागसारंग ॥ होंइहि मोरनकीबलिहारी।बलिहारीवाबाँसवंशकी बंसीसी सुकुमारी । सदा रहतहै करज श्यामके नेकहु होत न न्यारी॥ बलिहारीवा कुंजजातकी उपजी जगत उजियारी। सदा रहत हृदये मोहनके कबहूँ टरत न टारी ॥ बलिहारी कुल शैल सर्व बिधि कहत कलिंदि दुलारी ।निशि दिन कान्ह अंग आली गण आपुनहू भई कारी ॥ बलिहो वृंदावनके भूमिहि सो तो भागकि सारी । सूरदास प्रभु नांगे पाँयन दिनप्रति गैया चारी ॥ १२॥ ॥अथ गोपी बचन राग मारू॥ अलि तुम जाहु फिरि वहि देस । चीरफारि करिहौं अगौ हौं शिखनि शिखि लवलेश॥ भाल लोचन चंद्र चमकनि कठिन कंठहि सेस । नाद मुद्रा बिभूति भारो कसैं रावर भेष। वहां जाइ सँदेश कहियो जटा धारैं केश । कौन कारण नाथ छाँडी सूर इहे अंदेश॥ ॥ १३ ॥ राग मलार॥हमपर हेतु किए रहिबो ।वा ब्रजको व्यवहार सखा तुम हरिसों सबकहिबो॥ देखे जात अपनी इन अँखिअन या तनको दहिबो । बरनौं कहा कथायतनुकी हिरदेकोसहिबो॥ तब न कियो प्रहार प्राणनिको फिरि फिरि क्यों चहिबो । अब न देह जरिजाइ सूर इन नैननको बहिबो ॥ १४ ॥ अपने जिय सुरति किए रहिबो । ऊधो हरिसों इहै वीनती समो पाइकहिबो॥ घोष बसतकी चूक हमारी कछू नचित गहिबो । परमदीन यदुनाथ जानिकै गुण बिचारि

सहिबो ॥ अबकी बेर दयालु दरशदे दुखकी राशि दहिबो । सूर श्याम हम कहैं कहाँ लग वचन लाज बहिबो ॥ १५ ॥ राग कल्याण॥ यदुपतिको संदेश सखी रीकैसेकेकहौं।बिनहींकहेआपनेहि मनमें कबलग शूल सहौं ॥ जो कछु बात बनाऊं चितमें रचि पचि सोचिरहौं।मुखआनतऊधो तन चितवत नवहु बिचार बहों ॥ सो कछु सीख देहु मोहिं सजनी जाते धीर गहों । सूरदास प्रभुके सेवकसों बिनती करि निबहों ॥ १६ ॥ राग बिलावल॥ करकंकनते भुजटाडभई ॥ मधुबन चलत श्याममनमोहन आवन अवधि जु निकटदई॥जोअति पंथ मनावत शंकर निशिवासर मो गनत गई। पाती लिखत विरह तनु व्याकुल कागर ह्वै गयो नीर मई ॥ ऊधो मुखके वचनन कहियो हरिकी नितप्रति शूल नई । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको विरह वियोगिनि विकल भई ॥ १७ ॥ राग कल्याण॥ कहियो मुख सँदेस हाथलै दीजै पाती।समयपाइव्रजबातचलाईसुखही माँझ सुहाती ॥ हम प्रतीत करि सरवस अरप्यो गन्यो नहीं दिनराती। नँदनंदनयहजुगतनहोई लैजु रहे मनु थाती ॥ जो तव साधि दीज तौ कोऊ तो अब कत पछताती । सूरदास प्रभु मुकुर जानती तौ सँग लीन्हें जाती ॥ १८॥ राग धनाश्री॥ ऊधो नँदनंदनसोंइतनीकहियो।यद्यपिव्रज अनाथ करि डारयो तदपि सुरति चित किये रहियो ॥ तिनकी तोर करहु जिनि हमसों एक सिवकी लाजनि बहिबो ।गुण अवगुणन देखि नहिं कीजतु दासन दासकी इतनी सहियो॥तुम बिन प्राण त्याग हम करिहैं यह अवलंब न सुपनेहु लहियो। सूरदास प्रभु लिखिदे पठयो कहां योग कहाँ पियनंदहियो ॥ १९॥ राग नट ॥ ऊधो इतनी जाइ कहो। सबैविरहिनीपाँइलगतिहैं मथुरा कान्ह रहो ॥ भूलिहु जिनि आवहिं यहि गोकुल तप्त रैनि ज्यों चंद । सुंदर वदन श्याम कोमलतनु क्यों सहिहैं नँदनंद ॥ मधुकर मोर प्रबल पिक चातक वन उपवन चढि बोलत। मनहुँ सिंहकी गर्ज सुनत गो वत्स दुखित तनु डोलत ॥ आसन भये अनल बिष अहि सम भूषण विविध विहार । जित जित फिरत दुसह द्रुम द्रुम प्रति धनुष धरे मनु मार ॥ तुमहो संत सदा उपकारी जानतहौ सब रीति । सूरदास व्रजनाथ बँचै तौ ज्यों नहिंआवैईति॥२०॥राग मलार॥ मधुकर इतनी कहियहु जाइ । अति कृश गात भई ए तुम बिनुपरमदुखारीगाइ॥जलसमूहबरपति दोउ आंखें हूँकति लीने नाउँ । जहां तहां गोदोहन कीनो सूँघति सोई ठाउँ॥परतिपछार खाइ छिनही छिन अति आतुरह्वै दीन। मानहु सूरकाढि डारीहैवारिमध्यतेमीन॥२१॥राग नट॥ तुम बिनु हम अनाथ व्रजवासी । इतनो सँदेशो कहियो ऊधो कमलनैन बिनु त्रासी ॥ जादिनते तुम हमसों बिछुरे भूँख नींद सब नासी । विह्वल विकल कलऊ न परत तनु ज्यों जल मीन निकासी॥ गोपी ग्वाल बाल वृन्दावन खग मृग फिरत उदासी। सबई प्राण तज्यो चाहतहैं को करवत को कासी ॥ अंचल जोरे करत बीनती मिलिबैको सबदासी ।हमरोप्राण घात ह्वै निबरे तुम्हरे जाने हाँसी ॥ मधुकर कुसुम न तजत सखी री छाँडि सकलअविनाशी। सूर श्याम बिन यह वन सूनो शशि बिनु रैनि निरासी॥ २२ ॥ राग धनाश्री॥सबै करति मनुहारि ऊधो कहियो हो जैसे गोकुल आवै । दिन दश रहेसुभलीकीन्हींअब निगहरुलगावैं ॥ नहिंन सोहात कछू हरि तुम बिनु कानन भवन न भावैं। बेनु विकल सो चरत नहीं तृण बछा न पीवन धावैं ॥ देखत अपनी आँखि तुमहिं तन और कहा बातनसमुझावैं।सूरदासप्रभुकठिन हीन तन कत अब वे व्रजनाथ कहावैं॥२३॥ राग गौरी ॥ ऊधोहरिवेगहिदेहुपठाय।नँदनंदनदरशन विनु रटि मरौं व्रज अकुलाइ ॥ मातु यशुमति सहित व्रजपति परे धरणिमुरझाइ।अतिबिकलतनु

प्राणत्यागत करैं कछु गति आइ॥ सकल सुरभी यूथ दिनप्रति रुदति पुर दिश धाइ। जहांजहँ दुहि बन चराई मरति तहां बिललाइ॥ परमप्यारी शरद राधिका लईगृह दुख छाइ। तजत चक्र न वक्र चखबिनु करै कोटि उपाइ॥ योगपदलै देहुयोगिहिहमहिंयोग मिलाइ। मधुप बिछुरेवारि मीनहि अनत कहां सोहाइ॥ आजु जेहि विधि श्यामआवैंकहोतेहि बिधिजइ। सूरदास विरह ब्रज जन जरत लेहु बुझाइ॥ २४॥ राग जैतश्री॥ अलि मलीन वृषभानुकुमारी। हरि श्रमजल अंतर तनु भीजे तालालच न धुआवत सारी॥अधोमुख रहति ऊरध नहिं चितवति ज्योंगथहारे थकित जूथ आरी। छूटे चिहुर वदन कुम्हिलाने ज्यों नलिनी हिमकरकी मारी॥ हरि सँदेश सुनि सहज मृतक भई एक विरहिनि दूजे अलिजारी। सूर श्याम बिन यों जीवतिहैं ब्रजवनिता सब श्याम दुलारी॥२५॥राग सारंग॥ ऊधो देखेही ब्रज जात।जाइकहियो श्यामसोंयोंविरहकेउतपात॥ नैन कछू न सूझई अरु श्रवण कछु न सोहात। श्याम बिन सब ब्रजहि सूनो दुसह सरवन घात॥ आइवौ तौ आइधौं हरि बहुरिशरीर समात।सूरप्रभुपछितहुगेतुमअंतहू गएगात॥२६॥राग मलार॥ हरिजीसों कहियो हो जैसे गोकुल आवहिं। दिन दश रहे भली कीनी वहांअबजिनि गहर लगावहिं॥नाहिंन कछू सुहात तुमहिं बिनु कानन भवन न भावहिं।बालविलखमुख गौ न चरति तृण बछ पय पियन न धावहिं॥देखत अपनी अँखिअनऊधोहमकहिकहाजनावहिं। सूर श्याम बिनु तपत रैनि दिन मिले भलेहि सचपावहिं॥॥२७॥राग बिहागरे॥ऊधो तुमहिंश्यामकी सौंहै। मुख देखत कहियो तुमसों जित तित लगी मदनकी दौंहै॥ जो मन योग जुगुति आराधै सो मनतो सबको उनपै है। जैसे बसन तजतहैं पंगन सो गति कान्ह करी हमको है॥ हम बावरी त्यों न चलि जान्यो ज्यों गज चलत आपनी गौंहै।सूरदास कपटी चित माधो कुबिजा मिलि कपटीकी खोंहै॥ २८॥ राग केदारो॥ ऊधो एक मेरी बात। बूझियो हरवाइ हरिसों प्रथम कहि कुशलात। तुम जो इह उपदेश पठयो आनियो मन ज्ञान। सत्यहू सब बचन झूंठो मानिये मनन्यान॥और ब्रज कहि दूसरोहू सुन्यो कहा बलवीर। जाहि बरजन इहां पठयो करि हमारी पीर॥आपु जबतेगए मथुरा कहत तुमसों लोग। सहजही ता दिवसते हम भूलियो भय भोग॥ प्रगट पति पितुमात प्रभु जन प्राण तुम आधीन। ज्यों चकोरहि संग चकोरी चित्त चंदहि लीन॥रूप रसन सुगंध परसन रुचि न इंद्रिन आन॥होति हौंस न ताहि विषकीकियोजिन मधुपान॥ह्वैगयोमनआपुहीसवगिनत गुनगन ईश॥ज्ञानकी अज्ञान ऊधो तृणतोरि दीजै शीश॥बहुत कहा कहैंहि केशोराइपरमप्रवीन। सूर सुमत न छाँडिहै जहां जिवत जल बिन मीन॥ २९॥ राग सारंग॥ मधुकर कहियो सुचित सँदेशो। समै पाइ समुझाइ श्यामसों हम जिय बहुत अँदेशो॥एक बार रसरास हमारे मुरली बन जो हरेसो। तबउनबेणु बजाइ बोलाई अबनिर्गुण उपदेशो॥ औरबार उनि योग जुगतिकोभेद न कहो परेसो। तब पतिव्रत तुम करन कहत अब उखरो ज्ञान गडेसो॥औरकहाँलौंहमकहैंऊधो अबलनको दुख ऐसो। सूरदास इनपर हँसिमरियतु कुबिजाकेस्व कैसो॥३०॥पुनः ऊधोवचन॥ राग नट॥ अब अति चकितवंत मन मेरो।आयो हों निर्गुण उपदेशन भयो सगुनको चेरो॥ मैं कछु ज्ञान कह्यो गीताको तुमहिं न परहो नेरो।अतिअज्ञान जानिकै अपनोदूतभयोउनकेरो॥ निजजन जानिहरि इहां पठायो दीनो बोझघनेरो।सूर मधुप उठिचले मधुपुरी बोरियोगकोबेरो॥ ॥३१॥गोपीवचन राग केदारो॥ऊधो तिहारे मैं चरणन लागौं बारक यहिब्रज करियो विभावरी।निशि न नींद आवै दिवस न भोजन भावै चितवत मगभई दृष्टि झावरी॥ एक श्याम बिन कछूनभावै

रटत फिरत जैसे बकत बावरी। या बृंदाबन सघन श्याम बिन तहां यमुना बहै सुभग सांवरी ॥ लाज न होति उहैं चलिजाती चलि न सकति आवै बिरह तावरी। सूरदासप्रभु आनि मिलावहु ऊधोकीरतिहोइरावरी॥३२॥अथ यशोमति संदेशउद्धवमाति ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधोतिहारे पाँइ लागतिहौं कहियो श्यामसों इतनी बात।इतनीदूरबसतक्यों बिसरेअपनीजननीतात॥जादिनतेमधुपुरी सिधारे श्याम मनोहर गात।तादिनते मेरे नैन पपीहा दरश प्यास अकुलात॥ जहाँ खेलनको ठौर तुम्हारे नंद देखि मुरझात।जोकबहूं उठिजात खरिकलौं गाइ दुहावनप्रात॥ दुहत देखि औरनके लरिका प्राण निकसि नहिं जात। सूरदास बहुरो कब देखों कोमल कर दधिखात॥ ३३ ॥राग मलार॥ तब तुम मेरे काहेको आए। मथुरा क्यों न रहे यदुनंदन जोपै कान्ह देवकी जाए॥ दूध दही काहेको चोरयो काहेको बन गाइ चराए। अघ अरिष्ट काली नहिं काढयो विष जलते सब सखा जिआए। सूरदास लोगनके भोरए काहे कान्ह अब होत पराए॥ ३४ ॥ राग सोरठ ॥ ऊधो हम ऐसे नहिं जानी। सुतके हेत मर्म नहिं पायो प्रगटे शारँगपानी॥ निशिवासर छातीसों लाई बालकलीला गाई।ऐसे कबहूं भाग होहिंगे बहुरो गोद खेलाई॥ को अब ग्वाल सखा सँग लीन्हें सांझ समै ब्रज आवै। को अब चोरिचोरि दधि खैहै मैया कवन बोलावै॥ बिदरत नाहिं बज्रकी छाती हरि वियोग क्यों सहिए। सूरदास अब नँदनंदन बिनु कहो कौन बिधि रहिए॥३५॥राग धनाश्री॥ऊधो जो अबकान्हनऐहैं। जिय जानौ अरु हृदय बिचारो हम अतिही दुख पैहैं॥ पूँछो जाइ कवनको ढोटा तब कहा उत्तर दैहैं॥ खायो खेले संग हमारे याको कहा बतैहैं॥ गोकुल अरु मथुराके वासी कहांलौं झूठे कैहैं।अब हम लिखि पठयो चाहत हैं उहां पता नहिं पैहैं॥इन गायन चरबो छाँडो है जो नहिं लाल चरैहैं।इतनेपर नहिं मिलत सूर प्रभु फिरि पाछे पछितैहैं॥३६॥ राग सारंग॥तबते छीन शरीर सुभाहु।आ धोभोजनसुबलकरतहैग्वालनकेउरदाहु॥ नंद गोप पिछवारे डोलत नैनन नीर प्रवाहु।आनँद मिटयो मिटी सब लीला काहुनमन उत्साहु॥ एक बेर बहुरो ब्रज आवहु दूध पतूखी खाहु।सूर सुपथगोकुल जो बैठहुउलटि मधुपुरी जाहु॥३७॥ ॥राग नट॥कहियोयशुमतिकीआशीस।जहाँ रहो तहांनंदलाडिलेजीवोकोटिवरीस।मुरलीदईदोहनी घृत भरि ऊधो धरि लई शीश। इह घृत तौ उनहीं सुरभिनको जो प्यारी जगदीश॥ ऊधो चलत सखा मिलि आए ग्वाल बाल दश बीश। अबके इहां ब्रज फेरि बसावो सूरदासके ईश॥ ३८ ॥ अथ सखा वचन राग बिलावल ॥ ऊधो देखतहो जैसे ब्रजवासी। लेत उसाँस नैन जल पूरित सुमिरि सुमिरि अविनासी॥भूलि न उठत यशोदा जननी मनो भुअंगम डासी। छूटत नहीं प्राण क्यों अटके कठिन प्रेमकी फाँसी॥ आवत नहीं नंद मंदिरमें बह्यो फिरत पनियासी। प्रेम न मिले धेनु दुर्बल भई श्यामविरहकी त्रासी। गोपीग्वाल सखा बालक सब कहूँ न सुनियत हांसी।काहे दियो सूर सुख मैं दुखकपटी कान्ह लवासी॥३९॥उद्धववचन राग सारंग॥धन्यनंदधनि यशुमति रानी।धन्य कान्ह प्रकटेसुखदानी॥धन्य ग्वालधन्यधन्यगोपिकाजेहिखेलाए शाँरगपानी। धनि ब्रज भूमि धन्य बृंदावन जहाँ अविनाशी आए॥धन्यधन्यसूर आजुहमहूंजो तुम सब देखे आए॥४०॥अथ दूसरी लीला॥ भवँरगीत॥ गोपीबचन॥ राग आसावरी॥ छन्द त्रिभंगी॥ हरिरथर तनजरयो अनूप दिशाते आवै। जेहि मग कृष्ण गयो तेहि मगते दर्शावै॥ वै मगते आवै सखन बोलावै देखो नैन विचारी। मुकुट कुंडल तनु पीत बसन कोउ गोविंदकी अनुहारी॥ वैतो भूषण परखन लागी तब लगि निअरे आए। ऊधो जिय जानी मन कुँभिलानी कृष्ण संदेश पठाए॥१॥ चली

चली पूँछैं कछु बातैं।कहि कहि ऊधो हरि कुशलातैं॥छंद॥कहि कुशलातैं सांचीबातैंआवनकह्यो हरि नाथैं। के गरवाने राजसभा अब जीवत हम न सुहाथैं॥ठाढी तनु कांपै टेरे झांकै बारबार अकुलाई। अब जिय कछू कपट जिनि राखौ बूझें सौंह दिवाई॥२॥ कहो ऊधो तुम क्यों ब्रज आए। तब हँसि कह्यो हम कृष्ण पठाए॥ छंद॥कृष्ण पठाये तो ब्रज आए कहत मनोहरबानी॥ सुनहु सँदेशो तजहु अँदेशो हौ तुम चतुर सयानी॥गोप सखा जिय हिय जिनि राखौअविगत है अविनासी। मोह न माया बैर न दाया सब घट आपु निवासी॥३॥ ऊधो जिनि इह कहो तुम प्रभुकी प्रभुताई। सुनि जिय अगहि बढ्यो रिसि सही न जाई॥रिसि सही नजाई अगहि बाढी अति इह तुमरी चतुराई। दासी कुबिजा सेजकी संगत कवन वेद मति पाई॥ तुमहूं भली कहनको आए हमको भली सु बानी। जो कछु वस्तु देखिअत नैनन सो क्यों नहिं मनमानी॥ ४॥ गोबिंदकी बाणी सबकोई जानी। परबश भई कहत अब सोई मानी॥ राग छंद॥सब कोइ जानै क्यों मनमानै अब न कछू कहिआवै। जो कछु कुबिजाकेमनभावेसोइ सोइ नाच नचावै॥ वाको न्याउ दोष सबहमको कर्मरेख कोजानै।गोरसदेखि जोराख्योगाहक बिधिनाकी गति आनै॥ ५॥ ऊधो कमलनयनसों कहियो जाइ।एक बेर ब्रजदेखोआइ॥राग छंद॥ जिहिके प्रीति निरंतर मनमें सो मन क्यों समुझावै। शंकर ब्रह्म शेष अरु सुरपति कोउ हरिदरश न पावै॥ वैसे राज बिलास कोलाहल घरघर माखन हरई।सूरदास प्रभु मिलत बहुतसुखबिरह श्वास कत जरई॥६॥४१॥उद्धव वचन राग भैरव॥मैं तुमपै ब्रजनाथ पठायो।आतमज्ञान सिखावन आयो॥आपुहि पुरुष आपुही नारी।आपुहि वानप्रस्थ ब्रह्मचारी॥आपुहि पिता आपुही माता। आपुहि भगिनी आपुहि भ्राता॥ आपुहि पंडित आपुहि ज्ञानी।आपुहि राजा आपुहि रानी॥ आपुहि धरती आपु अकासा। आपुहि स्वामी आपुहि दासा॥ आपुहि ग्वाल आपुही गाइ। अपुहि आप चरावन जाइ॥ आपुहि भँवरा आपुहि फूल। आतमज्ञान बिना जगभूल॥ राव रंक दूजा नहिं कोई। आपहि आप निरंजन सोई॥इहि प्रकार जाको मनलागै। जरा मरनसे भवभय भागै॥ योगसमाधि ब्रह्म चित लावहु। ब्रह्मानंद तबहि सुख पावहु॥ ७॥ गोपी उद्धवप्रति उत्तर॥ योगी होइ सो योग बखानै।नौधा भक्ति दास रति मानै॥ भजननंद अली:हम प्यारो। ब्रह्मानंद सुख कौन बिचारो॥ बतियां रचिपचि कहत सयानी। अँखिया हरिके रूप लोभानी॥ ब्यावरि बिथा न बंझा जानै। बिन देखे कैसे रतिमानै॥ पुनिपुनिपुनिवोही सुधि आवै।कृष्णरूप बिन और न भावै॥ नवकिशोर जेहिं नैन निहार्यो।कोटि योग वा छबिपर वार्यो॥शीश मुकुट कुंडल बनमाला। क्यों बिसरैं वे नैन बिशाला॥ मृगमद मलय अलक घुँघुरारे। उन मोहन मन हरे हमारे॥ भ्रुकुटी कुटिल नासिका राजै। अरुन अधर मुरली कल बाजै॥दाडिमदशन दामिनि दुति सोहै। मृदु मुसकान जो तन मन मोहै॥ चंद्रझलक कंठामणि मोती।दूर करत उडुगणकी ज्योती॥ कंकन किंकिणि पदिक विराजै। गजगति चाल नूपुर कल बाजै। वनके धातु चित्र तनु किए। श्रीवत्स चिह्न राजत अति हिए॥पीतवसन छबि वरणि नजाई। नखशिख सुंदर कुँवर कन्हाई॥ रूपराशि ग्वालनको संगी। कब देखैं वह ललित त्रिभंगी॥जोतू हितकी बात बतावै। मदनगोपालहि क्यों न मिलावै॥ ८॥ उद्धवबचन॥ जाके रूप बरन वपु नाहीं। नैन मूँदि चितवो चितमाहीं॥ हृदय कमलमें ज्योति बिराजै। अनहद नाद निरंतर बाजै॥ इडा पिंगला सुषमन नारी। सहज सु तामें बसे मुरारी॥ माता पिता न दारा भाई॥

जल थल घटघट रह्यो समाई ॥ इहि प्रकार भवदुख सरि तरहू । योगपंथ क्रमक्रम अनुसरहू ॥ ॥ ९ ॥ उत्तर गोपिका॥ हम ब्रजबाल गोपाल उपासी । ब्रह्म ज्ञान सुनि आवे हाँसी ॥ ब्रजमें योगकथा तैं ल्यायो।मनो कुबिजा कूबर माँह दुरायो॥श्यामसो गाहक पाइ देखायो।सो माधो तुम हाथ पठायो ॥ हम अबला ठगि अल्प अहीरी । वहां भली ठग्यो कंसकी चेरी ॥ राम जन्म सीता जदुराई । भली भई कुबिजा वधु पाई ॥ तब सीता बियोग दुख पायो । अब कुबिजा पाइ हियो सिरायो॥इह नीरस ज्ञान कहा ले कीजै।योगमोट दासीशिर दीजै॥१०॥उद्धवबचन॥ वै परब्रह्म अच्युत अविनाशी । त्रिगुणरहित प्रभु धरे न दासी॥नहिं दासी ठकुराइन कोई । जहां देखो तहां ब्रह्म है सोई॥अपने ओरे ब्रह्महि जानो ।ब्रह्मबिना दूजोनहिं मानो॥११॥गोपिकाबचन॥ खरे करंब अलि योग सँवारो । भक्तिविरोधी ज्ञान तुम्हारो॥कहा होत उपदेश तेरे । नैन सुवस नाहीं अलि मेरे ॥ हरिपथ जोवैं छिनछिन रोवैं । कृष्णवियोगी निमिष न सोवैं ॥ नँदनंदनको देखे जीवैं । योग पंथ याते नहिं पीवैं ॥ जब हरि आवैं तब सचुपावैं । मोहन मूरति कंठ लगावैं ॥ दुःसह वचन हमैं नहिं भावैं । योगकथा वोढै कि बिछावैं ॥ १२ ॥ उद्धवबचन ॥ ऊधो कहिकहि धनि ब्रजबाला । जिनके सर्वस मदनगोपाला ॥ मैं जो कही सो आवन न पाई । तुमरेदरशभक्ति निजमाई ॥ तुम मम गुरु मैं दास तिहारो । भक्ति सुनाइ जगत निस्तारो॥ भवँरगीत जो सुनै सुनावै । प्रेमभक्ति गोपिनको पावै॥सूरदास गोपी बडभागी । हरिदरशनकी ढवरी लागी ॥१३॥४२॥ अथ दूसरी लीला भँवरगीत ॥ गोपीवचन जैतश्री॥ ऊधोको उपदेश सुनो किन कान दै । निर्गुण सँदेशो श्याम पठायो आन दै ॥ कोउ आवत ओहि ओर जहां नंदसुवन पधारे । सरस वेणुध्वनि होइ मनो आए ब्रजप्यारे ॥ धाये सब गलगाजिकै ऊधो देखे जाइ । लै आए ब्रजराज गृह आनँद उर न समाइ ॥ अर्घ्य आरती तिलक दूब दधि माथे दीनी । कंचन कलश भराइ और परिकर्मा कीनी ॥ गोपभीर आँमन भई जुरि बैठे इकजाति । जलझारी आगे धरे पूँछत हरिकुशलाति ॥ कुशल क्षेम वसुदेव कुशल देवै कुबिजाऊ । कुशल क्षेम अक्रूर कुशल नीके बलदाऊ ॥ पूँछि कुशल गोपालकी रहे सकल गहि पाँइ । प्रेम मगन ऊधो भए पेखत ब्रजके भाइ॥ मनमें ऊधो कहैं ऐसि,बूझियन गोपालहि ।ब्रजके हेतु बिसारि योग सिखवैं ब्रजबालहि ॥ इनकी प्रीति पतंगलौं जारतहैं सब देह । वै हरि दीपक ज्योति ज्यों नेक न उनके नेह ॥ तब ऊधो कर लै लिखी हरिजूकी पाती । पढी परत नहिं नेक रहे गंभीर करि छाती ॥पाती बाँचि न आवई रहे नयन जल पूरि।देखि प्रेम गोपिनके ऊधोज्ञान गर्व गयो दूरि॥फिरिइतउत बहराइ नीर नैननके शोधे।ठानी कथाप्रबोधितबहिंफिरिगोपसमोधे॥ जो ब्रतमुनिवर ध्यानहीं पावहिं नर अवतार । ते ब्रत सिख सब गोपिका देहीं विषयबिसार॥ सुनि ऊधोके वचन रहीं नीचे कै तारे । मानो मांगति सुधा आनि व्यालनि विष जारे ॥ हम अवलौं कहा जानई योग युक्ति की रीति । नँदनंदनव्रत छाँडिकै को लिखि पूजै भीति ॥ अगमते अगह अपार आदि अविगत है सोऊ। आदि निरंजन नाम ताहि रंजै सब-कोऊ ॥ नयन नासिका अग्र है सोऊ तहाँ ब्रह्मको बास। अविनाशी बिनशै नहीं सहज ज्योति परगास ॥ ऊधो जो पग पानि नहीं ऊखल क्यों बांधे । नयन नासिका मुख-न चोरिदधि कौने खाधे।तब जो खिलायो गोदमें बोलि तोतरेबैन ।ऊधोताको बतावहीजाहिन सूझै नैन॥माया अनित्य अधारी ता लोचन दुइ नाखे।ज्ञानी नयन अनंत ताहि सूझै परमाखे॥

बूझो निगम बोलाइकै कहैं भेद समुझाइ। आदि अंत जाको नहीं कौन पिता को माइ॥ ऊधो घर लागे अरु घूर कहो मन कहँ २ धावै। अपनो घर परिहरै कहो कोघूरबतावै॥मूरखयादवजाति हैं हमहिं सिखावहिं योग। हमसों भूली कहतहैं हम भूली धौं लोग॥ प्रेम प्रेमते होइ प्रेमते परहै हिए। प्रेम बंधो संसार प्रेम परमारथ लहिए॥ एकैनिश्चयप्रेमकोजीवनमुक्तिरसाल।सांचीनिश्चय प्रेमकी जिहिरे मिलैं गोपाल॥ ऊधो कहि सतभाव न्याय तुम्हरे मुख सांचे। योगप्रेमरसकथा कहो कंचनकी कांचि॥ जाके परहै हूजिए गहिए सोई नेम। मधुप हमारी सौं कहो योग भलो किधौं प्रेम॥ सुनि गोपीके बयन नेम ऊधोके भूले। गावत गुण गोपाल फिरत कुंजनमें फूले॥ खन गोपी कै पाँइ परै धन्य सोइहै नेम। धाइ धाइ द्रुम भेंटई ऊधो छाके प्रेम॥ धनि गोपी धनि ग्वाल धन्य सुरभी वनचारी। धनि इहां पावन भूमि जहां गोविंद अभिसारी॥उपदेश-न आये हुते मोहिं भयो उपदेश। ऊधो यदुपतिपै चले धरे गोपकी भेष॥ भूले यदुपति नावँ कहो गोपाल गोसाईं। एकबार ब्रज जाहु देहु गोपिन देखराईं॥ वृन्दावन सुख छाँडिके कहां बसेहोआइ॥ गोवर्धन प्रभु जानिकै ऊधोप करेपाँइ। ऊधो ब्रजको प्रेम नेम वरणो सब आई। उमँग्यो नैनन नीर बात कछु कह्यो न जाई॥ सूर श्याम भूलत भए रहे नैन जल छाइ। पोंछि पीतपटसोंकह्योभलेआए योगसिखाइ ४३ इतिभँवरगीत॥ अध्याय॥४८॥अथ उद्धव मथुरा आए श्रीकृष्णप्रति वदति॥ राग सारंग॥ ऊधो जब ब्रज पहुँचे जाइ। तबकी कथा कृपा करि कहिए हम सुनिहैं मन लाइ॥ बाबानंद यशोदा मइया मिले सबन हित आइ। कबहूं सुरति करत माइनकी किधौं रहे बिसराइ॥ गोप सखा दधिखात भात वन अरु चाखते चखाइ।गऊबच्छमुरलीसुनिउमडतअबहिं रहत केहि भाइ॥ गोपिन गृह व्योहार बिसारे मुख सन्मुख सुखपाइ। पलकवोट निमिपर अन-खाती यह दुख कहां समाइ॥ एक सखी उनमें जो राधा जब हौं इहँते गयो। तबब्रजराजसहित सब गोपिन आगे ह्वै जो लयो॥ उतरे जाइ नंदबाबाके सबही शोध लह्यो। मेरीसौं सांचीकहु ऊधो मैया कछू कह्यो॥ बारंबार कुशल पूँछी मोहिं लै लै तुम्हरो नाम।ज्यों जल तृषा बढी चातक चित कृष्ण कृष्ण बलराम॥ सुंदर परम विचित्र मनोहर वह मुरली देइ घाली। लई उठाइ उर लाइ सूर प्रभु प्रीति आनि उर शाली॥ ४४॥ सुनिए ब्रजकी दशा गोसाईं। रथकी ध्वजा पीतपट भूषण देखतही उठि धाईं॥ जो तुम कही योगकी बातैं ते मैं सबै सुनाईं। श्रवण मूँदि गुण कर्म तुम्हारे प्रेम मगन मन गाईं॥ औरो कछु संदेश सखी इक कहत दूरि लौं आईं। हुतो कछू हमहूँसों नातो निपट कहा बिसराईं॥ सूरदास प्रभु वनविनोद करि जो तुम गऊ चराईं।ते गाय ग्वालन हेरी देय हरति मानों भईं पराईं॥४५॥राग सारंग॥ब्रजके विरही लोग दुखारे। बिन गोपाल ठगेसे ठाढे अतिदुर्बल तनुकारे॥ नंद यशोदा मारगजोवत नित उठि साँझ सवारे। चहुँ दिशि कान्ह कान्ह करि टेरतअँसुवनबहतपनारे॥गोपीगाइग्वाल गोसुत सब अतिही दीन बिचारे। सूरदास प्रभु बिन योंशोभित चंद्र बिना ज्यों तारे॥४६॥राग केदारो॥ हरिजी सुनो वचन सुजान।विरह व्याकुल छीन तनमनहीनलोचनप्राण॥इहैहैसंदेशब्रज-को माधो सुनहु निदान। मैं सबै ब्रज दीन देखे ज्यों बिना निर्मान॥तुमविनाशोभा न ज्यों गृह बिना दीप भयान। आस श्वाश उसाँस घटमें अवध आशा प्रान॥ जगत जीवन भक्तपालन जगतनाथ कृपाल। करि जतन कछु सूरके प्रभु जो जिवैं ब्रजबाल॥ ४७॥ राग जैतश्री॥ सुनहु श्याजू वे ब्रजवनिता विरह तुम्हारे भईं बावरी। नाहिंन नाथ और कहि आवत छाँडि

जहां लगि कथा रावरी ॥ कबहुँ कहत हरि माखन खायो कौन वसैयाकठिनगाँवरी। कबहुँकहत हरि ऊखल बांधे घर घर ते लै चलौ दाँव री ॥ कबहुँ कहत ब्रजनाथ बनगए जोवत मगभईहृषि झाँवरी । कबहुँ कहत वा मुरली महियाँ लै लै बोलत हमरो नाँउरी ॥ कबहुँकहतब्रजनाथसाथते चंद्र उग्योहै एहि ठाँवरी। सूरदासप्रभुतुम्हरेदरशबिनुअबवहमूरतिभईसाँवरी॥४८॥राग बिहागरो ॥ हरि आए सो भलीकीन्ही । मोहिं देखत कहि उठी राधिका अंक तिमिरको दीन्ही ॥ तनु अति कँपति विरह अति व्याकुल उर धुकधुकी खेद कीनी। चलत चरणगहि रही गई गिरि खेद सलिल भयभीनी ॥ छूटी वट भुज फूटी बलया टूटी लर फटी कंचुकी झीनी । मानो प्रेमके परन परेवा याहीते पढि लीनी ॥ अवलोकति इहिभाँति रमापति मानो छूटीअहिमणिछीनी। सूरदास प्रभु कहौं कहांलगि है अयान मति हीनी॥४९॥ मलार॥सुनोश्यामयहबातऔरकोउक्योंसमुझायकहै। दुहुँदिशिको रति विरह विरहिनी कैसेकै जो सहै।जब राधे तबहीं मुख माधोमाधो रटतरहै । जब माधो होइजात सकल तनु राधा विरह दहै । उभयअग्र दौंदारु कीट ज्यों शीतलताहि चहै। सूरदास अति विकलविरहिनीकैसेहु सुखनलहै॥५०॥ राग केदारो॥चितदैसुनोश्यामप्रबीन।हरितुम्हारे विरह राधा मैं जु देखी छीन ॥ तज्यो तेल तमोल भूषण अंग वसन मलीन । कंकना करवाम राख्यो गढी भुजगहि लीन ॥ जबसँदेशाकहनसुंदरिगवनमोतनकीन।खसिमुद्रावलिचरनअरुझी गिरि धरनि बलहीन ॥ कंठवचन न बोल आवै हृदय परिहस भीन।नैनजलभरिरोइदीनोग्रसित आपद दीन ॥ उठी बहुरि सँभारि भट ज्यों परम साहस कीन । सूर प्रभु कल्याण ऐसे जिवहि आशालीन ॥ ५१ ॥ भरि भरि लेत ऊरध श्वास । साँवरेब्रजनाथतुमबिनुदुखितपंचशरत्रास॥अमित पीर अधीर डोलत समर मीन बिलास । तेई सुख दुख भए दारुण मिलि गए रस रास ॥ निगम गुरुजन लोग न डरत जगकरत उपहास। सूर श्याम बिनु विकल विरहिनी मरत दरश बिन प्यास ॥ ५२ ॥ राग धनाश्री ॥उमँगि चले दोउ नैनविशाल। सुनिसुनि यहसंदेशश्यामघनसुमिरि तुम्हारे गुण गोपाल॥ आनन वपु उरजनिके अन्तर जलधारा बाढी तेहिकाल।मनु युगजलज सुमेर शृंगते जाइ मिले सम शशिहि सनाल ॥ भींजे विय अंचर उर राजित तिनपर वर मुकुतनकी माल।मनों इंदु आये नलिनी दल लंकृत अमी ओस कण जाल॥कहां वह प्रीति रीति राधासों कहां यह करनी उलटी चाल। सूरदास प्रभु कठिन कथनते क्यों जीवैबिरहिनिबेहाल॥५३॥राग मारू॥तुम्हरे बिरह ब्रजनाथ राधिका नैनन नदी बढी।लीने जाति निमेषकूलदोऊ एतेयानचढी॥ गोलकनाउ निमेष न लागत सो पलकनि बर बोरति । ऊरध श्वास समीर तरंगिनितेज तिलकतरु तोरति ॥ कज्जल कीच कुचील किए तट अंबर अधर कपोल । थकि रहे पथिक सुयशहितहीके हस्त चरण मुख बोल॥ नाहिंन और उपाय रमापति बिन दरशन जो कीजै।अंशुसलिलबूडतसब गोकुल सूर सुकरगहिलीजै॥५४॥राग मलार॥नैन घट घटतनएकघरी ।कबहुँ न मिटत सदा पावस ब्रज लागी रहत झरी॥ विरह इंद्र बरषत निशिवासर इहि अति अधिक करी ।उरध उसाँस समीर तेज जल उर भुवि उँमगि भरी॥बूडति भुजा रोमद्रुम अंबर अरु कुच उच्चथरी।चलिनसकतपथिक रहे थकि चंद्रकी चखरी ॥ सब ऋतु मिटी एक भई ब्रज महिं यहि बिधि उलटि धरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे बिछुरे मिटि मर्यादटरी॥५५॥राग केदारो॥देखीमैंलोचनचुवतअचेत। मनहुँकमल शशि त्रास ईशको मुक्ता गनिगनि देत ॥ द्वार खडी इकटक मग जोवत ऊरध श्वासन लेत । मानहुँ मदन मिले चाहति है मुंचत मरुत समेत ॥ श्रवण न सुनत चित्र पुतरी लौं समुझावत

जितनेत । कहुँ कंकन कहुँ गिरी मुद्रिका कहुँ ताटंक कहुँ नेत ॥ मनहु बिरह दव जरत विश्व सब राधा रुचिर निकेत।धुज होइ सुखिरही सूरज प्रभु बँधी तुम्हारे हेत ॥५६॥राग मलार॥नैननि होड बदी बरषासों । राति दिवस बरसत झर लाए दिन दूरी करखासों ॥ चारि मास बरषे जल खूटे हारि समुझि उनमानी।एतेहूपर धार न खंडित इनकी अकथ कहानी॥॥एते मानचढाइचढीअति तजी पलककी सींव । मैं दिन दिन उनमानो महाप्रलयकी नीव ॥ तुमपै होइ सो करहु कृपानिधि ए ब्रजके व्यवहार ।अबकी बेर पाछिले नाते सूर लगावहु पार ॥५७॥राग गौरी॥ब्रजते द्वैऋतु पैनगई । ग्रीषम अरु पावस प्रवीन हरि तुम बिनु अधिक भई ॥ उरध उसाँस समीर नैन घन सब जल योग जुरे । बरषि प्रगट कीन्हें दुख दादुर हुते जु दूरि दुरे॥ तुम्हरो कठिन वियोग विषम दिनकर सम उदो करै।हरिपद विमुख भएसुनु सूरज को इहि ताप हरै॥५८॥राग कान्हरो॥नाहिनकछु सुधि रही हिए।सुनो श्याम वै सखिहि राधिकहि जुगवति जतन किए॥कर कंकन कोकिला उडावत बिनुमुख नाम लिए। सैन सूचनानखनि नितंबै किसलय श्रवणनशबद बिए॥शशिशंका निशिजालनिके मग वसन बनाइ किये ।दिशि दिशि शीत समीरहि रोकत अंबर ओट दिए॥मृगमदमलैपरस तनु तलफत जनु विष विषम पिए॥जो न इतेपर मिलहु सूरप्रभुतौ जानबीजए॥५९॥राग गौरी॥ कहाँलौं कहिए ब्रजकी बात । सुनहु श्याम तुम बिनु उन लोगइ जैसे दिवस बिहात॥ गोपी गाइ ग्वाल गोसुत वै मलिन वदन कृशगात । परमदीन जनु शिशिरहिमीहत अंबुज गन बिनपात ॥ जाकहुँ आवत देखिदूरते सब पूँछति कुशलात।चलन न देत प्रेम आतुर उर कर चरणन लपटात॥ पिकचातक बन वसन न पावहिं बाइस बलिहि न खात। सूर श्याम संदेशनके डर पथिक न उहि मग जात॥६०॥राग मलार॥ब्रजकीकही न परतिहैंबातैं।गिरितनयापतिभूषण जैसे विरहजरी दिनरातैं॥मलिन वसन हरिहित अंतर्गति तनु पीरो जनु पाते । गदगदवचन नैन जल पूरित बिलखिवदन कृशगाते ॥ मुक्तो ताते भवनते बिछुरे मीन मकर बिललाते । सारंगरिपु सुत सुहृदपति बिना दुख पावति बहु भांते ॥ हरि सुर भषन बिना विरहाने छीन भई तनु ताते । सूरदास गोपिन परतिज्ञा मिलहु पहिलके नाते ॥६१॥राग कल्याण॥ रहति रैनि दिन हरि हरि हरि रट । चितवत इकटकमग चकोर लौं जबते तुम बिछुरे नागर नट॥भरि भरि नैन नीर ढारतिहैं सजल करतिअतिकंचुकिके पट । मनहुँ बिरहकी ज्वरता लगि लियो नेम प्रेम शिव शीशसहसघट॥जैसे युगके अग्र ओसकण प्राण रहत ऐसे अवधिहिके तट।सूरदास प्रभु मिलौ कृपाकरि जोदिनकहे तेउ आए निकट॥६२॥ ॥राग सारंग॥दिनदश घोष चलहु गोपाल। गानइके अवसेर मिटावहु लेहु आपने ग्वाल ॥ नाचत नहीं मोर तादिनते बोले न बर्षाकाल।मृग दूबरे तुम्हारे दरश बिनु सुनत न वेणु रसाल ॥ वृंदावन हरयो होत न भावत देखोश्याम तमाल ।सूरदास मइया अनाथहै घरचलिए नँदलाल॥६३॥राग सोरठ ॥ ऊधो भलो ज्ञान समुझायो । तुमसों अब यों कहा कहतहैं मैं कहि कहा पठायो॥ कहवावतही बडे चतुरपै वहां न कछु कहि आयो । सूरदास ब्रजवासिनको हित हरि हियमांझदुरायो॥ ॥६४॥राग सारंग॥मैं समुझाई अति अपनोसो।तदपि उन्हें परतीति न उपजी सबै लखोसपनोसो॥ कह्यो तुम्हारो सबै कही मैं और कछूअपनी ।श्रवण न वचन सुनतहैं उनके जोघटमहैंअकनी ॥ कोई कहे बात बनाइ पचासक उनकी बात जो एक । धन्य धन्य जो नारी ब्रजकी बिन दरशन इहि टेक॥ देखत उमँग्यो प्रेम यहांके धरी रही सब रोयो। सूर श्याम हौं रहौं ठगोसोज्यों मृग चौंको भोयो॥ ६५॥ बातैं सुनहु तौ श्याम सुनाऊं।वे उमँगी जलनिधि तरंग ज्यों तामेंथाह

नपाऊं ॥ कौन कौन कौ उत्तर दीजै ताते भग्यो अगाऊं।वे मारे शिर पटिया पारे कंथा काढि उढाऊं ॥ एक अँधेरो हियेकी फूटी दौरत पहिर खराऊं । सूर सकल षट दरशन वे हैं बारहखरी पढाऊं ॥६६॥ सुनि लीन्हों उनहींको कह्यो । अपनी चाल समुझि मनहीं मन गुनि अरगाइ रह्यो ॥अबलनि सों कही परि जापै बात तोरि कनि कानि।अनबोले पूरो दै निबह्यो बहुत दिन-नको जानि।जानि बूझिकै हौं कत पठयो शठ बावरो अयानो।तुमहूं बूझि बहुत बातनको वहांजाहु तौ जानौ॥आज्ञाभंग होय क्यों मोपै गयउ तुम्हारे ठीले।सूर पठावनहीकीवोरी रह्यो जु गजसोंलीले ॥६७॥राग मलार॥हो हरि बहुत दाँउदैहार्यो । आज्ञा भंगहोइ क्यों मोपैवचन तुम्हारो पार्यो॥हारि मानि उठि चल्यो दीन ह्वै जानि आपुन पै कैदु।जानिलेहु हरि इतनेहीमें कहा करै नीमनको वैदु॥ उत्तरको उत्तर नहिं आवत तब उनहीं मिलि जातु । मेरी किती बात ब्रह्माको अर्धवचन मेंमातु। अपनी चाल समुझि मनहीं मन घल्यो बसीठी तोरि।सूर एकहू अंग न काची मैं देखी टकटोरि ॥६८॥ कहिबेमें न कछू शक राखी। बुधि विवेक उनमान आपने मुख आई सो भाखी ॥ हौं मरि एक कहौं पहरकमें वे छिनमांझ अनेक । हारि मानि उठि चल्यो दीन ह्वै छाँडि आपनी टेक ॥ हौं पठयो कत कौने काजै शठ मूरख जो अयानो। तुमहिं बुझाबहु ते बातनकी वहां जाहु तौ जानो ॥ श्रीमुखकी सिखई ग्रंथोक्ति ते सब भईं कहानी। एक होइ तौ उत्तर दीजै सूर सु मठी उभानी ॥६९॥राग सोरठ॥माधोजी मैं योगको बोझा भर्यो। श्याम उन मुखविधु वचन सुधारस सुनि सुनि कछु न कह्यो ॥ तौलौं भार तरंग मो उदधि सखि लोचन उमह्यो ।तुम जो कह्यो ज्ञानको मारग सो बातैं जो बह्यो॥ मोहिं आश्चर्य एक जो लागत तौ कैसे जात सह्यो।सूर-दास प्रभु सखी सयानी लै भुज बीच गह्यो ॥७०॥ राग नट॥ कोऊ सुनत न बात हमारी। कहा मानै योग युक्ति यादवपति प्रगट प्रेम व्रजनारी ॥ कोऊ कहति इंद्र जब बरषो टेकि गोवर्धन लेत॥कोउ कहति हरि गए कुंजवन शीश धाम वे देत॥कोऊ कहत नाग कारे सुनि गएहरियमु-नातीर । कोउ कहै गए अघासुर मारन संग लिए बलवीर ॥ कोउ कहै ग्वाल बाल सँग खेलत बनमें जाइ लुकाने । सूर सुमिरि गुण माथे तुम्हारे कोउ कह्यो ना मानै॥७१॥राग सारंग॥हरितुम्हैं बारंबार सँभारैं । कहहु तौ सब युवतिनके नाम कहौं जे हितसों उर धारैं॥कबहुँकआँखि मूँदिकै चाहति सब सुख अधिक तिहारे । तव प्रसिद्ध लीला सँग बिहरत अबचित डोर विहारे ॥जाको कोऊ जेहि बिधि सुमिरै सोउ तेही हित मानै ।उलटीरीति सबैतुम्हरे है हमतो प्रगट कहिजानै॥ जो पतिआंहो तुम पठवत लिखि बीच समुझि सब पाउ। सूर श्याम है पलक धाममें लखिचित कत बिललाउ ॥ ७२ ॥ माधोजू कहा कहौं उनकी गति । देखत बनै कहत नहिं आवै परम प्रीति तुमते रति ॥ यद्यपि हौं पडमास रह्यो ढिग लही नहीं उनकी मति । कासों कहौं सबै एकै बुधि परबोधी मानै नाहीं अति ॥ तुम कृपालु करुणामय कहियत ताते मिलत कहा क्षति। सूर श्याम सोईपै कीजै जाते तुम पावहु पति ॥७३॥ तुम्हारोइ चित्र बनाउ कियो । तब को इंदु सम्हारि तुरतही मनसिज साजि लियो ॥व्रति गहि युग अंगुलीके बीचै उन भरि पानि पियो । पुरप्रति करति लेखको प्रारंभ तबहिं प्रहार कियो ॥ वे पथ विकल चकित अति आतुर भर्मत हेतु दियो । भृति बिलंबि पृष्टि दै श्यामा श्यामै श्याम वियो॥ या गति पाइ रही राधाअब चाहति अमृतपियो।सूरदास प्रभु प्रीतउलटिपरीहैकैसेजातजियो॥७४॥राग केदारो॥अबजिनिबाँधि वेहि डराहु। दूध दधि माखन मनोहर डारि देहु अरु खाहु॥सदा बैठे घोष रहियो बन न दैहैं जा-

न। पलकहू भरि दुख न दैहैं राखिहैं ज्यों प्रान ॥ सब तिहारो कहे करिहैं वचन माथे मानि। परम चतुर सुजान ईते मांझ लीजो जानि ॥ अब न कौनो चूक करिहैं यह हमारेबोल। किंकिरिनिकी लाज धरि ब्रज सुबस करहु निटोल ॥ समुझ निज अपराध करनी नारि नावति नीचि। बहुत दिनते बरति है कै आंखि दीजै सीचि ॥ मन वचन अरु कर्मना कछु कहति नाहिंन राखि। सूर प्रभु यह बोल हृदय सातराजासाखि ॥ ७५ ॥ रागसारंग॥ कहत न बनै ब्रजकीरीति। नाथ मम शठको पढ्यो भयो देखिउनकीप्रीति॥ युवतिवल्लभकतकहावतकरतसकलअनीति। मोहितौ यह कठिन औरो क्यों करिहै परतीति ॥ सुनौ धौं दै कान अपनी लोक लोकनि कीति। सूरप्रभु अपनी सचाई रही निगमन जीति॥ ७६॥ राग नट॥ परम वियोगिनी सब ठाढी। ज्यों जलहीन दीन कुमुदिनि बन रविप्रकाशकीडाढी॥ जिहि विधिमीनसलिलतेबिछुरेतिहि अतिगति अकुलानी। सूखे अधरकहि न आवै कछु वचन रहितमुखवानी ॥ उन्नतश्वासबिरह विरहातुरकमलबदनकुम्हिलानी। निंदति नैननिमेष छिनहि छिन मिलनकठिनजिय जानी ॥ बिनु बुधि बल विचित्र कृत शोभित चलि न सकी पचिहारी। सूरदास प्रभुअवधिगयोनतोप्राणतजतब्रजनारी॥ ७७॥ रागमारू ॥ सब ब्रज घर घर एकै रीति। ज्यों कुरुखेत गडेको सोनौ त्यों प्रभु तुम्हरी प्रीति ॥ वै सब परम विचित्र सयानी अरु सबही जग कीति। उनको ज्ञान सुनतही शठ भयो ज्योंबहुदिनकीभीति॥ एकै गहन धरी उन हठ करि मेटि वेदविधिनीति। गोपवेषनिज सूरश्याम लै रहीविश्वबर जीति ॥ ७८ ॥ राग केदारो॥ ब्रजजन दुखित अति तनछीनै। रटत इकटकचित्रचातक श्याम घन तन लीन॥ नाहिं पलटत वसन भूषन दृगन दीपक तात। मलिन वदन बिलखि रहत जिमि तरनि हीन जलजात ॥ कहन जो तुम कहेउ सो रति मति पच्यो करि उपदेश। धरत नलनी बूंद ज्यों जल वचन नहिं परबेश ॥ धरे मुरली मोर चंद्रिका पीतपट बनमाल। रही वह छबि एक अंगनि लपट श्याम तमाल ॥ दिवस बितवति सकल जन मिलि कथति गुण बलवीर। रैनि उडुपति निरखि तलफति मीन ज्यों जलतीर ॥ हौंहो करुणानाथ बंधो कहेउ ऊधो गहि पाइ। सूर प्रभु अब दरश दैकरि लेहु मरति जिआइ॥ ७९॥ राग सारंग ॥ तबते इनसबहिनसचुपायो। जवते हरिसंदेश तुम्हारो सुनत तवारो आयो॥ फूले व्याल दुरेते प्रगटे पवन पेट भरि खायो। फूचोयशमूचोकोचरणन तेहु तौ सब बिसरायो ॥ निकसि कंदराहूते केहरि शिरपर पूंछ हिलायो। गह्वरते गजराज आइ अंगही सर्व गर्व बढायो॥ ऊंचे बैसि विहंगमभामैशुक बनराइ कहायो। किलकिकिलकि कुलसहित आपनी कोकिल मंगल गायो ॥ अब जिनि गहर करोहो मोहन जो चाहतहौ ज्यायो। सूर बहुरि ह्वैहै राधाको सब वैरिनिको भायो ॥ ८० ॥ राग धनाश्री॥ आजु विरहिनी विरह तुम्हारे कैसोरटतरही। चारि याम निशि तुम्हरोई सुमिरन और न बात कही ॥ बासर कथाकठिनमन करिकरि क्रम क्रम व्यथा सही। संध्या शशि देखि उठि चली जब अंकन रहत गही ॥ मृगमद मलय कुमकुमा उरजल सरिता सेज बही। ते क्योंशीतलहोहिंसूरप्रभुपिय जू विरह दही॥ ८१॥ रागसारंग॥ कान्ह तुम्हारी विकलविरहिनी विलपतिविरह वियोग। अतिआरत न सम्हारत तन मन इकटक लोमग योग ॥ कतर मिलो लोचन वरषत अति दुख मुखके छबि रोयो। राहु केतु मानो सुमीडि विधु आंक छुटावत धोयो॥ अबला कहा योग मत जानैमन्मथ व्यथाबिगोयो। सूरदास क्योंनीर चुवतहै नीरस बसन निचोयो॥ ८२॥ राग सोरठ ॥ माधोजू सुनोब्रजकोप्रेम। बूझि मैं षटमास देख्यो गोपिकनको नेम॥ हृदयते नहिं टरत उनके श्याम नाम सुहेत। अँसुव सलिल प्रवाह उर मनौं

अरध नैनन देत ॥ चमर अंचल कुच कलश मनो पाद्य पाणि चढाइ । प्रगट लीला देखि उनकी कर्म उठती गाइ॥ देह गेह सनेह अर्पण कमललोचन ध्यान। सूर उनको भजतदेखत फीकोलागत ज्ञान॥८३ ॥ माधोजू सुनिये ब्रजव्यवहार। मेरो कह्यो पवनको भुसभयो गावतनंदकुमार॥ एक ग्वालि गोसुत ह्वै रैंगति एक लकुट कर लेति । एक ग्वालि मंडली करि बैठति छाँक बाँटिके देति ॥ एक ग्वालि नटवत बहुलीला एक कर्मगुण गावति । बहुत भाँति करि मैं समुझाई नेक न उरमें आवति ॥ निशिवासर याही ढँग सब ब्रज दिन दिन नवतम प्रीति। सूर सकल फीको लागत हैं देखत वह रँगरीति ॥ ८४ ॥ राग मलार ॥ बातैं बूझति यों बहरावति। सुनहु श्याम वे सखी सयानी पावसऋतु राधहि न सुनावति ॥ घन गर्जत मनु कहत कुशलमति कूंजत गुहासिंह समुझावति । नहिं दामिनि द्रुम दवा शैलचढि फिरि बयारि उलटी झर धावति ॥ नाहिंन मोर बकत पिक दादुर ग्वालमंडली खगन खिलावत । नहिं नभ वृष्टि झरन झर ऊपर बूँद उचटि इत आवत ॥ कबहुँक प्रगट पपीहा बोलत कहि कुवेष करतारि बजावत । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिन सो बिरहिनि इतनो दुख पावत ॥८५॥ राग नट ॥ नेकहू काहू सोच न कीन्हों। सुन ब्रजनाथसबनके अवगुण मिलि मिलिहैं दुख दीन्हों ॥ ऋतुवसंत अनसमै अधममति पिक सहाउ ले धावत । प्रीतम संग न जानि युवति रुचि बोलेहु बोल न आवत॥ सदाशरदऋतुसकलकलालैसन्मुखरहत जुन्हाइ। सो सितपक्ष कुहू सम बीतत कबहुँ नदेत देखाइ ॥ त्रिविध समीर सुमनसौरभमिलिमत्त मधुपगुंजार। जोइ जोइ रुचै सु कियोबाँधि बल तजि मन सकुच बिचार ।। रतिपतिअतिअनीति कीवेकोकोटिधूमध्वजमानो। लैकरधनुषचितै तुम्हरोमुख अबबोलै तब जानौ॥ इहिविधिसबनवीन पायोब्रजकाढतबैरदुरासी। सूरदास प्रभु बेगि मिलहु अब पिशुन करत सब हाँसी ॥८६॥ राग सारंग॥ सबते परम मनोहर गोपी। नँदनंदनके नेह मेह जिनि लोक लीक लोपी ॥ बरि कुबिजाके रंगहि राचे तदपि तजी सोपी। तदपि न तजै भजै निशि बासर नेकहू न कोपी॥ ज्ञानकथाकीमथि मन देखो ऊधो बहुधोपी। टरति घरी छिन नेक न अँखिया श्यामरूप रोपी ॥ जे तिहि तिहि हरिके अवगुणकी ते सबई तोपी। सूरदास प्रभु प्रेम हेम ज्यों अधिक ओप ओपी ॥ ८७ ॥ राग सारंग॥ मोमन उनईको भयो । परचो प्रभु उनके प्रेमको सँमै तुमहू बिसारि गयो ॥ तुमसों शपथ करि गयो माधव बेगि कह्योहो आवन । तिनहिं देखि वैसोई ह्वैगयो लग्यो उनहि मिलि गावन- समुझि परी षटमास बितेते कहां हुतो हों आयो। सूरअनकही दैं गोपिनसों श्रवणमूँदिउठिधायो॥ ॥८८॥ राग गंधार॥ उनमें पांचोदिनजोवसिए। नाथतुम्हारीसौंजियउपजतफेरिअपनोयों कसिए ॥ वह विनोदलीला वह रचना देखही बनि आवै । मोको कहां बहुरि वैसे सुखबडभागीसो पावै॥ मनसा वचन कर्मना अबहैं कहत नहीं कछु राखी । सूर काढि डारचो ब्रजते ज्यों दूध मांझते माखी॥८९॥ राग सोरठ ॥ माधोजू मैं अतिहीसचुपायो। अपनोजानिसँदेश साजि करिब्रजमेंमिलन पठायो ॥ क्षमा करो तो करौं बीनती उनहिं देखि जो आयो । सकलनिगमसिद्धान्त जन्मकर श्याम उन सहज सुनायो॥ नहिं श्रुति शेष महेश प्रजापति जो रस गोपिन गायो । कथा गंग लागी मोहिं तेरी उह रस सिंधुउमहायो ॥ तुम्हरीअकथकथा तुमजानौहमैंजिननाथ बिसरायो। सूर श्याम सुंदरि इहसुनिसुनि नैनन नीरबहायो॥९०॥ राग मलार ॥ जोपैप्रभुकरुणाके आलै। तौ कत कठिन कठोर होत मन मोहिं बहुत दुख शालै ॥ वहो विरदकी लाज दीनपति करि सुदृष्टि देखो । मोसों बात कहत किन सन्मुख कहा अवनि अवलेखो । निगनकहत वश होत भक्तित

सोऊ है उन कीनी।सूर उसाँस छाँडि हाहाब्रज जल अँखियां भरिलीनी ॥९१॥ राग मारू॥ सुनु ऊधोमोहिं नेकन बिसरतवै ब्रजवासी लोग।तुम उनको कछुभलीनकीनीनिशिदिनदियो वियोग॥ यद्यपि वसुदेव देवकी मथुरा सकल राज सुखभोग । तद्यपि मनहि बसत बंसीबट ब्रज यमुना संयोग ॥ वै उत रहत प्रेम अवलंबन इतते पठयो योग । सूर उसाँस छाँडि भरि लोचन बढचो विरहज्वर शोग ॥ ९२ ॥ ऊधो मोहिं व्रज बिसरत नाहीं। वृंदावन गोकुल तन आवत सघन तृणनकी छाहीं ॥ प्रात समय माता यशुमति अरु नंद देखि सुख पावत । माखन रोटी दह्यो सजायो अतिहित साथ खवावत॥ गोपी ग्वाल बालसँगखेलत सब दिन हँसत सिरात । सूरदास धनिधनि ब्रजवासी जिनसों हँसत ब्रजनाथ ॥ ९३ ॥ भक्तबछल वसुदेवकुमार।चले एकदिन सुफलकसुतके गृह पंडवहेत बिचार॥ मिलो सो आयपाय सुधि मगमें बारबार परि पाइ।गयो लिवाय सुभग मंदिरमेंप्रेम नबरनो जाइ॥चरण पखारि धारि जल शिरपर पुनिपुनि दृगन लगाइ ॥ विविधसुगंध चीर आभूषन आगे धरेबनाइ॥धन्यधन्यमैं गृह धनि २मम धनिधनि भाग हमारे।जो प्रभुज्ञान ध्यान नहिं आवत तिनममगृह पगधारे॥प्रभु तव माया अगम अमोघहै लहि न सकत कोउ पार। दीजै भक्ति अनन्य कृपा करि होइ सोमम उद्धार ॥ अरु जेहि कारन प्रभु पगधारे कहिये सोउबिचारि।करहुँ ताहि तुमरी किरपातें आयसु माथे धारि ॥ यह अक्रूरदशा जो सुमिरै सिखै सुनै अरु गावै। अर्थ धर्म कामना मुक्तिफलचारि पदारथ पावैं॥ हरिजी कह्यो मनोरथ तुम्हरो करिहैं श्रीभगवान। जो जानत सोई सो पावत यह निश्चय जिय जान ॥ तुम जानतहौ पाण्डवके सुत हैं अति हितू हमारे । कुरुपति अंध मोहवश तिनको देत सदा दुख भारे ॥ तात जाइ उनको तुम भेंटौ हमरी कुशल सुनावहु। बहुरौ समाचार सब उनके लै हमपै चलिआवहु ॥ यह कहि श्याम राम ऊधो मिलि अपने भवन सिधारे।सुफ-लकसुत आयसु माथे धरि पंडवगृह पगधारे ॥ पहिले कौरवपतिसोंभेंटचो पुनिपंडवगृहआए । पकरि चरन कुंतीके पुनिपुनि सूनैं गले लगए ॥ कुशल भाषि सब यादवकुलकी प्रभुको कह्यो संदेश॥ भयो परम संतोष तबहिं सुनि कह्यो हम शरन तुम्हारी।कुरुपति अंध मोह पुत्रनकेदेत सदा दुख भारी॥पुनि कुरुपतिसों मिलि सुफलकसुत कह्यो बहुत समुझाइ।चारि दिवसके जीवन ऊपर तुम कत करत अन्याइ ॥ अन्याईको बास नरकमों यह जानत सब कोइ । गर्वप्रहारी हैं त्रिभुवन पति जो कछु करैं सो होइ ॥ कुरुपति कह्यो मैं हू यह जानतपै मोहन न बसाय।नमस-कार मेरो यदुपतिसों कहिबो गहिकै पाय ॥ सुफलकसुत सब कथा तहांकी आइ श्यामसोंभाखी। सूरदास प्रभु सुनिकै तासों हृदय आपनी राखी ॥ ३४९४ ॥

॥ इति श्रीसूरसागर दशमस्कन्ध पूर्वार्ध समाप्त ॥



॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर ।

दशमस्कन्धोत्तरार्धः ।

जरासंध आगमन द्वारकाहेतु ।

॥राग मारू ॥ श्याम बलराम जबकंस मारचो।सुनि जरासंध वृत्तान्त अस सुतासेयुद्ध हितकटक अपनो हँकारचो॥जोरि दल प्रबल सोचल्यो मथुरापुरी सुन्योभगवान जब निकट आयो।तबदुहूँ बीर दल साजिकै आपनो नगरतेनिकसिरणभूमिछायो॥दुहूँदिशिसुभट बाँकेबिकट अति जुरेमनो दोउ दिशिघटा उमडि आई। सूर प्रभु सिंहध्वनि करत जोधा सकल जहां तहँ करन लागे लराई ॥१॥ मलार॥ मानहु मेघ घटा अति गाढी । बरषत बाण बूँद सेनापति महानदी रण बाढी॥ जहां बरन बरन बादर बानैत अरु दामिनि करि करिवार।उडत धूरि धुरवाधुर दीसत शूल सकल जलधार॥ गर्जनि पणव निसान शंखरव हय गज हींस चिकार।प्रगटत दुरत देखियत रबिसम द्वैवसुदेवकुमार॥कुंजर कूल रमित अतिराजत तहँ शोणित सलिल गँभीर।धनुष तरंग भँवर स्यंदनपग जलचर सुभट शरीर ॥ उडत ध्वजा पताकरु छत्र रथ तरुवर टूटत तीर । परमनिशंक समर सरिता तट क्रीडत यादव वीर ॥ सूने किये भुवन भूपतिके सुवस किए सुरलोक । छिनकमध्य हरि हरयो कृपा करि उन सबहिनके शोक ॥ आनंदे मधुबनके वासी गई नगरकी रोक। जरासंधको जीति सूर प्रभु आये अपने ओक॥२॥ अध्याय ॥ ५१ ॥ कालयवनदहन ॥ मुचुकुंद उद्धार ॥ राग सारंग॥ब्वार सत्रह जरासंध मथुरा चढिआयो। गयो सो सबदिन हार जात घर बहुत लजायो॥तब खिसिआइकै कालयवन अपने सँग ल्यायो । हरिजी कियो बिचार सिंधुतट नगर बसायो ॥ उग्रसेन सब कुटुंबलै ता ठौर सिधायो।अमरपुरीते अधिक सुख तहाँ लोगन पायो॥कालयवन मुचुकुंदसों हरि भस्म करायो । बहुरि आइ भरमाइ अचल सब ताहि जरायो ॥ जरासंध वहँते बहुरि निजदेश सिधायो। श्याम राम गये द्वारका सूरज यश गायो ॥३॥ अथ द्वारकाप्रवेश ॥ राग कल्याण॥ देख री आजु नैन भरि हरिजूके रथकी शोभा। योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रत कीजतहै जेहि लोभा ॥ चारु चक्र मणि खचित मनोहर चंचल चमर पताका। श्वेत छत्र मनो शशि प्राची दिशि उदै कियो निशि राका ॥ घन तन श्याम सुदेश पीतपट शीश मुकुट उर माला । जनु दामिनि घन रवि तारागण प्रगट एकही काला॥ उपजत छबिकर अधर शंख मिलि सुनियत शब्द प्रशंसा। मानहु असित कमल मंडलमें कूजतहै कलहंसा ॥ मदन गोपाल

देखियतहै अब सबदुख शोक बिसारी। बैठेहैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो वहाँ सिधारी॥ आनंदित चित जननि तातहित कृष्ण मिलन जिय भाए। सूरदास दुहुँ कुल हित कारण माधो मधुपुरी आए ॥४ ॥अध्याय॥५२॥ द्वारकाकी शोभा॥ राग कल्याण॥ दिन द्वारावति देखन आवत। नारदादि सनकादि महामुनि ते अवलोकि प्रीति उपजावत॥ विद्रुम फटिक पची कंचन खचि मणिमय मंदिर बनै बनावत। जितने तर नर नारि उपर खग सबहिनको प्रतिबिंब दिखावत॥ जल थल रंग विचित्र बहुत बिधि अवलोकत आनंद बढावत। भूलिरहे अति चतुर चितै चित कौन सत्य कछु मर्म न पावत॥ वन उपवन फल फूल सुभग सर शुक सारिका हंस पारावत। चातक मोर चकोर वदत पिक मनहु मदन चटसार पढावत॥ धाम धाम संगीत सरस गति बीणा वेणु मृदंग बजावत। अतिआनंद प्रेम पुलिकित तनु जहां तहां यदुपतियश गावत॥ निशिदिन रहत विमान रूढ रुचि सुरवनितानि संग सब आवत। सूर श्याम क्रीडत कौतूहल अमरन अपनो भवन न भावत॥५॥ राग सारंग॥ श्रीमनमोहन खेलत चौगान। द्वारावती कोट कंचनमें रच्यो रुचिर मैदान॥ यादव वीर बराइ बटाई इकहलधरइकआपै ओर। निकसे सबै कुँवर असवारीउच्चैःश्रवाके पोर॥ लीले सुरंग कुमैत श्याम तेहि परदे सब मन रंग। बरन अनेक भांति भांतिनके चमकति चपला वेग॥ जीन जराइ जु जगमगाइरहे देखत दृष्टि भ्रमाइ। सुर नर मुनि कौतुक सब लागे इकटक रहे लुभाइ॥ जबहीं हरि लैचले गोइ कुदासौ लाइ। तबहीं औचकही वेल हलधरपाइ॥ कुँवर सबै घेरि फेरे फेरत छुडत नहिंने गुपाल। बलै अछत छल बल करि सूरदास प्रभु हाल ॥ ६ ॥ रुक्मणीपत्रिका आवन ॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरिचरणाविंद उर धरो॥ हरि सुमिरण जब रुक्मिणि करयो। हरि करि कृपा ताहि तब बरयो॥ कहौं सो कथा सुनो चितलाई। कहै सुनै सो रहै सुखपाई॥ कुंदनपुरको भीषम राई। विष्णुभक्तिको तामन चाई॥ रुक्म आदि ताके सुत पांच। रुक्मिणि पुत्री हरिरँग राच॥ नृपति रुक्मसों कह्यो सुनाई। कुँवरियोग्यवर श्रीयदुराई॥ रुक्म रिसाइ पितासों कह्यो। सुनि ताको अंतर्गत दह्यो॥ रुक्म चँदेरी विप्र पठायो। ब्याहकाज शिशुपाल बुलायो॥ सो बरात जोरि तहां आयो। श्रीरुक्मिणिके जिय नहिं भायो॥ कह्यो मेरोपति श्रीभगवान। उनहि बरों के तजौं परान॥ भीषमसुता रुक्मिणी वाम। सूर जपति निशिदिन वहनाम॥७॥ राग कान्हरो॥ द्विज पतिया दै कहियो श्यामहिं। कुंदनपुरकी कुँवरि रुक्मिणी जपति तुम्हारे नामहिं॥ पालागौं तुम जाहु द्वारावति नँदनंदनके ग्रामहिं। कंचन चीर पटंबरदेहौं करकंकन जे नामहिं॥ यह शिशुपालमजैत श्रीदीनबंधु ब्रजनाथ कबैमुखदेखिहौं। कहि रुक्मिणि मनमाहँ सबै सुख लेखिहौं॥ गावहिं सब सहचरी कुँवरि तामसकरि हेरयो। सबदिन सुखसाथिनी आज कैसे मुख फेरयो॥ मेरे मन कछु और है तुम कछु गावति और। प्राण तजौंगी आपनोदेखि असुर शिरमौर॥ तिहूँलोकके धनी मनीतुमहीकी सोहै। सत्यकीर्तिऔपुरुषहि समरथ सब मोहै॥ पर पुरुषारथ काग हंसनीके घर आवै। कामधेनु खरु लेइ काल अमृत उपजावै॥ कुँटुब वैर मेरे परे वरनि वरे शिशुपाल। करनि सिंह तुम्हरी धरी कैसे चपै शृगाल॥ भुवन चतुर्दश राज सकल सुर नर मुनि देवा। कर जोरे शशि सूर पवन पानी करैं सेवा॥ अबहिं औरकी और होति कछु लागै बारा। ताते मैं पाती लिखी तुम प्राण अधारा॥ कतहि भूँख औ नींदजिवन हौं जानति नाहीं। अनदेखे ये नैन लगे लोचन पथवाहीं॥ कै यदुपति लै आवहू करौं प्राणलगिघाउ। बाजे शंख जानिहौं सांची आयो यादवराउ॥ जो मांगो सो देउँ लेहु माधो सँग आए। कोटि

यज्ञफल होइ पिता वहि दरशन पाए॥रोइ रुक्मिणी यों कह्यो धरो पाणि में माथ।यह पाती ले पिता दीजियो प्राणनाथके हाथ॥ विप्रभवन रथ चढचो चलत तब बार न लाई।छपनकोटिकेमधि राजतहैं यादवराई॥ छाँडि सकुच पाती दई तब पूँछी कुशलात। जानि चीन्ह पहिचानिकुँवर मन फूले अंग न मात॥आपुन झारी माँगि विप्रके चरण पखारे। इती दूरि श्रम कियो राज द्विज भए दुखारे॥पाती बाँचिन आवई माँग्यो तुरत विमान। लोचनभरिभरि आवही मानहु कर जलपान॥ लीन्हों विप्रचढाइबोलिबलसों कहि सारा।सकल सभा जियजानिकसे साजे हथिआरा॥कहहुनाथ कहां आवहीं कियो कौनपर छोहु ।भीषमकैरुक्मिणिहरण सावधान सब होहु॥आवतदेख्योविप्र जोरिकर रुक्मिणिधाई।कहाकहैगोआनि हिएधकधकी लगाई॥ विप्रआनिमाला दएकहेकुशलके बैन।कुँवरि पत्यारो तब कियो जब रथ देख्योनैन॥गए कंचुकि बंद टूटि लूटिहृदय सो पाइ।करति मनहिंमन सेव निकट रथ दयो देखाइ॥तिहूंलोकके कंतहो हों दासीप्रभु जानि ।रुक्मिणिबिनती करतिहै लाजहि आपुहि मानि ॥ बैठि असुर सब सभा रुक्मसों मतौ बिचारचो। आयो सुन्यो अहीर मनों यहिकाल हँकारचो॥गाइ चरावन ग्वालहै आयो मुजरा देन । देखहु ढीठो दूरिते आयो भातहि लेन ॥ सब दल होहु हुसियार चलहु मठ घेरहिं जाई । परपंचीहै कान्ह कछू मति करै ढिठाई॥कुँवरि गौरिपाँयन परी मनवांछित फलजानि ।हौं यदुपति वर पाइहौं वदन धरौं दोउ पानि ॥ गौरिकहै सु कुँवरि पाँयमेरेजिनि लागहि । कहाकुटुंबकेबैननैन श्रीमतिबैरागहि । आधो श्रीवृषभानुको आधोदीन्होंतोहिं॥राजसोहाग बढोसबै कहानिहोरोमोहिं॥ अबगावहुकरि सगुन बोलि मुख अमृत बानी।दूलह श्रीनँदलाल दुलहिनी रुक्मिणिरानी॥याकोजननी दीजियो करत सखिनसों नेह । हौं यदुपति घर जाति हौं जाको है यह देह॥ अंबर बाणी भई सजल बादर दल छाए ।देव तेतीसौ कोटि जो यज्ञ तवासे आए॥ हरन रुक्मिणी होत है दुहूँ ओर भई भीर। अति अघात कछु नाहिंन सूझत बत्र चलिहि ज्यों नीर॥ लागे रुक्म गोहारि संग शिशुपाल न छोडै । छाँडहि बान विशाल युद्ध ऐसोको वोडै॥चक्र धरे हरि आवहींसुनि असुरन जियगाज। टेरि कह्यो शिशुपालसों कीजो कंकन लाज ॥ सकल सैन संहारि रुक्म हलधर गहि लीन्हों । आगे इहि सों काम रुक्मिणी सों प्रण कीन्हों ॥ सात शिखा शिर राखिकै तब बूझी कुशलात । कंचनराजको काज सँवारचो भूपनको यह काज ॥ नगर बधाई बाजि नाथ बहुतै सुख मान्यो । पूरण कीन्हों नेह रुक्मते सत्यहि जान्यो ॥ कंकन छोरचो द्वारका बाज्यो अनंद निसान । भुक्ति मुक्ति न्यवछावरी पाई सूर सुजान॥८॥राग कान्हरो॥पतियां दीजै श्याम सुजानहिं । मुख संदेश बनाइ विप्र ज्यों प्रभु न झूठ करि मानहिं ॥ श्रीहरि योग्य रुक्मणी लिखितं बिनती सुनहि प्रभोधरि कानहि । बाँचत बेगि आइबो माधव जात धरे मेरे प्रानहि ॥ समुझत नहीं दीन दुख कोऊ सिंह भखहि श्रृगालके पानहि । मणि मर्कट कर देत मूढमति मृगमद रजमें सानहि ॥ कबलगि सहौं दुख दरश दीन भई मीन बिना जलपानहिं। सूरदास प्रभु अधर सुधाघन वरषिदेहु जियदा-नहिं ॥ ९ ॥ राग सारंग॥द्विज कहियो हरिसों समुझाइ । सकत श्रृगाल सिंहको भोजन दुर्बल देखिकै छीने खाइ ॥ परमिन गए लाज तुमहींको हंसिनि व्याहि काग लै जाइ।काहेको नेमधर्म्म व्रत कीन्हों माघमास जल शीत अन्हाइ॥श्वान संग सिंहिनि रति अजगुत वेद विरुद्ध असुर करै आइ । सूरदास प्रभु बेगि न आवहु प्राणगए कहा लेहौ आइ ॥ १० ॥ द्विज कहियो यदुपति सन बात । वेद विरुद्ध होत कुंदनपुर हंसको अंश कागलै परात ॥ जिनि हमरो अपराध बिचारो कन्या

लिख्यो मेटि गुरु तात। ताते यह द्विज बेगि पठायो नेम धर्म मर्यादा जात ॥ तनु आत्मा समर्पित तुम कहँ पाछे उपजि परी यह बात । कृष्णसिंह बलि धरी तिहारी लेबेको जंबुक अकुलात॥ कृपा करहु उठि बेगि चढहु रथ लग्न समै आवहु परभात । सूरदास शिशुपाल पानि गहै पावक जारि करौं तनुघात ॥ ११ ॥ राग धनाश्री ॥ हौं प्रभु जन्मजन्मकी चेरी।भीषमभवन रहतहौंमैंज्यों लुब्धक असुर सैन्य मिलि घेरी ॥ प्रातकाल शिशुपाल कालते यदुपति आवैं बेगि सबेरी ।कछु विपरीति बात नहिं आवै उपजी प्रीति ग्राह गज केरी ।सूरदास प्रभु कृष्णप्रीति बिनु प्राणबिना तनु लागत पेरी ॥ १२ ॥ राग मारू ॥ द्विज बेग धावहु कहि पठवहु द्वारकाते जाइ। कुंदनपुर एक होत अजगुत बाघ घेरी गाइ ॥ दीन ह्वैकरि करहुँ बिनती पाती दीजहु जाइ ।रुक्म वरवस ब्याहि देहै गनै पितहि न माइ ॥ लग्न लै जु बरात साजी उनत मंडप छाइ । पैज करि शिशुपाल आए जरासंध सहाइ ॥ हंसको मैं अंश राख्यो काग कत मँडराइ । गरुडवाहन कृष्ण आवहु सूर बलि बलि जाइ ॥ १३ ॥ अथ द्विजसंदेश कृष्णप्रति वदव ॥ राग आसावरी ॥ बाल मृगीसी भूली आँगन ठाढी। नवल विरहिनी चित चिंताबाढी ॥ तुम्हरो पंथ निहारेस्वामी। कबहिंमिलहुगेअंतर्यामी॥ मंडपपुर देखे उर थरथर करै। मनु चहुँदिशि दौ लागी धीरज तन न धरै ॥ अपने विवाहके दुंदुभी सुनि सुनि। चकृत मन मानो महासिंह ध्वनि॥ सखिनकी माल जाल जिय जानति। व्याधरूप शिशुपालहि मानति ॥ सूरदास युगभरि बीतत छिनु । हरि नवरंग कुरंग पीव बिनु ॥ १४ ॥ अध्याय ॥ ९ ॥ कुंदनपुर श्रीकृष्णगए ॥ राग सारंग ॥ सुनत हरि रुक्मिणिको संदेश । चढि रथ चले विप्रको संगलै कियो न गेह प्रवेश ॥ बारंबार विप्रको पूँछत कुवँरि वचन सो सुनावत। दीनवचन करुणानिधान सुनि नयननीर भरिआवत ॥ कह्यो हलधरसों आवहु दललै मैंपहुँचतहौंधाई।सूरप्रभु कुंडिनपुर आए विप्रजुजाइसुनाइ॥ १५॥ कुँवरिसुनिपायो अतिआनंदन। मनहींमनहिंबिचारकरत इह कब मिलिहैं नँदनंदन ॥ हार चीर पाटंबर देकरि विप्रहि गेह पठायो । पै इह भेद रुक्मिणी निज मुख काहू कहि न सुनायो ॥ हरि आगमन जानिकै भीषम आगे लेन सिधायो ।सूरदास प्रभु दरशन कारन नगर लोग सब धायो ॥ राग आसावरी ॥ १६ ॥ देख रूप सब नगरके लोग । बारंबार अशीश देत सब यह वर बन्यो रुक्मिणी योग ॥ जो कछु चतुराई विधनामों जानत युगरस रीति। तौ अजहूं लौं राजसुतापति हरि ह्वैहैं शिशुपालहि जीति॥ जो राजा कौतुक चलिआए ते मुख निरखि कहतहैं बात । परत न पलक चकोर चंद्रलौं अवलोकत लोचन अकुलात॥ मनसाको हीता जगजीवन सुंदर वर वसुदेव कुमार । सूरदास जाके जिय जैसी हरि कीन्हें तैसो व्यवहार॥ १७ ॥सखी वचन रुक्मिणणीप्रति सुद्दी ॥ राग बिलावल ॥ सोचसोचतूडारउठि देख दीनदयालु आयो । निरखि लोचन प्रणत मोचन कुँवरिफल बांछोसोपायो॥ सुनतभइ अकुलाइ ठाढी ज्यों मृतक बिधि दे जिवायो । चढि सदन वह वदनकी छबिपरखिदीनोदवबुझायो॥ ले बलाइ सुकर लगायो निरखि मंगलचार गायो । नैनआरति अर्घ्य आँसू पुहुप तन मन धन चढायो ॥ जानि हौं ब्रजनाथ जियकी कियो सो जो तुम बतायो। अपहरन पुन वरन वश हरि जानि हौं केहि योग भायो ॥ भक्तके वशभक्तवत्सल विदुर सातो साग खायो ॥ मुदित ह्वै गई गौरि मंदिर जोरि कर बहु बिधि मनायो ॥ प्रगट तेहि छिन सूरके प्रभु बाँह गहि कियो वाम भायो ।कृपासागर गुणन आगर दासि दुखदीनहिविहायो॥ १८॥ रुक्मिणी हरन ॥ आसावरी॥ रुक्मिणी देवी मंदिर आई ।धूप दीप पूजा सामग्री अली संग सब ल्याई ॥ रखवारीको बहुत महाभट

दीन्हें रुक्म पठाई । ते सब सावधान भए चहुँदिशि पंछी इहाँ न जाई ॥ कुँवरि पूजि गौरी बिनती करि वर देहु यादवराई । मैं पूजा कीन्ही या कारण गौरी सुनि मुसुकाई ॥ पाइ प्रसाद अंबिका मंदिर रुक्मिणि बाहेर आई । सुभट देख सुंदरता मोहे धरणि गिरे मुरझाई ॥ यहिअंतर यादवपति आए रुक्मिणि रथ बैठाई । सूर प्रभू पहुँचे अपने घर तब सबहिन सुधिपाई ॥ १९ ॥ राग आसावरी ॥ याहीतेशूलरहीशिशुपालहि।सुमिरिसुमिरिपछितातसदावह मान भंगके कालहि ॥ दुलहिनि कहति दौरि दीजहु द्विज पातीनंदकेलालहि।वरसुबरातबुलाइबडेहित मनसि मनोहर बालहि ॥ आये हरषि हरन रुक्मिणि रिस लगी दनुज उर शालहि । सूरज दास सिंहबलिअपुनोलीनी दलकिशृगालहि ॥ २० ॥ अध्याय ॥ ५४ ॥ श्रीकृष्ण रुक्मणीविवाह ॥ राग सोरठ ॥ श्याम जब रुक्मिणि हरि लै सिधारे । सुनि जरासंध शिशुपाल धाए ॥ शाल्व दंतवक्र बनारसीको नृपति चढे दल साजि मानो रविहि छाए । सांगकी झलक चहुँदिशि चपला चमकि गजगर्ज सुनत दिग्गज डेराए ॥ श्याम बलराम सुधिपाइ सन्मुख भये बाणवर्षा करन लगे सारे। रुक्मिणी भय कियो श्याम धीरज दियो बानसों बान तिनके निवारे ॥ राम हल मूशल संभारि धायो बहुरि विपुलरथ औ सुभट सब संहारे॥रुंडपर रुंड धुकि परे धरि धरणिपर गिरत ज्योंसंग कर वज्रमारे ॥ जरासंग जीवते भजो रणखेतते शाल दंतवक्र याविधि पराई । प्रातके समै ज्यों भानुके उदयते भलै होइ जात उडगन नशाई ॥ गह्यो भगवान शिशुपालको जीवते ताहिसों वचन याबिधि उचारे । रुक्मिणी लिये मैं जात तुम देखतहि पै नहीं हरष कछु मन हमारे ॥ पुरुषको भाजिबेते मरनहै भलो जाइ सुरलोक द्वारे उघारे । पुरुषको हार अरु जीत दोउ होतहै हर्ष अरु सोच नहिं चित्तधारे ॥ बीज बोइये जोइ अंतलोनिये सोइ समुझि यहबात नहिंचित्तधरई।करन कारण महाराजहैं आपही तिनहिं चित राखि नित धर्म्म करई ॥ बहुरि भगवान शिशुपालको छाँडिदियो गयो निज देशको सो खिसाई। शस्त्र धनु छाँडिकै भाजि नरपति गये यादवनहेत हरिदै लुटाई॥रुक्म यह सुनि चल्यो सौंह करि नृपनपै श्याम बलरामको बाँधि ल्याऊं।आइइहाँ कह्यो शिशुपाल सो मैं नहीं आपनो बल तुम्हैं अब दिखाऊं ॥बाणवर्षा लग्योकरनयाभाँतिकहि कृष्ण ज्यों तिनहिं मगमें निवारच्यो। आपनें बाणसों काटि ध्वज रुक्मके असुर औ सारथी तुरत मारच्यो॥रुक्म भू परच्यो उठि युद्ध हरिसों करच्यो हरिसकल शस्त्र ताके निवारे। बहुरि खिसिआइ भगवानके ढिग चल्यो ज्यो चलत पतंग दीपक निहारे ॥ खड्ग लै ताहि भगवान मारन चले रुक्मिणी जोरि कर बिनय कीयो । दोष इन कियो मोहिं क्षमा प्रभु कीजिए भद्र करि शीश जिवदान दीयो ॥ राम अरु यादवन सुभट ताके हते रुधिरके नहर सरिता बहाई । सुभट मनो मकर अरु केश सेवार ज्यों धनुष त्वच चर्म कूरम बनाई ॥ बहुरि भगवानके निकट आयेसकल देखिकै रुक्मको हँसे सारे । कह्यो भगवानसों कहा यह कियो तुम छाँडिबो हुतो या भलो मारे ॥ मरेते अप्सरा आइ ताको बरति भाजिहैं देखि अब गेह नारी । रुक्मिणीसों कह्यो सोच नहिं कीजिए होत है सोइ जो होनि हारी॥ रुक्म शिरनाइ या भाँति बिनती करी नाथमैं मर्म तुम्हरो न जान्यो । ब्रह्म तुम अनंत तुमहिं कारण करण मैं कौन भाँति तुमको पहिंचान्यो ॥ दीनबंधु कृपासिंधु करुणाकर सुनि बिनय दयाकरि ताहिको छाँडि दीन्हों । बहुरि निज नगर पैठ्यो न सो लाज करि बनहि तिन आपनो बास कीन्हों ॥ आइ भीषम दियो दाइज ताठौर बहु श्याम आनंद सहित पुर सिधाये । सुनत द्वारावती मारु उतसों भयो सूर जन मंगलाचार गाये ॥ २१ ॥

॥राग आसावरी॥देखहिं दौरि द्वारकावासी। सुनत सकल पुरजीतरुक्मिणीलैआएयदुपति अविनासी॥ लेति बलाइ करत नवछावरि बलि भुज दंड कनक अतित्रासी। नर नारीके नैन निरखि करिचातक तृषित चकोरी प्यासी॥ कर आरती कलशलैधाई चीन्हि न परति कुलवधू दासी। देश देश भयो रहसि सूर प्रभुजरासंध शिशुपालकी हाँसी॥२२॥राग धनाश्री॥आवहुरीमिलि मंगल गावहु।हरिरुक्मिणिहि लिये आवतहैं इह आनँद यदुकुलहि सुनावहु॥बाँधो बंदनवारमनोहर कनक कलश भरिनीर भरावहु। दधि अक्षत फल फूल परमरुचि अंगन चन्दनचौकपुरावहु॥कदलीयूथ अनूप कुशल दल सुरंग सुमन लै मंडल छावहु। हरद दूब केशर मग छिरकौ भेरी मृदंग निसान बजावहु॥ जरासंध शिशुपाल नृपतिंते जीतेहैं उठि अर्घ्य चढावहु। बल समेत तनु कुशल सूर प्रभु हरि आये आरती सजावहु॥ २३॥ बिबाह वर्णन॥ राग बिलावल॥ छंद त्रिभंगी॥ श्री यादवपति व्याहन आयो। धनि धनि रुक्मिणि हरिबर पायो॥छंद॥हरिश्याम घनतनपरमसुंदर तडित वसनबिराजई। अँग अंग भूषण सुरस शशि पूरणकलामनोंभ्राजई॥ कमल मुख कर कमल लोचन कमलमृदुपद सोहहीं। कमल नाभिः कमल सुंदरनिरखि सुर मुनिमोहहीं॥ १॥सुधा सरोवर छिटकि अनूपम। ग्रीव कपोत मनो नासा कीरसम॥छंद॥कीरनासाइंद्रधनु भ्रू भँवरसेअलकावली। अधर विद्रुम बज्रकन दाडिम किधौं दशनावली॥ खौर केशरिअति विराजत तिलक मृदमदको दियो। कामरूप बिलोकि मोह्यो वास पद अंबुज कियो॥२॥ वसुदेवनंदनत्रिभुवन मनहरन। मुकुट तरुन मनो मकर कुंडल श्रवन॥छंद॥मकरकुंडल जटित हीरालाल शोभा अतिबनी। पन्ना पिरोजा लगे बिच बिच चहूँदिशि लटकत मनी॥ सेहरो शिर पर मुकुट लटक्यो कंठ माला राजई। हाथ पहुँची वीर कानग जरित मुंदरी भ्राजई॥ ३॥ उर बैजंती माल शोभा अतिबनी। चरणन नूपुर कटितट किंकिनी॥ छंद॥ किंकिनी कटि चरण नूपुर शब्द सुंदर कुंजही। कोकिला कलहंस बाल रसालते नहिं पुंजही॥ तुरई बाजनि बीमा ताजनि चपल चपला सेहरी। जौन जरित जराव वागहि लगे सब मुकुतासरी॥४॥ चढि यदुनंदन बनित बनाइकै। साजि बरात चले यादव चाइकै॥ छंद॥ चले साजि बरात यादव कोटि छप्पन अतिबली। उग्रसेन वसुदेव हलधर करत मन मन अति तली॥ शंख भेरि निशान बाजहिं नचहिं शुद्ध सोहावनी। भाट बोलैं बिरद नारी वचन कहैं मन भावनी॥ ५॥ सुरपति आयो संगहै शची।शुद्धमुहूरतचौरी बिधिरची॥ छंद॥ रचीचौरीआपु ब्रह्माजरितखंभ लगाइकै। इंद्र सुरदारनि सहित बैठे तहां सुखपाइकै॥ चौक मुक्ताहल पुरायो आइ हरिबैठे तहां। निरखि सुर नर सकल मोहे रहिगए जहँके तहां॥ ६॥ कुँवरि रुक्मिणी कमला अवतरी। शशिषोडश कला शोभा तनुधरी॥छंद॥ कुँवरि शशि षोडशकला शृंगारकरिल्याईअली। विविधबिधि कियो व्याह बिधि वसुदेव मन उपजी रली॥ सुर पुहुप बरसैं हरषिकै गंधर्व किन्नर गावहीं। शारदा नारद आदि सुयश उच्चार जयति सुनावहीं॥ ७॥ विप्रगणउदिए बहु युगुतिसुरति करि। किए अयाची याचक जन बहुरि॥ छंद॥ बहुरि निज मंदिर सिधारेकरिसुभद्राआरती।देवकीपीवोवार नारददई अशीशा भारती॥युवा युवति खेलाइ कुल व्यवहार सकल कराइबो॥जनन मन भयो सूर आनँद हरषि मंगल गाइबो॥८॥ रागसारंग॥ तोसों गारि कहाकहिदीजै होयदुनंदन।जग वपु नाउँ कौनको लीजै हो यदुनंदन॥छंद॥ वपु जगतकाको नाउँ लीजैहोयदुज्ञाति गोतन जानिए। गुणरूप कछु अनुहारि नाहीं का बखान बखानिए॥ सब शोधि रह्यो न शोधपायो बिन सुने का

कीजिए। बलिजाउँ यादवपति तुम्हारी गारिका कहि दीजिए ॥ तेरी मैया सब जगखोयो। सोकी-जो बल न विछोयो ॥ छंद ॥ सो कीजो नबल करि विगोयो फिरत निशि वासर बनी। शिर श्वेत पट कटि नील लहँगा लाल चोली बिन तनी ॥ कछु मंद मुख मुसुकाइ सुर नर नाग भुज भीतर लए। बलि जाउं यादवपति तुम्हारी माया कुल बिनु तुम किए ॥ कछु कहि न जाइ गति ताकी। नित रहत मदनमद छाकी ॥ नित रहत मन्मथ मदहि छाकी निलज कुच झाँपत नहीं। तब देखि देखि जु छ्यल मोहित बिकल ह्वै धावत तहीं ॥ इक परत उठत अनेक अरुझत मोह अति मनसा मही। यहि भाँति कथा अनेक ताकी कहतहू न परै कही ॥ वहतौ नित नवतनु रति जोरै। चित चितवनिही मँह है चोरै ॥ ॥छंद ॥ अति चतुर चितवनि चित चुरावति चलत धर धीर न धरै। फिरि चमक चोप लगाइ चंचल तनहिं तब अंतर करै ॥ कछु भौंहकी छबि निरखि नैननि सु को जन व्रतते टरै। इहि भाँति चतुर सुजान समधिनि सकति रति सबसों करै ॥ इनही भूलि रहे सब भोगी। वश कीने ब्राह्मण जे योगी ॥ वश किये ब्राह्मण बहुत योगी छत्रपति केते कहौं। और अग जग जीव जल थल गनत सुनत न सुधि लहौं ॥ ते परमआतुर काम कातुर निरखि नित कौतुक नए। यहि भाँति समधिन संग निशिदिन फिरत भ्रम भूले भए ॥ अब तुम हौ परम सयाने। तुम ठाकुर सब जग जाने ॥ छंद ॥ ठाकुर सबनके कृपानिधि हरि सुयश सब जग गाइए। या लोकके उपहास आपुन ताहि बरजि मिटाइए ॥ कहि एकईभल पांच माधो और अनत न सूझिए। सुनिसूर श्यामसुजान इहिकुल अब न ऐसी कीजिए॥ २४ ॥

अध्याय ॥ ५५ ॥ प्रद्युम्नजन्म॥राग बिलावल ॥ प्रद्युम्न जन्म शुभघरी होऊ। काम अवतारलीन्हों विदित बात यह तासु सम तूल नहिं रूप दोऊ ॥ पृथ्वीपर असुर शंबर भयो अति प्रबल तिन्ह उदधि माँह तेहि डारि दीन्हों। मक्ष लियो भक्ष सो भक्ष गह्यो असुर तब कौनसों लेइकै भेंट कीन्हों ॥ मक्षके उदरते बाल परकटभयो असुर मायावती हाथ दीन्हों। कह्यो तेहि काम पर माण नारद वचन सुमिरि अति हर्षसों ताहि लीन्हों ॥ भयो जबै तरुण तब नारि तासों कह्यो रुक्मिणी मात हरि तात तेरो। नाम ममरति विदित बात जानत जगत कामतुअ नाम पुनि पुरुष मेरो ॥ असुरको मार परिवारको देहि सुख देउँ विद्या तोको मैं बताई। बिना विद्या असुर जीत सकही नहीं भेदकी बात सब कहि सुनाई ॥ प्रद्युमन सकल विद्या समुझि नारिसों असुरसों युद्ध माँग्यो प्रचारी। काटि करवारि लियो मारि ताको तुरत सुरन आकाश जयध्वनि उचारी ॥ बहुरि आकाश मधि जाइ द्वारावती मातमन मोद अतिहीबढायो। भयो यदुवंश अति रहसमनो जन्म भयो सूर जन मंगलाचार गायो॥ २५॥

अध्याय ॥ ५६ ॥ मणिहेतु सत्यभामा जाम्बवतीविवाहसारंग ॥ हरिदर्शन सत्राजित आयो। लोगन जान्यो आवत आदित हरिसों जाइ सुनायो ॥ हरि कह्यो रवि न होइ सत्राजित मणि है ताके पास। रवि प्रसन्न होइ दीन्ही ताको यह ताको परकाश ॥ आइ गयो सोऊ तेहि अवसर तेहि हरि कह्यो सुनाइ। यह मणि अति अनुपम है सो सुनि रहि न सक्यो ललचाइ ॥ एक दिन ताते अनुज सो माँगी ले गयो अखेटक काजा। ताको मारि सिंह मणि लै गयो सिंह हत्यो रिछराजा ॥ ऋच्छराज वह मणि तासों लै जाम्बवतीको दीन्हीं॥ प्रसमनको विलंब भयो तब सत्राजित सुध लीन्ही॥ जहां तहांको लोगपठा-यो काहू खोज न पायो। सूरदास सत्राजितभ्रमसों चोरी हरिहि लगायो॥ २६॥

अध्याय ॥ ५७॥ शत धन्वा बध अक्रूर संवाद ॥ राग सोरठ ॥ शुकदेव कहत सुनहु हो राजा। ज्ञानीलोभ करतनहिंकबहूँ लोभ

बिगारत काजा ॥ करिकै लोभ अमृत जो पीवै बिष समान सो होई। विषअमृतहोइजाइलोभ बिन यह जानत जन कोई ॥ एक समय यदुपति औ हलधर पंडवगृह पगधारी। शतधन्वा अरु सुफलकसुत मिलि कीन्यों मंत्र बिचारी ॥ सत्राजितको हति मणि लीजै ज्यों जानै नहिं कोई । ऐसो समय बहुरि फिरि नाहीं पाछे होइ सो होई ॥ निशि अँधियारि जाइ शतधन्वामारिताहि मणि ल्यायो। फैलगई यह बात नगर सब तब मनमें पछितायो ॥ सतभामा करिशोक पिताको यदुपतिपास सिधाई। शतधन्वा जो कृत्य करी सो हरिसों कहि समुझाई॥ सुनि यदुपति हलधर उठि धाये वेगि विलंब न लाई। लैहैं वैर पिता तेरेको जैहै कहां पराई ॥ तब मणि डारिअक्रूरपास वह मिथिलापुरको धायो। शत योजन मग एक दिवसमें तुरँग जाइ पहुँचायो ॥ द्वारावति पैठत हरिसों सब लोगन खबरि जनाई। मिथिलापुरी जाइ तिन मारचो पै मणि वहांनपाई॥तब हरि कह्यो हत्यो बिन दूषण हलधर भेद बतायो। वहां जाइ खोज तुम कीजो द्वारावति धरिआयो॥ हलधर रहे गदायुध सीखन हरि द्वारावति आये। सतभामा मन हरष भयो जब समाचार सब पाये॥सुफलकसुत मनहीं मन सकुच्यो करौं कहा अब काजा। देत न बनै बनैनहिं राखत उरडेरात उठि भाजा। सब यादव मिलि हरिसों इह कह्यो सुफलकसुत जहां होइ। अनावृष्टि अतिवृष्टि होति नहिं इह जानत सबकोइ ॥ कीजै दोष क्षमा अब ताको हरि तब ताहि बुलायो । कहो कहा कहिए अब तुमसों तिन शिर नीचो नायो ॥ पुनि कह्यो मणि सतभामाकोदै यातेभयभयो तोहीं। मणि उनदै बहुरो तेही दइ कह्यो लोभ नहिं मोहीं ॥ लोभ भलो नाहीं दूनो पुर लोभ किये तप जाई। सूर लोभ कीनो सो बिगोयो शुक यह कहि समुझाई ॥ २७ ॥

अध्याय ॥ ५८ ॥ पंचपटरानीनका विवाह श्रीकृष्णसोंभयो॥ राग विलावल॥ हरि हरि हरि सुमिरौ सब कोई । हरि हरि सुमिरत सब सुख होई॥हरि हरि सुमिरचो है जिन जहां। हरि तेहि दरशनदीन्हों तहां॥ हरि सुमिरन कालिन्दी कीन्हों। हरि वहँ जाइ दरशतेहिदीन्हों॥ पाणिग्रहणपुनिताको कीन्हों। सबै भाँति ताको सुख दीन्हों॥हरिहि मित्रविंदा चित ध्यायो। हरि तहां जाइ विलंब न लायो॥ करि विवाह ताही लै आयो। तासु मनोरथ सकल पुजायो ॥ हरिचरणन सीता चित दीन्हों। ताको पिता परण यह कीन्हों॥ सात बैल इह नाथै जोइ। सीता व्याह ताहि सँग होइ ॥हरितहँ जाइ तासु प्रण राख्यो। धन्यधन्य सबकाहू भाष्यो ॥ ताके पिता व्याह जब कियो। दायजबहु प्रकार पुनि दियो ॥ बहुरो भद्रा सुमिरो हरी। गये पास तब विलम न करी॥ऐसेही त्रिभुवनपति राई। ताके मनकी आश पुराई ॥ बहुरि लछमना सुमिरन कीन्हों। ताहि स्वयंवरमें हरिलीन्हों॥ पांचौ बारि ब्याहि घर आये। सूरदास यश मंगलगाये ॥२८॥

द्वारकाप्रवेशशोभा वर्णन ॥राग मलार ॥ देखो माई हरिजूके रथकी शोभा। योग यज्ञ तप कठिन कर्म्म सब कीजतहै जिहि लोभा ॥ चारु चक्र मणि पानि विराजत चंचल चमर पताका। श्वेत छत्र मनु शशि प्राचीदिशि प्रगटचो रजनी राका ॥ उपजत छबि कर अधर शंख निश सुनियत दुष्ट प्रशंसा। मानहु अरुन कमल मंडलमें कूजतहैं कलहंसा ॥ सुंदर श्याम सुदेश पीतपट शीश मुकुट उरमाला।जनुघन दामिनि रवि तारागण उदित एकही काला ॥ आनंदित सुत बंधु जननि पितु कृष्णमिलन पियभावै। सूरदास प्रभु द्वारकावासिनि प्राणनाथ हिय भावै ॥२९ ॥

अध्याय ॥ ५९ ॥ भौमासुरवध ॥ नृपकन्यामोक्ष ॥ सुरतरु आगमन ॥ षोडशसहस्र रानी विवाह ॥ राग गौरी॥ सतभामासों इती बात जबते न कही री। कितिक कठिन सुरतरु प्रसूनकी या कारण तू रूठि रही री॥परमुखसुखजनाउनदीनेबिनकाजे रिस देह दही री। अपनीसौं सुनि सतभामा तैं मैं मन बच यह सुधि न रही री ॥ सूनोनिपटअकेलो मंदिर चंद्रकला जनु राहु गही री। तुववियोगकी पीर,कठिन अति सु कहि सूर क्यों जातिसहीरी ॥ ३० ॥

राग आसासरी ॥ रटत कृष्ण गोविंद हरि हरिमुरारी।भक्तभयहरनअसुरअंतकारी॥षटदश

सहस कन्या असुर बंदिमें नींद अरु भूँख अहनिशि बिसारी । प्रीति तिनकी सुमिरि भये अनुकूल हरि सत्यभामा हृदय यह उपाई ॥कल्पतरु देखिबेकी भई साध मोहिं कृपा करि नाथ ल्यावहु देखाई। सत्यभामा सहित बैठे हरि गरुडपर भौमासुर नगर गए तुरत धाई ॥ एकही बान पाषानको कोट सब हुतो चहुँओर सो दियो ढहाई। गरुड चहुँपासके नाग लियो निगलि जल बरषिकै अग्नि ज्वाला बुझाई ॥ करे हरि शंखध्वनि जग्यो तब असुर सुनि कोपकरि भवनते निकसि धायो। देखिकै गरुडको लगोताहृदय दव कठिन तिरशूल तब गहि चलायो॥असुर शिर टेक तब कह्यो निज नृपतिसों नहिं तिहुँ भुवन कोउ सम तुम्हारे। युद्धको करत छाजत नहीं है तुम्हें सुनो महाराज चाहत हमारे॥ कियो तब युद्ध उन क्रुद्ध होइ श्यामसों हरि कह्यो गरुड याहति प्रचारी। गरुड सुनिधाइ गह्यो जाइ ताको तुरत नैनहु शीश डारे प्रहारी॥तासु पुत्रन बहुरि युद्ध हरिसों कियो मारते सोउ कादर डेराने। असुर कटिकिटि परे कोउ उठिउठि लरे कोउ डर डर विदिश दिश पराने॥ तब असुर अग्नि जल बान डारन लग्यो तासु माया सकल हरि निवारी। असुरके तनहिको लग्यो कलपन तुरंग गज उडि चले लागी बयारी॥असुर अजरूढ होइ गदा मारै फटकि श्यामअँग लागि सो गिरैं ऐसे। बाल केहाथते कमलअमलनाल युत लागि गजराजतन गिरत जैसे ॥ आप जगदीश सबशीश ता असुरकी मारि तिरशूल सोइ काटिडारे। छाँडि सो प्राण निर्वाणपदको गयो सुर पुहुप वर्षि जैजै उचारे॥ पृथ्वी गहि पाइ माला कुंडल छत्र लै जोरि कर बहुरि बिनती सुनाई । नाथ मम पुत्रको दीजिए परमगति हरि कह्यो पुत्रको मुक्ति पाई ॥ बहुरि गये तहां कन्या हुतीं सब जहां निरखि हरिरूप सोसब लुभाई। चरणही लागि बडभागि लखि आपने कृपाकरि हरि सो निजपुर पठाई ॥ बहुरि गयो इंद्रपुर इंद्र रह्यो पाँइपरि कल्पतरु वृक्ष तासों मँगाई । त्रिदशपति मोति अरु रत्नकुंडलदईवृक्षलैआपनिजपुरी आई ॥बहुरि बहु रूप धरिगए हरिसबन घर ब्याह करि सबनकीआश पूरी।सबनकेभौनहरि रहहिं सब रैन दिन सबनसों नेक नहिं होत दूरी॥ सबनको पुत्र दशदश कुँवरि एकएकदे सकल धर्म गृह किए सिखाई। कोटि ब्रह्मांड नायक सो वसुदेवसुत सूर सोइ नँदनंदन कहाई ॥ ॥ २१ ॥ अध्याय ॥ ३० ॥ रुक्मिणभिक्तिपरीक्षा॥ राग बिलावल ॥ भक्तबछल हरिभक्त उधारन । भक्ति परीक्षाके हित कारन ॥ रुक्मिणिसों बोले सति भाई। हम जानी तुमरी चतुराई॥ राउ चंदेरीको शिशुपाल। जाको सेवत सब भूपाल॥ तासों तेरी भई सगाई। तैं पाती क्यों हमहिं पठाई ॥ जाति पाति उन सम हम नाहीं ।हम निर्गुण सब गुण उनपाहीं॥ उन सम नहिं हमरी ठकुराई।पुरुष भलेते नारि भलाई ॥ निःकंचन जिनमें मम वासा ।नारिसंगमैं रहौं उदासा॥ जो कहै मोहिं काहे तुम ल्याये। ताको उत्तर द्यों समुझाये॥कुंडिनपुर बहु भूपति आये।तिनके हृदय गर्वसों छाये ॥ बरजोरी मैं तोहिं हरिल्यायो ।उनके मनके गर्व नशायो ॥ इह सुनिरुक्मिणिभई बेहाल।जानि परचो नहिं हरिको ख्याल ॥ लै उसाँस नैनन जलढारे।मुखतेवचननकछुकउचारे॥ ताकी दशा देखिहरि जानी । इन मम भक्ति भली पहिंचानी ॥ हँसि बोले तब शारँगपानी। प्राणप्रिया तुम क्यों बिलखानी ॥ मैं हाँसी करि बात चलाई । तुम्हरे मन यह साँची आई॥आंसू पोंछि निकट बैठारी । हँसी जानि बोली तब प्यारी ॥कहँ तुम त्रिभुवनपति गोपाल। कहाँबापुरो नर शिशुपाल॥ कहँचंदेरीकहँद्वारावति। जाके सरबर नहिं अमरावति ॥ तुम अंमर वह जनमै मरै। मूरख उन तुम सरबर करै ॥ तुमसन और नहीं यदुराई। यही जानि मैं शरणन आई॥ इह सुनि हरि रुक्मिणिसों कह्यो ।ज्यों तुम मोको चितमें चह्यो ॥ त्योंही हम चित चाहत तुमको । नहिं अंतर कछु हमसोंतुमसों।यदुपतिको यहसहज सुभाउ॥जो कोउ भजै भजहितेहि भाउ। जोइहलीला हितकरि गावै।सूर सो प्रेमभक्तिको पावै ॥ ३२ ॥अध्याय ॥ ६१॥ प्रद्युम्नविवाह रुक्म कालिंगराजावध मारू ॥

श्याम बलरामको सदा गाऊं । यही मम यज्ञ जप इहै तप नेम ब्रत यहै मम प्रेम फल यही पाऊं॥ श्याम बलराम प्रद्युम्नके व्याहहित रुक्मकेदेशजबहींसिधाये। कलिंगको राउ अरु रुक्म बलभद्र-सों कपट करिसारि पासा खिलाये ॥ दांव बलरामको देखि उन छल कियो रुक्म जीत्यो कहन लगे सारे । देववाणी भई जीत भई रामकी ताउपै मूढ नाहीं सम्हारे ॥ कलिंगको राउ करिहँसी लाग्यो करन वनवसनहार कहा खेल जानो । सभाके लोगहू लगे हाँसी करन राम तब हृद यमें क्रोध आन्यो ॥ रुक्म औ कलिंगको राउ मारचो प्रथम बहुरि तिनके बहुत सुभट मारे । सूर प्रभु राम बलराम रणजीत भये प्रद्युम्न व्याहि निजपुर सिधारे ॥ ३३ ॥ ॥अध्याय॥६२॥ ऊषाअनिरुद्धविवाह वर्णन ॥राग मारू॥कुँवर तन श्याम मनो कामहै दूसरो सपनमें देखि ऊषालोभाई। चित्ररेखा सकल जगतके नृपनकी छिनकमें मुरति तब लिखि देखाई ॥ निरखि यदुवंशको रहस मनमें भयो देखिअनिरुद्धसों युद्ध माँडचो । सूर प्रभु ठटी ज्यों भयो चाहै सो त्यों फांसि करि कुँवर अनिरुद्ध बाँध्यो॥३४॥अनिरुद्धव्याह ॥ अध्याय॥६३राग मारू ॥ श्याम बलराम यह सुनत धाये । आइ नारद कह्यो द्वारकानाथसों बाणसुर चोर अनिरुध बँधाये॥छोंहनीदोइदशहुतो हरिसँग कटक जातही नगर ताको लुटायो ।देखि यह असुरसन्मुख भयो श्यामके रुद्र निजसेन लै तहां आयो ॥ रुद्र भगवान अरु बान सांबक भिरे राम कुंभांड मांडी लराई। सैनपति कोपि प्रद्युम्नजूसों भिरचो सांतुकुंकर दोऊ भिरत धाई॥तेजभगवानको पाय जलावन लगेअसुर-दल चल्यो सबही पराई । रुद्र तब कोपि करि अग्निवरषाकरी श्याम जल वर्षि डारचो बुझाई ॥ पुनि महादेव जो बाण संधान लियो आप भगवान ताको प्रहारचो।देखियइयुद्धसुरअसुरचक्रतभये लख्यो तब बाण जो रुद्र धारचो ॥ बाण तब आइ भगवानसन्मुख भयो वाण वर्षा करन लग्यो भारी। एकहू बाण आयो न हरिके निकट तब गह्यो धनुष सारंगधारी ॥ एकही बाण संधान रथके तुरग ध्वजा अरु धनुष सब काटिडारी।शंखको शब्द करि लिय असुरतेज हरि ध्वनि रहीफैलि जभ पृथ्विसारी॥देखि यह असुरकी मातु धाई नगन तुरत भगवानके निकट आई । नगन त्रिय देखिवे जगत नाहिंन कह्यों जानि इह हरि रहे मुख फिराई ॥ असुर यह घात तकि गयो रणते सटकि विपतिज्वर दियो तब शिव पठाई ।सप्तज्वर युद्ध करि कियो विह्वल तिसै तिन तबहिं आइ बिनती सुनाई ॥ प्राणदाता तुहीं स्थल छूँछिमतुही सर्वआत्मा तुही धर्मपालक।ज्ञान तुही कर्म्म तुही विश्वकर्मा तुही अनंत शक्ति प्रभु असुर शालक ॥ संपत्ति अरु विपतिको मिलि चलै प्रभु तहां जहां नहिं होइ सुमिरन तिहारो । करत दंडवत मैं तुम्हैं करुणाकरन कृपा करि ओर मेरे निहारो ॥ सुनत यह वचन हरि कह्यो अब मौन करि कृपाकरि तोहिं परवीर धारी । संपति रु विपतिको भय न होइहै तिसै सुनै जो यह कथा चित्त धारी ॥ विपति ज्वर कह्यो शिर नाइ हरिको तुरत बाणसुर बहुरि रणभूमि आयो। चक्रपरिहार हरि कियो ताको निरखिरुद्र शिर नाइ तब कहि सुनायो॥प्रगट तुम कपट तुम तुमहिं सब आत्मा निकारचो अग्नि रुद्रक तिहारी ।बुद्धि बिधि चंद्रमा मन अहंकारमें धरि चरण रोम तू पृथ्वि सारी॥ शीशआकाशअरुश्रवण दशहू दिशा इंद्र कर लोकनृप बपु तिहारो। बाण जगदीश मोहिं जान मम ईश तुम राखि तेहिअब नाथ हाथचारो॥बिहँसि जगदीशकह्योरुद्र जो तोहिंभजै तहां मैं जाउँ यहप्रण हमारो।कियोप्रह्लाद कुल अभै मैं प्रथमहीबाणकियो अमर भाषै तिहारी।करैजो सेव तुम्हरी सो मम सेव हैविष्णुशिव ब्रह्म ममरूप सारी॥ बाण अभिमान मनमाँह धारचो हुत्यो यों बिदित हाथ ताते सँहारी ।रुद्रअरु बान अनिरुद्ध सन्मान करि तुरत भगवानके निकट ल्याये ।बहुरिऊषा दई व्याहिदाइजसहितकरै सुमिरन तिसै भै न होई।कह्यो जो व्यास शुकदेव भागवतमें कही अबसूरजन गाइ सोई ॥ ३५ ॥ आध्याय६४ नृग राजा उद्धार राग सारंग॥अविगति गति जानी न परै। राईते पर्वत करिडारै राई

मेरु करै ॥ नृग राजा नित सहस गऊ दे करत हुत्यो जलपान । नृगते गिरगिट कीन्ह ताको कोकरि सकै बखान ॥ कूपमाहिं तेहि देखि बालकन हरिसों कह्यो सुनाई । कृपानिधान जानि अपनो जनआये तहँ यदुराई ॥ अंधकूपते काढि बहुरि तेहि दरशन दै निस्तारो । सूरदास सब तजि हरि भजिय जब तबकरै उधारो ३६॥ आध्याय ६५ ॥ बलभद्र वृंदावन आये ॥ राग बिलावल॥ श्याम रामके गुण नित गावौं श्यामरामहीसों चित लावौं ॥ एक बार हरि निजपुर छये । हलधरजी वृन्दावन गये ॥ यह देखत लोगन सुख पाये । जान्यो राम श्याम दोउ आये॥ नंद यशोमतिजब सुधिपाई । देह गेहकी सुरति भुलाई ॥ आगे ह्वै लैबेको धाई । हलधर दौरि चरण लपटाई ॥ बलको हित करि गले लगाय । दै अशीश बोली ता भाय ॥ तुमतौ भली करी बलराम। कहाँरहे मनमोहन श्याम ॥ देखी कान्हरकी निठुराई । कबहूँ पातीहू न पठाई ॥ आपु जाइ वहां राजा भए । हमको बिछुरि बहुत दुख दये ॥ कहो कबहुं हमरी सुधि करत । हमतो उन बिनु बहु दुख भरत ॥ कहा करैं वहां कोउ न जात । उन बिनु पलपल युगसम जात ॥ यहि अंतर आए सब ग्वार। बैठे सबन यथा व्यवहार ॥ नमस्कार काहूको कियो । काहूको भरि अंकम लियो ॥ गोपी जुरीं मिलीं वन आई । अतिहित साथ अशीश सुनाई ॥ हरि करि सुध सुधि बुधि बिसराई। तिनको प्रेम कहो नहिं जाई ॥ कोउ कहै हरि ब्याही बहु नार । तिनके बढ्योबहुत परिवार॥ उनको इह हम देत अशीस। सुखसों जीवैंकोटि बरीस॥ कोऊ कहैं हरिहि नहिं चीन्हों । बिनचीन्हें उनको मन दीन्हों॥ निशिदिन रोवत हमैं बिहाइ। कहोकहा हम करैं उपाइ॥ कोउ कहै इहांचरावत गाइ । राजा भये द्वारका जाइ॥ काहेको वे आवैंइहां। भोग विलास करत नित उहां॥ कोउकहैहरि रीत सब नई । और मित्रनको सब सुख दई॥ विरह हमारो कहां रहि गयो। जिन हमकोअतिहीदुख दयो ॥ कोउ कहै जे हरिजीकीरानी। कौन भाँति हरिको पतियानी॥ कोउ कहै चतुरनारिजोहोई। करिहै नहीं निवारो सोई॥ कोउ कहै हम तुम क्यौं पतिआई । उनके हित कुललाजगवाँई॥ हरिकछु ऐसो टोना जानत । सबको मन अपने वश आनत॥ कोउ कहै हम हरि सबबिसराइ। कहाकहैंकछु कह्यो न जाइ॥ हरिउनकेसुमिरिनयनजलढारे। नेकनहींमन धीरज धारे॥ इहसुनिहलधर धीरजधार । कह्यो आइहै हरि निरधार ॥ जब बल इह संदेशसुनायो। तब कछु इकधीरजमनआयो॥ बलितहैं रहे बहुरि दुइ मास । ब्रजवासिनसों करत विलास ॥ सबसों मिलि पुनि निजपुर आये। सूरदास हरिको गुण गाये ॥३७॥ राग सारंग ॥ वारुणी बल घूर्मलोचन विहरतबन सचुपाए। मनहु महा गजराज विराजत करनि यूथ सँग लाए॥ मुकुलित केश सुदेश देखियत नीलबसन लपटाये। भरि अपने कर कनक कटोरा पीवति प्रियहि चुखाए ॥ हँसत रिसात बुलावत बरजत तरसत भौंह चढाए। उदित मुदित उठि चलत डगमगत अनुज सुरति जिय आये ॥ इंद्र धनुष भुव चाप अधिक छबिवरबनितनकेभाये । सर्वसरीझिदेत अपने रस सूर श्याम गुण गाये॥ ३८ ॥ सारंग॥ वारुणी बलराम पियारी । गौतमसुता भगीरथ वीवर सबहिनते सुंदरि सुकुमारी ॥ ग्रीवाँ बाहु गला रन गाजत सुखसजनी सतिभाय सवाँरी ॥ संकर्षणके सदा सुहागिनि अति अनुराग भाग बहुभारी ॥ वसुधा धर जु वाम गिरिराजत भ्राजति सकल लोक सुखकारी । प्रथम समागम आनँद आगम दूलह वर दुलहिनी दुलारी ॥ रतिरस रीति प्रीति परगटकरि राम कामपूरणप्रतिपारी। सूर सु भाग उदित गोपिनके हरिजू रति भेंटे हलधारी ॥ ३९ ॥ कालिंदी सुन कह्यो हमारो । बोली बेगि चलहि बन बिहरत न्हाहिं शरीर भयो श्रम भारी ॥ अतिही सतर होइ जिनि सरिता छोडि गर्व या गुणको गारो । आपनि सौंह कृष्णकी कानी राखतहौं यश मान तुम्हारो ॥ इतहु महातम मोहिं देखावत भवँर तरंग प्रवाह पसारो । इन खुनसन गोपाल दोहाई हल करि खैंचि करों नदि नारो ॥ शिवविरंचिसनकादिसकल मुनि बोलवचन को ऊधो

टारो । सूर सुभद्र श्यामके भैयहि निपट नदी जानत मतवारो ॥ ४० ॥ यमुना आइगई बलदेव । जो तुमको हौं सौंह करीहौं संतत सादर सेव ॥ सुर नर मुनि जन गन गंधर्व ए सब बचननके देव । सूर भनो यह मातु करतहौं अवलंबनकी टेव ॥ ४१ ॥ कालिंदीहै हरिकी प्यारी । जैसे मोपै श्याम करतहैं तैसी तुम करहु कृपा निनारी ॥ यमुना यशकी राशि चहूं युग यम जेठी जगकीमहतारी॥सूरकछुजियजिनिदुखपायोकहाकरौंयहटेव तिहारी॥ ४२॥ राग रामकली॥ श्रीयमुनाजी तिहारो दरश मोहिं भावै । बंशीबटके निकटबसतहौंलहरनिकी छबि आवै॥दुखहरनी सुखदेनी श्रीयमुना प्रातहिं जो यश गावै। मदनमोहनजूकी अधिक पियारी पटरानीजूकहावै॥ वृंदावनमें रास विलासैमुरलीमधुरबजावै॥सूरदाससदंपतिछबिनिरखत विमलविमलयशगावै॥४३॥ अध्याय ॥६६ ॥ पुंडरीकउद्धार ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरिहरि सुमिरहु सब कोय।हरिके शत्रु मित्र नहिं दोय॥ज्यों सुमिरे त्योंहीं गति होइ । हरिहरिहरिसुमिरहु सबकोइ॥पुंडरीक काशीकोराइ ।हरिको सुमिरै वैर सुभाइ॥ अहनिशि रहै एहि लवलाई।क्यों करि जीतौं यादवराई ॥ द्वारावति तिन दूत पठायो।ताको ऐसे कहि समुझायो॥ चारिभुजा मम आयुध धारा।वासुदेव मैंही निरधारा॥ योंहीं कह्यो यदुपतिसों जाई।कपट तजौ की करो लराई॥ दूत आइ हरिसों सबकह्यो । हरिजी तेहि यह उत्तर दयो॥जोतैं कही सो हम सब जानी । पुंडरीककी आयु सिरानी॥कहोजाइकरैं युद्ध बिचार। सांच झूंठ होइहैनिरुआर॥ दूत आइ निज नृपहिं सुनायो।तब उन मनमेंयुद्धठहरायो॥ जहां तहांते सबन बुलाइ।तब लगि यदुपति पहुंचे आइ॥पुंडरीक सुनि सन्मुख आयो । पांच क्षोहनी दल सँग ल्यायो॥सेना देखि अस्त्र संभारी।यदुपतिकेलोगनपरडारी॥हरिकह्योतू आजहूं संभारी।सांच झूंठ जिय देख बिचारी॥ताकी मृत्यु आइ नियरानी॥जोहरि कहीसो मन नहिं आनी॥ यदुपति तब निज चक्र सँभारयो । ताकीसेना ऊपर डारयो ॥ ऐसे हैं त्रिभुनपति राई । जाकी महिमा देवन गाई॥ कोऊ भजो काहूपरकारा। सूरदास सो उतरैपारा ॥४४॥ अध्याय ॥६७ ॥

द्विविद्व सुतीक्षण वध॥राग मारू ॥द्विविद करि क्रोध द्वारपुरी आयो। नृप सुदक्षिणजरयो जरी बाराणसी धाइ धावन जबहिं यह सुनायो ॥ द्वारकामाँह उत्पात बहुभाँति करि बहुरि रेवत अचल गयो धाई । तहां हूँ देखि बलरामकी सभाको करन लागो निडर ह्वै ढिठाई ॥ लख्यो बलराम यह सुभटवंत हैकोऊ हल मुशल शस्त्र अपनो सँभारयो । द्विविद लै शालवृक्ष सन्मुख भयो फुरत करि राम तनु फेंकि मारयो ॥ राम दल मारि सो वृक्ष चुरकुट कियो द्विविद शिर फटगयो लगत ताके । बहुरि तरु तोरि पाषाण फटकन लग्यो हल मुशल करन परहार बांके ॥ वृक्ष पाषाणको जब वहां नाश भयो मुष्टिकायुद्ध दोऊ प्रचारी। रामकी मुष्टिका लगे गिरयो सो धरणिपर निकसिगयोप्राण सुधिबुधि बिसारी॥ सुरन आकाशसे पुहुप वर्षा करी करि नमस्कार जैजै उचारे । देवता गये सब आपने लोकको सूर प्रभु राम निजपुरसिधारे॥ ४५ ॥अध्याय ॥ ६९ ॥ सांब विवाह ॥ राग आसावरी ॥श्यामबलरामकोसदागाऊं।श्या बलराम बिनु दूसरे देवको स्वप्नहूँमाहिं नहिंशीशनाऊं॥श्यामसुनि सांबगयो हस्तिनापुर तुरत लक्ष्मणा जहँ स्वयंवर रचायो ।देखते सबनके ताहि बैठारि रथआपने देशकोपलटिधायो॥ कर्ण दुर्योधनादिक लियो घेरि तेहि कर्ण ढिग आइ बहुबाणमारे।सांबतेहिकाटिनिजबाणसंधान करि तुरँग रथ नाशकरि सब संहारे॥हतेउ पुनिसारथीएकहीबाणकरि परयोसो धरणिगिरिसुधि बिसारी।एक इक बाण भेज्यो सकल नृपनपै मनोसबसाथकीन्हें जोहारी॥देखियहसुरनधनि धन्य सबहिन करयो पुनि करण अश्वरथके संहारे। सांबपै कोपि बैठारि रथ आपने सुभट सब हस्तिनापुर सिधारे ॥ आइ नारद कही तुरत भगवानसों चले भगवान हलधर बोलाई । कह्यो मैं जाइके ल्याइहौं सांबको कौरवनसों सदा हित हमारो। प्रीतिकी रीति समुझाइके नतरु मैं

एकही मुशल सबको सँहारों। जाइ बलराम भेंटे सकल कौरवन बहुरि तिन सबन पुनि कहि सुनायो। सांबसों चूक जो भई बालक हुतो तुम्हें नहिं बूझिये जो बँधायो॥ कह्यो दुर्योधन अति कोप तेहि दोष नहिं दोष सब लगे पुर गये हमारे।जोमने कियो सन्मान निज सभामेंबहुरि इन ओर हित करि निहारे॥ कहां जाम्बवंतसुतासुत कहां मम सुता बुधिवंत पुरुष यह सब सँभारे। अरु सदा देत यादवसुता कौवरन कहत अब बात बलसुनि बिचारे॥ कह्योबलराम यह सांब सुत श्यामको रुद्र बिधि रेणु जाकी न पावैं। इंद्र सुर सकल दरबार ठाढे रहैं सिद्ध गंधर्व गुण सदा गावैं॥ बहुरि करि कोप हल अग्रपर चक्र धर कटक भे दरर चाहत डुबायो। कौरवन मिलि बहुतिभाँति बिनती करी दोष तिनको द्विजन मिलिक्षमायो॥ सांबको लक्ष्मना सहित ल्याये बहुरि दियो दाइज अगिन गिन न जाई। सूर प्रभुरामबलरामअतुल कौतुहल करैं आनंद निजपुरी आई॥४६॥ अध्याय ॥७०॥ नारदसंशय द्वारका आगमन ॥ राग धनाश्री ॥ हरिकी लीलादेखि नारद चकृत भये। मन यह करत बिचार गोमती तर गये॥ अलख निरंजन निर्विकार अच्युत अविनाशी। सेवत जाहि महेश शेष सुर माया दासी॥ धर्म स्थापन हेतुपुनि धारयो नर अवतार। ताको पुत्र कलत्रसों नहिं संभवत पियार॥ हरिके षोडश सहस रहीं पतिवर्तानारी। सबसों हरिको हेत सबै हरिजीकी प्यारी॥ जाके गृह दुइ नारि होंइ ताहि कलह नित होइ। हरि विहार केहि बिधि करत नैनन देखों जोइ॥ द्वारावति ऋषि पैठ भवन हरि जूके आयो। आगे होइ हरि नारिसहित चरणन शिर नायो॥ सिंहासन बैठारिकै प्रभु धोये चरण बनाइ। चरणोदक शिर धरि कह्यो कृपा करी ऋषि राइ॥ तब नारद हँसि कह्यो सुनो त्रिभुवनपतिराई। तुम देवनके देव देतहौ मोहिं बडाई। बिधि महेश सेवत तुम्हें मैं बपुरो केहिमाहीं। कहत तुम्हें ब्रह्मण्य देवता यामें अचरज नाहीं॥ और गेह ऋषि गये तहां देखे यदुराई। चमर ढोरावत नारि करत दासी सेवकाई॥ ऋषिको रूखे देखि हरि बहुरि कियो सन्मान। उहँऊते नारद चले करत ऐसो अनुमान॥ जागृहमें मैं जाउँ श्याम आगेही आवत। ताते छाँडि सुभाउ जाउँ अब कैसे धावत॥ जहां नारद श्रम करि गये तहां देखे घनश्याम। पालनहू क्रीडा करत करजोरे खडी बाम॥ नारद जहँ जहँ जाइँ तहँ तहँ हरिको देखे। कहुँ कछु लीला करत कहूं कछु लीला पेखे॥ योंहीं सब गृहमें गये भयो न मन विश्राम। तब ताको व्याकुल निरखि हँसि बोले घनश्याम॥ नारद मनकी भर्म तोहिं यतनो भरमायो। मैं व्यापक सब जगत वेद चारों मुख गायो॥ मैं कर्ता मैं भोक्ता मोहिं बिनु और न कोइ। जो मोको ऐसो लखै ताहि नहीं भ्रम होइ॥ बूझो सब घर जाइ सबै जानत मोहिं योंहीं। हरिकी हमसों प्रीति अनत कहुँ जात न क्योंहीं॥ मैं उदास सबसों रहों इह मम सहज सुभाइ। ऐसो जानै मोहिं जो मम माया न रचाइ॥ तब नारद करजोरि कह्यो तुम अज अनंत हरि। तुमसे तुम बिन द्वितिय कोउ नाहीं उत्तमदुरि॥ तुम माया तुम कृपा बिनु सकै नहींतरिकोइ। अब मोको कीजै कृपा ज्यों न बहुरि भ्रम होइ॥ ऋषि चरित्रमम देखिकछू अचरज मतिमानो। मोते द्वितिया और कोऊ मनमाहिं न आनो॥ मैंहीकर्ता मैंहीभुक्तानहिं यामें संदेहु। मेरे गुण गावत फिरौ लोगनको सुख देहु॥ नारद करि परमाण चले हरिके गुण गावत। बारबार उरहेत ध्याइ हृदयमेंध्यावत॥ इह लीला करि अचरजकी सूरदास कहिगाइ। ताको जो गावै सुनै सो भवजल तरिजाइ॥४७॥ अध्याय ॥७१॥ भगवान हस्तिनापुर चले जरासंध वधहेत ॥ राग मारू॥ चले हरिधर्मसुअनके देश। बंदित जन भूभारउतारन काटन बंदी कठिन नरेश। जब प्रभु जाइ शंखध्वनि कीनी ठाढे नगर प्रवेश। सुनि नृपवधूसकल उठिधाईं डारिचरण

रखु केश ॥ शीशनाइ करजोरि कह्यो तब नारद सभासहेस । तत्क्षण भीम धनंजयमाधो धन्य द्विजनको भेस ॥ पहुँचे जाइ राजगिरि द्वारे धुरे निसान सुदेश । यांच्यो जाइ अतिथि रूप ह्वै आशिश युद्ध नरेश ॥ जरासंधको युद्ध अथरबल रहत न क्षत्रीलेश । सूर श्यामदिन सातबीत तिन तोरिब काटि कलेश ॥४८॥ राग कान्हरो ॥ राजरवनि गावत हरिको यश । रुदनकरतसुतको समुझावति राखति श्रवणन प्यार सुधारस ॥ तुम जिनि जीव डरहु रे बालक कृपासिंधुके शरन सदावसु । तजि जिय सोच तातअपनेको करिप्रतीति निश्चय ह्वै ह्वै हँसु॥ जिन प्रभुजनकसुताप्रण राख्यो अरु रावणके शीश सकल नशु।सोईसूरसहायतुम्हारोमोचनगोप गयंदमहापशु॥ ४९ ॥ ॥राग धनाश्री॥इहां और कासों कैहौं गरुडगामी।दीनबंधुदयासिंधु अशरनके शरन सत्य सुखधाम सर्वज्ञ स्वामी॥ इन जरासंध मदअंध मम मान मथि बाँधि बिनु काज बलइहांआने।भए आरूढ अति क्रोध जिनि गिरि गुहा रहत भृंगी क्रीट ज्यों त्रासमाने ॥ नाहिनै नाथ जिय सोच धन धरणिको मरनते अधिक यह दुख सतावै ॥ भृत्यकी रीति तजि होत मागध सकलनाथजिनि दमत उद्वेग पावै ॥ मधु कैटभ मथन मुर भौम केशी भिदन कंस कुल काल अनुसाल हारी जानि युगजूपमें भूप तद्रूपता बहुरि करिहै कलुष भूमि भारी ॥ वदत नृप देत भैभीत उर भीरत सुनत हरि सूर सारथि बोलायो । भयो आरूढ तकि ताहि उत्तर दियो जाइ सुख देहु या हेतु आयो ॥ ५० ॥ अध्याय ॥ ७२ ॥जरासंधवध राग मारू ॥ कंसखलदलन रन राम रावणहतन सँहारी। दीन दुखहरन गज मुक्तकारी ॥ नृपति चहुँदेशके बंदि जरासंधके रैनि दिनरहत जिय दुखित भारी सुने यदुनाथ इह बात तब पथिकसों धर्मसुतके हृदय यह उपाई । राजसूयज्ञकोकियोआरंभमैं जानिकै नाथ तुमको सहाई ॥ भीम अर्जुन सहित विप्रको रूप धरि हरि जरासंधसों युद्ध मांग्यो । दियो उनपै कह्यो तुम कोऊ क्षत्रिआ कपटकरि विप्रको स्वांग स्वांग्यो ॥हरि कह्यो भीम अर्जुन दोऊ सुभट ये कृष्ण मैं देखि लोचन उघारी।वचन जो कही प्रतिपाल ताकोकरो कै सभामाँह सत जाहु हारी॥पार्थ अरु तुम सामर्थ सम युद्धको भीमसों उनय कह्यो नादिई बीस औसप्तदिन यों गदायुद्धकियो दोउबलवंतकोउलियोनजाई॥श्याम तृणचीरहरदेखरायदियो भीमकोभीम तब हर्षि ताको संहारचो ।जरा जरासंधकी संधि जोरचो हुत्यो भीम ता संधिको चीरडारचो । नृपनको छोरि सहदेवको राज्यदियो देव नर सकल जैजै उचरचो। सूर प्रभुभीम अर्जुन सहित तहांते धर्मसुत देशको पुनि सिधारचो॥५१॥ अध्याय ॥ ७३ हस्तिनापुरआये ॥ राग सारंग॥ जीत्यो जरासंध बंदिछोरी।युगल कपाटविदारि बाटकरिलतनि जुही संधियोरी॥विषमजालबल बांधि व्याधलौं नृप खग अवलि बटोरी। जनुसुअहेरो हति यादवपति गुहापीजरीतोरी॥निकसे देत अशीश एकमुख गावत कीरति कोरी।जनु उड चले विहंगमकोगन कटी कठिनपगडोरी॥ मिटिगए कलह कलेश कुलाहल जनुकरिबीतीहोरी।सूरदास प्रभुअतुलित महिमा जो कछुकह्यो सो थोरी॥राग मारू॥जीत्यो जीत्यो होयदुपतिरिपुदल मारचो।तउनतजतहठ परम शठना जानो कुबुद्धि जड कै वारहै विदारचो । बारबारमूढ उठि खेलत बालक सुठि आनितइधन दौरि दौरि संचराचो।ऐसे इहु नृप नरसकल सकेलि घरके साककरन हृदरस बकुल जारचो॥कह्योनकाहूको करै बहुरि बहुरि अरै एकही पाइदै इक पग पकरिपछारचो।सूर स्वामीअतिरिसभीमकी भुजाके मिसव्यौंततवसनज्यों तासुतन फारचो॥५२॥समुद्र राजा विनती॥राग बिलावल॥जाहिं कहां अपराधभरे। तुम माता तुम पिता जगतगुरु तुमहिं सहोदर बंधु हरे ॥ वसन कुचील देह अति दुर्बल उमँगि प्रेम जल सिथिल भरे । राजा सबै बंदिते छोडे आइ कृष्णके पाँइ परे॥सावधानकरि बिदादई हरिउठे कमल कर शीशधरे।सूरदास प्रभु तुम्हरीकृपातेभवसागरकेमांझतरे॥५३॥ अध्याय ॥ ७४ ॥

पांडवयज्ञ शिशुपालगति ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमरो सबकोइ।शत्रु मित्र हरिगिनत न दोइ॥ जो सुमिरै ताकी गति होइ । हरि हरि हरि सुमिरो सबकोइ ॥ वैरभाव सुमिरचो शिशुपाल । ताहि राजसूमें गोपाल ॥ चक्र सुदर्शन करि संहारचो । तेज तासु निज मुखमें डारचो ॥ भक्त भाव भक्तन उद्धारत । वैरभाव असुरन निस्तारत ॥ कोऊ सुमिरो काहु प्रकार । सूरदास हरिनाम उधार॥५४॥अध्याय ॥ ७५ ॥ पांडवसभादुर्योधन क्रोध॥राग बिलावल॥भक्तकाज हरि जित कित सारे । यज्ञराजसू माहिं आप हरि सबकेपाँइ पखारे॥अष्टनायका द्रुपदसुताकी करैं तहाँ सेवकाई।दुर्योधन यह रीति देखिकै मनमें रह्यो खिसाई॥ भक्त संग हरि लागे डोलत भक्तवत्सल प्रभु भोरी। सब विधि काज करत भक्तनके गनत नहीं हम कोरी ॥ जीतेजीतत भक्तअपनकी हारेहारबिचरत । सूरदास प्रभु रीति सदा यह प्रणयुगयुग प्रतिपारत॥५५॥अध्याय॥७६ ॥तथा ॥ ७७ ॥शाल्वद्वारका आक्रमणप्रद्युम्नशाल्वयुद्ध शाल्ववंध राग मारू॥सुभटशाल्वकरिक्रोध हरिपुरीआयो । हत्योशिशुपालको राजसू माँह हरि धाइ धावन जबहिं इह सुनायो॥ वृक्ष बन काटि महलान ढाहन लग्यो नगरके द्वार दीनों गिराई। सर्व पाषाणकी वृष्टि करि लोगपर पाइअतिपलक बीते जराई॥ प्रद्युमन सांब रणनिकसि सन्मुख भयेनंदनंदन सुनततुरतधाई। तहाँचारिदेश दिशसाजिदल मिलिसकल हाँकि रथ तुरग ता ठौर आई ।सुमिरिगोपाल तब शाल्व मारचो फटकि प्रद्युमनबाण दिशिते चलायो। मिटचो अंधकारतब बाणवर्षा करी तुरंगरथसारथीसो गिरायो॥सैन्यके लोग पुनि बहुत घायल किये लरचो ध्वज धारि धर परचो मुरछाई।शाल्व इह देखिकै चकृत सो होइ रह्यो शस्त्रकेगहनकी सुध भुलाई ॥ अस्त्र विद्या समर बहुरि लाग्यो करन कबहुँ लघु कबहुँ दीरघसोहोई।गुप्त कबहूँ कबहुँ प्रगट तेहि देखिकैधरती रहहि कबहुँ आकाशसोई॥अग्निकबहुँकबरखिवारिबर्षा करैप्रद्युमन सकल माया निवारी। शाल्व परधान उदमान मारी गदा प्रद्युमन मुरछित भये सुधि बिसारी ॥ धर्मपति सारथी गयो एकांत लै उहां जब चेत ह्वै सुधि संभारी। खीझ कह्यो ताहि क्यों इहां ल्यायो मुझे मम पिता मातको लगै गारी॥ कहा कहिहैं हमैं राम भगवान सुनि नारि मम सुनत अति दुखित होई। मरे रण सुयश त्रैलोक सुख पाइये मंदमति तैं दोऊ बात खोई । धर्मपतिकह्यो करि बिनय मम शोक नहिं सारथी धर्म मोहिं गुरु सिखायो। मूर्च्छित सुभट नहीं राखिये खेतमें जानि यह बात मैं इहां ल्यायो ॥ प्रद्युमन कह्यो जो भई सो भई अब बातनहिं जिन कोऊसों सुनैये।ताहिदै शपथ करि आचमन यों कह्यो चलो रणभूमि अब बेगि जैये। आइरणभूमिमेंसबन धीरज दियो शाल्वरथतुरंग चारों संहारे। छत्र ध्वज तोरि मारचो बहुरि सारथी देखि यह दूर कियो सुभट सारे॥हस्तिनापुर गये हते हरि पांडु गृह तहांते चले यह बात जानी। शाल्वउत्पात कियो द्वारका माँह बहु हांकि रथ कह्यो सारंगपानी ॥ सारथी पाय रुख दये सटकार हय द्वारकापुरी जब निकट आई । शाल्वके भटन लखि कटक भगवानको आपने नृपतिसों कह्यो जाई ॥ सुनि सो भगवानके आइ सन्मुख भयो सारथी दौरि बर्छी चलाई ।ताहि आवत निरखि श्यामनिज सांगको काटिकरि शाल्वकी सुधि भुलाई ॥ बहुरि तिन कोपि निज बाण संधान करि धनुष भगवानको काटि डारचो । टूटते धनुषके शब्द आकाश गयो शाल्व निज जिय समुझि पुनि उचारचो ॥ रुक्मिणी माँगि शिशुपालकी तुम हरी बहुरि तेहि राजसूमें संहारचो। जाइहौ अब कहां दाँव लैहौं इहां छाँडितीजार आपा संभारचो॥कह्यो भगवान सुनु शाल्व जे शूरनर ते नहीं करत निज मुख बडाई । जंगमें शूर तिनको नहीं जानिये भापि यह गदा ताको चलाई ॥ गदाके लगतही गयो सो गुप्त होइ धारि धावन रूप यह सुनायो । कह्यो बसुदेव जगदीश सुनु अस्त्रजे तुअ अछत शाल्व मोहिं बांधि ल्यायो ॥ बहुरि करि कपट वसुदेव तहाँ

प्रगट कियो कह्यो तिन नाथ मैं दुखित भारी । शाल्व करबार लै श्यामके देखते डारि दियो ताको शीश उतारी ॥ कह्यो भगवान करि कपट इन यह कियो तासु माया तुरत हरि निवारी । भागि निज पुर चल्यो श्याम पहिलेहि पहुँचि पुनि गदा खैंचि ता शीशमारी। शाल्व कियो युद्ध बहु बेरलौं गदाकी बहुरि हरि सांग ताको चलाई । लगत ताके गए प्राण वाके निकसि सुरन आकाश दुंदुभि बजाई ॥शीश ताको बहुरि काटि करबालसों नगरसबसमुद्र-मों डारिदीन्हों॥सूर प्रभु रहे ताठौर दिन और कछु मारि दंतवक्र कुर गवन कीन्हों॥५६॥अध्याय॥ ६८॥दंतवक्रपरमगति॥राग मारू॥हरि निकटे सुभट दंतवक्र आयो । कह्यो शिशुपाल तुम राज-सूमें हत्यो धनि सो यह हेत सुनि दरश पायो॥भृत्य तुमहने संशय नहीं कछ हमैं दोउ विधि आइ प्रभु हित हमारी। जीवैं तो राज सुख भोग पावै जगत मुये निर्वाण नीरस तुम्हारी॥बहुरि लैगदा प्रहार कियो श्यामपर लगे ज्योंलकुट अंबुजप भारी । हरि गदा लगतगयप्राण ताकेनिकसि बहुरि हरि निज बदन माँह धारी॥अनुज ताको बडो रथ लग्यो फिरन यों चक्रसो शीश ताकोप्रहारयो। सूर प्रभु युद्ध भयो मुनी जन हरषिये सुर पुहुप वरषि जै जै उचारयो ॥५७॥ अध्याय ॥ ७९ ॥बल्वल बध रामतीर्थगमन॥राग मारू॥श्याम बलरामको सदा गाऊं । यही मम ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यही इहै स्नान फल इहै पाऊं ॥ श्याम दंतवक्र अरु शाल्वको जीत करि करत आनंद निज पुरी आये॥राम गंगा और यमुना स्नानकरि नैमिषारण्यमें जाइन्हाये॥सूततहांकथा भागवतकी कहत हैं ऋषि अठासी सहस हुते श्रोता। रामको देखिसन्मान सबही कियो सूतनहिं उठ्यो निजजानि वक्ता॥रामतेहि हत्यो तब सब ऋषिन मिलि कह्यो विप्र हत्या तुम्हैं लगी भाई । वाहिनिमित्त सकल तीर्थ स्नान करो पाप जो भयो सो सब नशाई ॥ पुनि कह्यो ऋषिनदानवमहाप्रबल इहां हमैं दुख देत सोई सदाई । ताहि जो हतौ तो होइ कल्याण तुम्हैं हम करैं यज्ञ सुखसों सदाई ॥ राम दिन कइक ता ठौर अवरो रहे आइ वल्वल तहां दई देखाई । रुधिर औ माँसकी लगो बर्षा करन ऋषि सकल देखिके गये डेराई॥राम हलसों पकरि मुशलसों हत्यो तेहि प्राण तजि तिन सकल सुधि बिसारे । सुरन आकाशते पुहुप वर्षा करी ऋषिन आशीश दै जै ध्वनि उचारी ॥ बहुरि बलभद्र परणाम करि ऋषिन्हको पृथ्वी परदक्षिणाको सिधाये । प्रभु रची ज्योंहिंज्यों होइ सो त्योंहिं त्यों सूर जन हरि चरित कहि सुनाये ॥ ५८ ॥ ॥अध्याय॥ ८० ॥ तथा ॥ ८१॥ सुदामा दारिद्रभंजन॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ विप्र सुदामा सुमिरे हरी। ताकी सकल आपदा टरी ॥ कहौं सो कथा सुनो चितधार ।कहै सुनै सो लहै सुखसार॥विप्रसुदामापरमकुलीन।विष्णुभक्त सोअतिलवलीन॥ भिक्षा वृत्ति उदर नित भरै। निशिदिन हरि हरि सुमिरन करै॥ नाम सुशीला ताकी नारी। पति-व्रता अति आज्ञाकारी॥ पति जो कहै सो करै चितलाइ। सूर कह्यो इक दिन या भाइ॥राग बिला-वल ॥कहि न सकति सकुचति इक बात। केतिक दूरि द्वारका नगरी काहे न द्विज यदुपति लौं जात॥जाके सखा श्यामसुन्दरसे श्रीपति सकल सुखनके दात।उनके अछत आपने आलसकाहे कंत रहत कृशगात॥कहियत परप उदार कृपानिधि अंतर्यामी त्रिभुवन तात।द्रवत आपुदेतदास-नको रीझत हैं तुलसीके पात ॥ छाँडौ सकुच बाँधिपट तंदुल सूरज संग चलो उठि प्रात। लोचन सफल करौ प्रभु अपने हरि मुख कमल देखि बिलसात ॥ ५९ ॥ ॥राग नट॥श्रीकंत सिधारो मधुसूदनपै सुनियतहैं वै मीत तुम्हारे। बाल सखाकी विपति बिहंडन संकट हरन मुरारे ॥ और जु अति आदरहु सुन्यो हम निज जन प्रीति बिचारे। यद्यपि तुम संतोष भजतहो दरश निकट सुख भारे॥सूरदास प्रभु मिले सुदामें सबहिं

भाँति सुख देउ नारे॥६०॥राग बिलावल॥दूरिहिते देखें बलवीर।अपने बाल सखा सुदामामलिन बसन अरु छीन शरीर॥पौढे हुते प्रयंक परम रुचि रुक्मिणि चमर डोलावत तीर। उठिअकुलाइ अगमने लीने मिलत नैन भरि आये नीर॥तेहि आसन बैठारि श्याम घन पूँछी कुशल करो मन धीर।ल्यायेहौ सु.देहु किन हमको अब कहा राखि दुरावत चीर॥दरशन परसि दृष्टि संभाषन रही न उर अंतर कछु पीर। सूर सुमति तंदुल चबातही कर पकरचो कमला भइ भीर॥॥६१॥राग धनाश्री॥यदुपति देखिसुदामा आये।विह्वल बिकलछीनदारिदवश कारि प्रलापरुक्मिणि समुझाये॥ दृष्टि परेते दिये संभाषण भुजा पसारि अंक लै आये। तंदुल देखि बहुत दुख उपज्यो मांगु सुदामा जो मन भाये॥भोजन करत गह्योकर रुक्मिणि सोइ देहु जो मन न डुलावे। सूरदास प्रभु नवनिधिदाता जापरकृपासोइ जनपावै॥६२॥राग बिलावल॥ऐसी प्रीतिकीबलिजाउँ। सिंहासन तजि चले मिलनको सुनत सुदामा नाउँ॥गुरुबांधव अरु विप्र जानिकै चरणन हाथ पखारे। अंकमाल दे कुशल बूझिकै अर्धासन बैठारे॥अर्धंगीबूझत मोहनको कैसे हितू तुम्हारे। दुर्बल दीन क्षीन देखतिहौं पाँउ कहांते धारे॥ संदीपनके हम औ सुदामा पढे एक चटसार। सूर श्यामकी कौन चलावै भक्त न कृपाअपार॥६३॥राग धनाश्री॥गुरुगृहजबहमवनको जात। तुरत हमारे बदले लकरी ये सहि दुख निजगात॥एक दिवस वर्षाभई वनमें रहिगयेताही ठौर। इनकी कृपा भयो नहिं मोहिं श्रम गुरु आये भये भोर॥ सो दिन मोहिंबिसरतनसुदामा जो कीन्हों उपकार। प्रतिउपकार कहाकरौं सूर अब भाषत आप मुरार॥६४॥हरिकोमिलन सुदामा आयो। बिधि करि अरघ पाँवडे दीने अंतर प्रेम बढायो॥आदरबहुतकियोयादवपति मर्दन करि अन्हवायो। चोवा चंदन अगरु कुमकुमा परिमल अंग चढायो॥ पूरब जन्म अदात जानिकै ताते कछू मँगायो। मूठिक तंदुल बाँधि कृष्णको बनिता बिनय पठायो॥ समदे विप्र सुदामा घरको सर्वसु दै पहुँचायो। सूरदास बलि बलि मोहनकी तिहूं लोक पद पायो॥६५॥ वह सुधि आवत तोहिं सुदामा। जब हमतुमबन गएलकरियन पठए गुरुकी भामा॥ चपल समीर भयो तेहिरजनी भीजे चारों यामा। कांपत हृदय वचन नहिं आवै आए सत्वर धामा॥ तबहिं अशीश दई परशन ह्वै सफल होहुतुमकामा।सूरदासप्रभुकोजो मिलन यश गावत सुर नर नामा॥६६॥राग बिलावल॥सुदामागृहकोगमनकियो।प्रगटविप्रको कछु न जनायो मनमें बहुत दियो॥ वोई चीर कुचील वोई बिधि मोकोकहाकियो।धरिहौं कहा जाइ त्रिय आगे भरि भरि लेत हियो॥ भयो संतोष भाव मनहीं मनआदरबहुतकियो।सूरदास कीन्हें करनी बिन को पतिआइ वियो॥६७॥सुदामामंदिरदेखिडरचो।शीशधुनैदोऊकरमींडे अंतर सोँच परचो॥ ठाढी त्रिया मार्ग जो जोवै ऊंचे चरण धरचो। तोहिं आदरचोत्रिभुवनको नायक अब क्यों जात फिरचो॥ इहां हुती मेरी तनिक मडैआ को नृप आनि छरचो।सूरदास प्रभु करि यह लीला आपद विप्र हरचो॥६८॥ देखत भूलि रह्यो द्विज दीन।ढूँढतफिरैनपूंछन पावै आपुन गृह प्राचीन॥ किधौं देवमाया बौरायो किधौं अनतही आयो। तृणहुकी छाँह गई निधि मांगत अनेक जतन करि छायो॥ चितवत चकित चहूँदिशि ब्राह्मण अद्भुत रचना रीति। ऊंचे भवन मनोहर छाजा मणि कंचनकी भीति॥ पति पहिचानि धरी मंदिरते सूर त्रिया अभिराम। आवहु कंत देखि हरिको हित पाउँ धारिये धाम॥६९॥ भूलो द्विज देखत अपनो घर। औरहि भाँति रची रचना रुचि देखतही उपज्यो हिरदय डर॥ कै यह ठौर छिनाइ लियो कहुँ आइ रह्यो कोऊ समरथ नर। कै हौं भूलि अनतखंड आयो यहु कैलास जहां सुनियत हर॥ बुधजन कहत दुवल घातक बिधि सोइ न आजु लह्यो यह पटतर। ज्यों

नलनी बन छाँडि वसी जल दाही हेम जहां पानी सर ॥ जगजीवन जगदीश जगतगुरु अबि-
गति जानि भरयो । आवो चले मंदिर अपनेही कमलाकंत धरयो ॥ ता पीछे त्रिय उतरि
कह्यो पति चलिए घरहि गहे करसे कर । सूरदास यह सब हित हरिको रोप्यो द्वार सुभगति
कलपतर ॥ ७० ॥ कहा भयो मेरो गृह माटीको । हौं तोगयोगुपालहि भेंटन औरखचैतंडुलगांठी
को ॥ बिनु श्रीवा कलसुभग न आन्यो हुतोकमंडलु दृढ काठीको । घुनो बाँसगतबुन्यो खटोला
काहूको पलंग कनक पाटीको ॥ नौतन पीरे दिकुयुगतीपै भूषण हुते न लोह माटीको । सूरदास
प्रभु कहा निहोरो मानतुरंक त्रास टाटीको॥७१ ॥ राग धनाश्री ॥कहौकैसेमिलेश्यामसंघाती।कैसे
गए सु कंत कौन बिधि परसे हुते वस्तर कुचिलकुजाती ॥ सुनि सुंदरि प्रतिहारजनायोहरिसमीप
रुक्मिणी जहाती । उभे मुठी लीनी तंदुलकी संपति संचि करीही थाती ॥ सूर सु दीनबंधु
करुणामय करतबहुतजो श्रीनरिसाती॥७२॥ राग बिलावल ॥एसेमोहिंऔरकौनपहिंचानै।सुनसुंदरी
दीनबंधू बिन कौन मिताई मानै ॥ कहां हम कृपण कुचील कुदरशन कहां वै यादवनाथगुसाँई ।
भेंटे हृदय लगाइ अंक भरि उठि अग्रजकी नाँई ॥ निज आसन बैठारि परमरुचिनिजकर चरण
पखारे ।पूँछी कुशल श्यास घन सुंदर सब संकोच निवारे ॥लीन्हें छोरि चीरतेचाउरकरगहिमुख-
में मेले।पूरब कथा सुनाइ सूर प्रभु गुरुगृह वसे अकेले ॥ ७३ ॥ राग धनाश्री ॥हरि बिन कौन दरि-
द्र हरै।कहत सुदामा सुन सुंदरि जिय मिलन न हरि बिसरै॥ औरमित्र ऐसे समयामहँ कतपहिंचा-
न करै ।विपति परे कुशलात न बूझै बात नहीं बिचरै। उठिकै मिले तंदुल हरि लीनेमोहन वचन
फुरै।सूरदास स्वामीकी महिमा टारी निधि न टरै ॥७४॥औरकोजानैरसकीरीति।कहांहौंदीनकहां
त्रिभुवनपति,मिले पुरातन प्रीति॥ चतुरानन तन निमिष न चितवत इती राजकी नीति । मोसों
बात कही हृदयकी गए जाहि युगबीति ॥ बिनु गोविंद सकल सुख सुंदरि भुसपरकीसीभीति ।
हौं कहा कहों सूर प्रभुकेगुन निगम करत जाकी क्रीति ॥७५॥गोपाल बिना और मोहिं ऐसो कौन
सँभारै।हँसत हँसत हरि दौरि मिले सु उरते नहिं टारै ॥ छीन अंग जीरन वस्त्र दीन मुख नि-
हारै ममतन रज पथ लागी पीतपटसों झारै॥ सुखद सेज आसन दीन्होंसु हाथ पायँ पखारै । हरि
हित हर गंग धरै पदजल शिर ढारै ॥ कहि कहि गुरु गेह कथा सकल दुख निवारै ।न्यायनिजवपु
सूरदास हरिजी ऊपर वारै ॥ ७६ ॥ राग केदारो॥ दीन द्विज द्वारे आइ रहो ठाढो। नामसुदामा
कहत नाथ जो दुखी आहि अति गाढो॥ सुनतहि वचन कमलदल लोचन कमला तज उठि
धाए ।त्रिभुवन नाथ देखि अपनो प्रिय हितसों कंठ लगाए ॥ आदर करि मंदिर लै आने कनक
पलँग बैठाए । कथा अनेक पुरातन कहि कहि गुरुके धाम बताए ॥ खइबेको कछु भाभी
दीन्हों श्रीपति श्रीमुख बोले । फेंटउपरतें अंजुल तंदुल बलकरि हरिजू खोले ॥ दुइ मूठी तंदुल
मुखमें ले बहुरो हाथ पसारयो । त्रिभुवन दैकरि कह्यो रुक्मिणी अपुनो दान निवारयो ॥
बिदा कियो पहुँचे निज नगरी हेरतभवनन पायो । मंदिर रही नारिपहिंचान्योप्रेमसमेतबुलायो॥
दीनदयाल देवकीनंदन वेद पुकारत चारो । सूर सु भेंटि सुदामाको दुख हरि दारिद्र मिटारो॥
॥ ७७॥ श्रीकृष्ण द्वारका गमन पंथीप्रति ब्रजनारी वदति ॥ राग मलार ॥तबते बहुरि न कोऊ आयो । उहै
जु एकबेर ऊधोसों कछु संदेशो पायो ॥ छिन छिन सुरतिकरतयदुपतिकीपरतनमनसमुझायो।
गोकुलनाथ हमारे हितलगि लिखिहू क्यों न पठायो ॥ यहै बिचार करहु धौं सजनी इतो गहर
क्योंलायो। सूरश्यामअबबेगिनमिलहूमेघनिअंबरछायो॥७७॥राग गौरी॥बहुरयोब्रजबातनचाली।
वहै सु एक बेर ऊधोकर कमलनैन पाती दै घाली ॥ पथिक तुम्हारे पाँइन लागतिमथुराजाउ
जहां वनमाली ।कहियो प्रगट पुकार द्वार ह्वै कालिंदी फिरि आयो काली ॥ तबहूं कृपा हुतीनँद-
नंदन रचिरचि रसिक प्रीति प्रतिपाली ।माँगत कुसुम देखिऊंचेद्रुमलेवउछंगगोदकरिआली॥

जब वह सुरति होत उर अंतर लागति काम बाणकी भाली । सूरदास प्रभु प्रीति पुरातन सुमिरत उरहिशूलअति शाली॥७९॥ राग धनाश्री॥ तुम्हरे देशकागरमसिखूटी । भूँकप्यासअरुनींदगईसब हरि बिन विरह लयो तनु लूटी ॥ दादुर मोर पपीहा बोले अवधि भई सब झूठी।हमअपराधिनि मर्म न जान्यो अरु तुमहूते तूटी ॥ सूरदास प्रभु कबहुँ मिलहुगे सखी कहत सब झूठी॥८०॥ अध्याय ॥ ८२ ॥ कुरुक्षेत्र यशोमति गोपी मिलन ॥पथिक कहियो ब्रज जाइ सुने हरि जात सिंधु तट।सुनि सब अंग शिथिल गयो नाहीं वज्र हियो फट ॥ नर नारी घर घर सबै इह करति बिचारा। मिलिहैं कैसी भांति हमैं अब नंदकुमारा ॥ निकट बसत हुती आस कियो अब दूरपयाना।बिना कृपा भगवान उपाउ न सूर अपाना॥८१॥राग गौरी॥हमारे श्याम चलन कहत हैं दूरि।मधुवन वसत आशहुती सजनी अब मरिहैं जु बिसूरि ॥ कौने कहाँ कौन सुनि आई किहि रुख रथकी धूरि । संगहि सबै चलौ माधवके नातौ मरिहौं झूरि ॥ दक्षिणदिशि यह नगर द्वारका सिंधु रह्यो जलपूरि । सूरदास प्रभु बिनु क्यों जीवों जात सजीवन मूरि॥ ८२ ॥ गोपिका विरह ॥राग धनाश्री ॥ नैना भये अनाथ हमारे । मदनगोपाल वहाँते सजनी सुनियत दूरि सिधारे ॥ वै जलहर हम मीन बापुरी कैसे जिवहिं निनारे। हम चातक चकोर श्यामघन वदन सुधा निधि प्यारे ॥ मधुवन वसत आश दरशनकी जोइ नैन मग हारे।सूरज श्याम करी पिय ऐसी मृतकहुते पुनि मारे॥८३॥राग धनाश्री॥अब निज नैन अनाथ भये।मधुबनहूतेमाधो सजनी कहियत दूरि गये॥ मथुरा बसत हुती जिय आशा यह लागत व्यवहार । अब मन भयो भीमके हाथी सुपने अगम अपार ॥ सिंधुकूल इक नगर बतावत ताहि द्वारका नाउँ । यह तनु सौंपि सूरके प्रभुको और जन्मधरि जाउँ ॥ उर्ती दूरते को आवै री ।जासों सदेशो कहि पठऊं इहांते सो कहि कहां पावै री ॥ कंचनके बहु भवन मनोहर राजा रंक न तृण छावै री । वहांके बासी लोगनको क्यों ब्रजको बसिबो भावै री ॥ सिंधुकूल इक देश वसतहैं देख्यो सुन्यो न मन धावै री।बहुबिधि करत विलाप विरहिनी अनेक उपायदुखपावै री॥कहाकरौं कहां जाउँसूर प्रभु को हरि पियपै पहुँचावैरी॥८४॥ ॥राग सारंग॥ हौं कैसेके दरशन पाऊं। सुनहु पथिक वहिदेश द्वारका जो तुम्हरे सँग आऊं ॥ बाहिर भीर बहुत भूपनकी बूझत वदन दुराऊं । भीतर भीर भोग भामिनिकी तेहिठां कौन पठाऊं ॥ बुधि बल युक्ति जतन करि वहिपुर हरि पियपै पहुँचाऊं। अब बन बसी निकुंजरसिक बिन कौनहिं दशा सुनाऊं ॥ श्रमके सूर जाउँ प्रभुपासहि मनमें भले मनाऊं। नवकिशोर मुख मुरली बिनाइननैननकहा देखाऊँ॥ ८५ ॥ रागनट ॥मानो बिधि अब उलटि रचीरी। जानति नहीं सखीकाहेते वहि दिनतेजु तजीरी॥बूडि न मुईनीर नैननके प्रेम नप्रजरि पचीरी।विरह अग्नि अरु जलप्रवाहते क्यों दुहुँ बीचबची री ॥ जो कछु सकल लोककी शोभा लै द्वारकासचीरी। वहां कि वारिधि बडवानलमेंरेतन आनिबची री॥कहियेसंकर्षणके भ्राता कीटनि कितन मचीरी। सूर श्याम या जग मोह्यो सोईमुखनिरखिनचीरी ॥८६॥राग मारू ॥ औनहींमाईकोइतो।सुन री सखी संदेशदुर्लभ भए नैन थके मग जोइतो।गोकुलछाँडि निवास सिंधु कियो प्राणजिवन धनसोइतो ॥ द्वारावती कठिन अति मारगक्योंकरि पहुँचे लोइतो । मिती मिलनकी आशअवधि गई ब्रजवनिता कहि रोइतो ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको त्रिपति कहूं नहिं होइतो ॥ ८७ ॥ ॥ राग मलार॥ ताते अब अति मरियत अपसोसनि । मथुराहूते गए सखी री अब हरि कारे कोसनि ॥ यह अचरज सु बडो मेरे जिय यह छांडनि वह पोसनि । निपट निकाम जानि हम छाँडी ज्यों कमान बिन गोसनि ॥ इक हरिके दरशन बिनु मरियत अरु कुबिजाकेठोसनि। सूर सु जरनि कहा उपजी जो दूरिहोतकरि वोमनि ॥८८॥ राग मारू॥ जोपै लैजाई कोऊ मोहिं

द्वारका देश। संग ताके चलौं सजनी जटाहू करि केश॥ बोलिधौं हर वाइ पूछहु आपने समेस॥ जैसेही जो कहै कोऊ बनै तैसे भेस॥यदपिहमव्रजनाथयुवती यूथनाथ नरेश।तदपिशशि कुमुदनी सूरज रची प्रीति परेस॥ ८९॥रागसारंग॥ उघरिआयोपरदेशीको नेह।तबजोसबैमिले कान्ह करि भूलतही अवलेहु॥ काहेको सखी अपनो सरवस हाथपराये देहु।लहियोमहिमाभंगमथुरा छाँडि जाइ समुद्र कियो गेहु॥कहा अब करी अग्नि तनु उपजी वाढ्यो अतिहि संदेहु। सूरदास विह्वल भई गोपी नैननवर्षत मेहु॥९०॥राग मलार॥कैसेहै बनत इहि व्रज हरिको अवन। कहियतहै मधुवनते सजनी कहूँ कान्ह कियो दूरि गवन॥निकट वसत मतिहानि भई हम मिलिहु न आई सु त्यागि भवन।अब अपने यदुकुल समेतलै दूरि सिधारे जीति जवन॥अगम सुपंथ दूरि दक्षिणदिशि तहँ सुनियत सखी सिंधुलवन। सूरदास तरसत मन निशिदिन यदुपति लौं लैजाइ कवन॥९१॥ ॥राग धनाश्री॥सुनियत कहुँ द्वारका बसाई।पश्चिम देश तीर सागरके कंचन कोट गोमती सों खाई॥ पंथ न चलत संदेश न आवत उहां लगि नर कोऊ नहिं जाई। शत योजन मथुराहूते कहियत यह हम सुधि निगमहूपै पाई॥ बन उपवनमें जन मंदिर छबि कोकिल कीर हंस ध्वनि लाई। द्वारपाल चातक द्रुम सुपचनि माँझ कोट निधि पाई॥ घोष ग्वाल पशुपाल अधम कुल ईश एकको कौन सगाई। सूर श्याम व्रजवास बिसारे बाबानंद यशोदा माई॥९२॥ राग मारू॥उडुपतिसों बिनवति मृगनैनी॥तुम कहियत उडुराज अमृतमय तजि सुभाउ वर्षत कत बहनी॥उमयापति रिपु अधिक दहतहै हरि रिपु प्रीतम सूखत तौनी। छपा न छीन होत सुन सजनी भूमि डसन रिपु कहां दुरौनी॥ श्याम संदेश बिचार करतिहै कहां रहे हरि छाइ बछोनी। सूर श्याम बिनु भवन भयानक जो अति रहति गोपालकी अवनी॥ ९३॥ दधिसुत जातिहो वहि देश। द्वारकामें श्यामसुंदर सकल भुवन नरेश॥ परम शीतल अमृतदाता करतहैं उपदेश। श्यामसुंदर वियोगिनीको लेहु यह संदेश॥ नंदनंदन जगतवंदन धरे नटवर भेष। काज अपनो सारि स्वामी रहे जाइ विदेश॥ भक्तवत्सल बिरद तुमरो मोहिं इह अंदेश।अबकी बेर तुम मिलहु कृपाकरि कहैं सूर सुदेश॥९४राग मलार॥वीर बटाऊ पाती लीजो। जब तुम जाहु देश द्वारका हमरेइ लाल गोपालहि दीजो॥ रंगभूमि रमणीक मधुपुरी वारि चढाइ कहो दह कीजो। खारि समुद्र छाँडि किन आवत निर्मलजल यमुनाको पीजो॥ या गोकुलकी सकल ग्वालिनी देत अशीश बहुत युग जीजो। सूरदास प्रभु हमरेकोतै नँदनंदनके पाँइ परीजो॥ ९५॥राग सारंग॥ हौं तो आइ मिलत गोपालहि। सिंधु धरनि यह जुगुत न तेरी दुख दीनो व्रजबालहि॥ कहा करों पट नील पीत वर दुइते भये भुज चारि। बहु सुख कहा जु तब मन हातो भटत श्याम मुरारि॥ संतत सूर रहत पति संगम सब जानति रुचि जीकी।तूक्यों नहीं धरति याभेषहि जोपै मुक्ति अति नीकी॥ ९६॥ राग मलार॥ श्याम बिन भई शरदनिशि भारी। हमैं छाँडिप्रभु गये द्वारका व्रजभूमि कैसे बिसारी॥ निर्मल जल यमुनाको छाँड्यो सेवत समुद्रजलखारी।कहियो जाइ पथिक जैसे आवैं चरणनकी बलिहारी॥ अबलाकहा योगकरजानैंव्रजवासीजोबिसारी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको रटत राधिका प्यारी॥ ९७॥ राग मलार॥व्रजपरमदरकरतहै काम। कहियो पथिक जाइ श्यामसों राखहिंआइ आपनो धाम॥ जलधि कमानवारिदारूभरि तडित पलीता देत। गर्जन औ तर्पन मानो गो पहरकमें गढ लेत॥लेहु लेहुसबकरतबंदिजनकोकिल चातक मोर। दादुर नगर करि जीवन ढोवा अलग बिलग चहुँ ओर॥ ऊधो मधुप जसूस देखि कर कह्यो लुटाऊ धीरजपारन। रखिबेहोइतौआनिराखियेसूरलोक निज जारन॥९८॥राग मलार॥ व्रजपर बहुरो लागे गाजन। ज्यों क्योंहू पति जात बडेकी मुख नदेखावत लाजन॥ चहुँदिशिते

दल बादल उमडे सूने लागे बाजन। घोषके लोग कान्ह बल तिन अब जित कित लागे भाजन ॥ आपुन जाइ द्वारका छाये लागे श्याम विराजन। सूरदास गोपी क्यों जीवें बिछुरे हरिजी साजन ॥ ९९ ॥ रागमारू ॥ अब मोहिं निशि देखत डर लागे। बारबार अकुलाइ देहते निकसि निकसि मन भागे ॥ प्राचीदिशा पेखि पूरण शशि ह्वै आयो तन तातो। मानहुमदनमदन विरहिनिको करिलीनी रिसरातो॥ भ्रुकुटी कुटिल कलंक चाप मानों अति रिसिसों शरसाधे। चहुँघा किरनि पसारे पासिनि हठिकर योगिनि बाँधे॥ सुनि शठसहे प्राणपतिमेरोजाकोयशजग जाने। सूर सिंधु बूडतते राख्यो ताहू कृतहि न माने ॥१००॥रुक्मिणी वचन श्रीभगवानप्रति ॥ राग धनाश्री ॥ रुक्मिणि बूझतहै गोपालहिं। कहौ बात अपने गोकुलकी कतिक प्रीति ब्रजबालहिं॥कहा देखि रीझे राधासों चंचल नैन विशालहिं।तब तुमगाय चरावनजाते उरधरते बनमालहिं॥ इतनी सुनी नैन भरि आये प्रेमनंदके लालहिं।सूरदास प्रभु रहे मौनह्वै घोष बातजनिचालहि॥१॥राग धनाश्री॥ रुक्मिणि मोहिं निमेष न बिसरत वै ब्रजबासी लोग।हम उनसों कछु भली न कीनी निशिदिन मरत वियोग ॥ यदपि कनकमय रची द्वारका सखी सकलसंभोग। तद्यपि मनजोहरतबंसीवट ललिताके संयोग॥ मैं ऊधो पठयो गोपिनपै देइ सँदेशो योग।सूरजदासदेखि उनकी गति किन्ह उपदेशे योग॥२॥ राग मलार ॥रुक्मिणि मोहिं ब्रज बिसरतु नाहीं। वा क्रीडा खेलत यमुनातट विमल कदमकी छाहीं॥ गोपवधूकी भुजा कंठधरि विहरत कुंजनमाहीं। अनेकबिनोद कहांलौं वरणौं मोमुख वरणि न जाहीं॥सकल सखा अरु नंद यशोदा वे चितते न टराहीं। सुत हित जानि नंद प्रतिपाले बिछुरत विपति सहाहीं॥ यद्यपि सुखनिधानद्वारावतितोउमनकहुँनरहाहीं। सूरदास प्रभु कुंजविहारी सुमिरि सुमिरि पछिताहीं॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ रुक्मिणि चलहु जनम भूमि जाहीं।यदपि तुम्हारो हतो द्वारका मथुराके सम नाहीं॥ यमुनाके तट गाय चरावत अमृत जल अचवाहीं।कुंजकेलि अरु भुजा कंधधरि शीतल द्रुमकी छाहीं ॥ सरस सुगंध मंद मलयागिरि विहरत कुंजनमाहीं। जो क्रीडा श्रीबृंदावनमें तिहूंलोकमेंनाहीं॥ सुरभीग्वालनंदअरुयशुमति मम चितते न टराहीं।सूरदास प्रभु चतुरशिरोमणिसवातिनकीकराहीं॥४॥श्रीकृष्णकुरुक्षेत्रआवन॥राग सारंग ॥ब्रजबासिनको हेतु हृदयमें राखि मुरारी। सब यादवसोंकह्योबैठिकैसभामँझारी॥ बडो पर्व रवि गहन कहा कहौं तासु बडाई। चलौ सबै कुरुक्षेत्र तहां मिलि न्हैये जाई ॥ तात मात निज नारिलै हरिजी सब संगा। चले नगरके लोग साजि रथ तरलतुरंगा॥कुरुक्षेत्रमेंआइ दियो इक दूत पठाई। नंद यशोमतिगोपिग्वाल सबसूर बुलाई ॥२॥ सखीवचन राधिका प्रतिशकुन विचार॥ राग सारंग ॥वायस गहगहात शुभवाणीविमलपूर्वदिशि बोली। आजुमिलाओंश्याम मनोहरतू सुनु सखी राधिके भोली॥कुचभुज अधर नयन फरकतहैं बिनहिबातअंचलध्वज डोली।सोचनिवार करो मन आनँद मानो भाग्यदशा बिधि खोली॥सुनत सु वचनसखीके मुखते पुलकितप्रेम तरकिगई चोली।सूरदास अभिलाष नंदसुत हरषींसुभग नारिअनमोली॥६॥राग केदारो॥ माधवजी आवनहार भये। अंचल उडत मन होत गहगहो फरकत नैन खये॥देही देखि सोचजिय अपने चितवत सगुन दये। ऋतुबसंत फूली द्रुमवल्ली उलहे पात नये॥ करति प्रतीति आपु आपुनते सबन शृंगार ठये।सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि अवधिहु पूजिगये॥७॥श्रीभगवान दूत वचन नंद यशोमति प्रति ॥राग धनाश्री॥ हौं इहां तेरेही कारण आयो। तेरीसों सुन जननि यशोदा हठि गोपाल पठायो ॥ कहा भयो जो लोग कहतहैं देवकी माता जायो॥खान पान परिधानसबै सुख तैंहीं लाड लडायो। इतो हमारो राज द्वारका मो जी कछूनभायो॥जब जब सुरति होत उहि हितकी बिछुर वच्छ ज्यों धायो॥अब वे हरि कुरुक्षेत्रमें आये सो मैं तुम्हैं सुनायो।सबकुलसहित नंदसुरज प्रभुहितकरिवहां बोलायो॥८॥राधिकावचन सखीप्रति।सारंग॥राधानैननीरभारिआई।कबधौंश्याम

मिलैं सुंदर सखी यदपि निकटहैआई॥कहा करौंकेहिभाँति जाउँअब पेषहिनाहिंतिनपाई॥सूरश्याम सुंदरघनदरशे तनुकी तापनशाई॥९॥सखीवचनराधिकाप्रतिराग केदारो॥अब हरि आइहैंजिनसोचै। सुन विधुमुखी वारि नयनन ते अब तू काहे मोचै॥सत्य जानि चित चेत आनि तू अबनख क्यों तनु नोचै।मदनसुरारिसँभारिसुमिरि सुखतुमसमीपकोबोचै॥लैलेखनि मसिकरिकर अपने लिखि संदेश छाँडि संकोचै।सूर सुविरहजनाउकरत कितप्रबल मदनरिपु पोचै॥१०॥गोपीसंदेशश्रीभगवानप्रति॥ राग सारंग ॥ पथिक कहियो हरिसों यह बात। भक्तवछल हैं बिरद तिहारोहमसबकियेसनाथ॥ प्राण हमारे संग तुम्हारे हमहू हैं अब आवत। सूर श्यामसों कहत संदेशोनयननननीर बहावत॥ ॥११॥कुरुक्षेत्र श्रीभगवान मिलन ॥राग सारंग ॥नंद यशोदा सबब्रजबासी। अपनेअपनेशकटसाजिकै मिलन चले अविनाशी॥कोउ गावत कोउ वेणु बजावत कोउ उतावल धावत।हरिदरशन लालसा कारन विविध मुदित सब आवत ॥ दरशन कियो आइ हरिजीको कहत सपन की साँची। प्रेम मानि कछु सुधि न रही अँग रहे श्याम रँग राची ॥ जासों जैसी भाँतिचाहियेताहिमिल्यो त्यों धाइ। देश देशके नृपति देखि यह प्राण रहे अरगाइ ॥ उमँग्यो प्रेम समुद्रदशहुँदिशिपरमिति कही न जाइ। सूरदास इह सुखसोजानैजाकेहृदय समाइ॥१२॥राग कान्हरो॥तेरीजीवनिमूरिमिलहि किन माई। महाराज यदुनाथ कहावत तबहिं हुते शिशु कुँवर कन्हाई॥पानि परे भुज धरे कमल मुख पेषत पूरब कथा चलाई। परमउदार पानि अवलोकत हीन जानिकछु कहत न जाई॥ फिरि फिरि अब सन्मुखही चितवति प्रीति सकुच जानी न दुराई। अवँहसिभेटहुकहिमोहिंनिज जन बाल तिहारो हो नंद दोहाई ॥रोम पुलकि गदगद तनु तिहि छिन जलधारा नैननवरषाई।मिले सु तात मात बंधू सब कुशल कुशल करि प्रश्न चलाई॥आसन देइ बहुत करि बिनती सुत धोखे तब बुद्धि हेराई।सूरदास प्रभु कृपाकरी अब चितहि धरे पुनि करी बडाई ॥१३॥ राग मलार॥माधव या लगि है जग जीजतु। जाते हरिसों प्रेम पुरातन बहुरि नयो करि कीजतु ॥ कहँ रवि राहु भयो रिपु मति रचि बिधि संयोग बनायो।उहि उपकार आज यहि औसर हरि दरशन सचुपायो॥कहाँ बसहिं यदुनाथ सिंधु तट कहँ हम गोकुलबासी। वह बियोग यह मिलनि कहां अब काल चाल औरासी ॥ सूरदास मुनि चरण चरचि करि सुरलोकनि रुचि मानी।तब अरु अब यह दुसह प्रमानी निमिषो पीर न जानी॥१४॥श्रीभगवान रुक्मिणी प्रत्युत्तर॥राग कान्हरो॥ हरिजूसों बूझत है रुक्मिणि इनमें को वृषभानु किशोरी। बारेक हमैं देखावो अपने बालापनकी जोरी ॥ जाके हेतु निरंतर लीये डोलत ब्रजकी खोरी। अति आतुर होइ गाइ दुहावन जाते पर घर चोरी॥रजनी सेज सु करि सुमननकी नवपल्लव पुट तोरी। बिनु देखे ताके मन तरसै छिन बीते युग मोरी॥सूर सोच सुख करि भरि लोचन अंतर प्रीति न थोरी। शिथिल गात मुख वचन फुरत नहिं ह्वै जो गई मति भोरी ॥ ॥१५॥राग धनाश्री॥बूझति है रुक्मिणि पिय इनमेंको वृषभानुकिशोरी।नेक हमैंदेखरावहुअपनीबालापनकी जोरी ॥ परमचतुर जिन कोने मोहन अल्प वैसही थोरी। बारेते जिहि यहै पढायो बुधि बल कलविधि चोरी ॥ जाके गुणगनि गुथति माल कबहूँ उरते नहिं छोरी। सुमिरन सदा बसतहीं रसना दृष्टि न इत उत मोरी॥ वह देखो युवतिवृंदमें ठाढ़ी नीलवसन तनु गोरी। सूरजदास मेरो मन वाकी चितवन देखि हरयोरी ॥१६॥ राग मारू॥गोविंद परम कृपा में जानी। निगम जु कहत दयालु शिरोमणि सत्य सु निधि बानी ॥अब ये श्रवन वरन कर स्वारथ तुम जु दरश सुख दीनो। या फलयोग सुकृत नहिं समुझत दीन देखि हित कीनो॥ यह दिन धन्य धन्य जीवन जस धन्य

भाग्य प्रभु पाये। शिव मुनि मन दुर्लभ चरणांबुज जनहि प्रगट परसाए॥ हरषित सुजन सखा त्रिय बालक कृष्णमिलन जिय भाये॥ सूरजदास सकल लोचन जनु शशि चकोर कुलपाए॥ १८॥ राग सारंग॥ हरिजी इते दिन कहाँ लगाये॥ तबहि अवधि मैं कहत न समुझी गनत अचानक आये॥ भली करी जु अबहिं इन नैनन सुंदर चरण दिखाये। जानी कृपा राजकाजहुँ हम निमिष नहीं बिसराए॥ विरहिनि विकल विलोकि सूर प्रभु धाइ हृदय कर लाए। कछु मुसुकाइ कह्यो सारथि सुन रथके तुरंग छुराए॥ १८॥ राग मलार॥ हरिजू वै सुख बहुरि कहां। यदपि नैन निरखत वह मूरति फिरि मन जात तहां॥ मुख मुरली शिर मोरपखौवा गर घुँघुँचनिको हार। आगे धेनु रेनु तनु मंडित चितवन तिरछी चाल॥ राति दिवस अंग अंग अपने हित हँसिमिलि खेलत खात। सूर देखि वा प्रभुता उनकी कहि नहिं आवै बात॥ १९॥ राग धनाश्री॥ रुक्मिणि राधा ऐसे बैठी। जैसे बहुत दिननकी बिछुरी एक बापकी बेटी॥ एक सुभाउ एकलै दोऊ दोऊ हरिकी प्यारी। एक प्राण मन एक दुहुनको तनु करि देखिअत न्यारी॥ निज मंदिर लै गई रुक्मिणी पहुनाई बिधि ठानी॥ सूरदास प्रभु तहँ पगधारे जहां दोऊ ठकुरानी॥ २०॥ राग धनाश्री॥ राधा माधव भेंट भई। राधा माधव माधव राधा कीट भृंग गति होइ जो गई॥ माधव राधाके रँग राचे राधा मवाध रंग रई। माधो राधा प्रीति निरंतर रसना कहि न गई॥ बिहँसि कह्यो हम तुम नहिं अंतर यह कहि व्रज पठई॥ सूरदास प्रभु राधामाधव व्रजविहार नित नई नई॥ २१॥ राग धनाश्री॥ राधावचन सखी प्रति॥ करत कछु नाहीं आजु बनी। हरि आए हौं रही ठगीसी जैसे चित्त धनी॥ आसन हर्षि हृदय नहिं दीन्हों कमलकुटी अपनी। न्यवछावरि उर अरघ न अंचल जलधारा जो-बनी॥ कंचुकी ते कुचकलश प्रगट ह्वै टूटि न तरक तनी। अब उपजी अतिलाज मनहिमन समुझत निजकरनी॥ मुख देखत न्यारेसी रहिहौं बिनु बुधिमति सजनी। तदपि सूर मेरी यह जडता मंगल माँझ गनी॥ २२॥ भगवानवचन व्रजवासप्रति॥ राग सारंग॥ व्रजवासिनसों कह्यो सबनते व्रजहित मेरे। तुमसों मैं नहिं दूर रहतहौं सबहिनके नियरे॥ भजै मोहिं जो कोइ भजौं मैं तिनको भाई। मुकुरमांह ज्यों रूप आपनो आपुन सम दरशाई॥ यह कहिकै समदे सकल जननयनरहेजलछाई॥ सूरश्यामकोप्रेमकछूमोपै कह्योन जाई॥ २३॥ राग सारंग॥ सबहिनते सबहै जन मेरो। जन्म जन्म सुन सुभल सुदामा निबह्यो इह प्रण मेरो॥ ब्रह्मादिक इंद्रादि आदि दै जानत बलि वसि केरो। इक उपहास त्रास उठि चलते तजिकै अपनो खेरो॥ कहा भयो जो देश द्वारका कीन्हों दूरि बसेरो। आपुनहीं या व्रजके कारण करिहौं फिरि फिरि फेरो॥ यहां वहां हम फिरत साधहित करत असाध अहेरो। सूर हृदयते टरत न गोकुल अंग छुअतहौं तेरो॥ २४॥ वचन व्रजवासी राग सारंग॥ हमतो इतनेही सचुपायो। सुंदर श्याम कमलदल लोचन बहुरो दरश देखायो॥ कहा भयो जो लोग कहतहैं कान्ह द्वारका छायो। सुनि यह दशा विरह लोगनकी उठि आतुर होइ धायो॥ रजक धेनु गज कंस मारिकै कियो आपनो भायो॥ महाराज होय मातु पिता मिलि तऊ न व्रजबिसरायो॥ गोपीगोप अरु नंद चले मिलि प्रेम समुद्र बहायो। येते मान कृपालु निरंतर नैननीर ढरिआयो॥ यद्यपि राज बहुत प्रभुता सुनि हरि हित अधिक जनायो। वैसहि सूर बहुरि नँदनंदन घर घर माखन खायो॥ २५॥ अध्याय॥ ७३॥ अष्टनायिका द्रौपदी प्रश्न॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि सुमिरहु दिनराति॥ नातरु जन्म अकारथ जाति॥ सौ बात-नकी एकै बात। हरि हरि हरि सुमिरो दिन रात॥ हरि कुरुक्षेत्र अन्हान सिधाये। तब सब

भूपति दरशन आये ॥ हरि तेहि सबको आदर कियो। भयो संतुष्ट सबहिनको हियो ॥ तब भूपहि हरिको शिरनाइ। करनलगे अस्तुति या भाइ ॥ परमहंस तुम सबके ईश। बचनतुम्हारे श्रुति जगदीश ॥ तुम अच्युत अविगति अविनाशी। परमानंद सदा सुखरासी ॥ तुम तनु धारि हरयो भुवभार। नमो नमो तुम्हैं बारंबार ॥ पुनि रानी रानिनपै आई। द्रुपदसुता तब बात चलाई ॥ ज्यों करि भयो तुम्हारो व्याह। कहो सो तिनको मोहिं उत्साह ॥ कह्यो सबन्ह हरि अज अविनाशी। भक्तवछल सब जगत निवासी ॥ ना हम कोनहिं सुंदरताई। भक्त जानिकै सब अपनाई ॥ व्याह सबनको ज्यों ज्यों भयो। बहुरो तिन्हते वहि त्यों कह्यो ॥ द्रुपदसुता सुनि मन हरषाई। कह्योधन्यतुम धनि यदुराई॥ धन्य सकल पटरानी रानी। जिन वर पायो शारँगपानी॥ धन्य जो हरिगुण अहनिशिगावै। सूरदास तिनकी रज पावै ॥ २६॥ अध्याय॥८६॥ऋषिस्तुति॥राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोई। बिनु हरि सुमिरन मुक्ति न होई ॥ श्री शुक व्यास कह्यो यह गाई। सोइ अब कहौं सुनो चित लाई ॥ सूरज गहन पर्व हरि जान। कुरुक्षेत्रमें आए न्हान ॥ तहां ऋषि हरि दरशन हित आये। हरि आगे होइ लेन सिधाये ॥ आसन दे पूजा हित करी। हाथ जोरि बिनती उच्चरी ॥ दरश तुम्हारे देवन दुर्लभ। हमको भयो सो अतिही सुल्लभ ॥ यों कहि पुनि लोगन समुझायो। जैसे वेद पुराणन गायो ॥ हरिजीको पूजै हरि जान। ताको होइ तुरत कल्यान॥ गुरुपूजा बहु बिधिसों कीजै। तीरथ जाइ दान बहु दीजै ॥ यह सब किये होइ फल जोइ। संत संगसों छिनमें होइ ॥ यह सुनिकै ऋषि रहे लजाइ। पुनि हरिसे बोले या भाइ॥ तुम सबके गुरुसबके स्वामी। तुम सबहिनके अंतर्यामी॥ तुम्हैं वेद ब्राह्मणहि बखानत। ताते हमरी अस्तुति ठानत॥ हम सेवक तुम जगतअधार। नमो नमो तुम्हैं बारंबार॥ तुम परब्रह्म जगत करतारा। नरतनु धरयो हरन भूभारा ॥ सुरपूजा औ तीर्थ बतावत। लोगनके मतिको भरमावत॥ तुम रूपहि याहि भाँति छिपायो। काठ माँह ज्यों अग्नि दुरायो ॥ वसुदेव तुमको जानत नाहीं। और लोग बपुरे किन माहीं ॥ कोउ न मानत कोउ न जानत। कोऊ शत्रु मित्रकरि मानत॥ सबै शक्तितुमसबै अधार। तुम्हैं भजै सो उतरै पार ॥ जैसे नींद माहिं कोइ होय। बहुबिधि सपनो पावै सोय ॥ पै तेहि वहां न कछू सम्हार। केहि देखत को देखनहार॥ त्यों जिय रहै विषैरस भोइ। तेहिकेसुद्धि बुद्धि नहिं कोइ॥ जापर कृपा तुम्हारी होइ। रूप तुम्हारो जानै सोइ॥ घटघटमांह तिहारो बास। सर्ब ठौर ज्यों दीप प्रकाश॥ इहि बिधि तुमको जानै जोइ। भक्तिरु ज्ञानी कहिये सोइ॥ नाथ कृपा अब हमपर कीजै। भक्ति आपनी हमको दीजै ॥ प्रेम भक्ति बिन कृपा न होइ। सर्व शास्त्रमें देखे जोइ ॥ तपसी तुमको तपकरि पावै। सुनि भागवत गृहीगुणगावैं॥ कर्मयोगकरिसेवतकोई। ज्यों सेवै त्योंही गति होई ॥ ऋषि यहि बिधि हरिके गुण गाइ। कह्यो होइ आज्ञा यदुराइ ॥ हरि तिनकी पुनि पूजा करी। कीरति सकल जगत विस्तरी ॥ वेद पुराण सबनको सार। व्यास कह्यो भागवत बिचार ॥ बिनु हरि नाम नहीं उद्धार। वेद पुराण सबनको सार। सूर जानि यह भजो मुरार ॥ २७ ॥ अध्याय ॥८५॥ श्रीकृष्ण देवकी षट्पुत्र आनयन॥ रागबिलावल ॥ श्रीगोपाल तुम कहो सो होइ। तुमहीं कर्त्ता तुमहीं हर्त्ता तुमते और न कोइ ॥ अबलौं मैं तुमको नहिं जान्यो पुत्रभावकरि मान्यो। तुमहो देव सकल देवनके अब तुमको पहिचान्यो ॥ गुरुसुत आनि दिये तुम जैसे कृपाकरी यदुराई। ममसुतहू जे कंस सँहारे

ते प्रभु देहु जिवाई॥ मेरे जिय यह बडी लालसा देखों नैनन जोई।दूधपिवाइहृदयसोंलावों पाछे होइ सो होई॥ यह सुनि हरि पाताल सिधारे जहांहुतेबलिराइ।करिप्रणामबैठारिसिंहासनहितकरि धोये पाइ॥ तासों कह्यो देवकीके सुत षष्ठ कंस जे मारे। नेकमँगाइदेहुतेहमकोदैंवेलोकतुम्हारे॥ तहँते आनि दिये हरि बालक माता लाड लडाये। सूरदास प्रभु दरशपरसकैतेवैकुंठसिधाये॥२८॥ अध्याय॥ ८६॥ ॥ वेदस्तुति वर्णन राग बिलावल॥हरि हरिहरि हरि सुमिरनकरो।हरिचरणारविन्दउरधरो। हरिके रूप रेख नहिं राजा। अरु हरि सम द्वितिया न विराजा॥ अलखरूप हरि कह्यो न जाई। देवन कछु वेद उक्ति बताई॥ हरिजीके हिरदय यह आई। देवन सबन निरूप देखाई॥तीनलोक हरि करि बिस्तार।ज्योति अपनिको कियो उजियार॥ जैसे कोऊ गेह सँवार। दीपकबारिकरैउजिआर॥ त्यों हरि ज्योति अपनी प्रगटाइ। घट घटमें सोई दरशाइ॥तीनलोकसरगुणतनुजान्यो। ज्योति स्वरूप आपनो मान्यो॥ श्वासा तासु भये श्रुतिचार। करि सो अस्तुति या परकार॥नाथ तुम्हारी ज्योति अभास। करत सकल जगमें परकास॥ थावर जंगम जहँलों भयो। ज्योति तुम्हारी चेतन कियो॥तुम सब ठौर सबनते न्यारे। को लखि सकै चरित्र तुम्हारे॥ सो प्रकाश तुम साजे सदा। जीव कर्म्म करि बंधन बँधा॥ सर्वव्यापी तुम सब ठाहर॥ तुमहिं दूर जानत नर नाहर॥ तुम प्रभु सबके अंतर्यामी। बिसरि रह्यो जिव तुमको स्वामी॥ तुम्हरी लीला अगम अपार। युग प्रमान कीन्हो व्यवहार॥तुम्हरीमायाजगतउपाया।जैसेकोतैसेमगलाया॥ अद्भुत सगुण चरित्र तुम्हारे। जो करिकै भुवभार उतारे॥ तेहिको समुझि सकत नहिंजोइ। निर्गुण रूप लखै क्यों सोइ॥नरतन भक्ति तुम्हारे होइ। जीव तनुमें जिव आसरे सोइ॥करिये भक्ति उतरिये पार। नमो नमो तुम्हैं बारंबार॥ शुक जैसे वेद अस्तुति गाई। तैसेही में करि समुझाई॥ जो पदअस्तुति सुनै सुनावै। सूर सु ज्ञान भक्तिको पावै॥२९॥राग बिलावल॥नमोनमस्ते बारंबार। मदन सुदन गोविंद मुरार॥ माया मोह लोभ अरु मान। ए सब त्रयगुण फांस समान॥ काल सदा शर साधे रहै। क्यों करि नर तुव सुमिरन कहै॥ तुम निर्गुण उदय निराकार। सूर अमर हम रहे पचिहार॥ तुमरो मर्म न जानै सार। नर बपुरो क्यों करै बिचार॥ अरुणअसितासितवपुउनहार। करत जगतमें तुम अवतार॥ सो जगको मिथ्या कहिजाइ। जहां तरै तुमरे गुण गाइ॥ प्रेमभक्ति बिनु मुक्ति न होइ। नाथ कृपाकरि दीजै सोइ॥ और सकलहम देखौं जोइ। तुम्हरी कृपा होइ सो होइ॥ इह तनुहै प्रभु जैसे ग्राम। यामें शब्दादिक बिश्राम॥ अधिष्ठाता तुमहौभगवान। जान्यो जगत न तुम अस्थान॥ तुम श्वासाते पुहुमी नाथ। श्वासरूप हम लख्यो नबात॥कहाकहि तुम्हरी अस्तुति करैं।बाणी नमो नमो उच्चरैं॥ जगतपिता तुमहींहौईश।यातेहमबिनवतजगदीश॥ तुम सम द्वितिया और न आहि। पटतर देहिं नाथ हम काहि॥ शुक जैसे वेदअस्तुति गाई। तैसेही मैं कहि समुझाई॥सूर कह्यो श्रीमुखउचार।कहैसुनैसोतरैभवपार॥३०॥नारद अस्तुति॥ रागधनाश्री॥ प्रभु तुअ मर्म समुझि नहिं पर्‍यो। जगसिरजत पालत संहारत पुनि क्यों बहुरि कर्‍यो॥ ज्यों पानीमें होत बुदबुदा पुनि तामाहिं समाई। त्योंही सब जग कुटुम्बतुमतेपुनि तुममाहिंबिलाई॥ माया जलधि अगाध महाप्रभु तरि न सकै तेहि कोई। नाम जहाज चढै जो कोई तुवपद पहुँचै सोई॥ पापी तर्‍यो तर्‍यो सबहीसम प्रभुजी नाहीं तासु निबाहो। काठ उतारतवारिवोहिमें नाम तुम्हारो ताही॥ पारस परसि होत ज्यों कंचन लोहपना मिट जाई।ज्यों अज्ञानी ज्ञानहिं पावत नाम तुम्हारे गाई॥ अमरहोत ज्यों संशयनाशे रहत सदा सुखपाइ। याते होत अधिक सु ख

भक्तन चरणकमल चितलाइ ॥ थावर जंगम सब तुम आश्रित सनक सनंदन बानी । ब्रह्मा शिव अस्तुति न सकैं करि मैं बपुरो केहिमाहीं ॥ योग ध्यान करि देखत योगी भक्त सदा मोहिं प्यारो। ब्रजवनिता भज्यो मोहिं नारद मैं तेहि पार उतारो ॥ नारद ज्योंहीं अस्तुति कीनी शुक त्यों कहि समुझाई। सूर प्रेम भक्तिकी महिमा श्रीपतिश्रीमुखगाई॥३१॥ अध्याय ॥ ८७ ॥ सुभद्राविवाह वर्णन ॥ राग बिलावल॥ भक्तवछलश्रीयादवराई। भक्त काज हरिकृतसुखदाई॥ अर्जुनतीरथयात्रासिधाये। फिरत फिरत द्वारावति आये ॥ सुन्यो बिचार करत बलयेइ। दुर्योधनहिं सुभद्रा देइ ॥ तब अर्जुनके मन इह आई । याको मैं लैजाउँ दुराई ॥ भेष तापसीको तिन गह्यो । चारिमासद्वारावति रह्यो ॥ बलदेव ताको नेवत बुलायो । भोजन हेतु सो बल गृह आयो ॥ लख्यो सुभद्रा इह संन्यासी। राजकुँवर कियो भेष उदासी ॥ मेरे मनमें इह उत्साह । मेरो या सँग होहि विवाह ॥ इकदिन सो हरिमंदिर गई । वहां भेंट पारथसों भई ॥ देखि ताहि रथ ठाढो कियो । हरि दोउको चेहरो लिखिलियो ॥ धनुषबाण अपनो तब दियो। अर्जुन सावधान होइ लियो॥ यहसुनिकै हलधर उठिधायो । तब हरि अर्जुन नाम सुनायो ॥ बल कह्यो जो तुम मन ऐसी आइ। तौतुमक्योंकीन्हीं न सगाइ ॥ हरि कह्यो अबहुँ बुलावहु ताहि । भली भाँतिको करो विवाहि ॥ तब बल पारथ तुरत बुलायो । शुद्ध मुहूरत लग्न धरायो ॥ करि विवाह अर्जुन घर आयो। सूरदास जनमंगलगायो॥३२॥ ॥ राग नट ॥ बिनती करत गोबिंद गोसाइं । दे सबसौंज अनंतलोकपतिनिपटरंककीनाइं॥ धरिधन धाम सजनके आगे श्याम सकुचि कर जोरे । टहल योग यह कुंवरि सुभद्रा तुमसम नाहीं कोरे॥ इतनी सुनत पंडुनंदन कह यहै वचन प्रभु दीजे। सूरज दीनबंधु अब इहि कुल कन्या जन्म न कीजे ॥ ३३ ॥ अध्याय ॥ ८८॥ जनकदेवमिलाप परमारथ ॥ हरिहरिहरिसुमिरहुसबकोई। रावरंक हरि गनत न दोई ॥ जो सुमिरै ताकी गति होई । हरिहरि हरि सुमिरहु सबकोई ॥ श्रुतदेव ब्राह्मण सुमिरचो हरी। ताकी भक्ति हृदयमें धरी॥ राउ जनक हरि सुमिरन कीन्हों । हरिजू सोउ हृदय धरि लीन्हों ॥ तब हरि ऋषिहि पथिक सँग किये। तिनके देश प्रीतिवश गये ॥ दोउरूप हरि दोउनको मिले । तोषि तेहि पुनि निजपुर चले॥ हरिजीको यह सहज सुभाव । रंक होइ भावैकोउ राव॥ जो हित करै ताहि हितकरै। सूरप्रभूनहिंअंतरधरै॥३४॥ राग कान्हरा॥ घरहीबैठेदोऊदाम। ऋधि सिधि मुक्ति अभयपद दायक आइ मिले प्रभु हरि अनयास ॥ आयेसुनेश्यामउपवनमेंभेटलई भुज परमसुवास ॥ चर्चित गात चंद्रमुख चितवत उरसरवर भयो कमल विगास॥ भूपतिचमर विप्र कर वस्तर करत वाउ अति अंग हुलास । आनँद उमँगि चल्यो नैनन जल सुरत देव द्विज नृप बहुलास ॥ जाको ध्यान धरंत मुनि शंकर शीश जटा दिग अंबर ताम । कामदहन गिरिकंदर आसन वा मूरतिकी तऊ पिआस ॥ भक्तबछलता प्रगट करीहै भयो विप्र धरकरकलिग्रास। सूरदास स्वामी सुमिरन वश अछत निरंजन सेवा पास ॥३५॥ अध्याय ॥८९॥ भस्मासुर वध॥ धनाश्री॥ तेऊ चाहत कृपा तुम्हारी । जिनके वशअनमुख अनेक गन अनुचर आज्ञाकारी ॥ महादेव वर दियो असुरको जब उन निज तनु जारचो । शिवके शीश धरन लाग्यो कर शिव वैकुंठ सिधारचो॥ विप्ररूप हरि कह्यो असुरसों इह वर सत्य न होइ । शिर अपनेपर धरो असुर कर भस्म होइगयो सोइ ॥ शिव कैलास गये अस्तुति करि आनँद उपज्यो भारी। सूरदास हरिको यश गायो श्रीभागवत अनुसारी ॥ ३६ ॥ अध्याय॥९०॥ भृगुपरीक्षा अर्जुन निजरूपदर्शन ॥ शंखचूड पुत्रल्यावन ॥ राग बिलावल॥ हरिसो ठाकुर और नजनको। तिहूंलोकभृगुजाइआइकह्योयाबिधि

सब लोगनको॥ब्रह्मा राजसगुण अधिकारी शिव तामसअधिकारी। विष्णु सत्य केवलअधिकारी विप्रलात उरधारी॥ मुख प्रसन्न शीतल सुभाउ नित देखत नैन सिराई। इह जिय जानि भजो सब कोई सूर प्रभू यदुराई॥३७॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उरधरो॥हरि इकदिन निज सभा मँझार। बैठे हते सहित परिवार॥ अर्जुनहूं ता ठौर सिधाये। शंखचूड तब वचन सुनाये॥द्वारावती बसत सब सुखी। महीं एक अह अरु निशि दुखी॥मेरे पुत्र होतहैं जबहीं। अंतर्ध्यान होत सो तबहीं॥ अर्जुन कह्यो द्वारका माहीं। ऐसो कोउ धनुधारी नाहीं॥ जो तुअ सुतकी रक्षा करे। अरु तेरो पर दुख परिहरे॥ मैं तुअ सुतकी रक्षा करों। अरु तेरो इह दुख परिहरों॥ यह प्रतिज्ञा जो न निबाहौं। तौ तन अपनो पावक दाहौं॥ विप्र कह्यो तुम श्यामकि राम। कै प्रद्युमन अनिरुद्ध अभिराम॥अर्जुन कह्यो मैं उनमें नाहीं। पै हौं उनके दासन माहीं॥ अर्जुन है मेरो निजनाम।धनुष काम दियो मम अभिराम॥तू निहचिंत बैठ गृहजाइ।समै होय कह मोसों आइ॥ पुत्र प्रसूति समय जब आयो।विप्र अर्जुनसों आनि सुनायो॥अर्जुन तब शर पंजर कियो। पवन संचार रहन नहिं दियो॥गृहको द्वारो राख्यो जहां। अर्जुन सावधान भयो तहां॥ब्राह्मण कह्यो समय अब भयो।अर्जुन धनुष बाण तब गह्यो॥बालक ह्वै भयो अंतर्धान। अर्जुन ह्वैरह्यो चकृत समान॥ विप्र नारि तब गारी दई। लख्यो प्रतिज्ञा कहा होइ गई॥तैं पुरुषारथ कहांते पायो। मिथ्याही कहि वाद बढायो॥ हरिसों दुःख अब कहिहौं जाई। अर्जुन कह्यो तासों या भाई॥ तेरे सुतको मैं अब ल्याऊं। तेरो सब संताप नशाऊं॥ अर्जुन तिहूंलोक फिरि आयो। ऐसो बालक कहूं न पायो॥अर्जुन वीर श्याम तन आए।हरि अर्जुनसों वचन सुनाए॥ तुम्ह बालक काहीं नहिं राख्यो। सो वृत्तांत हमैं तुम भाष्यो॥ कह्यो जो मैं परतिज्ञा करी।सो मोसों पूरण नहिं परी॥बालक होत कौन लेगयो।मोकोकछू ज्ञान न भयो॥मैंदेख्यो तेहि त्रिभुवन जाइ। पै ताकी कहुँ सुधि नहिं पाइ॥ विप्रकाज प्रभु अब तुम करो। नातरु मोको जानो मरो॥ हरि रथपर अर्जुन बैठाइ। पहुँचे लोकालोकहि जाइ॥ उतहूंते जब आगे धाई। दारुक हरिसों वचन सुनाई॥ अंधकार मग नहिं दरशाइ। याते रथ नहिं सकत चलाइ॥ चक्र सुदर्शन आगे कियो। कोटिकरबि परकाशित भयो॥ तब हरि अर्जुन पहुँचे तहां। गतिनाहीं काहूकी जहां॥ तहां जाइ देख्यो इक रूप। तासम और न द्वितिय स्वरूप॥ नैन निरखि चकृत होइगये। मन वाणी दोऊ थकिरये॥ कहिबे योग होइ तौकहै। तहांकछू आकार न लहै॥ शयननागफन मुकुट स्थान। नैन प्रभा मानो कोटिक भान॥ हरि अर्जुन कियो निरखि प्रणाम। सुन्यो तहां एक शब्द अभिराम॥ तुम्हरे हेतु चरित्र यह कियो। बोझ पृथ्वीको हरवो भयो॥ आवहु अब तुम अपने धाम। पूरण भये सुरनके काम॥ दशोपुत्र ब्राह्मणके दीन्हें। हरि अर्जुन प्रणाम तब कीन्हें॥ नहिं जान्यो मैं कहां सिधायो। और यहां मैं कैसे आयो। हरि अर्जुनको निज जन जान।लैगये तहां न जहां शशि भान॥निजस्वरूप अपनो दरशायो। जो कछु देख्यो वा नहिं पायो॥ ऐसे हैं त्रिभुवनपति राई। कहा सकै रसना गुणगाई॥ ज्यों शुकनृपसों कहि समुझायो। सूरदास ताही बिधि गायो॥ ३८॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरसूरदासकृते दशमस्कन्धोत्तरार्द्धः समाप्तः॥ १०॥

॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर ।

एकादशस्कन्ध ।

॥ राग नटनारायण ॥ तुम्हरो वचन न मेट्यो जाइ । प्राणनाथ कृपालु परमगुरु सुजान यादवराइ ॥ कहत पठवन बद्रिका मोहिं गूढज्ञान सिखाइ । सकुच साहस करत मनमें चलत परत न पाँइ॥पताकाके दंडलौं मन लेत संग लगाइ । कहा करौं चित चरण सन्मुख बसन सदृश उड़ाय॥मेरही या हृदयकी हरि कठिन सकल उपाइ । सूर सुनत जु गयो तबहीं खंड खंड नशाइ॥ १॥राग सारंग॥ हरिसों हौं कहा कहौं । प्रभु अंतर्यामी सब जानत यह सुनि सोचि रहौं । बिनु बुधि मनुज देह दयानिधि क्यों करि लै निबहौं । समुझि आपनी करनी गोसाई काहे न शूल सहौं ॥ मैं यहज्ञान छली ब्रजवनिता दियो सु क्यों न लहौं । प्रकट पाप तनुताप सूर प्रभु केहिपर हठहि गहौं ॥ ॥२॥राग नट॥ कैसे करि आवत श्याम इती । मन क्रम वचन और नहिं मेरे पदरज त्यागि हिती ॥ अंतर्यामी यहौ न जानत जो मो उरहि बिती । ज्यों कुजुवारि रस बींधि हारि गथु सोचतु पटकि चिती ॥ रहत अवज्ञा होइ गुसाईं चलत न दुखहि मिती । क्यों विश्वास करहिगो कौरो सुनि प्रभु कठिन कृती ॥ इतर नृपति जिहि उचत निकट करि देत न मूठि रिती । छुटत न अंश सु नितहि कृपिणके प्रीति न सूर रिती ॥ ३ ॥ राग केदारा ॥ क्यों करि सकौं आज्ञा भंग । करुणामय पद कमल लोलच नाहिंन छूटत संग ॥ यह रजायसु होत मोसन कहत बदरी जान । कहा करौं मम पाप पूरण सुनि न निकसतप्रान॥मैं अपराधी ब्रजवधू सों कहे वचन विष तूल ॥ मोहिं तजि अवर को विय सहै ऐसे शूल॥ अब न जो तुम जाहु ऊधो मिटै युग भृत रीति ॥ हौं जु तेरीसकल जानत महा मोसनप्रीति॥सकलज्ञान प्रबोधि उनसों कहि कथा समुझाइ । यादवनको प्रलय सुनि वे मरहिंगी अकुलाइ॥अतिविषाद सुहृदय करि करि उठि चल्यो ह्वै दीन । सूर प्रभु तू कृपासागर किनभयो हौं मीन॥४ ॥राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरिचरणारविंद उर धरो ॥ नारायण जब भये अवतार। कहौं सो कथा सुनो चितधार । धर्म पिता अरु मूरति माई। भये नारायण सुततेहि आई ॥ बदरिकाश्रम रहे पुनि जाइ । योग अभ्यास समाधि लगाइ ॥ उनके और कामनानाहिं। सुखपावे त्रिभुवन मन नाहिं ॥ सुरपति देखत गयो डेराइ । कामसैन सँग दियो पठाइ ॥ ऋतुवसंत फूली फुलवाइ । मंद सुगंध बयार बहाइ ॥ करत गान गंधर्व सुहाइ । नृत्य भलीअप्सरा देखाइ ॥ काम बाण पांचौं संधाने । नारायणते मनहिं न आने॥तब तिन सबन तहां भय पायो । कह्यो इन्द्र हमें कहां पठायो॥तबनारायण आँख उघारी । उन सबकी कीन्हींमनुहारी॥तुमकछुमनमेंभय मति

धरो। अभय हमारे आश्रम करो॥ दोष तुम्हारो है कछु नाहिं।तुमहिं पठायोहैसुरनाहिं॥ इन्द्रहुको कछु दूषण नाहीं। राजहेतु डरपत मनमाहीं॥ उन कर जोर बीनती उचारी। नारायण हरि हरि बनवारी॥ उधरत लोग तुम्हारे नाम। क्यों करि मोह सकै तुम काम॥जे न शरण प्रभु तुम्हरे करैं। तिनको अंतराइ हम करैं॥ और संभारि मनोरथ धरैं। ते सबहमकोअहनिशिडरैं॥ कहूं पुत्र मोह उपजावै। कहूँ त्रियाके रूप लोभावै॥ भूँख प्यास होइ कबहुँ संतापैं। ऐसे विधिःहम उनको व्यापैं॥ जो कोउ तुम्हरे शरणन आवै। सुख संसार सकलबिसरावै॥तासोंहमरो कछु न बसावै। होय चेत सो तुमपै आवै॥नारायण तहां प्रगट करी।इन्द्रअपसरासोभगिरी॥ सहस अप्सरा सुंदर रूप। एक एकते अधिक अनूप॥ काम देखि चकृतहोइगयो।रूपअवनिहमदेख्यो नयो॥ कौन जितै सबहीं इन माहिं।इनसम इन्द्रलोक कोउ नाहिं॥ तब नारायण आज्ञाकरी। इनमें लेहु एक सुन्दरी॥पुनिप्रणाम हरिकोतिनकीन्हीं।नामउर्वशीइकउनलीन्हीं॥ सोसुरपतिको दीन्हीं जाइ।कह्यो सकल वृत्तांत सुनाइ॥पुनि भयो नारायणअवतार।सूरकह्यो भागवत अनुसार॥५॥हंस अवतार वर्णन॥राग बिलावल॥हरिहरिहरिहरि सुमिरन करो।हरि चरणारविंद उर धरो॥हरि ज्यों धर्‍यो हंस अवतार। कहौं सो कथा सुनो चितधार॥ सनकादिकब्रह्मापैगये।नमस्कार कर पूँछत भये॥ किधौं विषयको चित गहि रह्यो। की विषहीमें चितको गह्यो॥ नीरक्षीर ज्यों दोउ मिलिगये। न्यारे होत न न्यारे कये॥ हमतो जतन करी बहु भाइ। तुम अब कहो सो करैं उपाइ॥ ब्रह्माको उत्तर नहिं आयो।तब सनकादिक गर्व बढायो॥ ज्ञानहमारो अतिशय जोइ। ब्रह्मा रह्यो निरउत्तर होइ॥ब्रह्म हरिपद ध्यान लगाय। तब हरि हंस रूप धरि आय॥ सबहिन रूप देखि सुख पायो। सबहिन उठिकै माथो नायो॥ सनकादिकन कह्योयाभाइ। हमको दीजे प्रभु समुझाइ॥ को तुम क्यों करि इहां पधारे। परमहंस तब वचन उचारे॥यहतोप्रश्न योग है नाहीं। एकइ आतम हम तुममाहीं॥ जो तुम देह देखिकै पूछे। तोहू प्रश्न तुम्हारे छूंछे॥ पंचभूतते सब तनु भए। कहा देखिकै तुम भ्रमिगए॥ यह कहि उनको गर्व निवार्‍यो। बहुरो या विधि वचन उचार्‍यो॥विषय चिंता दोऊहैमाया। दोऊ चपरिज्यों तरुवर छाया॥तरुवर डोलै डोलै सोइ। त्यों जिव लगि चित चेत न होइ॥बहुरि चित चेत विषैतनुजोवै।चित्त विषय संयोग तब होवै। ऐसी भाँति रहै दोउ गोइ।तिन्हें न्यारे करिसकै न कोइ॥ ज्यों सुपनेमें सुख दुख जोइ। जानि सत्य राखै चित लोइ॥ जब जागै तब मिथ्या जानै। ज्ञानी इनको नित यों मानै॥ विषय चित्त दोऊ भ्रम जानो। आतमरूप सत्य करि मानो॥ श्रवणादिकमें चित्त लगावहु।प्रेम सहित मम रूपहि ध्यावहु॥ ऐसे करत विषयहू होइ। अरु मम चरण रहै चित गोइ॥ जोऐसे विधि साधन करै। सो सहजहि मम पद अनुसरै॥ और जो बीचहि तनु छुटिजाय। तौ ले जन्म भक्तगृह आय॥ वहांहू प्रेम भक्ति को थान। पावै मेरो परम स्थान॥ सनकादिकसों कहि यह ज्ञान। परमहंस भये अंतर्धान॥ जो यह लीला सुनै सुनावै। सूर सो प्रेम भक्तिको पावै॥ ६॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरसूरदासकृते एकादशःस्कन्धः समाप्तः॥ ११॥

॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर ।

द्वादशस्कन्ध ।

राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो॥ शुकदेव हरि चरणन शिरनाइ। राजासों बोल्यो या भाइ॥ कहौं हरि कथा सुनो चितलाय। सूर तरो हरिकेगुणगाय॥ ॥ १ ॥बौद्धावतारवर्णन राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरिचरणारविंद उरधरो॥ बौद्धरूप जैसे हरि धारयो। अदिति सुतनको कारज सारयो॥ कहौंसो कथा सुनोचितधार॥ कहै सुनै सो तरै भवपार॥ असुर एक समय शुक्रपै जाइ। कह्यो सुरन जीतैं केहि भाइ॥ शुक्र कह्यो तुम जग विस्तरो। करिकै यज्ञ सुरनसों लरो॥ याही बिधि तुमरी जय होइ॥ या बिनु और उपाय न कोइ॥ असुर शुक्रकी आज्ञा पाइ। लागे करन यज्ञ बहु भाइ॥ तब सुर सब हरिजू पै जाइ। कह्यो वृत्तांत सकल शिर नाइ॥ हरि जू तिनको दुःखित देख। कियो तुरत सेवरिको भेष॥ असुरन पास बहुरि चलि गए। तिनसों वचन ऐसी बिधि कए॥ यज्ञमाहिं तुम पशुन यों मारत। दया नहीं आवत संहारत॥ अपनोसो जीव सबनको जानि। कीजै नहिं जीवनकी हानि॥ दया धर्म पालै जो कोइ। मेरीमति ताकी जय होइ॥ यह सुन असुरन यज्ञै त्यागि। दया धर्म मारग अनुरागि॥ या बिधि भयो बुद्ध अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार॥ २ ॥ भविष्य कल्की अवतार वर्णन ॥ राग बिवलाल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारदिं उर धरो॥ हरि करिहैं कलंक अवतार। जेहि कारण सो कहो चित धार॥ कलिमें नृप होइहैं अन्याई। कृषी आइ लेहैं बरिआई॥ झूठे नरसों लेहिं अंकोर। लावहिं सांचे नरको खोर॥ प्रजा धर्मरत होइ न कोइ। बरन धर्म न पहिंचानै सोइ॥ दूरितीर्थन श्रम करि जाहिं। जहां रहैं तहां लख्यो न ताहिं॥ जाके गृहमें प्रतिमा होइ। तिन तजि पूजै अनतै सोइ॥ ब्राह्मण पूँछे जान्यो जाइ। संन्यासी फिरै भेष बनाइ॥ गृही न अपनो धर्म पहिंचानै। उन नहिं आए को सन्मानै॥ दया सत्य संतोष नशाइ। दया धर्मकी रीति बिलाइ॥ फल सुधर्मको जानै सोइ।पै सुधर्मकोकरै न कोइ॥ पापनको फल चाहै नाहीं। अहनिशि पाप करतही जाहीं। वर्षा समै न वर्षा होइ। बिना अन्न दुख पावै लोइ॥ दान देहिं तो यशके काज। कलि न होइ पृथ्वीपति राज॥ मन इन्द्रिय वश करैं न लोग। ज्यों त्यों कीन्हों चाहैं भोग॥ शत संवत आयुःकुल होइ। सोऊ जीवै बिरला कोइ॥ नृप ऐसे आयुर्दा पाइ। पृथ्वीहित नितकरैंउपाइ॥ पृथ्वी देखि तिन हाँसी करही। ऐसो को जो मोपर रहही॥ मन्वंतर लगि कियो जेहि राज। तेऊ नृपति गये मोहिं त्याज॥पृथुसे पृथ्वीपति जग भए। तेऊ नृपति छाँडि मोहि गए॥ तुच्छ आयु परिश्रम करत। आपु आपुमें लरि लरि मरत॥इनहिं देखि मोहिं हांसी आवत। इनको इतनी समुझि न आवत॥ सतयुग सत त्रेता जग करते। द्वापर पूजा मनमें धरते॥ कलियुग एकबडो उपकार। जो हरि कहै सो उतरै पार॥ कलिमें पाप करै नित लोइ। कहंलगि कहिये अंत न होइ॥ हरिहरि कहत पाप पुनि जाइ। पवन लागि ज्यों रूइ

उडाइ ॥ अजामेल सुत हित हरि भाष्यो । यमदूतनते तेहि हरि राख्यो ॥ कलिमें राम कहे जो कोइ।निश्चय भव जल तरिहै सोइ॥जबलगि बढै अधर्म अपार । रहै विष्णुजस धर्म सतहार॥ताग्रह संभल कलकी होइ।करै संहार दुष्ट नर लोइ॥पृथ्वी अकास तहां रहिजाइ।राजदेहि जो कुंभ बैठाइ॥ समदृष्टि होवे सब लोइ । दुष्ट भाव मन धरै न कोइ॥यों होइहै कलंकि अवतार। कलिमें राम नाम आधार ॥ शुक नृपसों कह्यो जा परकार । सुर कह्यो ताही अनुसार ॥३॥ राजा परीक्षित हरिपद प्राप्ति वर्णन ॥ राग बिलावल ॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ बिनु हरिभक्ति मुक्ति नहिं होइ।कोटि उपाय करौ किन कोइ॥रहट घरी ज्यों जग व्यवहार।उपजत बिनशत बारंबार॥ उत्पति प्रलय होत जा भाइ । कहौं सुनो सो नृप चित लाइ ॥ राजा प्रलय चतुर्विध होइ । आवत जात चहूं में लोइ ॥ युग परलय तो तुमसों कही । तीन और कहिबे को रही ॥ चतुर्युगी बीतै एकहत्तर । करै राज तब लगि मन्वंतर ॥ चौदह मनु ब्रह्मा दिन माहिं । बीतत तासों कल्प कहाहिं ॥ रात होइ तब परलय होइ । निशि मर्यादा दिन सम होइ ॥ प्रात भए जब ब्रह्मा जागै। बहुरो सृष्टि करन को लागै ॥ दिन सौ तीन साठ जब जाहिं । सो ब्रह्माको वरष कहाहिं॥ बर्ष पचाश परारध गए । प्रलय तीसरी या बिधि लए॥बहुरो ब्रह्मा सृष्टि उपावे । जबलौं परारध दूजो आवै ॥ शत संवत भये ब्रह्मा मरै । महाप्रलय नित प्रभुजू करै॥ माया माहिं नित्य लेपावै । माया हरिपद माहिं समावै ॥ हरिको रूप कह्यो नहिं जाइ ।अलख अखंड सदा इक भाइ॥बहुरि जब हरिकी इच्छा होइ।देखै माया के दिशि जोइ॥माया सब तबहीं उपजावै। ब्रह्मासों पुनि सृष्टि उपावे । तब हम प्रलय सदा पुनि होइ । जन्मै मरै सवाई लोइ॥हरिको भजै सो हरिपद पावै।जन्म मरन तेहि ठौर न आवै॥नृप मैं तोहिं भागवत सुनायो । और तो हिय माहिं बसायो॥मुक्ति माहिं संशय नहिं कोइ । सुनै भागवतमें सोइ होइ॥सप्तम दिवसआजुहैराउ । हरि चरणारबिंद चित लाउ॥ इह अछेद अभेद अविनासी । सर्व गति अरु सर्व उदासी॥दृष्टिहि दृष्टि सोइ दृष्टि टारि। काको दीजै को दिखहारि॥हरि स्वरूप सों रतिहि बिचारि । मिथ्या तनुको मोह पसारि ॥ नृप कह्यो तनुको मोह न कोइ । याको जो भावै सो होइ ॥ मोहि अब सर्व ब्रह्म दरशावै । तक्षक भय मनमें नहिं आवै ॥ तुम प्रसाद मैं पायो ज्ञान । छूटि अमिथ्या देह अभिमान ॥ अब मैं गहि हरिपद अनुराग । करिहौं मिथ्या तनुको त्याग ॥ शुक जान्यो नृपको जो ज्ञान । आज्ञा लैकरि कियो पयान ॥ तक्षक नृप शरीरको डस्यो।तब तनु तजिकै पदमें बस्यो ॥ सूत शौनकनि कहि समुझायो । मैंहू ता अनुसार सुनायो ॥ अंत समय हरिपद चित लावै । सूरदास सो हरिपद पावै ४ ॥ जन्मेजय कथा ॥ राग बिलावल ॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ जन्मेजय जब पायो राज । एकबार निज सभा बिराज ॥ पिता वैर मनमें सो बिचार। विप्रनसों यों कह्यो उचार ॥मोको तुम अब यज्ञ करावहु ।तक्षक कुटुंब समेत जरावहु ॥ विप्रन सेत कुली जब जारी ।तब राजातिनसोंउचारी॥ तक्षक कुल समेत तुम जारौ ॥ कह्यो इन्द्र निज शरनउबारौ॥ नृप कह्यो इन्द्रसहिततेहिजारौ। विप्रनहूं इह मतो बिचारे ॥आसतीक तेहि अवसर आयो। राजासों यह वचनसुनायो॥कारण करनहार भगवान। तक्षक डसनहार मति जान॥ बिनु हरि आज्ञा द्वितिय न बात । कौन सकै काहू संताप ॥ हरि जो चाहै त्योंहीं होइ । नृप ताभै संदेह न कोइ॥ नृपकेमनयहनिश्चयआयो। यज्ञ छाँडि हरिपद चितलायो॥सूत शौनकनिकहिसमुझायो।सूरदास त्योंहीं करि गायो ॥ ५ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरसूरदासकृते द्वादशः स्कन्धः समाप्तः ॥ १२ ॥

इति श्रीसूरसागर सम्पूर्ण ॥

["श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बंबई.